



दैवत-संहिता

(१)

अग्निदेवता

संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

स्वाध्याय-मण्डल, औरध (जि० सातारा)

संवत् १९९८, शक १८६३, सन १९४१

141064

मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A.

स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध, (जि० सातारा)

दैवत-संहिताका प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा जाता है, इसका अध्ययन पाठक करे ।

अग्निदेवता के करीब ढाई हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं और इन्द्रदेवता के करीब साठे तीन हजार मंत्र संग्रहित हुए हैं । अर्थात् दोनों देवताओं के मिलकर करीब छः हजार अर्थात् आधे ऋग्वेद के जितने मन्त्र हुए हैं । इससे वेदमें इन दोनों देवताओं का महत्त्व कितना है, यह स्पष्ट होता है । वेदों में इन दो देवताओं के जितने मन्त्र हैं, करीब उतने ही अन्य सब देवताओं के मिलकर हैं । वेदों का आधा भाग इन दो देवताओं के लिये समर्पित हुआ है, इससे स्पष्ट हो जाता है कि, इन देवताओं का महत्त्व वेद में अधिकसे अधिक है ।

प्रत्येक देवता के मन्त्र छापनेके बाद (१) पुनरुक्त मंत्र तथा पुनरुक्त मन्त्रभागों की सूची छपी है । इस सूची से कौनसा मन्त्र कहाँ दुबारा आया है, यह स्पष्ट हो जाता है, जो स्वाध्याय के लिये और निम्न पाठसे अर्थज्ञान होने के लिये अत्यन्त ही आवश्यक है । इस के पश्चात् मंत्रों की (२) वर्णानुक्रमसूची छपी है, जिससे कौनसा मंत्र कहाँ है, इसका पता लगता है । केवल मन्त्र छापे जाय और सूची न हो, तो कौनसा मन्त्र कहाँ है, इसका पता नहीं लग सकता । इस कारण से यह सूची आवश्यक है । इसके पश्चात् (३) 'विशेषणसूची' छपी है । अग्नि-देवता के स्वरूप का निर्णय उस देवता के विशेषणों से हो सकता है । ये सब विशेषण इस सूची में वर्णानुक्रम से दिये हैं और उनके पते भी दिये हैं । चतुर्थ सूची (४) 'उपमाओं की सूची' है । अग्नि को कितनी उपमाएँ वेद में दी हैं, यह इससे पता लग सकता है । उपमाओं से देवता के स्वरूप की पहचान होती है ।

इस तरह सूचियाँ प्रत्येक देवता के साथ रहेंगी । पाठक विचार करके देखेंगे, तो उन को पता लग जायगा कि, इन सूचियों के बिना देवताओं का मन्त्रसंग्रह विशेष लाभदायक नहीं होगा ।

आज तक किसीने इन सूचियोंका संग्रह नहीं किया था । कोई पाठक अब इन सूचियों के विचार से अर्थात् अग्नि आदि देवताओं के विशेषण, उपमा, पुनरुक्त मन्त्रभाग आदि का मनन करके अग्निदेवता का ठीकठीक स्वरूप जान सकता है । यह सुविधा इस से पूर्व नहीं थी । यह सुविधा दैवत-संहिताद्वारा हो रही है । जैसी अग्नि-देवता की ये सूचियाँ छपी हैं, वैसी ही इन्द्र की भी छपेंगी और अन्यान्य देवताओंकी भी छपेंगी ।

जो पाठक इन के बनानेके कष्टों को जानेंगे और इनका महत्त्व स्वाध्यायमें कितना है, यह समझेंगे, वे इनका उपयोग करके देवताका स्वरूप ठीकठीक जानेंगे ।

सब वेदोंमें जो मन्त्र है, वे विभिन्न विभागोंमें बाँटे हैं, जैसा (१) ऋग्वेद के प्रथम सात मण्डलों के सब मन्त्र ऋषिचार प्रथित हैं, केवल नवम मण्डल दैवत-संहिता के रूप में है, अर्थात् इसमें 'सोम' देवताके ही मन्त्र हैं । प्रथम के छः मण्डल ऋषिचार हैं—

२. द्वितीय मण्डल	गृत्तमद ऋषि	सूक्त ४३	मंत्र ४२५
३. तृतीय	" विश्वामित्र	" ६२	" ६१७
४. चतुर्थ	" वामदेव	" ५८	" ५८५
५. पञ्चम	" अत्रि	" ८७	" ७२७
६. षष्ठ	" भरद्वाज	" ७५	" ७६५
७. सप्तम	" वसिष्ठ	" १०४	" ८४१

यदि चतुर्थ और तृतीय आगेपीछे किये जाय, तो ये मण्डल 'बढ़ती हुई मन्त्रसंख्या' के दीखते हैं ।

प्रथम मण्डलके सूक्त १९१ हैं, वैसे ही दशम मण्डलके भी १९१ ही सूक्त हैं । पर प्रथम मण्डल की मन्त्रसंख्या २००६ है और दशम मण्डलकी १७५४ है । अष्टम मण्डल बहुतांश 'कण्व' ऋषिवाला दीखता है और प्रथम मण्डल मधुच्छंदा से शुरू है । पर इन दोनों में अन्यान्य ऋषियों के भी मन्त्र दीखते हैं, इस का कारण भी है ।

इस ऋग्वेद में केवल नवम मण्डल 'दैवत-संहिता' है, शेष मण्डल प्रायः 'आर्षेय-संहिता' के रूप में हैं। इस नवम मण्डल के सोमदेवता के मन्त्र देखने से हमें दैवत-संहिताकी कल्पना प्रथम आ गयी। और वह हमने पाठकोंके सामने रख दी, जो प्रायः सब पाठकोंको पसंद आ गयी।

हार्दिक धन्यवाद ।

इस संहिता की कल्पना पसंद आते ही अजमेरनिवासी श्री० पं० नथूलाल शर्माजी पेंशनर ने इस के निर्माण और मुद्रण के लिये दो सहस्र रु० का दान किया, जिससे इस का कार्य शुरू हुआ है। इनके सब स्वाध्यायशील सज्जनोंपर उक्त दानके कारण अनन्त उपकार हुए हैं। अतः वे धन्यवाद के लिये पात्र हैं।

दैवत-संहिता के निर्माण करने में प्रथम हमारी इतनी हि इच्छा थी कि, केवल एक एक देवता के मंत्र छोटकर एक स्थानपर छापना और इसमें जैसे ऋषिवार मंत्र हैं वैसे ही रखना। अर्थात् एक देवताके मंत्र एक स्थानपर छापना और उस एक देवताके मंत्रों में एक एक ऋषि के मन्त्र इकट्ठे छापना। इससे नित्य पाठ करनेवालोंके लिये आसानी होगी, और अर्थ का विचार करनेवालों के लिये भी अर्थ का मनन करना सहज हो जायगा।

इस समय एक देवता के मंत्र किसी वेदमें एक स्थानपर नहीं हैं। इसलिये किस देवता के विषय में कहां क्या लिखा है, इसका किसी को पता नहीं रहता, अनुसन्धान करना कठिन होता है। 'दैवत-संहिता' बननेसे प्रत्येक देवताके मन्त्र इकट्ठे होंगे और स्वाध्याय करना सुगम हो जायगा।

उक्त प्रकार सहायता आते ही हमने अग्निमन्त्रों का मुद्रण करना शुरू किया। इस समय विचार यही था कि, साल दो साल में देवतावार चारों वेदों के मन्त्र छोटकर छाप देना। इससे अधिक विचार इस समय नहीं था। इस कारण इस समय हमने जो विज्ञापन छापे, उसमें इस दैवत-संहिता का मुद्रण दो वर्षोंमें होगा, ऐसा छाप दिया था।

सूचियाँ ।

अग्नि-मन्त्रों का मुद्रण होते होते, यह विचार मन में आया कि यदि इन देवता-मन्त्रों के साथ साथ—

(१) अकारादि मन्त्रसूची ।

(२) पुनरुक्त मन्त्र-भागोंकी सूची ।

(३) विशेषण-सूची ।

(४) उपमा-सूची ।

ऐसी सूचियाँ दी जायेंगी, तो देवता-निर्णय करना सुगम हो जायगा और स्वाध्याय करनेवालों की बहुत ही सहायता हो जायगी।

ऐसा करनेसे पृष्ठसंख्या डेढ़ गुनी हो जायगी, यह भी खयाल आया और देड़ गुना व्यय भी बढेगा, इसका भी विचार हुआ। पर स्वाध्याय करनेवाला जो कोई हो गा उसकी सहायता होनी चाहिये। एक स्वाध्याय करनेवाले को भी सहायता मिली, तो हमारे श्रम और सब व्यय सफल हुए, ऐसा विचार करके हमने उक्त सूचियाँ छपी हैं।

स्वाध्याय की सहायता निर्माण करना, व्यय का भी विचार करना नहीं, पर जो आवश्यक वेद का भाग है, वह छापना। यह हमारा विचार हुआ है और इस दिशा से कार्य चलाया जा रहा है।

दैवत-संहिताकी प्राचीनता ।

ऋग्वेद में ही नवम मण्डल दैवत-संहिता ही है, वेदमें इतनाही दैवतसंहिता का नमूना है, ऐसा हमारा पहिले खयाल था। पर सामवेद का विचार करते करते यह बात स्पष्ट हुई है कि, 'सामवेद-पूर्वार्ध निःसंदेह दैवत-संहिता है, देखिये—

पूर्वार्ध में- १. आग्नेय काण्ड ११४ मंत्र

२. ऐन्द्र काण्ड ३५२ मंत्र

३. पावमान काण्ड ११९ मंत्र

इस तरह तीन देवताओंके मंत्र पूर्वार्धमें क्रमपूर्वक हैं। यह दैवत-संहिता ही है। अर्थात् जैसी ऋग्वेद के नवम मण्डल में सोम की दैवत-संहिता है, वैसीहि सामवेद-पूर्वार्ध में तीन देवताओंकी 'दैवत-संहिता' ही है। अतः हम अब कह सकते हैं कि, 'दैवत-संहिता' की कल्पना, यद्यपि हमारी कल्पना में उत्पन्न हुई ऐसा हमें प्रथम प्रतीत हुआ, तथापि वह कल्पना निःसंदेह वैदिक है और इस का स्वरूप ऋग्वेद के नवम मण्डल में तथा सामवेद के पूर्वार्ध में आज भी दीख पड़ता है। •

छांदस-संहिता ।

सामवेद-पूर्वार्ध देखने से एक और बात भी स्पष्ट हो गयी कि, यहां गायत्री, अनुष्टुप्, त्रिष्टुप्, बृहती ऐसे छंद-वार मंत्र संग्रहित हुए हैं। वेद के अध्ययन की जो पाठ-विधि हमने निर्धारित की है, उस में भी हमने अपने अनुभव से छन्द के क्रम से ही पाठविधि निर्धारित की है। यही प्रणाली सामवेद में हमें दीख रही है। अर्थात् यह 'छांदस-संहिता' भी वैदिक ही है।

इस पद्धति को अनुसरते हुए हमें इस दैवत-संहिता में छन्दों के क्रम से ही मन्त्र रखने चाहिये थे। पर हमने ऋषियों के क्रम से ही रखे हैं, जैसे ऋग्वेद में है। छन्द के क्रम से रखने से अध्ययन की सुगमता होती है, यह सत्य है; पर ऋषिक्रम में भी बड़ा लाभ है। दोनों लाभ एक ही ग्रन्थ में शामिल नहीं किये जा सकते। इसलिये हमने ऋग्वेद-क्रम को प्राधान्य देकर देवता के मन्त्र ऋषि-क्रमानुसार रखे हैं और उसकी उक्त सूचियां भी दी हैं।

इस ग्रन्थमें अग्निके मन्त्र सूचियोंसमेत तथा इन्द्रके मंत्र भी सूचियोंसमेत हैं।

इन दो देवताओं के मन्त्र चारों वेदों के मन्त्र-संग्रह के तीसरे भाग के बराबर हैं। अर्थात् इन दो देवताओं की हि मन्त्र-संख्या अधिक है। इसके आगे के देवता बहुत मन्त्र-वाले नहीं हैं। एक तिहाई मन्त्रसंख्या में ये दो देवता हैं और दो-तिहाई मन्त्रसंख्या में संपूर्ण अन्य देवतागण हैं।

मंत्रोंके तीन संग्रह ।

सब मंत्रोंके तीन प्रकारके संग्रह हो सकते हैं (१) एक आर्षेय मंत्रसंग्रह, इसी को 'आर्षेय-संहिता' कह सकते हैं। ऋग्वेदका मुख्य भाग इस तरहके संग्रहका है। (२) दूसरी 'दैवत-संहिता'। ऋग्वेदका नवम मंडल तथा सामवेद पूर्वार्धमें इस तरह का संग्रह है। यह दैवत संहिता भी उसी का अनुसरण करके बनायी है। (३) तीसरी 'छांदस-संहिता' जो छन्दानुसार मंत्रसंग्रहसे बनती है। सामवेद पूर्वार्ध में ऐसी ही रचना है। इससे एक छंद के मंत्र इकट्ठे रहते हैं।

ये तीन ही मंत्रसंग्रह बड़े कामके हैं। वास्तवमें देखा जाय, तो सब वेदमंत्र इस तरहकी तीनों प्रकार की

संहिताओं में छापने चाहिये। प्रत्येक के अध्ययन का विभिन्न फल है। इस तरह के मंत्रसंग्रह बननेके पूर्व साधारण मनुष्य नहीं जान सकता कि, इनसे क्या लाभ होगा। पर हम अनुभवसे कह सकते हैं कि, वेदमंत्रों का उत्तम अध्ययन करना है, तो इन तीनों मंत्रसंग्रहों की अत्यंत आवश्यकता है।

आर्षेय-संहिता से ऋषिपरंपरा का इन मंत्रोंके साथ जो संबंध है, वह जाना जा सकता है। ऋषिज्ञान के बिना मंत्रज्ञान नहीं होगा। यह प्राचीन परंपरा से सिद्ध हुई बात है। दैवत-संहितासे देवताओं का ज्ञान उत्तम हो सकता है। और छांदस-संहिता से शीघ्र अध्ययन हो सकता है। ये तीन लाभ इन तीन संहिताओं से स्पष्ट रूपसे होते हैं। अतः जो धन इन संहिताओंपर खर्च होगा, वह वेदसेवामें लगेगा, इसमें बिलकुल संदेह नहीं।

एक व्यर्थ भय ।

जब हमने 'दैवत-संहिता' की कल्पना प्रगट की, तब कई लोगोंने हमें लिखा कि, यदि यह दैवतसंहिता बन गयी, तो मूल चार वेदोंकी संहिताएं कोई देखेगा नहीं। पर यह भय व्यर्थ है। ऊपर हमने तीनों प्रकारकी संहिताओंका वर्णन किया है, इसमें से एक दूसरे की मारक नहीं है, परंतु ये सब परस्पर उपकारक ही हैं।

इसलिये ऐसा भय करनेकी कोई भी आवश्यकता नहीं है। अध्ययनोंके मार्ग सुगम करने ही चाहिये। यही हमारा कार्य है, जो इस दैवत-संहिता द्वारा किया गया है। हमें पूर्ण विश्वास है कि, इससे वेदपाठकों का अत्यंत लाभ होगा और वेद का तत्त्वज्ञान समझने में तथा उसके प्रचार में बड़ी सहायता होगी।

इस ग्रंथमें उपमा और विशेषणसूचियां श्री० पं० अनंत दिनकर रास्ते पनानिवासीने बनायीं, इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य हैं।

इस तरह यह दैवत-संहिता का प्रथम भाग पाठकोंके सामने रखा है। हमें पूर्ण आशा है कि सब वेदानुयायी इसका हार्दिक स्वागत करेंगे।

मार्गशीर्ष शुक्ल ६

शके १८६३

संवत् १९९८

संपादक

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
अध्यक्ष-स्वाध्याय-मंडल, औध

अग्निदेवता का परिचय ।



(१) विषयप्रवेश ।

वेदकी “ अग्नि-विद्या ” ठीक प्रकार समझने आनेके लिये सबसे प्रथम “ अग्निदेवताका परिचय ” होनेकी आवश्यकता है। देवताका परिचय हुए बिना मंत्रका आशय समझना अशक्य है। इस कारण हर एक देवताके विषयमें निश्चित ज्ञान होनेके लिये उस उस देवता के संपूर्ण मंत्रोंका उत्तम अध्ययन करके, प्रत्येक देवताका मंत्रोक्त स्वरूप निश्चित करनेके यत्न की आवश्यकता है। इस लिये अध्ययन करनेवालोंको उचित है कि, वे वेदमंत्रोंके अध्ययनसे वैदिक देवताका वैदिक स्वरूपही जाननेका यत्न करें। तथा जो विद्वान् इन देवताओंका रूपान्तर पुराणोंमें देखना चाहते हैं, वे वेद और पुराणोंका तुलनात्मक अभ्यस करें और दोनों कल्पनाओंमें समानता कहां है और विषमता कहां है, इसका निश्चय करें। ऐसा जिन्होंने किया नहीं है, उनके कथनमें बड़ी अशुद्धियां हुई हैं; इसलिये इस विषयमें पूर्वोक्त प्रकार सावधानता रखनेकी अत्यंत आवश्यकता है।

यहां इस निबंधमें अग्निदेवताका वैदिक स्वरूप निश्चित करनेका यत्न करना है।

(२) भाषामें अग्नि शब्दका भाव ।

अग्निदेवताके स्वरूपका निश्चय इस लेखमें करना है। पाठक यहां कहेंगे कि, “अग्नि” के स्वरूपके निश्चय का तात्पर्य क्या है? अग्नि शब्द “आग” का पर्याय है और उसका उपयोग पकानेके समय हर एक दिन हम करते हैं। उसका स्वरूप सभी मनुष्य जानते हैं, इसलिये उसके स्वरूपका तो और क्या निश्चय करना है? इस शंकाके उत्तर में निवेदन है कि, यद्यपि “अग्नि” शब्द “आग”का वाचक है, तथापि वेदके अग्नि देवताके सब मंत्र “आग” का ही वर्णन कर रहे हैं, ऐसा मानना बड़ी भारी भूल है। लौकिक संस्कृत भाषामें भी “अग्नि” शब्दके आगके अतिरिक्त बहुतसे अन्य अर्थ हैं। जैसा—“अग्निजार वृक्ष, केशर, स्वर्ण, निंबु, भिलावा, चित्रक, रक्तचित्रक, कपि स्थाष्टक, जठराग्नि, पित्त” आदि अनेक अर्थ लौकिक

संस्कृत भाषामें भी अग्नि शब्दके हैं। इसलिये “अग्नि” शब्द केवल “आग” का ही वाचक मानना गलती है। इसके अतिरिक्त अग्निवाचक कई ऐसे शब्द हैं कि, जो “आग” में कदापि सार्थ नहीं हो सकते, इनमेंसे कुछ यहां देखिये—

(३) अग्निके पर्याय शब्द ।

- (१) वैश्वानरः=विश्वमें (नर) पुरुषशक्ति, विश्वका चालक, (विश्व) सब (नर) मनुष्योंके संबंधसे होनेवाला, इत्यादि।
- (२) धनंजयः= धनको जीतनेवाला, धन प्राप्त करनेवाला।
- (३) जातवेदाः= जिससे वेद उत्पन्न हुए हैं, जिससे धन उत्पन्न होता है, जिससे ज्ञान होता है।
- (४) तनूनपात्=(तनू) शरीरोंको(न-पात्)न गिरानेवाला, जिसके कारण शरीरोंका पतन नहीं होता।
- (५) रोहिताश्वः- लाल रंगके घोड़ोंसे युक्त।
- (६) हिरण्यरेताः- सुवर्णका वीर्य।
- (७) सप्तार्चिः-सात ज्वालाओंसे युक्त।
- (८) सप्तजिह्वः-सात जिह्वाओंसे युक्त।
- (९) सर्वदेवमुखः- सब देवोंमें प्रमुख, किंवा सब देवोंका मुख।

इत्यादि शब्द ‘अग्नि’ के पर्याय हैं, परंतु ये ‘आग’ में सार्थ नहीं हो सकते। उक्त शब्दोंका भाव ‘आग’ में नहीं दिखाई देता है, कमसे कम उक्त अर्थ आगमें चरितार्थ होनेका अनुभव नहीं है। इस लिये ‘अग्नि’ शब्दका आशय आगसे भिन्न मानना आवश्यक ही है। वेदमंत्रोंको देखकर भी यही निश्चय होता है। देखिये—

(४) पहला मानव “अग्नि”।

पहला जो मानव प्राणी हुआ था, उसका नाम ‘अग्नि’ है, ऐसा वेदमें ही कहा है, देखिये—

त्वामग्ने प्रथममायुमायवे देवा अकृण्वन्नहुषस्य विश्पतिं । इलामकृण्वन्नहुषस्य शासनीं पितुर्यत् पुत्रो ममकस्य जायते ॥ (६० ऋ. १।३१।३१)

“हे अग्नि ! (नहुषस्य विदपतिं) मनुष्योंके नरपतिरूप (त्वां प्रथमं आयुं) तुझ प्रथम मनुष्य को (देवाः) देवोंने (आयवे अकृण्वन्) मानवजातिके लिये बनाया है । (इळां) वाणी को (नहुषस्य शासनीं) मानवजातिकी शासनकर्त्री (अकृण्वन्) बनाई है । (यत्तममकस्य पितुः) जो ममत्वरूप पिताका पुत्र होता है । ” उसके आगे वैसी ही संतति होती जाती है और वंशानुरूप वाणी आदिका प्रचार होता है । इस मंत्रका यह भाव देखनेसे निम्न बातोंका पता निःसंदेह लग जाता है—

(१) देवोंने जो पहला मानवप्राणी बनाया, उसीका नाम “अग्नि ” था । मनुष्यजातिकी उत्पत्ति करनेकी इच्छासे देवोंने इस प्रथम मानवप्राणी को बनाया था ।

(२) यही पहला मानव मनुष्यों का पिता होनेसे इसी को (विश-पति) नरपति अथवा नरेश कहते हैं ।

(३) जिस प्रकार इस मानवप्राणी को प्रारंभ में देवोंने बनाया था, उसी प्रकार उसके साथ वाणी की भी उत्पत्ति की गई थी । इसे उसकी धर्मपत्नी भी मान सकते हैं ।

(४) इस मानवमें ममता रखी गई है । इस ममत्व के कारण स्त्रीपुरुष इकट्ठे होते हैं और आगे संतति बढ़ाते हैं, इसलिये सब संतति इस “ममत्व” की ही है और पिता की वाणी इसी कारण संतान बोलते हैं ।

निघंटु २।३में मनुष्य नामोंमें ‘आयवः (आयुः), नहुषः विशः’ ये शब्द पठित होनेसे, इनका अर्थ मनुष्यही है । तथा निघंटु १।११ में ‘इळा’ शब्द वाङ्मनामों में पठित होनेसे इसका अर्थ वाणी है । देवोंके द्वारा इस प्रकार जो ‘पहला मनुष्य’ बनाया गया, उसका नाम अग्नि है और उसकी पत्नी वाणी है । तात्पर्य, मनुष्योंमें भी अग्नि है, अर्थात् मानवप्राणी अग्नि शब्द से वेदमें लिया जाता है । वेदमंत्रों में अग्नि के अनेक अर्थ होंगे, परंतु उसमें एक अर्थ ‘मानव प्राणी’ है, इसमें कोई शका नहीं है । क्योंकि जो मानव-प्राणी सबसे प्रारंभ में देवोंने बनाया, उसके वंशजों में भी वही भाव और वही वाणी होने के कारण उसमें उसका ‘अग्निपन’ भी उतरा ही है । पिताके गुणधर्म आनुवंशिक होकर पुत्रमें उतरते हैं, इसी रीतिसे पिताका अग्निपन पुत्रों में उतरा है । ‘अग्नि’ का ‘वाणी’ के साथ संबंध इस प्रकार माना गया है । मनुष्य उत्पन्न होनेके पूर्व पशुपक्षियों

की अनेक योनियोंमें अनेक प्राणी उत्पन्न हो गये थे, परन्तु जैसी वाणी की पूर्णता इस मनुष्यमें हुई है, वैसी किसी अन्य प्राणीमें नहीं हुई । इसलिये उक्त मन्त्रमें कहा है कि— (१) जिस प्रकार मनुष्यरूप अग्निको मानवजातिके पितृस्थानमें देवोंने उत्पन्न किया, (२) उसी प्रकार वाणीको मानवजातिकी शासनकर्त्री देवोंने बनाई । और मानवका इस वाणीके साथ सम्बन्ध भी कर दिया है । इसलिये वाणी मनुष्य की ही अर्धांगी है । अन्य प्राणियोंमें और मनुष्योंमें यदि किसी विशेष गुण के कारण भेद है, तो इस वाणीके कारण ही है । मनुष्यने इस वाणीके कारण ही इतनी उन्नति की है । अनादि कालसे जो ज्ञानका संग्रह हो रहा है, वह वाणी के कारण ही है और यह ज्ञानही, जो वाणीद्वारा प्राप्त हो रहा है, वही मानवजातिका शासन कर रहा है । इस प्रकार देखनेसे पता लग सकता है, कि वेदका कथन कितना ठीक है । तात्पर्य (१) पहला मानवप्राणी अग्नि है, (२) और उसकी ‘अग्नायी’ वाणी ही है ।

अग्नि	अग्नायी
प्रथम मनुष्य	इळा (वाणी)
यम	यमी
शासक	शासनी
विदपति	विदपत्नी
पिता	माता
आत्मा	अवा (रक्षणशक्ति)
आदम	हव्वा

‘इळा’ शब्दका दूसरा अर्थ ‘भूमि’ है । भूमि बीज बोनेके लिये होती है । मनुष्य अपना ज्ञानरूप बीज इस वाणी में बोता है और इस प्रकार जो ज्ञानवृक्ष फैलता है, उसके फलही हम आज खा रहे हैं । इसके अतिरिक्त भूमि का अर्थ क्षेत्र है और स्त्रीको भी क्षेत्र कहते हैं । इस अर्थ के लेनेसे यह तात्पर्य होगा कि, देवोंने एक पुरुष और एक स्त्री सबसे प्रथम निर्माण की । इसलिये कि यह पुरुष अपने वीर्यसे इस स्त्रीमें पुत्र और पुत्रियाँ उत्पन्न करे । और इस प्रकार ममत्वसे संतति उत्पन्न हो । इसी रीतिसे यह संतति उत्पन्न हो गई है ।

(५) वृषभ और धेनु ।

‘इळा’ शब्द का तीसरा अर्थ ‘गाय’ है और गायवाचक ‘गो’ शब्दके संस्कृतमें ‘वाणी, भूमि और गाय’ ऐसे अर्थ

हैं । तात्पर्य ये शब्द परस्परों के वाचक हैं । इस भाव को लेकर निम्न मंत्र देखिये—

असत्त्व सत्त्व परमे व्योमन् दक्षस्य जन्ममदिते-
रुपस्थे । अग्निर्ह नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं आयुनि
वृषभश्च धेनुः ॥ (१५१९; ऋ० १०।५।७)

‘(दक्षस्य जन्मन्) दक्ष के जन्म के समय (आदितेः उपस्थे) आदितिके पास (परमे व्योमन्) परम आकाश में असत् और सत् ये दो पदार्थ थे । अग्निही हमारा (ऋतस्य प्रथमजाः) ऋत का पहला प्रवर्तक है और पूर्व आयु में वृषभ और धेनु हैं ।’ पूर्व आयु में अग्नि वृषभ था और उसकी धर्मपत्नी धेनु थी । वृषभ शब्द का अर्थ वीर्यवान् और धेनु शब्द का अर्थ वीर्य का धारण करनेवाली है । पूर्व कोष्ठकमें निम्न शब्द और मिलाइये—

अग्नि	अग्नाग्नी
वृषभ	धेनुः
पुरुषशक्ति	स्त्रीशक्ति
क्षेत्रपति	इला (क्षेत्र)
वाक्पति, गोपति	गौः (वाक्)

उक्त मन्त्रमें भी कहा है कि “अग्नि पहला प्रवर्तक” अर्थात् शासक है । अग्नि मनुष्यरूपमें अवतीर्ण होनेके पूर्व आयुमें “वृषभ” रूपमें था । अर्थात् पशुरूपमें था, तत्पश्चात् वही मनुष्यरूपमें प्रकट हुआ है । यह कथन ‘उत्क्रांतिवाद’ का सूचक है । वैदिक उत्क्रांतिवादका तत्त्व बतानेके लिये इस निबंधमें स्थान नहीं है, तथापि उक्त बातमें वैदिक उत्क्रांतिवाद की ध्वनि है, इतनाही यहां बताना है । इस प्रकार अग्नि न केवल मनुष्योंमें है, प्रत्युत पशुपक्षियोंमें भी है, यह बात उक्त कथनसे सिद्ध होती है । पशुपक्षियोंमें जो अग्नि होगा, उसका विचार हम किसी अन्य स्थानमें करेंगे, यहां मनुष्योंमें जो पहला मानव अग्नि हुआ, उसीका अधिक विचार करना है । इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

(६) पहला अंगिरा ऋषि ।

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः
शिवः सखा । तव व्रते कवयो विद्वानापसोऽ-
जायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः ॥ (५०; ऋ. १।३१।१)

‘हे अग्ने ! (त्वं प्रथमः अंगिरा ऋषिः) तू पहला अंगिरा ऋषि है । तू स्वयं (देवः) दिव्य शक्तिसे युक्त है और (देवानां शिवः सखा अभवः) देवोंका शुभ मित्र हुआ है । (तव व्रते) तेरे नियम में (विद्वानापसः) ज्ञानयुक्त होकर पुरुषार्थ करनेवाले (मरुतः कवयः) मर्त्य कवि (भ्राज-दृष्टयः) तेजस्वी दृष्टिसे युक्त होते हैं ।’ इस मन्त्रमें कहा है कि, पहला ‘अंगिरा ऋषि’ अग्नि ही है, इसेही पहला मानव समझना उचित है । पहला मानव जो अंगिरा ऋषि था, वही अग्नि नामसे प्रसिद्ध है । तथा और देखिये—

त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविर्देवानां परि-
भूषसि व्रतं । विभुर्विश्वस्मै भुवनाय मेधिरो
द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे ॥ (५१; ऋ. १।३१।२)

‘हे अग्ने ! तू (प्रथमः अंगिरस्तमः कविः) अंगिरसोंमें पहला कवि है और (देवानां व्रतं) देवोंका व्रत सुभूषित करता है । तू (विभू) विशेष प्रकार होनेवाला (विश्वस्मै भुवनाय) सब भुवनों अर्थात् बने हुए प्राणी आदिकोंके लिये (मेधि-रः) बुद्धिसे प्रकाशित करनेवाला, (द्विमाता) दोनों पुरुषार्थोंका निर्माता तथा (आयवे) मनुष्यमात्रके लिये (कतिधा चिन्) कई प्रकारसे (शयुः) आराम देनेवाला है ।’

इस मन्त्रमें कहा है कि, अंगिरसोंमें सबसे पहला कवि अग्नि ही है । यही मनुष्योंमें पहला मानव अग्नि है । वाणी इसके साथ उत्पन्न हुई थी, अतः यह कवि है । यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यदि पहला मानवप्राणी ही अग्नि है, तो उसीकी संतति भी अग्निरूप ही होनी चाहिये, अर्थात् जैसा एक मानवप्राणी अग्नि है, उसी प्रकार मानव-जाति भी अग्नि ही होनी चाहिये । जैसी एक व्यक्ति होती है, वैसाही उसका समाज होता है, इस सार्वमानुष अग्नि का वर्णन निम्न मंत्रमें हुआ है । देखिये—

(७) वैश्वानर अग्नि ।

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर्भरद्वाजेषु यजतो
विभावा । शातवनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीये
जरते सूनृतावान् ॥ (१७२९; ऋ० १।५१।७)

‘वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्वसे (विश्व-कृष्टिः) सर्व मनुष्य ही है । (भरत्-वाजेषु) पोषक अन्नों के यज्ञों में (यजतः)

पूजनीय और (विभावा) विशेष प्रभावयुक्त है । (सूता-वाङ्) सत्य वाणी से युक्त होने के कारण यह (अग्निः) सर्व मनुष्यरूप अग्नि (शात-वनेये) सैकड़ों द्वारा जहां सेवन होता है, ऐसे (पुरु-नीथे) बहुतांश के नेतृत्वसे चलने-वाले कार्यों में (शतिनीभिः) सैकड़ों की संख्याओं से (जरते) प्रशंसित होता है । '

‘विश्व+कृष्टिः’ अर्थात् ‘सर्व-मनुष्य’ रूप ही यह अग्नि है । मनुष्यों का समाजरूप ही यह अग्नि है । इसी का नाम ‘वैश्वानर’ अग्नि है । ‘विश्व-नर’ शब्द का अर्थ भी ‘सर्व मनुष्य’ ही है । सब मनुष्यों का जो एक संघ होता है, उस के अन्दर एक प्रकार का तेज रहता है, यही वैश्वानर अग्नि है । इस को ‘राष्ट्रीय जीवनाग्नि’ अथवा ‘सामाजिक जीवनाग्नि’ समझिये । इस के छोटे नाम ‘राष्ट्राग्नि, सामाजिक अग्नि’ है । इस की पूजा उन यज्ञों में होती है, कि जिन में (भरत-वाज) अन्न और बल का संवर्धन करना होता है । संघ के कारण बल-संवर्धन होना प्रत्यक्ष ही है । इसलिये जिस जाति में अपना बल बढ़ाने की सदिच्छा होती है, उसी में ‘वैश्वानर अग्निकी उपासना’ की जाति है । मानवसंघरूप अग्नि की उपासना वे ही करेंगे कि, जो संघशक्ति बढ़ाना चाहते हैं । वैश्वानर में (विश्व-नर) सब मनुष्यों की अभेद्य संघशक्ति की निश्चित कल्पना है । वही भाव ‘विश्व-कृष्टि’ में है । इस शब्द का भाव श्रीसायणाचार्य निम्न प्रकार देते हैं—

विश्वकृष्टिः । कृष्टिरिति मनुष्य नाम । विश्वे सर्वे मनुष्याः यस्य स्वभूताः स तथोक्तः ।

(ऋ. सायणभाष्य १-५९ ७)

वैश्वानरः सर्वनेता । विश्वकृष्टिः विश्वा. सर्वाः

कृष्टीर्मनुष्यादिकाः प्रजाः ॥

(ऋ. दयानन्दभाष्य १-५९-७)

सायणभाष्य—कृष्टि मनुष्यवाचक शब्द है । सब मनुष्य जिस के लिये अपने ही निज होते हैं, वह विश्व-कृष्टि है । दयानन्दभाष्य—वैश्वानर सब का नेता है । विश्वकृष्टि सब प्रजाओं का संघ है ।

दोनों भाष्यकारों के उक्त अर्थ देखनेयोग्य हैं । सब प्रजाओं का जो एक अभेद्य संघ होता है, उस का नाम

‘विश्व-कृष्टि अग्नि’ है । इसी का वर्णन निम्न लिप्ता मंत्र में देखिये—

स वाजं विश्वचर्षणिरर्वद्धिरस्तु तरुता ॥

विप्रेभिरस्तु सनिता ॥ (४६; ऋ. १-२७-९)

‘वह (विश्व-चर्षणि) सर्व-मनुष्यरूप अग्नि (अर्वद्धिः) फूर्तिवालों के साथ (वाजं) युद्ध के (तरुता) पार होनेवाला और (विप्रेभिः) ज्ञातियों के साथ (सनिता) पूज्य (अस्तु) होवे ।’

यह अग्नि ही मानवों का संघ बनाता है, यही इस का तात्पर्य है ।

(८) ब्राह्मण और क्षत्रिय ।

मानवजातिरूप जो समाज है, वह पुरुषार्थियों के प्रयत्नोंद्वारा आपत्ति से पार होता है और ज्ञानियों के उद्योग से पूज्य होता है । ‘अर्वन्’ शब्द ‘गमन करने-वाला, हलचल करनेवाला, प्रयत्नशील, पुरुषार्थी, घोडा जिस के पास है, घुडसवार’ इन अर्थोंमें प्रयुक्त होता है । इसलिये यह क्षत्रियों का सूचक है, तथा ‘विप्र’ शब्द विशेषतः ज्ञानी का भाव बताता है, इसलिये ब्राह्मणों का बोधक है । यह अर्थ लेने से उक्त मंत्र का भाव निम्न प्रकार बनता है— ‘सर्व-मनुष्यसंघरूपी जो अग्नि है, वह क्षत्रियों के प्रयत्नों से युद्धों में यशस्वी होता है, और ब्राह्मणों के प्रयत्न से वंदनीय होता है ।’ इस प्रकार क्षत्रियों और ब्राह्मणों के द्वारा इस मानवसंघ की उन्नति होती रहती है । ब्राह्मण-क्षत्रियों के संघ का मद्द्त्वे वेद में अन्यत्र बहुत स्थानों पर वर्णन किया है, देखिये—

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यंचौ चरतः सह ॥

तं देशं पुण्यं प्रक्षेपं यत्र देवाः सहाग्निना ॥ य. २०-२५

‘जहां (ब्रह्म क्षत्रं च) ब्राह्मण और क्षत्रिय (सम्यंचौ सह चरतः) मिल कर हलचल करते हैं, वही पुण्यदेश है, और (प्रज्ञा-हृषं) बुद्धिसे इच्छा करनेयोग्य है, तथा वहांही देव अग्निके साथ रहते हैं ।’

ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी मिलजुलकर जो हलचल होती है, वही राष्ट्रीय हलचल होती है । क्योंकि येही राष्ट्र के प्रधान अवयव हैं । वास्तव में यह ब्राह्मण-क्षत्रियोंकी हलचल नहीं है, परन्तु (ब्रह्म क्षत्रं) ज्ञान और पुरुषार्थकी संगठित हलचलही है । जहां ज्ञान और कर्मका संगठित कार्य

होता है, वहांही सिद्धि मिलती है। सब मनुष्य जिस अग्निसे संबधित हुए हैं, वह विश्वकृष्टि, वैश्वानर या विश्वचर्षणि अग्नि है। इस प्रकार जो अभेद्य संघ होता है, उसीका नाम “ विश्व-कृष्टि ” अग्नि है। इस विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

मंद्रं होतारं शुचिमद्वयाविनं दमूनसमुक्थं विश्वचर्षणिम्॥ रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदमिद् राय ईमह॥ (१७४१, ऋ० ३।१।१५)

‘ (मंद्र) आनंदकारक (होतारं) दाता (शुचिं) पवित्र (अद्वयाविनं) द्वैत अर्थात् झगडा जिसमें नहीं है, (दमूनसं) संयमी, (उक्थं) प्रशंसनीय, (मनुः-हितं) मनुष्यमात्रका हित करनेमें तत्पर ऐसे (विश्व-चर्षणिं) सर्व-मनुष्यसंवरुण अग्निकी (सद इत्) सदा (राये) श्रेष्ठ ऐश्वर्यके लिए (ईमहे) हम प्राप्ति करते हैं, जिस प्रकार सुन्दर दर्शनीय आकृतिसे युक्त रथकी प्राप्ति की जाती है ।’

इस मंत्र में ‘ सार्व-मानुष अग्नि ’ के कई गुण वर्णन किये हैं। उनका विचार करनेसे ‘ राष्ट्र-अग्नि ’ का स्वरूप ठीक ध्यान में आ सकता है। ‘ अ-द्वयाविन् ’ यह शब्द जाति जाति के आपस के झगडों का निषेध कर रहा है। जिन में आपस के झगडे नहीं हैं, परस्पर कष्ट और ईर्ष्याद्वेष के भाव नहीं हैं और जो मानवसंघ एकता से अपनी शक्ति बढ़ा रहा है; परस्पर अभेद्य एकता प्रस्थापित कर जो उन्नति प्राप्त कर रहा है और जो निष्कपट भाव के आचरण करने के कारण उन्नत हो रहा है, उस प्रकार का अभेद्य मानवसंघ इस शब्द से बोधित हो रहा है। ‘ मनुः+हितं ’ मनुष्यमात्र का हित करनेवाला, यह भाव इस शब्द में है। मानवसंघ निष्कपट भाव से जो कार्य करेगा, उस से संपूर्ण मनुष्यों का ही हित होगा, इस में संदेह ही नहीं हो सकता। ‘ दमू-नस् = जिस का मन स्वाधीन है, अर्थात् जो संयमी है। तात्पर्य, जो नियमों से बंधा है और नियमानुकूल चल रहा है। नियम छोड़कर स्वेच्छासे जो स्वैर वर्तन नहीं करता, इस प्रकारका जो मनुष्य तथा मानवसंघ होता है, वही उन्नति प्राप्त कर सकता है। इन शब्दों के विचार से वैदिक राष्ट्रीय अग्नि का पता लग सकता है। इस के संवर्धन का उपाय देखिये।

(१) अग्निसंवर्धन ।

अग्नि घृतेन वावृधुः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम्॥
स्वाधीभिर्वचस्युभिः॥ (८६५; ऋ० ५-१४-६)
‘ (विश्व-चर्षणिं अग्निं) सार्व-मानुष अग्निकी (घृतेन तेजस्वितासे (स्तोमेभिः) संघभावसे (स्वा-धीभिः) आत्म-बुद्धिसे तथा (वचस्युभिः) वाणीके योगसे (वावृधुः) बढ़ाते हैं ।’ यह मंत्र विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है। ‘ घृत ’ शब्दके दो अर्थ हैं, घी और तेजस्विता। ‘ स्तोम ’ शब्द के भी दो अर्थ हैं— यज्ञ और संघभाव (group, assemblage)। ‘ स्वा-धी ’ शब्द के दो अर्थ हैं— अध्ययन और आत्मबुद्धि । ‘ वचस्+यु ’ के दो अर्थ हैं, प्रशंसाकी इच्छा और मंत्रणा, सुविचार इ०। ये सब अर्थ लेकर सार्वजनिक भावदर्शक उक्त मंत्र का तात्पर्य निम्न प्रकार है। ‘ सर्व-मानव-संघरूप जो अग्नि है, वह तेजस्विता, संघ-भाव, आत्म-बुद्धि तथा सुविचारसे बढ़ाया जाता है ।’ मनुष्यसंघ का हित इन गुणों से होता है। इसलिये जिस राष्ट्र को अपना उद्धार करना है, उस को चाहिये कि, वह अपने अन्दर तेजस्विता, संघभाव, एकता, आत्मबुद्धि, तथा सुविचार आदि गुण बढ़ावे। यही राष्ट्रीय उन्नति का मूल मंत्र है। अस्तु। उक्त मंत्र में सार्वमानुष अग्निकी उन्नति का मार्ग बताया है। यह सार्वजनिक अग्नि क्या देता है, इसका वर्णन निम्न लिखित मंत्र में देखनेयोग्य है—

अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति त्रिभ्यचर्षणिः॥
अग्नी राये स्वाभुवं स प्रीतो याति वार्यमिषं स्तोतृभ्य आभर॥ (१०३; ऋ० ५-६-३)
‘ यह (विश्व-चर्षणि. अग्निः) सार्वमानुष अग्नि (विशे) प्रजाओं के लिये (वाजिनं) अन्नयुक्त बल देता है। यह अग्नि सन्तुष्ट (प्रीतः) होकर (राये) ऐश्वर्य के लिये (सु+आभुवं वार्य इषं) उत्तम प्रभावयुक्त वरणीय अन्न (याति) प्राप्त करता है। यह सब याजकों को भर दो ।’
मानवसंघरूप यह अग्नि यदि संतुष्ट हुआ, तो सब प्रजाओं को अन्न, बल, संतति, यश, प्रभाव, ऐश्वर्य तथा हरएक प्रकार का इष्ट सुख देता है। इसलिये इस की संतुष्टि सिद्ध करनी चाहिये। संघ, समाज और राष्ट्र की संतुष्टि उस के स्वातन्त्र्य के संरक्षण से होती है। “ व्यक्ति-

स्वातन्त्र्य और संघ का नियमन योग्य रीति से होने से इस की संतुष्टता होती है । व्यक्तिस्वातन्त्र्य संघभाव का घातक न हो और संघभाव व्यक्ति को परतन्त्र न बनावे; यह उपदेश निम्न मंत्रों में कहा है—

(.१०) व्यक्तिभाव और संघभाव ।

(१) अंधं तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ॥९॥

(२) अन्यदेवाहुः सम्भवादन्यदाहुरसम्भवात् ।

इति शश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचक्षिरे ॥१०॥

(३) सम्भूतिं च विनाशं च यस्तद्वेदोभयं सह ।

विनाशेन मृत्युं तीर्त्वा सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥११॥

(वा० य० ४०; ईश० उ० १२-१४)

‘ (१) जो (अ-सं-भूति) केवल अ-संघभाव अर्थात् व्यक्तिभावकी उपासना करते हैं, वे अंधकार में गिरते हैं; तथा उससे घने अंधकार में वे पहुँचते हैं, कि जो केवल (सं-भूत्यां) संघभाव में ही रमते हैं । (२) संघभाव का फल भिन्न है और व्यक्तिभाव का फल भिन्न है, ऐसा धीर लोग कहते आये हैं । (३) संघभाव और असंघभाव किंवा व्यक्तिभाव को जो साथ साथ उपयोगी समझते हैं, वे व्यक्तिभाव से अपमृत्यु आदि के कष्ट दूर करके संघभाव से अमर होते हैं । ’

संघभाव की उपासना करने की वैदिक रीति इसमें दी है । केवल सङ्घभाव बढ़ाया गया, तो व्यक्ति की सत्ता दब जाती है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य नष्ट होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति में परतन्त्रता बढ़ने से सब समाज कालांतर से परतन्त्र हो जाता है, यह दोष संघभाव का अतिरेक करने से होता है । तथा जो व्यक्तिस्वातन्त्र्य को हृदय से अधिक बढ़ाते हैं, उनमें संघशक्ति बढ़ नहीं सकती, क्योंकि हर एक व्यक्ति किसी एक नियमना में बद्ध नहीं होती । इसलिये उक्त गुण केवल अकेला अकेलाही रहने से लाभदायक नहीं होता । परन्तु संघभाव से बल बढ़ता है और व्यक्तिस्वातन्त्र्य से हर एक की शक्ति विकसित होती है, यह देख कर बुद्धिमान् पुरुष धुक्तसे संघभाव को भी बढ़ाते हैं और सीमित व्यक्तिस्वातन्त्र्यको भी सीमित रखते हैं । इस प्रकार करने से वैयक्तिक शक्तियों की वृद्धि होती है और संघभाव से समाज में बल भी बढ़ जाता है । यही समविकास

का वैदिक सिद्धांत है और मानवसंघ की सच्ची उन्नति करने का यही उपाय है । इस रीति से जो जनता अपना समविकास करती है, उनका समाज अथवा राष्ट्र प्रसन्न होता है और उन प्रजाजनों में पूर्वमंत्रोक्त आनन्द पाया जाता है । इस संघरूप अग्नि से और एक लाभ होता है, उसे भी यहां देखिये—

(११) संघशक्ति का अद्भुत बल ।

स हि ध्मा विश्वचर्षणिरभिमाति सहो दधे ।

अग्न एषु क्षयेष्वा रेवन्नः शुक्र दीदिहि धुमत्

पावक दीदिहि ॥ (१०६, ऋ० ५।२३।४)

‘ वह (विश्व-चर्षणिः) सार्व-मानुष अग्नि (अभि-माति) शत्रु का नाश करने का (सहः) बल (दधे) धारण करता है । हे (शुक्र अग्ने) शुद्ध अग्ने ! हमारे (अयेषु) स्थानों में (रेवन्) धनयुक्त (दीदिहि) प्रकाश रखो । हे (धुमत् पावक) तेजस्वी शुद्धिकर्ता ! प्रकाश करो । ’

सर्व मनुष्यों के संघ का जो एक राष्ट्रमि है, वह शत्रु का नाश करने का बल अपने राष्ट्र में रखता है । इसका तात्पर्य स्पष्ट ही है । संघशक्ति से समाज में जो एकता पाई जाती है, उससे उस समाज में इतना बल बढ़ जाता है कि, उस के सामने कोई शत्रु ठहर नहीं सकता । जो अपनी राष्ट्रीयता का विकास करना चाहते हैं, उन को इस मंत्र से बहुत ही बोध मिल सकता है । जो राष्ट्र अपनी संघशक्ति बढ़ावेगा, उस की शक्ति भी वैसा प्रचंड हो जायगी ।

विश्वचर्षणिः= विश्वे चर्षणयो मनुष्या रक्षणीया यस्य ।

(ऋ० सायणभाष्य ५ ६-२)

‘ सब मनुष्य जिस के रक्षणीय है, उस का नाम विश्वचर्षणि है । ’ यह सार्वमानुष अग्नि है । सब मनुष्यों का संघ ही यह अग्नि है । इसी प्रकार सर्व मनुष्यों के संघ के दर्शक शब्द वेद में बहुत हैं, देखिये—

विश्व+कृष्टिः= सर्व मनुष्य, सब कृष्टि करनेवाले ।

विश्व+चर्षणिः= , , , , ,

विश्वायुः (विश्व+आयुः)= सब मनुष्य (पूर्णायुषी मानव) ।

विश्व+अन्यः= सब जनों के संबंध में उत्पन्न ।

पाँच+जन्यः= पंच जनो के संबन्ध से उत्पन्न ।
ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषा-
दों के संघ से बननेवाला एक राष्ट्र ।

विश्व+मानुषः= सब मनुष्यों से बना हुआ संघ ।

विश्वा+नरः { संपूर्ण मनुष्यों का संघ, अथवा सब
वैश्वा+नरः { = का नेता ।

सर्व+पुरुषः= सब पुरुषों से युक्त ।

इन सब वैदिक शब्दों का भाव अत्यन्त स्पष्ट है । इस-
लिये इन का अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता
नहीं । तथा अग्निदेवता से भिन्न अन्य देवों के मंत्रों में
जो इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग हुआ है, उन का यहां
अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है । जो शब्द
अग्निस्तोत्रों में आ गये हैं, उन का विचार इस के पूर्व
किया ही है । उसमें दिये मंत्रों से ' सर्व-जन-सङ्घ ' की
वैदिक कल्पना पाठकों के मन में आ चुकी होगी ।
यही संघात्मक अग्नि है, अथवा इस को राष्ट्रीय अग्नि भी
कह सकते हैं । अस्तु । इस प्रकार हमने देखा कि, (१)
एक मनुष्य भी अग्नि है और (२) मानवसंघ भी एक प्रकार
का अग्नि है । यह स्पष्ट ही है कि, यदि एक मनुष्य अग्नि-
रूप है, तो उस का संघ भी अग्निरूप ही होना चाहिये,
तथा जो संघ अग्निरूप होगा, उस का एक अवयव भी
अग्निरूप ही होना चाहिये । तात्पर्य, मनुष्य और मानव-
संघ ये दोनों अग्निरूप हैं । यही ' वैश्वानर अग्नि ' है ।
देखिये इस का वर्णन—

वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिः ॥ (ऋ० १-५९-७)

' वैश्वानर अग्नि अपने महत्त्व से सब-मनुष्य ही है । '

इस से वैश्वानर अग्नि की उत्तम कल्पना हो सकती है ।
सब मनुष्यों का जो एक संघ है, वही वैश्वानर है । ' विश्व-
नर ' शब्द का अर्थ ' सब-मनुष्य ' ऐसा ही है, वही भाव
वैश्वानर शब्द से व्यक्त होता है । इसका और वर्णन देखिये—

(१२) जनता का केंद्र ।

वया इदं अग्नयस्ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता
मादयन्ते ॥ वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव
जना उपमिद्यतन्ध ॥ (१७१७; ऋ० १-५९-१)

' हे अग्ने ! (ते अन्ये अग्नयः) वे दूसरे अग्नि (त्वे)
तेरे अन्दर (वया इव) शाखाओं के समानही हैं । वे

सब अमृत अग्नि तेरेमे ही (मादयन्ते) हविर्न होते हैं ।
हे वैश्वानर अग्ने ! तू (क्षितीनां नाभिः) सब मनुष्यों का
केंद्र है । तू (स्थूणा इव) स्तंभ के समान (जनान्) सब
जनता का तू आधार है । '

अग्नि का अर्थ एक मनुष्य और वैश्वानर का अर्थ मनुष्य-
संघ । ये अर्थ पहले बताये ही हैं । ये अर्थ लेकर ' इस मंत्र
का भाव निम्न प्रकार होता है । ' हे मानवसंघ ! ये सब
मनुष्य तेरी शाखायें ही हैं । तेरे आधार से ही ये सब
मनुष्य अमर बने हैं । तू सब जनता का केंद्र है । जिस
प्रकार स्तंभ आधार देता है, उस प्रकार तू ही इन सब का
आधार है । '

(१३) समाज का अमरत्व ।

संघ, समाज अथवा राष्ट्र सब मनुष्यों का आधार है,
सब का केंद्र है, सब का उपास्य और सब का आधार है ।
सब मनुष्य संघभाव से ही अमर होते हैं । यद्यपि एक
एक व्यक्ति मरती है, तथापि जाति अमर होती है ।

सम्भूत्याऽमृतमश्नुते ॥ (वा० य० ४०१११)

' (सं+भूत्या. एकीभूय संस्थित्या) संघभाव से अमरत्व
प्राप्त होता है । ' यही भाव पूर्वोक्त मंत्र में स्पष्ट शब्दों से
कहा है, देखिये— (१) सब अन्य मनुष्य राष्ट्र-पुरुष की
शाखायें हैं, राष्ट्रपुरुष वृक्ष है और जनता उसकी फैली हुई
शाखायें हैं, (२) राष्ट्र के आधार से सब जनता अमर
है, यद्यपि एक एक व्यक्ति मरती है, तथापि राष्ट्र अमर है ।
(३) राष्ट्र ही सब जनता का केंद्र है, (४) राष्ट्र ही सब
जनता का आधारस्तंभ है । वैश्वानर का अर्थ ठीक समझने
से वेदमंत्रों के अर्थ इस प्रकार सुगम हो जाते हैं । वैश्वानर
की उत्पत्ति के विषय में निम्न मंत्र देखिये—

तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं

वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय ॥ (१७१८, ऋ० १५९१२)

' हे वैश्वानर ! तुझे देवों ने देव बनाया है, क्योंकि तू
आर्यों के लिये ज्योति है । ' मानवसंघरूपी यह देव
देवों के द्वारा इसलिये निर्माण हुआ कि, यह आर्यों के
लिये उन्नति का मार्ग बतानेवाला दीप बने । अर्थात्
इसके तेज से अपनी उन्नति का मार्ग आर्य देख सकते
हैं, और चल कर अभ्युदय प्राप्त कर सकते हैं । इससे
स्पष्ट है कि, सब आर्यों को अपने पञ्चजनरूपी राष्ट्र को ही

देव मानना चाहिये और उसके साथ अपनी उन्नति प्राप्त करनी चाहिये । तथा—

आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवास्तो वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसुनि । या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषे ष्वसि तस्य राजा ॥ (१७१९; ऋ० १।५९।३)

‘जिस प्रकार सूर्य में किरणें स्थिर हैं उसी प्रकार इस वैश्वानर अग्नि में धन स्थिर हैं । जो धन पर्वतों औषधियों और मनुष्यों में हैं, उन सब का तू राजा है ।’

(१४) सब धन संघका ही है ।

सब धन मानवसंघ का ही है । उस पर किसी व्यक्ति का अधिकार नहीं है । जो धन पर्वतों में, वृक्षों और वनस्पतियों में, तथा मनुष्यों में अथवा भूमि आदि में है, वह सब मानवसंघ का ही है । व्यक्ति के पास जो धन है, वह भी उस व्यक्ति को, प्रसंग आने पर, संघ के चरणों पर न्यौछावर करना आवश्यक है । मनुष्यों के पास तन, मन, धन जो कुछ है, वह सब जाति का ही है, इसलिये योग्य समय आते ही श्रेष्ठ पुरुष अपने सर्वस्वकी आहुति राष्ट्र-पुरुष की पूजा करने के लिये अर्पण कर देते हैं । क्योंकि वही सर्वस्व का सच्चा राजा है । देखिये—

स्वर्वते सत्यशुभाय पूर्वावैश्वानराय नृतमाय यद्भीः ॥ (१७२०; ऋ० १।५९।४)

‘(सु+अर्वते) उत्तम हलचल करनेवाले, (सत्य+शुभाय) सच्चे बलवान् (नृ+तमाय) अत्यंत मनुष्यों से युक्त (वैश्वा+नराय) सब मानवसंघ के लिये (पूर्वाः) सनातन (यद्भीः) बड़ी प्रशंसा होती है ।’ अर्थात् जो पंचजन मानवसंघ किंवा राष्ट्र उत्तम हलचल करता है, सच्चा बल रखता है और संख्या में अत्यंत अधिक मनुष्यों से युक्त है, वही प्रशंसनीय है । इसलिये राष्ट्रीय उन्नति चाहनेवालों को चाहिये कि, वे (सु+अर्वत्) अच्छी हलचल करें, (सत्य+शुभम्) सच्चा बल प्राप्त करें, (नृ+तमः) अपने मनुष्यों की संख्या अधिक से अधिक बढ़ावें, ऐसा करने से ही उनकी सर्वत्र प्रशंसा होगी । तथा और देखिये—

दिवश्चित्ते बृहतो जातवेदो वैश्वानरः प्ररिचिते महिषम् ॥ राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश्चकथ ॥ (१७२१; ऋ० १।५९।५)

‘हे जातवेद वैश्वानर ! तेरी महिमा बड़े बुलोक से भी अधिक फैली है । तू (मानुषीणां कृष्टीनां) मानवी प्रजाओं का राजा है । युद्ध से तूही देवों के लिये धन देता है ।’

मानवी संघ की महिमा सब से बड़ी है । यही संघ मानवों का राजा अर्थात् सच्चा राजा है । युद्ध में विजय इसी के कारण होता है । राष्ट्रीय भावना से, जातीय महत्वाकांक्षा से प्रेरित हो कर जो युद्ध करते हैं, उनका ही विजय होता है । देश के हित के लिये लड़ने का उपदेश इस मंत्र से सूचित होता है । इस प्रकार इस सूक्त में मानव-संघ का स्वरूप बताया है । यहाँ वैश्वानर अग्नि है । इसका और वर्णन देखिये ।

(१५) संघ के विजयमें व्यक्ति का जय ।

अस्माकमग्ने मघवत्सु धारयानामि क्षत्रमजरं सुवीर्यं । वयं जयेम शतिनं सहस्रिणं वैश्वानर वाजमग्ने तवोतिभिः । (१७८५; ऋ० ६।८।६)

‘हे वैश्वानर अग्ने ! हमारे (मघ+वत्सु) धनिकों में उत्तम वीर्ययुक्त क्षात्र तेज धारण कर । तेरे संरक्षकों से हम सब सौ अथवा हजारों सैनिकों के साथ हमला करनेवाले शत्रु को भी पराजित करेंगे ।’

मानवसंघ के प्रेमसे लड़नेवालोंको इस प्रकार बल प्राप्त होना स्वाभाविक ही है । जो अपने राष्ट्रहितके लिये जागते हैं, उनसे ही राष्ट्री उन्नति होती है, इस विषयमें कहा है— वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः ॥ (१७९४; ऋ० ७।५।१)

‘मानवसंघरूप अग्नि जागनेवालोंके द्वाराही बढ़ता है ।’ जो लोग अपनी जातीय उन्नतिके लिये जागते हैं, वेही अपनी जातीय अथवा राष्ट्रीय उन्नति सिद्ध करते हैं । अस्तु । इस प्रकार सर्व मनुष्यों के संघरूप अग्नि का वर्णन वेद में है । इतने स्पष्टीकरण से पाठकों को पता लगा ही होगा कि, जिस प्रकार एक मनुष्य-विशेषतः पहिला मनुष्य-अग्नि है, उसी प्रकार मानवसमाज भी अग्नि है । इसीलिये धर्म-कर्मों में एक मनुष्य के साथ अग्नि उपासना का सम्बन्ध आता है; अग्निकार्य, हवन, आदि धार्मिक विधियों में वैयक्तिक अग्नि की उपासना है । तथा सामाजिक, जातीय, राष्ट्रीय अथवा सामुदायिक अग्निपूजा भी सामाजिक अग्नि की सोतक है इस । सामुदायिक पूजा का रूप अग्निष्टोम

ज्योतिष्टोम, अश्वमेध, वाजपेय आदि महान् यज्ञों में दिखाई देता है। व्यक्तिगत अग्नि तथा सामुदायिक अग्नि जो कुंडों में जलाया जाता है, वह सब के मनो का केंद्रीकरण करने के लिये ही है। वास्तविक उस का स्वरूप वैयक्तिक और सामुदायिक दृष्टि से जो वेदमंत्रों में है, वह ऊपर बताया ही है। अब वैयक्तिक अग्नि की और अधिक खोज करने की आवश्यकता है, इसलिये निम्न मंत्र देखिये—

(१६) बुद्धि में पहिला अग्नि ।

अग्निं वो देव यज्ययाग्निं प्रयत्यध्वरे ॥ अग्निं धीषु प्रथममग्निमर्वत्यग्निं क्षेत्राय साधसे । (१४२०, ऋ. ८-७१-१२)

‘ (१) (देव-यज्यया) देवों के यज्ञ से आप के पास एक अग्नि है । (२) (अध्वरे प्रयति) यज्ञ की प्रगति में एक अग्नि है । (३) (धीषु प्रथमं अग्निं) बुद्धियों में पहला एक अग्नि है । (४) (अर्वति अग्निं) हलचल करनेवाले में एक अग्नि है । (५) (क्षेत्राय साधसे अग्निं) भूमिकी प्राप्ति करानेवाला एक अग्नि है । इन सबकी पूजा मैं करता हूँ । ’ इस मंत्र में पांच प्रकार की अग्नियों का वर्णन है । इन में एक अग्नि है, जो यज्ञकुंड में प्रदीप्त होता है । दूसरा अग्नि बड़े बड़े अध्वरों में जलता रहता है । तीसरा अग्नि मनुष्यों की बुद्धि में है, जिस की चेतना से मनुष्य धारणाशक्ति के कार्य करता है । चौथा अग्नि सामुदायिक हलचल करनेवालों में होता है । इसलिये इनकी हलचल से जनता में एक प्रकार की आग जलती हुई दिखाई देती है । पांचवां अग्नि क्षत्रियों में जलता है और उस के कारण वे अपने राज्य का विस्तार करते रहते हैं । इन पांच अग्नियों में पहले तीन अग्नि ब्राह्मण्य के साथ विशेषतः सम्बन्ध रखते हैं और आगे के दो अग्नि क्षत्रियों के साथ विशेष कर सम्बन्ध रखते हैं । जो पाठक इस मंत्र का विचार करेंगे, उन को ‘ अग्नि ’ शब्द के व्यापक भाव का पता लग सकता है । हवनों और यागों में जलनेवाला अग्नि और है, और मानवी बुद्धियों में जलनेवाला ‘ ज्ञानाग्नि ’ उससे भिन्न है । इस ज्ञानाग्नि को प्रदीप्त करने की और उस में ज्ञान के हवन की विधि भी भिन्न ही है । हलचल कर के सामुदायिक जीवन पैदा करनेवालों में तथा राज्य-विस्तार करनेवाले क्षत्रियों के जोश में जो अग्नि होता है, वह और ही है । विचारकी दृष्टिसे इन अग्नियोंकी निश्चित

कल्पना करनी चाहिये । हवनों और यज्ञों में प्रयुक्त होने-वाले अग्नि को सब जानते ही हैं । इसलिये उसका अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है । बुद्धि में जो अग्नि किंवा ज्ञानाग्नि बसता है, उस का विचार करना चाहिये । इस अग्नि स्वरूप ‘ चित् ’ है । सत्, चित्, आनन्द में यही चित् है, यही आत्मा नाम से प्रसिद्ध है । इस के स्वरूप का वर्णन निम्न प्रकार है—

(१) ह्रीर्धर्माभिरित्येतत्सर्वं मन एव ॥ (बृ. १-५-३)

(२) धियो यो नः प्रचोदयात् ।

(बृ. ६-३-६) (ऋ. ३-६२-१०)

(३) इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था अर्थेभ्यश्च परं मनः । मनसस्तु पराबुद्धिर्वुद्धेरात्मा महान् परः ॥

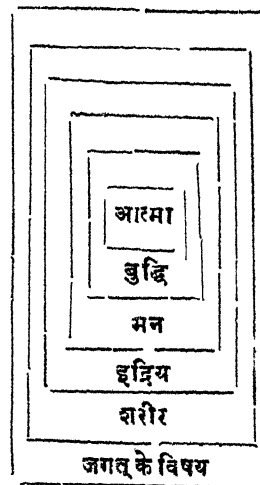
(कठ० ३-१०)

(४) इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः । मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥

भ. गी. ३-४२)

‘ (१) (ह्री) नम्रता, (धीः) बुद्धि, (भी) भीति जो अधर्म से उत्पन्न होती है, यह सब मन ही है ।

(२) जो हमारी बुद्धियों को प्रेरणा करता है । (३) इन्द्रियोंसे परे अर्थ है, अर्थोंसे मन परे है, मन से बुद्धि परे है और बुद्धि से महान् आत्मा परे है । (४) विषयों से परे इन्द्रिय, इन्द्रियों से परे मन, मन से परे बुद्धि और बुद्धि से परे वह है । ’ बुद्धि के अन्दर, परन्तु बुद्धि से परे, जो अग्नि है, वह आत्माभि ही है । इस की स्थिति साथ-वाले चित्र में बताई है ।



यह आत्माभि बुद्धि की वेदीमें प्रज्वलित होता है । मन आदि इन्द्रियां इसी में विविध ज्ञान-संस्कारों का हवन कर रही हैं और इस प्रकार यह ‘ ज्ञानयज्ञ ’ चल रहा है । बुद्धि के अंदर जो चिद्रूप पहिला अग्नि है, वह यही आत्माभि है । मनुष्यको इसी आत्माभि का प्रज्वलन करना चाहिये । यही आत्मशक्तिका विकास

कहलाता है ।

सामुदायिक हलचल करनेवालों में तथा राज्य बढ़ाने-वालों में जो उसाही क्षात्राग्नि होता है, वह क्षत्रियों के इतिहास में सुप्रसिद्ध है । यह भी क्षात्रबुद्धि में बसता है और क्षत्रियों को सुस्त रहने नहीं देता । अस्तु । ये सब अग्नि केवल ' आग ' के स्वरूप के ही नहीं हैं, प्रभुत मानवी बुद्धि के ये शक्ति-विशेष हैं । आत्मा बुद्धि के अन्दर बैठा हुआ, बुद्धि मन तथा इंद्रियादिकों में विशेष शक्ति की प्रेरणा करता है । ब्राह्म प्रवृत्ति, क्षात्र-प्रवृत्ति तथा अन्य प्रवृत्तियां इसी से निष्पन्न होती हैं । इस लिये यही आत्माग्नि मुख्य है और अन्य गौण अग्नि बहुत से हैं । इन सब का मूल बुद्धि में जो पहला प्रवर्तक आत्मा है, उसी में है । इस आत्माग्नि का और वर्णन देखिये—

(१७) पहिला मननकर्ता अग्नि ।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोताऽस्या धियो अभवो द्रुम होता । त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्वै ॥ (१३९; ऋ० ६।१।१)

' हे अग्ने ! (त्वं प्रथम. मनोता) तू पहिला मनन-कर्ता है । हे (द्रुम) दर्शनीय ! (अस्याः धियः होता अभव.) इस बुद्धि का हवनकर्ता तूही है । हे (वृषन्) बलवान् ! तू (सी) सब प्रकार से (दुस्त-तरीतु) पाव होने के लिये कठिन (सहः) बल (विश्वस्मै सहसे) सब बलवान् शत्रु को (सहध्वै) पराजित करने के लिये धारण (अकृणोः) करता है । '

इस मंत्र में ' अग्नि ' का विशेषण ' मनोता ' है । श्री सायणाचार्य इस शब्द का अर्थ—देवानां मनः यज्ञ ऊतं संबद्धं भवति तादृशः ' अर्थात् देवों का मन जिसमें संबंधित होता है, ' ऐसा करते हैं । देव शब्द का एक अर्थ इंद्रियगण है । इंद्रियों का मन आत्मा में संबंधित होता है, इसका सचित्र वर्णन इस से पूर्व किया ही है । इससे स्पष्ट होता है, ' मनोता अग्नि ' वही आत्मा है कि, जिस से मन आदि सब इंद्रियां संबंधित होती हैं । इस विषय में ऐतरेय ब्राह्मण में निम्न प्रकार कहा है—

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोतेति । ...तिस्रो वै देवानां मनोतास्तासु हि तेषां मनांस्योतानि । वाग्वै देवानां मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि ।

गौर्वै देवाना मनोता, तस्यां हि तेषां मनांस्योतानि । अग्निर्वै देवानां मनोता, तस्मिन् हि तेषां मनांस्योतान्यग्निः सर्वा मनोता, अग्नौ मनोताः संगच्छन्ते ॥ (ऐ० ब्रा० २।१०)

' देवों के तीन मनोता हैं । वाणी देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें देवों का मन संबंधित होता है । गौ देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें उनके मन संबंधित होते हैं । अग्नि देवों की मनोता है, क्योंकि उसमें सब देवों के मन संबंधित होते हैं । अग्नि ही सब मनोता है, क्योंकि अग्नि में ही सब मनोता संगत होते हैं । ' अग्नि, सूर्य आदि देवों का सम्बन्ध जैसा परमात्मा से है, उसी प्रकार वाणी, नेत्र, कर्ण आदि इंद्रियों का सम्बन्ध शरीर में जीवात्मा के साथ है । दोनों का तात्पर्य यही है कि, देवों का आत्माग्नि से नित्य सम्बन्ध है । यही आत्माग्नि अत्यंत बलवान् है और सब शत्रुओं को दूर करने की अनिवार्य शक्ति अपने अन्दर धारण करता है । सब बलवानों से यह अधिक बलवान् है और इसके समान किसी अन्य का बल नहीं है । अपनी आत्मा का यह सामर्थ्य है । यह विश्वास हर एक वैदिकधर्मी मनुष्य के अन्दर स्थिर होना चाहिये, क्योंकि प्रत्येक प्राणी के अन्दर यह शक्ति विद्यमान है ।

(१८) मनुष्यमें अग्नि ।

अयमिह प्रथमो धायि धातृभिर्होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः ॥ यमपन्नवानो भृगवो विरुक्ष्वर्चनेषु चित्रं विभ्रं विशे विशे ॥ (६९३; ऋ० ४।७।१)

' यह (प्रथमः) पहला (होता) हवनकर्ता यज्ञ में अत्यन्त पूज्य धाताओं द्वारा यहां रखा है । जिस को (भृगवानो भृगवः) कर्मकुशल भृगु (विशे विशे विभ्रं) प्रत्येक मनुष्य के लिये विशेष प्रभावसंपन्न और (वनेषु चित्रं) वंदनीय पदार्थों में विलक्षण देखकर (विरुक्षुः) विशेष तेजस्वी करते रहे । ' अर्थात् यह अग्नि प्रत्येक मनुष्य में है और विशेष प्रभाव से युक्त है । यद्यपि प्रत्येक मनुष्य छोटासा है, तथापि उस की आकृति के अनुसार यह आत्मा तुच्छ नहीं है । छोटेसे छोटे प्राणीमें भी यह विशेष प्रभाव-युक्त है और सबसे पहला पूजनीय है । मनुष्य के जीवन में इस आत्मशक्ति का विकास करने का ही मुख्य कर्तव्य है । प्रत्येक मनुष्य में जो आत्माग्नि है, उस का उत्तम और स्पष्ट

वर्णन इस मंत्र में हुआ है। मर्त्य मनुष्यों में जो अमर तत्त्व है, वह यही है, यह बात निम्न मंत्र में देखिये—

(१९) मर्त्यों में अमृत अग्नि ।

अयं होता प्रथमः पश्यतेममिदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु । अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तोऽमर्त्यस्तन्वा वर्धमानः ॥ (१७९०, ऋ. ६-९-४)

(अयं प्रथमः होता) यह पहिला हवनकर्ता है । (इमं पश्यत) इस को देखिये । (मर्त्येषु इदं अमृतं ज्योतिः) मर्त्यों में यह अमर ज्योति है । (सः अयं ध्रुवः जज्ञे) यह स्थिर प्रकट हुआ है । (तन्वा सह वर्धमानः अमर्त्यः) शरीर के साथ बढ़नेवाला अमर (आनिषत्तः) प्रकट हुआ है । ' इस में स्पष्ट शब्दों से कहा है कि, यह (मर्त्येषु अमृतं ज्योतिः = He is light immortal in the mortal men) मर्त्यों में अमर तेज है । मरणधर्मवाले देहों में यह एक न मरनेवाला तेज है, इस का वर्णन गीता में देखिये—

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः ॥

अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥ १८ ॥

अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो ।

न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय । नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ॥ तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि सयाति नवानि देही ॥ २२ ॥

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ॥ ३० ॥

(भ. गी. २)

' कहा है, कि जो शरीर का स्वामी (आत्मा) नित्य अविनाशी और अचिंत्य है, उसे प्राप्त होनेवाले ये शरीर नाशवान् हैं । अत एव हे भारत ! तू युद्ध कर ॥ १८ ॥ यह आत्मा अज, नित्य, शाश्वत और पुरातन है, एवं शरीर का वध हो जाय, तो वह मारा नहीं जाता ॥ २० ॥ जिस प्रकार कोई मनुष्य पुराने वस्त्रों को छोड़कर नये ग्रहण करता है, उसी प्रकार देही अर्थात् शरीर का स्वामी आत्मा पुराने शरीर त्याग कर दूसरे नये शरीर धारण करता है ॥ २२ ॥ सब के शरीर में यह शरीर का स्वामी सर्वदा अवध्य अर्थात् कभी वध न किया जानेवाला है ' ॥ ३० ॥

यह गीता का कथन पूर्वोक्त मंत्र के कथन का ही

विस्तार है । ' मर्त्यों में यह अमर ज्योति है । ' इस बात की सचाई हरणु मनुष्य के अनुभव में भी है । अनेक शास्त्र यही बात कह रहे हैं । वेद कहता है कि, (इमं पश्यत) इस को देखिये । इस आत्मा की ज्योति का साक्षात्कार करना मनुष्य का कर्तव्य है । मनुष्य अपने आप को शरीररूप समझकर मरनेवाला न समझे, परन्तु आत्मरूप से अपने आप को अमर समझे । वेद का यह उपदेश विशेष रीति से देखनेयोग्य है । वेद कहता है कि, यह ' ध्रुव ' है । इसी का वर्णन वेद में अन्यत्र ' स्थानु, स्कम्भ, स्थूण ' आदि नामों से किया है । इस मंत्र में ' अमर्त्यः तन्वा वर्धमानः । ' अर्थात् ' यह अमर शरीर के साथ बढ़ता है, ऐसा कहा है, ' इसका तात्पर्य यह है कि, ' यह अमर होता हुआ भी मर्त्य शरीर के साथ बढ़ता है । ' यह बताता है कि, यह आत्मा ही है । अजर, अमर और अजन्मा आत्मा जीर्ण होनेवाले, मरनेवाले और जन्म को प्राप्त होनेवाले शरीर के साथ बढ़ता है, अथवा ऐसा दिखाई देता है कि, यह शरीर के साथ बढ़ रहा है । वास्तविक तत्त्वज्ञान की दृष्टि से देखा जाय, तो न यह शरीर के साथ जन्मता है, न जीर्ण होता है और न मरता है । परन्तु सामान्य दृष्टि से ऐसा भासमान हो रहा है । इस परका सायणभाष्य देखिये—

(२०) जाठराग्नि ।

मर्त्येषु मरणस्वभावेण शरीरेषु अमृतं मरणरहितं इदं वैश्वानराख्यं ज्योतिः जाठररूपेण वर्तते । अपि च सोऽयमग्निः ध्रुवो निश्चल आ समंतान्निषण्णः सर्वव्यापि अतएवामर्त्यो मरणरहितोऽपि तन्वा शरीरेण सम्बन्धाज्जज्ञे ॥ (ऋ. सायणभाष्य ६-९-४)

' मरनेवाले शरीरों में मरणधर्मरहित वैश्वानर नामक तेज जाठराग्नि रूप से रहता है । यह ध्रुव सर्वव्यापक अमर होता हुआ भी शरीर के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है । ' अस्तु । यह मंत्र मर्त्यों में जो अमर अग्नि का स्वरूप है, उस का स्पष्टीकरण कर रहा है । यही वेदप्रतिपाद्य मुख्य अग्नि है । श्री सायणाचार्य पूर्व मंत्रोक्त अग्नि को जाठराग्नि कहते हैं, तथा निम्न मंत्र में भी उन के मत से जाठराग्नि का ही वर्णन है—

मर्त्याद्यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं
विश्वदेव्यम् । नि यं दधुर्मनुष्यासु विक्षु स्वर्णं
चित्रं वपुषे विभावं ॥ (३४८, ऋ. १-१४८-१)

सायणभाष्य-देवाः मनुष्यासु मनोरपत्यभूतासु विक्षु
प्रजासु प्राणिषु वपुषे स्वरूपाय शरीरधारणाय जाठराग्नि-
रूपेण निर्दधुः स्थापितवन्तः ॥

‘ (होतारं) हवनकर्ता (विश्व-अप्सुं) विश्वरूपी,
नाना रूप धारण करनेवाले (विश्व-देव्य) सब देवों से
युक्त (इ-एनं) इस आत्माग्नि को (विष्ट मातरिश्वा)
व्यापक प्राण (मथीत्) मंथन से उत्पन्न करता है । (यं)
जिस को देव (मनुष्यासु विक्षु) मानवी प्रजाओं में
(वपुषे) शारीरिक स्वरूप के लिये (निर्दधुः) धारण
करते हैं । (न) जिस प्रकार (चित्रं विभावं स्वः)
विचित्र प्रभावशाली दीप घर में रखते हैं । ’

शरीररूपी वरमें यह आत्माका दीप देवोंने जगाया है ।
देखिये इस दीपको और इसका प्रकाश फैलाइये । यद्यपि
श्री सायणाचार्यजी के मत से ये दोनों मंत्र जाठराग्निका
वर्णन कर रहे हैं, तथापि इस विषयमें मतभेद होना संभव
है । ऋ० ६।९।४ यह मंत्र पहिले दिया ही है । इस का
अर्थ श्री० स्वा० दयानंद सरस्वतिजीने आत्मा परमात्मापरक
लगाया है । मंत्रका स्पष्टार्थ निःसंदेह आत्माकाही भाव
बता रहा है । यहां श्री सायणाचार्यजी का मत देनेका
उद्देश्य इतनाही है कि, ये भी इसका अर्थ आग नहीं करते,
परन्तु ‘मनुष्यकी पाचक शक्ति’ कर रहे हैं । पहलेसेही
हमारा कथन रहा है कि, अग्निका मुख्य भाव मानवी
शरीरमें दिखा देनेका वेद का मंतव्य है और वह वेदमंत्रों
में विविध प्रकारके वर्णनोंसे बताया गया है ।

मान लीजिये कि, उक्त मंत्रों में पाचक जाठराग्निका
वर्णन है, परन्तु विचार करनेपर उसके पीछे आत्माका
अस्तित्व माननाही पड़ेगा, क्योंकि वह आत्माही इस शरीर
में सब कार्य कर रहा है, वही कान से सुनता और आंख से
देखता है, उसी प्रकार वही पेटमें अन्नका पचन कर रहा है ।
वही वाणी के मूलमें है और शब्द बोल रहा है, देखिये—

(२१) वाणी के स्थानमें अग्नि ।

जोहूत्रो अग्निः प्रथमः पितेर्वेळस्पदे मनुषा
यत्समिद्धः । श्रियं वसानो अमृतो विचेता
मर्त्यजेन्यः श्रवस्यः स वाजी ॥ (४०९; ऋ० २।१०।१)

‘ (जोहूत्रः) उपास्य अग्नि (प्रथमः पिता इव) पहला
पिता जैसा जो है, वह (इळः स्पदे) वाणीके पदोंमें (मनुषा
समिद्धः) मनुष्यने प्रदीप्त किया है । यह (श्रियं वसानः)
शोभा देनेवाला अमर (विचेता) विशेष चेतन (मर्त्यजेन्यः)
शुद्धता करनेवाला (श्रवस्यः) प्रसिद्ध है और वही (वाजी)
बलवान् है । ’

वाणी के पदोंमें, वाचा के मूलस्थान में यह अमर चेतन
अग्नि है । यही सबसे बलवान् प्रेरक है । विशेष चेतन,
विशेष चित्तसे युक्त अथवा चित्स्वरूप यह अग्नि है ।
चित्स्वरूप होनेसे यही आत्मा है, यह बात सिद्ध होती है ।
आत्मा चित्स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप है और वही वाणी
के पदों के मूल में विशजमान होता है । क्योंकि यही
‘आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर मनके द्वारा प्राण
को संचारित करके नाना प्रकारके शब्द उत्पन्न
करता है ।’ (पाणिनी-शिक्षा) । यह वर्णन यहां देवनेसे
मंत्र का भाव स्पष्ट हो जाता है । और देखिये—

(२२) दिव्य जन्मकर्ता अग्नि ।

दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारं सुहवं
जनेभ्यः ॥ होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं
न शोवं दिव्याय जन्मने ॥ (११५; ऋ० १।१८।६)

‘ हे अग्ने ! भृगु (दिव्याय जन्मने) दिव्य जन्मके लिये
(चारं रयिं न) उत्तम धनके समान (मानुषेषु आ दधुः) मनु-
ष्योंमें धारण करते रहे हैं । ऐसा तू (मित्रं शोवं न) सेवनीय
मित्र के समान, (होतारं) दाता, (अ-तिथिं) जिसकी
आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, ऐसा (वरेण्यं) श्रेष्ठ है । ’

दिव्य जन्मकी प्राप्तिही इच्छासे श्रेष्ठ लोग मनुष्योंमें
इस अग्निकी धारणा करते हैं । इसकी धारणा करनेसे वह
संतुष्ट होता है और उनका जन्म दिव्य करता है । यह
अग्नि वैसा धारण किया जाता है कि, जैसा अत्यंत श्रेष्ठ
धन धारण करते हैं । मनुष्यमें सबसे श्रेष्ठ धन किंवा (रयिं)
श्रेष्ठ शोभा ‘आत्मा’ ही है । यदि इस मानवी शरीरमें
आत्मा न रहा, तो अन्य धन और अन्य शोभाएं कुछ भी
कार्य नहीं कर सकती । जिससे धनका धनपन रहा है और
जिसकी शोभासे शोभा सुशोभित हो रही है, वही सच्चा
धन और सच्ची शोभा है । यही धनका धन आत्माही है ।
सब जानते ही हैं कि, यह आत्मा ‘अ+तिथि’ है, क्योंकि

इसकी शरीरमें आनेकी और शरीर छोड़कर चले जानेकी तिथि निश्चित नहीं है। यही सेवा करनेयोग्य सच्चा मित्र है, क्योंकि यही सबका मान्य कर रहा है। इसलिये इसकी शक्तिभी धारणा सबको करनी चाहिये। क्योंकि इसकी शक्तिका चिंतन करनेसे ही अपनी शक्तिका विकास हो सकता है। कोई अन्य मार्ग नहीं। इसकी धारणा करनेसे शक्तिकी वृद्धि होती है। इसका कारण यह है कि, यह उपासकको विलक्षण शक्तियां देता है, देखिये—

(२३) शक्ति प्रदाता अग्नि ।

क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो
रथिषाळमर्यः ॥ रथो न विश्वंजसान आयुषु
व्यानुषवार्या देव ऋण्वति ॥ (११२, ऋ० १।५।८।३)

‘(वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः) वसुओं और रुद्रोंने जिसको अग्रभागमें रखा है, इस प्रकारका यह (क्राणा) कर्ता, (होता) दाता, आह्वाता, (निषत्तः) व्यास, (रथि+षाट्) धनके साथ रहनेवाला, (अ-मर्यः) अमर देव, (रथो न) रथके समान, (विश्व आयुषु) प्रजाजनोंमें, (क्रंजसानः) आगे बढ़नेवाला प्रेरक (वार्याणि) विविध शक्तियाँ (आनुषक् वि ऋण्वति) प्राप्त कराता है।’

इस मन्त्रमें शक्तिप्रदान करनेका गुण स्पष्टतापूर्वक कहा है। जो शक्ति इससे मिलती है, वह साधारण शक्ति नहीं है, परन्तु ऐसी विलक्षण शक्ति होती है कि, जो सब (वार्य) शत्रुओंका निवारण कर सकती है। जो शक्ति शरीरमें उत्पन्न होनेसे मनुष्य अपने सब प्रकारके शत्रुओंको दूर भगा देता है। सब अन्य शक्तियोंसे ‘आत्मशक्ति’ ही सबसे विशेष प्रभावशाली होती है। आत्मशक्ति के द्वारा अन्य शक्तियोंका उपयोग किया जाता है, तथा आत्माकी दुर्बलता होनेसे अन्य शक्तियाँ कुछ भी कार्य नहीं कर सकतीं, इतनी इस शक्तिकी योग्यता है और यही शक्ति आत्मामणिसे प्राप्त होती है।

(२४) पुरोहित अग्नि । गणराज ।

इस मन्त्रमें ‘पुरोहित’ शब्दके अर्थका निश्चय हुआ है। ‘पुर + हित’ शब्दका अर्थ ‘अग्रभागमें रखा हुआ, अग्रसर, प्रमुख, मुखिया’ है। इस अर्थका स्वीकार करनेसे प्रश्न उत्पन्न हो सकता है कि, यह किनका अग्रसर है,

किन्हींने इसको अग्रभागमें अथवा मुख्य स्थानमें रखा है, किनका यह मुखिया है? इत्यादि प्रश्नोंका उत्तर इस मंत्रमें दिया गया है= (वसुभिः रुद्रेभिः पुरोहितः) वसु तथा रुद्र देवोंने इसको अपना अग्रसर अथवा मुखिया बनाया है। वसु रुद्र और आदित्य ये ‘गणदेव’ हैं। गणदेव वे होते हैं कि, जो अपने संघमें रहते हैं और संघसे ही कार्य करते हैं। संघशक्ति का महत्त्व इन ‘गणदेवों’ के द्वारा बताया जाता है। गणदेवों के प्रत्येक संघका एक मुखिया होता ही है, और उस मुखिया को ‘पुरो-हित’ कहते हैं, क्योंकि गणोंके सब घटकों द्वारा वह स्वीकृत होता है। यह एक प्रकारकी ‘गण-राज-संस्था’ है जो वैदिक मन्त्रोंमें वर्णन की है। इसका व्यापक स्वरूप बतानेके लिये यहां स्थान नहीं है, तथापि इतना कहना आवश्यक है कि, इसके मुखिया को जैसा ‘पुरो-हित’ कहते हैं, उसी प्रकार ‘गण-राज, गणपति, गणेश’ आदि नाम होते हैं और इसकी अनुमतिके बिना कोई गण कोई कार्य कर नहीं सकता। प्रत्येक कार्यमें इसको बुलाया जाता है, इसका सत्कार किया जाता है और इसकी अनुमतिसे ही सब कार्य किये जाते हैं। यद्यपि गणके प्रत्येक व्यक्तिको अपना मुखिया चुननेका अधिकार होता है, तथापि मुखिया चुननेके पश्चात् मुखियाका अधिकार सर्वतोपरि होता है।

इस मंत्रमें वसुगण और रुद्रगण का नाम आया है। अध्यात्मदृष्टिसे ‘रुद्र’ नाम प्राणोंका है। पंच प्राण और पंच उपप्राण मिलकर दस प्राण मानवी शरीरमें कार्य करते हैं। यही प्राणगण किंवा रुद्रगण है। स्थूल शक्तियों के अर्थात् पृथिवी आप तेज आदिकों के गणों का नाम ‘वसुगण’ है। इन दोनों गणोंका अग्रसर मुखिया आत्मा ही है। इन दोनों गणों के सब देवताओंने इस आत्माको ही अपना मुखिया बनाया है। सब कार्य करनेके समय ये सब देवगण इसको अपने अग्रभागमें रखते हैं और इसीसे शक्ति लेकर कार्य करते हैं। यह पुरोहितका भाव पाठकों को यहां ठीक ध्यान में धरना चाहिये।

यह अमर आत्मदेव सब अन्य देवताओं का अग्रसर है और सब प्रजाओं में बैठा हुआ उन सबको विलक्षण शक्ति देता है। इस दृष्टिसे इस मंत्रका विचार करनेपर आत्मामणि की ठीक ठीक कल्पना आ सकती है। इसी का और वर्णन देखिये—

(२५) हस्तपादहीन गुह्य अग्नि ।

स जायत प्रथमः पस्त्यासु महो बुध्ने रजसो
अस्य योनौ । अपादशीर्षा गुहमानो अन्तायो-
युवाने वृषभस्य नीले ॥११॥ प्र शर्ध आर्तं प्रथमं
विपश्यं ऋतस्य योना वृषभस्य नीले । स्पाहो
युवा वपुष्यो विभावा सप्त प्रियासोऽजनयन्त
वृष्णे ॥१२॥ (६३७-३८, ऋ० ४।१)

‘(स प्रथम) वह पहला (पस्त्यासु जायत) प्रजाओं में हुआ है । तथा वह (अस्य महः रजसः बुध्ने योनौ) इस महान् अंतरिक्षके मूल स्थानमें होता है । यह (आपाद-शीर्षा) पाँव सिर आदि अवयवोंसे रहित (अंतः-गुहमानः) अंदर गुप्त है । (वृषभस्य नीले) वीर्ययुक्त पुरुषके स्थानमें (आ योयुवानः) संघटनाका कार्य करता है, संमेलन का कार्य करता है ।’ इस मन्त्रका का तात्पर्य यह है कि, सब देवोंमें अत्यंत प्राचीन तथा सबसे पहिला यह देव है, इस महान् अवकाशमें इसका स्थान है । न इसको हाथ हैं और न पाँव, न सिर आदि अवयव हैं । अर्थात् यह अशरीरी निराकार है और सबके अंदर गुप्त अथवा व्याप्त है । शरीररहित होनेके कारण ही यह निरवयव होनेसे सबमें व्याप्त और अव्यक्त है । बलवान् मनुष्यके अंदर यह संमिश्रणका कार्य करता है, अर्थात् निर्बलके अंदर यह भेदन का कार्य करता है । ‘नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः’ (सुंडक० ३।२।४) यह आत्मा बलहीनको प्राप्त नहीं होता, यह तत्त्वज्ञान का सिद्धांत ही है । निश्चयपूर्वक ढढ अनुष्ठानसे ही इसकी प्राप्ति होती है और जिस समय इसकी प्राप्ति होती है, उस समय उम मनुष्यकी शक्ति, शोभा और योग्यता बढ़ जाती है ।

‘(ऋतस्य योनौ) ऋतके मूल कारणमें (वृषभस्य नीले) बलवान् के स्थानमें (प्रथमं विपश्यं) पहले ज्ञानी को (शर्धः प्र आर्तं) तेज और बल प्राप्त होता है । यह (स्पाहः) स्पृहणीय, प्राप्त करने की इच्छा करनेयोग्य, युवा (वपुष्यः) देहधारी, (विभावा) प्रभावयुक्त है । (वृष्णे) इस बलवान् के लिये (सप्त प्रियासः) सात प्रिय देव (अजनयन्त) उत्पन्न करते हैं ।’

इस मन्त्रके अन्य शब्द पूर्व लेखके अनुसार सुगमतासे ध्यानमें आ सकते हैं, इसलिये उनका विशेष वर्णन करनेकी

यहां आवश्यकता नहीं है । पूर्व मन्त्रमें ‘अ-पाद-शीर्ष’ हस्तपाद आदि अवयवहीन है, ऐसा वर्णन है, परन्तु यहां इस मन्त्रमें ‘वपुष्यः’ शरीरधारी है, ऐसा है । यद्यपि इसमें परस्पर विरोध दिखाई देता है, तथापि विचारकी दृष्टिसे इसमें कोई विरोध नहीं है । क्योंकि यह आत्माग्नि यद्यपि वस्तुतः शरीररहित है, तथापि इस शरीरको धारण करनेवाला यही है । इसलिये दोनों शब्द इस आत्मामें सुसंगत होते हैं । इस आत्मासेही इस शरीरमें तेज, बल, वीर्य आदि होता है, इसीलिये इसके विषयमें सब ही प्राणी हार्दिक प्रेमभाव रखते हैं, सबको ही यह प्रिय है । इस मन्त्र में ‘सात प्रिय देव इसको प्रकट करते हैं,’ ऐसा जो कहा है, इसका स्पष्टीकरण इस लेखके अंतिम भागमें होगा । वहांही इसको पाठक देख सकते हैं । (सप्त) सात संख्या का महत्त्व क्या है, इसका पता वहांही पाठकोंको लग सकता है । अस्तु । इस प्रकार इस गुह्य अग्निका वर्णन वेदमन्त्रोंमें है । इससे स्पष्ट होता है कि, यह आत्माग्नि हृदयाकाशमें सब प्रजाओंके अंदर गुह्य रीतिसे विराजमान है । तात्पर्य, ‘अग्नि’ शब्दसे केवल ‘आग’ का ही भाव नहीं लिया जाता, परन्तु प्रकरणानुसार अन्य अर्थ भी इस शब्दसे व्यक्त होते हैं । इसका अब और एक त्रिलक्षण रूपक देखिये—

(२६) वृद्ध नागरिक ।

अथा हि विश्वीडथोऽसि प्रियो नो अतिथिः ।

रणवः पुरीव जूर्यः सूनूर्न त्रययाय्यः ॥

(९५८, ऋ० ६।२।७)

‘(अथा हि) और तू (नः प्रियः अतिथिः) हमारा प्रिय अतिथि तथा (विश्वी ड्थ्यः असि) प्रजाओंमें पूजनीय है । जैसा (पुरि जूर्यः रणवः इव) नगरीमें वृद्ध पुरुष रमणीय होता है, अथवा (सूनूर्न न त्रययाय्य) जैसा पुत्र संरक्षणीय होता है ।’

नगरीमें जो सबसे वृद्ध बुजुर्ग होता है, वह सबको वंदनीय होता है । इसी प्रकार यह इस शरीररूपी नवद्वार पुरीमें बहुत समय से रहनेवाला सबसे प्राचीन पूरज होनेसे सबको पूज्य है । तथा घरमें जैसा बालक सबको संरक्षणीय होता है, वैसा यहां इस शरीररूपी घरमें यह बालकवत् ही है और इसलिये इसका संगोपन करना और इसकी सब शक्तियोंका विकास करना सबको उचित है ।

दोनों उपमाओंमें एक विशेष बात बताई है कि, यह स्वयं अशक्त है और इसलिये दूसरोंकी सहायताकी अपेक्षा करता है। यद्यपि वृद्ध मनुष्य पूज्य होता है, तथापि तरुणोंके साथ उसकी शक्तिका मुकाबला नहीं हो सकता। तथा यद्यपि बालक सुकुमार होनेसे सबको प्यारा होता है, तथापि तरुणोंकी अपेक्षा वह अशक्त ही होता है। यद्यपि वृद्ध और बालक अशक्त होते हैं, तथापि वृद्धमें अनुभवकी शक्ति होनेसे वह सबको वंदनीय होता है और बालक सुकुमार होनेसे तथा सब शक्तियोंको बीजवत् अपने अंदर धारण करता है, इसलिये सबको प्यारा होता है। आत्मा इस शरीरके जन्मसे पहिले विद्यमान था, इसलिये शरीरसे वृद्ध है और उसकी संपूर्ण शक्तियोंका विकास होने-वाला है, इस कारण वह बालकवत् ही है। तथा यह आत्मा जो कार्य करता है, यद्यपि अपनी शक्तिसे करता है, तथापि इंद्रियोंद्वारा करता है, इसलिये इंद्रियोंकी सहायताकी अपेक्षा रहनेके कारण वह वृद्धवत् अथवा बालकवत् दूसरोंकी सहायता चाहता है। ये सब रूपकके भाव यहां देखने-योग्य हैं। अग्निके रूपसे यह आत्माका भाव यहां बताया है। अग्निकी चिनगारी छोटी होनेके कारण जैसी उसकी रक्षा करनी आवश्यक है, परंतु अनुकूल परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् वही चिनगारी बड़े दावानल का स्वरूप धारण करती है और बड़े धुरंधर शत्रुओंको भी डराती है, उसी प्रकार यह आत्मा प्रारंभमें अपने अंदर सब शक्तियां बीजरूपसे धारण करता है, उस समय बड़ा अशक्तता प्रतीत होता है, परंतु अनुकूल माता-पिता, गुरु, मित्र आदिकी परिस्थिति प्राप्त होनेके पश्चात् जिस समय यह आत्माका “ महात्मा ” बनता है, तब यही सबको पूज्य होता है, और इसके तेजसे इसके शत्रुभी डरने लग जाते हैं। इस प्रकार अग्निके साथ इस आत्माकी समानता देखनेयोग्य है। इसका ग्रहण कैसे किया जाता है, इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

(२७) प्रजामें देवताका अनुभव ।

अग्ने कदा ते आनुषग्भुवद्देवस्य चेतनम् ।

अथा हि त्वा जगृभिरे मर्तासो विश्वीडथम् ॥

(६९४; क. ४।७।२)

‘ हे अग्ने! जब तुझ देवताकी चेतनता हुई, तब ही ‘ तुझे सब मर्त्यों (विश्व ईश्वर) सब प्रजाओंमें पूजनीयको

(जगृभिरे) धारण किया। ’ अर्थात् जब तेरे चैतन्यका पता लगा, तब मनुष्योंने तेरा ग्रहण किया। आत्माका ग्रहण उस समय होता है कि, जब आत्माकी चेतनशक्ति का पता लग जाता है। विचारशील मनुष्य पहले शरीरमें अनुभव करता है कि, इसमें गुरु चेतन चालक शक्ति है, तत्पश्चात् उसकी खोज की जाती है और उसका ग्रहण करनेके लिये अनुष्ठानपूर्वक साधन होता है। इसके पश्चात् उसका ग्रहण हो जाता है। यह उमकी अंतिम उन्नतिकी सीमा है। इसका वर्णन देखिये—

(२८) न दबनेवाला ।

स मानुषीषु दूळभो विश्व प्रावीरमर्त्यः ।

दूतो विश्वेषां भुवत् ॥ (७१३; क. ४।९।२)

‘ वह (मानुषीषु विश्व) मानवी प्रजाओंमें (दूळभः दुर्दमः) न दबनेवाला (अमर्त्यः) अमर (प्रावीः) प्रकट हुआ है, वह सबका दूत हो गया है। ’ इस के पूर्व एक मंत्रमें कहा है कि, यह वृद्धके समान अथवा बालकके समान है। यह प्रारंभिक अवस्था थी। इस प्रारंभिक अवस्थामें इसका बचाव करना आवश्यक होता है। परंतु जिस समय यह अपनी शक्तियोंके उत्कर्षके साथ प्रकट हो जाता है, उस समय यही (दूळभः- दुर्दमः) न दबनेवाला हो जाता है। कितनी भी शक्ति शत्रुकी हो, उसके दबावसे यह दबाया नहीं जायगा, इतनी प्रचंड शक्ति यह प्राप्त करता है। इस मंत्रमें एक विशेष बात कही है। वह यह है कि, यह आत्मा (मानुषीषु विश्व दूळभः) मानवी प्रजाओंमें ही यह न दबनेवाला बन जाता है, यह अवस्था उसको मानवयोनिमें ही प्राप्त होती है। पशुपक्षियोंकी योनिमें इस प्रकार उन्नति यह प्राप्त नहीं कर सकता। इस विधानसे इस अग्निका आत्मा ही स्वरूप है। यह बात निश्चय होती है, क्योंकि आत्माके विकासकी कर्मभूमि या कुरुक्षेत्र यह मानवयोनि ही है। अन्यत्र ऐसा पुरुषार्थ नहीं हो सकता। यह सबका ‘ दूत ’ है। जिस समय श्रद्धाभक्तिके इसको कहा जाता है कि, यह कार्य ऐसा करो, तो यह वैसा बना देता है। ‘ मानस-चिकित्सा ’ से जो आरोग्य प्राप्त होता है, वह इसी आत्माकी निज शक्तिसे होता है। ‘ हे आत्मदेव! तुम मुझे आरोग्य दो, इस अवयवमें नीरोगता करो, ’ ऐसा विश्वासपूर्वक कहनेसे उसकी

शक्ति वहां इष्ट कार्य कर देती है । इसको कहनेसे यह वैसाही कर देता है, इसलिये इसको आज्ञाधारक ' दूत ' कहते हैं । अग्निमंत्रोंमें दूत के विषयमें बहुत वर्णन है । प्रसंगविशेषसे भिन्न भिन्न प्रकारका भाव उस वर्णन में है, तथापि उनमें एक भाव यह है, जो यहां बताया है । अन्य भाव स्थान स्थान में बताये जायेंगे । इस विषय में निम्न मंत्र देखिये—

— अग्निदेवेषु राजत्यग्निर्मतैवाविशन् ।

अग्निर्नो हव्यवाहनोऽग्नि धीभिः सपर्यत ॥

(९१४; ऋ ५।२५।४)

(१) अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, (२) अग्नि मर्त्योंमें आवेश करता है, (३) अग्नि हमारा अन्नवाहक है, (४) इसलिये अग्नि की बुद्धियों और कर्मोंसे पूजा कीजिये ।

इस मंत्रमें चार विधान हैं । अग्नि देवोंमें प्रकाशता है, यह पहिला कथन है । देव शब्द इंद्रियवाचक सुप्रसिद्ध है । इंद्रियोंमें आत्माकी शक्ति प्रकाशित होती है । सब मनुष्यों को इसका अनुभव अपने ही शरीरमें हो सकता है । आंख, नाक, कानोंमें आत्माकी ही शक्ति वहांका कार्य कर रही है । यही आत्माका आवेश मर्त्योंमें है । शरीर स्वयं चेतन नहीं है, आत्माकी शक्तिसे ही इसकी चेतनता है । आत्म-शक्तिका आवेश जब इस शरीरमें होता है, तभी यह मूक शरीर वक्तृत्व करने लग जाता है, जड शरीर दौड़ने लग जाता है, मुर्दा शरीर सचेतन प्रतीत होता है । यही इस महा-भूत का संचार है, इसीको आवेश कहते हैं । यही आत्माग्नि इस शरीर में अन्न का भोग लेता है और सब इंद्रियोंको पहुंचाता है । प्रत्येक इंद्रियमें एक एक देव बैठा है, वहां उसके पास योग्य अन्नरसको पहुंचानेका कार्य यह करता है, यही उसका ' दूत ' भाव है । जिस प्रकार दूत, उसको दिये हुए पदार्थ बांट देता है, ठीक इसी प्रकार यह दूत शरीरस्थानीय देवताओंको अन्नरसका विभाग यथायोग्य रीतिसे बांटता रहता है । इस दूतकर्मसे ही अन्य देव अर्थात् इंद्रियगण पुष्ट होते हैं और अपना अपना कार्य यथायोग्य रीतिसे करते रहते हैं । यह आत्मा इतना कार्य कर रहा है, इसलिये बुद्धियोंद्वारा इसकी उपासना करनी अत्यावश्यक है । यह इस मंत्रका तात्पर्य है । यह जैसा अचेतन देहको सचेतन करता है, वैसाही मूकसे वक्तृत्व कराता है, इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(२९) मूकमें वाचाल ।

अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तैवग्निरमृतो
निधायि । स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः
सदा त्वे सुमनसः स्याम ॥ (११३७; ऋ० ७।४।४)

(अयं प्रचेताः अग्निः) यह ज्ञानी अग्नि (अ-कविषु कविः) शब्द न करनेवालों में शब्दका प्रवर्तक, (मर्तैषु अमृतः) मरनेवालोंमें अमर (निधायि) रहा है । हे (सहस्वः) बलवान् ! तेरे विषयमें सदा हम (सु-मनसः) मन का उत्तम भाव धारण करेंगे, इसलिये वह तू हमारी (मा जुहुरः) हिंसा न कर ।

इस मंत्रके प्रथमार्धमें आत्माग्निके गुण वर्णन किये हैं । (१) यह आत्माग्नि (अ-कविषु) जो शब्दका उच्चार नहीं कर सकते, जो स्वयं ज्ञानी नहीं है, उनमें (कविः) शब्द का प्रवर्तक और ज्ञानी है । (२) तथा (मर्तैषु) मरनेवालों में यह अमर तत्त्व है । इस विधान की सत्यता हमने इससे पूर्व देखी है । मुख जड है, स्वयं मुखसे शब्द नहीं निकल सकता, परन्तु यह जड मुखसे बड़ा ओजस्वी वक्तृत्व करा सकता है । सब हस्तपादादि अवयव और इंद्रिय मरनेवाले और क्षीण होनेवाले हैं, उन सबमें यह अविनाशी और अमर है । जो ज्ञानी लोग इसके विषयमें मनमें (सु-मनसः) उत्तम भावना धारण करेंगे, उनकी उन्नति होगी, क्योंकि यह आत्माग्नि अपनी शक्ति उनमें विकसित करता है और उनको तेजस्वी करता है । इसीलिये आत्मनिष्ठ मनुष्योंका तेज सर्वत्र फैलता है । यह आत्माग्नि सच्चा मित्र है और इसीलिये उपासकोंकी सहायता करता है—

(३०) पुराना मित्र ।

द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्व-
रस्य जारं । बाहुभ्यामग्निमायवोऽज्जनयंतं विश्वु
होतारं न्यासादयन्त ॥ (१५३१, ऋ० १०।७।५)

(द्युभिः हितं) तेजस्वियोंके साथ रहनेवाला, (प्रत्नं मित्रं इव प्रयोगं) पुराने मित्रके समान योग्य सहायता देनेवाला, (ऋतु-इजं) ऋतुके अनुकूल कर्म करनेवाला, (अ-ध्वरस्य जारं) सत्कर्म की समाप्ति करनेवाला, अग्नि है । इसको (आयवः) मनुष्य अपने पुरुषार्थसूचक बाहुओंसे प्रकट करते रहें और उस (होतारं) दाताको (विश्वु) प्रजाओंमें रखते रहें ।

यह आत्माग्नि (प्रत्नं मित्रं) पुराने मित्रके समान योग्य समयमें योग्य सहायता करनेवाला है । जो इस आत्माग्नि की यह मित्रता जानते हैं, वेही उसका सच्चा मूल्य अनुभव करते हैं और वेही अपने आपको धन्य धन्य बना सकते हैं । बाहुबलों अर्थात् पुरुषार्थोंसेही उसकी प्रसिद्धि होती है । यह महात्मा ऐसे शुभ कर्म करनेसे जगत् में वंदनीय बना है । योग्य सर्वजन हितकारी पुरुषार्थों से ही प्रशंसा होती है । तात्पर्य यह है कि, निष्ठापूर्वक ज्ञानसे आत्माग्नि का अनुभव होता है और सर्वजन हितकारी पुरुषार्थोंसे उसकी प्रसिद्धि होती है । इस प्रकार पुराने मित्रकी उदारता है, इसलिये सबको इसके विषयमें आदर रखना उचित है । अब और इसका अमरत्व देखिये—

(३१) विनाशियोंमें अविनाशी ।

अपश्यमस्य महतो महित्वममर्त्यस्य मर्त्यासु विश्वे ॥
(१६३७; ऋ० १०।७९।१)

‘ (मर्त्यासु विश्वे) मर्त्य प्रजाओंमें (अस्य महतः अमर्त्यस्य) इस महान् अमरका महत्त्व देखा है । ’ यह अनुभव की बात इस मंत्रमें कही है । सब देह मरनेपर भी यह अमर रहता है । मरणधर्मी शरीरोंमें यह अमर और अविनाशी आत्मशक्ति रहती है । इसीका नाम आत्माग्नि है । तथा—

अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।
द्विता यो भूदमृतो मर्त्येष्व्वा होता मंद्रतमो विशि ॥
(१४१९; ऋ० ८।७१।११)

‘ (सहसः सूनुं) सहनशक्ति को बढ़ानेवाले, (जात-वेदसं) जिससे ज्ञान और धन की उत्पत्ति हुई है, ऐसे अग्निकी (वार्याणां दानाय) शत्रुनिवारक शक्तियोंके दानके लिये प्रशंसा करता हूँ । जो (मर्त्येषु अमृतः) मरणधर्मी-वालोंमें अमर, (विशि मंद्रतमः) प्रजामें अत्यंत तृप्ति करनेवाला (होता) दाता (द्वि-ता भूत्) दो प्रकारसे होता है । ’

(१) यह आत्माग्नि सहनशक्ति अर्थात् शत्रुको दूर भगानेकी शक्ति बढ़ाता है, आत्मिक बलसेही संपूर्ण शत्रु दूर भाग जाते हैं । (२) यह चित्स्वरूप होनेसे इससे ही ज्ञान का प्रवाह चलता है । (३) शत्रुता-निवारक धन और

शक्ति का प्रदान यही करता है । (४) ‘ सब मर्त्योंमें यही अमर है, ’ और (५) सबको अत्यंत हर्ष देनेवाला भी यही है । (६) इसकी शक्ति स्थूल और सूक्ष्ममें संचारित हो रही है । यह इसका वर्णन स्पष्टतासे इसका आत्मिक स्वरूप व्यक्त कर रहा है । तथा और देखिये—

स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोरग्निर्वेदाश्च
वेद्यश्च नो धात् । विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषु-
षर्भुद्र भूदतिथिर्जातवेदाः ॥ (९७२; ऋ० ६।४।२)

‘ (वस्तो चक्षणिः न) दिनमें सूर्य जैसा (विभावा) प्रकाशक (वेद्यः) और जाननेयोग्य, वह अग्नि (वेदाश्च चक्षः) वंदनीय अन्न (नः धात्) हम सबको देवे । (विश्व-आयुः अमृतः) पूर्ण आयु देनेवाला यह अमर (मर्त्येषु उषर्भूत्) मर्त्योंमें ब्राह्मसुहृत्के समय जागनेवाला (जातवेदाः) ज्ञान का प्रकाशक (अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है ऐसा है । ’

सूर्य जैसा सब को प्रकाश देता है, उसी प्रकार यह आत्माग्नि सबको ज्ञानका प्रकाश देता है । इसलिये यह (वेद्य) जाननेयोग्य है । इसकी खोज करनी चाहिये, ऐसा जो कहते हैं, उसका यही कारण है । (विश्व-आयुः) सब आयु का धारण यही करता है, जबतक यह अमर देव मर्त्य शरीर में रहता है, तब तकही इसकी आयु होती है जब यह चला जाता है, तब कहते हैं कि, इसकी आयु पूरी हो गई । इसका तात्पर्य ही यह है कि, सबकी आयु इसके साथही सम्बन्धित होती है । इस प्रकारका यह आत्माग्नि मर्त्योंमें अमर रूपसे रहता है । तथा और देखिये—

स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा
विभाति ॥ (९८३; ऋ० ६।५।५)

‘ हे अमृत ! वह मर्त्योंमें (प्र-चेता) विशेष ज्ञानसंपन्न (राया) धन और (द्युम्नेन श्रवसा) तेजस्वी यशसे (विभाति) विशेष चमकता है । ’ अमर आत्माग्निके कारण ही यह यश और यह धनयुक्त तेज उसको प्राप्त होता है, इसलिये यह धन, शोभा, तेज और यश उसीका है और उसीसे सबको प्राप्त होता है । इसलिये इसकी उपासना प्रातःकाल करनी चाहिये । देखिये—

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेताऽतिथिः ।

विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्त्येषु रण्यति ॥

(८८१; ऋ० ५।१८।१)

‘(अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, वह (विश्वः) सबका निवासक (पुरु+प्रियः) सबको प्रिय अग्नि (प्रातः स्वेत) प्रातःकाल में प्रशंसित होवे । वह मत्स्योमें अमर (विश्वानि हव्या) सब अन्नो को (रणयति) चाहता है ।’

यह पूर्वोक्त आत्माग्नि सबको प्रिय है, इससे अधिक प्रिय वस्तु दुनियाभरमें और कोई भी नहीं है । इसलिये इसको ‘पुरु-प्रिय’ कहते हैं, इस विषयमें उपनिषदों में निम्न प्रकार वर्णन है—

आत्मानमेव प्रियमुपासीत ॥ (बृ० उ० १।४।८)
न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवति
आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति ॥
न वा अरे देवानां कामाय देवाः प्रिया भवन्त्या-
त्मनस्तु कामाय देवाः प्रिया भवन्ति ॥
न वा अरे सर्वस्य कामाय सर्वं प्रियं भवत्या-
त्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति । आत्मा वा
अरे द्रष्टव्य श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः ॥
(बृ० उ० २।४।५)

‘आत्माको ही प्रिय मानकर उपासना करनी चाहिये । अरे वित्त के लिये वित्त प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही वित्त प्रिय होता है । ... देवोंके लिये देवताये प्रिय नहीं होती हैं, परन्तु आत्माके लिये ही देव प्रिय होते हैं । सबके लिये ही सब प्रिय नहीं होता है, परन्तु आत्माके लिये ही सब कुछ प्रिय होता है । इसलिये आत्मा की खोज करनी चाहिये और उसीका श्रवण, मनन, निदिध्यासन करना चाहिये ।’ पूर्वोक्त वेदमंत्रमें जो ‘पुरु+प्रिय’ शब्द है, उसीका यह स्पष्टीकरण है। प्रातःकाल ब्राह्ममुहूर्तमें इसीका चिंतन करना चाहिये—

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय चिंतयेदात्मनो हितं ॥

‘ब्राह्म मुहूर्त में उठकर आत्मा का हित करनेका उपाय सोचना चाहिये ।’ यह आर्योंकी सनातन रीति है । अस्तु ।

पूर्वोक्त मंत्रमें कहा है कि, यह आत्मा सब अन्न, (विश्वानि हव्या) सब प्रकारका भक्ष्य चाहता है । इसकी सत्यता देखनेके लिये हरएक योनिके प्राणियोंका निरीक्षण कीजिये । हरएक योनिके प्राणीका भक्ष्य अलग अलग रहता है । प्रायः सब योभिनियों के प्राणी सब कुछ पदार्थ खाते हैं । इसलिये कहा है कि—

स यद्यदेवाऽसृजत तत्तदत्तुमभ्रियत सर्वं वा
अस्तीति तददितेरदितित्वं सर्वस्यैतस्यात्ता
भवति सर्वमस्यान्नं भवति य एवमदितेरदि-
तित्वं वेद ॥ (बृ० उ० १।२।५)

सर्वस्यात्ता भवति सर्वमस्यान्नं भवति ।

(बृ० उ० २।२।४)

वात्यस्त्वं प्राणैक ऋषिरत्ता विश्वस्य सत्पतिः ॥

(प्रश्न उ० २।११)

‘उसने जो उत्पन्न किया, वह सब खाने के लिये धर दिया, क्योंकि यह सबका भक्षक है । इसीलिये इसको अदिति कहते हैं, यह सबका भक्षक है और सब इसका अन्न है । हे प्राण ! तू वात्य, एक, ऋषि, सत्पति और सब विश्वका भक्षक है ।’ यह उपनिषदों का वर्णन पूर्वोक्त मंत्र के साथ देखनेयोग्य है । इस विधानों की तुलना करने से मंत्र का आशय अधिक स्पष्ट होता है और वैदिक कल्पना विशेष स्पष्ट होनेमें सहायता हो जाती है । अस्तु । तात्पर्य यह कि, यह आत्माग्नी ही (अत्ता) भक्षक किंवा सर्वभक्षक है । यह न केवल मत्स्योंका अपितु देवोंका भी हित करता है, इस विषय में निम्न मंत्र देखिये—

(३२) अनेक देवोंका प्रेरक एक देव ।

यो मर्त्येष्वमृतं क्रतावा होता यजिष्ठ
इत्कृणोति देवान् ॥ (२३४; ऋ० १।७।१)

‘यह मत्स्योंमें अमर, (क्रता-वान्) सत्य नियमों का पालक, दाता, (यजिष्ठः) पूज्य है, और यह देवोंका हित करता है ।’ यहां प्रश्न उत्पन्न होता है कि, यह मर्त्य शरीरमें रहता हुआ देवोंका हित कैसा करता है? इस प्रश्नका उत्तर इतनाही है कि, इस शरीरमें ही स्थानस्थानमें अनेक देवताएं अंशरूपसे आकर बैठी हैं, उनका हित यही करता है । आंखमें सूर्यनारायण है, नाकमें अश्विनी देव हैं, छातीमें मरुत् हैं, इसी प्रकार अन्यान्य स्थानोंमें अन्यान्य देव हैं । इन सब देवगणोंका हित यही आत्माग्नि कर रहा है । देवोंका अपने अपने स्थानमें निवास कराना, उनको अन्नरस पहुंचाना, उनसे योग्य कार्य लेना, अपने साथ उनको लाना और ले जाना, उनको दृष्टपुष्ट करना, इत्यादि सब कार्य इसी आत्माग्निके हैं । आग्निसूक्तोंमें स्थानस्थानमें

इस विषय के वर्णन अनेक हैं, उनका विशेष विचार किसी समय हो जायगा । यहाँ केवल सूचानाके लिये लिखा है । तथापि कुछ थोड़े वाक्य देखिये—

- [१] स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ अ. ३४।५१
 [२] स देवेषु घनते वार्याणि ॥ ऋ. ५।४।३
 [३] देवो देवान् कृतुना पर्यभूषत् ॥ ऋ. २।१२।१
 [४] देवो देवान् परिभूषतेन ॥ ऋ. १०।१२।२
 [५] देवो देवान् यजत्वग्निरहन् ॥ ऋ. २।३।१
 [६] देवो देवान् यजसि जातवेदः ॥ ऋ. १०।११०।१
 [७] देवो देवान् स्वेन रसेन पृच्छन् ॥ ऋ. ९।१७।१२

‘(१) वह देवोंमें दीर्घ आयु करता है। (२) वह देवोंमें शक्तियाँ देता है। (३) वह देव अपने कर्मसे देवोंको सुभूषित करता है। (४) सत्यसे वह देव देवोंको व्यापता है। (५) अग्नि देव योग्य होनेसे देवोंका यजन करता है, (६) जातवेद अग्नि देव देवोंका यज्ञ करता है। (७) देव अपने रससे देवोंको पुष्ट करता है।’

इस प्रकारके सैंकड़ों वचन हैं कि, जो आत्मा और इंद्रियोंका ही संबंध वर्णन कर रहे हैं । आत्मा अग्नि है और इंद्रिय-स्थानमें सब देवतागण हैं । इनका ही वर्णन यहाँ अग्निसूक्तों में मुख्यतया है और इसी प्रकार अन्य देवता के सूक्तोंमें भी है । परंतु यहाँ अग्निविषयक ही वर्णन का विचार करना है, इसलिये अन्य देवताके मंत्र देखनेकी आवश्यकता नहीं है । अब निम्न लिखित मंत्रमें इसका संबंध अन्य देवोंके साथ देखिये—

त्वां हग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरतिं
 न्येरिरे इति कृत्वा न्येरिरे । अमर्त्यं यजत
 मर्त्येष्व देवमा देवं जनत प्रचेतसं विश्वमा देवं
 जनत प्रचेतसम् ॥ (६३१, ऋ. ४।१।१)

‘हे अग्ने ! (स-मन्यवः) अत्यंत उत्साही देव (अरतिं त्वां देवं) गतियुक्त तुझ देवको (सदं इत्) सदा (न्येरिरे) प्रेरित करते हैं । हे (यजत) पूज्य ! (मर्त्येषु अमर्त्यं) मर्त्योंमें अमर (आदेवं देवं) देवताको (आजनत) प्रकट करते हैं, तथा (प्र-चेतसं) चित्स्वरूप देवको प्रकट करते हैं ।’

यह आत्माग्नि मरणधर्मवालोंमें अमर है और इसको अन्य देव प्रकट कर रहे हैं । अर्थात् अन्य देवताओंके कारण

इसका अनुभव हो रहा है । बाह्य जगत् में देखिये कि, सूर्यादि देवताओंके अस्तित्व से ही परमात्माका अस्तित्व है, यह कल्पना उत्पन्न होती है । इसी प्रकार अभ्यात्मपक्षमें अपने देहमें आंख, नाक, कानोंके व्यापार देखकर इनके अंदर एक आत्मतत्त्व है, ऐसा अनुभव होता है । दोनों दृष्टियोंसे देवताएं आत्माको प्रकट करती हैं, यह कथन सत्य है । इस प्रकार मर्त्योंमें अमर आत्माग्निका वर्णन वेदमें अग्निके भिषसे होता है । इस विषयमें और एक ही मंत्र देखिये—
 यो मर्त्येष्वमृतं कृतावा देवो देवेष्वरतिर्निधायि ।
 होता यजिष्ठो मह्ना शुच्यध्वे हव्यैरग्निर्मनुष ईरध्वे ॥

(६४७, ऋ. ४।२।१)

‘(यः अमृतः) जो अमर (कृतावा) सत्य धर्मसे युक्त, (अरतिः) गतिमान् अग्निदेव है, यह (मर्त्येषु) मर्त्योंमें (निधायि) रखा है । यह (होता) दाता (यजिष्ठः) पूज्य (मह्ना) अपने महारसे (शुच्यध्वे) प्रकाश करनेके लिये रखा है । तथा (हव्यैः) अश्वोंसे (मनुषः) मनुष्यको (ईरध्वे) प्रेरणा अर्थात् उत्कृति करने के लिये रखा है ।’

इस मंत्रमें यह आत्माग्नि किस प्रयोजन के लिये यहाँ इस शरीरमें रखा है, उसका वर्णन है । श्री सायणाचार्य इस मंत्रपर निम्न प्रकार भाष्य करते हैं ।

मर्त्येषु मनुष्यसम्बन्धिषु वागादीन्द्रियेषु निहितः ।
 अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत् इति श्रुतेः ।

(सा० भाष्य०, ४० ४।२।१)

‘मर्त्यों में अर्थात् मनुष्यसंबन्धी वाग आदि इंद्रियोंमें रखा है । क्योंकि अग्नि वाक् बनकर सुखमें प्रविष्ट हुआ, ऐसा श्रुतिवचन है । (तै. ब्रा. ३।९।१७)’ । यह आत्माग्नि मनुष्योंमें रहकर (शुच्यध्वे) उनमें तेज उत्पन्न करता है, तथा (ईरध्वे) उत्कृतिकी ओर प्रेरणा करता है । ये दो कार्य इसके इस शरीरमें हैं । मर्त्य प्राणियोंमें अमर आत्माग्निका यह कार्य हरएक को देखनेयोग्य है । अपने अंदर इस प्रकार की दिव्य और अमर आत्मशक्ति है और वह हमको उत्कृतिकी ओर प्रेरणा कर रही है, यह विश्वास उत्पन्न होना चाहिये । वैदिक धर्मका यही उद्देश्य है । अपने नित्य जपके गायत्री मंत्रमें (धियो यो नः प्रचोदयात् । ऋ. ३।६२।१०) ‘जो हमारी बुद्धियोंको प्रेरणा

करता है, ' उसका हम ध्यान करते हैं; ऐसा जो कहा है, उसका भी यहाँ विचार करना चाहिये । क्योंकि दोनों में उन्नतिकी प्रेरणा समानही है । अस्तु । इस प्रकार प्रेरक आत्माग्नि मत्स्योमें है और वह अमर है, यह बात उक्त मंत्रोंद्वारा सिद्ध हुई । अब अन्य बातका विचार करेंगे । वेदमें देवों के साथ अग्नि आता है, अथवा जाता है, इस आशयके वर्णन अनेक स्थानोंमें हैं । इनमेंसे कुछ मंत्र इससे पूर्व दिये गये हैं और कुछ आगे दिये जायेंगे । यहाँ उक्त आशय के ही परंतु वही आशय अन्य शब्दोंद्वारा जिनमें बताया है, ऐसे मंत्र पहिले दिये जाते हैं । उनका विचार होनेके पश्चात् देवोंका संबंध अग्निके साथ देखेंगे—

(३३) अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि ।

जिस समय अग्निका स्वरूप निश्चय करना होता है, उस समय ' अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि है, ' यह वेदका वर्णन सब से पहले देखना चाहिये । क्योंकि कि ऐसे मंत्रोंमें " अग्नि " शब्द विशेष भावसे प्रयुक्त होता है । देखिये—

विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिमं यज्ञमिदं वचः ।

चनो धाः सहसो यदो ॥ (३०; ऋ० १।२६।१०)

' हे (सहसः यदो) बल के संरक्षक ! हे अग्ने ! तू (विश्वेभिः अग्निभिः) सब अग्नियोंके साथ इस यज्ञमें आ और इस वचन को सुनो । तथा हमको (चनः) अन्न दो । ' ' इस मन्त्रका कथन स्पष्ट है कि, यह अग्नि एक यज्ञमें अपने साथ सब अग्नियोंको लाता है । अब पता लगाना चाहिए कि, यह एक अग्नि कौन है और उसके साथ आनेवाले अनेक अग्नि कौन हैं । इसका पता लगानेके लिए निम्न लिखित मन्त्र देखिए—

अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः ।

यक्षेष्ण ये उ चावयः ॥ (५३०; ऋ० ३।२४।४)

' हे अग्ने ! (विश्वेभिः अग्निभिः देवेभिः) सब अग्निदेवों के साथ तू (गिरः महय) वाणीको सुपूजित करो, तथा जो (चावय) यज्ञमें पूजक होते हैं, उनको भी उन्नत करो । '

इस मन्त्रमें (अग्निभिः देवेभिः) अग्नि और देव ये शब्द एकही पदार्थके द्योतक हैं । तात्पर्य, किसी स्थानपर ' देव ' शब्द प्रयुक्त हुआ अथवा किसी स्थानपर ' अग्नि ' शब्द का उपयोग हुआ, तोभी उन दोनोंसे एकही वक्तव्य

सिद्ध होता है । अर्थात् " हे अग्ने ! तू देवोंके साथ आ " तथा " हे अग्ने ! तू अग्नियोंके साथ आ " इसका भाव एकही है । " देव " शब्दका भाव अध्यात्ममें " इंद्रिय " है, यह बात पहिले निश्चित की गई है, वही भाव ' अग्नि " शब्दमें है, यह यहाँ निश्चित हो रहा है । इस विषयमें भगवद्गीताका प्रमाण देखिए—

शब्दादीन्विषयानन्य इंद्रियाग्निषु जुह्वति ॥

(भ० गी० ४।२६)

' शब्दादि विषयोंका इंद्रियाग्नियों में हवन करते हैं । '

इस श्लोकमें इंद्रियरूप अग्नि अनेक है, यह स्पष्ट है । प्रत्येक इंद्रियमें एक एक अग्निकुंड है और वहाँ उस उस विषयका हवन हो रहा है । आंखके स्थानीय अग्निमें रूप का हवन होता है, कर्णस्थानीय अग्निमें शब्द का हवन, इसी प्रकार अन्यान्य इंद्रियाग्नियोंमें अन्यान्य विषयों का हवन हो रहा है । और जिसका हवन होता है, उसको वह अग्नि महान् आत्माग्नि तक पहुंचाता है । यह केवल आलंकारिक वर्णन नहीं है, परन्तु इसका अनुभव भी पाठक कर सकते हैं । इंद्रियस्थानीय सपूर्ण अग्नि यदि नियत रीतिसे योग्य आहुतियां डालकर सुपूजित किये गये, तो वे इस शरीरके अधिष्ठाता मुख्य आत्माको इष्ट उन्नतितक पहुंचाते हैं, परन्तु यदि कोई एक इंद्रियाग्नि हृदसे अधिक बढ़ गया, तो सबको जलाकर सबका नाश करता है । फिर सब इंद्रियाग्नि भडकने लगे, तो क्या अवस्था होगी, इसका विचार कल्पनासेही पाठक कर सकते हैं । ' इस अवस्थाको देखनेसे प्रत्येक इंद्रियमें अग्नि है, यह बात सिद्ध होती है, अर्थात् यहाँ जितनी इंद्रियां हैं, उतनेही अग्नि हैं । इसलिए " हे अग्ने ! तू सब अग्निदेवोंके साथ सुपूजित हो । " इस वाक्यका तात्पर्य, " हे आत्मन् ! तू सब इंद्रिय-शक्तियोंके साथ पूज्य बनो " यही है । जहाँ ' आत्माग्नि ' जाता है, वहाँ सब इतर ' इंद्रियाग्नि ' जाते हैं, यह सब स्वाभाविक ही है । शरीरस्थानीय इंद्रियाग्नियोंके विषयमें यह विचार हुआ । इनके अतिरिक्त भी और बहुतसे अग्नि यहाँ रहते हैं, उनका विचार निम्न लिखित उपनिषद्वाक्य में देखिए—

शरीरमिति कस्मात् ! अग्नयो ह्यत्र श्रियन्ते, ज्ञानाग्निर्दर्शनाग्निः कोष्ठाग्निरिति । तत्र कोष्ठा-

श्रिर्नामाशितपीतलेह्यचोष्यं पचति । दर्शनाग्नी
रूपाणां दर्शनं करोति । ज्ञानाग्निः शुभाशुभं च
कर्म चिन्दति । ज्ञीणि स्थानानि भवंति, मुखे
आहवनीय, उदरे गार्हपत्यो, हृदि दक्षिणाग्निः।
आत्मा यजमानो, मनो ब्रह्मा, लोभादयः पशवो,
धृतिर्दीक्षा संतोषश्च, बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञ-
पात्राणि, हवीषि कर्मेन्द्रियाणि, शिरः कपालं,
केशा दर्भाः, मुखमन्तर्वेदिः ॥ (गार्हपत्यनिषद् ५)

‘ इस को शरीर क्यों कहते हैं ? क्योंकि यहां अग्नि
आश्रय लेते हैं, ज्ञानाग्नि, दर्शनाग्नि और कोष्ठाग्नि । उस
में कोष्ठाग्नि अन्न का पचन करता है । दर्शनाग्नि रूपों को
देखता है । ज्ञानाग्नि शुभाशुभ कर्मोंको प्राप्त करता है ।
अग्नियों के तीन स्थान होते हैं, मुख में आहवनीयाग्नि,
उदर में गार्हपत्याग्नि और हृदय में दक्षिणाग्नि है ।
इस यज्ञ में आत्मा यजमान है, मन ब्रह्मा, लोभादि पशु,
धृति दीक्षा, ज्ञानेन्द्रियां यज्ञपात्र हैं, कर्मेन्द्रियां हविर्द्रव्य
है, शिर कपाल है, केश दर्भ हैं और मुख अन्तर्वेदि है ।’
इस प्रकार यह यज्ञ चल रहा है । यही शतसांख्यसंस्कृत
महासत्र है । यहां यज्ञपुरुष प्रत्यक्ष आत्मा है । जो इस यज्ञ
को अपने अन्दर देखेगा, उस को ही एक अग्निकी तथा
उस के साथवाले अनेक अग्नियों की कल्पना ठीक प्रकार
हो सकती है और उसी को सदेहरहित ज्ञान होना सम्भव
है । इस प्रकार ये अनेक अग्नि यहां इस देहरूपी
यज्ञशाला में प्रत्यक्ष हैं और इसी का नक्शा बाहिर की
यज्ञशाला में किया जाता है । बाह्य यज्ञ जो हवनकुंडों में
किया जाता है, वह इसलिये ही है कि, उस नक्शे को
देख कर इस असली यज्ञ का पता लगे । परन्तु शोक की
बात इतनी ही है कि, यह ‘ नक्शा ’ ही अधिक प्रिय हो
गया है और वास्तविक यज्ञ की ओर कोई देखता ही नहीं
है !! वेद का अर्थ जानने की इच्छा करनेवालों को तो
यह आध्यात्मिक यज्ञ अवश्यमेव ध्यानपूर्वक समझना
चाहिये । अन्यथा वेदमंत्र का अर्थ समझना ही अशक्य है ।
‘ अनेक अग्नियों के साथ एक अग्नि आता है ’
यह वेदमंत्र का कथन पूर्वोक्त रूपक का सूचक है, इस
विषय में अब सदेह नहीं हो सकता । अब निम्न लिखित
मंत्र देखिये—

तमु द्युमः पूर्वणीक होतरग्ने अग्निभिर्मनुष
इधानः । स्तोमं यमस्मै ममनेव शूषं धृतं न
शुचि मतयः पचन्ते ॥ (१९४, ऋ. ६-१०-२)

‘ हे (द्युमः) तेजस्वी (पुरु-अनीक) बहुसेनायुक्त,
बहुबलयुक्त अग्ने ! (अग्निभिः) अग्नियों के साथ प्रवृ-
त्त होनेवाला तू (मनुषः) मनुष्य के उस स्तुति का
श्रवण कर । (यं स्तोमं) जिस स्तोत्र को, (शुचि शूषं धृतं
न) शुद्ध सुखकर धी के समान, (मतयः) बुद्धियां
पुनीत करती हैं ।’

इस मंत्र में एक अग्नि अनेक अग्नियों के साथ प्रदीप्त
हो रहा है, यही वर्णन है । इस का भाव पूर्वोक्त राक्षीकरण
के साथ विशेष खुल सकता है । एक आत्माग्नि अनेक
इंद्रियों के साथ यहां इस देह में प्रदीप्त हो रहा है । यह
मुख्य आत्माग्नि (पुरु-अनीक) अनेक बलों से युक्त है,
अनेक शक्तियां इस में हैं, तथा अनेक सेनासमूह भी इस
के साथ रहते हैं । प्रत्येक इंद्रियस्थान में सैनिकों का एक
एक गण है और सब गणों का यही एक अध्यक्ष ‘ गणपति ’
है । गणेश को सैनिकों के गणों का सरामी कहते ही हैं ।
शरीरके प्रत्येक इंद्रिय में सूक्ष्म कीटाणुओं का एक एक गण
रहता है, वहां प्रत्येक गण का एक अधिष्ठाता रहता है ।
और संपूर्ण गणों का यह सुग्राधिष्ठाता होता है । इसलिये
इस को (पूर्वणीक=पुरु-अनीक) बहु सेना से युक्त कहते
हैं । प्रत्येक गण का अधिष्ठाता एक अग्नि और सब गणों
के अधिष्ठातारूप अनेक अग्नियों का मुख्याधिष्ठाता यह
महान् अग्नि है । यही गणराज होता है । इस गणराज-
संस्था को अपने शरीर में ही देखना चाहिये । यहां इस
का अनुभव होने के पश्चात् राष्ट्र में ‘ गणराज-संस्था ’
किस प्रकार होती है, इस का ज्ञान होना सम्भव है । इस
लिये पाठक इस संस्थाको अपने अन्दर देखें और अनुभव
करें । तथा अपने समाज में इसी गणराज संस्था को
जीवित कर के अपना राज्ययन्त्र उत्तम सजीव करने का
यत्न करें । अस्तु । अब इन अग्नियों के विषय में एक
वर्णन देखिये—

(३४) अग्नियोंमें अग्नि ।

प्रो त्ये अग्नयोऽग्निषु विश्वं पुष्यन्ति वार्यं ।

ते हिन्विरे त इन्विरे त इषण्यत्यानुषगिषं
स्तोतृभ्य आभर ॥ (८०६, ऋ. ५-६-६)

‘ (अग्नयः) ये अग्नि (अग्निषु) अग्नियों में (विश्वं वार्यं) सब शक्ति का (प्रो पुष्यति) पोषण करते हैं । (ते हिन्विरे) वे संतुष्टता करते हैं, (ते इन्विरे) वे व्यापते हैं, (ते इषण्यति) वे अन्न की इच्छा करते हैं । इसलिये स्तोताओं का क्रमशः पोषण करो । ’

इस मंत्रमें चार विधान हैं, जो अग्निका वास्तविक स्वरूप बता रहे हैं— (१) (विश्वं वार्यं पुष्यति) सब निवारक शक्तिको बढ़ाते हैं । शरीर में एक निवारक शक्ति है, जो रोगादिकों का प्रतिबन्ध करती है, अपमृत्यु का निवारण करती है । उस का पोषण यह अग्नि कर रहा है । (२) (हिन्विरे) संतोष करते हैं । संतोष, खुशी, आनन्द दे रहे हैं । पूर्वोक्त अग्नि अपने अन्दर विविध प्रकार के हवन स्वीकार कर के देवताओं की संतुष्टता कर रहे है । यह भाव अपने अन्दर पूर्वोक्त स्मृतीकरण से विशद हो सकता है । (३) (इन्विरे) व्यापते हैं । अपनी इन्द्रियशक्तियों से व्यापक होते हैं । देखिये, अपना ही दर्शनाग्नि जो आंख में है, वह जगत् में सूर्यचंद्रादि को तक फैलता है, इसी प्रकार कर्णस्थानीय श्रवणाग्नि दश दिशाओं में फैल रहा है । इसी प्रकार अपनी शक्तियां फैल रही हैं । (४) (इषण्यति) अन्न की इच्छा करते हैं । ये इंद्रियाग्नि अपने अपने भोग्य अन्न को प्रतिदिन चाहते हैं । अपना अपना अन्न मिल जाने से ही वे शक्तियों को पुष्ट करते हैं, संतोष देते हैं, तथा व्यापते हैं और अन्न न मिलने पर वे शक्तिहीन होते हैं, संतोष नहीं देते और अपनी शक्ति को फैला भी नहीं सकते ।

सूक्ष्म दृष्टि से यदि पाठक इस मंत्र का विचार करेंगे, तो उन के ध्यान में स्पष्ट रीति से आ सकता है कि, इस मंत्र में कहे हुए अग्नि ‘ इंद्रियाग्नि ’ ही मुख्यतया हैं । क्योंकि इन में ही मंत्रोक्त बातों का अनुभव हो सकता है । अन्यत्र लक्षणा से भी अनुभव आना अशक्य है । इसलिये ये अग्नि मुख्यतः अपने शरीर की शक्तियां ही है और उनका सम्बन्ध व्यक्त करने के लिये ही बाहर के यज्ञ में विविध अग्नियों की योजना की गई है । यही बात निर्मल लिखित मंत्र में और स्पष्ट हुई है । देखिये—

(३५) देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि ।

मा नो अग्ने दुर्भृतये सचैषु देवेद्वेष्वग्निपु
प्रवोचः । मा ते अस्मान् दुर्मतयो भृमात्तच्च-
देवस्य सूनो सहस्रो नशन्त (११२१; ऋ. ७-१-२२)
‘ हे अग्ने ! (न सचा) हमारा सहायक तू है, इस-
लिये इन (देवेद्वेषु) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये हुए अग्नियों
में (दुर्भृतये) कृशता के लिये (मा प्रवोचः) न कहो ।
तथा हे (सहस्र सूनो) बलपुत्र ! (ते देवस्य दुर्मतयः)
तुझ देव की दुर्बुद्धियां (भृमात्तच्च) भ्रम से भी
हमारा नाश न करे । ’

इस में मुख्य अग्नि की प्रार्थना की गई है कि, वह मुख्याग्नि गौण अग्नियों में कृशता के शब्द न बोले और भ्रम से भी दुष्ट भाव न धारण करे । मुख्याग्नि आत्माग्नि है और गौणाग्नि इंद्रियाग्नि ही है । आत्माग्नि की प्रेरणा इंद्रियाग्नियों में होती है और यहां का सब कार्य चलता है । यह आत्माग्नि गुप्त शब्दोंद्वारा इंद्रियाग्नियों में प्रेरणा करता है । इस की यह प्रेरणा (दुर्भृतये) कृशता के लिये न हो, परन्तु (सुभृति) पुष्टि के लिये होवे । जिस भाव की धारणा होती है, वैसी ही यहां की अवस्था बन जाती है । ‘ मैं प्रतिदिन उन्नत, पुष्ट और नीरोग हो रहा हूं । ’ ऐसी भावना धरने से उन्नति, पुष्टि और नीरोगता सिद्ध होती है । तथा इस के विपरीत भाव धारण करने से विपरीत परिणाम होता है । इसलिये भ्रम में भी दुष्ट भावना मन में धारण नहीं करनी चाहिये । क्योंकि यदि दुष्ट भावना का धारण हुआ, तो निःसंदेह नाश होगा । इतनी प्रबल शक्ति भावना मैं है । यह मंत्र मानसशास्त्र के एक बड़े भारी सिद्धांत का प्रकाश कर रहा है । आशा है कि, पाठक इस का विचार कर के अपना लाभ करने का यत्न करेंगे । नित्य शुद्ध भावना की स्थिरता करने से नित्य लाभ होगा, यह अटल सिद्धांत है ।

इस मंत्र में (देवेद्वः अग्निः) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये अग्नियों का उल्लेख है । यहां कौनसे अग्नि, देवों के प्रयत्न से प्रदीप्त हुए हैं ? इस का पता लगाना आवश्यक है । उपनिषदों में कहा है कि— (१) सूर्य भगवान् नेत्रस्थान में आकर रहे हैं और दर्शनाग्नि को प्रदीप्त कर रहे हैं । (२) आश्विनी देव नासिकास्थान में प्राणाग्नि

को प्रदीप्त कर रहे हैं । (३) अग्नि वाक् स्थान में बैठ कर शब्दाग्निको जला रहा है । (४) शिस्नस्थान में जल-देवताएं बैठी हैं और वीर्याग्नि का प्रदीपन कर रही हैं । (५) नाभिस्थान में मृत्युदेव आकर अपनाग्नि को उद्दीपित कर रहा है, इसी प्रकार अन्यान्य देवताएं अन्यान्य इंद्रिय-स्थानों में बैठ कर अपने अपने हवनकुंड में अपने अपने अग्नि प्रदीप्त कर रही हैं । ये सब अग्नि (देव + इद्ध) देवोंद्वारा प्रदीप्त किये हैं । पाठक इतना अनुभव अपने देह में कर सकते हैं ।

दैवी शक्तियोंद्वारा इंद्रियाग्नियों का प्रवृत्तन सर्वत्र उपनिषदादि ग्रंथों में वर्णन किया है । इसलिये वही यहां लेना उचित है और वह लेने से ही मंत्रका गर्भिताशय स्पष्ट हो जाता है । यही भाव निम्न लिखित मंत्र में देखिये-

दशस्या नः पुर्वणीक होतदैवेभिरग्ने अग्निभि-
रिधानः । रायः सूनो सहसो वावसाना अति
स्वसेम वृजनं नांहः ॥ (१००५; ऋ. ६-११-६)

‘ हे (पुरु-अनीक) बहुबलयुक्त (होतः) दाता अग्ने ! (देवेभिः अग्निभिः) अग्निदेवों के साथ (इधानः) प्रदीप्त होता हुआ, (नः) हम को (रायः) धन (दशस्य) दो । हे (सहसः सूनो) बल-पुत्र ! (वावसाना) वसने की इच्छा करनेवाले हम सब (वृजनं न) शत्रु के समान (अंहः) पाप का भी (अतिस्वसेम) अतिक्रमण कर के परे चले जायेंगे ।’

इसमें भी अनेक अग्निदेवों के साथ प्रदीप्त होनेवाले एक मुख्य अग्निका वर्णन है और इस में प्रायः वे ही शब्द हैं, कि जो पहिले आ चुके हैं, इसलिये इनका अधिक स्पष्टीकरण करने की आवश्यकता नहीं है । इसी प्रकार निम्न लिखित मंत्र में भी यही वर्णन है-

स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्नेभि-
रिधानः । वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदेम
शतहिमा सुवीराः ॥ (१०११; ऋ. ६-१२-६)

‘ हे (अर्वन्) गतिशील अग्ने ! तू (विश्वेभिः अग्निभिः) सब अग्नियों के साथ प्रदीप्त होता हुआ (निदायाः) निंदा से (पाहि) हमारा रक्षण कर, (रायः वेषि) धन दो, (दुच्छुना वियासि) दुःखकारकोंको विविध प्रकारसे भगाओ, जिससे हम (शत-हिमाः) सौ वर्ष (सु-वीराः)

उत्तम वीरोंसे युक्त होकर (मदेम) आनंदित हों ।’

सब इंद्रियाग्नियोंसे युक्त होता हुआ आत्माग्नि ऐसी प्रेरणा करे कि, हम सब निंदासे बचें, धन प्राप्त करें, विपरीत भावनाओंको दूर भगा दे । ऐसा करनेसे हम सौ वर्ष आनंद से व्यतीत करेंगे । इस का तात्पर्य यह है कि, यदि हम घृणित कर्म करेंगे, धन नहीं प्राप्त करेंगे, विपरीत भावना-रूपी शत्रुओंको दूर न भगायेंगे, तो घृणित कर्मों के कारण हमारा अंतःकरण मलिन होगा, धनहीनताके कारण संसार-यात्रा कष्टप्रद होगी, विरुद्ध भावनाओंके कारण क्लेश होंगे और इन सबका यही परिणाम होगा कि, हमारी आयु क्षीण हो जायगी । इसलिए मंत्रोक्त उपदेशके अनुसार आचरण करके दीर्घायु बनना हर एक वैदिक भर्माको उचित है । अस्तु । अब उक्त विषयकाही और एक मन्त्र देखिए-

(३६) दूत अग्नि ।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोपा यजिष्ठं दूत-
मध्वरे कृणुध्वं ॥ यो मर्येषु निष्कर्विर्ऋतावा
तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः ॥ (११२४; ऋ. ७-३१-१)

‘ (अग्निभिः) अग्नियोंके साथ रहनेवाले (यजिष्ठं देवं) पूज्य अग्निदेव को (अध्वरे) यज्ञमें दूत कीजिए । जो अग्नि (मर्येषु) मर्योंमें (नि-ध्रुविः) ध्रुव, (ऋतावा) सत्यवान्, (तपुर्मूर्धा) तपस्वी, (घृत+अन्नः) घीयुक्त अन्न खानेवाला और (पावकः) शुद्धिकर्ता है ।’

इंद्रियोंके साथ रहनेवाला आत्माग्नि पूज्य, अमर, स्थिर, दृढ़, सत्य, तपस्वी और शुद्ध है । इसीको यज्ञ में दूत करना चाहिए । दूत वह होता है कि जो नियत कार्यको करता है, जिस प्रकार कहा जाय, वैसा ही कर लेता है । क्या यह आत्माग्नि हमारा दूत है ? आध्यात्मिक दृष्टिसे विचार करनेपर पता लग जायगा कि, विशेष अवस्थामें यह दूत भी बनता ही है । योगसाधन से जिनका मन शांत और स्थिर हुआ है, वे योगी जो भाव मनमें लाते हैं, वैसा ही बन जाता है । यह कौन करता है ? विचार करनेपर मानना पड़ता है कि, यह आत्माही करता है । मनमें जो इच्छा होगी, वह बन जायगी । अर्थात् मनकी इच्छाके अनुसार यह दूत बनकर कार्य करता है । इस अर्थमें यह दूत है । पौराणिक मतसे श्रीकृष्ण भगवान् परमात्माका पूर्णवितार होता हुआ भी साधक जीव अर्जुन के रथपर

सारथी अर्थात् दूत ही बना था, उसके घोड़े साफ किया करता था, महायज्ञमें भोजनके बाद उच्छिष्ट निकालनेका काम करता था और पांडवोंकी इच्छाके अनुसार सब कार्य करता था । इस कथामें परमात्मा, जीवात्माका दौल्य करता है । वास्तविक यह अलंकार है । और वही अलंकार अग्नि के भिषसे यहां इस इस मन्त्रमें बताया है । योगबलसे साधक जीवको इतना अधिकार प्राप्त हो सकता है कि, वह जिसकी इच्छा करेगा, वह उसको परमात्मा देगा । इच्छा करनेवाला योगी और सिद्ध करनेवाला आत्मा यहां होता है । इसीलिए इसको दूत कहा है । इस दूतकर्म के विषयमें वेदमें सैकड़ों प्रकारके आलंकारिक वर्णन हैं, उनका स्पष्टीकरण स्थानस्थानमें किया जायगा । उनमेंसे एक भाव यहां बताया है । इसी विषयमें दूसरा अलंकार देखिये—

(३७) होता अग्नि ।

अग्न आयाह्यग्निभिर्होतारं त्वा वृणीमहे ।

आ त्वामनक्तु हविष्मती यजिष्ठं बर्हिंरासदे ॥

(१३८९, ऋ. ८-६०-१)

‘ हे अग्ने ! तू अग्नियों के साथ आ । तुझे हम हवनकर्ता ऋग्विज् स्वीकार करते हैं । (हविष्मती बर्हिः) अन्नयुक्त वेदी तुझ पूज्य को प्राप्त करके सुपूजित करे । ’

पूर्वमंत्र में इस आत्मगिन को दूत स्वीकार किया था, अब इस मंत्र में ऋग्विज् हवनकर्ता स्वीकार करते हैं । ‘ होता ’ शब्द का अर्थ दाता, आदाता, आह्वानकर्ता और हवनकर्ता है । यह आत्मगिन इंद्रियाग्नियों, प्राणाग्नियों तथा जाठरादि अग्नियों में विविध प्रकार के हवन कर रहा है । इस प्रत्यक्ष बात का ही यह वर्णन है, इसलिये अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है । अब और एक अलंकार देखिये—

(३८) अग्निरूप होना ।

स्वग्नयो वो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊर्जा

पते ॥ सुवीरस्त्वमस्मयुः । (१२३०; ऋ. ८/१९/७)

‘ हे (सहस. सूनो) बल पुत्र ! हे (ऊर्जा पते) अन्नपते ! आप के अग्नियों के साथ (अग्नयः) हम अग्नि (स्याम) बनेंगे । तू (सुवीरः) उत्तम वीर और (अस्मयुः) हम सब को चाहनेवाला हो । ’

इस मंत्र में कहा है कि, हम सब अग्निरूप बनेंगे । आत्मा मुख्याग्नि है और हम उस के साथी अन्य अग्नि बनेंगे । अर्थात् उन के समान उन के गुणधर्मों से युक्त और उन के मित्र बनकर रहेगे । तथा वह भी हम को चाहनेवाला होवे, अर्थात् हमारे द्वारा कोई ऐसा आचरण न हो कि, जिस से वह आत्मशक्ति हम से विमुख हो । हम आत्मशक्ति से विमुख न हों और वह आत्मा हम से विमुख न हो ।

माहं ब्रह्म निराकुर्यां

‘ मा मा ब्रह्म निराकरोत् ॥ (उप. शांति. केन. उ.)

‘ मैं ब्रह्म का निराकरण न करूं, ब्रह्म मेरा निराकरण न करे । ’ यह केनोपनिषद् की शांति का वाक्य यही भाव बता रहा है, तथा—

(चयं) अग्नयः स्याम ।

(अग्निः) अस्मयुः (भवतु) ॥ (ऋ. ८-१९-७)

‘ हम अग्नि बनें, अग्नि हमारा भला चाहनेवाला बने । ’ यह भाव शांतिमंत्र के समान ही है । यहां शंका हो सकती है कि, एक अग्नि का दूसरे अनेक अग्नियों के साथ कौनसा सम्बन्ध है ? इस का विचार करने के लिये (१) एक परमात्मा का अनेक जीवात्माओं के साथ सम्बन्ध, (२) एक महात्मा का दूसरे अल्प आत्माओं के साथ सम्बन्ध, (३) एक जीवका अन्य जीवों के साथ संबन्ध, (४) एक आत्मा का अन्य इंद्रियों से सम्बन्ध, (५) एक अवयव का अन्य अवयवों के साथ सम्बन्ध देखना चाहिये । विचार करने पर पता लगेगा कि, यह एक विलक्षण सम्बन्ध है और उम सम्बन्ध के कारण ही यह विश्व चल रहा है । एक के द्वारा दूसरे के जीवन में परिणाम होता है । इस का भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

(३९) एक अग्नि से दूसरे अग्नि का जलना ।

अग्निनाऽग्निः समिध्यते कविर्गृहपतिर्युवा ।

हव्यवाद् जुह्वास्यः ॥ (१५; ऋ. १-१२-६)

‘ (अग्निना अग्निः) एक अग्नि से दूसरा अग्नि (संमिध्यते) प्रदीप्त किया जाता है । यह अग्नि कवि, गृहपति (युवा) जवान्, (हव्य-वाद्) अन्नवाहक और (जुहु+ आस्यः) चमस से घी मुख में डालनेवाला है । ’

इस मंत्र में कवि, गृहपति, युवा ये शब्द हैं । ये शब्द

मानवी अग्नि के ही वाचक हैं। जो गृहस्थी युवा कवि हैं, वह भी समाज में अग्निवत् ही है। वह अन्न से पुष्ट होता है और चमस से घी पीता है, इसलिये हृष्टपुष्ट रहता है। पहला मनुष्य अग्नि था, यह बात मानवी अग्नि के विषय में इस लेख के प्रारम्भ में ही कही है। उस बात की स्पष्टता पुनः यह मंत्र कर रहा है। अध्यात्म-दृष्टि से जीवात्मा का घर यह शरीर है। इस कारण आत्मा गृहपति है, इस की गृहपत्नी बुद्धि है। यह युवा इसलिये है कि, यह न शरीर के साथ जन्मता और न मरता है, शरीर के बाल्य और वार्धक्य ये गुण इस को बाधित नहीं करते, इसलिये यह सदा युवा ही कहलाता है। यही बुद्धि, मन और प्राणद्वारा शब्द की प्रेरणा करता है, इस कारण यह कवि है। यह अन्नभक्षक और घी पीनेवाला है। शरीर के साथ रहने से इस को खानपान करना पड़ता है। यद्यपि शरीर ही खानपान करता है, तथापि इस के होने तक शरीर खातापीता है, इसलिये ही इस को (अत्ता) भक्षक कहते हैं। तात्पर्य व्यक्ति में आत्मा और समाज में गृहस्थी कवि अग्निरूप है।

एक अग्नि दूसरे अग्नि को प्रदीप्त करता है, यह इस मंत्र का कथन है। इस की सत्यता देखिये— राष्ट्र में अध्यापक शिष्यों को ज्ञान देते हैं। विद्वान् अध्यापक युवा शिष्यों को ज्ञान देते हैं। इसमें ज्ञानाग्नि का प्रज्वलन है। अध्यापक अपने ज्ञानाग्नि से शिष्य के अन्दर ज्ञानाग्नि प्रदीप्त कर रहा है। सब अध्ययन का क्रम इसी प्रकार चलता है। एक कवि अपने काव्य से दूसरों में काव्यस्फूर्ति उत्पन्न करता है। प्राचीन ज्ञानी अपने ग्रंथों और उपदेशों द्वारा नवीनों में स्फूर्ति दे रहे हैं। यही भाव निम्न लिखित मंत्र में है—

त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रेण सन् सता ।

सखा सख्या समिध्यसे ॥ (१२३३; ऋ. ८-४३-१४)

‘हे अग्ने ! तू (अग्निः अग्निना) अग्नि अग्नि से (विप्रः विप्रेण) ज्ञानी ज्ञानी से, (सन् सता) साधु साधु से, (सखा सख्या) मित्र मित्र से प्रदीप्त होता है।’

इस मंत्र के निम्न शब्द देखनेयोग्य हैं—

अग्निः अग्निना (समिध्यते)। ऋ० १।१२।६
हे अग्ने ! त्वं अग्निना (समिध्यसे)। ऋ० ८।४२।१४

विप्रः विप्रेण (समिध्यते)। ऋ० १।१२।६
सन् सता ,, ,,
सखा सख्या ,, ,,
(शिष्यः अध्यापकेन) ,, ,,

पहला कथन अग्निविषयक होनेसे देवताविषयक है। दूसरा ज्ञानीके विषयमें है, तीसरा सज्जनों के संबंध में है और चौथा साधारण मित्रताके संबंधमें है। इसके साथ हम “शिष्य अध्यापकके द्वारा उत्तेजित होता है” यह वाक्य जोड़ सकते हैं। मित्रता करनेसे ही मैत्री बढ़ती है, साधुके साथ रहनेसे साधुता प्राप्त होती है, विद्वान् की संगतिसे ज्ञान बढ़ता है, तेजस्वीके साथ रहनेसे तेजस्विता बढ़ती है, गुरुके साथ रहनेसे शिष्यको विद्या प्राप्त होती है, यही तात्पर्य है कि, अग्निके द्वारा दूसरे अग्निका प्रज्वलन होता है। अग्निसंकेतसे कितनी बातें लेनी होती हैं, इसका यहां स्पष्टीकरण हुआ है। यही वैदिक “अग्निविद्या” है। इस रीतिसे मंत्रोंका भाव अन्य वेदमंत्रों के साथ देखने से वैदिक आशयका ठीक ठीक रीतिसे पता लग जाता है और मंत्रके भावार्थके विषयमें किसी प्रकारका संदेह नहीं रहता। अस्तु ।

इस प्रकार यहां एक अग्नि अनेक अग्नियोंके साथ किस रूपमें रहता है, यह बात देखी है। आत्माग्नि इंद्रियाग्नियोंके साथ रहता है, परमात्माग्नि सूर्यादि तेजोंके साथ रहता है, ज्ञानी ज्ञानियोंके साथ प्रकाशता है, कवि कवियोंके साथ रहता है, तेजस्वी तेजस्वियोंके साथ शोभता है, साधु साधुओंके साथ रहता है, विप्र विप्रोंके साथ रहता है, मित्र मित्रोंके साथ रहते हैं, गुरु शिष्योंके साथ प्रकाशते हैं, तात्पर्य एक अग्नि दूसरे अनेक अग्नियोंके साथ ही रहता है, वह कदापि अपने विरोधियोंके साथ नहीं रह सकता। समानधर्मियोंके साथ रहनेसे शोभा बढ़ती है और विरोधियोंके साथ रहनेसे शक्ति क्षीण होती है। इत्यादि सहस्रों उपदेश यहां विचारी पाठकों को प्राप्त हो सकते हैं। अस्तु। यहां इस विषयको समाप्त करके अब अनेक देवों द्वारा स्थापित एक अग्निका मनोरंजन विषय देखेंगे—

(४०) देवोंद्वारा स्थापित अग्नि ।

इस समयतक देवोंके साथ रहनेवाला, अग्नियोंके साथ आनेजानेवाला, देवोंको बुलानेवाला अग्नि किस भावका

द्योतक है, यह देख लिया। अब देवोंद्वारा स्थापित अग्निकी कल्पना देखनी है। इस विषयमें निम्न लिखित मन्त्र देखिए-

अग्निदेवासो मानुषीषु विश्वु प्रियं धुः क्षेप्यन्तो
न मित्रं । स दीदयदुशतीरुर्म्या आ दक्षायो
यो दास्वते दम आ ॥ (४१८; ऋ० २।४।३)

‘ (क्षेप्यन्तः देवासः) गतिमान देवोंने (मानुषीषु विश्वु) मानवी प्रजाओंमें प्रिय (अग्नि) अग्निकी (मित्र न) मित्रके समान (धुः) स्थापना की अथवा धारणा की है। वह (दक्षायः) दक्ष अग्नि अपने दमनमें तथा (उशतीः ऊर्म्याः) स्पृहणीय रात्रियोंमें (दास्वते) दाताके लिए (आ दीदयत्) प्रकाश देता है । ’

‘ देव ’ शब्द का अर्थ बाह्य जगत् में सूर्य, चंद्र आदि देवता है और शरीरमें चक्षुरादि इंद्रियगण है। इस मंत्र में मनुष्य में आत्माग्नि की स्थापना करनेवाली जो देवताएँ हैं, वही शरीरस्थानीय चक्षुरादि इंद्रिय ही हैं। इन इंद्रियों के द्वारा आत्मा शरीर में रखा गया है, किंवा ये इंद्रिय-शक्तियाँ शरीर के अन्दर आत्मा का धारण कर रही हैं। जिस प्रकार सब ओहदेदार राष्ट्र में राजा का धारण करते हैं, उसी प्रकार ये आत्मा के ओहदेहार चक्षुरादि इंद्रियगण शरीर में आत्मा की धारणा कर रहे हैं। यह आत्माग्नि ही सब के लिये प्रिय और हितकारी है और सब का सच्चा मित्र भी है। आत्मा से अधिक प्रिय और अधिक हितकारक मित्र दूसरा कोई भी नहीं है, यह बात पूर्व स्थल में बता दी है। इस की दक्षता इतनी है कि, यह रात्रि के अन्धकार में प्रकाश देकर सब का मार्गदर्शक होता है। धर्मके लक्षणों में ‘आत्मा की तुष्टि’ एक लक्षण इसी हेतु से कहा है, देखिये—

श्रुतिः स्मृतिः सदाचारः स्वस्थ च प्रियमात्मनः ।

एतच्चतुर्विधं ज्ञेयं साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम् ॥१२॥

तथा—

वेदोऽखिलो धर्ममूलं स्मृतिशीले च तद्विदाम् ।

आचारश्चैव साधूनामात्मनस्तुष्टिरेव च ॥६॥

(मनु. २)

यहाँ धर्म के लक्षणों में (१) श्रुति, (२) स्मृति, (३) सदाचार, (४) आत्माकी तुष्टि ये चार लक्षण कहे हैं। धर्म का अंतिम निश्चय अपनी आत्मा की तुष्टि से

होता है, इतना आत्मा का अधिकार है, क्योंकि अन्धकार-पूर्ण रात्रि के अत्यन्त बिकट प्रसंग में यही आत्मा शुद्ध प्रकाश देकर ही मार्ग बताता है। सच्चा मित्र कौन है ? इस प्रश्न के उत्तर में कहना पड़ेगा कि, वही सच्चा मित्र है, जो कि कठीण प्रसंग में सहायक होता है। यह लक्षण आत्मा के मित्रत्व की सिद्धि करता है, क्योंकि जहाँ अन्य बल काम नहीं देते, वहाँ ‘आत्मिक बल’ ही सहायता देता है। यह आत्मिक बल संयम में है, यह भाव उक्त मंत्र में ‘दम’ शब्दद्वारा व्यक्त किया है। इस प्रकार देवों द्वारा स्थापित आत्माग्नि की कल्पना है। इसी विषय का निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(४१) मानवी प्रजा में अग्नि ।

आध्वयग्निर्मानुषीषु विश्वपां गर्भो मित्र ऋतेन
साधन् । आ हर्यतो यजतः सान्वस्थादभूदु विप्रो
हव्यो मतीनाम् ॥ (४७२; ऋ- ३-५३)

‘ (ऋतेन साधन्) सीधे मार्ग से जाने पर सिद्धि देने-वाला सच्चा मित्र और (अपां गर्भः) कर्मों का केंद्र अग्नि (मानुषीषु विश्वु) मानवी प्रजाओं में (देवैः) देवों द्वारा (अधायि) रखा गया है। यह (हर्यत.) स्पृहणीय और (यजतः) पूज्य होता हुआ (सानु) उच्च स्थान में (आस्थात्) रहता है। यह (वि-प्रः) विशेष ज्ञानी (मतीनां हव्यः) बुद्धियों का हवन करनेवाला (अभूत्) है । ’

आत्माग्नि मानवी देह में उच्च स्थान में निवास करता है, इस बात को यह मंत्र कहता है। मानवी देह में हृदय से लेकर मस्तक तक जो स्थान है, वही उच्च स्थान है। इसमें आत्माग्नि का निवास है। यह सच्चा मित्र है और यही सीधे मार्गसे चलाता है, यही सब कर्मों और संपूर्ण हलचलोंका प्रेरक है। जिस प्रकार किरणोंका केंद्र सूर्य है, उसी प्रकार कर्मों का केंद्र यही आत्माग्नि है। यह इस शरीरमें सौ वर्ष निवास करके सैंकड़ों कर्म करता है, इसीलिए इसको “शत-ऋतु” कहते हैं। इसका स्वभाव-धर्म ही कर्म है, इसीलिए इसको “ऋतु” भी कहते हैं। यह आत्मा चित्स्वरूप अर्थात् ज्ञानस्वरूप होने से ही इसको “वि-प्र” कहते हैं, तथा यही बुद्धिका प्रेरक है। इस प्रकार इस मन्त्रका वर्णन आत्माका परियय करा रहा

है, इसका अधिक विचार पाठक करे । इसीके विषयमें अब निम्न लिखित मन्त्र देखिए-

(४२) जीवन-रसरूप अग्नि ।

अच्छा नो अंगिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः ।
होता यो अस्ति विश्वा यशस्तमः ॥

(१२७९; ऋ० ८।२३।१०)

‘ (नः संयतः यज्ञासः) हमारे नियत यज्ञ (अंगि-रस्-तमं) अंगोंके रसोंमें मुख्य अग्निके प्रति (यन्तु) पहुँचें । जो (विश्व) प्रजाओं में (होता) इवनकर्ता और (यशस्-तमः) अत्यंत यशस्वी है । ’

यह मन्त्र अग्निका निश्चित रूप बता रहा है । यह अग्नि “ अंगि-रस्-तम ” है । प्रत्येक अंगमें जो जीवनरस है, उस प्रकारके जीवनरसों में अत्यंत मुख्य जीवन-रस यही है । सब हमारे कर्म इस मुख्य जीवनरस के संवर्धनके लिए ही होने चाहिये । मनुष्यों से ऐसा कोई कर्म नहीं होना चाहिए कि, जिससे इस मुख्य जीवनरस में कुछ क्षति हो सके । इसीका नाम “ आत्मघातक कर्म ” है । वास्तव में आत्माका घात नहीं हो सकता, परन्तु आत्माके विकास में प्रतिबन्ध जिससे होता है, उस को आत्मघातक कर्म कहते हैं । इसी प्रकार आत्मग्निके किसी प्रकारकी क्षति भी नहीं होती, तथापि उसके आत्मिक बलके विस्तार में जिनसे न्यूनता हो सकती है, वैसे कर्म नहीं करने चाहिए और ऐसे करने चाहिए कि, जिनसे अंगोंमें मुख्य जीवनरस की समृद्धि हो । मनुष्योंमें यही आत्मा यशका प्रदाता है । इसीलिए जो मनुष्य शांतिसे आत्मिक बलके कार्य करता है, उसीका यश होता है । इस मन्त्रका ‘ अंगि-रस्तम ’ शब्द इस अग्निकी मुख्य विभूति आत्माही है, यह भाव स्पष्ट कर रहा है । यह “ जीवनरस ” होनेके कारण इसीसे सबकी पुष्टि होती है, इस विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिए-

(४३) देवोंका निवासक अग्नि ।

अग्निदेवेषु संवसुः स विश्व यज्ञियाश्वा ॥
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति ।
देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके समे ॥

(१३०६; ऋ० ८।३९।७)

‘ अग्नि देवों में तथा (यज्ञियासु विश्व) पूज्य प्रजाओंमें (संवसुः) उत्तम निवासक है । वह (भूमा इव) भूमिके समान (पुरु विश्वं) सब कुछ पुष्ट करता है, तथा (मुदा) आनंदसे (काव्या) काव्योंको करता है । वही देवों में पूजनीय है । (समे) सब (अन्यके) शत्रु (नभन्ताम्) नष्ट हो जावें । ’

यह मन्त्र अग्निका स्वरूप-विज्ञान होनेके लिए अनेक दृष्टियोंसे उपयोगी है । देवोंके अन्दर रहता हुआ यह अग्नि देवोंका उत्तम प्रकार से निवासक होता है । पाठक विचार करेंगे, तो उनको पता लग जायगा कि, यह बात आत्म-ग्निके ही विशेष कर घट सकती है, क्योंकि देवों अर्थात् इंद्रियों में रहता हुआ ही आत्मा उन इंद्रियों का निवास उत्तम प्रकार कर रहा है । जिस प्रकार भूमि सब का पोषण कर रही है, उसी प्रकार आत्मा सबका पोषण कर रहा है । कई पाठक यहां शंका करेंगे कि, पौष्टिक अन्न से पोषण होता है, आत्मग्निके किस प्रकार पोषक हो सकता है ? इसका उत्तर इतनाही है कि मुद्देमें कितना भी पौष्टिक अन्न रखा जाय, उस अन्नसे मुर्दा पुष्ट नहीं होगा; क्योंकि ‘ सत्त्वा पोषक ’ वहां नहीं है । इससे स्पष्ट हो जाता है कि, आत्मा ही पोषक है और अन्य पौष्टिक अन्नादि सहायक हैं । यह आत्मग्निके सबसे प्रमुख है, इसलिये (देवेषु यज्ञियो देवः) देवोंमें पूज्य देव अर्थात् सब इंद्रियोंमें पूज्य आत्माही है, यह मन्त्रका वर्णन सार्थ हो जाता है, इस प्रकार यह वर्णन देवों के निवासक अग्नि का है । पाठक इस मन्त्रमें यह वर्णन देखें और देवोंद्वारा स्थापित अग्नि का वर्णन पूर्व मंत्रोंमें पढ़ें । इन दोनों वर्णनोंका विचार करने से उनको स्पष्ट पता लग जायगा कि यद्यपि ये दोनों वर्णन दो भिन्न दृष्टिकोनोंसे हुए हैं, तथापि एकही पदार्थ के हैं । इंद्रियोंमें रहनेवाला, इंद्रियोंको पुष्टि देनेवाला, इंद्रियोंद्वारा प्रकट होनेवाला एकही आत्मा है । यही भाव विश्वव्यापक परमात्माके विषयमें सत्य है, क्योंकि वह परमात्मा सूर्यादि देवोंमें रहता है, इन देवताओंको पुष्ट करता है और इन देवताओंसे ही प्रकट हो रहा है । व्यापकता का वर्तुल छोटा लिया, तो वही वर्णन आत्मा के विषयमें हुआ और व्यापकता का वर्तुल अमर्याद बड़ा लिया, तो वही वर्णन परमात्माका हुआ । यह बात यहां स्पष्ट हो जाती है । वेद

की वर्णनशैली की यही अद्भुतता है। पाठक यहां इसका अनुभव करे। अस्तु। इस प्रकारका यह आत्माग्नि मनुष्यों में ही प्रज्वलित होता है, अर्थात् अन्य प्राणिमात्रमें यह वैसा तेजस्वी नहीं होता, जैसा कि मानवी देहमें होता है। इसका कारण स्पष्टही है कि, मानवी योनि 'कर्मयोनि' है, यहाँही पुरुषार्थ होना संभव है; उस प्रकार अन्य योनियोंमें संभव ही नहीं है। पुरुषार्थके बिना उन्नति होनी अशक्य है। इसीलिए मन्त्र में कहा होता है कि, 'मानवी प्रजामें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है' और देखिए—

न यस्य सातुर्जनितोरवारि न मातरा पितरा
नूचिदिष्टौ ॥ अधा मित्रो न सुधितः पावकोऽ-
ग्निर्दीदाय मानुषीषु विश्व ॥ (६८८; ऋ० ४, ६, ७)

'जिस (जनितोः) उत्पादक के (सातुः) तेजको मातापितादि कोई भी (न अवारि) प्रतिबन्ध कर नहीं सकते, इस प्रकारका (मित्रः न) मित्रके समान हितकारी (सुधितः पावकः अग्निः) सुरक्षित शुद्ध अग्नि (मानुषीषु विश्व) मानवी प्रजाओंमें (दीदाय) प्रदीप्त होता है।'

जिस समय यह आत्माग्नि मानवी प्रजाओं में प्रदीप्त होता है, उस समय उस महान् आत्माका तेज फैलता जाता है, कोई उसको प्रतिबन्ध कर नहीं सकते। इतनाही नहीं, परन्तु जो प्रतिबन्ध करनेका यत्न करते हैं, वेही नष्ट-भ्रष्ट होते हैं; अथवा उनके प्रतिबन्ध के कारण उस महान् आत्माका तेज अधिक विस्तृत होने लगता है। इस बातकी साक्षी इतिहास में सर्वत्र मिलती है। आत्मिक बलकी उग्रता सर्वत्र प्रसिद्ध ही है। यह आत्मा सबका मित्र होने से जिसमें इसका तेज प्रदीप्त होता है, वह बड़ा यशस्वी हो जाता है। इस मन्त्रमें (मानुषीषु विश्व दीदाय) मानवी प्रजाओंमें यह आत्माग्नि प्रदीप्त होता है, यह बात स्पष्ट कही है। इसका अर्थ यह है कि, अन्य प्राणियोंमें यह निवास करता है, परन्तु वहाँ यह विकसित नहीं हो सकता, क्योंकि उन्नतिसाधक योनि मनुष्ययोनि ही है। इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषद् में देखिए—

ता पता देवताः सृष्टा अस्मिन्महत्त्यर्णवे प्राप-
तन्...॥ ता एनमब्रुवन्नायतनं नः प्रजानीहि
यस्मिन्प्रतिष्ठिता अन्नमदामेति ॥ १ ॥ ताभ्यो
गाम्मानयत्, ता अब्रुवन् वै नोऽयमलमिति ॥

ताभ्योऽश्वमानयत्ता अब्रुवन् वै नोऽयमल-
मिति ॥ २ ॥ ताभ्यः पुरुषमानयत्ता अब्रुवन्
सुकृतं वतेति ॥ पुरुषो वाच सुकृतम् ॥ ता
अब्रवीद्यथाऽऽयतनं प्रविशतेति ॥ ३ ॥ (ऐ० उ० २)

'वे सब देवताएं इस बड़े समुद्रमें आ पड़ीं। सब देवताएं उससे कहने लगीं कि, हमें स्थान दो कि जहाँ बैठकर हम अन्न खायेगे। वह देवताओंके सम्मुख गाँ लाया। देवताओंने कहा कि यह ठीक नहीं है, पश्चात् घोड़ा लाया, उसको देखकर देवताओंने कहा कि यह भी ठीक नहीं है। इसके अनन्तर मनुष्य लाया गया, उसे देखकर देवताएं कहने लगीं कि यह ठीक है, मनुष्य ही ठीक है। ऐसा कह कर सब देवताएं अपने अपने स्थानपर इस मानवी देहमें बैठ गईं।'

यह विकास-वादका वर्णन स्पष्टतासे कह रहा है कि, मानवी योनि ही उत्कर्षकी योनि है और इसके अग्रप्रत्य-गोंमें संपूर्ण देवताएं निवास कर रही हैं, और अपना अपना भोग्य भोग ले रही हैं। इन सब देवताओंका अधिष्ठाता आत्मा है, जिसके साथ देवताएं आती हैं और वह जिस समय इस देहको छोड़कर चला जाता है, उस समय चली जाती है। यह वर्णन ही वेदमन्त्रों में अनेक प्रकार के रूप-रूपांतरोंसे आया है। अस्तु। तार्पथ यह है कि यह आत्मा इस मानवी योनिमें ही उत्कर्षको प्राप्त हो सकता है और जिस समय इसका तेज फैलने लगता है, उस समय उसका कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती। यही वर्णन उक्त मन्त्रमें है। अब और एक दृष्टिकोन से देखिए। पूर्वस्थल में एक मन्त्र दिया ही है, जिसमें कहा है कि, यह आत्माग्नि देवों द्वारा प्रकट होता है। यही भाव निम्न लिखित मन्त्र में भिन्न रूपक से वर्णन किया है—

(४४) दस बहिर्ने इसको प्रकट करती हैं।

द्विर्यं पंच जीजनन्त्संवसानाः स्वसारो अग्निं
मानुषीषु विश्व ॥ (६८९; ऋ० ४, ६, ८)

'इस अग्नि का (द्विः पंच स्वसारः) दो गुणा पांच बहिर्ने मानवी प्रजाओं में (सं वसानाः) रहती हुई, (जीजनन्) प्रकट करती हैं।'

दो गुणा पांच बहिर्ने अर्थात् दस बहिर्ने मानवी शरीर में हैं और ये दस बहिर्ने आत्माग्नि को प्रकट करती हैं।

पच ज्ञानेन्द्रियां और पच कर्मेन्द्रियां इस देह में हैं और उन के द्वारा यह आत्मा प्रकट हो रहा है। अरणियों के वर्षण से जो अग्नि सिद्ध होता है, वह भी दस अंगुलियों से ही वर्षण होता है। इसलिये ये बहिन कहलाती है। ये भाव इस मंत्र में स्पष्ट है।

अन्दर आत्मा का अस्तित्व है। यह बात इन्द्रियों के द्वारा ही प्रकट हो रही है, यदि इन्द्रियां न होतीं, तो अन्दर के मुख्य देव को जानना ही अशक्य होता। विचार कर के पाठक देखेंगे, तो उन को इस बात का पता लग जायगा कि, इन्द्रियों के कार्य से ही आत्मा के अस्तित्व का अनुमान होता है। तात्पर्य, इन्द्रियों से आत्मा प्रकट होता है। यही भाव देवोंद्वारा प्रकट होनेवाले अग्नि में है। पाठक यहां देखें कि, विभिन्न दृष्टिकोनों के वर्णनों से एक ही बात किस प्रकार व्यक्त हो जाती है। और इस मुख्य बात को ही सर्वत्र देखने का यत्न करें। इन्द्रिय-शक्तियां आत्मा की बहिन हैं, इस में अलंकार की दृष्टि से कोई अत्युक्ति ही नहीं है। परन्तु इस में एक विशेष विचार करनेयोग्य श्लेषार्थ भी है। 'स्व-सृ' शब्द का अर्थ 'बहिन' है, परन्तु इस का यौगिक अर्थ (स्व सरति) अपने निज के प्रति जो जाती है, अथवा (स्वस्मात् सरति) अपने निज से जो चलती है, वह 'स्व-सृ' है। अर्थात् जागृति की अवस्था में जो इन्द्रियां आत्मा से शक्ति लेकर बाहर जाती हैं और सुषुप्ति अवस्था में इन्द्रियां बाहर से आकर आत्मा के अन्दर लीन हो जाती हैं, वह सब इन्द्रिय-शक्तियां आत्मा की बहिन ही हैं। यह श्लेषार्थ पूर्णतया आत्मा और इन्द्रिय-शक्तियों में संगत हो रहा है। इस रीति से अनेक दृष्टिकोनों द्वारा ही सद्रस्तु के भिन्न भिन्न आशय प्रकट हो रहे हैं। वेद के वर्णन में यह श्लेषार्थ की अपूर्वता पाठक देख सकते हैं। यह अग्नि मनुष्यों के अन्दर ही है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिये—

त्वं होता मंद्रतमो नो अधुगंतदेवो विदथा मर्त्येषु ।
(१००१; ऋ० ६।११।२)

'हे अग्ने' तू (मर्त्येषु अन्त) मनुष्यों के अन्दर है और (विदथा) इस यज्ञ में हवनकर्ता तू ही है। तथा (मंद्रतमः) सुखदायक और (अ-धुक्) द्रोह न करने-वाला देव तू ही एक है।'

अग्नि मनुष्य के अन्दर है, मानवी आयुष्य में जो शत-सांवत्सरिक यज्ञ चलता है, उसका होता अर्थात् याजक यही आत्माग्नि है। यह बात अब अधिक स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है। वेद ही स्वयं कह रहा है कि, यह आत्माग्नि मनुष्य के अन्दर रहता है और द्रोह न करता हुआ सबको सुख देता है। यही सबको पूज्य और प्राप्ति है, क्योंकि यही सबसे मुख्य है। कितनी स्पष्टता से वेद यह कह रहा है, यहां देखनेयोग्य है। इतना स्पष्ट कथन होनेपर किसीको शंका नहीं होनी चाहिये। परन्तु वैदिक दृष्टिकोण ठीक प्रकार ध्यान में न आने के कारण यह सब गड़बड़ हो रही है। एक बार वेदका दृष्टिकोण समझ में आ गया, तो कोई शंका ही नहीं रहेगी। अस्तु।

इस आत्माग्नि के पूज्य होने के विषय में निम्न लिखित मन्त्र देखिये—

त्वमग्ने व्रतपा असि देव आ मर्त्येषुवा ॥

त्वं यज्ञेष्वीडथः ॥ (१२१४; ऋ० ८।११-१)

'हे अग्ने' हे देव ! तू मर्त्यों में व्रतपालक है और तू ही यज्ञों में पूज्य है। मर्त्य शरीर में अमर आत्मा है, इसलिए अमर की ही पूजा करनीयोग्य है। अमरको छोड़कर मरने-वालेकी पूजा कौन करेगा ? सब प्रकार के यज्ञों में जिसकी पूजा होती है, वह यही आत्माग्नि है। यही व्रतपालक अर्थात् नियमपालक है। उन्नति के सब नियमों का पालन करके विकसित होना इसका ही स्वभाव-धर्म है। इस प्रकार आत्माकी उपासना वेदमंत्रोंद्वारा सूचित होती है। यही आत्मा सबका रक्षक है, इस विषय में निम्न मन्त्र देखिए—

(४५) प्रजाका रक्षक ।

अग्निं द्वेषो योतवै नो मृणीमस्यग्निं शंयोश्च दातवै ॥ विश्वासु विश्ववितेव हव्यो भवद्वस्तु-ऋषूणाम् ॥
(१४२३; ऋ० ८, ७१, १५)

'(नः द्वेषः) हम शत्रुओंको (योतवै) दूर करनेके लिए अग्नि की (मृणीमसि) स्तुति करते हैं। तथा (शंयोः च) सुखप्राप्ति और दुःखदूरीकरण के लिये अग्नि की उपासना करते हैं। क्योंकि यही अग्नि (विश्वासु विश्व) सब प्रजाओंमें (अविता) रक्षण करता है और इसलिए (ऋषूणां) ऋषियोंका (वस्तु) निवासक (हव्यः)

और प्राप्त हुआ है ।'

आत्मामाग्निकी उपासना करनेसे कौनसे लाभ होते हैं, यह इस मन्त्रमें उत्तम प्रकार वर्णन किया है— (१) शत्रु के साथ युद्ध करके उनको दूर भगानेका सामर्थ्य प्राप्त होता है, (२) शांति प्राप्त होती है और दुःख दूर होते हैं । क्योंकि यही आत्मिक बलसे युक्त होनेके कारण सब प्रजाओंमें सच्चा रक्षक है और इसीलिए ऋषि इसकी प्राप्ति के लिए यत्न करते हैं ।

इस मन्त्रमें अग्नि शब्दसे आत्माका वर्णन स्पष्ट ही हुआ है । यह वर्णन आत्मामें ही सार्थ होता है, इस विषय में अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । क्योंकि इस समय तक यही एक विषय बारंबार आ गया है । यह आत्माग्निकी मुख्य है, और इससे ही सब इंद्रियादिकों को सुख होता है, इस विषयमें स्पष्ट मन्त्र यह है—

मह्यं अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता
मादयन्ते । आ विश्वेभिः स-रथं याहि देवै-
र्यग्ने होता प्रथमः सदेह ॥ (१११६, ऋ० ७/११११)

' हे अग्ने ! तू (अध्वरस्य) इस यज्ञका (महान् प्रकेत) बड़ा ध्वज है । (त्वत् ऋते) तेरे बिना (अमृताः) देव (न मादयन्ते) सुखी नहीं होते । (विश्वेभिः देवैः) सब देवोंके साथ (स-रथं) अपने रथपर से आओ और (प्रथमः होता) मुख्य याजक बनकर (इह) यहां (नि सद) बैठो । ' देखिए, कैसा इस वर्णन का प्रत्येक वाक्य अपने अन्दर अनुभव होता है— (१) इस शत-सांवत्सरिक महायज्ञका यही आत्माग्निकी मुख्य चिह्न है । (२) इस आत्माग्निके बिना कोई इंद्रिय सुख का अनुभव कर ही नहीं सकती । (३) सब इंद्रियशक्तियोंके साथ यह आत्मा यहां इस देहमें आता है और जानेके समय भी सबको साथ ले जाता है, मानो सब देव इसके रथ परसे यहां आते हैं, किंचित् काल रहते हैं और इसीके रथपर बैठकर इसके साथ ही चले जाते हैं । (४) यहां इस देहमें—इस कर्म भूमिमें—जो यह शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, उसका मुख्य याजक यही आत्माग्निकी है । इत्यादि प्रकार विचार करनेसे उक्त मन्त्रके कथनका साक्षात् अनुभव अपने शरीरमें ही होता है । और जिस समय अपनेमें यह दृष्टि खुल जाती है, उस समय वेदमन्त्रोंकी सत्यता अधिकाधिक

अनुभवमें आ जाती है । सब अनुभव अपने अन्दर ही होना है, किसी बातका अनुभव बाहर नहीं हो सकता । अपने अन्दर जो अनुभव बीजरूपसे होता है, विस्तृत रूपसे वही अवस्था बाह्य जगत् में है, परन्तु यह तर्क से जानी जाती है, अर्थात् अनुभव की बात अपने अन्दर ही होती है । पाठक इस दृष्टि से मंत्रों का विचार करें और सत्य बातका साक्षात् अनुभव लेने और देखने का पुरुषार्थ करें । अब एक अनुभव की बात देखिये । देवों के साथ यह आत्माग्निकी इस शरीरमें आता है, रहता है और चला जाता है, यह वर्णन पूर्वस्थल में आया है । इस के आने का मार्ग देखिये—

(४६) देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान ।

अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैरुर्णावतं प्रथमः
सीद योनिं । कुलायिनं घृतवतं सवित्रे यज्ञं
नय यजमानाय साधु ॥ (१०३८, ऋ० ६-१५-१६)

' हे (स्वनीक अग्ने) उत्तम सेनापते अग्ने ' तू प्रथम देवों के साथ आकर (उर्णा-वतं योनिं) उनसे युक्त योनि के स्थान में (सीद) बैठ जाओ । और (सवित्रे) प्रसव करने-वाले यजमान के लिये (साधु) उत्तम प्रकार से (कुला-यिनं) घर बढानेवाले तेजस्वी यज्ञ को (नय) चलाओ ।'

' सब देवों के साथ उनवाली योनि के स्थान में आकर बैठ जाओ । ' यह मंत्र का पहिला कथन है । स्त्री का योनिस्थान देहका जन्मस्थान है, इसलिये स्पष्ट है कि, यदि किसी रीति से आत्माग्निकी का अन्य देवों के साथ आगमन इस देह में होना है, तो योनिमार्ग से ही होना चाहिये, दूसरा कोई मार्ग नहीं । मंत्र के ' उर्णावतं योनिं ' जनवाली योनि ये शब्द स्पष्टतया बता रहे हैं कि, गर्भधारणयोग्य तरुण युवती के ही सूचक ये शब्द हैं, क्योंकि तारुण्य में ही उस स्थान पर बालों की उत्पत्ति होती है । गर्भधारणा के समय सब देवी शक्तियों के समेत जीवात्मा यहां आवे और प्रवेश करे, यह इच्छा यहां स्पष्ट रीति से व्यक्त हो रही है ।

शरीर में देवों का अंशावतार होने का वर्णन ऐतरेयोपनिषद् के प्रारम्भ में ही है । अग्नि, वायु, रवि आदि देव क्रमशः वाक्, प्राण, चक्षु आदि के रूप धारण कर के इस

शरीर में आ बसे हैं और यहां का कार्य कर रहे हैं । यह उपनिषद् का कथन सत्य होने के लिये आत्माको अन्य देवों के साथ इस शरीर में आना आवश्यक ही है । इस का आगमन जिस मार्ग से होता है, उस मार्ग का वर्णन उक्त मंत्र में किया है । रजवीर्य का संयोग होकर जिस समय गर्भ बनने लगता है, उस समय आत्मा के समेत सब देवताएं आती हैं और अपने अपने स्थान में रहती है, (ए. उ. २) आत्माग्नि (स्वनीक=सु+अनीक) उत्तम सैन्ययुक्त है, अन्य देवताओं के अंश ही उस का सैन्य है । जहां यह सेनापति जाता है, वहां उस के सैनिक जाते हैं । (विश्वेभि देवेभिः) सब देवों के अंशों के साथ यह आत्माग्नि ऊनवाली योनि में आता है ।

इस कथनसे एक बात सिद्ध होती है कि, जगत् में जितने देव हैं, अर्थात् दैवी तत्त्व हैं, उन सबके अंश इस देह में हैं । पंच महाभूत पांच बड़े देव हैं । इन महाभूतों के अंश इस देह में हैं । इसी प्रकार अन्य देवों के अंश इस देह में रहते हैं । देवताका जो अंश इस शरीर में आता है, वह इस शरीरका निज बनकर रहता है । पृथ्वीका अंश मिट्टीके रूप से शरीर में नहीं है, परन्तु उसका शरीर बन कर वह अंश रहना है । इसी प्रकार अन्यान्य देवों के विषय में समझना चाहिए । ये सब देव यहां आकर इस शतसांवत्सरिक सत्र को चलाते हैं । यह बात (यज्ञं नय) 'यज्ञ को चलाओ' इन शब्दों द्वारा सूचित की है । यह यज्ञ (कुलायिनं घृत-स्रुतं) कुल अथवा घर बढानेवाला और तेज वृद्धिगत करनेवाला है । आत्मा इस शरीर में जब संपूर्ण देवों के साथ आता है, तब घर बढता है, इसका अनुभव संतान उत्पत्ति की खुशीसे पाठकोंको हुआ ही है । इसलिए इस विषय में अधिक लिखनेकी आवश्यकता नहीं है । पाठक देखें कि, वैदिक तत्त्वज्ञान कैसा प्रत्यक्ष होता है, देखिए निम्न मन्त्र-

(४७) यज्ञका झंडा ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं नरस्त्रिषधस्थे समीधरे । इंद्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः ॥ (८४३; ऋ० ५, ११, २)

(नरः) मनुष्य (प्रथमं पुरोहितं) पहिले पूर्ण हितकारी (इंद्रेण देवैः) इंद्रके तथा अन्य देवों के साथ (सरथं) एक रथमें आनेवाले अग्निकी प्रदीप्ति (त्रि-सधस्थे)

तीन स्थानोंमें करते है । यह अग्नि यज्ञका ध्वज है । वह उत्तम यज्ञ करनेवाला (बर्हिषि) अन्तःकरणमें बैठकर हवन करता है । '

इन्द्र और अन्य देवों के साथ एक रथमें आनेवाला यह अग्निदेव है । इंद्र देवोंका अधिपति है । तैत्तिरीयकोटि देवोंके साथ इंद्रको भी अपने रथपर से लानेवाले अग्निका रथ कितना बड़ा होगा ? क्या इसका अंदाजा हो सकता है ? यदि सूर्यचंद्रादि सबही देव अग्निके रथ में बैठने हैं, तो उस अग्निका रथ इस विश्वके बराबर विशाल होना चाहिए । तात्पर्य, व्यापक दृष्टिसे देखा जाय, तो संपूर्ण जगत् ही इस अग्निका रथ है; इस रथपर सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, वायु आदि सब देव बैठे हैं । यहां विश्वव्यापक परमात्मा रथी है और अन्य देव उसके रथपर बैठनेवाले उसके सहायक हैं । इस का प्रतिरूप दूसरा छोटा रथ है, जिसको देह कहते हैं; इसमें आत्माग्नि रथी है और संपूर्ण देवताओंके अंश अर्थात् इंद्रिय उसके सहायक हैं । यह जीवात्माका रथ छोटा है और परमात्मा बड़ा है । तथापि दोनोंमें, छोटे और बड़ेपन को छोड़ दिया जाय, तो तत्त्वोंकी एकता ही है । देह में अंशरूप ३३ देव हैं और विश्वमें विस्तृत ३३ देवता विराजमान हुए हैं । इस प्रकार विचार करके मन्त्रका तत्त्व जानना चाहिए । इस मन्त्रका तत्त्व इस शरीर में ही प्रत्यक्ष होता है, इसलिए अध्यात्मदृष्टिसे मन्त्रका अर्थ मुख्य और अन्य रीतिसे गौण है ।

' यज्ञका झंडा ' यही आत्माग्नि है । शरीर में जो शतसांवत्सरिक सत्र चल रहा है, उस का सब से प्रमुख अधिकारी यही है, यही पूर्ण हितकर्ता है । इस की पूजा तीन (त्रि-सधस्थे) तीन स्थानों में होती है- (१) मस्तिष्क, (२) हृदय और (३) पेट में इस की पूजा हो रही है । जो केवल पेट की पूजा करते हैं, वे मिरते हैं; परन्तु जो साथ साथ मस्तिष्क के ज्ञान से और हृदय की भक्ति से भी इस की पूजा करते हैं, वे दुःख के पार हो जाते हैं । तीन स्थानों में, तीन धामों में इस प्रकार इस की उपासना करना आवश्यक है । यही तीन धामों की यात्रा है, जो करने से पुण्य मिलता है और न करने से पाप लगता है । यही आत्माग्नि मस्तिष्क में ज्ञानरूप कार्य करता है, हृदय में शान्ति का अनुभव

करता है और पेट में भक्षक बनकर अन्नरसों को अपनाता है । ये इसके कार्य देखनेयोग्य है । वेद में इन तीन धामों और स्थानों का वर्णन अनेक स्थानोंमें है, इसलिये इस बात का ठीक ज्ञान होने पर उन मंत्रों की संगति लग सकती है । यह आत्मा (बहिषि) अन्तःकरण में बैठता है, यहीं इस का मुख्य स्थान है । यही सब का केंद्र है, यहीं से यह राजा सर्वत्र प्रेरणा भेजता है, यहींसे यह यजमान सर्व यज्ञमण्डप का यज्ञप्रबन्ध करता है, यहीं से यह रथी अपने रथके घोड़े चलाता है और विरोध करनेवाले शत्रुओं से लड़कर अपना जय प्राप्त करता है । इसीलिए इसको (सु+क्रतु) उत्तम कर्म करनेवाला कहा है । इस प्रकार जो उत्तम कर्म करता है, उसकी शक्ति विकसित होती है और जो नहीं करता, उसका विकास वैसा नहीं होता । इसलिये ही कर्मका महत्त्व बड़ा भारी है । इसका यह यज्ञ किस स्थानमें दिखाई देता है ? ऐसा प्रश्न यहां पूछा जा सकता है, उसका उत्तर निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(४८) देवोंमें यज्ञ ।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहीमा हव्या जातवेदो जुषस्व ॥
[६१८; ऋ० ३।२१।१]

‘ इस हमारे यज्ञ को (अ-मृतेषु) अमर देवोंमें (धेहि) पहुंचाओ और हे (जात-वेदाः) वेदजनक अग्ने ! इन हवनीय पदार्थोंको स्वीकार करो । ’

इस मंत्रमें कहा है कि, यह अग्नि यज्ञके हव्य पदार्थोंको लेता है और देवों में पहुंचाता है । जो अग्नि हवनकुंड में रहता है, उसमें डाली हुई आहुतियां सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि देवोंतक पहुंचती हैं, या नहीं इस विषयमें कोई प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है । यह बात तर्कसे नहीं विदित हो सकती । किसी ग्रंथ के वचनपर कोई विश्वास करे, वह बात दूसरी है, परंतु प्रत्यक्ष अनुभव इस विषयमें कोई भी नहीं है । परंतु इसका अनुभव अभ्यासमें अर्थात् अपने शरीरमें प्रत्यक्ष हो सकता है । जो अन्न पेटमें डाला जाता है, उसके अंश संपूर्ण इंद्रियो और अवयवों में यथाभाग पहुंचते हैं । इस जठराग्निमें डाली हुई आहुतिपं सूर्यके प्रतिनिधिरूप नेत्रमें जाती हैं और वहांकी पुष्टि करती हैं, इसी प्रकार अन्य देवताओंके प्रतिनिधिभूत जो अन्य इंद्रियगण हैं, उनकी भी इसी प्रकार पुष्टि होती है । यह प्रतिदिनके अनुभवका

ज्ञान है । यद्यपि यह आत्माग्नि अन्नके विभाग किस प्रकार करता है और इंद्रियों में रहनेवाले देवोंतक किस रीति से पहुंचाता है, इसका भी हमें प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है; तथापि अनुभव से पता है कि, वह पहुंचाता है और वहांके देवताकी पुष्टि करता है । वैद्यलोग इसका ज्ञान अधिक विस्तार से बता सकते हैं, उस प्रकार सामान्य मनुष्योंको बताना असंभव है । परंतु अन्न खानेके बाद शरीरकी पुष्टिका अनुभव बताता है कि, यह आत्माग्नि ही कार्य है, क्योंकि आत्माग्नि चला गया, तो शरीरकी पुष्टि नहीं होती । इस बातका विचार करनेसे इसका नाम ‘ (हव्य-वाह) हव्य पदार्थोंको देवताओंतक पहुंचानेवाला ’ किम उद्देश्यसे रखा है, इस बातका पता लग सकता है ।

(४९) यही दूत है ।

दूत नाम सेवक का होता है । आज्ञाकारी सेवक आज्ञाके अनुसार कार्य सत्वर करता है । पेटमें रखा हुआ अन्न संपूर्ण इंद्रियोंतक पहुंचानेका दूतका कार्य यह करता है । इसीलिये इस आत्माग्निको अनेक सूक्तों में ‘ दूत ’ कहा है—

विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमक्रत ॥

श्रुष्टीदेव प्रथमो यज्ञियो भुवः । (१२८७; ऋ. ८।२३।१८)

‘ (स-जोषसः) एक विचारसे कार्य करनेवाले सब देवोंने तुमको दूत (अक्रत) बनाया है । हे देव ! तू पहला (यज्ञियः) पूज्य देव है । ’

इस मंत्रके प्रथम अर्थमें कहा है कि, “ देवोंने इसको दूत बनाया है । ” और दूसरे अर्थ भागमें कहा है कि, “ यह पहला पूज्य देव है । ” जो सबसे प्रथम पूजनीय देव है, वह सबसे श्रेष्ठ देव होना स्वाभाविक है, इसलिये यहां शंका हो सकती है कि, जो सबसे श्रेष्ठ देव है, वह सब गौण देवों का दूत कैसा हो सकता है ? इस शंकाका समाधान होनेके लिये एक उदाहरण लेता हूं । राजा, महाराजा अथवा सम्राट् अपने राज्यमें सबसे श्रेष्ठ होता है, उसके नीचे अनेक ओहदेदार होते हैं, और इनके आधीन सब प्रजानन रहते हैं । तथापि सब ओहदेदारोंको प्रजाके नौकर (Public servant) ही कहा जाता है । प्रजाके नौकरोंमें जो ‘ सबसे बड़ा नौकर ’ होता है, वही ‘ राजा, महाराजा और सम्राट् ’ कहलाता है । तात्पर्य यह है कि, यद्यपि राजाके और राजपुरुषों के आधीन प्रजाजन

होते हैं, तथापि वे सबही अधिकारी प्रजाजनोंके नौकर ही होते हैं, और राजा नौकरोंका भी बड़ा नौकर होता है। इसलिये वही राजा इतिहास में सुसूजित होता है कि, जो अपनी नौकरी सबसे उत्तम करता है। जिस प्रकार अधिभूत मे अर्थात् राष्ट्रमें यह बात सत्य है, उसी प्रकार अध्यात्ममे भी सत्य है। यहां आत्मा राजा महाराजा और सम्राट् है और इसी लिये उक्त प्रकार वह सबका सबसे बड़ा दूत, नौकर अथवा सेवक हैं। इसी कारण जो अन्न उसके पास दिया जाता है, वह सब देवोंके पास पहुंचाता है, तथा हरएक प्रकारसे (देवों) इंद्रियोंकी सेवा करता है। वह अपने लिये कुछ भी चाहता नहीं। जो कुछ चाहता है, सब इंद्रियोंके लिये ही चाहता है। यह इस आत्म-गिनिका दूतकर्म विचार की दृष्टिसे देखनेयोग्य है। परमात्माका यही दूतकर्म त्रिभुवनमें हो रहा है।

पाठक यहां एक नया दृष्टिकोणका अनुभव कर सकते हैं। पूर्व समयमें इस आत्मगिनिका वर्णन अधिकारीके भावसे किया, अब उसी का वर्णन दूतभावसे किया जाता है। वेदमें हम प्रकार अनेक दृष्टिकोण हैं। हरएक दृष्टिकोणसे वस्तु देखी जाती है और उसीके अनेक विभिन्न पहलुओं का वर्णन किया जाता है। यह प्रयाम इसलिये है कि, उस सद्रस्तुका सब पहलुओं से यथार्थ ज्ञान सबको हो जावे। जो पाठक इन सब दृष्टिकोणों को यथावत् जान सकते हैं, वेही वेदकी गंभीरता जान सकते हैं। अस्तु। अब इसके अनंतर अग्निके गुहानिवासित्वका विचार करेंगे। हमके विचारसे अग्निके शुद्ध स्वरूपका पता लग सकता है।

(५०) गुहासंचारी अग्नि ।

गुहासंचारी अग्निका स्वरूप अब देखना है। इसका मूल स्वरूप देखनेके लिये “ गुहा ” शब्दका वैदिक अर्थ देखना चाहिये। इस लिये निम्नलिखित वचन देखिये—
आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ॥ (कठ उ २।२०)
विद्धि त्वमेनं निहितं गुहायाम् ॥ (कठ. उ. १।१४)
गुहाहितं गह्वरेष्ठं पुराणम् ॥ (कठ. उ. २।१२)
आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः ॥ (श्वे. उ. ३।२० ;
महा. ना. उ. ८।३)
एष पंचधात्मानं विभज्य निहितो गुहायाम् ॥
(मैत्री उ. २।६)

एतद्यो वेद निहितं गुहायाम् ॥ (मुंड. उ. २।१।१०)
अंतश्चरति भूतेषु गुहायां विश्वतो मुखः ॥

(महा. ना. उ. १।५।६)

आविः संनिहितं गुहाचरं नाम महत्पदम् ॥

(मुंड. उ. २।२।१)

इस प्रकार “ गुहा ” शब्दका प्रयोग उपनिषदोंमें अनेक स्थानपर आया है। इन सब वचनोंका यही तात्पर्य है कि ‘ आत्मा इस प्राणीकी (गुहा) अर्थात् हृदयमें रहता है । ’ गुहा शब्दका अर्थ इस दृष्टिसे ‘ हृदय, अंतःकरण, ’ आदि है। कोशोंमें भी ‘ गुहा ’ शब्दका अर्थ ‘ हृदय, बुद्धि, अंतःकरण, गुफा, गुप्त रहनेका स्थान ’ इस प्रकार दिया है। आत्मा हृदय की गुहामें छिपा है, वहांही उसको देखना चाहिये, यह भाव वेद और वेदांतशास्त्रमें सर्वत्र है इस प्रकार गुहा शब्दका अर्थ ‘ हृदय ’ निश्चित हुआ। जो गुहामें होता है, उसको ‘ गुह्य ’ कहते हैं। हृदयके अंदर अपने मनमें ही जो रखनेकी बात होती है, उसको गुह्य कहते हैं। आत्माका भी नाम गुह्य इसलिये है कि, वह हृदयमें गुप्त होता है। इस दृष्टिसेभी गुहाका अर्थ अंतःकरणही होता है। इस अर्थको लेकर निम्नलिखित मंत्र देखिये—

पश्वा न तायुं गुहाचरन्तं नमो युजानं नमो

वहन्तम् ॥ सजोषा धीराः पदैरनुगमन्नुप त्वा

सीदन् विश्वे यजत्राः ॥ (१२४-१२५, ऋ. १।६।५।१)

इस मंत्रके दो अर्थ हैं। एक अर्थ चोरके विषयका है और दूसरा आत्माके विषयका है। इस मंत्रका ऋषि पराशर है और देवता अग्नि है। देखिये इसके दोनों अर्थ—

(१) चोरविषयक अर्थ— (न) जैसा पशुकी चोरी करके (तायुं) चोर उस (पश्वा) पशुके साथ (गुहा-चरन्तं) पर्वतों की गुहाओंमें जा कर छिप जाता है, वहां वह चोर अपने साथ (नमः वहन्तं) अन्न भी रखता है और (नम युजानं) शस्त्र की भी योजना करता है। इस प्रकारके बड़े डाकू को पकड़नेके लिये (स-जोषाः यजत्राः विश्वे धीराः) एक विचारसे प्रयत्न करनेवाले सब धैर्यशाली वीर [पदैः अनुगमन्] पशुके और चोरके पांवोंके चिह्न जो भूमिपर लगे होते हैं, उनको देख देखकर पास पहुंचते हैं और [उप सीदन्] बिलकुल समीप जाकर उसको पकड़ते हैं। इसी प्रकार धैर्यसे चोरको पकड़ना चाहिये ।

जो डाकू, चोर, लुंटेर आदि होते हैं, वे शहरों में चोरी करके पशु, धन, अन्न आदि पदार्थ अपने साथ लेकर भागते हैं और पर्वतों के दुर्गम स्थानों में जाकर छिपते हैं । वहां वे रहते हैं, अपने साथ का अन्न खाते हैं और पकड़नेका प्रयत्न करनेवाले नागरिकोंके ऊपर अपने पासके शस्त्रप्रयोग करते हैं और पास आने नहीं देते !! इस प्रकारके चोरोंको पकड़कर दंड देना चाहिये । पकड़ने की यह युक्ति है कि सबको एक विचारसे मिलकर, संघ बनाकर, आगे बढ़ना चाहिये और उसके पदचिह्नों को देखदेखकर उसका पता लगाना चाहिये और युक्तिसे उसको पकड़ना चाहिये । यह चोरको दंड देने और उससे जनताका बचाव करनेके विषय में वेदका उपदेश है । इसका यहां अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं । जैसी गुहामें चोरकी खोज की जाती है, उसी प्रकार हृदयकंदरासे आत्माकी खोज होती है । इस विषय का अर्थ देखिये—

(२) आत्मा के विषयमें अर्थ— (न) जिस प्रकार (तायुं) चोर पशुके साथ गुहामें रहता है, उस प्रकार (पश्वा) इंद्रियादि शक्तियों को लेकर (गुहा चरन्त) जो हृदयमें रहता है और वहां (नमः वहन्ते) नमस्कारों को स्वीकार करता है और (नमः युजानं) नमन का योग करता है, उसको देखनेके लिये (स-जोषाः धीराः) समान ज्ञानवाले बुद्धिमान् लोग (पदैः) मंत्रों के पदों के साथ, अथवा आत्माके जो पद इंद्रियादि स्थानोंमें दिखाई देते हैं, उनको देखदेखकर (अनु-गमन्) पीछेसे जाते हैं और वे (विश्व-यजत्राः) सब याजक (उप सीदन्) पास बैठने हैं, अर्थात् उपासना करते हैं ।

एकही मंत्रमें ये दोनों भाव देखनेयोग्य हैं । चोरकी उपमा आत्माको देनेसे कोई हानि नहीं है । 'छिपकर रहने का भाव' ही दोनों स्थानपर विशेषतया देखना है । सब इंद्रियोंकी शक्तियोंका आकर्षण करनेवाला यह 'कृष्ण' किंवा 'संकर्षण', गौवों (इंद्रियों) का पालन करनेवाला यह 'गोपाल', गौवोंके साथ पर्वतकी गुहामें छिपकर रहनेवाला यह मायाविहारी 'गोपनाथ', पशुओंकी पालना करनेवाला यह 'पशुपति' एकही है । इन सब विविध रूप-कों और अलंकारों में एकही आत्मतत्त्वका वर्णन होता है । इसीको 'चोद-जार-कपटनाटकी' भी कहा जाता है !!

यद्यपि ये शब्द बाह्य अर्थमें निदाव्यंजक हैं, तथापि इसका गुप्त अर्थ बुरा नहीं है । रुद्रके वर्णन में 'तस्कर, स्तेन, स्तेनानां पतिः' ये 'चोर' वाचक शब्द रुद्रदेवताके लिये आये हैं । रुद्र पशुपति हैं अर्थात् पशुपतिही तस्कर हैं । इसका तात्पर्य इतनाहि है कि, ये शब्द किसी एक आशयके साथ मंत्रमें देखने होते हैं । अर्थात् 'चोरके समान छिपकर रहने-वाला आत्मदेव है । इसमें 'गुप्त रहना' ही देखना है, चोर का दूसरा भाव देखना नहीं है । अब इस आत्माकी खोज कैसी करनी है, देखिये । एकविचारसे, एकनिष्ठा से अनुष्ठान करने का निश्चय करना चाहिये । उसके जो पद अर्थात् विह्व इंद्रियो और अवयवों में दिखाई देते हैं, उन को देखते हुए उसका मार्ग ढूंढना चाहिये । इन पदोंपर अपना कदम रखकर जायेंगे, तो संभवतः उसके मूल स्थान-गुहामें-पहुंच सकते हैं और वहां उसका पता लगा सकते हैं । वह जिस गुहामें छिपकर बैठा है, उसके पता लगानेका यही एक उपाय है । इसके गुहानिवासी होनेके विषयमें और एक मन्त्र देखिये—

हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्वाहुहा-
निषीदन् ॥ विदन्तोमन्न नरो धियं धा हृदा
यत्तष्टान्मन्त्रा अशंसन् ॥ [१४६, क्र० १६७।३]

'(विश्वानि नृम्णानि) सब सुखों को (हस्ते दधानः) अपने हाथमें धारण करनेवाला, (गुहा निषीदन्) अपनी अंतःकरण की गुहासे बैठनेवाला, (देवान् अमे धात्) सब देवों को अर्थात् इंद्रियों को जीवनमें धारण करता है । (धियं-धाः नरः) बुद्धि को धारण करनेवाले नर (अत्र) इस गुहामें ही (इं विदन्ति) इसको जानते हैं, (यत्) जिस समय (हृदा तष्टान् मन्त्रान्) हृदयसे निकले हुए सुविचारों को (अशंसन्) कहते हैं ।'

जिस समय हृदयमें भक्ति के भाव चलने लगते हैं और दिलमें सच्ची भक्ति होती है, उसी समय ज्ञानी मनुष्य इस को हृदयकंदरामेंही प्राप्त करते हैं । यह यहां हृदयमें बैठा हुआ, सब सुखों को अपने पास रखकर, सब इंद्रियों में जीवन का प्रवाह चलाता है । पाठक इस वर्णन से जान सकते हैं कि, इस मंत्रमें जिस अग्निका वर्णन है, वह अग्नि कौन है? निःसंदेह चूल्हमें जलनेवाली आग इस मंत्रमें अभिप्रेत नहीं है । मनुष्यके हृदयमें जो आत्माग्नि है, वही

यहां वर्णित है । यही (१) सब सुखों को अपने में धारण करता है, (२) इंद्रियोंमें जीवनका प्रवाह चलाता है और (३) भक्तिकी भावनासे आनंदित होकर यही ज्ञानियोंको प्राप्त होता है । और देखिये—

य ई चिकेत गुहा भवन्तमायः ससाद धारामृतस्य ॥
वि ये चृतमृत्युता सपन्त आदिद्वसूनि प्रववाचास्मे ॥
[१५०-१५१, ऋ० १।६७।४]

‘ (यः) जो ज्ञानी (गुहा भवन्तं) हृदयकंदरामें रहनेवाले (ई) इसको (चिकेत) जानता है, (यः) वह मानो (ऋतस्य धारां) सत्यके स्रोतको (आससाद) प्राप्त करता है । (ये च ऋतानि सपन्तः) जो सत्यका आश्रय करनेवाले पुरुष हैं, जो सत्याग्रही हैं, वे (आत् इत्) निश्चयसे (अस्मै) इसके लिये ही (वसूनि प्रववाच) धन है, ऐसा कहते हैं । अर्थात् सब धन इसी का है, ऐसा कहकर इसीको अपना सर्वस्व अर्पण करते हैं । ’

हृदयमें जहां यह आत्माग्नि रहता है, वहांसे ही सत्यका स्रोत चलता है और इसीलिये जो सत्यके ऊपर स्थिर रहनेवाले होते हैं, वे ही इसको प्राप्त करते हैं । जिस प्रकार नदीके प्रवाहके साथ उलटा जानेसे नदीके उगम-स्थानतक पहुंच सकते हैं, उसी प्रकार सत्यकी नदी इससे शुरू होती है, इसलिये जो सत्यका आश्रय करते हैं, वे इसके पास पहुंचते हैं, क्योंकि इसके पास सत्य है और इससे दूर असत्य है । इसके पास जितना जितना जाय, उतना उतना सत्य अधिक होता है और जितना इससे विमुख होता है, उतना असत्य पास आने लगता है । इसी कारणही कहते हैं कि असत्य छोड़कर सत्य को पास करने से देवत्व प्राप्त होता है । अस्तु । इस रीतिसे इन मन्त्रों का विचार करनेपर निश्चय होता है कि यह गुहानिवासी अग्नि आत्मा ही है । और देखिये—

गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिः ॥ (४५५, ऋ० ३।१।९)

‘ शुभ मित्रोंके साथ गुहामें संचार करनेवाला ’ यह अग्नि है । यह भी आत्माग्निकाही रूपक है । आत्माग्नि के शुभ मित्र संपूर्ण इंद्रियशक्तियां ही हैं । क्योंकि ये शक्तियां इसके साथ आती हैं, इसके साथ रहती हैं और इसके जानेके समय इसके साथ चली जाती हैं । अर्थात् मित्रवत् इनका बर्ताव होता है । कई समझते हैं कि, इसका ज्ञान

प्राप्त होना कठिन है, परन्तु वेद कहता है कि यह बात सुगम है, देखिये—

चित्रं संतं गुहाहितं सुवेदं ॥ (६९८; ऋ० ४।७।६)

‘ यह गुहानिवासी बड़ा विलक्षण है, परन्तु यह (सु-वेदं) उत्तम प्रकारसे अथवा सुगमतासे जाननेयोग्य है । ’ इन मंत्रोंके विचारसे अग्निका स्वरूप स्पष्ट हो जाता है । यह विचार यहांही समाप्त करके और एक रीतिसे विचार करेंगे । सहचारी देवोंके विचारसे इसका विचार अब करना है ।

(५१) अग्निके साथी अनेक देव ।

अग्निके साथी जो अनेक देव हैं, उनकी संख्याका उल्लेख निम्न मन्त्रमें किया है । इसलिये वह मंत्र देखिये—

त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिशच्च देवा
नव चासपर्यन् ॥ (५०८; ऋ० ३।१।९)

‘ तीन सहस्र, तीन सौ, तीस और नौ देव इस अग्निकी (सपर्यन्) सेवा करते हैं । ’ इस मन्त्रमें अग्निदेवकी पूजा अथवा सेवा करनेवाले देवोंकी संख्या कही है । जहां अग्निदेव जाता है, वहां उसके साथ ये भी देव जाते हैं । ये देव उसके रथपरसे जाते हैं और अग्निके साथ उसके रथपर बैठकर ही आते हैं । देखिये इसका वर्णन—

पभिरग्ने सरथं याह्यावाङ् नानारथं वा विभवो
ह्यश्वाः ॥ पत्नीवत्स्त्रिशतं त्रींश्च देवाननुष्वध
मा वह मादयस्व ॥ (४८८, ऋ० ३।६।९)

‘ हे अग्ने ! आपके अथ (वि-भवः) प्रभावशाली हैं, इसलिये (एभिः) इन सब देवोंके साथ (सरथं) एक ही रथ परसे अथवा (नाना-रथ) अनेक रथोंके ऊपर (आ याहि) आओ । पत्नियोंके साथ तीस और तीन देवोंको बल के लिये यहां ले आओ और आनंदित रखो । ’

इस मन्त्रमें ३३ देवोंका संबंध अग्निके साथ बतलाया है । पूर्व मन्त्रमें ३३३९ देवोंका संबंध वर्णन किया है ।

१
३
३३
३३३
३३३९

यह देवोंकी संख्या विशेष महत्त्व रखती है । उक्त संख्या बढ़नेका क्रम ३३ करोड़ तक है । स्थानस्थानमें इस संख्या

का वर्णन ब्राह्मणोंमें आता है । एक मुख्य देव है, जिसको आत्मदेव कहते हैं । उसके साथ अनेक देवताएं हैं । अन्य देवताएं प्राकृतिक शक्तियां हैं और एक देव आत्मा है । आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, आदि शब्द इस भेदका वर्णन कर रहे हैं । आत्माकी शक्तियां प्रकृतिमें जाकर सूर्य, चंद्र, नक्षत्र, अग्नि, वायु, जल आदि अनेक देव बने हैं । इसका क्रम निम्न लिखित प्रकार है—

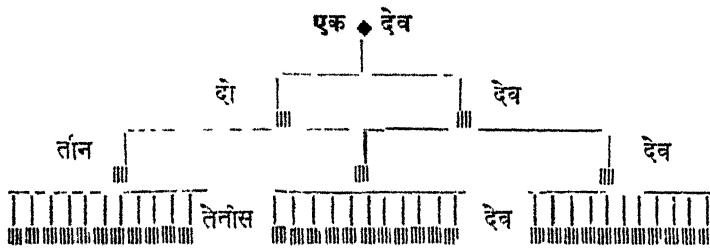
१ एक देव—आत्मा ।

२ दो देव—आत्मा और प्रकृति, पुरुष और प्रकृति, इत्यादि ।

३ तीन देव—पृथ्वीस्थानपर अग्नि, अंतरिक्ष स्थानपर विद्युत् और द्युस्थानमें सूर्य । त्रिमूर्ति ।

३३ तैत्तिरीय देव— ११ पृथ्वीपर, ११ अंतरिक्षमें, ११ द्युलोकमें ।

इन्हीं के विभाग ३३३९ और इसी क्रम से हमसे भी अधिक हुए हैं । इसका चित्र निम्न प्रकार बन सकता है—



इस प्रकार प्रत्येकके और भेद होनेसे अनेक देव हो जाते हैं । ये सब 'अनेक विभिन्न देव' हैं । ये विभिन्न देव 'एक अभिन्न देव' के साथी हैं ।

(१) एक अभिन्न देव (आत्मा) = आत्मा ।

(२) अनेक विभिन्न देव (अनात्मा) = देवताएं ।

यह कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आ गई, तो वेदके बहुतसे मन्त्रोंके वर्णन सुगमतया ध्यानमें आ सकते हैं । इसलिये पाठकोंसे प्रार्थना है कि, वे इस कल्पनाको ध्यानमें लानेका यत्न करें ।

अनेक विभिन्न देवोंमें एक अभिन्न देवकी शक्ति कार्य करती है, इसलिये एक अभिन्न देव श्रेष्ठ आर अनेक विभिन्न देव गौण है । पूर्वोक्त मंत्रमें एक अग्निदेवके साथी ३३३९ अथवा ३३ होनेका वर्णन है । इसका भाव इसी है

प्रकार समझना चाहिये । इस समयतक के वर्णन से पाठकों के मनमें यह बात आ गई होगी, कि इन मन्त्रोंमें जो अग्नि शब्दसे वर्णन हो रहा है, वह मुख्यतया 'आत्मा' का ही वर्णन है । इस आत्मगिनके साथ तीन, तैत्तिरीय अथवा इसी प्रमाणसे अधिक देवताएं आती हैं, रहती हैं और जाती हैं । इन सबका आना और रहना इस शरीरमें होता है, इस विषयमें पूर्व स्थलमें बहुत बार कह दिया है । अस्तु, इस प्रकार अग्निदेवके वर्णनसे मुख्यतया आत्माका वर्णन होता है । और इसकी सूचनाएं पूर्वोक्त प्रकार स्थानस्थान के सूक्तोंमें वर्णन की गई है । अब अग्निदेवके वर्णनमें 'सप्त' अर्थात् 'सात' संख्याका विशेष महत्त्व है, इसका विचार करके निश्चय करना है कि यह किस बातका वर्णन है—

(५२) " सात " संख्या का महत्त्व ।

वैदिक तथा लौकिक सारस्वतमें अग्निके वर्णनमें 'सप्त-हस्त' 'सप्त-जिह्व' आदि शब्द आते हैं । [१] सात हाथोंसे युक्त । [२] सात जिह्वोंसे युक्त यह उन शब्दोंका भाव है । देखिये—

सप्तहस्तश्चतुर्भुजः सप्तजिह्वो द्विशी-
षकः ॥ त्रिपात्रसप्तवदनः सुखा-
सीनः शुचिस्मितः ॥ स्वाहां तु
दक्षिणे पाश्वे देवी वामे स्वधां
तथा ॥ बिभ्रदक्षिणहस्तैस्तु शक्ति-

मन्त्रं स्तुचं स्तुवम् ॥ तोमरं व्यजनं वामैवृतपात्रं
च धारयन् ॥ आत्माभिमुखमासीन एवं रूपो
हुताशनः ॥

हुताशन अग्निका यह वर्णन सुप्रसिद्ध है । इसमें 'सप्त-हस्त, सप्त-जिह्व' शब्द हैं । यह पौराणिक वर्णन जिस वेदमंत्रके आधार पर रचा गया है, वह मंत्रभी यहां देखिये—

(५३) सात हाथ ।

चत्वारि शृंगा त्रयो अस्य पादा द्वे शोषे सप्त
हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रारखीति
महो देवो मर्त्या आविवेश ॥ (१८९७, ऋ ४।१८।३)
इस अग्नि देवताके मंत्रका आशय भगवान् पतंजलि

मुनिने शब्दविषयक लिया है और बताया है कि, यहाके 'सप्त हस्त' शब्दका भाव सात विभक्तियां हैं । इस मंत्रका शब्दविषयक यह एक अर्थ है । परंतु इसके अनेक अर्थ हैं, क्यों कि यह 'कूट मंत्र' है, इसका विशेष स्पष्टीकरण 'तर्कसे वेदका अर्थ' इस पुस्तकके अंदर 'भाष्यकारोंका मतभेद' इस शीर्षक के लेखमें विशेष रूपसे दिया है । पाठक वह लेख इस प्रकरणमें अवश्य अवलोकन करे । इस कूट मंत्रके अनेक अर्थ होनेका कारण वहां ही स्पष्ट कर दिया है । इसके अध्यात्मपरक अर्थ केवल आत्माके विषयमें ही होते हैं, प्रायः सब भाष्यकार इसको मानते हैं । आरण्यकादिकोंमें यह प्रणव अर्थात् ओंकार पर मंत्र घटाया है । इससे स्पष्ट है कि, आत्मा पर इसका अर्थ होनेके प्रसंगमें इस मंत्रका 'सप्त-हस्त' शब्द आत्माकी सात शक्तियोंका ही वाचक होगा । यही बात 'सप्त-जिह्वा' शब्दके विषयमें समझनी चाहिये । यहां सूचना मिलती है कि, आत्माकी सात शक्तियां हैं, जो 'सात हाथ' अथवा 'सात जिह्वाएं' शब्दोंद्वारा वर्णन की गई हैं, यही बात निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(५४) सात जिह्वाएं ।

दिवश्चिदग्ने महिना पृथिव्या ।

ब्रह्मन्तां ते ब्रह्मयः सप्तजिह्वाः ॥

(४८१; ऋ. ३।६.२)

'हे अग्ने ! [महिना] अपनी महिमासे पृथ्वीमें और एलोकमें वह्निरूप तैरी सात जिह्वाएं [ब्रह्मन्तां] घोषणा कर ।' इसमें अग्निकी सात जिह्वाओंका वर्णन है । इन सात जिह्वाओंसे अग्नि तीनों लोकोंमें घोषणा कर रहा है । प्रत्येक जिह्वाकी अलग अलग घोषणा हो रही है । एक जिह्वाकी घोषणा दूसरी जिह्वाकी घोषणासे भिन्न है, यह बात यहां ध्यानमें धरने योग्य है । इस मंत्रमें सात जिह्वाओंका स्वरूप [ब्रह्मयः सप्तजिह्वाः] वह्निरूप है, ऐसा स्पष्ट कहा है । वह्नि शब्द जैसा अग्निवाचक है, उसी प्रकार 'वाहक' अर्थमें भी प्रसिद्ध है । अर्थात् ये सात जिह्वाएं वाहक हैं । वाहक होनेके कारण यहां प्रश्न हो सकता है कि ये किस पदार्थको लाती हैं ? इसका उत्तर निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(५५) सात नदियां ।

अवर्धयत्सुभगं सप्त यज्ञीः श्वेतं जज्ञानमरुषं महित्वा । शिशुं न जातमभ्याहरत्वा देवासो अग्निं जनिमन्त्रपुष्यन् ॥ (४५०; ऋ. ३।१।४)

'जिस प्रकार [अग्निः शिशुं जातं अभ्याहः न] घोड़ियां नूतन उत्पन्न बच्चोंके चारों ओर रहती हैं, उसी प्रकार यह (सप्त यज्ञीः) सात नदियां उस (सुभगं) उत्तम भाग्यशालीको (अवर्धयत्) बढ़ाती हैं कि, जो (जज्ञानं श्वेतं) उत्पत्तिके समय श्वेत था, परंतु पश्चात् (महित्वा) अपने महत्त्वसे (अरुषं) लाल बन गया । इस प्रकारके अग्निके जन्म की देव पुष्टि करते हैं ।'

इस मंत्रमें निम्न लिखित बातें हैं कि, जो अग्निकी स्वरूप तथा सप्त नदियोंकी कल्पनाका तत्त्व विशद कर रही है—

- [१] बल्लडोंको बीचमें रखकर जिस प्रकार घोड़ियां अथवा माताएं चारों ओर बैठती हैं ।
- [२] उस प्रकार इस अग्निको बीचमें रख कर उसके चारों ओर ये सात नदियां प्रवाहित होती हैं ।
- [३] अपने प्रवाहके साथ ये सातों नदियां भाग्यशाली इस अग्निको बढ़ाती हैं;
- [४] यह अग्नि आरंभ में श्वेत था, परंतु पश्चात् लाल हो गया है ।
- [५] इस अग्निकी पुष्टि देवोंने भी की है ।

अग्निको बीचमें रख कर उस मध्यस्थानसे चारों ओर अथवा सातों ओर सात नदियां बह रही हैं, अर्थात् सात नदियोंके उगमस्थानमें यह अग्नि है । कौनसे एक स्थानसे सात नदियां बह रही हैं ? और कौनसी नदीके उगमस्थानमें प्रतापी अग्नि रहता है ? बहुतसे विद्वान् कहते हैं कि, वेदमें वर्णित सात नदियां पंजाब में हैं, कई कहते हैं कि, मध्य एशियामें हैं, कई कहते हैं कि उत्तर ध्रुवके पास है । परंतु स्थानस्थानमें प्रयत्नपूर्वक देखनेपर एक स्थानपर उगम होनेवाली सात नदियां कहीं भी दिखाई नहीं देती और जो थोड़ी हैं, उनके उगमस्थानमें ऐसा कोई अग्नि नहीं है । चूंकि यह वर्णन पृथ्वीपर का नहीं है, इसलिये जो विद्वान् इसको इस भूमिपर देखनेका यत्न करते हैं, वे फलीभूत नहीं होते !! इसका स्वरूप देखना है तो निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(५६) सप्त ऋषि और सप्त नद ।

सप्त ऋषयः प्रतिहिताः शरीरे सप्त रक्षन्ति
सदमप्रमादम् । सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र
जागृतो अस्वप्नजौ सप्तसदौ च देवौ ॥

[वा० य० ३४।५५]

‘ प्रत्येक (शरीरे) शरीरमें (सप्त ऋषयः) सात ऋषि (हिताः) रहते हैं । ये सात इस (सदं) घरका रक्षण करते हैं । ये (सप्त आपः) जल के सात प्रवाह (स्वपत) सोने-वाले आत्माके (लोक ईयुः) स्थान को पहुँचते हैं । इस (सप्त-सदौ) यज्ञमें जागनेवाले और (अ-स्वप्न-जौ) कभी न सोनेवाले (देवौ) दो देव हैं । ’

इस मंत्रमें कई गूढ़ तत्त्वोंका स्पष्टीकरण किया है, उसका आशय निम्न प्रकार है—

(१) प्रत्येक शरीरमें सात ऋषि रहते हैं ।

(२) इस शरीरका संरक्षण ये सात ऋषि कर रहे हैं ।

(३) सात जलप्रवाह (सात नदियाँ) भी इसी शरीरमें हैं, जो सुषुप्तिकी अवस्थामें आत्माके स्थानको वापस जाते हैं । अर्थात् जागृति की अवस्था में ये सात नदियाँ आत्मा से चलकर बाहर जगत् में फैलती हैं ।

(४) मनुष्य-जीवन एक सत्र अर्थात् शतसांवत्सरिक महायज्ञ है । इसीमें ये सप्त ऋषि यज्ञ कर रहे हैं । सप्त नदियों के किनारे पर इनका यज्ञ चल रहा है । ये सात ऋषि कुछ काल सोते हैं और कुछ काल जागते हैं ।

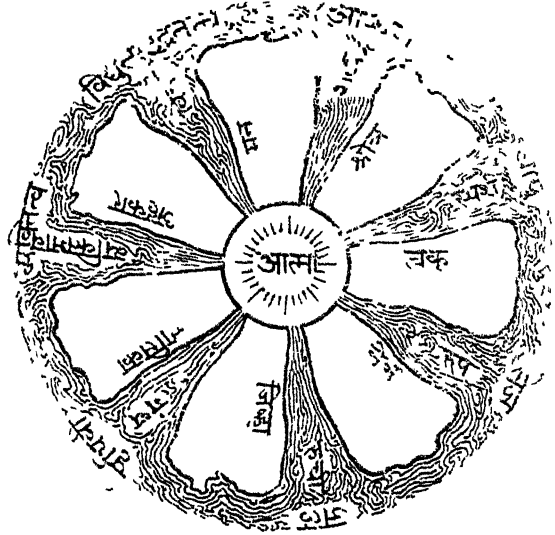
(५) सोने के समय इन सप्त नदियोंका प्रवाह उलटा होता है और इस समय ये नदियाँ अंतर्मुख होती हैं । तथा जागने के समय इनका प्रवाह बहिर्मुख होता है ।

(६) इस सत्र में दो देव खड़े पहरा दे रहे हैं, जो कभी सोते नहीं । सदैव इसके संरक्षण करने में ये दक्ष रहते हैं ।

इस वर्णनसे स्पष्ट पता लग जाता है कि, यह सप्त नदियोंका वर्णन आत्मापरही विशेष रूपसे घट सकता है ।

सप्त नद ।

आत्माभि मध्यमें है और इस उगमस्थानसे अहंकार, मन, ओन्न, सार्श, नेत्र, रसना और नासिका ये सात प्रवाह चलते हैं । (१) अहंकार की नदी घमंडके क्षेत्रमें बह रही



सप्त नद ।

है । (२) मनका नद मननके प्रदेश को भिगो रहा है । (३) ओन्नकी नदी कानोंके द्वारा प्रवाहित होकर शब्दकी भूमिमें बह रही है । (४) सार्श की नदी चर्ममार्गसे स्पर्शके प्रदेश में फैल रही है । (५) नेत्रकी नदी दृष्टिके मार्गसे दर्शनक्षेत्र में प्रवाहित हो रही है । (६) रसना नदी रुचिके क्षेत्रमें जिह्वाके स्थानसे व्याप्त हो रही है । इसी प्रकार (७) नासिका द्वारा सुवासके क्षेत्रमें नासा नदी बह रही है । प्रत्येक नदी का क्षेत्र भिन्न है, प्रत्येक नदीका जल भी भिन्न है और प्रत्येक नदीका स्वभाव भी भिन्न है । ये सप्त नदियाँ हैं, जो कि आत्माके स्थानसे बह रही हैं । सुषुप्तिकी अवस्थामें ये सातों नदियाँ अंतर्मुख होकर उलटी बहने लग जाती हैं और आत्मामें मग्न होती हैं; परन्तु जागृतिमें आत्मामें बहिर्मुख होकर फिर बाहर प्रवाहित होकर जगत् में कार्य करने लग जाती हैं ।

प्रतिदिन इन सातों नदियोंका यह प्रवाह दृश्यरूपके अनुभवमें आता है । इनका प्रवाह उलटा चलनेवाली नाम सुषुप्ति और इनका प्रवाह बाहरकी ओर बहनेवाली नाम जागृति है ।

प्रत्येक नदीके तटपर एक एक अधिष्ठाता ऋषि हैं, जो वहाँ तप कर रहा है । ये सात ऋषि इस जीवनरूपी महा-

यज्ञ में यजन कर रहे हैं । जिस समय ये सातों अधिष्ठाता ऋषिगण थक कर सो जाते हैं, उस समय तथा अन्य समय में भी इस देहरूपी सत्रमें दो देव जागते हैं !! इन देवोंका नाम प्राण अर्थात् श्वास और उच्छ्वास है । जन्मसे मरने-तक ये श्वासोच्छ्वासरूपी दो देव जागते हैं और खड़े पहरा करते हैं । इनके कारणही इस सत्र अर्थात् देहरूपी यज्ञ-भूमिका संरक्षण हो रहा है ।

पाठक विचार करेंगे, तो उनको पता लग जायगा कि, यह वर्णन हमारे देहका ही है और इसीमें (१) सात ऋषि, (२) सात नदियां और (३) जलके सात प्रवाह अपना अपना कार्य कर रहे हैं ।

अब पूर्वोक्त मंत्र का अनुसंधान कीजिये, तो पता लग जायगा कि आत्माग्निको मध्यमें रख कर सात नदियां चारों ओर फैल रही हैं, इसका तात्पर्य क्या है ? नदियोंके उगमस्थानमें कौनसा अग्नि है ? उससे कौनसे प्रवाह किस भूमिमें फैलते हैं ? और समयपर वापस भी किस रीतिसे होते हैं ?

यह आत्माग्निको प्रारंभमें श्वेत और पश्चात् रक्तवर्ण होता है । यह भी स्पष्ट है । श्वेतवर्ण सत्त्वगुण और रक्तवर्ण रजोगुण का द्योतक है । प्रथमतः आत्मबुद्धिमें सार्विक भाव होते हैं, परन्तु जब वे भाव भोगोंके साथ परिणत होते हैं, तब रजोगुणमय होते हैं । इत्यादि विषय अब पूर्णतासे स्पष्ट हो सकता है ।

- (१) ये ही आत्माग्निके सात हाथ हैं, जिनसे वह कार्य करता है ।
- (२) ये ही आत्माग्निकी सात जिह्वाएं हैं, जिनसे वह आत्माकी घोषणा करता है, अथवा जगत् की रुचि लेता है ।
- (३) ये ही सात नदियां हैं, जो अपने अपने क्षेत्रमें बहती हैं ।
- (४) ये ही सात जलप्रवाह हैं, जिनपर सात ऋषि तपस्या कर रहे हैं ।
- (५) ये ही सप्त ऋषि हैं, जो सात प्रकारका ज्ञान दे रहे हैं और शरीरका अर्थात् ऋषि-आश्रमका संरक्षण कर रहे हैं ।

(६) ये ही ऋषि-आश्रम हैं, जिनपर रोगरूपी राक्षस वारंवार हमला करते हैं और इस शतसांवत्सरिक सत्रका विध्वंस करते हैं । जिनका कि दो देव रक्षण कर रहे हैं ।

(७) ये ही सप्तरश्मि हैं, जो आत्मारूपी सूर्यके सात किरण हैं, इस विषयमें निम्न लिखित मंत्र देखिये-

(५७) सात किरण ।

आ यस्मिन्सप्त रश्मयस्तता यज्ञस्य नेतरि ।

मनुष्वहैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति ॥

(४२६; ऋ० २।५।२)

“(यस्मिन् यज्ञस्य नेतरि) जिन यज्ञ के नेताके अंदर सप्त रश्मयः) सात किरण अथवा सात लगाम (तताः) तने हुए हैं । वह यज्ञका नेता (पोता) पवित्र कर्ता आत्मा (मनुष-वत्) मनुष्ययुक्त (दैव्यं विश्वं) देवतामय विश्वमें अष्टम होकर (इन्वति) प्राप्त करता है ।”

“यज्ञका नेता ” आत्माही है, जो इस शरीररूपी यज्ञमंडपमें इस शतसांवत्सरिक महायज्ञ को चलाता है । इसी आत्माके पूर्वोक्त सात किरण इस देहरूपी यज्ञमंडपमें प्रकाशित हो रहे हैं । यह सूर्यचंद्रादि देवतामय विश्व जो मनुष्यप्राणियोंके कारण विशेष रूपसे प्रसिद्ध है, उसको अष्टम अर्थात् आठवां मान कर यही प्राप्त करता है । सात इंद्रियशक्तियां, आठवां देवतामय विश्व और उसको प्राप्त करनेवाला स्वयं यजमान आत्मा है । यह मंत्र भी आत्माग्निकाही वर्णन कर रहा है ।

इस मंत्रका मनन करनेसे पता लग सकता है कि, वेदमें जो सप्त रश्मि, सप्त किरण, आदि वर्णन हैं, वह केवल सूर्यप्रकाश के ही सात किरणोंका वर्णन नहीं है, प्रत्युत आत्माकी सात शक्तियों का वह मुख्य वर्णन है और गौण-वृत्तिसे अन्य भाव को भी व्यक्त करता है । वेदमें केवल सप्त रश्मियोंकाही वर्णन नहीं है, प्रत्युत यह सप्त संख्या अनेक बार विविध प्रकारके वर्णनमें आई है, देखिये—

(५८) सप्त रत्न ।

दमेदमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता नि षसादा यजीयान् ॥

(७५९; ऋ० ५।१।५)

‘ घरघरमें सात प्रकारके रत्नों को धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करता हुआ बैठा है । ’ इस मंत्रमें सात रत्नों को धारण करनेवाला अग्नि यही आत्माग्नि है और उनके सात रत्न पूर्वोक्त सात शक्तियाँ ही हैं । “ दमे दमे ” का अर्थ प्रत्येक घरमें अर्थात् प्रत्येक शरीरमें है, क्योंकि शरीर-ही आत्माका घर है । रत्न शब्दका अर्थ रमणीय है । उक्त सात इंद्रियाँ ज्ञान देनेके कारण आत्माको रममाण करती हैं, इसलिये रत्न शब्दका मूल धात्वर्थ भी यहाँ संगत होता है । जो सप्त रत्न हैं, वे ही “ सप्त धातु ” हैं । इनका वर्णन निम्न लिखित मंत्रमें देखिये—

(५९) सप्त धातु ।

बृहद्वाथ धृषता गभीरं यद्गं पृष्ठं प्रयसा सप्त धातु ॥
(१७६३; ऋ० ४।५।७)

‘ (धृषता प्रयसा) वीर्ययुक्त प्रयत्नके साथ रहनेवाला गंभीर (पृष्ठं) प्रशंसनीय महान् (सप्तधातु) सप्तधातु-रूप धन दो । ’

आत्माकी उक्त सात शक्तियाँ ही शरीरमें मुख्य धन हैं । इनमें एकाध शक्ति न होनेसे अन्य धन उतने उपयोगी नहीं हो सकते । इसीलिये वेदमें इन सात शक्तियोंको ही मुख्य धन कहा है । इस विषयका और एक अलंकार देखिये—

(६०) सात घोड़े ।

यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं
हविष्मंत ईळते सप्तवाजिनम् ॥

(६७८; ऋ १०।१२२।४)

‘ यज्ञका केतु, पहला पुरोहित (सप्त-वाजिनं) सात घोड़ोंसे युक्त है, उसीकी प्रशंसा करते हैं । ’ इस मंत्रमें ‘ सप्तवाजी ’ शब्द है । ‘ वाज ’ शब्दका अर्थ बल है और ‘ वाजी ’ शब्दका अर्थ घोड़ा है । ‘ सप्तवाजी ’ शब्दका अर्थ सात प्रकारके बलोंसे युक्त, अथवा सात घोड़ोंसे युक्त है । पूर्व वर्णन के साथ विचार करनेपर पता लग जायगा कि, ये ‘ सात घोड़े ’ कौनसे हैं । हम अग्निके रथको येही सात घोड़े जोते हैं । सूर्यके रथको जो सात घोड़े जोते हैं, वेभी येही हैं । सात ऋषि, सात किरण, सात घोड़े, सात नदियाँ, सात प्रवाह, सात रत्न, सात धातु, ये सर्व भिन्न नाम पूर्वोक्त सात शक्तियोंके ही वाचक हैं । ये ही अग्निकी सात बहिनें हैं—

(६१) सात बहिनें ।

सप्त स्वसूरुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व
उज्जभारा दशे कम् । अंतयेमे अंतरिक्षे
पुराजा इच्छन् वधिमविदत् पूषणस्य ॥

(१५१७; ऋ. १०।५।५)

‘ [वावशानः] इच्छा करनेवाला विद्वान् [अरुषीः] गमनशील [सप्त स्वसूः] सात बहिनों को [मध्वः] मीठेपनका [कं दशे] सुख देखनेके लिये । उज्जभार] ऊपर उठाता है । यह [पुरा जाः] पुराणपुरुष [पूषणस्य वधिं] पूषाके रूपकी इच्छा करता हुआ अंतरिक्ष में [अंतयेमे] अदरसे नियमन करता है और [अविदत्] प्राप्त करता है । ’

इस मंत्रमें ‘ सात बहिनों ’ का वर्णन है । एक मूल-स्थानसे जो सात शक्तियाँ उत्पन्न होती हैं, उनको सात बहिने कहा है । एक मातासे भाईबहिनोंकी उत्पत्ति होती है । यहाँ भी परमात्मा, परम पिता और प्रकृति परम माता है । वहाँसे ही पूर्वोक्त सातों शक्तियोंकी उत्पत्ति है, इसलिये परमात्माका अमृत पुत्र आत्मा है और पूर्वोक्त सातों शक्तियाँ उसकी बहिनें हैं । अलंकार इसी रीतिसे स्पष्ट हो जाता है । ये ही सात हवन करनेवाले ऋत्विज हैं, इसका वर्णन देखिये—

(६२) सात ऋत्विज् ।

सप्त होतारस्तमिदीळते त्वाग्ने ।

(१४०४; ऋ. ८।६०।१६)

‘ हे अग्ने ! [सप्त होतारः] सात ऋत्विज् तेरी ही स्तुति करते हैं । ’ ‘ होता ’ उसको कहते हैं कि जो हवन करता है । यहाँ आत्माग्निके पूर्वोक्त सात इंद्रियाँ हवन कर रही हैं । नेत्र रूपका हवन करता है, कान शब्दोंका हवन करता है । इसी प्रकार अन्यान्य ज्ञानेन्द्रियाँ अन्यान्य ज्ञानोंकी आहुतियाँ आत्मातक पहुँचाती हैं, मानो, आत्माके हवनकुंडसे ये सात इंद्रियगणरूपी ऋत्विज् अपने अपने विषयकी आहुतियाँ ही डाल रहे हैं और इस प्रकारका यह हवन इस यज्ञमंडपमें सौ वर्षतक चलना है । शतसांवरसरिक यज्ञ यही है । इसके ये होता गण हैं । ये ही ऋत्विज्-सप्त ऋषि नामसे अन्य स्थानमें कहे गये हैं । सप्त ऋषि, सप्त होता, सप्त ऋत्विजः, सप्त मानुषः, आदि शब्द यही भाव बता रहे हैं । इसके साथ अब निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(६३) पांच और दो दोहनकर्ता ।

दुहन्ति सप्तैकामुप द्वा पंच सृजतः ।

तीर्थे सिंधोरधि स्वरे ॥ (१४३०; ऋ. ८।१२।७)

‘ [एकां] एक गौ माताका [सप्त दुहन्ति] सात दोहन कर रहे हैं। उनमें [द्वौ] दो [पंच] अन्य पांचोंको [उप सृजतः] प्रेरित करते हैं। [अधि स्वरे] स्वरयुक्त सिंधुके तीर्थ पर यह हो रहा है । ’

एक गौका सात ग्वालियो द्वारा दोहन निःसंदेह आलंकारिक है। इसमें भी दो ग्वालिये अन्य पांचको प्रेरणा करनेवाले हैं। यह सब बात अपना पूर्वोक्त अलंकार स्वीकार करनेपर ठीक प्रकारसे ध्यानमें आ सकती है। पूर्वोक्त सातोंमें [१] मन तथा [२] अहंकार ये दो अन्य इंद्रियशक्तियोंके प्रेरक हैं; [१] ओध, [२] त्वक्, [३] चक्षु, [४] रसना और [५] घ्राण ये पांच उन दोनों द्वारा प्रेरित होकर अपना अपना दोहन का कार्य कर रहे हैं। आत्मारूपी एक गौ से ये सात ग्वालिये अपने लिये अलग अलग प्रकारका दूध निचोड़ रहे हैं, और एक ही वह गाय इनमेंसे प्रत्येक को भिन्न प्रकारका दूध दे रही है!!!

अब विचार कीजिये, वेदमें एक ही बात कितने भिन्न अलंकारोंसे वर्णन की है। ‘सात’ संख्याका अलंकार अग्नि के विषयमें इतना ही नहीं है प्रत्युत बहुत ही प्रकारका है; यहां केवल नमूनेके लिये थोड़ेसे ही उदाहरण दिये हैं। पाठक विचार करके इन उदाहरणोंके मननसे अन्य अलंकारोंको भी जान सकते हैं।

तात्पर्य, इन सब विभिन्न अलंकारोंके वर्णनसे वेदको एक आत्मा का ही वर्णन करना है। उसके जितने पहलू हो सकते हैं, उन सब पहलुओंके द्वारा विभिन्न अलंकारोंमें वेद वर्णन करता है। इसलिये पाठकोंको उचित है कि, वे सबसे प्रथम वैदिक शैलीको देखकर वेदमंत्रोंका मनन करें और वेदके गंभीर आशयको समझनेका यत्न करें। एक समय वेदकी मूलभूत कल्पना ठीक प्रकार ध्यानमें आ गई तो पश्चात् वेदका कोई भी वर्णन समझनेमें कठिनाता नहीं रहेगी।

(६४) तनूनपात् अग्नि ।

अब ‘तनूनपात्’ शब्दका विचार करेंगे। यह शब्द अग्निका वाचक है। इसका अर्थ (तनू+न+पात्) शरी-

रोंको न गिरानेवाला होता है। जिसके रहनेसे शरीरोंका पतन नहीं होता और जिसके न होनेसे शरीरोंका पतन होता है। पाठकोंके ध्यानमें यह बात आ गई होगी कि, यहां स्थूल सूक्ष्म कारण नामक शरीरोंको धारण करनेवाला और उन शरीरोंपर कार्य करनेवाला आत्माही है। इसलिये ‘तनू-न-पात्’ अग्नि निःसंदेह ‘आत्माऽग्नि’ है। इस समयतक अग्निवाचक मंत्रोंका जो विचार किया गया है, उसके साथ यह अर्थ कितना ठीक मजता है, इसकी मस्यता पाठक यहां अवश्य देखें और वेदमें अग्नि शब्दसे आत्माग्निका भाव ही मुख्यतः लेना है, यह बात यहां ठीक समझनेका यत्न करें। क्या कि यह शब्द मुख्यतः इसी अर्थमें प्रयुक्त होता है। गौण वृत्तिसे इसके तथा अन्य शब्दोंके भाव विविध होनेपर भी मुख्य अर्थको भूलना कदापि उचित नहीं है। यह ‘तनू-न-पात्’ शब्द निम्न मंत्रमें देखिये—

मधुर्मतं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे ॥

अथा कृणुहि वीतये ॥ [१९०७; ऋ. १।१३।२]

‘ हे [तनू-न-पात्] शरीरोंको न गिरानेवाले [कवे] शब्दके प्रेरक अग्ने! तू मधुयुक्त यज्ञ आज ही देवोंके अंदर [वीतये] रक्षण के लिये [कृणुहि] कर । ’

देवोंके अंदर ‘शरीरोंको न गिरानेवाले आत्माग्निक’ द्वारा होनेवाले इस शतसांवत्सरिक महायज्ञका वर्णन ही विभिन्न रूपसे स्थानस्थानपर है। यह बात हम समयतक अनेक मंत्रोंके उदाहरणोंसे पूर्व स्थलमें बताई गई है। वही बात इस मंत्रमें ‘तनू-न-पात्’ देवताके विषयसे वर्णन की गई है।

यह तनूनपात् शब्द अग्निदेवका वास्तविक स्वरूप व्यक्त कर रहा है। जितने दिन यह ‘तनू+न+पात्’ आत्माग्निक इस शरीरमें निवास करता है, उतने दिन ही यह शरीर सचेतन रहता है और जीवित रहता है। इसके चले जानेके पश्चात् हम शरीरका ऐसा पतन होता है कि, कोई इसको पास रखना नहीं चाहते। इस से स्पष्ट होता है कि यही आत्माग्निक तनूको न गिरानेवाला ‘तनू-न-पात्’ अग्नि है। इस तनूनपात् आत्माग्निक शरीरमें अवस्थान निम्न लिखित प्रकार है—

अपनी शरीर की रचनाका संबन्ध यज्ञशालासे कैसा है, यह बात विचार करनेसे ज्ञात हो सकती है । यज्ञशाला के विविध अग्निकुंडोंके स्थान अपने शरीरके आधारपर रचे गए हैं । इसका स्पष्टीकरण सहजहीसे हो सकता है । अपने शरीरमें आत्मा, हृदय, मस्तिष्क, प्रजनन आदिके स्थान हैं । वही स्थान हवनकुंडोंके आकारमें यज्ञशालामें बताये जाते हैं । अपने शरीरमें आत्माको आधार रखकर जो घटनाएं होती हैं, उनकोही यज्ञशालामें विविध अग्नियोंके नामसे बताया है । मानो यज्ञशाला एक अपने देहका ही नकशा है । जिस प्रकार पाठशालाओंमें देशोंके नक्शे होते हैं और उनमें ग्राम, प्रांत, नदी, पर्वत, आदि बताये जाते हैं उसी प्रकार शरीरका नकशा यज्ञशालाके रूपसे बताया गया है । जो बातें अव्यक्त रूप से शरीर में हो रही हैं, वही बातें यज्ञशाला में हवनरूप से की जाती हैं ।

(१) मुखमें अन्न डालनेसे वह पेटमें जाता है और वहां उसका जठराग्निद्वारा पचन होता है । आहवनीय अग्नि के हवनकुंड में भी उसी अन्न का हवन किया जाता है । अग्नि प्रदीप्त हुआ, तो हवन अच्छा होता है, प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में किया हुआ हवन धूँवे को बढ़ाता है । उसी प्रकार जठराग्नि प्रदीप्त न होनेकी अवस्था में खाये हुए अन्न से पेट में वायु कुपित होता है और अग्निमांघ, डकार, अपान वायु आदि होता है ।

(२) गार्हपत्याग्नि वास्तविक स्त्रीके योनिस्थानमें है । इसके विशेष वर्णन की यहाँ आवश्यकता नहीं है । पाठक अपनी विचारशक्तिसेही इसको जांच सकते हैं ।

(३) उत्तर वेदीमें ज्ञानाग्नि है, जो मस्तिष्क नामसे प्रसिद्ध है । इसमें दुष्ट मनोविकारोंका हवन होता है । पाशवीय भावनाओंका हवन यहाँ होता है ।

इस प्रकार सारांशरूपसे यज्ञशालाका संबन्ध अपने शरीर के व्यापारों से है । पाठक विशेष विचार करके यह जान सकते हैं । यहाँ विशेष विचार करनेके लिये स्थान नहीं है, परन्तु प्रसंग प्राप्त होनेके कारण संक्षेपसे लिखना पड़ा है ।

यज्ञशालाकी रचना शरीरकी घटनापर हुई है, यह ज्ञान हो जानेके पश्चात् 'आत्माग्नि ही तनूनपात् अग्नि है' यह बात स्पष्ट हो जाती है और पूर्वोक्त सब वर्णन ठीक प्रकार ध्यानमें आ सकता है । इसका ठीक ठीक ज्ञान होनेके

पश्चात् ही वैदिक यज्ञोंका तत्त्वज्ञान ठीक प्रकार समझ में आ सकता है, इसलिए पाठकोंसे प्रार्थना है, कि वे इस बात को विशेष रूपसे समझनेका यत्न करें ।

उपनिषदोंमें भी इस शारीरयज्ञका वर्णन इसी प्रकार है, देखिए—

तथैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः श्रद्धा पत्नी० ॥ (नारायणोपनिषद् ८८)

पुरुषो वाव यज्ञस्तस्य दानि चतुर्विंशति वर्षाणि तत्प्रातःसवनम् ॥ (छां. उ. ३, १६, १)

'इस यज्ञका यजमान आत्मा है और यजमानपत्नी श्रद्धा है । पुरुषही यज्ञ है, उसकी चौबीस वर्षकी आयु प्रातःसवन है ।' इत्यादि वचनोंसे स्पष्ट हो जाता है कि, इस शरीरमें जो शतसांवत्सरिक यज्ञ चल रहा है, वही सत्य यज्ञ है और उसीका यजमान आत्मा और यजमानपत्नी श्रद्धाबुद्धि है और इसी यज्ञका प्रातःसवन प्रारंभ की २४ वर्षोंकी आयु है । इस यज्ञको दृष्टिसेही वेदके मंत्रोंको हमें देखना चाहिए ।

इस से पूर्व जो विचार किया है, वह इसी दृष्टि से किया है, इस से पाठकों के मन में बात आ गई होगी कि, यही उपनिषदों की दृष्टि होने से सत्यदृष्टि है । और इसी सत्य दृष्टि से वेद का अर्थ देखना चाहिये ।

(६५) अन्य बातों का उपदेश ।

इस से कोई यह न समझे कि, वेद में अध्यात्म से भिन्न कोई अन्य बात ही नहीं है । अन्य बातें बहुत ही हैं, उन का प्रसंगवशात् विचार अवश्य होगा । परन्तु पूर्वोक्त विवरण से यही बताया है कि, ये देवतावाचक शब्द मुख्य अर्थ में किस प्रकार आत्मा का भाव बताते हैं । स्थान स्थान के सूक्तों में परमात्मा ब्रह्म, राजा, विद्वान् शूर आदि प्रकरणों के अनुसार अग्निशब्द ही उक्त पदार्थों का वाचक है । इस बात के उदाहरण भी यहाँ विशेष रूप से देने की कोई आवश्यकता ही नहीं है ।

'चत्वारि श्रृंगाः' यह ऋग्वेद का अग्निदेवता का मंत्र भगवान् पतंजलि महामुनिने 'शब्द' पर लगाया है । इस से 'अग्नि' देवता का एक अर्थ 'शब्द' है, यह बात स्पष्ट होती है । यह मंत्र (ऋ. ४.५८ ३) में

है और इस का अध्यात्मविषयक अर्थ इसी लेख में दिया ही है। यहां इतना ही बताना है कि, जिस प्रकार इस का अध्यात्मविषयक अर्थ होने पर 'शब्द' विषयक अर्थ हटा नहीं है, उसी प्रकार अन्यान्य मंत्रों के विषय में पाठकों को समझना चाहिये। 'अग्नि' शब्द परमात्म-वाचक भी है, देखिये—

(६६) परम आत्माग्नि ।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां मनामहे चारुदेवस्य नाम । स नो मह्यादितये पुनर्दात् पितरं च दृश्यं मातरं च ॥ (२७; ऋ. १-२४-२)

'हम (अमृतानां प्रथमस्य) अमर देवों में पहले (देवस्य अग्नेः) अग्निदेव का अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का (चारु नाम) सुन्दर नाम (मनामहे) मन में लाते हैं। वही हम सब को (अदितये) प्रकृति में पुनः डालता है और जिस से हम माता-पिता को देखते हैं।'

इस मंत्र में 'सब से पहले अग्निदेव' अर्थात् तेजस्वी परमात्मा का वर्णन स्पष्ट है। इसी प्रकार अन्यान्य पदार्थों के वाचक स्पष्ट मन्त्र अनेक हैं। उन का यहां भूमिका में विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन का स्पष्ट विचार सूक्तों के विचार करने के समय ठीक प्रकार किया जायगा। यहां इस भूमिका में अग्निमन्त्रों का आध्यात्मिक

विचार करने की रीति इसलिये विशेष रूप से बताई है कि साधारण पाठक 'अग्नि' शब्द से 'आग' का ही ग्रहण करते हैं और वेदमन्त्रों के अर्थ का अनर्थ करते हैं, इसलिये अग्नि-देवता का मुख्य अध्यात्म स्वरूप जानने की इस स्थानपर विशेष आवश्यकता है। उपनिषदोंमें यही बात स्थान स्थानपर कही है, देखिए—

अयमग्निवैश्वानरो योऽयमन्तः पुरुषे येनेदमन्नं पच्यते, यदिदमद्यते ॥ (बृ उ ५।९)

'यही वैश्वानर अग्नि है, जो इस मनुष्यशरीर के अन्दर है, जो खाये हुए अन्नका पचन करता है।' यहां वैश्वानर अग्निका आध्यात्मिक रूप बताया है, वैश्वानर अग्निका आधिभौतिक रूप इसी लेखके प्रारंभमें बताया है। वहीं उसको पाठक देख सकते हैं। इसी प्रकार अग्निके भिन्न-भिन्न स्वरूप का विचार वेदमें स्थानस्थानके मंत्रों में है और उसको उसी प्रकार उस उस स्थानपर समझना चाहिए।

(६७) सारांश ।

सारांश यह है कि, इस भूमिकामें जो विचार किया है, वह बिल्कुल नया नहीं है। ब्राह्मणग्रंथोंमें, उपनिषदोंमें तथा संपूर्ण आर्ष वाङ्मयमें यही विचार स्थानस्थानपर है। उसको स्पष्ट शब्दों में यहां एकत्रित किया है। इसका अधिक विचार पाठक भी अपनी स्वतंत्र बुद्धिसे करें और वेदके अर्थकी अधिक खोज करें।

अग्निदेवताके विचार करनेकी दिशा ।

ऋग्वेद का प्रथम सूक्त 'वैश्वामित्रमधुच्छंदा' ऋषिक देखा हुआ है। इसी प्रकार का गाथी 'विश्वामित्र' ऋषिक देखा हुआ एक सूक्त तृतीय मंडलमें है। दोनों सूक्त 'अग्नि' देवता के हैं और दोनों में ९ मन्त्र हैं, तथा शब्दों और वाक्यों की समानता भी बहुत है। सबसे प्रथम यह समानता देखने योग्य है—

वैश्वामित्रो मधुच्छंदाः (ऋ० १।१)

(१) अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृ-
त्विजं होतारं ॥ १ ॥

(२) गोपामृतस्य दीदिवि ॥ वर्धमानं स्व दमे ॥ ८ ॥

(३) राजन्तमध्वराणां ॥ ८ ॥

(४) देवो देवेभिरागमत् ॥ ८ ॥

गाथिनो विश्वामित्रः (ऋ० ३।१०)

त्वां यज्ञेष्त्वृत्विजमग्ने होतारमीळते ॥ २ ॥

गोपा ऋतस्य दीदिवि स्वे दमे ॥ २ ॥

स केतुध्वराणाम् ॥ ४ ॥

अग्निर्देवेभिरागमत् ॥ ४ ॥

इस प्रकार देवताकी स्तुतिमें अनेक स्थानोंमें समानता है। शब्द, वाक्य और मन्त्रभाग तथा पूर्ण मन्त्र एक देवता

के वर्णनमें तथा भिन्न देवताओं के वर्णन में भी पुनःपुनः वैसेके वैसेही आ गये हैं। यह समानता यहां प्रथमतः

देखने का उद्देश्य इतनाही है कि, मंत्रोंका अर्थ निश्चित करने के लिए इस समानताके देखनेसे बहुत सहायता होती है ।

अग्निका विचार करनेके पूर्व 'अग्नि' के विशेषणरूप जो शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं, वे किस पदार्थके विशेषतया बोधक हो सकते हैं, इसका प्रथम विचार करना आवश्यक है । 'अग्नि' शब्दसे लोकभाषामें 'आग' का बोध होता है, परन्तु इस सूक्तमें केवल 'आग' का भावही है, ऐसा नहीं माना जा सकता; क्योंकि कई शब्दोंकी सार्थकता 'आग' अर्थ लेनेसे नहीं होती है । देखिये—

(१) रत्न-धा-तमः = रत्नोंका धारण करनेवाला 'रत्न+धा' होता है, और अनेक प्रकारके रत्नोंका धारण करनेवाला 'रत्न+धा+तम' कहलाता है । प्रत्यक्ष देखा जाय, तो यह 'आग' स्वयं अपने शरीरपर अनेक रत्नोंका धारण करती हुई दिखाई नहीं देती, इसलिए यह शब्द विशेष कर किसी अन्य पदार्थ की सूचना दे रहा है, ऐसा प्रतीत होना स्वाभाविक है ।

(२) कविऋतुः = 'कवि' शब्द केवल 'भाग' का गुण बतानेके लिए प्रयुक्त हुआ है, ऐसा मानना असंभव है । क्योंकि भाग में कवित्वकी प्रत्यक्षता नहीं है । कवि वह होता है कि, जो अतीन्द्रिय बातोंको शब्दोंके द्वारा प्रकट करता है । यह बात 'भाग' में नहीं है । 'ऋतु' शब्द 'प्रज्ञा' वाचक मानते हैं, यह भाव भी 'आग' में नहीं है । इसलिए मुख्य दृष्टिसे 'कवि+ऋतु' शब्द आगका सूचक यहां नहीं हो सकता । कवि मानव ही होगा । ऋतु भी मानव ही करता है ।

(३) सत्यः = यह शब्द भी त्रिकालाबाधित तत्त्वका बोधक है । इसलिए 'आग' का बोधक नहीं है, क्योंकि भाग बुझ जानी है और तीनों कालोंमें एक जैसी नहीं रहती ।

(४) पुरोहित, ऋत्विज्, होता = ये शब्द भी मुख्य दृष्टिसे आगके बोधक नहीं हो सकते । ये मानवोंके बोधक हैं ।

इस प्रकार ये विशेषणरूप शब्द 'आग' का बोध नहीं कराते, परन्तु किसी अन्य पदार्थमें ये अन्वर्थक होते हैं । जिस पदार्थमें सूक्तके सब शब्द सुसंगत हो सकते हैं, वही पदार्थ सूक्त का 'मुख्य देवता' है । अन्य भाव गौण वृत्ति

से मानना न मानना योजक की योजना पर ही अवलंबित है । यहां हमें देखना है कि, इस सूक्तमें मुख्य दृष्टिसे किस का वर्णन हो रहा है और किस रीतिसे गौण दृष्टिमें अन्य पदार्थोंका बोध हो सकता है । इसका निश्चय करनेके लिए इस सूक्तमें निम्न दो शब्द विशेष महत्त्व रखते हैं—

(५) अंग = 'अंग' शब्द का-अर्थ 'अवयव' है । 'शरीर, अवयव, शरीरके अंग अथवा भाग' इस अर्थमें मुख्यतः यह शब्द प्रयुक्त होता है । हरएक प्राणिमात्रको अपना शरीर अथवा अपने शरीर के अंग अत्यंत प्रिय होते हैं, इसलिए अवयववाचक 'अंग' शब्दका 'प्रिय' ऐसा अर्थ पीछेसे होने लगा । यदि इस सूक्तका 'अंग' शब्द अपने ही निज 'अवयव' का बोधक माना जायगा, तो मानना पड़ेगा कि, इस सूक्तमें वर्णित 'अग्नि' अपने ही शरीरमें निज अवयवरूप अथवा अपना अंगभूत ही कोई पदार्थ है, जहां यह 'अंग' शब्द पूर्ण रीतिसे सार्थक हो सकता है । इस विषय में निम्नलिखित शब्द विशेष सूक्ष्म दृष्टिसे देखनेयोग्य हैं—

(६) अंगिराः = (अंगि+रस) = अपने शरीरके अंगोंमें जो एकजीवनरूप रस होता है, उसको 'अंगीय-रस' कहते हैं । यही जीवनरूप अंग-रस 'अंगि+रस्' शब्दसे बताया जाता है । इस विषय में ब्राह्मण ग्रंथों का कथन देखनेयोग्य है—

(१) तद्देवा रेतः प्राजनयन्, ततोऽंगाराः समभवन्, अंगारेभ्योऽगिरसः । (शं० ब्रा० ४।५।१।८)

(२) तं वा एतं अंगरसं संतं अंगिरा इत्याचक्षते । (गो० ब्रा० पू० १।७)

(३) यैऽगिरसः स रसः ये अथर्वाणः...तद्धेवजं तदमृतं ... तद् ब्रह्म । (गो० ब्रा० पू० ३।४)

“(१) देवोंने रेत उत्पन्न किया, उससे अंगार (जलते हुए कोयले) उत्पन्न हुए, उनसे अगिरस हुए हैं । (२) जो अंग+रस है, वही अंगिर (अंगि-रस्) है । (३) जो अंगिरस् है, वह रस है, यही अथर्वा है और यही ... औषधी ... अमृत ... और ब्रह्म है । ”

इस कथन से स्पष्ट हो रहा है कि “अंगि-रस्” मुख्य-तया शरीर का जीवनरस है । क्योंकि जो यह जीवनरस शरीरके अंगों और अवयवों में है, वही अमृत रस है, उर्ध्व

में ब्रह्म की शक्ति रहता है। इसलिये जबतक यह जीवन-रस शरीर में ठीक अवस्था में रहता है, तबतक ही आरोग्य रहता है। इसीलिये इस रस को गोपथ-ब्राह्मण में 'भेषज' अर्थात् दोषनिवारक औषधि कहा है। अंगिरस का यह मूल स्वरूप है। और यह अपने शरीर के अंगों में ही व्यापक है, इतनाही नहीं, परन्तु अपना अंगरूप ही सत्व है। इस प्रकार जो जीवन का सत्त्व 'अंगिरस्' और अंग 'शब्दों' से बताया जाता है, वही इस सूक्तका प्रतिपाद्य विषय मुख्य रूप से है। इस अर्थ को ध्यान में धरनेसे सूक्त का मुख्यार्थ ध्यान में आ सकता है।

मुख्य दृष्टि और गौण दृष्टि, ऐसी दो दृष्टियोंसे वेदका अर्थ देखना होता है। मुख्य प्रतिपाद्य विषय में मन्त्र के संपूर्ण शब्द पूर्णतया सगत होते हैं और गौण विषय में लक्षणा करके, अर्थ का संकोच करके, केवल भाव ही देखा जाता है। इन दो प्रकार के अर्थों का अन्य वर्गीकरण, जो वैदिक सारस्वत में सुप्रसिद्ध है, यहां अवश्य देखना चाहिये। वेद-मंत्रोंका अर्थ—(१) आध्यात्मिक, (२) आधिभौतिक, और (३) आधिदैविक ज्ञानक्षेत्रसे भिन्न भिन्न होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र वह है कि, जो आत्मासे लेकर स्थूल देह-तक फैला है, आधिभौतिक क्षेत्र वह है कि, जो प्राणिमात्रके संज्ञान में फैला है, तथा आधिदैविक क्षेत्र वह है कि जो संपूर्ण जगत् की स्थिर चर समष्टिमें व्यापक है। उक्त तीनों क्षेत्रोंका भाव बतानेवाले संक्षिप्त और बालबोध शब्द '(१) व्यक्ति, (२) समाज और (३) जगत्' येही हैं। यद्यपि इनसे संपूर्ण पूर्वोक्त क्षेत्रों का बोध नहीं होता, तथापि उनका साधारण तात्पर्य इन शब्दोंसे जाना जा सकता है।

'अंग, अंगरस्' आदि शब्दोंसे बोधित होनेवाला जो अग्नि है, वह 'आग' नहीं है, प्रत्युत हमारे शरीर के अंगों में कार्य करनेवाला जीवनरूप अंगरस ही है, इस बातकी सूचना इससे पूर्व दी गई है। शरीरका 'अंगरस' व्यक्तिगत होनेसे आध्यात्मिक पदार्थ है। इसीका आधि-भौतिक अर्थात् सामाजिक किंवा राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रतिनिधि 'राष्ट्रीय जीवन' उत्पन्न करनेवाला संघ होना स्वाभाविक है। यही 'पंचजन, वैश्वानर या विश्वमानुष' है। तथा आधिदैविक क्षेत्र में इसीका रूप अग्नि अथवा आगमें

देखा जा सकता है। इससे स्पष्ट हुआ है कि, यहां का 'अग्नि' शब्द किस क्षेत्र में किस पदार्थ का बोधक है। यद्यपि सूक्त का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'जीवनाग्नि' है, तथापि 'राष्ट्रीय जीवनाग्नि' और 'प्रांशभौतिक अग्नि' भी उक्त प्रकार बोधित होते हैं।

प्रत्येक प्राणिमात्र के शरीर में जो जीवनरस है, वही उस व्यक्ति का सत्त्वा कल्याण करता है। इसलिये यह जीवनशक्ति संपूर्ण अन्य शक्तियों की अपेक्षा सब से अधिक कल्याण करनेवाली है। इसी प्रकार जगत् के व्यवहार में अग्नि का महत्त्व है। इस आग्नेय शक्ति का यह कार्य विचार की दृष्टि से सर्वत्र देखनेयोग्य है। इसलिये वेद में अन्यत्र कहा है—

- (१) अग्निमीडिष्व यंतुरम् ॥ (ऋ. ८.१९.२)
 (२) अग्निमीडिष्ववसे ॥ (ऋ. ८.७१-१४)
 (३) अग्निमीडीत मर्त्यः ॥ (ऋ. ५.२१-४)
 (४) अग्निमीडीताध्वरेहविष्मान् ॥ ऋ. ६.१६-४६
 (५) अग्निमीडे कविकृतुम् ॥ (ऋ. ३.२७-१२)
 (६) अग्निमीडेन्यं कविम् ॥ (ऋ. ५.१४-५)
 (७) अग्निमीडे पूर्वचित्सि नमोभिः ॥

(वा. य. १३.४३)

- (८) अग्निमीडे भुजां यविष्ठम् ॥ (ऋ. १०.२०.२)
 (९) अग्निमीडे व्युष्टिषु ॥ (ऋ. १.४४-४)

'(१) नियामक अग्नि की प्रशंसा कर, (२) अपने संरक्षण के लिये अग्नि का वर्णन कर, (३) मर्त्य अग्नि की स्तुति कर, (४) यज्ञ में हविर्द्रव्य लेनेवाला अग्नि का महत्त्व कहे, (५) कवि और ऋतुरूप अग्नि का वर्णन करता हूं, (६) कवि अग्नि वर्णनीय है, (७) पहिले प्रदीप्त अग्नि को नमस्कारों या अर्जोंद्वारा बढ़ाता हूं, (८) (भुजां) भोग करनेवालों में (यविष्ठं) युवा अग्नि का वर्णन करता हूं, (९) (व्युष्टिषु) उदय के समयों में अग्नि का वर्णन करता हूं।'

ये मंत्रभाग बता रहे हैं कि आग्नेय शक्ति का महत्त्व कितना है। इन मंत्रों का महत्त्व उस समय ध्यान में आ सकता है कि, जिस समय तीनों क्षेत्रों में अग्निस्वरूप का ठीक ठीक पता लग जाय। उक्त मंत्रभागों में स्पष्ट बताया है कि, यह अग्नि (यंतुर) नियामक, व्यवस्थापक

अथवा प्रवचकर्ता है, (कवि) शब्दशास्त्र में प्रवीण है, (भुजां यविष्ठं) भोग करनेवालों में युवा है, तथा (व्युष्टिषु) उदय के समय में इस का चिंतन किया जाता है । ये शब्द अग्नि का स्वरूप व्यक्त कर सकते हैं । अग्नि की जो प्रशंसा की जाती है, वह अपने (अपने) संरक्षण के लिये ही है, क्योंकि यही अपना सच्चा संरक्षण करता है । इतने वर्णन से अग्नि के स्वरूप का थोड़ासा निश्चय हुआ है और उस का पुरोहित होने का भाव भी ध्यान में आ गया है । अब देखना है कि, ' ईडे ' शब्द का वास्तविक तात्पर्य क्या है । क्योंकि अग्नि के साथ ' ईडे ' शब्द का प्रयोग कई मंत्र में हुआ है और यह शब्द विशेष हेतु से ही प्रयुक्त होता है । प्रायः इस का अर्थ ' प्रशंसा, स्तुति, वर्णन ' आदि करते हैं और हमने भी ये ही अर्थ ऊपर रखे हैं, परन्तु इस का विशेष भाव यहाँ है । यह भाव निम्न लिखित मंत्रों से व्यक्त हो सकता है—

(१) ईळामहा ईड्याँ आज्येन ॥ (ऋ. १०-५३ २)

(२) तं हि शश्वंत ईळते स्रुचा देवं घृतश्रुता
अग्निं हव्याय वोळइवे ॥ (ऋ. ५-१४-३)

(३) देवाँ ईळाना हविषा घृताची ॥ (ऋ. ५ २८.१)

(४) को अग्निमीष्टे हविषा घृतेन ॥ (ऋ. १-८४ १८)

' (१) (आज्येन) धी के साथ पूजनीयों की पूजा करोगे, (२) (घृतश्रुता स्रुचा) धीवाले चमस से अग्नि-देव की पूजा करते हैं, (३) धी से देवों की पूजा होती है, (४) घृतयुक्त हवि से कौन अग्नि की पूजा करता है ? '

इन मंत्रभागों में ' ईड् ' के साथ ' आज्य ' का संबंध है । अर्थात् इस के विचार से पता लगेगा कि, ' ईडे ' शब्द का अर्थ केवल स्तुति नहीं है, परन्तु धी, (हवि) अन्न आदि के साथ अर्पण का संबंध है । यह भाव ध्यान में धरकर निम्न लिखित मंत्र देखिये—

(१) अग्निमीडे पूर्वचित्ति नमोभिः । (वा. य. १३-४३)

(२) अग्निमीडे भुजां यविष्ठम् ॥ (ऋ. १०-२०-२)

(३) घृता चिरीडानो वह्निर्मसा ॥ (अ. ५ २७-४)

' (१) (नमोभिः) अक्षोंद्वारा अग्नि की पूजा करता हूँ,

(२) भोग करनेवालोंमें युवा अग्नि की अर्थात् जवान होने के कारण अधिक खानेवाले अग्नि की मैं पूजा करता हूँ,

(३) धी और (नमसा) अन्न से अग्नि की पूजा होती है । '

इन मंत्रों में ' नम ' शब्द है, पूर्वमंत्रों के साथ इनका विचार करने से यहाँ ' नमः ' का अर्थ ' अन्न ' प्रतीत होता है । अन्न, वज्र और नमन ये तीन अर्थ ' नम ' के हैं । प्रसंगानुकूल यहाँ अन्न इष्ट है, क्योंकि उसके साथ धी भी है । अन्न और धीसे अग्नि की स्तुति, प्रशंसा आदि नहीं हो सकती, परन्तु उसका संवर्धन हो सकता है । इसलिये ' अग्निमीडे पुरोहित ' इन पदोंका अर्थ मैं प्रत्यक्ष हितकर्ता (अग्नि) जीवनाग्नि का संवर्धन करता हूँ । ऐसा हो सकता है । धी और उत्तम अक्षों से जीवनशक्ति का संवर्धन होना संभवनीय भी है, इसलिये यह अर्थ प्रत्यक्ष अनुभव में भी आ सकता है ।

वेद में अन्न वाचक ' इष्, इप् ' ये शब्द हैं । नैरुक्त दृष्टिसे इनका संबंध ' इष्, इर, इरा, इडा, ईरा, इड्, ईडा, इळा, इळा ' शब्दों के साथ है और इसीलिये इन सब शब्दों के अनेक अर्थों में ' अन्न ' भी एक अर्थ है । यही कारण है कि, अन्न और धी के साथ ही अग्नि की (ईडा) वधाई होती है, जो पूर्वोक्त मंत्रोंसे सूचित हो गई है । सब प्रणी अन्न चाहते हैं, इसलिये ' इप् (इच्छ) ' का अर्थ अन्न होता है और वही भाव ' ईड्, ईड् ' आदि शब्दों में है । इससे ' ईडे ' का सम्बन्ध अन्नसे है, यह बात निश्च है ।

इस सूक्त में अग्नि शब्द का मुख्य स्वरूप जीवनाग्नि है, यह बात पूर्व ही बताई गई है । यह जीवनाग्नि धी और अन्न के योग्य सेवन से बढ़ सकता है, यह दीर्घायु-प्राप्ति का बोध यहाँ इस मंत्र में बताया गया है । यही जीवनाग्नि किंवा आत्माग्नि, अगिरस्, अंगारस्, अमृत रस अथवा ब्राह्म रस है, जिसका योग्य अन्न और उत्तम धीद्वारा पोषण होता है, यही सूचना इस मंत्र में ' ईड् ' धातु कर रहा है । यह आध्यात्मिक जीवनाग्नि के पक्ष में अर्थ है । आधिभौतिक पक्ष में राष्ट्रीय जीवनाग्नि गुरु और उपाध्यायों के रूपमें समाजमें होता है, इनका सत्कार अन्नद्वारा करना योग्य है । आधिदैविक पक्ष में हवनीय अग्नि धी आदि हवनीय पदार्थों द्वारा बढ़ाया जाता है, इत्यादि भाव प्रत्येक समयमें पाठक विचार की दृष्टिसे देखते जायें । वैयक्तिक और सामाजिक अर्थ मानवी उन्नति के साधक है और पांचभौतिक अग्निपरक अर्थ सामान्य दृष्टि से स्थूल उपासनाका साधक है । अब और दो पादोंका विचार करेंगे—

‘यज्ञस्य देवमृत्विजम् ॥
होतारं रत्नधातमम् ॥’

इन दोनों पादों में अग्नि का स्वरूप-वर्णन है । सब से प्रथम ‘यज्ञस्य देवं’ ये शब्द विशेष महत्त्व रखने के कारण यहां देखनेयोग्य हैं । यह अग्नि यज्ञ का देवता है । जिस यज्ञ का देवता अग्नि है, वह यज्ञ कौनसा है ? और कहाँ चल रहा है ? इस बात का पता लगाना आवश्यक है । इसका विचार करने के लिये निम्न वाक्य देखिये-

हृदयमें यज्ञ ।

अविन्दन्ते अतिहितं यदासीत्

यज्ञस्य धाम परमं गुहा यत् ॥ (ऋ० १०।१८।१२)

‘जो (यज्ञस्य परमं धाम) यज्ञ का परम स्थान (गुहा) बुद्धि में, हृदय में है, वह (अति-हितं) अत्यंत गुप्त है, परन्तु ज्ञानी सत्पुरुष उस को (अविन्दन्ते) प्राप्त करने हैं ।’ इस मंत्र में यज्ञ का स्थान हृदय है, ऐसा स्पष्ट कहा है । हृदयस्थान में अत्यन्त गुप्त रूप से अर्थात् अदृश्य रीति से यह यज्ञ चल रहा है । जो विशेष ज्ञानी हैं, वे ही इन को अपनी सूक्ष्म दृष्टि से जानते हैं । अन्य साधारण मनुष्य जो स्थूल दृष्टि के हैं, वे इस यज्ञ को देख नहीं सकते, इस का कारण उन का अज्ञान ही है । ऐसे अज्ञानी मनुष्यों को व्यक्त रूप में बताने के लिये ही बाह्य यज्ञ रचा गया है, जो अग्नि में आहुतियों डाल कर किया जाता है । तात्पर्य यह कि, मनुष्य की हृदयरूप गुहा में सच्चा यज्ञ गुप्त रीति से चल रहा है, उस का नकशा ही यह बाह्य यज्ञ है । इस बात का विशेष वर्णन क्रमशः आगे आ जायगा । अब यहां इस का और भाव देखना है, इस-लिये निम्न लिखित वचन देखिये-

(१) पुरुषो वाच यज्ञस्तस्य यानि चतुर्विं-
शति वर्षाणि तत्प्रातःसवनं... ॥ १ ॥ ...यानि
चतुश्चत्वारिंशद्वर्षाणि तन्माध्यंदिनं सवनं...
॥ ३ ॥ यान्यष्टाचत्वारिंशद्वर्षाणि तत्तृतीयस-
वनं... ॥ ५ ॥ (छां. ३-१६)

(२) यद्यज्ञ इत्याचक्षते ब्रह्मचर्यमेव तत् ॥
(छां. ८-५-१)

(३) अहं ब्रह्माहं यज्ञः ॥ (बृ. १-५-१७)

(४) तस्यैवं विदुषो यज्ञस्यात्मा यजमानः,
श्रद्धा पत्नी, शरीरमिध्मं, उरो वेदि, लोमानि बर्हिः,
वेदः शिखा, हृदयं यूपः, काम आज्यं, मन्युः पशुः,
तपोऽग्निः, दमः शमयिता, वाग्धोता, प्राण उद्गाता,
चक्षुरध्वर्युः, मनो ब्रह्मा, श्रोत्रमग्नीत्, यावद् ध्रियते
सा दीक्षा, यदश्नाति तद्धविः, यत्पिबति तदस्य
सोमपानं... यन्मुखं तदाहवनीयः... ॥

(५) स्वे शरीरे यज्ञं परिवर्तयामि ॥ (प्राणाग्नि उ. २)

(६) अहं क्रतुरहं यज्ञः ॥ (भ. गी. ९-१६)

(७) बुद्धीन्द्रियाणि यज्ञपात्राणि ॥ (गर्भ उ. ४ ;
प्राणाग्नि उ. ४)

(८) वाग्वै यज्ञस्य होता, चक्षुर्वै यज्ञस्याध्वर्युः,
... प्राणो वै यज्ञस्योद्गाता, मनो वै यज्ञस्य ब्रह्मा
(बृ. ३-१-१)

‘(१) मनुष्य का जीवन-संपूर्ण आयु-ही एक यज्ञ है, पहिले २४ वर्ष का प्रातःसवन है, मध्य के ४४ वर्ष माध्यंदिन सवन है, अंत के ४८ वर्ष तृतीय सवन है । (२) जो यह यज्ञ है, वही ब्रह्मचर्य है । (३) मैं ब्रह्मा और मैं यज्ञ हूँ । (४) इस ज्ञानी के यज्ञ में आत्मा यजमान, श्रद्धा यजमान पत्नी शरीर इध्म, छाती वेदी, बाल बर्हि, वेद शिखा, हृदय यूप, वासना घी, क्रोध पशु, तप अग्नि, दम शमिता, वाणी होता, प्राण उद्गाता, चक्षु अध्वर्यु, मन ब्रह्मा, कान आग्नीध्र, व्रतपालन दीक्षा, भोजन हवि, जल सोमपान, मुख आहवनीय अग्नि है । (५) अपने शरीर में यज्ञ का परिवर्तन करना हूँ । (६) मैं क्रतु और मैं ही यज्ञ हूँ । (७) बुद्धि और इतर इंद्रिय यज्ञपात्र हैं । (८) यज्ञ का होता वाक् है, ... अध्वर्यु चक्षु है, .. उद्गाता प्राण है, और ब्रह्मा मन है ।’

यह यज्ञ का वर्णन विस्पष्ट रूप से बना रहा है कि, यह यज्ञ मनुष्य के अंदर ही हो रहा है । ‘यज्ञ का स्थान हृदय में गुप्त है’ (ऋ० १०।१८।१२) इस ऋग्वेद के कथन का आशय ही उपनिषत्कारों ने उक्त प्रकार स्पष्ट किया है । यही यज्ञ यहां इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्त में है और इसी यज्ञ का देव (यज्ञस्य देवं) जो अग्नि है, वह हृदयस्थान में ही विराजमान है । अब पाठकों को पता लग सकता है कि, ‘अंग, अंगिरस्’ आदि पदोंद्वारा किस

रहस्य का कथन हुआ है । हृदय में जो आत्मशक्ति है, वही यह अग्नि है । यहां हृदय में बैठकर यही आत्मा आयुष्य की समाप्ति तक यज्ञ कर रहा है । यही क्रतु है । प्रत्येक वर्ष एक एक क्रतु करता है और इस प्रकार १०० वर्षों में १०० क्रतु होनेके कारण इसीका नाम 'शतक्रतु' होता है । यह शतक्रतु आत्मा ही 'इंद्र' नाम से प्रसिद्ध है और इसी आत्मा शतक्रतु इंद्र की शक्ति 'इंद्रियों' में कार्य कर रही है । इस प्रकार यहां इंद्र और अग्नि एक ही हैं । इसीलिये कहा है कि—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो
गरुत्मान् । एकं सद्विप्रा बहुधा वदंत्यग्निं यमं
मातरिश्वानमाहुः ॥ (ऋ १।१६४।४६)

'एकही सद्वस्तुका ज्ञानी लोग इंद्र, अग्नि, मित्र, वरुण, सुपर्ण, यम, मातरिश्वा आदि विविध नामोंसे वर्णन करते हैं ।' जिस एक आत्माका विविध नामोंसे उक्त प्रकार वर्णन होता है, वही आत्माभि इस ऋग्वेद के प्रथम सूक्तमें वर्णन किया गया है । और यही 'यज्ञका देव' है । क्योंकि जबतक यह इस शरीर के हृदयमंडप में रहकर यज्ञ करता है, तबतक ही यह यज्ञ चलता रहता है । जब यह चला जाता है, तब यज्ञ समाप्त हो जाता है । पूर्ण शतायु (अर्थात् १०८ अथवा १२० वर्ष की आयु) का उपभोग लेकर स्वेच्छा से यज्ञ समाप्त करके यह नला गया, तो कहा जाता है कि, 'इसका यज्ञ समाप्त हुआ,' परन्तु जब विविध व्याधियां इस पर आक्रमण करती हैं और इसका अकालमृत्यु होता है, तब कहा जाता है कि राक्षसोंने इस यज्ञ का विध्वंस किया । इस प्रकार बीच में अकाल में ही यज्ञ का विध्वंस न हो, ऐसा प्रबन्ध करना चाहिये । क्या ऐसा प्रबन्ध करना मनुष्य के अधीन है ? वेदादि शास्त्रों के परिशीलन से पता लग सकता है कि, योगादि साधन प्रारम्भ से ही यदि किये जाय, तो उक्त सिद्धि प्राप्त हो सकती है । इस हेतु से ही इस प्रथम मंत्र में कहा है कि, यही 'यज्ञ का देव' है । यदि इसका यथायोग्य सत्कार हुआ, तो यह यज्ञ की समाप्ति ठीक प्रकार कर सकेगा, अन्यथा चला जायगा । प्रत्येक मनुष्य को यह सूचना यहां मिल रही है कि, 'यज्ञका देव' अपने हृदय में है, उसको देखना चाहिये और उसका महत्त्व

जानना चाहिये । इस आध्यात्मिक दृष्टि से वेदमंत्रों का मनन करने से उक्त ज्ञान प्राप्त हो सकता है ।

यह 'यज्ञ का देव' है और यही 'ऋत्विज्' है । पाठकों को यहां ध्यानपूर्वक देखना चाहिये कि, यहां यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही हुए हैं (१) यज्ञ का देव, (२) पुरोहित, (३) ऋत्विज्, (४) होता आदि सब बाह्य यज्ञ में अलग अलग होते हैं, परन्तु इस प्रथम मंत्र में वर्णित यज्ञ में ये सब एकही वस्तु में मिल गये हैं । जो यज्ञ का देव है, वही पुरोहित, ऋत्विज् और वही होता है । इतना ही नहीं प्रत्युत अन्य याजक भी वही एक है । इसीलिये इस मंत्र में वर्णन किया हुआ यज्ञ अध्यात्म-यज्ञ है और बाह्य यज्ञ नहीं है । क्योंकि अध्यात्मयज्ञ में आत्मा ही सब कुछ बनता है, वैसा इस बाह्य यज्ञ में नहीं हो सकता । इस बाह्य यज्ञ में यज्ञ का देव अन्य होता है तथा ऋत्विज्, यजमान आदि उससे भिन्न होते हैं । जहां अग्निष्टोमादि यज्ञ होते हैं, वहां देखने से पता लग सकता है कि, उक्त भिन्नता कितनी स्पष्ट होती है । परन्तु इस मंत्र में स्पष्ट रीति से कहा है कि, यज्ञ का देव और ऋत्विज् एक ही है । अध्यात्म में यह एकता कैसी होती है देखिये ।

'वाणी, प्राण, चक्षु, मन, ये क्रमशः होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा हैं । (बृ० उ० ३।१।१-६)' जिन्होंने आत्मविचार किया है, उनको पता है कि, आत्मा की शक्ति ही वाणी, प्राण, चक्षु और मन में कार्य कर रही है, इसलिये आत्मा ही सब यज्ञ कर रहा है । वही यज्ञ का देव है जिसकी उपासना यज्ञ में की जाती है, वही यजमान है, जो यज्ञ करता है, वही होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा आदि ऋत्विज् है, जिन के द्वारा यज्ञ कराया जाता है । इस अवस्था में उपास्य और उपासक एक ही हो जाते हैं । यह भाव प्रथम मंत्र में वेदने दिया है । जो कहते हैं कि, अध्यात्मविद्या उपनिषदों में ही है और वेद में नहीं है, उनको इस मंत्र का विचार उक्त प्रकार अवश्य करना चाहिये । तब पता लगेगा कि वेदमंत्रों की गुप्त विद्या अब तक ही गूढ़ रही है और उसमें से थोड़ीसी उपनिषदों में प्रकट हो गई है । अस्तु । अब ऋत्विज् आदि शब्दों का तात्पर्य देखना चाहिये ।

ऋत्विज् = (ऋतु + यज्) = जो ऋतु के अनुसार यज्ञ करता है । अध्यात्मदृष्टि से व्यक्ति में छः ऋतु हैं । (१) उत्पत्ति, (२) अस्तित्व, (३) वर्धन, (४) विपरिणाम, (५) क्षीणता और (६) नाश । जगत् के संपूर्ण पदार्थों में ये छः ऋतु हैं । कोई पदार्थ ऐसा नहीं है कि, जिसमें ये न हों । वनस्पति, पशु, पक्षी, तथा मनुष्य इनमें ये प्रत्यक्ष हैं । प्राणिमात्र में जो आत्माग्न है, वह इन छः ऋतुओं में प्राप्त ऋतु के अनुकूल व्यापार करता है । आत्मा की प्रेरणा से बालक पैदा होता है, वह अपने अस्तित्व के लिये प्रयत्न करता है, शरीरादि को बढ़ाता है, बढ़ते बढ़ते परियक्त हो जाता है, पश्चात् क्षीणता का ऋतु प्रारम्भ होता है और अन्त में नाश होता है । इस प्रकार इस यज्ञ का प्रारम्भ और अंत आत्मा ही करता है । इन व्यापारों में आत्मा की शक्ति का कार्य देखना इष्ट है । वैदिक धर्म की यदि कोई विशेषता है, तो यही है कि, यह वैदिक धर्म हर एक स्थान पर आत्मा की शक्ति की जागृति कराता है । अस्तु ।

इस रीतिसे व्यक्तिके शरीरमें आत्मा का ऋतुओंके अनुकूल कार्य देखा जाता है, यही अध्यात्मज्ञान है । आत्माके संबंधसे जिसकी उत्पत्ति है, वह अध्यात्म (अधि+आत्मा) है । हर एक मनुष्य को ऋतुओं के अनुकूल कार्य करना चाहिए, यह उपदेश यहां मिलता है । बाल्य, तारुण्य और वार्धक्य इन तीन कालोंमें प्रत्येकमें दो ऋतु होनेसे आयुभर में छः ऋतु होते हैं । प्रत्येक ऋतुमें जो करनेयोग्य कर्तव्य होते हैं, उनको उत्तम प्रकार करना अत्यावश्यक है । कर्तव्य स्वयं अपने विषयमें जैसे होते हैं, वैसे ही दूसरोंके संबंधके कारण भी उत्पन्न होते हैं । ये सब ऋतुके अनुकूल ही करने चाहिए । मनुष्यके संपूर्ण आयुमें छः ऋतु हैं, उसी प्रकार सालमें छः ऋतु हैं । इन ऋतुओंके अनुसार अपनी ऋतुचर्या रखनेसे आयु, आरोग्य और बल प्राप्त होता है । इसी प्रकार मासमें और प्रतिदिन ऋतु होते हैं । इसका कोष्ठक यह है—

आयुमें ऋतु	वर्षमें ऋतु	मासमें ऋतु	दिनमें ऋतु
१०० वर्ष	१२ मास	३० दिन	२४ घण्टे
जन्म, बाल्य	वसंत	प्रतिपदा	प्रातःकाल
कुमारावस्था	ग्रीष्म	अष्टमी	मध्याह्न
तारुण्य	वर्षा	पूर्णिमा	सायंकाल

वृद्धता	शरद्	षष्ठी	रात्रिका प्रारंभ
क्षीणावस्था	हेमंत	द्वादशी	मध्यरात्र
अंतसमय	शिशिर	अमावास्या	रात्रि का अंतिम प्रहर ।

इस प्रकार समय के छोटे या बड़े विभाग में ऋतुओंकी कल्पना की जाती है और प्रत्येक प्राप्त ऋतुकाल में व्यक्ति-विषयक, समाजविषयक और जगद्विषयक कर्तव्य अवश्य पालन होना चाहिए । यज्ञका देव आत्माभि है, वह ऋतुके अनुसार अपने कर्तव्य करता है, इसलिए हर एकको वैसा करना अत्यावश्यक है, जो ऋतुके अनुसार अपना कर्तव्य योग्य रीतिसे करेगा, वही उन्नत होगा और जो न करेगा वह अवनत होगा । यज्ञका देव हमारा आदर्श है । उसके गुण, धर्म और कर्म वेदमंत्रों में इसलिए कहे हैं, कि उसके अनुसार मनुष्य कार्य करे और अपनी उन्नतिका साधन करे ।

आधिभौतिक दृष्टिसे सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यक्षेत्र में भी राष्ट्रीय जीवनमें जो ऋतु होते हैं, उनके अनुसार हर-एक को अपने कर्तव्य अवश्य करने चाहिए । राष्ट्रीय ऋतु-परिवर्तन राजकीय क्रांतिरूपसे इतिहासमें प्रसिद्ध है । इसी प्रकार अन्यान्य अवस्थामें राष्ट्रके और समाज, संघ अधवा जातिके ऋतु होते हैं । इन ऋतुओंके अनुकूल अपना कर्तव्य पालन करनेसे राष्ट्रीय उन्नति और कर्तव्यपालन न करनेसे राष्ट्रीय अवनति होती है । सब अन्य व्यवहारोंके विषयमें भी यही बात मनातन है । योग्य विचार करके इस विषय का अनुभव पाठक ले लें । जगत् के अन्दर जो सांवरसरिक ऋतु परिवर्तन होता है अथवा राष्ट्रके तथा समाजके जीवन में ऋतुपरिवर्तन होता है, उसके अनुकूल मनुष्यमात्र को अपना आचरण करना आवश्यक ही है । जो ऋतुके अनुसार अपना कर्तव्यपालन न करेगा, उसका नाश होगा । सामान्यतः बहुत से यज्ञयाग ऋतुसंधि में जो बीमारियां होती हैं, उनके निवारण के लिए किए जाते हैं, इसलिए कहा है—

भैषज्ययज्ञा वा पते । तस्माद्वृत्तसंधिषु प्रयुज्यन्ते ।
ऋतुसन्धिषु वै व्याधिर्जायते (गो. उ. प्र. १-१९)
' औषधियोंके ही ये यज्ञ हैं, इसलिए ऋतुके संधिसमय में ये किए जाते हैं, क्योंकि ऋतुसंधिमें व्याधियां होती हैं । ' इस प्रकार यह आधिदैविक दृष्टिसे विचार हुआ है ।

पाठक विचार करके इससे अधिक बोध ले ले ।

होता = इस शब्दका अर्थ दाता, आदाता और आह्वानकर्ता है । देनेवाला, लेनेवाला और बुलानेवाला ये तीन भाव इस शब्दमें हैं । पहिला दान लेना है, पश्चात् दूसरों को बुलाना और तदनंतर उनको दान देना होता है । विद्या प्राप्त करनी, विद्यार्थियोंको अपने पास बुलाना और उनको विद्यादान करना, यह 'ज्ञानयज्ञ' का हवन है । धन प्रस करना, जिनको धनकी आवश्यकता है, उनको निमंत्रण देना और उनको धनका अर्पण करना, यह 'द्रव्ययज्ञ' है । इसी प्रकार अन्यान्य यज्ञोंमें 'होता' का काम निश्चित है । अध्यात्मदृष्टिसे व्यक्ति के शरीरमें आत्माभि प्राकृतिक पदार्थों को अपने पास कर रहा है, नायु, सूर्य, जल आदि देवताओंके अंशोंको बुलाकर उनको शरीरके भिन्नभिन्न स्थानोंमें रखता है और अपनी शक्ति उनको देकर उनके द्वारा यह ज्ञतसांवरणिक यज्ञ कराता है । इसी प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएकको अपने अपने कार्यक्षेत्र में करना चाहिये ।

रत्नधातमः = (रत्न + धा + तमः) = रत्नोंका धारण करनेवाला है । यहा शंका हो सकती है कि यह आत्मा रत्नोंका धारक कैसा है, इसके रत्न कौनसे हैं और उनका धारण यह कैसा करता है ? इन प्रश्नोंके उत्तर के लिए निम्नलिखित मन्त्र देखिये—

दमे दमे सप्त रत्ना दधानोऽग्निर्होता निषसादा यजीयान् ॥ (७५९, ऋ० ५ १-५)

' (दमे) घर घर में सात रत्नोंको धारण करनेवाला अग्नि यज्ञ करनेके लिये होता बनकर बैठा है । ' आत्माभि शरीरमें बैठा है, आत्माका घर यही शरीर है, इत्यादि बातों का निश्चय पहिले हो चुका है । इस शरीरमें यह आत्माभि सात रत्नोंका धारण करता है । ये सात रत्न— (१) मुख, (२) नेत्र, (३) कर्ण, (४) नासिका, (५) त्वचा ये पंच ज्ञानेन्द्रियाँ और (६) मन तथा (७) बुद्धि (किंवा कर्षणों के मतसे अहंकार) मिलकर होते हैं । जिस प्रकार विविध रत्नोंके अलंकारोंसे शरीरकी शोभा बढ़ती है, उसी प्रकार उक्त इंद्रिय-शक्तियोंके विकास से मनुष्यकी शोभा वृद्धिगत होती है । परन्तु इसमें विशेष बात यह है कि, यदि ये आत्माके सात रत्न उत्तम अवस्थामें रहें, तो बाह्य रत्नोंके विज्ञा भी शोभा और यश बढ़ता है और ये आत्मा

के सप्त रत्न ठाक न रहें, तो बाह्य रत्नोंसे शरीरके अलंकार बढ़ानेपर भी उसका कोई उपयोग नहीं होता । तात्पर्य ये आत्माके रत्न मुख्य हैं और बाह्य रत्न गौण है ।

व्यक्तिमें और जगत्में भी सप्त रत्न है । समाज और राष्ट्रमें प्रकाश, शांति, उग्रता, ज्ञान, गुरुत्व, वीर्य और स्थैर्य इन सप्त गुणोंके कर्म करनेवाले श्रेष्ठ पुरुष रत्नरूप होते हैं और वेही राष्ट्रकी शोभा बढ़ाते हैं । इस प्रकार सर्वत्र सप्त रत्नोंका रूप देखकर उनका धारण, पोषण करना आवश्यक है ।

प्रत्येक रत्नका वर्ण भिन्न होता है और 'वर्णचिकित्सा' के नियमानुसार अपने अनुरूप वर्णका रत्न शरीरपर धारण करनेसे शरीरका आरोग्य, आयुष्य और बल बढ़नेमें सहायता होती है । इस विषयका विचार सुविचारी वैद्योंको करना उचित है ।

यहां प्रथम मंत्रके संपूर्ण शब्दोंका विचार हुआ । इस मन्त्र में कहे सब शब्द अग्निका स्वरूप निश्चित करनेके लिए सहायता दे रहे हैं । इन शब्दोंके आशयका विचार करनेसे जो स्वरूप निश्चित होता है, वह ऊपर बताया ही है । इस स्वरूपको ध्यानमें धरकर इस प्रकार का यह अग्नि 'यज्ञ का देव' है और यह यज्ञ मुख्यतया अपने शरीरमें ही चल रहा है, इसके नियम देखकर मानवसंघका व्यवहार होना चाहिए, इत्यादि बोध अशरूपसे हमने देखा है ।

अब और देखिये—

“ स देवाँ एह वक्षति ॥ २ ॥ (१)

' वह देवों को यहां लाता है । ' यह क्रिया वर्तमानकाल की और प्रत्यक्ष अनुभव की है । इस कथन से प्रश्न होता है कि (१) यह देवों को कहां लाता है ? किस रीति से लाता है ? किस समय लाता है ? और कहां से लाता है ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर देने के पूर्व यह देखना चाहिये कि, इस मंत्रभाग की वेदमें कहां द्विरुक्ति हुई है । देखिये—

(१) मधुच्छंदा वैश्वामित्रः ॥ अग्निः ॥

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत ।

स देवाँ एह वक्षति ॥ (२, ऋ० १-१-२)

(२) वामदेवो गौतमः ॥ अग्निः ॥

स हि वेदा वसुधितिं महां आरोधनं दिवः ।

स देवाँ एह वक्षति ॥ (७०५; ऋ० ४-८-२)

दो भिन्न ऋषियों के देखे हुए मंत्रों में इस तृतीय चरण की द्रिस्तुति हुई है । जो मंत्र वेद में बारंवार आता है, उस में विशेष महत्त्व का उपदेश होता है, इसलिये उस बात को बारंवार कहकर पाठकों के मन में वह बात स्थिर की जाती है । पुनरुक्त मंत्रों का इस प्रकार महत्त्व है । अब पता लगाना चाहिये कि, कौनसी महत्त्व की बात इस मंत्रभाग में कही है ? इसका विचार करने के लिये निम्न लिखित मंत्र देखिये--

(१) स देवान् विश्वान् बिभर्ति ॥ ऋ० ३-५९-८

(२) स देवान् सर्वानुरस्युपदध सपश्यन्
याति भुवनानि विश्वा ॥ (अ० १०-८-१८)

‘ (१) वह एक देव सब अन्य देवों का धारण, पोषण करता है । (२) वह एक देव सब अन्य देवों को अपनी छाती में धारण करके सब भुवनों को देखता हुआ चलता है । ’ यह उस एक आत्मा का वर्णन है कि, जिस के आधार से अन्य देवगण रहते हैं । यही सब अन्य देवों का धारण, पोषण करनेवाला और सब से उचित कार्य करानेवाला देव है । इसलिये कहा है--

(१) यज्ञो बभूव, स आबभूव, स प्रजज्ञे, स उ
वाववृधे पुनः । स देवानामधिपतिर्बभूव ॥

(अ० ७-५-२)

(२) स योनिमैति, स उ जायते पुनः, स देवाना-
मधिपतिर्बभूव ॥ (अ० १३-२-२५)

‘ (१) एक यज्ञ था, वह प्रकट हुआ, वह बन गया और पुनः बढ़ने लगा । वह देवों का अधिपति हो गया । (२) वह योनि को प्राप्त हुआ, वह निःसंदेह पुनः पुनः जन्म लेता है, वह देवों का अधिपति हुआ है । ’

यज्ञ प्रकट होता है, पुनः पुनः बनता है, बनने के पश्चात् बढ़ता है, यह वर्णन ‘जीवनरूप यज्ञ’ का है । क्योंकि अगले मंत्रमें ही कहा है कि वह देवों का अधिपति बननेवाला है, वह योनि में प्रविष्ट होकर पुनः पुनः जन्म लेता है ।

इस प्रकार बारंवार जन्म लेता हुआ, अनेक बार यज्ञ करने का यत्न करता है । इसके यज्ञ पर राक्षस हमला करते हैं, और बीच में विघ्न करते हैं । इस प्रकार यज्ञों में विघ्न होने पर वह फिर योनि में प्रविष्ट होकर पुनः जन्म

लेता है और पुनः यज्ञ करता है । यह उसका प्रयत्न यज्ञ की पूर्णता होने तक चलता है । यह मन्त्र पुनर्जन्म का स्वरूप बता रहा है, परन्तु उसका अधिक विचार करने का यह स्थान नहीं है । पुराणों में ऋषियों के यज्ञों का नाश राक्षसों के द्वारा होने की अनेक कथाएं हैं, उनका मूल यहाँ इन मंत्रों में है । विचारशील पाठकों को पता लग सकता है कि, यह आत्मा का शतसांवत्सरिक जीवन-यज्ञ ही है । जिस समय यज्ञ करने की इच्छा से यह योनिक्षेत्र में उतरता है, उस समय यह देवों को अपने साथ लाता है और इसका आह्वान सुन कर सब ३३ कोटी देव अपने अंशरूप से इस गर्भ में अवतार लेते हैं और उन सब देवों का अधिराजा यह स्वयं हृदयस्थान में रहने लगता है । इसका प्रभाव देखिये—

(१) स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ (य. ३४-५१)

(२) स जीवेषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ (अ. १-३५-२)

(३) स देवेषु वनते वार्याणि ॥ (ऋ. ५-४-३)

(४) स देवो देवान्प्रति पप्रथे पृथु ॥

(ऋ. २-२४-११)

‘ (१) वह देवों में दीर्घ आयु करता है, (२) वह जीवों में दीर्घ आयु करता है, (३) वह देवों में से वरने-योग्य सत्त्वों को स्वीकार करता है, (४) वही एक देव है, जो अन्य सब देवों के प्रति फैला है । ’ इस एक आत्म-देव का इतना प्रभाव होने के कारण इसका शब्द सुनते ही इसके साथ सब अन्य देव जाते हैं । अब और देखिये—

(१) देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति ॥

(ऋ. ९-९५-२)

(२) देवो देवानां जनिमा विवक्ति ॥

(ऋ. ९-९७-७)

(३) आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां
न मिनामि धाम ।

ते मा भद्राय शवसे ततक्षुरपराजितमस्तु-
तमषाल्लहम् ॥ (ऋ. १०-४८-११)

(४) त्वमग्ने प्रथमो अंगिरा ऋषिर्देवो देवा-
नामभवः शिवः सखा ॥

तव व्रते कवयो विद्वानापसोऽजायन्त
मरुतो भ्राजदृष्टयः (५०; ऋ० १।३।११)

- (१) त्वमग्ने प्रथमो अंगिरस्तमः कविदेवानां
परिभूषसि व्रतम् ॥ (५१; ऋ० १।३।१२)
- (६) देवो देवानामसि मित्रो अद्भुतो वसुर्व-
सूनामसि चारुध्वरे । शर्मन्स्याम तव
सप्रथस्तमेऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं
तव ॥ (२६८; ऋ० १।२४।१३)
- (७) देवो देवान् कृतुना पर्यभूषत् ॥
(ऋ० २।१२।१)
- (८) देवो देवान् परिभूषतेन (ऋ० १०।१२।२)
- (९) होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो
देवान् यजत्वग्निरहन् ॥ (ऋ० २।३।१)
- (१०) समिद्धो अथ मनुषो दुरोणे देवो देवान्
यजसि जातवेदः ॥ (ऋ० १०।११०।१)
- (११) देवो देवान् स्वेन रसेन पृच्वन् ॥
(ऋ० १।९७।१२)

‘ (१) यह एक देव अन्य देवोंके (नामानि) नामों को प्रकट करता है, (२) यह एक देव अन्य सब देवोंके जन्म कहता है, (३) वसु, रुद्र और आदित्यादि देवोंके धामका भे नाश नहीं करता । क्योंकि भे अपराजित, अजेय और अमल्य हूं और वही कल्याण और बल के लिये मुझे व्यक्त करते हैं, (४) हे अग्ने ! वही पहिला अगिरा ऋषि है, और तू एक देव अन्य सब देवोंका सच्चा शुभ मित्र है। तेरे नियमसे ही ज्ञानसे पुरुषार्थ करनेवाले कवि तेजस्वी होते हैं, (५) हे अग्ने ! तू पहिला अत्यंत अंगरस है, और अन्य देवोंके नियमको सुभूषित करता है, (६) तू सब देवोंका एक देव अद्भुत मित्र है, और यज्ञमें वसुओंका भी वसु तूही है । हे अग्ने ! तेरे मन्त्रमें हम (मा रिषाम) नष्ट नहीं होंगे और (शर्मन्) सुख ही प्राप्त करेंगे, (७) तू एक देव अन्य देवोंको कर्मसे भूषित करता है, (८) सत्य नियमसे तू एक देव अन्य देवोंको व्यापता है, (९) होता, (पावकः) पवित्रकर्ता, उत्तम मेधावान् योग्य अग्निदेव देवोंका यजन करे, (१०) हे जातवेद अग्ने ! तू (मनुष्यः दुरोणे) मनुष्यके घरमें प्रदीप्त होकर देवोंके लिये यज्ञ करता है, (११) एक देव अपने रससे अन्य देवोंको तृप्त करता है । ’

यह एक देवका महत्त्व है । यह एक देव सब अन्य

देवोंको अपने यज्ञ में जुलाता है, वे देव उसके यज्ञमें आते हैं, उसके साथ रहते हैं और वह चला गया, तो उसके साथ चले जाते हैं । यह सब वेदका आलंकारिक वर्णन एक ही बातको बता रहा है । वह बात यह है कि, ‘ (१) आत्मा जन्म लेने के समय योनि में प्रवेश करना चाहता है, उस समय वह अन्य देवोंके अर्थात् पृथिवी, आप, तेज, वायु सूर्य, चंद्र, विशुत्, आदि सब देवताओंको अपने साथ जुलाता है, (२) उसका शब्द सुनकर सब ३३ कोटी देव अपने अपने अंशको उसके साथ भेजने हैं, (३) सब देवोंका यह देह बनता है और उसका अधिष्ठाता आत्मदेव होता है और इस प्रकार बनकर वह जन्म लेता है और शतसांवत्सरिक यज्ञ प्रारंभ करता है । ये देव आकर कहाँ रहते हैं, इसका वर्णन भी देखिये—

- [१] सर्वं संसिच्य मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१२॥
[२] गृहं कृत्वा मर्त्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥१३॥
[३] रेतः कृत्वा आज्यं देवाः पुरुषमाविशन् ॥२९॥
[४] सूर्यश्चक्षुर्वीतः प्राणं पुरुषस्य विभेजिरे ॥३१॥
[५] तस्माद्वै विद्वान् पुरुषमिदं ब्रह्मेति मन्यते ।
सर्वा ह्यस्मिन् देवता गावो गोष्ठ इवासते ॥३२॥
(अ. १।१।८)

[६] अग्निर्वाग्भूत्वा मुखं प्राविशत्,
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत्,
आदित्यश्चक्षुर्भूत्वाऽक्षिणी प्राविशत्,
चंद्रमा मनो भूत्वा हृदयं प्राविशत्,
आपो रेतो भूत्वा शिस्नं प्राविशन् ॥ (ऐ. उ. २।४)

‘ (१) सब मर्त्य शरीरका पिचन करके देव पुरुषमें चुले हैं, (२) मर्त्य घर करके देव पुरुषमें प्रविष्ट हुए हैं, (३) रेत का घी बनाकर देव पुरुष में बसने लगे हैं, (४) सूर्य चक्षु बना है, वायु प्राण हुआ है, (५) इसलिये ज्ञानी इस पुरुषको ब्रह्म मानता है, क्योंकि सब देवताएं इसीके अंदर रहती हैं, जैसी गौंवे गोशालामें रहती हैं । (६) अग्नि वाचा बनकर मुखमें घुसा है, वायु प्राण बनकर नासिकामें रहने लगा, सूर्य चक्षु बनकर आंखमें बसने लगा, चंद्र मन बनकर हृदयमें रहने लगा, जलदेव वीर्य बनकर शिस्नमें रहा । ’ इस प्रकार अन्यान्य देवताएं इस एक देवके साथ आ गई और यहां इस शरीरमें अपने अपने

स्थानमें रहने लगीं । यह सब वेदों और उपनिषदोंका वर्णन देखनेसे पता लग सकता है कि, इस शरीरमें आत्माके साथ देव आकर बसे है । इस हेतुसे ही कहा है कि ' स देवान् पृथु वक्षति ' अर्थात् ' वह सब देवोंको यहां लाता है । ' उक्त मंत्रोंके विचारसे पाठकोंको पता लगाही होगा कि कहां और किस प्रकार लाता है, इसलिये इसका अधिक विचार अब करनेकी आवश्यकता नहीं है । परमात्मा संपूर्ण जगत् में व्यापक होकर सूर्यादि सब देवताओंका धारण-पोषण करता है, उसी प्रकार उसका अमृतपुत्र जीवात्मा इस देहमें रहकर सूर्यादि देवताओंका धारण-पोषण करता है, यह दोनोंमें समानता होनेके कारण मंत्रोंमें दोनोंका वर्णन एकही रीतिसे होता है, यह बात पाठक पूर्वोक्त मंत्रोंमें स्पष्ट रूपसे देख सकते हैं । अस्तु । इस रीतिसे यह आत्मामि अन्य देवोंको यहां— इस देहमें—इस कर्मभूमिमें— लाता है और शतसांवत्सरिक यज्ञ करनेकी तैयारी करता है ।

अध्यात्मदृष्टिसे शरीरमें देखिये कि यह आत्मा, प्राण अथवा जीवनका सत्वरस शरीर में प्राणघातक व्याधिकीटकोंके साथ सदैव युद्ध करता है, युद्धमें उनका पराभव करता है और आरोग्य का रक्षण करता है । व्याधिकीटक आसुरी स्वभावके कारण शरीरकी हिंसा करना चाहते हैं, उस हिंसासे इस शरीरका बचाव करनेके कारण आत्माके इस सत्कर्म को " अ-ध्वर यज्ञ " अर्थात् हिंसारहित यज्ञ कहते हैं । शरीरका सर्वतोपरि संरक्षण करनेका कार्य पूर्णतया यही जीवनका केंद्र कर रहा है, इसलिये मंत्रमें कहा है कि (विश्वतः परिभूः) सब प्रकारसे सबका नियामक और शासक यही है । सब जानते ही है कि, आत्माकी श्रेष्ठता है और अन्य इंद्रिय-शक्तियोंकी गौणता है, क्योंकि आत्माकी जीवनरूप प्राणशक्ति ही अन्य इंद्रियों, अगों और अवयवोंमें पहुंच कर कार्य करती है । यही भाव (स, इन् देवेषु गच्छति) " वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है " इस वाक्यसे व्यक्त किया है । आत्मामि यज्ञ करता है, उसका मुख्य प्रबंधकर्ता स्वयं आत्माही है और वह यज्ञ (देवों द्वारा) इंद्रियोंद्वारा होता है, इंद्रियोंमें उसका प्रभाव पहुंचता है । यह सब हरएक के अनुभव में है ।

आधिभौतिक दृष्टिसे संघ में, समाज में अथवा राष्ट्रमें भी यही भाव दिखाई देता है ।

तीनों स्थानोंमें इस बातकी सार्वत्रिकता देखनेयोग्य है । (१) अपना संरक्षण, (२) शत्रुशक्तिका पराभव, आत्मशक्तिका विजय, (३) अपनी उन्नति और स्वकीय शक्तिका विकास, (४) सहाय्यकर्ताओंका संघीकरण और उनका पोषण, यही मुख्य बातें हैं, जो इस यज्ञसे ध्वनित होती हैं । जिस व्यक्तिमें और जिस राष्ट्रमें ये होती रहेगी, उसका संरक्षण होगा और जहां न होगी वहां नाश होगा । इसलिये सबको उचित है कि, इस प्रकार अपनी उन्नतिके लिए हरएक प्रयत्न करे । अब द्विरुक्तिका विचार करना है—

[१] मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।

विश्वतः परिभूरसि ॥ (४, ऋ० १।१।४)

[२] कुत्सः आंगिरसः । अग्नि शुचिः ।

त्वं हि विश्वतो मुखो ' विश्वतः परिभूरसि ॥ '

अप नः शोशुचदधम् ॥ (१८९२, ऋ० १।९।६)

दो विभिन्न ऋषियोंके मंत्रोंमें ' विश्वतः परिभूः असि ' (सब प्रकारसे सर्वोपरि है) यह वाक्य द्विरुक्त हुआ है । अग्निका सर्वतोपरि शासक होना इस द्विरुक्तिसे व्यक्त होता है । सबका नियामक आत्मा होनेसे यहां विशेषतया आत्मामि ही वक्तव्य है, इसकी सिद्धता पहिले हो चुकी है । आत्माका वर्णन भी इन्हीं शब्दोंसे ईशोपनिषद् में हुआ है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमन्नमस्नाविरं शुद्धम-
पापविद्धं । कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूर्याथात-
थ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभतः समाभ्यः ॥

(वाय० ४०।८; ईश. ८)

' वह आत्मा (पर्यगात्) व्यापक है और (शुक्रं) वीर्यरूप, देहरहित, व्रणहीन, स्नायुहीन, शुद्ध, निष्पाप, कवि, बुद्धिमान्, (परिभूः) सबका नियंता, तथा (स्वयंभूः) स्वयंसिद्ध है । वह शाश्वत कालसे यथायोग्य रीतिसे सब अर्थों को करता आया है । ' वही आत्माग्निका यज्ञ जो शाश्वत कालसे चल रहा है, वही ऋग्वेदके प्रथम सूक्तमें वर्णन किया है । ' परिभूः, कवि, ' आदि शब्द इस सूक्तमें आ गये हैं, अग्निका नाम ' पावकः, शुचिः ' प्रसिद्ध हैं, इस नाममें ' शुद्ध ' शब्दका भाव आ गया है । वह स्वयं ' अ-पाप-विद्ध ' अर्थात् निष्पाप है, इतनाही नहीं, परंतु

वह (नः अघं अप शोशुचत् । (क. १।९७।६) वह हमारे पापको दूर करके हमको भी पवित्र करता है, अर्थात् वह स्वयं शुद्ध है और दूसरोंको भी पवित्र करता है । वह एकदेशी नहीं है, परंतु वह (पर्यगात्) सर्वत्र है, यही भाव (त्वं हि विश्वतो मुख) ' तू सर्वत्र मुखवाला है ' इस कथनमें व्यक्त हुआ है । एक देवता का वर्णन वेदमें निम्न प्रकार आया है—

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो
विश्वतो बाहुस्त विश्वतस्पात् ।

सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैः

द्यावाभूमी जनजन् देव एकः ॥ (क. १०।८१।३)

‘ जिस एक देवके (विश्वतः चक्षुः) सर्वत्र आंख, (विश्वतः मुखः) सर्वत्र मुख, सर्वत्र बाहु और सर्वत्र पांव है, जो बाहुओंसे और पंखोंसे सबका धारण और नियमन करता है, वही धुलोक और पृथिवीको उत्पन्न करता है । ’ इस मंत्रका ‘ विश्वतो मुखः ’ शब्द इस आत्माश्रितिके वर्णनमें इस मंत्रमें है । आत्माकी सर्वव्यापकता इस मंत्रसे बताई है । अग्नि भी सब जगत्के सब पदार्थोंमें विद्यमान है, देखिये—

अग्निर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रतिरूपो
बभूव । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा रूपं रूपं
प्रतिरूपो बहिश्च ॥ (कठ. उ. ५।९)

‘ जिस प्रकार एकही अग्नि सब भुवनमें प्रविष्ट हो कर प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है, वैसाही एक सब भूतोंका अंतरात्मा प्रत्येक रूपमें प्रतिरूप हुआ है और बाहिर भी है । ’ यहां प्रसंगतः अग्निके विषयका उपनिषद्को मंतव्य देखनेयोग्य है—

- (१) एतद्वै ब्रह्म दीप्यते यद्गनिर्ज्वलति । (कौ. उ. १०)
- (२) यः पुरुषः सोऽग्निवैश्वानरः । (मैत्री. उ. २।६)
- (३) प्राणोऽग्निः परमात्मा । (मैत्री. ६।९; प्राणाग्नि २)
- (४) प्राणोऽग्निरुदयते । (मुंड २।१।७; प्रश्न. १।७)
- (५) अग्निर्ह वै प्राणः । (जावा. ४)
- (६) अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मंत्रोऽहमहमेवाऽयमहमग्निरहं हुतम् ॥
(भ. गी. ९।१६)

‘ (१) यह ब्रह्मही प्रकाशता है जो अग्नि जलता है, (२) जो पुरुष है वही वैश्वानर अग्नि है, (३) प्राण अग्नि परमात्मा है, (४) यह प्राण अग्निही उदय पाता है, (५) प्राण ही निःसंदेह अग्नि है, (६) (अहं) मैं आत्माही क्रतु, यज्ञ, स्वधा, औषध, मंत्र, आज्य, अग्नि और हवन हूं । ’ इन उपनिषद्को कथनेके साथ निम्न उपनिषद्वाक्य देखिये—

(१) पुरुषो वाव गौतमाग्निः, तस्य वागेव समित्, प्राणो धूमो, जिह्वा अर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिगाः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुते रेतः संभवति ॥ २ ॥ ७॥

(२) योषा वाव गौतमाग्निः, तस्या उपस्थ एव समित्, यदुपमंत्रयते स धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदा विस्फुलिगाः ॥ १ ॥ तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा रेतो जुह्वति तस्या आहुते-र्गर्भः संभवति ॥ २ ॥ ८ ॥ (छां. उ. ५।३)

यही कथन थोड़ेसे भिन्नत्वके साथ बृहदारण्यकमें आया है, वह भी यहां देखिये—

अंशावतार

पुरुषो वाऽग्निर्गौतम, व्यासमेव समित्, प्राणो धूमो, वागर्चिः, चक्षुरंगाराः, श्रोत्रं विस्फुलिगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा अन्नं जुह्वति, तस्या आहुत्यै रेतः संभवति ॥ १२ ॥

(२) योषा वा अग्निर्गौतम, तस्या उपस्थ एव समित्, लोमानि धूमो, योनिरर्चिः, यदन्तः करोति ते अंगाराः, अभिनंदा विस्फुलिगाः, तस्मिन्नेतस्मिन्नगौ देवा रेतो जुह्वति, तस्या आहुत्यै पुरुषः संभवति, स जीवति यावज्जीवति ॥ १३ ॥

(बृ. आ. ६।२)

‘ (१) पुरुष अग्नि है, इसमें अन्नका हवन होता है, इस हवन से रेतकी उत्पत्ति होती है, (२) स्त्री अग्नि है, इसमें रेतका हवन होता है, इस हवनसे बालक उत्पन्न होता है । ’ इस वर्णनसे पता लग सकता है कि किंग अहं अलंकार से अग्निकी विभूति स्थानस्थानमें देखनी होती है और वहां का भाव समझना होता है । स्त्रीरूप अग्निमें जिं समय आत्मा जाता है, उस समय वह त्रैलोक्यके गणपति

देवोंको अपने साथ बुलाता है और उनके साथ ' अंशा-वतार ' लेता है । यही बालक है । बालक का जन्म होते ही उसके शरीरमें यह शतसांवत्सरिक क्रान्ति करने लगता है, जो भोग इसको दिये जाते हैं, वे उस उस देवता तक पहुंचाता है । रूपके भोग आंखमें रहनेवाले सूर्यके अंशको देता है, सुगंधके भोग नासिकानिवासी अश्विनी देवोंको देता है, रुचिके भोग जिह्वानिवासी जलदेव वरुणको देता है, स्पर्शके भोग वायुको पहुंचाता है, इसी प्रकार अन्यान्य भोग अन्यान्य देवताओंके अंशोंके द्वारा उस उस देवता तक पहुंचाता है । यही इस आत्माग्निका दूत है । अग्नि दूत होनेका वर्णन आगे अनेक सूक्तोंमें आनेवाला है, इसलिये पाठक इस विषयको ठीक प्रकार समझनेका यत्न करे । यदि यह बात ठीक रीतिसे ध्यानमें आ गई, तो आत्माग्नियज्ञ (देवेषु गच्छति) देवोंतक कैसा पहुंचाता है, इसका ठीक विज्ञान हो सकता है । अपने शरीरमें ही यह यज्ञ पाठक देख सकते हैं । वेदको अभीष्ट है कि पाठक इस यज्ञको अपने अंदर अनुभव करें । यही आत्माग्नि सब देवोंका केंद्र है, देखिये—

(१) अग्ने नेमिरराँ इव देवाँस्त्वं परिभूरसि ॥

(८५९; ऋ ५।१३।६)

(२) स होता विश्वं परिभूत्वध्वरं ॥ (३८९; ऋ. २।२।५)

' (१) हे अग्ने ! जैसे चक्रकी नाभिमें आरे होते हैं, वैसे देव तेरे में हैं, और देवोंका तू नियामक है । (२) वही अग्नि हवनकर्ता है और सब (अ-ध्वर) यज्ञका प्रबंधकर्ता है । ' इन मंत्रोंसे अग्नि शब्द आत्माग्निका ही मुख्य-तथा वाचक है, यह बात ध्यानमें ठीक प्रकार आ सकती है । पूर्वोक्त भगवद्गीताके श्लोकमें ' मैं (आत्माग्नि) यज्ञ हूं, और मैं ही अग्नि, घी, मंत्र, तथा हवन भी मैं ही हूं ' (गी. ९।१६) यह बात ध्यानमें धर कर इस सूक्तका कथन देखिये— ' अग्नि यज्ञका देव, पुरोहित, होता और ऋत्विज् आदि है । ' दोनोंका एकही तात्पर्य है । दोनोंको आत्माकाही वर्णन भिन्न रीतिसे करना है । यह आत्माग्नि यहां इस देहमें सब देवोंको लाता है और सौ वर्ष तक यज्ञ करनेका यत्न करता है । यह आत्माग्नि जो यह यज्ञ करता है, वह यज्ञ निःसंदेह देवोंतक पहुंचता है । पूर्वोक्त स्पष्टीकरणसे यह कथन अब पाठकोको प्रत्यक्ष हुआही होगा ।

यहां आत्माग्नि मुख्य केंद्र है और अन्य देव उसके साथी हैं । ये साथी उसको यथाशक्ति सहायता करते हैं । यद्यपि आत्माकी शक्तिके बिना आंख, नाक, कान भी कार्य नहीं कर सकते, तथापि आंखके बिना देखना तथा अन्य इंद्रियोंके बिना अन्य अनुभव लेना आत्माके लिये अशक्य है । इसलिये (१) आत्मा सम्राट् है और ये अन्य देव उसके मांडलिक राजे हैं । ये मांडलिक राजे अपने देशके उत्पन्न करभार सम्राट्को देते हैं, और सम्राट्ही उनको यथायोग्य प्रसाद देता है । अथवा (२) अन्य देव इसके सेवक हैं, अपना कार्य करनेद्वारा उसकी सेवा करते हैं और वह भी उनको यथायोग्य वेतन देता है । अथवा (३) ये देव उसके मित्र हैं, वे इसकी सहायता करते हैं और वह भी अपना धन उनको बांटता है । किंवा (४) वह यज्ञ करनेवाला है और ये ऋत्विज् हैं, ये उसका यज्ञ यथायोग्य रीतिसे करते हैं और वह भी इसको योग्य दक्षिणा देता है । कोई अलंकार लीजिये, ये तथा बहुतसे अन्य अलंकार वेदमें स्थान स्थानमें आ गये हैं । सब अलंकारोंका तात्पर्य एकमात्र ही है । (स इत् देवेषु गच्छति) वह यज्ञ देवोंमें पहुंचता है, इसका तात्पर्य उक्त प्रकार है । यदि किमीने किमीने सेवा ली, तो उसको उचित है कि, वह सहायकताका ऋण प्रत्युपकार द्वारा नापस करे, यह बोध यहां मिलता है ।

' स देवानेह वक्षति । ' इस प्रथम मंत्रके कथनसे पता लगा है, कि ' आत्माग्नि देवोंका यहां लाता है । ' इसका शब्द सुनकर सब देव अंशरूपसे आते हैं, अथवा अपने अपने सूक्ष्म अंशोंको भेजते हैं । सब देव आनेके पश्चात् इसका यज्ञ शुरू होता है और यज्ञसे यह आत्माग्नि ' (स इत् देवेषु गच्छति) सब देवोंको यथायोग्य यज्ञ-भाग देता है । परस्पर सहायता करनेका यह बोध हरएक मनुष्यको देखना चाहिये और इस प्रकार परस्पर सहायता करके संघशक्तिद्वारा अपनी उन्नति करनी चाहिये । यहां यह विशेष रूपसे कहनेकी आवश्यकता नहीं कि, यह शरीर देवोंके ' संघका ही कार्य ' है । इस प्रकार जो अमेष संघ बनायेगे, वे भी विलक्षण शक्तिसे युक्त होकर उन्नत हो जायेंगे ।

यह आत्मा (होता) हवनकर्ता है । यह अपने श्रान्ता-दिक सब इंद्रियोंको ' संयमाग्नि ' में हवन करता है

और संयमी बनकर अभ्युदयको प्राप्त करता है । शब्दादि सब विषयोंको यही ' इंद्रियाग्नि ' में हवन करता है और उपभाग लेकर सुखी होता है । तथा सब इन्द्रियकर्माँको और प्राणकर्माँको ' योगाग्नि ' में हवन करके योगी बनता है और स्वाधीनता प्राप्त करता है । हवन किसी प्रकारका हो, यही हवनकर्ता है, इसमें कोई संदेह ही नहीं है ।

साधारण सुबोध भाषामें बोलना हो, तो इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह आत्मा इंद्रियोंको विषयभोग देता है, यही उसका इंद्रियाग्निमें हवन है और इसीलिये इसको ' होता ' कहते हैं । हवन किये पदार्थ वह देवों तक पहुँचाता है, इसका यही तात्पर्य है । ' देव ' शब्दका अध्यात्मदृष्टिसे अर्थ ' इंद्रिय ' ही है । जो आत्माका इंद्रियों से संबंध है, वही ब्रह्माग्निका अन्य देवोंसे है । ब्रह्माग्नि, आत्माग्नि और अग्नि साकेतिक दृष्टिसे एकही पदार्थ है ।

(कवि-ऋतु) ज्ञानी और पुरुषार्थी ' अग्नि ' अर्थात् आत्माग्नि है । आत्माका चित् स्वरूप सुप्रसिद्ध है तथा चेतन आत्मा सबका प्रेरक होनेसे सब पुरुषार्थोंका प्रवर्तक निःसंदेह है । ' कवि ' शब्दका अर्थ ज्ञानी, बुद्धिमान् और शब्दप्रेरक है । इसलिये कहा है कि—

अग्ने कविः काव्येनामि विश्वचित् ॥

(१६५२, ऋ १०।१।३)

अग्ने कविर्वेधा अमि ॥ (१३९, १ ऋ ० ८।६०।३)

' हे अग्ने ' तू कवि है और अपने काव्यसे (विश्व-चित्) सर्व-ज्ञ है । हे अग्ने ' तू कवि और (वेधाः) ज्ञानी है । '

यह अग्निका वर्णन उसके ' आत्माग्नि ' होनेकी सिद्धता कर रहा है । क्योंकि (विश्व-चित्) सर्वज्ञत्व एक आत्मा में ही संभवनीय है । कवि काव्य करता है और सर्वज्ञ कविका काव्य भी सर्वज्ञानसे परिपूर्ण होना संभवनीय है । इसीलिये परमात्माका ' शब्द ' प्रमाण माना जाता है । आत्माभी शब्दका प्रेरक ही है—

आत्मा युद्धया समेत्यार्थान् मनो युक्ते विवक्षया ।

मनः कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति माहृतम् ॥६॥

माहृतस्तूरसि चरन् मंद्रं जनयति स्वरम् ॥७॥

सोदीर्णो मूर्धन्यमिहतो वक्त्रमापद्य माहृतः ।

वर्णान् जनयते तेषां विभागः पंचधा स्मृतः ॥९॥

(पाणिनीय शिःशा)

' आत्मा बुद्धिके साथ मिलकर अर्थकी प्रेरणा मनमें करता है । मन शरीरकी उष्णता पर आघात करके वायुको प्रेरित करता है । वह वायु छातिसे ऊपर चलने लगता है, उम समय सूक्ष्म स्वर उत्पन्न करता है । यही स्वर मुखमें विविध स्थानोंमें आकर विविध वर्णोंमें परिणत होता है । '

इस प्रकार आत्मा शब्द का प्रेरक है, इसलिये ' कवि ' है । आत्माग्नि का कवि होना इस प्रकार शास्त्रसिद्ध है । उपनिषदोंमें भी कहा है—

[१] केनेषितां वाचमिमां वदन्ति ? ।

[२] वाचो ह वाचं स उ प्राणस्य प्राणः ॥

[३] यद्वाचाऽनभ्युदितं येन वागभ्युद्यते ॥

तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि ॥ (केन उ० १।१-४)

' (१) किससे प्रेरित हुई वाणी बोलते है ? (२) (वह प्रेरक) वाणीकी वाणी और प्राण का प्राण है । (३) जो वाणीसे प्रकाशित नहीं होता, परन्तु जिससे वाणी प्रेरित होती है, वह ब्रह्म है, ऐसा तू जान । ' इससे स्पष्ट है कि आत्माग्नि ही वाणीका प्रेरक है । इसीलिये इसको कवि कहते हैं । इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

[१] युवा कविरध्वरस्य प्रणेता ॥

(६२७, ऋ ३।२३।१)

[२] अहं कविरुशना पश्यता मा ॥

(ऋ ० ४।२६।१)

[३] युवा कविः पुरुषिष्ठ क्रतावा धर्ता कृष्टी-

नामुत मध्य इद्ध ॥ (७६०; ऋ ० ५।१।६)

[४] अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो

निधायि ॥ (११३७, ऋ ० ७।४।४)

[५] अमरः कविरदितिर्विवस्वान् त्सु सं सन्मित्रो

अतिथिः शिवो न ॥ (११५७; ऋ ० ७।९।३)

[६] सत्यो यज्वा कवितमः स वेधा ॥

(५८१; ऋ ० ३।१४।१)

[७] होता मंद्रः कवितमः पावकः ॥

(११५५; ऋ ० ७।९।१)

' (१) यह जवान कवि यज्ञका चालक है, (२) मैं ही इच्छा करनेवाला कवि हूँ, सुझे देखिये, (३) जवान कवि (पुरु+निः-ष्टः) सब पदार्थोंमें स्थित, सत्यवान्, (कृष्टीन् धर्ता) प्रजाओं का धारण करनेवाला और मध्यमें प्रदीप्त है, (४) यह (अ-कविषु कविः) अहं न करनेवालोंमें

शब्दकर्ता है, (प्र-चेता) चेतन और यही मर्त्योंमें अमृत है, (५) यह (अ-मूरः) मूढ नहीं है, कवि, (अ-दितिः) अमर्याद, (विवस्वान्) सबका निवासक, उत्तम मित्र, (अ-तिथि) जिसकी आनेकी तिथि निश्चित नहीं होती, ऐसा और (शिव) कल्याणकारी है, (६) सत्य, याज्ञक श्रेष्ठ कवि और (वेधा) ज्ञानी है, (७) यह हवनकर्ता, हर्षकारक, श्रेष्ठ कवि और (पावकः) पवित्रकर्ता अग्नि है ।

इन मन्त्रोंमें 'कवि' शब्द है और उसका शब्दकी उत्पत्तिके साथ ही संबंध है । (अहं कविः) ' मैं कवि हूं ' ऐसा अध्यात्म वचन है । इसका स्पष्ट भाव है कि, मैं इन्द्र कवि हूं, जिसका दूसरा नाम अग्नि भी है । क्योंकि एकही स्रष्टृको अग्नि, इन्द्र, आदि अनेक नाम ज्ञानी देते हैं । यह कवि अग्नि (युवा) जवान है । जो अज और अनंत होता है, उसको ही 'युवा' कहते हैं । आत्माही अजन्मा और अविनाशी है, इसलिये युवा भी है । यह 'पुरु+निष्ठ' सबमें व्याप्त है । (कृष्टीनां धर्ता) प्रजाओंका धारणपोषणकर्ता यही है । (अ-कविषु कविः) शब्द न करनेवालोंमें यह शब्द उत्पन्न करनेवाला है, जड़ोंमें यह वक्ता है, शरीरके मूक जड़ अवयवोंमें यही एक शब्द बोलनेवाला है और यही (मर्त्येषु अमृतः) मरनेवालोंमें अमर है । सब शरीर मरता है और उसमें यही एक आत्मा अमर है । यह ऐसा है कि (अ-तिथिः) जिसकी तिथि निश्चित नहीं है, जिसके आनेकी और जानेकी तिथि निश्चित नहीं है, जन्म और मरणकी तिथि इस आत्माकीहि निश्चित नहीं है । इस प्रकारका यह अग्नि निःसंदेह 'आत्माग्नि' ही है । उक्त शब्द यदि किसीका सत्य वर्णन कर रहे हैं, तो वह निःसंदेह आत्माग्नि ही है, क्योंकि उक्त शब्दोंकी सार्थकता आत्माग्निमें ही होती है । अस्तु । इस प्रकार यह आत्माग्नि कवि है ।

यह 'ऋतु' अर्थात् 'यज्ञ' भी है । क्योंकि 'पुरुषार्थ' ही इसका स्वरूप है । सतत पुरुषार्थ इसका निज धर्म है । 'पुरुषो वाच यज्ञः' (छां० उ० ३।१६) पुरुष अर्थात् आत्मा यज्ञस्वरूप ही है । इसलिये उसको 'ऋतु' तथा 'शत-ऋतु' कहते हैं । 'ऋतु' शब्दका दूसरा अर्थ 'प्रज्ञा' है । ज्ञानरूप चित्स्वरूप, होने से इसके भावमें यह अर्थ भी योग्य हो सकता है ।

'कवि-ऋतु' का दूसरा अर्थ 'क्रांत-प्रज्ञ' अर्थात्

'विशेष ज्ञानी' है । यह अर्थ भी पूर्व अर्थोंके साथ सुसंगत है ।

'सत्यः' यह इस मंत्रका शब्द विशेष महत्त्वपूर्ण है । इसका भाव 'तीनों कालोंमें विद्यमान' ऐसा होता है । यह आग भूतकालमें नहीं होती, बीचमें जलती है और फिर बुझ जाती है, तीनों कालोंमें एक रूपमें नहीं रहती, परन्तु यह आत्मा तीनों कालोंमें समरस रहता है । यद्यपि गुप्त, व्यापक अग्नि सर्वदा विद्यमान होता है, तथापि इस अग्निका अग्निपन भी उस आत्मापर तो अवलंबित है, क्योंकि इस अग्निका अग्निही यह 'आत्माग्नि' है । 'सत, सत्य' ये शब्द एक सत्यस्वरूप आत्माकेही मुख्यतया वाचक हैं ।

“ चित्र+श्रवः+तमः ” विलक्षण यशसे युक्त । यह शब्द मुख्य वृत्तिसे आत्मात्मिकाही वर्णन कर रहा है । देखिये इसका वर्णन—

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्भवति तथैव चान्यः । आश्चर्यवच्चैवमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ (भ०गी० २।२९)

'कोई तो आश्चर्य समझकर इसकी ओर देखते है, कोई आश्चर्य सरीखा इसका वर्णन करता है, कोई आश्चर्यसे सुनता है, परन्तु सुन कर भी कोई इसे जानता नहीं है ।'

इस प्रकार आत्माग्निके अपूर्व यशका गुणगान सब शास्त्र कर रहे हैं । इस प्रकारकी यह अद्भुत वस्तु है । अस्तु । इतना विवेचन चतुर्थ मंत्रके प्रथम दो पादोंका हुआ और इससे निश्चय हुआ है कि, यह मुख्यतया आत्माग्निका ही वर्णन है और गौण वृत्तिसे अन्य पदार्थोंका वर्णन है ।

आधिभौतिक दृष्टिसे समाज और राष्ट्रमें मनुष्य कोभी इसी प्रकार बर्ताव करना चाहिये । सृज् मनुष्य (अग्निः) अग्निके समान तेजस्वी, (होता) दाता, यज्ञ करनेवाला, (सत्यः) सच्चा, सत्याग्रही, सत्यनिष्ठ, (चित्र-श्रवः-तमः) विलक्षण यशस्वी बने और अनुकरणीय बनकर सबका चालक बने । इस रीतिसे येही शब्द मनुष्यके सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्योंके बोधक हैं । इस प्रकार दो पादोंका स्पष्टीकरण करनेके पश्चात् अब विशेष महत्त्वका तृतीय पाद देखना है—

देवो देवेभिरागमत् ॥ (ऋ० १।१।५)

‘ यह एक देव अन्य सब देवोंके साथ आ जावे । ’ इस विषयमें जो वक्तव्य है, वह स इद्वेषु गच्छति ।’ (ऋ० १।१।४) तथा ‘ स देवान् एह वक्षति ।’ (ऋ० १।१।२) इनकी व्याख्या करते हुए कहा ही है ।

- [१] स देवान् इह आवक्षति = वह देवोंको यहां लाता है ।
[२] स देवेषु इत् गच्छति = वह देवोंमें पहुंचता है ।
[३] देवो देवेभि आगमत् = देव देवोंके साथ आ जाय ।

इन तीनों कथनोंमें एकही विशेष भाव है । एक आत्मा का अन्य देवोंके साथ जो संबंध है, वही यहां बताया है । इसका स्वरूप ठीक ठीक ध्यानमें आनेके लिये निम्न मंत्रोंका विचार करना आवश्यक है—

[१] अग्निर्देवेभिरागमत् ॥ (५१२ ऋ० ३।१०।४)

[२] विश्वेभिः देवेभिर्याहि यक्षि च ॥

(ऋ० १।१४।१)

[३] देवेभिरग्न आगहि ॥

(ऋ० १।१४।२)

[४] क्षयं बृहन्त परिभूषति द्युभिर्देवेभिरग्निः ॥

(ऋ० ३।३।२)

[५] अग्निर्देवेभिर्मनुषश्च जंतुभिस्तन्वानो यज्ञं पुरुषेशसं धिया ॥

(ऋ० ३।३।६)

[६] गमदेवेभिरा स नो यजिष्ठः ॥ (ऋ० ३।१३।१)

[७] देवेभिर्देव सुरुचा रुद्रानः ॥ (ऋ० ३।१५।६)

[८] अग्ने विश्वेभिरग्निभिर्देवेभिर्महया गिरः ॥

(ऋ० ३।२४।४)

[९] अग्ने विश्वेभिरागहि देवेभिर्हव्यदातये ॥

[१०] देवेभिरग्ने अग्निमिरिधानः ॥

(ऋ० ६।११।६)

[११] त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।

देभिर्मानुषे जने ॥

(ऋ० ६।१६।१)

[१२] आ नो देभिरुप देवहूतिमग्ने याहि ॥

(ऋ० ७।१४।३)

[१३] यो भानुभिर्विभावा विभात्यग्निर्देवेभिर्ऋता-
वाजस्रः ।

(ऋ० १०।६।२)

‘ (१) देवोंके साथ अग्नि आया है, (२) सब देवोंके साथ आओ और यजन करो, (३) हे अग्ने ! तू देवोंके साथ आ, (४) अग्नि सब तेजस्वी देवोंके साथ बडे

(क्षय) निवासस्थानको भूषित करता है, (५) देवोंके साथ और मनुष्यके संतानों के साथ बुद्धिसे विविध रूपवाला यज्ञ अग्नि फैलाता है, (६) पूज्य अग्नि देवोंके साथ हमारे पास आता है, (७) हे देव ! अनेक देवोंके साथ तू तेजसे तेजस्वी है, (८) हे अग्ने ! सब अग्निरूप देवोंके साथ वाणीको बढाओ, (९) हे अग्ने ! सब देवोंके साथ अन्नदानके लिये आओ, (१०) हे अग्ने ! तू सब अग्निरूप देवोंसे प्रदीप्त होता है, (११) हे अग्ने तू मानवी जनोंमें सब यज्ञोंका हितकारक और सब देवोंके साथ हवन करने-वाला है, (१२) हे अग्ने ! सब देवोंके साथ हमारे यज्ञमें आओ, (१३) जो तेजस्वी अग्नि तेजस्वियोंके साथ चमकता है । ’

इत्यादि मंत्रोंमें भी अनेक देवोंके साथ अग्निका रहना वर्णन किया है । ‘अनेक अग्नियोंके साथ अग्नि (अग्नि-भिः अग्निः) आता है । ’ यह इन मंत्रोंका वर्णन स्पष्टतासे सिद्ध कर रहा है कि, यहां अग्नि शब्द विशेष अर्थसे प्रयुक्त हुआ है, और केवल आगका ही वाचक नहीं है । इसी प्रकार देवतावाचक अन्य शब्दोंका भी उपयोग किया है । देखिये—

देवता इंद्र—

(१) स वह्निभिर्ऋकभिर्गोषु शश्वन् मितक्षुभि पुरु-
कृत्वा जिगाय । पुरः पुरोहा सखिभीः सखी-
यान् दृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ॥

(ऋ० ६।२।१३)

(२) इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञ विश्वेभिः देवेभिः ।
तिरस्तवान विश्वते ॥

(ऋ० ३।४०।३)

(३) प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो
अप्रतीतः ॥

(ऋ० ३।४६।३)

देवता अश्विनौ—

(१) आ नासत्या त्रिभिरेकादशैरिह देवेभिर्यातं
मधुपेयमश्विना ॥

(ऋ० १।३४।११)

(२) आ नो देवेभिरुप यातमर्वाक् सजोषसा नासत्या
रथेन ॥

(ऋ० ७।७।२)

(३) आ...गतं ॥ देवा देवेभिरद्य सचनस्तमा ॥

(ऋ० ८।२६।८)

इंद्र देवता के मंत्र-(१) (पुरु-कृत्वा) विविध कर्म करनेवाला वह इंद्र (शश्वत्) सर्वदा (मित-श्रुभि वह्निभिः ऋक्भिः) घुटनोंके बल बैठनेवाले अग्निके समान तेजस्वी उपासकोंके साथ (गोपु) गौवों, इंद्रियो और भूमि आदिकोंके संबन्धमें (जिगाय) विनय प्राप्त करता है । (पुरो-हा) शत्रुके नगरोंका नाश करनेवाला (सखिभिः कविभिः) मित्ररूप कवियोंके साथ (सखीयन् कविः) मित्रता करनेवाला कवि (दृढा पुरः) बलयुक्त नगरोंका (रुरोज) भेदन करता है ॥ (२) हे (विश्व+पते इंद्र) प्रजापालक प्रभो ! (नः श्रिता+वान यज्ञ) हमारे उत्तम उपकारी यज्ञको (विश्वेभिः देवेभिः) सब देवोंके साथ (प्र निरः) पूर्ण करो ॥ (३) यह इंद्र (रोचमानः) तेजस्वी होता हुआ (मात्राभिः) सब प्रमाणोंसे (प्र रिरिचे) विशेष तेजस्वी हुआ है और (देवेभिः) देवोंके साथ (विश्वतः) सब प्रकारसे (अ-प्रतीतः) पीछे हटनेवाला नहीं है ।

अश्विनी देवताके मंत्र = (१) (त्रिभिः एकादशैः देवेभिः) तीन गुणा ग्यारह देवोंके साथ, हे अश्विदेवो ! यहां मधुपान के लिये आइये । (२) हे (नासत्या) अश्वि-देवो ! देवोंके साथ रथमें बैठकर वेगसे हमारे पास आइये । (३) हे (सचनस्तमौ देवौ) पूज्य देवो ! अन्य देवोंके साथ यहां आइये ।

अग्नि, इंद्र और अश्विनी देवताओंके मंत्र ऊपर दिये हैं । उनको देखनेसे पता लग सकता है कि, वाक्य कैसे समान भावके ही हैं । देखिये—

अग्निदेवता—

देवो देवेभिः आगमत् ॥ (ऋ. १।१।५)
अग्निः देवेभिः आगमत् ॥ (ऋ. ३।१०।४)
अग्ने, अग्निभिः देवेभिः महय ॥ (ऋ. ३।२४।४)
मानुभिः देवेभिः अग्निः विभाति ॥ (ऋ. १०।६।२)

इंद्र देवता—

वह्निभिः सः गोपु जिगाय ॥ (ऋ. ६।३२।३)
पुरोहा सखिभिः सखीयान् रुरोज ॥ (ऋ. ६।३२।३)
कविभिः कविः पुरः रुरोज ॥ (ऋ. ६।३२।३)

अश्विनी देवता—

त्रिभिरेकादशैः देवैः आयातं ॥ (ऋ. १।३।४।११)
नासत्यौ देवेभिः आयातं ॥ (ऋ. ७।७२।२)

देखिये, भिन्न शब्दोंसे किम प्रकार एकही भाव व्यक्त किया गया है । ' इंद्र ' शब्द ' आत्मा ' अर्थ में सुप्रसिद्ध है, क्योंकि ' इंद्रिय ' शब्द इंद्रशक्तिका वाचक आजकलकी भाषामें भी अर्थोंके अर्थमें प्रयुक्त है, अर्थात् ' अनेक देवोंके साथ देवोंका राजा इंद्र शत्रुके किले तोड़ता है ' इस वर्णनमें ' आत्मा इंद्रियशक्तियोंके साथ निरोध-कोका नाश करता है ' यही भाव है । तात्पर्य, इंद्रवर्णनमें आत्मवर्णन होनेमें कोई शका नहीं हो सकती । अश्विनी-देवोंके विषयसे किसीको शका होना स्वाभाविक है । परंतु ' नास+त्य ' शब्द ' नासिका में रहनेवाला ' प्राण इस अर्थमें प्रयुक्त होता है । ' नास+त्य ' यह निरूपण अश्विनी देवोंका है, इससे इनका स्थान नासिका है । इस-लिये प्राणापान, श्वास-उच्छ्वास आदिकोंका वाचक यह शब्द है, इसमें शका नहीं । यह प्राण अग्न्य देवोंके साथ शरीरमें आता है और यहां यज्ञ करता है, यह वर्णन पूर्वोक्त अग्निके वर्णन के साथ मिलानेसे पता लग सकता है कि, दोनों वर्णनोंसे एक ही यज्ञका भाव बताया गया है । (देवो देवेभिः आगमत्) ' एक देव अनेक देवोंके साथ यहां आता है, यहां यज्ञ करता है । देवोंसे यज्ञ कराता है, देवोंको दहिर्भाग देता है, यज्ञसमाप्तिके पश्चात् देवोंके साथ चला जाता है । ' यह सब वर्णन यथाही इस शरीरमें देखनेका है । आत्मा इंद्रियशक्तियोंके साथ यहां आता है, इंद्रियोंसे कार्य कराता है, खाये हुए अन्नसे अंशरूप भोग प्रत्येक इंद्रियतक पहुंचाता है, इस अंशभोगसे इंद्रिय-स्थानीय देवतागण संतुष्ट होता है और वह इस आत्माको भी सुखी करता है । यह भाव निम्न गीतावचनमें देखिये—

देवान् भावयताऽनेन ते देवा भावयंतु वः ।
परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥

(भ. गी. ३।११)

' तुम इस यज्ञसे देवताओंको संतुष्ट करते रहो और वे देवता तुम्हें संतुष्ट करते रहें । इस प्रकार परस्पर एक दूसरे को संतुष्ट करते हुए दोनों परम श्रेय अर्थात् कल्याण प्राप्त कर लो । '

आत्मा और अन्य ३३ देव इतनेही पदार्थ इस जगत् में हैं। आत्मा स्वयंप्रकाशी सन्नात् है और ३३ देव आत्माके तेजसे प्रकाशित होनेवाले और आत्माके आदेशानुसार अपना नियत कार्य करनेवाले हैं। जहां आत्मा जाता है, वहां ये जाते हैं, जिस प्रकार सन्नात् के साथ ओहदेदारोंको जाना पड़ता है। अकेला आत्मा कुछ कर नहीं सकता और न सब देव आत्मशक्तिके बिना कुछ कर सकते हैं। इस प्रकार अन्यान्य सहाय्यताकी आवश्यकता है। अन्यान्य संगतिका ही नाम यज्ञ है। परस्पर सहकारितासे बड़े बड़े कार्य हो सकते हैं। आत्मा और ३३ देवोंकी सहकारितासे ही यह शरीरका कार्य चल रहा है। इसका इतना महत्त्व है कि, इससे और आश्चर्यकारक घटना जगत्में दूसरी है ही नहीं। परस्पर सहकारितासे इतने आश्चर्यकारक कार्य होना संभव है। यदि एक देव यहां बिगड़ बैठा, तो सब बिगड़ हो जाता है, तात्पर्य सबसे सहकार्यसेही आनंद होना संभव है।

तुलना ।

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।

[१] राजन्तमध्वराणां ॥ (८; ऋ० १।१।८)

प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः ।

[२] राजन्तमध्वराणां ॥ (१०३; ऋ० १।४।४)

[३] पतिर्हध्वराणामग्ने ॥ (९४; ऋ० १।४।९)

देवरातः, शुनःशेष अजीगर्तिः । अग्निः ।

[४] सन्नाजन्तमध्वराणां ॥ (३८; ऋ० १।२७।१)

विश्वामित्रः । अग्निः ।

[५] स केतुरध्वराणां ॥ (५१२; ऋ० ३।१०।४)

सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ ।

[६] राजन्तौ अध्वराणां ॥ (ऋ० ८।८।१८)

वत्समिः । अग्निः ।

[७] नेतारमध्वराणाम् ॥ (१६०४; ऋ० १०।४६।४)

भिन्न ऋषि-दृष्ट मन्त्रोंमें वर्णन की समानता इस प्रकार है। अश्विनी देवोंका भी वर्णन इन्हीं शब्दोंसे हुआ है। इसका तात्पर्य यह कि द्रष्टा ऋषिकी भिन्नता और वर्णनीय देवताकी भिन्नता होनेपर भी 'प्रतिपाद्य विषयकी

एकता' है, अर्थात् जो 'यज्ञ' अग्निदेवताके भिषसे वेदमें बताया है, वही यज्ञ 'अश्विनौ' देवताके नामसे वर्णन किया है और इसी प्रकार अन्यान्य देवताओंके वर्णनोंसे उसी बातका दर्शन होता है। 'अग्नि यज्ञोंका राजा किंवा प्रकाशक अथवा नेता है,' यही आशय ऊपरके मन्त्रोंका है। यहां इसके द्वारा जो यज्ञ किया जाता है, उसका सविस्तर वर्णन इसी स्पष्टीकरण में इसीसे पूर्व बताया जाता है। उसको देखनेसे पाठकोंको स्वयं अनुभव हो सकता है कि, यह यज्ञोंका राजा कैसा है और किस रीतिसे यज्ञ कर रहा है।

'ऋतस्य गोपा' अर्थात् 'अनादि सत्य नियमोंका पालनकर्ता' यही है। 'ऋत और सत्य' ये दो अनादि-सिद्ध त्रिकालाबाधित सत्य नियम इस जगत् में सनातन हैं। इनका कोई उल्लंघन नहीं कर सकता। इनका संरक्षक यहाँ आत्माग्नि है। इस विषयमें निम्न मन्त्र देखिये—

- [१] ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ॥

(ऋ० १०।१९०।१)

[२] ऋतं पिपत्यनृतं नि तारीत् ॥

(ऋ० १।१५२।३)

[३] ऋतं चिकित्व ऋनमिच्चिकिद्धृतस्य धारा अनु तृन्धि पूर्वीः ॥

(ऋ० ५।१२।२)

[४] ऋतं ऋताय पवते सुमेधाः ॥

(ऋ० ९।९७।२३)

[५] ऋतमृतेन सपन्तेषिरं दक्षमाशाते ॥

(ऋ० ५।६८।४)

'(१) प्रदीप्त तपसे ऋत और सत्य उत्पन्न हुए हैं, (२) ऋतका पालन करता है और अनृतको हटाना है, (३) ऋतके जाननेवाले ऋतके नियमको जानो, सनातन ऋतके प्रवाह फैलाओ, (४) उत्तम बुद्धिमान् ऋतके लिये ही ऋत को पवित्र करता है, (५) ऋत नियमसे ऋतका पोषण करनेवाले बहुत सामर्थ्य प्राप्त करते हैं।'

जिन दो अटल सत्य और सनातन नियमोंसे यह जगत् चल रहा है, वे 'ऋत और सत्य' ये दो नियम हैं। ऋतके विषयमें और देखिये—

[१] हंसः शुचिषद्वसुरंतरिक्षसञ्ज्ञो वा वेदिषद्-
तिथिर्दुरोणसत् ॥ नृषद् वरसद्वतसद्वथोमस-
दञ्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥

(ऋ. ४।४०।५; कठ० ५।२)

[२] प्रजापतिः प्रथमजा ऋतस्य ॥ (महा. ना. उ. २।७)

[३] अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य ॥ (तै. उ. ३।१०।६)

[४] ऋतं तपः सत्यं तपः ॥ (महा. ना. उ. ८।१)

[५] ऋतं सत्यं परं ब्रह्म ॥ (महा. ना. उ. १२।१)

‘(१) (हंसः) जिस प्राणका बाहिर आनेके समय ‘ह’ ध्वनि होता है और अंदर जानेके समय ‘स’ ध्वनि होता है, वह प्राण (शुचि+षद्) शुद्धमें रहनेवाला, (वसुः) निवासक, (अंतरिक्ष+सद्) हृदयके मध्यमें रहनेवाला, (होता) हवन करनेवाला, (वेदि-षद्) हृदय की वेदिमें रहनेवाला, (अ-तिथिः) जिसकी आनेजानेकी तिथि निश्चित नहीं है, (दुरोण-सत्) स्वस्थानमें रहनेवाला, (नृ+षद्) मनुष्यके अंदर-हृदयमें-रहनेवाला, (वर-सद्) श्रेष्ठ स्थान में रहनेवाला, (ऋत-सद्) सत्यमें रहनेवाला, (व्योम-सद्) आकाशमें रहनेवाला, (अप्-जा) कमके साथ होनेवाला, जीवनके साथ रहनेवाला, (गो-जा) इंद्रियोंके साथ रहनेवाला, (ऋत-जा) ऋतका प्रवर्तक, (अ-द्रि-जा) जड़में रहनेवाला, जो है, वही ‘बृहत् ऋत’ है। (२) ऋतका प्रथम प्रवर्तक प्रजापति है। (३) मैं (अहं) आत्मा ऋतका पहिला प्रवर्तक हूं। (४) ऋत और सत्य तपही है। (५) ऋत और सत्य परब्रह्म है।’

यह ऋत की महिमा है। ऋत स्वयं आत्माका रूपही है। पूर्व मंत्रमें प्राण और आत्माही ऋत है, ऐसा स्पष्ट कहा है, इस लिये आत्माके निज धर्म ही ऋत और सत्य नामसे प्रसिद्ध है। ‘ऋत’ नाम यज्ञका भी है इसलिये (ऋतस्य गोपा) ‘ऋतका रक्षक’ का अर्थ ‘यज्ञका रक्षक’ भी है। इस विषयमें निम्न मंत्र देखिये—

यज्ञस्य देवः । (ऋ. १।१।३)

ऋतस्य गोपा । (ऋ. १।१।८, ३।१०।२)

अध्वराणां राजन् । (ऋ. १।१।८)

अध्वराणां नेता । (ऋ. १०।४६।४)

यज्ञस्य नेता । (ऋ. २।५।२)

यज्ञस्य प्राविता । (ऋ. ३।२।१३)

यज्ञस्य साधनः ।

(ऋ. ३।२७।८)

अग्निदेवता का यह वर्णन एकही भावका द्योतक होना स्वाभाविक है। यज्ञका स्वरूप पहले निश्चित किया ही है। पुरुषका जीवन यज्ञ ही है। इस जीवनरूप यज्ञका नेता, चालक, रक्षक यही आत्मापति है, इसमें कोई शंका नहीं है। यही बात पूर्वोक्त उपनिषद्ग्रन्थोंसे सिद्ध हो रही है। वहां भी ऋतका स्वरूप ‘आत्मा’ ही बताया है। इस प्रकार अनेक रीतिसे विचार करनेपर तात्पर्य एकही सिद्ध होता है, यही सत्य अर्थका लक्षण है।

‘दीदिवि’ शब्द इसके पश्चात् आता है। इसका अर्थ ‘प्रकाशमान’ है। इसके समान जो अन्यत्र मंत्रभाग है, उसमें ‘दीदिहि’ पाठ है, देखिये—

मधुच्छंदा वैश्वामित्रः । अग्निः ।

गोपामृतस्य दीदिविम् । (ऋ. १।१।८)

विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः ।

गोपा ऋतस्य दीदिहि । (ऋ. ३।१०।२)

उरुक्षय आमहीयवः । अग्नी रक्षोहा ।

गोपा ऋतस्य दीदिहि । (ऋ. १०।११।७)

थोडासा पाठभेद होनेपर भी अर्थकी एकता ही है, ‘दीदिवि’ शब्दका अर्थ ‘प्रकाशमान’ है और ‘दीदिहि’ का अर्थ ‘प्रकाशित हो,’ ऐसा है, इसलिये अर्थकी दृष्टिसे कोई भेद नहीं है।

‘वर्धमानं स्वे दमे’ अपने दमनसे बढनेवाला, अपने घरमें बृद्धिको प्राप्त होनेवाला, यह इसका भाव है। ‘दम’ शब्दका अर्थ ‘संयम, दमन, आत्मसंयम, मनोविकार और इंद्रिय वृत्तियोंका संयम मनकी स्थिरता, घर, परिवार’ इतना है। संयमसे अपनी शक्ति बढती है। मनोनिग्रहसे आत्मशक्तिका विकास होता है। यही उन्नतिका नियम है।

(१) सत्कर्मोंका फैलाव करना, (२) सत्यनिष्ठा बढ़ानी, (३) अज्ञानांधकार दूर करके ज्ञानका प्रकाश करना, और (४) संयमसे अपनी शक्तिका विकास करना चाहिये। इस मंत्रसे सब मनुष्योंके लिये यही उपदेश है और जो आत्मोन्नति चाहते हैं, उनके लिये ये बोध अमूल्य हैं। इनका पालन करनेसे मनुष्य अग्निके समान तेजस्वी हो सकता है।

इस तरह तुलनात्मक अध्ययन वेदके मंत्रोंका करना उचित है । इस तरहके अध्ययनसे ही वेद मंत्रोंका रहस्य ध्यानमें आ सकता है । इस दैवत-संहितासे इस तरहके अध्ययनकी अतीव सहायता होनेवाली है । आशा है, इस तरह का अध्ययन करके पाठक लाभ उठावेंगे ।

सूचियोंका उपयोग ।

अग्निदेवताकी 'पुनरुक्त-मन्त्र-सूची' पृ० १८७से २१६ तक है । इस सूचीसे किस मन्त्रका कौनसा भाग कहाँ पुनरुक्त हुआ है, इसका पता लग सकता है । अग्निके विवरणमें तथा भूमिकामें जो पुनरुक्त मन्त्र दिये हैं और जो विवरण किया है, उससे इस सूची की सहायता वेद-मन्त्रोंका अर्थ करनेमें कितनी है, इसका पता लग सकता है । भूमिका पृ० ४८ से ६६ तक पाठक देख सकते हैं कि पुनरुक्त मन्त्रसूचीसे कैसा लाभ हो सकता है । यदि पाठक इस सूचीका उत्तम उपयोग कर सकेंगे, तो मन्त्रका अर्थ अन्तर्गत प्रमाणोंसे निश्चित होनेमें बड़ी सहायता हो सकती है ।

दूसरी उपमा-सूची है । इससे पता लग सकता है कि अग्निको कितनी उपमाएं किस अर्थमें दी हैं ।

तीसरी सूची मन्त्रोंकी अकारादि वर्णानुक्रम-सूची है । इससे कौनसा मन्त्र कहाँ है, इसका पता लग सकता है । अन्तिम सूची विशेषणोंकी है, इससे अग्निके गुण जाने जा सकते हैं । गुणोंका बोध होनेसे स्वरूप का निश्चय होता है । इस तरह ये सब सूचियाँ बड़ी उपयोगी हैं ।

अन्तिम निवेदन ।

यहाँ अन्तिम निवेदन यह है कि यहाँ अग्निके विषयमें जो लिखा है, वही परिपूर्ण है, ऐसा नहीं समझना चाहिये । पाठक विचार करते रहेंगे, तो उनके सामने कई अन्य बातें स्वयं उपस्थित होंगी और प्रकाशित होती रहेंगी । इसलिये हर एक पाठक अपनी स्वतंत्र विचार-शक्तिसे इन मंत्रोंका विचार करें और जो विचार होगा, वह जनताके सामने रखते जाय । इसी तरह करनेसे ही वेद-विद्याका प्रकाश होगा ।

—संपादक



अग्निदेवता का परिचय ।

भूमिका की विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ विषय प्रवेश ।	६	२६ वृद्ध नागरिक ।	१९
२ भाषामें अग्नि शब्दका भाव ।	११	२७ प्रजामें देवताका अनुभव ।	२०
३ अग्निके पर्याय शब्द ।	११	२८ न दबनेवाला ।	२१
४ पहला मानव “ अग्नि ”	११	२९ सूकमें वाचाल ।	२१
५ वृषभ और धेनु ।	७	३० पुराना मित्र ।	२२
६ पहला अंगिरा ऋषि ।	८	३१ विनाशियोंमें अविनाशी ।	२२
७ वैश्वानर धर्मि ।	९	३२ अनेक देवोंका प्रेरक एक देव ।	२३
८ ब्राह्मण और क्षत्रिय ।	१०	३३ अनेक अग्नियोंके साथ एक अग्नि ।	२४
९ अग्निसंवर्धन ।	११	३४ अग्नियोंमें अग्नि ।	२५
१० व्यक्तिभाव और संघभाव ।	११	३५ देवोंद्वारा प्रदीप्त अग्नि ।	२६
११ संघशक्ति का अहुत बल ।	१२	३६ दूत अग्नि ।	२७
१२ जनता का केंद्र ।	१२	३७ होता अग्नि ।	२८
१३ समाज का अमरत्व ।	१३	३८ अग्निरूप होना ।	२९
१४ सब धन संघका ही है ।	१३	३९ एक अग्नि से दूसरे अग्निका जलना ।	३०
१५ संघ के विजयमें व्यक्ति का जय ।	१४	४० देवोंद्वारा स्थापित अग्नि ।	३१
१६ बुद्धि में पहिला अग्नि ।	१५	४१ मानवी प्रजा में अग्नि ।	३२
१७ पहिला मननकर्ता अग्नि ।	१५	४२ जीवन-रसरूप अग्नि ।	३३
१८ मनुष्यमें अग्नि ।	१६	४३ देवोंका निवासक अग्नि ।	३४
१९ मर्त्यों में अमृत अग्नि ।	१६	४४ दस बहिर्न इसको प्रकट करती हैं ।	३५
२० जाठराग्नि ।	१७	४५ प्रजाका रक्षक ।	३६
२१ वाणी के स्थानमें अग्नि ।	१७	४६ देवोंके साथ अग्निका बैठनेका स्थान ।	३७
२२ दिव्य जन्मकर्ता अग्नि ।	१८	४७ यज्ञका अंश ।	३८
२३ शक्ति प्रदाता अग्नि ।	१८		
२४ पुरोहित अग्नि । गणराज ।	१९		
२५ हस्तपादहीन गुह्य अग्नि ।	१९		

४८ देवोंमें यज्ञ ।	३७	५८ सप्त धातु ।	४५
४९ यही दूत है ।	॥	६० सात घोड़े ।	॥
५० गुहा संचारी अग्नि ।	३८	६१ सात बहिनें ।	॥
५१ अग्निके साथी अनेक देव ।	४०	६२ सात ऋत्विज् ।	॥
५२ “ सात ” संख्या का महत्त्व ।	४१	६३ पांच और दो दोहनकर्ता ।	४६
५३ सात हाथ ।	॥	६४ तनूनपात् अग्नि ।	॥
५४ सात जिह्वाएं ।	४२	६५ अन्य बातों का उपदेश ।	४७
५५ सात नदियां ।	४२	६६ परम आत्माग्नि ।	४८
५६ सप्त ऋषि और सप्त नद ।	४३	६७ सारांश ।	॥
५७ सात किरण ।	४४	६८ अग्नि देवताके विचार करनेकी दिशा ।	॥
५८ सप्त रत्न ।	॥	६९ हृदयमें यज्ञ	५२

अग्निदेवताकी सूचियाँ ।

१ पुनरुक्त-मन्त्रसूची	पृ० १८७-२१६
प्रथम-मण्डल	१८७-१९४
द्वितीय ”	१९४-१९५
तृतीय ”	१९५-१९८
चतुर्थ ”	१९८-२००
पञ्चम ”	२००-२०४
षष्ठ ”	२०४-२०६
सप्तम ”	२०६-२०८
अष्टम ”	२०८-२१०
दशम ”	२१०-२१६
२ उपमासूची	२१७-२२४
३ मंत्राणां अकारानुक्रमसूची	२२५-२३८
४ (विशेषण)गुणबोधकपदसूची	२३८-२७४

अग्निमन्त्राणां ऋषिसूची ।

(१) अग्निः ।

ऋषि	मंत्रसंख्या	पृष्ठं	ऋषि	मंत्रसंख्या	पृष्ठं
मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	१-९	१	धरुण आङ्गिरसः	८६६-८७०	६४
मेधातिथिः काण्वः	१०-२६	"	पूरुषात्रेयः	८७१-८८०	६५
शुनः शेष आजीगर्तिः,	} २७-४९	२	द्वितो मृक्तवाहा आत्रेयः	८८१-८८५	"
स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः			वन्निरात्रेयः	८८६-८९०	६६
हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	५०-६७	३	प्रयस्वन्त आत्रेयाः	८९१-८९४	"
कण्वो घौरः	६८-८५	५	सस आत्रेयः	८९५-८९८	६७
प्ररुणवः काण्वः	८६-१०९	६	विश्वसामा आत्रेयः	८९९-९०२	"
नोधा गौतमः	११०-१२३	८	शुम्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः	९०३-९०६	"
पराशरः शाक्यः	१२४-२१४	९	बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च	} ९०७-९१०	"
गौतमो राहूगणः	२१५-२५५	१४	क्रमेण गौपायना लौपायना वा		
कुत्स आङ्गिरसः	२५६-२७१	१६	वसूयव आत्रेयाः	९११-९२७	"
परुच्छेपो देवोदासिः	२७२-२९१	१८	त्र्यरुणलैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरु-	} ९२८-९३२	६९
दीर्घतमा औचथ्यः	२९२-३६०	२०	कुत्सः, अश्वमेघश्च भारताः राजानः		
अगस्त्यो मैत्रावरुणः	३६१-३६८	२६	(अत्रिमौम इति केचित्)		
गृत्समदः शौनकः	३६९-४१५	२७	विश्ववारात्रेयी	९३३-९३८	"
सोमाहुतिर्भागवः	४१६-४४६	३०	भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	९३९-१०८९	७०
विश्वामित्रो गाथिनः	४४७-५७३	३२	शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणिः)	१०९०-१०९९	८०
ऋषभो वैश्वामित्रः	५७४-५८७	४१	वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	११००-१२१३	८१
उत्कीलः कात्यः	५८८-५९९	४२	वत्सः काण्वः	१२१४-२३	८९
कतो वैश्वामित्रः	६००-६०९	४३	सोमरिः काण्वः	१२२४-६९	९०
गाथी कौसिकः	६१०-६२६	४४	विश्वमना वैयथः	१२७०-९९	९३
देवश्रवा देववातश्च भारतौ	६२७-६३०	४६	नाभाकः काण्वः	१३००-१३०९	९४
वामदेवो गौतमः	६३१-७५४	"	विरूप आङ्गिरसः	१३१०-१३८८	९५
बुधगविष्टिरावात्रेयो	७५५-७६६	५५	भर्गः प्रागाथः	१३८९-१४०८	९८
कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः	} ७६७-७७८	५६	सुदीति-पुरुमीळहावाङ्गिरमौ,	} १४०९-१४२३	१००
उभौ वा			तयोर्बान्यतरः		
वसुश्रुत आत्रेयः	७७९-८१०	५७	हर्यतः प्रागाथः	१४२४-४१	१०१
इष आत्रेयः	८११-८२७	६०	गोपवन आत्रेयः	१४४२-५३	१०२
गय आत्रेयः	८२८-८४१	६१	जशना कावथः	१४५४-६२	"
धुमंभर आत्रेयः	८४२-८६५	६३			

प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्नि- र्बाहस्पत्यो वा गृहस्पति-यविष्ठौ सहसः पुत्रावान्यतरो वा	१४६३-८४	१०३
मित्र आप्त्यः	१४८५-१५३३	"
त्रिशिरास्वाष्टः	१५३४-३९	१०८
हविर्धान आङ्गिः	१५४०-५६	"
दमनो यामायनः	१५५७-७०	११०
विमद पेन्द्र, प्राजापत्यो वा, वसुकृदा वासुकः	१५७१-८८	१११
वत्सप्रिभालिन्दनः	१५८९-१६१०	११२
देवाः	१६११-२४	११४
सुमित्रो वाङ्मयश्चः	१६२५-३६	११५
सौचीकोऽग्निः, वैश्वानरो वा, (ससिर्वाजंभरो वा)	१६३७-५०	११६
अरुणो वैतहव्यः	१६५१-६५	११७
उपस्तुतो वार्हिहव्यः	१६६६-७४	११८
चित्रमहा वासिष्ठः	१६७५-८२	११९
अग्निः	१६८३	१२०
पावकोऽग्निः	१६८४-८९	"
शाङ्गोः (जरिता, द्रोणः, सारिस्वः, सत्यमित्रः)	१६९०-९७	१२१
मृत्कीको वासिष्ठः	१६९८-१७०२	"
केतुराग्नेयः	१७०३-७	१२२
सुनुरार्भवः	१७०८-१०	"
वत्स आग्नेयः	१७११-१५	"
संवन्न आङ्गिरसः	१७१६	"

(२) वैश्वानरोऽग्निः ।

नोधा गौतमः	१७१७-२३	१२३
कुत्स आङ्गिरसः	१७२४-२६	"
विश्वामित्रो गाथिनः	१७२७-५७	१२४
वामदेवो गौतमः	१७५८-७२	१२६
भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	१७७३-९३	१२७
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	१७९४-१८१२	१२९

(३) रक्षोहाऽग्निः ।

वामदेवो गौतमः	१८१३-२७	१३१
---------------	---------	-----

पायुर्भारद्वाजः	१८२८-५२	१३२
उरुक्षय आमहीयवः	१८५३-६१	१३४

(४) जातवेदा अग्निः ।

कश्यपो मारीचः	१८६२	"
इयेन आग्नेयः	१८६३-६५	१३५
भृगुः	१८६६	"

(५) घर्मोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८६७	"
----------------	------	---

(६) औषसोऽग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८६८-७८	"
----------------	---------	---

(७) द्रविणोदा अग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८७९-८६	१३६
----------------	---------	-----

(८) शुचिराग्निः ।

कुत्स आङ्गिरसः	१८८७-९४	१३७
----------------	---------	-----

(९) अग्निरापो गावश्च ।

वामदेवो गौतमः	१८९५-१९०५	१३८
---------------	-----------	-----

(१०) आप्री सूक्तानि ।

मेधातिथिः काण्वः	१९०६-१७	१३९
दीर्घतमा औचथ्यः	१९१८-३०	"
अरास्यो मैत्रावरुणः	१९३१-४१	१४०
गुत्समदः शौनकः	१९४२-५२	"
विश्वामित्रो गाथिनः	१९५३-६३	१४१
वसुश्रुत आग्नेयः	१९६४-७३	१४२
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	१९७४-८०	१४३
असितः काश्यपो देवलो वा	१९८१-९१	१४४
सुमित्रो वाङ्मयश्चः	१९९२-२००२	"
जमदग्निर्भार्गवः, रामो वा जामदग्न्यः	२००३-१३	१४५
विवस्वानृषिः	२०१४-७१	१४६
ब्रह्मा	२०७२-८३	१५२
विवस्वानृषिः	२०८४-२१२८	१५३

विवस्वानृषिः	२१२९-४१	१५७
अथर्वा	२१४२-२२१६	१५९
भृगुः	२२१७-७४	१६५
भृग्वज्रिराः	२२७५-७८	१६९
अङ्गिराः	२२७९-८३	१७०
चातनः	२२८४-२३१८	"
शौनकः	२३१९-२९	१७२
मृगारः	२३३०-३६	१७३
गार्ग्यः	२३३७-३८	१७४
पतिवेदनः	२३३९-४०	"
गुत्समदो मेधातिथिर्वा	२३४१	"
शुक्रः	२३४२	"
ब्रह्मा	२३४३-५४	"
वसिष्ठः	२३५५-६४	१७५
वाद्रायणिः	२३६५-७१	१७६
अङ्गिराः प्रचेताः	२३७२	१७७
मरीचिः काश्यपः	२३७३	"
जातवेदाः	२३७४	"
कौशिकः	२३७५-८९	"
कबन्धः	२३९०-९६	१७८

अग्निसहचारी देवगणः ।

(१) वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च ।

मूर्धन्वाङ्गिरसो,	२३९७-२४१५	१७९
वामदेव्यो वा		

(२) रक्षोहाऽग्निः ।

रक्षोहा ब्रह्मः	२४१६-२१	१८१
-----------------	---------	-----

(३) अयां-न-पादाग्निः ।

गुत्समदः शौनकः	२४२२-३६	"
----------------	---------	---

(४) अग्नीन्द्रादयः ।

वपिष्ठो मैत्रावरुणिः	२४३७	१८२
----------------------	------	-----

(५) अग्निर्मरुतश्च ।

मेधातिथिः काण्वः	२४३८-४६	१८३
सोभरिः काण्वः	२४४७	"

(६) अग्निमित्रवरुणादयः ।

हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	२४४८	"
----------------------	------	---

(७) अग्निर्वरुणश्च ।

वामदेवो गौतमः	२४४९-५२	"
---------------	---------	---

(८) अग्नाविष्णू ।

मेधातिथिः	२४५३-५४	१८४
-----------	---------	-----

(९) अग्निसूर्यौ ।

वृषधः काण्वः	२४५५	"
--------------	------	---

(१०) अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

दीर्घतमा औचथ्यः	२४५६	"
-----------------	------	---

(११) अग्निसूर्यानिताः ।

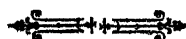
इरिम्बिठिः काण्वः	२४५७	"
-------------------	------	---

(१२) [केशिनः=] अग्निसूर्यवायवः ।

वातरशना मुनयः= (१-७)		
क्रमेण जूतिः, वातजूतिः,	२४५८-६४	१८५
विप्रजूतिः, वृषाणकः, करि-		
कतः, एतशः, ऋष्यशृङ्ग)		

(१३) अग्नीषोमौ ।

गौतमो राहूगणः	२४६५-७६	"
ब्रह्मा	२४७७-७९	१८६
अथर्वा (यशस्कामः)	२४८०	"
शन्तातिः	२४८१	"
भार्गवः	२४८२-८३	"





दैवत-संहिता

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मंत्रान् दैवतानुसारेण सगृह्य निर्मिता)

१ अग्निदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋग्वेदस्य मण्डलं १, सूक्तं १, मंत्राः १-९) [१ - ९] मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री (८×३) ।

॥ॐ॥ अग्निमीळे पुरोहितं	यज्ञस्य देवमृत्विजम्	। होतारं रत्नधातमम्	१
अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिर्	ईड्यो नूतनैरुत	। स देवाँ एह वक्षति	२
अग्निना रयिमश्नवत्	पोषमेव दिवेदिवे	। यशसं वीरवत्तमम्	३
अग्ने यं यज्ञमध्वरं	विश्वतः परिभूरसि	। स इद् देवेषु गच्छति	४
अग्निर्होता कविक्रतुस्	सत्यश्चित्रश्रवस्तमः	। देवो देवेभिरा गमत्	५
यदुङ्ग दाशुषे त्वम्	अग्ने भद्रं करिष्यसि	। तवेत् तत् सत्यमङ्गिरः	६
उप त्वाग्ने दिवेदिवे	दोषावस्तर्धिया वयम्	। नमो भरन्त एमसि	७
राजन्तमध्वराणां	गोपामृतस्य दीदिविम्	। वर्धमानं स्वे दमे	८
स नः पितेर्व सूनवे	ऽग्ने सुपायनो भव	। सचस्वा नः स्वस्तये	९

॥ २ ॥ (ऋ० १ । १२ । १-१२) [१० - २६] मेधातिथिः काण्वः ।

अग्निं दूतं वृणीमहे	होतारं विश्ववेदसम्	। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्	१०
अग्निमग्निं हवीमभिस्र	सदा हवन्त विश्वपतिम्	। हव्यवाहं पुरुप्रियम्	११
अग्ने देवाँ इहा वह	जज्ञानो वृक्तवर्हिषे	। असि होता न ईड्यः	१२
ताँ उश्नतो वि ब्रोधय	यदग्ने यासि दूत्यम्	। देवैरा सात्सि बर्हिषि	१३

घृताहवन दीदिवः	प्रति ष्म रिषतो दह । अग्ने त्वं रक्षस्विनः	१४
अग्निनाग्निः समिध्यते	कविर्गृहपतिर्युवा । हव्यवाङ् जुह्वास्यः	१५
कविमग्निमुप स्तुहि	सत्यधर्माणमध्वरे । देवममीवचातनम्	१६
यस्त्वामग्ने हविर्षतिर्	दूतं देव सपर्यति । तस्य स्म प्राविता भव	१७
यो अग्निं देववीतये	हविष्माँ आविवासति । तस्मै पावक मृळ्य	१८
स नः पावक दीदिवो	ऽग्ने देवाँ इहा वह । उप यज्ञं हविश्च नः	१९
स नः स्तवान् आ भर	गायत्रेण नवीयसा । रयिं वीरवतीमिषम्	२०
अग्ने शुक्रेण शोचिषा	विश्वाभिर्देवहूतिभिः । इमं स्तोमं जुषस्व नः	२१

॥ ३ ॥ (ऋ० १ । १५ । ४, १२)

अग्ने देवाँ इहा वह	सादया योनिषु त्रिषु । परिं भूष पिबं ऋतुना	२२
गार्हपत्येन सन्त्य	ऋतुना यज्ञनीरसि । देवान् देवयते यज	२३

॥ ४ ॥ (ऋ० १ । २२ । ९-१०)

अग्ने पत्नीरिहा वह	देवानामुशतीरुप । त्वष्टारं सोमपीतये	२४
आ ग्रा अग्न इहावसे	होत्रां यविष्ठ भारतीम् । वरुत्रीं धिषणां वह	२५

॥ ५ ॥ (ऋ० १ । २३ । २४) अनुष्टुप् (८×४) ।

सं माग्ने वर्चसा सृज	सं प्रजया समायुषा ।	
विद्युर्मै अस्य देवा	इन्द्रो विद्यात् सह ऋषिभिः	२६

॥ ६ ॥ (ऋ० १ । २४ । २)

[२७-४९] शुनःशेष आजीगर्तिः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । त्रिष्टुप् (११×४) ।

अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां	मनामहे चारु देवस्य नाम ।	
स नो मद्या अदितये पुनर्दात्	पितरं च दृश्ये मातरं च	२७

॥ ७ ॥ (ऋ० १ । २६ । १-१०) गायत्री (८×३) ।

वसिष्वा हि मियेध्य	वस्त्राण्यूर्जा पते । सेमं नो अध्वरं यज	२८
नि नो होता वरेण्यस्	सदा यविष्ठ मन्मभिः । अग्ने दिविर्त्मता वचः	२९
आ हि ष्मा सूनवे पिता	ऽऽपिर्यजत्यापये । सखा सख्ये वरेण्यः	३०

आ नो बर्ही रिश्नादसो	वरुणो मित्रो अर्यमा ।	सीदन्तु मनुषो यथा	३१
पूर्व्यं होतरस्य नो	मन्दस्व सख्यस्य च ।	इमा उ पु श्रुधी गिरः	३२
यच्चिद्धि शश्वता तना	देवदेवं यजामहे ।	त्वे इद्धूयते हविः	३३
प्रियो नो अस्तु विष्पतिर्	होता मन्द्रो वरेण्यः ।	प्रियाः स्वग्रयो वयम्	३४
स्वग्रयो हि वार्यं	देवासो दधिरे च नः ।	स्वग्रयो मनामहे	३५
अथा न उभयेषाम्	अमृत मर्त्यानाम् ।	मिथः सन्तु प्रशस्तयः	३६
विश्वेभिरग्रे अग्निभिर्	इमं यज्ञमिदं वचः ।	चनो धाः सहसो यदो	३७

॥ ८ ॥ (ऋ० १ । २७ । १-१२) ।

अश्वं न त्वा वारवन्तं	वन्दध्या अग्निं नमोभिः ।	सम्राजन्तमध्वराणाम्	३८
स घा नः सुनुः शर्वसा	पृथुप्रगामा सुशेवः ।	मीढ्वा अस्माकं बभूयात्	३९
स नो दूराच्चासाच्च	नि मर्त्यादघायोः ।	पाहि सदमिद् विश्वायुः	४०
इमम् पु त्वमस्माकं	सनिं गायत्रं नव्यांसम् ।	अग्रे देवेषु प्र वोचः	४१
आ नो भज परमेष्वा	वाजेषु मध्यमेषु ।	शिक्षा वस्वो अन्तमस्य	४२
विभक्तासि चित्रभानो	सिन्धोरूर्मा उपाक आ ।	सद्यो दाशुषे क्षरसि	४३
यमग्रे पृत्सु मर्त्यम्	अवा वाजेषु यं जुनाः ।	स यन्ता शश्वतीरिषः	४४
नर्किरस्य सहन्त्य	पर्येता कयस्य चित् ।	वाजो अस्ति श्रवाय्यः	४५
स वाजं विश्वचर्षणिर्	अर्वङ्गिरस्तु तरुता ।	विश्वेभिरस्तु सनिता	४६
जराबोधु तद् विविद्धि	विशेर्विशे यज्ञियाय ।	स्तोमं रुद्राय दृशीकम्	४७
स नो महौ अनिमानो	धूमकेतुः पुरुश्चन्द्रः ।	धिगे वाजाय हिन्वतु	४८
स रेवा इव विष्पतिर्	दैव्यः केतुः शृणोतु नः ।	उक्थैरग्निरवृहद्भानुः	४९

॥ ९ ॥ (ऋ० १ । ३१ । १-१८) [५० - ६७] हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः ।

जगती (१२×४) ; ५७, ६५, ६७ त्रिष्टुप् (११×४) ।

त्वमग्रे प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्	देवो देवानामभवः शिवः सखा ।	
तव त्रते कवयो विब्रनापसो	ऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः	५०
त्वमग्रे प्रथमो अङ्गिरस्तमः	कविदेवानां परिं भूषसि व्रतम् ।	
विश्वविश्वस्मै भुवनाय मेधिरो	द्विमाता शयुः कतिधा चिदायवे	५१

त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्चन	आविर्भव सुकृतूया विवस्वते ।	
अरेजेतां रोदसी होतृवूर्ये	ऽसन्नोभारमयजो महो वंसो	५२
त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः	पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः ।	
श्वात्रेण यत् पित्रोर्मुच्यसे पर्या	ऽऽ त्वा पूर्वमनयन्नापरं पुनः	५३
त्वमग्ने पृषभः पुष्टिवर्धन	उद्यतस्तुचे भवसि श्रवाग्यः ।	
य आहुतिं परि वेदा वर्षट्कृतिम्	एकायुरग्रे विश आविवाससि	५४
त्वमग्ने वृजिनवर्तनि नरं	सकमन् पिपर्षि विदथे विचर्षणे ।	
यः शूरसाता परितकम्ये धने	दुग्धेभिश्चित् समृता हंसि भूर्यसः	५५
त्वं तमग्ने अमृतत्व उत्तमे	मती दधासि श्रवसे दिवेदिवे ।	
यस्तातृषाण उभयाय जन्मने	मयः कृणोषि प्रय आ च सूरये	५६
त्वं नो अग्ने सनये धनानां	यशसं कारुं कृणुहि स्तवानः ।	
ऋध्याम कर्मापसा नवेन	देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः	५७
त्वं नो अग्ने पित्रोरुपस्थ आ	देवो देवेष्वनवद्य जागृविः ।	
तनूकृद् बोधि प्रमतिश्च कारवे	त्वं कल्याण वसु विश्वमोर्षिषे	५८
त्वमग्ने प्रमतिस्त्वं पितासि नस्	त्वं वयस्कृत् तव जामयो वयम् ।	
सं त्वा रायः शतिनः सं सहस्रिणः	सुवीरं यन्ति व्रतपामदाभ्य	५९
त्वमग्ने प्रथममायुमायवे	देवा अकृण्वन् नहुषस्य विश्वपतिम् ।	
इळामकृण्वन् मनुषस्य शासनीं	पितुर्यत् पुत्रो ममकस्य जायते	६०
त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्	मुघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य ।	
त्राता लोकस्य तनये गवामसि	अनिमेषं रक्षमाणस्तव व्रते	६१
त्वमग्ने यज्यवे पायुरन्तरो	ऽनिषङ्गाय चतुरक्ष इध्यसे ।	
यो रातहव्योऽवुकाय धार्यसे	कीरेश्चिन् मन्त्रं मनसा वनोषि तम्	६२
त्वमग्ने उरुशंसाय वाघते	स्पार्ह यद् रेक्णः परमं वनोषि तत् ।	
आध्रस्य चित् प्रमतिरुच्यसे पिता	प्र पाकं शास्ति प्र दिशो विदुष्टरः	६३
त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं नरं	वर्मेव स्यूतं परि पासि विश्वतः ।	
स्वादुक्षत्रा यो वंसतौ स्योनकृज्	जीवयाजं यजते सोपमा दिवः	६४

इमामग्ने शरणिं मीमृषो न इममध्वानं यमगाम दूरात् ।	
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां भूमिरस्यृषिकृन् मर्त्यानाम्	६५
मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरो ययातिवत् सदनं पूर्ववच्छुचे ।	
अच्छ याह्या वह्ना दैन्यं जनम् आ सादय बर्हिषि यक्षि च प्रियम्	६६
एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व शक्तीं वा यत्तै चकृमा विदा वा ।	
उत प्र णैष्यभि वस्यो अस्मान्त् सं नः सृज सुमत्या वाजवत्या	६७

॥ १० ॥ (ऋ० १।३६।१-१२, ५-२०)

[६८-८५] कण्वो घौरः । प्रगाथः = बृहती (८।८।१२।८) + सतो बृहती (१२।८।१२।८) ।

प्र वो यद्दं पुरुणां विशां देवयतीनाम् ।	
अग्निं सूक्तेभिर्वचोभिरीमहे यं सीमिदन्य ईळते	६८
जनासो अग्निं दधिरे सहोवृधं हविष्मन्तो विधेम ते ।	
स त्वं नो अद्य सुमना इहाविता भवा वाजेषु सन्त्य	६९
प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं ।	
महस्ते सतो वि चरन्त्यर्चयो दिवि स्पृशन्ति भानवः	७०
देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा सं दूतं प्रत्नमिन्धते ।	
विश्वं सो अग्ने जयति त्वया धनं यस्ते ददाश मर्त्यः	७१
मन्द्रो होता गृहपतिर् अग्ने दूतो विशामसि ।	
त्वे विश्वा संगतानि व्रता ध्रुवा यानि देवा अकृण्वत	७२
त्वे इदग्ने सुभगे यविष्ठय विश्वमा हूयते हविः ।	
स त्वं नो अद्य सुमना उताऽपरं यक्षि देवान्सुवीर्या	७३
तं धेमिन्धता नमस्विन उषं स्वराजमासते ।	
होत्राभिरग्निं मनुषुः समिन्धते तितिर्वासो अति सिधः	७४
मन्तो वृत्रमतरन् रोदसी अप उरु क्षयाय चक्रिरे ।	
ध्रुवत् कण्वे वृषा घुम्याहुतः क्रन्ददध्नो गर्विष्टिषु	७५
सं सीदस्व मह्यं असि शोचस्व देववीर्यमः ।	
वि धूममग्ने अरुषं मिथेध्य सृज प्रशस्त दर्शतम्	७६

यं त्वा देवासो मनवे दुधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहन । यं कण्वो मेध्यातिथिर्धनस्पृतं यं वृषा यमुपस्तुतः	७७
यमग्निं मेध्यातिथिः कण्वं ईध ऋतादधि । तस्य प्रेषो दीदियुस्तमिमा ऋचस् तमग्निं वर्धयामसि रायस्पूधिं स्वधावोऽस्ति हि ते ऽग्ने देवेष्वाप्यम् । त्वं वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि स नो मृळ महौ असि	७८ ७९
पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराव्णः । पाहि रीषत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्ठय घनेव विष्वग् वि जह्यराव्णस् तपुर्जम्भ यो अस्मधुक् । यो मर्त्यः शिशीति अत्यक्तुभिर् मा नः स रिपुरीशत	८० ८१
अग्निर्वेत्ने सुवीर्यम् अग्निः कण्वाय सौभगम् । अग्निः प्रावन् मित्रोत मेध्यातिथिम् अग्निः साता उपस्तुतम् अग्निना तुर्वशं यदु परावत उग्रादेवं हवामहे । अग्निर्नयन् नववास्त्वं बृहद्रथं तुर्वीति दस्यवे सहः	८२ ८३
नि त्वामग्ने मनुर्दधे ज्योतिर्जनाय शश्वते । दीदेथ कण्वं ऋतजात उक्षितो यं नमस्यन्ति कृष्टयः त्वेषासो अग्नेरमवन्तो अर्चयो भीमासो न प्रतीतये । रक्षस्विनः सदमिद्यातुमावतो विश्वं समन्त्रिणं दह	८४ ८५

॥ ११ ॥ (क्र० १।४४।१-१४)

[८६ - १०९] प्रस्कण्वः काण्वः । प्रगाथः = बृहती (८।८।१२।८) + सतो बृहती (१२।८।१२।८) ।

अग्ने विवस्वदुषसश् चित्रं राधो अमर्त्य । आ दाशुषे जातवेदो ब्रह्मा त्वम् अद्या देवाँ उपबुधः जुष्टो हि दूतो असि हव्यवाहनो ऽग्ने रथीरध्वराणाम् । सज्जरश्चिम्यामुषसा सुवीर्यम् अस्मे धेहि श्रवो बृहत् अद्या दूतं वृणीमहे वसुमग्निं पुरुप्रियम् । धूमकेतुं भाक्रजीकं व्युष्टिषु यज्ञानामध्वरश्रियम्	८६ ८७ ८८
---	----------------

श्रेष्ठं यविष्ठमर्तिथिं स्वाहुतं जुष्टं जनाय दाशुषे । देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसम् अग्निमीळे व्युष्टिषु	८९
स्तविष्यामि त्वामहं विश्वस्यामृत भोजन । अग्ने त्रातारमृतं मियेध्य यजिष्ठं हव्यवाहन	९०
सुशंसो बोधि गृणते यविष्ठ्य मधुजिह्वः स्वाहुतः । प्रस्कण्वस्य प्रतिरन्नायुर्जीवसे नमस्या दैव्यं जनम्	९१
होतारं विश्ववेदसं सं हि त्वा विश इन्धते । स आ वह पुरुहूत प्रचेतसो ऽग्ने देवाँ इह द्रवत्	९२
सवितारमुषसमश्विना भगम् अग्निं व्युष्टिषु क्षपः । कणासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर	९३
पतिर्ह्यध्वराणाम् अग्ने दूतो विशामसि । उषर्बुध आ वह सोमपीतये देवाँ अद्य स्वर्दशः	९४
अग्ने पूर्वा अनूषसो विभावसो दीदेथ विश्वदर्शतः । असि ग्रामेण्विता पुरोहितो ऽसि यज्ञेषु मानुषः	९५
नि त्वा यज्ञस्य साधनम् अग्ने होतारमृत्विजम् । मनुष्वद् देव धीमहि प्रचेतसं जीरं दूतममर्त्यम्	९६
यद् देवानां मित्रमहः पुरोहितो ऽन्तरो यासि दूत्यम् । सिन्धोरिव प्रस्वनितास ऊर्मयो ऽग्नेर्भ्राजन्ते अर्चयः	९७
श्रुधि श्रुत्कर्ण वह्निभिर् देवैरग्ने सयावभिः । आ सीदन्तु बर्हिषि मित्रो अर्यमा प्रातर्यावाणो अध्वरम्	९८
शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः सुदानवो ऽग्निजिह्वा ऋतावृधः । पिबन्तु सोमं वरुणो धृतव्रतो ऽश्विभ्यामुषसा सजूः	९९

॥ १२ ॥ (ऋ० १ । ४५ । १-१०) अनुष्टुप् (८×४) ।

त्वमग्ने वरिह रुद्राँ आदित्याँ उत । यजाँ स्वध्वरं जनं मनुजातं घृतप्रुषम् १००
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे देवा अग्ने विचेतसः । तान् रोहिदश्च गिर्वणस् त्रयस्त्रिंशत्तमा वह १०१
प्रियमेधवदत्रिवज् जातवेदो विरूपवत् । अङ्गिरस्वन् महिब्रत प्रस्कण्वस्य श्रुधी हवम् १०२

महिंकेरव ऊतये प्रियमेधा अहूषत । राजन्तमध्वराणाम् अग्निं शुक्रेण शोचिषा १०३
 घृताहवन सन्त्य इमा उ पु श्रुधी गिरः । याभिः कर्णस्य सूनवो हवन्तेऽवसे त्वा १०४
 त्वां चित्रश्रवस्तम् हवन्ते विश्व जन्तवः । शोचिष्कैशं पुरुप्रिय अग्ने हव्याय वोह्वे १०५
 नि त्वा होतारमृत्विजं दधिरे वसुवित्तमम् । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं विप्रा अग्ने दिविष्टिषु १०६
 आ त्वा विप्रा अचुच्युः सुतसोमा अभि प्रयः । बृहद् भा विभ्रतो हविर् अग्ने मर्तीय द्राशुषे १०७
 प्रातर्याव्णाः सहस्कृत सोमपेयाय सन्त्य । इहाद्य दैव्यं जनं बर्हिंसा दद्या वसो १०८
 अर्वाञ्च दैव्यं जनम् अग्ने यक्ष्व सहूतिभिः । अयं सोमः सुदानवस् तं पात तिरोअह्वयम् १०९

॥१३॥ (ऋ० १।५८।१-९) [११०-१२३] नोधा गौतमः । जगती, (१२×४) ११५-१२३ त्रिष्टुप् (११×४) ।

नू चित् सहोजा अमृतो नि तुन्दते होता यद् दूतो अभवद् विवस्वतः ।
 वि साधिष्ठेभिः पृथिभी रजो मम् आ देवताता हविषा विवासति ११०
 आ स्वमर्गं युवमानो अजरस् तृष्वविष्यन्नतसेषु तिष्ठति ।
 अत्यो न पृष्ठं प्रुषितस्य रोचते दिवो न सानुं स्तनयन्नचिक्रदत् १११
 क्राणा रुद्रेभिर्वसुभिः पुरोहितो होता निषत्तो रयिषाळमर्त्यः ।
 रथो न विक्ष्वृञ्जसान आयुषु व्यानुपग् वार्या देव क्रण्वति ११२
 वि वार्तजूतो अतसेषु तिष्ठते वृथा जुह्वभिः सृण्यां तुविष्वणिः ।
 तृषु यदग्ने वनिनो वृषायसे कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ११३
 तर्पुर्जम्भो वन् आ वार्तचोदितो यूथे न साह्वाँ अवं वाति वंसंगः ।
 अभित्रजन्नक्षितं पार्जसा रजः स्थातुश्चरथं भयते पतत्रिणः ११४
 दधुष्टा भृगवो मानुषेष्वा रयिं न चारुं सुहवं जनैभ्यः ।
 होतारमग्ने अतिथिं वरेण्यं मित्रं न शेवं दिव्याय जन्मने ११५
 होतारं सप्त जुहोइ यजिष्ठं यं वाघतो वृणते अध्वरेषु ।
 अग्निं विश्वेषामरतिं वसूनां सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ११६
 अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहः शर्म यच्छ ।
 अग्ने गृणन्तमहंस उरुष्य ऊजो नपात् पूभिंरायसीभिः ११७
 भवा वरूथं गृणते विभावो भवा मघवन् मघवञ्चः शर्म ।
 उरुष्याग्ने अहंसो गृणन्तं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ११८

॥ १४ ॥ (ऋ० १।६०।१-५)

[११९-१२३] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वह्निं यशसं विदथस्य केतुं सुग्राव्यं दूतं सद्योऽर्थम् ।	
द्विजन्मानं रयिर्निव प्रशस्तं रातिं भरद् भृगवे मातरिश्वा	११९
अस्य शासुरुभयासः सचन्ते हविष्मन्त उशिजो ये च मर्तीः ।	
दिवश्चित् पूर्वो न्यसादि होता ऽऽपृच्छयौ विस्पतिर्विभु वेधाः	१२०
तं नव्यसी हृद आ जायमानम् अस्मत् सुकीर्तिर्मधुजिह्वमश्याः ।	
यमृत्विजो वृजने मानुषासः प्रयस्वन्त आयवो जीजनन्त	१२१
उशिक् पावको वसुर्मनुषेषु वरेण्यो होताधायि विभु ।	
दर्मना गृहपतिर्दम आ अग्निर्भुवद् रयिपती रयीणाम्	१२२
तं त्वा वयं पतिमग्रे रयीणां प्र शैसामो मतिभिर्गोतमासः ।	
आशुं न वाजंभरं मर्जयन्तः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्	१२३

॥ १५ ॥ (ऋ० १।६५।१-१०)

[१२४-२१४] पराशरः शाक्यः । द्विपदा विराट् ।

पश्वा न ताथुं, गुहा चतन्तं नमो युजानं, नमो वहन्तम्	१२४
सजोषा धीराः, पदैरनु गमन् उप त्वा सीदन्, विश्वे यजत्राः	१२५
ऋतस्य देवा, अनु व्रता गुर भुवत् परिष्टिर्, द्यौर्न भूम	१२६
वर्धन्तीमार्पः, पन्वा सुशिक्षिम् ऋतस्य योना, गर्भे सुजातम्	१२७
पुष्टिर्न रण्वा, क्षितिर्न पृथ्वी गिरिर्न भुज्म, क्षोदो न शंभु	१२८
अत्यो नाज्मन्, त्सर्गप्रतक्तः सिन्धुर्न क्षोदुः, क ई वराते	१२९
जामिः सिन्धूनां, आतेव स्वस्त्राम् इभ्यान् न राज्ञा, वनान्यत्ति	१३०
यद्वातजूतो, वना व्यस्थाद् अग्निर्ह दाति, रोमा पृथिव्याः	१३१
श्वसित्यप्सु, हंसो न सीदन् कत्वा चेतिष्ठो, विशामुषश्चेत्	१३२
सोमो न वेधा, ऋतप्रजातः पशुर्न शिश्वा, विभुर्दूरेभाः	१३३

॥ १६ ॥ (ऋ० १।६६।१-१०)

रयिर्न चित्रा, सूरौ न संहग् आयुर्न प्राणो, नित्यो न सूनुः	१३४
तक्का न भूर्णिर्, वना सिषक्ति पयो न धेनुः, शुचिर्विभावा	१३५

दाधार क्षेमम्, ओको न रण्वो	यवो न पक्को, जेता जनानाम्	१३६
ऋषिर्न स्तुभ्वा, विक्षु प्रशस्तो	वाजी न प्रीतो, वयो दधाति	१३७
दुरोकशोचिः, क्रतुर्न नित्यो	जायेव योनाव्, अरं विश्वस्मै	१३८
चित्रो यदभ्राद्, ह्येतो न विक्षु	रथो न रुक्मी, त्वेषः समत्सु	१३९
सेनैव सृष्टा, ऽमै दधाति	अस्तुर्न दिद्युत्, त्वेषप्रतीका	१४०
यमो ह जातो, यमो जनिष्वं	जारः कनीनां, पतिर्जनीनाम्	१४१
तं वश्रराथा, वयं वसत्यास्	तं न गावो, नक्षन्त इद्धम्	१४२
सिन्धुर्न क्षोदुः, प्र नीचीरैनोन्	नवन्त गावः, स्वर्दृशीके	१४३

॥ १७ ॥ (ऋ० १। ६७। १-१०)

वनेषु जायुर, मर्तेषु मित्रो	वृणीते श्रुष्टि, राजैवाजुर्यम्	१४४
क्षेमो न साधुः, क्रतुर्न भद्रो	भुवत् स्वाधीर्, होता हव्यवाद्	१४५
हस्ते दर्धानो, नृम्णा विश्वानि	अमै देवान् धाद्, गुहा निषीदन्	१४६
विदन्तीमत्र, नरो धियंधा	हुदा यत् तष्टान्, मन्त्राँ अशंसन्	१४७
अजो न क्षां, दाधार पृथिवीं	तस्तम्भं धां, मन्त्रैभिः सत्यैः	१४८
प्रिया पदानि, पश्वो नि पाहि	विश्वारुग्ने, गुहा गुहं गाः	१४९
य ई चिकेत, गुहा भवन्तम्	आ यः ससाद्, धारामृतस्य	१५०
वि ये चृतन्ति, क्रता सर्पन्त	आदिद् वसन्ति, प्र ववाचास्मै	१५१
वि यो वीरुत्सु, रोधन् महित्वा	उत प्रजा, उत प्रसूष्वन्तः	१५२
चित्तिरपां, दमै विश्वायुः	सन्नेव धीराः, संमाय चक्रुः	१५३

॥ १८ ॥ (ऋ० १। ६८। १-१०)

श्रीणन्नुप स्थाद्, दिवै भुरण्युः	स्थातुश्चरथम्, अक्तून् व्यूणोत्	१५४
परि यदैषाम्, एको विश्वेषां	भुवद् देवो, देवानां महित्वा	१५५
आदित् ते विश्वे, क्रतुं जुषन्त	शुष्काद्यद् देव, जीवो जनिष्ठाः	१५६
भजन्त विश्वे, देवत्वं नाम	क्रतं सर्पन्तो, अमृतमेवैः	१५७
क्रतस्य प्रेषा, क्रतस्य धीतिर्	विश्वायुर्विश्वे, अपांसि चक्रुः	१५८
यस्तुभ्यं दाशाद्, यो वा ते शिक्षात्	तस्मै चिकित्वान्, रयिं दयस्व	१५९
होता निषत्तो, मनोरपत्ये	स चिन् न्वासां, पती रयीणाम्	१६०

इच्छन्तु रेतो, मिथस्तनूषु	सं जानतु स्वैर्, दक्षैरमूराः	१६१
पितुर्न पुत्राः, कर्तुं जुषन्तु	श्रोषन् ये अस्य, शासं तुरासः	१६२
वि रायं और्णोद्, दुरः पुरुक्षुः	पिपेश नाकं, स्तृभिर्दमूनाः	१६३

॥ १९ ॥ (ऋ० १ । ६९ । १-१०)

शुक्रः शुशुक्रौ, उषो न जारः	पप्रा समीची, दिवो न ज्योतिः	१६४
परि प्रजातः, कृत्वा बभूथ	भुवो देवानां, पिता पुत्रः सन्	१६५
वेधा अदमो, अग्निर्विजानन्	ऊध्वर्न गोनां, स्वाद्यां पितुनाम्	१६६
जने न शेव, आहूर्यः सन्	मध्ये निषत्तो, रण्वो दुरोणे	१६७
पुत्रो न जातो, रण्वो दुरोणे	वाजी न ग्रीतो, विशो वि तारीत्	१६८
विशो यदह्ने, नृभिः सनीळा	अग्निर्देवत्वा, विश्वान्यश्याः	१६९
नर्किष्ट एता, व्रता भिनन्ति	नृभ्यो यदेभ्यः, श्रुष्टिं चकथं	१७०
तत् तु ते दंसो, यदहन्तस्मानैर्	नृभिर्यद् युक्तो, विवे रपांसि	१७१
उषो न जारो, विभावोस्रः	संज्ञातरूपश्च, चिकेतदस्मै	१७२
त्मना वहन्तो, दुरो व्यृण्वन्	नवन्त विश्वे, स्वर्गं दृशीके	१७३

॥ २० ॥ (ऋ० १ । ७० । १-११)

वनेम पूर्वीर्, अयो मनीषा	अग्निः सुशोको, विश्वान्यश्याः	१७४
आ दैव्यानि, व्रता चिकित्वान्	आ मानुषस्य, जनस्य जन्म	१७५
गर्भो यो अपां, गर्भो वनानां	गर्भश्च स्थातां, गर्भश्चरथाम्	१७६
अद्रौ चिदस्मा, अन्तर्दुरोणे	विशां न विश्वो, अमृतः स्वाधीः	१७७
स हि क्षपावां, अग्नी रयीणां	दाशद् यो अस्मा, अरं सूक्तैः	१७८
एता चिकित्वो, भूमा नि पाहि	देवानां जन्म, मतींश्च विद्वान्	१७९
वर्धान्यं पूर्वीः, क्षपो विरूपाः	स्थातुश्च रथम्, ऋतप्रवीतम्	१८०
अराधि होता, स्वर्गं निषत्तः	कृण्वन् विश्वानि, अपांसि सत्या	१८१
गोषु प्रशस्ति, वनेषु धिषे	भरन्त विश्वे, बलिं स्वर्णः	१८२
वि त्वा नरः, पुरुत्रा संपर्यन्	पितुर्न जित्रेर्, वि वेदो भरन्त	१८३
साधुर्न गृध्नुर, अस्तैव शूरो	यातैव भीमस्, त्वेषः समत्सु	१८४

॥ २१ (ऋ० १।७१।१-१०) । त्रिष्टुप् ।

उप प्र जिन्वन्नृशतीरुशन्तं पतिं न नित्यं जनयः सनीळाः ।	
स्वसारः श्यावीमरुषीमजुषन् चित्रमुच्छन्तीमुषसं न गावः	१८५
वीळ चिद् दृह्या पितरो न उक्थैर् अद्रिं रुजन्नङ्गिरसो रवेण ।	
चक्रुर्दिवो बृहतो गातुमस्मे अहः स्वर्विविदुः केतुमुस्ताः	१८६
दधन्नृतं धनयन्नस्य धीतिम् आदिदुर्यो दिधिष्वोरे विभृत्राः ।	
अर्तव्यन्तीरपसो यन्त्यच्छा देवाञ् जन्म प्रयसा वर्धयन्तीः	१८७
मथीद् यदीं विभृतो मातरिश्वा गृहेगृहे श्येतो जेन्यो भूत ।	
आदीं राज्ञे न सहीयसे सच्चा सन्ना दूत्यं भृगवाणो विवाय	१८८
महे यत् पित्र ई रसं दिवे कर् अव त्सरत् पृश्न्यश्चिकित्वान् ।	
सृजदस्ता धृषता दिद्युमस्मै स्वायां देवो दुहितरि त्विषिं धात्	१८९
स्व आ यस्तुभ्यं दम आ विभाति नमो वा दाशादुशतो अनु दून् ।	
वधो अग्ने वयो अस्य द्विवर्हा यासद् राया सरथं यं जुनार्सि	१९०
अग्निं विश्वा अभि पृश्नः सचन्ते समुद्रं न स्रवतः सप्त यद्वाहिः ।	
न जामिभिर्वि चिकित्ते वयो नो विदा देवेषु प्रमतिं चिकित्वान्	१९१
आ यदिषे नृपतिं तेज आनद् शुचि रेतो निषिक्तं द्यौरभीके ।	
अग्निः शर्धमनवद्यं युवानं स्वाध्यं जनयत् सूदयच्च	१९२
मनो न योऽध्वनः सद्य एति एकः सत्रा सूरौ वस्व ईशे ।	
राजाना मित्रावरुणा सुपाणी गोषु प्रियममृतं रक्षमाणा	१९३
मा नो अग्ने सख्या पित्र्याणि प्र मर्षिष्ठा अभि विदुष्कविः सन् ।	
नभो न रूपं जरिमा मिनाति पुरा तस्या अभिशस्तेरधीहि	१९४

॥ २२ ॥ (ऋ० १।७२।१-१०)

नि काव्या वेधसः शश्वतस्कर् हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।	
अग्निर्भुवद् रयिपतीं रयीणां सत्रा चक्राणो अमृतानि विश्वा	१९५
अस्मे वत्सं परि षन्तं न विन्दन् इच्छन्तो विश्वे अमृता अमूराः ।	
श्रमयुवः पदव्यो धियंधास् तस्थुः पदे परमे चार्वग्रेः	१९६

तिस्रो यदग्ने शरदस्त्वामिच्छुर्चिं घृतेन शुचयः सपर्यान् । नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि असूदयन्त तन्वाः सुजाताः	१९७
आ रोदसी बृहती वेविदानाः प्र रुद्रियां जग्निरे यज्ञियासः । विदन् मर्तो नेमधिता चिकित्वान् अग्निं पदे परमे तस्थिवांसम्	१९८
संजानाना उप सीदन्नभिन्नु पत्नीवन्तो नमस्यं नमस्यन् । रिरिक्कांसस्तन्वाः कृण्वत स्वाः सखा सख्युर्निमिषि रक्षमाणाः	१९९
त्रिः सप्त यद् गुह्यानि त्वे इत् पदाविदन् निहिता यज्ञियासः । तेभी रक्षन्ते अमृतं सजोषाः पशून् स्थातृश्चरथं च पाहि	२००
विद्राँ अग्ने वयुनानि क्षितीनां व्यानुषक्छुरुधो जीवसे धाः । अन्तर्विद्राँ अध्वनो देवयानान् अतन्द्रो दूतो अभवो हविर्वाट्	२०१
स्वाध्वो दिव आ सप्त यह्वी रायो दुरो व्यृतज्ञा अजानन् । विदद् गव्यं सरमा दृह्मूर्ध्व येना नु कं मानुषी भोजते विट्	२०२
आ ये विश्वा स्वपत्यानि तस्थुः कृण्वानासो अमृतत्वार्य गातुम् । महा महद्भिः पृथिवी वि तस्थे माता पुत्रैरदितिर्धायसे वेः	२०३
अधि श्रियं नि दधुश्चारुमास्मिन् दिवो यदुक्षी अमृता अकृण्वन् । अध क्षरन्ति सिन्धवो न सृष्टाः प्र नीचीरग्ने अरुषीरजानन्	२०४

॥ २३ ॥ (ऋ० १ । ७३ । १-१०)

रयिर्न यः पितृवित्तो वयोधाः सुप्रणीतिश्चिकितुषो न श्लासुः । स्योनशीरतिथिर्न ग्रीणानो होतैव सन्नं विधतो वि तारीत्	२०५
देवो न यः सविता सत्यमन्मा क्रत्वा निपाति वृजनानि विश्वा । पुरुप्रशस्तो अमतिर्न सत्य आत्मेव शेवो दिधिषाय्यो भूत्	२०६
देवो न यः पृथिवीं विश्वधाया उपक्षेति हितमित्रो न राजा । पुरःसदः शर्मसदो न वीरा अनवद्या पतिजुष्टेव नारी	२०७
तं त्वा नरो दम आ नित्यमिद्धम् अग्ने सचन्त क्षितिषु ध्रुवासु । अधि द्युम्नं नि दधुर्भूर्यस्मिन् भवा विश्वायुर्धरुणो रयीणाम्	२०८

वि पृक्षो अग्ने मघवानो अश्वयुर् वि सूरयो ददतो विश्वमायुः ।	
सनेम वाजं समिथेष्वर्यो भागं देवेषु श्रवसे दधानाः ।	२०९
ऋतस्य हि धेनवो वावशानाः स्मदूधीः पीपयन्त द्युभक्ताः ।	
परावतः सुमतिं भिक्षमाणा वि सिन्धवः समया ससुराद्रिम्	२१०
त्वे अग्ने सुमतिं भिक्षमाणा दिवि श्रवो दधिरे यज्ञियासः ।	
नक्ता च चक्रुरुषसा विरूपे कृष्णं च वर्णमरुणं च सं धुः	२११
यान् राये मर्तान्सुषूदो अग्ने ते स्याम मघवानो वयं च ।	
छायेव विश्वं भुवनं सिसक्षि आपग्निवान् रोदसी अन्तरिक्षम्	२१२
अर्वैर्द्विरग्ने अर्वतो नृभिर्नृन् वीरैर्वीरान् वनुयामा त्वोताः ।	
ईशानासः पितृवित्तस्य रायो वि सूरयः शतहिमा नो अश्वयुः	२१३
एता ते अग्न उचथानि वेधो जुष्टानि सन्तु मनसे हृदे च ।	
शक्रेम रायः सुधुरो यमं ते ऽधि श्रवो देवभक्तं दधानाः	२१४

॥ २४ ॥ (ऋ० १ । ७४ । १-९) [२१५-२५५] गोतमो राहूगणः । गायत्री ।

उपप्रयन्तो अध्वरं मन्त्रं वोचेमाग्रये । आरे अस्मे च शृण्वते	२१५
यः स्त्रीहितीषु पुर्व्यः सैजग्मानासु कृष्टिषु । अरक्षद् दाशुषे गयम्	२१६
उत ब्रुवन्तु जन्तव उदग्निर्वृत्रहार्जनि । धनंजयो रणेरणे	२१७
यस्य दूतो असि क्षये वेषि हव्यानि वीतये । दुस्मत् कृणोष्यध्वरम्	२१८
तमित् सुहव्यमङ्गिरः सुदेवं सहसो यहो । जना आहुः सुबर्हिषम्	२१९
आ च बहासि तां इह देवां उप प्रशस्तये । हव्या सुश्वन्द्र वीतये	२२०
न योरुपबिदिरश्व्यः शृण्वे रथस्य कच्चन । यदग्ने यासि दूत्यम्	२२१
त्वोतो वाज्यहयो ऽभि पूर्वस्मादपरः । प्र दाश्यां अग्ने अस्यात्	२२२
उत द्युमत् सुवीर्यं बृहदग्ने विवाससि । देवेभ्यो देव दाशुषे	२२३

॥ २५ ॥ (ऋ० १ । ७५ । १-५)

जुषस्व सप्रथस्तमं वचो देवप्सरस्तमम् । हव्या जुह्वान आसनि	२२४
अथा ते अङ्गिरस्तम अग्ने वेधस्तम प्रियम् । वोचेम ब्रह्म सानसि	२२५
कस्ते जामिर्जनानाम् अग्ने को दाश्वध्वरः । को ह कस्मिन्नसि श्रितः	२२६

त्वं जामिर्जनानाम् अग्रे मित्रो असि प्रियः । सखा सखिभ्य ईड्यः २२७
यजा नो मित्रावरुणा यजा देवाँ ऋतं बृहत् । अग्रे यक्षि स्वं दमम् २२८

॥ २६ ॥ (ऋ० १ । ७६ । १-५) त्रिष्टुप् ।

का त उर्पेतिर्मनसो वराय भुवदग्ने शतमा का मनीषा ।
को वा यज्ञैः परि दक्षं त आप केन वा ते मनसा दाशेम २२९
एह्यग्र इह होता नि षीद अदब्धः सु पुरणता भवा नः ।
अवतां त्वा रोदसी विश्वमिन्वे यजा महे सौमनसाय देवान् २३०
प्र सु विश्वान् रक्षसो धक्ष्यग्ने भवा यज्ञानामभिशस्तिपावा ।
अथा वह सोमपतिं हरिभ्याम् आतिथ्यमस्मै चक्रमा सुदानै २३१
प्रजावता वचसा वहिरासा च हुवे नि च सत्सीह देवैः ।
वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र बोधि प्रयन्तर्जनितर्वस्त्रनाम् २३२
यथा विप्रस्य मनुषो हविर्भिर् देवाँ अयजः कविभिः कविः सन् ।
एवा होतः सत्यतर त्वमद्य अग्रे मन्द्रया जुह्वा यजस्व २३३

॥ २७ ॥ (ऋ० १ । ७७ । १-५)

कथा दाशेमाग्रये कास्मै देवजुष्टोच्यते भामिने गीः ।
यो मर्त्येष्वमृतं ऋतावा होता यजिष्ठ इत् कृणोति देवान् २३४
यो अध्वरेषु शतम ऋतावा होता तमू नमोभिरा कृणुध्वम् ।
अग्निर्यद् वेर्मतीय देवान् त्स चा बोधाति मनसा यजाति २३५
स हि ऋतुः स मर्यः स साधुर् मित्रो न भूदद्भुतस्य रथीः ।
तं मेधेषु प्रथमं देवयन्तीर् विश उप ब्रुवते दुस्ममारीः २३६
स नो नृणां नृतमो रिशादा अग्निर्गिरोऽवसा वेतु धीतिम् ।
तना च ये मधवानः शर्विष्ठा वाजप्रसूता इषयन्त मनम् २३७
एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा विप्रैर्भिरस्तोष्ट जातवेदाः ।
स एषु द्युम्नं पीपयत् स वाजं स पुष्टिं याति जोषमा चिकित्वान् २३८

॥ २८ ॥ (ऋ० १ । ७८ । १-५) गायत्री

अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे । द्युम्नैरभि प्र णोनुमः २३९

तमु त्वा गोतमो गिरा रायस्कामो दुवस्यति । द्युम्नैरभि प्र णौनुमः	२४०
तमु त्वा वाजसातमम् अङ्गिरस्वद् हवामहे । द्युम्नैरभि प्र णौनुमः	२४१
तमु त्वा वृत्रहन्तमं यो दस्यूरवधूनुषे । द्युम्नैरभि प्र णौनुमः	२४२
अवौचाम रहूगणा अग्नये मधुमद् वचः । द्युम्नैरभि प्र णौनुमः	२४३

॥ २९ ॥ (ऋ० १।७९।१-१२)

२४४-४६ त्रिष्टुप्; २४७-४९ उष्णिक्, २५०-२५५ गायत्री ।

हिरण्यकेशो रजसो विसारे ऽहिर्धुनिर्वार्त इव ध्रजीमान् ।	
शुचिभ्राजा उषसो नवेदा यशस्वतीरपस्युवो न सत्याः	२४४
आ तै सुपर्णा अभिनन्तु एवैः कृष्णो नौनाव वृषभो यदीदम् ।	
शिवाभिर्न स्मर्यमानाभिरागात् पतन्ति मिहः स्तनयन्त्यभ्रा	२४५
यदीमृतस्य पर्यसा पियानो नयन्नृतस्य पथिभी रजिष्ठैः ।	
अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा त्वचं पृञ्चन्त्युपरस्य योनौ	२४६
अग्ने वाजस्य गोमत् ईशानः सहसो यहो । अस्मे धेहि जातवेदो महि श्रवः	२४७
स ईधानो वसुष्कवि अभिरीळैन्यो गिरा । रेवदुस्मभ्यं पुर्वणीक दीदिहि	२४८
क्षपो राजन्नुत त्मना ऽग्ने वस्तोरुतोषसः । स तिमजम्भ रक्षसो दह प्रति	२४९
अवा नो अग्न ऊतिभिर् गायत्रस्य प्रमर्मणि । विश्वासु धीषु वन्द्य	२५०
आ नो अग्ने रयि भर सत्रासाहं वरेण्यम् । विश्वासु पृतसु दुष्टरम्	२५१
आ नो अग्ने सुचेतुना रयि विश्वायुपोषसम् । मर्दिकं धेहि जीवसे	२५२
प्र पूतास्तिग्मशोचिषे वाचो गोतमाग्नये । भरस्व सुम्नयुगिरः	२५३
यो नो अग्नेऽभिदासति अन्ति दूरे पदीष्ट सः । अस्माकमिद् वृधे भव	२५४
सहस्राक्षो विचर्षणिर् अग्नी रक्षोसि सेधति । होता गृणीत उक्थ्यः	२५५

॥ ३० ॥ (ऋ० १।९४।१-१६)

[२५६-२७१] कुत्स आङ्गिरसः । जगती; २७०-७१ त्रिष्टुप् ।

इमं स्तोममर्हते जातवेदसे रथमिव सं महेमा मनीषया ।	
भद्रा हि नः प्रमतिरस्य संसदि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५६
यस्मै त्वमायजसे स साधति अनुर्वा क्षेति दधते सुवीर्यम्	
स तूताव नैनमश्रोत्यंहतिर् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५७

शकेम त्वा समिधं साधया धियस् त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।	
त्वमादित्याँ आ वह तान् ह्युश्मसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५८
भरामेध्वं कृणवामा हवींषि ते चितयन्तः पर्वणापर्वणा वयम् ।	
जीवातवे प्रतरं साधया धियो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२५९
विशां गोपा अस्य चरन्ति जन्तवो द्विपच्च यदुत चतुष्पदक्षुभिः ।	
चित्रः प्रकेत उषसो महँ असि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६०
त्वमध्वर्युरुत होतासि पूर्यः प्रशास्ता पोता जुनुषा पुरोहितः ।	
विश्वा विद्राँ आर्तिवज्या धीर पुष्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६१
यो विश्वतः सुप्रतीकः सदङ्कुसि दूरे चित् सन्तळिदिवार्ति रोचसे ।	
रात्र्याश् चिदन्धो अति देव पश्यसि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६२
पूर्वो देवा भवतु सुन्वतो रथो ऽस्माकं शंसो अभ्यस्तु दूढ्यः ।	
तदा जानीतोत पुष्यता वचो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६३
वधैर्दुःशंसाँ अप दूढ्यो जहि दूरे वा ये अन्ति वा के चिद्विणः ।	
अथा यज्ञाय गृणते सुगं कृधि अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६४
यदयुक्था अरुषा रोहिता रथे वार्तजूता वृषभस्येव ते रवः ।	
आदिन्वसि वनिनो धूमकेतुना ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६५
अध स्वनादुत बिभ्युः पतत्रिणो द्रप्ता यत् ते यवसादो व्यस्थिरन् ।	
सुगं तत् ते तावकेभ्यो रथेभ्यो ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६६
अयं मित्रस्य वरुणस्य धार्यसे ऽवयातां मरुतां हेळो अङ्गुतः ।	
मृळा सु नो भूत्वेषां मनः पुनर् अग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६७
देवो देवानामसि मित्रो अङ्गुतो वसुर्वसूनामसि चारुरध्वरे ।	
शर्मन् तस्याम तव सप्रथस्तमे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६८
तत् ते भद्रं यत् समिद्धः स्वे दमे सोमाहुतो जरसे मृळ्यत्तमः ।	
दधासि रत्नं द्रविणं च दाशुषे ऽग्ने सख्ये मा रिषामा वयं तव	२६९
यस्मै त्वं सुद्रविणो ददाशो ऽनागास् त्वमदिते सर्वताता ।	
यं भद्रेण शर्वसा चोदयासि प्रजावता राधसा ते स्याम	२७०

स त्वमग्ने सौभगत्वस्य विद्वान् अस्माकमायुः प्र तिरेह देव ।
तन् नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः २७१

॥ ३१ ॥ (ऋ० १ । १२७ । १-११)

[२७२-२९१] परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, २७७ अतिधृतिः ।

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसुं सुनुं सहसो ज्ञातवेदसं विप्रं न ज्ञातवेदसम् ।
य ऊर्ध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा ।
घृतस्य विभ्राष्टिमनु वष्टि शोचिषा ऽऽजुह्वानस्य सर्पिषः २७२
यजिष्ठं त्वा यजमाना हुवेम ज्येष्ठमङ्गिरसां विप्र मन्मभिर् विप्रैभिः शुक्र मन्मभिः ।
परिज्मानमिव द्यां होतारं चर्षणीनाम् ।
शोचिष्केशं वृषणं यमिमा विशः प्रावन्तु जूतये विशः २७३
स हि पुरु चिदोर्जसा विरुक्मता दीद्यानो भवति द्रुहन्तरः परशुर्न द्रुहन्तरः ।
वील्य चिद् यस्य समृतौ श्रुवद् वनेव यत् स्थिरम् ।
निष्पहमाणो यमते नायते धन्वासहा नायते २७४
दृष्ट्वा चिदस्मा अनु दुर्यथा विदे तेजिष्ठाभिररणिभिर्दाष्ट्यवसे ऽग्नये द्वाष्ट्यवसे ।
प्र यः पुरुणि गार्हते तक्षद् वनेव शोचिषा ।
स्थिरा चिदन्ना नि रिणात्योर्जसा नि स्थिराणि चिदोर्जसा २७५
तमस्य पृक्षमुपरासु धीमहि नक्तं यः सुदर्शतरो दिवातराद् अग्रायुषे दिवातरात् ।
आदुस्यायुर्ग्रभणवद् वील्य शर्म न सूनवे ।
भक्तमभक्तमवो व्यन्तो अजरा अग्नयो व्यन्तो अजराः २७६
स हि शर्धो न मारुतं तुविष्वणिर् अमस्वतीषूर्वरास्विष्टनिर् आर्तिनास्विष्टनिः ।
आदद्ब्रव्यान्यादुदिर् यज्ञस्य केतुर्हर्णा ।
अथ स्मास्य हर्षतो हर्षीवतो विश्वे जुषन्त पन्थां नरः शुभे न पन्थाम् २७७
द्विता यदी क्रीस्तासो अभिद्यवो नमस्यन्त उपवोचन्त भृगवो मग्नन्तो द्वाशा भृगवः ।
अग्निरीशे वस्त्रानां शुचिर्यो धर्णिरेषाम् ।
प्रियाँ अपिर्धौर्वैनिषीष्ट मेधिर् आ वनिषीष्ट मेधिः २७८

विश्वासां त्वा विशां पतिं हवामहे सर्वसां समानं दंपतिं भुजे सत्यगिर्वाहसं भुजे ।

अतिथिं मानुषाणां पितुर्न यस्यासया ।

अमी च विश्वे अमृतास आ वयो हव्या देवेष्वा वयः २७९

त्वमग्ने सहसा सहन्तमः शुष्मिन्तमो जायसे देवतातये रयिर्न देवतातये ।

शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युष्मिन्तम उत क्रतुः ।

अध स्मा ते परि चरन्त्यजर श्रुष्टीवानो नाजर २८०

प्र वो महे सहसा सहस्वत उषर्बुधे पशुषे नाग्ये स्तोमो बभूत्वग्नये ।

प्रति यदी हविष्मान् विश्वासु क्षासु जोगुवे ।

अग्ने रेभो न जरत ऋषूणां जूणिर्होत ऋषूणाम् २८१

स नो नेदिष्ठं ददृशान् आ भर अग्ने देवेभिः सचंनाः सुचेतुनां महो रायः सुचेतुनां ।

महिं शविष्ठ नस्कृधि संचक्षे भुजे अस्यै ।

महिं स्तोतृभ्यो मघवन् त्सुवीर्यं मथीरुग्नो न शर्वसा २८२

॥ ३२ ॥ (क्र० १ । १२८ । १-८)

अयं जायत मनुषो धरीमणि होता यजिष्ठ उशिजामनु व्रतम् अग्निः स्वमनु व्रतम् ।

विश्वश्रुष्टिः सखीयते रयिरिव श्रवस्यते ।

अदब्धो होता नि षदद्विळस्पदे परिर्वीत इळस्पदे २८३

तं यज्ञसाधमपि वातयामसि क्रतस्य पथा नमसा हविष्मता देवताता हविष्मता ।

स न ऊर्जामुपाभृति अया कृपा न जूर्यति ।

यं मातरिश्वा मनवे परावतो देवं भाः परावतः २८४

एवेन सद्यः पर्येति पार्थिवं मुहुर्गीं रेतो वृषभः कर्निकदद् दधद् रेतः कर्निकदत् ।

शतं चक्षाणो अक्षभिर् देवो वनेषु तुर्वणिः ।

सद्रो दधान उपरेषु सानुषु अग्निः परेषु सानुषु २८५

स सुक्रतुः पुरोहितो दमेदमे ऽग्निर्यज्ञस्याध्वरस्य चेतति क्रत्वा यज्ञस्य चेतति ।

क्रत्वा वेधा इषूयते विश्वा जातानि पस्पशे ।

यतो घृतश्रीरतिथिरजायत वह्निर्वेधा अजायत २८६

क्रत्वा यदस्य तर्विषीषु पृथ्वते ऽग्नेरवेण मरुतां न भोज्या ईषिराय न भोज्या ।

स हि ष्मा दानमिन्वति वस्त्रानां च मज्जना ।

स नस् त्रासते दुरितादभिहुतः शंसादुषादभिहुतः

२८७

विश्वो विहाया अरतिर्वसुर्दधे हस्ते दक्षिणे तरणिर्न शिश्रथच् छ्रवस्यया न शिश्रथत् ।

विश्वस्मा इदिषुध्यते दैवत्रा हुव्यमोहिषे ।

विश्वस्मा इत् सुकृते वारमृण्वति अग्निर्द्वारा व्यृण्वति

२८८

स मानुषे वृजने शंतमो हितोऽग्निर्यज्ञेषु जेन्यो न विस्पतिः प्रियो यज्ञेषु विस्पतिः ।

स हुव्या मानुषाणाम् इळा कृतानि पत्यते ।

स नस् त्रासते वरुणस्य धूर्तेर् महो देवस्य धूर्तेः

२८९

अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं न्येरिरे हव्यवाहं न्येरिरे ।

विश्वायुं विश्ववेदसं होतारं यजतं कविम् ।

देवासो रण्वमवसे वसूयवो गीर्भी रण्वं वसूयवः

२९०

॥ ३३ ॥ (ऋ० १ । १३९ । ७)

ओ षू णो अग्ने शृणुहि त्वमीळितो देवेभ्यो ब्रवसि यज्ञियेभ्यो राजभ्यो यज्ञियेभ्यः ।

यद्ध त्यामङ्गिरोभ्यो धेनुं देवा अदत्तन ।

वि तां दुहे अर्यमा कर्तरी सचा एष तां वेद मे सचा

२९१

॥ ३४ ॥ (ऋ० १ । १४० । १-१३)

[२९२-३६०] दीर्घतमा औचथ्यः । जगती, ३०१ त्रिष्टुप्वा, ३०३-४ त्रिष्टुप् ।

वेदिषदे प्रियधामाय सुद्युते धासिर्मिव ग्र भरा योनिमग्रये ।

वस्त्रेणैव वासया मन्मना शुचिं ज्योतीरथं शुक्रवर्णं तमोहनम्

२९२

अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नमृज्यते संवत्सरे वावृधे जग्धमी पुनः ।

अन्यस्यासा जिह्वया जेन्यो वृषा न्यून्येन वनिनो मृष्ट वारणः

२९३

कृष्णप्रुतौ वेविजे अस्य सक्षिता उभा तरेते अभि मात्रा शिशुम् ।

प्राचारिह्वं ध्वसयन्तं तृषुच्युतम् आ साच्यं कुपयं वर्धनं पितुः

२९४

मुमुक्ष्वोऽनवे मानवस्यते रघुद्रुवः कृष्णसीतास ऊ जुवः ।

असमना अजिरासो रघुष्यदो वातजूता उप युज्यन्त आशवः

२९५

आदस्य ते ध्वसयन्तो वृथैरते कृष्णमभ्वं महि वर्षः करिंक्रतः ।	
यत् सीं महीमवनिं प्राभि मर्मृशद् अभिश्चसन् त्स्तनयन्नेति नानदत्	२९६
भूषन् न योजधिं बभ्रूषु नम्रते वृषेव पत्नीरभ्येति रोरुवत् ।	
ओजायमानस् तन्वश्च शुम्भते भीमो न शृङ्गा दविधाव दुर्गृभिः	२९७
स संस्तिरो विष्टिरः सं गृभायति जानन्नेव जानतीर्नित्य आ शये ।	
पुनर्वर्धन्ते अपि यन्ति देव्यम् अन्यद् वर्षः पित्रोः कृण्वते सचा	२९८
तमग्रुवः केशिनीः सं हि रैभिर ऊर्ध्वास तस्थुर्मग्नृषीः प्रायवे पुनः ।	
तासां जरां प्रमुञ्चन्नेति नानदद् असुं परं जनयञ्जीवमस्तृतम्	२९९
अधीवासं परि मातृ रिहन्नहं तुविग्रेभिः सत्वभिर्याति वि जयः ।	
वयो दधत् पद्वते रेरिहत् सदा अनु श्येनीं सचते वर्तनीरहं	३००
अस्मार्कमग्रे मघवत्सु दीदिहि अध श्वसीवान् वृषभो दमूनाः ।	
अवास्या शिशुमतीरदीदेर् वमेव युत्सु परिजर्मुराणः	३०१
इदमग्रे सुधितं दुधितादधि प्रियादु चिन् मन्मनः प्रेयो अस्तु ते ।	
यत् ते शुक्रं तन्वोऽं रोचते शुचि तेनास्मभ्यं वनसे रत्नमा त्वम्	३०२
रथाय नार्वमुत नो गृहाय नित्यारित्रां पद्वतीं रास्यग्रे ।	
अस्माकं वीरां उत नो मघोनो जनांश्च या पारयाच्छर्म या च	३०३
अभी नो अग्र उक्थमिज् जुगुर्या द्यावाक्षामा सिन्धवश्च स्वर्गूर्ताः ।	
गव्यं यव्यं यन्तो दीर्घाहा इषं वरमरुण्यो वरन्त	३०४

॥ ३५ ॥ (ऋ० १ । १४१ । १-१३) जगती, ३१६-१७ त्रिष्टुप् ।

बळित्था तद् वर्षेषु धायि दर्शतं देवस्य भर्गः सहस्रो यतो जनिं ।	
यदीमुप ह्वरते साधते मतिर् ऋतस्य धेना अनयन्त सस्रुतः	३०५
पृथो वर्षः पितुमान् नित्य आ शये द्वितीयमा समशिवासु मातृषु ।	
तृतीयमस्य वृषभस्य दोहसे दशप्रमतिं जनयन्त योषणः	३०६
निर्यदीं बुध्नान् महिषस्य वर्षस ईशानासुः शर्वसा क्रन्तं सूरयः ।	
यदीमनु प्रदिवो मध्व आधवे गुहा सन्तं मातरिश्वा मथायति	३०७

प्र यत् पितुः परमाग्नीयते परि आ पृक्षुधो वीरुधो दंसु रोहति ।
 उभा यदस्य जनुषं यदिन्वत आदिद् यविष्ठो अभवद् घृणा शुचिः ३०८
 आदिन्मातृराविशद् यास्वा शुचिर् अहिंस्यमान उर्विया वि वावृधे ।
 अनु यत् पूर्वा अरुहत् सनाजुवो नि नव्यसीष्ववरासु धावते ३०९
 आदिद्वोतारं वृणते दिविष्टिषु भर्गमिव पपृचानासं ऋञ्जते ।
 देवान् यत् क्रत्वा मज्मनां पुरुष्टुतो मर्तुं शंसं विश्वधा वेति धायसे ३१०
 वि यदस्थाद् यजतो वातचोदितो ह्यारो न वक्त्रा जरणा अनाकृतः ।
 तस्य पतमन् दुक्षुषः कृष्णजैहसः शुचिजन्मनो रज आ व्यध्वनः ३११
 रथो न यातः शिर्कभिः कृतो घाम् अङ्गैभिररुवेभिरीयते ।
 आदस्य ते कृष्णासौ दक्षि सूरयः शूरस्येव त्वेषथादीषते वयः ३१२
 त्वया ह्यग्रे वरुणो धृतव्रतो मित्रः शाशद्रे अर्यमा सुदानवः ।
 यत् सीमनु क्रतुना विश्वथा विश्रुर् अरान् न नेमिः परिभूरजायथाः ३१३
 त्वमग्रे शशमानाय सुन्वते रत्नं यविष्ठ देवतातिमिन्वसि ।
 तं त्वा नु नव्यं सहसो युवन् वयं भगं न कारे महिरत्न धीमहि ३१४
 अस्मे रयि न स्वर्थं दमूनसं भगं दक्षं न पपृचासि धर्णसिम् ।
 रश्मीरिव यो यमति जन्मनी उभे देवानां शंसमृत आ च सुक्रतुः ३१५
 उत नः सुद्योत्मा जीराश्चो होता मन्द्रः शृणवच् चन्द्ररथः ।
 स नो नेषन्नेषतमैरमूरो ऽग्निर्वामं सुवितं वस्यो अच्छ ३१६
 अस्ताव्यग्निः शिमीवद्भिरकैः साम्राज्याय प्रतरं दधानः ।
 अमी च ये मघवानो वयं च मिहं न सूरौ अति निष्टतन्युः ३१७

॥ ३६ ॥ (ऋ० १ । १४३ । १-८) जगती, ३२५ त्रिष्टुप् ।

प्र तव्यसीं नव्यसीं धीतिमग्रये वाचो मति सहसः सुनवे भरे ।
 अपां नपाद् यो वसुभिः सह प्रियो होता पृथिव्यां न्यसीददृत्विर्यः ३१८
 स जायमानः परमे व्योमनि आविरग्निरभवन् मातरिश्चने ।
 अस्य क्रत्वा समिधानस्य मज्मना प्र द्यावा शोचिः पृथिवी अरोचयत् ३१९

अस्य त्वेषा अजरा अस्य भानवः सुसंद्दशः सुप्रतीकस्य सुद्युतः ।	
भात्वक्षसो अत्यक्तुर्न सिन्धवो ऽग्ने रजन्ते असंसन्तो अजराः	३२०
यमेरिरे भृगवो विश्ववेदसं नाभा पृथिव्या भुवनस्य मज्जना ।	
अग्निं तं गीर्भिर्हिनुहि स्व आ दमे य एको वस्वो वरुणो न राजति	३२१
न यो वराय मरुतामिव स्वनः सेनेव सृष्टा दिव्या यथाशनिः ।	
अग्निर्जम्भैस् तिगितैरत्ति भवति योधो न शत्रून् त्स वना न्यृञ्जते	३२२
कुविन्नो अग्निरुच्यस्य वीरसद् वसुष्कुविद् वसुभिः काममावरत् ।	
चोदः कुवित् तुतुज्यात् सातये धियः शुचिप्रतीकं तमया धिया गृणे	३२३
धृतप्रतीकं व ऋतस्य धूर्षदम् अग्निं मित्रं न संमिधान ऋञ्जते ।	
हन्धानो अक्रो विदथेषु दीद्यच् छुक्रवर्णामुदु नो यंसते धियम्	३२४
अग्रयुच्छन्नप्रयुच्छद्भिरग्ने शिवेभिर्नः पायुभिः पाहि शग्मैः ।	
अदब्धेभिरदपितेभिरिष्टे ऽनिमिषद्भिः परि पाहि नो जाः	३२५

॥ ३७ ॥ (ऋ० १ । १४४ । १-७) जगती ।

एति प्र होता व्रतमस्य मायया ऊर्ध्वा दधानः शुचिपेशसं धियम् ।	
अभि सुचः क्रमते दक्षिणावृतो या अस्य धामं प्रथमं ह निसते	३२६
अभीमृतस्य दोहना अनूषत योनौ देवस्य सदेने परीवृताः ।	
अपामुपस्थे विभृतो यदावसद् अर्धं स्वधा अधयद् याभिरीयते	३२७
युयूषतः सर्वयसा तदिद् वपुः समानमर्थं वितरित्रता मिथः	
आदीं भगो न हव्यः समुस्मदा वोहुर्न रश्मीन् त्समयंस्त सारथिः	३२८
यमीं द्वा सर्वयसा सपर्यतः समाने योना मिथुना समोकसा ।	
दिवा न नक्तं पलितो युवाजनि पुरू चरन्नजरो मानुषा युगा	३२९
तमीं हिन्वन्ति धीतयो दश त्रिशो देवं मतींस ऊतये हवामहे ।	
धनोरधि प्रवत् आ स ऋण्वति अभिव्रजद्भिर्वयुना नवाधित	३३०
त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि त्वं पार्थिवस्य पशुपा इव त्मना ।	
एनीं त एते बृहती अभिश्रिया हिरण्ययी वक्करी बहिराशाते	३३१

अग्ने जुषस्व प्रति हर्य तद् वचो मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो ।
यो विश्वतः प्रत्यङ्मुखिं दर्शतो रणवः संदृष्टौ पितुमाँ इव क्षयः ३३२

॥ ३८ ॥ (ऋ० १ । १४५ । १-५) जगती, ३३७ त्रिष्टुप् ।

तं पृच्छता स जगामा स वेद स चिकित्वाँ ईयते सा न्वीयते ।
तस्मिन्तसन्ति प्रशिषस्तस्मिन्निष्ठयः स वाजस्य शवसः शुष्मिणस्पतिः ३३३

तमित् पृच्छन्ति न सिमो वि पृच्छति स्वेनेव धीरो मनसा यदग्रभीत् ।
न मृष्यते प्रथमं नापरं वचो ऽस्य क्रत्वा सचते अप्रदपितः ३३४

तमिद् गच्छन्ति जुह्वस्तमर्वतीर् विश्वान्येकः शृणवद् वचांसि मे ।
पुरुषैषस् तत्तुरियज्ञसाधनो ऽच्छिद्रोतिः शिशुरादत्त सं रभः ३३५

उपस्थायं चरति यत् समारत सद्यो जातस् तत्सार युज्येभिः ।
अभि श्वान्तं मृशते नान्धे मुदे यदीं गच्छन्त्युशतीरपिष्ठितम् ३३६

स ई मृगो अप्यो वनर्गुर् उप त्वच्युपमस्यां नि धायि ।
व्यब्रवीद् वयुना मर्त्येभ्यो ऽग्निर्विद्राँ ऋतचिद्धि सत्यः ३३७

॥ ३९ ॥ (ऋ० १ । १४६ । १-५) त्रिष्टुप् ।

त्रिमूर्धानं सप्तर्दिम गृणीषे ऽनूनमग्निं पित्रोरुपस्थे ।
निषत्तमस्य चरतो ध्रुवस्य विश्वा दिवो रौचुनापप्रिवांसम् ३३८

उक्षा महाँ अभि ववक्ष एने अजरस् तस्थावितऊतिर्ऋष्वः ।
उर्व्याः पदो नि दधाति सानौ रिहन्त्यूधौ अरुषासौ अस्य ३३९

समानं वत्समभि संचरन्ती विष्वग् धेनू वि चरतः सुमेके ।
अनपवृज्याँ अध्वनो मिमानि विश्वान् केताँ अधि महो दधानि ३४०

धीरासः पदं क्रवयो नयन्ति नाना हृदा रक्षमाणा अजुर्यम् ।
सिषासन्तः पर्यपश्यन्त सिन्धुम् आविरैभ्यो अभवत् स्रयो नृन् ३४१

दिदृक्षेण्यः परि काष्ठासु जेन्य ईलेन्यो महो अभीय जीवसे ।
पुरुत्रा यदभवत् स्रहैभ्यो गर्भेभ्यो मधवा विश्वदर्शतः ३४२

॥ ४० ॥ (ऋ० १ । १४७ । १-५)

कथा ते अग्ने शुचयन्त आयोर् ददाशुर्वाजेभिराशुषाणाः ।
उभे यत् तोके तनये दधाना ऋतस्य सामन् रणयन्त देवाः ३४३

बोधा मे अस्य वचसो याविष्टु मंहिष्ठस्य प्रभृतस्य स्वधावः ।	
पीयति त्वो अनु त्वो गृणाति वन्दारुस् ते तन्वं वन्दे अग्ने	३४४
ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् ।	
ररक्ष तान् सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाहं देशुः	३४५
यो नो अग्ने अररिवाँ अघायुर् अरातीवा मर्चयति द्वयेन ।	
मन्त्रो गुरुः पुनरस्तु सो अस्मा अनु मृक्षीष्ट तन्वं दुरुक्तैः	३४६
उत वा यः सहस्य प्रविद्वान् मतो मतिं मर्चयति द्वयेन ।	
अतः पाहि स्तवमान स्तुवन्तम् अग्ने मार्किर्नो दुरिताय धायीः	३४७

॥ ४१ ॥ (ऋ० १ । १४८ । १-५)

मथीद् यदीं विष्टो मातरिश्वा होतारं विश्वाप्सुं विश्वदैव्यम् ।	
नि यं दुधुर्मनुष्यासु विश्वु स्वर्णं चित्रं वपुषे विभार्वम्	३४८
दुदानमिन्न ददभन्त मन्म अग्निर्वरुथं मम तस्य चाकन् ।	
जुषन्त विश्वान्यस्य कर्म उपस्तुतिं भरमाणस्य कारोः	३४९
नित्ये चिन्नु यं सदर्ने जगृभ्रे प्रशस्तिभिर्दधिरे यज्ञियांसः	
प्र स्र नयन्त गृभयन्त इष्टौ अश्वांसो न रथ्यो रारहाणाः	३५०
पुरुणि दुस्मो नि रिणाति जम्भैर् आद् रोचते वन आ विभार्व ।	
आर्दस्य वातो अनु वाति शोचिर् अस्तुर्न शर्यामसनामनु धून्	३५१
न यं रिपवो न रिषण्यवो गर्भे सन्त रेषणा रेषयन्ति ।	
अन्धा अपश्या न दभन्नभिख्या नित्यांस ई प्रेतारो अरक्षन्	३५२

॥ ४२ ॥ (ऋ० १ । १४९ । १-५) विराट्

महः स राय एषते पतिर्दन् इन इनस्य वसुनः पद आ ।	
उप भ्रजन्तमद्रयो विधन्ति	३५३
स यो वृषा नरां न रोदस्योः श्रवोभिरस्ति जीवपीतसर्गः ।	
प्र यः संस्त्राणः शिश्रीत योनौ	३५४
आ यः पुरं नार्मिणीमदीदिद् अत्यः कविर्नभन्योऽ नार्वा ।	
स्रो न रुक्काञ्छतात्मा	३५५

अभि द्विजन्मा त्री रौचनानि विश्वा रजांसि शुशुचानो अस्थात् ।
होता यजिष्ठो अपां सुधस्थे

३५६

अयं स होता यो द्विजन्मा विश्वा दुधे वार्यीणि श्रवस्या ।
मर्तो यो अस्मै सुतुको ददाश

३५७

॥ ४३ ॥ (ऋ० १ । १५० । १-३) उष्णिक् ।

पुरु त्वा दाश्चान् वोचे अरिग्ने तव स्विदा । तोदस्यैव शरण आ महस्य ३५८
व्यनिनस्य धनिनः प्रहोषे चिदररुषः । कदा चन प्रजिगतो अदेवयोः ३५९
स चन्द्रो विप्र मर्त्यो महो ब्राधन्तमो दिवि । प्रप्रेत् ते अग्ने वनुषः स्याम ३६०

॥ ४४ ॥ (ऋ० १ । १८९ । १-८)

(३६१-३६८) अगस्त्यो मैत्रावरुणः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

युयोध्यः स्मज्जुहुराणमेनो भूर्यिष्ठां ते नमउक्ति विधेम ३६१

अग्ने त्वं पारया नव्यो अस्मान् त्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।

पूश्च पृथ्वी बहुला न उर्वी मवां तोकाय तनयाय शं योः ३६२

अग्ने त्वमस्मद् युयोध्यमीवा अर्नमित्रा अभ्यमन्त कृष्टीः ।

पुनरस्मभ्यं सुविताय देव क्षां विश्वेभिरमृतैर्मियजत्र ३६३

पाहि नो अग्ने पायुभिरजस्रैर् उत प्रिये सदन आ शुशुक्नान् ।

मा ते मयं जरितारं यविष्ठ नूनं विदुन् मापरं सहस्वः ३६४

मा नो अग्नेऽव सृजो अघाय अविष्यवे रिषवे दुच्छुनायै ।

मा दत्वते दशते मादते नो मा रीषते सहसावन् परा दाः ३६५

वि घ त्वावाँ ऋतजात यंसद् गृणानो अग्ने तन्वेऽ वरूथम् ।

विश्वाद् रिरिक्षोरुत वा निनित्सोर् अभिहुतामसि हि देव विष्पद् ३६६

त्वं ताँ अग्न उभयान् वि विद्वान् वेषि प्रपित्वे मनुषो यजत्र ।

अभिपित्वे मनवे शास्यो भूर् मर्मृजेन्य उशिग्मिर्नाक्रः ३६७

अवोचाम निवर्चनान्यस्मिन् मानस्य सूनुः सहसाने अग्नौ ।

वयं सहस्रमृषिभिः सनेम विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ३६८

॥ ४५ ॥ (ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलं २, सूक्तं १, मन्त्राः १-१६)

जगती । (३६९-४१५) गृत्समदः शौनकः (आङ्गिरसः शौनहोत्रो भार्गवः) ।

त्वमग्ने द्युभिस् त्वमाशुशुक्षणिस् त्वमद्भ्यस् त्वमश्मनस् परि ।	
त्वं वनेभ्यस् त्वमोषधीभ्यस् त्वं नृणां नृपते जायसे शुचिः	३६९
तवाग्ने होत्रं तवं पोत्रमृत्विच्यं तवं नेष्टं त्वमग्निर्दृतायतः ।	
तवं प्रश्नास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश् च नो दमे	३७०
त्वमग्ने इन्द्रो वृषभः सतामसि त्वं विष्णुरुग्रायो नमस्यः ।	
त्वं ब्रह्मा रयिविद् ब्रह्मणस्पते त्वं विधर्तः सचसे पुरंध्या ।	३७१
त्वमग्ने राजा वरुणो धृतव्रतस् त्वं मित्रो भवसि दुस्म ईड्यः ।	
त्वमर्यमा सत्पतिर्यस्य संशुजं त्वमंशो विदथे देव भाजयुः	३७२
त्वमग्ने त्वष्टा विधते सुवीर्यं तव श्रावो मित्रमहः सजात्यम् ।	
त्वमाशुहेमा ररिषे स्वश्च्यं त्वं नरां शर्धो असि पुरुवसुः	३७३
त्वमग्ने रुद्रो असुरो महो दिवस् त्वं शर्धो मारुतं पृक्ष ईशिषे ।	
त्वं वातैररुणैर्यासि शंगयस् त्वं पूषा विधतः पांसि नु त्मना	३७४
त्वमग्ने द्रविणोदा अरंकृते त्वं देवः सविता रत्नधा असि ।	
त्वं भगो नृपते वस्व ईशिषे त्वं पायुर्दमे यस् तेऽविधत्	३७५
त्वामग्ने दम आ विस्पतिं विशस् त्वां राजानं सुविदत्रमृज्जते ।	
त्वं विश्वानि स्वनीक पत्यसे त्वं सहस्राणि शता दश प्रति	३७६
त्वामग्ने पितरमिष्टिभिर्नरस् त्वां भ्रात्राय शम्या तनुरुचम् ।	
त्वं पुत्रो भवसि यस् तेऽविधत् त्वं सखा सुशेवः पास्याधृषः	३७७
त्वमग्ने ऋभुराके नमस्यस् त्वं वाजस्य क्षुमतो राय ईशिषे ।	
त्वं वि भास्यनु दक्षि दावने त्वं विशिक्षुरसि यज्ञमातर्निः	३७८
त्वमग्ने अदितिर्देव दाशुषे त्वं होत्रा भारती वर्धसे गिरा ।	
त्वमिळा शतहिमासि दक्षसे त्वं वृत्रहा वसुपते सरस्वती	३७९
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं वयस् तवं स्पार्हे वर्ण आ संदृशि श्रियः ।	
त्वं वाजः प्रतरणो बृहन्नसि त्वं रयिर्बहुलो विश्वतस्पृथुः	३८०

त्वामग्न आदित्यास आस्यं । त्वां जिह्वां शुचयश् चक्रिरे कवे ।	
त्वां रातिषाचो अध्वरेषु सश्चिरे त्वे देवा हविरदुन्त्याहुतम् ।	३८१
त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो अद्रुह आसा देवा हविरदुन्त्याहुतम्	
त्वया मर्तासः स्वदन्त आसुति त्वं गर्भो वीरुधौ जज्ञिषे शुचिः	३८२
त्वं तान् त्सं च प्रति चासि मज्मना अग्ने सुजात प्र च देव रिच्यसे ।	
पृथो यदत्र महिना वि ते भुवद् अनु द्यावापृथिवी रोदसी उभे	३८३
ये स्तोत्रभ्यो गोअग्रामश्वपेशसम् अग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः ।	
अस्माश्च तांश्च प्र हि नेषि वस्य आ बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	३८४

॥ ४६ ॥ (ऋ० २ । २ । १-१३)

यज्ञेन वर्धत जातवैदसम् अग्नि यजध्वं हविषा तना गिरा ।	
समिधानं सुप्रयसं स्वर्णरं द्युक्षं होतारं वृजनेषु धूर्षदम्	३८५
अभि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरे अग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।	
दिव इवेदरतिर्मानुषा युगा आक्षपो भासि पुरुवार संयतः	३८६
तं देवा बुध्ने रजसः सुदंसं दिवस्पृथिव्योररति न्येरिरे ।	
रथमिव वैद्यं शुक्रशौचिषम् अग्नि मित्रं न क्षितिषु प्रशंस्यम्	३८७
तमुक्षमाणं रजसि स्व आ दमे चन्द्रमिव सुरुचं ह्वार आ दधुः ।	
पृथ्याः पतरं चितयन्तमक्षभिः पाथो न पायुं जनसी उभे अनु	३८८
स होता विश्वं परि भूत्वध्वरं तमु हव्यैर्मनुष ऋञ्जते गिरा ।	
हिरिशिप्रो वृधसानासु जर्धुरद् द्यौर्न स्तृभिश् चितयद् रोदसी अनु	३८९
स नो रेवत् समिधानः स्वस्तये संददस्वान् रयिमस्मास्तु दीदिहि ।	
आ नः कृणुष्व सुविताय रोदसी अग्ने हव्या मनुषो देव वीतये	३९०
दा नो अग्ने बृहतो दाः सहस्रिणो दुरो न वाजं श्रुत्या अपा वृधि ।	
प्राची द्यावापृथिवी ब्रह्मणा कृधि स्वर्णं शुक्रमुषसो वि दिद्युतुः	३९१
स इधान उषसो राम्या अनु स्वर्णं दीदेदरुषेण भानुना ।	
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो राजा विशामतिथिश् चारुरायवे	३९२

एवा नो अग्ने अमृतेषु पून्यं धीष् पीपाय बृहद्विवेषु मानुषा ।	
दुहाना धेनुर्वृजनैषु कारवे त्मना शतिनं पुरुरूपमिषणि	३९३
वयमग्ने अर्वता वा सुवीर्यं ब्रह्मणा वा चितयेमा जनाँ अति ।	
अस्माकं द्युम्नमधि पञ्च कृष्टिषु उच्चा स्वर्णं शुशुचीत दुष्टरम्	३९४
स नो बोधि सहस्य प्रशंस्यो यस्मिन् त्सुजाता इषयन्त सूरयः ।	
यमग्ने यज्ञमुपयन्ति वाजिनो नित्ये तोके दीदिवांसं स्वे दमे	३९५
उभयांसो जातवेदः स्याम ते स्तोतारो अग्ने सूरयश् च शर्मणि ।	
वस्वो रायः पुरुश्चन्द्रस्य भूयसः प्रजावतः स्वपत्यस्य शग्धि नः	३९६
ये स्तोतृभ्यो० (३८४)	

॥ ४७ ॥ (ऋ० २ । ८ । १-६) गायत्री, ४०२ अनुष्टुप् ।

वाजयन्निव नू रथान् योगाँ अग्रेरुपं स्तुहि । यशस्तमस्य मीहुषः	३९७
यः सुनीथो ददाशुषे अजुर्यो जरयन्नरि । चारुप्रतीक आहुतः	३९८
य उ श्रिया दमेष्वा दोषोषसि प्रशस्यते । यस्य व्रतं न मीर्यते	३९९
आ यः स्वर्णं भानुना चित्रो विभात्यर्चिषा । अज्जानो अजरैरभि	४००
अत्रिमनु स्वराज्यम् अग्निमुक्थानि वावृधुः । विश्वा अधि श्रियो दधे	४०१
अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य देवानामूतिभिर्वयम् । अरिंघ्यन्तः सचेमहि अभि ग्याम पृतन्यतः	४०२

॥ ४८ ॥ (ऋ० २ । ९ । १-६) । त्रिष्टुप् ।

नि होता होतृषदने विदानस् त्वेषो दीदिवाँ असदत् सुदक्षः ।	
अदब्धव्रतप्रमतिर्वसिष्ठः सहस्रंभरः शुचिजिह्वो अग्निः	४०३
त्वं दूतस् त्वमुं नः परस्पास् त्वं वस्य आ वृषभ प्रणेता ।	
अग्ने तोकस्य नस् तने तनूनाम् अप्रयुच्छन् दीद्यद् बोधि गोपाः	४०४
विधेम ते परमे जन्मन्नग्ने विधेम स्तोमैरवरे सधस्थे ।	
यस्माद् योनेरुदारिथा यजे तं प्र त्वे हवींषि जुहुरे समिद्धे	४०५
अग्ने यजस्व हविषा यजीयाञ् छुष्टी देष्णमभि गृणीहि राधः ।	
त्वं ह्यसि रयिपती रयीणां त्वं शुक्रस्य वचसो मनोता	४०६

उभयं ते न क्षीयते वसव्यं दिवेर्दिवे जायमानस्य दस्म ।
 कृधि क्षुमन्तं जरितारमग्ने कृधि पतिं स्वपत्यस्य रायः ४०७
 सैनानीकेन सुविदत्रो अस्मे यष्टा देवा आर्यजिष्ठः स्वस्ति ।
 अदब्धो गोपा उत नः परस्या अग्ने द्युमदुत रेवद् दिदीहि ४०८

॥ ४९ ॥ (ऋ० २ । १० । १-६)

जोहृत्रो अग्निः प्रथमः पितेव इळस्पदे मनुषा यत् समिद्धः ।
 श्रियं वसानो अमृतो विचेता मर्मजेन्यः श्रवस्यः स वाजी ४०९
 श्रूया अग्निश् चित्रभानुर्हव मे विश्वाभिर्गीर्भिरमृतो विचेताः ।
 श्यावा रथं वहतो रोहिता वा उतारुषाह चक्रे विभृत्रः ४१०
 उत्तानार्यामजनयन् त्सुषूतं श्रुवदग्निः पुरुपेशासु गर्भः ।
 शिरिणायां चिदकुना महोभिर् अपरीवृतो वसति प्रचेताः ४११
 जिघर्म्यग्निं हविषा घृतेन प्रतिक्षियन्तं भुवनानि विश्वा ।
 पृथुं तिरश्चा वयसा बृहन्तं व्यचिष्ठमन्नै रभसं दृशानं ४१२
 आ विश्वतः प्रत्यश्च जिघर्मि अरक्षसा मनसा तज्जुषेत ।
 मर्यश्रीः स्पृहयद् वर्णो अग्निर् नाभिमृशे तन्वाङ् जर्भुराणः ४१३
 ज्ञेया भागं सहसानो वरेण त्वादूतासो मनुवद् वदेम ।
 अनूनमग्निं जुह्वा वचस्या मधुपृचं धनसा जोहवीमि ४१४

॥ ५० ॥ (ऋ० २ । ४१ । १९ तृतीयः पादः) गायत्री ।

अग्निं च हव्यवाहनम् ४१५

॥ ५१ ॥ (ऋ० २ । ४ । १-२) (४१६-४४६) सोमाहुतिर्भागवः । त्रिष्टुप् ।

हुवे वः सुद्योत्मानं सुवृक्तिं विशामग्निमर्तिथिं सुप्रयसम् ।
 मित्र इव यो दिधिषाय्यो भूद् देव आदेवे जने जातवेदाः ४१६
 इमं विधन्तो अपां सधस्थे द्वितादधुर्मृगवो विक्ष्वाङ्गयोः ।
 एष विश्वान्यभ्यस्तु भूमा देवानामग्निरतिर्जीराश्वः ४१७
 अग्निं देवासो मानुषीषु विष्णु प्रियं धुः क्षेप्यन्तो न मित्रम् ।
 स दीदयदुशतीरूम्या आ दक्षाय्यो यो दास्वते दम आ ४१८

अस्य रण्वा स्वस्यैव पुष्टिः संदष्टिरस्य हियानस्य दक्षोः ।	
वि यो भरिभ्रदोषधीषु जिह्वाम् अत्यो न रथ्यो दोधवीति वारान्	४१९
आ यन्मे अभ्वं वनदुः पनन्त उशिग्भ्यो नामिमीत वर्णम् ।	
स चित्रेण चिकिते रंसु भासा जुजुर्वो यो मुहुरा युवा भूत्	४२०
आ यो वना तातृषाणो न भाति वार्ण पथा रथ्यैव स्वानीत् ।	
कृष्णाध्वा तपू रण्वश् चिकेत द्यौरिव स्मयमानो नभोभिः	४२१
स यो व्यस्थादुभि दक्षदुर्वी पशुनैति स्वयुरगोपाः ।	
अग्निः शोचिष्मो अतसान्युष्णन् कृष्णव्यथिरस्वदयन्न भूमं	४२२
नू ते पूर्वस्यावसो अधीतौ तृतीये विदथे मन्मं शंसि ।	
अस्मे अग्ने संयद्वीरं बृहन्तं क्षुमन्तं वाजं स्वपत्यं रयिं दाः	४२३
त्वया यथा गृत्समदासो अग्ने गुहा वन्वन्त उपरां अभि ष्युः ।	
सुवीरासो अभिमातिषाहः स्मत् सूरिभ्यो गृणते तद् वयो धाः	४२४

॥ ५२ ॥ (क्र० २ । ५ । १-८) । अनुष्टुप् ।

होताजनिष्ट चेतनः पिता पितृभ्य ऊतये ।	
ग्रयश्चञ्जेन्यं वसुं शकेम वाजिनो यमम्	४२५
आ यस्मिन् त्सप्त रश्मयस् तता यज्ञस्य नेतरि ।	
मनुष्वद् दैव्यमष्टमं पोता विश्वं तदिन्वति	४२६
दधन्वे वा यदीमनु वोचद् ब्रह्माणि वेरु तत् ।	
परि विश्वानि काव्या नेमिश् चक्रमिवाभवत्	४२७
साकं हि शुचिना शुचिः प्रशास्ता क्रतुनाजनि ।	
विद्राँ अस्य व्रता ध्रुवा वया इवानु रोहते	४२८
ता अस्य वर्णमायुवो मेष्टुः सचन्त धेनवः ।	
कुवित तिसृभ्य आ वरं स्वसारो या इदं ययुः	४२९
यदी मातुरुप स्वसा घृतं भरन्त्यस्थित ।	
तासामध्वर्युरागतौ यवो वृष्टीव मोदते	४३०
स्वः स्वाय धायसे कृणुतामृत्विगृत्विजम् ।	
स्तोमे यज्ञं चादरं वनेमा ररिमा वयम्	४३१

यथा विद्राँ अरं करद् विश्वेभ्यो यजतेभ्यः ।

अयमग्ने त्वे अपि यं यज्ञं चकृमा वयम्

४३२

॥ ५३ ॥ (ऋ० २ । ६ । १-८) गायत्री ।

इमां मे अग्ने समिधम् इमांस्तुपसदं वनेः । इमा उ षु श्रुधी गिरः ४३३

अया ते अग्ने विधेम ऊर्जो नपादश्वमिधे । एना सूक्तेन सुजात ४३४

तं त्वा गीर्भिर्गिर्विणसं द्रविणस्थुं द्रविणोदः । सपर्येम सपर्यवः ४३५

स बोधि सूरिर्मघवा वसुपते वसुदावन् । युयोध्यस्मद् द्वेषांसि ४३६

स नो वृष्टिं दिवस्परि स नो वाजमनर्वाणम् । स नः सहस्रिणीरिषः ४३७

ईळानायावस्यवे यविष्ठ दूत नो गिरा । यजिष्ठ होतरा गहि ४३८

अन्तर्ह्यग्न ईयसे विद्वान् जन्मोभया कवे । दूतो जन्येव मित्र्यः ४३९

स विद्राँ आ च पिप्रयो यक्षिं चिकित्वा अनुषक् । आ चास्मिन् त्सत्सि बर्हिषि ४४०

॥ ५४ ॥ (ऋ० २ । ७ । १-६)

श्रेष्ठं यविष्ठ भारत अग्ने द्युमन्तमा भर । वसो पुरुस्पृहं रयिम् ४४१

मा नो अरातिरीशत देवस्य मर्त्यस्य च । पर्षि तस्या उत द्विषः ४४२

विश्वा उत त्वया वयं धारा उदुन्या इव । अति गाहेमहि द्विषः ४४३

शुचिः पावक वन्द्यो अग्ने बृहद् वि रोचसे । त्वं घृतोभिराहुतः ४४४

त्वं नो असि भारत अग्ने वशाभिरुक्षभिः । अष्टार्षदीभिराहुतः ४४५

द्वन्नः सर्पिरासुतिः प्रतो होता वरेण्यः । सहस्रस्पुत्रो अद्भुतः ४४६

॥ ५५ ॥ (ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलं ३, सूक्तं १, मन्त्राः १-२३)

(४४७-५७३) विश्वामित्रो गाथिनः । त्रिष्टुप् ।

सोमस्य मा त्वसं वक्ष्यमे वह्निं चकर्थ विदथे यजध्वै ।

देवाँ अच्छा दीर्घद् युञ्जे अद्रिं शमाये अग्ने तन्वै जुषस्व

४४७

प्राञ्चै यज्ञं चकृम वर्धतां गीः समिद्धिरग्निं नमसा दुवस्यन् ।

दिवः शशासुर्विदथा कवीनां गृत्साय चित् त्वसे गातुमीषुः

४४८

मयो दधे मेधिरः पूतदक्षो दिवः सुबन्धुर्जनुषा पृथिव्याः ।

अविन्दन्नु दर्शतमप्स्वन्तर देवासो अग्निमपसि स्वसृणाम्

४४९

अवर्धयन् त्सुभगं सप्त यद्वाहीः	श्वेतं जज्ञानमरुषं महित्वा ।	
शिशुं न जातमभ्यारुरश्वा	देवासो अग्निं जनिमन् वपुष्यन्	४५०
शुक्रेभिरङ्गै रज आततन्वान्	ऋतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः ।	
शोचिर्वसानः पर्यायुरपां	श्रियो मिमीते बृहतीरनूनाः	४५१
वव्राजा सीमनदतीरदब्धा	दिवो यद्वाहीरवसाना अनग्नाः ।	
सना अत्र युवतयः सयोनीर्	एकं गर्भं दधिरे सप्त वाणीः	४५२
स्तीर्णा अस्य संहतो विश्वरूपा	घृतस्य योनौ स्रवथे मधूनाम् ।	
अस्थुरत्र धेनवः पिन्वमाना	मही दुस्मस्य मातरा समीची	४५३
बभ्राणः सूनो सहसो व्यद्यौद्	दधानः शुक्रा रभसा वर्षषि ।	
श्रोतन्ति धारा मधुनो घृतस्य	वृषा यत्र वावृधे काव्येन	४५४
पितुश् चिदूर्ध्वर्जनुषा विवेद	व्यस्य धारा असृजद् वि धेनाः ।	
गुहा चरन्तं सखिभिः शिवेभिर्	दिवो यद्वाहीभिर्न गुहा बभूव	४५५
पितुश् च गर्भं जनितुश् च बभ्रे	पूर्वीरेको अधयत् पीप्यानाः ।	
वृष्णो सपत्नी शुचये सबन्धू	उभे अस्मै मनुष्येभ्यो नि पाहि	४५६
उरौ महां अनिवाधे ववर्ध	आपो अग्निं यशसः सं हि पूर्वीः ।	
ऋतस्य योनावशयद् दमूना	जामीनामग्निरपसि स्वसृणाम्	४५७
अक्रो न बभ्रिः समिथे महीनां	दिदृक्षेयः सूनवे भाक्रजीकः ।	
उदुसिया जनिता यो जजान	अपां गर्भो नृत्तमो यद्वाहो अग्निः	४५८
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां	वना जजान सुभगा विरूपम् ।	
देवासंश् चिन्मनसा सं हि जग्मुः	पनिष्ठं जातं तवसं दुवस्यन्	४५९
बृहन्त इद् भानवो भाक्रजीकम्	अग्निं संचन्त विद्युतो न शुक्राः ।	
गुहैव बृद्धं सदसि स्वे अन्तर्	अपार ऊर्वे अमृतं दुहानाः	४६०
ईळे च त्वा यजमानो हविभिर्	ईळे सखित्वं सुमतिं निकामः ।	
देवैरवो मिमीहि सं जरित्रे	रक्षा च नो दम्यैभिरनीकैः	४६१
उपक्षेतारस् तव सुप्रणीते	अग्ने विश्वानि धन्या दधानाः ।	
सुरेतसा श्रवसा तुज्जमाना	अभि प्याम पृतनायूरदेवान्	४६२

आ देवानां भवः केतुरग्ने मन्द्रो विश्वानि काव्यानि विद्वान् ।	
प्रति मर्तां अवासयो दमूना अनु देवान् रथिरो यासि सार्धन्	४६३
नि दुरोणे अमृतो मर्त्यानां राजा ससाद विद्वानि सार्धन् ।	
घृतप्रतीक उर्विया व्यद्यौद् अग्निर्विश्वानि काव्यानि विद्वान्	४६४
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर् महान् महीभिरूतिभिः सख्यन् ।	
अस्मे रथि बहुलं संतरुत्रं सुवाचं भागं यशसं कृधी नः	४६५
एता ते अग्ने जनिमा सनानि प्र पूर्याय नूतनानि वोचम् ।	
महान्ति वृष्णे सर्वना कृतेमा जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदाः	४६६
जन्मञ्जन्मन् निहितो जातवेदा विश्वामित्रेभिरिध्यते अजस्रः ।	
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्य अपि भद्रे सौमनसे स्याम	४६७
इमं यज्ञं सहसावन् त्वं नो देवत्रा धेहि सुकृतो रराणः ।	
प्र यंसि होतवृहतीरिषो नो अग्ने महि द्रविणमा यजस्व	४६८
इळामग्ने पुरुदंसं सुनि गोः शश्वत्तमं हवमानाय साध ।	
स्यान्नः सुनुस् तनयो विजावा अग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे	४६९

॥ ५६ ॥ (ऋ० ३।५।१-११)

प्रत्यग्निरुषसश् चेकितानो ऽबोधि विप्रः पदवीः कवीनाम् ।	
पृथुपाजा देवयद्भिः समिद्धो ऽप द्वारा तमसो वह्निरावः	४७०
प्रेद्वग्निर्वीवृधे स्तोमेभिर् गीभिः स्तोतॄणां नमस्य उक्थैः ।	
पूर्वाकृतस्य संदृशश् चक्रानः सं दूतो अद्यौदुषसो विरोके	४७१
अघाय्यग्निर्मानुषीषु विश्व अपां गर्भो मित्र ऋतेन सार्धन् ।	
आ हर्यतो यजतः सान्वस्थाद् अभूदु विप्रो हव्यो मतीनाम्	४७२
मित्रो अग्निर्भवति यत् समिद्धो मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।	
मित्रो अध्वर्युरिषिरो दमूना मित्रः सिन्धूनामुत पर्वतानाम्	४७३
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः पाति यज्ञश् चरणं सूर्यस्य ।	
पाति नाभा सप्तशीर्षाणमग्निः पाति देवानामुपमादमृष्वः	४७४

ऋभुश् चक्र ईडधं चारु नाम	विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।	
ससस्य चर्म घृतवत् पदं वेस्	तदिदुग्धी रक्षत्यप्रयुच्छन्	४७५
आ योनिमग्निर्घृतवन्तमस्थात्	पृथुप्रगाणमुशन्तमुशानः ।	
दीद्यानः शुचिर्ऋष्वः पावकः	पुनःपुनर्मातरा नर्व्यसी कः	४७६
सद्यो जात ओषधीभिर्ववक्षे	यदी वर्धन्ति प्रस्वो घृतेन ।	
आप इव प्रवता शुम्भमाना	उरुष्यदग्निः पित्रोरुपस्थे	४७७
उदु घृतः समिधा यद्दो अद्यौद्	वर्ष्मन् दिवो अधि नाभा पृथिव्याः ।	
मित्रो अग्निरीड्यो मातरिश्वा	दूतो वक्षद् यजथाय देवान्	४७८
उदस्तम्भीत् समिधा नाकमृष्वोऽ	अग्निर्भवन्नृत्तमो रौचनानाम् ।	
यदी भृगुभ्यः परि मातरिश्वा	गुहा सन्तं हव्यवाहं समीधे	४७९
इळामग्ने० (४६९)		

॥ ५७ ॥ (ऋ० ३ । ६ । १-११)

प्र कारवो मनना वच्यमाना	देवद्रीचीं नयत देवयन्तः ।	
दक्षिणावाङ् वाजिनी प्राच्येति	हविर्भरन्त्यग्रये घृताचीं	४८०
आ रोदसी अपृणा जायमान	उत् प्र रिक्षथा अध नु प्रयज्यो ।	
दिवश् चिदग्ने महिना पृथिव्या	वच्यन्तां ते वह्नयः सप्तजिह्वाः	४८१
द्यौश् च त्वा पृथिवी यज्ञियासो	नि होतारं सादयन्ते दमाय ।	
यदी विशो मानुषीर्देवयन्तीः	प्रयस्वतीरीळते शुक्रमर्चिः	४८२
महान् त्सुधस्थे ध्रुव आ निषत्तो	अन्तर्द्यावा माहिने हर्यमाणः ।	
आस्त्रे सपत्नी अजरे अमृक्ते	सबर्दुघे उरुगायस्य धेनू	४८३
व्रता ते अग्ने महतो महानि	तव कत्वा रोदसी आ तंतन्थ ।	
त्वं दूतो अभवो जायमानस्	त्वं नेता वृषभ चर्षणीनाम्	४८४
ऋतस्य वा केशिना योग्याभिर्	घृतस्नुवा रोहिता धुरि धिष्व ।	
अथा वह देवान् देव विश्वान्	त्स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः	४८५
दिवश् चिदा ते रुचयन्त रोका	उषो विभातीरनु भासि पूर्वीः ।	
अपो यदग्ने उशधग् वनेषु	होतुर्मन्द्रस्य पनयन्त देवाः	४८६

उरौ वा ये अन्तरिक्षे मदन्ति दिवो वा ये रौचने सन्ति देवाः ।
 ऊर्मा वा ये सुहर्वासो यजत्रा आयेमिरे रथ्यो अग्ने अश्वाः ४८७
 ऐभिरग्ने सरथं याह्यर्वाङ् नानारथं वा विभवो ह्यश्वाः ।
 पत्नीवतस् त्रिशतं त्रींश् च देवान् अनुध्वधमा वह मादयस्व ४८८*
 स होता यस्य रोदसी चिदुर्वी यज्ञयज्ञमभि वृधे गृणीतः ।
 प्राची अध्वरेव तस्थतुः सुमेके ऋतावरी ऋतजातस्य सत्ये ४८९
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ५८ ॥ (ऋ० ३।७।१-११)

प्र य आरुः शितिपृष्ठस्य धासेर् आ मातरां विविशुः सप्त वाणीः ।
 परिक्षितां पितरां सं चरेते प्र संसृति दीर्घमायुः प्रयक्षे ४९०
 दिवक्षसो धेनवो वृष्णो अश्वा देवीरा तस्थौ मधुमद् वहन्तीः ।
 ऋतस्य त्वा सदसि क्षेमयन्तं पर्येकां चरति वर्तेनि गौः ४९१
 आ सीमरोहत् सुयमा भवन्तीः पतिंश् चिकित्वान् रयिविद् रयीणाम् ।
 प्र नीलपृष्ठो अतसस्य धासेस् ता अवासयत् पुरुधप्रतीकः ४९२
 महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्तीरजुर्ध्वं स्तभूयमानं वहतो वहन्ति ।
 व्यङ्गेभिर्दिद्युतानः सधस्थ एकांमिव रोदसी आ विवेश ४९३
 जानन्ति वृष्णो अरुषस्य शेवम् उत ब्रध्नस्य शासने रणन्ति ।
 दिवोरुचः सुरुचो रोचमाना इळा येषां गण्या माहिना गीः ४९४
 उतो पितृभ्यां प्रविदानु धोषं महो महश्चामनयन्त शूषम् ।
 उक्षा ह यत्र परि धानमक्तोर् अनु स्वं धाम जरितुर्वक्ष ४९५
 अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त विप्राः प्रियं रक्षन्ते निहितं पदं वेः ।
 प्राञ्चो मदन्त्युक्ष्णो अजुर्धा देवा देवानामनु हि व्रता गुः ४९६
 दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।
 ऋतं संसन्त ऋतमित् त आहुर् अनु व्रतं व्रतपा दीध्यानाः ४९७
 वृषायन्ते महे अत्याय पूर्वीर् वृष्णे चित्राय रश्मयः सुयामाः ।
 देव होतार्मन्द्रतरश् चिकित्वान् महो देवान् रोदसी एह वक्षि ४९८

पृथ्व्यजो द्रविणः सुवाचः सुकेतव उषसो रेवदूषुः ।
 उतो चिदग्ने महिना पृथिव्याः कृतं चिदेनः सं महे दशस्य ४९९
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ५९ ॥ (ऋ० ३।९।१-९) बृहती, ५०८ त्रिष्टुप् ।

सखायस् त्वा ववृमहे देवं मर्तास उतये ।
 अपां नपातं सुभगं सुदीदिति सुप्रतूर्तिमनेहसम् ५००
 कार्यमानो वना त्वं यन्मातृरजगन्नपः ।
 न तत् ते अग्ने प्रमृषे निवर्तनं यद् दूरे सन्निहाभवः ५०१
 अतिं तृष्टं ववक्षिथ अथैव सुमना असि ।
 प्रग्रान्ये यन्ति पर्यन्य आसते येषां सख्ये असि श्रितः ५०२
 इयिवांसमति स्निधुः शश्वतीरतिं सश्वतः ।
 अन्वीमविन्दन् निचिरासो अद्रुहो अप्सु सिंहमिव श्रितम् ५०३
 ससृवांसमिव त्मना अग्निमित्था तिरोहितम् ।
 ऐनं नयन् मातरिश्वा परावतो देवेभ्यो मथितं परि ५०४
 तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 विश्वान् यद् यज्ञां अभिपासि मानुष तव कृत्वा यविष्ठ्य ५०५
 तद् भद्रं तव दंसना पाकाय चिच्छदयति ।
 त्वां यदग्ने पशवः समासते समिद्धमपिशर्वरे ५०६
 आ जुहोता स्वध्वरं शीरं पावकशोचिषम् ।
 आशुं दूतर्मजिरं प्रत्नमीड्यं श्रुष्टी देवं संपर्यत ५०७
 त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्निं त्रिंशच्च देवा नवं चासपर्यन् ।
 औक्षन् घृतैरस्तृणन् बर्हिर्स्मा आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ५०८

॥ ६० ॥ (ऋ० ३।१०।१-९) । उष्णिक् ।

त्वामग्ने मनीषिणः सम्राजं चर्षणीनाम् । देवं मर्तास इन्धते समध्वरे ५०९
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजम् अग्ने होतारमीळते । गोपा क्रतस्य दीदिहि स्वे दमे ५१०
 स धा यस् ते ददाशति समिधा जातवेदसे । सो अग्ने धत्ते सुवीर्यं स पुष्यति ५११

स केतुरध्वराणाम् अग्निदेवेभिरा गमत् । अञ्जानः सप्त होतृभिर्हविष्मते ५१२
 प्र होत्रे पूर्य वचो अग्नये भरता बृहत् । विषां ज्योतीषि विभ्रते न वेधसे ५१३
 अग्निं वर्धन्तु नो गिरो यतो जायत उक्थ्यः । महे वाजाय द्रविणाय दर्शतः ५१४
 अग्ने यजिष्ठो अध्वरे देवान् देवयते यज । होता मन्द्रो वि राजस्यति स्निधः ५१५
 स नः पावक दीदिहि धुमदस्मे सुवीर्यम् । भवां स्तोतृभ्यो अन्तमः स्वस्तये ५१६
 तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते । हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ५१७

॥ ६१ ॥ (ऋ० ३ । ११ । १-९) गायत्री ।

अग्निर्होता पुरोहितो अध्वरस्य विचर्षणिः । स वेद यज्ञमानुषक् ५१८
 स हव्यवाळमर्त्य उशिग् दूतश् चनोहितः । अग्निर्धिया समृण्वति ५१९
 अग्निर्धिया स चेतति केतुर्यज्ञस्य पूर्यः । अर्थं ह्यस्य तरणि ५२०
 अग्निं सूनुं सनश्नुतं सहसो जातवेदसम् । वह्निं देवा अकृण्वत ५२१
 अदाम्यः पुरस्ता विशामग्निर्मानुषीणाम् । तूर्णी रथः सदा नवः ५२२
 साह्वान् विश्वा अभियुजः क्रतुर्देवानाममृक्तः । अग्निस् तुविश्रवस्तमः ५२३
 अग्निं प्रयांसि वाहसा दाश्र्वां अश्नोति मर्त्यः । क्षयं पावकशोचिषः ५२४
 परि विश्वानि सुधिता अग्नेरक्ष्याम मन्मभिः । विप्रांसो जातवेदसः ५२५
 अग्ने विश्वानि वार्या वाजेषु सनिषामहे । त्वे देवास एरिरे ५२६

॥ ६२ ॥ (ऋ० ३ । २४ । १-५) ५२७ अनुष्टुप् ; ५२८-५३१ गायत्री ।

अग्ने सहस्व पृतना अभिमातीरपास्य । दुष्टस् तरन्नरातीर् वचो धा यज्ञवाहसे ५२७
 अग्ने इळा समिध्यसे वीतिहोत्रो अमर्त्यः । जुषस्व सू नो अध्वरम् ५२८
 अग्ने धुम्नेन जागृवे सहसः स्रनवाहुत । एदं बर्हिः सदो मम ५२९
 अग्ने विश्वेभिरग्निभिर् देवेभिर्महया गिरः । यज्ञेषु य उ चायवः ५३०
 अग्ने दा दाशुषे रयि वीरवन्तं परीणसम् । शिशीहि नः स्रनुमतः ५३१

॥ ६३ ॥ (ऋ० ३ । २५ । १-५) विराट् ।

अग्ने दिवः सूनुरसि प्रचेतास् तनां पृथिव्या उत विश्ववेदाः ।
 ऋधग् देवा इह यजा चिकित्वः ५३२
 अग्निः संनोति वीर्यीणि विद्वान् त्सनोति वाजममृताय भूषन् ।
 स नो देवा एह वहा पुरुक्षो ५३३

अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्त्ये	आ भाति देवी अमृते अमूरः ।	
क्षयन् वाजैः पुरुश्चन्द्रो नमोभिः		५३४
अग्न इन्द्रश् च दाशुषौ दुरोणे	सुतावतो यज्ञमिहोप यातम् ।	
अमर्धन्ता सोमपेयाय देवा		५३५
अग्ने अपां समिध्यसे दुरोणे	नित्यः सूनो सहसो जातवेदः ।	
सधस्थानि मह्यमान ऊती		५३६

॥ ६४ ॥ (ऋ० ३ । २७ । १-१५) गायत्री ।

प्र वो वाजा अभिद्यवो	हविष्मन्तो घृताच्या	। देवाज्जिगाति सुमयुः	५३७
ईळे अग्नि विपश्चितं	गिरा यज्ञस्य साधनम्	। श्रुष्टीवान् धितावानम्	५३८
अग्ने शक्रेम ते वयं	यमं देवस्य वाजिनः	। अति द्वेषांसि तरेम	५३९
समिध्यमानो अध्वरेऽ	अग्निः पावक ईड्यः	। शोचिष्केशस् तमीमहे	५४०
पृथुपाजा अमर्त्यो	घृतनिर्णिक् स्वाहुतः	। अग्निर्यज्ञस्य हव्यवाद्	५४१
तं सबाधो यतस्तुच	इत्था धिया यज्ञवन्तः	। आ चक्रुरग्निमूतये	५४२
होता देवो अमर्त्यः	पुरस्तादेति मायया	। विदथानि प्रचोदयन्	५४३
वाजी वाजेषु धीयते	अध्वरेषु प्र णीयते	। विप्रो यज्ञस्य साधनः	५४४
धिया चक्रे वरेण्यो	भूतानां गर्भमा दधे	। दक्षस्य पितरं तना	५४५
नि त्वा दधे वरेण्यं	दक्षस्येळा सहस्कृत	। अग्ने सुदीतिमुशिर्जम्	५४६
अग्निं यन्तुरमप्यतुरम्	ऋतस्य योगे वनुषः	। विप्रा वाजैः समिन्धते	५४७
ऊर्जो नपातमध्वरे	दीदिवासमुप दधि	। अग्निमीळे कविक्रतुम्	५४८
ईळेन्यो नमस्यस्	तिरस् तमांसि दर्शतः	। समग्निरिध्यते वृषा	५४९ *
वृषो अग्निः समिध्यते	अश्वो न देववाहनः	। तं हविष्मन्त ईळते	५५० *
वृषणं त्वा वयं वृषन्	वृषणः समिधीमहि	। अग्ने दीद्यतं बृहत्	५५१ *

॥ ६५ ॥ (ऋ० ३ । २८ । १-६)

५५२-५५३, ५५७ गायत्री, ५५४ उष्णिक्, ५५५ त्रिष्टुप्, ५५६ जगती ।

अग्ने जुषस्व नो हविः	पुरोळाशं जातवेदः	। ग्रातःसावे धियावसो	५५२
पुरोळा अग्ने पचतस्	तुभ्यं वा घ्रा परिष्कृतः	। तं जुषस्व यविष्ठय	५५३
अग्ने वीहि पुरोळाशम्	आहुतं तिरोअह्वयम्	। सहसः सूनुरस्यध्वरे हितः	५५४

माध्यंदिने सवने जातवेदः पुरोळाशमिह कवे जुषस्व ।	
अग्ने यद्दस्य तव भागधेयं न प्र मिनन्ति विदथेषु धीराः	५५५
अग्ने तृतीये सवने हि कार्निषः पुरोळाशं सहसः स्रन्वाहुतम् ।	
अथा देवेष्वध्वरं विपन्यया धा रत्नवन्तममृतैषु जागृविम्	५५६
अग्ने वृधान आहुतिं पुरोळाशं जातवेदः । जुषस्व तिरोअह्यम्	५५७

॥ ६६ ॥ (ऋ० ३ । २९ । १-१६) त्रिष्टुप् ;

५५८, ५६१, ५६७, ५६९ अनुष्टुप् ; ५६३, ५६८, ५७१, ५७२ जगती ।

अस्तीदमधिमन्थनम् अस्ति प्रजननं कृतम् ।	
एतां विस्पृहीमा भर अग्निं मन्थाम पूर्वथा	५५८
अरण्योर्निर्हितो जातवेदा गर्भं इव सुधितो गर्भिणीषु ।	
दिवेदिव ईडथो जागृवद्भिर् हविष्माद्भिर्मनुष्येभिरग्निः	५५९
उत्तानायामव भरा चिकित्वान् त्सद्यः प्रवीता वृषणं जजान ।	
अरुषस्तूपो रुशदस्य पाज इळायास् पुत्रो व्युनेऽजनिष्ट	५६०
इळायास् त्वा पदे वयं नाभां पृथिव्या अग्निं ।	
जातवेदो नि धीमहि अग्ने हव्याय वोह्वे	५६१
मन्थता नरः कविमद्रयन्तं प्रचेतसममृतं सुप्रतीकम् ।	
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरस्ताद् अग्निं नरो जनयता सुशेवम्	५६२
यदी मन्थन्ति बाहुभिर्वि रौचते अश्वो न वाज्यरुषो वनेष्वा ।	
चित्रो न यामन्नश्चिनोरनिवृतः परि वृणक्त्यश्मनस् तृणा दहन्	५६३
जातो अग्नी रौचते चेर्कितानो वाजी विप्रः कविशस्तः सुदानुः ।	
यं देवास ईडथं विश्वविदं हव्यवाहमदधुरध्वरेषु	५६४
सीदं होतुः स्व उं लोके चिकित्वान् त्सादया यज्ञं सुकृतस्य योनौ ।	
देवावीर्देवान् हविषा यजासि अग्ने बृहद् यजमाने वयो धाः	५६५
कृणोत धूमं वृषणं सखायो अस्त्रेधन्त इतन् वाज्रमच्छ ।	
अयमग्निः पृतनाषाट् सुवीरो येन देवासो असहन्त दस्यून्	५६६

अयं ते योनिर्ऋत्वियो यतो जातो अरोचथाः ।	
तं जानन्नग्न आ सीद अथा नो वर्धया गिरः	५६७
तनूनपादुच्यते गर्भं आसुरो नराशंसो भवति यद् विजायते ।	
मातरिश्वा यदमिमीत मातरि वारस्य सगो अभवत् सरीमणि	५६८
सुनिर्मथा निर्मथितः सुनिधा निहितः कविः ।	
अग्ने स्वध्वरा कृणु देवान् देवयते यज	५६९
अजीजनन्नमृतं मर्त्यासो अस्त्रेमाणं तरणिं वीळुजम्भम् ।	
दश स्वसारो अग्रवः समीचीः पुमांसं जातमभि सं रभन्ते	५७०
प्र सप्तहोता सनकादरोचत मातुरुपस्थे यदशौचदूधनि ।	
न नि मिषति सुरणो दिवेदिवे यदसुरस्य जठरादजायत	५७१
अमित्रायुधो मरुतामिव प्रयाः प्रथमजा ब्रह्मणो विश्वमिद् विदुः ।	
द्युमन्नवद् ब्रह्म कुशिकास एरिर् एकएको दमे अग्निं समीधिरे	५७२
यदद्य त्वां प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतश् चिकित्वोऽवृणीमहीह ।	
ध्रुवमया ध्रुवमुताशमिष्ठाः प्रजानन् विद्राँ उर्ष याहि सोमम्	५७३

॥ ६७ ॥ (ऋ० ३ । १३ । १-७) [५७४-५८७] ऋषभो वैश्वामित्रः । अनुष्टुप् ।

प्र वो देवायानये बर्हिष्ठमर्चास्मै ।	
गमद् देवेभिरा स नो यजिष्ठो बर्हिरा सदत्	५७४
ऋतावा यस्य रोदसी दक्षं सचन्त ऊतयः ।	
हविष्मन्तस् तमीळते तं सनिष्यन्तोऽवसे	५७५
स यन्ता विप्र एषां स यज्ञानामथा हि षः ।	
अग्निं तं वो दुवस्यत दाता यो वर्निता मघम्	५७६
स नः शर्माणि वीतये अग्निर्यच्छतु शतमा ।	
यतो नः प्रुष्णवद् वसु दिवि क्षितिभ्यो अप्स्वा	५७७
दीदिवांसमपूर्व्य वस्वीभिरस्य धीतिभिः ।	
ऋक्काणो अग्निमिन्धते होतारं विस्पतिं विशाम्	५७८

उत नो ब्रह्मन्नविष उक्थेषु देवहृतमः ।

शं नः शोचा मरुद्रुधो अग्ने सहस्रसातमः

५७९

नू नो रास्व सहस्रवत् तोकवत् पुष्टिमद् वसु ।

द्युमदग्ने सुवीर्यं वर्षिष्ठमनुपक्षितम्

५८०

॥ ६८ ॥ (ऋ० ३ । १४ । १-७) त्रिष्टुप् ।

आ होता मन्द्रो विदथान्यस्थात् सत्यो यज्वा कवितमः स वेधाः ।

विद्युद्रथः सहस्रस्पुत्रो अग्निः शोचिष्केशः पृथिव्यां पाजो अश्रेत्

५८१

अयामि ते नमउक्तिं जुषस्व ऋतावस् तुभ्यं चेतते सहस्वः ।

विद्राँ आ वक्षि विदुषो नि षत्सि मध्य आ बर्हिर्रुतये यजत्र

५८२

द्रवतां त उषसा वाजयन्ती अग्ने वातस्य पृथ्याभिरच्छ ।

यत् सीमञ्जन्ति पूर्य हविर्भिर् आ बन्धुरेव तस्थतुर्दुरोणे

५८३

मित्रश् च तुभ्यं वरुणः सहस्वो अग्ने विश्वे मरुतः सुमर्मर्चन् ।

यच्छोचिषा सहस्रस्पुत्र तिष्ठा अभि क्षितीः प्रथयन् त्वर्यो नृन्

५८४

वयं ते अद्य ररिमा हि कामम् उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।

यजिष्ठेन मनसा यक्षि देवान् अस्नेधता मन्मना विप्रो अग्ने

५८५

त्वद्वि पुत्र सहस्रो वि पूर्वीर् देवस्य यन्त्यूतयो वि वाजाः ।

त्वं देहि सहस्रिणं रयिं नो अद्रोघेण वर्चसा सत्यमग्ने

५८६

तुभ्यं दक्ष कविक्रतो यानीमा देव मर्तासो अध्वरे अकर्म ।

त्वं विश्वस्य सुरथस्य बोधि सर्वं तदग्ने अमृत स्वदेह

५८७

॥ ६९ ॥ (ऋ० ३ । १५ । १-७) (५८८-५९९) उत्कीलः कात्यः । त्रिष्टुप् ।

वि पाजसा पृथुना शोशुचानो बार्धस्व द्विषो रक्षसो अमीवाः ।

सुशर्मणो बृहतः शर्मणि स्याम् अग्नेरहं सुहवस्य प्रणीतौ

५८८

त्वं नो अस्या उषसो व्युष्टौ त्वं स्र उदिते बोधि गोपाः ।

जन्मेव नित्यं तनयं जुषस्व स्तोमं मे अग्ने तुन्वा सुजात

५८९

त्वं नृचक्षा वृषभानु पूर्वीः कृष्णास्वग्ने अरुषो वि आहि ।

वसो नेषि च पषि चात्यहः कृधी नो राय उशिजो यविष्ठ

५९०

अषाहो अग्ने वृषभो दिदीहि	पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान् ।	
यज्ञस्य नेता प्रथमस्य पायोर्	जातवेदो बृहत्तः सुप्रणीते	५९१
अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरूणि	देवाँ अच्छा दीद्यानः सुमेधाः ।	
रथो न सस्त्रिरभि वक्षि वाजम्	अग्ने त्वं रोदसी नः सुमेकै	५९२
प्र पीपय वृषभ जिन्व वाजान्	अग्ने त्वं रोदसी नः सुदोधे ।	
देवेभिर्देव सुरुचा रुचानो	मा नो मर्तस्य दुर्मतिः परि छात्	५९३
इळामग्ने० (४६९)		

॥ ७० ॥ (ऋ० ३ । १६ । १-६) प्रगाथः (= बृहती + सतोबृहती ।)

अयमग्निः सुवीर्यस्य ईशे महः सौभगस्य ।	
राय ईशे स्वपत्यस्य गोमत ईशे वृत्रहथानाम्	५९४
इमं नरो मरुतः सश्रुता वृधं यस्मिन् रायः शेवृधासः ।	
अभि ये सन्ति पृतनासु दूढ्यो विश्वाहा शत्रुमादभुः	५९५
स त्वं नो रायः शिशीहि मीढ्वो अग्ने सुवीर्यस्य ।	
तुर्विद्युम्न वर्षिष्ठस्य प्रजावतो अनमीवस्य शुष्मिणः	५९६
चक्रियो विश्वा भुवनाभि सासहिश् चक्रिर्देवेष्वा दुवः ।	
आ देवेषु यतत आ सुवीर्य आ शंस उत नृणाम्	५९७
मा नो अग्नेऽर्मतये मावीरतायै रीरधः ।	
मागोतायै सहसस्पुत्र मा निदे अप द्वेषास्या कृधि	५९८
शग्धि वाजस्य सुभग प्रजावतो अग्ने बृहतो अघ्वरे ।	
स राया भूर्यसा सृज मयोभुना तुर्विद्युम्न यशस्वता	५९९

॥ ७१ ॥ (ऋ० ३ । १७ । १-५) ६००—६०९ कतो वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

समिध्यमानः प्रथमानु धर्मा	समक्तुभिरज्यते विश्ववारः ।	
शोचिष्केशो घृतनिर्णिक् पावकः	सुयज्ञो अग्निर्यजथाय देवान्	६००
यथार्यजो होत्रमग्ने पृथिव्या	यथा दिवो जातवेदश् चिकित्वान् ।	
एकानेन हविषा यक्षि देवान्	मनुष्वद् यज्ञं प्र तिरेममद्य	६०१

त्रीण्यायूषि तव जातवेदस् तिस्र आजानीरुषसस् ते अग्ने ।
 ताभिर्देवानामवो यक्षि विद्वान् अथा भव यजमानाय शं योः ६०२
 अग्निं सुदीतिं सुदृशं गृणन्तो नमस्यामस् त्वेज्यं जातवेदः ।
 त्वां दूतमरतिं हव्यवाहं देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम् ६०३
 यस् त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान् द्विता च सत्ता स्वधया च शंभुः ।
 तस्यानु धर्मं प्र यजा चिकित्वो अथा नो धा अध्वरं देववीतौ ६०४

॥ ७२ ॥ (ऋ० ३ । १८ । १-५)

भवा नो अग्ने सुमना उपेतौ सखेव सख्ये पितरेव साधुः ।
 पुरुद्वहो हि क्षितयो जनानां प्रति प्रतीचीर्देहतादरातीः ६०५
 तपो ष्वग्ने अन्तरां अमित्रान् तपा शंसमररुषः परस्य ।
 तपो वसो चिकितानो अचित्तान् वि ते तिष्ठन्तामजरा अयासः ६०६
 इधमेनाग्र इच्छमानो घृतेन जुहोमि हव्यं तरेसे बलाय ।
 यावदीशे ब्रह्मणा वन्दमान इमां धियं शतसेयाय देवीम् ६०७
 उच्छ्रोचिषा सहसस्पुत्र स्तुतो बृहद् वयः शशमानेषु धेहि ।
 रेवदग्ने विश्वामित्रेषु शं योर् मर्मज्जमा ते तन्वां भूरि कृत्वः ६०८
 कृधि रत्नं सुसनितर्धनानां स धेदग्ने भवसि यत् समिद्धः ।
 स्तोतुर्दुरोणे सुभगस्य रेवत् सुग्रा करस्त्रा दधिषे वपूषि ६०९

॥ ७३ ॥ (ऋ० ३ । १९ । १-५) [६१०—६२६] गार्गी कौशिकः ।

अग्निं होतारं प्र वृणे मियेधे गृत्सं कविं विश्वविदममूरम् ।
 स नो यक्षद् देवताता यजीयान् राये वाजाय वनते मघानि ६१०
 प्र ते अग्ने हविष्मतीमियमिं अच्छा सुद्युम्नां रातिनीं घृताचीम् ।
 प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः सं रातिभिर्वसुभिर्यज्ञमश्रेत् ६११
 स तेजीयसा मनसा त्वोत् उत्त शिक्ष स्वपत्यस्य शिक्षोः ।
 अग्ने रायो नृतमस्य प्रभूतौ भूयाम ते सुष्टुतयश् च वस्वः ६१२
 भूरीणि हि त्वे दधिरे अनीका अग्ने देवस्य यज्यवो जनासः ।
 स आ वह देवतातिं यविष्ठ शर्धो यदुद्य दिव्यं यजासि ६१३

यत् त्वा होतारमनर्जन् मियेधे निषादयन्तो यजथाय देवाः ।
स त्वं नो अग्रेऽवितेह बोधि अधि श्रवांसि धेहि नस् तनूषु ६१४

॥ ७४ ॥ (ऋ० ३ । २० । २-४)

अग्रे त्री ते वाजिना त्री षधस्था तिस्रस् ते जिह्वा ऋतजात पूर्वीः ।
तिस्र उ ते तनूो देववातास् तार्भिर्नः पाहि गिरो अग्रयुच्छन् ६१५
अग्रे भूरीणि तव जातवेदो देव स्वधावोऽमृतस्य नाम ।
याश् च माया मायिना विश्वमिन्व त्वे पूर्वीः संदधुः पृष्ठबन्धो ६१६
अग्निर्नेता भग इव क्षितीनां दैवीनां देव ऋतुपा ऋतावा ।
स वृत्रहा सनयो विश्ववेदाः पर्षद् विश्वार्ति दुरिता गृणन्तम् ६१७

॥ ७५ ॥ (ऋ० ३ । २१ । १-५)

६१८, ६२१ त्रिष्टुप्, ६१९-२० अनुष्टुप्, ६२२ विराड् रूपा सतोवृहती ।

इमं नो यज्ञममृतेषु धेहि इमा हव्या जातवेदो जुषस्व ।
स्तोकानामग्रे मेदसो घृतस्य होतः प्राशान प्रथमो निषद्य ६१८
घृतवन्तः पावक ते स्तोकाः श्रोतन्ति मेदसः ।
स्वधर्मन् देववीतये श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ६१९
तुभ्यं स्तोका घृतश्रुतो अग्रे विप्राय सन्त्य ।
ऋषिः श्रेष्ठः समिध्यसे यज्ञस्य प्राविता भव ६२०
तुभ्यं श्रोतन्त्यग्निगो शचीवः स्तोकासो अग्रे मेदसो घृतस्य ।
कविशस्तो बृहता भानुनागा हव्या जुषस्व मेधिर ६२१
ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद उद्धृतं प्र ते वयं ददामहे ।
श्रोतन्ति ते वसो स्तोका अधि त्वचि प्रति तान् देवशो विहि ६२२
॥ ७६ ॥ (ऋ० ३ । २२ । १-५) ६२६ पुरीष्याग्नयः । त्रिष्टुप्, ६२६ अनुष्टुप् ।
अयं सो अग्निर्यस्मिन् त्सोमं इन्द्रः सुतं दधे जठरे वावशानः ।
सहस्रिणं वाजमर्त्यं न समिं ससवान् त्सन् तस्तूयसे जातवेदः ६२३
अग्रे यत् ते दिवि वर्चः पृथिव्यां यदोषधीष्वप्स्वा यजत्र ।
येनान्तरिक्षमूर्वातन्थ त्वेषः स भानुरर्णवो नृचक्षाः ६२४

अग्ने दिवो अर्णमच्छा जिगासि अच्छा देवाँ ऊचिषे धिषण्या ये ।
 या रौचने परस्तात् सूर्यस्य याश् चावस्तादुपतिष्ठन्त आपः ६२५
 पुरीष्यासो अग्रयः प्रावणेभिः सजोषसः ।
 जुषन्तां यज्ञमद्रुहो अनमीवा इषो महीः ६२६
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ७७ ॥ (ऋ० ३ । २३ । १-५)

६२७-६३० देवश्रवा देववातश्च भारतौ । त्रिष्टुप्, ६२९ सतोबृहती ।

निर्मथितः सुधित आ सधस्थे युवा कविरध्वरस्य प्रणेता ।
 जूर्यत्स्वभिरजरो वनेषु अत्रा दधे अमृतं जातवैदाः ६२७
 अमन्थिष्ठां भारता रेवदग्निं देवश्रवा देववातः सुदक्षम् ।
 अग्ने वि पश्य बृहताभि राया इषां नो नेता भवतादनु द्यून् ६२८
 दश क्षिपः पूर्य सीमजीजनन् त्सुजातं मातृषु प्रियम् ।
 अग्निं स्तुहि दैववातं दैवश्रवो यो जनानामसद् वशी ६२९
 नि त्वा दधे वर आ पृथिव्या इळामास्पदे सुदिनत्वे अह्वाम् ।
 दृषद्वत्यां मानुष आपयायां सरस्वत्यां रेवदग्ने दिदीहि ६३०
 इळामग्ने० (४६९)

॥ ७८ ॥ (ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलं, सूक्तं १, मंत्राः १, ६-२०)

[६३१-७५५] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, ६३१ अष्टिः ।

त्वां ह्यग्ने सदमित् समन्यवो देवासो देवमरुतिं न्येरिर इति क्रत्वा न्येरिरे ।
 अमर्त्यं यजत मर्त्येष्वाम देवमादेवं जनत प्रचेतसं विश्वमादेवं जनत प्रचेतसम् ६३१
 अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य संहर्ष देवस्य चित्रतमा मर्त्येषु ।
 शुचिं धृतं न तप्तमघ्न्यायाः स्पार्हा देवस्य मंहनेव धेनोः ६३२
 त्रिरस्य ता परमा सन्ति सत्या स्पार्हा देवस्य जनिमान्यग्नेः ।
 अनन्ते अन्तः परीवीत आगात् शुचिः शुक्रो अर्यो रोरुचानः ६३३
 स दूतो विश्वेदुभि वष्टि सन्ना होता हिरण्यरथो रंसुजिह्वः ।
 रोहिदश्चो वपुष्यो विभावा सदा र्षवः पितुमतीव संसत् ६३४

स चेतयन् मनुषो यज्ञवन्धुः	प्र तं मद्या रश्नया नयन्ति ।	
स क्षेत्यस्य दुर्यासु सार्धन्	देवो मर्तस्य सधनित्वमाप	६३५
स तू नो अग्निर्नयतु प्रजानन्	अच्छा रत्नं देवमेक्तं यदस्य ।	
धिया यद् विश्वे अमृता अकृण्वन्	द्यौष्पिता जनिता सत्यमुक्षन्	६३६
स जायत प्रथमः पस्त्यासु	महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।	
अपादशीर्षा गुहमानो अन्ता	आयोर्युवानो वृषभस्य नीले	६३७
प्र शर्धे आर्तं प्रथमं विपन्यां	ऋतस्य योनां वृषभस्य नीले ।	
स्पाहो युवा वपुष्धो विभावा	सप्त प्रियासोऽजनयन्त वृष्णे	६३८
अस्माकमत्र पितरो मनुष्या	अभि प्र सैदुर्ऋतमाशुषाणाः ।	
अश्मव्रजाः सुदुधा वत्रे अन्तर्	उदुस्ता आजन्नुषसो हुवानाः	६३९
ते मर्मजत ददृवांसो अद्रिं	तदैषामन्ये अभितो वि वोचन् ।	
पश्वर्यन्त्रासो अभि कारमर्चन्	विदन्त ज्योतिश् चकृपन्त धीभिः	६४०
ते गव्यता मनसा हृध्रमुब्धं	गा येमानं परि षन्तमद्रिम् ।	
दृहं नरो वर्चसा दैव्येन	व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रुः	६४१
ते मन्वत प्रथमं नाम धेनोस्	त्रिः सप्त मातुः परमाणि विन्दन् ।	
तजानतीरभ्यनूषत त्रा	आविर्भुवदरुणीर्यशसा गोः	६४२
नेशत् तमो दुधितं रोचत द्यौर	उद् देव्या उषसो भानुरर्त ।	
आ सूर्यो बृहतस् तिष्ठदज्जौ	ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन्	६४३
आदित् पश्चा बुबुधाना व्यख्यन्	आदिद् रत्नं धारयन्त द्युमेक्तम् ।	
विश्वे विश्वासु दुर्यासु देवा	मित्रं धिये वरुण सत्यमस्तु	६४४
अच्छा वोचेय शुशुचानमग्निं	होतारं विश्वभरसं यजिष्ठम् ।	
शुच्यूधो अतृणन्न गवाम्	अन्धो न पूतं परिषिक्तमंशोः	६४५
विश्वेषामदितिर्यज्ञियांनां	विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम् ।	
अग्निर्देवानामव आवृणानः	सुमृळीको भवतु जातवेदाः	६४६

॥ ७९ ॥ (ऋ० ४ । २ । १-२०) त्रिष्टुप् ।

यो मर्त्येष्वमृतं ऋतावा	देवो देवेष्वरतिर्निधायि ।	
होता यजिष्ठो मद्या शुचध्वै	हव्यैरग्निर्मनुष ईर्यध्वै	६४७

इह त्वं स्वनो सहसो नो अद्य जातो जातो उभयो अन्तरग्रे ।	
दूत ईयसे युयुजान ऋष्व ऋजुमुष्कान् वृषणः शुक्रांश्च	६४८
अत्या वृधस्नू रोहिता घृतस्नू क्रतस्य मन्ये मनसा जविष्ठा ।	
अन्तरीयसे अरुषा युजानो युष्मांश् च देवान् विश आ च मर्तान्	६४९
अर्यमणं वरुणं मित्रमेषाम् इन्द्राविष्णू मरुतो अश्विनोत ।	
स्वश्वो अग्रे सुरथः सुराधा एदु वह सुहविषे जनाय	६५०
गोमौ अग्रेऽविमौ अश्वी यज्ञो नृवत्सखा सदमिदं प्रमृष्यः ।	
इळावाँ एषो असुर प्रजावान् दीर्घो रयिः पृथुबुधः सभावान्	६५१
यस् त इध्मं जभरत् सिष्विदानो मूर्धानं वा ततपते त्वाया ।	
भुवस् तस्य स्वतवाँः पायुरग्रे विश्वस्मात् सीमघायत उरुष्य	६५२
यस् ते भरादन्नियते चिदन्नं निशिषन् मन्द्रमर्तिथिमुदीरत् ।	
आ देवयुरिनधते दुरोणे तस्मिन् रयिर्ध्रुवो अस्तु दास्वान्	६५३
यस् त्वा दोषा य उषसि प्रशंसात् ग्रियं वा त्वा कृणवते हविष्मान् ।	
अश्वो न स्वे दम आ हेम्यावान् तमंहसः पीपरो दाश्वांसम्	६५४
यस् तुभ्यमग्रे अमृताय दाशद् दुवस् त्वे कृणवते यतस्तृक् ।	
न स राया शशमानो वि योषत् नैनमंहः परि वरदघायोः	६५५
यस्य त्वमग्रे अध्वरं जुजोषो देवो मर्तस्य सुधितं रराणः ।	
प्रीतेदसद्धोत्रा सा यविष्ठ असांम यस्य विधतो वृधासः	६५६
चित्तिमचित्तिं चिनवद् वि विद्वान् पृष्ठेव वीता वृजिना च मर्तान्	
राये च नः स्वपत्याय देव दितिं च रास्वादितिमुरुष्य	६५७
कवि शशासुः कवयोऽदेव्या निधारयन्तो दुर्यीस्वायोः ।	
अतस् त्वं हय्यौ अग्र एतान् पङ्क्तिः पश्येरद्धतां अर्य एवैः	६५८
त्वमग्रे बाधते सुप्रणीतिः सुतसोमाय विधते यविष्ठ ।	
रत्नं भर शशमानाय घृष्वे पृथु श्वेन्द्रमवसे चर्षणिप्राः	६५९
अधा ह यद् वयमग्रे त्वाया पङ्क्तिर्हस्तेभिश् चकृमा तनूभिः ।	
रथं न क्रन्तो अपसा भुरिजोर् ऋतं येभ्यः सुध्य आशुषाणाः	६६०

अधा मातुरुषसः सप्त विग्रा जायेमहि प्रथमा वेधसो नृन् । दिवस्पुत्रा अङ्गिरसो भवेम अद्रिं रुजेम धनिनं शुचन्तः	६६१
अधा यथा नः पितरः परासः प्रत्नासो अग्न क्रतुमाशुषाणाः । शुचीदयन् दीधितिमुक्थशासः क्षामा भिन्दन्तो अरुणीरप व्रन्	६६२
सुकर्माणः सुरुचो देवयन्तो अयो न देवा जनिमा धमन्तः । शुचन्तो अग्निं ववृधन्त इन्द्रम् ऊर्वं गव्यं परिषदन्तो अगमन्	६६३
आ गूथेव क्षुमतिं पश्वो अख्यद् देवानां यज् जनिमान्त्युग्र । मतीनां चिदुर्वशीरकृप्रन् वृधे चिदर्य उपरस्यायोः	६६४
अकर्म ते स्वपसो अभूम क्रतुमवसन्नृषसो विभातीः । अनूनमग्निं पुरुधा सुश्चन्द्रं देवस्य मर्मजतश् चारु चक्षुः	६६५
एता ते अग्न उचथानि वेधो अवोचाम कवये ता जुषस्व । उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि	६६६

॥ ८० ॥ (ऋ० ४ । ३ । २-१६)

अयं योनिंश् चकुमा यं वयं ते जायेव पत्यं उशती सुवासाः । अर्वाचीनः परिवीतो नि पीद इमा उ ते स्वपाक प्रतीचीः	६६७
आशृण्वते अटपिताय मन्म नृचक्षसे सुमृलीकाय वेधः । देवाय शस्तिममृताय शंस ग्रावेव सोता मधुषुद् यमीले	६६८
त्वं चिन्नः शम्या अग्ने अस्या क्रतस्य बोध्यतचित् स्वाधीः । कदा त उक्था संधमाद्यानि कदा भवन्ति सख्या गृहे ते	६६९
कथा ह तद् वरुणाय त्वमग्ने कथा दिवे गर्हसे कन्न आगः । कथा मित्राय मीहृषे पृथिव्यै ब्रवः कदर्यग्णे कद् भगाय	६७०
कद्विष्ण्यासु वृधसानो अग्ने कद् वाताय प्रतवसे शुभये । परिज्मने नासत्याय क्षे ब्रवः कदग्ने रुद्राय नृधे	६७१
कथा महे पुष्टिभराय पूष्णे कद् रुद्राय सुमखाय हविर्दे । कद् विष्णवे उरुगायाय रेतो ब्रवः कदग्ने शरवे बृहत्यै	६७२

कथा शर्धीय मरुतामृताय कथा सुरे बृहते पृच्छयमानः । प्रति ब्रवोऽर्दितये तुराय साधा दिवो जातवेदश् चिकित्वान्	६७३
ऋतेन ऋतं निर्यतमीळ आ गोर् आमा सचा मधुमत् पक्कमग्ने । कृष्णा सती रुशता धासिनैषा जामर्येण पर्यसा पीपाय	६७४
ऋतेन हि ष्मा वृषभश् चिदुक्तः पुमाँ अग्निः पर्यसा पृष्ठ्यैन । अस्पन्दमानो अचरद् वयोधा वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूधः	६७५
ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः समङ्गिरसो नवन्त गोभिः । शुनं नरः परिं षदन्नुषासम् आविः स्वरभवज् जाते अग्नौ	६७६
ऋतेन देवीरमृता अमृक्ता अणोभिरापो मधुमङ्गिरग्ने । वाजी न सर्गेषु प्रस्तुभानः प्र सदमिन् सवितवे दधन्युः	६७७
मा कस्य युक्षं सदमिदुरो गा मा वेशस्य ग्रमिनतो मापेः । मा भ्रातुरग्ने अनृजोऽर्कणं वेर् मा सख्युर्दक्षं रिपोर्भुजेम	६७८
रक्षा णो अग्ने तव रक्षणेभी रारक्षाणः सुमख ग्रीणानः । प्रति प्फुर वि रुज वीड्वहो जहि रक्षो महि चिद् वावृधानम्	६७९
एभिर्भैव सुमना अग्ने अकैर् इमान् त्स्पृश मन्मभिः शूर वाजान् । उत ब्रह्माण्यङ्गिरो जुषस्व सं ते शस्तिर्देववाता जरेत	६८०
एता विश्वा विदुषे तुभ्यं वेधो नीथान्यग्ने निण्या वचांसि । निवचना कवये कान्यानि अशंसिषं मतिभिर्विप्र उक्थैः	६८१
॥ ८१ ॥ (ऋ० ४।६।१-११)	
ऊर्ध्व ऊ षु णो अध्वरस्य होतर् अग्ने तिष्ठ देवताता यजीयान् । त्वं हि विश्वमभ्यसि मन्म प्र वेधसश् चित् तिरसि मनीषाम्	६८२
अमूरो होता न्यसादि विक्षु अग्निर्मन्द्रो विदथेषु प्रचेताः । ऊर्ध्व भानुं सवितेवाग्नेन् मेतेव धूमं स्तभायदुप द्याम्	६८३
यता सुजूर्णी रातिनी घृताची प्रदक्षिणिद् देवतातिमुराणः । उदु स्वरुर्नवजा नाक्रः पश्वो अनक्ति सुधितः सुमेकः	६८४

- स्तीर्णे बर्हिषि समिधाने अग्रा ऊर्ध्वो अध्वर्युर्जुषाणो अस्थात् ।
पर्यग्निः पशुपा न होता त्रिविष्टचैति प्रदिवं उराणः ६८५
- परि त्मना मितद्रुरेति होता अग्निर्मन्द्रो मधुवचा क्रतावा ।
द्रवन्त्यस्य वाजिनो न शोका भयन्ते विश्वा भुवना यदभ्राट् ६८६
- भद्रा ते अग्ने स्वर्नाक संदग्घ्न घोरस्य सतो विषुणस्य चारुः ।
न यत् ते शोचिस् तमसा वरन्त न ध्वस्मानस् तन्वीडे रेप आ धुः ६८७
- न यस्य सातुर्जनिंतोरवारि न मातरापितरा नू चिदिष्टौ ।
अथा मित्रो न सुर्धितः पावको अग्निर्दीदाय मानुषीषु विश्व ६८८
- द्विर्यं पञ्च जीजनन् त्संवसानाः स्वसारो अग्नि मानुषीषु विश्व ।
उषर्बुधमथयोरे न दन्तं शुक्रं स्वासं परशुं न तिग्मम् ६८९
- तव त्ये अग्ने हरितो घृतस्त्रा रोहितास ऋज्वञ्चः स्वञ्चः ।
अरुषासो वृषण ऋजुमुष्का आ देवतातिमहन्त दुस्माः ६९०
- ये ह त्ये ते सहमाना अयासस् त्वेषासो अग्ने अर्चयश् चरन्ति ।
इयेनासो न दुवसनासो अर्थं तुविष्वणसो मारुतं न शर्धः ६९१
- अकारि ब्रह्म समिधानं तुभ्यं शंसात्युक्थं यजते व्यू धाः ।
होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर् नमस्यन्त उशिजः शंसमायोः । ६९२

॥ ८२ ॥ (ऋ० ४ । ७ । १-११) त्रिष्टुप्, ६९३ जगती, ६९४-९८ अनुष्टुप् ।

- अयमिह प्रथमो धायि धातुभिर् होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यः ।
यममवानो भृगवो विरुचुर् वनेषु चित्रं विभ्वं विशेर्विशे ६९३
- अग्ने कदा त आनुषग् भुवद् देवस्य चेतनम् ।
अथा हि त्वा जगृभिरे मतीसो विक्ष्वीड्यम् ६९४
- क्रतावानं विचेतसं पश्यन्तो धामिव स्तुभिः ।
विश्वेषामध्वराणां हस्कर्तारं दमेदमे ६९५
- आशुं दूतं विवस्वतो विश्वा यश् चर्षणीरभि ।
आ जभ्रुः केतुमायवो भृगवाणं विशेर्विशे ६९६

तमीं होतारमानुषक् चिकित्वांसं नि षेदिरे ।	
रुष्वं पावकशोचिषं यजिष्ठं सप्त धामभिः	६९७
तं शश्वतीषु मातृषु वन आ व्रीतमश्रितम् ।	
चित्रं सन्तं गुहां हितं सुवेदं कूचिदुर्धनम्	६९८
ससस्य यद् वियुता सस्मिन्नूर्धन् ऋतस्य धामन् रणयन्त देवाः ।	
महाँ अग्निर्मसा रातहव्यो वेरध्वराय सदमिद्वतावा	६९९
वेरध्वरस्य दूत्यानि विद्वान् उभे अन्ता रोदसी संचिकित्वान् ।	
दूत ईयसे म्रदिव उरणो विदुष्टरो दिव आरोधनानि	७००
कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाश् चरिष्ण्वर्चिर्वपुषामिदेकम् ।	
यदप्रवीता दधते ह गर्भं सद्यश् चिज् जातो भवसीदु दूतः	७०१
सद्यो जातस्य ददृशानमोजो यदस्य वातो अनुवाति शोचिः ।	
वृणक्ति तिग्मामतसेषु जिह्वां स्थिरा चिदन्ना दयते वि जम्भैः	७०२
तूषु यदन्ना तूषुणा ववक्षं तूषु दूतं कृणुते युहो अग्निः ।	
वार्तस्य मेळि संचते निजूर्धन् आशुं न वाजयते हिन्वे अवीं	७०३

॥ ८३ ॥ (ऋ० ४ । ८ । १-८) गायत्री ।

दूतं वो विश्ववेदसं हव्यवाहमर्मर्त्यम् । यजिष्ठमृञ्जसे गिरा	७०४
स हि वेदा वसुधितिं महाँ आरोधनं दिवः । स देवा एह वक्षति	७०५
स वेद देव आनमं देवां ऋतायते दमे । दाति प्रियार्णि चिद् वसु	७०६
स होता सेदु दूत्यं चिकित्वां अन्तरीयते । विद्रां आरोधनं दिवः	७०७
ते स्याम ये अग्रये ददाशुर्हव्यदातिभिः । य ई पुष्यन्त इन्धते	७०८
ते राया ते सुवीर्यैः ससवांसो वि शृण्विरे । ये अग्ना दधिरे दुवः	७०९
अस्मे रायो दिवेदिवे सं चरन्तु पुरुस्पृहः । अस्मे वाजांस ईरताम्	७१०
स विप्रश् चर्षणीनां शर्वसा मानुषाणाम् । अतिं क्षिप्रेव विध्यति	७११

॥ ८४ ॥ (ऋ० ४ । ९ । १-८)

अग्ने मृळ महाँ असि य ईमा देवयुं जनम् । इयेथ बहिरासदम्	७१२
स मानुषीषु दूळमो विश्वु प्रावीर्मर्त्यः । दूतो विश्वेषां भुवत्	७१३

स सञ्च परि णीयते	होता मन्द्रो दिविष्टिषु । उत पोता नि षीदति	७१४
उत गा अग्रिध्वर	उतो गृहपतिर्दमे । उत ब्रह्मा नि षीदति	७१५
वेषि ह्यध्वरीयताम्	उपवृक्ता जनानाम् । हव्या च मानुषाणाम्	७१६
वेषीद् वस्य दूत्यं	यस्य जुजोषो अध्वरम् । हव्यं मर्तस्य वोह्वे	७१७
अस्माकं जोष्यध्वरम्	अस्माकं यज्ञमङ्गिरः । अस्माकं शृणुधी हवम्	७१८
परि ते दूळभो रथो	अस्माँ अश्नोतु विश्वतः । येन रक्षसि दाशुषः	७१९

॥ ८५ ॥ (ऋ० ४ । १० । १-८)

पदपांक्तिः, (७२३, ७२५, ७२६ उष्णिग्वा,) ७२४ महापदपांक्तिः, ७२७ उष्णिक् ।

अग्ने तमद्य	अश्वं न स्तोमैः	ऋतुं न भद्रं	हृदिस्पृशम् । ऋध्यामा त ओह्वैः	७२०
अधा ह्यग्ने	ऋतोर्भद्रस्य	दक्षस्य साधोः । रथीर्ऋतस्य	बृहतो बभूथ	७२१
एभिर्नो अकैर्	भवा नो अवाङ्	स्वर्णं ज्योतिः । अग्ने विश्वेभिः	सुमना अनीकैः	७२२
आभिष्टे अद्य	गीर्भिर्गुणन्तो	अग्ने दाशेम । प्र ते दिवो न	स्तनयन्ति शुष्माः	७२३
तव स्वादिष्ट	अग्ने संदष्टिर्	इदा चिदहं	इदा चिदक्तोः । श्रिये रुक्मो न	रौचत उपाके ७२४
घृतं न पूतं	तनूरेपाः	शुचि हिरण्यम् । तत् ते रुक्मो न	रौचत स्वधावः	७२५
कृतं चिद्धि ष्मा	सनेभि, द्वेषो	अग्र इनोषि मर्तात् । इत्था यजमानादृतावः		७२६
शिवा नः सख्या	सन्तु, भ्रात्रा	अग्ने देवेषु युष्मे । सा नो नाभिः	सदने सस्मिन्नूधन्	७२७

॥ ८६ ॥ (ऋ० ४ । ११ । १-६) विष्टुप् ।

भद्रं ते अग्ने सहसिन्ननीकम्	उपाक आ रौचते सूर्यस्य ।	
रुशद् दृशे ददृशे नक्तया चिद्	अरुक्षितं दृश आ रूपे अन्नम्	७२८
वि षाह्यग्ने गृणते मनीषां	खं वेपसा तुविजात स्तवानः ।	
विश्वेभिर्यद् वावनः	शुक्र देवैस् तन्नो रास्व सुमहो भूरि मन्म	७२९
त्वदग्ने काव्या त्वन्मनीषास्	त्वदुक्था जायन्ते राध्यानि ।	
त्वदेति द्रविणं वीरपेशा	इत्थाधिगे दाशुषे मर्त्याय	७३०
त्वद् वाजी वाजंभरो विहाया	अभिष्टिकृज् जायते सत्यशुष्मः ।	
त्वद् रयिर्देवजुतो मयोभुस्	त्वदाशुर्जुवाँ अग्ने अवी	७३१
त्वामग्ने प्रथमं देवयन्तो	देवं मर्ता अमृत मन्द्रजिह्वम् ।	
द्वेषोयुतमा विवासन्ति धीभिर्	दमूनसं गृहपतिममूरम्	७३२

अरे अस्मदमतिमारे अंह अरे विश्वां दुर्मतिं यन्निपासि ।
दोषा शिवः सहसः सूनो अग्ने यं देव आ चित् सचसे स्वस्ति ७३३

॥ ८७ ॥ (ऋ० ४ । १२ । १-६)

यस् त्वामग्न इनधते यतस्रुक् त्रिस् ते अन्नं कृणवत् सस्मिन्नहन् ।
स सु धुमैरभ्यस्तु प्रसन्नत् तव कृत्वा जातवेदश् चिकित्वान् ७३४
इध्मं यस् ते जभरच्छश्रमाणो महो अग्ने अनीकमा संपर्यन् ।
स इधानः प्रति दोषामुषासं पुष्यन् रयिं सचते मन्मित्रान् ७३५
अग्निरीशे बृहतः क्षत्रियस्य अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः ।
दधाति रत्नं विधते यविष्ठो व्यानुषङ् मर्त्याय स्वधावान् ७३६
यच्चिद्धि ते पुरुषत्रा यविष्ठ अचित्तिभिश् चकृमा कच्चिदागः ।
कृधी प्वस्माँ अदितेरनागान् व्येनांसि शिश्रथो विष्वगग्ने ७३७
महश् चिदग्न एनसो अभीक ऊर्वाद देवानामुत मर्त्यानाम् ।
मा ते सखायः सदमिद् रिषाम यच्छा तोकाय तनयाय शं योः ७३८
यथा ह त्यद् वसवो गौर्यं चित् पदि षिताममुञ्चता यजत्राः ।
एवो प्वस्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतरं न आयुः ७३९

॥ ८८ ॥ (ऋ० ४ । १३ । १-५)

प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यद् विभातीनां सुमना रत्नधेयम् ।
यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् उत् सूर्यो ज्योतिषा देव एति ७४०
ऊर्ध्व भानुं सविता देवो अश्रेद् द्रुप्सं दर्विध्वद् गविषो न सत्त्वा ।
अनु व्रतं वरुणो यन्ति मित्रो यत् सूर्यं दिव्यारोहयन्ति ७४१
यं सीमकृण्वन् तमसे विष्टुचै ध्रुवक्षेमा अनवस्यन्तो अर्थम् ।
तं सूर्यं हरितः सप्त यद्वाहीः स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति ७४२
वहिष्ठेभिर्विहरन् यासि तन्तुम् अवव्ययन्नसितं देव वस्म ।
दर्विध्वतो रश्मयः सूर्यस्य चर्मेवावाधुस् तमो अप्स्वन्तः ७४३
अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्कुत्तानोऽव पद्यते न ।
कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नार्कम् ७४४

॥ ८९ ॥ (ऋ० ४ । १४ । १-५)

प्रत्यग्निरुषसो जातवेदा अख्यद् देवो रोचमाना महोभिः ।	
आ नासत्योरुगाया रथेन इमं यज्ञमुप नो यातमच्छ	७४५
ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ज्योतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् ।	
आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं वि सूर्यो रश्मिभिश् चेर्कितानः	७४६
आवहन्त्यरुणीज्योतिषागान् मही चित्रा रश्मिभिश् चेर्किताना ।	
प्रबोधयन्ती सुविताय देवी उषा ईयते सुयुजा रथेन	७४७
आ वां वहिष्ठा इह ते वहन्तु रथा अश्वास उषसो व्युष्टौ ।	
इमे हि वां मधुपेयाय सोमा अस्मिन् यज्ञे वृषणा मादयेथाम्	७४८
अनायतो० (७४४)	

॥ ९० ॥ (ऋ० ४ । १५ । १-६) गायत्री ।

अग्निर्होता नो अध्वरे वाजी सन् परिणीयते । देवो देवेषु यज्ञियः	७४९
परि त्रिविष्टयध्वरं यात्यग्नी रथीरिव । आ देवेषु प्रयो दधत्	७५०
परि वाजपतिः कविर् अग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद् रत्नानि दाशुषे	७५१
अयं यः सृञ्जये पुरो दैववाते समिध्यते । द्युमाँ अमित्रदम्भनः	७५२
अस्य घा वीर ईर्वतो अग्नेरीशीत् मर्त्यैः । तिग्मजम्भस्य मीहृषः	७५३
तमर्वन्तं न सानसिम् अरुषं न दिवः शिशुम् । मर्मज्यन्ते दिवेदिवे	७५४

॥ ९१ ॥ (ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१२)

(७५५-७६६) बुधगविष्टिरावात्रेयौ । त्रिण्डुप् ।

अबोध्यग्निः समिधा जनानां प्रति धेनुमिवायतीमुषासम् ।	
यद्वा इव प्र वयामुजिहानाः प्र भानवः सिस्रते नाकमच्छ	७५५
अबोधि होता यजथाय देवान् ऊर्ध्वो अग्निः सुमनाः प्रातरस्थात् ।	
समिद्धस्य रुशददर्शि पाजो महान् देवस् तमसो निरमोचि	७५६
यदीं गणस्य रश्नामजीगः शुचिरङ्गे शुचिभिर्गोभिरग्निः ।	
आद् दक्षिणा युज्यते वाज्यन्ती उत्तानामूर्ध्वो अध्वयज् जुह्वभिः	७५७

अग्निमच्छा देवयतां मनांसि चक्षूषीव सूर्ये सं चरन्ति ।	
यदा सुवाते उषसा विरूपे श्वेतो वाजी जायते अग्रे अह्नाम्	७५८
जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे अह्नां हितो हितेष्वरुषो वनेषु ।	
दमेदमे सप्त रत्ना दधानो अग्निर्होता नि षसादा यजीयान्	७५९
अग्निर्होता न्यसीदद् यजीयान् उपस्थे मातुः सुरभा उं लोके ।	
युवा कविः पुरुनिष्ठ क्रतावा धर्ता कृष्टीनामुत मध्य इद्रः	७६०
प्र ण त्वं विप्रमध्वरेषु साधुम् अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।	
आ यस् ततान रोदसी क्रतेन नित्यं मृजन्ति वाजिनं घृतेन	७६१
मार्जाल्यो मृज्यते स्वे दमूनाः कविप्रशस्तो अतिथिः शिवो नः ।	
सहस्रशृङ्गो वृषभस् तदौजा विश्वा अग्रे सहसा प्रास्यन्यान्	७६२
प्र सद्यो अग्रे अत्येष्यन्यान् आविर्यस्मै चारुतमो बभूथ ।	
ईलेन्यो वपुष्यो विभावा प्रियो विशामतिथिर्मानुषीणाम्	७६३
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलिमग्ने अन्तित ओत दूरात् ।	
आ भन्दिष्ठस्य सुमतिं चिकिद्धि बृहत् ते अग्रे महि शर्म भद्रम्	७६४
आद्य रथं भानुमो भानुमन्तम् अग्रे तिष्ठ यजतेभिः समन्तम् ।	
विद्वान् पथीनामुर्वान्तरिक्षम् एह देवान् हविरद्याय वक्षि	७६५
अवोचाम कवये मेध्याय वचो वन्दारु वृषभाय वृष्णे ।	
गर्विष्ठिरो नमसा स्तोममग्नौ दिवीव रुक्ममुरुव्यञ्जमश्रेत्	७६६

॥ ९२ ॥ (ऋ० ५।२।१-१२)

(७६७-७७८) कुमार आत्रेयः, वृशो वा जानः, उभौ वा; २, ९ वृशो जानः । त्रिष्टुप्, १२ शक्वरी ।

कुमारं माता युवतिः समुब्धं गुहां विभर्ति न ददाति पित्रे ।	
अनीकमस्य न मिनज्जनासः पुरः पश्यन्ति निहितमरतौ	७६७
कमेतं त्वं युवते कुमारं पेषीं विभर्षिं महिषी जजान ।	
पूर्वीर्हि गर्भः शरदौ ववर्ध अपश्यं जातं यदस्रत माता	७६८
हिरण्यदन्तं शुचिवर्णमारात् क्षेत्रादपश्यमायुधा मिमानम् ।	
ददानो अस्मा अमृतं विपृक्त किं मामनिन्द्राः कृणवन्ननुकथाः	७६९

क्षेत्रादपश्यं सनुतश् चरन्तं सुमद् यूथं न पुरु शोभमानम् । न ता अंगृभ्रन्नजनिष्ट हि षः पलिक्रीरिद् युवतयो भवन्ति	७७०
के मे मर्यकं वि यवन्त गोभिर् न येषां गोपा अरणश् चिदासं । य ई जगृभ्ररव ते सृजन्तु आज्ञाति पृथ उर्प नश् चिकित्वान्	७७१
वसां राजानं वसति जनानाम् अरातयो नि दधुर्मर्त्येषु । ब्रह्माण्यत्रैरव तं सृजन्तु निन्दितारो निन्द्यासो भवन्तु	७७२
शुनश्चिच्छेपं निर्दितं सहस्राद् यूपादमुञ्चो अशमिष्ट हि षः । एवास्मदग्रे वि मुमुग्धि पाशान् होतश् चिकित्व इह तू निषद्य	७७३
हृणीयमानो अप हि मदैयेः प्र मे देवानां व्रतुपा उवाच । इन्द्रो विद्रो अनु हि त्वा चक्ष तेनाहमग्रे अनुशिष्ट आगाम्	७७४
वि ज्योतिषा बृहता भ्रात्यग्निर आविर्विश्वानि कृणुते महित्वा । प्रादेवीर्मायाः सहेते दुरेवाः शिशीति शृङ्गे रक्षसे विनिक्षे	७७५
उत स्वानासो दिवि षन्त्वग्रेस् तिग्मायुधा रक्षसे हन्तवा उ । मदै चिदस्य प्र रुजन्ति भामा न वरन्ते परिबाधो अदेवीः	७७६
एतं ते स्तोमं तुविजात विप्रो रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् । यदीदग्रे प्रति त्वं देव हर्याः स्वर्वतीरप एना जयेम	७७७
तुविग्रीवो वृषभो वावृधानो अशच्चर्यः समजाति वेदः । इतीममग्निममृता अवोचन् बर्हिष्मते मनवे शर्म यंसद्विष्मते मनवे शर्म यंसत्	७७८

॥ ९३ ॥ (ऋ० ५ । ३ । १-२, ४-१२)

(७७९-८१०) वसुश्रुत आत्रेयः । ७७९ विराट्, ७८०-७८९ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्रे वरुणो जायसे यत् त्वं मित्रो भवसि यत् समिद्धः । त्वे विश्वे सहसस्पुत्र देवास् त्वमिन्द्रो दाशुषे मर्त्याय	७७९
त्वमर्यमा भवसि यत् कनीनां नाम स्वधावन् गुह्यं विभर्षि । अञ्जन्ति मित्रं सुधितं न गोभिर् यद् दंपती समनसा कृणोषि	७८०
तव श्रिया सुदृशो देव देवाः पुरु दधाना अमृतं सपन्त । होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर् दशस्यन्त उशिजः शंसमायोः	७८१

न त्वद्भोता पूर्वो अग्ने यजीयान् न काव्यैः परो अस्ति स्वधावः । विशश् च यस्या अतिथिर्भवासि स यज्ञेन वनवद् देव मर्तान्	७८२
वयमग्ने वनुयाम त्वोता वसूयवो हविषा बुध्यमानाः । वयं समर्थे विदथेष्वह्ना वयं राया सहसस्पुत्र मर्तान्	७८३
यो न आगो अभ्येनो भराति अधीदुधमघशंसे दधात । जही चिकित्वो अभिशस्तिमेताम् अग्ने यो नो मर्चयति द्रयेन	७८४
त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त हव्यैः । संस्थे यदग्र ईर्यसे रयीणां देवो मर्तैर्वसुभिरिध्यमानः	७८५
अव स्पृधि पितरं योधि विद्वान् पुत्रो यस् तै सहसः स्नन ऊहे । कदा चिकित्वो अभि चक्षसे नो अग्ने कदा ऋतचिद् यातयासे	७८६
भूरि नाम वन्दमानो दधाति पिता वसो यदि तज् जोषयासे । कुविद् देवस्य सहसा चक्रानः सुम्नमग्निर्वनते वावृधानः	७८७
त्वमङ्ग जरितारै यविष्ठ विश्वान्यग्ने दुरितार्तिं पर्षि । स्तेना अदृश्रन् रिषवो जनासो अज्ञातकेता वृजिना अभूवन्	७८८
इमे यामासस् त्वद्रिगभूवन् वसवे वा तदिदागो अवाचि । नाहायमग्निरभिशस्तये नो न रीषते वावृधानः परा दात्	७८९

॥ ९४ ॥ (ऋ० ५ । ४ । १-११) त्रिष्टुप् ।

त्वामग्ने वसुपतिं वसूनाम् अभि प्र मन्दे अध्वरेषु राजन् । त्वया वाजं वाजयन्तो जयेम अभि प्याम पृतसुतीर्मर्त्यीनाम्	७९०
हव्यवाळग्निरजरः पिता नो विशुर्विभावा सुदृशीको अस्मे । सुगार्हपत्याः समिषो दिदीहि अस्मद्यक् सं मिमीहि श्रवांसि	७९१
विशां कविं विश्पतिं मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम् । नि होतारं विश्वविदं दधिध्वे स देवेषु वनते वार्याणि	७९२
जुषस्वाग्र इळया सजोषा यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य । जुषस्व नः समिधं जातवेद आ च देवान् हविरद्याय वक्षि	७९३

जुष्टो दमूना अतिथिर्दुरोण इमं नो यज्ञमुप याहि विद्वान् ।	
विश्वा अग्ने अभियुजो विहत्या शत्रूयतामा भरा भोजनानि	७९४
वधेन दस्युं प्र हि चातर्यस्व वर्यः कृण्वानस् तन्वेडु स्वायै ।	
पिपर्षि यत् सहसस्पुत्र देवान् त्सो अग्ने पाहि नृतम वाजै अस्मान्	७९५
वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक भद्रशोचे ।	
अस्मे रयिं विश्ववारं समिन्व अस्मे विश्वानि द्रविणानि धेहि	७९६
अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व सहसः सूनो त्रिषधस्थ हव्यम् ।	
वयं देवेषु सुकृतः स्याम शर्मणा नस् त्रिवरूथेन पाहि	७९७
विश्वानि नो दुर्गहा जातवेदः सिन्धुं न नावा दुरितातिं पर्षि ।	
अग्ने अत्रिवन्नमसा गृणानोडु अस्माकं बोध्यविता तनूनाम्	७९८
यस् त्वा हृदा कीरिणा मन्यमानो अमर्त्यं मर्त्यो जोहवीमि ।	
जातवेदो यशो अस्मासु धेहि प्रजाभिरग्ने अमृतत्वमश्याम्	८९९
यस्मै त्वं सुकृते जातवेद उ लोकमग्ने कृणवः स्योनम् ।	
अश्विनं स पुत्रिणं वीरवन्तं गोमन्तं रयिं नशते स्वस्ति	८००

॥ ९५ ॥ (ऋ० ५ । ६ । १-१०) पङ्क्तिः ।

अग्निं तं मन्ये यो वसुर् अस्तं यं यन्ति धेनवः ।	
अस्तमर्वन्त आशवो अस्तं नित्यासो वाजिन इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०१
सो अग्नियो वसुर्गुणे सं यमायन्ति धेनवः ।	
समर्वन्तो रघुद्रुवः सं सुजातासः सूरय इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०२
अग्निर्हि वाजिनं विशे ददाति विश्वचर्षणिः ।	
अग्नी राये स्वाधुवं स प्रीतो याति वार्यम् इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०३
आ ते अग्न इधीमहि द्युमन्तं देवाजरम् ।	
यद्वा स्या ते पनीयसी समिद् दीदयति द्यवि इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०४
आ ते अग्न क्रुचा हविः शुक्रस्य शोचिषस्पते ।	
सुश्वन्द्र दस्म विस्पते हव्यवाद् तुभ्यं हूयत इषं स्तोतृभ्य आ भर	८०५

प्रो त्ये अग्रयोऽग्निषु	विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।	
ते हिंन्विरे त इन्विरे	त इषण्यन्त्यानुषग्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०६
तव त्ये अग्ने अर्चयो	महिं ब्राधन्त वाजिनः ।	
ये पत्त्वभिः शफानां	व्रजा भुरन्त गोनाम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०७
नवा नो अग्र आ भेर	स्तोतृभ्यः सुक्षितीरिषः ।	
ते स्याम य आनृचुस्	त्वादूतासो दमेदम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०८
उभे सुश्चन्द्र सर्षिषो	दर्वी श्रीणीष आसनि ।	
उतो न उत् पुपूर्या	उक्थेषु शवसस्पत	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८०९
एवाँ अग्निर्मजुर्यमुर्	गीर्भिर्यज्ञैर्भिरानुषक् ।	
दधदस्मे सुवार्थम्	उत त्यदाश्चश्यम्	इषं स्तोतृभ्य आ भेर ८१०

॥ ९६ ॥ (ऋ० ५।७।१-१०) (८११-८२७) इप आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८२० पङ्क्तिः ।

सखायः सं वः सम्यञ्चम्	इषं स्तोमं चाग्रये ।	
वर्षिष्ठाय क्षितीनाम्	ऊर्जो नष्ट्रे सहस्वते	८११
कुत्रा चिद् यस्य समृतौ	रुणा नरो नृषदने ।	
अर्हन्तश् चिद् यमिन्धते	सँजनयन्ति जन्तवः	८१२
सं यद्विषो वनामहे	सं हव्या मानुषाणाम् ।	
उत द्युम्नस्य शवस	ऋतस्य रश्मिमा ददे	८१३
सः स्मा कृणोति केतुमा	नक्तं चिद् दूर आ सते ।	
पावको यद् वनस्पतीन्	प्र स्मा मिनात्यजरः	८१४
अव स्म यस्य वेषणे	स्वेदं पथिषु जुह्वति ।	
अभीमह स्वजेन्यं	भूमा पृष्ठेव रुरुहुः	८१५
यं मर्त्यैः पुरुस्पृहं	विदद् विश्वस्य धार्यसे ।	
प्र स्वादनं पितूनाम्	अस्तं ताति चिदायवे	८१६
स हि ष्मा धन्वाक्षितं	दाता न दात्या पशुः ।	
हिरिश्मश्रुः शुचिदन्	ऋभुरनिभृष्टतविषिः	८१७

शुचिः ष्म यस्मा अत्रिवत् प्र स्वधितीव रीयते ।

सुषूरसूत माता क्राणा यदानशे भगम् ८१८

आ यस्तै सपिरासुते अग्ने शमस्ति धायसे ।

ऐषु द्युम्नमुत श्रव आ चित्तं मर्त्येषु धाः ८१९

इति चिन् मन्युमग्निजस् त्वादातमा पशुं ददे ।

आदग्ने अपृणतो अत्रिः सासह्याद् दस्यून इषः सासह्यान्नृन् ८२०

॥ १७ ॥ (ऋ० ५ । ८ । १-७) जगती ।

त्वामग्ने ऋतायवः समीधिरे प्रत्नं प्रत्नासं ऊतये सहस्कृत ।

पुरुश्चन्द्रं यजतं विश्वधायसं दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ८२१

त्वामग्ने अतिथिं पूर्य विशः शोचिष्केशं गृहपतिं नि वेदिरे ।

बृहत्केतुं पुरुरूपं धनस्पतं सुशर्माणं स्ववसं जरद्विषम् ८२२

त्वामग्ने मानुषीरीळते विशो होत्राविदं विविचि रत्नधातमम् ।

गुहा सन्तं सुभग विश्वदर्शतं तुविष्वणसं सुयजं घृतश्रियम् ८२३

त्वामग्ने धर्णासि विश्वधा वयं गीर्भिर्गृणन्तो नमसोर्प सोदिम ।

स नो जुषस्व समिधानो अङ्गिरो देवो मर्तस्य यशसा सुदीतिभिः ८२४

त्वामग्ने पुरुरूपो विशेविशे वयो दधासि प्रत्नथा पुरुष्टुत ।

पुरूप्यन्ना सहसा वि राजसि त्विषिः सा ते तित्विषाणस्य नाधृषे ८२५

त्वामग्ने समिधानं यविष्य देवा दूतं चक्रिरे हव्यवाहनम् ।

उरुज्रयसं घृतयोनिमाहुतं त्वेषं चक्षुर्दधिरे चोदयन्मति ८२६

त्वामग्ने प्रदिव आहुतं घृतैः सुम्नायवः सुषमिधा समीधिरे ।

स वावृधान ओषधीभिरुक्षितोऽभि ज्रयासि पार्थिवा वि तिष्ठसे ८२७

॥ १८ ॥ (ऋ० ५ । ९ । १-७)

(८२८-८४१) गय आत्रेयः । अनुष्टुप् । ८३२, ८३४ पङ्क्तिः ।

त्वामग्ने हविष्मन्तो देवं मर्तास ईळते ।

मन्ये त्वा जातवैदसं स हव्या वक्ष्यानुषक् ८२८

अग्निर्होता दास्वतः क्षयस्य वृक्तबर्हिषः ।

सं यज्ञासश् चरन्ति यं सं वाजासः श्रवस्यवः ८२९

उत स्म यं शिशुं यथा नवं जनिष्ठारणी ।	
धर्तारं मानुषीणां विशामग्निं स्वध्वरम्	८३०
उत स्म दुर्गभीयसे पुत्रो न ह्यार्याणाम् ।	
पुरू यो दग्धासि वना अग्ने पशुर्न यवसे	८३१
अध स्म यस्यार्चयः सम्यक् संयन्ति धूमिनः ।	
यदीमह त्रितो दिवि उप ध्मातेव धमति शिशीति ध्मातरीं यथा	८३२
तवाहमग्न ऊतिभिर् मित्रस्य च प्रशस्तिभिः ।	
द्वेषोयुतो न दुरिता तुर्याम् मर्त्यानाम्	८३३
तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।	
स क्षेपयत् स पोषयद् भुवद् वाजस्य सातय उतैधि पृत्सु नो वृधे	८३४

॥ ९९ ॥ (ऋ० ५। १०। १-७) अनुष्टुप्. ८३८, ८४१ पङ्क्तिः ।

अग्न ओजिष्ठमा भर द्युम्नमस्मभ्यमग्निगो ।	
प्र नो राया परीणसा रत्सि वाजाय पन्थाम्	८३५
त्वं नो अग्ने अद्भुत क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।	
त्वे असुर्यमारुहत् क्राणा मित्रो न यज्ञियः	८३६
त्वं नो अग्न एषां गर्यं पुष्टिं च वर्धय ।	
ये स्तोमेभिः प्र सूरयो नरो मृधान्यानुशुः	८३७
ये अग्ने चन्द्र ते गिरः शुम्भन्त्यश्चराधसः ।	
शुष्मेभिः शुष्मिणो नरो दिवश् चिद् येषां बृहत् सुक्रीर्तिर्बोधति त्मना	८३८
तव त्वे अग्ने अर्चयो भ्राजन्तो यन्ति धृष्णुया ।	
परिज्मानो न विद्युतः स्वानो रथो न वाजयुः	८३९
नू नो अग्न उतये सबाधसश् च रातये ।	
अस्माकांसश् च सूरयो विश्वा आशास् तरीषाणि	८४०
त्वं नो अग्ने अङ्गिरः स्तुतः स्तवान् आ भर ।	
होतर्विभ्वासह रयिं स्तोतृभ्यः स्तवसे च न उतैधि पृत्सु नो वृधे	८४१

॥ १०० ॥ (ऋ० ५ । ११ । १-६) (८४२-८६५) सुतंभर आत्रेयः । जगती ।

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविर् अग्निः सुदक्षः सुविताय नव्यसे ।	
घृतप्रतीको बृहता दिविस्पृशा धुमद् वि भाति भरतेभ्यः शुचिः	८४२
यज्ञस्य केतुं ग्रथं पुरोहितम् अग्निं नरस् त्रिषधस्थे समीधिरे ।	
इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि सीदन्नि होता यजथाय सुक्रतुः	८४३
असंमृष्टो जायसे मात्रोः शुचिर् मन्द्रः कविरुदतिष्ठो विवस्वतः ।	
घृतेन त्वावर्धयन्नग्र आहुत धूमस् ते केतुरभवद् दिवि श्रितः	८४४
अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु साधुया अग्निं नरो वि भरन्ते गृहेगृहे ।	
अग्निर्दूतो अभवद्भव्यवाहनो अग्निं वृणाना वृणते कविक्रतुम्	८४५
तुभ्येदमग्ने मधुमत्तमं वचस् तुभ्यं मनीषा इयमस्तु शं हृदे ।	
त्वां गिरः सिन्धुमिवावनीर्महीर् आ पृणन्ति शर्वसा वर्धयन्ति च	८४६
त्वामग्ने अङ्गिरसो गुहा हितम् अन्वविन्दञ्छिश्रियाणं वनेवने ।	
स जायसे मध्यमानः सहो महत् त्वामाहुः सहसस्पुत्रमङ्गिरः	८४७

॥ १०१ ॥ (ऋ० ५ । १२ । १-६) त्रिष्टुप् ।

प्राग्रये बृहते यज्ञियाय ऋतस्य वृष्णे असुराय मन्म ।	
घृतं न यज्ञ आस्येऽ सुपूतं गिरं भरे वृषभार्य प्रतीचीम्	८४८
ऋतं चिकित्व ऋतमिच्छ चिकिद्धि ऋतस्य धारा अनु तन्धि पूर्वीः ।	
नाहं यातुं सहसा न द्वयेन ऋतं संपाम्यरुषस्य वृष्णः	८४९
कया नो अग्न ऋतयन्तेन भुवो नवेदा उचथस्य नव्यः ।	
वेदा मे देव ऋतुपा ऋतूनां नाहं पतिं सनितुरस्य रायः	८५०
के ते अग्ने रिपवे बन्धनासः के पायवः सनिषन्त धुमन्तः ।	
के धासिमग्ने अनृतस्य पान्ति क आसतो वचसः सन्ति गोपाः	८५१
सखायस् ते विषुणा अग्न एते शिवासः सन्तो अशिवा अभूवन् ।	
अधूर्षत स्वयमेते वचोभिर् ऋजूयते वृजिनानि ब्रुवन्तः	८५२
यस् ते अग्ने नमसा यज्ञमीदं ऋतं स पात्यरुषस्य वृष्णः ।	
तस्य क्षयः पृथुरा साधुरेतु प्रसस्तीणस्य नहुषस्य शेषः	८५३

॥ १०२ ॥ (ऋ० ५ । १३ । १-६) गायत्री ।

अर्चन्तस् त्वा हवामहे	अर्चन्तः समिधीमहि	। अग्ने अर्चन्त ऊतये	८५४
अग्नेः स्तोमं मनामहे	सिध्मद्य दिविस्पृशः	। देवस्य द्रविणस्यवः	८५५
अग्निर्जुषत नो गिरो	होता यो मानुषेष्वा	। स यक्षद् दैव्यं जनम्	८५६
त्वमग्ने सप्रथा असि	जुष्टो होता वरेण्यः	। त्वया यज्ञं वि तन्वते	८५७
त्वमग्ने वाजसातमं	विप्रा वर्धन्ति सुष्टुतम्	। स नो रास्व सुवीर्यम्	८५८
अग्ने नेमिरा इव	देवाँस् त्वं परिभूरसि	। आ राधश् चित्रमृञ्जसे	८५९

॥ १०३ ॥ (ऋ० ५ । १४ । १-६)

अग्निं स्तोमेन बोधय	समिधानो अमर्त्यम्	। हव्या देवेषु नो दधत्	८६०
तमध्वरेष्वीळते	देवं मर्ता अमर्त्यम्	। यजिष्ठं मानुषे जने	८६१
तं हि शश्वन्त ईळते	स्रुचा देवं घृतश्रुता	। अग्निं हव्याय वोह्वे	८६२
अग्निर्जातो अरोचत	घ्नन् दस्यून् ज्योतिषा तमः	। अर्विन्दद् गा अपः स्वः	८६३
अग्निमीळेन्यं कविं	घृतपृष्ठं सपर्यत	। वेतु मे शृण्वद्ववम्	८६४
अग्निं घृतेन वावृधुः	स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम्	। स्वाधीभिर्वचस्युभिः	८६५

॥ १०४ ॥ (ऋ० ५ । १५ । १-५) (८६६-८७०) धरुण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

प्र वेधसे कवये वेद्याय	गिरं भरे यशसे पूर्याय	।	
घृतप्रसक्तो असुरः सुशेवो	रायो धर्ता धरुणो वस्वो अग्निः		८६६
ऋतेन ऋतं धरुणं धारयन्त	यज्ञस्य शाके परमे व्योमन्	।	
दिवो धर्मेन् धरुणे सेदुषो नृञ्	जातैरजातां अभि ये ननक्षुः		८६७
अंहोयुवस् तन्वस् तन्वते वि	वयो महद् दुष्टरं पूर्याय	।	
स संवतो नवजातस् तुतुर्यात्	सिंहं न क्रुद्धमभितः परिं धुः		८६८
मातेव यद् भरसे पप्रथानो	जनंजनं धार्यसे चक्षसे च	।	
वर्योवयो जरसे यद् दधानः	परि त्मना विषुरुपो जिगासि		८६९
वाजो नु ते शर्वसस्यात्वन्तम्	उरुं दोषं धरुणं देव रायः	।	
पदं न तायुर्गुहा दधानो	महो राये चितयन्नत्रिमस्पः		८७०

॥ १०५ ॥ (ऋ० ५ । १६ । १-५) [८७१-८८०] पूरुरात्रेयः । अनुष्टुप्, ८७५ पङ्क्तिः ।

बृहद् वयो हि भानवे ऽर्चा देवायाग्नये ।
यं मित्रं न प्रशस्तिभिर् मतींसो दधिरे पुरः ८७१
स हि द्युभिर्जनानां होता दक्षस्य बाह्वोः ।
वि हव्यमग्निरानुषग् भगो न वारमृण्वति ८७२
अस्य स्तोमे मघोनः सख्ये वृद्धशौचिषः ।
विश्वा यस्मिन् तुविण्वणि समये शुष्ममादधुः ८७३
अधा ह्यग्न एषां सुवीर्यस्य मंहना ।
तमिद् यहं न रोदसी परि श्रवो बभूवतुः ८७४
नू न एहि वार्यम् अग्ने गृणान आ भर ।
ये वयं ये च सूर्यः स्वस्ति धामहे सचा उत्तैर्धि पृत्सु नो वृधे ८७५

॥ १०६ ॥ (ऋ० ५ । १७ । १-५) अनुष्टुप्, ८८० पङ्क्तिः ।

आ यज्ञैर्देव मर्त्ये इत्था तव्यांसमूतये ।
अग्निं कृते स्वध्वरे पूरुरीळीतावसे ८७६
अस्य हि स्वयंशस्तर आसा विधर्मन् मन्यसे ।
तं नाकं चित्रशौचिषं मन्द्रं परो मनीषया ८७७
अस्य वासा उ अर्चिषा य आयुक्त तुजा गिरा ।
दिवो न यस्य रेतसा बृहच्छोचन्त्यर्चयः ८७८
अस्य क्रत्वा विचेतसो दुस्मस्य वसु रथ आ ।
अधा विश्वासु हव्यो ऽग्निर्विशु प्र शस्यते ८७९
नू न इद्धि वार्यम् आसा संचन्त सूर्यः ।
ऊर्जो नपादभिष्टये पाहि शग्धि स्वस्तय उत्तैर्धि पृत्सु नो वृधे ८८०

॥ १०७ ॥ (ऋ० ५ । १८ । १-५)

[८८१-८८५] द्वितो मृक्तवाहा आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८८५ पङ्क्तिः ।

प्रातरग्निः पुरुप्रियो विशः स्तवेतातिथिः ।
विश्वानि यो अमर्त्यो हव्या मर्तेषु रण्यति ८८१

द्वितीयं मृक्तवाहसे	स्वस्य दक्षस्य मंहना ।	
इन्दुं स धत्त आनुषक्	स्तोता चित् ते अमर्त्य	८८२
तं वो दीर्घायुशोचिषं	गिरा हुवे मघोनाम् ।	
अरिष्टो येषां रथो	व्यश्वदावन् नीयते	८८३
चित्रा वा येषु दीधितिर्	आसन्नकथा पान्ति ये ।	
स्तीर्णं बर्हिः स्वर्णरे	श्रवांसि दधिरे परि	८८४
ये मे पञ्चाशतं ददुर्	अश्वानां सुधस्तुति ।	
द्युमदग्ने महि श्रवो	बृहत् कृधि मघोनां नृवदमृत नृणाम्	८८५

॥ १०८ ॥ (ऋ० ५।१९।१-५)

[८८६—८९०] वज्रिरात्रेयः । ८८६-८८७ गायत्री, ८८८-८८९ अनुष्टुप्, ८९० विराड्-रूपा ।

अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते	प्र वज्रेर्वज्रिश् चिकेत । उपस्थे मातुर्वि चष्टे	८८६
जुहुरे वि चितयन्तो	ऽनिमिषं नृम्णं पान्ति । आ इह्मां पुरं विविशुः	८८७
आ श्वैत्रेयस्य जन्तवो	द्युमद् वर्धन्त कृष्टयः ।	
निष्कग्रीवो बृहदुक्थ	एना मध्वा न वाजयुः	८८८
प्रियं दुग्धं न काम्यम्	अजामि जाम्योः सचा ।	
धर्मो न वाजजठरो	ऽदब्धः शश्वतो दभः	८८९
क्रीळन् नो रश्म आ शुवः	सं भस्मना वायुना वेविदानः ।	
ता अस्य सन् धूषजो न तिग्माः	सुसंशिता वक्ष्यो वक्षणेस्थाः	८९०

॥ १०९ ॥ (ऋ० ५।२०।१-४) [८९१-८९४] प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अनुष्टुप्, ८९४ पङ्क्तिः ।

यमग्ने वाजसातम्	त्वं चिन् मन्यसे रयिम् ।	
तं नो गीभिः श्रवाय्यं	देवत्रा पनया युजम्	८९१
ये अग्ने नेरयन्ति ते	वृद्धा उग्रस्य शवसः ।	
अप द्वेषो अप ह्वरो	ऽन्यव्रतस्य सथिरे	८९२
होतारं त्वा वृणीमहे	ऽग्ने दक्षस्य सार्धनम् ।	
यज्ञेषु पूर्व्य गिरा	प्रयस्वन्तो हवामहे	८९३
इत्था यथा त ऊतये	सहसावन् दिवेदिवे ।	
राय ऋताय सुक्रतो	गोभिः ग्याम सधमादो वीरैः स्याम सधमादः	८९४

॥ ११० ॥ (ऋ० ५ । २१ । १-४) [८९५-८९८] सप्त आत्रेयः । अनुष्टुप्, ८९८ पङ्क्तिः ।

मनुष्वत् त्वा नि धीमहि मनुष्वत् समिधीमहि । अग्रे मनुष्वदङ्गिरो देवान् देवयते यज ८९५
 त्वं हि मानुषे जने ऽग्रे सुप्रीत इध्यसे । सुचस् त्वा यन्त्यानुषक् सुजात सर्पिरासुते ८९६
 त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत । सपर्यन्तस् त्वा कवे यज्ञेषु देवमीळते ८९७
 देवं वो देवयज्यया अग्निमीळीतु मर्त्यः ।
 समिद्धः शुक्र दीदिहि ऋतस्य योनिमासदः सप्तस्य योनिमासदः ८९८

॥ १११ ॥ (ऋ० ५ । २२ । १-४) [८९९-९०२] विश्वसामा आत्रेयः । अनुष्टुप्, ९०२ पङ्क्तिः ।

प्र विश्वसामन्नत्रिवद् अर्ची पावकशोचिषे । यो अध्वरेष्वीड्यो होता मन्द्रतमो विशि ८९९
 न्यः प्रि जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् । प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः ९००
 चिकित्विन् मनसं त्वा देवं मर्तास ऊतये । वरेण्यस्य तेऽवस इयानासो अमन्महि ९०१
 अग्रे चिकिद्वयस्य न इदं वचः सहस्य ।
 तं त्वा सुशिप्र दंपते स्तोमैर्वधन्त्यत्रयो गीभिः शुम्भन्त्यत्रयः ९०२

॥ ११२ ॥ (ऋ० ५ । २३ । १-४) [९०३-९०६] द्युम्नो विश्वचर्षणिआत्रेयः । अनुष्टुप्, ९०६ पङ्क्तिः ।

अग्रे सहन्तमा भर द्युम्नस्य ग्रासहा रयिम् । विश्वा यश् चर्षणीरभि आइसा वाजेषु सासहत् ९०३
 तमग्रे पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर । त्वं हि सत्यो अद्भुतो दाता वाजस्य गोमतः ९०४
 विश्वे हि त्वा सजोषसो जनासो वृक्तवर्हिषः । होतारं सन्नसु प्रियं व्यन्ति वार्या पुरु ९०५
 स हि ष्मा विश्वचर्षणिर् अभिमाति सहो दुधे ।
 अग्रे एषु क्षयेष्वा रेवन् नः शुक्र दीदिहि द्युमत् पावक दीदिहि ९०६

॥ ११३ ॥ (ऋ० ५ । २४ । १-४)

[९०७-९१०] बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च क्रमेण गोपायना लौपायना वा । द्विपदा विराद् ।

अग्रे त्वं नो अन्तम उत त्राता शिवो भवा वरूध्यः ९०७
 वसुरग्निरवसुश्रवा अच्छा नक्षि द्युमत्तमं रयिं दाः ९०८
 स नो बोधि श्रुधी हवम् उरूष्या णो अघायतः समस्मात् ९०९
 तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः सुम्नाय नूनमीमहे सखिभ्यः ९१०

॥ ११४ ॥ (ऋ० ५ । २५ । १-२) [९११-९२७] वसूयव आत्रेयाः । अनुष्टुप् ।

अच्छा वो अभिमवसे देवं गांसि स नो वसुः ।
 रासत् पुत्र ऋषूणाम् ऋतावा पर्षति द्विषः ९११

स हि सत्यो यं पूर्वे चिद् देवासंश् चिद् यमीधिरे ।	
होतारं मन्द्रजिह्वमित् सुदीतिभिर्विभावसुम्	९१२
स नो धीती वरिष्ठया श्रेष्ठया च सुमत्या ।	
अग्ने रायो दिदीहि नः सुवृक्तिभिर्वरेण्य	९१३
अग्निदेवेषु राजति अग्निर्मतेष्वाविशन् ।	
अग्निर्नो हव्यवाहनो ऽग्निं धीभिः संपर्यत	९१४
अग्निस् तुविश्रवस्तमं तुविब्रह्माणमुत्तमम् ।	
अतूर्तं श्रावयत् पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे	९१५
अग्निर्ददाति सत्पतिं सासाह यो युधा नृभिः ।	
अग्निरत्यं रघुष्यदं जेतारमपराजितम्	९१६
यद् वाहिष्ठं तदग्रये बृहदर्चं विभावसो ।	
महिषीव त्वद् रयिस् त्वद् वाजा उदीरते	९१७
तव द्युमन्तो अर्चयो ग्रावेवोच्यते बृहत् ।	
उतो ते तन्यतुर्यथा स्वानो अर्तं त्मना दिवः	९१८
एवाँ अग्निं वसूयवः सहसानं ववन्दिम ।	
स नो विश्वा अति द्विषः पर्षन्नावेव सुक्रतुः	९१९

॥ ११५ ॥ (ऋ० ५ । २६ । १-८) गायत्री ।

अग्ने पावकं रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया । आ देवान् वक्षि यक्षि च	९२०
तं त्वा घृतस्त्रवीमहे चित्रभानो स्वर्दृशम् । देवाँ आ वीतये वह	९२१
वीतिहोत्रं त्वा कवे द्युमन्तं समिधीमहि । अग्ने बृहन्तमध्वरे	९२२
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये । होतारं त्वा वृणीमहे	९२३
यजमानाय सुन्वत अग्ने सुवीर्यं वह । देवैरा संत्सि बर्हिषि	९२४
समिधानः सहस्रजिद् अग्ने धर्माणि पुष्यसि । देवानां दूत उक्थ्यः	९२५
न्य॑ग्निं जातवेदसं होत्रवाहं यविष्यम् । दधाता देवमृत्विजम्	९२६
प्र यज्ञ एत्वानुषग् अद्या देवव्यचस्तमः । स्तृणीत बर्हिरासदे	९२७

॥ ११६ ॥ (ऋ० ५। २७। १-५)

[९२८-९३२] त्र्यरुणस्त्रैवृष्णः, त्रसदस्युः पौरुकुत्सः, अश्वमेधश्च भारताः राजानः (अत्रिर्मौम इति केचित्) । त्रिष्टुप्, ९३१-९३२ अनुष्टुप् ।

अनस्वन्ता सत्पतिर्माहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघोनः ।	
त्रैवृष्णो अग्ने दुशर्मिः सहस्रैर् वैश्वानर त्र्यरुणश् चिकेत	९२८
यो मे शता च विंशतिं च गोनां हरीं च युक्ता सुधुरा ददाति ।	
वैश्वानर सुष्टुतो वावृधानो ऽग्ने यच्छ त्र्यरुणाय शर्म	९२९
एवा तै अग्ने सुमतिं चक्रानो नविष्ठाय नवमं त्रसदस्युः ।	
यो मे गिरस् तुविजातस्य पूर्वीर् युक्तेनाभि त्र्यरुणो गृणाति	९३०
यो म इति प्रवोचति अश्वमेधाय सूरये ।	
ददद्वा सनि यते ददन्मेधामृतायते	९३१
यस्य मा परुषाः शतम् उद्धर्षयन्त्युक्षणाः ।	
अश्वमेधस्य दानाः सोमा इव त्र्याशिरः	९३२

॥ ११७ ॥ (ऋ० ५। २८। १-६)

[९३३-९३८] विश्ववारान्नेयी । ९३३, ९३५ त्रिष्टुप्, ९३४ जगती, ९३६ अनुष्टुप्, ९३७-९३८ गायत्री ।

समिद्धो अग्निर्दिवि शोचिरश्रेत् प्रत्यङ्मुषसमुर्विया वि भाति ।	
एति प्राचीं विश्वारा नमोभिर् देवा ईळाना हविषा घृताचीं	९३३
समिध्यमानो अमृतस्य राजसि हविष् कृण्वन्तं सचसे स्वस्तये ।	
विश्वं स धत्ते द्रविणं यमिन्वसि आतिथ्यमग्ने नि च धत्त इत् पुरः	९३४
अग्ने शर्धं महते सौमगाय तव द्युम्नान्युत्तमानि सन्तु ।	
सं जास्पत्यं सुयममा कृणुष्व शत्रूयतामभि तिष्ठा महांसि	९३५
समिद्धस्य प्रमहसो ऽग्ने वन्दे तव श्रियम् ।	
वृषभो द्युम्नवाँ असि समध्वरेष्विध्यसे	९३६
समिद्धो अग्न आहुत देवान् यक्षि स्वध्वर । त्वं हि हव्यवाळसि	९३७
आ जुहोता दुवस्यत अग्निं प्रयत्यध्वरे । वृणीध्वं हव्यवाहनम्	९३८

॥ ११८ ॥ (ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-१३)

[९३९-१०९०] भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप् ।

त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता अस्या धियो अभवो दस्म होता ।	
त्वं सीं वृषन्नकृणोर्दुष्टरीतु सहो विश्वस्मै सहसे सहध्वै	९३९
अथा होता न्यसीदो यजीयान् इळस्पद इषयन्नीड्यः सन् ।	
तं त्वा नरः प्रथमं देवयन्तो महो राये चितर्यन्तो अनु ग्मन्	९४०
वृतेव यन्तं बहुभिर्वसव्यैः त्वे रयि जागृवांसो अनु ग्मन् ।	
रुशन्तमग्निं दर्शतं बृहन्तं वपावन्तं विश्वहा दीदिवांसम्	९४१
पदं देवस्य नमसा व्यन्तः श्रवस्यवः श्रवं आपन्नमृक्तम् ।	
नामानि चिद् दधिरे यज्ञियानि भद्रायां ते रणयन्तु संदृष्टौ	९४२
त्वां वर्धन्ति क्षितयः पृथिव्यां त्वां राय उभयांसो जनानाम् ।	
त्वं त्राता तरणे चेत्यो भूः पिता माता सदमिन्मानुषाणाम्	९४३
सपर्येण्यः स ग्रियो विक्ष्वग्भिर् होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।	
तं त्वा वयं दम आ दीदिवांसम् उप जुबाधो नमसा सदेम	९४४
तं त्वा वयं सुध्योऽ नव्यमग्ने सुम्रायव ईमहे देवयन्तः ।	
त्वं विशो अनयो दीद्यानो दिवो अग्ने बृहता रौचनेन	९४५
विशां कविं विशपतिं शश्वतीनां नितोशनं वृषभं चर्षणीनाम् ।	
प्रेतीषणिमिषयन्तं पावकं राजन्तमग्निं यजतं रयीणाम्	९४६
सो अग्न ईजे शशमे च मतो यस्त आनट् समिधा हव्यदातिम् ।	
य आहुतिं परि वेदा नमोभिर् विश्वेत् स वामा दधते त्वोतः	९४७
अस्मा उ ते महि महे विधेम नमोभिरग्ने समिधोत हव्यैः ।	
वेदीं सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् आ ते भद्रायां सुमतौ यतेम	९४८
आ यस् ततन्थ रोदसी वि भासा श्रवोभिश्च श्रवस्यास् तरुत्रः ।	
बृहद्धिर्वाजैः स्थविरेभिरस्मे रेवद्भिरग्ने वितरं वि भाहि	९४९
नृवद् वसो सदमिद्धैः भूरिं तोकाय तनयाय पश्वः ।	
पूर्वीरिषो बृहतीरारेअघा अस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु	९५०

पुरुष्यग्ने पुरुधा त्वाया वस्त्रानि राजन् वसुता ते अश्याम् ।
पुरुणि हि त्वे पुरुवार सन्ति अग्ने वसु विधत्ते राजनि त्वे

९५१

॥ ११९ ॥ (ऋ० ६ । २ । १-११) अनुष्टुप्. ९६२ शकरी ।

त्वं हि क्षैतवद् यशो ऽग्ने मित्रो न पत्यसे । त्वं विचर्षणे श्रवो वसो पुष्टिं न पुष्यसि ९५२
त्वां हि ष्मा चर्षणयो यज्ञेभिर्गीर्भिरीळते । त्वां वाजी यात्यवृको रजस्तूर्विश्वचर्षणिः ९५३
सजोषस् त्वा दिवो नरो यज्ञस्य केतुर्मिन्धते । यद्ग स्य मानुषो जनः सुम्रायुर्जुह्वे अध्वरे ९५४
ऋधद् यस् तै सुदानवे धिया मर्तैः शशमते । ऊती ष बृहतो दिवो द्विषो अंहो न तरति ९५५
समिधा यस् त आहुतिं निशितिं मर्त्यो न शत । वयार्वन्तं स पुष्यति क्षयमग्ने शतायुषम् ९५६
त्वेषस् तै धूम ऋण्वति दिवि षञ्जुक्र आततः । सरो न हि द्युता त्वं कृपा पावक रोचसे ९५७
अधा हि विक्ष्वीड्यो ऽसि प्रियो नो अतिथिः । रण्वः पुरीव जूर्यः सुनुर्न त्रययार्यः ९५८
ऋत्वा हि द्रोणे अज्यसे ऽग्ने वाजी न कृत्व्यः । परिज्मेव स्वधा गयो ऽत्यो न ह्यार्यः शिशुः ९५९
त्वं त्या चिदच्युता अग्ने पशुर्न यवसे । धामाह यत् तै अजर वना वृश्चन्ति शिक्कसः ९६०
वेषि हध्वरीयताम् अग्ने होता दमै विशां । समृधौ विरपते कृणु जुषस्व हव्यमङ्गिरः ९६१
अच्छा नो मित्रमहो देव देवान् अग्ने वोचः सुमतिं रोदस्योः ।
वीहि स्वस्ति सुक्षितिं दिवो नृन् द्विषो अहांसि दुरिता तरेम, ता तरेम, तवार्वसा तरेम ९६२

॥ १२० ॥ (ऋ० ६ । ३ । १-८) त्रिष्टुप् ।

अग्ने स क्षेषदत्तपा ऋतेजा उरु ज्योतिर्नशते देवयुष्टे ।
यं त्वं मित्रेण वरुणः सजोषा देव पासि त्यजसा मर्तमंहः ९६३
ईजे यज्ञेभिः शशमे शमीभिर् ऋधद्वारायाग्र्ये ददाश ।
एवा चन तं यशसामजुष्टिर् नांहो मर्तै नशते न प्रदसिः ९६४
सरो न यस्य दृशातिररेपा भीमा यदेति शुचतस् त आ धीः ।
हेषस्वतः शुरुधो नायमक्तोः कुत्रा चिद् रण्वो वसतिर्विनेजाः ९६५
तिग्मं चिदेम महि वर्षो अस्य भसदश्चो न यमसान आसा ।
विजेहमानः परशुर्न जिह्वां द्रविर्न द्रावयति दारु धक्षत् ९६६
स इदस्तेव प्रति धादसिष्यञ् छिशीत तेजोऽयसो न धाराम् ।
चित्रघ्नजतिरतिर्यो अक्तोर् वेर्न द्रुषद्वा रघुपत्मजंहाः ९६७

स ई' रेभो न प्रति वस्त उस्माः	शोचिषा रारपीति मित्रमहाः ।	
नक्तं य ईमरुषो यो दिवा नृन्	अमर्त्यो अरुषो यो दिवा नृन्	९६८
दिवो न यस्य विधतो नवीनोद्	वृषा रुक्ष ओषधीषु नूनोत् ।	
घृणा न यो ध्रजसा पत्मेना यन्	ना रोदसी वसुना दं सुपत्नी	९६९
धायोभिर्वा यो युज्येभिरकैर्	विद्युन्न दविद्योत् स्वेभिः शुष्मैः ।	
शर्धो वा यो मरुतां ततक्ष	ऋभुर्न त्वेषो रभसानो अद्यौत्	९७०

॥ १२१ ॥ (ऋ० ६।४।१-८)

यथा होतुर्मेनुषो देवताता	यज्ञेभिः सूनो सहसो यजासि ।	
एवा नो अद्य समना समानान्	उशनश्च उशतो यक्षि देवान्	९७१
स नो विभावा चक्षणिर्न वस्तोर्	अग्निर्वन्दारु वेद्यश्च नो धात् ।	
विश्वायुर्यो अमृतो मर्त्येषु	उषर्भुद्भूदतिथिर्जातवेदाः	९७२
द्यावो न यस्य पनयन्त्यभ्वं	भासांसि वस्ते सूर्यो न शुक्रः ।	
वि य इनोत्यजरः पावको	ऽश्वस्य चिच्छिश्नथत् पूर्यणि	९७३
वद्वा हि सूनो अस्य ब्रह्मद्रा	चक्रे अग्निर्जनुषाज्मानम् ।	
स त्वं न ऊर्जसन ऊर्जं धा	राजैव जेरवृके क्षेप्यन्तः	९७४
नितिक्त्ति यो वारुणमन्नमत्ति	वायुर्न राष्ट्रचत्येत्यक्तून् ।	
तुर्याम यस् त आदिशामरातीर्	अत्यो न हतः पततः परिहृत	९७५
आ सूर्यो न भानुमद्भिरकैर्	अग्रे ततन्थ रोदसी वि भासा ।	
चित्रो नयत् परि तमांस्यक्तः	शोचिषा पत्मेन्नौशिजो न दीर्यन्	९७६
त्वां हि मन्द्रतममर्कशोकैर्	ववृमहे महि नः श्रोष्यमे ।	
इन्द्रं न त्वा शर्वसा देवता	वायुं पृणन्ति राधसा नृतमाः	९७७
नू नो अग्रेऽवृकेभिः स्वस्ति	वेषि रायः पथिभिः पष्यहः ।	
ता सूरिभ्यो गृणते रासि सुमं	मदेम शतहिमाः सुवीराः	९७८

॥ १२२ ॥ (ऋ० ६।५।१-७)

हुवे वः सूनुं सहसो युवानम्	अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।	
य इन्वति द्रविणानि प्रचेता	विश्ववाराणि पुरुवारो अघ्रुक	९७९

त्वे वस्त्रानि पुर्वणीक होतर् द्रोषा वस्तोरेरिरे यज्ञियासः ।	
क्षामेव विश्वा भुवनानि यस्मिन् त्सं सौभगानि दधिरे पावके	९८०
त्वं विश्व प्रदिवः सीद आसु क्रत्वा रथीरभवो वार्याणाम् ।	
अत इनोषि विधते चिकित्वो व्यानुषग् जातवेदो वस्त्रानि	९८१
यो नः सनुत्यो अभिदासदग्ने यो अन्तरो मित्रमहो वनुष्यात् ।	
तमजरैर्भिवृषभिस् तव स्वैस् तपां तपिष्ठ तपसा तपस्वान्	९८२
यस् ते यज्ञेन समिधा य उक्थैर् अर्केभिः सूनो सहसो ददाशत् ।	
स मर्त्येष्वमृत प्रचेता राया द्युम्नेन श्रवसा वि भाति	९८३
स तत् कृधीषितस् तूयमग्ने स्पृधो बाधस्व सहसा सहस्वान् ।	
यच्छस्यसे द्युभिरक्तो वचोभिस् तज् जुषस्व जरितुर्घोषि मन्म	९८४
अश्याम तं काममग्ने तवोती अश्याम रयि रयिवः सुवीरम् ।	
अश्याम वाजमभि वाजयन्तो अश्याम द्युममजराजरै ते	९८५

॥ १२३ ॥ (ऋ० ६ । ६ । १-७)

प्र नव्यसा सहसः सूनुमच्छा यज्ञेन गातुमव इच्छमानः ।	
वृश्चद्वनं कृष्णयामं रुशन्तं वीती होतारं दिव्यं जिगाति	९८६
स श्वितानस् तन्यतू रोचनस्था अजरैर्भिर्नानदद्भिर्धविष्ठः ।	
यः पावकः पुरुतमः पुरूणि पृथून्यग्निरनुयाति भवन्	९८७
वि ते विष्वग् वार्तजूतासो अग्ने भामासः शुचे शुचयश् चरन्ति ।	
तुविम्रक्षासो दिव्या नवग्वा वना वनन्ति धृषता रुजन्तः	९८८
ये ते शुक्रासः शुचयः शुचिष्मः क्षां वपन्ति विषितासो अश्वाः ।	
अधं भ्रमस् त उर्विया वि भाति यातयमानो अधि सानु पृश्नेः	९८९
अधं जिह्वा पापतीति प्र वृष्णो गोषुयुधो नाशनिः सृजाना ।	
शरस्येव प्रसितिः क्षातिरग्नेर् दुर्वर्तुर्भीमो दयते वनानि	९९०
आ भानुना पार्थिवानि जयांसि महस् तोदस्य धृषता ततन्थ ।	
स बाधस्वार्प भया सहोभिः स्पृधो वनुष्यन् वनुषो नि जूर्व	९९१

स चित्रं चित्रं चितयन्तमस्मे चित्रक्षत्रं चित्रतमं वयोधाम् ।
चन्द्रं रयिं पुरुवीरं बृहन्तं चन्द्रं चन्द्राभिर्गृणते युवस्व

९९२

॥ १२४ ॥ (ऋ० ६।१०।१-७) त्रिष्टुप्; ९९२ द्विपदा विराट् ।

पुरो वो मन्द्रं दिव्यं सुवृक्तिं प्रयति यज्ञे अग्निर्मध्वरे दधिध्वम् ।
पुर उक्थेभिः स हि नो विभावा स्वध्वरा करति जातवेदाः
तमु द्युमः पुर्वणीक होतर् अग्ने अग्निभिर्मनुष इधानः ।
स्तोमं यमस्मै ममतेव शूषं घृतं न शुचिं मतयः पवन्ते
प्रीपाय स श्रवसा मर्त्येषु यो अग्रये ददाश विप्र उक्थैः ।
चित्राभिस् तमूतिभिश् चित्रशोचिर् व्रजस्य साता गोमतो दधाति
आ यः पग्रौ जायमान उर्वी दूरेदशा भासा कृष्णाध्वा ।
अधं बहु चित् तम ऊर्म्यायास् तिरः शोचिषा ददशे पावकः
नू नश चित्रं पुरुवाजाभिरूती अग्ने रयिं मध्वञ्चश् च धेहि ।
ये राधसा श्रवसा चात्यन्यान् त्सुवीर्येभिश् चाभि सन्ति जनान्
इमं यज्ञं चनो धा अग्र उशन् यं त आसानो जुहुते हविष्मान् ।
भरद्वाजेषु दधिषे सुवृक्तिम् अवीर्वाजस्य गध्वस्य सातौ
वि द्वेषासीनुहि वर्धयेळां मदैम शतहिमाः सुवीराः

९९३

९९४

९९५

९९६

९९७

९९८

९९९

॥ १२५ ॥ (ऋ० ६।११।१-६) त्रिष्टुप् ।

यजस्व होतरिषितो यजीयान् अग्ने बाधो मरुतां न प्रयुक्ति ।
आ नो मित्रावरुणा नासत्या द्यावा होत्राय पृथिवी ववृत्याः
त्वं होता मन्द्रतमो नो अधुग् अन्तर्देवो विदथा मर्त्येषु ।
पावकया जुह्वाइ वह्निरासा ऽग्ने यजस्व तन्वं तव स्वाम्
घन्या चिद्धि त्वे धिषणा वष्टि प्र देवाञ् जन्म गृणते यजध्वै ।
वेपिष्ठो अङ्गिरसां यद्ध विप्रो मधुं च्छन्दो भनन्ति रेभ इष्टौ
अर्दिद्युतत् स्वपाको विभावा ऽग्ने यजस्व रोदसी उरुची ।
आयुं न यं नमसा रातहव्या अञ्जन्ति सुप्रयसं पञ्च जनाः

१०००

१००१

१००२

१००३

वृज्जे ह यन्नमसा बर्हिर्ग्नौ अयामिं सुग् घृतवती सुवृक्तिः ।
 अम्यक्षि सद्य सदर्ने पृथिव्या अश्रायि यज्ञः सूर्ये न चक्षुः १००४
 दशस्या नः पुर्वणीक होतर् देवभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
 रायः सूनो सहसो वावसाना अति स्रसेम वृजनं नाहैः १००५

॥ १२६ ॥ (ऋ० ६ । १२ । १-६)

मध्ये होता दुरोणे बर्हिषो राळ् अग्निस् तोदस्य रोदसी यजध्वै ।
 अयं स सूनुः सहस क्रतावा दूरात् सूर्यो न शोचिषा ततान १००६
 आ यस्मिन् त्वे स्वपाके यजत्र यक्षद् राजन्त्सर्वतातेव नु द्यौः ।
 त्रिषधस्थस् ततरुषो न जंहो हव्या मघानि मानुषा यजध्वै १००७
 तेजिष्ठा यस्यारतिर्वनेराद् तोदो अध्वन्न बृधसानो अद्यौत् ।
 अद्रोघो न द्रविता चेतति तमन् अमर्त्योऽवर्त्र ओषधीषु १००८
 सास्माकैभिरेतरी न शूषैर् अग्निः ष्ट्वे दम आ जातवेदाः ।
 दून्नो वन्वन् क्रत्वा नार्वा उस्तः पितेर्व जारयार्यि यज्ञैः १००९
 अध स्मास्य पनयन्ति भासो वृथा यत् तक्षदनुयार्ति पृथ्वीम् ।
 सद्यो यः स्पन्द्रो विषितो धवीयान् ऋणो न तायुरति धन्वा राट् १०१०
 स त्वं नो अर्वन्निदाया विश्वेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
 वेषि रायो वि यासि दुच्छुना मदम शतहिमाः सुवीराः १०११

॥ १२७ ॥ (ऋ० ६ । १३ । १-६)

त्वद् विश्वा सुभग सौभगानि अग्ने वि यन्ति वनिनो न वयाः ।
 श्रुष्टी रयिर्वाजो वृत्रतूर्ये दिवो वृष्टिरीड्यो रीतिरपाम् १०१२
 त्वं भगो न आ हि रत्नमिषे परिजमेव क्षयसि दुस्मवर्चाः ।
 अग्ने मित्रो न बृहत क्रतस्य असि क्षत्ता वामस्य देव भूरैः १०१३
 स सत्पतिः शर्वसा हन्ति वृत्रम् अग्ने विप्रो वि पणेभिर्ति वाजम् ।
 यं त्वं प्रचेत क्रतजात राया सजोषा नप्त्रापां हिनोषि १०१४
 यस् तै सूनो सहसो गीभिरुक्थैर् यज्ञैर्मतो निशिति वेद्यानद् ।
 विश्वं स देव प्रति वारमग्ने धत्ते धान्यं पत्यते वसव्यैः १०१५

ता नृभ्य आ सौश्रवसा सुवीरा अग्ने स्वनो सहसः पुण्यसै धाः ।
 कृणोषि यच्छवसा भूरि पश्वो वयो वृकायारये जसुरये
 वद्वा स्वनो सहसो नो विहाया अग्ने तोकं तनयं वाजि नो दाः ।
 विश्वाभिर्गीभिर्भिर् पृतिमश्यां मदेम शतहिमाः सुवीराः

१०१६

१०१७

॥ १२८ ॥ (ऋ० ६ । १४ । १-६) अनुष्टुप्, ९६२ शकरी ।

अग्रा यो मर्त्यो दुवो धियं जुजोष धीतिभिः । भसन्तु ष प्र पूर्य इषं वुरीतावसे १०१८
 अग्निरिद्धि प्रचेता अग्निर्वेधस्तम ऋषिः । अग्निं होतारमीळते यज्ञेषु मनुषो विशः १०१९
 नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते रायो अर्यः । तूर्वेन्तो दस्युमायवो व्रतैः सीक्षन्तो अव्रतम् १०२०
 अग्निरप्सामृतीषहं वीरं ददाति सत्पतिम् । यस्य व्रसन्ति शवसः संचक्षि शत्रवो भिया १०२१
 अग्निर्हि विव्रना निदो देवो मर्तेशुरुष्यति । सहावा यस्यावृतो रयिर्वाजेष्ववृतः १०२२
 अच्छा नो मित्रमहो० (९६२)

॥ १२९ ॥ (ऋ० ६ । १५ । १-१९)

जगती, १०२५, १०३७ शकवरी; १०२८ अतिशकवरी; १०३९ अनुष्टुप्; १०४० बृहती;
 १०३२-३६, १०३८, १०४१ त्रिष्टुप् ।

इमम् पु वो अतिथिमुष्वधं विश्वासां विशां पतिमृञ्जसे गिरा ।
 वेतीद् दिवो जनुषा कच्चिदा शुचिर् ज्योक् चिदत्ति गर्भो यदच्युतम् १०२३
 मित्रं न यं सुधितं भृगवो दुधुर् वनस्पतावीज्यमूर्ध्वशोचिषम् ।
 स त्वं सुप्रीतो वीतहव्ये अद्भुत प्रशस्तिभिर्महयसे दिवेर्दिवे १०२४
 स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूर्यः परस्य अन्तरस्य तरुषः ।
 रायः स्वनो सहसो मर्त्येष्व्वा छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः १०२५
 द्युतानं वो अतिथिं स्वर्णरम् अग्निं होतारं मनुषः स्वध्वरम् ।
 विप्रं न द्युक्ष्वचसं सुवृक्तिभिर् हव्यवाहमरतिं देवमृञ्जसे १०२६
 पावकया यश् चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुच उषसो न भानुना ।
 तूर्वन्न यामन्नेतशस्य नूरण आ यो घृणे न तत्प्राणो अजरः १०२७
 अग्निमग्निं वः समिधा दुवस्यत प्रियंप्रियं वो अतिथिं गृणीषणि ।
 उप वो गीभिर्मृतं विवासत देवो देवेषु वनन्ते हि वार्यं देवो देवेषु वनन्ते हि नो दुवः १०२८

- समिद्धमग्निं समिधा गिरा गृणे शुचिं पावकं पुरो अध्वरे ध्रुवम् ।
विग्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं क्विं सुमैरीमहे जातवेदसम् १०२९
- त्वां दूतमग्ने अमृतं युगेयुगे हव्यवाहं दधिरे पायुमीड्यम् ।
देवासंश् च मर्तासंश् च जागृविं विभुं विश्वपतिं नमसा नि षेदिरे १०३०
- विभूषन्नय उभयां अनु व्रता दूतो देवानां रजसी समीयसे ।
यत् ते धीतिं सुमतिमावृणीमहे ऽर्धं स्मा नस् त्रिवरूथः शिवो भव १०३१
- तं सुप्रतीकं सुदृशं स्वश्चम् अविद्वांसो विदुष्टरं सपेम ।
स यक्षद् विश्वा वयुनानि विद्वान् प्र हव्यमग्निर्मृतेषु वोचत् १०३२
- तमग्ने पास्युत तं पिपिषिं यस् त आनट् कवये शूर धीतिम् ।
यज्ञस्य वा निशितिं वोदिति वा तमित् पृणक्षि शर्वसोत राया १०३३
- त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः सहसावन्नवद्यात् ।
सं त्वा ध्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः स्पृहयाय्यः सहस्री १०३४
- अग्निर्होता गृहपतिः स राजा विश्वा वेद जनिमा जातवेदाः ।
देवानामुत यो मर्त्यानां यजिष्ठः स प्र यजतामृतावा १०३५
- अग्ने यदद्य विशो अध्वरस्य होतः पावकशोचे वेष्टं हि यज्वा ।
ऋता यजासि महिना वि यद् भूर् हव्या बंह यविष्ठ या ते अद्य १०३६
- अभि प्रयांसि सुधितानि हि रूयो, नि त्वा दधीत रोदसी यजध्यै ।
अवां नो मधवन् वाजसातौ, अग्ने विश्वानि दुरिता तरेम्, तातरेम् तवावसा तरेम् १०३७
- अग्ने विश्वेभिः स्वनीक देवैर् ऊर्णावन्तं प्रथमः सीदु योनिम् ।
कुलायिनं धृतवन्तं सवित्रे यज्ञं नय यजमानाय साधु १०३८
- इममु त्यमर्थववद् अग्निं मन्थन्ति वेधसः ।
यमङ्कयन्तमानयन् अमूरं श्याव्याभ्यः १०३९
- जनिष्वा देववीतये सर्वताता स्वस्तये ।
आ देवान् वक्ष्यमृतां ऋतावृधो यज्ञं देवेषु पिस्पृशः १०४०
- वयमु त्वा गृहपते जनानाम् अग्ने अकर्म समिधा बृहन्तम् ।
अस्थुरि नो गार्हपत्यानि सन्तु तिग्मेन नस् तेजसा सं शिशाधि १०४१

॥ १३० ॥ (ऋ० ६ । १६ । १—१८)

गायत्री; १०४२, १०४७ वर्धमाना; १०६८।१०८८-१०८९ अनुष्टुप्; १०८७ त्रिष्टुप् ।

त्वमग्ने यज्ञानां होता विश्वेषां हितः ।	देवेभिर्मानुषे जने १०४२
स नो मन्द्रार्भिरध्वरे जिह्वार्भिर्यजा महः ।	आ देवान् वक्षि यक्षि च १०४३
वेत्था हि वेधो अध्वनः पथश्च देवाञ्जसा ।	अग्ने यज्ञेषु सुक्रतो १०४४
त्वामीळे अध द्विता भरतो वाजिभिः शुनम् ।	इजे यज्ञेषु यज्ञियम् १०४५
त्वमिमा वार्या पुरु दिवौदासाय सुन्वते ।	भरद्वाजाय दाशुषे १०४६
त्वं दूतो अमर्त्य आ वह्ना दैव्यं जनम् ।	शृण्वन् विप्रस्य सुष्टुतिम् १०४७
त्वमग्ने स्वाध्याये मर्तासो देववीतये ।	यज्ञेषु देवमीळते १०४८
तव प्र यक्षि संहशम् उत क्रतुं सुदानवः ।	विश्वे जुषन्त कामिनः १०४९
त्वं होता मनुर्हितो वह्निरासा विदुष्टरः ।	अग्ने यक्षि दिवो विशः १०५०
अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये ।	नि होता सत्सि बर्हिषि १०५१
तं त्वा समिद्धिरङ्गिरो घृतेन वर्धयामसि ।	बृहच्छोचा यविष्ठ्य १०५२
स नः पृथु श्रवाय्यम् अच्छा देव विवाससि ।	बृहदग्ने सुवीर्यम् १०५३
त्वमग्ने पुष्करादधि अथर्वा निरमन्थत ।	मूर्ध्नो विश्वस्य वाघतः १०५४
तमु त्वा दुध्यङ्गुषिः पुत्र ईधे अथर्वणः ।	वृत्रहणं पुरंदरम् १०५५
तमु त्वा पाथ्यो वृषा समीधे दस्युहन्तमम् ।	धनंजयं रणे रणे १०५६
एह्यु षु ब्रवाणि ते ऽग्रं इत्येतेरा गिरः ।	एभिर्वर्धास इन्दुभिः १०५७
यत्र क्व च ते मनो दक्षं दधस उत्तरम् ।	तत्रा सदः कृणवसे १०५८
नहि ते पुर्तमक्षिपद् भुवन्नेमानां वसो ।	अथा दुवो वनवसे १०५९
आग्निरंगामि भारतो वृत्रहा पुरुचेतनः ।	दिवौदासस्य सत्पतिः १०६०
स हि विश्वाति पार्थिवा रयि दाशन् महित्वना ।	वन्वन्नवातो अस्तृतः १०६१
स प्रलवन्नवीयसा अग्ने द्युम्नेन संयता ।	बृहत् तंतन्थ भानुना १०६२
प्र वः सखायो अग्नये स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।	अर्चं गायं च वेधसे १०६३
स हि यो मानुषा युगा सीदद्भोता क्विक्रतुः ।	दूतश्च हव्यवाहनः १०६४
ता राजाना शुचित्रता आदित्यान् मारुतं गणम् ।	वसो यक्षीह रोदसी १०६५
वस्वीं ते अग्ने संहष्टिर् इषयते मर्त्याय ।	ऊर्जो नपादमृतस्य १०६६
कृत्वा दा अस्तु श्रेष्ठो ऽद्य त्वा वन्वन्तसुरेकणाः ।	मर्ते आनाश सुवृक्तिम् १०६७

ते ते अग्ने त्वोता इष्यन्तो विश्वमायुः ।

तरन्तो अर्यो अरातीर् वन्वन्तो अर्यो अरातीः १०६८

अग्निस् तिग्मेन शोचिषा यासद् विश्वं न्यत्रिणम् । अग्निर्नो वनते रयिम् १०६९

सुवीरं रयिमा भर जातवेदो विचर्षणे । जहि रक्षांसि सुक्रतो १०७०

त्वं नः पाह्यंहसो जातवेदो अघायतः । रक्षा णो ब्रह्मणस् कवे १०७१

यो नो अग्ने दुरेव आ मर्तो वधाय दाशति । तस्मान्नः पाह्यंहसः १०७२

त्वं तं देव जिह्या परि बाधस्व दुष्कृतम् । मर्तो यो नो जिघांसति १०७३

भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ सहन्त्य । अग्ने वरेण्यं वसु १०७४

अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद् द्रविणस्युर्विपन्यया । समिद्धः शुक्र आहुतः १०७५

गर्भे मातुः पितुष्पिता विदिद्युतानो अक्षरे । सीदन्नृतस्य योनिमा १०७६

ब्रह्म प्रजावदा भर जातवेदो विचर्षणे । अग्ने यद् दीदयद् दिवि १०७७

उप त्वा रण्वसंहशं प्रयस्वन्तः सहस्कृत । अग्ने ससृज्महे गिरः १०७८

उप च्छायामिव घृणेर् अगन्म शर्म ते वयम् । अग्ने हिरण्यसंहशः १०७९

य उग्र इव शर्याहा तिग्मशृङ्गो न वंसगः । अग्ने पुरो रुरोजिथ १०८०

आ यं हस्ते न खादिनं शिशुं जातं न विभ्रति । विशामग्निं स्वध्वरं १०८१

प्र देवं देववीतये भरता वसुवित्तमम् । आ स्वे योनौ नि षीदतु १०८२

आ जातं जातवेदसि प्रियं शिशीतार्तिथिम् । स्योन आ गृहपतिम् १०८३

अग्ने युक्ष्वा हि ये तव अश्वासो देव साधवः । अरं वहन्ति मन्यवे १०८४

अच्छा नो याह्या वह अभि प्रयांसि वीतये । आ देवान् त्सोमपीतये १०८५

उदग्ने भारत द्युमद् अजस्रेण दर्विद्युतत् । शोचा वि भाह्यजर १०८६

वीती यो देवं मर्तो दुवस्येद् अग्निमीळीताध्वरे हविष्मान् ।

होतारं सत्ययजं रोदस्योर् उत्तानहस्तो नमसा विवासेत् १०८७

आ ते अग्न ऋचा हविर् हृदा तष्टं भरामसि । ते ते भवन्तुक्षणं ऋषभासो वशा उत्त १०८८

अग्निं देवासो अग्रियम् इन्धते वृत्रहन्तमम् । येना वसून्याभृता तृह्णा रक्षांसि वाजिना १०८९

॥ १३१ ॥ (ऋ० ६। ४८। १-१०)

(१०९०-१०९९) शंयुर्बाह्रस्पत्यः (तृणपाणिः) । प्रगाथः = १०९०, १०९२ बृहती; १०९१, १०९३ सतोबृहती, १०९४ बृहती, १०९५ महा सतोबृहती, १०९६ महा बृहती, १०९७ महा सतो-
बृहती, १०९८ बृहती, १०९९ सतोबृहती ।

यज्ञायज्ञा वो अग्नये गिरागिरा च दक्षसे ।
प्रप्र वयममृतं जातवेदसं प्रियं मित्रं न शंसिषम् १०९०

ऊर्जो नपातं स हिनायमस्मयुर् दाशेम हव्यदातये ।
ध्रुवद् वाजेष्वविता भुवद् वृध उत त्राता तनूनाम् १०९१

वृषा ह्यग्ने अजरो महान् विभास्यर्चिषा ।
अर्जसेण शोचिषा शोशुचच् छुचे सुदीतिभिः सु दीदिहि १०९२
महो देवान् यजसि यक्ष्यानुषक् तव क्रत्वोत दुंसना ।
अर्वाचः सीं कृणुह्यग्नेऽवसे रास्व वाजोत वैस्व १०९३

यमापो अद्रयो वना गर्भमृतस्य पिप्रति ।
सहसा यो मथितो जायते नृभिः पृथिव्या अधि सानवि १०९४
आ यः पप्रौ भानुना रोदसी उभे धूमेन धावते दिवि ।
तिरस् तमो ददृश ऊर्म्यास्वा श्यावास्वरुषो वृषा श्यावा अरुषो वृषा १०९५

बृहद्भिरग्ने अर्चिभिः शुक्रेण देव शोचिषा ।
भरद्वाजे समिधानो यविष्ठ्य रेवन्नः शुक्र दीदिहि ध्रुमत् पावक दीदिहि १०९६
विश्वासां गृहपतिर्विशामसि त्वमग्ने मानुषीणाम् ।
शतं पुर्भिर्यविष्ठ पाह्यहंसः समेद्भारं शतं हिमाः स्तोतृभ्यो ये च ददति १०९७

त्वं नश् चित्र ऊत्या वसो राधांसि चोदय ।
अस्य रायस् त्वमग्ने रथीरसि विदा गाधं तुचे तु नः १०९८
पर्षिं लोकं तनयं पृथ्विष्वम् अदन्धैरग्रयुत्वभिः ।
अग्ने हेळांसि दैव्या युयोधि नो ऽद्वानि ह्वरांसि च १०९९

॥ १३२ ॥ (ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलं, सूक्तं १, मन्त्राः १-२५)
[११००-१२१३] वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विराट्, १११८-२४ त्रिष्टुप् ।

अग्निं नरो दीधितिभिररण्योर्	हस्तच्युती जनयन्त प्रशस्तम् ।	
दूरेदृशं गृहपतिमथर्धुम्		११००
तमग्निमस्ते वसवो न्यृण्वन्	त्सुप्रतिचक्षमवसे कुतश् चित् ।	
दुक्षाय्यो यो दम आस नित्यः		११०१
प्रेद्धौ अग्ने दीदिहि पुरो नो	ऽजस्रया सूर्म्यौ यविष्ठ ।	
त्वां शश्वन्त उर्प यन्ति वाजाः		११०२
प्र ते अग्रयोऽग्निभ्यो वरं निः	सुवीरांसः शोशुचन्त द्युमन्तः ।	
यत्रा नरः समासते सुजाताः		११०३
दा नो अग्ने धिया रयिं सुवीरं	स्वपत्यं सहस्य प्रशस्तम् ।	
न यं यावा तरति यातुमावान्		११०४
उप यमेति युवतिः सुदक्षं	दोषा वस्तोर्हविष्मती घृताची ।	
उप स्वैनमरमतिर्वसूयुः		११०५
विश्वा अग्रेऽपं दुहारातीर्	येभिस् तपोभिरदहो जरूथम् ।	
प्र निस्वरं चातयस्वामीवाम्		११०६
आ यस् ते अग्न इधते अनीकं	वसिष्ठ शुक्र दीदिवः पार्वक ।	
उतो न एभिः स्तवथैरिह स्याः		११०७
वि ये ते अग्ने मेजिरे अनीकं	मर्ता नरः पित्र्यांसः पुरुत्रा ।	
उतो न एभिः सुमना इह स्याः		११०८
इमे नरो वृत्रहत्येषु शूरा	विश्वा अदेवीरभि सन्तु मायाः ।	
ये मे धियं पनयन्त प्रशस्ताम्		११०९
मा शूने अग्ने नि षदाम नृणां	माशेषसोऽवीरता परि त्वा ।	
प्रजावतीषु दुर्यीसु दुर्य		१११०
यमश्वी नित्यमुपयाति यज्ञं	प्रजावन्तं स्वपत्यं क्षयं नः ।	
स्वजन्मना शेषसा वावृधानम्		११११

पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात् त्वा युजा पृतनार्यूरभि ष्याम्	पाहि धूर्तेरररुषो अघायोः ।	१११२
सेदग्निर्ग्रीरत्यस्त्वन्यान् सहस्रपाथा अक्षरां समेतिं	यत्र वाजी तनयो वीळुपाणिः ।	१११३
सेदग्निर्यो वनुष्यतो निपाति सुजातासः परि चरन्ति वीराः	समेद्वारमंहस उरुष्यात् ।	१११४
अयं सो अग्निराहुतः पुरुत्रा परि यमेत्यध्वरेषु होता	यमीशानः समिदिन्धे हविष्मान् ।	१११५
त्वे अग्न आहवनानि भूरि उभा कृण्वन्तो वहतू मियेधे	ईशानास आ जुहुयाम नित्यां ।	१११६
इमो अग्ने वीतर्तमानि हव्या प्रति न ई सुरभीणि व्यन्तु	ऽजस्रो वाक्षि देवतातिमच्छ ।	१११७
मा नो अग्नेऽवीरते परा दा मा नः क्षुधे मा रक्षसं क्रतावो	दुर्वाससेऽमृतये मा नो अस्यै । मा नो दमे मा वन आ जुह्वर्थाः	१११८
नू मे ब्रह्माण्यश्न उच्छशाधि रातौ स्यामोभयास आ ते	त्वं देव मध्वञ्च्यः सुषूदः । यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	१११९
त्वमग्ने सुहवो रण्वसंहक् मा त्वे सचा तनये नित्य आ धृङ्	सुदीती सूनो सहसो दिदीहि । मा वीरो अस्मन्नर्यो वि दासीत्	११२०
मा नो अग्ने दुर्भृतये सचा मा ते अस्मान् दुर्मृतयो भूमाच्चिद्	एषु देवेद्वेष्वग्निषु प्र वोचः । देवस्य सूनो सहसो नशन्त	११२१
स मर्तो अग्ने स्वनीक रेवान् स देवता वसुवर्णि दधाति	अमर्त्ये य आजुहोति हव्यम् । यं सूरिरर्थी पृच्छमान एति	११२२
महो नो अग्ने सुवितस्य विद्वान् येन वयं सहसावन् मदेम	रयिं सूरिभ्य आ वहा बृहन्तम् । अर्विक्षितास आर्युषा सुवीराः	११२३
नू मे ब्रह्माण्यश्न० (१११९)		

॥ १३३ ॥ (ऋ० ७ । ३ । १-१०) त्रिष्टुप् ।

अग्निं वो देवमग्निभिः सजोषा यजिष्ठं दूतमध्वरे कृणुध्वम् ।	
यो मर्त्येषु निधुर्विर्कृतावा तपुर्मूर्धा घृतान्नः पावकः	११२४
प्रोथदश्चो न यवसेऽविष्यन् यदा महः संवरणाद् व्यस्थात् ।	
आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् अथ स्म ते व्रजनं कृष्णमस्ति	११२५
उद्यस्य ते नवजातस्य वृष्णो ऽग्ने चरन्त्यजरा इधानाः ।	
अच्छा घामरुषो धूम एति सं दूतो अग्न ईर्यसे हि देवान्	११२६
वि यस्य ते पृथिव्यां पाजो अश्वेत् तृषु यदन्ना समवृक्त जम्भैः ।	
सेनेव सृष्टा प्रसितिष्ट एति यवं न दस्स जुह्वा विवेक्षि	११२७
तमिद् दोषा तमुषसि यविष्ठम् अग्निमत्यं न मर्जयन्त नरः ।	
निशिशाना अतिथिमस्य योनौ दीदार्य शोचिराहुतस्य वृष्णः	११२८
सुसंहक् ते स्वनीक प्रतीकं वि यद् रुक्मो न रोचस उपाके ।	
दिवो न ते तन्यतुरेति शुष्मश् चित्रो न स्रः प्रति चक्षि भानुम्	११२९
यथा वः स्वाहाग्नये दाशेम परीळाभिर्धृतवद्भिश् च हव्यैः ।	
तेभिर्नो अग्ने अर्मितैर्महोभिः शतं पुर्भिरायसीभिर्नि पाहि	११३०
या वा ते सन्ति दाशुषे अधृष्टा गिरौ वा याभिर्नुवतीरुरुष्याः ।	
ताभिर्नः सूनो सहसो नि पाहि सत् सूरिब् जरितृब् जातवेदः	११३१
निर्यत् पूतेव स्वधितिः शुचिर्गात् स्वया कृपा तन्वाङ् रोचमानः ।	
आ यो मात्रोरुशेन्यो जनिष्ठ देवयज्याय सुक्रतुः पावकः	११३२
एता नो अग्ने सौमगा दिदीहि अपि क्रतुं सुचेतसं वतेम ।	
विश्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	११३३

॥ १३४ ॥ (ऋ० ७ । ४ । १-१०)

प्र वः शुक्राय भानवे भरध्वं हव्यं मतिं चाग्नये सुपूतम् ।	
यो दैव्यानि मानुषा जनूषि अन्तर्विश्वानि विब्राना जिगाति	११३४
स गृत्सो अग्निस् तरुणश् चिदस्तु यतो यविष्ठो अजनिष्ठ मातुः ।	
सं यो वना युवते शुचिदन् भूरि चिदन्ना समिदत्ति सद्यः	११३५

अस्य देवस्य संसद्यनीके यं मर्तासः श्येतं जंगुभ्रे । नि यो गृभं पौरुषेयीमुवोचं दुरोकमग्निरायवै शुशोच	११३६
अयं कविरकविषु प्रचेता मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि । स मा नो अत्र जुहुरः सहस्वः सदा त्वे सुमनसः स्याम	११३७
आ यो योनिं देवकृतं ससाद कृत्वा ह्यग्निरमृतां अतारीत् । तमोषधीश् च वनिर्नश् च गर्भं भूमिश् च विश्वधायसं विभर्ति	११३८
ईशे ह्यग्निरमृतस्य भूरेर् ईशे रायः सुवीर्यस्य दातोः । मा त्वा वयं सहसावन्नवीरा माप्सवः परि षदाम मादुवः	११३९
परिषद्यं ह्यरणस्य रेक्णो नित्यस्य रायः पतयः स्याम । न शेषो अग्रे अन्यजातमस्ति अचेतानस्य मा पथो वि दुक्षः	११४०
नहि ग्रभायारणः सुशेवो ऽन्योदर्यो मनसा मन्तवा उ । अधा चिदोक्तः पुनरित् स एति आ नो वाज्यभीषाळेतु नव्यः	११४१
त्वमग्रे वनुष्यतो० (१०३४) एता नो अग्रे० (११३४)	

॥ १३५ ॥ (ऋ० ७।७।१-७)

प्र वो देवं चित् सहसानमग्निम् अश्वं न वाजिनं हिषे नमोभिः । भवा नो दूतो अध्वरस्य विद्वान् त्मना देवेषु विविदे मितद्रुः	११४२
आ याह्यग्रे पथ्याइ अनु स्वा मन्द्रो देवानां सख्यं जुषाणः । आ सानु शुष्मैर्नदयन् पृथिव्या जम्भेभिर्विश्वमुशधग् वनानि	११४३
प्राचीनो यज्ञः सुधितं हि बर्हिः प्रीणीते अग्निरीळितो न होता । आ मातरा विश्ववारि हुवानो यतो यविष्ठ जज्ञिषे सुशेवः	११४४
सद्यो अध्वरे रथिरं जनन्त मानुषासो विचेतसो य एषाम् । विशामधायि विष्पतिर्दुरोणेइ ऽग्निर्मन्द्रो मधुवचा क्रतावा	११४५
असादि वृतो वह्निराजगन्वान् अग्निर्ब्रह्मा नृषदेने विधर्ता । द्यौश् च यं पृथिवी वावृधाते आ यं होता यजति विश्ववारम्	११४६

एते द्युम्नेभिर्विश्वमातिरन्त मन्त्रं ये वारं नर्या अतक्षन् ।
 प्र ये विशस् तिरन्त श्रोषमाणा आ ये मे अस्य दीर्घयन्नृतस्य ११४७
 नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहसो वसूनाम् ।
 इषं स्तोतृभ्यो मघवञ्च आनङ् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११४८

॥ १३६ ॥ (ऋ० ७।८।१-७)

इन्धे राजा समर्यो नमोभिर् यस्य प्रतीकमाहुतं धृतेन ।
 नरो हव्येभिरीकते सबाध आग्निरग्र उषसामशोचि ११५९
 अयमुष्य सुमहाँ अवेदि होता मन्द्रो मनुषो यद्धो अग्निः ।
 वि भा अकः ससृजानः पृथिव्यां कृष्णपविरोषधीभिर्ववक्षे ११५०
 कया नो अग्ने वि वसः सुवृक्षित कासु स्वधामृणवः शस्यमानः ।
 कदा भवेम पतयः सुदत्र रायो वन्तारो दुष्टरस्य साधोः ११५१
 प्रग्रायमग्निर्भरतस्य शृण्वे वि यत् सूर्यो न रोचते बृहद्भाः ।
 अभि यः पूरुं पृतनासु तस्थौ द्युतानो दैव्यो अतिथिः शुशोच ११५२
 असन्नित् त्वे आहव्नानानि भूरि भुवो विश्वेभिः सुमना अनीकैः ।
 स्तुतश् चिदग्ने शृण्विषे गृणानः स्वयं वर्धस्व तन्वं सुजात ११५३
 इदं वचः शतसाः संसहस्रम् उदग्रये जनिषीष्ट द्विवर्हीः ।
 शं यत् स्तोतृभ्य आपये भवति द्युमदमीवचातनं रक्षोहा ११५४
 नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा० (११५०)

॥ १३७ ॥ (ऋ० ७।९।१-६)

अबोधि जार उषसामुपस्थाद् होता मन्द्रः कवितमः पावकः ।
 दधाति केतुमुभयस्य जन्तोर् हव्या देवेषु द्रविणं सुकृत्सु ११५५
 स सुक्रतुर्यो वि दुरः पणीनां पुनानो अर्कं पुरुभोजसं नः ।
 होता मन्द्रो विशां दमूनास् तिरस् तमो ददृशे राम्याणाम् ११५६
 अमूरः कविरदितिर्विवस्वान् त्सुसंसन्मित्रो अतिथिः शिवो नः ।
 चित्रभानुरुषसां भात्यग्रे ऽपां गर्भैः प्रस्व आ विवेश ११५७

ईलेन्यो वो मनुषो युगेषु समनगा अशुचज् जातवेदाः ।
 सुसंदृशा भानुना यो विभाति प्रति गावः समिधानं बुधन्त ११५८
 अग्ने याहि दूत्यं मा रिषण्यो देवाँ अच्छा ब्रह्मकृतां गणेन ।
 सरस्वतीं मरुतो अश्विनापो यक्षि देवान् रत्नधेयाय विश्वान् ११५९
 त्वामग्ने समिधानो वसिष्ठो जरूथं हन् यक्षि राये पुरंधिम् ।
 पुरुणीथा जातवेदो जरस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ११६०

॥ १३८ ॥ (ऋ० ७ । १० । १-५) ।

उषो न जारः पृथु पाजो अश्रेद् दविद्युत् दीद्यच्छोशुचानः ।
 वृषा हरिः शुचिरा भाति भासा धियो हिन्वान उशतीरजीगः ११६१
 स्वर्णं वस्तोरुषसांमरोचि यज्ञं तन्वाना उशिजो न मन्म ।
 अग्निर्जन्मानि देव आ वि विद्वान् द्रवद् दूतो देवयावा वनिष्ठः ११६२
 अच्छा गिरौ मतयो देवयन्तीर् अग्निं यन्ति द्रविणं भिक्षमाणाः ।
 सुसंदृशं सुप्रतीकं स्वर्चं हव्यवाहमरतिं मानुषाणाम् ११६३
 इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः सजोषा रुद्रं रुद्रेभिरा वहा बृहन्तम् ।
 आदित्येभिरदितिं विश्वजन्त्यां बृहस्पतिमृक्मभिर्विश्ववारम् ११६४
 मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठम् अग्निं विश ईळते अध्वरेषु ।
 स हि क्षपावाँ अर्भवद् रयीणाम् अतन्द्रो दूतो यजथाय देवान् ११६५

॥ १३९ ॥ (ऋ० ७ । ११ । १-५)

महाँ अस्यध्वरस्य प्रकेतो न ऋते त्वदमृता मादयन्ते ।
 आ विश्वेभिः सरथं याहि देवैर् न्यग्ने होता प्रथमः संदेह ११६६
 त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः सद्मिन् मानुषासः ।
 यस्य देवैरासदो बर्हिर्ग्रे ऽहान्यस्मै सुदिना भवन्ति ११६७
 त्रिश् चिदुक्तोः प्र चिकितुर्वस्त्रानि त्वे अन्तर्दाशुषे मर्त्याय ।
 मनुष्वदश् इह यक्षि देवान् भवां नो दूतो अभिशस्तिपावा ११६८
 अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य अग्निर्विश्वस्य हविषः कृतस्य
 ऋतुं हस्य वसवो जुषन्त अथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ११६९

आग्ने वह हविरद्याय देवान् इन्द्रज्येष्ठास इह मादयन्ताम् ।
इमं यज्ञं दिवि देवेषु धेहि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

११७०

॥ १४० ॥ (ऋ० ७।१२।१-३)

अगन्म महा नमसा यविष्ठं यो दीदाय समिद्धः स्वे दुरोणे ।
चित्रभानुं रोदसी अन्तरुर्वी स्वाहुतं विश्वतः प्रत्यञ्चम्

११७१

स मद्वा विश्वा दुरितानि साह्वान् अग्निः ष्वे दम् आ जातवेदाः ।
स नो रक्षिषद् दुरितादवद्याद् अस्मान् गृणत उत नो मघोनः

११७२

त्वं वरुण उत मित्रो अग्ने त्वां वर्धन्ति मतिभिर्वसिष्ठाः ।
त्वे वसु सुषणनानि सन्तु यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

११७३

॥ १४१ ॥ (ऋ० ७।१४।१-३) त्रिष्टुप्, ११७४ बृहती ।

समिधा जातवेदसे देवाय देवहूतिभिः ।

हविर्भिः शुक्रशोचिषे नमस्विनो वयं दाशेमाग्रये

११७४

वयं ते अग्ने समिधा विधेम वयं दाशेम सुष्टुती यजत्र ।

वयं घृतेनाध्वरस्य होतर् वयं देव हविषा भद्रशोचे

११७५

आ नो देवेभिरुप देवहूतिम् अग्ने याहि वर्षट्कृतिं जुषाणः ।

तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

११७६

॥ १४२ ॥ (ऋ० ७।१५।१-१५) गायत्री ।

उपसद्याय मीहुष आस्ये जुहुता हविः । यो नो नेदिष्ठमाप्यम्

११७७

यः पञ्च चर्षणीरभि निषसाद् दमेदमे । कविर्गृहपतिर्युवा

११७८

स नो वेदो अमात्यम् अग्नी रक्षतु विश्वतः । उतास्मान् पातवंहसः

११७९

नवं नु स्तोममग्रये दिवः श्येनाय जीजनम् । वस्वः कुविद् वनाति नः

११८०

स्पर्हा यस्य श्रियो ह्यशे रयिर्वीरवतो यथा । अग्ने यज्ञस्य शोचतः

११८१

सेमां वेतु वर्षट्कृतिम् अग्निर्जुषत नो गिरः । यजिष्ठो हव्यवाहनः

११८२

नि त्वा नक्ष्य विशपते द्युमन्तं देव धीमहि । सुवीरमग्न आहुत

११८३

क्षप उल्लश् च दीदिहि स्वग्रयस् त्वया वयम् । सुवीरस् त्वमस्मयुः

११८४

उप त्वा सातये नरो विप्रांसो यन्ति धीतिभिः । उपाक्षरा सहस्रिणी

११८५

अग्नी रक्षांसि सेधति	शुक्रशोचिरमर्त्यः	। शुचिः पावक ईज्यः	११८६
स नो राधास्या भर	ईशानः सहसो यहो	। भर्गश् च दातु वार्यम्	११८७
त्वमग्ने वीरवद् यशो	देवश् च सविता भर्गः	। दितिश् च दाति वार्यम्	११८८
अग्ने रक्षा णो अंहसः	प्रति ष्म देव रीषतः	। तपिष्ठैरजरो दह	११८९
अधा मही न आयासि	अनाधृष्टो नृपीतये	। पूर्वैवा शतभुजिः	११९०
त्वं नः पाहंहसो	दोषावस्तरघायतः	। दिवा नक्तमदाभ्य	११९१

॥ १४३ ॥ (ऋ० ७ । १६ । १-१२) प्रगाथः- (बृहती, सतोबृहती ।)

एना वो अग्नि नमसा	ऊर्जो नपातमा हुवे ।	
प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं	विश्वस्य दूतममृतम्	११९२
स योजते अरुषा विश्वभोजसा	स दुद्रवत् स्वाहुतः ।	
सुब्रह्मा यज्ञः सुशमी वसूनां	देवं राधो जनानाम्	११९३
उदस्य शोचिरस्थाद्	आजुह्वानस्य मीहुषः ।	
उद्धूमासो अरुषासो दिविस्पृशः	समग्निमिन्धते नरः	११९४
तं त्वा दूतं कृण्महे यशस्तमं	देवाँ आ वीतये वह ।	
विश्वाँ सूनो सहसो मर्तभोजना	रास्व तद् यत् त्वेमहे	११९५
त्वमग्ने गृहपतिस्	त्वं होता नो अध्वरे ।	
त्वं पोता विश्ववार प्रचेता	यक्षि वेषि च वार्यम्	११९६
कृधि रत्नं यजमानाय सुक्रतो	त्वं हि रत्नधा असि ।	
आ न ऋते शिशीहि विश्वमृत्विजं	सुशंसो यश् च दक्षते	११९७
त्वे अग्ने स्वाहुत प्रियासः सन्तु सूरयः ।		
यन्तारो ये मघवानो जनानाम्	ऊर्वान् दयन्त गोनाम्	११९८
येषामिळा घृतहस्ता दुरोण आँ	अपि प्राता निषीदति ।	
ताँस् त्रायस्व सहस्य द्रुहो निदो	यच्छा नः शर्म दीर्घश्रुत्	११९९
स मन्द्रया च जिह्वया	वह्निरासा विदुष्टरः ।	
अग्ने रयि मघवन्स्यो न आ वह	हव्यदाति च सूदय	१२००

ये राधांसि ददुत्यश्रया मघा कामेन श्रवसो महः ।	
ताँ अंहसः पिपृहि प॒र्तुभिर्द्वं श॒तं पु॒र्भिर्य॑विष्ण्व	१२०१
देवो वो द्रविणोदाः पूर्णा विवध्यासिचम् ।	
उद् वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वम् आदिद् वो देव ओहते	१२०२
तं होतारमध्वरस्य प्रचेतसं वह्निं देवा अकृण्वत ।	
दधाति रत्नं विधते सुवीर्यम् अग्निर्जनाय दाशुषे	१२०३

॥ १४४ ॥ (ऋ० ७ । १७ । १-७) द्विपदा त्रिष्टुप् ।

अग्ने भव सुषामिधा समिद्ध उत ब॒र्हिर्ह॑र्विया वि स्तृणीताम्	१२०४
उत द्वा॒र उ॒शती॑र्वि श्रयन्ताम् उत देवाँ उ॒शत॑ आ वहेह	१२०५
अग्ने वीहि ह॒विषा॑ यक्षि देवान् त्व॒ध्वरा॑ कृणुहि जातवेदः	१२०६
स्व॒ध्वरा॑ करति जा॒तवे॑दा यक्षद् देवाँ अमृ॒तान् पि॒प्रय॑च्च	१२०७
वंस्व विश्वा वा॒र्याणि॑ प्रचेतः स॒त्या भ॑वन्त्वा॒शिषो॑ नो अ॒द्य	१२०८
त्वामु ते दधिरे ह॒व्यवा॑हं दे॒वासो॑ अ॒ग्न ऊ॒र्ज आ॑ नपा॒तम्	१२०९
ते ते दे॒वाय॑ दा॒शतः॑ स्याम॒ महो॑ नो रत्ना वि दध॒ इ॒यानः॑	१२१०

॥ १४५ ॥ (ऋ० ७ । ५० । २) जगती ।

यद् वि॒जाम॑न् प॒रुषि॑ वन्द॒नं भुव॑द् अ॒ष्टीव॑न्तौ परि॒ कुल्फौ॑ च दे॒हत् ।	
अ॒ग्निष्ट॑च्छोच॒न्नप॑ बाध॒तामि॑तो मा मां प॒द्येन॑ र॒पसा॑ विदुत् त्सरुः	१२११

॥ १४६ ॥ (ऋ० ७ । १०४ । १०, १४) त्रिष्टुप् ।

यो नो रसं दि॒प्सति॑ पि॒त्वो अ॒ग्ने यो अ॒श्वा॒नां यो ग॒वां यस् त॒नूना॑म् ।	
रि॒पुः स्तेनः॑ स्ते॒यकृ॑द् दु॒भ्रमे॑तु नि ष ही॒यतां॑ त॒न्वा॒श्च त॒नां च	१२१२
यदि॑ वा॒हम॑नृतदे॒व आ॒स मो॒घं वा॑ दे॒वाँ अ॒प्यु॒हे अ॒ग्ने ।	
कि॒म॒स्मभ्य॑ जा॒तवे॑दो ह॒णीषे॑ द्रो॒घवा॑चस् ते नि॒र्ऋ॒थं स॑चन्ताम्	१२१३

॥ १४७ ॥ (ऋग्वेदस्य अष्टमं मण्डलम् । सूक्तं ११, मन्त्राः १-१०)

(१२१४-१२२३) वत्सः काण्वः । गायत्री, १२१४ प्रतिष्ठा, १२१५ वर्धमाना, १२२३ त्रिष्टुप् ।

त्वम॒ग्ने व्र॑त॒पा अ॑सि दे॒व आ॑ म॒र्त्येष्वा॑ । त्वं य॒ज्ञेष्वी॒ड्यः॑	१२१४
---	------

त्वमांसि प्रशस्यो विदथेषु सहन्त्य । अग्ने रथीरध्वराणाम् १२१५
 स त्वमस्मदप द्विषो युयोधि जातवेदः । अदेवीरग्ने अरातीः १२१६
 अन्ति चित् सन्तमहं युज्ञं मर्त्यस्य रिपोः । नोप वेषि जातवेदः १२१७
 मर्ता अमर्त्यस्य ते भूरि नाम मनामहे । विप्रासो जातवेदसः १२१८
 विप्रं विप्रासोऽवसे देवं मर्तास ऊतये । अग्निं गीभिर्हवामहे १२१९
 आ ते वृत्सो मनो यमत् परमाश्चित् सुधस्थात् । अग्ने त्वां कामया गिरा १२२०
 पुरुत्रा हि सद्यङ्गसि विशो विश्वा अनु प्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे १२२१
 समत्स्वधिमवसे वाजयन्तो हवामहे । वाजेषु चित्रराधसम् १२२२
 प्रतो हि कमीज्यो अध्वरेषु सनाच्च होता नव्यश् च सत्सि ।
 स्वां चाग्ने तन्वं पिप्रयस्व अस्मभ्यं च सौभगमा यजस्व १२२३

॥ १४८ ॥ (ऋ० ८ । १९ । १—३३)

(१२२४—१२६९) सोमरिः काण्वः । प्रगाथः = (ककुप्+ सतोबृहती), १२५० छिपदा विराट् ।

तं गूर्धया स्वर्णरं देवासो देवमरतिं दधन्विरे । देवत्रा हव्यमोहिरे १२२४
 विभूतरातिं विप्र चित्रशोचिषम् अग्निमीळिष्व यन्तुरम् ।
 अस्य मेघस्य सोम्यस्य सोमरे प्रेमध्वराय पूर्व्यम् १२२५
 यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् । अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् १२२६
 ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदितिम् अग्निं श्रेष्ठशोचिषम्
 स नो मित्रस्य वरुणस्य सो अपाम् आ सुम्रं यक्षते दिवि १२२७
 यः समिधा य आहुती यो वेदेन ददाश मर्तो अग्रये । यो नमसा स्वध्वरः १२२८
 तस्येदर्वन्तो रंहयन्त आशवस् तस्य द्युम्रितमं यशः ।
 न तमहो देवकृतं कृतश् च न मर्त्यकृतं नशत् १२२९
 स्वग्रयो वो अग्निभिः स्याम सूनो सहस ऊर्जा पते । सुवीरस् त्वमस्मयुः १२३०
 प्रशंसमानो अतिथिर्न मित्रियो ऽग्नी रथो न वेद्यः ।
 त्वे क्षेमासो अपि सन्ति साधवस् त्वं राजा रयीणाम् १२३१
 सो अद्धा दाश्वध्वरो ऽग्ने मर्तः सुभग स प्रशंस्यः । स धीभिरस्तु सनिता १२३२

यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय तिष्ठसि क्षयद्वीरः स साधते ।	
सो अर्वद्धिः सनिता स विपन्युभिः स शूरैः सनिता कृतम्	१२३३
यस्याग्निर्वर्गुहे स्तोमं चनो दधीत विश्ववार्यः । हव्या वा वेविषद् विषः	१२३४
विप्रस्य वा स्तुवतः सहसो यहो मक्षूतमस्य रातिषु ।	
अवोदैवमुपरिमर्त्यं कृधि वसो विविदुषो वचः	१२३५
यो अग्निं हव्यदातिभिर् नमोभिर्वासुदक्षमाविवांसति । गिरा वाजिरशोचिषम्	१२३६
समिधा यो निशित्ती दाशददिति धामभिरस्य मर्त्यः ।	
विश्वेत् स धीभिः सुभगो जनाँ अतिं द्युन्नैरुद्र इव तारिषत्	१२३७
तदग्ने द्युन्नमा भर यत् सासहत् सदर्ने कं चिदत्रिणम् । मन्युं जनस्य दूढ्यः	१२३८
येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा येन नासत्या भगः ।	
वयं तत् ते शर्वसा गातुवित्तमा इन्द्रत्वोता विधेमहि	१२३९
ते धेदग्ने स्वाध्योऽं ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् । विप्रासो देव सुक्रतुम्	१२४०
त इद् वेदिं सुभग त आहुतिं ते सोतुं चक्रिरे दिवि ।	
त इद् वाजोभिर्जिग्युर्महद्वनं ये त्वे कामं न्येरिरे	१२४१
भद्रो नो अगिराहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः । भद्रा उत प्रशस्तयः	१२४२
भद्रं मनः कृणुष्व वृत्रतूर्ये येना समत्सु सासहः ।	
अव स्थिरा तनुहि भूरि शर्धतां वनेमा ते अभिष्टिभिः	१२४३
ईळे गिरा मनुहितं यं देवा दूतमर्ति न्येरिरे । यजिष्ठं हव्यवाहनम्	१२४४
तिग्मजम्भाय तरुणाय राजते प्रथो गायस्यग्रये ।	
यः पिशते सूनृताभिः सुवीर्यम् अग्निधृतेभिराहुतः	१२४५
यदी घृतेभिराहुतो वाशीमग्निर्भरत उच्चाव च । असुर इव निर्णिजम्	१२४६
यो हव्यान्यैरयता मनुहितो देव आसा सुगन्धिना ।	
विवासते वार्योणि स्वध्वरो होता देवो अमर्त्यः	१२४७
यदग्ने मर्त्यस् त्वं स्यामहं मित्रमहो अमर्त्यः । सहसः सूनवाहुत	१२४८

न त्वा रासीयाभिश्चस्तये वसो न पापत्वाय सन्त्य ।	
न मे स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्रे न पापया	१२४९
पितुर्न पुत्रः सुभृतो दुरोण आ देवाँ एतु प्र णो हविः	१२५०
तवाहमग्न ऊतिभिर् नेदिष्ठाभिः सचेय जोषमा वसो । सदा देवस्य मर्त्यः	१२५१
तव ऋत्वा सनेयं तव रातिभिर् अग्रे तव प्रशस्तिभिः ।	
त्वामिदाहुः प्रमतिं वसो मम अग्रे हर्षस्व दातवे	१२५२
प्र सो अग्रे तवोतिभिः सुवीराभिस् तिरते वाजभर्मभिः । यस्य त्वं सख्यमावरः	१२५३
तव द्रुप्तो नीलवान् वाश ऋत्विय इन्धानः सिष्णवा ददे ।	
त्वं महीनामुषसामसि प्रियः क्षपो वस्तुषु राजसि	१२५४
तमार्गन्म सोमरयः सहस्रमुष्कं स्वभिष्टिमवसे । सम्राजं त्रासदस्यवम्	१२५५
यस्य ते अग्रे अन्ये अग्रय उपक्षितो वया इव ।	
विपो न द्युम्ना नि युवे जनानां तव क्षत्राणि वर्धयन्	१२५६

॥ १४९ ॥ (ऋ० ८ । १०३ । १-१३)

बृहतीः १२६१ विराङ्गरूपाः १२६३, १२६५, १२६७, १२६९, सतोबृहतीः
१२६४, १२६८ ककुपः १२६६ हसीयसी ।

अदर्शि गातुवित्तमो यस्मिन् व्रतान्यादधुः ।	
उपो षु जातमार्यस्य वर्धनम् अग्निं नक्षन्त नो गिरः	१२५७
प्र दैवोदासो अग्निर् देवाँ अच्छा न मज्मना ।	
अनु मातरं पृथिवीं वि वावृते तस्थौ नाकस्य सानवि	१२५८
यस्माद् रेजन्त कृष्टयश् चर्कृत्यानि कृण्वतः ।	
सहस्रसां मेघसाताविव त्मना अग्निं धीभिः संपर्यत	१२५९
प्र यं राये निनीषसि मतो यस् ते वसो दाशत् ।	
स वीरं धत्ते अग्न उक्थशंसिनं त्मना सहस्रपोषिणम्	१२६०
स दृष्टे चिदभि तृणत्ति वाजम् अर्वता स धत्ते अक्षिति श्रवः ।	
त्वे देवत्रा सदा पुरुवसो विश्वा वामानि धीमहि	१२६१

यो विश्वा दयते वसु होता मन्द्रो जनानाम् ।	
मघोर्न पात्रा ग्रथमान्यस्मै ग्र स्तोमा यन्त्यग्रये	१२६२
अश्वं न गीर्भी रथ्यं सुदानवो मर्मृज्यन्तै देवयवः ।	
उभे तोके तनये दस्म विस्पते पर्षि राधो मघोनाम्	१२६३
ग्र मंहिष्ठाय गायत क्रतान्नै बृहते शुक्रशोचिषे ।	
उपस्तुतासो अग्रये	१२६४
आ वंसते मघवा वीरवद् यशः समिद्रो द्युम्याहुतः ।	
कुविन्नो अस्य सुमतिर्नवीयसी अच्छा वाजैभिरागमत्	१२६५
प्रेष्ठेषु प्रियाणां स्तुह्यासावार्तिथिम् ।	
अग्नि रथानां यमम्	१२६६
उदिता यो निर्दिता वेदिता वसु आ यज्ञियो वर्तति ।	
दुष्टरा यस्य प्रवृणे नोर्मयो धिया वाजं सिषासतः	१२६७
मा नो हणीतामर्तिथिर् वसुरग्निः पुरुप्रशस्त एषः ।	
यः सुहोता स्वध्वरः	१२६८
मो ते रिषन्त्ये अच्छोक्तिभिर्वसो ऽग्ने केभिश् चिदेवैः ।	
कीरिश् चिद्धि त्वामीद्वै दूत्याय रातहव्यः स्वध्वरः	१२६९

॥ १५० ॥ (ऋ० ८ । २३ । १-३०)

(१२७०-१२९९) विश्वमना वैयश्वः । उष्णिक् ।

ईळिष्वा हि प्रतीव्यं यजस्व जातवेदसम् । चरिष्णुधूममगृभीतशोचिषम्	१२७०
द्रामानं विश्वचर्षणे ऽग्नि विश्वमनो गिरा । उत स्तुषे विष्पर्धसो रथानाम्	१२७१
येषामाबाध क्रग्नियं इषः पृथक् च निग्रभे । उपविद्रा वह्निर्विन्दते वसु	१२७२
उदस्य शोचिरस्थाद् दीदियुषो व्यज्रम् । तर्पुर्जम्भस्य सुद्युतो गणश्रियः	१२७३
उदु तिष्ठ स्वध्वर स्तवानो देव्या कृपा । अभिख्या भासा बृहता शुशुक्रनिः	१२७४
अग्ने याहि सुशस्तिभिर् हव्या जुह्वान आनुषक् । यथा दूतो बभूथ हव्यवाहनः	१२७५
अग्नि वः पूर्य हुवे होतारं चर्षणीनाम् । तमया वाचा गृणे तमु वः स्तुषे	१२७६
यज्ञेभिरद्भुतक्रतुं यं कृपा सुदयन्त इत् । मित्रं न जने सुधितमृतावनि	१२७७

ऋतावानमृतायवो यज्ञस्य साधनं गिरा । उपो एनं जुजुषुर्नमसस्पदे	१२७८
अच्छा नो अङ्गिरस्तमं यज्ञासो यन्तु संयतः । होता यो अस्ति विश्वा यज्ञस्तमः	१२७९
अग्ने तव त्वे अजर इन्धानासो बृहद् भाः । अश्वा इव वृषणस् तविषीयवः	१२८०
स त्वं न ऊर्जा पते रयिं रास्व सुवीर्यम् । प्रावं नस् तोके तनये समत्स्वा	१२८१
यद्वा उ विश्वपतिः शितः सुग्रीतो मनुषो विशि । विश्वेदग्निः प्रति रक्षीसि सेधति	१२८२
श्रुष्वग्ने नवस्य मे स्तोमस्य वीर विश्वपते । नि मायिनस् तपुषा रक्षसो दह	१२८३
न तस्य मायया चन रिपुरीशीत मर्त्यः । यो अग्नये ददाश हव्यदातिभिः	१२८४
व्यश्वस् त्वा वसुविदम् उक्षण्युरग्रीणादधिः । महो राये तमु त्वा समिधीमहि	१२८५
उशना काव्यस् त्वा नि होतारमसादयत् । आयजिं त्वा मनवे जातवेदसम्	१२८६
विश्वे हि त्वा सजोषसो देवासो दूतमकृत । श्रुष्टी देव प्रथमो यज्ञियो भुवः	१२८७
इमं वा वीरो अमृतं दूतं कृण्वीत मर्त्यः । पावकं कृष्णवर्तनि विहायसम्	१२८८
तं हुवेम यतस्तुचः सुभासं शुक्रशोचिषम् । विशामग्निमजरं प्रत्नमीढ्यम्	१२८९
यो अस्मै हव्यदातिभिर् आहुतिं मतोऽविधत् । भूरि पोषं स धत्ते वीरवद् यशः	१२९०
प्रथमं जातवेदसम् अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् । प्रति सुगैति नमसा हविष्मती	१२९१
आभिर्विधेमाग्नये ज्येष्ठाभिर्यश्ववत् । मंहिष्ठाभिर्मतिभिः शुक्रशोचिषे	१२९२
नूनमर्चं विहायसे स्तोमेभिः स्थूरयूपवत् । ऋषे वैयश्च दम्यायाग्नये	१२९३
अतिथिं मानुषाणां सूनुं वनस्पतीनाम् । विप्रा अग्निमवसे प्रत्नमीळते	१२९४
महो विश्वा अभि षतोऽग्ने ऽभि हव्यानि मानुषा । अग्ने नि षत्सि नमसाधि बर्हिषि	१२९५
वंस्वा नो वार्या पुरु वंस्व रायः पुरुस्पृहः । सुवीर्यस्य प्रजावतो यशस्वतः	१२९६
त्वं वरो सुषाम्णे ऽग्ने जनाय चोदय । सदा वसो रातिं यविष्ठ शश्वते	१२९७
त्वं हि सुप्रतूरसि त्वं नो गोमतीरिषः । महो रायः सातिमग्ने अपा वृधि	१२९८
अग्ने त्वं यशा असि आ मित्रावरुणा वह । ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा	१२९९

॥ १५१ ॥ (क्र० ८ । ३९ । १-१०) [१३००-१३०९] नाभाकः काण्वः । महापङ्क्तिः ।

अग्निमस्तोष्यग्निमयम् अग्निमीळा यजध्वै ।
 अग्निदेवाँ अनक्तु न उभे हि विदथे कविर् अन्तश्चरति दूत्यं । नभन्तामन्यके संमे १३००
 न्यग्ने नव्यसा वचस् तनूषु शंसमेषाम् ।
 न्यराती रराव्णां विश्वा अर्यो अरातीर् इतो युच्छन्त्वामुरो नभन्तामन्यके संमे १३०१

अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं घृतं न जुह्व आसनि ।	
स देवेषु प्र चिकिद्धि त्वं ह्यसि पूर्यः शिवो दूतो विवस्वतो नभन्तामन्यके संमे	१३०२
तत्तदग्निर्वयो दधे यथायथा कृपण्यति ।	
ऊर्जाहुतिर्वसूनां शं च योश् च मयो दधे विश्वस्यै देवहूत्यै नभन्तामन्यके संमे	१३०३
स चिकेत सहीयसा अग्निश् चित्रेण कर्मणा ।	
स होता शश्वतीनां दक्षिणाभिरभीवृत इनोति च प्रतीव्यं नभन्तामन्यके संमे	१३०४
अग्निर्जाता देवानामग्निर् वेदु मर्तानामपीच्यम् ।	
अग्निः स द्रविणोदा अग्निर्द्वारा व्यूर्णुते स्वाहुतो नवीयसा नभन्तामन्यके संमे	१३०५
अग्निर्देवेषु संवसुः स विश्वु यज्ञियास्वा ।	
स मुदा काव्या पुरु विश्वं भूमेव पुष्यति देवो देवेषु यज्ञियो नभन्तामन्यके संमे	१३०६
यो अग्निः सप्तमानुषः श्रितो विश्वेषु सिन्धुषु ।	
तमार्गन्म त्रिपस्त्यं मन्धातुर्देस्युहन्तमम् अग्निं यज्ञेषु पूर्य नभन्तामन्यके संमे	१३०७
अग्निस् त्रीणि त्रिधातूनि आ क्षेति विदथा कविः ।	
स त्रीरैकादशा इह यक्षच्च पिप्रयच्च नो विप्रो दूतः परिष्कृतो नभन्तामन्यके संमे	१३०८
त्वं नो अग्न आयुषु त्वं देवेषु पूर्य वस्व एकं इरज्यसि ।	
त्वामापः परिस्नुतः परि यन्ति स्वसेतवो नभन्तामन्यके संमे	१३०९

॥ १५२ ॥ (ऋ० ८ । ४३ । १-३३) [१३१०-१३८८] विरूप आङ्गिरसः । गायत्री ।

इमे विप्रस्य वेधसो ऽग्नेरस्तृतयज्वनः । गिरः स्तोमास ईरते	१३१०
अस्मै ते प्रतिहर्यते जातवेदो विचर्षणे । अग्ने जनामि सुष्टुतिम्	१३११
आरोका इव धेदहं तिग्मा अग्ने तव त्विषः । दद्धिर्वनानि बप्सति	१३१२
हरयो धूमकेतवो वार्तजूता उप दधि । यतन्ते वृथगग्रयः	१३१३
एते त्वे वृथगग्रय इद्भासः समदक्षतै । उषसामिव केतवः	१३१४
कृष्णा रजांसि पत्सुतः प्रयाणे जातवेदसः । अग्निर्यद् रोधति क्षमि	१३१५
धासिं कृष्णान ओषधीर् बप्सदग्निर्न वायति । पुनर्यन् तरुणीरपि	१३१६
जिह्वाभिरह नन्नमद् अर्चिषा जञ्जणाभवन् । अग्निर्वनेषु रोचते	१३१७
अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे । गर्भे सन् जायसे पुनः	१३१८

उदग्ने तव तद् घृताद् अर्ची रोचत आहुतम् । निसानं जुहोः मुखे	१३१९
उक्षान्नाय वक्षान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे । स्तोमैर्विधेमाग्रये	१३२०
उत त्वा नमसा वयं होतुर्वरेण्यक्रतो । अग्ने समिद्धिरीमहे	१३२१
उत त्वा भृगुवच्छुचे मनुष्वदग्र आहुत । अङ्गिरस्वद्धवामहे	१३२२
त्वं ह्यग्ने अग्निना विप्रो विप्रैण सन्तसता । सखा सख्या समिध्यसे	१३२३
स त्वं विप्राय दाशुषे रयिं देहि सहस्रिणम् । अग्ने वीरवतीमिषम्	१३२४
अग्ने भ्रातः सहस्कृत रोहिदश्च शुचित्रत । इमं स्तोमं जुषस्व मे	१३२५
उत त्वाग्ने मम स्तुतो वाश्राय प्रतिहर्यते । गोष्ठं गावं इवाशत	१३२६
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । अग्ने कामाय येमिरे	१३२७
अग्निं धीभिर्मनीषिणो मेधिरासो विपश्चितः । अब्रसद्याय हिन्विरे	१३२८
तं त्वामज्मेषु वाजिनं तन्वाना अग्ने अध्वरम् । वह्निं होतारमीळते	१३२९
पुरुत्रा हि सदङ्कुसि विशो विश्वा अनु ग्रभुः । समत्सु त्वा हवामहे	१३३०
तमीळिष्व य आहुतो ऽग्निर्विभ्राजते घृतैः । इमं नः शृण्वद्धवम्	१३३१
तं त्वा वयं हवामहे शृण्वन्तं जातवेदसम् । अग्ने व्रन्तमप द्विषः	१३३२
विशां राजानमद्भुतम् अध्यक्षं धर्मणामिमम् । अग्निमीळे स उ श्रवत्	१३३३
अग्निं विश्वार्युवेपसं मर्यं न वाजिनं हितम् । समिं न वाजयामसि	१३३४
घ्नन् मृध्राण्यप द्विषो दहन् रक्षांसि विश्वहा । अग्ने तिग्मेन दीदिहि	१३३५
यं त्वा जनांस इन्धते मनुष्वदङ्गिरस्तम । अग्ने स बोधि मे वचः	१३३६
यदग्ने दिविजा असि अप्सुजा वा सहस्कृत । तं त्वा गीर्भिहवामहे	१३३७
तुभ्यं घेत् ते जना इमे विश्वाः सुक्षितयः पृथक् । धासिं हिन्वन्त्यत्तवे	१३३८
ते घेदग्ने स्वाध्यो ऽहा विश्वा नृचक्षसः । तरन्तः स्याम दुर्गहा	१३३९
अग्निं मन्द्रं पुरुग्रियं शीरं पावकशोचिषम् । हद्भिर्मन्द्रेभिरीमहे	१३४०
स त्वमग्ने विभारवसुः सृजन्तस्यो न रश्मिभिः । शर्धन् तमांसि जिघ्रसे	१३४१
तत् तै सहस्व ईमहे दात्रं यन्नोपदस्यति । त्वदग्ने वार्यं वसु	१३४२

॥ १५३ ॥ (क्र० ८ । ४४ । १-३०)

समिधाग्निं दुवस्यत घृतैर्बोधयतातिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन	१३४३
अग्ने स्तोमं जुषस्व मे वर्धस्वानेन मन्मना । प्रति सूक्तानि हर्य नः	१३४४

अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ आ सादयादिह १३४५	
उत् ते बृहन्तो अर्चयः समिधानस्य दीदिवः । अग्ने शुक्रास ईरते १३४६	
उप त्वा जुहोइ मम घृताचीर्यन्तु हर्यत । अग्ने हव्या जुषस्व नः १३४७	
मन्द्रं होतारमृत्विजं चित्रभानुं विभार्वसुम् । अग्निमीळे स उ श्रवत् १३४८	
ग्रत्नं होतारमीड्यं जुष्टमग्निं कविक्रतुम् । अध्वराणामभिश्रियम् १३४९	
जुषाणो अङ्गिरस्तम इमा हव्यान्यानुषक् । अग्ने यज्ञं नय क्रतुथा १३५०	
समिधान उ सन्त्य शुक्रशोच इहा वह । चिकित्वान् दैव्यं जनम् १३५१	
विश्रं होतारमद्रुहं धूमकेतुं विभार्वसुम् । यज्ञानां केतुमीमहे १३५२	
अग्ने नि पाहि नस् त्वं प्रति ष्म देव रीषतः । भिन्धि द्वेषः सहस्कृत १३५३	
अग्निः प्रत्नेन मन्मना शुम्भानस् तन्वं स्वाम् । कविर्विप्रेण वावृधे १३५४	
ऊजो नपातमा हुवे अग्निं पावकशोचिषम् । अस्मिन् यज्ञे स्वध्वरे १३५५	
स नो मित्रमहस् त्वम् अग्ने शुक्रेण शोचिषा । देवैरा सत्सि बर्हिषि १३५६	
यो अग्निं तन्वोइ दमे देवं मर्तः सपर्यति । तस्मा इद् दीदयद् वसु १३५७	
अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतोसि जिन्वति १३५८	
उदग्ने शुचयस् तव शुक्रा भार्जन्त ईरते । तव ज्योतीष्यर्चयः १३५९	
ईशिषे वार्यस्य हि दात्रस्याग्ने स्वर्पतिः । स्तोता स्यां तव शर्मेणि १३६०	
त्वामग्ने मनीषिणस् त्वां हिन्वन्ति चित्तिभिः । त्वां वर्धन्तु नो गिरः १३६१	
अदब्धस्य स्वधावतो दूतस्य रेभतः सदा । अग्नेः सख्यं वृणीमहे १३६२	
अग्निः शुचित्रततमः शुचिर्विप्रः शुचिः कविः । शुची रोचत आहुतः १३६३	
उत त्वा धीतयो मम गिरो वर्धन्तु विश्वहा । अग्ने सख्यस्य बोधि नः १३६४	
यदग्ने स्यामहं त्वं त्वं वा घा स्या अहम् । स्युष्टे सत्या इहाशिषः १३६५	
वसुर्वसुपतिर्हि क्रम् अस्यग्ने विभार्वसुः । स्याम ते सुमतावपि १३६६	
अग्ने धृतव्रताय ते समुद्रायैव सिन्धवः । गिरो वाश्वास ईरते १३६७	
युवानं विश्पतिं कविं विश्वादं पुरुवेषसम् । अग्निं शुम्भामि मन्माभिः १३६८	
यज्ञानां रथ्ये वयं तिग्मजम्भाय वीळ्वे । स्तोमैरिषेमाग्र्ये १३६९	
अयमग्ने त्वे अपि जरिता भूतु सन्त्य । तस्मै पावक मृळय १३७०	
धीरो ह्यस्यन्नसद् विप्रो न जागृविः सदा । अग्ने दीदयसि द्यवि १३७१	

पुराग्ने दुरितेभ्यः पुरा मुध्रेभ्यः कवे । प्र ण आयुर्वसो तिर १३७२

॥१५४॥ (ऋ० ८ । ७५ । १-१६)

युक्ष्वा हि देवहूतमाँ	अश्वौ अग्ने रथीरिव	। नि होता पूर्व्यः सन्दः	१३७३
उत नो देव देवाँ	अच्छा वोचो विदुष्टरः	। श्रद् विश्वा वार्यो कृधि	१३७४
त्वं ह यद् यविष्ठय	सहसः स्रनवाहुत	। ऋतावा यज्ञियो भुवः	१३७५
अयमग्निः सहस्रिणो	वाजस्य श्रतिनस्पतिः	। मूर्धा कवी रयीणाम्	१३७६
तं नेमिमृभवो यथा	नमस्व सहतिभिः	। नेदीयो यज्ञमङ्गिरः	१३७७
तस्मै नूनमभिद्यवे	वाचा विरूप नित्यया	। वृष्णे चोदस्व सुष्टुतिम्	१३७८
कष्टं विदस्य सेनया	अग्नेरपाकचक्षसः	। पुणि गोषु स्तरामहे	१३७९
मा नो देवानां विशः	प्रस्नातीरिवोस्त्राः	। कृशं न हासुरभ्याः	१३८०
मा नः समस्य दूह्यः	परिद्वेषसो अंहतिः	। ऊर्मिर्न नावमा वधीत्	१३८१
नमस् ते अश्र ओजसे	गुणन्ति देव कृष्टयः	। अमैरमित्रमर्दय	१३८२
कुवित् सु नो गर्विष्टये	ऽग्ने संवेर्षिषो रयिम्	। उरुकुदुरु णस् कृधि	१३८३
मा नो अस्मिन् महाधने	परा वर्भारभृद् यथा	। संवर्गं सं रयिं जय	१३८४
अन्यमस्सद्भिया इयम्	अग्ने सिषक्तु दुच्छुना	। वर्धा नो अमवच्छवः	१३८५
यस्याजुषन्नमस्विनः	शमीमदुर्मखस्य वा	। तं धेदुग्निर्वुधावति	१३८६
परस्या अधि संवतो	ऽवराँ अभ्या तर	। यत्राहमस्मि ताँ अव	१३८७
विद्या हि ते पुरा वयम्	अग्ने पितुर्यथावसः	। अघा ते सुम्नमीमहे	१३८८

॥१५५॥ (ऋ० ८।६०।१-२०) [१३८९-१४०८] भर्गः प्रागाथः ।

प्रागाथः= (बृहती+सतोबृहती) ।

अश्र आ याह्यग्निभिर्	होतारं त्वा वृणीमहे ।	
आ त्वामनक्तु प्रयता	हविष्मती यजिष्ठं बहिरासदे	१३८९
अच्छा हि त्वा सहसः	स्रनो अङ्गिरः सुचश् चरन्त्यध्वरे ।	
ऊर्जो नपातं घृतकेशमीमहे	ऽग्निं यज्ञेषु पूर्व्यम्	१३९०
अग्ने कविर्वेधा असि	होता पावक यक्ष्यः ।	
मन्द्रो यजिष्ठो अध्वरेष्वीड्यो	विप्रेभिः शुक्र मन्माभिः	१३९१

अद्रोघमा बहोशतो यविष्य देवाँ अजस्र वीतये ।	
अभि प्रयांसि सुधिता वंसो गहि मन्दस्व धीतिभिर्हितः	१३९२
त्वमित् सप्रथा असि अग्ने त्रातर्कृतस् कृविः ।	
त्वां विप्रासः समिधान दीदिव आ विवासन्ति वेधसः	१३९३
शोचा शोचिष्ठ दीदिहि विशे मयो रास्व स्तोत्रे महाँ असि ।	
देवानां शर्मन् मम सन्तु सूरयः शत्रूषाहः स्वग्रयः	१३९४
यथा चिद् वृद्धमतसम् अग्ने संजूर्वसि क्षमि ।	
एवा दह मित्रमहो यो अस्मधुग् दुर्मन्मा कश् च वेनति	१३९५
मा नो मर्ताय रिपवे रक्षस्विने माघशंसाय रीरधः ।	
अस्त्रैधङ्गिस् तरणिभिर्यविष्य शिवेभिः पाहि पायुभिः	१३९६
पाहि नो अग्र एकया पाह्युत द्वितीयया ।	
पाहि गीभिस् तिसृभिरूर्जा पते पाहि चतसृभिर्वसो	१३९७
पाहि विश्वस्माद् रक्षसो अराव्यः प्र स्म वाजेषु नोऽव ।	
त्वामिद्धि नेदिष्ठं देवतातय आपि नक्षामहे वृधे	१३९८
आ नो अग्ने वयोवृधं रयि पावक शंस्यं ।	
रास्वा च न उपमाते पुरुस्पृहं सुनीती स्वयंशस्तरम्	१३९९
येन वंसां पृतनासु शर्धतस् तरन्तो अर्य आदिशः ।	
स त्वं नो वर्ध प्रयसा शचीवसो जिन्वा धियो वसुविदः	१४००
शिशानो वृषभो यथा अग्निः शृङ्गे दर्विध्वत् ।	
तिग्मा अस्य हनवो न प्रतिधृषे सुजम्भः सहसो यहुः	१४०१
नहि ते अग्ने वृषभ प्रतिधृषे जम्भासो यद् वितिष्ठसे ।	
स त्वं नो होतः सुहुतं हविष्कृधि वंस्वा नो वार्या पुरु	१४०२
शेषे वनेषु मात्रोः सं त्वा मर्तास इन्धते ।	
अतन्त्रो हव्या बहसि हविष्कृत आदिद् देवेषु राजसि	१४०३
सप्त होतारस् तमिदीळते त्वा अग्ने सुत्यजमह्यम् ।	
मिनत्स्यद्रि तपसा वि शोचिषा प्राग्ने तिष्ठ जनाँ अति	१४०४

अग्निमग्निं वो अग्निं हुवेम वृक्तबर्हिषः ।	
अग्निं हितप्रयसः शश्वतीष्वा होतारं चर्षणीनाम्	१४०५
केतेन शर्मन्त्सचते सुषामणि अग्ने तुभ्यं चिकित्वना ।	
इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये	१४०६
अग्ने जरितर्विस्पतिस् तेपानो देव रक्षसः ।	
अग्रौषिवान् गृहपतिमहाँ असि दिवस्पायुर्दुरोणयुः	१४०७
मा नो रक्ष आ वैशीदाघृणीवसो मा यातुर्यातुमावताम् ।	
परोगव्यूत्यनिरामप क्षुधम् अग्ने सेध रक्षस्विनः	१४०८

॥ १५६ ॥ (ऋ० ८ । ७१ । १-१५)

[१४०८—१४२३] सुदीति-पुरुमीह्वावाङ्गिरसौ, तयोर्वान्यतरः । गायत्री, १४१८-१४२३
प्रगाथः=(बृहती, सतोबृहती) ।

त्वं नो अग्ने महोभिः पाहि विश्वस्या अरातिः । उत द्विषो मर्त्यस्य	१४०९
नहि मन्युः पौरुषेय ईशे हि वः प्रियजात । त्वमिदं क्षपावान्	१४१०
स नो विश्वेभिर्देवेभिर् ऊर्जो नपाद् भद्रं शोचे । रयिं देहि विश्ववारम्	१४११
न तमग्ने अरातयो मर्ति युवन्त रायः । यं त्रायसे दाश्वांसम्	१४१२
यं त्वं विप्र मेधसातौ अग्ने हिनोषि धनाय । स तवोती गोषु गन्ता	१४१३
त्वं रयिं पुरुवीरम् अग्ने दाशुषे मर्तीय । प्र णो नय वस्यो अच्छ	१४१४
उरुष्या णो मा परा दा अघायते जातवेदः । दुराध्येऽ मर्तीय	१४१५
अग्ने मार्किष्ठे देवस्य रातिमदेवो युयोत । त्वमीशिषे वसूनाम्	१४१६
स नो वस्व उप मासि ऊर्जो नपान्मार्हिनस्य । सखे वसो जरितृभ्यः	१४१७
अच्छा नः शीरशोचिषं गिरो यन्तु दर्शतम् ।	
अच्छा यज्ञासो नर्मसा पुरुवसुं पुरुप्रशस्तमूतये	१४१८
अग्निं सूनुं सहसो जातवेदसं दानाय वार्याणाम् ।	
द्विता यो भृदमृतो मर्त्येष्व होता मन्द्रतमो विशि	१४१९
अग्निं वो देवयज्यया अग्निं प्रयत्यध्वरे ।	
अग्निं धीषु प्रथममग्निमवति अग्निं क्षेत्राय साधसे	१४२०

अग्नि॒रिषां॑ स॒ख्ये द॑दातु न ई॒शे यो वा॒र्या॑णाम् ।	
अग्निं॑ तो॒के तन॑ये श॒श्वदी॑महे वसुं सन्तं तनू॒पाम्	१४२१
अग्नि॒मीळि॑ष्वावसे गाथाभिः शी॒रशो॑चिषम् ।	
अग्निं॑ रा॒ये पु॑रुमीह श्रुतं नरो ऽग्निं सु॒दीत॑ये छा॒र्दिः	१४२२ ×
अग्निं॑ द्वेषो योत॒वै नो॑ गृणीमसि अग्निं शं योश् च दात॒वै ।	
विश्वा॑सु वि॒क्ष्ववि॑तेव ह॒व्यो भुव॑द् वस्तु॒र्कषू॑णाम्	१४२३

॥ १५७ ॥ (क्र० ८ । ७२ । १-१८) [१४२४-१४४१] हर्यतः प्रागाथः । गायत्री ।

ह॒विष्कृ॑णुध्व॒मा ग॑मद् अ॒ध्व॒र्युर्वे॑नते पुनः । वि॒द्राँ अ॑स्य ग॒शास॑नम् १४२४	
नि ति॒ग्मम॑भ्यं॒शुं सी॑द॒द्वोता॑ म॒नाव॑धि । जुषा॒णो अ॑स्य स॒ख्यम् १४२५	
अ॒न्तरि॑च्छन्ति तं जने रु॒द्रं प॒रो म॑नीषया । गृ॒भ्णन्ति॑ जि॒ह्वाया॑ स॒सम् १४२६	
जा॒म्यती॑तपे धनु॒र् वयो॑धा अ॒रुह॑द्वनम् । दृष॒दं जि॒ह्वाया॑वधीत् १४२७	
च॒रन् व॒त्सो रु॑श॒न्निह॑ नि॒दाता॑रं न वि॒न्दते । वेति॑ स्तोत॒व अ॒म्यम् १४२८	
उ॒तो न्व॑स्य यन्म॒हद् अ॒श्वाव॑द् यो॒जनं बृ॑हत् । द॒ामा रथ॑स्य द॒दृशे १४२९	
दुह॑न्ति स॒प्तैक॑ाम् उप॒ द्वा प॑ञ्च सृजतः । ती॒र्थे सि॒न्धो॒रधि॑ स्व॒रे १४३०	
आ द॒शभि॑र्विवस्व॒त इन्द्रः॑ को॒शम॑चुच्यवीत् । खे॒दया॑ त्रि॒वृता॑ दि॒वः १४३१	
परि॑ त्रि॒धात॑रध्व॒रं जु॑र्णिरेति नवी॒यसी । म॒ध्वा हो॑ता॒रो अ॒ञ्जते १४३२	
सि॒ञ्चन्ति॑ नम॒साव॑तम् उ॒च्चाच॑क्रं परि॒ज्मान॑म् । नी॒चीन॑वार॒मर्क्षि॑तम् १४३३	
अ॒भ्यार॑मिद॒द्रयो॑ निषि॒क्तं पु॑ष्करे मधु । अ॒वत॑स्य॒ विस॑र्जने १४३४	
गाव॑ उपा॒वता॑व॒तं म॒ही य॒ज्ञस्य॑ र॒प्सुदा॑ । उ॒भा क॑र्णी हिर॒ण्यया॑ १४३५	
आ सु॒ते सि॑ञ्चत॒ श्रियं॑ रो॒दस्यो॑रभि॒श्रिय॑म् । र॒सा द॑धीत वृष॒भम् १४३६	
ते जा॑न॒त स्व॑मो॒त्र्यं सं व॒त्सासो॑ न मा॒तृभिः॑ । मि॒थो न॑सन्त॒ जामि॑भिः १४३७	
उप॑ स्रक्वे॒षु ब॑प्स॒तः कृ॑ण्वते ध॒रुणं॑ दि॒वि । इन्द्रे॑ अ॒ग्रा नमः॑ स्वः १४३८	
अधु॑क्षत् पि॒प्युषी॑मिषम् उ॒जै स॒प्तप॑दी॒मरिः॑ । स॒र्यस्य॑ स॒प्त र॒श्मिभिः॑ १४३९	
सोम॑स्य मि॒त्रावरु॑णा उ॒दिता॑ सूर॒ आ द॑दे । तदा॑त॒रस्य॑ भेष॒जम् १४४०	
उ॒तो न्व॑स्य यत् प॒दं ह॑र्य॒तस्य॑ नि॒धान्य॑म् । परि॑ द्यां जि॒ह्वाया॑तनत् १४४१	

॥ १५८ ॥ (ऋ० ८ । ७३ । १-१२)

[१४४२-१४५३] गोपवन आत्रेयः । अनुष्टुप्मुखः प्रगाथः= (अनुष्टुप्+गायत्रीयौ) ।

विशोविशो वो अतिथिं वाजयन्तः पुरुप्रियम् ।

अग्निं वो दुर्यं वचः स्तुषे शुषस्य मन्मभिः १४४२

यं जनासो हविष्मन्तो मित्रं न सर्पिरासुतिम् । प्रशंसन्ति प्रशस्तिभिः १४४३

पन्यांसं जातवेदसं यो देवतात्सुद्यता । हव्यान्यैरयद् दिवि १४४४

आगन्म वृत्रहन्तमं ज्येष्ठमग्निमानवम् ।

यस्य श्रुतवीं बृहन् आक्षो अनीक एधते १४४५

अमृतं जातवेदसं तिरस् तमांसि दर्शतम् । घृताहवनमीज्यम् १४४६

सबाधो यं जना इमेष्टे ऽग्निं हव्येभिरीळते । जुह्वानासो यतस्तुचः १४४७

इयं ते नव्यसी मतिर् अग्ने अधाय्यसदा ।

मन्द्र सुजात सुक्रतो ऽमूर् दस्मातिथे १४४८

सा ते अग्ने शंतमा चर्निष्ठा भवतु प्रिया । तया वर्धस्व सुष्टुतः १४४९

सा द्युमैर्द्युभिनीं बृहद् उपोप श्रवसि श्रवः । दधीत वृत्रतूर्ये १४५०

अश्वमिद् गां रथग्रां त्वेषमिन्द्रं न सत्पतिम् ।

यस्य श्रवांसि तूर्वेथ पन्यंपन्यं च कृष्टयः १४५१

यं त्वा गोपवनो गिरा चर्निष्ठदग्ने अङ्गिरः । स पावक श्रुधी हवम् १४५२

यं त्वा जनास ईळते सबाधो वाजसातये । स बोधि वृत्रतूर्ये १४५३

॥ १५९ ॥ (ऋ० ८ । ८४ । १-९) (१४५४-१४६२) उशना काव्यः । गायत्री ।

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् । अग्निं रथं न वेद्यम् १४५४

कविमिव प्रचेतसं यं देवासो अर्धं द्विता । नि मर्त्येष्वामुधुः १४५५

त्वं यविष्ठ दाशुषो नूः पाहि शृणुधी गिरः । रक्षां लोकमुत त्मना १४५६

कया ते अग्ने अङ्गिर ऊर्जो नपादुपस्तुतिम् । वराय देव मन्यवे १४५७

दाशेम कस्य मनसा यज्ञस्य सहसो यहो । कर्दु वोच इदं नमः १४५८

अधा त्वं हि नस् करो विश्वा अस्मभ्यं सुक्षितीः । वाजद्रविणसो गिरः १४५९

कस्य नूनं परीणसो धियो जिन्वासि दंपते । गोषांता यस्य ते गिरः १४६०

तं मर्जयन्त सुक्रतुं पुरोयावानमाजिषु । स्वेषु क्षयेषु वाजिनम् १४६१

क्षेति क्षेमैभिः साधुभिर् नक्रियं घ्नन्ति हन्ति यः । अग्ने सुवीर एधते १४६२

॥ १६० ॥ (ऋ० ८ । १०२ । १-२२)

१४६३-१४८४ प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽग्निर्वाहस्पत्यो वा, गृहपति-यविष्ठौ सहस्रः पुत्रौ अन्यतरो वा ।

त्वमग्ने बृहद् वयो दधासि देव दाशुषे ।	कविर्गृहपतिर्युवा ।	१४६३
स न ईळानया सह देवाँ अग्ने दुवस्युवा ।	चिकिद् विमानवा वह ।	१४६४
त्वया ह स्विद् युजा वयं चोर्दिष्टेन यविष्ठय ।	अभि ष्मो वाजसातये ।	१४६५
और्विभृगुवच्छुचिम् अमवानवदा हुवे ।	अग्निं समुद्रवाससम् ।	१४६६
हुवे वातस्वनं कविं पर्जन्यक्रन्धं सहः ।	अग्निं समुद्रवाससम् ।	१४६७
आ सवं सवितुर्यथा भगस्येव भुजिं हुवे ।	अग्निं समुद्रवाससम् ।	१४६८
अग्निं वो वृधन्तम् अध्वराणां पुरुतमम् ।	अच्छा नत्रे सहस्वते ।	१४६९
अयं यथा न आश्रुत् त्वष्टा रूपेव तक्ष्या ।	अस्य क्रत्वा यशस्वतः ।	१४७०
अयं विश्वा अभि श्रियो ऽग्निर्देवेषु पत्यते ।	आ वाजैरुप नो गमत् ।	१४७१
विश्वेषामिह स्तुहि होतृणां यशस्तमम् ।	अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् ।	१४७२
शीरं पावकशौचिषं ज्येष्ठो यो दमेष्वा ।	दीदार्य दीर्घश्रुतमः ।	१४७३
तमर्वन्तं न सानसि गृणीहि विप्र शुष्मिणम् ।	मित्रं न यातयज्जनम् ।	१४७४
उप त्वा जामयो गिरो देदिशतीर्हविष्कृतः ।	वायोरनीके अस्थिरन् ।	१४७५
यस्य त्रिधात्ववृतं बर्हिस् तस्थावसंदिनम् ।	आपश् चिन्नि दधा पदम् ।	१४७६
पदं देवस्य मीहुषो ऽनाधृष्टाभिरुतिभिः ।	भद्रा सूर्य इवोपहृक् ।	१४७७
अग्ने घृतस्य धीतिभिस् तेपानो देव शोचिषा ।	आ देवान् वक्षि यक्षि च ।	१४७८
तं त्वाजनन्त मातरः कविं देवासो अङ्गिरः ।	हव्यवाहममर्त्यम् ।	१४७९
प्रचेतसं त्वा कवे ऽग्ने दूतं वरेण्यम् ।	हव्यवाहं नि षेदिरे ।	१४८०
नहि मे अस्त्यङ्ग्या न स्वधितिर्वनन्वति ।	अथैतादृग् भरामि ते ।	१४८१
यदग्ने कानि कानि चिद् आ ते दारुणि दुध्मसि ।	ता जुषस्व यविष्ठय ।	१४८२
यदस्युपजिह्विका यद् वम्रो अतिसर्पति ।	सर्वं तदस्तु ते घृतम् ।	१४८३
अग्निमिन्धानो मनसा धियं सचेत मर्त्यः ।	अग्निमीधे विवस्वभिः ।	१४८४

॥ १६१ ॥ ऋग्वेदस्य मण्डलं १० । सूक्तं १ । मन्त्राः १-७)

[१४८५—१५३३] त्रित आप्त्यः । त्रिष्टुप् ।

अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो अस्थान् निर्जगन्वान् तमसो ज्योतिषागात् ।

अग्निर्भानुना रुशता स्वङ्ग आ जातो विश्वा सभान्यप्राः

१४८५

स जातो गर्भो असि रोदस्थोर् अग्ने चारुर्विभृत ओषधीषु ।	
चित्रः शिशुः पारि तमांस्यक्तून् प्र मातृभ्यो अधि कर्निकदद् गाः	१४८६
विष्णुरित्था परममस्य विद्राब् जातो बृहन्नाभि पाति तृतीयम् ।	
आसा यदस्य पयो अकृत स्वं सचेतसो अभ्यर्चन्त्यत्र	१४८७
अत उ त्वा पितुभृतो जनित्रीर् अन्नावृधं प्रति चरन्त्यत्रैः ।	
ता ई प्रत्येषि पुनरन्यरूपा असि त्वं विक्षु मानुषीषु होता	१४८८
होतारं चित्ररथमध्वरस्य यज्ञस्ययज्ञस्य केतुं रुशन्तम् ।	
प्रत्यर्धि देवस्यदेवस्य मद्वा श्रिया त्वग्निमतिथिं जनानाम्	१४८९
स तु वस्त्राण्यध पेशनानि वसानो अग्निर्नाभा पृथिव्याः ।	
अरुषो जातः पद इळायाः पुरोहितो राजन् यक्षीह देवान्	१४९०
आ हि द्यावापृथिवी अग्न उभे सदा पुत्रो न मातरा ततन्थ ।	
प्र याह्यच्छोशतो यविष्ठ अथा वह सहस्येह देवान्	१४९१

॥ १६२ ॥ (ऋ० १० । २ । १-७)

पिग्नीहि देवाँ उशतो यविष्ठ विद्राँ ऋतूँऋतुपते यजेह ।	
ये दैव्या ऋत्विजस् तेभिरग्ने त्वं होतृणामस्यायजिष्ठः	१४९२
वेषि होत्रमुत पोत्रं जनानां मन्धातासि द्रविणोदा ऋतावा ।	
स्वाहा वयं कृणवामा हवीषि देवो देवान् यजत्वग्निरहन्	१४९३
आ देवानामपि पन्थामगन्म यच्छक्रवाम तदनु प्रवोहम् ।	
अग्निर्विद्वान् त्स यजात् सेदु होता सो अध्वरान् त्स ऋतून् कल्पयाति	१४९४
यद् वो वयं प्रभिनाम व्रतानि विदुषां देवा अविदुष्टरासः ।	
अग्निष्टद् विश्वमा पृणाति विद्वान् येभिर्देवाँ ऋतुभिः कल्पयाति	१४९५
यत् पाकत्रा मनसा दीनदक्षा न यज्ञस्य मन्वते मर्त्यासः ।	
अग्निष्टद्वोता ऋतुविद् विज्ञानन् यजिष्ठो देवाँ ऋतुशो यजाति	१४९६
विश्वेषां हध्वराणामनीकं चित्रं केतुं जनिता त्वा जजान ।	
स आ यजस्व नृवतीरनु क्षाः स्पर्हा इषः क्षुमतीर्विश्वजन्त्याः	१४९७

यं त्वा द्यावापृथिवी यं त्वापस् त्वष्टा यं त्वा सुजनिमा जुजानं ।
पन्थामनु प्रविद्वान् पितृयाणं द्युमदग्ने समिधानो वि भाहि

१४९८

॥ १६३ ॥ (ऋ० १० । ३ । १-७)

इनो राजन्नरतिः समिद्धो रौद्रो दक्षाय सुषुमां अदर्शि ।
चिकिद् वि भाति भासा बृहता असिक्रीमेति रुशतीमपार्जन्
कृष्णां यदेनीमभि वर्षसा भूज् जनयन् योषां बृहतः पितुर्जाम् ।
ऊर्ध्वं भानुं सूर्यस्य स्तभायन् दिवो वसुभिररतिर्वि भाति
भद्रो भद्रया सचमान आगात् स्वसारं जारो अभ्येति पश्चात् ।
सुप्रकेतैर्द्युभिरग्निर्वितिष्ठन् रुशद्भिर्वर्णैरभि राममस्थात्
अस्य यामासो बृहतो न वृधून् इन्धाना अग्नेः सख्युः शिवस्य ।
ईड्यस्य वृष्णो बृहतः स्वासो भामासो यामन्नक्तवश् चिकिरे
स्वना न यस्य भामासः पर्वन्ते रोचमानस्य बृहतः सुदिवः ।
ज्येष्ठेभिर्यस् तेजिष्ठैः क्रीळुमद्भिर् वर्षिष्ठेभिर्भानुभिर्नक्षति घाम्
अस्य शुष्मासो ददृशानपवेर् जेहमानस्य स्वनयन् नियुद्धिः ।
प्रत्नेभिर्यो रुशद्भिर्देवतमो वि रेभद्भिररतिर्भाति विभ्वा
स आ वक्षि महि न आ च सत्सि दिवस्पृथिव्योररतिर्युवत्योः ।
अग्निः सुतुकः सुतुकैभिरश्चै रभस्वद्धी रभस्वा एह गम्याः

१४९९

१५००

१५०१

१५०२

१५०३

१५०४

१५०५

॥ १६४ ॥ (ऋ० १० । ४ । १-७)

प्र ते यक्षि प्र त इयमि मन्म भुवो यथा वन्द्यो नो हवेषु ।
धन्वन्निव प्रपा असि त्वमग्न इयक्ष्वे पूरवे प्रत्न राजन्
यं त्वा जनासो अभि संचरन्ति गाव उष्णमिव व्रजं यविष्ठ ।
दूतो देवानामसि मर्त्यानाम् अन्तर्महाँश् चरसि रोचनेन
शिशुं न त्वा जेन्यं वर्धयन्ती माता बिभर्ति सचनस्यमाना ।
धनोरधि प्रवता यासि हर्यञ् जिगीषसे पशुरिवावसृष्टः
मूरा अमूर न वयं चिकित्वो महित्वमग्ने त्वमङ्ग वित्से ।
शयै वव्रिश् चरति जिह्वयादन् रैरिह्यते युवतिं विस्पतिः सन्

१५०६

१५०७

१५०८

१५०९

कूचिजायते सनयासु नव्यो वने तस्थौ पलितो धूमकेतुः ।	
अस्नातापो वृषभो न प्र वेति सचेतसो यं ग्रणयन्त मर्ताः	१५१०
तनूत्यजैव तस्करा वनर्गू रशनाभिर्दशभिर्भ्यधीताम् ।	
इयं ते अग्ने नव्यसी मनीषा युक्ष्वा रथं न शुचयद्भिरङ्गैः	१५११
ब्रह्म च ते जातवेदो नमश् च इयं च गीः सदुमिद् वर्धनी भूत् ।	
रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत नस् तन्वोऽे अप्रयुच्छन्	१५१२

॥ १६५ ॥ (ऋ० १० । ५ । १-७)

एकः समुद्रो धरुणो रयीणां अस्मद्भुदो भूरिजन्मा वि चष्टे ।	
सिषक्त्यूधनिर्ण्योरुपस्थ उत्सस्य मध्ये निहितं पदं वेः	१५१३
समानं नीलं वृषणो वसानाः सं जग्मिरे महिषा अर्वतीभिः ।	
ऋतस्य पदं कवयो नि पान्ति गुहा नामानि दधिरे पराणि	१५१४
ऋतायिनीं मायिनीं सं दधाते मित्वा शिशुं जज्ञतुर्वर्धयन्ती ।	
विश्वस्य नाभिं चरतो ध्रुवस्य कवेश् चित् तन्तुं मनसा वियन्तः	१५१५
ऋतस्य हि वर्तनयः सुजातम् इषो वाजाय प्रदिवः सचन्ते ।	
अधीवासं रोदसी वावसाने घृतैरन्नैर्वावृधाते मधूनाम्	१५१६
सप्त स्वसूररुषीर्वावशानो विद्वान् मध्व उज्जभारा दृशे कम् ।	
अन्तर्यमे अन्तरिक्षे पुराजा इच्छन् वत्रिमविदत् पूषणस्य	१५१७
सप्त मर्यादाः कवयस् ततक्षुस् तासामेकामिदुभ्यंहुरो गात् ।	
आयोर्है स्कम्भ उपमस्य नीले पथां विसर्गे धरुणेषु तस्थौ	१५१८
असच्च सच्च परमे व्योमन् दक्षस्य जन्मन्नदितेरुपस्थे ।	
अग्निर्हि नः प्रथमजा ऋतस्य पूर्वं आयुनि वृषभश् च धेनुः	१५१९

॥ १६६ ॥ (ऋ० १० । ६ । १-७)

अयं स यस्य शर्मन्नवोभिर् अग्नेरेधते जरिताभिष्टौ ।	
ज्येष्ठेभिर्यो भानुभिर्ऋषूणां पर्येति परिवीतो विभावा	१५२०
यो भानुभिर्विभावा विभाति अग्निर्देवेभिर्ऋतावाजस्रः ।	
आ यो विवार्य सुख्या सखिभ्यो ऽपरिहृतो अत्यो न सप्तिः	१५२१

ईशे यो विश्वस्या देववीतेर् ईशे विश्वायुरुषसो व्युष्टौ ।	
आ यस्मिन् मना हवींष्ययौ अरिष्टरथः स्कन्नाति शूषैः	१५२२
शूषेभिर्वृधो जुषाणो अकैर् देवाँ अच्छा रघुपत्वा जिगाति ।	
मन्द्रो होता स जुह्वाँ यजिष्ठः संमिश्रो अग्निरा जिघर्ति देवान्	१५२३
तमुस्त्रामिन्द्रं न रेजमानम् अग्निं गीर्भिर्नमोभिरा कृणुध्वम् ।	
आ यं विप्रासो मतिभिर्गुणन्ति जातवेदसं जुह्वं सहानाम्	१५२४
सं यस्मिन् विश्वा वसूनि जग्मुर् वाजे नाश्वाः सप्तीवन्त एवैः ।	
अस्मे ऊतीरिन्द्रवाततमा अर्वाचीना अग्न आ कृणुष्व	१५२५
अधा ह्यग्ने मद्वा निषद्या सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ ।	
तं ते देवासो अनु केतमायन् अधावर्धन्त प्रथमास ऊमाः	१५२६

॥ १६७ ॥ (ऋ० १० । ७ । १-७)

स्वस्ति नो दिवो अग्ने पृथिव्या विश्वायुर्धेहि यजथाय देव ।	
सचैमहि तवं दस्म प्रकृतेर् उरुष्या ण उरुभिर्देव शंसैः	१५२७
इमा अग्ने मतयस् तुभ्यं जाता गोभिरश्वैरभि गुणन्ति राधः ।	
यदा ते मर्तो अनु भोगमानङ् वसो दधानो मतिभिः सुजात	१५२८
अग्निं मन्ये पितरमग्निमापिम् अग्निं आतरं सदामित् सखायम् ।	
अग्नेरनीकं बृहतः संपर्य दिवि शुक्रं यजतं सूर्यस्य	१५२९
सिध्ना अग्ने धियो अस्मे सनुत्रीर् यं त्रायसे दम् आ नित्यं होता ।	
ऋतावा स रोहिदश्वः पुरुक्षुर् द्युभिरस्मा अहर्भिर्वा ममस्तु	१५३०
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं प्रत्नमृत्विजमध्वरस्य जारम् ।	
बाहुभ्यामग्निमायवोऽजनन्त विक्षु होतारं न्यसादयन्त	१५३१
स्वयं यजस्व दिवि देव देवान् किं ते पाकः कृणवदप्रचेताः ।	
यथार्यज ऋतुभिर्देव देवान् एवा यजस्व तन्वं सुजात	१५३२
भवा नो अग्नेऽवितो गोपा भवा वयस्कृदुत नो वयोधाः ।	
रास्वा च नः सुमहो हव्यदाति त्रास्वोत नस् तन्वोऽे अप्रयुच्छन्	१५३३

॥ १६८ ॥ (क्र० १०।८।१-६) [१५३४-१५३९] त्रिशिरास्त्वाष्ट्रः ।

प्र केतुना बृहता यात्यग्निर् आ रोदसी वृषभो रौरवीति ।	
दिवश् चिदन्ताँ उपमाँ उदानल् अपामुपस्थै महिषो ववर्ध	१५३४
मुमोद गभोँ वृषभः ककुब्बान् अस्त्रेमा वत्सः शिमीवाँ अरावीत् ।	
स देवतात्युद्यतानि कृण्वन्त् स्वेषु क्षयेषु प्रथमो जिगाति	१५३५
आ यो मूर्धानं पित्रोररब्ध न्यध्वरे दधिरे सूरौ अर्णः ।	
अस्य पत्नन्नरुषीरश्वबुधा क्रतस्य योनौ तन्वो जुषन्त	१५३६
उषउषो हि वंसो अग्रमेषि त्वं यमयौरभवो विभावा ।	
क्रताय सप्त दधिषे पदानि जनयन् मित्रं तन्वेइ स्वायै	१५३७
भुवश् चक्षुर्मह क्रतस्य गोपा भुवो वरुणो यदृताय वेषि ।	
भुवो अपां नपाज्जातवेदो भुवो दूतो यस्य हव्यं जुजोषः	१५३८
भुवो यज्ञस्य रजसश् च नेता यत्रा नियुद्धिः सचसे शिवाभिः ।	
दिवि मूर्धानं दधिषे स्वर्षा जिह्वामग्ने चकृषे हव्यवाहम्	१५३९

॥ १६९ ॥ (क्र० १०।११।१-९) [१५४०-१५५६] हविर्धान आङ्गिः । जगती, १५४६-४८ त्रिष्टुप् ।

वृषा वृष्णे दुदुहे दोहसा दिवः पर्यासि युहो अदितेरदाभ्यः ।	
विश्वं स वेद वरुणो यथा धिया स यज्ञियो यजतु यज्ञियाँ क्रतून्	१५४०
रपद् गन्धर्वीरण्या च योषणा नदस्य नादे परि पातु मे मनः ।	
इष्टस्य मध्ये अदितिर्नि धातु नो आता नो ज्येष्ठः प्रथमो वि वोचति	१५४१
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती यशस्वती उषा उवास मनवे स्वर्वती ।	
यदीमुशन्तमुशतामनु क्रतुम् अग्निं होतारं विदथाय जीजनन्	१५४२
अध त्वं द्रप्सं बिभ्वं विचक्षणं विराभरदिषितः ज्येनो अध्वरे ।	
यदी विशो वृणते दस्ममार्या अग्निं होतारमध धीरजायत	१५४३
सदासि रण्वो यवसेव पुष्यते होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।	
विप्रस्य वा यच्छशमान उक्थ्यं वाजं सस्रवाँ उपयासि भूरिभिः	१५४४
उदीरय पितरां जार आ भगम् इयक्षति हर्यतो हृत्त इष्यति ।	
विविक्त वाह्निः स्वपस्यते मखस् तविष्यते असुरो वेपते मती	१५४५

यस् ते अग्ने सुम॒र्ति म॒र्तो अक्ष॒त् सह॑सः सूनो अति स प्र शृण्वे ।
इषं दधा॑नो वह॑मानो अ॒श्वैर् आ स द्युमाँ अम॑वान् भूषति द्यून् १५४६

यद॑ग्न ए॒षा समि॑तिर्भवाति दे॒वी दे॒वेषु॑ यज॒ता यज॑त्र ।
रत्ना॑ च यद् वि॒भजा॑सि स्वधावो भा॒गं नो अत्र॑ वसु॑मन्तं वीतात् १५४७

श्रु॒धी नो अग्ने॒ स॒र्दने॒ स॒धस्थे॑ यु॒क्ष्वा रथ॑म॒मृत॑स्य द्रवि॒तुम् ।
आ नो॑ वह॒ रोद॑सी दे॒वपु॑त्रे मा॒र्किर्दे॒वानाम॑प॒ भूरि॑ह स्याः १५४८

॥ १७० ॥ (ऋ० १० । १२ । १-९) त्रिष्टुप् ।

द्यावा॑ ह॒ क्षामा॑ प्रथ॒मे ऋ॒तेन॑ अ॒भि॒श्रा॒वे भ॑वतः सत्य॒वाचा॑ ।
दे॒वो यन्म॑र्तीन् यज॒थाय॑ कृ॒ण्वन् सीद॑द्भोता॒ प्रत्य॑ङ् स्वम॑सुं यन् १५४९

दे॒वो दे॒वान् परि॑भू॒र्ऋ॒तेन॑ वह॑ नो ह॒व्यं प्रथ॑मश् चि॒कित्वा॑न् ।
धूम॑कैतुः स॒मिधा॑ भा॒र्ऋ॒जीको॑ म॒न्द्रो होता॑ नित्यो॒ वाचा॑ यजी॒यान् १५५०

स्वावृ॑ग् दे॒वस्या॑मृतं यदी गोर् अतो॑ जा॒तासो॑ धारयन्त उ॒र्वी ।
विश्वे॑ दे॒वा अनु॑ तत् ते यजु॑र्गुर् दुहे॒ यदे॒नी दि॒व्यं घृतं॑ वाः १५५१

अर्चो॑मि वां वर्धा॒यापो॑ घृतस्नु द्यावा॑भूमी शृणु॑तं रोद॑सी मे ।
अहा॒ यद् द्या॒वोऽसु॑नीतिम॒यन् म॒ध्वा नो अत्र॑ पि॒तरा॑ शिशीताम् १५५२

किं स्वि॒न्नो राजा॑ जगृहे कद॒स्य अति॑ व्रतं च॒क्रमा॑ को वि वेद ।
मित्र॑श् चि॒द्विष्मा॑ जुहुरा॒णो दे॒वाञ् लोको॑ न या॒तामपि॑ वाजो अस्ति १५५३

दुर्म॑न्त्वत्रा॒मृत॑स्य नाम॒ सल॑क्ष्मा॒ यद् विषु॑रूपा भवाति ।
यम॑स्य यो म॒नव॑ते सु॒मन्तु॑ अग्ने॒ तमृ॑ष्व पा॒ह्यप्र॑युच्छन् १५५४

यस्मि॑न् दे॒वा वि॒दथे॑ मा॒दय॑न्ते वि॒वस्व॑तः स॒र्दने॒ धार॑यन्ते ।
स॒र्वे ज्योति॑रद॒धुर्मा॑स्य॒कृत्त॑न् परि॑ द्योत॒निं च॑रतो अ॒र्जसा॑ १५५५

यस्मि॑न् दे॒वा म॒न्मनि॑ सं॒चर॑न्ति अ॒पीच्ये॑ न व॒यम॑स्य वि॒द्म ।
मित्रो॑ नो अत्रादि॒तिरना॑गान्त् स॒विता॑ दे॒वो वरु॑णाय वोचत् १५५६

श्रु॒धी नो अग्ने॒ स॒र्दने॒ स॒धस्थे॑० । (१५४८)

॥ १७१ ॥ (ऋ० १०।१६।१—१४)

[१५५७-१५७०] दमनो यामायनः । त्रिष्टुप्, १५६७-७० अनुष्टुप् ।

मैनमग्ने वि दहो माभि शोचो मास्य त्वचं चिक्षिपो मा शरीरम् ।	
यदा शृतं कृणवो जातवेदो ऽथेमेनं प्र हिणुतात् पितृभ्यः	१५५७
शृतं यदा करांसि जातवेदो ऽथेमेनं परि दत्तात् पितृभ्यः ।	
यदा गच्छात्यसुनीतिमेताम् अथा देवानां वशनीर्भवाति	१५५८
सूर्यं चक्षुर्गच्छतु वातमात्मा द्यां च गच्छ पृथिवीं च धर्मेणा ।	
अपो वा गच्छ यदि तत्र ते हितम् ओषधीषु प्रति तिष्ठा शरीरैः	१५५९
अजो भागस् तपसा तं तपस्व तं ते शोचिस् तपतु तं ते अर्चिः ।	
यास् ते शिवास् तन्वो जातवेदस् तार्भिर्वहैनं सुकृतांस्तु लोकम्	१५६०
अव सृज पुनरग्ने पितृभ्यो यस् त आहुतश् चरति स्वधाभिः ।	
आयुर्वसान उर्ष वेतु शेषः सं गच्छतां तन्वा जातवेदः	१५६१
यत् ते कृष्णः शकुन आतुतोदं पिपीलः सर्प उत वा श्वापदः ।	
अग्निष्टद् विश्वादगदं कृणोतु सोमश् च यो ब्राह्मणां आविवेश	१५६२
अग्नेर्वर्म परि गोभिर्व्ययस्व सं प्रोर्णेष्व पीवसा मेदसा च	
नेत् त्वा धृष्णुर्हरसा जर्हषाणो दधृग् विधक्ष्यन् पर्यङ्ख्याते	१५६३
इममग्ने चमसं मा वि जिह्वरः प्रियो देवानामुत सोम्यानाम् ।	
एष यश् चमसो देवपानस् तस्मिन् देवा अमृता मादयन्ते	१५६४
ऋव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं यमराज्ञो गच्छतु रिप्रवाहः ।	
इहैवायमितरो जातवेदा देवेभ्यो हव्यं वहतु प्रजानन्	१५६५
यो अग्निः ऋव्यात् प्रविवेश वो गृहम् इमं पश्यन्नितरं जातवेदसम् ।	
तं हरामि पितृयज्ञाय देवं स धर्माभिन्वात् परमे सधस्थे	१५६६
यो अग्निः ऋव्यवाहनः पितृन् यक्षहतावृधः ।	
प्रेतुं हव्यानि वोचति देवेभ्यश् च पितृभ्य आ	१५६७
उशन्तस् त्वा नि धीमहि उशन्तः समिधीमहि ।	
उशन्तुशत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे	१५६८

यं त्वमग्ने समदहस् तमु निर्वीपया पुनः ।
 क्रियाम्बवत्र रोहतु पाकदूर्वा व्यल्कशा १५६९
 शीतिके शीतिकावति हार्दिके हार्दिकावति ।
 मण्डूक्याइ सु सं गम इमं स्वाग्निं हर्षय १५७०

॥ १७२ ॥ (ऋ० १० । २० । १-१०)

[१५७१-१५८८] विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्धा वासुकः । गायत्री, १५७१ एकपदा विराट्
 (एष मन्त्रः शान्त्यर्थः), १५७२ अनुष्टुप्, १५७९ विराट्, १५८० त्रिष्टुप् ।

भद्रं नो अग्निं वातय मनः १५७१
 अग्निमीळे भुजां यविष्ठं शासा मित्रं दुर्धरीतुम् ।
 यस्य धर्मन् त्वस्वरेनीः सपर्यन्ति मातुरुधः १५७२
 यमासा कृपनीळं भासाकैतुं वर्धयन्ति । भ्राजते श्रेणिदन् १५७३
 अर्यो विशां गातुरेति प्र यदानं दिवो अन्तान् । कविरभ्रं दीधानः १५७४
 जुषद्व्या मानुषस्य ऊर्ध्वस् तस्थावृभ्वा यज्ञे । भिन्वन् त्सवं पुर एति १५७५
 स हि क्षेमो हविर्यज्ञः श्रुष्टीदस्य गातुरेति । अग्निं देवा वाशीमन्तम् १५७६
 यज्ञासाहं दुर्व इषे ऽग्निं पूर्वस्य शेवस्य । अद्रेः सुनुमायुमाहुः १५७७
 नरो ये के चास्मदा विश्वेत् ते वाम आ स्युः । अग्निं हविषा वर्धन्तः १५७८
 कृष्णः श्वेतोऽरुषो यामो अस्य ब्रध्न क्रज्ज उत शोणो यशस्वान् ।
 हिरण्यरूपं जनिता जजान १५७९
 एवा तै अग्ने विमदो मनीषाम् ऊर्जो नपादमृतेभिः सजोषाः ।
 गिर आ वक्षत् सुमतीरियान इषमूर्जे सुक्षितिं विश्वमाभाः १५८०

॥ १७३ ॥ (ऋ० १० । २१ । १-८) आस्तारपङ्क्तिः (८+८+१२+१२) ।

आग्निं न स्ववृत्तिभिर् होतां त्वा वृणीमहे ।
 यज्ञाय स्तीर्णबहिषे वि वो मदे शीरं पावकशोचिषं विवक्षसे १५८१
 त्वामु ते स्वाधुवः शुभन्त्यश्वराधसः ।
 वेति त्वामुपसेचनी वि वो मद क्रजीतिरग्र आहुतिर्विवक्षसे १५८२
 त्वे धर्माण आसते जुहूभिः सिञ्चतीरिव ।
 कृष्णा रूपाण्यर्जुना वि वो मदे विश्वा अधि श्रियो धिषे विवक्षसे १५८३

यमग्ने मन्यसे रयिं सहसावन्नमर्त्य ।	
तमा नो वाजसातये वि वो मदे यज्ञेषु चित्रमा भरा विवक्षसे	१५८४
अग्निर्जातो अथर्वणा विदद् विश्वानि काव्या ।	
भुवद् दूतो विवस्वतो वि वो मदे प्रियो यमस्य काम्यो विवक्षसे	१५८५
त्वां यज्ञेष्वीळते ऽग्ने प्रयत्यध्वरे ।	
त्वं वसन्ति काम्या वि वो मदे विश्वा दधासि दाशुषे विवक्षसे	१५८६
त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि वैदिरे ।	
घृतप्रतीकं मनुषो वि वो मदे शुक्रं चेतिष्ठमक्षभिर्विवक्षसे	१५८७
अग्ने शुक्रेण शोचिषा उरु प्रथयसे बृहत्	
अभिक्रन्दन् वृषायसे वि वो मदे गर्भं दधासि जामिषु विवक्षसे	१५८८

॥ १७४ ॥ (ऋ० १०।४५।१-१२) [१५८९-१६१०] वत्सप्रिर्भालन्दनः । त्रिष्टुप् ।

दिवस्परिं प्रथमं जज्ञे अग्निर् अस्मद् द्वितीयं परिं जातवेदाः ।	
तृतीयमप्सु नृमणा अजस्रम् इन्धान एनं जरते स्वाधीः	१५८९
विद्या ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्या ते धाम विभृता पुरुत्रा ।	
विद्या ते नाम परमं गुहा यद् विद्या तमुत्सं यत् आजगन्थ	१५९०
समुद्रे त्वां नृमणां अप्स्वन्तर नृचक्षा ईधे दिवो अग्न ऊर्ध्वन् ।	
तृतीयं त्वा रजसि तस्थिवांसम् अपामुपस्थे महिषा अवर्धन्	१५९१
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव द्यौः क्षामा रेरिहद् वीरुधः समञ्जन् ।	
सद्यो जज्ञानो वि हीमिद्धो अख्यद् आ रोदसी भानुना भात्यन्तः	१५९२
श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणः सोमगोपाः ।	
वसुः सूनुः सहसो अप्सु राजा वि भात्यग्रं उषसामिधानः	१५९३
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।	
वीळं चिदद्रिमभिनत् परायब् जना यदग्निमयजन्त पञ्च	१५९४
उशिक् पावको अरतिः सुमेधा मर्तेष्वग्निर्मृतो नि धायि ।	
इयति धूममरुषं भरिभ्रद् उच्छुक्रेण शोचिषा घामिनक्षन्	१५९५

दृशानो रुक्म उर्विया व्यद्यौद् दुर्मर्षमायुः श्रिये रुचानः ।	
अभिरमृतो अभवद् वयोभिर् यदेनं द्यौर्जनयत् सुरेताः	१५९६
यस् ते अद्य कृणवद् भद्रशोचे ऽपूपं देव धृतवन्तमग्ने ।	
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ अभि सुभ्रं देवभक्तं यविष्ठ	१५९७
आ तं भज सौश्रवसेष्वग्न उक्थउक्थ आ भज शस्यमाने ।	
प्रियः स्त्र्ये प्रियो अग्ना भवाति उज्जातेन भिनददुज्जनित्वैः	१५९८
त्वामग्ने यजमाना अनु द्यून् विश्वा वसु दधिरे वार्याणि ।	
त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वन्तुः	१५९९
अस्ताव्यग्निरां सुशेवो वैश्वानर ऋषिभिः सोमगोपाः ।	
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्	१६००

॥ १७५ ॥ (ऋ० १० । ४६ । १-१०)

प्र होता जातो महान् नभोविन् नृषद्वा सीददुयामुपस्थे ।	
दधिर्यो धायि स ते वयसि यन्ता वस्त्रनि विधत्ते तनूपाः	१६०१
इमं विधन्तो अपां सधस्थे पशुं न नष्टं पदैरनु गमन् ।	
गुहा चतन्तमुशिजो नमोभिर् इच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन्	१६०२
इमं त्रितो भूर्यविन्ददिच्छन् वैभूवसो मूर्धन्यङ्गयायाः ।	
स शेवृधो जात आ हर्म्येषु नाभिर्युवा भवति रोचनस्थ	१६०३
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चै यज्ञं नेतारमध्वराणाम् ।	
विशामकृण्वभरति पावकं हव्यवाहं दधतो मानुषेषु	१६०४
प्र भूर्जयन्तं महां विपोधां मूरा अमूरं पुरां दुर्माणम् ।	
नयन्तो गर्भे वनां धियं धुर् हिरिश्मश्रुं नार्वीणं धनर्चम्	१६०५
नि पस्त्यासु त्रितः स्तभूयन् परिवीतो योनौ सीददुन्तः ।	
अतः संगृभ्या विशां दमूना विधर्मणायन्त्रैरीयते नृन्	१६०६
अस्याजरासो दुमामरित्रा अर्चद्भूमासो अग्रयः पावकाः ।	
श्चितीचर्यः श्वात्रासो भूरण्यवो वनर्षदो वायवो न सोमाः	१६०७

प्र जिह्वा भरते वेपो अग्निः प्र वयुनानि चेतसा पृथिव्याः ।
 तमायवः शुचयन्तं पावकं मन्द्रं होतारं दधिरे यजिष्ठम् १६०८
 द्यावा यमग्निं पृथिवी जनिष्ठाम् आपस् त्वष्टा भृगवो यं सहोभिः ।
 ईळेन्यं प्रथमं मातरिश्वा देवास् ततक्षुर्मनवे यजत्रम् १६०९
 यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहं पुरुस्पृहो मानुषासो यजत्रम् ।
 स यामन्त्रे स्तुवते वयो धाः प्र देवयन् यशसः सं हि पूर्वीः १६१०

॥ १७६ ॥ (ऋ० १० । ५१ । १, ३, ५, ७, ९,) [१६११-१६२४] देवाः ।

महत् तदुल्लं स्थविरं तदासीद् येनाविष्टितः प्रविवेशिथापः ।
 विश्वा अपश्यद् बहुधा ते अग्ने जातवेदस् तन्वो देव एकः १६११
 ऐच्छाम त्वा बहुधा जातवेदः प्रविष्टमग्ने अप्सवोषधीषु ।
 तं त्वा यमो अचिकेच्चित्रभानो दशान्तरुष्यादतिरोचमानम् १६१२
 एहि मनुर्देवयुर्यज्ञकामो ऽरंकृत्या तमसि क्षेप्यग्ने ।
 सुगान् पथः कृणुहि देवयानान् वहं हव्यानि सुमनस्यमानः १६१३
 कुर्मस् त आयुरजरं यदग्ने यथा युक्तो जातवेदो न रिष्याः ।
 अथा वहसि सुमनस्यमानो भागं देवेभ्यो हविषः सुजात १६१४
 तव प्रयाजा अनुयाजाश् च केवल ऊर्जस्वन्तो हविषः सन्तु भागाः ।
 तवाग्ने यज्ञोऽयमस्तु सर्वस् तुभ्यं नमन्तां प्रदिशश् चतस्रः १६१५

॥ १७७ ॥ (ऋ० १० । ५३ । १-३, ६-११) जगती, १६१६-१८, १६२१ त्रिष्टुप् ।

यमैच्छाम मनसा सोऽयमागाद् यज्ञस्य विद्वान् परुषश् चिकित्वान् ।
 स नो यक्षद् देवताता यजीयान् नि हि षत्सदन्तरः पूर्वो अस्मत् १६१६
 अराधि होता निषदा यजीयान् अभि प्रयांसि सुधितानि हि ख्यत् ।
 यजामहै यज्ञियान् हन्त देवा ईळामहा ईळ्याँ आज्येन १६१७
 साध्वीर्मकदेववीतिं नो अद्य यज्ञस्य जिह्वामविदाम गुह्याम् ।
 स आयुरागात् सुरभिर्वसानो भद्रामकदेवहूतिं नो अद्य १६१८
 तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान् ।
 अनुल्बणं वयत् जोगुवामपो मनुर्भव जनया दैव्यं जनम् १६१९

अक्षानहो नद्यतनोत सोम्या इष्कृणुध्वं रशना ओत पिंशत ।	
अष्टावन्धुरं वहताभितो रथं येन देवासो अनयन्नाभि प्रियम्	१६२०
अश्मन्वती रीयते सं रभध्वम् उत् तिष्ठत् प्र तरता सखायः ।	
अत्रा जहाम ये असन्नशैवाः शिवान् वयमुत् तरेमाभि वाजान्	१६२१
त्वष्टा माया वेदपसामपस्तमो बिभ्रत् पात्रा देवपानानि शंतमा ।	
शिशीते नूनं परशुं स्वायसं येन वृश्वादेतशो ब्रह्मणस्पतिः	१६२२
सतो नूनं कवयः सं शिशीत वाशीभिर्याभिरमृताय तक्षथ ।	
विद्वांसः पदा गुह्यानि कर्तन येन देवासो अमृतत्वमानशुः	१६२३
गर्भे योषामदधुर्वत्समासनि अपीच्येन मनसोत जिह्वया ।	
स विश्वाहा सुमना योग्या अभि सिषासनिर्वनते कार इज्जितिम्	१६२४

॥१७८॥ (ऋ० १० । ६९ । १-१२) [१६२५-१६३६] सुमित्रो वाध्यश्चः । त्रिष्टुप्, १६२५-२६ जगती ।

भद्रा अग्नेर्वध्यश्चस्य संदशो वामी प्रणीतिः सुरणा उपेतयः ।	
यदीं सुमित्रा विशो अग्र इन्धते घृतेनाहुतो जरते दर्विद्युतत्	१६२५
घृतमग्नेर्वध्यश्चस्य वर्धनं घृतमन्नं घृतम्बस्य मेदनम् ।	
घृतेनाहुत उर्विया वि पप्रथे सूर्य इव रोचते सर्पिरासुतिः	१६२६
यत् ते मनुर्यदनीकं सुमित्रः समीधे अग्ने तदिदं नवीयः ।	
स रेवच्छोच स गिरो जुषस्व स वाजं दर्षि स इह श्रवो धाः	१६२७
यं त्वा पूर्वमीळितो वध्यश्चः समीधे अग्ने स इदं जुषस्व ।	
स नः स्तिपा उत भवा तनूपा दात्रं रक्षस्व यदिदं ते अस्मे	१६२८
भवा द्युम्नी वाध्यश्चोत गोपा मा त्वा तारीदुभिमातिर्जनानाम् ।	
शूर इव धृष्णुश्च्यवनः सुमित्रः प्र नु वोचं वाध्यश्चस्य नाम	१६२९
समज्या पर्वत्याइ वसूनि दासा वृत्राण्यार्या जिगेथ ।	
शूर इव धृष्णुश्च्यवनो जनानां त्वमग्ने घृतनायूरभि ष्याः	१६३०
दीर्घतन्तुर्वहदुक्षायमग्निः सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभ्वा ।	
द्युमान् द्युमत्सु नृभिर्मृज्यमानः सुमित्रेषु दीदयो देवयत्सु	१६३१

त्वे धेनुः सुदुर्घा जातवेदो ऽसुश्चतैव समुना सर्वधुक् ।	
त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्रे सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्भिः	१६३२
देवाश् चित् ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्यश्च प्र वोचन् ।	
यत् संपृच्छं मानुषीर्विश आयन् त्वं नृभिरजयस् त्वावृधेभिः	१६३३
पितेव पुत्रमविभरुपस्थे त्वामग्रे वध्यश्चः संपर्यन् ।	
जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठ उत पूर्वा अवनोर्ब्राधतश् चित्	१६३४
शश्वदुमिर्वध्यश्चस्य शत्रून् नृभिर्जिगाय सुतसौमवद्भिः ।	
समनं चिददहश् चित्रभानो ऽव ब्राधन्तमभिनद् वृधश् चित्	१६३५
अयमग्निर्वध्यश्चस्य वृत्रहा संनकात् प्रेद्धो नमसोपवाक्यः ।	
स नो अजामीरुत वा विजामीन् अभि तिष्ठ शर्धतो वाध्यश्च	१६३६

॥ १७९ ॥ (ऋ० १० । ७९ । १-७)

[१६३७—१६५०] अग्निः सौचीको, वैश्वानरो वा, (सप्तिर्वाजंभरो वा) । त्रिष्टुप् ।

अपश्यमस्य महतो महित्वम् अमर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु ।	
नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती बप्सती भूर्यत्तः	१६३७
गुहा शिरो निहितमृधगक्षी असिन्वन्नत्ति जिह्वया वनानि ।	
अत्राण्यस्मै पृढभिः सं भरन्ति उत्तानहस्ता नमसाधि विक्षु	१६३८
प्र मातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन् कुमारो न वीरुधः सर्पदुर्वीः ।	
ससं न पक्रमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः	१६३९
तद् वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति ।	
नाहं देवस्य मर्त्येश् चिकेत अग्निरङ्ग विचेताः स प्रचेताः	१६४०
यो अस्मा अन्नं तुष्वाद्दधाति आज्यैर्धृतैर्जुहोति पुष्यति ।	
तस्मै सहस्रमक्षभिर्वि चक्षे ऽग्रे विश्वतः प्रत्यङ्क्षसि त्वम्	१६४१
किं देवेषु त्यज एनश् चकर्थ अग्रे पृच्छामि नु त्वामविद्वान् ।	
अक्रीलन् क्रीलन् हरिरत्तवेऽदन् वि पर्वशश् चकर्त गार्मिवासिः	१६४२
विषूचो अश्वान् युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान् ।	
चक्षदे मित्रो वसुभिः सुजातः समानृधे पर्वभिर्वावृधानः	१६४३

॥ १८० ॥ (ऋ० १०। ८०। १-७)

अग्निः सप्तिं वाजंभरं ददाति	अग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिःष्ठाम् ।	
अग्नी रोदसी वि चरत् समञ्जन्	अग्निर्नारीं वीरकुक्षिं पुरंधिम्	१६४४
अग्नेरमसः समिदस्तु भद्रा	अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।	
अग्निरेकं चोदयत् समत्सु	अग्निर्वृत्राणि दयते पुरुणि	१६४५
अग्निर्हृ त्यं जरत् कर्णमाव	अग्निरज्यो निरदहजुरुथम् ।	
अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदन्तर्	अग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत् सम्	१६४६
अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा	अग्निर्कषिं यः सहस्रां सुनोति ।	
अग्निर्दिवि हव्यमा ततान	अग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा	१६४७
अग्निमुक्थैर्कषयो वि ह्वयन्ते	अग्निं नरो यामनि बाधितासः ।	
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तो	अग्निः सहस्रा परि याति गोनाम्	१६४८
अग्निं विश ईळते मानुषीर्या	अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः ।	
अग्निर्गान्धर्वी पृथ्यामृतस्य	अग्नेर्गव्यूतिर्धृत आ निषत्ता	१६४९
अग्नये ब्रह्म क्रमवस् ततक्षुर्	अग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम् ।	
अग्ने प्राव जरितारं यविष्ठ	अग्ने महि द्रविणमा यजस्व	१६५०

॥ १८१ ॥ (ऋ० १०। ९१। १-१५) [१६५१-१६६५] अरुणो वैतहव्यः । जगती, १६६५ त्रिष्टुप् ।

सं जागृवद्भिर्जरमाण इध्यते	दमे दमूना इष्यन्निळस्पदे ।	
विश्वस्य होता हविषो वरेण्यो	विभुर्विभावा सुषखा सखीयते	१६५१
स दर्शतश्चीरतिथिर्गृहेगृहे	वनैवने शिश्रिये तक्ववीरिव ।	
जनंजनं जन्यो नाति मन्यते	विश आ क्षेति विश्योऽं विशंविशम्	१६५२
सुदक्षो दक्षैः कर्तुनासि सुक्रतुर्	अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।	
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इद्	द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः	१६५३
प्रजानन्नग्ने तव योनिमृत्वियम्	इळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।	
आ ते चिकित्र उषसामिवेतयो	ऽरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः	१६५४
तव श्रियो वृष्यस्येव विद्युतश्	चित्राश् चिकित्र उषसां न केतवः ।	
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च	परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये	१६५५

त्वे धेनुः सुदुषा जातवेदो ऽसुश्चतैव समना सर्वधुक् । त्वं नृभिर्दक्षिणावद्भिरग्रे सुमित्रेभिरिध्यसे देवयद्धिः	१६३२
देवाश् चित् ते अमृता जातवेदो महिमानं वाध्यश्च प्र वोचन् । यत् संपृच्छं मानुषीर्विश आयन् त्वं नृभिरजयस् त्वावृधेभिः	१६३३
पितेव पुत्रमबिभरुपस्थे त्वामग्रे वध्यश्चः संपर्यन् । जुषाणो अस्य समिधं यविष्ठ उत पूर्वा अवनोर्ब्राधतश् चित्	१६३४
शश्वदग्निर्वध्यश्चस्य शत्रून् नृभिर्जिगाय सुतसौमवद्धिः । समनं चिददहश् चित्रमानो ऽव ब्राधन्तमभिनद् वृधश् चित्	१६३५
अयमग्निर्वध्यश्चस्य वृत्रहा संनकात् प्रेद्धो नमसोपवाक्यः । स नो अजामीरुत वा विजामीन् अभि तिष्ठ शर्धतो वाध्यश्च	१६३६

॥ १७९ ॥ (ऋ० १० । ७९ । १-७)

[१६३७-१६५०] अग्निः सौचीको, वैश्वानरो वा, (सप्तिर्वाजंभरो वा) । त्रिष्टुप् ।

अपश्यमस्य महतो महित्वम् अमर्त्यस्य मर्त्यासु विक्षु । नाना हनू विभृते सं भरेते असिन्वती वप्सती भूर्यत्तः	१६३७
गुहा शिरो निहितमृधगक्षी असिन्वन्नत्ति जिह्वया वनानि । अत्राण्यस्मै पृढभिः सं भरन्ति उत्तानहस्ता नमसाधि विक्षु	१६३८
प्र मातुः प्रतरं गुह्यमिच्छन् कुमारो न वीरुधः सर्पदुर्वीः । ससं न पक्रमविदच्छुचन्तं रिरिह्वांसं रिप उपस्थे अन्तः	१६३९
तद् वामृतं रोदसी प्र ब्रवीमि जायमानो मातरा गर्भो अत्ति । नाहं देवस्य मर्त्यश् चिकेत अग्निरङ्ग विचेताः स प्रचेताः	१६४०
यो अस्मा अन्नं तुष्वाऽदधाति आज्यैर्धृतैर्जुहोति पुष्यति । तस्मै सहस्रमक्षमिर्वि चक्षे ऽग्ने विश्वतः प्रत्यङ्मुखं त्वम्	१६४१
किं देवेषु त्यज एनश् चकर्त्त अग्ने पृच्छामि नु त्वामविद्वान् । अक्रीलन् क्रीलन् हरिरत्तवेऽदन् वि पर्वशश् चकर्त्त गार्मिवासिः	१६४२
विषूचो अश्वान् युयुजे वनेजा ऋजीतिभी रशनाभिर्गृभीतान् । चक्षदे मित्रो वसुभिः सुजातः समानृधे पर्वभिर्वावृधानः	१६४३

॥ १८० ॥ (क्र० १० । ८० । १-७)

अग्निः सप्तिं वाजंभरं ददाति	अग्निर्वीरं श्रुत्यं कर्मनिष्ठाम् ।	
अग्नी रोदसी वि चरत् समञ्जम्	अग्निर्नारी वीरकुक्षिं पुरंधिम्	१६४४
अग्नेरमसः समिदस्तु भद्रा	अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।	
अग्निरेकं चोदयत् समत्सु	अग्निर्वृत्राणि दयते पुरुणि	१६४५
अग्निर्ह त्वं जरत्तः कर्णमाव	अग्निर्ह्यो निरदहज्जृथम् ।	
अग्निरत्रिं घर्म उरुष्यदन्तर्	अग्निर्नृमेधं प्रजयासृजत् सम्	१६४६
अग्निर्दाद् द्रविणं वीरपेशा	अग्निर्ऋषिं यः सहसा सनोति ।	
अग्निर्दिवि हव्यमा ततान	अग्नेर्धामानि विभृता पुरुत्रा	१६४७
अग्निमुक्थैर्ऋषयो वि ह्वयन्ते	अग्निं नरो यामनि बाधितासः ।	
अग्निं वयो अन्तरिक्षे पतन्तो	अग्निः सहस्रा परि याति गोनाम्	१६४८
अग्निं विश ईळते मानुषीर्या	अग्निं मनुषो नहुषो वि जाताः ।	
अग्निर्गान्धर्वी पृथ्यामृतस्य	अग्नेर्गव्यूतिर्धृत आ निषत्ता	१६४९
अग्नये ब्रह्म क्रभवंस् ततक्षुर्	अग्निं महामवोचामा सुवृक्तिम् ।	
अग्ने प्रावं जरितारं यविष्ठ	अग्ने महि द्रविणमा यजस्व	१६५०

॥ १८१ ॥ (क्र० १० । २१ । १-१५) [१६५१-१६६५] अरुणो वैतहव्यः । जगती, १६६५ त्रिष्टुप् ।

सं जांगूवद्भिर्जरेमाण इध्यते	दमे दमूना इष्यन्निळस्पदे ।	
विश्वस्य होता हविषो वरेण्यो	विभुर्विभावा सुषवा सखीयते	१६५१
स दर्शतश्चरतिथिर्गृहेगृहे	वनेवने शिश्रिये तक्कवीरिव ।	
जनंजनं जन्यो नाति मन्यते	विश आ क्षेति विश्योऽं विशंविशम्	१६५२
सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि सुक्रतुर्	अग्ने कविः काव्येनासि विश्ववित् ।	
वसुर्वसूनां क्षयसि त्वमेक इह	द्यावा च यानि पृथिवी च पुष्यतः	१६५३
प्रजानन्ने तव योनिमृत्वियम्	इळायास्पदे घृतवन्तमासदः ।	
आ ते चिकित्र उषसांमिवेतयो	उरेपसः सूर्यस्येव रश्मयः	१६५४
तव श्रियो वर्णस्येव विद्युतश्च	चित्राश्च चिकित्र उषसां न केतवः ।	
यदोषधीरभिसृष्टो वनानि च	परि स्वयं चिनुषे अन्नमास्ये	१६५५

तमोर्षधीर्दधिरे गर्भमृत्वियं तमापो अग्निं जनयन्त मातरः ।	
तमित् समानं वनिर्नश् च वीरुधो ऽन्तर्वेतीश् च सुर्वते च विश्वहा	१६५६
वातोपधूत इषितो वशां अनु तृषु यदन्ना वेर्विषद् वितिष्ठसे ।	
आ ते यतन्ते रथ्योऽथ यथा पृथक् शर्धीस्यग्ने अजराणि धक्षतः	१६५७
मेधाकारं विदथस्य प्रसाधनम् अग्निं होतारं परिभूतमं मतिम् ।	
तमिदमे हविष्या समानमित् तमिन्महे वृणते नान्यं त्वत्	१६५८
त्वामिदत्र वृणते त्वायवो होतारमग्ने विदथेषु वेधसः ।	
यद् देवयन्तो दधति प्रयांसि ते हविष्मन्तो मनवो वृक्तवर्हिषः	१६५९
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्वियं तव नेष्ट्रं त्वमग्निद्विंतायतः ।	
तव प्रशास्त्रं त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि गृहपतिश् च नो दमे	१६६०
यस् तुभ्यमग्ने अमृताय मर्त्यः समिधा दाशदुत वा हविष्कृति ।	
तस्य होता भवसि यासि दूत्यम् उप ब्रूषे यजस्यध्वरीयसि	१६६१
इमा अस्मै मृतयो वाचो अस्मदां ऋचो गिरः सुष्टुतयः समग्मत ।	
वसूयवो वसवे जातवेदसे वृद्धासु चिद् वर्धनो यासु चाकनत्	१६६२
इमां प्रत्ताय सुष्टुतिं नवीयसीं वोचेयमस्मा उशते शृणोतु नः ।	
भूया अन्तरा हृद्यस्य निस्पृशे जायेव पत्य उशती सुवासाः	१६६३
यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्षणो वशा मेषा अवसृष्टास आहुताः ।	
कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे हृदा मतिं जनये चारुमग्नये	१६६४
अहाव्यग्ने हविरास्ये ते सुचीव धृतं चम्बीव सोमः ।	
वाजसनि रयिमस्मे सुवीरं प्रशस्तं धेहि यशसं बृहन्तम्	१६६५

॥ १८२ ॥ (ऋ० १० । ११५ । १-९)

[१६६६-१६७४] उपस्तुतो वार्षिहव्यः । जगती, १६७३ त्रिष्टुप्, १६७४ शकरी ।

चित्र इच्छिशोस् तरुणस्य वक्षथो न यो मातरावप्येति धातवे ।	
अनूधा यदि जीजनदधा च तु ववक्ष सद्यो महि दूत्यं चरन्	१६६६
अग्निर्ह नाम धायि दन्नपस्तमः सं यो वना युवते भस्मना दृता ।	
अभिप्रसुरा जुह्वा स्वध्वर इनो न प्रोथमानो यवसे वृषा	१६६७

तं वो विं न द्रुषदै देवमन्धस इन्दुं प्रोथन्तं प्रवपन्तमर्णवम् ।	
आसा वह्निं न शोचिषा विरप्तिनं महिब्रतं न सरजन्तमध्वनः	१६६८
वि यस्य ते जयसानस्याजर धक्षोर्न वाताः परि सन्त्यच्युताः ।	
आ रण्वासो युयुधयो न सत्वनं त्रितं नशन्त प्र शिषन्त इष्टये	१६६९
स इदग्निः कण्वतमः कण्वसखा अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः ।	
अग्निः पातु गृणतो अग्निः सूरीन् अग्निर्देदातु तेषामवो नः	१६७०
वाजिन्तमाय सहस्रे सुपित्र्य तृषु च्यवानो अनु जातवेदसे ।	
अनुद्रे चिद् यो धृषता वरं सते महिन्तमाय धन्वनेदविष्यते	१६७१
एवाग्निर्मतैः सह सूरिभिर् वसुः एवे सहसः सूनरो नृभिः ।	
मित्रासो न ये सुधिता क्रतायवो द्यावो न द्युमैरभि सन्ति मानुषान्	१६७२
ऊर्जो नपात् सहसावन्निति त्वा उपस्तुतस्य वन्दते वृषा वाक् ।	
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः	१६७३
इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य पुत्रा उपस्तुतासु ऋषयोऽवोचन् ।	
तांश्च पाहि गृणतश् च सूरीन् वषट्पृष्ठित्यूर्ध्वासो अनक्षन्	
नमो नम इत्यूर्ध्वासो अनक्षन्	१६७४

॥ १८३ ॥ (क्र० १० । १२२ । १-८) [१६७५-१६८२] चित्रमहा वासिष्ठः । जगती; १६७५-१६७९ त्रिष्टुप् ।

वसुं न चित्रमहसं गृणीषे वामं शेवमर्तिथिमद्विषेण्यम् ।	
स रासते शुरुधो विश्वधायसो ऽग्निर्होता गृहपतिः सुवीर्यम्	१६७५
जुषाणो अग्ने प्रति हर्य मे वचो विश्वानि विद्वान् वयुनानि सुक्रतो ।	
घृतनिर्णिग् ब्रह्मणे गातुमेरय तव देवा अजनयन्ननु व्रतम्	१६७६
सप्त धामानि परियन्नमर्त्यो दाशद् दाशुषे सुकृते मामहस्व ।	
सुवीरेण रयिणाग्ने स्वाशुवा यस् त आनद् समिधा तं जुषस्व	१६७७
यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं हविष्मन्त ईळते सप्त वाजिनम् ।	
शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं पूणन्तं देवं पूणते सुवीर्यम्	१६७८
त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः स हूयमानो अमृताय मत्स्व ।	
त्वां मर्जयन् मरुतो दाशुषो गृहे त्वां स्तोमेभिर्भृगवो वि रुरुचुः	१६७९

इषं दुहन् त्सुदुघां विश्वधायसं यज्ञप्रिये यजमानाय सुक्रतो । अग्ने घृतस्नुस् त्रिर्ऋतानि दीघद वृत्तिर्यज्ञं परियन् त्सुक्रतूयसे	१६८०
त्वामिदस्या उषसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना अयजन्त मानुषाः । त्वां देवा महयाय्याय वावृधुर् आज्यमग्ने निमृजन्तो अध्वरे	१६८१
नि त्वा वसिष्ठा अह्वन्त वाजिनं गृणन्तो अग्ने विदथेषु वेधसः । रायस्पोषं यजमानेषु धारय यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	१६८२

॥ १८४ ॥ (ऋ० १० । १२४ । १) [१६८३] अग्निः । त्रिष्टुप् ।

इमं नो अग्र उप यज्ञमेहि पञ्चयामं त्रिवृतं सप्ततन्तुम् । असौ हव्यवालुत नः पुरोगा ज्योगेव दीर्घं तम् आशयिष्ठाः	१६८३
---	------

॥ १८५ ॥ (ऋ० १० । १४० । १-६)

[१६८४-१६८९] अग्निः पावकः । सतोबृहती, १६८४-८६ विष्टारपङ्क्तिः, १६८९ उपरिष्टाज्ज्योतिः ।

अग्ने तव श्रवो वयो मेहिं भ्राजन्ते अर्चयो विभावसो । बृहद्भानो शर्वसा वाजमुक्थ्यं दधासि दाशुषे कवे	१६८४
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा अनूनवर्चा उदियर्षिं भानुना । पुत्रो मातरा विचरन्नुपावसि पूणक्षि रोदसी उभे	१६८५
ऊर्जो नपाज्जातवेदः सुशस्तिभिर् मन्दस्व धीतिभिर्हितः । त्वे इषः सं दधुर्भूरिवर्षसश् चित्रोतयो वामजाताः	१६८६
इरुज्यन्नग्ने प्रथयस्व जन्तुभिर् अस्मे रायो अमर्त्ये । स दर्शतस्य वपुषो वि राजसि पूणक्षि सानसिं क्रतुम्	१६८७
इष्कृत्तारमध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः । रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम्	१६८८
ऋतावानं महिषं विश्वदर्शतम् अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जनाः । श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा दैव्यं मानुषा युगा	१६८९

॥ १८६ ॥ (ऋ० १० । १४२ । १-८)

[१६९०-१६९७] १६९०-१६९१ जरिता, १६९२-९३ द्रोणः, १६९४-९५ सारस्विकः, १६९६-९७ स्तम्भमित्रः
(एते शाङ्गः) । त्रिष्टुप्, १६९०-९१ जगती, १६९६-९७ अनुष्टुप् ।

अयमग्ने जरिता त्वे अभुदपि सहसः सूनो नह्यन्यदस्त्याप्यम् ।
 भद्रं हि शर्म त्रिवरूथमस्ति त आरे हिंसानामप दिद्युमा कृधि १६९०
 प्रवत् ते अग्ने जनिमा पितूयतः साचीव विश्वा भुवना न्यूञ्जसे ।
 प्र सप्तयः प्र सनिषन्त नो धियः पुरश् चरन्ति पशुपा इव त्मना १६९१
 उत वा उ परि वृणक्षि बप्सद् बहोरश्न उलपस्य स्वधावः ।
 उत खिल्या उर्वराणां भवन्ति मा ते हेतिं तविषीं चुक्रुधाम १६९२
 यदुद्रतो निवतो यासि बप्सत् पृथगेषि प्रगृधिनीव सेना ।
 यदा ते वातो अनुवार्ति शोचिर् वसेव श्मश्रु वपसि प्र भूम १६९३
 प्रत्यस्य श्रेणयो ददश्च एकं नियानं बहवो रथासः ।
 बाहू यदग्ने अनुमर्षजानो न्यूङ्कुत्तानामन्वेषि भूमिम् १६९४
 उत ते शुष्मा जिहतामुत् ते अचिर् उत ते अग्ने शशमानस्य बाजाः ।
 उच्छ्वस्व नि नम वर्धमान आ त्वाद्य विश्वे वसवः सदन्तु १६९५
 अपामिदं न्ययनं समुद्रस्य निवेशनम् ।
 अन्यं कृणुष्वेतः पन्थां तेन याहि वशां अनु १६९६
 आर्यने ते परार्यणे दूर्वा रोहन्तु पुष्पिणीः ।
 हृदाश् च पुण्डरीकाणि समुद्रस्य गृहा इमे १६९७

॥ १८७ ॥ (ऋ० १० । १५० । १-५)

[१६९८-१७०२] मृलीको वासिष्ठः । बृहती, १७०१-२ उपरिष्टाज्योतिः, १७०१ जगती वा ।

समिद्धश् चित् समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 आदित्यै रुद्रैर्वसुभिर्न आ गहि मृलीकार्यं न आ गहि १६९८
 इमं युज्जमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ।
 मतीसस् त्वा समिधान हवामहे मृलीकार्यं हवामहे १६९९

त्वामुं जातवेदसं विश्ववारं गृणे धिया ।
 अग्ने देवाँ आ वह नः प्रियव्रतान् मृळीकार्यं प्रियव्रतान् १७००
 अग्निर्देवो देवानामभवत् पुरोहितो ऽग्निं मनुष्याहं ऋषयः समीधिरे ।
 अग्निं महो धनसातावहं हुवे मृळीकं धनसातये १७०१
 अग्निरग्निं भरद्वाजं गर्विष्ठिरं प्रावन्नः कण्वं त्रसदस्युमाहवे ।
 अग्निं वसिष्ठो हवते पुरोहितो मृळीकार्यं पुरोहितः १७०२

॥ १८८ ॥ (ऋ० १० । १५६ । १-५) [१७०३-१७०७] केतुराग्नेयः । गायत्री ।

अग्निं हिन्वन्तु नो धियः ससिमाशुभिवाजिषु । तेन जेषम धनं धनम् १७०३
 यया गा आकरामहे सेनयाग्ने तवोत्या । तां नो हिन्व मघत्तये १७०४
 आग्नें स्थूरं रयिं भर पृथुं गोमन्तमश्विनम् । अङ्घ्रिं खं वर्तया पणिम् १७०५
 अग्ने नक्षत्रमजरम् आ सूर्यं रोहयो दिवि । दधज् ज्योतिर्जनैभ्यः १७०६
 अग्ने केतुर्विशामसि प्रेष्टः श्रेष्ठ उपस्थसत् । बोधां स्तोत्रे वयो दधत् १७०७

॥ १८९ ॥ (ऋ० १० । १७६ । २-४) [१७०८-१७१०] सूत्रारभवः । गायत्री, १७०९-१० अनुष्टुप् ।

प्र देवं देव्या धिया भरता जातवेदसम् । हव्या नो वक्षदानुषक् १७०८
 अयमु ष्य प्र देवयुर् होता यज्ञाय नीयते ।
 रथो न योरभीवृतो घृणीवाञ् चेतति त्मना १७०९
 अयमग्निरुरुष्यति अमृतादिव जन्मनः ।
 सहसश् चित् सहीयान् देवो जीवातवे कृतः १७१०

॥ १९० ॥ (ऋ० १० । १८७ । १-५) [१७११-१७१५] वत्स आग्नेयः । गायत्री ।

प्राग्नये वाचमीरय वृषभाय क्षितीनाम् । स नः पर्षदति द्विषः १७११
 यः परस्याः परावतस् तिरो धन्वातिरोचते । स नः पर्षदति द्विषः १७१२
 यो रक्षांसि निजूर्वेति वृषां शुक्रेण शोचिषा । स नः पर्षदति द्विषः १७१३
 यो विश्वाभि विपश्यति भुवना सं च पश्यति । स नः पर्षदति द्विषः १७१४
 यो अस्य पारे रजसः शुक्रो अग्निरजायत । स नः पर्षदति द्विषः १७१५

॥ १९१ ॥ (ऋ० १ । १९१ । १) [१७१६] संवनन आङ्गिरसः । अनुष्टुप् ।

संसमिद् युवसे वृषन् अग्ने विश्वान्यर्थ आ ।
 इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्वा भर १७१६

वैश्वानरोऽग्निः ।

॥ १९२ ॥ (ऋ० १ । ५९ । १-७) [१७१७-१७२३] नोधा गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वृथा इदं अग्रयस् ते अन्ये त्वे विश्वे अमृता मादयन्ते ।	
वैश्वानर नाभिरसि क्षितीनां स्थूणेव जना उपमिद् ययन्थ	१७१७
मूर्धा दिवो नाभिरग्निः पृथिव्या अथाभवदरती रोदस्योः ।	
तं त्वा देवासोऽजनयन्त देवं वैश्वानर ज्योतिरिदार्याय	१७१८
आ सूर्ये न रश्मयो ध्रुवासौ वैश्वानरे दधिरेऽग्ना वसूनि ।	
या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु या मानुषेष्वसि तस्य राजा	१७१९
बृहती इव सूनवे रोदसी गिरो होता मनुष्योऽङ्ग न दक्षः ।	
स्वर्वते सत्यशुष्माय पूर्वार् वैश्वानराय नृत्तमाय यद्वाः	१७२०
दिवश् चित् ते बृहतो जातवेदो वैश्वानर ग्र रिंरिचे महित्वम् ।	
राजा कृष्टीनामसि मानुषीणां युधा देवेभ्यो वरिवश् चकर्थ	१७२१
ग्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूरवो वृत्रहणं सचन्ते ।	
वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वा अधूनोत् काष्ठा अव शम्बरं भेत्	१७२२
वैश्वानरो महिम्ना विश्वकृष्टिर् भरद्वाजेषु यजतो विभावा ।	
शातवनेये शतिनीभिरग्निः पुरुणीथे जरते सूनृतावान्	१७२३

॥ १९३ ॥ (ऋ० १ । ९८ । १-३) [१७२४-१७२६] कुत्स आङ्गिरसः ।

वैश्वानरस्य सुमतौ स्याम राजा हि कं भुवनानामभिप्रीः ।	
इतो जातो विश्वमिदं वि चष्टे वैश्वानरो यतते सूर्येण	१७२४
पृष्ठो दिवि पृष्ठो अग्निः पृथिव्यां पृष्ठो विश्वा ओषधीरा विवेश ।	
वैश्वानरः सहसा पृष्ठो अग्निः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्	१७२५
वैश्वानर तव तत् सत्यमस्तु अस्मान् रायो मघवानः सचन्ताम् ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१७२६

॥ १२४ ॥ (ऋ० ३।२।१-१५) [१७२७-१७५७] विश्वामित्रो गाथिनः । जगती ।

वैश्वानराय धिषणामृतावृधे धृतं न पूतमग्र्ये जनामसि ।	
द्विता होतारं मनुष्यं च वाघतो धिया रथं न कुलिशः समृण्वति	१७२७
स रोचयज् जनुषा रोदसी उभे स मात्रोरभवत् पुत्र ईड्यः ।	
हव्यवाळभिरजरश् चनोहितो दूळभो विशामतिथिर्विभावसुः	१७२८
कृत्वा दक्षस्य तरुणो विधर्मणि देवासो अग्निं जनयन्त चित्तिभिः ।	
रुचानं भानुना ज्योतिषा महाम् अत्यं न वाजं सनिष्यन्नुप ब्रुवे	१७२९
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो वरेण्यं वृणीमहे अह्यं वाजमृग्मियम् ।	
रातिं भृगूणामुशिजं कविकृतम् अग्निं राजन्तं दिव्येन शोचिषा	१७३०
अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना वाजश्रवसमिह वृक्तवर्हिषः ।	
यतस्तुचः सुरुचं विश्वदैव्यं रुद्रं यज्ञानां साधदिष्टिमपसाम्	१७३१
पावकशोचे तव हि क्षयं परि होतर्यज्ञेषु वृक्तवर्हिषो नरः ।	
अग्ने दुर्व इच्छमानासु आप्यम् उपासते द्रविणं धेहि तेभ्यः	१७३२
आ रोदसी अपृणदा स्वर्महज् जातं यदेनमपसो अधारयन् ।	
सो अध्वराय परि णीयते कविर् अत्यो न वाजसातये चनोहितः	१७३३
नमस्यते हव्यदातिं स्वध्वरं दुवस्यत दम्यं जातवेदसम् ।	
रथीर्ऋतस्य बृहतो विचर्षणिर् अग्निदेवानामभवत् पुरोहितः	१७३४
तिस्रो यद्वस्य समिधः परिज्मनो ऽग्नेरपुनन्नुशिजो अमृत्यवः ।	
तासामेकामदधुर्मत्ये भुजसु लोकमु द्वे उप जाभिमीयतुः	१७३५
विशां कविं विश्वपतिं मानुषीरिषः सं सीमकृण्वन् त्वस्वधितिं न तेजसे ।	
स उद्रतो निवतो याति वेर्विषत् स गर्भमेषु भुवनेषु दीधरत्	१७३६
स जिन्वते जठरेषु प्रजज्ञिवान् वृषां चित्रेषु नानदन्न सिंहः ।	
वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो वसु रत्ना दयमानो वि द्राशुषे	१७३७
वैश्वानरः प्रत्नथा नाकमारुहद् दिवस्पृष्टं भन्दमानः सुमन्मभिः ।	
स पूर्ववज् जनयज् जन्तवे धनं समानमज्मं पर्येति जागृविः	१७३८

ऋतावानं यज्ञियं विप्रमुक्थ्यम् आ यं दुधे मातरिश्वा दिवि क्षयम् ।
 तं चित्रयामं हरिकेशमीमहे सुदीतिमग्निं सुविताय नव्यसे १७३९
 शुचिं न यामन्निषिरं स्वर्दशं केतुं दिवो रौचनस्थामुषर्बुधम् ।
 अग्निं मूर्धानं दिवो अग्रतिष्कुतं तमीमहे नमसा वाजिनं बृहत् १७४०
 मन्द्रं होतारं शुचिमद्रयाविनं दमूनसमुक्थ्यं विश्वचर्षणिम् ।
 रथं न चित्रं वपुषाय दर्शतं मनुर्हितं सदुभिद् राय ईमहे १७४१

॥ १२५ ॥ (ऋ० ३ । ३ । १-११)

वैश्वानरायं पृथुपाजसे विपो रत्ना विधन्त धरुणेषु गातवे ।
 अग्निर्हि देवाँ अमृतो दुव्रस्यति अथा धर्माणि सनता न दूदुषत् १७४२
 अन्तर्दूतो रोदसी दस्म ईयते होता निषत्तो मनुषः पुरोहितः ।
 क्षयं बृहन्तं परि भूषति द्युभिर् देवेभिरग्निरिषितो धियावसुः १७४३
 केतुं यज्ञानां विदथस्य सार्धनं विप्रासो अग्निं महयन्त चित्तिभिः ।
 अपांसि यस्मिन्नाग्निं सद्गुर्गिरस् तस्मिन् त्सुम्नानि यजमान आ चके १७४४
 पिता यज्ञानामसुरो विपश्चितां विमानमग्निर्वयुनं च वाधताम् ।
 आ विवेश रोदसी भूरिवर्षसा पुरुप्रियो भन्दते धामभिः कविः १७४५
 चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं हरिव्रतं वैश्वानरमप्सुषदं स्वर्विदम् ।
 विगाहं तूर्णिं तर्विषीभिरावृतं भूर्णिं देवास इह सुश्रियं दधुः १७४६
 अग्निर्देवेभिर्मनुषश् च जन्तुभिस् तन्वानो यज्ञं पुरुपेशसं धिया ।
 रथीरन्तरीयते साधदिष्टिभिर् जीरो दमूना अभिशस्तिचातनः १७४७
 अग्ने जरस्व स्वपत्य आयुनि ऊर्जा पिन्वस्व समिषो दिदीहि नः ।
 वयांसि जिन्व बृहदश् च जागृव उशिग् देवानामसि सुक्रतुर्विषाम् १७४८
 विश्पतिं यद्धमतिर्धि नरः सदा यन्तारं धीनामुशिजं च वाधताम् ।
 अध्वराणां चेतनं जातवेदसं प्र शंसन्ति नमसा जूतिभिर्वृधे १७४९
 विभावा देवः सुरणः परि क्षितीर् अग्निर्वैभूव शर्वसा सुमद्रथः ।
 तस्य व्रतानि भूरिपोषिणो वयम् उप भूषेम दम आ सुवृक्तिभिः १७५०
 वैश्वानर तव धामान्या चके येभिः स्वर्विदभवो विचक्षण ।
 जात आपृणो भुवनानि रोदसी अग्ने ता विश्वा परिभूरसि त्मना १७५१

वैश्वानरस्य दंसनाभ्यो बृहद् अरिणादेकः स्वपस्यया कविः ।
उभा पितरा महयन्नजायत अग्निर्द्यावापृथिवी भूरिरेतसा १७५२

॥ १२६ ॥ (ऋ० ३ । २६ । १-३; ७-८) जगती, [१७५६-१७५७] त्रिष्टुप् ।

वैश्वानरं मनसाग्निं निचाय्या हविष्मन्तो अनुषत्यं स्वर्विदम् ।
सुदानुं देवं रथिरं वसूयवो गीर्भी रण्वं कुशिकासो हवामहे १७५३

तं शुभ्रमग्निमवसे हवामहे वैश्वानरं मातरिश्वानमुक्थ्यम् ।
बृहस्पतिं मनुषो देवतातये विप्रं श्रोतारमतिथिं रघुष्यदम् १७५४

अश्वो न क्रन्दन् जनिभिः समिध्यते वैश्वानरः कुशिकेर्भियुगेयुगे ।
स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्व्यं दधातु रत्नममृतैषु जागृविः १७५५

अग्निरस्मि जन्मना जातवेदा घृतं मे चक्षुरमृतं म आसन् ।
अर्कस् त्रिधातु रजसो विमानो ऽजस्रो घर्मो हविरस्मि नाम १७५६

त्रिभिः पवित्रैरपुण्ड्रैर्कं हृदा मतिं ज्योतिरनु प्रजानन् ।
वर्षिष्ठं रत्नमकृत स्वधाभिर् आदिद् द्यावापृथिवी पर्यपश्यत् १७५७

॥ १२७ ॥ (ऋ० ४ । ५ । १-१५) [१७५८-१७७२] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

वैश्वानराय मीहुषे सजोषाः कथा दाशेमाग्रये बृहद् भाः ।
अनूनेन बृहता वक्षथेन उप स्तभायदुपमिन्न रोधः १७५८

मा निन्दतु य इमां महीं रातिं देवो दुदौ मर्त्यीय स्वधावान् ।
पाकाय गृत्सो अमृतो विचेता वैश्वानरो नृतमो युहो अग्निः १७५९

सामं द्विर्वा महिं तिग्मभृष्टिः सहसरेता वृषभस् तुर्विष्मान् ।
पदं न गोरपगूहं विविद्वान् अग्निर्मह्यं प्रेदुं वोचन्मनीषाम् १७६०

प्र तां अग्निर्बभसत् तिग्मजम्भस् तपिष्ठेन शोचिषा यः सुराधाः ।
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि १७६१

अभ्रातरो न योषणो व्यन्तः पतिरिपो न जनयो दुरेवाः ।
पापासः सन्तो अनुता असत्या इदं पदमजनता गभीरम् १७६२

इदं मे अग्ने किर्यते पावक अमिनते गुरुं भारं न मन्म ।
बृहद् दधाथ धृषता गभीरं यहं पूष्टं प्रयसा सप्तधातु १७६३

तमिन्नेष्ट्व संमना समानम् अभि कृत्वा पुनती धीतिरश्याः ।	
ससस्य चर्मन्नाधि चारु पृश्नेर् अग्रे रूप आरुपितं जवारु	१७६४
प्रवाच्यं वर्चसः किं मे अस्य गुहा हितमुप निणिग् वदन्ति ।	
यदुस्रियाणामप वारिव व्रन् पाति प्रियं रूपो अग्रं पदं वेः	१७६५
इदमु त्यन्महि महामनीकं यदुस्रिया सचत पूर्य गौः ।	
ऋतस्य पदे अधि दीधानं गुहा रघुष्यद् रघुयद् विवेद	१७६६
अधे द्युतानः पित्रोः सचासा ऽमनुत गुह्यं चारु पृश्नेः ।	
मातुष पदे परमे अन्ति षद् गोर वृष्णः शोचिषः प्रयतस्य जिह्वा	१७६७
ऋतं वोचे नमसा पुच्छयमानस् तवाशसा जातवेदो यदीदम् ।	
त्वमस्य क्षयसि यद्ध विश्वं दिवि यदु द्रविणं यत् पृथिव्याम्	१७६८
किं नो अस्य द्रविणं कद्ध रत्नं वि नो वोचो जातवेदश् चिकित्वान् ।	
गुहाध्वनः परमं यन्नो अस्य रेकु पदं न निदाना अगन्म	१७६९
का मर्यादा वयुना कद्ध वामम् अच्छा गमेम रघवो न वार्जम् ।	
कदा नो देवीरमृतस्य पत्नीः सरो वर्णेन ततनन्नुपासः	१७७०
अनिरेण वर्चसा फल्गेन प्रतीत्येन कृधुनातृपासः ।	
अथा ते अग्रे किमिहा वदन्ति अनायुधास आसता सचन्ताम्	१७७१
अस्य श्रिये समिधानस्य वृष्णो वसोरनीकं दम् आ रुरोच ।	
रुशद् वसानः सुदृशीकरूपः क्षितिर्न राया पुरुवारो अधौत्	१७७२

॥ १९८ ॥ (ऋ० ६ । ७ । १-७)

[१७७३-१७९३] भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १७७८-१७७९ जगती ।

मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत आ जातमग्निम् ।	
कविं सम्राजमर्तिथिं जनानाम् आसन्ना पात्रं जनयन्त देवाः	१७७३
नाभिं यज्ञानां सदनं रयीणां महामाहावमभि सं नवन्त ।	
वैश्वानरं रथ्यमध्वराणां यज्ञस्य केतुं जनयन्त देवाः	१७७४
त्वद् विप्रो जायते वाज्यग्रे त्वद् वीरासो अभिमातिषाहः ।	
वैश्वानर त्वमस्मासु धेहि वस्त्रं राजन् त्स्पृह्याय्याणि	१७७५

त्वां विश्वे अमृतं जायमानं शिशुं न देवा अभि सं नवन्ते ।	
तव क्रतुभिरमृतत्वमायन् वैश्वानर यत् पित्रोरदीदेः	१७७६
वैश्वानर तव तानि व्रतानि महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।	
यज् जायमानः पित्रोरुपस्थे ऽर्विन्दः केतुं वयुनेष्वह्नाम्	१७७७
वैश्वानरस्य विमितानि चर्क्षसा सानूनि दिवो अमृतस्य केतुना ।	
तस्येदु विश्वा भुवनाधि मूर्धनि वया इव रुरुहुः सप्त विसुहः	१७७८
वि यो रजांस्यभिमीत सुक्रतुर् वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः ।	
परि यो विश्वा भुवनानि पग्रथे ऽदब्धो गोपा अमृतस्य रक्षिता	१७७९

॥ १९९ ॥ (ऋ० ६ । ८ । १-७) जगती, १७८६ त्रिष्टुप् ।

पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य नू सहः प्र नु वोचं विदथा जातवेदसः ।	
वैश्वानराय मतिर्नव्यसी शुचिः सोम इव पवते चारुर्गयै	१७८०
स जायमानः परमे व्योमनि व्रतान्यग्निर्व्रतपा अरक्षत ।	
व्यन्तरिक्षमभिमीत सुक्रतुर् वैश्वानरो महिना नाकमस्पृशत्	१७८१
व्यस्तन्नाद् रोदसी मित्रो अद्भुतो ऽन्तर्वावदकृणोज् ज्योतिषा तमः ।	
वि चर्मणीव धिषणे अवर्तयद् वैश्वानरो विश्वमधत्त वृष्यम्	१७८२
अपामुपस्थे महिषा अगृभ्णत् विशो राजानमुप तस्थुर्ऋग्निर्यम् ।	
आ दूतो अग्निमभरद् विवस्वतो वैश्वानरं मातरिश्वा परावतः	१७८३
युगेयुगे विदुष्यं गूणञ्चो ऽग्ने रयिं यशसं धेहि नव्यसीम् ।	
पव्येव राजन्नघशंसमजर नीचा नि वृश्च वानिनं न तेजसा	१७८४
अस्माकमग्ने मधर्वत्सु धारय अनामि क्षत्रमजरं सुवीर्यम् ।	
वयं जयेम श्रुतिर्न सहस्रिणं वैश्वानर वार्जमग्ने तवोतिभिः	१७८५
अदब्धेभिस् तव गोपाभिरिष्टे ऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरिन् ।	
रक्षा च नो दुदुषां शर्धो अग्ने वैश्वानर प्र च तारीः स्तवानः	१७८६

॥ २०० ॥ (६ । ९ । १-७) त्रिष्टुप् ।

अहंश् च कृष्णमहरज्जिनं च वि वर्तेते रजसी वेद्याभिः ।	
वैश्वानरो जायमानो न राजा अवातिरज् ज्योतिषाग्निस् तमांसि	१७८७

नाहं तन्तुं न वि जानाम्योतुं	न यं वयान्ति समरेऽतमानाः ।	
कस्य स्वित् पुत्र इह वक्तवानी	पुरो वदाम्यवरेण पित्रा	१७८८
स इत् तन्तुं स वि जानात्योतुं	स वक्तवान्यृतुथा वदामि ।	
य ई चिकेतदमृतस्य गोपा	अवश् चरन् पुरो अन्येन पश्यन्	१७८९
अयं होता प्रथमः पश्यतेमम्	इदं ज्योतिरमृतं मर्त्येषु ।	
अयं स जज्ञे ध्रुव आ निषत्तो	ऽमर्त्यस् तन्वाइ वर्धमानः	१७९०
ध्रुवं ज्योतिर्निहितं दृश्ये कं	मनो जर्विष्ठं पतयत्स्वन्तः ।	
विश्वे देवाः समनसः सकेता	एकं क्रतुमभि वि यन्ति साधु	१७९१
वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्	वीइदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् ।	
वि मे मनश् चरति दूरआधीः	किं स्विद् वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये	१७९२
विश्वे देवा अनमस्यन् भियानास्	त्वामग्ने तमसि तस्थिवांसम् ।	
वैश्वानरोऽवतूतये नो	ऽमर्त्योऽवतूतये नः	१७९३

॥ २०१ ॥ (ऋ० ७ । ५ । १-९) [१७९४-१८१२] वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

ग्रास्ये तवसे भरध्वं	गिरं दिवो अरतये पृथिव्याः ।	
यो विश्वेषाममृतानामुपस्थे	वैश्वानरो वावृधे जागृवद्भिः	१७९४
पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां	नेता सिन्धूनां वृषभः स्तिर्यानाम् ।	
स मानुषीरभि विशो वि भाति	वैश्वानरो वावृधानो वरेण	१७९५
त्वद् भिया विश आयन्नसिक्तीर्	असमना जहतीर्भोजनानि ।	
वैश्वानर पूरवे शोशुचानः	पुरो यदग्ने दुरयन्नदीदिः	१७९६
तव त्रिधातु पृथिवी उत द्यौर्	वैश्वानर व्रतमग्ने सचन्त ।	
त्वं भासा रोदसी आ ततन्थ	अजसेण शोचिषा शोशुचानः	१७९७
त्वामग्ने हरितो वावशाना	गिरः सचन्ते धुनयो घृताचीः ।	
पतिं कृष्टीनां रथ्यं रयीणां	वैश्वानरमुषसां केतुमह्वाम्	१७९८
त्वे असुर्यं वसवो न्यृण्वन्	क्रतुं हि ते मित्रमहो जुषन्त ।	
त्वं दस्युरोक्तसो अग्न आज	उरु ज्योतिर्जनयन्नार्थीय	१७९९

स जायमानः परमे व्योमन् वायुर्न पाथः परिं पासि सद्यः । त्वं भुवना जनयन्नभि क्रन् अपत्याय जातवेदो दशस्यन्	१८००
तामग्ने अस्मे इषमेरेयस्व वैश्वानर द्युमतीं जातवेदः । यया राघः पिन्वसि विश्ववार पृथु श्रवो दाशुषे मर्त्याय	१८०१
तं नो अग्ने मघवन्ध्रः पुरुक्षुं रयिं नि वाजं श्रुत्यै युवस्व । वैश्वानर महि नः शर्म यच्छ रुद्रेभिरग्ने वसुभिः सजोषाः	१८०२

॥ २०२ ॥ (ऋ० ७।६।१-७)

प्र सम्राजो असुरस्य प्रशस्तिं पुंसः कृष्टीनामनुमाद्यस्य । इन्द्रस्येव प्र तवसंस्कृतानि वन्दे दारुं वन्दमानो विवक्त्रि	१८०३
कविं केतुं धासि भानुमद्रेर् द्विन्वन्ति शं राज्यं रोदस्योः । पुरंदुरस्य गीर्भिरा विवासे ऽग्नेर्व्रतानि पूव्या महानि	१८०४
न्यक्तून् ग्रथिनो मध्रवाचः पूर्णैश्चद्धाँ अवृधाँ अयज्ञान् । प्रप्र तान् दस्यूरग्निर्विवाय पूर्वशू चकारापराँ अयज्यून्	१८०५
यो अपाचीने तमसि मदन्तीः प्राचींश् चकार नृतमः शचीभिः । तमीशानं वस्वो अग्निं गृणीषे ऽनानतं दुमयन्तं पृतन्यून्	१८०६
यो देहोऽं अनमयद् वधस्तैर् यो अर्यपत्नीरुषसंश् चकार । स निरुध्या नहुषो यद्वा अग्निर् विशंश् चक्रे बलिहृतः सहोभिः	१८०७
यस्य शर्मन्नुप विश्वे जनास एवैस् तस्थुः सुमतिं भिक्षमाणाः । वैश्वानरो वरमा रोदस्योर् आग्निः संसाद पित्रोरुपस्थम्	१८०८
आ देवो ददे बुध्याऽं वध्नि वैश्वानर उदिता सूर्यस्य । आ समुद्रादवरादा परस्माद् आग्निर्ददे दिव आ पृथिव्याः	१८०९

॥ २०३ ॥ (ऋ० ७।१३।१-३)

प्राग्रये विश्वशुचै धियुधे ऽसुरग्ने मन्म धीतिं भरध्वम् । भरे हविर्न बर्हिषि प्रीणानो वैश्वानराय यतये मतीनाम्	१८१०
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान् आ रोदसी अपृणा जायमानः । त्वं देवाँ अभिशस्तेरमुञ्चो वैश्वानर जातवेदो महित्वा	१८११

जातो यदग्ने भुवना व्यरुयः पशून् न गोषा इर्यः परिज्मा ।
वैश्वानर ब्रह्मणे विन्द गातुं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१८१२

३ रक्षोहाऽग्निः ।

॥ २०४ ॥ (ऋ० ४ । ४ । १-१५) [१८१३-१८२७] वामदेवो गीतमः । विष्णुप् ।

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ इमेन ।
तृष्णीमनु प्रसितिं दूणानो ऽस्तासि विध्य रक्षसस् तपिष्ठैः १८१३
तव भ्रमास आश्रुया पतन्ति अनु स्पृश धृषता शोशुचानः ।
तपूष्यग्ने जुह्वा पतङ्गान् असंदितो वि सृज विष्वगुल्काः १८१४
प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः ।
यो नो दूरे अघशंसो यो अन्ति अग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षात् १८१५
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतात् तिग्महेते ।
यो नो अरातिं समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् १८१६
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मद् आविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने ।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून् १८१७
स ते जानाति सुमतिं यविष्ठ य ईवते ब्रह्मणे गातुमैरत् ।
विश्वान्यस्मै सुदिनानि रायो द्युम्नान्ययो वि दुरो अभि द्यौत् १८१८
सेदग्ने अस्तु सुभगः सुदानुर् यस् त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः ।
पिप्रीषति स्व आयुषि दुरोणे विश्वेदस्मै सुदिना सासंदिष्टिः १८१९
अर्चामि ते सुमतिं घोष्यर्वाक् सं ते वावाता जरतामियं गीः ।
स्वश्वास् त्वा सुरथा मर्जयेम अस्मे क्षत्राणि धारयेरु द्यून् १८२०
इह त्वा भूर्या चरेदुष त्मन् दोषावस्तर्दीद्विवांसमनु द्यून् ।
श्रीळन्तस् त्वा सुमनसः सपेम अभि द्युम्ना तस्थिवांसो जनानाम् १८२१
यस् त्वा स्वश्वः सुहिरण्यो अग्न उपयाति वसुमता रथेन ।
तस्य त्राता भवसि तस्य सखा यस् त आतिथ्यमानुषग् जुजोषत् १८२२

महो रुजामि बन्धुता वचोभिस् तन्मा पितुर्गोतमादन्वियाय । त्वं नो अस्य वर्चसश् चिकिद्धि होतर्यविष्ठ सुक्रतो दमूनाः	१८२३
अस्वमजस् तुरणयः सुशेवा अतन्द्रासोऽवृका अश्रमिष्ठाः । ते पायवः सध्र्यञ्चो निषद्य अग्रे तव नः पान्त्वमूर	१८२४
ये पायवो मामतेयं ते अग्रे पश्यन्तो अन्धं दुरितादरक्षन् । ररक्ष तान् त्सुकृतो विश्ववेदा दिप्सन्त इद् रिपवो नाहं देशुः	१८२५
त्वया वयं सध्र्यन्तस् त्वोतास् तव प्रणीत्यश्याम वाजान् । उभा शंसा हृदय सत्यताते ऽनुष्ठुया कृणुह्ययाण	१८२६
अया ते अग्रे समिधा विधेम प्रति स्तोमं शस्यमानं गृभाय । दहाशसो रक्षसः पाह्यस्मान् द्रुहो निदो मित्रमहो अवघात्	१८२७

॥ २०५ ॥ (ऋ० १० । ८७ । १-२५)

[१८२८—१८५२] पायुर्भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, १८४९-५२ अनुष्टुप् ।

रक्षोहणं वाजिनमा जिघर्षि मित्रं प्रथिष्ठमुप यामि शर्म । शिशानो अग्निः क्रतुभिः समिद्धः स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम्	१८२८
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा यातुधानान् उप स्पृश जातवेदः समिद्धः । आ जिह्या मूरदेवान् रभस्व क्रव्यादो वृक्त्वयि धत्स्वासन्	१८२९
उभोभयाविभ्रुप धेहि दंष्ट्रा हिंसः शिशानोऽवरं परं च । उतान्तरिक्षे परि याहि राजन् जम्भैः सं धेह्यभि यातुधानान्	१८३०
यज्ञैरिषूः संनममानो अग्रे वाचा श्रूयाँ अशनिभिर्दिहानः । ताभिर्विध्य हृदये यातुधानान् प्रतीचो बाहून् प्रति भङ्ध्येषाम्	१८३१
अग्रे त्वचं यातुधानस्य भिन्धि हिंसाशनिर्हरसा हन्त्वेनम् । प्र पर्वाणि जातवेदः शृणीहि क्रव्यात् क्रविष्णुर्वि चिनोत वृक्णम्	१८३२
यत्रेदानीं पश्यसि जातवेदस् तिष्ठन्तमग्न उत वा चरन्तम् । यद् वान्तरिक्षे पथिभिः पतन्तं तमस्तां विध्य शर्वा शिशानः	१८३३
उतालब्धं स्पृणुहि जातवेद आलेभानादृष्टिभिर्यातुधानात् । अग्रे पूर्वो नि जहि शोशुचान आमादुः श्विक्लास् तमद्वन्त्वेनीः	१८३४

इह प्र ब्रूहि यतमः सो अग्ने	यो यातुधानो य इदं कृणोति ।	
तमा रभस्व समिधा यविष्ठ	नृचक्षसश् चक्षुषे रन्ध्रयैनम्	१८३५
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष यज्ञं	प्राञ्चं वसुभ्यः प्र णय प्रचेतः ।	
हिंसं रक्षांस्यभि शोशुचानं	मा त्वा दमन् यातुधाना नृचक्षः	१८३६
नृचक्षा रक्षः परि पश्य विक्षु	तस्य त्रीणि प्रति शृणीह्यग्रा ।	
तस्याग्ने पृष्ठीर्हरसा शृणीहि	त्रेधा मूलं यातुधानस्य वृश्च	१८३७
त्रिर्यातुधानः प्रसितिं त एतु	ऋतं यो अग्ने अनृतेन हन्ति ।	
तमर्चिषा स्फूर्जयज् जातवेदः	समक्षमेनं गृणते नि वृद्धि	१८३८
तदग्ने चक्षुः प्रति धेहि रेभे	शफारुजं येन पश्यसि यातुधानम् ।	
अथर्ववज् ज्योतिषा दैव्येन	सत्यं धूर्वन्तमचितं न्योष	१८३९
यदग्ने अद्य मिथुना शपातो	यद् वाचस् तृष्टं जनयन्त रेभाः ।	
मन्योर्मनसः शरव्या इ जायते या	तया विध्य हृदये यातुधानान्	१८४०
परा शृणीहि तपसा यातुधानान्	पराग्ने रक्षो हरसा शृणीहि ।	
पराचिषा मूरदेवाञ् छृणीहि	परासुतपो अभि शोशुचानः	१८४१
पराद्य देवा वृजिनं शृणन्तु	प्रत्यगेनं शपथा यन्तु तृष्टाः ।	
वाचास् तेनं शरव ऋच्छन्तु मर्मन्	विश्वस्यैतु प्रसितिं यातुधानः	१८४२
यः पौरुषेयेण क्रविषा समङ्गे	यो अक्षयेन पशुना यातुधानः ।	
यो अह्याया भरति क्षीरमग्ने	तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च	१८४३
संवत्सरीणं पय उस्त्रियायास्	तस्य माशीद् यातुधानो नृचक्षः ।	
पीयूषमग्ने यतमस् तितृप्सात्	तं प्रत्यञ्चमर्चिषा विध्य मर्मन्	१८४४
विषं गवां यातुधानाः पिबन्तु	आ वृश्चयन्तामदितये दुरेवाः ।	
परैनान् देवः संविता ददातु	परा भागमोषधीनां जयन्ताम्	१८४५
सनादग्ने मृणसि यातुधानान्	न त्वा रक्षांसि पृतनासु जिग्युः ।	
अनु दह सहमूरान् क्रव्यादो	मा ते हेत्या मुक्षत दैव्यायाः	१८४६
त्वं नो अग्ने अधरादुदक्तात्	त्वं पश्चादुत रक्षा पुरस्तात् ।	
प्रति ते ते अजरासस् तपिष्ठा	अघशंसं शोशुचतो दहन्तु	१८४७

पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात् कविः काव्येन परि पाहि राजन् । सखे सखायमजरो जस्मिणे ऽग्ने मर्ता अमर्त्यस् त्वं नः	१८४८
परि त्वाग्ने पुरं वयं विप्रै सहस्य धीमहि । धृषद्वर्णं दिवेदिवे हन्तारं भङ्गुरावताम्	१८४९*
विषेण भङ्गुरावतः प्रति प्म रक्षसो दह । अग्ने तिग्मेन शोचिषा तपुरग्राभिर्ऋष्टिभिः	१८५०
प्रत्यग्ने मिथुना दह यातुधाना किमीदिना । सं त्वा शिशामि जागृहि अदब्धं विप्र मन्मभिः	१८५१
प्रत्यग्ने हरसा हरः शृणीहि विश्वतः प्रति । यातुधानस्य रक्षसो बलं वि रुज वीर्यम्	१८५२
॥ २०६ ॥ (ऋ० १०। ११८। १—२) [१८५३-१८६१] उरुक्षय आमहीयवः । गायत्री ।	
अग्ने हंसि न्यत्रिणं दीद्यन् मर्त्येष्वा । स्वे क्षये शुचिव्रत	१८५३
उत् तिष्ठसि स्वाहुतो घृतानि प्रति मोदसे । यत् त्वा सुचः समस्थिरन्	१८५४
स आहुतो वि रोचते ऽग्निरीळैन्यो गिरा । सुचा प्रतीकमज्यते	१८५५
घृतेनाग्निः समज्यते मधुप्रतीक आहुतः । रोचमानो विभार्वसुः	१८५६
जरमाणः समिध्यसे देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः	१८५७
तं मर्ता अमर्त्य घृतेनाग्निं संपर्यत । अदाभ्यं गृहपतिम्	१८५८
अदाभ्येन शोचिषा ऽग्ने रक्षस् त्वं दह । गोपा क्रतस्य दीदिहि	१८५९
स त्वमग्ने प्रतीकेन प्रत्योष यातुधान्यः । उरुक्षयेषु दीद्यत्	१८६०
तं त्वा गीभिर्ऋक्षया हव्यवाहं समीधिरे । यजिष्ठं मानुषे जने	१८६१

४ जातवेदा अग्निः ।

॥ २०७ ॥ (ऋ० १। २९। १) [१८६२] कश्यपो मारीचः । त्रिष्टुप् ।

जातवेदसे सुनवाम सोमम् अरातीयतो नि दहाति वेदः । स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः	१८६२
---	------

॥ २०८ ॥ (ऋ० १० । १८८ । १-३) [१८६३-१८६५] इयेन आग्नेयः । गायत्री ।

प्र नूनं जातवैदसम् अश्वं हिनोत वाजिनम् । इदं नो बर्हिःसदे १८६३
अस्य प्र जातवैदसो विप्रवीरस्य मीढुषः । महीमियमि सुष्टुतिम् १८६४
या रुचो जातवैदसो देवत्रा हव्यवाहनीः । तामिर्नो यज्ञमिन्वतु १८६५

॥ २०९ ॥ (अथर्ववेदे कां० ७ । ८४ (८९) । १) [१८६६] शृगुः । जगती ।

अनाधृष्यो जातवैदा अमर्त्यो विराडग्रे क्षत्रभृद् दीदिहीह ।
विश्वामीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिर्य परि पाहि नो गयम् १८६६

५ घर्मोऽग्निः ।

॥ २१० ॥ (ऋ० १ । ११२ । १ द्वितीयः पादः) [१८६७] कुत्स आंगिरसः ।

अग्निं घर्मं सुरुचं यामन्निष्टये । १८६७

६ औषसोऽग्निः ।

॥ २११ ॥ (ऋ० १ । १५ । १-११) [१८६८-१८७८] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

द्वे विरूपे चरतुः स्वर्थे अन्यान्या वृत्समुप धापयेते ।
हरिरन्यस्यां भवति स्वधावाञ् छुक्रो अन्यस्यां ददृशे सुवर्चाः १८६८
दशेमं त्वष्टृर्जनयन्त गर्भम् अतन्द्रासो युवतयो विभृत्रम् ।
तिग्मानीकं स्वयंशसं जनेषु विरोचमानं परि षीं नयन्ति १८६९
त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य समुद्र एकं दिव्येकमप्सु ।
पूर्वामनु प्र दिशं पार्थिवानाम् ऋतून् प्रशासद् वि दधावनुष्ठु १८७०
क इमं वो निण्यमा चिकेत वृत्सो मातृर्जनयत स्वधाभिः ।
बह्वीनां गर्भो अपसामुपस्थात् महान् कविर्निश् चरति स्वधावान् १८७१
आविष्ट्यो वर्धते चारुंरासु जिह्वानामूर्ध्वः स्वयंशा उपस्थे ।
उमे त्वष्टृर्बिम्यतुर्जार्यमानात् प्रतीची सिंहं प्रति जोषयेते १८७२

उभे भद्रे जोषयेते न मेने गावो न वाश्रा उप तस्थुरेवैः । स दक्षाणां दक्षपतिर्बभूव अञ्जन्ति यं दक्षिणतो हविर्भिः	१८७३
उद् ययमीति सवितेव बाहू उभे सिचौ यतते भीम ऋञ्जन् । उच्छुक्रमत्कमजते सिमस्मात् नवा मातृभ्यो वसना जहाति	१८७४
त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत् संपृञ्चानः सदर्ने गोभिरद्भिः । कविर्बुधं परि मर्मृज्यते धीः सा देवताता समितिर्बभूव	१८७५
उरु ते जयः पर्येति बुधं विरोचमानं महिषस्य धाम । विश्वेभिरग्रे स्वयंशोभिरिद्वो ऽदब्धेभिः पायुभिः पाह्यस्मान्	१८७६
धन्वन् त्स्रोतः कृणुते गातुमूर्मिं शुक्रैरूर्मिभिरभि नक्षति क्षाम् । विश्वा सनानि जठरेषु धत्ते ऽन्तर्नवासु चरति प्रसृष्टं	१८७७
एवा नो अग्रे सुमिधा वृधानो रेवत् पावक श्रवसे वि भाहि । तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ताम् अदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१८७८

७ द्रविणोदा अग्निः ।

॥ २१२ ॥ (ऋ० १ । ९६ । १-२) [१८७९—१८८७] कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

स प्रलथा सहसा जायमानः सद्यः काव्यानि बळधत्त विश्वा । आपश् च मित्रं धिषणां च साधन् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८७९
स पूर्वया निविदा कव्यतायोर् इमाः प्रजा अजनयन् मन्त्रनाम् । विवस्वता चक्षसा घामपश् च देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८०
तमीळत ग्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृञ्जसानम् । ऊर्जः पुत्रं भरतं सृप्रदानुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८१
स मातरिश्वा पुरुवारपुष्टिर् विदद् गातुं तनयाय स्वर्वित् । विशां गोपा जनिता रोदस्योर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८२
नक्तोषासा वर्णामामेभ्याने धापयेते शिशुमेकं समीची । द्यावाक्षामा रुक्मो अन्तर्वि भाति देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८३

रायो बुध्नः संगमनो वधनां यज्ञस्य केतुर्मेन्मसाधनो वेः ।	
अमृतत्वं रक्षमाणास एनं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८४
नू च पुरा च सदनं रथीणां जातस्य च जायमानस्य च क्षाम् ।	
सतश् च गोपां भवतश् च भूरैर् देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम्	१८८५
द्रविणोदा द्रविणसस् तुरस्य द्रविणोदाः सनरस्य प्र यँसत् ।	
द्रविणोदा वीरवतीमिषं नो द्रविणोदा रांसते दीर्घमायुः	१८८६
एवा नो अग्ने समिधा वृधानो० । (१८७८)	

७ शुचिरग्निः ।

॥ २१३ ॥ (ऋ० १।९७।१-८) (१८८७-१८९४) कुत्स आङ्गिरसः । गायत्री ।

अप नः शोशुचदधम्	अग्ने शुशुग्ध्या रयिम् ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८८७
सुक्षेत्रिया सुगातुया	वसूया च यजामहे ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८८८
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	ग्रास्माकांसश् च सूरयः ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८८९
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	जायेमहि प्र ते वयम् ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८९०
प्र यदग्नेः सहस्वतो	विश्वतो यन्ति भानवः ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८९१
त्वं हि विश्वतोमुख	विश्वतः परिभूरसि ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८९२
द्विषो नो विश्वतोमुख	अति नावेव पारय ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८९३
स नः सिन्धुमिव नावया	अति पर्वा स्वस्तये ।	
अप नः शोशुचदधम्		१८९४

८ अग्निरापो गावश्च ।

अग्निः सूर्यो वा आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर्वा ।

॥ २१४ ॥ (ऋ० ४।५८। १-११) [१८९५-१९०५] वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप्, १९०५ जगती ।

समुद्रादूर्मिर्मधुमाँ उदारद् उपांशुना सममृतत्वमानद् ।

घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानां समृतस्य नार्भिः १८९५

वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्य अस्मिन् यज्ञे धारयामा नमोभिः ।

उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुःशृङ्गोऽवमीद् गौर एतत् १८९६

चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।

त्रिधा बद्धो वृषभो रौरवीति महो देवो मर्त्याँ आ विवेश १८९७

त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गर्वि देवासौ घृतमन्वविन्दन् ।

इन्द्र एकं सूर्य एकं जजान वेनादेकं स्वधया निष्टतक्षुः १९९८

एता अर्षन्ति हृद्यात् समुद्रात् शतव्रजा रिपुणा नावचक्षे ।

घृतस्य धारां अभि चाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम् १९९९

सम्यक् स्रवन्ति सरितो न धेना अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः ।

एते अर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मुगा इव क्षिपणोरीषमाणाः १९००

सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यक्षाः ।

घृतस्य धारां अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्भूमिभिः पिन्वमानः १९०१

अभि प्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मर्यमानासो अग्निम् ।

घृतस्य धाराः समिधौ नसन्त ता जुषाणो हर्यति जातवेदाः १९०२

कन्या इव वहतुमेतवा उ अङ्गयज्ञाना अभि चाकशीमि ।

यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारां अभि तत् पवन्ते १९०३

अभ्यर्षत सृष्टिं गव्यमाजिम् अस्मासु मद्रा द्रविणानि धत्त ।

इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत् पवन्ते १९०४*

धामन् ते विश्वं भुवनमधि श्रितम् अन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि ।

अपामनीके समिधे य आभृतस् तमदयाम् मधुमन्तं त ऊर्मिम् १९०५

९ आप्रीसूक्तानि ।

॥ २१५ ॥ (ऋ० १ । १३ । १-१२)

१९०६-१७ मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इळाः, ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः] । गायत्री ।

सुसमिद्धो न आ वह देवाँ अग्ने हविष्मते । होतः पावक यक्षि च	१९०६
मधुमन्तं तनूनपाद् यज्ञं देवेषु नः कवे । अद्या कृणुहि वीतर्ये	१९०७
नराशंसमिह प्रियम् अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । मधुजिह्वं हविष्कृतम्	१९०८
अग्ने सुखतमे रथे देवाँ ईळित आ वह । असि होता मनुर्हितः	१९०९
स्तृणीत बर्हिरानुषग् घृतपृष्ठं मनीषिणः । यत्रामृतस्य चक्षणम्	१९१०
वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्वतः । अद्या नूनं च यष्टवे	१९११
नक्तोषासा सुपेशसा अस्मिन् यज्ञ उप ह्वये । इदं नो बर्हिरासदे	१९१२
ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमम्	१९१३
इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोधुवः । बर्हिः सीदन्त्वसिधः	१९१४
इह त्वष्टारमग्रियं विश्वरूपमुप ह्वये । अस्मार्कमस्तु केवलः	१९१५
अव सृजा वनस्पते देव देवेभ्यो हविः । प्र दातुरस्तु चेतनम्	१९१६
स्वाहा यज्ञं कृणोतन इन्द्राय यज्वनो गृहे । तत्र देवाँ उप ह्वये	१९१७

॥ २१६ ॥ (ऋ० १ । १४२ । १-१३)

१९१८-३० दीर्घमता औचध्यः । आप्रीसूक्तं= [क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ नराशंसः, ४ इळाः, ५ बर्हिः, ६ देवीः द्वारः, ७ उषासानक्ता, ८ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ९ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, १० त्वष्टा, ११ वनस्पतिः, १२ स्वाहाकृतयः, १३ इन्द्रः] । अनुष्टुप् ।

समिद्धो अग्र आ वह देवाँ अद्य यतस्तुचे । तन्तुं तनुष्व पूव्यं सुतसौमाय दाशुषे	१९१८
घृतवन्तमुप मासि मधुमन्तं तनूनपात् । यज्ञं विप्रस्य मावतः शशमानस्य दाशुषः	१९१९
शुचिः पावको अद्भुतो मध्वा यज्ञं मिमिक्षति । नराशंसस् त्रिरा दिवो देवो देवेषु यज्ञियः	१९२०
ईळितो अग्र आ वह इन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । इयं हि त्वा मतिर्मम अच्छा सुजिह्व वच्यते	१९२१
स्तृणानासो यतस्तुचो बर्हिर्यज्ञे स्वध्वरे । वृज्जे देवव्यचस् तमम् इन्द्राय शर्म सप्रथः	१९२२
वि श्रयन्तामृतावृधः प्रयै देवेभ्यो महीः । पावकासः पुरुस्पृहो द्वारो देवीरसश्वतः	१९२३

आ भन्दमाने उपांके नक्तोषासा सुपेशसा । यद्ही क्रतस्य मातरा सीदतां बर्हिः सुमत् १९२४
 मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी होतारा दैव्या कवी । यज्ञं नो यक्षतामिमं सिध्रमद्य दिविस्पृशम् १९२५
 शुचिर्देवेष्वर्पिता होत्रा मरुत्सु भारती । इळा सरस्वती मही बर्हिः सीदन्तु यज्ञियाः १९२६
 तन्नस् तुरीपमद्भुतं पुरु वारं पुरु त्मना । त्वष्टा पोषाय विष्यतु राये नाभा नो अस्मयुः १९२७
 अवसृजन्नु त्मना देवान् यक्षि वनस्पते । अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः १९२८
 पूषण्वते मरुत्वते विश्वदेवाय वायवे । स्वाहा गायत्रवेपसे हव्यमिन्द्राय कर्तन १९२९
 स्वाहाकृतान्या गृहि उप हव्यानि वीतये । इन्द्रा गृहि श्रुधी हवं त्वां हवन्ते अध्वरे १९३०

॥ २१७ ॥ (क्र० १ । १८८ । १-११)

१९३१-४१ अगस्त्यो मैत्रावरुणः । आग्नीसूक्तं= (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यो होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । गायत्री ।

समिद्धो अद्य राजसि देवो देवैः सहस्रजित्	। दूतो हव्या कविर्वह	१९३१
तनूनपादृतं यते मध्वा यज्ञः समज्यते	। दधत् सहस्रिणीरिषः	१९३२
आजुह्वानो न ईज्यो देवा आ वक्षि यज्ञियान्	। अग्ने सहस्रसा असि	१९३३
प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन्	। यत्रादित्या विराजथ	१९३४
विराट् सम्राड् विभ्वीः प्रभ्वीर् बह्वीश् च भूर्यसीश् च याः ।	दुरो घृतान्यक्षरन्	१९३५
सुरुक्मे हि सुपेशसा अर्धे श्रिया विराजतः ।	। उषासावेह सीदताम्	१९३६
प्रथमा हि सुवाचसा होतारा दैव्या कवी	। यज्ञं नो यक्षतामिमम्	१९३७
भारतीळे सरस्वति या वः सर्वा उपब्रुवे	। ता नश् चोदयत श्रिये	१९३८
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभुः पशून् विश्वान् त्समानजे	। तेषां नः स्फातिमा यज	१९३९
उष त्मन्या वनस्पते पाथो देवेभ्यः सृज	। अग्निर्हव्यानि सिष्वदत्	१९४०
पुरोगा अग्निर्देवानां गायत्रेण समज्यते	। स्वाहाकृतीषु रोचते	१९४१

॥ २१८ ॥ (क्र० २ । ३ । १-११)

१९४२-५२ श्रुत्समदः शौनकः । आग्नीसूक्तं= [क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यो होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः] । त्रिष्टुप्; १९४८ जगती ।

समिद्धो अग्निर्निहितः पृथिव्यां प्रत्यङ् विश्वानि भुवनान्यस्थात् ।

होता पावकः प्रदिवः सुमेधा देवो देवान् यजत्वग्निर्हन्

१९४२

नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन् तिस्रो दिवः प्रति म॒ह्ना स्वर्चिः ।	
घृत॒प्रुषा मनसा ह॒व्यमु॒न्दन् मूर्धन् य॒ज्ञस्य॒ सम॑नक्तु देवान्	१९४३
ई॒ळितो अ॒ग्रे मन॑सा नो अ॒र्हन् देवान् यक्षि॑ मानुषात् पूर्वो अ॒द्य ।	
स आ वह॑ म॒रुतां श॒र्धो अच्यु॑तम् इन्द्रं॑ नरो ब॒र्हिषदै॑ यजध्वम्	१९४४
देव॑ ब॒र्हिर्वर्ध॑मानं सुवीरं॑ स्ती॒र्णं रा॒ये सुभ॑रं वेद्यस्याम् ।	
घृतेना॒क्तं व॑सवः सीदते॒दं वि॒श्वे दे॒वा आ॒दि॒त्या य॒ज्ञिया॑सः	१९४५
वि श्र॑यन्तामुर्वि॒या ह॒यमा॑ना द्वा॒रो दे॒वीः सु॒प्राय॑णा नमो॑भिः ।	
व्यच॑स्वतीर्वि॒ं प्रथ॑न्तामजु॒र्या वर्ण॑ पु॒नाना॑ य॒ज्ञसं सु॒वीर॑म्	१९४६
साध्व॑पांसि स॒नतां न उ॒क्षिते॑ उ॒षासा॑नक्ता व॒य्यैव॑ र॒ण्विते॑ ।	
तन्तुं॑ त॒तं सं॒वय॑न्ती स॒मीची॑ य॒ज्ञस्य॒ पेशः॑ सु॒दुधे॒ पय॑स्वती	१९४७
दै॒व्या हो॒तारा॑ प्रथ॒मा वि॒दुष्ट॑र ऋ॒जु य॑क्षतः समृ॒चा व॒पुष्ट॑रा ।	
देवान् य॑जन्तावृतु॒था स॑म॒ञ्जतो॑ नाभा॑ पृथि॒व्या अधि॑ सा॒नुषु॒ त्रिषु॑	१९४८
सर॑स्वती सा॒धय॑न्ती धियं॑ न इळा॑ दे॒वी भा॑रती वि॒श्वतू॑र्तिः ।	
ति॒स्रो दे॒वीः स्व॒धया॑ ब॒र्हिरे॑दम् अ॒च्छिद्रं॑ पा॒न्तु श॑र॒णं नि॒षद्य॑	१९४९
पि॒शङ्ग॑रूपः सु॒भरो॑ वयो॒धाः श्रु॒ष्टी वी॒रो जा॑यते दे॒वका॑मः ।	
ग्र॒जां त्वष्टा॑ वि॒ष्यतु॑ नाभि॒मस्मे॑ अथा॑ दे॒वाना॑मप्येतु॒ पार्थः॑	१९५०
वन॑स्पतिरवसृ॒जन्नुप॑ स्थाद् अ॒ग्निर्ह॑विः स्र॒दया॑ति प्र धी॒भिः ।	
त्रि॒धा स॑म॒क्तं न॑यतु॒ ग्र॒जान॑न् दे॒वेभ्यो॑ दै॒व्यः श॑मितो॒प ह॒व्यम्	१९५१
घृतं॑ मि॒मिक्षे॑ घृतम॒स्य योनि॑र् घृते॒ श्रितो॑ घृतम्व॒स्य धाम॑ ।	
अ॒नुष्व॒धमा वह॑ मा॒दय॑स्व स्वा॒हाकृतं॑ वृष॒भ वक्षि॑ ह॒व्यम्	१९५२

॥ २१९ ॥ (ऋ० ३।४। १-११)

१९५३-६३ वि॒श्वामि॒त्रो गा॒यिन्॥ आ॒ग्नी॒सूक्तं= [क्रमेण- १ इ॒ध्मः स॑मि॒न्द्रोऽग्नि॒र्वा, २ त॒नून॑पा॒न्, ३ इळाः, ४ ब॒र्हिः, ५ दे॒वीः द्वा॒रः, ६ उ॒षासा॑नक्ता, ७ दै॒व्यौ हो॒तारौ प्र॑च॒तसौ, ८ ति॒स्रो दे॒व्यः सर॑स्वतीळाभा॒रत्यः, ९ त्वष्टा, १० वन॑स्पतिः, ११ स्वा॒हाकृत॑यः] । त्रि॒दुध् ।

स॒मित् स॑मित् सु॒मना॑ बो॒ध्यस्मे॑ शु॒चाशु॑चा सु॒मतिं॑ रा॒सि व॑स्वः ।
आ दे॒व दे॒वान् य॒जथा॑य वक्षि॑ सखा॒ सखी॑न् त्सु॒मना॑ यक्ष्य॒मे १९५३

यं देवासस् त्रिरहन्नायजन्ते दिवेदिवे वरुणो मित्रो अग्निः ।	
सेमं यज्ञं मधुमन्तं कृधी नस् तनूनपाकृतयोनिं विधन्तम्	१९५४
प्र दीधितिर्विश्ववारा जिगाति होतारमिळः प्रथमं यजध्वै ।	
अच्छा नमोभिर्वृषभं वन्दध्वै स देवान् यक्षदिषितो यजीयान्	१९५५
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे अकारि ऊर्ध्वा शोचीषि प्रास्थिता रजांसि ।	
दिवो वा नाभा न्यसादि होता स्तृणीमहि देवव्यचा वि बर्हिः	१९५६
सप्त होत्राणि मनसा वृणाना इन्वन्तो विश्वं प्रति यन्नूतेन ।	
नृपेशंसो विदथेषु प्र जाता अभीक्ष्मं यज्ञं वि चरन्त पूर्वीः	१९५७
आ भन्दमाने उषसा उपाके उत स्मयेते तन्वाक्ष विरूपे ।	
यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषद् इन्द्रो मरुत्वा उत वा महोभिः	१९५८
दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः स्वधया मदन्ति ।	
ऋतं शंसन्त ऋतमित् त आहुर् अनु व्रतं व्रतपा दीव्यानाः	१९५९
आ भारती भारतीभिः सजोषा इळा देवैर्मनुष्यैर्मिरग्निः ।	
सरस्वती सारस्वतेभिर्वाक् तिस्रो देवीर्बहिरेदं संदन्तु	१९६०
तन्नस् तुरीपमघं पोषयितु देवं त्वष्ट्रिं रराणः स्यस्व ।	
यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो युक्तग्रात्रा जायते देवकामः	१९६१
वनस्पतेऽव सृजोष देवान् अग्निर्हविः शमिता स्रदयाति ।	
सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां जनिमानि वेद	१९६२
आ याह्यमे समिधानो अवाङ् इन्द्रेण देवैः सरथं तुरेभिः ।	
बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रा स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	१९६३

॥ २२० ॥ (ऋ० ५ । ५ । १-११)

१९६४-७३ वसुधुत आत्रेयः । आप्रीसूक्तं = (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा. २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीर्द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळा भारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । गायत्री ।

सुसमिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे	१९६४
नराशंसः सुषूदति इमं यज्ञमदाभ्यः । कविर्हि मधुहस्त्यः	१९६५

इलितो अग्र आ वह इन्द्रं चित्रमिह प्रियम् । सुखै रथेभिरुतये	१९६६
ऊर्णम्रदा वि प्रथस्व अभ्यर्का अनूषत । भवा नः शुभ्र सातये	१९६७
देवीर्द्वारो वि श्रयध्वं सुप्रायणा न ऊतये । प्रप्र यज्ञं पृणीतन	१९६८
सुप्रतीके वयोवृधा यही ऋतस्य मातरा । दोषामुषासमीमहे	१९६९
वातस्य पत्मनीलिता दैव्या होतारा मनुषः । इमं नो यज्ञमा गतम्	१९७०
इळा सरस्वती मही० । (१९१४)	
शिवस् त्वष्टरिहा गहि विभुः पोष उत त्मना । यज्ञेयज्ञे न उदव	१९७१
यत्र वेत्थ वनस्पते देवानां गुह्या नामानि । तत्र हव्यानि गामय	१९७२
स्वाहाग्रये वरुणाय स्वाहेन्द्राय मरुद्भ्यः । स्वाहा देवेभ्यो हविः	१९७३

॥ २२१ ॥ (ऋ० ७।२।१-११)

१९७४-८० वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आप्रीसुक्तं- (क्रमेण १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यो होतारो प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् ।

जुषस्व नः समिधमग्ने अद्य शोचा बृहद् यजतं धूममुष्वन् ।	
उप स्पृश दिव्यं सानु स्तूपैः सं रश्मिभिस् ततनुः सूर्यस्य	१९७४
नराशंसस्य महिमानमेषाम् उप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।	
ये सुकृतवः शुचयो धियधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या	१९७५
इळेन्यं वो असुरं सुदक्षम् अन्तर्दूतं रोदसी सत्यवाचम् ।	
मनुष्वदग्निं मनुना समिद्धं समध्वराय सदमिन्महेम	१९७६
सपर्यवो भरमाणा अभिज्ञु प्र वृज्जते नमसा बर्हिरग्नौ ।	
आजुह्वाना घृतपृष्ठं पृषद्वद् अध्वर्यवो हविषा मर्जयध्वम्	१९७७
स्वाध्वोऽ वि दुरो देवयन्तो ऽग्निश्रयू रथयुर्देवताता ।	
पूर्वीं शिशुं न मातरा रिहाणे समग्रवो न समनेष्वञ्जन्	१९७८
उत योषणे दिव्ये मही न उषासानक्ता सुदुधेव धेनुः ।	
बर्हिषदा पुरुहूते मघोनी आ यज्ञिये सुवितार्य श्रयेताम्	१९७९
विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु कारू मन्ये वां जातवेदसा यजध्वै ।	
ऊर्ध्व नो अध्वरं कृतं हवेषु ता देवेषु वनथो वार्याणि	१९८०

आ भारती भारतीभिः सृजोषा० । (१९६०)
 तन्नस् तुरीयमर्धं पोषयितु० । (१९६१)
 वनस्पतेऽर्वं सृजोषं देवान्० । (१९६२)
 आ याह्यग्रे समिधानो अर्वाङ्० । (१९६३)

॥ २२२ ॥ (क्र० ९। ५। १-११)

१९८१-९१ असितः काश्यपो देवलो वा । आग्नीसूक्तं=(क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीद्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः । गायत्री, १९९४-९७ अनुष्टुप् ।

समिद्धो विश्वतस्पतिः	पर्वमानो वि राजति	।	ग्रीणन् वृषा कर्निकदत्	१९८१
तनूनपात् पर्वमानः	शृङ्गे शिशानो अर्षति	।	अन्तारिक्षेण रारजत्	१९८२
ईळैन्यः पर्वमानो	रयिर्वि राजति द्युमान्	।	मधोर्धाराभिरोजसा	१९८३
बर्हिः प्राचीनमोजसा	पर्वमानः स्तृणन् हरिः	।	देवेषु देव ईयते	१९८४
उदातैर्जिहते बृहद्	द्वारो देवीर्हिरण्ययीः	।	पर्वमानेन सुष्टुताः	१९८५
सुशिल्पे बृहती मही	पर्वमानो वृषण्यति	।	नक्तोषासा न दर्शते	१९८६
उभा देवा नृचक्षसा	होतारा दैव्या हुवे	।	पर्वमान इन्द्रो वृषा	१९८७
भारती पर्वमानस्य	सरस्वतीळा मही । इमं नो यज्ञमा गमन्	तिस्रो देवीः सुपेशसः	१९८८	
त्वष्टारमग्रजां गोपां	पुरोयावानमा हुवे । इन्दुरिन्द्रो वृषा हरिः	पर्वमानः प्रजापतिः	१९८९	
वनस्पतिं पर्वमान	मध्वा समङ्ग्धि धारया । सहस्रवल्शं हरितं	आजमानं हिरण्ययम्	१९९०	
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं	पर्वमानस्या गत । वायुर्बृहस्पतिः सूर्यो	ऽग्निरिन्द्रः सृजोषसः	१९९१	

॥ २२३ ॥ (क्र० १०। ७०। १-११)

१९९२-२००२ सुमित्रो वाध्यध्वः । आग्नीसूक्तं= (क्रमेण- १ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ नराशंसः, ३ इळः, ४ बर्हिः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् ।

इमां मे अग्रे समिधं जुषस्व इळस्पदे प्रति हर्या घृताचीम् ।
 वर्ष्मेन् पृथिव्याः सुदिनत्वे अह्नाम् ऊर्ध्वो भव सुक्रतो देवयज्या १९९२
 आ देवानामग्रयावेह यातु नराशंसो विश्वरूपेभिरथैः ।
 ऋतस्य पथा नमसा मियेधो देवेभ्यो देवर्तमः सुष्टुदत् १९९३

शश्चत्तममीकते दूत्याय हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम् । बहिष्पैरश्वैः सुवृता रथेन आ देवान् वक्षि नि षदेह होता	१९९४
वि प्रथतां देवजुष्टं तिरश्चा दीर्घं द्वाधमा सुरभि भूत्वस्मे । अहेळता मनसा देव बहिर् इन्द्रज्येष्ठां उशतो यक्षि देवान्	१९९५
दिवो वा सानु स्पृशता वरीयः पृथिव्या वा मात्रया वि श्रेयध्वम् । उशतीर्वा रो महिना महङ्गिर् देवं रथं रथयुधीरयध्वम्	१९९६
देवी दिवो दुहितरा सुशिल्पे उषासानक्ता सदतां नि योनौ । आ वां देवास उशती उशन्त उरौ सीदन्तु सुभगे उपस्थे	१९९७
ऊर्ध्वो ग्रावा बृहदग्निः समिद्धः प्रिया धामान्यदितेरुपस्थे । पुरोहितावृत्विजा यज्ञे अस्मिन् विदुष्टरा द्रविणमा यजेथाम्	१९९८
तिस्रो देवीर्बहिर्दिदं वरीय आ सीदत चकृमा वः स्योनम् । मनुष्वद् यज्ञं सुधिता हवींषि इळा देवी घृतपदी जुषन्त	१९९९
देवं त्वष्टर्यद्वं चारुत्वमान् इ यदङ्गिरसामभवः सचाभूः । स देवानां पाथ उप प्र विद्वान् उशन् यक्षि द्रविणोदः सुरत्नः	२०००
वनस्पते रशनया नियूया देवानां पाथ उप वक्षि विद्वान् । स्वदाति देवः कृण्वद्धवींषि अर्वतां द्यावापृथिवी हव मे	२००१
आग्ने वह वरुणमिष्टये न इन्द्रं दिवो मरुतो अन्तरिक्षात् । सीदन्तु बहिर्विश्च आ यजत्राः स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	२००२

॥ २२४ ॥ (ऋ० १०।११०।१-११)

११ जमदग्निर्भागवः, रामो वा जामदग्न्यः । आग्नीसूक्तं = (क्रमेण-१ इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा, २ तनूनपात्, ३ इळा, ४ बार्हः, ५ देवीः द्वारः, ६ उषासानक्ता, ७ देव्यौ होतारौ प्रचेतसौ, ८ तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः, ९ त्वष्टा, १० वनस्पतिः, ११ स्वाहाकृतयः) । त्रिष्टुप् । (अथर्व० ५।१२।१-११ [अथर्ववेदे अंगिरा ऋषिः ।] काठक सं० १६।२०; मैत्रायणी सं० ४।१३।३; तै० ब्रा० ३।६।३)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः । आ च वह मित्रमहश् चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः	२००३
तनूनपात् पथ क्रतस्य यानान् मध्वा समञ्जन् त्वदया सुजिह्व । मन्मानि धीभिरुत यज्ञमुन्धन् देवत्रा च कृणुहध्वरं नः	२००४

आजुह्वान ईड्यो वन्द्यश्च आ याह्यग्ने वसुभिः सजोषाः । त्वं देवानामसि यद्बु होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान्	२००५
ग्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्ने अह्नाम् । व्यु प्रथते वितरं वरीयो देवेभ्यो अदितये स्योनम्	२००६
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः । देवीद्वारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः	२००७
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ । दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियं शुक्रपिशं दधाने	२००८
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमाना यज्ञं मनुषो यजध्वै । प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू ग्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता	२००९
आ नो यज्ञं भारती तूर्यमेतु इळा मनुष्वदिह चेतयन्ती । तिस्रो देवीर्बहिरेदं स्योनं सरस्वती स्वपसः सदन्तु	२०१०
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिशुद्रुवनानि विश्वा । तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्	२०११
उपावसृज त्मन्यां समञ्जन् देवानां पार्थ ऋतुथा हवींषि । वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन	२०१२
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञम् अग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यृतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः	२०१३

॥ २२५ ॥ (वा० यजुर्वेद २०।३६-४६; तैत्ति० सं० २।६।८; काठकसं० ३।८।६; मैत्रायणीसं० ३।११।१।)

समिद्धं इन्द्रं उषसामनीके पुरोरुचां पूर्वकृद् वावृधानः । त्रिभिर्देवैस् त्रिधंशता वज्रबाहुर् जघान वृत्रं वि दुरो ववार	२०१४
नराशंशसः प्रति शूरो मिमानस् तनूनपात् प्रति यज्ञस्य धाम । गोभिर्वपावान् मधुना समञ्जन् हिरण्यैश् चन्द्री यजति प्रचेताः	२०१५

मैत्रायणी-पाठभेदाः- २०१४ (१ समिद्धा) (२००४-५ मध्ये 'नराशंसस्य०' इति मन्त्रोऽग्रे वा० यजुर्वेदे अ० २९-२५-३६ द्रष्टव्य)

काठकपाठभेदाः- २०१५ (१ यजतु)

ईडितो देवैर्हरिवाँ २ अभिष्टिर्	आजुह्वानो हविषा शर्धमानः ।	
पुरन्दरो गोत्रभिद् वज्रबाहुर्	आ यातु यज्ञमुप नो जुषाणः	२०१६
जुषाणो बर्हिर्हरिवान् न इन्द्रः	प्राचीनं सीदत् प्रदिशा पृथिव्याः ।	
उरुप्रथाः प्रथमानं स्योनम्	आदित्यैरुक्तं वसुभिः सजोषाः	२०१७
इन्द्रं दुरः कवप्यो धावमाना	वृषाणं यन्तु जनयः सुपत्नीः ।	
द्वारो देवीरभितो वि श्रयन्तां	सुवीरा वीरं प्रथमाना महोभिः	२०१८
उषासानक्ता बृहती बृहन्तं	पर्यस्वती सुदुषे शूरमिन्द्रम् ।	
तन्तुं तत् पेशसा संवर्यन्ती	देवानां देवं यजतः सुरुक्मे	२०१९
दैव्या मिमाना मनुषः पुरुत्रा	होतारो विन्द्रं प्रथमा सुवाचा ।	
मूर्धन् यज्ञस्य मधुना दधाना	प्राचीनं ज्योतिर्हविषा वृधातः	२०२०
तिस्रो देवीर्हविषा वर्धमाना	इन्द्रं जुषाणा जनयो न पत्नीः ।	
अच्छिन्नं तन्तुं पर्यसा सरस्वती	इडा देवी भारती विश्वतूर्तिः	२०२१
त्वष्टा दधच् छुष्ममिन्द्राय वृष्णे	ऽपाकोऽर्चिष्टुर्यशसे पुरुणि ।	
वृषा यजन् वृषणं भूरिरेता	मूर्धन् यज्ञस्य समनक्तु देवान्	२०२२
वनस्पतिरवसृष्टो न पाशैस्	त्मन्या समञ्जश् छमिता न देवः ।	
इन्द्रस्य हव्यैर्जठरं पृणानः	स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन	२०२३
स्तोकानामिन्दुं प्रति शूर इन्द्रो	वृषायमाणो वृषभस् तुराषाट् ।	
घृतप्रुषा मनसा मोदमानाः	स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम्	२०२४

॥ २२६ ॥ (वा० यजुर्वेद २० । ५५-६६; मैत्रा० सं० ३।११।३; काठक सं० ३।८।८; तैत्ति० ब्रा० २।६।१२)

समिद्धो अग्निरश्विना तप्तो घर्मो विराट् सुतः ।

दुहे धेनुः सरस्वती सोमं शुक्रमिहेन्द्रियम् २०२५

मैत्रा० पाठ०- २०१६ (१ गोत्रमृद्); २०१७ (१ ना, २ सीदात्) २०१८ (१ यन्ति); २०१९ (१ पेशस्वती तन्तुना);
२०२० (१ मनसा ; २ होतारा इन्द्रं) २०२१ (१ वृषणं); २०२२ (१ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको)
२०२३ (१ स्वदातु), २०२४ (१ हव्यमुन्दन्त्स्वाहाकृतं जुषता हव्यमिन्द्रः)

काठ० पाठ०- २०१९ (१ पेशस्वती तन्तुना), २०२० (१ मनसा ; २ होतारा इन्द्रं) २०२१ (१ वृषणं),
२०२२ (१ दधदिन्द्राय शुष्ममपाको) २०२४ (१ हव्यमुन्दन्मूर्धन्यज्ञस्य जुषतां स्वाहा)

तनुपा भिषजा सुते ऽश्विनोभा सरस्वती । मध्वा रजांसीन्द्रियम् इन्द्राय पथिभिर्वहान्	२०२६
इन्द्रायेन्दुं सरस्वती नराशंसेन नग्रहुम् । अधातामश्विना मधु भेषजं भिषजा सुते	२०२७
आजुह्वाना सरस्वती इन्द्रायेन्द्रियाणि वीर्यम् । इडाभिरश्विनां विषं समूर्जं स रयिं दधुः	२०२८
अश्विना नमुचेः सुतं सोमं शुक्रं परिस्रुता । सरस्वती तमा भरद् बर्हिषेन्द्राय पातवे	२०२९
क्वथ्यो न व्यचस्वतीर् अश्विभ्यां न दुरो दिशः । इन्द्रो न रोदसी उंभे दुहे कामान् त्सरस्वती	२०३०
उषासानक्तमश्विना दिवेन्द्रं सायमिन्द्रियैः । सञ्जानाने सुपेशसा समञ्जाते सरस्वत्या	२०३१
पातं नो अश्विना दिवा पाहि नक्तं सरस्वति । दैव्या होतारा भिषजा पातमिन्द्रं सचा सुते	२०३२
तिस्रस् त्रेधा सरस्वती अश्विना भारतीडा । तीव्रं परिस्रुता सोमम् इन्द्राय सुषुवुर्मदम्	२०३३
अश्विना भेषजं मधु भेषजं नः सरस्वती । इन्द्रे त्वष्टा यशः श्रियं रूपं रूपमधुः सुते	२०३४
ऋतुथेन्द्रो वनस्पतिः शशमानः परिस्रुता । क्वीलालमश्विभ्यां मधु दुहे धेनुः सरस्वती	२०३५
गोभिर्न सोममश्विना मासरेण परिस्रुता । समधार्तं सरस्वत्या स्वाहेन्द्रै सुतं मधु	२०३६

मैत्रा० पाठ०- २०२६ (१ पथिभिर्वह) ; २०२८ (१ अश्विना इषं) ; २०३३ (१ इन्द्रायासुषुवु०),
२०३६ (१ समधाता)

काठ० पाठ०- २०२८ (१ अश्विना इषं) ; २०३० (१ दुहे), २०३३ (१ इन्द्रायासुषुवु०)
२०३४, (१ द्वितीयऽर्षः, तथा कर्मांकः २०३५ नोपलभ्यते) ; २०३६ (१ समधाता)

॥ २२७ ॥ (वा० यजुर्वेद २१ । १२-२२; मैत्रा० सं० ३।११।११, काठक सं० ३८।१०; तै० ब्रा० २।६।१८)

सर्मिद्धो अग्निः समिधा सुसर्मिद्धो वरेण्यः ।	
गायत्री छन्द इन्द्रियं त्र्यविगौर्वयो दधुः	२०३७
तनूनपांश्च छुचिन्नतस् तनूपाश्च सरस्वती ।	
उष्णिहा छन्द इन्द्रियं दित्यवाद् गौर्वयो दधुः	२०३८
इडाभिरग्निरिड्यः सोमो देवो अमर्त्यः ।	
अनुष्टुप् छन्द इन्द्रियं पञ्चाविगौर्वयो दधुः	२०३९
सुबर्हिर्गग्निः पूषण्वान् स्तीर्णवर्हिर्मर्त्यः ।	
बृहती छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सो गौर्वयो दधुः	२०४०
दुरो देवीर्दिशो महीर् ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः ।	
पङ्क्तिश् छन्द इहेन्द्रियं तुर्यवाद् गौर्वयो दधुः	२०४१
उषे यद्वा सुपेशसा विश्वे देवा अमर्त्याः ।	
त्रिष्टुप् छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाद् गौर्वयो दधुः	२०४२
दैव्या होतारा भिषजा इन्द्रेण सयुजा युजा ।	
जगती छन्द इन्द्रियम् अनड्वान् गौर्वयो दधुः	२०४३
तिस्र इडा सरस्वती भारती मरुतो विशः ।	
विराट् छन्द इहेन्द्रियं धेनुर्गौर्न वयो दधुः	२०४४
त्वष्टा तुरीपो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्धना ।	
द्विपदा छन्द इन्द्रियम् उक्षा गौर्न वयो दधुः	२०४५
शमिता नो वनस्पतिः सविता प्रसुवन् भगम् ।	
ककुप् छन्द इहेन्द्रियं वशा वेहद्वयो दधुः	२०४६
स्वाहा यज्ञं वरुणः सुक्षत्रो भेषजं करत् ।	
अतिच्छन्दा इन्द्रियं बृहद् ऋषभो गौर्वयो दधुः	२०४७

मैत्रा० पाठ०— २०३७ (१ त्रियवि०); २०३८ (१ अयं प्रथमोऽर्थो न दश्यते; २ उष्णिक्); २०४१ (१ इन्द्रियं); २०४४ (१ तिस्रो देवीरिडा मही; २ इन्द्रियं), २०४६ (१ ऋषभो गौर्वयो), २०४७ (१ बृहद्वशा वेहद्वयो)

काठ० पाठ०— २०३७ (१ त्रियवि०), २०४१ (२ इहेन्द्रियं); २०४७ (१ अतिच्छन्द; २ बृहद्वयो)

॥ २२८ ॥ (चा० यजुर्वेद २१।२९—४०; मैत्रायणी सं० ३।११।२; तै० ब्रा० २।६।११)

होता यक्षत् समिधाग्निमिडस्पदे—ऽश्विनेन्द्रं सरस्वती—मजो धूम्रो न गोधूमैः कुर्वलै-
भेषजं मधु शष्पैर्न तेज इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०४८

होता यक्षत् तनूनपात् सरस्वती—मविर्मेधो न भेषजं पथा मधुमतां भर—अश्विनेन्द्राय
वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०४९

होता यक्षन्नराशं न नग्रहं पतिं सुर्या भेषजं मेषः सरस्वती भिषग् रथो न
चन्द्रश्चश्विनो—वृषा इन्द्रस्य वीर्यं बदरैरुपवाकाभिर्भेषजं तोक्मभिः पयः सोमः
परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५०

होता यक्षदिडेडित आजुह्वानः सरस्वती—मिन्द्रं बलेन वर्धय—वृषभेण गर्वेन्द्रिय—म-
श्विनेन्द्राय भेषजं यवैः कर्कन्धुभि—र्मधु लाजैर्न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं
मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५१

होता यक्षद् बहिरूर्णम्रदा भिषङ् नासत्या भिषजाश्विनाश्चा शिशुमती भिषग् धेनुः
सरस्वती भिषग् दुह इन्द्राय भेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०५२

होता यक्षद् दुरो दिशः कवण्यो न व्यचस्वती—रश्विभ्यां न दुरो दिशं इन्द्रो न
रोदसी दुधे दुहे धेनुः सरस्वत्य—श्विनेन्द्राय भेषजं शुक्रं न ज्योतिरिन्द्रियं पयः
सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५३

होता यक्षत् सुपेशसोषे नक्तं दिवा—श्विना समञ्जाते सरस्वत्या त्विषिमिन्द्रे न
भेषजं इयेनो न रजसा हृदा श्रिया न मासरं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५४

मैत्रा० पाठ० - २०४९ (१ मधुमदाभरण०; २ वेत्वाज्यस्य); २०५० (१ सुराया; २ वेत्वाज्यस्य);
२०५२ (१ भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं); २०५३ (१ दिशा; २ 'अश्विनेन्द्राय भेषजं' इति न
दृश्यते) २०५४ (१ संजानाने सुपेशसा समञ्जाते, २ त्विषिमिन्द्रेण; ३ हृदा पयः; ४ वीतामा-
ज्यस्य)

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजाश्विनेन्द्रं न जागृवि दिवा नक्तं न भेषजैः शृषुं
सरस्वती भिषक् सीसेन दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य
होतर्यजं २०५५

होता यक्षत् तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपसो रूपमिन्द्रे हिरण्यं माश्विनेडा न
भारती वाचा सरस्वती महं इन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५६

होता यक्षत् सुरेतसमृषभं नर्योपसं त्वष्टारमिन्द्रमश्विना भिषजं न सरस्वतीमोजो न
जूतिरिन्द्रियं वृको न रभसो भिषग् यज्ञः सुर्यो भेषजं श्रिया न मासरं
पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५७

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं भीमं न मन्युं राजानं व्याघ्रं नमसा-
श्विना भामं सरस्वती भिषगिन्द्राय दुह इन्द्रियं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु
व्यन्त्वा ज्यस्य होतर्यजं २०५८

होता यक्षदग्निं स्वाहाज्यस्य स्तोकानां स्वाहा मेदसां पृथक् स्वाहा छागम-
श्विभ्यां स्वाहा भेषं सरस्वत्यै स्वाहा ऋषभमिन्द्राय सिंहाय सहस्र इन्द्रियं
स्वाहाग्निं न भेषजं स्वाहा सोममिन्द्रियं स्वाहेन्द्रं सुत्रामाणं सवितारं वरुणं
भिषजां पतिं स्वाहा वनस्पतिं ग्रियं पाथो न भेषजं स्वाहा देवा आज्यपा
जुषाणो अग्निभेषजं पयः सोमः परिस्रुता घृतं मधु व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २०५९

॥ २२८ ॥ (वा० यजुर्वेद २७। ११-२२; काठक सं० १८। १७; मैत्रा० सं० २। १२। ६)

ऊर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोचींश्च्यवेः ।

द्युमत्तमा सुप्रतीकस्य सूनोः

२०६०

तनूनपादसुरो विश्ववेदा देवो देवेषु देवः । पथो अनक्तु मध्वा घृतेन

२०६१

मध्वा यज्ञं नक्षसे प्रीणानो नराशंसो अग्ने । सुकृदेवः सविता विश्ववारः

२०६२

मैत्रा० पाठ०— २०५५ (१ वीतामाज्यस्य); २०५६ (१ रूपमिन्द्रो; २ महा); २०५७ (१ यक्षत्त्वष्टारं
रूपकृतं सुपेशसं वृषभं; २ सुराया; ३ वेत्वाज्यस्य); २०५८ (१ वेत्वाज्यस्य); २०५९ (१ स्वाहा;
२ भेषजैः; ३ ०मिन्द्रियैः) [पंक्तिपदच्छेदपद्धतिः क्वचिद्भिन्ना] २०६० (१ देवेभ्यो देवयानान्)
२०६२ (१ नक्षति; २ अग्निः;)

काठ० पाठ०— [पंक्तिच्छेदपद्धतिभिन्ना] २०६१ (१ घृतेन... ..प्रीणानः इत्येव एका पंक्तिः) २०६२ (१ नक्षति)

अच्छार्यमेति शर्वसा घृतेनेडानो वह्निर्ममसा ।

अग्निं सुचो अध्वरेषु ग्रयत्सु

२०६३

स यक्षदस्य महिमानमग्नेः स ई मन्द्रा सुप्रयसः ।

वसुश्रेतिष्ठो वसुधातमश्च

२०६४

द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता ददन्ते अग्नेः ।

उरुव्यचसो धाम्ना पत्यमानाः

२०६५

ते अस्य योषणे दिव्ये न योनी उषासानक्ता ।

इमं यज्ञमवतामध्वरं नः

२०६६

दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं नो ऽग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् ।

कृणुतं नः स्विष्टिम्

२०६७

तिस्रो देवीर्बहिरेदं सदन्तु इडा सरस्वती भारती ।

मही गृणाना

२०६८

तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु त्वंष्टा सुवीर्यम् ।

रायस्पोषं वि प्यतुं नाभिमस्मे

२०६९

वनस्पतेऽव सृजा रराणस्मना देवेषु ।

अग्निर्हव्यं शमिता स्रदयाति

२०७०

अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदं इन्द्राय हव्यम् ।

विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम्

२०७१

॥ २३० ॥ (अथर्व० कां० ५।२७)

१—१२ ब्रह्मा । अग्निः । १ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्; २ द्विपदा साम्नी भुरिगनुष्टुप्; ३ द्विपदार्ची बृहती;

४ द्विपदा साम्नी भुरिगबृहती; ५ द्विपदा साम्नी त्रिष्टुप्; ६ द्विपदा विराण्नाम गायत्री;

७ द्विपदा साम्नी बृहती; ८ संस्तारपङ्क्तिः; ९ षट्पदानुष्टुगर्भा पराति-

जगती, १०—१२ पुरउष्णिग (२-७ एकावसाना) ।

उर्ध्वा अस्य समिधो भवन्ति ऊर्ध्वा शुक्रा शोचीष्यग्नेः ।

द्युमत्तमा सुप्रतीकः सस्रनुस् तनूनपादसुरो भूरिपाणिः

२०७२

मैत्रा० पाठ० - २०६४ (१ स ई मन्द्रा सुप्रयसा स्तरीमन् । बहिषो मित्रमहाः) २०६५ (१ विश्वा); २०६७ (१ होतारा ऊर्ध्वमिमध्वरं; २ स्विष्टम्); २०६८ (१ स्योनम्; २ मही शब्दः नास्ति) २०६९ (१ त्वष्टः) २०७० (१ विष्य; २ देवेभ्यः) २०७१ (१ जातवेदा; २ देवेभ्यः)

काठ० पाठ० - २०६३ (१ अच्छार्य यन्ति; २ घृताचीः ईडाना वह्निः; २०६४ (१ स्तनी मन्द्रसुप्रयक्षुः); २०६६ (१ दिव्यो न योनिरुषासानक्तामेः); २०६७ (१ होतारोर्ध्वमिमध्वरं; २ स्विष्टम्) २०६८ (१ महीर्गृणानाः); २०६९ (१ त्वष्टः पोषाय विष्य नाभिमस्मे) २०७० (१ सृज; ३ हविः)

देवो देवेषु देवः पथो अनक्ति मध्वा घृतेन ।	२०७३
मध्वा यज्ञं नक्षति प्रैणानो नराशंसो अग्निः सुकृद् देवः सविता विश्ववारः	२०७४
अच्छायमेति शर्वसा घृता चिदीडानो वह्निर्ममसा	२०७५
अग्निः सुचो अध्वरेषु प्रयक्षु स यक्षदस्य महिमानमग्नेः	२०७६
तुरी मन्द्रासु प्रयक्षु वसवश्चातिष्ठन् वसुधातरश्च	२०७७
द्वारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं रक्षन्ति विश्वहा	२०७८
उरुव्यचंसाऽग्नेर्धाम्ना पत्यमाने ।	
आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्तेमं यज्ञमवतामध्वरं नः	२०७९
दैवा होतार उर्ध्वम् अध्वरं नोऽग्नेर्जिह्वया अभि गृणत गृणतां नः स्वष्टिये ।	
तिस्रो देवीर्बहिरेदं सदन्तामिडा सरस्वती मही भारती गृणाना	२०८०
तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरुक्षु । देवं त्वष्टा रायस्पोषं विष्य नाभिमस्थ	२०८१
वनस्पतेऽव सृजा रराणः । तमनां देवेभ्यो अग्निर् हव्यं शमिता स्वदयतु	२०८२
अग्ने स्वाहा कृणुहि जातवेदः । इन्द्राय यज्ञं विश्वे देवा हविरिदं जुषन्ताम्	२०८३

॥ २३१ ॥ (वा० यजुर्वेदे २८।१-११)

होता यक्षत् समिधेन्द्रमिडस्पदे नाभा पृथिव्या अधि ।	
दिवो वर्ष्मन् त्समिध्यत ओजिष्ठश्चर्षणीसहां वेत्वाज्यस्य होतयजं	२०८४
होता यक्षत् तनूनपातमूतिभिर्जेतारमपराजितम् ।	
इन्द्रं देवथं स्वर्विदं पथिभिर्मधुमत्तमैर्नराशथंसेन तेजसा वेत्वाज्यस्य होतयजं	२०८५
होता यक्षदिडाभिरिन्द्रमीडितमाजुह्वानममर्त्यम् ।	
देवो देवैः सर्वाभ्यो वज्रहस्तः पुरन्दुरो वेत्वाज्यस्य होतयजं	२०८६
होता यक्षद् बर्हिषीन्द्रं निषद्रं वृषभं नर्योपसम् ।	
वसुभी रुद्रैरादित्यैः सयुग्भिर्बहिरासदुद् वेत्वाज्यस्य होतयजं	२०८७
होता यक्षदोजो न वीर्युथं सहो द्वार इन्द्रमवर्धयन् ।	
सुग्रायणा अस्मिन् यज्ञे वि श्रयन्तामृतावृधो द्वार इन्द्राय मीढुषे व्यन्त्वाज्यस्य होतयजं	२०८८
होता यक्षदुषे इन्द्रस्य धेनू सुदुधे मातरा मही ।	
सवातरौ न तेजसा वृत्समिन्द्रमवर्धतां वीतामाज्यस्य होतयजं	२०८९

होता यक्षद् दैव्या होतारा भिषजा सखाया हविषेन्द्रं भिषज्यतः ।

कवी देवौ प्रचेतसाविन्द्राय धत्त इन्द्रियं वीतामाज्यस्य होतर्यज २०९०

होता यक्षत् तिस्रो देवीर्न भेषजं त्रयस्त्रिधातवोऽपस इडा सरस्वती भारती महीः ।

इन्द्रपत्नीर्हविष्मतीर्व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०९१

होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्रं देवं भिषजं सुयजं घृतश्रियम् ।

पुरुषं सुरेतसं मघोनमिन्द्राय त्वष्टा दधदिन्द्रियाणि वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९२

होता यक्षद् वनस्पतिं शमितारं शतक्रतुं धियो जोष्टारमिन्द्रियम् ।

मध्वा समञ्जन पथिभिः सुगेभिः स्वदाति यज्ञं मधुना घृतेन वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९३

होता यक्षदिन्द्रं स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा

स्तोकानां स्वाहा स्वाहाकृतीनां स्वाहा हव्यस्रक्तीनाम् ।

स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा इन्द्र आज्यस्य व्यन्तु होतर्यज २०९४

॥ २३२ ॥ (वा० यजुर्वेद २८ । २४-३४)

होता यक्षत् समिधानं महद् यशः सुसमिद्धं वरेण्यमग्निमिन्द्रं वयोधसम् ।

गायत्रीं छन्द इन्द्रियं त्र्यविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९५

होता यक्षत् तनूनपातमुद्भिदं यं गर्भमादितिर्दधे शुचिमिन्द्रं वयोधसम् ।

उष्णिहं छन्द इन्द्रियं दित्यवाहं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९६

होता यक्षदीडेन्यमीडितं वृत्रहन्तममिडाभिरीडयं सहः सोममिन्द्रं वयोधसम् ।

अनुष्टुभं छन्द इन्द्रियं पञ्चाविं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९७

होता यक्षत् सुबर्हिषं पूषण्वन्तममर्त्यं सीदन्तं बर्हिषि प्रियेऽमृतेन्द्रं वयोधसम् ।

बृहतीं छन्द इन्द्रियं त्रिवत्सं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २०९८

होता यक्षद् व्यचस्वतीः सुप्रायणा क्रतावृधो द्वारो देवीर्हिरण्ययीर्ब्रह्माणमिन्द्रं वयोधसम् ।

पङ्क्तिं छन्द इहेन्द्रियं तुर्यवाहं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २०९९

होता यक्षत् सुपेशसा सुशिल्पे बृहती उभे नक्तोषासा न दर्शते विश्वमिन्द्रं वयोधसम् ।

त्रिष्टुभं छन्द इहेन्द्रियं पष्ठवाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यज २१००

होता यक्षत् प्रचेतसा देवानामुत्तमं यशो होतारा दैव्या कवी सयुजेन्द्रं वयोधसम् ।

जगतीं छन्द इन्द्रियमनुड्वाहं गां वयो दधद् वीतामाज्यस्य होतर्यज २१०१

होता यक्षत् पेशस्वतीस्तिष्ठो देवीर्हिरण्ययीभरितीर्बृहतीर्महीः पतिमिन्द्रं वयोधसम् ।
 विराजं छन्द इहेन्द्रियं धेनुं गां न वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २१०२
 होता यक्षत् सुरतंसं त्वष्टारं पुष्टिवर्धनं रूपाणि विभ्रतं पृथक् पुष्टिमिन्द्रं वयोधसम् ।
 द्विपदं छन्द इन्द्रियमुक्षाणं गां न वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं २१०३
 होता यक्षद् वनस्पतिंश्च शमितारंश्च शतक्रतुंश्च हिरण्यपर्णमुक्थिनंश्च
 रशनां विभ्रतं वशिं भगमिन्द्रं वयोधसम् ।
 ककुभं छन्द इहेन्द्रियं वशां वेहतं गां वयो दधद् वेत्वाज्यस्य होतर्यजं २१०४
 होता यक्षत् स्वाहाकृतीरग्निं गृहपतिं पृथग् वरुणं भेषजं कविं क्षत्रमिन्द्रं वयोधसम् ।
 अतिच्छन्दसं छन्द इन्द्रियं बृहद्वषभं गां वयो दधद् व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यजं २१०५

॥ २३३ ॥ (वा० यजुर्वेद २९ । १-११ काठकः सं० ५।६।२; मैत्रा० सं० ३ । १६ । २; तै० ब्रा० ५।१।११)

समिद्धो अञ्जन्कदरं मतीनां घृतमग्ने मधुमत् पिन्वमानः ।
 वाजी बहन् वाजिनं जातवेदो देवानां वक्षि प्रियमा सधस्थम् २१०६
 घृतेनाञ्जन् त्सं पृथो देवयानान् प्रजानन् वाज्यप्येतु देवान् ।
 अनु त्वा सप्ते प्रदिशः सचन्तांश्च स्वर्धामस्मै यजमानाय धेहि २१०७
 ईड्यश्वासि वन्द्यश्च वाजिन्नाशुश्वासि मेध्यश्च सप्ते ।
 अग्निष्ठा देवैर्वसुभिः सजोषाः प्रीतं वह्निं बहन् जातवेदाः २१०८
 स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा जुषाणोरु पृथु प्रथमानं पृथिव्याम् ।
 देवेभिर्युक्तमदितिः सजोषाः स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु २१०९
 एता उ वः सुभगा विश्वरूपा वि पक्षोभिः श्रयमाणा उदातैः ।
 ऋग्वाः सतीः कवेषः शुम्भमाना द्वारो देवीः सुप्रायैणा भवन्तु २११०
 अन्तरा मित्रावरुणा चरन्ती मुखं यज्ञानामभि संविदाने ।
 उषासा वांश्च सुहिरण्ये सुशिल्पे ऋतस्य योर्नाविह सादयामि २१११

मैत्रा० पाठ०— २१०७ (१ तनूनपात्सं; २ स्वधा देवैर्); २१०८ (१ मेध्यश्वासि); २१०९ (१ देवेभिरक्तम०)
 २११० (१ विश्ववारा); २१११ (४ योना इह)

काठ० पाठ०— २१०९ (१ देवेभिरक्तम०); २११० (१ विश्ववारा; २ कवपः; ३ सुप्रयाणा) २१११ (१ योना इह)

प्रथमा वाँध सरथिना सुवर्णा देवौ पश्यन्तौ भुवनानि विश्वा ।	
अपिप्रथं चोदना वां मिमांसा होतारा ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता	२११२
आदित्यैर्नो भारती वष्टु यज्ञं सरस्वती सह रुद्रैर्न आवीत ।	
इडोपहूता वसुभिः सजोषा यज्ञं नो देवीरमृतैषु धत्त	२११३
त्वष्टा वीरं देवकामं जजान त्वष्टुरवीं जायत आशुरश्वः ।	
त्वष्टेर्दं विश्वं भुवनं जजान बहोः कर्तारमिह यक्षि होतः	२११४
अश्वो घृतेन तमन्या समक्तं उप देवाँ २ क्रतुशः पार्थ एतु ।	
वनस्पतिर्देवलोकं प्रजानन्नग्निना हव्या स्वदितानि वक्षत	२११५
प्रजापतेस्तपसा वावृधानः सद्यो जातो दधिषे यज्ञमग्रे ।	
स्वाहाकृतेन हविषा पुरोगा याहि साध्या हविरदन्तु देवाः	२११६

॥ २३४ ॥ (वा० यजुर्वेद २९।२५-३६; काठकसं० १६।२०, मैत्रा० सं० ४।१३।३, तैत्ति० ब्रा० २।६।३)

समिद्धो अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान् यजसि जातवेदः ।	
आ च वहं मित्रमहश्चिकित्वान् त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः	२११७
तनूनपात् पथ क्रतस्य यानान् मध्वा समञ्जन् त्स्वदया सुजिह्व ।	
मन्मानि धीभिरुत यज्ञमुन्धन् देवत्रा च कृणुह्यध्वरं नः	२११८
नराशंशसस्य महिमानमेषामुप स्तोषाम यजतस्य यज्ञैः ।	
ये सुक्रतवः शुचयो धियंधाः स्वदन्ति देवा उभयानि हव्या	२११९
आजुह्वानं ईड्यो वन्द्यश्वा याह्यग्रे वसुभिः सजोषाः ।	
त्वं देवानामसि यद्ध होता स एनान् यक्षीषितो यजीयान्	२१२०
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा पृथिव्या वस्तोरस्या वृज्यते अग्रे अह्वाम् ।	
व्युं प्रथते वितरं वरीयो देव्येभ्यो अर्दितये स्योनम्	२१२१
व्यचस्वतीरुर्विया वि श्रयन्तां पतिभ्यो न जनयः शुम्भमानाः ।	
देवीर्द्धारो बृहतीर्विश्वमिन्वा देवेभ्यो भवत सुप्रायणाः	२१२२

मैत्रा० पाठ०-- २११३ (१ स्योनं कृण्वाना सुविते दधातु) २११४ (१ त्वष्टेमा विश्वा भुवना) २११५ (१ समक्षाः २ देवं); २११९ (१ स्वदन्तु); २१२० (१ आजुह्वाना)

काठ० पाठ०-- २११९ (१ गमिषे; २ मख्या); २११९ अयं मन्त्रो नास्ति ।

आ सुष्वयन्ती यजते उपाके उषासानक्ता सदतां नि योनौ । दिव्ये योषणे बृहती सुरुक्मे अधि श्रियंश्च शुक्रपिशं दधाने	२१२३
दैव्या होतारा प्रथमा सुवाचा मिमांसा यज्ञं मनुषो यजध्वै । प्रचोदयन्ता विदथेषु कारू प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा दिशन्ता	२१२४
आ नो यज्ञं भारती तूर्यमेत्विडा मनुष्वदिह चेतयन्ती । तिस्रो देवीर्बहिरेदं स्योनं सरस्वती स्वर्षसः सदन्तु	२१२५
य इमे द्यावापृथिवी जनित्री रूपैरपिंश्चद् भुवनानि विश्वा । तमद्य होतरिषितो यजीयान् देवं त्वष्टारमिह यक्षि विद्वान्	२१२६
उपावसृज त्मन्या समञ्जन् देवानां पार्थ ऋतुथा हवींश्चिषि । वनस्पतिः शमिता देवो अग्निः स्वदन्तु हव्यं मधुना घृतेन	२१२७
सद्यो जातो व्यमिमीत यज्ञमग्निर्देवानामभवत् पुरोगाः । अस्य होतुः प्रदिश्यतस्य वाचि स्वाहाकृतं हविरदन्तु देवाः	२१२८

॥ २३५ ॥ (ऋग्वेदीय-परिशिष्ट-प्रैषाध्याये १-१३ । मैत्रा० सं० ४ । १३ । २; २०० । १; काठक
सं० १५ । १३; तै० ब्रा० ३ । ६ । २ । १)

होता यक्षदग्निं समिधा सुषमिधा समिद्धं नाभा पृथिव्याः संगथे वामस्य । वर्ष्मन् दिव इळस्पदे वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१२९
होता यक्षत् तनूनपातमदितेर्गर्भं भुवनस्य गोपाम् । मध्वाद्य देवो देवेभ्यो देवयानान् पथो अनक्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३०
होता यक्षन्नराशंसं नृशस्त्रं प्रणेत्रं । गोभिर्वपावान् तस्याद् वीरैः शक्तीवान् रथैः प्रथमयावा हिरण्यैश्चन्द्री वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३१
होता यक्षदग्निमीळं ईळितो देवो देवा आवक्षद्दूतो हव्यवाळमूरैः । उपेमं यज्ञमुपेमो देवो देवहूतिमवर्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज	२१३२

मैत्रा० पाठ०- २१२८ मंत्रः नोपलभ्यते; २१३१; (१ नृशस्तं; नृःप्रणेत्रं); २१३२ (१ द्वमिमिड; २ देवं
आ च वक्षद्, ३ ०मूरा),

काठ० पाठ०- २१२९ (१ समिधं); २१३१ अयं मन्त्रः नोपलभ्यते; २१३२ (४ देवहूतिं वेत्वा०);

होता यक्षद् बर्हिः सुष्टरीमोर्णप्रदा अस्मिन् यज्ञे वि च प्र च प्रथताँ स्वासस्थं देवेभ्यः ॥
एमेनदद्य वसवो रुद्रा आदित्याः सदैन्तु प्रियमिन्द्रस्यास्तु वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३३

होता यक्षद् दुर ऋष्याः कवष्यो कोषधावनीरुद्राताभिर्जिहतां विपक्षोभिः श्रयताँ ।
सुग्रायणा अस्मिन् यज्ञे विश्रयन्तामृतावृधो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१३४

होता यक्षदुषासानक्ता बृहती सुपेशसा नूँःपतिभ्यो योनिं कृण्वाने ।
संस्मयमाने इन्द्रेण देवैरेदं बर्हिः सीदतां वीतामाज्यस्य होतर्यज २१३५

होता यक्षद् दैव्या होतारा मन्द्रा पोतारा कवी प्रचेतसा ।
स्विष्टमद्यान्यः करदिषा स्वभिगूर्तमन्य ऊर्जा सतवसेमं यज्ञं दिवि
देवेषु धत्तां वीतामाज्यस्य होतर्यज २१३६

होता यक्षत् तिस्रो देवीरपसामपस्तमा अच्छिद्रमद्येदमपस्तन्वतां ।
देवेभ्यो देवीर्देवमपो व्यन्त्वाज्यस्य होतर्यज २१३७

होता यक्षत् त्वष्टारमर्चिष्टमपाकं रेतोधां विश्रवसं यशोधां ।
पुरुषमकामकर्शनं सुपोषः पोषैः स्यात् सुवीरो वीरैर्वेत्वाज्यस्य हातर्यज २१३८

होता यक्षद् वनस्पतिमुपावस्रक्षद्वियो जोष्टारं शशमं नरः ।
स्वदान् स्वधितिर्क्रतुथाद्य देवो देवेभ्यो हव्यवाद् वेत्वाज्यस्य होतर्यज २१३९

अजैदग्निरसनद्वाजं नि देवो देवेभ्यो हव्यवाद् प्रांजोभिर्हिन्वानो धेनाभिः ।
कल्पमानो यज्ञस्यायुः प्रतिरन्नुपप्रेष्य होतर्हव्या देवेभ्यः २१४०

होता यक्षदग्निं स्वाहाज्यस्य स्वाहा मेदसः स्वाहा स्तोकानां स्वाहा
स्वाहाकृतीनां स्वाहा हव्यसूक्तीनाम् ॥

स्वाहा देवा आज्यपा जुषाणा अग्न आज्यस्य व्यन्तु होतर्यज २१४१

मैत्रा० पाठ०- २१३३ (१ देवेभ्यः, स्वदन्तु); २१३४ (१ श्रयताँ); २१३५ (नृपतिभ्यो);
२१३९ (१ स्वदात्, २ हव्यावाद्); २१४०-२१४२ मन्त्राः नोपलभ्यन्ते ।

काठ० पाठ०- २१३४ (१ श्रयताँ); २१३६ (१ करत्स्वभिः, २ ०मन्यस्वतसेमं); २१३८ (१ ०मचिष्टुमपाकं)
२१३९ (१ स्वदात्); २१४० अयं मन्त्रो नोपलभ्यते ।

अथर्ववेदेऽग्निमन्त्राः ।

(अथर्ववेदे कां० १, सू० ९, मं० ३-४ अथर्वा । त्रिष्टुप् ।)

येनेन्द्राय समभरुः पर्या—स्युत्तमेन ब्रह्मणा जातवेदः ।
 तेन त्वमग्न इह वर्धयेमं संजातानां श्रैष्ठ्य आ धेद्येनम् २१४२
 ऐषां यज्ञमुत वर्चो ददेऽहं रायस्पोषमुत चित्तान्यग्ने ।
 सपत्ना अस्मदधरे भवन्तूत्तमं नाक्रमधि रोहयेमम् २१४३

(अथर्व० २।१९।१-४। विचृद्विषमा गायत्री, २१४८ भुरिग्विषमा ।)

अग्ने यत् ते तपस्तेन तं प्रति तप योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४४
 अग्ने यत् ते हरस्तेन तं प्रति हर योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४५
 अग्ने यत् तेऽर्चिस्तेन तं प्रत्यर्च योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः । २१४६
 अग्ने यत् ते शोचिस्तेन तं प्रति शोच योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४७
 अग्ने यत् ते तेजस्तेन तमतेजसं कृणु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मः २१४८

(अथर्व० २।२९।१-२। २१४९ अनुष्टुप्, २१५० त्रिष्टुप् ।)

पार्थिवस्य रस देवा भगस्य तन्वोरे बले ।
 आयुष्यमिस्मा अग्निः सूर्यो वर्च आ धाद् बृहस्पतिः २१४९
 आयुरसौ धेहि जातवेदः प्रजां त्वष्टरधिनिधेह्यस्मै ।
 रायस्पोषं सवितरा सुवास्मै शतं जीवाति शरदस्तवायम् २१५०

(अथर्व० २।३४।३। त्रिष्टुप् ।)

ये बध्यमानमनु दीध्याना अन्वैक्षन्त मनसा चक्षुषा च ।
 अग्निष्ठानग्ने प्र मुमोक्तु देवो विश्वकर्म प्रजया संरराणः २१५१

(अथर्व० कां० ३।१।१-३, ५-६। २१५२ त्रिष्टुप्, २१५३ विराङ्गर्भा भुरिक, २१५४ अनुष्टुप्, २१५६ विराट्पुर उष्णिक् ।)

अग्निर्नः शत्रून् प्रत्येतु विद्वान् प्रतिदहन्नभिः शस्तिमरातिम् ।
 स सेनां मोहयतु परेषां निर्हस्ताश्च कृणवज्जातवेदाः २१५२

यूयमुग्रा मरुत ईदृशे स्था—भि प्रेतं मृणतु सहध्वम् ।
 अमीमृणन् वसवो नाथिता इमे अग्निर्ह्येषां दूतः प्रत्येतुं विद्वान् २१५३
 अग्नित्रसेनां मघवन् अस्मान् छत्रूयतीमभि ।
 युवं तानिन्द्र वृत्रहन् अग्निश्च दहतं प्रति २१५४
 इन्द्रः सेनां मोहयतु मरुतो मन्त्वोर्जसा ।
 चक्षूंष्यागिरा दत्तां पुनरेतु पराजिता २१५५

(अथर्व० ३।२।१—३।२१५६ त्रिष्टुप् ; २१५७—५८ अनुष्टुप् ।)

अग्निर्नो दूतः प्रत्येतुं विद्वान् प्रतिदहन्नभिश्चस्तिमरातिम् ।
 स चित्तानि मोहयतु परेषां निर्हस्ताश्च कृणवज्जातवेदाः २१५६
 अयमग्निर्मूमुहद् यानि चित्तानि वो हृदि ।
 वि वो धमत्वोर्कसः प्र वो धमतु सर्वतः २१५७
 इन्द्रं चित्तानि मोहयन्नुर्वाङ्मकूत्या चर ।
 अग्नेर्वार्तस्य धाज्या तान् विषूचो वि नाशय २१५८

(अथर्व० ३।३।१। त्रिष्टुप्)

अचिक्रदत् स्वपा इह भुवदग्ने व्यचिस्व रोदसी उरूची ।
 युञ्जन्तु त्वा मरुतो विश्ववेदस आमुं नय नमसा रातहव्यम् २१५९

(अथर्व० ३।४।३)

अच्छ त्वा यन्तु हविनः सज्जाता अग्निर्दूतो अजिरः सं चरातै ।
 जायाः पुत्राः सुमनसो भवन्तु ब्रह्म बलिं प्रति पश्यासा उग्रः २१६०

(अथर्व० ३।२७।१। पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ।)

प्राची दिग्भिरधिपतिसितो रक्षितादित्या इषवः ।
 तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।
 योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस् तं वो जम्भे दध्मः २१६१

(अथर्व० ४।४।६। भुरिक् ।)

अद्याग्ने अद्य सवित—रद्य देवि सरस्वति ।
 अद्यास्य बह्वणस्पते धनुरिवा तानया पसः २१६२

(अथर्व० ५।८।१-३। अनुष्टुप् २१६४ इयवसाना षट्पदा जगती ।)

वैकङ्कतेनेधमेन देवेभ्य आज्यं वह ।
 अग्ने ताँ इह मादय सर्व आ यन्तु मे हवम् २१६३
 इन्द्रा याहि मे हवम् इदं करिष्यामि तच्छृणु ।
 इम ऐन्द्रा अतिसरा आकूतिं सं नमन्तु मे ।
 तेभिः शकेम वीर्यं जातवेदस्तनूवशिन् २१६४
 यदुसावमुतो देवा अदेवः संश्रिकीर्षति ।
 मा तस्याग्निर्हव्यं वाक्षीद्वयं देवा अस्य मोषं गुर्ममैव हवमेतन २१६५

(अथर्व ५।२४।२। चतुष्पदातिशक्ती ।)

अग्निर्वनस्पतीनाम् अधिपतिः स मावतु ।
 अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां प्रतिष्ठायामस्यां
 चित्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा २१६६

(अथर्व० ५।२८।१-१४ । त्रिष्टुप्. २१७२ पञ्चपदातिशक्ती २१७३, ७५, ७६ ७८
 ककुम्भत्यनुष्टुप् २१७९ पुरउष्णिक् ।)

नवं ग्राणान् नवभिः सं मिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।
 हरिते त्रीणि रजते त्रीणि अयसि त्रीणि तपसाविष्टितानि २ ६७
 अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा भूमिरापो द्यौरन्तरिक्षं प्रदिशो दिशश्च ।
 आर्तवा क्रतुभिः संविदाना अनेन मा त्रिवृता पारयन्तु २१६८
 त्रयः पोषास्त्रिवृतिं श्रयन्ताम् अनक्तं पूषा पर्यसा घृतेन ।
 अन्नस्य भूमा पुरुषस्य भूमा भूमा पशूनां त इह श्रयन्ताम् २१६९
 इममादित्या वसुना समुक्षते ममग्ने वर्धय वावृधानः ।
 इममिन्द्र सं सृज वीर्येणास्मिन् त्रिवृच्छ्रयतां पोषयिष्णु २१७०
 भूमिष्ठा पातु हरितेन विश्वभृदग्निः पिपृत्वयसा सजोषाः ।
 वीरुद्भिष्टे अर्जुनं संविदानं दक्षं दधातु सुमनस्यमानम् २१७१
 त्रेधा जातं जन्मनेदं हिरण्यमग्नेरेकं प्रियतमं बभूव सोमस्यैकं हिमितस्य परापतत् ।
 अपामेकं वेधसां रेत आहुस् तत् ते हिरण्यं त्रिवृदुस्त्वायुषे २१७२

त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । त्रेधामृतस्य चक्षुषं त्रीण्यायूषि तेऽकरम्	२१७३
त्रयः सुपर्णास्त्रिवृता यदार्यन् एकाक्षरमभिसंभूय शक्राः । प्रत्यौहन् मृत्युममृतेन साकम् अन्तर्दधाना दुरितानि विश्वा	२१७४
दिवस्त्वा पातु हरितं मध्यात् त्वा पात्वर्जुनम् । भूम्या अयस्मयं पातु प्रागाद् देवपुरा अयम्	२१७५
इमास्तिस्रो देवपुरास्तास्त्वा रक्षन्तु सर्वतः । तास्त्वं विभ्रद्वर्चस्व्युत्तरो द्विषतां भव	२१७६
पुरं देवानाममृतं हिरण्यं य आबेधे प्रथमो देवो अग्ने । तस्मै नमो दश प्राचीः कृणोम्यनु मन्यतां त्रिवृदाबधे मे	२१७७
आ त्वा चृतत्वयमा पूषा बृहस्पतिः । अहर्जातस्य यन्नाम तेन त्वाति चृतामसि	२१७८
ऋतुभिर्द्वार्तवैरायुषे वर्चसे त्वा । संवत्सरस्य तेजसा तेन संहनु कृणमसि	२१७९
घृतादुल्लुप्तं मधुना समक्तं भूमिद्वहमच्युतं पारयिष्णु । मिन्दत् सपत्नानधरांश्च कृण्वदा मा रोह सहते सौमगाय	२१८०

(अथर्व० ६ । ३६ । १-३ । गायत्री ।)

ऋतावानं वैश्वानरम् ऋतस्य ज्योतिषस्पतिम् । अजस्रं घर्ममीमहे	२१८१
स विश्वा प्रति चाक्लप ऋतूरुत्सृजते वशी । यज्ञस्य वयं उत्तिरन्	२१८२
अग्निः परेषु धामसु कामो भूतस्य भव्यस्य । सम्राडेको वि राजति	२१८३

(अथर्व० ६ । ११० । २-३ । त्रिष्टुप् ।)

ज्येष्ठभ्यां जातो विचृतोर्यमस्य मूलबर्हणात् परि पाह्येनम् । अत्येनं नेषद् दुरितानि विश्वा दीर्घायुत्वाय शतशरदाय	२१८४
व्याघ्रेऽह्यजनिष्ट वीरो नक्षत्रजा जायमानः सुवीरः । स मा वधीत् पितरं वर्धमानो मा मातरं प्र मिनीजनित्रीम्	२१८५

(अथर्व० ६ । १११ । १-४ । अनुष्टुप्, २१८६ परानुष्टुप् त्रिष्टुप् ।)

इमं मे अग्ने पुरुषं सुप्रुध्य—यं यो बद्धः सुर्यतो लालपीति ।

अतोऽधि ते कृणवद् भागधेयं यदानुन्मदितोऽसति

२१८६

अग्निष्टे नि शमयतु यदि ते मन उद्युतम् । कृणोमि विद्वान् भेषजं यथानुन्मदितोऽसति २१८७

देवैसादुन्मदितम् उन्मत्तं रक्षसस्परि । कृणोमि विद्वान् भेषजं यदानुन्मदितोऽसति २१८८

पुनस्त्वा दुरप्सरसः पुनरिन्द्रः पुनर्भगः । पुनस्त्वा दुर्विश्वे देवा यथानुन्मदितोऽसति २१८९

(अथर्व० ६ । ११२ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

मा ज्येष्ठं वधीदयमग्र एषां मूलवर्हणात् परि पाद्येनम् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् तुभ्यं देवा अनु जानन्तु विश्वे २१९०

उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्र एषां त्रयस्त्रिभिरुत्सिता येभिरासन् ।

स ग्राह्याः पाशान् वि चृत प्रजानन् पितापुत्रौ मातरं मुञ्च सर्वान् २१९१

येभिः पाशैः परिवित्तो विबद्धो ऽङ्गेऽङ्ग आपित उत्सितश्च ।

वि ते मुच्यन्तां विमुक्तो हि सन्ति भूणाग्नि पूषन् दुरितानि मृक्ष्व २१९२

(अथर्व० ७ । ३४ (३५) । १ ॥ जगती ।)

अग्ने जातान् प्र णुदा मे सपत्नान् प्रत्यजाताञ्जातवेदो नुदस्व ।

अधस्पदं कृणुष्व ये पृतन्यवो ऽनागसस्ते वयमदितये स्याम २१९३

(अथर्व० ७ । ३५ [३६] १-३ ॥ त्रिष्टुप्, २१९४ अनुष्टुप् ।)

ग्रान्यान् त्सपत्नान् त्सहसा सहस्व प्रत्यजातान् जातवेदो नुदस्व ।

इदं राष्ट्रं पिपृहि सौभगाय विश्व एनमनु मदन्तु देवाः २१९४

इमा यास्ते शतं हिराः सहस्रं धमनीरुत ।

तासां ते सर्वासामह—मश्मना बिलमप्यधाम् २१९५

परं योनेरवरं ते कृणोमि मा त्वां प्रजाभि भून्मोत स्रुतुः ।

अस्वै१ त्वाग्रजसं कृणोम्य—श्मानं ते अपिधानं कृणोमि २१९६

(अथर्व० ७ । ७४ [७८] । ४ ॥ अनुष्टुप् ।)

व्रतेन त्वं व्रतपते समक्तो विश्वाहा सुमना दीदिहीह ।

तं त्वा वयं जातवेदः समिद्धं प्रजावन्त उप सदेम सर्वे २१९७

(अथर्व० ७।७८ (८३) १-२॥ २१९८ परोष्णिक्, २१९९ त्रिष्टुप् ।)

वि ते मुञ्चामि रश्नां वि योक्त्रं वि नियोजनम् । इहैव त्वमर्जस एध्यमे २१९८
अस्मै क्षत्राणि धारयन्तमग्ने युनज्मि त्वा ब्रह्मणा दैव्येन ।
दीदिव्हिस्मभ्यं द्रविणेह भद्रं प्रेमं वोचो हविर्दा देवतासु २१९९

(अथर्व० ७।१०६ [१११] । १। बृहतीगर्भा त्रिष्टुप् ।)

यदस्मृति चक्रम किं चिदग्र उपारिम चरणे जातवेदः ।
ततः पाहि त्वं नः प्रचेतः शुभे सखिभ्यो अमृतत्वमस्तु नः २२००

(अथर्व० ७।११५ [१२०] १-४॥ अनुष्टुप्, २२०२-३ त्रिष्टुप् ।)

प्र पतेतः पापि लक्ष्मि नश्येतः प्रामुतः पत । अयस्मर्येनाङ्गेन द्विषते त्वा संजामसि २२०१

या मा लक्ष्मीः पतयात्स्वरजुष्टाभिचस्कन्द वन्दनेव वृक्षम् ।
अन्यत्रास्मत् सवितस्तामितो धा हिरण्यहस्तो वरुं नो रराणः २२०२

एकशतं लक्ष्म्योऽङ्गं मर्त्यस्य साकं तन्वा जुषोऽधि जाताः ।
तासां पापिष्ठा निरितः प्र हिंमः शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नि यच्छ २२०३

एता एना व्याकरं खिले गा विष्टिता इव ।
रमेन्तां पुण्या लक्ष्मीर्याः पापीस्ता अनीनशम् २२०४

(अथर्व० १९।३। १-४॥ त्रिष्टुप्, २२०६ भुरिक् ।)

दिवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद् वनस्पतिभ्यो अघ्योषधीभ्यः ।
यत्रयत्र विभृतो जातवेदास्ततः स्तुतो जुषमाणो न एहि २२०५

यस्ते अप्सु महिमा यो वनेषु य ओषधीषु पशुष्वप्स्वन्तः ।
अग्ने सर्वास्तन्वः सं रभस्व तामिर्न एहि द्रविणोदा अर्जसः २२०६

यस्ते देवेषु महिमा स्वर्गो या ते तनूः पितृष्विवेश ।
पुष्टिर्या ते मनुष्येषु पप्रथे ऽग्ने तया रयिमस्मासु धेहि २२०७

श्रुत्कर्णाय क्वये वेद्याय वचोभिर्वाकैरुप यामि रातिम् ।
यतो भयमभयं तन्नो अस्त्वव देवानां यज हेडो अग्ने २२०८

अथर्व० १९।४। १-४॥ त्रिष्टुप्, २२०९ पञ्चपदा विराडतिजगती, २२१० जगती ।

यामाहुतिं प्रथमामथर्वा या जाता या हव्यमकुणोजातवेदाः ।
तां त एतां प्रथमो जोहवीमि तामिष्टुप्तो वहतु हव्यमग्नि-रग्नये स्वाहा २२०९

आकूतिं देवीं सुभगां पुरो दधे चित्तस्य माता सुहवा नो अस्तु । यामाशामेभि केवली सा मे अस्तु विदेयमेनां मनसि प्रविष्टाम्	२२१०
आकूत्या नो बृहस्पत आकूत्या न उपा गहि । अथो भगस्य नो धेहि अथो नः सुहवो भव	२२११
बृहस्पतिर्म आकूतिमाङ्गिरसः प्रति जानातु वाचमेताम् । यस्य देवा देवताः संबभूवुः स सुप्रणीताः कामो अन्वैत्वसान्	२२१२

(अथर्व० १९।३७।१-४॥ २२१३ त्रिष्टुप्; २२१४ आस्तारपांक्तिः; २२१५ त्रिपदा महाबृहती;
२२१६ पुरोष्णिक् ।)

इदं वचीं अग्निना दत्तमागन् भगो यज्ञः सह ओजो वयो बलम् । त्रयस्त्रिंशद् यानि च वीर्याणि तान्यग्निः प्र ददातु मे	२२१३
वर्च आ धेहि मे तन्वांश्च सह ओजो वयो बलम् । इन्द्रियाय त्वा कर्मणे वीर्यायि प्रति गृह्णामि शतशारदाय	२२१४
ऊर्जे त्वा बलाय त्वौजसे सहसे त्वा । अभिभूयाय त्वा राष्ट्रभृत्याय पर्यूहामि शतशारदाय	२२१५
ऋतुभ्यध्वार्तवेभ्यो माञ्चः सैवत्सरेभ्यः । धात्रे विधात्रे समृधे भूतभ्य पतये यजे	२२१६

(अथर्व० ४।१४।१-९। भृगु । त्रिष्टुप्; २२१८, २२२० अनुष्टुप्; २२१९ प्रस्तारपङ्क्तिः;
२२२३, २२२५ जगती, २२२४ पञ्चपदातिशक्ती ।)

अजो ह्यग्नेरजनिष्ट शोकात् सो अपश्यज्जनितारमग्रे । तेन देवा देवतामग्र आयन् तेन रोहान् रुरुहुर्मेध्यासः	२२१७
क्रमध्वमग्निना नाकमुख्यान् हस्तेषु विभ्रतः । दिवस्पृष्टं स्वर्गित्वा मिश्रा देवेभिराध्वम्	२२१८
पृष्ठात् पृथिव्या अहमन्तरिक्षम् आरुहमन्तरिक्षाद् दिवमारुहम् । दिवो नाकस्य पृष्ठात् स्वर्ग्योर्तिरगामहम्	२२१९
स्वर्ग्यन्तो नापेक्षन्त आ द्यां रोहन्ति रोदसी । यज्ञं ये विश्वतोधारं सुविद्वांसो वितेनिरे	२२२०

अग्ने ग्रेहि प्रथमो देवतानां चक्षुर्देवानामुत मानुषाणाम् ।

इयक्षमाणा भृगुभिः सजोषाः स्वर्यन्तु यजमानाः स्वस्ति २२२१

अजमनजि पयसा घृतेन दिव्यं सुपुर्णं पयसं बृहन्तम् ।

तेन गोष्म सुकृतस्य लोकं स्वरारोहन्तो अभि नाकमुत्तमम् २२२२

पञ्चौदनं पञ्चभिरङ्गुलिभिर्दन्व्योद्धर पञ्चधैतमौदनम् ।

प्राच्यां दिशि शिरो अजस्य धेहि दक्षिणायां दिशि दक्षिणं धेहि पार्श्वम् २२२३

प्रतीच्यां दिशि भसदमस्य धेहि उत्तरस्यां दिश्युत्तरं धेहि पार्श्वम् ।

ऊर्ध्वायां दिश्युजस्यानूकं धेहि दिशि ध्रुवायां धेहि पाजस्यं अन्तरिक्षे मध्यतो मध्यमस्य २२२४

शृतमजं शृतया प्रोर्णेहि त्वचा सर्वैरङ्गैः संभृतं विश्वरूपम् ।

स उत्तिष्ठेतो अभि नाकमुत्तमं पद्भिश्चतुर्भिः प्रति तिष्ठ दिक्षु २२२५

(अथर्व० ७ । ८४ । १ । जगती ।)

अनाधृष्यो जातवेदा अमर्त्यो विराडग्ने क्षत्रभृद् दीदिहीह ।

विश्वा अमीवाः प्रमुञ्चन् मानुषीभिः शिवाभिर्य परि पाहि नो गयम् २२२६

(अथर्व० ७ । १०८ [११३] । १-२॥ २२२७ बृहतीगर्भा त्रिष्टुप्; २२२८ त्रिष्टुप् ।)

यो नस्तायद् दिप्सति यो न आविः स्वो विद्वानरणो वा नो अग्ने ।

प्रतीच्येत्वरणी दुत्वती तान् स्मैषामग्ने वास्तु भून्मो अपत्यम् २२२७

यो नः सुप्ताञ्जाग्रतो वाभिदासात् तिष्ठतो वा चरतो जातवेदः ।

वैश्वानरेण सयुजा सजोषास् तान् प्रतीचो निर्देह जातवेदः २२२८

(अथर्व० कां १२ । २ । १-१३, ३३-५५॥ त्रिष्टुप्; २२३०, २२३३, २२३८-४५, २२४७-४९, २२५१-५४, २२५६, २२६४, २२६७ अनुष्टुप् (२२४२ ककुम्मती पराबृहती, २२४४ निचृत्, २२५३ पुरस्तात्ककुम्मती); २२३१ आस्तारपङ्क्तिः; २२३४ भुरिगार्शी पङ्क्तिः २२५८ जगती; २२६१-६२ भुरिग्, २२३५ अनुष्टुब्गर्भा विपरीतपादलक्ष्मा पङ्क्तिः; २२५० पुरस्ताद्बृहती; २२५५ त्रिप० एकाव० भुरिगार्ची गायत्री; २२५७ एकाव० द्विप० आर्ची बृहती; २२५९ एका० द्विप० साम्नी त्रिष्टुप्; २२६० पञ्चपदा बार्हतवैराजगर्भा जगती; २२६३ उपरिष्ठाद्विराड् बृहती; २२६५ पुरस्ताद्विराड् बृहती, २२६८ बृहतीगर्भा ।)

नृडमा रोह न ते अत्र लोक इदं सीसं भागधेयं त एहि ।

यो गोषु यक्ष्मः पुरुषेषु यक्ष्मस्तेन त्वं साकमधुराङ् परेहि २२२९

अघशंसद्दुःशंसाभ्यां करेणानुकरेण च । यक्ष्मं च सर्वं तेनेतो मृत्युं च निरजामसि २२३०

निरितो मृत्युं निर्ऋतिं निररातिमजामसि ।

यो नो द्वेष्टि तमद्वयग्रे अक्रव्याद्यमुं द्विष्मस्तमुं ते प्र सुवामसि २२३१

यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा व्याघ्र इमं गोष्ठं प्रविवेशान्योकाः ।

तं माषाज्यं कृत्वा प्र हिणोमि दूरं स गच्छत्वप्सुषदोऽप्यग्नीन् २२३२

यच्चा क्रुद्धाः प्रचक्रुर्मन्युना पुरुषे मृते । सुकल्पमग्रे तत् त्वया पुनस्त्वोद्दीपयामसि २२३३

पुनस्त्वादित्या रुद्रा वसवः पुनर्ब्रह्मा वसुनीतिरग्रे ।

पुनस्त्वा ब्रह्मणस्पतिराधाद् दीर्घायुत्वाय शतशरदाय २२३४

यो अग्निः क्रव्यात् प्रविवेशं (ऋ० १० । १६ । १०) (१५६६)

क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि दूरं (१० । १६ । ९) (१५६६)

क्रव्यादमग्निमिषितो हरामि जनान् हंहन्तं वज्रेण मृत्युम् ।

नि तं शास्मि गार्हपत्येन विद्वान् पितॄणां लोकेऽपि भागो अस्तु २२३५

क्रव्यादमग्निं शशमानमुक्थ्यं प्र हिणोमि पथिभिः पितृघाणैः ।

मा देवयानैः पुनरा गा अत्रैवैधि पितॄषु जागृहि त्वम् २२३६

समिन्धते संकसुकं स्वस्तये शुद्धा भवन्तः शुचयः पावकाः ।

जहाति रिग्रमत्येन एति समिद्धो अग्निः सुपुना पुनाति २२३७

देवो अग्निः संकसुको दिवस्पृष्टान्यारुहत् ।

मुच्यमानो निरेणसो ऽमौगस्माँ अशस्त्याः २२३८

अस्मिन् वयं संकसुके अग्नौ रिप्राणि मृज्महे ।

अभूम यज्ञियाः शुद्धाः प्र ण आयूषि तारिषत् २२३९

संकसुको विकसुको निर्ऋतो यश्च निस्वरः । ते ते यक्ष्मं सवेदसो दूराद् दूरमनीनशन् २२४०

यो नो अश्वेषु वीरेषु यो नो गोष्वजाविषु । क्रव्यादं निर्णुदामसि यो अग्निर्जनयोपनः २२४१

अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यस्त्वा ।

निः क्रव्यादं नुदामसि यो अग्निर्जीवितुयोपनः २२४२

यस्मिन् देवा अमृजत् यस्मिन् मनुष्या उत । तस्मिन् घृतस्तावो मृष्ट्वा त्वमग्रे दिवं रुह २२४३

समिद्धो अग्न आहुत स नो माभ्यपक्रमीः । अत्रैव दीदिहि द्यवि ज्योक् च सूर्ये दृशे २२४४

सीसे मृडङ्गं नडे मृडङ्गम् अग्नौ संकसुके च यत् । अथो अव्यां रामायां शीर्षक्तिर्मुपवर्हणे २२४५

यो नो अग्निः पितरो हृत्स्व१—न्तराविवेशामृतो मर्त्येषु ।

मय्यहं तं परिं गृह्णामि देवं मा सो अस्मान् द्विक्षत मा वयं तम् २२४६

अपावृत्य गार्हपत्यात् क्रव्यादा प्रेतं दक्षिणा । प्रियं पितृभ्यं आत्मने ब्रह्मभ्यः कृणुता प्रियम् २२४७

द्विभागधनमादाय प्रक्षिणत्यवर्त्या । अग्निः पुत्रस्य ज्येष्ठस्य यः क्रव्यादनिराहितः २२४८

यत् कृषते यद् वनुते यच्च वस्त्रेण विन्दते । सर्वं मर्त्यस्य तन्नास्ति क्रव्याच्चेदनिराहितः २२४९

अयज्ञियो हतवर्चा भवति नैनेन हविरत्तवे । छिनत्ति कृष्या गोर्धनाद् यं क्रव्यादनुवर्तते २२५०

मुहुर्गृध्रैः प्र वदत्या—र्ति मर्त्यो नीत्य । क्रव्याद्यानग्निरन्तिका—दनुविद्वान्वितावति २२५१

ग्राह्या गृहाः सं सृज्यन्ते स्त्रिया यन्त्रियते पतिः ।

ब्रह्मैव विद्वानेष्यो३ यः क्रव्यादं निरादधत् २२५२

यद् रिप्रं शमलं चकृम यच्च दुष्कृतम् । आपो मा तस्माच्छुम्भ—न्त्वग्नेः संकसुकाच्च यत् २२५३

ता अधरादुदीचीराववृत्रन् प्रजान्तीः पथिभिर्देवयानैः ।

पर्वतस्य वृषभस्याधि पृष्ठे नवाश्चरन्ति सरितः पुराणीः २२५४

अग्ने अक्रव्यान्निः क्रव्यादं नुदा देवयजनं वह २२५५

इमं क्रव्यादा विवेशा—यं क्रव्यादमन्वगात् । व्याघ्रौ कृत्वा नानानं तं हरामि शिवापरम् २२५६

अन्तर्धिर्देवानां परिधिर्मनुष्याणाम् अग्निर्गार्हपत्य उभयानन्तरा श्रितः २२५७

जीवानामायुः प्र तिर त्वमग्ने पितॄणां लोकमपि गच्छतु ये मृताः ।

सुगार्हपत्यो वितपन्नरातिम् उषामुषां श्रेयसीं धेह्यस्मै २२५८

सर्वानग्ने सहमानः सपत्ना—नैषामूर्जं रयिमस्मासु धेहि २२५९

इममिन्द्रं वह्निं परिमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवधात् ।

तेनाप हत शर्मापतन्तं तेन रुद्रस्य परिं पातास्ताम् २२६०

अनङ्गाहं प्लवमन्वारभध्वं स वो निर्वक्षद् दुरितादवधात् ।

आ रोहत सवितुर्नावमेतां षडभिरुर्वीभिरमतिं तरेम २२६१

अहोरात्रे अन्वेषि बिभ्रत् क्षेम्यस्तिष्ठन् प्रतरणः सुवीरः ।

अनातुरान् त्सुमनसस्तल्प बिभ्रज् ज्योगेव नः पुरुषगन्धिरेधि २२६२

ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते पापं जीवन्ति सर्वदा । क्रव्याद्यानग्निरन्तिकाद—श्च इवानुवर्तते नृडम् २२६३

येऽश्रद्धा धनकाम्यात् क्रव्यादा समासते । ते वा अन्येषां कुम्भी पर्यादधति सर्वदा २२६४

प्रेवं पिपतिषति मनसा मुहुरा वर्तते पुनः । ऋव्याद्यानग्निरन्तिका—दनुविद्वान्वितावति २२६५

अविः कृष्णा भागधेयं पशूनां सीसं ऋव्यादपि चन्द्रं त आहुः ।

माषां पिष्टा भागधेयं ते हव्य—मरण्यान्या गह्वरं सचस्व २२६६

इषीकां जरतीमिष्टा तिलिपिञ्जं दण्डनं नडम् ।

तमिन्द्रं इध्मं कृत्वा यमस्याग्निं निरादधौ २२६७

प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा प्राविद्वान् पथां वि ह्यविवेश ।

परामीषामसन्दिदेशं दीर्घेणायुषा सामिमान् त्सृजामि २२६८

(अथर्व० १९। ५५। १-६॥ त्रिष्टुप्; २२७० आस्तारपांक्तिः; २२७३ इयवसाना पंचपदा पुरस्ताज्ज्योतिष्मती।)

रात्रिरात्रिमप्रयातुं भरन्तो ऽश्वायेव तिष्ठते घासमस्मै ।

रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा तै अग्ने प्रतिवेशा रिषाम २२६९

या ते वसोर्वातु इषुः सा त एषा तया नो मृड ।

रायस्पोषेण समिषा मदन्तो मा तै अग्ने प्रतिवेशा रिषाम २२७०

सायंसायं गृहपतिर्नो अग्निः प्रातः प्रातः सौमनसस्य दाता ।

वसोर्वसोर्वसुदान एधि वयं त्वेन्धानास्तन्वं पुषेम २२७१

प्रातःप्रातर्गृहपतिर्नो अग्निः सायंसायं सौमनसस्य दाता ।

वसोर्वसोर्वसुदान एधी—न्धानास्त्वा शतंहिमा ऋधेम २२७२

अपश्चा दुग्धान्नस्य भूयासम् । अन्नादायान्नपतये रुद्राय नमो अग्नये ।

सभ्यः सभां मे पाहि ये च सभ्याः सभासदः २२७३

त्वमिन्द्रा पुरुहूत विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।

अहरहर्बलिमिह ते हरन्तो ऽश्वायेव तिष्ठते घासमग्ने २२७४

(अथर्व० कां० १, सू० २५, मं० १-४। ऋग्वज्रिराः। २२७५ त्रिष्टुप् २२७६-७७ विराङ्गभा, २२७८ पुरोऽनुष्टुप्।)

यदग्निरापो अदहत् प्रविश्य यत्राकृण्वन् धर्मधृतो नमोसि ।

तत्र त आहुः परमं जनित्रं स नः संविद्वान् परि वृद्धिं तक्मन् २२७५

यद्यर्चिर्यदि वासि शोचिः शशह्येषि यदि वा ते जनित्रम् ।

हूडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृद्धिं तक्मन् २२७६

यदि शोको यदि वाभिःशोको यदि वा राज्ञो वरुणस्यासि पुत्रः ।

बुडुर्नामासि हरितस्य देव स नः संविद्वान् परि वृद्धिं त्वमन्

२२७७

नमः शीतार्य त्वमने नमो रूराय शोचिषे कृणोमि ।

यो अन्येद्युरुभयद्युरभ्येति तृतीयकाय नमो अस्तु त्वमने

२२७८

(अथर्व० २ । ३५ । १ ॥ अङ्गिराः । त्रिष्टुप् ।)

ये भक्षयन्तो न वसून्यानुधु—र्यानग्रयो अन्वतप्यन्त धिष्ण्याः ।

या तेषामवया दुरिष्टिः स्विष्टिं नस्तां कृणवद् विश्वकर्मा

२२७९

(अथर्व० ४ । ३९ । १, २, ९, १० ॥ अङ्गिराः । २२८० त्रिपदा महाबृहती, २२८१ संस्तरपङ्क्तिः, । २२८२-८३ त्रिष्टुप् ।)

पृथिव्यामग्नये समनमन्त्स आध्नोत् ।

यथा पृथिव्यामग्नये समनमन्नेवा महीं संनमः सं नमन्तु

२२८०

पृथिवी धेनुस्तस्या अग्निर्वत्सः । सा मेऽग्निना वत्सेनेषमूर्जं कामं दुहाम् ।

आयुः प्रथमं प्रजां पोषं रयिं स्वाहा

२२८१

अग्रावग्निरति प्रविष्टः ऋषीणां पुत्रो अभिशस्तिपा उ ।

नमस्कारेण नमसा ते जुहोमि मा देवानां मिथुया कर्म भागम्

२२८२

हृदा पूतं मनसा जातवेदो विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।

सप्तास्यानि तव जातवेदुस्तेभ्यो जुहोमि स जुषस्व हव्यम्

२२८३

(अथर्व० १ । ७ । १-७ ॥ चातनः । अनुष्टुप्, २२८८ त्रिष्टुप् ।)

स्तुवानमग्ने आ वह यातुधानं किमीदिनम् । त्वं हि देव वन्दितो हन्ता दस्योर्बभूविथ २२८४

आज्यस्य परमेष्ठिन् जातवेदस्तनूवशिन् । अग्ने तौलस्य प्राशान यातुधानान् वि लापय २२८५

वि लपन्तु यातुधानां अत्रिणो ये किमीदिनः । अथेदमग्ने नो हवि—रिन्द्रश्च प्रति हर्यतम् २२८६

अग्निः पूर्वं आ रभतां प्रेन्द्रो नुदतु बाहुमान् । ब्रवीतु सर्वो यातुमान् अयमसीत्येत्यं २२८७

पश्याम ते वीर्यं जातवेदुः प्र णो ब्रूहि यातुधानान्बृचक्षः ।

त्वया सर्वे परितप्ताः पुरस्तात् त आ यन्तु प्रब्रुवाणा उपेदम्

२२८८

आ रभस्व जातवेदो ऽस्माकार्थीय जज्ञिषे । दूतो नो अग्ने भूत्वा यातुधानान् वि लापय २२८९

त्वमग्ने यातुधानान् उपबद्धां इहा वह । अथैषामिन्द्रो वज्रेण अपि शीर्षाणि वृश्चतु २२९०

(अथर्व० १ । ८ । ३-४ ॥ २२९१ अनुष्टुप्, २२९२ बार्हतगर्भा त्रिष्टुप् ।

यातुधानस्य सोमप जहि प्रजां नयस्व च । नि स्तुवानस्य पातय परमक्षुतावरम् २२९१

यत्रैषामग्ने जनिमानि वेत्थ गुहां सतामत्त्रिणां जातवेदः ।

तांस्त्वं ब्रह्मणा वावृधानो जह्येषां शततर्हमग्ने २२९२

(अथर्व० १ । २८ । १-२ । अनुष्टुप् ।)

उप प्रागाद् देवो अग्नी रक्षोहामीवचातनः । दहन्नप द्रयाविनो यातुधानान् किमीदिनः २२९३

प्रति दह यातुधानान् प्रति देव किमीदिनः । प्रतीचीः कृष्णवर्तने सं दह यातुधान्यः २२९४

(अथर्व० ४ । ३६ । १-१० ॥ अनुष्टुप्, २३०३ भुरिक् ।)

तान् त्सत्यौजाः प्र दह—त्वमिर्वैश्वानरो वृषा । यो नो दुरस्यादिप्सा—चाथो यो नो अरातियात् २२९५

यो नो दिप्सददिप्सतो दिप्सतो यश्च दिप्सति । वैश्वानरस्य दंष्ट्रयो—रग्नेरपि दधामि तम् २२९६

य आगरे मृगयन्ते प्रतिक्रोशेऽमावास्ये । क्रव्यादो अन्यान् दिप्सतः सर्वास्तान् त्सहसा सहे २२९७

सहे पिशाचान् त्सह—सैषां द्रविणं ददे । सर्वान् दुरस्यतो हन्मि सं म आकूतिर्कृष्यताम् २२९८

ये देवास्तेन हासन्ते सूर्येण मिसते जवम् । नदीषु पर्वतेषु ये सं तैः पशुभिर्विदे २२९९

तपनो अस्मि पिशाचानां व्याघ्रो गोमतामिव ।

श्वानः सिंहमिव दृष्ट्वा ते न विन्दन्ते न्यश्चनम् २३००

न पिशाचैः सं शक्नोमि न स्तेनैर्न वनर्गुभिः । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति यमहं ग्राममाविशे २३०१

यं ग्राममाविशत इदमुग्रं सहो मम । पिशाचास्तस्मान्नश्यन्ति न पापमुप जानते २३०२

ये मा क्रोधयन्ति लपिता हस्तिनं मशका इव । तानहं मन्ये दुर्हितान् जने अल्पशयूनिव २३०३

अभि तं निर्कृतिर्धत्ताम् अश्वमिवाश्वाभिधान्या । भ्रवो यो मयं क्रुष्यति स उ पाशान्न मुच्यते २३०४

(अथर्व० ५ । २९ । १-१५ । त्रिष्टुप्, २३०७ त्रिपदा विराणनाम गायत्री, २३०९ पुरोऽतिजगती विराङ्जगती २३१५-१८ अनुष्टुप् (२३१५ भुरिक्, २३१७ चतुष्पदा परावृहती ककुम्मती ।)

पुरस्ताद् युक्तो बह जातवेदो ऽग्ने विद्धि क्रियमाणं यथेदम् ।

त्वं भिषग् भेषजस्यासि कर्ता त्वया गामश्च पुरुषं सनेम २३०५

तथा तदग्ने कृणु जातवेदो विश्वेभिर्देवैः सह सैविदानः ।

यो नो दिदेव यतमो जघास यथा सो अस्य परिधिष्पताति २३०६

यथा सो अस्य परिधिष्पताति तथा तदग्ने कृणु जातवेदः ।

विश्वेभिर्देवैः सह सैविदानः २३०७

अक्षयौ३ नि विध्य हृदयं नि विध्य जिह्वां नि तृन्दि प्र दतो मृणीहि ।

पिशाचो अस्य यतमो जघास अग्रे यविष्ठ प्रति तं शृणीहि २३०८

यदस्य हृतं विहृतं यन् पराभृतम् आत्मनो जग्धं यतमत् पिशाचैः ।

तदग्रे विद्वान् पुनरा भर त्वं शरीरे मांसमसुमेरयामः २३०९

आमे सुपक्वे शबले विपक्वे यो मा पिशाचो अशने दुदम्भ ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१०

क्षीरे मा मन्थे यतमो दुदम्भा कृष्टपच्ये अशने धान्ये३ यः ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३११

अपां मा पाने यतमो दुदम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१२

दिवा मा नक्तं यतमो दुदम्भ क्रव्याद् यातूनां शयने शयानम् ।

तदात्मना प्रजया पिशाचा वि यातयन्तामगदो३यमस्तु २३१३

क्रव्यादमग्रे रुधिरं पिशाचं मनोहनं जहि जातवेदः ।

तमिन्द्रो वाजी वज्रेण हन्तु छिनत्तु सोमः शिरो अस्य धृष्णुः २३१४

सनादग्रे मृणसि यातुधानान्० (ऋ० १० । ८७ । १९) (१८४६)

समाह्वं जातवेदो यद्धतं यत् पराभृतम् । गात्राण्यस्य वर्धन्ताम् अंशुरिवा प्यायतामयम् २३१५

सोमस्येव जातवेदो अंशुरा प्यायतामयम् । अग्रे विरग्निनं मेध्यम् अयक्ष्मं कृणु जीवतु २३१६

एतास्ते अग्रे समिधः पिशाचजम्भनीः । तास्त्वं जुषस्व प्रति चैना गृहाण जातवेदः २३१७

तार्ष्टाधीरग्रे समिधः प्रति गृह्णाह्यर्चिषा । जहातु क्रव्याद् रूपं यो अस्य मांसं जिहीर्षति २३१८

(अथर्व० २ । ६ । १-५ ॥ शौनकः । त्रिष्टुप् २३२२ चतुष्पदार्षी पङ्क्तिः, २३२३ विराट् प्रस्तारपङ्क्तिः ।)

समास्त्वाश क्रतवो वर्धयन्तु संवत्सरा ऋषयो यानि सत्या ।

सं दिव्येन दीदिहि रोचनेन विश्वा आ भाहि प्रदिशश्चतस्रः २३१९

सं चेध्यस्वाग्रे प्र च वर्धयेमम् उच्च तिष्ठ महते सौभगाय ।

मा ते रिषन्नुपसत्तारो अग्रे ब्रह्माणस्ते यशसः सन्तु मान्ये २३२०

त्वामग्रे वृणते ब्राह्मणा इमे शिवो अग्रे संवरणे भवा नः ।

सपत्नहाग्रे अभिमातिजिद् भव स्वे गये जागृह्यप्रयुच्छन् २३२१

क्षत्रेणाग्ने स्वेन सं रभस्व मित्रेणाग्ने मित्रधा यतस्व ।
 सजातानां मध्यमेष्टा राज्ञाम् अग्ने विहव्यो दीदिहीह २३२२
 अति निहो अति सिधो ऽत्यचित्तीरिति द्विषः ।
 विश्वा ह्यग्ने दुरिता तर त्वमथास्मभ्यं सहवीरं रयिं दाः २३२३

(अथर्व० ६ । १०८ । ४ । अनुष्टुप् ।)

यामृषयो भूतकृतौ मेधां मेधाविनो विदुः । तया मामद्य मेधया ऽग्ने मेधाविनं कृणु २३२४
 (अथर्व० ७ । ८२ (८७) । २-६ ॥ त्रिष्टुप्, २३२५ ककुम्भती बृहती, २३२६ जगती ।)

मय्यग्ने अग्निं गृह्णामि सह क्षत्रेण वर्चसा बलेन ।
 मयि प्रजां मय्यायुर्दधामि स्वाहा मय्यग्निम् २३२५
 इहैवाग्ने अग्निं धारया रयिं मा त्वा नि क्रन् पूर्वचित्ता निकारिणः ।
 क्षत्रेणाग्ने सुयममस्तु तुभ्यम् उपसत्ता वर्धतां ते अनिष्टृतः २३२६
 अन्वग्निरुषसामग्रमख्यदन् वहानि प्रथमो जातवेदाः ।
 अनु सूर्य उषसो अनु रश्मीन् अनु द्यावापृथिवी आ विवेश २३२७
 प्रत्यग्निरुषसामग्रमख्यत् प्रत्यहानि प्रथमो जातवेदाः ।
 प्रति सूर्यस्य पुरुधा च रश्मीन् प्रति द्यावापृथिवी आ ततान २३२८
 घृतं ते अग्ने दिव्ये सधस्थे घृतेन त्वां मनुर्द्या समिन्धे ।
 घृतं ते देवीर्नित्यं आ वहन्तु घृतं तुभ्यं दुहतां गावो अग्ने २३२९
 (अथर्व० ४ । २३ । १-७ । मृगारः । त्रिष्टुप्, २३३१ पुरस्ताज्ज्योतिष्मती, २३३३ अनुष्टुप्, २३३५ प्रस्तारपङ्क्तिः ।)

अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य प्रचेतसः पाञ्चजन्यस्य बहुधा यमिन्धते ।
 विशोविशः प्रविशिवांसमीमहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३०
 यथा हव्यं वहसि जातवेदो यथा यज्ञं कल्पयसि प्रजानन् ।
 एवा देवेभ्यः सुमतिं न आ वह स नो मुञ्चत्वंहसः २३३१
 यामन् यामन्नुपयुक्तं वहिष्ठं कर्मन् कर्मन्नाभगम् ।
 अग्निमीडे रक्षोहणं यज्ञवृधं घृताहुतं स नो मुञ्चत्वंहसः २३३२
 सुजातं जातवेदसम् अग्निं वैश्वानरं विशुम् ।
 हव्यवाहं हवामहे स नो मुञ्चत्वंहसः २३३३

येन ऋषयो बलमद्योतयन् युजा येनासुराणामयुवन्त मायाः ।
 येनाग्निना पृणीनिन्द्रो जिगाय स नो मुञ्चत्वंहसः २३३४
 येन देवा अमृतमन्वविन्दुन् येनौषधीर्मधुमतीरकृण्वन् ।
 येन देवाः स्वश्रामरन् त्स नो मुञ्चत्वंहसः २३३५
 यस्येदं प्रदिशि यद् विरोचते यज्जातं जनितव्यं च केवलम् ।
 स्तौम्यग्निं नाथितो जोहवीभि स नो मुञ्चत्वंहसः २३३६

(अथर्व० ६।४९ १-२ ॥ गार्ग्यः । २३३७ अनुष्टुप्, २३३८ जगती ।)

नहि ते अग्ने तन्वः क्रूरमानंश्च मर्त्यः ।
 कृषिर्बभस्ति तेजनं स्वं जरायु गौरिव २३३७
 मेष इव वै सं च वि चोर्वच्यसे यदुत्तरद्रावुपरश्च खादतः ।
 शीर्ष्णा शिरोऽप्ससाप्सो अर्दयन् अंशन् बभस्ति हरितेभिरासभिः २३३८

(अथर्व० २।३६।१, ३। पतिवेदनः । २३३९ त्रिष्टुप्, २३४० भुक् ।)

आ नो अग्ने सुमतिं सैभलो गमे—दिमां कुमारीं सह नो भगेन ।
 जुष्टा वरेषु समनेषु बल्युरोषं पत्या सौभगमस्त्वस्यै २३३९
 इयमग्ने नारी पतिं विदेष्ट सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।
 सुवाना पुत्रान् महिषी भवाति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु २३४०

(अथर्व० २०।२।२। गृत्समदो मेधातिथिर्वा । विराङ् गायत्री ।)

अग्निराग्नीध्रात् सुष्टुभः स्वर्कादृतुना सोमं पिबतु २३४१

(अथर्व० ४।४०।१। शुक्रः । त्रिष्टुप् ।)

ये पुरस्ताज्जुह्वति जातवेदः प्राच्या दिशोभिदासन्त्यस्मान् ।
 अग्निमृत्वा ते पराञ्चो व्यथन्तां प्रत्यगेनान् प्रतिसरेण हन्मि २३४२

(अथर्व० ३।३१।१, ६। ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।)

वि देवा जरसावृतन् वि त्वमग्ने अरात्या । व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा २३४३
 अग्निः प्राणान् त्सं दधाति चन्द्रः प्राणेन संहितः ।
 व्यहं सर्वेण पाप्मना वि यक्ष्मेण समायुषा २३४४

(अथर्व० ५ । २६ । १ । द्विपदार्षी उष्णिक् ।)

यजूंषि यज्ञे समिधः स्वाहा ऽग्निः प्रविद्वानिह वो युनक्तु २३४५

(अथर्व० ६ । ७१ । १-३ । जगती, २३४८ त्रिष्टुप् ।

यदन्नमग्निं बहुधा विरूपं हिरण्यमश्वमुत गामजामाविम् ।
यदेव किं च प्रतिजग्रहाहम् अग्निष्टद्वोता सुहुतं कृणोतु २३४६

यन्मा हुतमहुतमाजगाम दत्तं पितृभिरनुमतं मनुष्यैः ।
यस्मान्मे मन उदिव रारजीत्यग्निष्टद्वोता सुहुतं कृणोतु २३४७

यदन्नमद्वयनृतेन देवा दास्यन्नदास्यन्नत सैगुणामि ।
वैश्वानरस्य महतो महिम्ना शिवं मह्यं मधुमदस्त्वन्नम् २३४८

(अथर्व० १९ । ६५ । १ । जगती ।)

हरिः सुपर्णो दिवमारुहोऽर्चिषा ये त्वा दिप्सन्ति दिवमुत्पतन्तम् ।
अव तां जहि हरसा जातवेदो ऽविभ्यदुग्रोऽर्चिषा दिवमा रोह सूर्य २३४९

(अथर्व० १९ । ६६ । १ । अति जगती ।)

अयोजाला असुरा मायिनो ऽयस्मयैः पाशैरङ्गिनो ये चरन्ति ।
तांस्तै रन्धयामि हरसा जातवेदः सहस्रऋष्टिः सपत्नान् प्रमृणन् पाहि वज्रः २३५०

(अथर्व० १९ । ६४ । १-४ ॥ अनुष्टुप् ।)

अग्ने समिधमाहर्षं बृहते जातवेदसे । स मे श्रद्धां च मेधां च जातवेदाः प्र यच्छतु २३५१
इध्मेन त्वा जातवेदः समिधा वर्धयामसि । तथा त्वमस्मान् वर्धय प्रजयां च धनेन च २३५२
यदग्ने यानि कानि चिदा ते दारुणि दुध्मासि । सर्वं तदस्तु मे शिवं तज्जुषस्व यविष्य २३५३
एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः समिद्धव । आयुरस्मासु धेह्यमृतत्वमाचार्याधि २३५४

(अथर्व० ३ । २१ । १-१० । वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, २३५५ पुरोनुष्टुप्; २३५६-५७, २३६२ भुरिक्; २३५९ जगती; २३६० उपरिष्ठाद्विराड्बृहती; २३६१ विराड्गर्भा, २३६३ निचृदनुष्टुप्; २३६४ अनुष्टुप् ।)

ये अग्नयो अप्स्वन्तर्ये वृत्रे ये पुरुषे ये अश्मसु ।
य आविवेशोर्षधियो वनस्पतींस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५५

यः सोमे अन्तर्यो गोष्वन्तर्य आविष्टो वयःसु यो मृगेषु ।
य आविवेश द्विपदो यश्चतुष्पदस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत् २३५६

य इन्द्रेण सरथं याति देवो वैश्वानर उत विश्वदाव्यः ।	
यं जोहवीमि पृतनासु सासहि तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५७
यो देवो विश्वाद्यमु काममाहु—यं दातारं प्रतिगृह्णन्तमाहुः ।	
यो धीरः शक्रः परिभूरदाभ्यस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५८
यं त्वा होतारं मनसाभि सविदुस् त्रयोदश भौवनाः पञ्च मानवाः ।	
वर्चोधसे यशसे सूनृतावते तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३५९
उक्षान्नाय वशान्नाय सोमपृष्ठाय वेधसे ।	
वैश्वानरज्येष्ठेभ्यस्तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३६०
दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं ये विद्युतमनुमंचरन्ति ।	
ये दिक्ष्व१न्तर्ये वाते अन्तस् तेभ्यो अग्निभ्यो हुतमस्त्वेतत्	२३६१
हिरण्यपाणिं सवितारमिन्द्रं बृहस्पतिं वरुणं मित्रमाग्निम् ।	
विश्वान् देवानङ्गिरसो हवामह इमं क्रव्यादं शमयन्त्वाग्निम्	२३६२
शान्तो अग्निः क्रव्याच् छान्तः पुरुषरेषणः ।	
अथो यो विश्वदाव्य१स् तं क्रव्यादमशीशमम्	२३६३
ये पर्षताः सोमपृष्ठा आप उत्तानशीवरीः ।	
वातः पर्जन्य आदग्निस् ते क्रव्यादमशीशमन्	२३६४
(अथर्व० ७ । १०९ (११४) । १-७ । बादरायणिः । अनुष्टुप् २३६५ विराट् पुरस्ताद्बृहती, २३६६-६७, २३६९-७० त्रिष्टुप्)	
इदमुग्राय बभ्रवे नमो यो अक्षेभु तनूवशी ।	
घृतेन कलिं शिक्षामि स नो मृडातीदृशे	२३६५
घृतमप्सराम्यो वह त्वमग्ने पांसुनक्षेभ्यः सिकता अपश्च ।	
यथाभागं हव्यदाति जुषाणा मदन्ति देवा उभयानि हव्या	२३६६
अप्सरसः सधमादं मदन्ति हविर्धानमन्तरा सूर्यं च ।	
ता मे हस्तौ सं सृजन्तु घृतेन सपत्नं मे कितवं रन्धयन्तु	२३६७
आदिनवं प्रतिदीप्ते घृतेनास्मां अभि क्षर ।	
वृक्षमिवाशन्या जहि यो अस्मान् प्रतिदीव्यति	२३६८

यो नो द्युवे धनमिदं चकार यो अक्षाणां ग्लहनं शेषणं च ।
 स नो देवो हविरिदं जुषाणो गन्धर्वेभिः सधमादं मदेम २३६९
 संवसव इति वो नामधेयम् उग्रपश्या राष्ट्रभृतो ह्यक्षाः ।
 तेभ्यो व इन्द्रवो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रथीणाम् २३७०
 देवान् यन्नाथितो हुवे ब्रह्मचर्यं यदृषिम । अक्षान् यद् बभूनालभे ते नो मृडन्त्वीदृशे २३७१

(अथर्व० ६ । ४७ । १ । अङ्गिराः प्रचेताः । त्रिष्टुप् ।)

अग्निः प्रातःसवने पात्वस्मान् वैश्वानरो विश्वकृद् विश्वशंभूः ।
 स नः पावको द्रविणे दधातु आयुष्मन्तः सहभक्षाः स्याम २३७२

(अथर्व० ७ । ६२ (६४) । १ । मरीचिः काश्यपः । जगती ।)

अयमग्निः सत्पतिर्वृद्धवृष्णो रथीव पत्नीनजयत् पुरोहितः ।
 नाभा पृथिव्यां निहितो दविद्युतद् अधस्पदं कृणुतां ये पृतन्यवः २३७३

(अथर्व० ७ । ६३ (६५) । १ । जातवेदाः । जगती ।)

पृतनाजितं सहमानमग्निमुक्थैर् हवामहे परमात् सुधस्थात् ।
 स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा क्षामद् देवोऽति दुरितान्यग्निः । २३७४

(अथर्व० ६ । ३५ । १-३ । कौशिकः । गायत्री ।)

वैश्वानरो न ऊतय आ प्र यातु परावतः । अग्निर्नः सुष्टुतीरुप २३७५
 वैश्वानरो न आगमद् इमं यज्ञं सजूरुप । अग्निरुक्थेष्वाहसु २३७६
 वैश्वानरोऽङ्गिरसां स्तोममुक्थं च चाकल्पत् । ऐषु द्युम्नं स्वर्यिमत् २३७७

(अथर्व० ६ । ११७ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

अपमित्यमप्रतीत्तं यदास्मि यमस्य येन बालिना चरामि ।
 इदं तदग्ने अनुणो भवामि त्वं पाशान् विचृतं वेत्थ सर्वान् २३७८

इहैव सन्तः प्रति दन्न एनज् जीवा जीवेभ्यो नि हराम एनत् ।
 अपमित्यं धान्यं यज्जघसाहम् इदं तदग्ने अनुणो भवामि २३७९

अनुणा अस्मिन्ननुणाः परस्मिन् तृतीयं लोके अनुणाः स्याम ।
 ये देवयानाः पितृयाणांश्च लोकाः सर्वान् पथो अनुणा आ क्षियेम २३८०

(अथर्व० ६ । ११८ । १-३ । त्रिष्टुप्)

यद्वस्ताभ्यां चकृम किल्बिषाणि अक्षाणां गन्तुमुपलिप्समानाः ।
 उग्रं पश्ये उग्रजितौ तदद्य अप्सरसावनुं दत्तामृणं नः २३८१
 उग्रं पश्ये राष्ट्रभृत् किल्बिषाणि यदक्षवृत्तमनुं दत्तं न एतत् ।
 ऋणान्नो नर्णमेत्समानो यमस्य लोके अधिरज्जुरायत् । २३८२
 यस्मा ऋणं यस्य जायामुपैमि यं याचमानो अभ्यैमि देवाः ।
 ते वाचं वादिषुर्मोत्तरां मदेवपत्नी अप्सरसावधीतम् २३८३

(अथर्व० ६ । ११९ । १-३ । त्रिष्टुप् ।)

यददीव्यन्नृणमहं कृणोमि अदास्यन्नग उत संगृणामि ।
 वैश्वानरो नो अधिपा वसिष्ठ उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् २३८४
 वैश्वानराय प्रति वेदयामि यद्यृणं संगरो देवतासु ।
 स एतान् पाशान् विचृतं वेद सर्वान् अथ पक्वेन सह सं भवेम २३८५
 वैश्वानरः पविता मा पुनातु यत् संगर्मभिधावाभ्याशाम् ।
 अनाजानन् मनसा याचमानो यत् तन्नो अप तत् सुवामि २३८६

(अथर्व० ६ । १२१ । १, २, ४ । २३८७, २३८८, त्रिष्टुप्, २३८९, २३९० अनुष्टुप् ।)

विषाणा पाशान् वि ष्याध्यस्मद् य उत्तमा अधमा वारुणा ये ।
 दुष्वभ्यं दुरितं नि ष्वास्मद् अथ गच्छेम सुकृतस्य लोकम् २३८७
 यद् दारुणि बध्यसे यच्च रज्ज्वां यद् भूम्यां बध्यसे यच्च वाचा ।
 अयं तस्माद् गार्हपत्यो नो अग्निर उदिन्नयाति सुकृतस्य लोकम् २३८८
 वि जिहीष्व लोकं कृणु बन्धान्मुञ्चासि बद्धकम् ।
 योन्या इव प्रच्युतो गर्भः पथः सर्वा अनु क्षिय २३८९

(अथर्व० ६ । ७६ । १-४ कवन्धः । अनुष्टुप्, २३९२ ककुम्भती ।)

य एनं परिषीदन्ति समादधति चक्षसे । संप्रेद्धौ अग्निर्जिह्वाभिर् उदैतु हृदयादधि २३९०
 अग्नेः सौतपनस्याहं आयुषे पदमा रभे । अद्वातिर्यस्य पश्यति धूममुद्यन्तमास्यतः २३९१
 यो अस्य सुमिधं वेद क्षत्रियेण समाहिताम् । नाभिह्वारे पदं नि दधाति स मृत्यवे २३९२

नैनं गन्ति पर्यायिणो न सन्नां अवं गच्छति । अग्रेयः क्षत्रियो विद्वान् नाम गृह्णात्यायुषे २३९३

(अथर्व० ६ । ७७ । १-३ । अनुष्टुप् ।)

अस्थाद् द्यौरस्थात् पृथिवि अस्थाद् विश्वमिदं जगत् ।

आस्थाने पर्वता अस्थु स्थास्यश्वा अतिष्ठिपम् २३९४

य उदानदं परायणं य उदानन्यार्यनम् । आवर्तनं निवर्तनं यो गोपा अपि तं हुवे २३९५

जातवेदो नि वर्तय शतं ते सन्त्वावृतः । सहस्रं त उपावृतस् तार्भिर्नः पुनरा कृधि २३९६

अग्निसहस्रारी देवगणः

१२ वैश्वानरोऽग्निः सूर्यश्च ।

(ऋ० १० । ८८ । १-१९) मूर्धन्वानाङ्गिरसो, वामदेव्यो वा । सौर्य-
वैश्वानरोऽग्निः । त्रिष्टुप् ।)

हविष्पान्तमजरं स्वविदि दिविस्पृश्याहुतं जुष्टमग्नौ ।

तस्य भर्मेणे भुवनाय देवा धर्मेणे कं स्वधया पप्रथन्त २३९७

गीर्णं भुवनं तमसापगूळहम् आविः स्वरभवज्जाते अग्नौ ।

तस्य देवाः पृथिवी द्यौरुतापो ऽरण्यन्नोषधीः सख्ये अस्य २३९८

देवेभिर्न्विषितो यज्ञियेभिर् अग्निं स्तोषाण्यजरं बृहन्तम् ।

यो भानुना पृथिवीं द्यामुतेमाम् आततान् रोदसी अन्तरिक्षम् २३९९

यो होतासीत् प्रथमो देवजुष्टो यं समाज्जन्नाज्येना वृणानाः ।

स पतन्नीत्वरं स्था जगद् यत् श्वात्रमग्निरकृणोज्जातवेदाः २४००

यज्जातवेदो भुवनस्य मूर्धन् अतिष्ठो अग्ने सह रोचनेन ।

तं त्वहिम मतिभिर्गीर्भिरुक्थैः स यज्ञियो अभवो रोदसिग्राः २४०१

मूर्धा भुवो भवति नक्तमग्निस् ततः सूर्यो जायते प्रातरुद्यन् ।

मायामू तु यज्ञियानामेताम् अपो यत् तूर्णिश्वरति प्रजानन् २४०२

दृशेन्यो यो महिना समिद्धो ऽरोचत दिवियोनिर्विभावा ।

तस्मिन्नग्नौ स्रक्तवाकेन देवा हविर्विश्व आजुहवुस्तनूपाः २४०३

सूक्तवाकं प्रथममादिदुग्निम् आदिद्विविरजनयन्त देवाः । स एषां यज्ञो अभवत् तनूपास् तं द्यौर्वेदु तं पृथिवी तमार्षः	२४०४
यं देवासोऽर्जनयन्ताग्निं यस्मिन्नाजुहवुर्भुवनानि विश्वा । सो अर्चिषा पृथिवीं द्यामुतेमाम् ऋजूयमानो अतपन्महित्वा	२४०५
स्तोमेन हि दिवि देवासो अग्निम् अजीजनच्छक्तिभी रोदसिग्राम् । तमू अकृण्वन् त्रेधा भुवे कं स ओषधीः पचति विश्वरूपाः	२४०६
यदेदेनमदधुर्यज्ञियासो दिवि देवाः सूर्यमादितेयम् । यदा चरिणू मिथुनावभूताम् आदित् प्रार्पश्यन् भुवनानि विश्वा	२४०७
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय देवा वैश्वानरं केतुमह्नामकृण्वन् । आ यस्ततानोषसो विभातीर् अपो ऊर्णोति तमो अर्चिषा यन्	२४०८
वैश्वानरं कवयो यज्ञियासो ऽग्निं देवा अर्जनयन्नजुर्यम् । नक्षत्रं प्रत्नमग्निं चरिणू यक्षस्याध्यक्षं तविषं बृहन्तम्	२४०९
वैश्वानरं विश्वहा दीदिवांसं मन्त्रैरग्निं कविमच्छा वदामः । यो महिम्ना परिबभूवोर्वी उतावस्तादुत देवः परस्तात्	२४१०
द्वे सुती अशृणवं पितृणाम् अहं देवानामुत मर्त्यानाम् । ताभ्यामिदं विश्वमेजत् समेति यदन्तरा पितरं मातरं च	२४११
द्वे समीची बिभृतश्चरन्तं शीर्षतो जातं मनसा विमृष्टम् । स प्रत्यङ् विश्वा भुवनानि तस्थौ अग्रयुच्छन् तरणिर्भार्जमानः	२४१२
यत्रा वदेते अवरः परश्च यज्ञन्योः कतरो नौ वि वेद । आ शैकुरित् सधमादं सखायो नक्षन्त यज्ञं क इदं वि वोचत्	२४१३
कत्यग्नयः कति सूर्यासः कत्युषासः कत्यु स्विदार्षः । नोपस्पिजं वः पितरो वदामि पृच्छामि वः कवयो विद्यने कम्	२४१४
यावन्मात्रमुषसो न प्रतीकं सुपण्योऽवसते मातरिश्चः । तावद् दधात्युप यज्ञमायन् ब्राह्मणो होतुरवरो निषीदन्	२४१५

१३ रक्षोहाग्निः ।

(क्र० १० । १६२ । १-६ । रक्षोहा = (गर्भस्य दोषनिवारकः) (अत्रानुसंधेया मन्त्राः १८१३-१८६१)
रक्षोहा ब्राह्मः । अनुष्टुप् ।)

ब्रह्मणाग्निः संविदानो रक्षोहा बाधतामितः ।	
अमीवा यस्ते गर्भं दुर्णामा योनिमाशये	२४१६
यस्ते गर्भममीवा दुर्णामा योनिमाशये ।	
अग्निष्टं ब्रह्मणा सह निष्क्रव्यादमनीनशत्	२४१७
यस्ते हन्ति पतयन्तं निषत्स्नुं यः संरीसृपम् ।	
जातं यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४१८
यस्त ऊरू विहरति अन्तरा दंपती शये ।	
योनिं यो अन्तरारेळिह तमितो नाशयामसि	२४१९
यस्त्वा भ्राता पतिर्भूत्वा जारो भूत्वा निपद्यते ।	
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४२०
यस्त्वा स्वप्नेन तमसा मोहयित्वा निपद्यते ।	
प्रजां यस्ते जिघांसति तमितो नाशयामसि	२४२१

१४ अपां-न-पादग्निः ।

(क्र० २ । ३५ । १-१५ । गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।)

उपेमसृक्षि वाजयुर्वचस्यां चनो दधीत नाद्यो गिरो मे ।	
अपां नपादाशुहेमां कुवित् स सुपेशसस्करति जोषिषद्धि	२४२२
इमं स्वस्मै हृद आ सुतष्टं मन्त्रं वोचेम कुविदस्य वेदत् ।	
अपां नपादसूर्यस्य मद्वा विश्वान्ययोर्धुवना जजान	२४२३
समन्या यन्त्युपं यन्त्यन्याः समानमूर्ध्वं नद्यः पृणन्ति ।	
तमू शुचिं शुचयो दीदिवांसम् अपां नपातं परि तस्थुरापः	२४२४
तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मज्यमानाः परि यन्त्यापः ।	
स शुक्रेभिः शिक्रेभी रेवदस्मे दीदायानिध्मो घृतनिर्णिगप्सु	२४२५

अस्मै तिस्रो अव्यध्याय नारीर् देवाय देवीर्दिधिषन्त्यन्नम् ।	
कृता इवोप हि प्रसर्से अप्सु स पीयूषं धयति पूर्वसूनाम्	२४२६
अश्वस्यात्र जनिमास्य च स्वरं द्रुहो रिषः संपृचः पाहि सूरीन् ।	
आमासु पुरुषो अग्रमृष्यं नारातयो वि नश्चन्नानृतानि	२४२७
स्व आ दमे सुदुघा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय सुभ्वन्नमत्ति ।	
सो अपां नपादूर्जयन्नस्वन्तर् वसुदेवाय विधत्ते वि भाति	२४२८
यो अस्वा शुचिना दैव्येन ऋतावाजस उर्विया विभार्ति ।	
वया इदुन्या भुवनान्यस्य प्र जायन्ते वीरुधश्च प्रजाभिः	२४२९
अपां नपादा ह्यस्थादुपस्थं जिह्वानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।	
तस्य ज्येष्ठं महिमानं वहन्तीर् हिरण्यवर्णाः परि यन्ति यद्वाहीः	२४३०
हिरण्यरूपः स हिरण्यसंदग् अपां नपात्सेदु हिरण्यवर्णः ।	
हिरण्ययात् परि योनेर्निषद्या हिरण्यदा ददत्यन्नमस्मै	२४३१
तदुस्यानीकमुत चारु नाम अपीच्यं वर्धते नप्तुरपाम् ।	
यमिन्धते युवतयः समित्था हिरण्यवर्णं घृतमन्नमस्य	२४३२
अस्मै बहुनामवमाय सख्ये यज्ञैर्विधेम नमसा हविभिः ।	
सं सानु मार्जिम दिधिषामि बिल्मैर् दधाम्यन्नैः परि वन्द ऋग्भिः	२४३३
स ई वृषाजनयत् तासु गर्भं स ई शिशुर्धयति तं रिहन्ति ।	
सो अपां नपादनभिम्लातवर्णो ऽन्यस्येवेह तन्वा विवेष	२४३४
अस्मिन् पदे परमे तस्थिवांसम् अध्वस्मभिर्विश्वहा दीदिवांसम् ।	
आपो नप्त्रे घृतमन्नं वहन्तीः स्वयमत्कैः परि दीयन्ति यद्वाहीः	२४३५
अयांसमग्रे सुक्षितिं जनाय अयांसमु मघवद्भ्यः सुवृक्तिम् ।	
विश्वं तद् भद्रं यदवन्ति देवा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	२४३६

१५ अग्नीन्द्रादयः ।

(ऋ० ७।४१।१। वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नीन्द्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः । जगती ।)

प्रातरग्निं प्रातरिद्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।	
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम	२४३७

१६ अग्निर्मरुतश्च ।

(ऋ० १ । १९ । १-९ । मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।)

प्रति त्वं चारुमध्वरं गोपीथाय प्र हूयसे । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४३८
नहि देवो न मर्त्यो महस्तव क्रतुं परः । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४३९
ये महो रजसो विदुर् विश्वे देवासो अदुहः । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४४०
ये उग्रा अर्कमानुचुर् अनाघृष्टास ओजसा । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४४१
ये शुभ्रा घोरवर्षसः सुक्षत्रासो रिशादसः । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४४२
ये नाकस्याधि रोचने दिवि देवास आसते । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४४३
य ईह्वयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम् । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४४४
आ ये तन्वन्ति रश्मिभिस् तिरः समुद्रमोजसा । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४४५
अभि त्वा पूर्वपीतये सूजामि सोम्यं मधु । मरुद्भिरग्न आ गहि	२४४६

(ऋ० ८ । १०३ । १४ । सोभरिः काण्वः । अनुष्टुप् ।)

अग्ने याहि मरुत्सखा रुद्रेभिः सोमपीतये ।	
सोभर्या उप सुष्टुति मादयस्व स्वर्णरे	२४४७

१७ अग्निमित्रावरुणादयः ।

(ऋ० १ । ३५ । १ । हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अग्निमित्रावरुणौ रात्रिः सविता च । जगती ।)

ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे ।	
ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं ह्वयामि देवं सवितारमूतये	२४४८

१८ अग्निर्वरुणश्च ।

(ऋ० ४ । १ । २-५ । वामदेवो गोतमः । त्रिष्टुप्, २४४९ अति जगती, २४५० धृतिः ।)

स भ्रातरं वरुणमग्न आ ववृत्स्व देवाँ अच्छा सुमती यज्ञवर्नसं ज्येष्ठं यज्ञवर्नसम् ।	
ऋतावानमादित्यं चर्षणीधृतं राजानं चर्षणीधृतम्	२४४९
सखे सखायमभ्या ववृत्स्वाशुं न चक्रं रथ्येव रंहास्मभ्यं दस्म रंहा ।	
अग्ने मृळीकं वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु ।	
तोकाय तुजे शुशुचान शं कृध्यस्मभ्यं दस्म शं कृधि	२४५०

त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेळोऽव यासिसीष्ठाः ।	
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषांसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्	२४५१
स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।	
अव यक्ष्व नो वरुणं रराणो वीहि मृळीकं सुहवो न एधि	२४५२

१९ अग्नाविष्णू ।

(अथर्व कां० ७ । २९ (३०) । १-२ । मेधातिथिः । त्रिष्टुप् ।)

अग्नाविष्णू महि तद्वां महित्वं पाथो घृतस्य गुह्यस्य नाम ।	
दमेदमे सप्त रत्ना दधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमा चरण्यात्	२४५३
अग्नाविष्णू महि धामं प्रियं वां वीथो घृतस्य गुह्या जुषाणौ ।	
दमेदमे सुष्टुत्या वावृधानौ प्रति वां जिह्वा घृतमुच्चरण्यात्	२४५४

२० अग्निसूर्यौ ।

(ऋ० ८ । ५६ । (८) ५ । वाल्यखिल्यसूक्तम् । पृषध्नः काण्वः । पंक्तिः ।)

अचैत्यमिश्रिकितुर् हव्यवाद् स सुमद्रथः ।	
अग्निः शुक्रेण शोचिषा बृहत्सूरो अरोचत दिवि सूर्यो अरोचत	२४५५

२१ (केशिनः)-अग्निः सूर्यो वायुश्च ।

(ऋ० १ । १६४ । ४४ दीर्घतमा औचथ्यः । त्रिष्टुप् ।)

त्रयः केशिनं ऋतुथा वि चक्षते संवत्सरे वपत् एक एषाम् ।	
विश्वमेको अग्नि चष्टे शचीभिर् ध्राजिरेकस्य ददृशे न रूपम्	२४५६

२२ अग्निसूर्यानिलाः ।

(ऋ० ८ । १८ । ९ इरिम्बिठिः काण्वः । उष्णिक् ।)

अमभिरग्निभिः करचुं छं नस्तपतु सूर्यः । शं वातो वातु अरपा अप स्निधः	२४५७
--	------

अग्निसूर्यवायवः ।

(ऋ० १० । १३६ । १-७ ॥ २४५८ जूतिः, २४५९ वातजूतिः २४६० विप्रजूतिः, २४६१ वृषाणकः, २४६२ करिकतः २४६ एतशः, २४६४ ऋष्यशृङ्गः (एते वातरशना मुनयः) । (केशिनः=)
अग्नि-सूर्य-वायवः । अनुष्टुप् ।)

केश्य॑ग्निं केशी॑ त्रिषं॑ केशी॑ वि॒भर्ति॑ रोद॒सी ।	
केशी॑ ४ । ८ स्वर्द॒शे केशी॑दं ज्योति॑रुच्यते	२४५८
मुन॒या वा॒तर॒शनाः पि॒शङ्गा॑ वसते॒ मला॑ ।	
वा॒त॒स्यानु॑ ध्राजिं॒ यन्ति॑ यद् दे॒वासो॑ अ॒र्वि॒क्षत॑	२४५९
उ॒न्म॒दिता॑ मौ॒नेये॑न॒ वाताँ॑ आ त॒स्थि॒मा व॒यम् ।	
शरी॑रेद॒स्माकं॑ यूयं॒ मर्ता॑सो अ॒भि प॑श्यथ	२४६०
अ॒न्तरि॑क्षेण प॒तति॑ विश्वा॑ रूपा॒वचा॑क॒शत् ।	
मु॒निर्दे॒वस्य॑दे॒वस्य॑ सौक॑त्याय॒ सखा॑ ह॒तः	२४६१
वा॒त॒स्याश्चो॑ वा॒योः सखा॑ अथो॑ दे॒वेषि॑तो॒ मुनिः॑ ।	
उ॒भौ स॑मु॒द्रावा॑ क्षेति॒ यश्च॒ पूर्वं॒ उ॒ताप॑रः	२४६२
अ॒प्सर॑सां गन्ध॒र्वाणां॑ मृ॒गाणां॑ च॒रणे॑ च॒रन् ।	
केशी॑ के॒तस्य॑ वि॒द्वान् त॒सखा॑ स्वा॒दुर्म॑दि॒न्तमः॑	२४६३
वा॒युर॑स्मा॒ उपा॑मन्थत् पि॒नष्टि॑ स्मा कु॒नन्म॑ ।	
केशी॑ वि॒षस्य॑ पात्रे॒ण यद् रु॒द्रेणा॑पि॒बत् स॒ह	२४६४

अग्नीषोमौ ।

(ऋ० १ । ९३ । १-१२ । गोतमो राहूगणः । २४६५-२४६७ अनुष्टुप् ; २४६८-२४७१, २४७६ त्रिष्टुप् ; २४७२ जगती त्रिष्टुप्वा ; २४७३-२४७५ गायत्री ।

अग्नी॑षोमा॒विमं॑ सु मे॒ शृणु॑तं वृष॒णा ह॒वम् । प्र॒ति॒ सु॒क्ता॒नि ह॒र्य॑तं भव॑तं दा॒शुषे॑ मयः २४६५
अग्नी॑षोमा॒ यो अ॒द्य वा॑म् इ॒दं वचः॑ स॒पर्य॑ति । तस्मै॑ ध॒त्तं सु॒वीर्यं॑ ग॒वां पोषं॑ स्व॒श्व्यम् २४६६
अग्नी॑षोमा॒ य आहु॑तिं॒ यो वा॑ दा॒शाद्द्वि॒ष्कृ॒तिम् । स प्र॒जया॑ सु॒वीर्यं॑ वि॒श्वमायु॑र्व्य॒श्ववत् २४६७

अग्नी॑षोमा॒ चेति॑ तद् वी॒र्यं॑ वा॒ यदमु॑ष्णीतम॒वसं॑ प॒णि गाः ।

अवा॑तिर॒तं वृ॒सय॑स्य शे॒षो ऽवि॑न्द॒तं ज्योति॑रेकं ब॒हुभ्यः॑

२४६८

युवमेतानि दिवि रौचनानि अग्निश्च सोम सक्रतू अधत्तम् ।	
युवं सिन्धूरभिर्गस्तेरवद्याद् अग्नीषोमावमुञ्चतं गृभीतान्	२४६९
आन्यं दिवो मातरिश्वा जभार अमथ्नादन्यं परि ज्येनो अद्रेः ।	
अग्नीषोमा ब्रह्मणा वावृधाना उरुं यज्ञाय चक्रधुरु लोकम्	२४७०
अग्नीषोमा हविषः प्रस्थितस्य वीतं हर्षतं वृषणा जुषेथाम् ।	
सुशर्माणा स्ववसा हि भूतम् अथा धत्तं यजमानाय शं योः	२४७१
यो अग्नीषोमा हविषा सपर्याद् देवद्रीचा मनसा यो घृतेन ।	
तस्य व्रतं रक्षतं पातमंहसो विशे जनाय महि शर्म यच्छतम्	२४७२
अग्नीषोमा सर्वेदसा सहूती वनतं गिरः । सं देवत्रा बभूवथुः	२४७३
अग्नीषोमावनेन वां यो वां घृतेन दाशति । तस्मै दीदयतं बृहत्	२४७४
अग्नीषोमाविमानि नो युवं हव्या जुजोषतम् । आ यातुमुप नः सचा	२४७५
अग्नीषोमा पिपृतमर्वतो न आ प्यायन्तामुस्त्रिया हव्यसूदः ।	
अस्मे बलानि मधवत्सु धत्तं कृणुतं नो अध्वरं श्रुष्टिमन्तम्	२४७६

(अथर्व० ६ । ५४ । १-३ । ब्रह्मा । अनुष्टुप् ।)

इदं तद् युज उत्तरम् इन्द्रं शुभ्राम्यष्टये । अस्य क्षत्रं श्रियं महीं बृष्टिर्वि वध्या तृणम् २४७७
 अस्मै क्षत्रमग्नीषोमौ अस्मै धारयतं रयिम् । इमं राष्ट्रस्याभीवर्गे कृणुतं युज उत्तरम् २४७८
 सर्वन्धुश्चासबन्धुश्च यो अस्माँ अभिदासति । सर्वं तं रन्धयासि मे यजमानाय सुन्वते २४७९

(अथर्व० ६ । ५८ । ३ । अथर्वा (यशस्कामः) । अग्निः, इन्द्रः, सोमः । अनुष्टुप् ।)

यशा इन्द्रो यशा अग्निर् यशाः सोमो अजायत ।

यशा विश्वस्य भूतस्य अहमस्मि यशस्तमः २४८०

(अथर्व० ६ । ९३ । ३ । शन्तातिः । अग्निषोमौ वरुणः मरुतः वातपर्जन्यौ । त्रिष्टुप् ।)

त्रायध्वं नो अघर्विषाभ्यो वधाद् विश्वे देवा मरुतो विश्ववेदसः ।

अग्नीषोमा वरुणः पूतदक्षा वातापर्जन्ययोः सुमतौ स्याम २४८१

(अथर्व० ७ । ११४ (११९) । १-२ ॥ भार्गवः । अग्नीषोमौ । अनुष्टुप् ।)

आ ते ददे वक्षणाभ्य आ तेऽहं हृदयाद् ददे ।

आ ते मुखस्य संकाशात् सर्वं ते वर्च आ ददे २४८२

प्रेतो यन्तु व्याध्वः प्रानुध्याः प्रो अशस्तयः ।

अग्नी रक्षस्विनीर्हन्तु सोमो हन्तु दुरस्यतीः २४८३

अग्निदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

[२] १।१।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
 स देवाँ एह वक्षति ।
 (७०५) ४।८।२ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 स देवाँ एह वक्षति ।
 [४] १।१।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
 विश्वतः परिभूरसि ।
 (१८९२) १।९७।६ (कुत्स आंगिरसः । अग्निः)
 विश्वतः परिभूरसि ।
 [५] १।१।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
 देवो देवेभिरागमत् ।
 (५१२) ३।१०।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 अग्निर्देवेभिरागमत् ।
 [८] १।१।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । अग्निः)
 राजन्तमध्वराणां ।
 (३८) १।२७।१ (शुनः शेष आजीगर्तिः । अग्निः)
 सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
 (१०३) १।४५।४ (प्रस्फण्वः काण्वः । अग्निः)
 राजन्तमध्वराणाम् ।
 ८।८।१८ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
 राजन्तमध्वराणाम् ।
 [१०] १।१२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 अग्निं दूतं वृणीमहे ।
 (७०) १।३६।३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे ।
 (८८) १।४४।३ अद्या दूतं वृणीमहे ।
 [१०] १।१२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
 अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।
 (७०) १।३६।३ (कण्वो घौरः । अग्निः)
 प्र त्वा दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।
 (९२) १।४४।७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 होतारं विश्ववेदसम् ।
 (१२२६) ८।१९।३ (सोमरि काण्वः । अग्निः)
 यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होतारममर्त्यम् ।
 अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

[१२] १।१२।३ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 अग्ने देवाँ इहा वह ।
 (१९) १।१२।१० (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 अग्ने देवाँ इहा वह ।
 (२२) १।१५।४ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 अग्ने देवाँ इहा वह ।
 [१३] १।१२।४ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 यदग्ने यासि दूत्यम् । देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
 (२२१) १।७४।७ (गौतमो राहूगणः । अग्निः)
 यदग्ने यासि दूत्यम् ।
 (९२४) ५।२६।५ (वसूयवः अत्रियाः । अग्निः)
 देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
 (१३५६) ८।४४।१४ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
 [१५] १।१२।६ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 कविर्गृहपतिर्युवा ।
 (११७८) ७।१५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 कविर्गृहपतिर्युवा ।
 (१४६३) ८।१०२।१ (प्रयोगो भार्गवः — । अग्निः)
 कविर्गृहपतिर्युवा ।
 [१६] १।१२।७ कविमग्निमुप स्तुहि ।
 १।१३६।६ इन्द्रमग्निमुप स्तुहि ।
 [१६] १।१२।७ सत्यधर्माणमध्वरे ।
 ५।५१।२ सत्यधर्माणो अध्वरम् ।
 [१८] १।१२।९ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 तस्मै पावकः मृळय ।
 (१३७०) ८।४४।२८ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 तस्मै पावकः मृळय ।
 [१९] १।१२।१० (मेधातिथिः काण्वः । अग्निः)
 स नः पावकः दीदिवः ।
 (५१६) ३।१०।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 स नः पावकः दीदिहि ।
 [१९] १।१२।१०; (१२) १।१२।३, (२२) १।१५।४
 अग्ने देवाँ इहा वह ।

[२०] १।१२।११ (मेधातिथि काण्व । अग्निः)
 स नः स्तवान् आ भर ।
 ...रयिं वीरवतीमिषम् ।
 ८।२४।३ (विश्वमनः वैयश्वः । इन्द्र)
 स नः स्तवान् आ भर रयिं ।
 ९।४०।५ (बृहन्मतिराङ्गिरस । पवमान सोम)
 स नः पुनान् आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम् ।
 ९।६१।६ अमहीयुराङ्गिरस । पवमान सोम)
 स नः पुनान् आ भर रयिं वीरवतीमिषम् ।
 [२१] १।१२।१२ (मेधातिथि काण्व । अग्निः)
 अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
 .. इमं स्तोमं जुषस्व नः ।
 (१३५६) ८।४४।१४ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
 (१५८८) १०।२१।८ (विमद ऐन्द्रः । अग्निः)
 अग्ने शुक्रेण शोचिषोरू ।
 (१३२५) ८।४३।१६ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 इमं स्तोमं जुषस्व मे ।
 [२२] १।१५।४, (१२) १।१२।३, (१९) १।१२।१०
 अग्ने देवाँ इहा वह ।
 [२८] १।२६।१; १।१४।११, सेमं नो अध्वरं यज ।
 [३१] १।२६।४ (शुनः शेष आजीगर्ति । अग्निः)
 वरुणो मित्रो अर्यमा । सीदन्तु मनुषो यथा ।
 १।४१।१ (कण्वो घौरः । वरुणमित्रार्यमणः)
 वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ४।५५।१० (वमदेवो गौतम । विश्वेदेवा)
 वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ५।६७।३ (यजत आत्रेय । मित्रावरुणौ)
 वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ८।१८।३ (हरिम्बिठि काण्व । आदित्या)
 वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ८।२८।२ (मनुवैवस्वत । विश्वेदेवा)
 वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ८।८३।२ (कुसीदी काण्व । विश्वेदेवा)
 वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ९।६४।२९ (कश्यपो मारीच । पवमानः सोम)
 सीदन्तो वनुषो यथा ।
 [३२] १।२६।५ (शुनः शेष आजीगर्ति । अग्निः)
 इमा उषु श्रुधा गिरः ।

(१०४) १।४५।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 इमा उषु श्रुधी गिरः ।
 (४३३) २।६।१ (सोमाहुतिर्भागवः । अग्निः)
 इमा उषु श्रुधी गिरः ।
 [३७] १।२६।१० (शुनः शेष आजीगर्ति । अग्निः)
 इमं यज्ञमिदं वचः ।
 १।९१।१० (गोतमो राह्वगणः । सोमः)
 इमं यज्ञमिदं वचो । जुजुषाण उपागहि ।
 (१६९९) १०।१५०।२ (मृळीको वासिष्ठः । अग्निः)
 इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि ।
 [३८] १।२७।१ (शुनः शेष आजीगर्ति । अग्निः)
 सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
 (८) १।१८।(१०३) १।४५।४ राजन्तमध्वराणां ।
 ८।८।१८ राजन्तावध्वराणां ।
 [५७] १।३१।८ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 यशसं कारं कृणुहि स्तवानः ।
 देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।
 ९।६९।१० (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।
 १०।६७।१२ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)
 देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ।
 [७०] १।३६।३ प्रत्वा दूतं वृणीमहे;
 (१०) १।१२।१ अग्निं दूतं वृणीमहे ।
 (८८) १।४४।३ अद्या दूतं वृणीमहे ।
 [७०] १।३६।३; (१०) १।१२।१; (९२) १।४४।७
 होतारं विश्ववेदसं ।
 [७१] १।३६।४ देवासस्त्वा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १।४०।५ यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ७।६६।१२ यदोहते वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ७।८२।१०; ८।३।१० अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ८।१९।१६ येन चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 ८।२६।११ सजोषसा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।३६।१ द्यावा क्षामा वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।६५।१ अग्निरिन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।६५।९ इन्द्रवायू वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 १०।९२।६ तेभिश्चष्टे वरुणो मित्रो अर्यमा ।
 [७२] १।३६।५ (कण्वो घौरः । अग्निः)
 अग्ने दूतो विशामसि ।
 (९४) १।४४।९ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 अग्ने दूतो विशामासि ।

[७४] १ । ३६ । ७ (कण्वो घौरः । अग्निः)
 तं धेमिस्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
 ८ । ६९ । १७ (प्रियमेध आहिरस । इन्द्रः)
 तं धेमिस्था नमस्विन उप स्वराजमासते ।
 [७५] १ । ३६ । ८ (कण्वो घौरः । अग्निः)
 उरु क्षयाय चक्रिरे ।
 ७ । ६० । ११ (वसिष्ठ । मित्रावरुणौ)
 उरु क्षयाय चक्रिरे सुधातु ।
 [७७] १ । ३६ । १० (कण्वो घौरः । अग्निः)
 यं त्वा देवासो मनवे दधुरिह यजिष्ठं हव्यवाहनः ।
 (९०) १ । ४४ । ५ (प्रस्कण्व काण्वः । अग्निः)
 यजिष्ठं हव्यवाहनः ।
 (११८२) ७ । १५ । ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 यजिष्ठो हव्यवाहनः ।
 (१२४४) ८ । १९ । २१ (सोमरि काण्वः । अग्निः)
 यजिष्ठं हव्यवाहनम् ।
 [७९] १ । ३६ । १२ स नो मृळ महाँ असि ।
 (७१२) ४ । ९ । १ अग्ने मृळ महाँ असि ।
 १ । ३६ । १४ (कण्वो घौरः । यूपः)
 कृधी न उर्ध्वाञ्चरथाय जीवसे ।
 १ । १७२ । ३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुतः)
 ऊर्ध्वान्नः कर्तं जीवसे ।
 [८०] १ । ३६ । १५ (कण्वो घौरः । अग्निः)
 पाहि नो अग्ने रक्षसः पाहि धूर्तेरराणः ।
 (१११२) ७ । १ । १३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 पाहि नो अग्ने रक्षसो अजुष्टात्पाहि धूर्तेरररुषो अघायोः
 [८१] १ । ४४ । २ (प्रस्कण्व काण्वः । अग्निः)
 अग्ने रथीरध्वराणाम् ।
 (१२१५) ८ । ११ । २ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
 अग्ने रथीरध्वराणाम् ।
 [८७] १ । ४४ । २; १ । ९ । ८; ८ । ६५ । ९
 अस्मे धेहि श्रवो बृहत् ।
 [८८] १ । ४४ । ३ अद्या दूतं वृणीमहे ।
 (१०) १ । १२ । १ अग्निं दूतं वृणीमहे ।
 (७०) १ । ३६ । ३ प्र त्वा दूतं वृणीमहे ।
 [९०] १ । ४४ । ५, (७७) १ । ३६ । १०
 यजिष्ठं हव्यवाहनः । ७ । १५ । ६ यजिष्ठो
 हव्यवाहनः । ८ । १९ । २१ यजिष्ठं हव्यवाहनं ।
 [९२] १ । ४४ । ७; (१०) १ । १२ । १;
 (७०) १ । ३६ । ३ होतार विश्ववेदसं ।

[९४] १ । ४४ । ९; (७२) १ । ३६ । ५
 अग्ने दूतो विशामसि ।
 [९६] १ । ४४ । ११ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 नि त्वा यज्ञस्य साधनम् ।
 (५३८) ३ । २७ । २ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 गिरा यज्ञस्य साधनम् ।
 ८ । ६ । ३ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 सोमैर्यज्ञस्य साधनम् ।
 (१२७८) ८ । २३ । ९ (विश्वमना कैयध्वः । अग्निः)
 यज्ञस्य साधनं गिरा ।
 [९९] १ । ४४ । १४ (प्रस्कण्व काण्वः । अग्निः)
 अग्निजिह्वा क्रतावृधः ।
 अश्विभ्यामुषसा सजूः ।
 ७ । ६६ । १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
 अग्निजिह्वा क्रतावृधः ।
 १० । ६५ । ७ (वसुकर्णो वासुकः । विश्वेदेवाः)
 दिवशसो अग्निजिह्वा क्रतावृधः ।
 ५ । ५१ । ८ (स्वस्त्यात्रेयः । विश्वेदेवाः)
 अश्विभ्यामुषसा सजूः ।
 [१०३] १ । ४५ । ४ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 प्रियमेधा अहूषत ।
 ८ । ८ । १८ (सक्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
 प्रियमेधा अहूषत ।
 ८ । ८७ । ३ बुध्निको वा वासिष्ठः । अश्विनौ)
 [१०३] १ । ४५ । ४; (८) १ । १८ राजन्तमध्वराणाम् ।
 ८, ८ । १८ राजन्तावध्वराणाम् ।
 (३८) १ । २७ । १ सम्राजन्तमध्वराणाम् ।
 [१०३] १ । ४५ । ४ अग्निं शुक्रेण शोचिषा ।
 (२१) १ । १२ । १२ अग्ने शुक्रेण शोचिषा ।
 [१०४] १ । ४५ । ५; (३२) १ । २६ । ५; २ । ६ । १
 इमा उषु श्रुधी गिरः ।
 [१०५] १ । ४५ । ६ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 अग्ने हव्याय वोळहवे ।
 (५६१) ३ । २९ । ४ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 अग्ने हव्याय वोळहवे ।
 [१०६] १ । ४५ । ७ (प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
 श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं ।
 (१६८९) १० । १४० । ६ (अग्निः पावकः । अग्निः)
 श्रुत्कर्णं सप्रथस्तमं त्वा गिरा ।

[१०७] १, ४५, ८, अग्ने मर्ताय दाशुषे १ ८४, ७, ९, ९८, ४
वसु मर्ताय दाशुषे । ८, १, २२ देवो मर्ताय दाशुषे ।

[१११] १, ५८, २ (नोधा गौतम । अग्निः)

दिवो न सानु स्तनयश्चक्रिदत् ।

९, ८६, ९ (अकृष्टा माषा । पवमान सोम)

[११३] १, ५८, ४ (नोधा गौतम । अग्निः)

कृष्णं त एम रुशदूर्मे अजर ।

(७०१) ४, ७, ९ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाक् ।

(११६) १ । ५८ । ७ (नोधा गौतमः । अग्निः)

यं वाघतो वृणति अध्वरेषु ।

सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।

१०, ३०, ४ (कवष ऐल्लष । आप अपानपात् वा)

यं विप्रास ईळते अध्वरेषु ।

३, ५४, ३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवा)

सपर्यामि प्रयसा यामि रत्नम् ।

[११७] १, ५८, ८ अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य

४, २, २ इह त्वं सूनो-६, ५०, ९ उत त्वं सूनो-०- ।

[११८] १, ५८, ९; (१२३) १, ६०, ५, १, ६१, १६, १, ६२, १३,

१६४, १५; ८, ८०, १०, ९, ९३, ५ प्रातर्मक्षु

धियावसुर्जगम्यात् ।

[१२२] १, ६०, ४ (नोधा गौतम । अग्निः)

अग्निर्भुवद्रयिपती रयीणाम् ।

(१९५) १, ७२, १ (पराशरः शाक्यः अग्निः)

[१४३] * १ । ६६ । ९, १० (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

ऐनोन्नवन्त गावः स्व १ ईशीके ।

(१७३) १, ६९, ९, १० (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

नवन्त विश्वे स्व १ ईशीके ।

[१६२] १, ६८, ९, १०, पितुर्न पुत्राः क्रतुं जुषन्त ।

९, ९७, ३०, पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यता न ।

[१७०] १, ६९, ७ नकिष्ट यता व्रता मिनन्ति ।

१०, १०, ५ नकिरस्य प्र मिनन्ति व्रतानि ।

[१७३] १, ६९, ९, १०; * (१४३) १, ६६, ९, १०

[१७८] १, ७०, ५, ६, (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

स हि क्षपावाँ अग्नी रयीणां ।

(११६५) ७, १०, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

स हि क्षपावाँ अभवद्रयीणाम् ।

[१८८] १, ७१, ४ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

मयीद्यदीं बिभृतो मातरिश्वा ।

(३४८) १, १४८, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)

मयीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा ।

[१९३] १, ७१, ९ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

राजानामित्रावरुणा सुपाणी ।

३, ५६, ७ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापतिर्वाच्यो वा ।

विश्वेदेवा)

[१९४] १, ७१, १० (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

प्र मर्षिष्ठा अग्नि विदुष्कविः सन् ।

७, १८, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

एवाव द्युभिरग्निः— ।

[१९५] १, ७२, १ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

हस्ते दधानो नर्या पुरुणि ।

७, ४५, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सविता)

[१९५] १, ७२, १; (१२२) १, ६०, ४ अग्निर्भुवद्रयिपती

रयीणां ।

[१९७] १, ७२, ३ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

नामानि चिद्दधिरे यज्ञियानि ।

(९४२) ६, १, ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

[१९८] १, ७२, ४ अग्निं पदे परमे तस्थिवांसम् ।

२, ३५, १४ अस्मिन् पदे— ।

[१९९] १, ७२, ५ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

रिरिकांसस्तन्वः कृण्वत स्वाः ।

४, २४, ३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)

रिरिकांसस्तन्वः कृण्वत त्राम ।

[२०३] १, ७२, ९ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

कृण्वानासो अमृतत्वाय गातुम् ।

३, ३१, ९ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्रः)

[२०६] १, ७३, २ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

देवो न यः सविता सत्यमन्मा ।

९, ९७, ४८ (कुत्स आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[२०७] १, ७३, ३ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

देवो न यः पृथिवो विश्वधाया उपक्षेति

हितमिन्नो न राजा ।

पुरः सदः शर्मसदो न वीरा ।

३, ५५, २१ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः प्रजापति

र्वाच्यो वा । विश्वेदेवाः)

इमां च नः पृथिवीं विश्वधाया उप क्षेति— ।

[२१२] १, ७३, ८ (पराशरः शाक्यः । अग्निः)

आपप्रिवात्रोदसी अन्तरिक्षम् ।

१०, १३९, २ (विश्वावसुर्देवगन्धर्वः । सविता)
 [२१४] १, ७३, १० (पराशरः शाक्यः । अग्निः)
 एता ते अग्न उच्यथानि वेधो जुष्टानि सन्तु ।
 (६६६) ४, २, २० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 एता ते अग्न उच्यथानि वेधोऽवौचाम कवये ता जुषस्व ।
 उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो नो महो रायः पुरुवार प्र यन्धि ।
 [२१७] १, ७४, ३ (गोतमो राह्वगण । अग्निः)
 अग्निर्वृत्रहाजनि ।
 धनंजयो रणेरणे ।
 (१०५६) ६, १६, १५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 दस्युहन्तमम् ।
 धनंजयं रणेरणे ।
 [२२१] १, ७४, ७; (१३) १, १२, ४ यदग्ने यासि दूत्यम् ।
 [२२७] १, ७५, ४ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 सखा सखिभ्य ईडयः ।
 ९ ६६, १ (शतं वैखानसाः । पवमान सोमः)
 [२३२] १, ७६, ४ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 वेषि होत्रमुत पोत्रं यजत्र ।
 (१४९३) १०, २, २ (त्रित आप्त्यः । अग्निः)
 — पोत्रं जनानां ।
 [२३४] १, ७७, १ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा होता यजिष्ठ ।
 (६४७) ४, २, १ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 — ऋतावा । होता यजिष्ठो ।
 [२३७] १, ७७, ४ वाजप्रसूता इषयन्त मन्म ।
 ७, ८७, ३ प्रचेतसो य इषयन्त मन्म ।
 [२३९] १, ७८, १ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 अभि त्वा गोतमा गिरा जातवेदो विचर्षणे ।
 द्युमनैरभि प्र णोनुमः ।
 ४, ३२, ९ (वामदेवो गौतमः । इन्द्र)
 अभि त्वा गोतमा गिरानूषत ।
 (१०७०) ६, १६, २९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 आ भर जातवेदो विचर्षणे ।
 (१०७७) ६, १६, ३६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 आ भर जातवेदो विचर्षणे ।
 (१३१११) ८, ४३, २ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 जातवेदो विचर्षणे ।
 [२३९ - २४३] १, ७८ १-५ द्युमनैरभि प्र णोनुमः ।
 [२४६] १, ७९, ३ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 अर्यमा मित्रो वरुणः परिज्मा ।

८, २७, १७ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
 — वरुणः सरातयो ।
 १०, ९३, ४ (तान्व पार्थ्यः । विश्वेदेवाः)
 [२४७] १, ७९, ४ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 ईशानः सहस्रो यदो ।
 (११८७) ७, १५, ११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 [२४८] १, ७९, ५ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 अग्निरीळेन्यो गिरा ।
 (१८५५) १०, ११८, ३ (उरुक्षय आमहीयव । रक्षोहाऽग्निः)
 [२५१] १, ७९, ८ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 सत्रासाहं वरेण्यम् ।
 ३, ३४, ८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्र)
 — वरेण्यं सहोदां ।
 [२५२] १, ७९, ९ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 रयिं विश्वायुपोषसम् ।
 ६, ५९, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 [२५५] १, ७९, १२ (गोतमो राह्वगणः । अग्निः)
 अग्नी रक्षांसि सेधति ।
 (११८६) ७, १५, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 [२५६-२६९] १, ८४, १-१४ अग्ने सख्ये मा रिषामा
 वयं तव ।
 [२५८] १, ९४, ३ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः)
 त्वे देवा हविरदन्त्याहुतम् ।
 (३८१) २, १, १३ (गुत्समद शौनको भार्गव (आङ्गिरसः
 शौनहोत्रो) । अग्निः)
 [२६८] १, ९४, १३ शर्मन्त्स्याम तव सप्रथस्तमे ।
 ५, ६५, ५ स्याम सप्रथस्तमे ।
 [२७१] १, ९४, १६; (१८७८) ९५, ११; (१८७८)
 ९६, ९; (१७२६) ९८, ३; १००, १९; १०२,
 ११; १०३, ८; १०५, १९, १०६, ७, १०७,
 ३; १०८, १३; १०९, ८; ११०, ९; १११, ५;
 ११२, २५; ११३, २०; ११४, ११; ११५, ६;
 ९, ९७, ५८; तन्नो मित्रो वरुणो मामह-
 न्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।
 [१८७२] (औषसोऽग्निः प्रकरणं) । ऋ १।९५।१-११
 १, ९५, ५ जिह्वाणामूर्ध्वः स्वयशा उपस्थे ।
 २, ३५, ९ जिह्वाणामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।
 [१८७५] १, ९५, ८ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्नि औषसोऽग्निर्वा)
 त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्.. गोभिरङ्गिः । धीः ।

९, ७१, ८ (ऋषभो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
 त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्थ्य सुष्ठुती गोअग्रया ।
 (ऋ१, ९६, १—९ द्रविणोदा अग्निः प्रकरण ।)
 [१८७८] १, ९५, ११; १, ९६, ९ (कुत्स आङ्गिरस । अग्निः)
 एवा नो अग्ने समिधा वृधानो
 रेवत्पावक श्रवसे वि भाहि ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः
 सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ।
 [१८७९-१८८६] १, ९६, १-७ देवा अग्निं
 धारयन्द्रविणोदाम् ।
 [१८८४] १, ९६, ६ (कुत्स आङ्गिरस । अग्नि
 द्रविणोदा अग्निर्वा)
 रायो बुध्नः संगमनो वसूतां ।
 १०, १३९, ३ विश्वावसुर्देव गन्धर्वः । सविता)
 [१८८६] १, ९६, ८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।
 १, १५, ७ द्रविणोदा द्रविणसो ।
 [१८७८] १, ९६, ९ (१८७८) १, ९५, ११
 (शुचिरग्नि प्रकरणं ऋ १, ९७, १-८)
 (१८८७-१८९४) १, ९७, १, १-८,
 अप नः शोशुचदधम् ।
 [१८८९] १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।
 (८४०) ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयो ।
 [१८९२] १, ९७, ६ ; (४) १, १, ४
 विश्वतः परिभूरसि ।
 [१७२५] १, ९८, २ (कुत्स आङ्गिरस । अग्नि ,
 वैश्वानरोऽग्निर्वा)
 पृष्ठो दिवि पृष्ठो अग्निः पृथिव्यां.. । स नो दिवा
 स रिषः पातु नक्तम् ।
 (१७९५) ७, ५, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
 पृष्ठो दिवि धार्यग्निः पृथिव्यां ।
 (१८२८) १०, ८७, १ (पायुर्भारद्वाज । रक्षोहामिः)
 स नो दिवा ।
 (जातवेदा अग्नि प्रकरणं)
 [१८६२] १, ९९, १ स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा ।
 (३६२) १, १८९, २, १०, ५६, ७
 स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
 [२७२] १, १२७, १ वसुं सूनुं सहसो जातवेदसं ।
 (१४१९) ८, ७१, ११ अग्निं सुनुं-
 [२७३] १, १२७, २ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः) हुवेम .
 विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः । ... होतारं चर्षणीनाम् ।

(१३९१) ८ । ६०, ३ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
 विप्रेभिः शुक्र मन्मभिः
 (१२७६) ८, २३, ७ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
 अग्निं वः हुवे होतारं चर्षणीनाम् ।
 (१४०५) ८, ६०, १७ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
 अग्निमग्निं वो... हुवेम । होतारं चर्षणीनाम् ।
 [२७९] १, १२७, ८ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 अतिथिं मानुषाणां ।
 (१२९४) ८, २३, २५ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
 [२८०] १, १२७, ९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्यस्मिन्तम उत क्रतुः ।
 १, १७५, ५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्र)
 [२८१] १, १२७, १० (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 विश्वास् क्षास् जोगुवे ।
 ५, ६४, २ (अर्चनाना आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 [२८४] १, १२८, २ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 क्रतस्य पथा नमसा हविष्मता ।
 (१९९३) १०, ७०, २ (सुमित्रो वाधयश्वः ।
 आप्रीसूक्तं=नराशंसः)
 क्रतस्य नमसा मियेधो ।
 १०, ३१, २ (कवष ऐलषः । विदे देवाः)
 पथा नमसा विवासेत् ।
 [२८८] १, १२८, ६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 ... अरतिः... ।
 ... देवत्रा हव्यमोहिषे ।
 अग्निर्द्वारा व्यूषति ।
 (१२२४) ८, १९, १ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)
 अरतिं देवत्रा हव्यमोहिरे ।
 (१३०५) ८, ३९, ६ (नाभाकः काण्वः । अग्निः)
 अग्निर्द्वारा व्यूषते ।
 [२९०] १, १२८, ८ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
 अग्निं होतारमीळते वसुधितिं प्रियं चेतिष्ठमरतिं
 न्येरिरे
 (७६१) ५, १, ७ (बुधगविष्टिरावात्रेयौ । अग्निः)
 अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।
 (१०१९) ६, १४, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 अग्निं होतारमीळते
 (११९२) ७, १६, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । प्रगाथः)
 प्रियं चेतिष्ठमरतिं स्वध्वरं ।

[३०१] १, १४०, १० (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि ।
 (१७८५) ६, ८, ६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः)
 —धारयानामि ।
 [३१३] १, १४१, ९ अरान्न नेमिः परिभूरजायथाः ।
 १, ३२, १५ — परि ता बभूव ।
 [३१९] १, १४३, २ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 स जायमानः परमे व्योमन्याविरग्निः ।
 (१७८१) ६, ८, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । वैश्वानरोऽग्निः)
 —व्योमनि व्रतान्यग्निः ।
 (१८००) ७, ५, ७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । वैश्वानरोऽग्निः)
 —व्योमन् ।
 कृन्नपत्याय जातवेदो... ।
 [३२५] १, १४३, ८ अदब्धेभिरद्वपितेभिरिष्टेऽनिमि-
 षद्भिः परि पाहि नो जाः ।
 (१७८६) ६, ८, ७ अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टे
 ऽस्माकं पाहि त्रिषधस्थ सूरान् ।
 [३२९] १, १४४, ४ समाने योना मिथुना समोकसा ।
 १, १५९, ४ जामी सयोनी-- ।
 [३३०] १, १४४, ५ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 देवं मर्तास ऊतये हवामहे ।
 (५००) ३, ९, १ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 देवं मर्तास ऊतये ।
 (९०१) ५, २२, ३ (विश्वसामा आत्रेयः । अग्निः)
 —ऊतये ।
 (१२१९) ८, ११, ६ (वत्सः । काण्वः । अग्निः)
 —ऊतये । अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
 [३३२] १, १४४, ७ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 मन्द्र स्वधाव ऋतजात सुक्रतो ।
 रण्वः संहृष्टौ पितुर्माँइव क्षयः ।
 (१४४८) ८, ७४, ७ (गोपवन आत्रेयः । अग्निः)
 मन्द्र सुजात सुक्रतो ।
 १०, ६४, ११ (गयः प्लतः । विश्वेदेवाः)
 —क्षयो ।
 [३४०] १, १४६, ३ समानं वत्समभि संचरन्ती ।
 ३, ३३, ३, १०, १७, ११ समानं योनिमनु
 संचरन्ती (१०, १७, ११, संचरन्तम्) ।
 [३४३] १, १४७, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 ऋतस्य सामव्रणयन्त देवाः ।

(६९९) ४, ७, ७ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 —धामव्रणयन्त— ।
 [३४५] १, १४७, ३ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 (१८२५) ४, ४, १३ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)
 ये पायवो मामतेयं ते अग्ने पश्यन्तो अन्धं
 दुरितादरक्षन् । —ररक्ष तान्सुकृतो
 विश्ववेदा दिप्सन्त इद्रिपवो नाह देभुः ।
 [३४८] १, १४८, १ मयीद्यदीं विष्टो मातरिश्वा ।
 (१८८) १, ७१, ४ — विभृतो— ।
 [३५१] १, १४८, ४ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 आदस्य वातो अनु वाति शोचिर् ।
 (११२५) ७, ३, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 [३५३] १, १४९, १ (दीर्घतमा औचथ्यः । अग्निः)
 महः स राय एषते पतिर्दन् ।
 १०, ९३, ६ (तान्व पार्थ्यः । विश्वेदेवाः)
 —एषते ।
 [३६१] १, १८९, १ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । अग्निः)
 विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
 (४७५) ३, ५, ६ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 —देवो— ।
 [३६२] १, १८९, २ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । अग्निः)
 स्वस्तिभिरति दुर्गाणि विश्वा ।
 १०, ५६, ७ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वेदेवाः)
 [२४३८-४६] १, १९, १-९ मरुद्भिरग्न आ गहि ।
 [२४४०] १, १९, ३ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)
 विश्वे देवासो अद्रुहः ।
 ९, १०२, ५ (त्रित आप्त्यः । पवमानः सोमः)
 [२४४६] १, १९, ९ (मेधातिथिः काण्वः । अग्निर्मरुतश्च)
 अभि त्वा पूर्वपीतये ।
 ८, ३, ७ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
 [२४६६] १, ९३, २ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
 गवां पोषं स्वश्चयम् ।
 ९, ६५, १७ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्मार्गवो वा । पवमानः सोमः)
 [२४६७] १, ९३, ३ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
 विश्वमायुर्व्यश्नवत् ।
 ८, ३१, ८ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पती)
 विश्वमायुर्व्यश्नुतः ।
 १०, ८५, ४२ (सूर्या सावित्री ऋषिका । सूर्यो सावित्री)
 विश्वमायुर्व्यश्नुतम् ।

[२४६८] १, ९३, ४ अग्नीषोमा चेति तद्वीर्यं ।
३, १२, ९ तद्वां चेति प्र वीर्यम् ।
[२४७०] १, ९३, ६ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
यज्ञाय चक्रथुरु लोकम् ।

७, ९९, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राविष्णू)
[२४७२] १, ९३, ८ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
विशे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।
७, ८२, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[३७०] २, १, २ (गृत्समद शौनको भार्गवः [आङ्गिरस
शौनहोत्र] । अग्नि)
(१६६०) १०, ९१, १० (अरणौ वैतहव्य । अग्नि)
तवाग्ने होत्रं तव पोत्रमृत्विष्यं तव नेष्टु
त्वमग्निदत्तायतः ।
तव प्रशास्त्र त्वमध्वरीयसि ब्रह्मा चासि
गृहपतिश्च नो दमे ।
[३८१] २, १, १३ (२५८) १, ९४, ३
त्वे देवा हविरदन्याहुतम् ।
[३८४] २, १, १६ (गृत्समद शौनको भार्गव [आङ्गिरस
शौनहोत्र] । अग्नि) =
(३८४) २, २, १३, (गृत्समद शौनक । अग्नि)
ये स्तोतृभ्यो गो अग्रामश्वपेशस-
मग्ने रातिमुपसृजन्ति सूरयः ।
अस्माञ्च ताश्च प्र हि नेषि वस्य
आ बृहद्वदेम विदेथ सुवीराः ।
(३८४) २, १, १६; २, १३, ११, २१; १३, १३; १४, १२,
१५, १०; १६, ९; १७, ९, १८, ९, २०, ९, २३, १९, २४, १६
२७, १७; २८, ११; २९, ७; ३३, १५; ३५, १५; ३९, ८, ४०, ६,
४२, ३, ९, ८६, ४८, बृहद्वदेम विदेथ सुवीराः ।
[३८६] २, २, २ (गृत्समद शौनक । अग्नि)
अग्नि त्वा नक्तीरुषसो ववाशिरेऽग्ने वत्सं न
स्वसरेषु धेनवः ।
८, ८८, १ (नोधा गौतमः । इन्द्र)
अग्नि वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।
[३८८] २, २, ४ पाथो न पायं जनसी उभे अनु ।
९, ७०, ३ अदाभ्यासो जनुषी उभे अनु ।
[३९२] २, २, ८ (गृत्समद शौनकः । अग्नि)
होत्राभिरग्निर्मनुषः स्वध्वरो ।
(१५४४) १०, ११, ५ (हविर्धान आङ्गि । अग्निः)
होत्राभिरग्ने मनुषः स्वध्वरः ।

[४१७] २, ४, २ (सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि)
इमं विधन्तो अपां सधस्थे
द्वितादधुर्भुगवो विक्ष्वा३योः ।
(१६०२) १०, ४६, २ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
—सधस्थे ।
इच्छन्तो धीरा भृगवोऽविन्दन् ।
[४२८] २, ५, ४ (सोमाहुतिर्भार्गव । अग्निः)
वया इवानु रोहते ।
८, १३, ६ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
—जुषन्त यत् ।
[४३२] २, ५, ८ (सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि)
अयमग्ने त्वे अपि ।
(१३७०) ८, ४४, २८ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)
[४३३] २, ६, १, (३२) १, २६, ५; (१०४) १, ४५, ५
इमा उ षु भ्रुधी गिरः ।
[४३७] २, ६, ५ (सोमाहुतिर्भार्गवः । अग्नि)
स नो वृष्टिं दिवस्परि ।
९, ६५, २४ (भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
ते नो — ।
[४४३] २, ७, ३ अति गाहेमहि द्विषः ।
(५३९) ३, २७, ३ अति द्वेषांसि तरेम ।
[४४४] २, ७, ४ (सोमाहुतिर्भार्गव । अग्नि)
शुचिः पावक वन्द्यो ।
(११८६) ७, १५, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि)
—ईड्यः ।
[४०१] २, ८, ५ अग्निमुक्त्यानि वावृधुः ।
८, ६, ३५; ८, ९५, ६ इन्द्रमुक्त्यानि वावृधुः ।
[४०१] २, ८, ५ (गृत्समद शौनक । अग्नि)
विश्वा अधि श्रियो दधे ।
(१५८३) १०, २१, ३ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा
वसुक्छ्वा वासुकः । अग्नि)
—श्रियो धिषे विवक्षसे ।

१०, १२७, १ (कुशिक सोमर रात्रिर्वा भारद्वाजी ।
रात्रि)
—श्रियो ऽधित ।
[४०२] २, ८, ६ (गृत्समद शौनक । अग्नि)
अरिष्यन्तः सचेमह्यभि ष्याम पृतन्यत ।
८, २५, ११ (विश्वमना वैयश्व । विश्वेदेवा)
अरिष्यन्तो नि पायुभिः सचेमहि ।

९, ३५, ३ (प्रभूवसुराङ्गिरस । पवमान. सोम)
अभि ष्याम पृतन्यतः ।
(९२०) ५, २६, १, (१०४३) ६, १६, २;
(१४७८) ८, १०२, १६.
आ देवान्वाक्षि यक्षि च
२, ३६, ४, (गृत्समद शौनक । अग्नि शुचिश्च)
आ वक्षि देवाँ इह विप्र यक्षि च ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[४५१] ३, १, ५, क्रतुं पुनानः कविभिः पवित्रैः ।
३, ३१, १६ मध्वः पुनानाः — ।
[४५९] ३, १, १३; १, १६४, ५२
अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां ।
[४६१] ३, १, १५ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
रक्षा च नो दम्येभिरनीकैः ।
३, ५४, १ (प्रजापतिर्वैश्वामित्र, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वेदेवा) शृणोतु नो — ।
[४६५] ३, १, १९ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभिर्महान्
महीभिरुतिभिः सरण्यन् ।
३, ३१, १८ (कुशिक ऐपीरथि विश्वामित्रो गाथिनो वा । इन्द्र)
४, ३२, १ (वामदेवो गौतम । इन्द्र)
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्तस्माकमर्धमा गहि ।
महान्महीभिरुतिभिः ।
[४६६] ३, १, २० (विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः)
महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा जन्मञ्जमन्
निहितो जातवेदाः ।
३, ३०, २ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः)
स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा ।
(४६६) ३, १, २१, (४६७) ३, १, २० जन्मञ्जमन्
निहितो जातवेदाः ।
[४६७] ३, १, २१ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे
स्याम ।
३, ५९, ४ (विश्वामित्रो गाथिन । मित्र)
६, ४७, १३ (गर्गो भारद्वाज । इन्द्र)
१०, १३१, ७ (सुकीर्ति काक्षीवत । इन्द्र)
१०, १४, ६ (यमो वैवस्वत । अङ्गिर पित्रथर्वभृगुसोमा)

लिङ्गैकदेवता पितरो वा)
तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानामपि —
[४६८] ३, १, २२ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
अग्ने महि द्रविणमा यजस्व ।
(१६५०) १०, ८०, ७ (अग्नि सौचीको वैश्वानरो वा
सतिर्वाजंभरो वा । अग्नि)
[४६९] ३, १, २३ = ३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११
(विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि) = ३, १५, ७ (उत्कील कात्य ।
अग्नि) = ३, २२, ५ (गाथी कौशिक । अग्नि) = ३, २३, ५
(देवश्रवा देववातश्च भारतौ । अग्नि)
इलामग्ने पुरुदंसं सर्नि गोः शश्वत्तमं हवमानाय
साध ।
स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ।
[४७३] ३, ५, ४, मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।
(७७९) ५, ३, १ त्वं मित्रो भवासि यत्समिद्धः ।
[४७३] ३, ५, ४, (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
मित्रो होता वरुणो जातवेदाः ।
१०, ८३, २ (मन्युस्तापस । मन्यु)
मन्युर्होता — ।
[४७४] ३, ५, ५, (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्नि)
पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः ।
(१७६५) ४, ५, ८, (वामदेवो गौतम । वैश्वानरोऽग्नि)
—रूपो—
[४७५] ३, ५, ६ विश्वानि देवो वयुनानि विद्वान् ।
(६६१) १, १८९, १ —देव— ।
[४७९] ३, ५, ११ = ३, १, २३ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११
३, १५, ७ = ३, २२, ५ = ३, २३, ५
[४८१] ३, ६, २ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः)
आ रोदसी अपृणा जायमान

४ १८, ५ (अदिति. ऋषिका । वामदेव)
 आ रोदसी अपृणाज्जायमानः ।
 (१८११) ७, १३, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।
 वैश्वानरोऽग्नि)
 —जायमानः ।
 (१५९४) १०, ४५, ६ (वत्साग्रिर्मालन्दनः । अग्नि)
 —अपृणाज्जायमानः ।
 [४८४] ३, ६, ५ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 त्वं दूतो अभवो जायमानः ।
 [४८५] ३, ६, ६, (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि.)
 स्वध्वरा कृणुहि जातवेदः ।
 (९९३) ६, १०, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 —करति जातवेदः ।
 (१२०६) ७, १७, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्नि.)
 (१२०७) ७, १७, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि.)
 —करति जातवेदः ।
 [४८८] ३, ६, ९, (१९५२) २, ३, ११ अनुष्वधमा
 वह मादयस्व ।
 [४६९] ३, ६, ११, ३, १, २३, ३, ५, ११,
 ३, ६, ११, ३, ७, ११,
 ३, १५, ७, ३, २२, ५, ३, २३, ५,
 [४९७] ३, ७, ८; (१९५९) ३, ४, ७
 [५००] ३, ९, १; (९०१) ५, २२, ३; ८, ११, ६
 देवं मर्तास ऊतये ।
 (३३०) १, १४४, ५ — ऊतये हवामहे ।
 [५००] ३, ९, १ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 अपां नपातं सुभगं सुदीर्घिर्ति ।
 (१२२७) ८, १९, ४ (सोमरि काण्व । अग्नि)
 ऊर्जो —।
 [५००] ३, ९, १; १, ४०, ४ सुप्रतूर्तिमनेहसम् ।
 [५०५] ३, ९, ६ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 तं त्वा मर्ता अगृभ्णत देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 (१८५७) १०, ११८, ५ (उरुक्षय आमहीयव ।
 रक्षोहाऽग्नि)
 देवेभ्यो हव्यवाहन । तं त्वा हवन्त मर्त्याः ।
 १०, ११९, १३ (लब ऐन्द्र । आत्मा [इन्द्रः])
 देवेभ्यो हव्यवाहनः ।
 (१६९८) १०, १५०, १ (मृळीको वासिष्ठ. । अग्निः)
 देवेभ्यो हव्यवाहन ।

[५०७] ३, ९, ८ (विश्वामित्रो गाथिन. । अग्नि)
 शीरं पावकशोचिषम् ।
 (१३४०) ८, ४३, ३१ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)
 (१४७३) ८, १०२, ११ (प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽ
 भिर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति — यविष्ठौ सहस
 पुत्रौऽन्यतरो वा । अग्नि)
 (१५८१) १०, २१, १ (विमद ऐन्द्र. प्राजापत्यो वा,
 वसुकृद्वा वासुक. । अग्नि)
 —पावकशोचिषं विवक्षसे ।
 [५०८] ३, ९, ९ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 १०, ५२, ६ (अग्नि सौचीक. । विश्वेदेवा)
 त्रीणि शता त्री सहस्राण्यग्नि
 त्रिंशच्च देवा नव चासपर्यन् ।
 औक्षन्धृतरस्तृन्वीहरस्मा
 आदिद्धोतारं न्यसादयन्त ॥
 [५०९] ३, १०, १ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः)
 त्वामग्ने मनीषिणः सप्ताजं चर्षणीनाम् ।
 (१३६१) ८, ४४, १९ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 —मनीषिणः ।
 १०, १३४, १ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्र.)
 महान्तं त्वा महीनां सप्ताजं चर्षणीनाम् ।
 [५१०] ३, १०, २ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजमग्ने ।
 गोपा ऋतस्य दीदिहि स्वे दमे ।
 (१५८७) १०, २१, ७ (विमद ऐन्द्र. प्राजापत्यो वा,
 वसुकृद्वा वासुक. । अग्नि.)
 त्वां यज्ञेष्वृत्विजं चारुमग्ने नि वेदिरे ।
 (१८५९) १०, ११८, ७ (उरुक्षय आमहीयव. ।
 रक्षाहोऽग्नि.)
 अदाभ्येन शोचिषाग्ने रक्षस्त्वं दह । गोपा ऋतस्य
 दीदिहि ।
 [५१०] ३, १०, २ अग्ने होतारमीळते । (१०१९)
 ६, १४, २, अग्निं होतारमीळते (२९०) १, १२८, ८
 [५११] ३, १०, ३ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि.)
 ददाशति समिधा जातवेदसे ।
 (११७४) ७, १४, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 समिधा जातवेदसे ... ।
 नमस्विनो वयं दाशेमाग्नये ।
 [५१२] ३, १०, ४ अग्निर्देवेभिरागमत् ।
 (५) १, १, ५ देवो— ।

- [५१६] ३, १०, ८ स नः पावक दीदिहि
(१९) १, १२, १० — दीदिव ।
- [५१७] ३, १०, ९ तं त्वा विप्रा विपन्यवो जागृवांसः
सामिन्धते । १, २२, २१ (विष्णुदेवता)
तद्विप्रासो विपन्यवो — ।
- [५१६] ३, १०, ८ द्युमदस्मे सुवीर्यम् ।
(५८०) ३, १३, ७ द्युमदग्ने — ।
- [५१७] ३, १०, ९ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
हव्यवाहममर्त्यं सहोवृधम् ।
(७०४) ४, ८, १ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
हव्यवाहममर्त्यम् ।
(१४७९) ८, १०२, १७ (प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्निर्बाह्वि-
स्पत्यो वा, गृहपति-यविष्ठो सहस पुत्रौऽन्यतरो वा । अग्नि)
हव्यवाहममर्त्यम् ।
- [५२०] ३, ११, ३ केतुर्यज्ञस्य पूर्यः ।
१, २, १० आत्मा — ।
- [५२१] ३, ११, ४ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
वह्नि देवा अकृण्वत ।
(१२०३) ७, १६, १२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । प्रगाथ)
- [५२३] ३, ११, ६ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
अग्निस्तुविश्रवस्तमः ।
(९१५) ५, २५, ५ (वसूयव आत्रेया । अग्नि)
— स्तमं ।
- [५२५] ३, ११, ८ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
मन्मभिः । विप्रासो जातवेदसः ।
(१२१८) ८, ११, ५ (वत्स. क्राण्व । अग्नि)
मनामहे — ।
- [५७५] ३, १३, २, १, १३४, २ दक्षं सचन्त ऊतयः ।
[५८०] ३, १३, ७ द्युमदग्ने सुवीर्यम् ।
(५१६) ३, १०, ८ द्युमदस्मे — ।
- [५८५] ३, १४, ५ (ऋषभो वैश्वामित्र । अग्नि)
उत्तानहस्ता नमसोपसद्य ।
(१०८७) ६, १६, ४६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
उत्तानहस्तो नमसा विवासेत् ।
(१६३८) १०, ७९, २ (अग्निः सौचीको वैश्वानरो वा
सतिर्वाजंभरो वा । अग्नि)
उत्तानहस्ता नमसाधि विभु ।
- [५९२] ३, १५, ५ अच्छिद्रा शर्म जरितः पुरुणि ।

- २, २५, ५ — दधिरे — ।
(४६९) ३, १५, ७ = ३, १, २३ = ३, ५, ११ =
३, ६, ११ = ३, ७, ११ = ३, २२, ५ = ३, २३, ५
- [५९५] ३, १६, २ (उत्कील. कात्य । अग्निः)
इमं नरो मरुतः सश्रता वृधं ।
७, १८, २५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । सुदास पैजवन)
— मरुतः सश्रतानु ।
- [५९९] ३, १६, ६ तुविद्युन्न यशस्वता ।
१, ९, ६ — यशस्वतः ।
- [६०१] ३, १७, २ यथा दिवो जातवेदश्चिकित्वान् ।
(६७३) ४, ३, ८ साधा दिवो — ।
- [६०३] ३, १७, ४; २, ४०, १ अकृण्वन्नमृतस्य देवा
नाभिम् ।
- [६०४] ३, १७, ५ (कतो वैश्वामित्र । अग्नि)
यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्द्रिता च सत्ता
स्वधया च शंभुः ।
(७८२) ५, ३, ५ (वसुधुत आत्रेय । अग्निः)
न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने यजीयान्न काव्यैः परो
अस्ति स्वधावः ।
- [६१०] ३, १९, १ (गाथी कौशिक. । अग्नि)
स नो यक्षदेवताता यजीयान् ।
(१६१६) १०, ५३, १ (देवा आग्निः सौचीक । अग्नि)
- [६११] ३, १९, २ (गाथी कौशिकः । अग्नि)
सुद्युन्नां रातिर्नी घृताचीम् ।
प्रदक्षिणिदेवतातिमुराणः ।
(६८४) ४, ६, ३ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
यता सुजूर्णी रातिनी घृताची ।
- [६१८] ३, २१, १ (६२१) ३, २१, ४ स्तोकाणां
(३, २१, ४ स्तोकासो)
अग्ने मेदसो घृतस्य ।
- [६१९] ३, २१, २ (गाथी कौशिक । अग्नि)
श्रेष्ठं नो घेहि वार्यम् ।
१०, २४, २ (विमद ऐन्द्र. प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा
वासुकः । इन्द्र)
... वार्यं विवक्षसे ।
- [६६९] ३, २२, ५ (गाथी कौशिक । अग्नि)
३, १, २३ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
३, ५, ११ = ३, ६, ११ = ३, ७, ११ =

३, १५, ७ (उत्कील कात्य. । अग्नि)
 ३, २३, ५ (देवश्रवा देववातश्च भारती । अग्निः)
 इळामग्ने पुरुदंसं सर्ति गोः साध ।
 स्यान्नः सूनुस्तनयो त्वस्मे ॥
 [५२७] ३, २४, १, ३, ८, ३ वर्चो धा यज्ञवाहसे ।
 [५२९] ३, २४, ३ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 अग्ने धृत्नेन जायते सहसः सूनवाहुत ।
 एदं बर्हिः सदो मम ।
 (१२४८) ८, १९, २५ (सोमरि काण्व । अग्नि.)
 यदग्ने ।
 सहसः सूनवाहुत ।
 (१३७५) ८, ७५, ३ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)
 सहसः सूनवाहुत ।
 ८, १७, १ (इरिम्बिठि काण्व । इन्द्र)
 एदं बर्हिः सदो मम ।
 [५३८] ३, २७, २ गिरा यज्ञस्य साधनम् ।
 (९६) १, ४४, ११ नि त्वा — ।
 ८, ६, ३ स्तोमैर्यज्ञस्य — ।
 (१२७८) ८, २३, ९ यज्ञस्य साधनं गिरा ।
 [५३९] ३, २७, ३ अति द्वेषांसि तरेम ।
 (४४३) २, ७, ३ अति गाहेमहि द्विषः ।

[५४०] ३, २७, ४ अग्निः पावक ईज्यः ।
 (११८६) ७, १५ १०, शुचि — ।
 [५४१] ३, २७, ५ पृथुपाजा अमर्त्यो ।
 (१७३७) ३, २, ११ वैश्वानरः — ।
 [५४३] ३, २७, ७ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 होता देवो अमर्त्यः ।
 (१२४७) ८, १९, २४ (सोमरि काण्व । अग्नि.)
 [५४९] ३, २७, १३ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि.)
 तिरस्तमांसि दर्शतः ।
 (१४४६) ८, ७४, ५ (गोपवन अत्रिय । अग्निः)
 . . दर्शतम् ।
 [५५२] ३, २८, १ (५५७) ३, २८, ६
 पुरोळाशं जातवेदः ।
 [५६१] ३, २९, ४ नाभा पृथिव्या अधि ।
 (१९४८) २, ३, ७ — अधि सानुषु त्रिषु ।
 [५६१] ३, २९, ४, (१०५) १, ४५, ६ अग्ने हव्याय
 वोळहवे ।
 (८६२) ५, १४, ३ अग्निं हव्याय — ।
 [५७३] ३, २९, १६ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्नि)
 प्रजानन्विद्वाँ उप याहि सोमम् ।
 ३, ३५, ४ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्र.)

ऋग्वेदस्य चतुर्थं मण्डलम् ।

[२४५०] ४, १, ३, (वामदेवो गौतम । अग्नि ,
 अग्नी वरुणौ)
 अग्ने मृळीकं वरुणे सचा विदो मरुत्सु विश्वभानुषु ।
 ८, २७, ३ (मनुर्वैस्वत । विश्वेदेवा)
 प्र सून एत्वधरोऽग्ना देवेषु पूर्य ।
 आदित्येषु प्र वरुणे धृतव्रते मरुत्सु विश्वभानुषु ।
 [६३७] ४, १, ११ महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।
 ४, १७, १४ त्वचो बुध्ने —
 [६३९] ४, १, १३ अश्मव्रजाः सुदुघा वव्रे अन्तः ।
 ५, ३१, ३ प्राचोदयत्सुदुघा — ।
 [६४१,] ४, १, १५ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 हळहं नरो वचसा दैव्येन व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वव्रु ।
 ४, १६, ६ (वामदेवो गौतम । इन्द्र.)
 वचोभिर्व्रजं — ।

(१५९९) १०, ४५, ११ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
 व्रजं — ।
 [६४३] ४, १, १७ (वामदेवो गौतम । अग्नि.)
 ऋजु मर्तेषु वृजिना च पश्यन् ।
 ६, ५१, २ (ऋजिदेवा भारद्वाज. । विश्वेदेवाः)
 ७, ६०, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ)
 [६४६] ४, १, २० (वामदेवो गौतमः । अग्नि.)
 सुमृळीको भवतु जातवेदाः ।
 ६, ४७, १२ (गर्गो भारद्वाज । इन्द्र)
 १०, १३१, ६ (सुकीर्तिः काक्षीवत । इन्द्र)
 . . विश्ववेदाः ।
 [६४७] ४, २, १, (२३४) १, ७७, १
 यो मर्त्येष्वमृत ऋतावा ।
 [६४८] ४, २, २ इह त्वं सूनो सहसो नो अद्य ।

(११७) १, ५८, ८ अच्छिद्रा सूनो ।
 ६, ५०, ९ उत त्वं सूनो— ।
 [६६४] ४, २, १८ आ यूथेव क्षुमति पश्वो अख्य-
 हेवानां यज्जनिमान्त्युग्र ।
 ७, ६०, ३ सं यो यूथेव जनिमानि चष्टे ।
 ८, २५, ७ अधि या बृहतो दिवो रे मि यूथेव पश्यतः ।
 [६६६] ४, २, २०, (२१४) १, ७३, १० एता ते अग्न-
 उचथानि वेधो ।
 [६६६] ४, २, २० उच्छोचस्व कृणुहि वस्यसो न ।
 ८, ४८, ६ प्र चक्षय कृणुहि— ।
 [६६७] ४, ३, २, १, १२४, ७, १०, ७१, ४, (१६६३)
 १०, ९१, १३ जायेव पत्य उशती सुवासा ।
 [६७३] ४, ३, ८ साधा दिवो जातवेदश्चिकित्वान् ।
 (६०१) ३, १७, २ यथा दिवो— ।
 [६७५] ४, ३, १० (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 वृषा शुक्रं दुदुहे पृश्निरूध ।
 ६, ६६, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । मरुत)
 सकृच्छुक्रं दुदुहे पृश्निरूध ।
 [६७६] ४, ३, ११ (वामदेवो गौतमः । अग्नि)
 आवि स्वरभवज्जाते अग्नौ ।
 (२३९८) १०, ८८, २ मूर्धन्वानाङ्गिरसो वामदेव्यो वा ।
 सूर्य-वैश्वानरौ)
 [६८३] ४, ६, २ (वामदेवो गौतमः । अग्नि)
 ऊर्ध्वं भानुं सवितेवाश्रेन् ।
 (७४१) ४ १३, २ (वामदेवो गौतम । अग्नि
 [लिङ्गोक्तदेवता इति एके])
 —सविता देवो अश्रेद् ।
 (७४६) ४, १४, २ (वामदेवो गौतम । अग्नि
 [लिङ्गोक्तदेवता इति एके])
 ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेज् ।
 ७, ७२, ४, (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अश्विनौ)
 —सविता देवो अश्रेद् ।
 [६८४] ४, ६, ३ यता सुजूर्णी रातिनी घृताची ।
 ६, ६३, ४ प्र रातिरेति जूर्णिनी घृताची ।
 [६८४] ४, ६, ३, (६११) ३, १९, २
 प्रदक्षिणिदेवतातिमुराणः ।
 [६८५] ४, ६, ४ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 स्तीर्णै बर्हिषि समिधाने अग्ना ।
 ६, ५२, १७ (ऋजिश्वा भरद्वाजः । विश्वेदेवाः)
 —अग्नौ ।

[६८६] ४, ६, ५ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 अग्निर्मन्द्रो मधुवचा क्रतावा ।
 (११४५) ७, ७, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि)
 [६९२] ४, ६, ११ (वामदेवो गौतम । अग्नि)
 होतारमग्निं मनुषो नि षेदुर्नमस्यन्त
 उशिजः शंसमायोः ।
 (७८१) ५, ३, ४ (वसुधृत आत्रेयः । अग्नि)
 —नि षेदुर्दशस्यन्त उशिजः— ।
 [६९३] ४, ७, १ (वामदेवो गौतम । अग्निः)
 होता यजिष्ठो अध्वरेष्वीज्यः ।
 (१३९१) ८, ६०, ३ (भार्ग प्रगाथः । अग्निः)
 मन्द्रो —ज्यो ।
 [६९६] ४, ७, ४, १, ८६, ५, (९०३) ५, २३, १
 विश्वा यश्चर्षणीरभि ।
 [७००] ४, ७, ८ विदुष्टरो दिव आरोधनानि ।
 (७०७) ४, ८, ४ विद्वाँ आरोधनं दिवः ।
 [७०१] ४, ७, ९ कृष्णं त एम रुशतः पुरो भाः ।
 (११३) १, ५८, ४— रुशदूर्मे अजर ।
 [७०२] ४, ७, १० यदस्य वातो अनुवाति शोचिः ।
 (३५१) १, १४८, ४, (११२५) ७, ३, २
 आदस्य वातो अनु वाति शोचिः ।
 (१६९३) १०, १४२, ४ यदा ते वातो अनुवाति
 शोचिः ।
 [७०४] ४, ८, १, (१४७९) ८, १०२, १७ हव्यवाह-
 ममर्त्यम् । ३, १०, ९ —मर्त्यं सहोवृधम् ।
 [७०५] ४, ८, २, (२) १, १, २ स देवाँ एह वक्षति ।
 [७०७] ४, ८, ४ विद्वाँ आरोधनं दिवः ।
 (७००) ४, ७, ८ विदुष्टरो दिवं आरोधनानि ।
 [७०९] ४, ८, ६, (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 ससवांसो वि शृण्वरे ।
 ८, ५४, ६ (मातरिश्वा काण्व । इन्द्रः)
 [७१२] ४, ९, १ अग्ने मृळ महाँ असि ।
 (७९) १, ३६, १२ स नो मृळ . ।
 [७१६] ४, ९, ५ (वामदेवो गौतमः । अग्नि)
 वेषि ह्यध्वरीयताम् ।
 हव्या..... ।
 (९६१) ६, २, १० (भारद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्नि)
 वेषि— ।
 हव्यम्— ।
 [७२४] ४, १०, ५ श्रिये रुक्मो न रोचत उपाके ।

<p>(११२९) ७, ३, ६ वि यद्रुक्मो न रोचस उपाके । [७३२] ४, ११, ५ (वामदेवो गौतम । अग्नि) त्वामग्ने ... । ... दमूनसं गृहपतिममूरम् । (८२१) ५, ८, १ (इष अत्रिय । अग्निः) त्वामग्ने— । ... वरेण्यम्— । [७३६] ४, १२, ३ अग्निर्वाजस्य परमस्य रायः । ७, ६०, ११ वाजस्य सातौ । [७३६] ४, १२, ३ (वामदेवो गौतम । अग्नि) दधाति रत्नं विधते यविष्ठो । (१२०३) ७, १६, १२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्नि) —विधते सुवीर्यम् । [७३९] ४, १२, ६ (वामदेवो गौतम । अग्नि) १०, १२६, ८ (कुल्मलबार्हिष शैलूषि अंहोमुग्वा वामदेव्य । विश्वेदेवा) यथा ह त्यद्वसवो गौर्यं चित्पदि षिताममुञ्चता यजत्राः । एवो ष्व १ स्मन्मुञ्चता व्यंहः प्र तार्यग्ने प्रतर न आयुः । [७४०] ४, १३, १ यातमश्विना सुकृतो दुरोणम् । १, ११७, २ (अश्विनौ) [७४१] ४, १३, २, ७, ७२, ४ ऊर्ध्वं भानुं सविता देवो अश्रेत् । (६८३) ४, ६, २ —सवितेवाश्रेत् । (७४६) ४, १४ २ ऊर्ध्वं केतुं— । [७४४] ४, १३, ५=४, १४, ५ (वामदेवो गौतम । अग्नि (लिङ्गोक्तदेवता इति एके) अनायतो अनिवद्धः कथायं न्यङ्कुत्तानोऽव पथते न । कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् । [७४६] ४, १४, २ ऊर्ध्वं केतुं सविता देवो अश्रेत् । (७४१) ४, १३, २</p>	<p>[७४६] ४, १४, २ जोतिर्विश्वस्मै भुवनाय कृण्वन् । १, ९२, ४ — कृण्वती । [७४६] ४, १४, २, १, ११५, १ आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं । [७४७] ४, १४, ३; उषा ईयते सुयुजा रथेन । १, ११३, १४ ओषा याति— । [७४८] ४, १४, ४ (वामदेवो गौतम । अग्नि) रथा अश्वास उपसो व्युष्टौ । ४, ४५, २ (वामदेवो गौतम । अश्विनौ) —उषसो व्युष्टिषु । [७४८] ४, १४, ४ अस्मिन्यज्ञे वृषणा मादयेथाम् । १, १८४, २ अस्मे उ षु वृषणा मादयेथाम् । [७४४] ४, १४, ५, ४, १३, ५ [७५१] ४, १५, ३ (वामदेवो गौतम । अग्निः) दधद्रत्नानि दाशुषे । ९, ३, ६ (गुनःशेष आजीगर्ति स देवरातः कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोम.) [७५४] ४, १५, ६ (वामदेवो गौतमः । अग्नि.) तमर्धन्तं न सानसिम् । (१४७४) ८, १०२, १२ (प्रयोगो भार्गव , पावकोऽग्निर्बार्हिस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौऽन्यतरो वा । अग्निः) ४, १५, ७, ९ (मं ७, देवता-सोमक. साहदेव्य ; कुमार. साहदेव्यः । मं ९, अश्विनौ) ४, १५, ८ कुमारत्साहदेव्यात् । [१८९७] ४, ५८, ३ (वामदेवो गौतमः । अग्नि सुयौ वा आपो वा गावो वा घृतस्तुतिर्वा) महो देवो मर्त्या आ विवेश ८, ४८, १२ अमर्त्यो— । [१९०४] ४, ५८, १० अभ्यर्षत सुष्टति गव्यमाजिम् । ९, ६२, ३ (पवमान सोमः) ।</p>
--	---

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

<p>[७५९] ५, १, ५ (बुधगविष्टिरावात्रेयौ । अग्नि) दमेदमे सप्त रत्ना दधानो । ६, ७४, १ (भरद्वाजो बार्हिस्पत्यः । सोमारुद्रौ) —दधाना ।</p>	<p>[७५९, ७६०] ५, १, ५-६ अग्निर्होता नि षसादा (६ न्यसीद्) यजीयान् । (९४०) ६, १, २ अघा होता न्यसीदो यजीयान् । (९४४) ६, १, ६ होता मन्द्रो नि षसादा यजीयान् ।</p>
--	--

- १०, ५२, २ अहं होता न्यसीदं यजीयान् ।
 [७६१] ५, १, ७ अग्निं होतारमीळते नमोभिः ।
 (२९०) १, १२८, ८ अग्निं होतारमीळते
 वसुधितिं । (१०१९) ६, १४, २ अग्निं
 होतारमीळते ।
 [७६२] ५, १, ८ सहस्रशृङ्गो वृषभस्तदोजाः ।
 ७, ५५, ७ — वृषभः ।
 [७६५] ५, १, ११ एह देवान्हविरद्याय वक्षि ।
 (७९३) ५, ४, ४ आ च देवान्हवि ... ।
 [७७४] ५, २, ८ (कुमार आत्रेय वृशो वा जानः उभौ वा,
 २, ९ वृशो जानः । अग्निः)
 प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
 इन्द्रो विद्वां अनु हि त्वा चक्ष
 तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम् ।
 १०, ३२, ६ (कवष ऐलषः । इन्द्रः)
 [७७७] ५, २, ११; ५, २९, १५ रथं न धीर स्वपा
 अतक्षम् ।
 १, १३०, ६ — स्वपा अतक्षिषुः ।
 [७७९] ५, ३, १ त्वं मित्रो भवसि यत्समिद्धः ।
 (४७३) ३, ५, ४ मित्रो अग्निर्भवति यत्समिद्धो ।
 [७८१] ५, ३, ४; (६९२) ४, ६, ११ होतारमग्निं
 मनुषो नि षेदुर्दशस्यन्त (४, ६, ११ नमस्यन्त)
 उशिजः शंसमायोः ।
 [७८५] ५, ३, ८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 त्वामस्या व्युषि देव पूर्वे दूतं कृण्वाना अयजन्त
 हव्यैः ।
 (१६८१) १०, १२२, ७ (चित्रमहा वासिष्ठ । अग्निः)
 त्वामिदस्या उपसो व्युष्टिषु दूतं कृण्वाना
 अजयन्त मानुषाः ।
 [७९१] ५, ४, २ हव्यवाळग्निरजरः पिता नः ।
 (१७२८) ३, २, २ हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितः ।
 [७९१] ५, ४, २; ३, ५४, २२; ६, १९, ३
 अस्मद्यक्षसं मिमीहि श्रवांसि ।
 [७९२] ५, ४, ३ विशां कर्वि विष्पतिं मानुषीणां ।
 (१७३६) ३, २, १० — मानुषीरिषः ।
 (९४६) ६, १, ८ — शश्वतीनां ।
 [७९३] ५, ४, ४ यतमानो रश्मिभिः सूर्यस्य ।
 १, १२३, १२ यतमाना — ।
 [७९३] ५, ४, ४ आ च देवान्हविरद्याय वक्षि ।
 (७६५) ५, १, ११ एह देवान्ह — ।

- [७९६] ५, ४, ७ (वसुश्रुत आत्रेय । अग्निः)
 वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम वयं हव्यैः पावक
 भद्रशोचे ।
 (११७५) ७, १४, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 वयं ते अग्ने समिधा विधेम ।
 वयं देव हविषा भद्रशोचे ।
 [७९७] ५, ४, ८ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 अस्माकमग्ने अध्वरं जुषस्व ।
 ६, ५२, १२ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
 इमं नो अग्ने अध्वरं ।
 ७, ४२, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । विश्वेदेवाः)
 इमं नो अग्ने — ।
 [७९८] ५, ४, ९ अस्माकं बोध्यविता तनूनाम् ।
 ७, ३२, ११ (इन्द्रः)
 [८०१-१०] ५, ६, १ - १०; ९, २०, ४
 इषं स्तोतृभ्य आ भर ।
 ८, ७७, ८ तेन स्तोतृभ्य आ भर ।
 ८, ९३, १९ कया स्तोतृभ्य — ।
 [८०५] ५, ६, ५ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 आ ते अग्न ऋचा हविः ।
 (१०८८) ६, १६, ४७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 — हविर ।
 [८०६] ५, ६, ६, १, ८१, ९ विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
 १०, १३३, २ विश्वं पुष्यासि — ।
 [८१०] ५, ६१० (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 दधदस्मे सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्च्यम् ।
 ८, ६, २४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 उत त्यदाश्वश्च्यम् ।
 ८, ३१, १८ (मनुर्वैवस्वतः । दम्पत्याशिषः)
 असदत्र सुवीर्यमुत त्यदाश्वश्च्यम् ।
 [८११] ५, ७, १ ऊर्जो नप्त्रे सहस्वते ।
 (१४६९) ८, १०२, ७ अच्छा नप्त्रे — ।
 [८२१] ५, ८, १ दमूनसं गृहपतिं वरेण्यम् ।
 (७३२) ४, ११, ५ — गृहपतिममूरम् ।
 [८३०] ५, ९, ३ (गय आत्रेयः । अग्निः)
 .. यं शिशुं यथा ... जनिष्ठारणी ।
 विशामग्निं स्वध्वरम् ।
 (१०८१) ६, १६, ४० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 शिशु जातं न विप्रति ।
 विशामग्निं स्वध्वरं ।

[८३१] ५, ९, ४ (गय आत्रेय । अग्निः)
 वनाग्ने पशुर्न यवसे ।
 (९६०) ६, २, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 अग्ने पशुर्न यवसे ।
 वना वृश्चन्ति शिक्कस ।
 [८३४] ५, ९, ७ (गय आत्रेय । अग्निः)
 तं नो अग्ने अभी नरो रयिं सहस्व आ भर ।
 (९०४) ५, २३, २ (द्युम्नो विश्वचर्षणिरात्रेय । अग्निः)
 तमग्ने पृतनाषहं रयिं सहस्व आ भर ।
 [८३४] ५, ९, ७; (८४१) ५, १०, ७; (८७५) ५, १६, ५,
 (८८०) ५, १७, ५, उत्तैधि पृत्सु नो वृधे ।
 ६, ४६, ३ भवा समत्सु ... ।
 [८३५] ५, १०, १ प्र नो राया परीणसा । १, १२९, ९
 [८३६] ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य मंहना ।
 (८८२) ५, १८, २ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।
 [८४०] ५, १०, ६ अस्माकासश्च सूरयः ।
 (१८८९) १, ९७, ३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।
 [८४०] ५, १०, ६; ४, ३७, ७ विश्वा आशास्तरिषणि ।
 [८४१] ५, १०, ७ स्तुतः स्तवान आ भर ।
 (२०) १, १२, ११ स नः स्तवान आ भर ।
 [८४३] ५, ११, २ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितमग्निं ।
 (१६७८) १०, १२२, ४ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः)
 —पुरोहितं ।
 शृण्वन्तमग्निं घृतपृष्ठमुक्षणं ।
 [८४३] ५, ११, २ इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि ।
 (१९६३) ३, ४, ११— सरथं तुरोभिः ।
 १०, १५, १०— सरथं दधानाः ।
 [८४६] ५, ११, ५ आ पृणन्ति शवसा वर्धयन्ति च ।
 १०, १२०, ९ हिन्वन्ति च शवसा ।
 [८४९] ५, १२, २ (८५३) ५, १२, ६ क्रतुं स पात्यरुषस्य ।
 (८४९) ५, १२, २ सपाम्यरुषस्य वृष्णः ।
 [८५५] ५, १३, २ सिध्रमद्य दिविस्पृशः ।
 (१९२५) १, १४२, ८; २, ४१, २० दिविस्पृशम् ।
 [८५८] ५, १३, ५ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 त्वामग्ने वाजसातमं ।
 स नो रास्व सुवीर्यम् ।
 ८, ९८, १२ (वृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 त्वां शुष्मिन्पुरुहूत वाजयन्तं ।
 स नो रास्व सुवीर्यम् ।

[८६१] ५, १४, २ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 तम्..... ।
 यजिष्ठ मानुषे जने ।
 (१८६१) १०, ११८, ९ (उरुक्षय आमहीयवः ।
 रक्षोहाऽग्निः) तं ।
 [८६२] ५, १४, ३ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 तं हि शश्वन्त ईळते ।
 ७, ९४, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
 ता हि शश्वन्त ईळते ।
 [८६२] ५, १४, ३; (५६१) ३, २९, ४
 [८६५] ५, १४, ६ स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ।
 १, ९, ३ (इन्द्रः) स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।
 [८६९] ५, १५, ४ (धरुण आङ्गिरसः । अग्निः)
 दधानः परि त्मना विषुरूपो जिगासि ।
 ७, ८४, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
 दधाना परि त्मना विषुरूपा जिगाति ।
 [८७१] ५, १६, १ मर्तासो दधिरे पुरः ।
 १, १३१, १, ८, १२, २२ देवासो ... ।
 ८, १२, २५ देवास्त्वा . ।
 [८७७] ५, १७, २ (पुरुरात्रेयः । अग्निः)
 अस्य हि स्वयशस्तर ।
 ५, ८२, २ (शावाश्च आत्रेयः । सविता)
 — स्वयशस्तरं ।
 [८७७] ५, १७, २ मन्द्रं परो मनीषया ।
 (१४२६) ८, ७२, ३ रुद्रं ... ।
 [८८२] ५, १८, २ स्वस्य दक्षस्य मंहना ।
 (८३६) ५, १०, २ क्रत्वा दक्षस्य— ।
 [८९३] ५, २०, ३ (प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः)
 होतारं त्वा वृणीमहे ।
 प्रयस्वन्तो हवामहे ।
 (९२३) ५, २६, ४ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
 होतारं त्वा वृणीमहे ।
 (१३८९) ८, ६०, १ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
 होतारं— ।
 (१५८१) १०, २१, १ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा,
 वसुकृद्धा वासुकः । अग्निः)
 होतारं— ।
 ७, ९४, ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
 प्रयस्वन्तो— ।

- ८, ६५, ६ (प्रगाथः काण्व. । इन्द्रः)
प्रयस्वन्तो— ।
- [८९७] ५, २१, ३ (सस आत्रेय । अग्निः)
त्वां विश्वे सजोषसो देवासो दूतमक्रत ।
(९०५) ५, २३, ३ (द्युन्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
विश्वे हि त्वा सजोषसो ।
(१२८७) ८, २३, १८ (विश्वमना वैयस्व । अग्निः)
विश्वे हि त्वा सजोषसो— ।
- [८९७] ५, २१, ३; १, १५, ७,
(१०४८) ६, १६, ७ यज्ञेषु देवमाळते ।
- [८९८] ५, २१, ४ देवं वो देवयज्यया ।
(१४२०) ८, ७१, १२ अग्निं वो— ।
- [८९८] ५, २१, ४ ऋतस्य योनिमासदः । ३, ६२, १३
९, ८, ३; ९, ६४, २२ ऋतस्य योनिमासदम् ।
- [८९९] ५, २२, १ (विश्वसामा आत्रेय । अग्निः)
होता मन्द्रतमो विशि ।
(१४१९) ८, ७१, ११ (सुदीति— पुरुमीळहावाङ्गिरसौ
तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
- [९००] ५, २२, २ (विश्वसामा आत्रेयः । अग्निः)
न्यग्निं जातवेदसं दधाता देवमृत्विजम् ।
प्र यज्ञ एत्वानुषगद्या देवव्यचस्तमः ।
(९२६) ५, २६, ७ (९२७) ८ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
न्यग्निं जातवेदसं ।
दधाता देवमृत्विजम् ।
प्र यज्ञ— ।
- [९०१] ५, २२, ३; (५००) ३, ९, १;
(१२१९) ८, ११, ६ देवं मर्तास ऊतये ।
(३३०) १, १४४, ५ — ऊतये हवामहे ।
- [९०२] ५, २२, ४ स्तोमैर्वर्धन्त्यत्रयो गीर्भिः शुम्भन्त्यत्रयः
५, ३९, ५ गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुम्भन्त्यत्रयः ।
- [९०४] ५, २३, २; (८३४) ५, ९, ७
[९०५] ५, २३, ३; (८९७) ५, २१, ३
[९०५] ५, २३, ३; ५, ३५, ५; ८, ५, १७; ६, ३७
जनासो वृक्तबर्हिष ।
३, ५९, ९ जनाय वृक्तबर्हिषे ।
- [९०६] ५, २३, ४ (द्युन्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः)
रेवन्नः शुक्र दीदिहि शुम्भपावक दीदिहि ।
(१०९६) ६, ४८, ७ (शंयुर्बाह्वस्पत्यः, तृणपाणिः ।
अग्निः)

- [९१४] ५, २५, ४ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
अग्निं धीभिः सपर्यत ।
(१२५९) ८, १०३, ३ (सोमरि काण्व । अग्निः)
- [९१५] ५, २५, ५; (५२३) ३, ११, ६
[९१६] ५, २५, ६, १, ११, २ जेतारमपरजितम् ।
[९१८] ५, २५, ८ ग्रावेवोच्यते बृहत् ।
१०, ६४, १५; १०० । ८ ग्रावा यत्र मधुपुदुच्यते
बृहत् ।
- [९१९] ५, २५, ९ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
स नो विश्वा अति द्विषः ।
६, ६१, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सरस्वती)
सा नो— ।
- [९२०] ५, २६, १ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
मन्द्रया देव जिह्वया ।
आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
(१०४३) ६, १६, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
स नो मन्द्राभिरध्वरे जिह्वाभिर्यजा मह ।
आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
(१४७८) ८, १०२, १६ (प्रयोगो भार्गव , पावकोऽ
भिर्बार्हस्पत्यो वा, गृहपति—यविष्ठौ सहसं पुत्रौऽन्यतरो
वा । अग्निः) आ देवान्वक्षि यक्षि च ।
- [९२१] ५, २६, २ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
तं त्वा घृतस्नवीमहे ।
देवाँ आ वीतये वह ।
(११९५) ७, १६, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
तं त्वा दूत कृण्महे यशस्तमं देवाँ आ वीतये
वह । ... तद्यत्वेमहे ।
- [९२३] ५, २६, ४ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
अग्ने विश्वेभिरा गहि देवेभिर्हव्यदातये ।
५, ५१, १ (स्वस्त्यात्रेय । विश्वेदेवा)
अग्ने सुतस्य पीतये विश्वैस्त्रेभिरा गहि ।
देवेभिर्हव्यदातये ।
- [९२३] ५, २६, ४; (८९३) ५, २०, ३,
(१३८९) ८, ६०, १
(१५८१) १०, २१, १ होतारं त्वा वृणीमहे ।
- [९२४] ५, २६, ५ (वसूयव आत्रेया । अग्निः)
यजमानाय सुन्वते ।
८, १४, ३ (गोष्वक्ष्यश्वसूक्तौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
—सुन्वते ।

८, १०, १७ (इरिम्बिठिः काण्व । इन्द्र.)
 १०, १७५, ४ (ऊर्न्वग्रावा अर्बुदिः सर्प । प्रावाणः)
 [९२४] ५, २६, ५, (१३) १, १२, ४, (१३५६)
 ८, ४४, १४ देवैरा सत्सि बर्हिषि ।
 (९२६) ५, २६, ७ (९२७) ८, (९००) ५, २२, २
 ५, २६, ९, १, ३९, ५ देवासः सर्वया विशा ।

[९२८] ५, २७, १ त्रैवृणो अग्ने दशभि सहस्रैः ।
 ८, १, ३३ आसंगो अग्ने — ।
 [९३८] ५, २८, ६ (विश्वारात्रेयी । अग्निः)
 अग्निं प्रयत्यध्वरे ।
 (१५८६) १०, २१, ६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।
 (१४२०) ८, ७१, १२ (सुदीति-पुरुमीळ्हावाजिरसौ,
 तयोर्वान्यतरः । अग्निः)

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[९४०] ६, १, २ (७५९) ५, १, ५
 [९४२] ६, १, ४ (१९७) १, ७२, ३ नामानि चिह्नधरे
 यज्ञियानि ।
 [९४४] ६, १, ६ (९४०) ६, १, २
 [९४६] ६, १, ८ (७९२) ५, ४, ३
 [९४७] ६, १, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य । अग्निः)
 यस्त आनद् समिधा हव्यदातिम् ।
 (१६७७) १०, १२२, ३ (चित्रमहा वासिष्ठः । अग्निः)
 —समिधा तं जुषस्व ।
 [९४८] ६, १, १० नमोभिरग्ने समिधोत हव्यै ।
 ७, ६३, ५ नमोभिन्नावरुणोत हव्यैः ।
 [९४८] ६, १, १० (भरद्वाजो बार्हस्पत्य. । अग्निः)
 वेदी सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर् ।
 (१०१५) ६, १३, ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य. । अग्निः)
 यस्ते सूनो सहसो गीर्भिरुक्थैर्यज्ञैर्मर्तो निशिति
 वेद्यानद् ।
 [९४९] ६, १, ११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 आ यस्ततन्ध रोदसी वि भासा ।
 (९७६) ६, ४, ६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य. । अग्निः)
 अग्ने ततन्ध— ।
 [९५०] ६, १, १२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 पूर्वोरिषो बृहतीरारे अधा
 अस्मे भद्रा सौध्रवसानि सन्तु ।
 ९, ८७, ९ (उशना काव्य । पवमानः सोमः)
 पूर्वोरिषो बृहतीर्जीरदानो ।
 ६, ७४, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य. । सोमारुद्रौ)
 अस्मे भद्रा— ।
 [९६०] ६, २, ९; (८३१) ५, ९, ४ अग्ने पशुर्न यवसे ।
 [९६१] ६, २, १०; (७१६) ४, ९, ५ वेषि ह्यध्वरीयताम् ।

[९६२] ६, २, ११= ६, १४, ६, (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः ।
 अग्निः)
 अच्छा नो मित्रमहो देव देवानग्ने वोच-
 सुमति रोदस्यो । वीहि स्वस्ति सुक्षिति
 दिवो नृन्दिषो अहांसि दुरिता तरेम
 ता तरेम तवावसा तरेम ।
 (१०३७) ६, १५, १५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यो,
 वीतहव्य आजिरसौ वा । अग्निः)
 दुरिता तरेम ता तरेम तवावसा तरेम ।
 [९७३] ६, ४, ३, २, २०, ५
 अश्वस्य चिच्छिन्नथत्पूर्याणि ।
 [९७६] ६, ४, ६, (९४९) ६, १, ११
 [९७८] ६, ४, ८, (९९९) १०, ७, (१०११) १२, ६,
 (१०१७) १३, ६; १७, १५; २४, १०,
 मदेम शतहिमाः सुवीराः ।
 [९७९] ६, ५, १ (भरद्वाजो बार्हस्पत्य. । अग्निः)
 अद्रोघवाचं मतिभिर्यविष्ठम् ।
 ६, २२, २ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 —मतिभि शविष्ठम् ।
 [९८३] ६, ५, ५ यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैः ।
 ४, ४, ७ यस्त्वा नित्येन हविषा य— ।
 [९९२] ६, ६, ७ चन्द्रं रथिं पुरुवीरं बृहन्तं ।
 ४, ४४, ६ नू नो रथि— ।
 [१००७] ६, ७, ५ महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।
 ५, ८५, ६, महीं देवस्य नकिरा— ।
 [१००९] ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुर ।
 १, १६०, ४ वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।
 [१००९] ६, ७, ७ वैश्वानरो वि दिवो रोचना कवि ।
 ९, ८५, ९ अरुहचद्वि दिवो— ।

[९९३] ६, १०, १; (४८५) ३, ६, ६,
 [९९९] ६, १०, ६ अवीर्वाजस्य गध्यस्य सातौ ।
 ६, २६, २ महो वाजस्य— ।
 [१००४] ६, ११, ५ वृञ्जे ह यज्ञमसा बर्हिर्ग्नो ।
 ७, २, ४ प्र वृञ्जते नमसा— ।
 [१००५] ६, ११, ६ देवेभिरग्ने अग्निभिरिधानः ।
 (१०११) ६, १२, ६ विश्वेभिरग्ने — ।
 [१००९] ६, १२, ४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 अग्निः ध्रुवे दम आ जातवेदाः ।
 (११७२) ७, १२, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 [१०११] ६, १२, ६; (१००५) ६, ११, ६
 [१०१५] ६, १३, ४; (९४८) ६, १, १०
 [१०१९] ६, १४, २ (७६१) ५, १, ७
 [९६२] ६, १४, ६ =, ६, २, ११; (१०३७) ६, १५, १५
 ता तरेम तवावसा तरेम ।
 [१०२५] ६, १५, ३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, वीतहव्य
 आङ्गिरसो वा । अग्निः)
 अर्यः परस्यान्तरस्य तरुषः ।
 छर्दिर्यच्छ वीतहव्याय सप्रथो भरद्वाजाय सप्रथः ।
 (१६७०) १०, ११५, ५ (उपस्तुतां वार्षिहव्यः ।
 अग्निः) अर्यः तरुषः ।
 (१०७४) ६, १६, ३३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 भरद्वाजाय सप्रथः शर्म यच्छ ।
 [१०२८] ६, १५, ६, ६ देवो देवेषु वनते हि वार्यं
 (६ ... नो दुवः) ।
 [१०२९] ६, १५, ७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यो, वीतहव्य
 आङ्गिरसो वा । अग्निः)
 विप्रं होतारं पुरुवारमद्रुहं कविं सुस्रैरीमहे
 जातवेदसम् ।
 (१३५२) ८, ४४, १० (विरूपा आङ्गिरसः । अग्निः)
 विप्रं होतारमद्रुहं ।
 यज्ञानां केतुमीमहे ।
 [१०३४] ६, १५, १२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यो, वीतहव्य
 आङ्गिरसो वा । अग्निः)
 (१०३४) ७, ४, ९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 त्वमग्ने वनुष्यतो नि पाहि त्वमु नः
 सहसावन्नवद्यात् ।
 सं त्वा भ्वस्मन्वदभ्येतु पाथः सं रयिः
 स्पृहयाग्यः सहस्री ।

[१०३७] ६, १५, १५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः वीतहव्य
 आङ्गिरसो वा । अग्निः)
 (१६१७) १०, ५३, २ देवाः अग्नि सौचीकः । अग्निः)
 — हि ख्यत् ।
 [१०४३] ६, १६, २ (९२०) ५, २६, १
 [१०४६] ६, १६, ५ दिवोदासाय सुन्वते ।
 ४, ३०, २० — दाशुषे ।
 ६, ३१, ४ — सुन्वते सुतके ।
 [१०४८] ६, १६, ७, त्वामग्ने स्वाध्यो ।
 (१२४०) ८, १९, १७; (१३३९) ४३, ३०
 ते घेदग्ने स्वाध्यो ।
 [१०४८] ६, १६, ७, (८९७) ५, २१, ३
 [१०५०] ६, १६, ९; १, १४, ११ तं होता मनुर्हित ।
 [१०५०] ६, १६, ९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 वह्निरासा विदुष्टरः ।
 (१२००) ७, १६, ९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 [१०५१] ६, १६, १० अन्न आ याहि वीतये ।
 ५, ५१, ५ वायवा याहि वीतये ।
 [१०५६] ६, १६, १५ (२१७) १, ७४, ३
 [१०६१] ६, १६, २० स हि विश्वाति पार्थिवा ।
 ६, ४५, २० स हि विश्वानि पार्थिवा ।
 [१०६३] ६, १६, २२. ५, ५२, ४ स्तोमं यज्ञं च
 धृष्णुया ।
 [१०६५] ६, १६, २४; १, १४, ३ आदित्यान्मारुतं
 गणम् ।
 [१०६९] ६, १६, २८, अग्निस्तिग्मेन शोचिषा ।
 (२१) १, १२, १२ अग्ने शुक्रेण — ।
 [१०७०] ६, १६, २९, (२३९) १, ७८, १
 (१०७७) ६, १६, ३६;
 (१३११) ८, ४३, २ जातवेदो विचर्षणे ।
 [१०७०] ६, १६, २९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 जहिर रक्षांसि सुक्रतो ।
 ९, ६३, २८ (निःश्रुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 [१०७१] ६, १६, ३० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 त्वं नः पाह्यहसो जातवेदो अघायत ।
 (११९१) ७, १५, १५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 — हसो दोषावस्तरघायतः ।
 [१०७४] ६, १६, ३३; (१०२५) ६, १५, ३

[१०७६] ६, १६, ३५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 सीदन्तृतस्य योनिमा ।
 ९, ३२, ४ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)
 ९, ६४, ११ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [१०७७] ६, १६, ३६; (१०७०) ६, १६, २९
 [१०८१] ६, १६, ४०; (८३०) ५, ९, ३
 [१०८५] ६, १६, ४४ अभि प्रयांसि वीतये ।
 १, १३५, ४ .. सुधितानि वीतये ।
 [१०८५] ६, १६, ४४; १, १४, ६ आ देवान्सोमपीतये ।
 [१०८७] ६, १४, ४६, ४, ३, १ होतारं सत्ययजं
 रोदस्योः ।
 [१०८७] ६, १६, ४६; (५८५) ३, १४, ५
 [१०८८] ६, १६, ४७, (८०५) ५, ६, ५
 [१०९०] ६, ४८, १ प्रप्र वयममृतं जातवेदसं ।
 (१४४६) ८, ७४, ५ अमृतं जातवेदसं ।

[१०९२] ६, ४८, ३ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणिः । अग्निः)
 महान्विभास्यर्विषा ।
 अजस्त्रेण शोचिषा शोशुचच्छुचे ।
 (१७९७) ७, ५, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
 त्वं भासा रोदसी आ ततन्वाजस्त्रेण शोचिषा
 शोशुचानः ।
 [१०९५] ६, ४८, ६ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणिः । अग्निः)
 तिरस्तमो ददृश ऊर्म्यांस्वा ।
 (११५६) ७, ९, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 — ददृशो राम्याणाम् ।
 [१०९७] ६, ४८, ८ (शंयुर्बार्हस्पत्यः, तृणपाणिः । अग्निः)
 शतं पूर्भिर्विष्ट पाह्यंहसः शतं हिमाः स्तोतृभ्यो
 ये च ददति ।
 (१२०१) ७, १६, १० वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 ये राधांसि ददत्यश्व्या ।
 तां अंहसः पिपृहि पर्वमिष्ट्वं शतं पूर्भिर्विष्टय ।

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[१११२] ७, १, १३, (८०) १, ३६, १५
 [१११९] ७, १, २० = ७, १, २५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
 अग्निः)
 नू मे ब्रह्माण्यग्न उच्छशाधि त्वं देव मघवद्भ्यः
 सुषूदः ।
 रातौ स्यामोभयास आ ते यूयं पात स्वस्तिभिः
 सदा नः ।
 [१११९] ७, १, २०, २५; (११३३) ३, १०; (११४८) ७, ७, ७,
 ७, ८, ७ (११६०) ९, ६; (११७०) ११, ५, (११७३)
 १२, ३, १३, ३; (११७६) १४, ३, १९, ११,
 २०, १०, २१, १०, २२, ९, २३, ६; २४, ६; २५,
 ६, २६, ५, २७, ५; २८, ५; २९, ५, ३०, ५;
 ३४, २५; ३५, १५, ३६, ९; ३७, ८; ३९, ७;
 ४०, ६; ४१, ७, ४२, ६; ४३, ५; ४५, ४, ४६, ४,
 ४७, ४, ४८, ४, ५१, ३, ५३, ३; ५४, ४; ५६,
 २५, ५७, ५, ५८, ६, ६०, १२; ६१, ७; ६२, ६;
 ६३, ६; ६४, ५, ६५, ५; ६७, १०; ६८, ९, ६९, ८;
 ७०, ७; ७१, ६; ७२, ५; ७३, ५; ७५, ८; ७६, ७, ७७,
 ६; ७८, ५; ७९, ५; ८०, ३; ८४, ५; ८५, ५;
 ८६, ८; ८७, ७, ८८, ७; ९०, ७; ९१, ७; ९२, ५;
 ९३, ८; ९५, ६; ९७, १०; ९८, ७; ९९, ७; १००,

७; १०१, ६; ९, ९०, ६; ९७, ३, ६; १०, ६५,
 १५; ६६, १५, १२२, ८, यूयं पात स्वस्तिभिः
 सदा नः ।

[११२५] ७, ३, २; १, १४८, ४ आदस्य वातो अनु वाति
 शोचिः ।

[११२९] ७, ३, ६; ४, १०, ५;

[११३३] ७, ३, १०; = ७, ४, १० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
 अग्निः)

एता नो अग्ने सौभगा दिदीह्यपि क्रतुं सुचेतसं
 वतेम ।

विश्व्वा स्तोतृभ्यो गृणते च सन्तु यूयं पात
 स्वस्तिभिः सदा नः ।

७, ६०, ६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)

अपि क्रतुं सुचेतसं वतन्तस् ।

[११३५] ७, ४, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

स गृत्सो अग्निस्तरुणश्चिदस्तु ।

सं यो वना युवते शुचिदन् ।

(१६६७) १०, ११५, २ (उपस्तुतो वार्ष्णिहव्यः । अग्निः)

अग्निर्ह नाम धायि दक्षपस्तमः सं यो वना युवते
 भस्मना दत्ता ।

- [११३७] ७, ४, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
मर्तेष्वग्निरमृतो नि धायि ।
(१५९५) १०, ४५, ७ (वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्निः)
[११४०] ७, ४, ७; ४, ४१, १० नित्यस्य रायः पतयः
स्याम ।
७, ४, ९ = (१०३४) ६, १५, १२
७, ४, १० = (११३३) ७, ३, १०
७, ४, १० = ७, ३, १०
[११४५] ७, ७, ४; (६८६) ४, ६, ५
[११४८] ७, ७, ७, ७, ८, ७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
अग्निः)
नू त्वामग्न ईमहे वसिष्ठा ईशानं सूनो सहस्रो
वसूनाम् ।
इषं स्तोतृभ्यो मघवद्भ्य आनङ् यूय पात
स्वस्तिभिः सदा नः ॥
[११५४] ७, ८, ६; २, ३८, ११
शं यस्तोतृभ्य आपये भवाति ।
(११४८) ७, ८, ७ = ७, ७, ७
[११५६] ७, ९, २ (१०९५) ६, ४८, ६
[११६५] ७, १०, ५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
मन्द्रं होतारमुशिजो यविष्ठमग्नि विश ईळते
अध्वरेषु ।
(१६०४) १०, ४६, ४ (वत्सप्रिर्भालन्दन । अग्निः)
मन्द्रं होतारमुशिजो नमोभिः प्राञ्चं यज्ञं
नेतारमध्वराणाम् । विशाम् ।
[११६५] ७, १०, ५ स हि क्षपावाँ अभवद्दयीणाम् ।
(१७८) १, ७०, ५ — क्षपावाँ अग्नी रयीणां ।
(११६६) ७, ११, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
महौ अस्यध्वरस्य प्रकेतो ।
१०, १०४, ६ (अष्टको वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
दाश्वौ अस्यध्वरस्य प्रकेतः ।
[११६७] ७, ११, २ त्वामीळते अजिरं दूत्याय हविष्मन्तः
सदमिन्मानुषासः ।
(१९९४) १०, ७०, ३ शश्वत्तममीळते दूत्याय
हविष्मन्तो मनुष्यासो अग्निम् ।
[११६९] ७, ११, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
अथा देवा दधिरे हव्यवाहम् ।
१०, ५२, ३ (अग्निः सौचिकः । विवे देवाः)
[११७२] ७, १२, २; (१००९) ६, १२, ४
[११७४] ७, १४, १; (५११) ३ १०, ३

- [११७५] ७, १४, २ वयं ते अग्ने समिधाविधेम ।
(१८२७) ४, ४, १५ अया ते— ।
(७९६) ५, ४, ७ वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम ।
[११७६] ७, १४, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
तुभ्यं देवाय दाशतः स्याम ।
(१२०६) ७, १७, ७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
ते ते देवाय दाशतः स्याम ।
[११७८] ७, १५, २, ९, १०१, ९ यः पञ्च चर्षणीरभिः
५, ८६, २ या पञ्च— ।
[११७८] ७, १५, २ (१५) १, १२, ६
[११८२] ७, १५, ६ (७७) १, ३६, १०
[११८४] ७, १५, ८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
स्वशयस्त्वया वयम् । सुवीरस्त्वमस्मयुः ।
(१२३०) ८, १९, ७ (सोमरि काण्वः । अग्निः)
स्वग्नयो ।
सुवीरस्त्वमस्मयुः ।
[११८६] ७, १५, १०; (२५५) १, ७९, १२
अग्नी रक्षांसि सेधति ।
[११८६] ७, १५, १०; (४४४) २, ७, ४
[११८७] ७, १५, ११; (२४७) १, ७९, ४
ईशानः सहस्रो यदो ।
[११८९] ७, १५, १३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
अग्ने रक्षा णो अंहसः प्रति ष्म देव रीषतः ।
(१३५३) ८, ४४, ११ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
अग्ने नि पाहि नस्त्वं प्रति ष्म देव रीषतः
[११९१] ७, १५, १५; (१०७१) ६, १६, ३०
[११९२] ७, १६, १ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
ऊर्जो नपातमा हुवे ।
(१३५५) ८, ४४, १३ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
[११९२] ७, १६, १; (२८३) १, १२८, ८
[११९४] ७, १६, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
उदस्य शोचिरस्थाद् ।
(१२७३) ८, २३, ४ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
[११९५] ७, १६, ४; (९२३) ५, २६, २
[११९७] ७, १६, ६; १, १५, ३ त्वं हि रत्नधा असि ।
[१२००] ७, १६, ९; (१०५०) ६, १६, ९
[१२०१] ७, १६, १०, (१०९५) ६, ४८, ८
[१२०२] ७, १६, ११ पूर्णां विवष्टयासिचम् ।
२, ३७, १ अध्वर्यवः स पूर्णां वष्टयासिचम् ।
[१२०३] ७, १६, १२; (५२१) ३, ११, ४

[१२०३] ७, १६, १२; (७३६) ४, १२, ३
[१२०६] ७, १७, ३; (४८५) ३, ६, ६

[१२०७] ७, १७, ४; (१२०६) ७, १७, ३
[१२१०] ७, १७, ७; (११७६) ७, १४, ३

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[१२१४] ८, ११, १ त्व यज्ञेष्वीड्यः ।
(१५८६) १०, २१, ६ त्वां यज्ञेष्वीळते ।
[१२१५] ८, ११, २, (८७) १, ४४, २
[१२१८] ८, ११, ५, (५२५) ३, ११, ८
[१२१९] ८, ११, ६; (५००) ३, ९, १
[१२१९] ८, ११, ६ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
अग्निं गीर्भिर्हवामहे ।
१०, १४१, ३ (अग्निस्तापसः । विश्वे देवाः)
[१२२१] ८, ११, ८ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
(१३३०) ८, ४३, २१ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
पुरुत्रा हि सदृङ्ङसि विशो विश्वा अनु प्रभुः ।
समत्सु त्वा हवामहे ।
[१२२२] ८, ११, ९ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
वाजयन्तो हवामहे ।
८, ५३ (वालखिल्यः ५), २ (भयः काण्वः । इन्द्रः)
(१२२४) ८, १९, १; (२८८) १, १२८, ६
[१२२६] ८, १९, ३; (१०) १, १२, १
[१२२७] ८, १९, ४ ऊर्जो नपातं सुभगं सुदीदिति-
मग्निं श्रेष्ठशोचिषम् । (१३५५) ८, ४४, १३
ऊर्जो नपातमा हुवे ऽग्निं पावकशोचिषम् ।
[१२२९] ८, १९, ६ न तमंहो देवकृतं कुतश्चन ।
२, २३, ५ न तमंहो न दुरितं कुतश्चन ।
१०, १२६, १ न तमंहो न दुरितं ।
[१२३०] ८, १९, ७ (११८४) ७, १५, ८
[१२३१] ८, १९, ८ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)
अतिथिर्न मित्रियोऽग्नी रथो न वेद्यः ।
(१४५४) ८, ८४, १ (उशाना काण्वः । अग्निः)
प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
अग्निं रथं न वेद्यम् ।
[१२३२] ८, १९, ९; ४, ३७, ६ स धीभिरस्तु सनिता ।
[१२३९] ८, १९, १६; (७१) १, ३६, ४
[१२४०] ८, १९, १७ (सोमरिः काण्वः । अग्निः)
ते घेदग्ने स्वाध्वो ये त्वा विप्र निदधिरे नृचक्षसम् ।
(१३३९) ८, ४३, ३० (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
ते घेदग्ने स्वाध्वोऽहा विश्वा नृचक्षसः ।

[१२४३] ८, १९, २०; २, २६, २ भद्रं मनः कृणुष्व
वृत्रतूर्ये ।
[१२४४] ८, १९, २१; (७७) १, ३६, १०
[१२४७] ८, १९, २४; (५४३) ३, २७, ७
[१२४८] ८, १९, २५; (५२९) ३, २४, ३
[१२५५] ८, १९, ३२ सम्राजं त्रासदस्यवम् ।
१०, ३३, ४ राजानं त्रासदस्यवम् ।
[१२५८] ८, १९, ३५ स्यामेदतस्य रथ्यः ।
७, ६६, १२, ८, ८३, ३ यूयमृतस्य — ।
[१२७३] ८, २३, ४; (११९४) ७, १६, ३
[१२७६] ८, २३, ७; (२७३) १, १२७, २
[१२७८] ८, २३, ९; (९६) १, ४४, ११
[१२८१] ८, २३, १२ रथिं रास्व सुवीर्यम् ।
(८५८) ५, १३, ५; ८, ९८, १२
स नो रास्व सुवीर्यम् ।
९, ४३, ६ सोम रास्व सुवीर्यम् ।
[१२८७] ८, २३, १८; (८९७) ५, २१, ३
[१२९१] ८, २३, २२ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् । प्रति क्षुगेति ।
(१३०७) ८, ३९, ८ (नाभाकः काण्वः । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् ।
(१३९०) ८, ६०, २ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
क्षुचश्चरन्त्यध्वरे । अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् ।
(१४७२) ८, १०२, १० (प्रयोगो भार्गवः, पावकोऽ
भिर्बाहस्पत्यो वा, गृहपति- यविष्टौ सहसः पुत्रोऽन्यतरो
वा । अग्निः)
अग्निं यज्ञेषु पूर्यम् ।
[१२९२] ८, २३, २३ आभिर्विधेमाग्नये ।
८, ४३, ११ स्तोमैर्विधेमाग्नये ।
[१२९४] ८, २३, २५; १, १२७, ८
[१२९६] ८, २३, २७ (विश्वमना वैयश्वः । अग्निः)
वंस्वा नो वार्या पुरु ।
(१४०२) ८, ६०, १४, (भर्गः प्रागाथः । अग्निः.)
[१२९८] ८, २३, २९ त्वं नो गोमतीरिषः ।

५, ७९, ८; ८, ५, ९; ९, ६२, ४ उत नो— ।
[१२९९] ८, २३, ३० (विश्वमना वैयश्व । अग्नि)

ऋतावाना सम्राजा पूतदक्षसा ।

८, २५, १ (विश्वमना वैयश्व । मित्रावरुणौ)

ऋतावाना यजसे पूतदक्षसा ।

[१३००] ८, ३९, १-१०, ८, ४०, १-११, ४१, १-१०;
४२, ४-६ नभन्तामन्यके समे ।

[१३०५] ८, ३९, ६, (२८८) १, १२८, ६

[१३०७] ८, ३९, ८, (१२९१) ८, २३, २२

[१३१०] ८, ४३, १; ८, ३, १५ गिरः स्तोमास ईरते ।

[१३११] ८, ४३, २ (२३९) १, ७८, १

[१३२०] ८, ४३, ११ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि.)

उक्षात्राय वशात्राय सोमपृष्ठाय वेधसे ।

स्तोमैर्विधेमाग्नये ।

(१६६४) १०, ९१, १४ (अरुणो वैतहव्य । अग्नि)

यस्मिन्नश्वास ऋषभास उक्ष्णो वशा ।

कीलालपे सोमपृष्ठाय वेधसे ।

(१३६९) ८, ४४, २७ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)

स्तोमैरिषेमाग्नये ।

[१३२४] ८, ४३, १५ अग्ने वीरवतीमिषम् ।

(२०) १, १२, ११; ९, ६१, ६ रयिं — ।

[१३२५] ८, ४३, १६; इमं स्तोमं जुषस्व मे ।

(२१) १, १२, १२ इमं स्तोमं जुषस्व नः ।

[१३२७] ८, ४३, १८ विश्वाः सुक्षितयः पृथक् ।

(१३३८) ८, ४३, २९

[१३२९] ८, ४३, २० वह्निं होतारमीलते ।

(१०१९) ६, १४, २ अग्निं होतारमीलते ।

(५१०) ३, १०, २ अग्ने— ।

[१३३०] ८, ४३, २१= (१२२१) ८, ११, ८

[१३३१] ८, ४३, २२ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि.)

इमं नः शृण्वद्धवम् ।

१०, २६, ९ (विमद ऐन्द्र प्राजापत्यो वा वसुकृद्धा

वासुकः । पूषा)

[१३३२] ८, ४३, २३, ४, ३२, १३= ८, ६५, ७

त त्वा वयं हवामहे ।

[१३३३] ८, ४३, २४ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि.)

अग्निमीले स उ श्रवत् ।

(१३४८) ८, ४४, ६ (विरूप आङ्गिरसः । अग्नि.)

[१३३९] ८, ४३, ३०; (१२४०) ८, १९, १७

[१३४०] ८, ४३, ३१; (५०७) ३, ९, ८

[१३४१] ८, ४३, ३२ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)

शर्धन्तमांसि जिघ्रसे ।

९, १००, ८ (रेभसून् काश्यपौ । पक्वानः सोमः)

[१३४८] ८, ४४, ६; (१३३३) ८, ४३, २४

[१३५१] ८, ४४, ९, ६, ५२, १२

चिकित्वान्दैव्यं जनम् ।

[१३५२] ८, ४४, १० (१०२९) ६, १५, ७

[१३५३] ८, ४४, ११ (११८९) ७, १५, १३

[१३५५] ८, ४४, १३ (११९२) ७, १६, १

[१३५६] ८, ४४, १४ (२१) १, १२, १२

[१३६१] ८, ४४, १९ (५०९) ३, १०, १

[१३६७] ८, ४४, २५; ८, ६, ४ समुद्रायैव सिन्धवः ।

[१३६९] ८, ४४, २७ (१३२०) ८, ४३, ११

[१३७०] ८, ४४, २८, २, ५, ८

[१३७०] ८, ४४, २८, १, १०, ९ तस्मै पावक मृलय ।

८, ४५, १ (त्रिशोक काण्व । अमीन्द्रौ)

स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।

(१९१०) १, १३, ५ (मेधातिथि काण्वः ।

आप्रीसूक्तं=बर्हिः)

स्तृणीत बर्हिरानुषक् ।

८, ४५, १, १-३ येषामिन्द्रो युवा सखा ।

[१४५५] ८, ५६ (वाल ८) । ५; (पृषघ्नः काण्व । अमीसूयौ)

(२१) १, १२, १२

[१३८९] ८, ६०, १; ५, २०, ३

[१३९०] ८, ६०, २; ८, २३, २२

[१३९१] ८, ६०, ३; ४, ७, १

[१३९१] ८, ६०, ३; १, १२७, २

[१३९२] ८, ६०, ४ (भर्ग प्रागाथ । अग्निः)

मन्दस्व धीतिभिर्हितः ।

(१६८६) १०, १४०, ३ (अग्नि पावक । अग्नि)

[१३९६] ८, ६०, ८ मा नो मर्ताय रिपवे रक्षस्विने ।

८, २२, १४ — रिपवे वाजिनीवसू ।

[१३९८] ८, ६०, १० पाहि विश्वस्माद्रक्षसो अरावणः ।

१, ३६, १५

[१४००] ८, ६०, १२ येन वंसाम पृतनासु शर्धतः ।

६, १९, ८ — पृतनासु शत्रून् ।

[१४०२] ८, ६०, १४, ८, २३, २७

[१४०५] ८, ६०, १७; १, १२७, २

[१४०६] ८, ६०, १८; इषण्यया नः पुरुरूपमा भर

वाजं नेदिष्ठमूतये ।
 ८,१,४ उप क्रमस्व पुरुषरूपमा— ।
 [१४०७] ८,६०,१९ (भर्गः प्रागाथः । अग्नि)
 तेपानो देव रक्षसः ।
 (१४७८) ८,१०२,१६ (प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्नि
 बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रावन्यतरो वा ।
 अग्नि) तेपानो देव शोचिषा ।
 [१४१४] ८,७१,६ प्र णो नय वस्यो अच्छ ।
 ६,४७,७ प्र नो नय प्रतरं वस्या अच्छ ।
 (१५९७) १०,४५,९ प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
 [१४१६] ८,७१,८ त्वमीशिषे वसूनाम् ।
 १,१७०,५ त्वमीशिषे वसुपते वसूनाम् ।
 [१४१७] ८,७१,९; १,३०,१० सखे वसो जरितृभ्यः ।
 ३,५१,६ —जरितृभ्यो वयो धाः ।
 [१४१८] ८,७१,१० पुरुप्रशस्तमूतये ।
 ८,१२,१४ पुरुप्रशस्तमूतय ऋतस्य यत् ।
 [१४२०] ८,७१,१२ (८९८) ५,२१,४
 [१४२१] ८,७१,१२ (९३८) ५,२८,६
 (१५८६) १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।
 [१४२२] ८,७१,१३ ईशो यो वार्याणाम् ।
 १,५,२; २४,३ ईशानां वार्याणाम् ।
 १०,९,५ ईशानां वार्याणाम् ।
 [१४२६] ८,७२,३; (८७७) ५,१७,२
 [१४३८] ८,७२,१५ उप स्रक्केषु वप्सत ।
 ७,५५,२ — वप्सतो नि षु स्वप ।
 [१४३९] ८,७२,१६ अधुक्षत्पिप्युषीमिषम् । ८,७,३
 [१४४६] ८,७४,५ (१०९०) ६,४८,१
 [१४४६] ८,७४,५; (५४९) ३,२७,१३
 [१४४८] ८,७४,७; (३३२) १,१४४,७
 [१४५३] ८,७४,१२; ७,९४,५ सबाधो वाजसातये ।
 ८,७४,१४ वक्षन्वयो न तुग्रथम् ।
 ८,३,२३ अस्तं वयो— ।
 [१३७५] ८,७५,३; (५२९) ३,२४,३
 [१३८४] ८,७५,१२ मा नो अस्मिन्महाधने परा वर्गमा
 रभृद्यथा ।
 ६,५९,७ — परा वर्कतं गविष्टिषु ।

[१३८८] ८,७५,१६; ३,४२,६; ८,९८,११
 अधा ते सुस्रमीमहे ।
 [१४५४] ८,८४,१ प्रेष्ठं वो अतिथिं (स्तुषे) ।
 १,१८६,३ —अतिथिं गृणीषे ।
 [१४५४] ८,८४,१ (१२३१) ८,१९,८
 [१४५६] ८,८४,३ रक्षा तोकमुत त्मना ।
 १,४१,६ विश्वं तोकमुत त्मना ।
 [१४६१] ८,८४,८, ५,३५,७ पुरोयावानमाजिषु ।
 [१४६३] ८,१०२,१, (१५) १,१२,६
 [१४६५] ८,१०२,३, ८,२१,११ त्वया ह स्विद्युजा वयं ।
 [१४६६-६८] ८,१०२, ४-६ अग्निं समुद्रवाससम् ।
 [१४६९] ८,१०२,७, ५,७,१
 [१४७१] ८,१०२,९ (प्रयोगो भार्गव पावकोऽग्निबार्हस्पत्यो
 वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः
 पुत्रौऽन्यतरो वा । अग्नि)
 अग्निदैवेषु पत्यये ।
 आ वाजैरुप नो गमत् ।
 ९,४५,४ (अयास्य आक्षिरसः । पवमानः सोमः)
 इन्दुदैवेषु पत्यये ।
 [१४७२] ८,१०२,१०, (१२९१) ८,२३,२२
 [१४७३] ८,१०२,११, (५०७) ३,९,८
 [१४७४] ८,१०२,१२, (७५४) ४,१५,६,
 [१४७८] ८,१०२,१६, (१४०७) ८,६०,१९
 [१४७८] ८,१०२,१६, (९२०) ५,२६,१
 [१४७९] ८,१०२,१७, (७०४) ४,८,१
 [१४८०] ८,१०२,१८ अग्ने दूतं वरेण्यम् ।
 (१०) १,१२,१ अग्निं दूतं वृणीमहे ।
 [१२५९] ८,१०३,३, (९१४) ५,२५,४
 [१२६१] ८,१०३,५, १,४०,४ स धत्ते अक्षिति श्रवः ।
 ९,६६,७ दधानो अक्षिति श्रवः ।
 [१२६१] ८,१०३,५; ५,८२,६; ८,२२,१८
 विश्वा वामानि धीमहि ।
 [१२६३] ८,१०३,७ (सोमरिः काण्वः । अग्नि)
 पर्षि राधो मघोनाम् ।
 ९,१,३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

ऋग्वेदस्य दशमं मंडलम् ।

[१४९३] १०,२,२; (२३२) १,७६,४
 [१४९३] १०,२,२ देवो देवान्यजत्वग्निरहन् ।

(१९४२) २,३,१
 [१४९५] १०,२,४ यद्वो वयं प्रमिनाम व्रतानि ।

८४८,९ यत्ते वयं — ।

[१५०७] १०,४,२ अन्तर्मह्नांश्चरासि रोचनेन ।
३,५५,९ अन्तर्मह्नांश्चरति रोचनेन ।

[१५१२] १०,४,७ (त्रित आपत्य । अग्नि)
रक्षा णो अग्ने तनयानि तोका रक्षोत
नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन् ।

(१५३३) १०,७,७ (त्रित आपत्य । अग्नि)

भवा नो अग्नेऽ वितोत गोपा ।

त्रास्वोत नस्तन्वो ३ अप्रयुच्छन् ।

[१५१४] १०,५,२ (त्रित आपत्य । अग्निः)

ऋतस्य पदं कवयो नि पान्ति ।

१०,१७,२ (पतङ्ग. प्राजापत्य । मायाभेद)

ऋतस्य पदे कवयो — ।

[१५२६] १०,६,७ सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूथ ।

८,९६,२१ — हव्यो बभूव ।

[१५२६] १०,६,७, तं ते देवासो अनु केतमायन् ।

४,२६,२ मम देवासो — ।

[१५२८] १०,७,२, १,१६३,७

यदा ते मर्तो अनु भोगमानत् ।

[१५३१] १०,७,५ विश्वु होतारं न्यसादयन्त । ३,९,९

[१५३३] १०,७,७, (१५१२) १०,४,७

[१५३४] १०,८,१, ६,७३,१

आ रोदसी वृषभो रोदवीति ।

[१५३४] १०,८,१ अपामुपस्थे महिषो ववर्ध ।

(१५९१) १०,४५,३

अपामुपस्थे महिषा अवर्धन् ।

१०,९,५ ईशाना वार्याणाम् ।

१,५,२; २४,३ ईशानं वार्याणाम् ।

(१४२१) ८,७१,१३ ईशो यो वार्याणाम् ।

१०,९,६=१,२३,२०

१०,९,७=१,२३,२१

१०,९,७=१,२३,२१, १०,५७,४ ज्योक्च

सूर्यं दृजे । १०,९,८=१,२३,२२

१०,९,९=१,२३,२३

[१५४४] १०,११,५ (३९२) २,२,८

[१५४७] १०,११,८ देवी देवेषु यजता यजत्र ।

४,५६,२ देवी देवेभिर्यजते यजत्रैः ।

७,७५,७ देवी देवेभिर्यजता यजत्रैः ।

[१५४८] १०,११,९=१०,१२,९ (हविर्धान आङ्गि । अग्निः)

श्रुधी नो अग्ने सदने सधस्थे युक्त्वा

रथममृतस्य द्रवितुम् ।

आ नो वह रोदसी देवपुत्रे माकिर्देवानामप
भूरिह स्याः ।

[१५५४] १०,१२,६; १०,१०,२
सलक्ष्मा यद्विषुरुपा भवाति ।

[१५४८] १०,१२,९=१०,११,९

[१५६४] १०,१६,८ तस्मिन्देवा अमृता मादयन्ते ।

(१९६३) ३,४,११=७,२ ११ स्वाहा देवा — ।

[१५७१] १०,२०,१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा
वासुक । अग्निः)

भद्रं नो अपि वातय मनः ।

१०,२५,१ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृद्वा
वासुकः । सोम)

— वातय मनो ।

[१५८०] १०,२०,१० (विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा
वासुक । अग्नि)

एवा ।

... इयान इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ।

१०,९९,१२ (वज्रो वैखानस । इन्द्र.)

एवा ... ।

स इयान करति स्वस्तिमरमा इषमूर्जं सुक्षितिं
विश्वमाभाः ।

[१५८१] १०,२१,१ (८९३) ५,२०,३

[१५८१] १०,२१,१ (५०७) ३,९,८

[१५८३] १०,२१,३ (४०१) २,८,५

[१५८६] १०,२१,६ (१२१४) ८,११,१

[१५८६] १०,२१,६ अग्ने प्रयत्यध्वरे ।

(९३८) ५,२८,६,

(१४२०) ८,७१,१२ अग्निं प्रयत्यध्वरे ।

[१५८७] १०,२१,७ (५१०) ३,१०,२

[१५८८] १०,२१,८ (२१) १,१२,१२

[१५९०] १०,४५,२ विद्वा ते धाम विभृता पुरुत्रा ।

(१६४७) १०,८०,४ अग्नेर्धामानि ।

[१५९०] १०,४५,२ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्नि.)

विद्वा ते नाम परमं गुहा यद्विद्वा तमुत्सं

यत आजगन्थ ।

१०,८४,५ (मन्युस्तपसः । मन्युः)

प्रियं ते नाम सहुरे गृणीमसि

विद्वा तमुत्सं यत आवभूथ ।

[१५९१] १०,४५,३ (१५३४) १०,८,१

[१५९४] १०, ४५, ६ (४८४) ३, ६, ५
 [१५९५] १०, ४५, ७ (११३७) ७, ४, ४
 [१५९७] १९, ४५, ९ (१४१४) ८, ७१, ६
 [१५९८] १०, ४५, १०, ५, ३७, ५
 प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवति ।
 [१५९९] १०, ४५, ११ (६४१) ४, १, १५
 [१६००] १०, ४५, १२; ९, ६८, १० अद्वेषे द्यावापृथिवी
 ह्रुवेम देवा घत्त रयिमस्मे सुवीरम् ।
 [१६०२] १०, ४६, २ (४१७) २, ४, २
 [१६०४] १०, ४६, ४ (११६५) ७, १०, ५
 [१६१०] १०, ४६, १० यं त्वा देवा दधिरे हव्यवाहम् ।
 ७, ११, ४
 [१६१६] १०, ५३, १ (६१०) ३, १९, १
 [१६१७] १०, ५३, २ (१०३७) ६, १५, १५
 देवा देवता १०, ५३, ५; ७, ३५, १४
 गोजाता उत ये यज्ञियासः ।
 १०, ५३, ५, ७, १०४, २३ पृथिवी नः पार्थिवा-
 त्पात्वंहसोऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् ।
 [१६२३] १०, ५३, १० येन देवासो अमृतत्मानशुः ।
 १०, ६३, ४ बृहद्देवासो— ।
 [१६३१] १०, ६९, ७ सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभवा ।
 १, १००, १२ सहस्रचेताः शतनीथ ऋभवा ।
 [१६३८] १०, ७९, २ (५८५) ३, १४, ५
 [१६४५] १०, ८०, २ अग्निर्मही रोदसी आ विवेश ।
 ३, ६१, ७ वृषा मही — ।
 [१६४७] १०, ८०, ४, (१५९०) १०, ४५, २
 [१६५०] १०, ८०, ७ (४६८) ३, १, २२
 [१६५४] १०, ९१, ४ अरेपसः सूर्यस्येव रश्मय ।
 ५, ५५, ३ विरोकिणः सूर्यस्येव — ।
 [१६६०] १०, ९१, १० (३७०) २, १, २
 [१६६३] १०, ९१, १३ (६६७) ४, ३, २
 [१६६४] १०, ९१, १४ (८०५) ५, ६, ५
 [१६६४] १०, ९१, १४ (१३२०) ८, ४३, ११
 [१६६७] १०, ११५, २ (११३५) ७, ४, २
 [१६७०] १०, ११५, ५ (१०२५) ६, १५, ३
 [१६७३] १०, ११५, ८, १, ५३, ११ त्वां स्तोषाम त्वया
 सुवीरा द्राघीय आयुः प्रतरं दधानाः ।
 [१६७७] १०, १२२, ३ (९४७) ६, १, ९
 [१६७८] १०, १२२, ४ (८४३) ५, ११, २
 यज्ञस्य केतुं प्रथमं पुरोहितं ।

[१६८१] १०, १२२, ७ (७८५) ५, ३, ८
 [१६८५] १०, १४०, २ पृणक्षि रोदसी उभे ।
 ८, ६४, ४ ओभे पृणक्षि रोदसी ।
 [१६८६] १०, १४०, ३ (१३९२) ८, ६०, ४
 [१६८९] १०, १४०, ६ (१७३१) ३, २, ५
 अग्निं सुम्नाय दधिरे पुरो जना ।
 [१६८९] १०, १४०, ६ (१०६) १, ४५, ७
 [१६९८] १०, १५०, १ (५०५) ३, ९, ६
 [१६९९] १०, १५०, २ (३७) १, २६, १०
 [१७०१] १०, १५०, ४ अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरो-
 हितः । (१७३४) ३, २, ८ अग्निर्देवानामभव
 त्पुरोहितः । (२०१३) १०, ११०, ११
 अग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
 [१७०५] १०, १५६, ३ पृथुं गोमन्तमश्विनम् ।
 ८, ६, ९, ९, ६२, १२; ६३, १२
 रयिं गोमन्तमश्विनम् ।
 [१७०६] १०, १५६, ४; ८, ८९, ७; ९, १०७, ७ आ
 सूर्यं रोहयो दिवि । १, ७, ३ — रोहयदिवि ।
 [१७११] १०, १८७, १ वृषभाय क्षितीनाम् ।
 ७, ९८, १ जुहोतन— ।
 [१७११-१५] १०, १८७, १-५ स नः पर्षदति द्विषः ।
 [१७१३] १०, १८७, ३ वृषा शुक्रेण शोचिषा ।
 (२१) १, १२, १२ अग्निः शुक्रेण— ।
 [१७१६] १०, १९१, १ अग्ने विश्वान्यर्य आ ।
 ९, ६१, ११ पना — ।
 [१७१६] १०, १९१, १ स नो वसून्वा भर ।
 ८, ९३, २९ स नो विश्वान्या भर ।
 [१७१९] १, ५९, ३ (नोधा गौतम । अग्निर्वैश्वानर)
 या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।
 १, ९१, ४ (गौतमो राहूगणः । सोमः)
 [१७१९] १, ५९, ५ राजा कष्टीनामसि मानुषीणां ।
 ३, ३४, २ इन्द्र क्षितीनामसि — ।
 [१७२१] १, ५९, ५ (नोधा गौतम । अग्निर्वैश्वानर .)
 युधा देवेभ्यो वरिचश्चकथं ।
 ७, ९८, ३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्र .)
 [१७२५] १, ९८, २ (कुत्स आश्विनः । अग्निः वैश्वानरोऽग्निर्वा)
 पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः पृथिव्यां ।
 (१७९५) ७, ५, २ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः ।
 वैश्वानरोऽग्निः)
 पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां ।

(१८२८) १०, ८७, १ (पायुर्भारद्वाज । रक्षोहाऽग्नि)
 स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ।
 [१७२८] ३, २, २ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
 हव्यवाळग्निरजरश्चनोहितो ।
 (७९१) ५, ४, २ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 हव्यवाळग्निरजरः पिता नो ।
 [१७३१] ३, २, ५ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
 अग्निं सुभ्राय दधिरे पुरो जना ।
 (१६८९) १०, १४०, ६ (अग्निः पावकः । अग्निः)
 [१७३४] ३, २, ८ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
 अग्निर्देवानामभवत्पुरोहितः ।
 (२०१३) १०, ११०, ११ (जमदग्निर्भर्गवः रामो वा
 जामदग्न्यः) आप्रीसूक्तं= (स्वाहाकृतय)
 अग्निर्देवानामभवत्पुरोगाः ।
 (१७०१) १०, १५०, ४ (मृळीको वासिष्ठ । अग्निः)
 अग्निर्देवो देवानामभवत्पुरोहितो ।
 [१७३६] ३, २, १० (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
 विशां कविं विश्पतिं मानुषीरिषः ।
 (७९२) ५, ४, ३ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 —मानुषीणां शुचिं पावकं घृतपृष्ठमग्निम् ।
 (९४६) ६, १, ८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 —विश्वपतिं शश्वतीनां ।
 प्रेतीक्षणिमिषयन्तं पावकं ।
 [१७३७] ३, २, ११ (विश्वामित्रो गाथिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
 वैश्वानरः पृथुपाजा अमर्त्यो ।
 (५४१) ३, २७, ५ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 पृथुपाजा अमर्त्यो ।
 [१७५५] ३, २६, ३ स नो अग्निः सुवीर्यं स्वश्रव्यं ।
 ८, १२, ३३ सुवीर्यं स्वश्रव्यं ।
 [१७६०] ४, ५ ३ सहस्ररेता वृषभस्तुविष्मान् ।
 २, १२, १२ यः सप्तरश्मिवृषभस्तुविष्मान् ।
 [१७६१] ४, ५, ४ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)
 प्र ये भिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया
 मित्रस्य चेततो ध्रुवाणि ।
 १०, ८९, ८ (रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः)
 प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जना
 भिनन्ति मित्रम् ।
 [१७६५] ४, ५, ८ पाति प्रियं रूपो अग्रं पदं वेः ।
 (४७४) ३, ५, ५ पाति प्रियं रिपो अग्रं पदं वेः ।
 [१७७७] ६, ७, ५ महान्यग्ने नकिरा दधर्ष ।

५, ८५, ६ महीं देवस्य नकिरा दधर्ष ।
 [१७७९] ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।
 १, १६०, ४ वि यो ममे रजसी सुक्रतूयया ।
 [१७७९] ६, ७, ७ वैश्वानरो वि दिवो रोचना कविः ।
 ९, ८५, ९ अरू रूचद्वि दिवो रोचना कविः ।
 [१७८१] ६, ८, २; (३१९) १, १४३, २ स जायमानः
 परमे व्योमनि । (१८००) ७, ५, ७ — व्योमन् ।
 [१७८१] ६, ८, २ व्यश्नन्तरिक्षममिमीत सुक्रतुः ।
 (१७७९) ६, ७, ७ वि यो रजांस्यमिमीत सुक्रतुः ।
 [१७८५] ६, ८, ६ अस्माकमग्ने मघवत्सु धारय ।
 (३०१) १, १४०, १० — मघवत्सु दीदिहि ।
 [१७८६] ६, ८, ७ अदब्धेभिस्तव गोपाभिरिष्टेऽस्माकं
 पाहि त्रिषधस्थ सूरिन् ।
 (३२५) १, १४३, ८ अदब्धेभिरदपितेभिरिष्टे
 ऽनिमिषद्भिः परि पाहि नो जाः ।
 [१७९५] ७, ५, २ पृष्टो दिवि धाय्यग्निः पृथिव्यां ।
 (१७२५) १, ९८, २ पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः
 पृथिव्यां ।
 [१७९५] ७, ५, २ नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
 ६, ४४, २१ वृषा सिन्धूनां — ।
 [१७९७] ७, ५, ४ अजस्त्रेण शोचिषा शोशुचानः ।
 (१०९२) ६, ४८, ३ — शोशुचच्छुचे ।
 [१७९९] ७, ५, ६ उरु ज्योतिर्जनयन्तार्याय ।
 १, ११७, २१ उरु ज्योतिश्चक्रथुरार्याय ।
 [१८००] ७, ५, ७ स जायमानः परमे व्योमन् ।
 (३१९) १, १४३, २; (१७८१) ६, ८, २ — व्योमनि ।
 [१८०६] ७, ६, ४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
 शचीभिः ।
 अनानतं दमयन्तं पृतन्यूनं ।
 १०, ७४, ५, (गौरिवीति शक्त्यः । इन्द्रः)
 शचीव इन्द्रमवसे कृणुन्वमनानतं दमयन्तं पृतन्यूनं ।
 [१८११] ७, १३, २ (४८१) ३, ६, २
 आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
 ४, १८, ५ (१५९४) १०, ४५, ६
 आ रोदसी अपृणाजायमानः ।
 [१८१७] ४, ४, ५ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)
 अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामि प्र मृणीहि
 शत्रून् ।
 १०, ११६, ५ (अग्नियुतः स्थौरोऽग्नियूपो वा स्थौरः । इन्द्रः)
 अव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।

प्रतीत्या शत्रून्विगदेषु वृश्च ।
 [१८१९] ४,४,७ यस्त्वा नित्येन हविषा य उक्थैः ।
 (९८३) ६,५,५ यस्ते यज्ञेन समिधा य उक्थैः ।
 [१८२५] ४,४,१३ = (३४५) १,१४७,३
 [१८२७] ४,४,१५ (वामदेवो गौतमः । रक्षोहाऽग्निः)
 अया ते अग्ने समिधा विधेम ।
 (११७५) ७,१४,२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
 वयं ते अग्ने— ।
 [१८२८] १०,८७,१; (१७२५) १,९८,२
 स नो दिवा स रिषः पातु नक्तम् ।
 [१८३१, १८४०] १०,८७,४, १३
 तामि- (१३ तथा)- विध्य हृदये यातुधानान् ।
 [१८४८] १०,८७,२१ पश्चात्पुरस्तादधरादुदक्तात् ।
 ७,१०४,१९ प्राक्तादपाक्तादधरादुदक्तात् ।
 [१८५०] १०,८७,२३ अग्ने तिग्मेन शोचिषा ।
 अग्निस्तिग्मेन— । (२१) १,१२,१२
 [१८५५] १०,११८,३, (२४८) १,७७,५
 अग्निरीळ्यो गिरा ।
 [१८५७] १०,११८,५; (५०५) ३,९,६;
 (१६९८) १०,१५०,१ देवेभ्यो हव्यवाहन ।
 १०,११९,१३ देवेभ्यो हव्यवाहनः ।
 [१८५९] १०,११८,७ गोपा ऋतस्य दीदिहि ।
 (५१०) ३,१०,२ दीदिहि स्वे दमे ।
 [१८६१] १०,११८,९; (८६१) ५,१४,२
 यजिष्ठं मानुषे जने ।
 (देवता-१-२३ अश्विनौ) १,११२,१-२३
 तामिरू षु ऊतिभिरश्विना गतम् ।
 [१८६३] १०,१८८,१ अश्वं हिनोत वाजिनम् ।
 ९,६२,१८ हरिं हिनोत वाजिनम् ।
 [१८६३] १०,१८८,१; (१९२४) १,१३,७, ८,६५,६
 इदं नो बर्हिंरासदे ।
 [१८७२] १,९५,५ जिह्मानामूर्ध्वं स्वयशा उपस्थे ।
 २,३५,९ जिह्मानामूर्ध्वो विद्युतं वसानः ।
 [१८७५] १,९५,८ (कुत्स आङ्गिरस । अग्निः, औषसोऽग्निर्वा)
 त्वेषं रूपं कृणुत उत्तरं यत्संपृञ्चान सदाने
 गोभिराङ्गिः ।
 धीः . ।
 ९,७१,८ (ऋषभो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
 त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत्समृता
 संघति स्त्रिवः ।

सं सुष्टुती नसते सं गो अग्रया ।
 [१८७८] १,९५,११=१,९६,९ (कुत्स आङ्गिरसः । अग्निः,
 औषसोऽग्निर्वा)
 एवा नो अग्ने समिधा वृधानो रेवत्पावक
 श्रवसे वि भाहि ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः
 पृथिवी उत द्यौः ।
 [१८७९-८५] १,९६,१-७
 देवा अग्निं धारयन्द्रविणोदाम् ।
 [१८८४] १,९६,६ (कुत्स आङ्गिरस । अग्निं द्रविणोदा अग्निर्वा)
 रायो बुध्नः संगमनो वसूनां ।
 १०,१३९,३ (विश्वावसुर्देवगन्धर्व । सविता)
 [१८८६] १,९६,८ द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य ।
 १,१५,७ द्रविणोदा द्रविणसो ।
 [१८८७] १,९६,९=१,९५,११
 [१८८७-९४] १,९७,१,१-८ अप नः शोशुचदघम् ।
 [१८८९] १,९७,३ प्रास्माकासश्च सूरयः ।
 (८४०) ५,१०,६ अस्माकासश्च सूरयो ।
 [१८९२] १,९७,६; (४) १,१,४ विश्वतः परिभूरसि ।
 [१८९७] ४,५८,३ महो देवो मर्त्यो आ विवेश ।
 ८,४८,१२ अमर्त्यो मर्त्यो आविवेश ।
 [१९०४] ४,५८,१० अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिम् ।
 ९,६२,३
 [१९०७] १,१३,२ (मेधातिथिः काण्व । आप्रीसूक्तं=
 तनूनपात्) मधुमन्तं तनूनपाद् ।
 (१९१९) १,१४,२ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं=
 तनूनपात्)
 [१९०७] १,१३,२ अद्या कृणुहि वीतये ।
 ६,५३,१० नृवत्कृणुहि वीतये ।
 [१९०८; १२] १,१३,३, ७ अस्मिन्यज्ञ उप ह्वये ।
 [१९०९] १,१३,४ असि होता मनुर्हितः ।
 १,१४,११ त्वं होता मनुर्हितो ।
 ८,३४,८ आ त्वा होता मनुर्हितो ।
 [१९१०] १,१३,५ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं=बर्हिः)
 स्तृणीत बर्हिरानुषम् ।
 ३,४१,२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 तिस्तिरे बर्हिरानुषम् ।
 ८,४५,१ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः, १ अमीन्द्रौ)
 स्तृणन्ति बर्हिरानुषम् ।

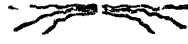
[१९११] १, १३, ६ (मेधातिथि काण्वः । आप्रीसूक्तं= देवी द्वारः)
 वि श्रयन्तामृतावृधो द्वारो देवीरसश्चतः ।
 (१९२३) १, १४२, ६ (दीर्घतमा औचथ्य । आप्रीसूक्तं= देवीः द्वारः)
 वि श्रयन्तामृतावृधः ।
 द्वारो देवीरसश्चतः ।
 [१९१२] १, १३, ७ (मेधातिथिः काण्वः । आप्रीसूक्तं= उषासानक्ता)
 नक्तोषासा सुपेशसा ।
 इदं नो बर्हिंरासदे ।
 (१९२४) १, १४२, ७ (दीर्घतमा औचथ्य । आप्रीसूक्तं= उषासानक्ता)
 नक्तोषासा सुपेशसा ।
 ८, ६५, ६ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
 इदं नो बर्हिंरासदे ।
 (१८६३) १०, १८८, १ (इधेन आग्नेयः)
 जातवेदा अग्निः ।
 इदं नो बर्हिंरासदे ।
 [१९१३] १, १३, ८ (मेधातिथि काण्वः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 ता सुजिह्वा उप ह्वये होतारा दैव्या कवी ।
 यज्ञं नो यक्षतामिमम् ।
 (१९२५) १, १४२, ८ (दीर्घतमा औचथ्य । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 मन्द्रजिह्वा जुगुर्णवी होतारा दैव्या कवी ।
 यज्ञं नो यक्षतामिमम् ।
 (१९३७) १, १८८, ७ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 सुवाचसा होतारा दैव्या कवी ।
 यज्ञं नो यक्षतामिमम् ।
 [१९१४] १, १३, ९ (मेधातिथि काण्वः । आप्रीसूक्तं= तिस्रो देव्यः सरस्वतीळाभारत्यः)
 (१९७१) ५, ५, ८ (वसुधुत आत्रेयः । आप्रीसूक्तं=)
 इळा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयोभुवः ।
 बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः ।
 [१९१५] १, १३, १०; १, ७, १० अस्माकमस्तु केवलः ।
 [१९१८] १, १४२, १ (दीर्घतमा औचथ्य । आप्रीसूक्तं= इध्मः समिद्धोऽग्निर्वा)
 तन्तुं तनुष्व पूर्य्य ।

८, १३, १४ (नारद काण्वः । इन्द्रः)
 —पूर्य्य यथा विदे ।
 [१९१९] १, १४२, २; (१९०७) १, १३, २
 मधुमन्तं तनूनपाद् ।
 [१९१९] १, १४२, २ यज्ञं विप्रस्य मावतः ।
 १, १७, २ हवं विप्रस्य मावतः ।
 [१९२०] १, १४२, ३ (दीर्घतमा औचथ्य । आप्रीसूक्तं= नराशंस)
 शुचिः पावको अद्भुतो ।
 ८, १३, १९ (नारद काण्वः । इन्द्रः)
 शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुत ।
 ९, २४, ६ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 शुचिः पावको अद्भुतः ।
 ९, २४, ७ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 शुचिः पावक उच्यते ।
 [१९२१] १, १४२, ४ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं= इळः)
 ईळितो अग्न आ वहेन्द्रं चित्रमिह प्रियम् ।
 (१९६६) ५, ५, ३ (वसुधुत आत्रेयः । आप्रीसूक्तं= इळः)
 [१९२३] १, १४२, ६; (१९११) १, १३, ६
 [१९२४] १, १४२, ७ (दीर्घतमा औचथ्यः आप्रीसूक्तं= उषासानक्ता)
 यही ऋतस्य मातरा सीदतां बर्हिंरा सुमत् ।
 (१९६९) ५, ५, ६ (वसुधुत आत्रेयः । आप्रीसूक्तं= उषासानक्ता) यही — ।
 ९, ३३, ५ (त्रित आत्त्यः । पवमानः सोमः)
 यहीर्ऋतस्य मातरः ।
 ९, १०२, ७ (त्रित आत्त्यः । पवमानः सोमः)
 यही ऋतस्य मातरा ।
 १०, ५९, ८ (बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः । यावापृथिवी) यही ऋतस्य मातरा ।
 ८, ८७, ४ (कृष्ण आङ्गिरसो, पुत्रीको वा वासिष्ठः, प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
 अश्विना बर्हिः सीदतं सुमत् ।
 [१९२५] १, १४२, ८ (१९१३) १, १३, ८
 [१९२५] १, १४२, ८ (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रीसूक्तं= दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 सिध्ममद्य दिविस्पृशम् ।
 २, ४१, २० (गृत्समद शौनकः । यावापृथिवी हविर्धाने वा)
 (८५५) ५, १३, २ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 सिध्ममद्य दिविस्पृशः ।

[१९२८] १,१४२,११; १,१०५,१४
 अग्निर्हव्या सुषूदति देवो देवेषु मेधिरः ।
 (१९४०) १,१८८,१० अग्निर्हव्यानि सिष्वदत् ।
 [१९३४] १,१८८,४ (अगस्त्यो मैत्रावरुण । आप्रीसूक्तं=बर्हिः)
 प्राचीनं बर्हिरोजसा सहस्रवीरमस्तृणन् ।
 (१९८४) ९,५,४ (असित काश्यपो देवलो वा ।
 आप्रीसूक्तं=बर्हिः)
 बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमान स्तृणन्हरिः ।
 [१९३७] १,१८८,७ , (१९१३) १,१३,८
 [१९४०] १,१८८,१० (१९२८) १,१४२,११
 [१९४२] २,३,१ (गुत्समद शौनकः । आप्रीसूक्तं=
 इन्मः समिद्धोऽभिर्वा)
 देवो देवान्यजत्वग्निर्हन् ।
 (१४९३) १०,२,२ (त्रित आप्यः । अभिः)
 [१९४८] २,३,७ (गुत्समद शौनकः । आप्रीसूक्तं=
 दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर ।
 नाभा पृथिव्या अधि सानुषु त्रिषु ।
 (१९५९) ३,४,७ (विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसूक्तं=
 दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 (४९७) ३,७,८ (विश्वामित्रो गाथिनः । अभिः)
 दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे ।
 १०,६६,१३ (वसुक्रुर्णो वासुक्रः । विश्वे देवा)
 —प्रथमा पुरोहित ।
 (२००९) १०,११०,७ (जमदग्निर्भर्गवः रामो वा
 जामदग्नयः । आप्रीसूक्तं=दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 —प्रथमा सुवाचा ।
 (५६१) ३,२२,४ (विश्वामित्रो गाथिनः । अभिः)
 नाभा पृथिव्या अधि ।
 [१९५०] २,३,९ अथा देवानामप्येतु पाथः ।
 ३,८,९; ७,४७,३ देवा (७,४७,३ देवैर्)
 देवानामपि यन्ति पाथः ।
 [१९५२] २, ३, ११ (गुत्समद शौनकः । आप्रीसूक्तं=
 स्वाहाकृतय)
 अनुष्वधमा वह मादयस्व ।
 (४८८) ३,६,९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अभिः)
 [१९५८] ३,४,६ यथा नो मित्रो वरुणो जुजोषत् ।
 १,४३,३ यथा नो मित्रो वरुणो ।

[१९५९] ३,४,७ (४९७) ३,७,८ (विश्वामित्रो गाथिन ।
 आप्रीसूक्तं=दैव्यौ होतारौ प्रचेतसौ)
 दैव्या होतारा प्रथमा न्यृञ्जे सप्त पृक्षासः
 स्वधया मदन्ति । ऋतं शंसन्त ऋतमिच्छ
 आहुरनुव्रतं व्रतपा दीध्यानाः ॥
 [१९५९] ३,४,७; (१९४८) २,३,७
 [१९६०] ३, ४, ८ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं=
 ७,२,८ (वसिष्ठो मैत्रावरुण । आप्रीसूक्तं=
 तिस्रो देव्य सरस्वतीळाभारत्यः)
 आ भारती भारतीभिः सज्जोषा इळा देवैर्म-
 नुष्येभिरग्नि । सरस्वती सारस्वतेभिरर्वा-
 क्तिस्रो देवीर्बर्हिरेदं सदन्तु ॥
 [१९६१] ३,४,९ (विश्वामित्रो गाथिन । आप्रीसूक्तं=त्वष्टा)
 ७,२,९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं=त्वष्टा)
 तन्नस्तुरीपमध पोषयित्नु देव त्वष्टर्वि
 ररणः स्यस्व । यतो वीरः कर्मण्यः सुदक्षो
 युक्तग्रावा जायते देवकामः ॥
 [१९६२] ३,४,१० (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं=
 वनस्पतिः)
 ७,२,१० (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं=
 वनस्पतिः)
 वनस्पतेऽव सृजोष देवानग्निर्हविः शमिता सृदयाति ।
 सेदु होता सत्यतरो यजाति यथा देवानां
 जनिमानि वेद ॥
 [१९६३] ३,४,११ (विश्वामित्रो गाथिनः । आप्रीसूक्तं=
 ७,२,११ वसिष्ठो मैत्रावरुणः । आप्रीसूक्तं=
 स्वाहाकृतयः)
 आ याह्यग्ने समिधानो अर्वाङ्निद्रेण देवैः सरथं
 तुरेभिः ।
 बर्हिर्न आस्तामदितिः सुपुत्रः स्वाहा देवा अमृता
 मादयन्ताम् ।
 (८४३) ५,११,२ (सुतंभर आत्रेय । अभिः)
 इन्द्रेण देवैः सरथं स बर्हिषि ।
 १०,१५,१० (शङ्खो यामायनः । पितरः)
 इन्द्रेण देवैः सरथं दधानाः ।
 (२००२) १०,७०,११ (सुमित्रो वाध्व्यश्वः ।
 आप्रीसूक्तं=स्वाहाकृतयः ।
 स्वाहा देवा अमृता मादयन्ताम् ।
 [१९६६] ५,५,३ ; (१९२१) १,१४२,४
 [१९६९] ५,५,६ ; (१९२४) १,१४२,७

दैवत--संहितान्तर्गत- अग्निमन्त्राणां उपमासूची ।



अंशुः इव ५, २९, ११; २३१५ अयं .. आप्यायताम् ।
 अंहः न ६, २, ४; ९५५ स मर्तः . द्विष. तरति ।
 अंहः न ६, ११, ६; १००५ वावसाना वयं... वृजनं ।
 अग्रुवः न ७, २, ५, १९७८ समनेषु [अग्निं शिशु] ... समञ्जः ।
 अध्व्या कृशं न ८, ७५, ८; १३८० देवा.. नः मा हासुः ।
 अंगिरस्वत् १, ३१, १७; ६६ [अग्ने] सद्गने अच्छ आ याहि ।
 अंगिरस्वत् ८, ४३, १३; ८२२ शुचे, स्वा . हवामहे ।
 अजः न १, ६७, ५; १४८ अग्निः...क्षां पृथिवीं च दाधार ।
 अतसं यथा [त्वं] ८, ६०, ७; १३९५ अग्निवृद्धं...संजूर्वसि ।
 अतसं शुक्लं न ४, ४, ४; १८१६ समिधान, यः नः ।
 अतिथिः न १, ७३, १; २०५ स्योनशीः [अग्निः] ..प्रीणानः ।
 अतिथिः (न) ६, २, ७; ९५८ मियः... असि ।
 अतिथिः न ८, १९, ८; १२३१ अग्निः . मित्रियः प्रशंसमानः ।
 अत्यः न १, ५८, २; १११ युषितस्य [अग्नेः] पृष्ठे... रोचते ।
 अत्यः रथ्यः वारान् दोधवीति न २, ४, ४; ४१९
 अत्यः न ६, २, ८; ९५९ अग्ने, शिशु. [त्वं]... ह्वार्य. ।
 अत्यः न ६, ४, ५; २७५... त्वं हुतः पततः परिहुत् ।
 अत्यः न १०, ६, २; १५२१... अपरिहुतः सति. ।
 अत्यः न ३, २, ७; १७३३ सः [अग्नि] . अध्वराय परि ।
 अत्यम् न ७, ३, ५; १२२८ यविष्ठं तं अग्निं नरः मर्जयन्त ।
 अत्यम् न ३, २, ३; १७२९ महो अग्निं वाजं सनिष्यन् ।
 अत्रिवत् ५, ७, ८; ८१८ यस्यै (अग्नेये)...परीयते ।
 अथर्वः न ४, ६, ८; ६८९ यं अग्निं द्विः पञ्च स्वसारः ।
 अथर्ववत् ६, १५, १७; १३०९ वेधसः ह्रमं उ ह्यत् ।
 अथर्ववत् १०, ८७, १२; १३८९ दैव्येन ज्योतिषा सत्यं ।
 अद्रोघः न ६, १२, ३; १००८ ओषधीषु द्रविता अवर्त्रः ।
 अध्वराः इव ३, ६, १०; ४८९ ऋतजातस्य सुमेके ऋतावरी ।
 अम्रवानवत् ८, १०२, ४; १४६६ समुद्रवाससं अग्निं...आहुवे ।
 अमतिः न १, ७३, २; २०६ पुरुप्रशस्तः (अग्निः) . सत्यः ।
 अमृतात् इव १०, १७६, ४; १७९० अयम् अग्निः...जन्मनः ।
 अयः न ४, २, १७; ६६३ सुकर्माणः देवाः जनिम...धमंत ।
 अयसः धारां न ६, ३, ५; ९६७ सः [अग्निः] असिष्यत् तेजः...
 अर्वन्तम् न ४, १५, ६, ७५४ सानसि तम् दिवेदिवे... ।
 अर्वन्तं न ८, १०२, १२; १४७४ सानसि शुष्मिणं...गृणीहि ।

दै० [अग्निः] २८

अर्वाणम् हिदिमभ्रु न १०, ४६, ५; १६०५ धियं धुः ।
 अरशयून् जन इव [अथर्व] ८४, ३६, ९; २३०३ ये
 अरनी. मही. सिन्धुं इव ५, ११, ५ ८४६ अग्ने, स्वां गिर. ।
 अविना विश्वासु विष्णु इव ८, ७१, १५; १४२३ ऋषूणां वस्तुः ।
 अशनिः यथा दिव्या १, १४३, ५, ३२२ य (अग्निः) वराय ।
 अशनिः गोषुयुधः मृजाना न ६, ६, ५; ९९०
 अशन्या वृक्षम् इव (अथ०) ७, १०९, ४; २३६८ यः अस्मान् ।
 अश्वः गविष्ठिषु क्रन्दत् १, ३६, ८; ७५ अग्ने त्वं कण्वे ... ।
 अश्वः न ३, २७, १४; ५५० वृषाः देववाहनः अग्निः ।
 अश्वः न ३, २९, ६; ५६३ वनेषु वाजी अरुषः आ . विरोचने ।
 अश्वः न ४, २, ८; ६५४ दाश्यांसं तं स्वे दमे हेन्यावान् त्वं.. ।
 अश्वः न ६, ३, ४; ९६६ (अग्निः) आसा यमसानः ।
 अश्वः न यवसे अविष्यन् प्रोथत् ७, ३, २; ११२५ . महः ।
 अश्वः क्रन्दत् जनिभिः न ३, २६, ३; १७५५ युगे युगे ।
 अश्वातः न रारहाणाः रथ्यः १, १४८, ३; ३५० य [अग्निम्] ।
 अश्वाः (इव) विषितासः ६, ६, ४; ९८९ प्र सूनयन्त ।
 अश्वाः इव ८, २३, ११; १२८० तव इन्धानासः माः ।
 अश्वाः एवैः ससीवन्तः वाजेन १०, ६, ६; १५२५ यस्मिन् ।
 अश्वं वाजिनं न ७, ७, १; १४४२ सहमानं देवं अग्निं .. ।
 अश्वं रथ्यं न ८, १०३, ७; १२६३ सुदानवः देवयवः ।
 अश्वावत् ८, ७२, ६; १४२९ अस्य महत् बृहत् योजनं ।
 अश्वाः जातं शिशुं न ३, १, ४; ४५० सस यद्धीः सुभगं ।
 अश्वः इव (अथर्व०) १२, २, ५०; २२६३...अग्निः अन्तिकाल ।
 अश्वं अश्वाभिधान्या इव (अथ०) ४, ३६, १०, २३०४
 अश्वाय इव (अथर्व०) १९, ५५, १; २२६९ अस्मै घासं ।
 अश्वाय इव (अथर्व०) १९, ५५, ६; २२७४ अस्मै घासम् ।
 अश्वमिद् ८, ७४, १०, १४५१ गां रथ्यां [अग्निं] त्वय्य ।
 असश्वता इव १०, ६९, ८; १६३२ समना सवर्धुक् त्वे ।
 असिः गां इव १०, ७९, ६; १६४२ अक्रोळन् क्रीळन् हरिः ।
 असुरः इव ८, १९, २३; १२४६ अग्निः निर्णिजं उत् च ।
 अस्ता इव १, ७०, ११; १८४ [अग्निः] शूरः ।
 अस्ता इव ६, ३, ५; ९६७ [स्वकीयां ज्वालाम्] असिष्यन् ।
 अस्तु. दिद्युत् न १, ६६, ७; १४० त्वेषप्रतीका ।
 अस्तुः अशनां शर्यां न १, १४८, ४; ३५१ अस्य शोचिः .. ।

आत्मा इव १,७३,२, २०६ अग्निः ... शिवः ।
 आप. इव प्रवताः ३,५,८; ४७७ ... शुभमानाः प्रस्व ।
 आपि (यथा) आपये यजति १,२६,३, ३० तथा स्वमपि ।
 आयु न ६,११,४; १००३ यं सुप्रयसं पञ्च जनाः... भजते ।
 आरोगाः इव ८,४३,३, १३१२ अग्ने तव तिग्मा त्विषः ।
 आशुम् न १,६०,५, १२३ वाजंभर त्वां (अग्निम्) ।
 आशुम् न ४,७,११, ७०३ अर्वा (अग्निः) [स्वरदिमम्] ।
 आशुम् इव आजिषु सति १०,१५६,१, १७०३ नः धियः ।
 इन्द्र न ६,४,७; ९७७ शवसा... त्वा नृत्तमा देवता ।
 इन्द्र न ८,७४,१०; १४५१ सत्पतिम्, (हे) कृष्टयः ।
 इन्द्र न १०,६,५; १५२४ रजमान अग्निं गीर्भिः ।
 इन्द्रस्य इव ७,६,१, १८०३ वन्दमान. [अहम्] .. तवसः ।
 इषिराय भोज्या न १,१२८,५; २८७ अस्य अग्ने ।
 उग्र शवसा न १,१२७,११, २८२ अग्ने शवसा ।
 उग्र इव ६,१६,३९, १०८० शर्यहा [अग्निः अस्ति] ।
 उग्रः इव ८,१९,१४; १२३७ सः सुभगः जनान् युष्मैः ।
 उपमित् रोध न ४,५,१; १७५८ अनुनेन बृहता वक्ष्येन ।
 उरुच्यञ्च इव दिविस्वम् ५,१,२२; ६६६ गविष्ठिरः... अश्रेत् ।
 भानुना उपसः न ६,१५,५; १०२७ यः [अग्निः] रुचे ।
 उपसाम् इव १०,९१,४; १६५४ चिकिन्न ते ईतयः संति ।
 उपसां केतवः इव ८,४३,५, १३१४ एते ते अग्नयः ।
 उपसां केतवः न १०,९१,५, १६५५ चिकिन्न तव केतवः ।
 उषः जारः न १,६९,१, १६४ शुक्रः [अग्निः] [भवति] ।
 उषः जारः न १,६९,९; १७२ ... विभावा संज्ञानरूपः ।
 उष जार न ७,१०,१; ११६१ पृथु पाजः अश्रेत् ।
 उस्तः पिता इव ६,१२,४; १००९ द्रवन्नः यज्ञैः जारयायि ।
 उस्ताः इव प्रस्तातीः ८,७५,८, १३८० देवाः... नः मा हासुः ।
 ऊध. मातुः [प्रतियथा वत्साः उपजीवन्ति] १०,२०,२;
 १५७२ [तद्वत्] यस्य धर्मन् स्वर एनीः सपर्यन्ति ।
 ऊधः न गौनां १,६९,३, १६६ अग्निः ... पितृनां स्वाद्य ।
 ऊर्मा सिन्धोः उपाके आ १,२७,६; ४३ चिन्नभानो विभक्तसि ।
 ऊर्मय सिन्धोः प्रस्वनितास. इव १,४४,१२, ९७ अग्नेः ।
 ऊर्मि. नावं न ८,७५,९; १३८१ समस्य, दृढ्यः परिद्वेषः ।
 ऊर्मय. प्रवणेन ८,१०३,११; १२६७ धिया वाजं सिषासत ।
 ऋभु. न ६,३,८; ९७० त्वेषः रथसानः [अग्निः] ... अद्यौत् ।
 ऋषिः न १,६६,४, १३७ [अग्निः] स्तुभरा [अस्ति] ।
 एकास् इव ३,७,४, ४९३ दिद्युतः अग्नि. रोदसी वि ।
 एतरी न ६,१२,४, १००९ अस्माकेभिः शूवै. अग्निः... स्तवे ।
 ओकः न १,६६,३; १३६ [अग्निः] रणवः ।
 औशिजः पत्नम् न दीयन् ६,४,६, ९७६ चिन्नः शोचिषा ।
 कन्या इव अजि अजानाः बहत् ४,५८,९, १९०३ बहत् ।

कविम् इव ८,८४,२; १४५५ प्रचेतसं यं देवासः मर्त्येषु ।
 कुमारः न १०,७९,३; १६३९ मातु प्रतरं गुह्यं इच्छन् ।
 क्रतुः न १,६६,५; १३८ [अस्ति] नित्यः ।
 क्रतुम् न ४,१०,१; ७२० नमू ते (त्वा) ओहैः स्तोमैः ऋध्याम् ।
 क्रतुः न १,६७,२; १४५ ... [अग्निः] भद्रः ।
 क्षामा इव विश्वा भुवनानि ६,५,२; ९८० यस्मिन् पावके ।
 क्षितिः पृथ्वी न १,६५,५; १२८ [विस्तीर्णा भूमिः इव ।]
 क्षिति. राया न ४,५,१५; १७७२ सुदशीकरूप. पुरुवारः ।
 क्षेमः न १,६७,२; १४५ [अग्निः] साधुः ।
 क्षोदः न १,६५,५; १२८ शंभु (यथा उदकं सुखं करोति) ।
 क्षोदः न १,६५,६; १२९ [अग्निः] सिन्धुः स्वदनशीलं ।
 क्षोदः पिन्धु न १,६६,१०; १४३ [अग्निः] नीचीः ऐनोत् ।
 स्वादिनम् न ६,१६,४०; १०८१ यं स्वध्वरं अग्निम् ।
 गर्भ. इव गर्भिणीषु सुधिनः ३,२९,२; ५५९ जातवेदाः ।
 गर्भः इव योन्या प्रच्युतः अयं ६,१२१,४; २३८९ सर्वान् ।
 गविषः द्रुपतं दधिधमत् ४,१३,२; ७४१ यत् रश्मय ।
 गिरिः न १,६५,५; १२८ भुज (सर्वेषां भोजयिता ।)
 गुहा इव ३,११,४; ४६०... स्वे सदमि वृद्धं अग्निः नवः ।
 गावः अस्ते न १,६६,९; १४२ .. तं वः (त्वा) इह्यं अग्निं ।
 गावः वाश्राय प्रतिहर्षते ८,४३,१७; १३२६ अग्ने, समस्तुतः ।
 गावः उत्पन्नजम् इव १०,४,२; १५०७ यविष्ठ, त्वां जनासः ।
 गावः वाश्राः न (वा०) ९५,६; १८७३ उभे मेने... एवैः ।
 गाः खिले विष्ठिताः इव (अयं) ७,११५,४; २२०४ एता ।
 गौ. स्वं जरायुम् इव (अयं) ६,४९,१, २३३७ कपिः ।
 गावः श्यावीं उच्छन्तीं अरुवीं न १,७१,१; १८५ सनीलाः ।
 गोः पदम् न ४,५,३; १७६० अग्निः... अपगूह्यं मनीषां ।
 गोपाः पशून् न ७,१३,३; १८१२ इर्यः परिजमा, अग्ने ।
 गौर्यं यथा ह त्यत् पदिवितां ४,१२,६; ७३९ एवो ।
 प्रावा सोता इव ४,३,३, ६६८ (तस्मै) देवाय शरितं ।
 प्रावा इव ५,२५,८; ९१८ बृहत् [स्वम्].. उच्यते ।
 घनाः इव १,३६,१६; ८१ तपुर्जम्भ, आरागः विध्वक्... ।
 घर्मः न ५,१९,४; ८८९ [अग्निः] वाजजठरः अदन्तः ।
 घृतं न अघ्न्यायाः तप्तं श्रुचि ४,१,६; ६३२ देवस्य मंहना ।
 घृतं पूतं न ४,१०,६; ७२५ स्वयावः, ते तनूः... ओपाः ।
 घृतं न अस्थे [प्रहुतं] यज्ञे सुपतं ५,१९,१; ८४८ वृषभाय ।
 घृतं श्रुचि न ६,१०,२; ९९४ मतयः .. यं शूवं सोमं अस्मै ।
 आसनि कं घृतं न ८,३९,३, १३०२ अग्ने, तुभ्यं .. मन्मानि ।
 घृतं श्रुचि इव १०,९१,१५; १६६५ अग्ने ते आस्थे... ।
 घृतं पूतं न ३,२,१; १७२७ ऋतावृषे वैश्वानराय... ।
 चक्षणिः वस्तीः न ६,४,२; ९७२ सः अग्निः... विभावा ।
 चन्द्रम् सुरचं इव २,२,४, ४८८ [देवाः] अग्निः... स्वहारे ।

चर्म इव ४,१३,४; ७४३ सूर्यस्य रश्मयः अप्सु अनाः ... ।
 चर्मणी इव ६,८,३; १७८२ वैश्वानरः .. धिषणे अवर्तयत् ।
 चित्रः यामन् अश्विनोः न ३,२९,६; ५६३ वनेषु वाजी ।
 छाया इव १,७३,८; २१२ त्वं अग्निः विश्वं सुवनं ।
 छायाम् इव ६,१२,३८, १०७९ अग्ने, घृगेः ते शर्म वय ।
 जनयः नित्यं पतिं न १,७१,१; १८५ उशतीः सनीळाः ।
 जनयः शुभमानाः १०,११०,५, २००७ व्यचस्वतीः ।
 " " (वा०य०) २९,३०; २१२२ "
 जनयः न पतिरिव ४,५,५, १७६२ दुरेवाः पापासः सन्तः ।
 जनयः सुपत्नी (यथा) वा०य० २०,४०, २०१८ इन्द्रं दुरः ।
 जनयः पत्नीः न वा०य० २० ४३; २०२१ इन्द्रं जुषाणाः ।
 जन्म तनयं न ३,१५,२, ५८९ अग्ने, मे स्तोमं नित्यं ।
 जाया योनौ इव १,६६,५; १३८ [अग्निहोत्रादिगृहे ।]
 जाया पत्न्ये उशती सुवासाः ४,३,२, ६६७ अयं ते योनिः ।
 जाया पत्न्ये उशती सुवासाः १०,९१,१३, १६६३ [अहम्] ।
 जारः आ १०,११,६; १५४५ ... भगं पितरा उद्गीरय ।
 जूरः इव पुरि ६,२,७, ९५८ [अग्ने] त्वं . रण्व . ।
 तक्रवीः इव १०,९१,२; १६५२ वने वने शिष्रिये ।
 तक्रा न १,६६,२; १३५ [अग्निः] भूर्णिः ।
 तत्तृषः न ६,१२,२, १००७ जंहः [त्रिषध.स्थ. ।]
 तन्यतुः यथा ५,२५,८, ९१८ दिवः ते स्वानः . आर्तं ।
 दिवः तन्यतुः न ७,३,६; ११२९ ते शुभमः पति ।
 तरणिः इव १,१२८,६, २८८ अरतिः अग्निः दक्षिणे हस्ते ।
 तस्कराः तन् स्वजा इव १०,४,६; १५११ वनगुं दक्षभि ।
 तक्रिन् इव १,९४,७, २६२ दूरे चित् सन् .. अति रोचसे ।
 तालुषाणः न २,४,६; ४२१ यः अग्निः .. वना आभाति ।
 तासुं पश्वा (सहवर्तमानं) न १,६५,१; १२४ धीराः सजोषाः ।
 तासुः गुहा पदं दधानः न ५,१५,५; ८७० महः राये अग्निः ।
 तासुः ऋणः न ६,१२,५, १०१० यः रुधः स्पन्दः विषितः ।
 तोदः अध्वन् न ६,१२,३, १००८ वृधसानः वनेराट् अग्निः ।
 तोदस्य शरणे महस्य आ १,१५०,१; ३५८ अग्ने, तव स्विता ।
 त्वष्टा रुधा इव ८,१०२,८; १४७० अय [अग्निः] नः ।
 यथा अग्ने इहामि ७,३,७; ११३० अग्ने, नः तेभि ।
 दिद्युत् अस्तुः त्वेषप्रतीका न १,६६,७; १४० [अग्निः] ।
 दिवः उयोतिः न १,६९,१; [अग्निः] समीची पत्रा ।
 दिवः शिशुं न ४,१५,६, ७५४ अरुषं तं दिवे दिवे ।
 दिवः न ४,१०,४, ७२७ अग्ने ते शुभमाः . प्रस्तनयन्ति ।
 दिवः न ५,१७,३; ८७८ यस्य [अग्ने] रेतसा व्यासं ।
 दिवः न ६,३,७; ९६९ विधतः यस्य [अग्नेः] ... ।
 दुग्धम् न ५,१९,४, ८८९ जाम्यो रुचा [अग्निः] शृगोतु ।
 दूतः जन्मः मिथ्यः इव २,६,७, ४३९ कवे अग्ने, उभया ।

देवः न १,७३,३, २०७ [अग्निः] ... विश्वथाययः ।
 धाम् इव परिजमानं १,१२७,२; २७३ चर्षणीनां होतारं ।
 द्यौः स्तुभि. न २,२,५, ६८९ [अग्निः] . रोदसी ।
 द्यौः नभोभिः स्मयमानः २,४,६; ४२१ ... कृष्णाध्या तपुः ।
 धाम् इव स्तुभिः ४,७,३, ६९५ विश्वेषां अध्वराणां ।
 द्यौः न १,६५,३, १२६ ... भूम अभूत् ।
 द्यावः न १०,११५,७; १६७२ [ऋतायव] द्युमैः संति ।
 द्यौः स्तनयन् इव १०,४५,४; १५९२ अग्नि अक्रन्दत् ।
 द्रविः न ६,३,४; ९६६ [अग्निः] द्रवत् दारु द्रावयति ।
 द्वेयो युनः न ५,९,६; ८३३ ... मथ्यानां दुरिता तुर्याम् ।
 धनुः इव (अथर्व०) ४,४,६, २१६२ ... पसः आ तनय ।
 धन्वाराहा न १,१२७,३, २७४ नि.पहमाणः (अग्निः) ।
 धायोभि. वा ६,३,८; ९७० यः [अग्निः] .. युज्येभिः ।
 धारा उदन्त्या इव २,७,३; ४४३ वगं विश्वा द्विषः ... ।
 धासिम् इव १,१४०,१; २९२ सुद्युते अग्नये योनिम् .. ।
 धीर स्वेन इव १,१४५,२; ३३४ [अग्निः] मनसा ।
 धेनव. स्वसरेषु वसं न २,२,२; ३८६ [अग्ने] त्वा ।
 धेनुः दुहाना (इव) २,२,९; ३९३ [अग्ने त्वदीया] धीः ।
 धेनोः मंहना इव ४,१,६; ६३२ देवस्य मंहना स्पर्हा ।
 धेनुम् इव ५,१,१; ७५५ आयती उपारो प्रति जनानां ।
 धेनुः सुदुषा इव ७,२,६, १९७९ उषासा नक्ता सुविताय ।
 धमाता इव ५,९,५; ८३२ यत् [अग्निः] ईम् उपधमति ।
 धमातरी यथा ५,९,५; ८३२ ... (स्वयमेव स्वात्मानं) ।
 नभः रूपं न १,७१,४०, १९४ (त्वं) कवि सन् . अग्निः ।
 नभन्यः अर्वा १,१४९,३; ३५५ अग्निः अत्यः कवि ।
 नराम् न १,१४९,२; ३५४ यः रोदस्योः ... वृषा ।
 नारी इव अनवद्या पतिजुष्टा १,७३,३, २०७ अग्निः भवति ।
 नेमिः अरान् न १,१४१,९, ३१३ अग्ने यत् सीम् क्रतुना ।
 नेमिः चक्रम् इव २,५,३; ४२७ अग्निः ... विश्वानि काश्या ।
 नेमिः अरान् इव ५,१३,६; ८५९ अग्ने त्वं देवान् ।
 नेमिं ऋभव. यथा ८,७५,५, १३७७ अग्निः सद्गतिथिः ।
 नावा सिन्धुम् न ५,४,९, ७९८ जातवेदः नः विश्वानि ।
 नावा इव ५,२५,९; ९१९ अग्निः नः विश्वाः द्विषः ।
 नावा इव सिन्धु १,९९,१; १८६२ अग्निः नः विश्वा ।
 नावा इव १,९७,७, १८९३ विश्वतोमुख, नः द्विषः . ।
 नायया सिन्धुम् इव १,०,७,८, १८९४ सः एव नः स्वस्तये ।
 पयः न धेनुः १,६६,२; १३५ (पयः इव प्रीययिता) ।
 परशुः न द्रुहतरः १,१२७,३, २७४ दीधानः अग्निः . ।
 परशु न ४,६,८, ६८९ तिग्मं स्वासं दन्तं अग्निम् ।
 परशुः न ६,३,४, ९६६ [अग्निः] .. जिह्वा विजेहमानः ।
 परिजना इव ६,२,८, ९५९ अग्ने [त्व] ... [सर्वगण] ।

परिजमा इव ६,१३,२; १०१३ दस्मवर्चाः क्षयासि ।
 पव्या इव ६,८,५; १७८४ राजन्, अजर, ... तेजसा ।
 पशु न शिश्वा १,६५,१०; १३३ अग्निः शिश्वा अभूत् ।
 पशुः न २,४,७; ४२२ अग्निः ... स्वयुः अगोपा एति ।
 पशुः न दाता ५,७,७; ८१७ सहिष्म आक्षितं धन्य ... ।
 पशुः न यवसे ५,५,४; ८३१ अग्ने (त्वं) वना ... पुरु ।
 पशुः न यवसे ६,२,९०; ९६० अग्ने, त्वं त्याचित् ।
 पशु इव अवसृष्टः १०,४,३; १५०८ [देवान्] जिगीषसे ।
 पशुं नष्टं पदैः न १०,४६,२; १६०२ धीराः अपां सध.स्ये ।
 पशुपाः इव १,४४,६; ३३१ अग्ने, त्वं दिव्यस्य पार्थिवस्य ।
 पशुपाः इव ४,६,४; ६८५ अग्निः त्रिविष्टि ... परि एति ।
 पशुपाः इव १०,१४२,२; १६९१ नः धियः ... त्मना ।
 पशुषे न १,१२७,१०; २८१ उष्वं धे अग्नये वः स्तोमः ... ।
 पाथः न २,२,४; ३८८ पाथु पृथ्याः पतरं अक्षभिः ।
 पितुमान् इव १,१४४,७; ३३२ अग्ने, त्वं संहृष्टौ रणवः ।
 पिता सूनवे इव १,१,९; ९ अग्ने, नः ... सूपायनः ।
 पिता सूनवे इव १,२६,३; ३० अग्ने (पितृस्थानीयः) ।
 पितुः न जिघ्रेः १,७७,१०; १८३ [अग्ने] त्वा नरः पुरुषा ।
 पितुः न १,१२७,८; २७९ यस्य आसया अमी विश्वे ।
 पिता इव २,१०,१; ४०९ जोहूत्रः प्रथमः अग्निः यत् ।
 पितुः यथा ८,७५,२६; १३८८ अग्ने, ते अवसः वयं पुरा ।
 पिता पुत्रम् इव १०,६९,१०; १६३४ सपर्यन्तं वाधयश्चः ... ।
 पितरा इव ३,१८,१; ६०५ अग्ने, त्वं उपेतौ सुमनाः ।
 पित्रोः (इव) ७,६,६; १८०८ रोदस्योः उपस्थ वैश्वानरः ।
 पुत्राः पितुः न १,६८,९; १६२ ये अस्य (अग्नेः) ज्ञानं ।
 पुत्रः न १,६९,५; १६८ जातः अग्निः ... दुरोणे रणवः ।
 पुत्रः मातरा न १०,१,७; १४९१ अग्ने, (त्वं) यावा ।
 पुत्रः पितुः न ८,१९,२७; १२५० सुधृतः [अग्निः] नः ।
 पुष्टिः रणवा न १,६५,५; १२८ (अग्निः) सर्वेषां ।
 पुष्टिः स्वस्य इव २,४,४; ४१९ अस्य पुष्टिः रणवा ।
 पू. न मही आयसी शतभुजिः ७,१५,१४; ११९० अग्ने ।
 पूर्ववत् ३,२,१२; १७६८ सः . जन्तवे धनं जनयन् ।
 पृष्ठा वीता वृजिना च इव ४,२,११; ६५७ विद्वान् [अग्निः] ।
 प्रपा धन्वन् इव १०,४,१; १५०६ हे अग्ने [त्वं] ... असि ।
 प्रयाः मरुतां इव ३,२९,१५; ५७२ ब्रह्मणः प्रथमजाः सति ।
 प्रयुक्तिः मरुतां न ६,११,१; १००० अग्ने ... [अस्मच्छन्नम्] ।
 प्रसितिः शूरस्य इव ६,६,५; १९० अग्नेः क्षातिः .. असि ।
 प्रसितिं पृथ्वी न ४,४,१; १८१३ ... पाजः कृणुष्य ।
 प्राणः आयुः न १,६६,१; १३४ (प्रश्नसन् वायुरिव अग्निः) ।
 बन्धुरा इव ३,१४,३; ५८३ ते उषासः ... दुरोणे तस्थतुः ।
 बृहती इव १,५९,४; १७२० रोदसी सूतवे [अभूताम्] ।

भगः इव १,१४४,३; ३१८ हव्यः सारथिः (सन्) ।
 भगः ऋतुपाः इव ३,२०,४; ६१७ दैवीनां क्षितीनां ... नेता ।
 भगः न ५,१६,२; ८७२ अग्निः ... वारं वि ऋषवति ।
 भगम् इव १,१४१,६; ३१० होतारं अग्निं पट्टचानासः ।
 भगं दक्षं न १,१४१,११; ३१५ अग्ने, अस्मे ... पर्णसि ।
 भगं न १,१४१,१०; ३१४ हे महिरत्न, नव्वं त्वा वयं ।
 भगस्य भुजिम् इव ८,१०२,६; १४६८ भुजिं समुद्रवाससं ।
 भद्रे न १,९५,६; १८७३ [एतं अग्निं] उमे भद्रे मेने ... ।
 भारं गुरुं न ४,५,६; १७६३ अग्ने, क्रियते [त्वदीयं कर्म] ।
 भारभृत् यथा ८,७५,१२; १३८४ [तथा] अस्मिन् महाधने ।
 भीमः न १,१४०,६; २९७ दुर्गुभिः ... शृङ्गा दविधाव ।
 स्वजेन्यं भूम पृष्ठा इव ५,७,५; ८१५ ईम् [अग्निं] घृतस्य ।
 भूमा विश्वं इव ८,३९,७; १३०६ सः मुदा पुरु काव्या ... ।
 भृगुवत् ८,४३,१३; १३२२ शुचे त्वा ... हवामहे ।
 भृगुवत् और्वं ८,१०२,४; १४६६ समुद्रवारुसं अग्निं ... हुवे ।
 भोज्या मरुतां न १,१२८,५; २८७ अस्य अग्नेः तविषीषु ।
 भ्राता इव स्वस्त्रां १,६५,७; १३० (अग्निः हितकारी अस्ति) ।
 मधो. पात्रा न ८,१०३,६; १२६२ अस्मै अग्नये ... प्रयति ।
 मध्वा न ५,१९,३; ८८८ जन्तवः कृष्टयः ... एना ।
 मनः न १,७१,९; १९३ यः एकः सूर. अध्वनः ... एति ।
 मनुवत् २,१०,६; ४१४ [वधम्] ... वदेम ।
 मनुषः यथा (सीदन्ति) १,२६,४; ३१ तथा वरुणः, मित्रः ।
 मनुषः यथा यज्ञेभिः ६,४,१; ९७१ एवा नः अद्य समना ।
 मनुष्यत् १,३१,१७; ६६ अंगिरः, सद्ने अच्छ आयाहि ।
 मनुष्यत् २,५,२; ४२६ पोता अष्टमं दैव्य विश्वं ... इन्वति ।
 मनुष्यत् ३,१७,२; ६०१ अध इमं यशं प्रतिर ।
 मनुष्यत् ५,२१,१; ८९५ अग्ने, त्वा निधीमहि ।
 मनुष्यत् ५,२१,१; ८३५ अग्ने, त्वा समिधीमहि ।
 मनुष्यत् ५,२१,१; ८९५ अंगिरः अग्ने, देवयते ... देवान् ।
 मनुष्यत् ७,२,३; १९७६ मनुना समिद्ध अग्निं महेम ।
 मनुष्यत् ७,११,३; ११६८ अग्ने, देवान् इह यज्ञि ।
 मनुष्यत् ८,४३,१३; १३२२ शुचे, त्वा हवामहे ।
 मनुष्यत् ८,४३,२७; १३३६ त्वां जनासः इन्धते ।
 मनुष्यत् १०,७०,८; १९९९ यज्ञं इळां देवी घृत्पदी जुषन्ता ।
 मनुष्यत् १०,११०,८; २०१० चेतयन्ती इह इळा ।
 मनुष्यः न १,५९,४; १७२० दक्षः होता वैश्वानराय प्रायुक् ।
 ममता इव ६,१०,२; ९९४ मतयः ... यं श्रूषं स्तोमं पवंते ।
 मर्मज्ञेन्यः उशिग्भिः न १,१८९,७; ३६७ अग्ने अक्रः त्वं ।
 मर्यं वाजिनं न ८,४३,२५; १३३४ विश्वायुवेपसं हितं ।
 माता इव ५,१५,४; ८६९ पप्रथानः [त्वं] जनंजनं ... भरसे ।
 मित्रम् व शोवम् १,५८,६; ११५ जनेभ्यः सुहवं वरेण्यं दधुः

मित्रः न १,७७,३; २३६ सः [अग्निः] रथीः ... अभूत् ।
 मित्रम् इव १,१४३,७; ३२४ समिधानः अग्निं कृजते ।
 मित्रम् न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं ... क्षिरतेषु ।
 मित्रः इव २,४,१; ४१६ यः जातवेदाः देवः ... भूत् ।
 मित्रं न (क्षेत्रन्तः) २,४,३; ४१८ देवासः क्षेत्रन्तः ।
 मित्रः न ४,६,७, ६८८ ... सुधितः पावकः अग्निः दीदाय ।
 मित्रम् न ५,३,२, ७८० ... सुधितं गोभिः अजन्ति ।
 मित्रम् न ५,१६,१, ८७१ मर्तासः [अग्निः] ... प्रशस्तिभिः ।
 मित्रः न ६,२,१; ९५२ अग्ने, त्वं ... क्षैतवत् यशः पत्यसे ।
 मित्रं न ६,१५,२, १०२४ भृगवः सुधितं यं ... दधुः ।
 मित्रं न ८,२३,८; १२७७ ऋतावाने जने ... सुधितम् ।
 मित्रं न ८,७४,२; १४४३ सर्पिरासुति जनासः ... शसति ।
 मित्रम् इव ८,८४,१; १४५४ प्रिय वः श्रेष्ठं अतिथिं स्तुषे ।
 मित्रम् इव १०,७,५; १५३१ प्रयोगं अग्निं आयवः ।
 मित्रम् न २,२,३; ३८७ देवाः शुक्रशोचिषं क्षितिषु ।
 मित्रः इव २,४,१, ४१६ यः देवः जातवेदाः ... दिधिषायवः ।
 मित्रः न ५,१०,२; ८३६ यज्ञियः त्वं ... क्राणा [भव] ।
 मित्रः न ६,२,१; ९५२ अग्ने, त्वं ... क्षैतवत् यशः ।
 मित्रः न ६,१३,२; १०१३ बृहत्तः ऋतस्य, क्षत्ता असि ।
 मित्रं प्रियं न ६,४८,१; १०९० अमृतं जातवेदसं वयं ... ।
 मित्रं न ८,१०२,१२, १४७४ यातयज्जनं शुष्मिणं . गृणीहि ।
 मित्रः यथा, वरुण, इन्द्रः ३,४,६; १९५८ तथा उवासानक्ते ।
 मित्रासः न १०,११५,७; १६७२ सुधिताः ऋतायवः ।
 मृगाः क्षिपणः ह्यमाणाः इव ४,५८,६; १९०० एते घृतस्य ।
 मेता इव ४,६,२, ६८३ [अग्निः] . धूमं धाम् उप ।
 मेष इव (अथ०) ६,४९,२; २३३८ यत् उत्तरद्वौ उपरः च ।
 यथा ऋतुभिः देवान् देव, १०,७,६, १५३२ एवं, आ यज ।
 यज्ञं प्रजानन् यथा अथ. ४,२३,२; २३३१ एवा देवेभ्यः नः ।
 यथातिवत् १,३१,१७; ६६ अगिर, सद्ने अचठ आ याहि ।
 यवः न पक्क. १,६६,३; १३६ पक्क. यवः इव उपभोग योग्य ।
 यवः वृष्टिः इव २,५,६; ४३० तासां (जुह्वादीनाम्) आगतौ ।
 यवं न ७,३,४, ११२७ दस्य, [त्वं] जुह्वा विवेक्षि ।
 यवसा पुष्यते इव १०,११,५; १५४४ त्वं सदा रणवः असि ।
 यक्षम् न ५,१६,४; ८७४ रोदसी श्रवः तमित् . परि ।
 याता इव १,७०,११, १८४ भीमः अग्निरपि दृष्टमात्रेण ।
 बामन् तूर्वन् न ६,१५,५; १०२७ एतस्य रणे यः ।
 युयुधयः न १०,११५,४; १६६९ रणवासः ऋषिजः सन्ति ।
 युवत्योः [न] १०,३,७; १५०५ दिवस्पृथिव्यो ... अरतिः ।
 युवतयः युवानं अस्मेराः २,३५,४, २४२५ सम्यज्यमानाः ।
 यूथा इव क्षुमति पथः ४,२,१८; ६६४ देवानां यत् ।
 यूयम् न ५,२,४, ७७० अहं क्षुमत् पुरु शोभमानं क्षेत्रात् ।

योधः शत्रून् न १,१४३,५; ३२२ अग्निः वनानि कृजते ।
 योषण अत्रातरः न ४,५,५; १७६२ दुरेवाः पापासः ।
 योषाः समना इव ४,६८,८; १९०२ कल्याण्यः स्मयमानासः ।
 रघवः वाजम् न ४,५,१३; १७७० का मर्यादा, वयुना ।
 रथः न १,५८,३; ११२ देवः विष्णु ... आयुषु कृजमानः ।
 रथः न १,६६,६, १३९ रुक्मी [अग्निः] ।
 रथः शिकभिः कृतः न १,१४१,८, ३१२ यातः (सन्) ।
 रथः न ३,१५,५; ५९२ अग्ने, रुक्मि. त्वं नः वाजं ... ।
 रथः न स्वान ५,१०,५; ८३९ अग्ने, घृणुया अजान्यः ।
 रथः न ८,१९,८, १२३१ [अग्निः] वेधः ।
 रथम् इव १,९४,१, २५६ जातवेदसे मनीषया इमं स्तोमं ।
 रथम् इव २,२,३; ३८७ देवाः तं वेधं अग्निम् . न्येरिरे ।
 रथम् न क्रन्तः ४,२,१४; ६६० सुध्यः आशुषाणाः ।
 रथम् न ५,२,११, ७७७ तुविजात, विप्रः अहं ते एतं ।
 रथम् न ८,८४,१, ११५४ वेधं अग्निं स्तुषे ।
 रथम् न १०,४,६, १५११ शुचयज्ञि. अङ्गैः ... युंक्ष्व ।
 कुलेशः रथं न ३,२,१, १७२७ द्विता होतारं मनुषः ।
 रथम् न ३,२,१५; १७४१ मन्द्रं विश्ववर्षणिं चित्रं ... ह्रीमहे ।
 रथासः एकं नियानं बहवः १०,१४२,५; १६९४ ददश्रे ।
 रथः न १०,१७६,२, १७०९ य अभीवृतः ।
 रथीः इव ४,१५,२, ७५० अग्निः अध्वरं .. परि याति ।
 रथीः इव ८,७५,१; १३७३-अग्नेः . देवहृतमान् युंक्ष्व ।
 रथ्यः यथा १०,९,७, १६५७ अग्ने, यक्षतः ते अजराणि ।
 रथी पतीन् इव अयवं ७,६२,१; २३७३ अग्निः अजयत् ।
 रथ्या इव २,४,६, ४२१ [अग्निः] ... स्वानीत् ।
 रथिः न १,६६,१, १३४ [अग्निः] चित्रः ।
 रथिः पितृवित्तः इव १,७३,१ २०५ यः [अग्निः] वयोधाः ।
 रथिः न देवतातये १,१२७,९, २८० अग्ने, शुष्मिन्तमः ।
 रथिः इव १,१२८,१; २८३ अग्निः श्रवस्थते ... [भवति] ।
 रथिः यथा वीरवतः ७,१५,५; ११८१ [तथा] यस्य श्रियः ।
 रथिं चारुं न १,५८,६; ११५ [अग्ने] भृगवः त्वा आदधुः ।
 रथिम् इव १,६०,१, ११९ प्रशस्त [अग्निः] मातरिश्वा भरत ।
 रथिं न १,१४१,११, ३१५ अस्मे स्वयं दमूनसं ... पृच्छामि ।
 रथमयः ध्रुवासः सूर्ये न १,५९,३; १७१९ वैश्वानरे अग्ना ।
 रथमीन् यमति इव १,१४१,११; ३१५ सः उभे जन्मनी ।
 रथमीन् सारथिः वोळ्हुः १,१४४,३; ३३८ हव्य सारथिः ।
 राजा इम्यान् न १,६५,७; १३० [अग्निः] वनानि .. अस्ति ।
 राजा अजुर्वम् इव १,६७,१; १४४ मित्रः [अग्निः] . . ।
 राजा हितमित्रः न १,७३,३; २०७ [यः अग्निः] ... उपेक्षति ।
 राजा इव ६,४,४; ९७४ अश्वके क्षेत्रन्त जेः ।
 राजा न ६,९,१; १७८७ जायमानः अग्निः ... उयोतिचा ।

राजा अमवान् इथेन इव ४,४,१, १८१३ [अग्ने, त्वं याहि।]
 राजानम् विशाः इव ६,८,४; १७८३ ... [स्रोतारः ।]
 रुक्मः न ४,१०,५; ७२४ अग्ने, स्वादिष्टा तव संदष्टिः ।
 रुक्मः न ४ १०,६; ७२५ स्वधाव., ते शुचि हिरण्यं रोञ्चने ।
 रुक्मः न ७,३,६, ११२९ स्वर्नाक, यत्...उपाके ।
 रेभः न ६,३,६, २६८ सः [अग्निः]...उस्त्रा. प्रति वस्ते ।
 रेभः (ऋषूणा अग्ने) न १,१२७,१०, २८१ ऋषूणां [मध्ये] ।
 वन्दना वृक्षम् इव (अथ०) ७,११५,२; २२०२ या पतयाल्लः ।
 वंसग (यूथे साह्वान्) न १,५८,५, ११४ तपुर्जम्भः वाति ।
 वंसग तिगमश्रुतः न ६,१६,३९, १०८० अग्ने, त्वं... ।
 वस्त. [इव] ८,७२,५, १४२८ चरन् रुशन् इह निदातारं ।
 वस्ताम. मातृभि न ८,७२,१४, १४३७ जामिभि नसना ।
 वना इव १,१२७,३, २७४ यस्य [अग्नेः] समृतौ वीळु ।
 वना इव १,१२७,४, २७५ यः [अग्निः] पुरुणि . गाहते ।
 वनिनः वयाः न ६,१३,१, १०१२ अग्ने, त्वत् विश्वा ।
 वनिनं न ६,८,५; १७८४ अजर, अघशंस नीचा... वृश्च ।
 वनेराट् [न] ६,१२,३; १००८ यस्य [अग्नेः] अरतिः ।
 वप्ता इव १०,१४२,४, १६९३ यदा वातः ते शोचि. ।
 वयाः इव २,५,४; ४२८ अस्य [अग्नेः] ध्रुवाव्रता विद्वान् ।
 वयाम् प्र उज्जिहानाः इव ५,१,१, ७५५ अस्य यद्वाः ।
 वयाः (उपक्षितः) इव ८,१९,३३, १२५६ अग्ने, अन्धे ।
 वयाः इव ६,७,६; १७७८ सप्त विष्णुहः...वैश्वानरस्य ।
 वयथाः इव २,३,६; १९४७ उपासानके .रण्वते तत ।
 वरुणः यथा १०,११,१, १५४० सः [अग्निः] धिया वेद ।
 वरुणः न १,१४३,४; ३२१ य. एकः वस्त्रः [अग्निः]... ।
 वर्म स्थूत इव १,३१,१५, ६४ अग्ने, त्व नरं पासि ।
 वर्म युसु इव १,१४१,१०; ३०१ [त्व] परिजसुराणः भव ।
 वसुम् न १०,१२२,१, १६७५ चित्रमहस [अग्निम्] गृणीषे ।
 वस्त्रेण इव १,१४०,१, २६२ योनि [योनिस्थानं]... ।
 वाह्मिन् न १०,११५,३; १६६८ आसा .. [हवि] बहतां ।
 वाजयन् इव २,८,१, ३९७ यशसामस्य मीळहुवः अग्नेः ।
 वाजयु. न ५,१०,५, ८३९ अग्ने धृष्णुया आजनय यति ।
 वाजी न १,६६,४; १३७ [अग्निः] प्रीतः [अस्ति] ।
 वाजी न प्रीतः १,६९,५, १६८ [अग्निः] विशाः ..वितारीत् ।
 वाजी न सर्गेषु प्रस्तुमान ४,३,१२; ६७७ अग्ने, मधुमद्भिः ।
 वाजिन. न ४,६,५, ६८६ अस्य [अग्नेः] शोकाः .. द्रवंति ।
 वाजी सन् (इव) ४,१५,१, ७४२ होता अग्निः न. अध्वरे ।
 वाजी न ६,२,८; ९५९ अग्ने, [त्वं] .. कृ-व्यः ।
 वाजी अरुवः न ४,५८,७; १९०१ घृतस्य धाराः...भवति ।
 वातः इव १,७९,१; २४४ हिरण्यकेशः अहिः धुनि. .. ।
 वाताः न १०,११५,४; १६६९ यक्षोः अच्युताः [प्रभावाः] ।

वायुः न ६,४,५, ९७५ राष्ट्री...अकतून् अयेति ।
 वायुं न ६,४,७, ९७७ शवसा...त्वा नृतमाः पृणति ।
 वायु पाथः न ७,५,७, १८०० परमे व्योमन् जायमानः ।
 वार् न २,४,६, ४२१ य. अग्निः ... पथा [गच्छति] ।
 वार् इव ४,५,८; १७६८ उस्त्रियाणां यत् ...अप व्रन् ।
 वेः न ६,३,५; ९६७ अग्निः...रघुवर्मजहाः दुषद्वा ।
 विं न १०,११५,३; १६६८ दुषदं देवम् अग्निम् ।
 विदे यथा [ददति] १,१२७,४, २७५ अर्यै दृढहा चित् दुः ।
 विद्युतः न ३,१,१४; ४६० शुक्रा. बृहन्तः भानवः सचंत ।
 विद्युतः परिजमान न ५,१०,५; ८३९ अग्ने, धृष्णुया ।
 विद्युत् न ६,३,८; ९७० यः [अग्निः] स्वेभि. शुष्मैः ... ।
 विद्युतः वयस्य इव १०,९१,५; १६५५ चिकित्र, श्रियः संति ।
 विपः न ८,१९,३३; १२५६ तव क्षत्राणि वर्धयन् ।
 विप्रं (जातवेदसं) न १,१२७,१, २७२ होता अग्निं मन्ये ।
 विप्रं न ६,१५,४, १०२२ युक्षवचसं हव्यवाहं... कंजसे ।
 विप्रः न ८,४४,२९; १३७१ अग्ने, ...सदा जागृविः अस्ति ।
 विप्रतिः रेवान् इव १,२७,१२; ४९ सः अग्निः शृगोतु ।
 विप्रतिः जेन्य. न १,१२८,७; २८९ अग्निः यज्ञेषु ।
 विश्वः विश्वाम् न १,७०,४; १७७ अमृतः अग्निः ... ।
 वीराः शर्मसदः न १,७३,३, २०७ [यस्य अग्नेः] पुरः वर्तते ।
 वृजनं न ६,११,६; १००५ वावसानाः [वयं] ... सस्तेम ।
 वृषभस्य इव १,९४,१०; २६५ अग्ने, ते रवः अस्ति ... ।
 वृषभ शृगे शिषानः यथा ८,६०,१३; १४०१ [तया] अग्निः ।
 वृषभ. न १०,४,५; १५१० अस्त्राता. अपः प्र वेति ।
 वृषा इव १,१४०,६; २९७ अग्निः (नमन्)...रोरुवत् ।
 वृषा इनः प्रोयमानः यवसे न १०,११५,२; १६६७ अभि ।
 वेधसे न ३,१०,५, ५१३ विषां ज्योतीषि विजने...अरत ।
 व्याघ्र गोमतां इव (अथ०) ४,३६,६, २३०० [अहम्] ।
 शमिता न देवः [वा० य०] २०,४५; २०२३ वनस्पतिः ।
 शर्धः मारुत न १,१२७,६, २७७ [अग्निः] तुविश्वणिः ।
 शर्धः मारुतं न ४,६,१०, ६९१ ते स्वेवारा; अर्चयः ... ।
 शर्म सूतवे वीळु न १,१२७,५; २७६ अस्य आयुः अभूत् ।
 शर्यहा इव ६,१६,३९, १०८० त्वम् उग्रः [असि] ।
 शर्यहा उग्र इव (वा) त्वं शत्रूणां पुरः हरोजिध ।
 शामु. चिकितुषः न १,७३,१; २०५ यः [अग्निः] ।
 शिवाभि. स्त्रयमानाः १,७९,२, २४५ [अग्निः विद्युद्भिः] ।
 शिशुं नव यथा ५,९,३; ८३० यम् अग्निं .अरणी जनिष्ट ।
 शिशु जातं न ६,१६,४०, १०८१ अग्निम् हस्ते आ ।
 शिशुं न १०,४,३; १५०८ माता जेन्यं त्वा...वर्धयन्ती ।
 शिशुं न ६,७,४, १७७६ जायमानं त्वा...विश्वे देवाः नवंते ।
 शिशुं मातरा न ७,२,५; १९७८ पूर्वा रिहाणे ..समनेषु ।

शूरः इव १०,६९,५; १६२९ धृष्णुः चयवनः अग्निः ।
 शूरः इव १०,६९,६; १६३० धृष्णुः चयवनः जनानाम् ।
 शूरस्य त्वेषयात् वयः इव १,१४१,८; ३१२ त्वेषयात् अग्नेः ।
 शूरस्य प्रसितिः इव ६,६,५, ९९० अग्ने क्षातिः .. दुर्वतु ।
 शुरुथः हेषस्वतः न ६,३,३; ९६५ अयं वनेजाः अक्तोः ।
 शोवः जने न १,६९,४; १६७ अग्निः... मध्ये आहूयः ।
 इयेनाय दिवः ७,१५,४; ११८० अग्ने नवं ज्योमम् ।
 इयेनासः न ४,६,१०, ६९१ त्वेषासः ते अर्चयः .. गच्छन्ति ।
 श्रुष्टीवानः न १,१२७,९; २८० अजरः ते .. परिचरन्ति ।
 श्वेतः न १,६६,६; १३९ यत् अन्नात् तदा... (श्वेतः आदित्यः ।
 संवयन्ती तत् तन्तुं पेशसा वा० य० २०,४१; २०१९ देवानां ।
 संसद् पितुमती इव ४,१८; ७३४ अग्निः सदा रणवः ।
 सखा सख्ये यथा १,२६,३; ३० तथा अग्ने मष्टं अभीष्टं देहि ।
 सखा सख्ये इव ३,१८,१; ६०५ अग्ने उपेतौ नः ... भव ।
 सचा सन् सहीयसे राज्ञे १,७१,४; १८८ भृगवाणः ईम् ।
 सत्याः यशस्वती. अपस्युव. १,७९,१, २४४ उषसः नवेदाः ।
 ससिम् न ३,२२,१; ६२३ जातवेदः सहस्रिणं अत्यम्. . ।
 संसि न ८,४३,२५, १३३४ सुवेपसं अग्निः . वाजयामसि ।
 ससय. इव १०,१४२,२; १६९१ नः धियः... सनिषंत ।
 सद्धम इव १,६७,१०; १५३ धीराः [अग्निः] .. संमाय चक्रुः ।
 समनम् पृथिव्यां अग्नये (अथ०) ४,३९,४; २२८० एवं मष्टं ।
 समिधा जातवेदः इधमेन अथ० १९,३४,२; २३५२ तथा त्वं ।
 सरजन्तम् न १०,११५,३; १६६८ अध्वनः [राजयन्तम्] ।
 सरितः धेनाः व ४,५८,६; १९०० घृतस्य धाराः .. स्रवन्ति ।
 सवातरौ तेजसा (वा० य०) २८,६; २०८९ सुदुधे मही ।
 सविता देवः न १,७३,२; २०६ [यः अग्निः] सत्य० ।
 सविता इव ४,६,२; ६८३ [अग्निः] भानुं.. ऊर्ध्व ।
 सवितुः यथा सवम् ८,१०२,६; १४६८ अग्निं आहुवे ।
 सविता बाहू इव १,९५,७; १८७४ औषसः अग्निः... ।
 ससं पक्वं न १०,७९,३; १६३९ शुचन्तं रिपः उपस्थे अविदत् ।
 सस्रवांसम् इव ३,९,५, ५०४ इत्यात्मना तिरोहितं अग्निं ।
 साची इव १०,१४२,२; १६९१... अग्ने, त्वं विश्वा न्यृजंसे ।
 साधुः न १,७०,११; १८४ [अग्निः] ... गृधुः ।
 सारथिः वोळ्हुः रश्मीज १,१४४,३; ३२८ हव्यः सारथिः ।
 सिंहम् इव ३,९,४; ५०३ अद्भुतः निचिरासः स्निधः ।
 सिंहं कुर्वं न [मृगाः] ५,१५,३; ८६८ शत्रवः मां परिष्टुः ।
 सिंहं नानन्दत् ३,२,११, १७३७ प्रजज्ञिवान् वृषासः जिन्वते ।
 सिंहं श्वानः (अथ०) ४,३६,६; २३०० ते [पिशाचः] ।
 सिञ्जतीः इव १०,२१,३; १५८३ धर्माणः जुहूभिः... ।
 सिन्धवः नीचीः न १,७२,१०, २०४ अग्नेः सृष्टाः क्षरन्ति ।
 सिन्धवः समुद्राय इव ८,४४,२५; १३६७ अग्ने गिरः ईरते ।

सिन्धोः इव ४,५८,७; १९०१ प्राध्वने शूधनासः ।
 सिन्धवः (भास्वक्षसः) १,१४३,३; ३२० भास्वक्षसः ।
 सनुः न नित्यः १,६६,१; १३४ (ध्रुव पुत्रः इव प्रियकारी ।)
 सनुः न ६,२,७, ९५८ [अग्ने, त्व]... त्रययायः ।
 सूरः न १,६६,१; १३४ [अग्निः] संहक् ।
 सूरः मिहं न १,१४३,१३; ३१७ अभीचवसं च अग्निं.. ।
 सूरः न १,१४९,३; ३५५ अयं अग्निं रुक्कान् शतात्मा ।
 सूर न ६,२,६; ९५७ पावक, त्वं द्युता रोचसे ।
 सूरः न ६,३,३; ९६५ यस्य दशतिः .. अरेपा ।
 सूरः न ७,३,६; ११२९ .. चित्रं भानुं प्रति चक्षि ।
 सूर्यः न ६,४,३, ९७३ शुक्रः भासासि वस्ते ।
 सूर्यः भानुमज्जि अकै. न ६,४,६, ९७६ अग्ने, त्वं भासा ।
 सूर्यं न ६,१२,१; १००६ सः अयं सहसः सनु ततान् ।
 सूर्यः न ७,८,४; ११५२ बृहज्जाः अग्निः... विरोचते ।
 सूर्यः सृजन् न ८,४३,३२, १३४१ अग्ने त्वं... रश्मिभिः ।
 सूर्यः इव ८,१०२,१५, १४७७ अस्य [अग्नेः] उपहक् ।
 सूर्यः इव १०,६९,२; १६२६ सर्पिरासुतिः.. रोचते ।
 सूर्यस्य इव १०,९१,४; १६५४ चिकित्र ते रश्मयः... ।
 सूर्यं चक्ष्वि इव ५,१,४, ७५८ देवयतां मनामि अग्निं ।
 सूर्यं चक्षुः न ६,११,५; १००४ यज्ञः अश्रायि ।
 सूर्यस्य दिवि शुक्र यजतमिव १०,७,३, १५२९ नृहतः ।
 सृष्टा सेना इव १,६६,७; १४० [अग्निः] अयं दधाति ।
 सृष्टा सेना इव १,१४३,५; ३२२ य अग्निं वराय न ।
 सृष्टा सेना इव ७,३,४; ११२७ ते [अग्नेः] प्रसितिः एति ।
 सेना प्रगधिनी इव १०,१४२,४; १६९३ पृथक् एषि ।
 सोमाः इव ५,२७,५, ९३२ वपसत् यासि ।
 सोमा. न १०,४६,७; १६०७ वायवः अग्नयः ।
 सोम चम्वि इव १०,९१,१५; १६६५ अग्ने ते भास्ये ।
 सोमः इव ६,८,१, १७८ वैश्वानराय अग्नये नव्यसी पवते ।
 सोमः न १,६५,१०; १३३ अग्निः .. वेधाः ।
 सोमस्य अंशुः इव (अथ०) ५,२९,१२, २३१६ अयं ।
 स्थूणा उपमित् इव १,५९,१; १७१७ अग्ने त्वं उपमित् ।
 सप्त यज्ञीः स्रवतः समुद्रं न १,७१,७; १९१ विश्वाः पृक्षाः ।
 स्वधितिः इव ५,७,८; ८१८ शुचिः एम यस्मै [अग्नये] ।
 स्वधितिः पूता इव ७,३,९; ११३२ शुचिः [अग्निः] निरगात् ।
 स्वधितिं न ३,२,१०, १७३६ इषः मानुषीः विशां अकृण्वन् ।
 स्वनः मरुतां इव १,१४३,५; ३२२ यः [अग्निः] वराय ।
 स्वनाः न १०,३,५, १५०३ यस्य भामासः ... पवन्ते ।
 स्वर चित्रं विभावं न १,१४८,१; ३४८ यं मनुष्यासु विक्षु ।
 स्वरं न २,२,७; ३९१ अग्ने, द्यावापृथिवी .. ब्रह्मणा कृधि ।
 स्वरं न २,२,८; ३९२ सः [अग्निः] राम्याः उषसः दीदेत् ।

स्वरं न २,२,१०, ३९४ अस्माकं पञ्च कृष्टिषु अधि ।
स्वरं भानुना न २,८,४, ४०० चित्रः अग्नि ... विभाति ।
स्वरं न ४,१०,३; ७९२ ज्योतिः ।
स्वरं न ७,१०,२, ११६२ उषमां [अग्ने] वस्त्रो... अरोचि ।
स्वरः न ४,६,३; ६८४ नवजाः स्वरः ... उदु अक्रः ।
हंसः न सीदन् १,६५,९; १३२ [अग्निः] अप्सु इवसिति ।

हनवः न ८,६०,३३, १४०१ अस्य [ज्वालाः] तिरमाः ।
हस्तिनं मशकाः इव ४,३६,९; अथ० २३०३ ये लपिताः ।
हव्यं यथा वहसि ४,२३,२, अथ० २३३१ पुत्र जातवेदः ।
होता इव १,७३,१, २०५ ग्रीणानः [अग्निः] विघतः रुभ ।
ह्वारः अनाकृतः वक्रः १,१४१,७; ३११ यद् [अयं अग्निः] ।
ह्वार्याणां पुत्रः न ५,९,४, ८३१ ... [अग्ने त्व दुर्गभीषसे ।]

दैवत-संहितान्तर्गत-अग्निमंत्राणां सूची ।

अंहोयुवस्तन्वस्तन्वते	८६८	अग्निं विश्वा अभि पृक्षः	१९१	अग्निमीलेन्यं कविं	८६४
अक्रमे ते स्वपमो अभूम	६६५	अग्निं विश्वायुवेपसं	१३३४	अग्निमीले पुरोहितं	१
अकारि ब्रह्म समिधान	६९२	अग्निं वो देवमग्निभिः	११२४	अग्निमीले भुजां	१५७२
अक्रन्ददग्निः स्तनयन्निव	१५९२	अग्निं वो देवयज्यया	१४२०	अग्निमुक्थैर्ऋषयो	१६४८
अक्रो न बग्निः सामिधे	४५८	अग्निं वो वृधन्तम्	१४६९	अग्निरग्निं भरद्वाजं	१७०२
अक्षानहो नह्यतनोत	१६२०	अग्निं सुदीतिं सुहसं	६०३	अग्निरप्तामृतीषहं	१०२१
अक्षयौ३ नि विध्य	२३०८	अग्निं सुभनाय दधिरे	१७३१	अग्निरस्मि जन्मना	१७५६
अगन्म महा नमसा यविष्ठं	११७१	अग्निं सूनु सनश्रुतं	५२१	अग्निराग्नीध्रात् सुष्टुभः	२३४१
अग्न आ याहि वीतये	१०५१	अग्निं सूनु सहसो	१४१९	अग्निरिद्धि प्रचेता	१०१९
अग्न आ याह्यग्निभिः	१३८९	अग्निं स्तोमेन बोधय	८६०	अग्निरिषां सख्ये	१४२१
अग्न इन्द्रश्च दाशुषो दुरोणे	५३५	अग्निं हिन्वन्तु नो धियः	१७०३	अग्निरीशे बृहतः अत्रियस्य	७३६
अग्न इळा समिध्यसे	५२८	अग्निं होतारं प्र वृणे मियधे	६१०	अग्निरीशे बृहतो अध्वरस्य	११६९
अग्न ओजिष्ठमा भर	८३५	अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं	२७२	अग्निर्जातो अथर्वणा	१५८५
अग्नये ब्रह्म ऋभव.	१६५०	अग्निं होतारमीळते वसुधितिं	२९०	अग्निर्जातो अरोचत	८६३
अग्ना यो मर्त्यो दुवो	१०१८	अग्निः परेषु धामसु	२१८३	अग्निर्जाता देवानामग्निः	१३०५
अग्नावग्निश्चरति	२२८२	अग्निः पूर्वं आ रभतां	२२८७	अग्निर्जुषत नो गिरो	८५६
अग्नाविष्णू महि तद्धां	२४५३	अग्निः पूर्वैर्भिर्ऋषिभिः	२	अग्निर्देवाति सत्पतिं	९१६
अग्नाविष्णू महि धाम	२४५४	अग्निः प्रत्नेन मन्मना	१३५४	अग्निर्दाद् द्वविणं	१६४७
अग्निं घर्मं सुरुचं	१८६७	अग्निः प्राणान्सं दधाति	२३४४	अग्निर्देवेभिर्मनुष्यश्च	१७४७
अग्निं घृतेन वावृष्टः	८६५	अग्निः प्रातःसवने	२३७२	अग्निर्देवेषु राजति	२१४
अग्निं च हव्यवाहनम्	४१५	अग्निः शुचिब्रततमः	१३६३	अग्निर्देवेषु संवसुः	१३०६
अग्निं तं मन्ये यो वसु	८०१	अग्निः सनोति वीर्याणि	५३३	अग्निर्देवो देवानाम्	१७०१
अग्निं दूतं पुरो दधे	१३४५	अग्निः ससिं वाजंभरं	१६४४	अग्निर्द्यावापृथिवी विश्वजन्ये	५३४
अग्निं दूतं वृणीमहे	१०	अग्निः सूर्यश्चन्द्रमा	२१६८	अग्निर्धिया स चेतति	५२०
अग्निं देवासो अग्निमम्	१०८९	अग्निः सुवो अध्वरेषु	२०७६	अग्निर्न. शत्रून् प्रत्येतु	२१५२
अग्निं देवासो मातुषीषु	४१८	अग्निनाग्निः समिध्वते	१५	अग्निर्नेता भग इव	६१७
अग्निं द्वेषो योतवै	१४२३	अग्निना तुर्वशं यदुं	८३	अग्निर्नो दूत. प्रत्येतु	२१५६
अग्निं धीभिर्मनीषिणो	१३२८	अग्निना रथिमश्ववत्	३	अग्निर्नो यज्ञमुप वेतु	८४५
अग्निं नरो दीधितिभिः	११००	अग्निमग्निं वः समिधा	१०२८	अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्	१३५८
अग्निं मन्द्रं पुरुप्रियं	१३४०	अग्निमग्निं वो अग्निगुं	१४०५	अग्निर्वनस्पतीनाम्	२१६६
अग्निं मन्ये पितरमग्निम्	१५२९	अग्निमग्निं हवीमभिः	११	अग्निर्वज्रे सुवीर्यम्	८२
अग्निं यन्तुरमप्सुरम्	५४७	अग्निमच्छा देवयतां	७५८	अग्निर्वृत्राणि जङ्घनद्	१०७५
अग्निं वः पूर्य हुवे	१२७६	अग्निमस्तोष्युग्मियम्	१३००	अग्निर्ह त्वं जरतः	१६४६
अग्निं वर्धन्तु नो गिरो	५१४	अग्निमिन्धानो मनसा	१४८४	अग्निर्ह नाम धायि	१६६७
अग्निं विश द्रैळते	१६४९	अग्निमीळिष्वावसे	१४२२		

अग्निर्हि वाजिनं विशे	८०३	अग्ने त्वं नो अन्तम उत	९०७	अग्ने युक्ष्वा हि ये तव	१०८४
अग्निर्हि विष्मना निदो	१०२२	अग्ने त्वं पारया नव्यो	३६२	अग्ने रक्षाणो अंहसः	११८९
अग्निर्होता कविक्रतुः	५	अग्ने त्व यशा असि	१२९२	अग्नेरमलः समिदस्तु	१६४५
अग्निर्होता गृहपतिः	१०३५	अग्ने त्वचं यातुधानस्य	१८३२	अग्नेरिन्द्रस्य सोमस्य	४०२
अग्निर्होता दास्वतः	८२९	अग्ने त्वमस्मद् युयोध्य	३६३	अग्नेर्मन्वे प्रथमस्य	२३३०
अग्निर्होता नो अध्वरे	७४९	अग्ने दा दाशुषे रथि	५३१	अग्नेर्वयं प्रथमस्यामृतानां	२७
अग्निर्होता न्यसीदद्	७६०	अग्ने दिवः सूनुरसि	५३२	अग्नेर्वर्मं परि गोभिः	१५६३
अग्निर्होता पुरोहितो	५१८	अग्ने दिवो अर्णमच्छा	६२५	अग्ने वाजस्य गोमत	२४७
अग्निष्टे नि शमयतु	२१८७	अग्ने देवा इहा वह जज्ञानो	१२	अग्ने विधस्वदुषसः	८६
अग्निस्तिग्मेन शोचिषा	१०६९	अग्ने देवा इहा वह सादया	२२	अग्ने विश्वानि वार्या	५२६
अग्निस्तुविश्रवस्तमं	९१५	अग्ने युञ्जेन जागृवे	५२९	अग्ने विश्वेभिः स्वनीक	१०३८
अग्निस्त्रीणि त्रिधातुनि	१३०८	अग्ने धृतव्रताय ते	१३६७	अग्ने विश्वेभिरग्निभिः	५३०
अग्नी रक्षांसि सेधति	११८६	अग्ने नक्षत्रमजरम्	१७०६	अग्ने विश्वेभिरा गहि	९२३
अग्नीषोमा चेति तद्	२४६८	अग्ने नय सुपथा राये	३६१	अग्ने वीहि पुरोळाशम्	५५४
अग्नीषोमा पिष्टतम्	२४७६	अग्ने नि पाहि नस्त्वं	१३५३	अग्ने वीहि हविषा यक्षि	१२०६
अग्नीषोमा य आहुतिं	२४६७	अग्ने नेमिरां इव	८५९	अग्ने वृधान आहुतिं	५५७
अग्नीषोमा यो अद्य	२४६६	अग्ने पत्नीरिहा वह	२४	अग्ने शकेम ते वयं	५३९
अग्नीषोमावनेन वां	२४७४	अग्ने पावक रोचिषा	९२०	अग्ने शर्धं महते सौभगाय	९३५
अग्नीषोमाविमं सु मे	२४६५	अग्ने पूर्वा अनुषसो	९५	अग्ने शुक्रेण शोचिषा उरु	१५८८
अग्नीषोमाविमानि नो	२४७५	अग्ने प्रेहि प्रथमो	२२२१	अग्ने शुक्रेण शोचिषा विश्वामि	२१
अग्नीषोमा सवेदसा	२४७३	अग्ने बृहन्नुषसामूर्ध्वो	१४८५	अग्ने स क्षेषदत्तपा	९६३
अग्नीषोमा हविषः	२४७१	अग्ने भव सुषमिधा	१२०४	अग्ने समिधमाहार्ध	२३५१
अग्नेः सांतपनस्याहं	२३९१	अग्ने भूरीणि तव जातवेदो	६१६	अग्ने सहन्तमा भर	९०३
अग्नेः स्तोमं मनामहे	८५५	अग्ने आतः सहस्कृत	१३२५	अग्ने सहस्व पृतना	५२७
अग्ने अक्रव्याजिः	२२५५	अग्ने मन्मानि तुभ्यं कं	१३०२	अग्ने सुखतमे रथे	१९०९
अग्ने अपां समिध्यसे	५३६	अग्ने माकिष्टे देवस्य	१४१६	अग्ने स्तोमं जुषस्व	१३४४
अग्ने कदा त आनुषग्	६९४	अग्ने मृळ महौ असि	७१२	अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय यज्ञ०)	२०८३
अग्ने कविर्वेधा असि	१३९१	अग्ने य यज्ञमध्वरं	४	अग्ने स्वाहा० (इन्द्राय हव्य०)	२०७१
अग्ने केतुर्विशामसि	१७०७	अग्ने यजस्व हविषा	४०६	अग्ने हंसि न्यःत्रिणं	१८५३
अग्ने घृतस्य धीतिभिः	१४७८	अग्ने यजिष्ठो अध्वरे	५१५	अघशंसदुःशंसाभ्यां	२२३०
अग्ने चिकिद्ध्यस्य न	९०२	अग्ने यत् ते तपस्तेन	२१४४	अचिक्रदत् स्वपा इह	२१५९
अग्ने जरस्व स्वपत्य	१७४८	अग्ने यत् ते तेजस्तेजः	२१४८	अचेत्यग्निश्चिकितु	२४५५
अग्ने जरतिर्विशपति.	१४०७	अग्ने यत् ते दिवि वर्चः	६२४	अच्छ त्वा यन्तु हविनः	२१६०
अग्ने जातान् प्र णुदा	२१९३	अग्ने यत् तेऽचिस्तेन	२१४६	अच्छा गिरो मतयो	११६३
अग्ने जुषस्व नो हविः	५५२	अग्ने यत् ते ओचिस्तेन	२१४७	अच्छा न. शीरशोचिपं	१४१८
अग्ने जुषस्व प्रति हर्य	३३२	अग्ने यत् ते हरस्तेन	२१४५	अच्छा नो मिश्रमहो	१२७९
अग्ने तमद्याश्वं न स्तोमैः	७२०	अग्ने यदद्य विशो	१०३६	अच्छा नो मिश्रमहो	९६२
अग्ने तव त्वे अजर	१२८०	अग्ने याहि दूष्यमा	११५९	अच्छा नो याह्या वह	१०८५
अग्ने तव श्रवो वयो	१६८४	अग्ने याहि सुशस्तिभिः	१२७५	अच्छायमेति शवसा वता	२०७५
अग्ने तृतीये सवने हि	५५६				
अग्ने त्री ते वाजिना त्री	६१५				

अच्छायमेति शवसा घृतेन	२०६३	अथा यथा नः पितरः	६६२	अप्स्वग्ने सधिष्टव	१३१८
अच्छा वो अग्निमवसे	९११	अथाद्यग्निर्मानुषीषु	४७२	अबोधि जार उषसाम्	११५५
अच्छा वोवेय शुशुचानम्	६४५	अथा इ यद्वयमग्ने	६६०	अबोधि होता यजथाय	७५६
अच्छा हि त्वा सहसः	१३९०	अथा हि विक्षीढ्यो	९५८	अबोध्यग्निः समिधा	७५५
अच्छिद्रा शर्म जरितः	५९२	अथा होता न्यसीदो	९४०	अभि तं निर्वृतिर्धत्ताम्	२३०४
अच्छिद्रा सूनो सहसो	११७	अथा ह्यग्न एषां	८७४	अभि त्वा गोतमा गिरा	२३९
अजमनजिम पयसा	२२२२	अथा ह्यग्ने क्रतोर्भद्रस्य	७२१	अभि त्वा नक्तीरुषसो	३८६
अजीजनन्नमृतं मर्त्यासो	५७०	अथा ह्यग्ने मह्ना	१५२६	अभि त्वा पूर्वपीतये	२४४६
अजैदग्निरसनद्वाजं	२१४०	अधि श्रियं नि दधुश्चासुम्	२०४	अभि द्विजन्मा त्रिवृदन्नम्	२९३
अजो न क्षां दाधार	१४८	अधीवासं परि मातू	३००	अभि द्विजन्मा त्री रोचनानि	३५६
अजो भागस्तपसा	१५६०	अधुश्चत् पिप्युषीमिषम्	१४३९	अभि प्रयांसि वाहसा	५२४
अजो ह्यग्नेरजनिष्ट	२२१७	अध्वर्युभिः पञ्चभिः सप्त	४९६	अभि प्रयांसि सुधितानि	१०३७
अत उ त्वा पितुभृतो	१४८८	अनङ्वाहं प्लवमन्वारभध्वं	२२६१	अभि प्रवन्त समनेव	१९०२
अति तृष्टं ववक्षिथ	५०२	अनस्वन्ता सप्ततिर्मांमहे	९२८	अभी नो अग्न उक्थमिज्	३०४
अतिथि मानुषाणां	१२९४	अनाष्टव्यो जातवेदा	१८६६; २२२६	अभीमृतस्य दोहना अनुषत	३२७
अति निहो अति सिधां	२३२३	अनायतो अनिबद्धः	७४४	अभ्यर्षत सुष्टुतिं	१९०४
अत्या वृधन् रीहिता	६४९	अनिरेण वचसा	१७७१	अभ्यवस्थाः प्र जायन्ते	८८६
अत्यो नाजमन्सर्गप्रतक्तः	१२९	अनृणा अस्मिन्ननृणाः	२३८०	अभ्यारमिदद्रयो	१४३४
अत्रिमनु स्वराज्यम्	४०१	अन्तरा मित्रावरुणा	२१११	अभ्रातरो न योषणो	१७६२
अथा ते अङ्गिरस्तम	२२५	अन्तरिक्षेण पतति	२४६१	अमन्थिष्टां भारता रेवदग्निं	६२८
अथा न उभयेषाम्	३६	अन्तरिक्षान्ति तं जने	१४२६	अमित्रसेनां मघवन्	२१५४
अदब्धस्य स्वधावतो	१३६२	अन्तर्द्वतो रोदसी दसम्	१७४३	अमित्रायुधो मरुतामिव	५७२
अदब्धेभिस्तव गोपाभि	१७८६	अन्तर्धिर्देवानां	२२५७	अमूरः कविरदितिर्विवस्वान्	११५७
अदार्शि गातुवित्तमो	१२५७	अन्तर्ह्यग्न ईयसे	४३९	अमूरो होतान्यसादि	६८३
अदाभ्यः पुरस्ता	५२२	अन्ति चित् सन्तमह	१२१७	अमृतं जातवेदसं	१४४६
अदाभ्येन शोचिषा	१८५९	अन्यमस्मज्जिया इयम्	१३८५	अयं कविरकविषु	११३७
अदिद्युतस्वपाको विभावा	१००३	अन्येभ्यस्त्वा पुरुषेभ्यो	२२४२	अयं जायत मनुषो	२८३
अद्याग्ने अद्य सवितरद्य	२१६२	अन्वग्निरुषसामग्रम्	२३२७	अयं ते योनिर्ऋत्विच्यो	५६७
अद्या दूतं वृणीमहे	८८	अप नः शोशुचदधम्	१८८७	अयं मित्रस्य वरुणस्य	२६७
अद्रोघमा वहोशतो	१३९२	अपमित्यमप्रतीत्तं	२३७८	अयं यः सृजये पुरो	७५२
अद्रौ चिदस्मा अन्तर्दुरोणे	१७७	अपश्चा दग्धानस्य	२२७३	अयं यथा न आभुवत्	१४७०
अध जिह्वा पापतीति	९९०	अपश्यमस्य महतो	१६३७	अयं योनिश्चक्रमा यं	६६७
अध त्वं द्रप्सं विभ्रं	१५४३	अपाभिदं न्ययनं	१६९६	अयं विश्वा अभि श्रियो	१४७१
अध द्युतानः पित्रोः	१७६७	अपासुपस्थे महिषा	१७८३	अयं स यस्य शर्मन्	१५२०
अध स्म यस्यार्चयः	८३२	अपावृत्त्य गार्हपत्यात्	२२४७	अयं स होता यो द्विजन्मा	३५७
अध स्मास्य पनयन्ति	१०१०	अपां गर्भं दर्शतमोषधीनां	४५९	अयं सो अग्निराहुतः	१११५
अध स्वनादुतं बिभ्युः	२६६	अपां नपादा ह्यस्याद्	२४३०	अयं सो अग्निर्यस्मिन्सोमं	६२३
अधा त्वं हि नस्क्रुरो	१४५९	अपां मा पाने यतमो	२३१२	अयं होता प्रथमः	१७९०
अधा सही न आयसि	११९०	अप्रयुच्छन्नप्रयुच्छन्निरग्ने	३२५	अयस्त्रियो हतवर्चा	२२५०
अधा मातुरुषसः सप्त	६६१	अप्सरसः सधमादं	२३६७	अयमग्निः सत्पतिः	२३७३

अयमग्निः सहास्त्रिणी	१३७६	अश्वं न गीर्भी रथं	१२६३	अस्य रणवा स्त्रस्येव	४१९
अयमग्निः सुवीर्यस्य	५९४	अश्वं न त्वा चारवन्तं	३८	अस्य वासा उ अर्चिषा	८७८
अयमग्निरमूमुहद्	२१५७	अश्वमिद् गां रथप्रां	१४५१	अस्य शासुरुभयासः	१२०
अयमग्निरुह्यति	१७१०	अश्वस्यात्र जनिमास्य	२४२७	अस्य शुष्मासो दृढशानपवे	१५०४
अयमग्निर्वध्यश्वस्य	१६३६	अश्विना नमुचेः सुतः	२०२९	अस्य श्रिये समिधानस्य	१७७२
अयमग्ने जरिता त्वे	१६९०	अश्विना भेषज मधु	२०३४	अस्य श्रेष्ठा सुभगस्य	६३२
अयमग्ने त्वे अपि	१३७०	अश्वो घृतेन रमन्या	२११५	अस्य स्तोमे मघोनः	८७३
अयमिह प्रथमो धायि	६९३	अश्वो न क्रद्भजनिभिः	१७५५	अस्य हि स्वयश्चस्तर	८७७
अयमु ध्य प्र देवयुः	१७०९	अषाढो अग्ने वृषभो	५९१	अस्याजरासो दमामरित्रा	१६०७
अयमु ध्य सुमहो अवेदि	११५०	असंमृष्टे जायसे मात्रोः	८४४	अस्वमजस्तरणयः	१८२४
अयांसमग्ने सुक्षिति	२४३६	असच्च सच्च परमे	१५१९	अहश्च कृष्णमहः	१७८७
अया ते अग्ने विधेम	४३४	असञ्चित् त्वे आहवनानि	११५३	अहाव्यग्ने हविरास्ये	१६६५
अया ते अग्ने समिधा	१८२७	असादि वृतो वह्निराज	११४६	अहोरात्रे अन्वेषि	२२६२
अयामि ते नमउक्तिं	५८२	अस्ताव्यग्निं शिमीवज्जिः	३१७	आकृतिं देवी सुभगां	२२१०
अयोजाला असुरा	२३५०	अस्ताव्यग्निरनरां सुशेवो	१६००	आकृत्या नो बृहस्तर	२२११
अयोदंष्ट्रो अर्चिषा	१८२९	अस्तीदमधिमन्थनम्	५५८	आगन्म वृत्रहन्तमं	१४४५
अरण्योर्निहितो जातवेदा	५५९	अस्थाद् धौरस्थात्	२३९४	आ ग्ना अग्न इहावसे	२५
अराधि होता निषदा	१६१७	अस्मा उ ते महि महे	९४८	आग्निं न स्ववृत्तिभिः	१५८१
अराधि होता स्वर्निषत्तः	१८१	अस्माकं जोष्यध्वरम्	७१८	अभिनरगामि भारतो	१०६०
अर्वन्तस्त्वा हवामहे	८५४	अस्माकमग्ने अध्वरं	७९७	आग्ने याहि मरुत्सखा	२४४७
अर्चामि ते सुमतिं	१८२०	अस्माकमग्ने मघवत्सु दीदिहि	३०१	आग्ने वह वरुगमिष्टये	२००२
अर्चामि वां वर्धायापो	१५५२	अस्माकमग्ने मघवत्सु धारय	१७८५	आग्ने वह हविरधाय	११७०
अयमग्नं वरुणं मित्रम्	६५०	अस्माकमग्नं पितरो	६३९	आग्ने स्थूरं रयिं भर	१७०५
अयो विशां गातुरेति	१५७४	अस्मिन् पदे परमे	२४३५	आ च वहसि तौ इह	२२०
अर्वज्जिरग्ने अर्वतो नृभिः	२१३	अस्मिन् वयं संकसुके	२२३९	आ जातं जातवेदसि	१०८३
अर्वाञ्च दैव्यं जनम्	१०९	अस्मे रयि न स्वर्ध	३१५	आ जुहोता दुवस्यत	९३८
अवर्धयन्सुभगं सप्त यज्ञीः	४५०	अस्मे रायो दिवेदिने	७१०	आ जुहोता स्वध्वरं	५०७
अवसृजन्नुप तमना	१९२८	अस्मे वत्सं परि षन्तं	१९६	आजुह्वान इँड्यो वन्धश्च २००५, २१२०	
अव सृज पुनरग्ने	१५६१	अस्मे क्षत्रमग्नीषोमौ	२४७८	आजुह्वाना सरस्वती	२०२८
अव सृजा वनस्पते	१९१६	अस्मै क्षत्राणि धारयन्तं	२१९९	आजुह्वानो न इँड्यो	१९३३
अव सृधि पितरं योधि	७८६	अस्मै तिस्रो अव्यध्याय	२४२६	आज्यस्य परमेष्ठिन्	२२८५
अव स्म यस्य वेषणे	८१५	अस्मे ते प्रतिहृत्यते	१३११	आ तं भज सौश्रवसे	१५९८
अवा नो अग्न ऊतिभिः	२५०	अस्मे बहूनामवसाय	२४३३	आ ते अग्न इधीमहि	८०४
अविः कृष्णा भागधेयं	२२६६	अस्य क्रवा विचेतसो	८७९	आ ते अग्न० (शुक्रस्य०)	८०५
अवोचाम कवये मेध्याय	७६६	अस्य घा वीर इवतो	७५३	आ ते अग्न० (हृदा०)	१०८८
अवोचाम निवचनान्यस्मिन्	३६८	अस्य त्वेषा अजरा	३२०	आ ते ददे वक्षणाभ्य	२४८२
अवोचाम रङ्गुगणा	२४३	अस्य देवस्य सप्तघनीके	११३६	आ ते वत्सो मनो यमत्	१२२०
अश्मन्वती रीयते	१६२१	अस्य प्र जातवेदसो	१८६४	आ ते सुपर्णा अमिनन्तं	२४५
अश्याम तं काममग्ने	९८५	अस्य यामासो बृहतो	१५०२	आ त्वा चूतवर्च्यमा	२१७८
				आ त्वा विप्रा अनुच्यधु	१०७

आ दशभिर्विवस्वत	१४३१	आ यन्मे अभव वनद	४२०	आ होता मन्द्रो विदधा	५८१
आदस्य ते ध्वसयन्तो	२९६	आ यस्ततन्थ रोदसी	९४९	दृच्छन्त रेतो मिथस्तनृषु	१६१
आदित् ते विश्वे क्रतुं जुषन्त	१५६	आ यस्ते अग्न इधते	११०७	इडाभिरग्निरीक्यः	२०३९
आदित्यश्चा बुभुधाना	६४४	आ यस्ते सर्पिरासुते	८१९	इति चिन्मन्युमग्निजः	८२०
आदित्यैर्नो भारती	२११३	आ यस्मिन् त्वे स्वपाके	१००७	इति त्वाग्ने वृष्टिहव्यस्य	१६७४
आदिद्धोतारं वृणते	३१०	आ यस्मिन्सप्त रश्मयः	४२६	इत्था यथा त ऊतये	८९४
आदिनव प्रतिदीप्ते	२३६८	आ याह्यग्ने पथ्याऽनु	११४३	इदं तद्युज उत्तरम्	२४७७
आदिन्मातृराविशद्यास्वा	३०९	आ याह्यग्ने समिधानो	१९६३	इदं मे अग्ने कियते	१७६३
आ देवानामग्रयावेह	१९९३	आयुरस्मै धेहि जातवेद	२१५०	इदं वचः शतसा.	११५४
आ देवानामपि	१४९४	आ यूथेव क्षुमति पश्वो	६६४	इदं वचो अग्निना	२२१३
आ देवानामभवः	४६३	आ ये तन्वन्ति रश्मिभिः	२४४५	इदमग्ने सुधितं दुर्धिताद्	३०२
आ देवो ददे बुध्याऽ	१८०९	आ ये विश्वा स्वपत्यानि	२०३	इदमुग्राय बभ्रवे	२३६५
आ दैव्यानि व्रता चिकित्वान्	१७५	आ योनिमग्निर्युतवन्तम्	४७६	इदमु त्यन्महि महाम्	१७६६
आद्य रथं भानुमो	७६५	आ यो मूर्धानं पित्रोः	१५३६	इधं यस्ते जभरच्छभमाणो	७३५
आ नो अग्ने रयि भर	२५१	आ यो योनिं देवकृन्	११३८	इधेन त्वा जातवेदः	२३५२
आ नो अग्ने वयोवृधं	१३९९	आ यो वना तातृषाणो	४२१	इधेनाग्ने इच्छमानो	६०७
आ नो अग्ने सुचेतुना	२५२	आ रभस्व जातवेदो	२२८९	इनो राजन्नरतिः समिद्धो	१४९९
आ नो अग्ने सुमतिं	२३३९	आरे अस्मदमतिमारे	७३३	इन्द्रं दुरः कवश्यो	२०१८
आ नो गहि सख्येभिः	४६५	आरोका इव घेदह	१३१२	इन्द्रं नो अग्ने वसुभिः	११६४
आ नो देवेभिरुप	११७६	आ रोदसी अष्टगदा	१७३३	इन्द्रः सेनां मोहयतु	२१५५
आ नो बर्ही रिशादसो	३१	आ रोदसी अष्टगणा	४८१	इन्द्र चित्तानि मोहयन्	२१५८
आ नो भज परमेश्वा	४२	आ रोदसी बृहती	१९८	इन्द्रा याहि मे हवम्	२१६४
आ नो यज्ञं भारती	२०१०; २१२५	आ वंसते मधवा वीरवद्	१२६५	इन्द्रायैन्दुः सरस्वती	२०२७
आन्यं दिवो मातरिश्वा	२४७०	आवहन्यरुणीर्जोतिषा	७४७	इन्धे राजा समयो नमोभिः	११४९
आ भन्दमाने उपाके	१९२४	आ वां वहिष्ठा इह ते	७४८	इमं क्रव्यादा विवंशा	२२५६
आ भन्दमाने उषसा	१९५८	आ विश्वतः प्रत्यञ्च	४१३	इमं धा वीरो अमृतं	१२८८
आ भानुना पार्थिवानि	९९१	आविष्टयो वर्धते चारुसु	१८७२	इमं त्रितो भूर्यविन्दद्	१६०३
आ भारती भारतीभिः	१९६०	आशुं दूतं विवस्वतो	६९६	इमं नरो मरुतः सश्रता	५९५
आभिर्विधेमाग्नये	१२९२	आश्रुण्वते अदपिताय	६६८	इमं नो अग्न उप	१६८३
आभिष्टे अद्य गीर्भिः	७२३	आ श्वेत्रेयस्य जन्तवो	८८८	इमं नो यज्ञममृतेषु	६१८
आ मन्द्रस्य सनिष्यन्तो	१७३०	आ सवं सवितुर्यथा	१४६८	इमं मे अग्ने पुरुषं	२१८६
आमे सुपक्वे शबले	२३१०	आ सीमरोहत्सुयमा	४९२	इमं यज्ञं चनो धा अग्न	९९८
आ यं हस्ते न खादिनं	१०८१	आ सुते सिञ्चत श्रियं	१४३६	इमं यज्ञं सहसावन्तं	४६८
आ य पशौ जायमान	९९६	आ सुपव्यन्ती यजते	२००८, २१२३	इमं यज्ञमिदं वचो	१६९९
आ यः पशौ भानुना	१०९५	आ सूर्ये न रश्मयो	१७१९	इमं विधन्तो... द्वितादधुः	४१७
आ यः पुरं नार्मिणीम्	३५५	आ सूर्यो न भानुम्	९७६	इमं विधन्तो... पशु	१६०२
आ यः स्वर्णं भानुना	४००	आ स्वमन्न युवमानो	१११	इमं स्तोममर्हते	२५६
आ यज्ञैर्देव मर्त्य	८७६	आ हि चावापृथिवी	१४९१	इमं स्वस्मै हव आ	२४२३
आ यद्विषे नृपतिं तेज	१९२	आ हि ष्मा सूनवं पिता	३०	इममग्ने चमसं मा	१५६४
आग्ने ते परायणे	१६९७			इममादित्या वसुना	२१७०

इमामिन्द्रं वह्निं	२२६०	ईळितो अग्न० (सुखै रथेभिः०)	१९६६	उत्ते बृहन्तो अर्चयः	१३४६
इमसु त्वमथर्ववद्	१०३९	ईळितो अग्ने मनसा	१९४४	उत्ते शुष्मा जिहताम्	१६२५
इमसू तु त्वमस्माकं	४१	ईळिष्वहि प्रतीव्यं१	१२७०	उदग्ने तव तद् घृताद्	१३१९
इमसू षु वो अतिथिम्	१०२३	ईळे अग्निं विपश्चितं	५३८	उदग्ने तिष्ठ प्रत्या	१८१६
इमां प्रत्नाय सुष्ठुति	१६६३	ईळे गिरा मनुर्हितं	१२४४	उदग्ने भारत शुमद्	१०८६
इमां मे अग्ने इमां	४३३	ईळे च त्वा यजमानो	४६१	उदग्ने शुचयस्तव	१३५२
इमां मे अग्ने ..जुषस्व	१९९२	ईळैन्यं वो असुरं	१९७६	उदस्तम्भीत्समिधा	४७९
इमा अग्ने मतयः	१५२८	ईळैन्यः पवमानो	१९८३	उदस्य शोचिरस्थाद् (आनुह्वा०)	११९४
इमा अस्मै मतयो	१६६२	ईळैन्यो नमस्यः	५४९	उदस्य शोचिरस्थाद् (दीदियुषो)	१२७३
इमामग्ने शराणि मीमृषो	६५	ईळैन्यो वो मनुषो	११५८	उदातैर्जिहते बृहद्	१२८५
इमा यास्ते शतं हिरा	२१९५	उक्षाज्ञाय० (। वैश्वानरज्येष्टेभ्यः)	२३६०	उदिता यो निदिता	१२६७
इमास्तिस्रो देवपुरा	२१७६	उक्षाज्ञाय० (। स्तोमैर्विधेम०)	१३२०	उदीरय पितरा जार	१५४५
इमे नरो वृत्रहत्येषु	११०९	उक्षा मह्यो अभि ववक्ष	३३२	उदु तिष्ठ स्वध्वर	१२७४
इमे यामासस्त्वद्रिगू	७८९	उग्रं पश्ये राष्ट्रभृत्	२३८२	उदु घुत समिधा यज्ञो	४७८
इमे विप्रस्य वेधसो	१३१०	उच्छोचिषा सहसस्पुत्र	६०८	उद्यमीति सवितेव	१८७४
इमो अग्ने वीततमानि	१११७	उत रना अग्निरध्वर	७१५	उद्यस्य ते नवजातस्य	११२६
इयं ते नव्यसी मतिः	१४४८	उत त्वाग्ने मम स्तुतो	१३२६	उन्मदिता मौनेयेन	२४६०
इयमग्ने नारी पतिं	२३४०	उत त्वा धीतयो मम	१३६४	उन्मुञ्च पाशांस्त्वमग्न	२१९१
इरज्यन्नमे प्रथयस्व	१६८७	उत त्वा नमसा वयं	१३२१	उपक्षेतारस्तव सुप्रणीते	४६२
इषं दुहन्सुदुघां	१६८०	उत त्वा भृगुवच्छुचे	१३२२	उप च्छायासिध्वं चृणे	१०७९
इषीकां जरतीमिष्ट्वा	२२६७	उत घुमस्सुवीर्यं	२२३	उप त्मन्या वनस्पते	१२४०
इष्कर्तारमध्वरस्य	१६८८	उत द्वार उक्षातीर्वि	१२०५	उप त्वाग्ने दिवेदिवे	७
इह त्वं सूनो सहसो	६४८	उत नः सुद्योत्मा जीराश्वो	३१६	उप त्वा जामयो गिरो	१४७५
इह त्वष्टारमग्निं	१९१५	उत नो देव देवाँ	१३७४	उप त्वा जुहो३ मम	१३४७
इह त्वा भूर्या चरेदुप	१८२१	उत नो ब्रह्मन्नविष	५७९	उप त्वा रणवसंद्दशं	१०७८
इह प्र ब्रूहि यतमः	१८३५	उत जुवन्तु जन्तवः	२१७	उप त्वा सातये नरो	११८५
इहैव सन्तः प्रति दद्या	२३७७	उत योषणे दिव्ये	१९७९	उप प्र जिन्वन्नुशतीः	१८५
इहैवाग्ने अधि धारया	२३२६	उत वा उ परि वृणक्षि	१६९२	उपप्रयन्तो अध्वरं	२१५
इळामग्ने पुरुदंसं	४६९	उत वा य. सहस्य प्रविद्वान्	३४७	उप प्रागाद् देवो	२२९३
इळायास्त्वा पदे वयं	५६१	उत स्य दुर्गुभीयसे	८३१	उप यमेति युवतिः	११०५
इळा सरस्वती मही	१९१४	उत स्य यं शिशुं यथा	८३०	उपसद्याय मीळहुष	११७७
ईजे यज्ञेभि शशमे	९६४	उत स्वानासो दिवि	७७६	उपस्थां चरति यत्	३३६
ईळितो देवैर्हरिवो२	२०१६	उतालब्धं स्पृणुहि	१८३४	उप स्रक्वेषु बप्सतः	१४३८
ईळ्यश्वासि वन्द्यश्च	२१०८	उतो न्वस्य यत् पदं	१४४१	उपावसज्ज त्मन्या	२०१२, २१२७
ईयिवांसमति स्त्रिधः	५०३	उतो न्वस्य यन्महद्	१४२९	उपेमसृक्षि वाजयु-	२४२२
ईशिषे वार्यस्य हि	१३६०	उतो पितृभ्यां प्रविदानु	४९५	उभयं ते न क्षीयते	४०७
ईशो यो विश्वस्या	१५२२	उत्तानायामजनयन्	४११	उभयासो जातवेद स्याम	३२६
ईशे ह्यग्निरमृतस्य	११३९	उत्तानायामव भरा	५६०	उभा देवा नृचक्षसा	१९८७
ईळानायावस्यवे	४३८	उत्तिष्ठसि स्वाहुतो	१८५४	उभे भद्रे जोषयेते	१८७३
ईळितो अग्न० (। इयं हि०)	१९२१			उभे सुश्रन्द्र सर्पिषो	८०९

उभोभयाविन्नुप धेहि	१८३०	ऋतायिनी मायिनी	१५१५	एवाँ अग्निं वसूयवः	९१९
उरु ते ज्ञयः पर्येति	१८७६	ऋतावानं महिषं	१६८९	एवाँ अग्निमजुयंमुः	८१०
उरुष्यचसाऽग्नेर्धात्रा	२०७९	ऋतावानं यज्ञिय	१७३९	एवाग्निर्गोतमेभिर्ऋतावा	२३८
उरुष्या णो मा परा दा	१४१५	ऋतावानं विचेतसं	६९५	एवाग्निर्मतैः सह	१६७२
उरौ महौ अनिबाधे	४५७	ऋतावानं वैश्वानरम्	२१८१	एवा ते अग्ने विमदो	१५८०
उरौ वा ये अन्तरिक्षे	४८७	ऋतावानमृतायवो	१२७८	एवा ते अग्ने सुमतिं	९३०
उशना काव्यस्त्वा	१२८६	ऋतावा यस्य रोदसी	५७५	एवा नो अग्ने अमृतेषु	३९३
उशन्तस्त्वा नि धीमहि	१५६८	ऋतुधेन्द्रो वनस्पति	२०३५	एवा नो अग्ने समिधा	१८७८
उशिक् पावको अरतिः	१५९५	ऋतुभिष्ट्वार्तवैरायुषे	२१७९	एवेन सद्य पर्येति पार्थिवं	२८५
उशिक् पावको वसुः	१२२	ऋतुभ्यष्ट्वार्तवेभ्यो	२२१६	एहि मनुर्देवयुर्थज्ञकामो	१६१३
उषडधो हि वसो	१५३७	ऋतेनं ऋतं धरुणं	८६७	एह्यग्न इह होता	२३०
उपासानक्तमश्विना	२०३१	ऋतेन ऋतं नियतमीळ	६७४	एह्य षु जवाणि ते	१०५७
उषासानक्ता बृहती	२०१९	ऋतेन देवीरमृता	६७७	ऐच्छाम त्वा बहुधा	१६१२
उषे यङ्ही सुपेशसा	२०४२	ऋतेन हि ष्मा वृषभः	६७५	ऐभिरग्ने सरथं याह्यवाङ्	४८८
उषो न जार पृथु	११६१	ऋतेनाद्रिं व्यसन् भिदन्तः	६७६	ऐषां यज्ञमुत वर्चो	२१४३
उषो न जारो विभावोन्नः	१७२	ऋधद्यस्ते सुदानवे	९५५	ओजिष्ठं ते मध्यतो मेद	६२२
ऊर्जे त्वा बलाय	२२१५	ऋभुश्चक ईड्यं चारु	४७५	ओ षू णो अग्ने शृणुहि	२९१
ऊर्जो नपाजातवेदः	१६८६	ऋषिर्न स्तुभ्वा विश्वु	१३७	और्वभृगुवच्छुचिम्	१४६६
ऊर्जो नपातं स हिनायम्	१०९१	एकः समुद्रो धरुणो	१५१३	क इमं वो निष्यमा	१८७१
ऊर्जो नपातं सुभग	१२२७	एकशतं लक्ष्म्योऽ	२२०३	कत्यग्रयः कति सूर्यासः	२४१४
ऊर्जो नपातमध्वरे	५४८	एतं ते स्तोमं तुविजात	७७७	कथा ते अग्ने शुचयन्त	३४३
ऊर्जो नपातमा हुवे	१३५५	एता अर्षन्ति हृद्यात्	१८९९	कथा दाशेमाग्रये	२३४
ऊर्जो नपास्तहसावन्	१६७३	एता उ वः सुभगा	२११०	कथा महे पुष्टिभराय	६७२
ऊर्णज्जदा वि प्रथस्व	१९६७	एता एना व्याकर	२२०४	कथा शर्धाय मरुता०	६७३
ऊर्ध्व ऊ पु णो अध्वारस्य	६८२	एता चिकित्वा भूमा नि	१७९	कथा ह तद्वरुणाय	६७०
ऊर्ध्व केतु सविता देवो	७४६	एता ते अग्न० (। शक्केम राय०)	२११४	कद्धिण्यासु वृधसानो	६७१
ऊर्ध्व भ्रातुं सविता देवो	७४१	एता ते अग्न० (। उच्छोचस्व०)	६६६	कन्या इव वहतुमेतवा	१९०३
ऊर्ध्व अस्य समिधो	२०६०, २०७२	एता ते अग्ने जनिमा	४६६	कमु ध्विदस्य सेनया	१३७९
ऊर्ध्वार्थां दिश्यऽजस्य	२२२४	एता नो अग्ने सौभगा	११३३	कमेतं त्वं युवते	७६८
ऊर्ध्वो ज्रावा बृहद्गनिः	१९९८	एता विश्वा विदुषे	६८१	कया ते अग्ने अङ्गिर	१४५७
ऊर्ध्वो अब प्रति विध्या	१८१७	एतास्ते अग्ने समिधः पिशाच	२३१७	कया नो अग्न ऋतय०	८५०
ऊर्ध्वो वां गातुरध्वरे	१९५६	एतास्ते अग्ने समिधस्त्वमिद्धः	२३५४	कया नो अग्ने वि वस	११५१
ऋतं चिकित्वा ऋतमिच्	८४९	एति प्र होता व्रतमस्य	३२६	कवधयो न व्यचस्वती	२०३०
ऋत धोवे नमसा	१७६८	एते त्वे वृथगग्नय	१३१४	कविं शशासुः कवयो	६५८
ऋतस्य देवा अनु व्रता	१२६	एते धुम्नेभिर्विश्वमातिः	११४७	कविं केतुं धासिं	१८०४
ऋतस्य प्रेषा ऋतस्य धीति	१५८	एतेनाग्ने ब्रह्मणा वावृधस्व	६७	कविमग्निमुप स्तुहि	१६
ऋतस्य वा केशिना	४८५	एना वो अग्निं नमसा	११९२	कविमिव प्रचेतसं	१४५५
ऋतस्य हि धेनवो	२१०	एभिर्नो अकैर्भवा नो	७२२	कस्ते जामिर्जनानाम्	२२६
ऋतस्य हि वर्तनयः	१५१६	एभिर्भव सूमना अग्ने	६८०		

कस्य नूनं परीणसो	१४६०	क्षेत्रेणामग्रे स्वेन	२३२२	चित्तिमचित्तिं चिनवद्	६५७
का त उपेतिर्मनसो	२२९	क्षप उस्त्रश्च दीदिहि	११८४	चित्तिरपां दमे विश्वायुः	१५३
का मर्यादा वयुना	१७७०	क्षपो राजन्नुत त्मना	२४९	चित्र इच्छिशोस्तरुणस्य	१६६६
कायमानो वना त्वं	५०१	क्षीरे मा मन्थे यतमो	२३११	चित्रा वा येषु दीधितिः	८८४
किं देवेषु त्यज पुनः	१६४२	क्षेति क्षेमेभिः साधुभिः	१४६२	चित्रो यदभ्राद् द्रुवेतो	१३९
किं नो अस्य द्रविणं	१७६९	क्षेत्रादपश्यं सनुत	७७०	जनस्य गोपा अजनिष्ट	८४२
किं स्विन्नो राजा जगृहे	१५५३	क्षेमो न साधुः क्रतुर्न	१४५	जनासो अग्निं दधिरे	६९
कुत्रा चिद्यस्य समृतौ	८१२	गर्भे मातुः पितृष्विता	१०७६	जनिष्ट हि जेन्यो अग्रे	७५९
कुमारं माता युवति.	७६७	गर्भे योषामदधु	१६२४	जनिष्वा देववीतये	१०४०
कुर्मस्त आयुरजरं	१६१४	गर्भो यो अपां गर्भो	१७६	जने न शेव आहूयः	१६७
कुर्वित्सु नो गविष्टये	१३८३	गार्हपत्येन सन्त्य	२३	जन्मञ्जन्मज्जिहितो	४६७
कुर्वित्सो अग्निरुच०	३२३	गाव उपावतवात	१४३५	जरमाण समिध्यसे	१८५७
कूचिज्जायते सनयासु	१५१०	गीर्णं भुवनं तमसा	२३९८	जराबोध तद्विविद्धि	४७
कृतं चिद्धि त्मा सनेमि	७२६	गुहा शिरो निहितम्	१६३८	जातवेदसे सुनवाम	१८६२
कृधि रत्नं यजमानाय	११९७	गोभिर्न सोममश्विना	२०३६	जातवेदो नि वर्तय	२३९६
कृधि रत्नं सुसनितः	६०९	गोमो अग्नेऽविमो अश्वी	६५१	जातो अग्नी रोचते	५६४
कृणुष्व पाजः प्रसिति	१८१३	गोषु प्रशस्तिं वनेषु	१८२	जातो यदग्रे भुवना	१८१२
कृणोत धूमं वृषणं	५६६	ग्राह्या गुहा सं	२२५२	जानन्ति वृष्णो अरुणस्य	४९४
कृष्ण श्वेतोऽरुषो यामो	१५७९	घृनेव विश्वग्वि जहि	८१	जामि सिन्धूनां आतेय	१३०
कृष्णं त एम रुशतः	७०१	घृतं ते अग्रे दिव्ये सृज्यन्ते	२३२९	जिघमर्थाग्निं हविषा	४१२
कृष्णप्रतौ वेविजे	२९४	घृतं न पूतं तनू०	७२५	जाम्यतीतपे धनुः	१४२७
कृष्णां यदेनीमभि	१५००	घृतप्रतीकं व ऋतस्य	३२४	जिह्वाभिरह नञ्जमद्	१३१७
कृष्णा रजांसि पत्सुत.	१३१५	घृतमग्रेऽध्यश्वस्य	१६२६	जीवानामायुः प्र तिर	२२५८
केतुं यज्ञानां विदयस्य	१७४४	घृतमपराभ्यो बह	२३६६	जुषद्भ्या मानुषस्य	१५७५
के ते अग्रे रिपवे	८५१	घृत मिमिक्षे घृतमस्य	१९५२	जुषस्व नः समिधमग्ने	१९७४
केतेन शर्मन्सचते	१४०६	घृतवन्तः पावक ते	६१९	जुषस्व सप्रथस्तमं	२२४
के मे मर्यकं वि	७७१	घृतवन्तमुप मासि	१९१९	जुषस्वान्न इळया	७९३
केश्य१ग्निं केशी विषं	२४५८	घृतादुल्लसं मधुना	२१८०	जुषाणो अग्ने प्रति हर्य	१६७६
कृत्वा दक्षस्य तरुषो	१७२९	घृताहवन दीदिव	१४	जुषाणो अङ्गिरस्तम	१३५०
कृत्वा दा अस्तु श्रेष्ठो	१०६७	घृताहवन सन्त्य	१०४	जुषाणो बर्हिर्हरिवान्	२०१७
कृत्वा यदस्य तविषीषु	२८७	घृतेनाग्निः समज्यते	१८५६	जुष्टो दमूना अतिथि	७९४
कृत्वा हि द्रोणे अज्यसे	९५९	घृतेनाञ्जन्तसं पथो	२१०७	जुष्टो हि दूतो अग्नि	८७
क्रमध्वमग्निना नाकम्	२२१८	घ्नन्तो वृत्रमतरन्	७५	जुहुरे वि चितयन्तो	८८७
क्रव्यादमग्निं प्र हिणोमि	१५६५	घ्नन्मृध्राण्यप द्विषो	१३३५	जोहूत्रो अग्निः प्रथम	४०९
क्रव्यादमग्निं शशमानम्	२२३६	चक्रियो विश्वा भुवना०	५९७	ज्ञेया भागं सहसानो	४१४
क्रव्यादमग्निमिषितो	२२३५	चत्वारि शृङ्गा त्रयो	१८९७	ज्येष्ठघ्न्यां जातो विचृतोः	२१८४
क्रव्यादमग्रे रुधिरं	२३१४	चन्द्रमग्निं चन्द्ररथं	१७४६	तं यज्ञसाधमपि	२८४
क्राणा रुद्रेभिर्वसुभि.	११२	चरन्वत्सो रुशन्निह	१४२८	तं वश्रराथा वयं	१४२
क्रीळन् नो रश्म आ	८९०	चिकित्स्विमनसं त्वा	९०१	तं वो दीर्घायुशोचिषं	८८३

तं वो वि न द्रुषदं	१६६८	तं त्वा वयं पतिमग्ने	१२३	तसु त्वा पाथ्यो वृषा	१०५६
तं शश्वतीषु मातृषु	६९८	तं त्वा वयं सुध्यो	९४५	तसु त्वा वाजसातमं	२४१
तं शुभ्रमग्निमवसे	१७५४	तं त्वा वयं हवामहे	१३३२	तसु त्वा वृत्रहन्तमं	२४२
तं सबाधो यतस्तुच	५४२	तं त्वा विप्रा विपन्यवो	५१७	तसु धुमः पुर्वणीक	९२४
तं सुप्रतीकं सुदृशं	१०३२	तं त्वा शोचिष्ठ दीदिवः	९१०	तमुन्नामिन्द्रं न रेजमानम्	१५२४
तं हि शश्वन्त ईळते	८६२	तं त्वा समिद्धिरङ्गिरो	१०५२	तमोषधीर्दधिरे गर्भम्	१६५६
तं हुवेम यतस्तुचः	१२८९	तं देवा बुध्न रजसः	३८७	तं पृच्छता स जगामा	३३३
तं होतारमध्वरस्य	१२०३	तं नव्यसी हृद आ	१२१	तं मर्जयन्त सुक्रतु	१४६१
त इद् वेदि सुभग	१२४१	तन्नस्तुरीपमद्भुतं० (देव त्वष्टा०)	२०८१	तं मर्ता अमर्त्यं वृतेन	१८५८
तक्का न भूर्णिर्वना	१३५	तन्नस्तुरीपमद्भुतं० (। रायस्पोषं)	२०६९	तरी मन्द्रासु प्रयक्षु	२०७७
तं गूर्धया स्वर्णं देवासो	१२२४	तन्नस्तुरीपमद्भुतं पुरु वारं	१९२७	तव कृत्वा सनेयं	१२५२
तं घेमिस्था नमस्विन.	७४	तन्नस्तुरीपमध पोषयितु	१९६१	तव त्वे अग्ने अर्चयो	८०७, ८३९
तत्तदग्निर्वयो दधे	१३०३	तं नेमिभुवो यथा	१३७७	तव त्वे अग्ने हरितो	६९०
तत्तु ते दसो यद०	१७१	तं नो अग्ने अभी नरो	८३४	तव त्रिधातु पृथिवी	१७९७
तत्ते भद्रं यत्	२६९	तं नो अग्ने मधवद्भ्यः	१८०२	तव धुमन्तो अर्चयो	९१८
तत्ते सहस्व ईमहे	१३४२	तपनो अस्मि पिशाचानां	२३००	तव द्रप्सो नीलवान्	१२५४
तथा तदग्ने कृणु	२३०६	तपुर्जम्भो वन आ	११४	तव प्र यक्षि संदशम्	१०४९
तदग्ने चक्षु प्रति धेहि	१८३९	तपो ष्वग्ने अन्तर्त्तां	६०६	तव प्रयाजा अनुयाजा.	१६१५
तदग्ने धुमन्मा भर	१२३८	तमग्निमस्ते वसवो	११०१	तव भ्रमास आश्रुया	१८१४
तदस्थानीकमुत चारु	२४३२	तमग्ने पास्युत तं	१०३३	तव श्रिया सुदृशो	७८१
तद्भद्र तय दंसना	५०६	तमग्ने पृतनाषहं	९०४	तव श्रियो वष्यस्येव	१६५५
तद्वायुतं रोदसी प्र	१६४०	तमधुवः केशिनीः	२९९	तव स्वादिष्ट अग्ने	७२४
तनूत्यजेव तस्करा	१५११	तमध्वरेष्वीळते देवं	८६१	तवाग्ने होत्रं तव	३७०, १६६०
तनूनपाच्छुचित्रतः	२०३८	तमर्वन्तं न सानसि	७५४, १४७४	तवाहमभ्र ऊतिभिः	८३३, १२५१
तनूनपात् पथ ऋतस्य	२००४; २११८	तमस्मेरा युवतयो	२४२५	तस्मै नूनमभिधवे	१३७८
तनूनपात् पवमानः	१९८२	तमस्य पृक्षमुपरासु	२७६	तस्येदर्वन्तो रंहयन्त	१२२९
तनूनपादसुरो विश्ववेदा	२०६१	तमागन्म सोभरयः	१२५५	ता अधरादुदीची	२२५४
तनूनपादुच्यते	५६८	तमितृच्छन्ति न सिमो	३३४	ता अस्य वर्णमायुवो	४२९
तनूनपादृतं यते	१९३२	तमित्सुहव्यमङ्गिरः	२१९	तां उशतो वि बोधय	१३
तनूपा भिषजा सुते	२०२६	तमितृच्छन्ति शुह्व०	३३५	ता नृभ्य आ सौश्रवसा	१०१६
तन्तु तन्वज् रजसो	१६१९	तमिहोषा तमुषसि	११२८	तान्सत्यौजाः प्र दह	२२९५
तं त्वा गीर्भिरुक्षया	१८६१	तमिन्वेद्व समना	१७६४	तामग्ने अस्मे इषमेरयस्व	१८०१
तं त्वा गीर्भिर्निर्वणसं	४३५	तमीं हिन्वान्ति धीतयो	३३०	ता राजाना शुचिप्रता	१०६५
तं त्वा वृत्तस्त्रीमहे	९२१	तमीं होतारमानुषक्	६९७	ताष्टाधीरग्ने समिधः	२३१८
तं त्वाजनन्त मातरः	१४७९	तमीळत प्रथमं यज्ञसाधं	१८८१	ता सुजिह्वा उप ह्वये	१९१३
तं त्वा दूतं कृणमहे	११९५	तमीळिष्व य आहुतो	१३३१	तिग्म चिदेम महि	९६६
तं त्वा नरो दम आ	२०८	तमुक्षमाणं रजसि	३८८	तिग्मजम्भाय तरुणाय	१२४५
तं त्वामज्मेषु वाजिनं	१३२९	तसु त्वा गोतमो गिरा	२४०	तिक्ष्ण इडा सरस्वती	२०४४
तं त्वा मर्ता अगृभ्यत	५०५	तसु त्वा दध्यङ्कृषि.	१०५५	तिक्ष्णोधा सरस्वती	२०३३

तिस्त्रो देवीर्बहिर्हिदं वरीय	१९९९	त्रिश्चिदक्तोः प्र चिकितुः	११६८	त्वं नृचक्षा वृषभानु	५९०
तिस्त्रो देवीर्बहिर्हिरेदं सदनतु	२०६८	त्रीणि जाना परि भूषन्त्यस्य	१८७०	त्वं नो अग्न आयुषु	१३०९
तिस्त्रो देवीर्हविषा वर्धमाना	२०२१	त्रीणि शता त्री सहस्रा०	५०८	त्वं नो अग्न एषां गय	८३७
तिस्त्रो यदग्ने शरदः	१९७	त्रीण्यायूषि तव जात०	६०२	त्वं नो अग्ने अङ्गिरः	८४१
तिस्त्रो यद्धस्य समिधः	१७३५	त्रेधा जात जन्मनेदं	२१७२	त्वं नो अग्ने अद्भुत	८३६
तीक्ष्णेनाग्ने चक्षुषा रक्ष	१८३६	व्यायुषं जमदग्नेः	२१७३	त्वं नो अग्ने अधराद्	१८६७
तुभ्यं श्रोतन्यध्रिगो	६२१	त्वं यविष्ठ दाशुषो	१४५६	त्वं नो अग्ने तव देव	६१
तुभ्यं स्तोका घृतश्रुतो	६२०	त्वं रयिं पुस्वार्म	१४१४	त्वं नो अग्ने पित्रोः	५८
तुभ्यं वेत् ते जना इमे	१३३८	त्वं वरुण उत मित्रो	११७३	त्वं नो अग्ने महोभिः	१४०९
तुभ्यं ता अङ्गिरस्तम	१३२७	त्वं वरो सुपाग्ने	१२९७	त्वं नो अग्ने वरुणस्य	२४५१
तुभ्यं दक्ष कविक्रतो	५८७	त्वं विश्व प्रदिवः सीद	९८१	त्वं नो अग्ने सनधे	५७
तुभ्यं भरन्ति क्षितयो	७६४	त्वं ह यद्यविष्ठ	१३७५	त्वं नो असि भारत	४४५
तुभ्येदमग्ने मधु०	८४६	त्वं हि क्षैतवद्यशो	९५२	त्वं नो अस्या उषसो	५८९
तुविश्रीवो वृषभो	७७८	त्वं हि मानुषे जने	८९६	त्वमग्न इन्द्रो वृषभः	३७१
तृषु यदक्षा तृषुणा	७०३	त्वं हि विश्वतोमुख	१८९२	त्वमग्न उरुशंसाय	६३
ते अस्य योषणे दिव्ये	२०६६	त्वं हि सुप्रतूरसि	१२९८	त्वमग्न ऋशुराके	३७८
ते गव्यता मनसा	६४१	त्वं होता मनुहितो	१०५०	त्वमग्ने अदितिर्देव	३७९
ते वेदग्ने स्वाधो३ ये त्वा	१२४०	त्वं होता मन्द्रतमो	१००१	त्वमग्ने गृहपति	११९६
ते वेदग्ने स्वाधोऽह्ना	१३३९	त्वं ह्यग्ने अग्निना	१३२३	त्वमग्ने त्वष्टा विधते	३७३
ते जानत स्वमोक्षं३ सं	१४३७	त्वं ह्यग्ने दिव्यस्य राजसि	३३१	त्वमग्ने शुभिस्त्वमा०	३६९
तेजिष्ठा यस्वारतिः	१००८	त्वं ह्यग्ने प्रथमो मनोता	९३९	त्वमग्ने द्रविणोदा	३७५
ते ते अग्ने त्वोता	१०६८	त्वं चिन्नः शम्या अग्ने	६६९	त्वमग्ने पुरुषो	८२५
ते ते देवाय दाशतः	१२१०	त्वं जामिर्जनानाम्	२२७	त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरस्तमः	५१
ते देवेभ्य आ वृश्चन्ते	२२६३	त्वदग्ने काव्या त्वम०	७३०	त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा	५०
ते मन्वत् प्रथमं	६४२	त्वद्धि पुत्र सहस्रो	५८६	त्वमग्ने प्रथमो मातरिश्वन	५२
ते मर्मजत दहवांसो	६४०	त्वद्धिया विश आयन्न	१७९६	त्वमग्ने प्रमनिस्त्वं	५९
ते राया ते सुवीर्यैः	७०९	त्वद्वाजी वाजंभरो	७३१	त्वमग्ने प्रयतदक्षिणं	६४
ते स्थाम ये अग्नये	७०८	त्वद्विप्रो जायते वाज्यग्ने	१७७५	त्वमग्ने बृहद्वयो	१४६३
स्मना वहन्तो दुरो	१७३	त्वद्विश्वा सुभग सौभगानि	१०१२	त्वमग्ने मनवे धाम०	५३
त्रयः केशिन ऋतुधा	२४५६	त्वं तं देव जिह्वया	१०७३	त्वमग्ने यज्ञानां होता	१०४२
त्रयः पोषास्त्रिभृति	२१६९	त्वं तमग्ने अमृतत्व	५६	त्वमग्ने यज्यवे पायु०	६२
त्रय सुपर्णास्त्रिभृता	२१७४	त्वं तौ अग्न उभयान्	३६७	त्वमग्ने यातुधानान्	२२९०
त्रायध्वं नो अधविषाभ्यो	२४८१	त्वं तान्सं व प्रति चासि	३८३	त्वमग्ने राजा वरुणो	३७२
त्रिः सप्त यदुह्यानि	२००	त्वं त्या चिदच्युता	९६०	त्वमग्ने रुद्रो असुरो	३७४
त्रिधा हितं पणिभिः	१८९८	त्व दूतो अमर्त्य आ	१०४७	त्वमग्ने वरुणस्य	१०३४
त्रिभि पवित्रैरपुष्यधर्क	१७५७	त्वं दूतः प्रथमो वरेण्यः	१६७९	त्वमग्ने वरुणो जायसे	७७९
त्रिमूर्धनं सप्तारिभ	३३८	त्वं दूतस्त्वसु नः	४०४	त्वमग्ने वसुंरिह	१००
त्रिरस्य ता परमा	६३३	त्वं नः पाह्यहसो	१०७१; ११९१	त्वमग्ने वाघते सुप्र०	६५९
त्रिर्यातुधानः प्रतिलि	१८३८	त्वं नश्चिन्न ऊषा	१०९८	त्वमग्ने वीरवद्यशो	११८८

त्वमग्ने वृजिनवर्तनिं	५५	त्वामग्ने अङ्गिरसो	८४७	त्वेषासो अग्नेरमवन्तो	८५
त्वमग्ने वृषभ पुष्टि०	५४	त्वामग्ने अतिथिं पूर्य	८२२	त्वोजो वाज्यहयोऽग्नि	२२२
त्वमग्ने व्रतपा असि	१२१४	त्वामग्ने दम आ विश्पतिं	३७६	ददानमिन्न ददभन्त	३४२
त्वमग्ने शशमानाय	३१४	त्वामग्ने धर्णासि विश्वधा	८२४	दधन्तुतं धनयज्ञस्य	१८७
त्वमग्ने शोचिषा शोशुचान	१८११	त्वामग्ने पितरमिष्टिभिः	३७७	दधन्वे वा यदीमनु	४२७
त्वमग्ने सप्रथा असि	८५७	त्वामग्ने पुष्करादधि	१०५४	दधुष्ट्वा भृगवो मानुषेष्वा	११५
त्वमग्ने सहसा सहन्तम	२८०	त्वामग्ने प्रथमं देव०	७३२	दश क्षिप पूर्य सीम०	६२९
त्वमग्ने सुभृत उत्तमं	३८०	त्वामग्ने प्रथममायुम्	६०	दशस्या नः पुर्वणीक	१००५
त्वमग्ने सुहव रणव०	११२०	त्वामग्ने प्रदिव आहुतं	८२७	दशमं त्वष्टुर्जनयन्त	१८६९
त्वमङ्ग जरितारं	७८८	त्वामग्ने मनीषिण	५०९	दाधार क्षेममोको	१३६
त्वमध्वर्युरुत होतासि	२६१	त्वामग्ने मनीषिणस्त्वां	१३६१	दा नो अग्ने धिया	११०४
त्वमर्थमा भवसि यत्	७८०	त्वामग्ने मानुषीरीळते	८२३	दा नो अग्ने बृहतो	३९१
त्वमसि प्रशस्यो विदथेभु	१२१५	त्वामग्ने यजमाना अनु	१५९९	दामानं विश्वचर्षणे	१२७१
त्वमित् सप्रथा असि	१३९३	त्वामग्ने वसुपतिं	७९०	दाशेम कस्य मनसा	१४५८
त्वमिन्द्रा पुरुहूत	२२७४	त्वामग्ने वाजसातमं	८५८	दिदक्षेण्यः परि	३४२
त्वमिमा वार्यां पुरु	१०४६	त्वामग्ने वृणते ब्राह्मणा	२३२१	दिदक्षसो धेनवो	४९१
त्वं भगो न आ हि	१०१३	त्वामग्ने हरितो वावशाना	१७९८	दिवं पृथिवीमन्वन्तरिक्षं	२३६१
त्वया यथा गृत्समदासो	४२४	त्वामग्ने हविष्मन्तो	८२८	दिवाश्चित्ते बृहतो जातवेदो	१७२१
त्वया वयं सधन्यः स्वोताः	१८२६	त्वामग्ने समिधानं	८२६	दिवाश्चिदा ते रुचयन्त	४८६
त्वया ह स्विद्युजा	१४६५	त्वामग्ने समिधानो	११६०	दिवास्त्वा पातु हरितं	२१७५
त्वया ह्यग्ने वरुणो	३१३	त्वामग्ने स्वाध्वोऽमर्तासो	१०४८	दिवास्परि प्रथमं जज्ञे	१५८९
त्वष्टा तुरीयो अमुत	२०४५	त्वामस्या व्युषि देव	७८५	दिवास्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षाद्	२२०५
त्वष्टा दधच्छुष्ममिन्द्राय	२०२२	त्वामिदन्न वृणते	१६५९	दिवा मा नक्तं यतमो	२३१३
त्वष्टा माया वेदपसाम	१६२२	त्वामिदस्या उषसो	१६८१	दिवो न यस्य विधतो	९६९
त्वष्टारमग्रजां गोपां	१९८९	त्वामीळते अजिरं	११६७	दिवो वा सानु सृशता	१९९६
त्वष्टा रूपाणि हि प्रभु	१९३९	त्वामीळे अध द्विता	१०४५	दीदिवांसमपूर्य	५७८
त्वष्टा वीरं देवकामं	२११४	त्वामु जातवेदसं	१७००	दीर्घतन्तुर्बृहदुक्षायमग्निः	१६३१
त्वां यज्ञेष्वीळतेऽग्ने	१५८६	त्वामु ते दधिरे हव्यवाहं	१२०९	दुरोकशोचिः क्रतुर्न	१३८
त्वां यज्ञेष्त्विवजं	५१०; १५८७	त्वामु ते स्वाभुवः	१५८२	दुरो देवीर्दिशो महीः	२०४१
त्वां वर्धन्ति क्षितयः	९४३	त्वे अग्न आहवचनानि	१११६	दुर्मन्त्रम्रासृतस्य	१५५४
त्वां विश्वे अमृत जायमानं	१७७६	त्वे अग्ने विश्वे अमृतासो	३८२	दुहन्ति ससैकाम्	१४३०
त्वां विश्वे सजोषसो	८९७	त्वे अग्ने सुमतिं	२११	दूतं वो विश्ववेदसं	७०४
त्वां हि मन्द्रतम०	९७७	त्वे अग्ने स्वाहुत	११९८	दशानो रुक्म उर्विया	१५९६
त्वां हि ष्मा चर्षणयो	९५३	त्वे असुर्यं वसवो	१७९९	दशेभ्यो यो महिना	२४०३
त्वां ह्यग्ने सदमित्	६३१	त्वे इदग्ने सुभगे	७३	दहहा चिदसा अनु	२७५
त्वां चित्रश्रवस्तम	१०५	त्वे धर्माण आसते	१५८३	देवं वो देवयज्यया	८९८
त्वां दूतमग्ने अमृतं	१०३०	त्वे धेनुः सुदुघा जातवेदो	१६३२	देव त्वष्टर्यद्ध चारुत्वम्	२०००
त्वामग्न आदित्यासः	३८१	त्वे वसूनि पुर्वणीक	९८०	देव बहिर्वर्धमानं सुवीरं	१९४५
त्वामग्न क्रतायवः	८२१	त्वेषं रूपं कृणुत	१८७५	देवान् यज्ञाधितो हुवे	२३७१
		त्वेषस्ते धूम ऋणवति	९५७		

देवाश्चित्ते अमृता	१६३३	धन्या चिद्धि त्वे	१००२	नहि ते पूर्वमक्षिपद्	१०५९
देवासस्त्वा वरुणो	७१	धन्वन्त्स्रोतः कृणुते	१८७७	नहि मन्यु पौरुषेय	१४१०
देवी दिवो दुहितरा	१९९७	धामन् ते विश्वं भुवनमधि	१९०५	नहि मे अस्यधन्या	१४८१
देवीर्द्धारो वि श्रयध्वं	१९६८	धायोभिर्वा यो युज्येभि	९७०	नाना ह्यग्नेऽवसे स्पर्धन्ते	१०२०
देवेभिर्निवधितो यज्ञियेभिः	२३९९	धार्तिं कृण्वान ओषधी	१३१६	नाभि यज्ञानां सदनं	१७७४
देवैनसादुन्मदितम्	२१८८	धिया चक्रे वरेण्यो	५४५	नाहं तन्तुं न वि जानामि	१७८८
देवो अग्निः संकसुको	२२३८	धीरासः पदं कवयो	३४१	नि काव्या वेधसः	१९५
देवो देवानामसि	२६८	धीरो ह्यस्यन्नसद्विप्रो	१३७१	नितिकि यो वारण	९७५
देवो देवान् परिभूर्कृतेन	१५५०	ध्रुवं ज्योतिर्निहितं	१७९१	नित्ये चिन्तु यं सद्ने	३५०
देवो देवेषु देवः पथो	२०७३	नक्रिस्व सहन्त्य	४५	नि तिग्ममभ्यंशुं	१४२५
देवो न यः पृथिवीं	२०७	नकिष्ट एता व्रता	१७०	नि त्वा दधे वर आ	६३०
देवो न यः सविता	२०६	नक्तोषासा वर्णमामेभ्याने	१८८३	नि त्वा दधे वरेण्यं	५४६
देवो वो द्रविणोदाः	१२०२	नक्तोषासा सुपेशसा	१९१२	नि त्वा नक्ष्य विश्वते	११८३
दैवा होतार ऊर्ध्वम्	२०८०	नडमा रोह न ते अत्र	२२२९	नि त्वाग्ने मनुर्दधे	८४
दैव्या मिमाना मनुषः	२०२०	न तमग्ने अरायतो	१४१२	नि त्वा यज्ञस्य साधनम्	९६
दैव्या होतारा ऊर्ध्वमध्वरं	२०६७	न तस्य मायया चन	१२८४	नि त्वा वसिष्ठा अहन्त	१६८२
दैव्या होतारा प्रथमा० ४९७, १९५९		न त्वद्धोता पूर्वो अग्ने	७८२	नि त्वा होतारमृत्विजं	१०६
दैव्या होतारा प्रथमा विदुष्टर	१९४८	न त्वा रासीयाभिश्चक्ष्ये	१२४९	नि दुरोणे अमृतो	४६४
दैव्या हो० प्र० सुवाचा २००९, २११४		न पिशाचैः सं शक्नोमि	२३०१	नि नो होतार वरेण्य	२९
दैव्या होतारा भिषजा	२०४३	नमः शीताय तक्मने	२२७८	नि पस्त्वासु त्रितः	१६०६
द्यावा यमग्निं पृथिवी	१६०९	नमस्ते अग्न ओजसे	१३८२	निरितो मृत्युं निर्कृति	२२३१
द्यावा ह क्षामा प्रथमे	१५४९	नमस्यत हव्यदाति	१७३४	निर्मथितः सुधित	६२७
द्यावो न यस्य पनय०	९७३	न यं रिपवो न	३५२	निर्यत् पूतेव स्वधितिः	११३२
द्युतानं वो अतिथिं	१०२६	न यस्य सातुर्जनितो	६८८	निर्यदीं बुध्नान् महिषस्य	३०७
द्युभिर्हितं मित्रमिव प्रयोगं	१५३१	न योरुपब्दिदृश्यः	२२१	नि होता होतृषदने	४०३
द्यौश्च त्वा पृथिवी	४८२	न यो वराय मरुता०	३२२	नू च पुरा न सदनं	१८८५
द्रवतां त उषसा	५८३	नराशंस प्रति धामान्यज्जन्	१९४३	नू चित्सहोजा अमृतो	११०
द्रविणोदा द्रविणसस्तुरस्य	१८८६	नराशंसः प्रति शूरो	२०१५	नू ते पूर्वस्यावसो	४२३
द्रवन्नः सर्पिरासुतिः	४४६	नराशंस सुषूदति	१९६५	नू त्वाग्ने ईमहे	११४८
द्धारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रतं	२०७८	नराशंसमिह प्रियम्	१९०८	नू न इद्धि वार्यम्	८८०
द्धारो देवीरन्वस्य विश्वे व्रता	२०६५	नराशंसस्य महिमानं १९७५, २११९		नू न एद्धि वार्यम्	८७५
द्विता यदीं कीस्तासो	२७८	नरो ये के चास्मदा	१५७८	नूनमर्चं विहायसे	१२९३
द्विताय मृक्त्वाहसे	८८२	नवं नु स्तोममग्नये	११८०	नू नक्षित्रं पुरुवाजा०	९९७
द्विभागधनमादाय	२२४८	नव प्राणान् नवाभिः	२१६७	नू नो अग्न ऊतये	८४०
द्विर्यं पञ्च जीजनन्	६८९	नवा नो अग्न आ भर	८०८	नू नो अग्नेऽवृकेभिः	९७८
द्विषो नो विश्वतोमुख	१८९३	नहि प्रभायारणः	११४१	नू नो रास्व सहस्रवत्	५८०
द्वे विरूपे चरतः स्वर्थे	१८६८	नहि ते अग्ने तन्वः	२३३७	नू मे ब्रह्माण्यग्न	१११९
द्वे समीची बिभृतः	२४१२	नहि ते अग्ने वृषभ	१४०२	नृचक्षा रक्ष परि पश्य	१८३७
द्वे क्षुती अशृणवं	२४११	नहि देवो न मर्त्यो	२४३९	नृवद्वसो सदमिद्धे०	९५०

नेशत्तमो दुधित	६४३	पिता यज्ञानामसुगे	१७४५	प्रचेतसं त्वा कवे	१४८०
नैनं धनन्ति पर्यायिणो	२३९३	पितुर्न पुत्रः सुभृतो	१२५०	प्रजानङ्गने तव	१६५४
न्यक्रतून् ग्रथिनो मृधनाचः	१८०५	पितुर्न पुत्राः क्रतु	१६२	प्रजापतेस्तपसा वावृधानः	२११६
न्यग्रिन् जातवेदस	९००; ९२६	पितुश्च गर्भं जनितुः	४५६	प्रजावता वचसा	२३२
न्यराती नराणां विश्वा	१३०१	पितुश्चिदूधर्जनुषा	४५५	प्र जिह्वा भगते वेपो	१६०८
पञ्चौदनं पञ्चभिः	२२२३	पितेव पुत्रमबिभरुष्ये	१६३४	प्र णु त्वं विप्रमध्वरेषु	७६१
पतिर्ह्यध्वराणाम्	९४	पिप्रीहि देवो उक्षतो	१४९२	प्र तव्यसी नव्यसी	३१८
पदं देवस्य नमसा	९४२	पिशङ्गरूपं सुभरो	१९५०	प्र तौ अग्निर्बभसत्	१७६१
पदं देवस्य भीळुषो	१४७७	पीपाय स श्रवसा	२९५	प्रति त्वं चारुमध्वरं	२४३८
पन्यांसं जातवेदसं	१४४४	पुत्रो न जातो रणवो	१६८	प्रति दह यातुधानान्	२२९४
परं योनिरवर ते	२१९६	पुनस्त्वादित्या रुद्रा	२२३४	प्रति स्पशो वि सृज	१८१५
परस्या अधि संवतो	१३८७	पुनस्त्वा दुरण्मरसः	२१८९	प्र ते अग्नयोऽग्निभ्यो	११०३
पराद्या देवा वृजिनं	१८४२	पुरं देवानाममृतं	२१७७	प्र ते अग्ने हविष्मती	६११
परा शृणीहि तपसा	१८४१	पुरस्ताद् युक्तो वह	२३०५	प्र ते यक्षि प्र त ह्यर्भि	१५०६
परि ते दूळभो रथो	७१९	पुराग्ने दुरितेभ्यः	१३७२	प्रल होतारमीड्य	१३४९
परि त्रिधातुरध्वरं	१४३२	पुरीष्यासो अग्नयः	६२६	प्रतो हि कमीड्यो अध्वरेषु	१२२३
परि त्रिविष्टयध्वरं	७५०	पुरुत्रा हि सदङ्ङसि	१२२१; १३३०	प्रत्यग्निरुषसश्चेकितानो	४७०
परि त्मना मितदुरेति	६८६	पुरु त्वा दाश्वान्वोचे	३५८	प्रत्यग्निरुषसामग्रम्	७४०; २३२८
परि त्वाग्ने पुरं वय	१८४९	पुरुणि दस्मो नि	३५१	प्रत्यग्निरुषसो जातः	७४५
परि प्रजातः क्रत्वा	१६५	पुरुण्यग्ने पुरुधा	९५१	प्रत्यग्ने मिथुना दह	१८५१
परि यदेषामेको	१५५	पुरोगा अग्निर्देवानां	१९४१	प्रत्यग्ने हरसा हरः	१८५२
परि वाजपतिः कवि	७५१	पुरो वो मन्द्रं दिव्यं	९९३	प्रत्यञ्चमर्कं प्रत्यर्पयित्वा	२२६८
परि विश्वानि सुधिता	५२५	पुरोळा अग्ने पचतः	५५३	प्रत्यस्य श्रेणयो ददश्च	१६९४
परिषथ ह्यरणस्य	११४०	पुष्टिर्न रणवा क्षितिर्न	१२८	प्र त्वा दूतं वृणीमहे	७०
पर्षि तोकं तनयं	१०९९	पूर्वो देवा भवन्तु	२६३	प्रथमं जातवेदसम्	१२९१
पश्चात् पुरस्तादधरादुदक्तात्	१८४८	पूर्व्यं होतरस्य नो	३२	प्रथमा वां सरथिना	२११२
पश्वा न ताथुं गुहा	१२४	पूषवते मरुवते	१९२९	प्रथमा हि सुवाचसा	१९३७
पश्याम ते वीर्यं	२२८८	पृक्षप्रयजो द्रविणः	४९९	प्र दीधितिर्विश्ववारा	१९५५
पातं नो अश्विना दिवा	२०३२	पृक्षस्य वृष्णो अरुषस्य	१७८०	प्र देवं देववीतये	१०८२
पाति प्रिय रिपो अग्रं	४७४	पृक्षो वपुः पितुमान्	३०६	प्र देवं देव्या धिया	१७०८
पार्थिवस्य रसे देवा	२१४९	पृतनाजितं सहमानम्	२३७४	प्र दैवोदासो अग्निः	१२५८
पावकया यश्चितयन्त्या	१०२७	पृथिवी धेनुस्तस्या	२२८१	प्र नव्यसा सहसः	९८६
पावकवर्चाः शुक्रवर्चा	१६८५	पृथिव्यामग्नवे समनमन्त	२२८०	प्र नूनं जातवेदसम्	१८६३
पावकशोचे तव हि	१७३२	पृथुपाजा अमर्त्यो	५४१	प्र नू महित्वं वृषभस्य	१७२२
पाहि गीर्भस्तिस्त्रिभिः	१३९८	पृष्टो दिवि धायगि	१७९५	प्र पतेतः पापि लक्ष्मि	२२०१
पाहि नो अग्न एकया	१३९७	पृष्टो दिवि पृष्टो अग्निः	१७२५	प्र पीपाय वृषभ	५९३
पाहि नो अग्ने पायुभिः	३६४	पृष्टात् पृथिव्या अहम्	२२१९	प्र पूतास्तिग्मशोचिषे	२५३
पाहि नो अग्ने रक्षसः	८०; १११२	प्र कारवो मनना	४८०	प्र प्रायमग्निर्भरतस्य	११५२
पाहि विश्वस्मादक्षसो	१३९८	प्र केतुना बृहता	१५३४	प्र भूर्जयन्तं महां	१६०५

प्र महिष्ठाय गायत	१२६४	प्रातर्याग्नः सहस्कृत	१०८	भवा वरूथ गृणते	११८
प्र मातुः प्रतर गुह्यम्	१६३९	प्रान्यान्सपत्नान्	२१९४	भारती पवमानस्य	१९८८
प्र यं राये निनीषसि	१२६०	प्रियं दुग्धं न काम्यम्	८८९	भारतीके सरस्वति	१९३८
प्र य आरुः शिति०	४९०	प्रियमेधवदत्रि०	१०२	भुवश्चक्षुर्मह ऋतस्य	१५३८
प्र यज्ञ एत्वानुषग्	९२७	प्रिया पदानि पश्वो	१४९	भुवो यज्ञस्य रजसश्च	१५३९
प्र यत् ते अग्ने सूरयो	१८९०	प्रियो नो अस्तु विश्वपतिः	३४	भूमिष्ट्वा पातु हरितेन	२१७१
प्र यत् पितुः परमा०	३०८	प्रेतो यन्तु व्याधयः	२४८३	भूगि नाम वन्दमानो	७८७
प्र यदग्ने सहस्रतो	१८९१	प्रेद्धो अग्ने दीदिहि	११०२	भूरीणि हि त्वे दधिरे	६१३
प्र यद् भन्दिष्ठ एषां	१८८९	प्रेह्निर्वावृधे स्तोमेभिः	४७१	भूषन् न योऽधि	२९७
प्र व. शुक्राय भानवे	११३४	प्रेव पिपतिषति	२२६५	मथीद्यदीं विभृतो	१८८
प्र वः सखायो अग्नये	१०६३	प्रेष्ठं वो अतिथिं	१४५४	मथीद्यदीं विष्टो	३४८
प्र वत् ते अग्ने जनिमा	१६९१	प्रेष्ठसु प्रियाणां	१२६६	मधुमन्तं तनूनपाद्	१९०७
प्र वाच्यं वचसः किं मे	१७६५	प्रो त्वे अग्नयोऽग्निषु	८०६	मध्ये होता दुरोगे	१००६
प्र विश्वसामन्नत्रिवद्	८९९	प्रोथदश्वो न यवसे	११२५	मध्वा यज्ञं नक्षति	२०७४
प्र वेधसे कवये	८६६	बभ्राण. सूनो सहसो	४५४	मध्वा यज्ञं नक्षसे	२०६२
प्र वो देवं चित्सहसा	११४२	बर्हिः प्राचीनमोजसा	१९८४	मनुष्वत्वा नि धीमहि	८९५
प्र वो देवायाम्नये	५७४	बळित्था तद्वपुषे	३०५	मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्व०	६६
प्र वो महे सहसा	२८१	बृहती इव सूनवे	१७२०	मनो न योऽध्वन	१९३
प्र वो यज्ञं पुरुणां	६८	बृहद्गिरग्ने अर्चिभिः	१०९६	मन्यता नरः कविः	५६२
प्र शंसमानो अतिथिर्न	१२३१	बृहद्वयो हि भानवे	८७१	मन्द्र होतां शुचिमद्	१७४१
प्र शर्ध आर्तं प्रथमं	६३८	बृहन्त इज्जानवो	४६०	मन्द्रं होतारमुशिजो	११६५; १६०४
प्र सद्यो अग्ने अत्येधि	७६३	बृहस्पतिर्म आकूतिम्	२२१२	मन्द्रं होतारमृत्विजं	१३४८
प्र सप्तहोता सनका	५७१	बोधो मे अस्य वचसो	३४४	मन्द्रजिह्वा जुगुर्वणी	१९२५
प्र सन्नाजो असुरस्य	१८०३	ब्रह्म च ते जातवेदो	१५१२	मन्द्रो होता गृहपतिः	७२
प्र सु विश्वान् रक्षसो	२३१	ब्रह्मणाग्निः संविदानो	२४१६	मयो दधे मेधिर	४४९
प्र सो अग्ने तवोतिभिः	१२५३	ब्रह्म प्रजावदा भर	१०७७	मय्यग्ने अग्निं गृह्णामि	२३२५
प्र होता जातो महान्	१६०१	भूजन्त विश्वे देवत्वं	१५७	मर्ता अमर्त्यस्य ते	१२१८
प्र होत्रे पूर्य वचो	५१३	भद्रं ते अग्ने सहसि०	७२८	महः स राय एषते	३५३
प्राम्नये तवसे भरध्वं	१७९४	भद्रं नो अपि वातय	१५७१	महत् तदुद्वं स्थविरं	१६११
प्राम्नये बृहते यज्ञियाय	८४८	भद्रं मनः कृणुष्व	१२४३	महश्चिदग्ने एनसो	७३८
प्राम्नये वाचमीरय	१७११	भद्रा अग्नेर्वध्रयश्चस्य	१६२५	महौ अस्यध्वरस्य	११६६
प्राम्नये विश्वशुचे	१८१०	भद्रा ते अग्ने स्वनीक	६८७	महान्सधस्थे भ्रुव	४८३
प्राची दिगग्निरधिपतिः	२१६१	भद्रो नो अग्निराहुतो	१२४२	महिकेरव ऊतये	१०३
प्राचीनं बर्हिः प्रदिशा २००६, २१२१	१९३४	भद्रो भद्रया सचमान	१५०१	महि त्वाष्ट्रमूर्जयन्ती	४९३
प्राचीनं बर्हिरोजसा	११४४	भरद्वाजाय सप्रथः	१०७४	महे यपित्र हँ	१८९
प्राचीनो यज्ञः सुधितं	४४८	भरामेधमं कृणवामा	२५९	महो देवान्यजति	१०९३
प्राञ्चं यज्ञं चक्रम	२२७२	भवा द्युम्नी वाध्रयश्चोत	१६२९	महो नो अग्ने सुवितस्य	११२३
प्रातः प्रातर्गृह्णतिर्नो	२४३७	भवा नो अग्नेऽवितोत	१५३३	महो रुजामि बन्धुता	१८२३
प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं	८८१	भवा नो अग्ने सुसैना	६०५	महो विश्वां अभि	१२९५
प्रातरग्निः पुरुप्रियो					

८। अस्य यक्षः	६७८	य उदानत् परायणं	२३९५	यत्वा क्रुद्धा प्रचक्रुः	२२३३
९। ज्येष्ठं वधीदयमग्नः	२१९०	य उ श्रिगो दमेष्वा	३९९	यत्वा होत्स्वरमनजन्	६१४
१०। ज्ञातेव यज्ञरसे	८६९	य एलं परिधीदन्ति	२३९०	यत्वा चिद् वृद्धमतपम्	१३९५
११। अथ्यं दिने सवने	५५५	यं सीमकृष्वन्	७४२	यथायजो होत्रमग्ने	६०१
१२। नः समस्य दूह्यः १:	१३८१	यः पञ्च चर्षणीराभि	११७८	यथा वः स्वाहाग्ने	११३०
१३। नान्दत य इमां	१७५३	य परस्था परावतः	१७१२	यथा विद्वां अरं करद्	४३२
१४। नां अग्ने दुर्मतये	११२१	य पौरुषेण क्रविषा	१८४३	यथा विप्रस्य मनुषो	२३३
१५। नां अग्नेऽमतये	५९८	यः जमिषा य आहुती	१२२८	यथा सो अस्य परिधिः	२३०७
१६। नां अग्नेऽव सृजो	३६५	यः सुनीथो ददाशुषे	३९८	यथा ह त्वद्वसवो	७३९
१७। नां अग्नेऽवीरते	१११८	यः सोमे अन्तर्धो	२३५६	यथा हव्यं वहसि	२३३१
१८। नां अग्ने सख्या	१९७	यः रत्नाहितीषु पूर्वा	२१६	यथा होतर्मनुषो	९७१
१९। नां अरातिरीशत	४४२	यं श्रावणवितत	२३०२	यदग्न एषा समितिः	१५४७
२०। नां अस्मिन् महाधने	१३८४	यं चिद्दि ते पुरुषत्रा	७३७	यदग्निरापो अदहत्	२२७५
२१। नां देवानां विशः	१३८०	यं चिद्दि शश्वता तना	३३	यदग्ने अद्य मिथुना	१८४०
२२। नां मर्ताय रिपवे	१३९६	यजमानाय सुन्वत	९२४	यदग्ने कानि कानि	१४८२
२३। नां रक्ष आ वेशीद्	१४०८	यजस्व होतरिपितो	१०००	यदग्ने दिविजा असि	१३३७
२४। नां हणीतामतिथिः	१२६८	यजा गो मित्रावरुणा	२२८	यदग्ने मर्त्यस्त्वं	१२४८
२५। भार्जादयो मृज्यते स्वे	७६२	यजिष्ठ त्वा यजमाना	२७३	यदग्ने यानि कानि	२३५३
२६। मा शूने अग्ने नि षदाम	१११०	यजिष्ठं त्वा वयुमहे	१२२६	यदग्ने स्यामहं त्वं	१३६५
२७। मित्रं न यं सुधित	१०२४	यज्जं पि यज्ञे समिधः	२३४५	यदङ्ग दाशुषे त्वं	६
२८। मित्रश्च तुभ्यं वरुणः	५८४	यजातवेदो भुवनस्य	२४०१	यदस्युपजिह्विका यद्	१४८३
२९। मित्रो अग्निर्मवति	४७३	यज्ञस्य केतुं प्रथमं	८४३; १६७८	यददीव्यन्तृणमहं	२३८४
३०। मुनयो वातरशनाः	२४५९	यज्ञानां रथे वयं	१३६९	यदद्य त्वा प्रयति	५७३
३१। सुसुक्ष्वोऽमनवे	२९५	यज्ञायज्ञा वो अग्नये	१०९०	यदज्ञमग्नि बहुधा	२३४६
३२। सुमोद गर्भो वृषभः	१५३५	यज्ञासाहं दुव इधे	१५७७	यदज्ञमदम्यन्तृतेन देवा	२३४८
३३। सुहृगृध्रैः प्र वदत्यार्ति	२२५१	यज्ञेन वर्धत जात०	३८५	यदयुक्था अरुषा	२६५
३४। मूरा अमूर न वय	१५०९	यज्ञेभिरहुतक्रतु	१२७७	यदसावसुतो देवा	२१६५
३५। मूर्धा दिवो नाभिरग्नि	१७१८	यज्ञैरिषू सज्जमानो	१८३१	यदस्मृति चक्रम किं	२२००
३६। मूर्धानं दिवो अरतिं	१७७३	यं जनासो हविष्मन्तो	१४४३	यदस्य हतं विहतं	२३०९
३७। मूर्धा भुवो भवति	२४०२	यता सुजूर्णां रातिनी	६४८	यदि वाहमनृतदेव	१२१३
३८। मेधाकारं विदथस्य	१६५८	यत्कृषते यद्वनुते	२२४९	यदि शोको यदि	२२७७
३९। मेष इय वै स च	२३३८	यत्ते कृष्णः शकुन	१५६२	यदीं गणस्य रशना०	७५७
४०। नैवमग्ने वि दहो माभि	१५५७	यत्ते मनुर्थदनीकं	१६२७	यदी धृतेभिराहुतो	१२४६
४१। सो ते रिषन्त्ये अच्छोक्तिभिः	१२६९	यत्पाकत्रा मनसा	१४९६	यदी मन्थन्ति बाहुभि	५६३
४२। य आगरे मृगयन्ते	२२९७	यत्र क्व च ते मनो	१०५८	यदी मातुरुष स्वसा	४३०
४३। य इन्द्रेण सत्यं याति	२३५७	यत्र वेत्थ वनस्पते	१२७२	यदीमृतस्य पयसा	२४६
४४। य इमे धावापृथिवी	२०११; २१२६	यत्रा वदेते अवरः	२४१३	यदुद्धतो निवतो यासि	१६९३
४५। य ई चिकेत गुहा	१५०	यत्रेदानीं पश्यसि	१८३३	यदेदेनमदधुः	२४०७
४६। य उग्र इव शर्यहा	१०८०	यत्रैषामग्ने जनिमानि	२२९२	यद् दाशुणि बध्यसे	२३८८

यद्देवानां मित्रमहः	९७	यस्त ऊरू विहरति	२४१९	यस्येदं प्रदिशि यद्	२३३६
यद्धस्ताभ्यां चक्रम	२३८१	यस्तुभ्यं दाशद्यो	१५९	यातुधानस्य सोमप	२२९१
यद्यग्निः क्रव्याद्यदि वा	२२३२	यस्तुभ्यमग्ने अमृताय	६५५, १६६१	या ते वसोर्वात इष्टुः	२२७०
यद्यर्चिर्द्यदि वासि शोचिः	२२७६	यस्ते अग्ने नमसा	८५३	यान् राये मर्तोन्सुषुदो	२१२
यद् रिप्रं शमलं चक्रम	२२५३	यस्ते अग्ने सुमतिं	१५४६	यामन् यामन्नुपयुक्तं	२३३२
यद्वा उ विस्पति शितः	१२८२	यस्ते अद्य कृणवद्	१५९७	या मा लक्ष्मी. पतयालू	२२०२
यद्वातजूतो वना	१३१	यस्ते अप्सु महिमा	२२०६	यामाहुतिं प्रथमामथर्वा	२२०९
यद्वाहिष्ठं तदग्नये	९१७	यस्ते गर्भममीवा	२४१७	यामृषयो भूतकृतो	२३२४
यद् विजामन्परुषि	१२११	यस्ते देवेषु महिमा	२२०७	या रुचो जातवेदमो	१८६५
यद् वो वयं प्रमिनाम	१४९५	यस्ते भरादञ्जियते	६५३	यावन्मात्रमुषसो	२४६५
यं त्वं विप्र भेषसातौ	१४१३	यस्ते यज्ञेन समिधा	९८३	या वा ते सन्ति दागुये	११३१
यं त्वमग्ने समदहः	१५६९	यस्ते सूनो सहस्रो	१०१५	युक्ष्वा हि देवदूतमा	१३७३
यं त्वा गोपवनो गिरा	१४५२	यस्ते हान्ति पतयन्त	२४१८	युगेयुगे विदध्यं	१७८४
यं त्वा जनास इन्धते	१३३६	यस्त्वद्धोता पूर्वो अग्ने	६०४	युयूषतः सवयसा	३२८
यं त्वा जनास ईळते	१४५३	यस्त्वा दोषा य उपमि	६५४	युवमेतानि दिवि	२४६९
यं त्वा जनासो अभि	१५०७	यस्त्वा आता पतिभूत्वा	२४२०	युवानं विस्पतिं कधि	१३६८
यं त्वा देवा दधिरे	१६१०	यस्त्वामग्ने इन्धते	७३४	यूयमुग्रा मरुत ईदृशे	२६५३
यं त्वा देवासो मनवे	७७	यस्त्वामग्ने हविष्पति.	१७	ये अग्नयो अप्सु १२२५	२३५५
यं त्वा द्यावापृथिवी	१४९८	यस्त्वा स्वमेन तमसा	२४२१	ये अग्ने चन्द्र ते गिरः	८३८
यं त्वा पूर्वमीळितो	१६२८	यस्त्वा स्वध सुडिरण्यो	१८२२	ये अग्ने नेरयन्ति	८९२
यं त्वा होतारं मनसाभि	२३५९	यस्त्वा हृदा कीरिणा	७९९	ये उग्र अर्कमानुजु	२४४१
यं देवासस्त्रिरहन्	१९५४	यस्मा कृण यस्य जायास्	२३८३	ये ते शुक्रास. शुचयः	९८४
यं देवासोऽजनयन्त	२४०५	यस्माद् रेजन्त कृष्टय	१२५९	ये देवास्तेन हासन्त	२२९९
यन्मा हुतमहुतम्	२३४७	यस्मिन् देवा अमृजत	२२४३	येन कृषयो वलम्	२३३४
यमग्निं मेध्यातिथिः	७८	यस्मिन् देवा मन्मनि	१५५६	येन चष्टे वरुणो मित्रो	१२३९
यमग्ने पुस्तु मर्त्यम्	४४	यस्मिन् देवा विदध्य	१५५५	येन देवा अमृतम्	२३३५
यमग्ने मन्यसे रथि	१५८४	यस्मिन् देवा कृपभास	१६६४	येन प्रसाम पृतनागु	१४००
यमग्ने वाजसातम	८९१	यस्मै त्वं सुकृते	८००	ये नाकस्याधि रोचने	२४४१
यमश्वा नित्यमुपयाति	११११	यस्मै त्वं सुद्रविणो	२७०	येनेन्द्राय सममरः	२१४१
यमापो अद्रयो जना	१०९४	यस्मै त्वनायजसे	२५७	ये पर्वताः सोमपृष्ठा	२३६४
यमासा कृपनीळ	१५७३	यस्य ते अग्ने अन्धे	१२५६	ये पायवो मामतेयं	३४५, १८२५
यमीं द्वा सवयसा	३२९	यस्य त्रिधात्ववृतं	१४७६	ये पुरस्ताज्जुह्वति	२३४७
यमेरिरे भृगवो	३२१	यस्य त्वमग्ने अध्वरं	६५६	ये बध्यमानमनु दीध्याना	२१५२
यमैच्छाम मनसा	१६१६	यस्य त्वमूर्ध्वो अध्वराय	१२३३	ये भक्षयन्तो न वसुनि	२२७९
यमो ह जातो यमो	१४१	यस्य दूतो असि क्षये	२१८	येभिः पाशै विरिवितो	२१९१
यं मर्त्यः पुरुस्पृहं	८१६	यस्य मा परुषा. शतम्	९३२	ये महो रजसो विदुः	२४४०
यया गा आकरामहे	१७०४	यस्य शर्मन्नुप विश्वे	१८०८	ये मा क्रोधयन्ति लपिता	२३०३
यशा इन्द्रो यशा अग्निः	२४८०	यस्याग्निर्वपुर्गृहे	१२३४	ये मे पञ्चाशतं ददुः	८८५
यस्त इधमं जभग्त्	६५२	यस्याजुषजमस्त्रिनः	१३८६	ये राधांसि ददत्यश्वया	१२०१

ये शुभ्रा घोरवर्षसः	२४४२	यो विश्वा दयते वसु	१२६२	वर्धन्तीमापः पन्वा	१२७
येऽश्रद्धा धनकाम्यात्	२२६४	यो विश्वाभि विपश्यति	१७१४	वर्धान्यं पूर्वीः क्षपो	१८०
येषामाबाध ऋग्मिय	१२७२	यो हव्यान्वैरयता	१२४७	वज्राजा सीमनदत्ताः	४५२
येषामिळा घृतहस्ता	११९९	यो होतासीत् प्रथमो	२४००	वसां राजानं वसति	७७२
ये स्तोत्रभ्यो गोभ्रमा०	३८४	रक्षा णो अग्ने तव	६७९	वसिष्वा हि मिषेभ्य	२८
ये ह त्वे ते सहमाना	६९१	रक्षोहणं वाजिनमा	१८२८	वसु न चित्रमहसं	१६७५
यो अग्निं तन्वो३ दमे	१३५७	रथाय नावसुत नो	३०३	वसुरग्निर्वसुश्रवा	९०८
यो अग्निं देववीतये	१८	रथो न यातः शिक्षभिः	३१२	वसुर्वसुपतिर्हि कम्	१३६६
यो अग्निं हव्यदातिभिः	१२३६	रपद्रन्धर्वारण्या च	१५४१	वस्त्री ते अग्ने संदशिः	१०६६
यो अग्निः ऋग्यवाहनः	१५६७	रथिर्न चित्रा सुरो	१३४	वहिष्ठेभिर्विहरन्	७४३
यो अग्निः ऋग्यात् प्रविवेश	१५६६	रथिर्न यः पितृवित्तो	२०५	वाजयज्ञिव नू रथान्	३९७
यो अग्निः सप्तमानुष	१३०७	राजन्तमध्वराणां	८	वाजिन्तमाय सद्यसे	१६७१
यो अग्नीषोमा हविषा	२४७२	रात्रिरात्रिमप्रयातं	२२६९	वाजी वाजेषु धीयते	५४४
यो अध्वरेषु शंतम	२३५	रायस्पृधिं स्वधावोऽस्ति	७९	वाजो नु ते शवस०	८७०
यो अपाचीने तमसि	१८०६	रायो भुध्नः संगमनो	१८८४	वातस्य पत्नमग्नीळिता	१९७०
यो अपस्वा शुचिना दैव्येन	२४२९	वंस्व विश्वा वार्याणि	१२०८	वातस्या श्वो वायोः सखा	२४६२
यो अस्मा अन्नं तृष्ना३	१६४१	वंस्वा नो वार्या पुरु	१२९६	वातोपधूत इषितो	१६५७
यो अस्मै हव्यादातिभिः	१२९०	वद्या सूनो सहसो	१०१७	वायुरस्मा उपामन्यत्	२४६४
यो अस्य पारे रजसः	१७१५	वद्या हि सूनो अस्य०	९७४	वि घ त्वावां ऋतजात	३६६
यो अस्य समिधं वेद	२३९२	वधेन दस्युं प्र हि	७९५	वि जिहीष्व लोकं ऋणु	२३८९
यो देवो विश्वाद्यसु	२३५८	वधैर्दु शंसो अप दूव्यो	२६४	वि ज्योतिषा बृहता	७७५
यो देहो३ अनमयद्	१८०७	वनस्पतिं पवमान	१९९०	वि ते मुञ्चाभि रशनां	२१९८
यो न आगो अभ्येनो	७८४	वनस्पतिरवसृजन्	१९५१	वि ते विश्वगवातजूतासो	९८८
यो नः सनुत्यो अभि	९८२	वनस्पतिरवसृष्टो	२०२३	वि त्वा नर पुरुत्रा	१८३
यो न सुसाक्षाग्रतो	२२२८	वनस्पते रशनया नियूया	२००१	विदन्तीमन्न नरो	१४७
यो नस्त्यायद् दिप्सति	२२२७	वनस्पतेऽव सृजोप	१२६२	वि देवा जरसावृतन्	२३४३
यो नो अग्नि पितरो	२२४६	वनस्पतेऽव सृजा	२०७०, २०८२	विद्या ते अग्ने त्रेधा	१५९०
यो नो अग्ने अररिर्वा	३४६	वनेम पूर्वैरयो	१७४	विद्या हि ते पुरा वयम्	१३८८
यो नो अग्ने दुरेव	१०७२	वनेषु जायुर्मर्तेषु	१४४	विद्वां अग्ने वयुनानि	२०१
यो नो अग्नेऽभिहासति	२५४	वह्नि यशस विदथस्य	११९	वि द्वेषांसीनुहि	९९९
यो नो अश्वेषु वीरेषु	२२४१	वय ते अग्न उक्थैः	७९६	विधेम ते परमे	४०५
यो नो दिप्सददिप्सतो	२२९६	वयं ते अग्ने समिधा	११७५	वि पाजसा पृथुना	५८८
यो नो द्युवे धनमिदं	२३६९	वयं ते अद्य ररिमा	५८५	वि पृक्षो अग्ने मघवानो	२०९
यो नो रस दिप्सति	१२१२	वयं नाम प्र ब्रवामा	१८९६	विप्र विप्रासोऽवसे	१२१९
यो आनुभिर्विभावा	१५२१	वयमग्ने अर्वता	३९४	विप्र होतारमद्रुहं	१३५२
यो म इति प्रवोचति	९३१	वयमग्ने वनुयाम	७८३	वि प्रथतां देवजुष्टं	१९९५
यो मर्त्येष्वसृत ऋतावा	६४७	वयसु त्वा गृहपते	१०४१	विप्रस्य वा स्तुवत.	१२३५
यो मे शता च विंशतिं	९२९	वया इदग्ने अग्नयस्ते	१७१७	विप्रा यज्ञेषु मानुषेषु	१९८०
यो रक्षांसि निजूर्वति	१७१३	वर्च आ धेहि मे तन्वां३	२२१४	विभक्तांसि चित्रमानो	४३
यो विश्वतः सुप्रतीकः	२६२			विभावा देव सुरणः	१७५०

विभूतरातिं विप्र	१२२५	विषं गवां यातुधानाः	१८४५	वैश्वानरोऽङ्गिरसां	२३७७
विभूषन्नग्न उभयो	१०३१	विषाणा पाशान् वि	२३८७	वैश्वानरो न आगमद्	२३७६
वि मे कर्णा पतयतो	१७९२	वि षाह्यग्ने गृणते	७२९	वैश्वानरो न ऊतय	२३७५
वि यदस्थाद्यजतो	३११	विषूचो अश्वान् युयुजे	१६४३	वैश्वानरो महिम्ना	१७२३
वि यस्य ते ज्रयसानस्य	१६६९	विषेण भङ्गुरावतः	१८५०	व्यचस्वतीरुर्विया	२००७, २१२२
वि यस्य ते पृथिव्यां	११२७	विष्णुरिस्था परममस्य	१४८७	व्यनितस्य धनिनः	३५९
वि ये चृतन्ति ऋता	१५१	वीतिहोत्रं त्वा कवे	९२२	व्यश्वस्त्वा वसुविदम्	१२८५
वि ये ते अग्ने भेजिरे	११०८	वीती यो देवं मर्तो	१०८७	व्यस्तन्नाद् रोदसी मित्रो	१७८२
वि यो रजांस्यमिमीत	१७७९	वीलु चिद् दृढहा पितरो	१८६	व्याघ्रेऽह्वयजनिष्ट वीरो	२१८५
वि यो वीरुस्तु रोधन्	१५२	वृञ्जे ह यन्नमसा	१००४	व्रता ते अग्ने महतो	४८४
विराट् सन्नाद् विभ्वीः	१९३५	वृतेव यन्तं बहुभिः	९४१	व्रतेन त्वं व्रतपते	२१९७
वि राय और्णोदुर	१६३	वृषणं त्वा वयं वृषन्	५५१	शकेम त्वा समिधं	२५८
वि लपन्तु यातुधाना	२२८६	वृषायन्ते महे अत्याय	४९८	शग्धि वाजस्य सुभग	५९९
वि वातजूतो अतसेषु	११३	वृषा वृष्णे दुदुहे	१५४०	शमग्निरग्निभिः करच्छं	२४५७
विशां कविं विष्पतिं	७९२; ९४६;	वृषा ह्यग्ने अजरो	१०९२	शमिता नो वनस्पतिः	२०४६
१७३६		वृषो अग्निः समिध्यते	५५०	शश्वत्तमीळते दूत्याय	१९९४
विशां गोपा अस्य	२६०	वेत्था हि वेधो अध्वनः	१०४४	शश्वदग्निर्वध्र्यश्वस्य	१६३५
विशां राजानमद्भुतम्	१३३३	वेदिषदे प्रियधामाय	२९२	शान्तो अग्निः क्रव्याच्छान्त	२३६३
विशो यदङ्गे नृभिः	१६९	वेधा अदृप्तो अग्निः	१६६	शिवस्त्वष्टरिहा गहि	१९७१
विशोविशो वो अतिथिं	१४४२	वेरध्वरस्य दूत्यानि	७००	शिवा नः सख्या सन्तु	७२७
विष्पतिं यद्धमतिथिं	१७४९	वेषि होत्रमुत पोत्रं	१४९३	शिशानो वृषभो यथा	१४०१
वि श्रयन्तामुर्विया	१९४६	वेषि ह्यध्वरीयताम्	७१६, ९६१	शिशुं न त्वा जेन्यं	१५०८
वि श्रयन्तामृतावृधः	१९२३	वेषीद्वस्य दूत्यं	७१७	शीतिके शीतिकावति	१५७०
वि श्रयन्तामृतावृधो	१९११	वैकङ्कतेनेध्मेन	२१६३	शीर पावकशोचिषं	१४७३
विश्वस्मा अग्निं भुवनाय	२४०८	वैश्वानरं कवयो	२४०९	शुक्रः शुशुक्वा उषो	१६४
विश्वस्य केतुर्भुवनस्य	१५९४	वैश्वानरं मनसाग्निं	१७५३	शुक्रेभिरङ्गै रज	४५१
विश्वा अग्नेऽप दहारातीः	११०६	वैश्वानरं विश्वहा	२४१०	शुचिं न यामन्निविरं	१७४०
विश्वा उत त्वया वयं	४४३	वैश्वानरः पविता मा	२३८६	शुचिः पावक वन्धो	४४४
विश्वानि नो दुर्गहा	७९८	वैश्वानरः प्रतनथा नाकम्	१७३८	शुचिः पावको अद्भुतो	१९२०
विश्वासां गृहपतिः	१०९७	वैश्वानर तव तत्	१७२६	शुचिः ऋम यस्मा अत्रिवत्	८१८
विश्वासां त्वा विशां	२७९	वैश्वानर तव तानि	१७७७	शुचिर्देवेष्टवर्पिता होत्रा	१९२६
विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं	१९९१	वैश्वानर तव धामान्या	१७५१	शुनश्चिच्छेपं निदितं	७७३
विश्वे देवा अनमस्यन्	१७९३	वैश्वानरस्य दंसनाभयो	१७५२	शूषेभिर्वृधो जुषाणो	१५२३
विश्वेभिरग्ने अग्निभिः	३७	वैश्वानरस्य विमितानि	१७७८	शृण्वन्तु स्तोमं मरुतः	९९
विश्वेषां ह्यध्वराणाम्	१४९७	वैश्वानरस्य सुमतौ	१७२४	शृतं यदा करसि	१५५८
विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां	६४६	वैश्वानराय धिषणाम्	१७२७	शृतमजं शृतया	२२२५
विश्वेषामिह स्तुहि	१४७२	वैश्वानराय पृथुपाजसे	१७४२	शेषे वनेषु मात्रोः सं	१४०३
विश्वे हि त्वा सजोषसो	९०५; १२८७	वैश्वानराय प्रति	२३८५	शोचा शोचिष्ट दीदिहि	१३९४
विश्वो विहाया अरतिः	२८८	वैश्वानराय मीळहुषे	१७५८	श्रीणन्नुप स्याद्दिवं	१५४

श्रीणामुदारो धरुणो	१५९३	स जातो गर्भो असि	१४८६	स नः शर्माणि वीतये	५७७
श्रुत्कर्णाय कवये	२२०८	स जायत प्रथमः	६३७	स नः सिन्धुमिव नावया	१८९४
श्रुधि श्रुत्कर्णं वह्निभिः	९८	स जायमानः परमे	३१९; १७८१	स नः स्तवान् आ भर	२०
श्रुधी नो अग्ने सद्ने	१५४८	स जायमानः परमे व्योमन्	१८००	सनादग्ने मृणसि	१८४६
श्रुष्टीवानो हि दाशुषे	१०१	स जिन्वते जठरेषु	१७३७	स नो दूराच्चासाश्च	४०
श्रुष्ट्यग्ने नवस्य मे	१२८३	सजोषस्त्वा दिवो नरो	९५४	स नो धीती वरिष्ठया	९१३
श्रया अग्निश्चित्रभातुः	४१०	सजोषा धीराः पदैरनु	१२५	स नो नृणां नृतमो	२३७
श्रेष्ठं यविष्ठ भारत	४४१	सं चेध्यस्त्राग्ने प्र	२३२०	स नो नेदिष्ठं दृढशान	२८२
श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं	८९	सं जागृवद्भिर्जर्ममाण	१६५१	स नो बोधि श्रुधी हवम्	९०९
श्रसित्यप्सु हंसो न	१३२	संजानाना उप सीद	१९९	स नो बोधि सहस्य	३९५
सं यद्विषो वनामहे	८१३	स तत्कृधीषित०	९८४	स नो मन्द्राभिरध्वरे	१०४३
सं यस्मिन्विश्या वसूनि	१५२५	स तु वस्त्राण्यध पेक्षानानि	१४९०	स नो मह्यो अनिमानो	४८
संवत्सरीणं पय	१८४४	स तू नो अग्निर्नयतु	६३६	स नो मित्रमहस्वम्	१३५६
संवसव इति वो	२३७०	स ते जानाति सुमतिं	१८१८	स नो राधास्या भर	११८७
संसमिद्युवसे वृषन्	१७१६	स तेजीयसा मनसा	६१२	स नो रेवत्समिधानः	३९०
सं सीदस्व मह्यो असि	७६	सतो नूनं कवयः सं	१६२३	स नो वस्व उप मासि	१४१७
स आ वक्षि महि न आ	१५०५	स त्वं दक्षस्यावृको	१०२५	स नो विभावा चक्षणिः	९७२
स आहुतो वि रोचते	१८५५	स त्वं न ऊर्जा पते	१२८१	स नो विश्वेभिर्देवेभिः	१४११
स हत्तन्तुं स वि जानाति	१७८९	स त्वं नो अग्नेऽवमो	२४५२	स नो वृष्टिं दिवस्पति	४३७
स इदग्निः कण्वतमाः	१६७०	स त्वं नो अर्वाग्निदाया	१०११	स नो वेदो अमात्यम्	११७१
स इदस्तेव प्रति	९६७	स त्वं नो रायः शिशिहि	५९६	सपर्यवो भरमाणा	१९७७
स इधान उषसो	३९२	स त्वं विप्राय दाशुषे	१३२४	सपर्येण्यः स प्रियो	९४४
स इधानो वसुष्कवि	२४८	स त्वमग्ने प्रतीकेन	१८६०	स पूर्वया निविदा	१८८०
स ईं मृगो अप्यो वनगुं	३३७	स त्वमग्ने विभावसुः	१३४१	सस धामानि परियन्	१६७७
स ईं रंभो न प्रति	९६८	स त्वमग्ने सौभग०	२७१	सस मर्यादा कवयः	१५१८
स ईं वृषाजनयत्	२४३४	स त्वमस्मदप द्विषो	१२१६	सस स्वसूरुषीः	१५१७
स केतुरध्वराणाम्	५१२	स दर्शत श्रीरतिथिः	१६५२	सस होतारस्तामिदीळते	१४०४
सखाय. सं वः सम्यक्चम्	८११	सदासि रणवो यवसेव	१५४४	सस होत्राणि मनसा	१९५७
सखायस्ते विषुणा	८५२	स दूतो विश्वेदामि	६३४	स प्रतन्था सहसा	१८७९
सखायस्त्वा ववृमहे	५००	स दृढे चिदामि नृगति	१२६१	स प्रतन्वन्नवीयसा	१०६२
सखे सखायमभ्या	२४५०	सद्यो अध्वरे रथिरं	११४५	सबन्धुश्चासबन्धुश्च	२४७९
स गृत्सो अग्निस्तरुणः	११३५	सद्यो जात ओषधीभिः	४७७	सबाधो यं जना इमेः	१४४७
स घा नः सूनुः	३९	सद्यो जातस्य दृढशान०	७०२	स बोधि सूरिर्मघवा	४३६
स घा यस्ते ददाशति	५११	सद्यो जातो व्यमिमीत	२०१३; २१२८	स आतरं वरुणमग्न	२४४९
संकसुको विकसुको	२२४०	स न ईळानया सह	१४६४	समज्या पर्वत्याः वसूनि	१६३०
स चन्द्रो विप्र मर्या	३६०	स नः पावक दीदिवो	१९	समस्त्रग्निमवसे	१२२२
स चिकेत सहीयसा	१३०४	स नः पावक दीदिहि	५१६	स मन्द्रया च जिह्वया	१२००
स चित्र चित्रं चितयन्त०	९९२	स नः पितेव सूनवे	९	समन्या यन्त्युप यन्ति	२४२४
स चेतयन्मनुषो	६३५	स न. पृथु श्रवाय्यम्	१०५३	स मर्तो अग्ने स्वनीक	११२२

स मङ्गल विश्वा दुरितानि	११७२	स योजते अरुषा	११९३	स होता सेदु दूयं	७०७
स मातरिश्वा पुरुवार	१८८२	स यो वृषा नरां न	३५४	साकं हि शुचिना शुचि	४१८
समानं नीळ वृषणो	१५१४	सरस्वती साधयन्ती	१९४९	सा ते अग्ने शान्तमा	१४४९
समानं वत्समभि	३४०	स रेवां इव विस्पति	४९	सा शुम्भैर्धुम्निनी बृहद्	१४५०
स मानुषीषु दूळभो	७१३	स रोचयजनुषा	१७२८	साधुर्न गृधुरस्तेव	१८४
स मानुषे वृजने	२८९	सर्वानग्ने सहमानः	२२५९	साध्वपांसि सनता न	१९४७
समास्त्याग्न ऋतवो	२३१९	स वाजं विश्वचर्षणिः	४६	साध्वीमकदैववीतिं	१६१८
सत्वाहर जातवेदो	२३१५	सवितारमुषसमश्विना	९३	साम द्विवर्हा महि	१७६०
समिस्समिस्सुमना	१९५३	स विद्वां आ च पिप्रयो	४४०	सायंसायं गृहपतिर्नो	२२७१
समिद्ध इन्द्र उषसाम्	२०१४	स विप्रश्चर्षणीनां	७११	सास्माकैर्भिरेतरी	१००९
समिद्धमग्निं समिधा	१०२९	स विश्वा प्रति चाकल्प	२१८२	साह्वान्विश्वा अभियुजः	५२३
समिद्धश्चित् समिध्यसे	१६९८	स वेद देव आनमं	७०६	सिञ्चन्ति नमसावतम्	१४३३
समिद्धस्य प्रमहसो	९३६	स व्यस्थादभि	४२२	सिध्रा अग्ने धियो अस्मे	१५३०
समिद्धो अग्न आ वह	१९१८	स श्वितानस्तन्यतू	९८७	सिन्धुर्न क्षोदः प्र	१४३
समिद्धो अग्न आहुत	९३७; २२४४	स संस्तिरो विष्टिरः	२९८	सिन्धोरिव प्राध्वने	१९०१
समिद्धो अग्निः समिधा	२०३७	स सत्पतिः शवसा	१०१४	सीद होतः स्व ङ लोके	५६५
समिद्धो अग्निरश्विना	२०२५	स सन्न परि णीयते	७१४	सीसे सृद्धं नडे सृद्धं	२२४५
समिद्धो अग्निर्दिवि	९३३	ससस्य यद्वियुता	६९९	सुकर्माण सुखो	६६३
समिद्धो अग्निर्निहित	१९४२	स सुक्रतु पुरोहितो	२८६	सुश्रेत्रिया सुगातया	१८८८
समिद्धो अजन्कदरं	२१०६	स सुक्रतुर्यो वि दुरः	११५६	सुजातं जातवेदसं	२३३३
समिद्धो अद्य मनुषो	२००३; २११७	ससृवांसमिव त्मना	५०४	सुदक्षो दक्षैः क्रतुनासि	१६५३
समिद्धो अद्य राजसि	१९३१	सः स्वा कृणोति केतुमा	८१४	सुनिर्मथा निर्मथितः	५६९
समिद्धो विश्वतस्पतिः	१९८१	स हव्यवाळमर्त्यं	५१९	सुप्रीते वयोवृधा	१९६९
समिधाम्नि दुवस्यत	१३४३	सहस्राक्षो विचर्षणिः	२५५	सुवर्हिरग्निः पूषण्वान्	२०४०
समिधा जातवेदसे	११७४	स हि क्रतुः स मर्यः	२३६	सुखमे हि सुपेशसा	१९३६
समिधान उ सन्त्य	१३५१	सहि क्षपावां अग्नी	१७८	सुवीरं रयिमा भर	१०७०
समिधानः सहस्रजिद्	९२५	स हि क्षेमो हविर्यज्ञ	१५७६	सुशंसो बोधि गृणते	९१
समिधा यस्य आहुतिं	९५६	स हि द्युभिर्जनानां	८७२	सुशिल्पे बृहती मही	१९८६
समिधा यो निशितो	१२३७	स हि पुरु चिदोजसा	२७४	सुसंढक् ते स्वनीक	११२९
समिध्यमानः प्रथमानु	६००	स हि यो मानुषा युगा	१०६४	सुसमिद्धाय शोचिषे	१९६४
समिध्यमानो अध्वरे	५४०	स हि विश्वाति पार्थिवा	१०६१	सुसमिद्धो न आ वह	१९०६
समिध्यमानो अमृतस्य	९३४	स हि वेदा वसुधितिं	७०५	सूक्काकं प्रथमम्	२४०४
समिन्धते संकसुकं	२२३७	स हि शर्धो न मारुतं	२७७	सूरो न यस्य दशति०	९६५
समुद्रादूर्भिर्मधुमां	१८९५	स हि ष्मा धन्वाक्षितं	८१७	सूर्यं चक्षुर्गच्छतु	१५५९
समुद्रे त्वा नृमणा	१५९१	स हि ष्मा विश्वचर्षणि	९०६	सेदग्निर्मीरत्य०	१११३
सं मार्गने वर्चसा सृज	२६	स हि सत्यो यं पूर्वं	९१२	सेदग्निर्यो वनुष्यतो	११४
सम्यक् स्रवन्ति सरितो	१९००	सहे पिशाचान्स्सहसा	२२९८	सेदग्ने अस्तु सुभगः	१८१९
स यक्षदस्य महिमानम्	२०६४	स होता यस्य रोदसी	४८९	सेनेव सृष्टां दधाति	१४०
स यन्ता विप्र एषां	५७६	स होता विश्वं परि	३८९	सेमां वेतु वषट्कृतिम्	११८२

सैनानीकेन सुविद्वो	४०८	स्वाष्ट्यं देवस्यामृत	१५५१	होता यक्षत् समिधाग्निम्	२०४८
सो अग्न ईजे शशमे	९४७	स्वाहाकृतान्या गहि	१९३०	होता यक्षत् समिधानं	२०९५
सो अग्निर्यो वसुर्गणे	८०२	स्वाहाग्नये वरुणाय	१९७३	होता यक्षत् समिधेन्द्रम्	२०८४
सो अद्धा दाश्वधरो	१२३२	स्वाहा यज्ञं कृणोतन	१९१७	होता यक्षत् सुपेशसा	२१००
सो चिन्नु भद्रा क्षुमती	१५४२	स्वाहा यज्ञं वरुणः	२०४७	होता यक्षत् सुपेशसोषे	२०५४
सोमस्य मा तवसं	४४७	हरयो धूमकेतवो	१३१३	होता यक्षत् सुबर्हिषं	२०२८
सोमस्य मित्रावरुणा	१४४०	हरिः सुपर्णो दिवम्	२३४९	होता यक्षत् सुरेतसं २१०३; २०५७	
सोमस्यैव जातवेदो	२३१६	हविष्कृणुध्वमा गमद्	१४२४	होता यक्षत् स्वाहाकृती	२१०५
सोमो न वेधा ऋत०	१३३	हविष्पान्तमजरं	२३९७	होता यक्षदग्नि समिधा	२१२९
स्तविष्यामि त्वामहं	९०	हव्यवाकग्निरजर	७९१	होता यक्षदग्निं स्वाहा २०५९; २१४१	
स्तीर्णं बर्हिः सुष्टरीमा	२१०९	हस्ते दधानो नृम्णा	१४६	होता यक्षदग्निमीळ	२१३२
स्तीर्णा अस्य संहतो	४५३	हिरण्यकेशो रजसो	२४४	होता यक्षदिडामिरिन्द्रम्	२०८६
स्तीर्णं बर्हिषि समिधाने	६८५	हिरण्यदन्तं शुचिर्वर्ण०	७६९	होता यक्षदिडेडित	२०५१
स्तुवानमग्न आ वह	२२८४	हिरण्यपाणिं सवितारं	२३६२	होता यक्षदिन्द्रं स्वाहा	२०९४
स्तुणानासो यतस्तुचो	१९२२	हिरण्यरूपं स हिरण्य	२४३१	होता यक्षदीडेन्यम्	२०९७
स्तृणीत बर्हिरानुषग्	१९१०	हुवे वः सुषोत्मानं	४१६	होता यक्षदुषासानक्ता	२१३५
स्तोक्त्वामिन्दुं प्रति	२०२४	हुवे वः सुसु सहसो	९७९	होता यक्षदुषे इन्द्रस्य	२०८९
स्तोमेन हि दिवि देवासो	२४०६	हुवे वास्तस्वनं कविं	१४६७	होता यक्षदोजो न वीर्यं	२०८८
स्पर्हा यस्य श्रियो दशे	११८१	हृणीयमानो अप हि	७७४	होता यक्षद् दुर ऋष्याः	२१३४
स्व आ दमे सुदुघा	२४२८	हृदा पूत मनसा	२२८३	होता यक्षद् दुरो दिशः	२०५३
स्व आ यस्तुभ्यं दम	१९०	होताजनिष्ट चेतनः	४२५	होता यक्षद् दै० २०५५; २०९०, २१३६	
स्वः स्वाय धायसे	४३१	होता देवो अमर्त्यः	५४३	होता यक्षद् बर्हिः	२१३३
स्वग्नयो वो अग्निभिः	१२३०	होता निश्चतो मनो	१६०	होता यक्षद् बर्हिरुणन्नदा	२०५२
स्वग्नयो हि वार्यं	३५	होता यक्षत् तनूनपातम् २०८५; २०९६; २१३०		होता यक्षद् बर्हिषीन्द्र	२०८७
स्वध्वरा करति जातवेदा	१२०७	होता यक्षत् तनूनपात्	२०४९	होता यक्षद् वन २०५८, २०९३, २१०४	
स्वना न यस्य भामास.	१५०३	होता यक्षत् तिस्रो देवी २०५६, २१३७		होता यक्षद् वनस्पतिम्	२१३९
स्वयं यजस्व दिवि देव	१५३२	होता यक्षत् तिस्रो (। इन्द्रपत्नी) २०९१		होतारं स्वा वृणीमहे	८९३
स्वर्णं वस्तोरुषसा	११६२	होता यक्षत् पेशस्वतीः	२१०२	होतारं विश्ववेधसं	९२
स्वर्धन्तो नापेक्षन्त आ	२२२०	होता यक्षत् प्रचेतसा	२१०१	होतारं सप्त जुहो	११६
स्वस्ति नो दिवो अग्ने	१५२७	होता यक्षत् त्वष्टारमविष्टम्	२१३८	होता यक्षद् व्यचस्वती	२०९९
स्वाधो दिव आ सप्त	२०२	होता यक्षत् त्वष्टारमिन्द्रं	२०९२	होता यक्षन्नाराध सं २०५०, २१३१	
स्वाधो३ वि दुरो देवयन्तो	१९७८			होतारं चित्ररथम्	१४८९
				हव्याभ्यग्निं प्रथमं	२४४८

अग्न आर्युषि पवस	२४८४	उभाभ्यां देव सवितः	२४८९	यत्ते पवित्रमर्चिर्वदग्ने	२४८८
अग्निर्ऋषिः पवमानः	२४८५	त्रिभिर्द्वं देव सवित.	२४९०	यत्ते पवित्रमर्चिर्व्यग्ने	२४८७
अग्ने पवस्व स्वपा	२४८६	पुनन्तु मां देवजनाः	२४९१		

सोमसूक्तेषु पठिताः, सोममन्त्रसंग्रहे मुद्रिताश्च अग्निमन्त्राः ।

(ऋ० ९।६६।१९-२१)

(शतं त्रैखानसाः । अग्निः पवमानः । गायत्री ।)

अग्र आरूँषि पवस आ सुवोर्जमिपं च नः ।	
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥	२४८४
अग्निक्रिषिः पवमानः पाश्र्वजन्यः पुरोहितः ।	
तमीमहे महागयम् ॥	२४८५
अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।	
दधद् रयि मयि पोषम् ॥	२४८६

(ऋ० ९।६७।२३-२७)

(पवित्र आङ्गिरसो वा वासिष्ठो वा उभौ वा । पवमानोऽग्निः । गायत्री, २४९१ अनुष्टुप् ।)

यत् ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा । ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥	२४८७
यत् ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः ।	
ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥	२४८८
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।	
मां पुनीहि विश्वतः ॥	२४८९
त्रिभिष्ट्वं देव सवितुर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।	
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥	२४९०
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।	
विश्वे देवाः पुनीत मां जातवेदः पुनीहि मां ॥	२४९१

दैवत-संहितान्तर्गत-अग्निदेवतायाः गुणबोधक-पदानां सूची ।

अंशः त्वम् २, १, ४; ३७२
 अक्तः युभिः ६, ४, ६; ९७६ । ६, ५, ६;
 ९८४
 अक्र १, १८९, ७, ३६७
 अक्षमि शशं चक्षाण १, १२८, ३; २८५
 अक्षितः ८, ७२, १०, १४३३
 अगृभीतशोचिः ८, २३, १, १२७०
 अग्रयः [बहुवचनम्] १, १२७, ५, २७६
 अग्रयः अग्निभ्यः वरम् ७, १, ४; ११०३
 अग्निः.. सामान्येन सर्वत्र निर्देष्टः ।
 अग्निः अन्यान् अग्नीन् अति अस्ति
 ७, १, १४, १११३
 अग्निः अग्निभिः सजोषा ७, ३, १; ११२४
 अग्निः ह नाम ध्यायि दन् अपस्तमः,
 यः भस्मना दत्ता वना सं युवते
 १०, ११५, २, १६६७
 अग्नौ प्रविष्टः चरति अथर्व ४, ३९,
 ९; २२८२
 अगदः नयम् अथर्व ५, २९, ६-९,
 २३१०-२३१३
 अग्रजः [त्वष्टा] ९, ५, ९, १९८९
 अग्रयावा देवानाम् १०, ७०, २, १९९३
 अग्रियः ६, १६, ४८; १०८९ । १, १३,
 १०; १९१५
 अङ्कयन् ६, १५, १७; १०३९
 अङ्गिराः १, ३१, १७; ६६ । १, ७४, ५;

२१९ । ४, ३, १५; ६८० । ४, ९, ७;
 ७१८ । ५, ८, ४; ८२४ । ५, १०, ७;
 ८४१ । ५, ११, ६, ८४७ । ५, २१, १;
 ८९५ । ६, २, १०, ९६१ । ६, १६, ११;
 १०५२ । ८, ६०, २; १३९० । ८, ७४, ११;
 १४५२ । ८, ८४, ४; १४५७ ।
 ८, १०२, १७, १४७९
 अङ्गिरसः [देवताविशेषः] अथर्व०
 ३, २१, ८, २३६२
 अङ्गिरा ऋषिः १, ३१, १; ५०
 अङ्गिरा ऋषिः प्रथमः १, ३१, १; ५०
 अङ्गिरसां ज्येष्ठः १, १२७, २; २७३
 अङ्गिरस्तमः १, ३१, २; ५१ । १, ७५, २;
 २२५ । ८, २३, १०; १२७९ ।
 ८, ४३, १८, १३२७ । ८, ४४, ८; १३५०
 अच्छिद्रोतिः १, १४५, ३; ३३५
 अजः अथर्व० ४, १४, ६; २२२२
 अजरः १, ५८, २; १११ । १, ५८, ४,
 ११३ । १, १२७, ९, २८० । १, १४४, ४;
 ३२९ । १, १४६, २, ३३९ । ५, ४, २,
 ७९१ । ५, ६, ४; ८०४ । ५, ७, ४,
 ८१४ । ६, २, ९; ९६० । ६, ४, ३;
 ९७३ । ६, ५, ७, ९८५ । ६, १५, ५;
 १०२७ । ६, १६, ४५; १०८६ ।
 ६, ४८, ३, १०९२ । ७, १५, १३;
 ११८९ । ८, २३, ११; १२८० ।

८, २३, २०; १२८९ । १०, ११५, ४;
 १५६९ । १०, ४६, ७; १६०७ ।
 ३, २६, २; १७२८ । ६, ८, ५; १७८४ ।
 १०, ८७, २१; १८४८ । १०, ८८, ३;
 २३९९
 अजरः जूर्यत्सु वनेषु ३, २३, १; ६२७
 अजराः १, १२७, ५; २७६
 अजस्रः १०, ६, २; १५२१ । अथर्व०
 ७, ७८, १; २१९८ । १९, ३, २; २२०६
 अजिरः ७, ११, २; ११६७ । अथर्व०
 ३, ४, ३; २१६०
 अजिरशोचिः ८, १९, १३, १२३६
 अजुर्यः १, ६७, १; १४४ । २, ८, २;
 ३९८ । ३, ७, ४, ४९३ । १०, ८८, १३;
 २४०९
 अजुर्याः [देवीर्द्धारः] २, ३, ५; १९४६
 अजन् मतीनां कृवरम् वा० य०
 २९, १; २१०६
 अज्ञानः सप्त होतृभिः ३, १०, ४; ५१२
 अतन्द्रः १, ७२, ७, २०१ । ८, ६०, १५;
 १४०३
 अतन्द्रः दूतः ७, १०, ५; ११६५
 अतिथिः १, ४४, ४; ८९ । १, ५८, ६;
 ११५ । १, १२८, ४; २८६ । २, २, ८;
 ३९२ । २, ४, १; ४१६ । ५, १, ८;
 ७६२ । ५, ४, ५; ७९४ । ५, ८, २; ८२२ ।

६, ४, २; ९७२ । ६, १५, १; १०२३ ।
 ६, १५, ४, १०, १०-२६ । ६, १५, ६;
 १०२८ । ६, १६, ४२; १०८३ ।
 ८, १०३, १०; १२६६ । ८, १०३, १२,
 १२६८ । ८, ४४, १; १३४३ ।
 ८, ७४, १; १४४२ । ८, ७४, ७; १४४८ ।
 ८, ८४, १; १४५४ । १०, ९१, २,
 १६५२ । १०, १२२, १, १६७५ ।
 ३, ३, ८, १७४९ । ३, २६, २; १७५४
 अतिथिः प्रियः- ६, २, ७, ९५८
 अतिथिः शिवः- ७, ९, ३, ११५७
 अतिथिः जनानाम्- १०, १, ५; १४८९ ।
 ६, ७, १; १७७३
 अतिथिः मानुषाणाम्- १, १२७, ८; २७९
 ४, १, २०; ६१६ । ८, २३, १५; १२९४
 अतिथिः, विशाम्- ३, २६, २, १७२८
 अत्यः ३, ७, ९; ४९८
 अत्रिः २, ८, ५; ४०१ ।
 अथर्षुः ७, १, १; ११००
 अद्वयः १, ७६, २, २३० । १, १२८, १,
 २८३ । २, ९, ६; ४०८ । ५, १९, ४;
 ८८९ । ८, ४४, २०; १३६२ ।
 ६, ७, ७; १७७९ । ४, ४, ३, १८१५ ।
 १०, ८७, २४; १८५१
 अद्वयव्यवहृतप्रमतिः २, ९, १, ४०३
 अदाभ्यः १, ३१, १०; ५९ । ३, ११, ५,
 ५२२ । ७, १५, १५, ११९१ ।
 १०, ११, १; १५४० । १०, ११८, ६;
 १८५८ । ९, ५, २; १९६५ । अथर्वं
 ३, २१, ४; २३५८
 अदितिः १, ९४, १५; २७० । २, १, ११,
 ३७९ । ७, ९, ३; ११५७ । ८, १९, १४;
 १२३७ । १०, ११, १, १५४१
 अदितिः विश्वेषां यज्ञियानाम् ४, १, २०,
 ६४६
 अदितेः गर्भः क्र. प्रैषं २; २१३०
 अद्विपितः ४, ३, ३; ६६८
 अद्विपितः १, ६९, ३; १६६
 अद्भुतः २, ७, ६; ४४६ । ५, १०, २,

८३६, ५, २३, २, ९०४ । ६, १५, २,
 १०२४ । ८, ४३, २४; १३३३ । ६, ८, ३,
 १७८२ । १, १४२, ३; १९२०
 अद्भुतक्रतुः ८, २३, ८; १२७८
 अस्वत्थलद्वा ६, ४, ४; ९७४
 अद्भुत-अद्भुक् ३, २२, ४; ६२६ ।
 ६, ५, १; ९७९ । ६, ११, २; १००१
 ६, १५, ७, १०२९ । ८, ४४, १०;
 १३५२
 अद्भुतः [मरुतः] १, १९, ३; २४४०
 अद्भुतः सूतः १०, २०, ७, १५७७
 अद्भुतवाक् ६, ५, १; ९७९
 अद्भुत (यन्तम् द्वि०) ३, २९, ५,
 ५६२
 अद्भुताविन्-वी ३, २, १५; १७४१
 अद्भुतवैष्यः १०, १२२, १; १६७५
 अधिप अथर्वं ६, ११९, १, २३८४
 अधिपतिः । अथर्वं ३, २७, १, २१६१
 अधिपतिः वनस्पतीनाम् । अथर्वं
 ५, २४, २; २१६६
 अध्याक्षः धर्मणाम्- ८, ४३, २४; १३३३
 अधिगुः ३, २१, ४, ६२१ । ५, १०, १,
 ८३५ । ८, ६०, १७, १४०५ ।
 अध्वरश्रीः १, ४४, ३, ८८
 अध्वरस्य इष्कर्ता १०, १४०, ५, १६८८
 अध्वरस्य जारः १०, ७, ५; १५३१
 अध्वरस्य प्रणेता ३, २३, १; ६२७
 अध्वरस्य राजा ४, ३, १; [रुद्रः] (साम)
 १, १, ७, ७
 अध्वराणां अनीकः १०, २, ६; १४९७
 अध्वराणां केतुः ३, १०, ४, ५१२
 अध्वराणां गोपा १, १, ८; ८
 अध्वराणां चेतनः ३, ३, ८, १७४९
 " पतिः १, ४४, ९; ९४
 " रथीः १, ४४, २; ८७
 " रथ्यम् ६, ७, २; १७७४
 " सन्नाट् १, २७, १, ३८
 " हस्कर्ता ४, ७, ३, ६९५
 अध्वरीयसि २, १, २, ३७०
 अध्वर्युः २, ५, ६; ४३० । ३, ५, ४; ४७३
 अध्वर्युः त्वम् १, ९४, ६; २६१

अनङ्गवान् अथर्वं १२, २, ४८, २२६१
 अनभिस्लातवर्णः २, ३५, १३; २४३४
 अनवद्यः १, ३१, ९, ५८
 अनाष्टः ७, १५, १४; ११९०
 अनाष्टाष्टामः [मरुतः] १, १९, ४;
 २४४१
 अनाष्टव्यः अथर्वं ७, ८४, १; १८६६
 अनानतः ७, ६, ४; १८०६
 अनिधमः शुक्रैभिः शिकभि दीदाय
 २, ३५, ४; २४२५
 अनिमानः १, २७, ११, ४८
 अनिष्टव्यविधिः ५, ७, ७; ८१७
 अनिष्टव्यः ३, २९, ६; ५६३
 अनीकम् उत चारु २, ३५, ११; २४३२
 अनुमाद्यः कृष्टीनाम् ७, ६, १, १८०३
 अनुषत्यः [सत्यः] ३, २६, १; १७५३
 अनूनः १, ४६, १; ३३८ । २, १०, ६;
 ४१४ । ४, २, १; ६६५ ।
 अनूनवर्चाः १०, १४६, २; १६८५
 अनेहाः ३, ९, १; ५००
 अन्तमः नः भव ५, २४, १; ९०७
 अन्तमः स्तोत्रभ्यः भव ३, १०, ८, ५१६
 अन्तरः १०, ५३, १, १६१६
 अन्तर्धिः देवानाम् अथर्वं १२, २, ४४
 २२५७
 अन्ति चित् सन् ८, ११, ४, १२१७
 अन्नम् अस्य घृतम् २, ३५, ११; २४३२
 अन्नपतिः अथर्वं १९, ५५, ५; २२७३
 अन्नाद्य अथर्वं १९, ५५, ५, २२७३
 अन्नवृध् (धम् द्वि०) १०, १, ४; १४८८
 अन्नियत् ४, २, ७; ६५३
 अपराजित वा० य० २८, २; २०८५
 अपरीवृतः शिरिणायां चिद्वक्तुना-
 २, १०, ३; ४११
 अपस्तमः १०, ११५, २; १६६७
 अपाम् उपस्थे सीदत् १०, ४६, १;
 १६०१
 " गर्भः १, ७०, ३; १७६ ।
 ३, १, १२-१३; ४५८-५९ ।
 ३, ५, ३; ४७२

अपाम् गर्भं प्र० आ विवेश ७,९,३;
११५७

” नपात् १,१४३,१, ३१८।
१०,८,५, १५३८
अपां नपात् [देवता] २,३५,१-१५;
२४२२-३६
अपां सधःस्थे-स्थः १०,४६,२, १६०२
अपाकः ६,११,४, १००३। ६,१२,२,
१००७

अपाकचक्षाः ८,७५,७, १३७७

अपाद् ४,१,११, ६३७

अपूर्व्यः ३,१३,५, ५७८

अप्तरः ३,२७,११, ५४७

अप्यः १,१४५,५, ३३७

अप्रतिष्कृतः ३,२,१४, १७४०

अप्रमृष्टः २,३५,६, २४२७

अप्रयुच्छन् १,१४३,८, ३२५। ३,५,६,
४७५। १०,८८,१६; २४१२। अथर्व०
२,६,३, २३२१

अप्रायुः दिवातरात् १,१२७,५, २७६

अप्रोषिवान् ८,६०,१९; १४०७

अप्सरसौ (सः)। अथर्व० ६,११८,१,
२३८१

अप्सुजाः ८,४३,२८; १३३७

अप्सु श्रितः ३,९,४; ५०३

अप्सुषद् ३,३,४; १७४६। अथर्व०
१२,२,४; २२३२

अभिद्युः ८,७५,६, १३७८

अभिमाति. जनानां १०,६९,५; १६२९

अभिमाति जित् अथ० २,६,३, २३२१

अभिशास्त्रिचातनः ३,३,६, १७४७

अभिशास्त्रिपा अथर्व० ४,३९,९; २२८२

अभिशास्त्रिपावा ७,११,३, ११६८

अभिशास्त्रिपावा यज्ञानाम् १, ७६, ३;
२३१

अभिज्ञोक अथर्व० १,२५,३, २२७७

अभित्रीः १,९८,१; १७२४

” अध्वराणाम् ८,४४,७; १३४९

अभिश्चसन् एति १,१४०,५; २९६

अभिष्टिः [इंद्र.] वा० य० २७,३८;
२०१६

अमल्यः १,४४,१, ८६। १,४४,११,
९६। १,५८,३, ११२। १,७०,४;
१७७। ३,१०,९; ५१७। ३,११,२;
५१९। ३,२४,२, ५२८। ३,२७,५-७;
५४१-४३। ४,१,१, ६३१। ४,८,१;
७०४। ५,१४,१-२; ८६०-६१।
५,१८,१-२, ८८१-८२। ६,३,६,
९३८। ६,१२,३; १००८। ६,१६,६,
१०४७। ७,१,२३, ११२२।
७,१५,१०, ११८६। ८,११,५; १२१८।
८,१९,३; १२२६। ८,१९,२४;
१२४७। ८,१०२, १७; १४७७।
१०,२१,४; १५८४। १०,७९,१;
१६३७। १०,१२२, ३, १६७७।
१०,१४०, ४; १६८७। ३,२,११;
१७३७। ६,९,४-७, १७९०-९३।
१०,८७,२१, १८४८। १०,११८,६;
१८५८। वा० य० २१,१५; २०४०।
२८,३; २०८६। २८,१७, २०९८।
अथर्व० ७,८४,१, १८६६

अमित्रदम्भन ४,१५,४; ७५२

अमीवचातनः १,१२,७; १६। अथर्व०
१,२८,१; २२९३

अमूरः १,१४१,१२, ३१६। ३,२५,३,
५३४। ३,१९,१; ६१०। ४,६,२,
६८३। ४,११,५, ७३२। ६,१५,१७,
१०३९। ७,९,३; ११५७। ८,७४,७,
१४४८। १०,४,४, १५०९।
१०,४६,५; १६०५। ४,४, १२,
१८२४। ऋ० प्रैष ४; २१३२

अमृक्तः ३,११,६; ५२३

अमृतः १,२६,९; ३६। १,४४,५,
९०। १,५८,१; ११०। १,६८,४;
१५७। १,७७,१, २३४। २,१०,१२;
४०९-१०। ३,१, १८; ४६४।
३,२९,५; ५६२। ३,२९,१३; ५७०।

अमृतस्य केतुः ६,७,६; १७७८

” नामिः ३,१७,४; ६०३

” रक्षिता ६,७,७; १७७९।
६,९,३; १७८९

अमृतानां प्रथमः १,२४,२; २७

अमृतानि सत्रा चक्राः विश्वा १,७२,१;
१९५

अमे देवान् धात् १,६७,३; १४६

अयोर्वष्टः १०,८७,२; १८२९

अरम् विश्वसौ १,६६, ५; १३८

अरंक्रुत्य १०,५१,५; १६१३

अरतिः १,१२८,६; २८८। ३,१७,४;
६२३। ४,१,१; ६३१। ४,२,१;
६४७। ७,१६,१; ११९२। ६,१५,४;
१०२६। ८,१९,१; १२२४। ८,१९,२१;
१२४४। १०, २, १; १४९९।
१०,३,६; १५०४। १०,४५,७,
१५९५। १०,४६,४; १६०४

अरतिः अक्तोः ६,३,५; ९६७

” दिवः इव २,२,२, ३८६।

” दिवस्पृथिव्योः २,२,३, ३८७।

१०,३,७; १५०५। २,५,१; १७९४

” रोदस्यो... १,५९,२; १७१८

३,१४,७; ५८७। ३,२०,२, ६१६।
४,२,१; ६४७। ४,२, ९; ६५५।
४,३,३; ६६८। ४,११,५; ७३२।
५,१८,५, ८८५। ६,४,२; ९७२।
६,५,५; ९८३। ६,१५,६; १०२८।
६,१५,८; १०३०। ६,४८,१, १०९०।
७,४,४; ११३७। ७,१६,१, ११९२।
८,२३,१९, १२८८। ८,७१,११;
१४१९। ८, ७४, ५; १४४६।
१०,४५,७; १५९५। १०,९१,११;
१६६१। ३,३,१; १७४२। ४,५,२;
१७५९। ६,७,४; १७७६। १,१३,५;
१९१०। १०,७०,११; २००२

अथर्व० १२,२,३३; २२४६

अमृतः वयोमिः १०,४५,८; १५२६

अमृतं म आसन् (आस्ये) ३,२६,७;
१७५६

अमृतस्य केतुः ६,७,६; १७७८

” नामिः ३,१७,४; ६०३

” रक्षिता ६,७,७; १७७९।
६,९,३; १७८९

अमृतानां प्रथमः १,२४,२; २७

अमृतानि सत्रा चक्राः विश्वा १,७२,१;
१९५

अमे देवान् धात् १,६७,३; १४६

अयोर्वष्टः १०,८७,२; १८२९

अरम् विश्वसौ १,६६, ५; १३८

अरंक्रुत्य १०,५१,५; १६१३

अरतिः १,१२८,६; २८८। ३,१७,४;
६२३। ४,१,१; ६३१। ४,२,१;
६४७। ७,१६,१; ११९२। ६,१५,४;
१०२६। ८,१९,१; १२२४। ८,१९,२१;
१२४४। १०, २, १; १४९९।
१०,३,६; १५०४। १०,४५,७,
१५९५। १०,४६,४; १६०४

अरतिः अक्तोः ६,३,५; ९६७

” दिवः इव २,२,२, ३८६।

” दिवस्पृथिव्योः २,२,३, ३८७।

१०,३,७; १५०५। २,५,१; १७९४

” रोदस्यो... १,५९,२; १७१८

अरतिः विश्वेषां वसूनां १०, ५८, ७, ११६
अरपाः [वायुदेवता] ८, १८, ९, २४५७
अरित्राः दमाम् १०, ४६, ७; १६०७
अरुषः ३, ७, ५, ४९४ । ६, २९, ६,
५६३ । ४, १५, ६; ७५४ । ५, १२, ६;
८५३ । ६, ३, ६, ९६८ । ६, ४८, ६;
१०९५ । १०, १, ६; १४९० । ६, ८, १;
१७८०

अरुषः कृष्णासु ३, १५, ३, ५९०
" वनेषु ५, १, ५; ७५२
अरुषं भरिभ्रत १०, ४५, ७, १५९५
अरुषस्तपः ३, २९, ३; ५६०
अर्कः त्रिधातुः ३, २६, ७; १७५६
अर्चलूमासः १०, ४६, ७, १६०७
अर्चिः अथर्वं १, २५, २; २२७६
अर्चिषा असौ अस्यवै ५, १७, ३; ८७८
अर्णवः ३, २२, २, ६२४ । १०, ११५, ३;
१६६८
अर्थं हि अस्य तरणिः ३, ११, ३, ५२०
अर्थं माह्ला देवस्य देवस्य १०, १, ५,
१४८९
अर्थः ४, १, ७; ६३३ । ४, २, १२; ६५८ ।
७, ८, १, ११४९ । १०, ११५, ५;
१६७२ । १०, १९१, १; १७१६ ।
४, ४, ६; १८१८ । २, ३५, २; २४२३
अर्थः मनीषा १, ७०, १; १७४
अर्थः विशाम् १०, २०, ४; १५७४
अर्थमा ५, ३, २; ७८०
अर्थमा त्वम् २, १, ४; ३७२
अर्थमा त्वया सुदातुः १, १४१, ९, ३१३
अर्वन् अर्वा ६, १२, ६; १०११
अर्वतीः तमिद् गच्छन्ति १, १४५, ३;
१३५
अर्हन् १, ९४, १; २५६ । १०, २, २;
१४९३ । २, ३, १; १९४२
अवनः ८, ७२, १०-१२; १४३३-३५ ।
अवमः, बहूनाम् २, ३५, १२, २४३३
अवर्त्रः ६, १२, ३; १००८
अवसि पुत्रो मातरा विचरन् उप-

दै० [अग्निः] ३१

१०, १४०, २, १६८५
अवातः ६, १६, २०; १०६१
अवि. (अव्यांरामाद्याम्) अथ०
१२, २, १९; २२४५
अविता ३, १९, ५; ६१४ । १०, ७, ७,
१५३३
" ग्रामेषु १, ४४, १०; ९५
" यज्ञस्य प्र- ३, २१, ३, ६२०
अविष्यत् अनुद्वेष्टता धन्वना इत्-
१०, ११५, ६; १६७१
अवृकः ६, १५, ३; १०२५
अव्यथः २, ३५, ५; २४२६
अशीर्षः ४, १, ११; ६३७
अश्रितः ४, ७, ६; ६९८
अश्वः १०, १८८, १, १८६३
अश्वदावन् - वा ५, १८, ३; ८८३
अश्विन् - श्री ७, १, १२; ११११
अश्विना [देवता] ७, ४१, १; २४३७
असन्दिदतः ४, ४, २; १८१४
असितः अथ० ३, २७, १; २१६१
असिन्वन् जिह्वया वनानि अत्ति
१०, ७९, २; १६३८
असुं यन्, स्वम्- १०, १२, १,
१५४९
असुरः ४, २, ५; ६५१ । ५, १२, १,
८४८ । ५, १५, १, ८६६ । ७, ६, १;
१८०३ । ७, २, ३; १९७६, अथर्व०
५, २७, १, २०७२ । वा० य० २७, १२;
२०६१
असुरहन् - हा ७, १३, १, १८१०
" विपश्चिताम्- ३, ३, ४; १७४५
अस्ता ४, ४, १, १८१३
अस्तुतः ६, १६, २०; १०६१
अस्तुतयज्वा ८, ४३, १; १३१०
अस्नाता १०, ४, ५, १५१०
अस्यु ६, ४८, २; १०९१ । ७, १५, ८;
११८४ । ८, १९, ८, १२३१ ।
१, १४२, १०, १९२७
अस्मिन् १, १३, ९; १९१४ । ५, ५, ८

अस्मेमा १०, ८, २; १५३५
अस्मेमाणः ३, २९, १३, ५७०
अहिः १, ७९, १; २४४
अहिंस्यमानः १, १४१, ५; ३०९
अहोरात्रे विभ्रत् अथ० १२, २, ४९;
२२६२
अह्यः ८, ६०, १६; १४०४
अह्याणः ४, ४, १४; १८२६
आकृतिः [देवता] अथ० १९, ४, २-४;
२२१०-२२१२
आद्युगीवसु ८, ६०, २०; १४०८
आजुह्वानः ७, १६, ३; ११९४ ।
१०, ११०, ३; २०१० । वा० य०
२८, ३; २०८६ । २९, २८; २१२०
" [इन्द्रः] वा० य० २०, ३८;
२०१६
आततान यः भालुना पृथिवीम्, ग्राम्
रोदसी, अन्तरिक्षम् - १०, ८८, ३;
२३९९
आतनिः २, १, १०; ३७८
आदित्यः [वरुणः] ४, १, २; २४४९
आदित्याः [देवता] अथ० ३, २७, १;
२१६१
आदेवः मर्त्येषु - ४, १, १; ६३१
आष्टवः २, १, ९, ३७७
आश्रयः चित् पिता १, ३१, १४; ६३
आनवः ८, ७४, ४; १४४५
आपः [देवता] ४, ५८, १-११,
१८९५-१९०५
आपप्रियवान् रोदसी अन्तरिक्षम्
१, ७३, ८; २१२
आपिः, नेदिष्ठः १, ३१, १६, ६५ ।
८, ६०, १०; १३९८
आपृच्छयः १, ६०, २; १२०
आप्यम्, नेदिष्ठम् ७, १५, १; ११७७
आबाधः ८, २३, ३, १२७२
आयजिः ८, २३, १७; १२८६
आयजिष्ठः २, ९, ६; ४०८ । १०, २, १,
१४९२ *

आयवे कतिधाचित्

शयुः १, ३१, २; ५१

आयु १०, २०, ७; १५७७ ।

१०, ४५, ८; १५९६

आयुधामिमानः ५, २, ३; ७६९

आयो युवानः ४, १, ११; ६३७

आविष्टयः, आसुआसु १, ९५, ५; १८७२

आवृणानः, अपः देवानाम् ४, १, २०;

६४६

आशवः उपयुज्यन्ते अस्य १, १४०, ४;

२९५

आशुः ४, ७, ४; ६९६

आशुहेमः २, ३५, १; २४२२

आशुषवन् ४, ३, ३; ६६८

आसन् ६, ७, १; १७७३

आसते देवास अधिनाकस्य रोचने

दिवि [मरुतः] १, १९, ६; २४४३

आसुरः ३, २९, ११; ५६८

आस्यं चक्रिरे, त्वां आदित्यासः

२, १, १३; ३८१

आहावः, महाम् ६, ७, २; १७७४

आहुतः २, ८, २; ३९८ । ३, २४, ३;

५२९ । ५, ११, ३; ८४४ । ५, २८, ५;

९३७ । ६, १६, ३४; १०७५ ।

८, १९, २५; १२४८ । ८, ४३, १३;

१३२२ । ८, ७५, ३; १३७५ ।

१०, ११८, ३; १८५५ । १०, ११८, ४;

१८५६ । १, १६, ३; १८८१ । अथ०

१२, २, १८; २२४४

आहुतः घृतेभिः २, ७, ४; ४४४

आस्यानि सप्त तव अथ० ४, ३९, १०,

२२८३

ह्रडाः [देवता] वा० य० २०, ३८, ५८;

२०१६, २०२८ । २१, १४, ३२, २०३९;

२०५१ । २७, १४; २०६३ । २८, ३, २६;

२०८६, २०९७ । २९, २८; २१२०

अ० प्रैष ४, २१३२ अथर्व० ५, २७, ४;

२०७५

हडा (ह्ला) [देवता] अथ० ५, २७, ९;

२०८०

ह्रदः १, ६६, ९; १४२

ह्रधानः १, ७९, ५; २४८

ह्रधानः आग्निभिः विश्वेभिः ६, १०, २;

९९४ । ६, १२, ६; १०११

ह्रधानः देवेभिः ६, ११, ६; १००५

ह्रधमः [अग्निदेवता] १, १३, १; १९०६ ।

१, १४२, १; १९१८ । १, १८८, १

१९३१ । २, ३, १; १९४२ । ३, ४, १;

१९५३ । ५, ५, १; १९६४ । ७, २, १;

१९७४ । ९, ५, १; १९८१ । १०, ७०, १;

१९९२ । १०, ११०, १; २००३ ।

वा० य० २८, १; २०८४ । अथ०

५, १२, १; २००३

हनः १०, ३, १; १४९९

हनस्य हनः २, १, ३; ३७१

हन्तवः अथ० ७, १०९, ६; २३७०

हन्तुः अन्धस्य १०, ११५, ३; १६६८

हन्तुः ९, ५, ९; १९८९

हन्द्रः ९, ५, ७, ९; ९८७, ९८९; अथ०

१२, २, ७, २२६०; वा० य० २०, ३६,

४०-४६; २०१४; २०१८-२०२४ ।

२८, १-७, ९-११; २०८४-९० ।

२०९२-९४ । २८, २४-३४, २०९५-

२१०६ । अथ० १९, ५५, ६; २२७४ ।

१, ७, ३; ४-७; २२८६, २२८७-२२९०

हन्द्रः [देवता] १, १४२, १२-१३;

१९२९-३० । ७, ४१, १; २४३७ ।

अथ० ५, २९, १०, २३१४ । वा० य०

२०, ५६-६६; २०२६-२०३६ । अथ०

१, ७, ३; २२०६ । ३, २१, ८; २३६२

हन्द्र दाशुषे मर्त्याय ५, ३, १, ७७९

हन्द्रः त्वम् २, १, ३; ३७१

हन्धानः १, १४३, ७; ३२४

हरज्यन्, जन्तुभिः १०, १४०, ४; १६८७

हर्षः ७, १३, ३; १८१२

हलः [अग्निदेवता] १, १३, ४; १९०९ ।

१, १४२, ४; १९२१ । १, १८८, ३;

१९३३ ।

२, ३, ३; १९४४ । ३, ४, ३; १९५५ ।

५, ५, ३; १९६६ । ७, २, ३; १९७६ ।

९, ५, ३; १९८३ । १०, ७०, ३; १९९४ ।

१०, ११०, ३; २००५ । अथ० ५, १२, ३;

२००५

हलस्पदे हषयन् १०, ९१, १; १६५१

हलस्पदे न्यसीदः ६, १, २; ९४०

हला [देवता] पश्य 'देव्यः तिस्रः'

१, १४२, ९; १९२६

हला त्वं शतं हिमा २, १, ११; ३७९

हलायास्पुत्रः ३, २९, ३; ५६०

हषः सहस्रिणीः दधत् १, १८८, २; १९३२

हषयन् ६, १, २, ८; ९४०, ९४६

हषितः १०, ११०, ३; २०१० ।

३, ४, ३; १९५५

हषितः वा० य० २९, २८, ३४

२१२०, २१२६

हषितः देवेभिः ३, ३, २; १७४३

हषिरः, यज्ञे ३, २, १४; १७४०

हृष्टयः तस्मिन् सन्ति १, १४५, १;

३३३

हृष्टिः १, १४३, ८, ३२५ । ६, ८, ७;

१७८६

हृत्तयन्ति पर्वतान् तिरः समुद्रमर्णवम्-

[मरुतः] १, १९, ७; २४४४

हृद्धानः अथ० ५, २, ७; २०७५

हृदितः वा० य० २८, २६; २०९७

हृदितः, देवैः [हन्द्रः] वा० य०

२०, ३८; २०१६ । २८, ३; २०८०

हृदैन्यः वा० य० २८, २६, २०९७

हृद्व्यः १, १, २; २ । १, १२, ३; १२ ।

१, ७५, ४; २२७ । २, १, ४; ३७२ ।

३, ५, ६, ९; ४७५, ४७८ । ३, ९, ८;

५०७ । ३, २७, ४; ५४० । ३, २९, ७;

५६४ । ३, १७, ४; ६०३ । ४, ७, २;

६९४ । ६, १, २; ९४० । ६, १३, १;

१०१२ । ६, १५, २८; १०२४, १०३० ।

७, १५, १०; ११८६ । ८, ११, १;

१२१४ । ८, ४४, ७; १३४९ ।

८, ७४, ५, १४४६ । १०, ३, ४;
१५०२ । ३, २६, २; १७२८ ।
१, १८८, ३; १९३३ । १०, ११०, ३;
२०१० । वा० य० २१, १४, २०३९ ।
२८, २६; २०९७ । २९, २८;
२१२० ।
ईक्ष्यः अध्वरेषु - ४, ७, १; ६२३
५, २२, १; ८९९ । ८, ११, १०, १२२३ ।
८, ६०, ३; १३९१
ईक्ष्यः दिवेदिवे ३, २९, २; ५५९
ईक्ष्यः विष्णु - ६, २, ७; ९५८
ईक्षितः १, १३९, ७; २९१ ।
१, १३, ४; १९०९ । १, १४२, ४;
१९२१ । ५, ५, ३; १९६६ । ऋ० प्रैष
४, २१३२ ।
ईक्षेयः १, ७९, ५; २४८ । ३, २७, १३;
५४९ । ५, १४, ५; ८६४ । ७, ९, ४;
११५८ । १०, ४६, ९; १६०९ । ७, २, ३;
१९७७ । १०, ११८, ३; १८५५ ।
९, ५, ३; १९८३ ।
ईवान् ४, १५, ५, ७५३ । ४, ४, ६; १८१८
ईशानः ७, १५, ११; ११८७ । ७, ६, ४;
१८०६
ईशिषे वार्यस्य दान्नस्य - ८, ४४, १८;
१३६०
ईशे क्षत्रियस्य बृहत् - ४, १२, ३,
७३६
ईशे देववीतेः विश्वस्य - १०, ६, ३;
१५२२
ईशे वाजस्य रायश्च परमस्य ४, १२, ३;
७३६
ईशे सुवीर्यस्य सौभगस्य रायः
स्वपत्यस्य गोमतः, वृत्रहथानाम् -
३, १६, १, ५९४
उक्थी वा० य० २८, ३३; २१०४
उक्थ्यः १, ७९, १२; २५५ । ३, १०, ६
५१४ । ३, २, १३; १७३९ । ३, २, १५;
१७४१ । ३, २६, २; १७५४ । अथ०
१२, २, १०; २२३६

उक्थ्यः देवानाम् - ५, २६, ६; ९२५
उक्षत् - न १, १२२, ४; १६७८
उक्षमाणः २, २, ४; ३८८
उक्षाः १, १४६, २; ३३९ । ३, ७, ६;
४९५
उक्षाज्ञः ८, ४३, ११; १३२०; अथ०
३, २१, ६; २३६०
उक्षितः १, ३६, १९; ८४
उक्षिते [उषासानक्ते] २, ३, ६; १९४७
उग्रः १, १२७, ११, २८२ । ४, २, १८;
९६४ अथ० १९, ६५, १; २३४९
७, १०९, (११४)१; २३६५
उग्राः [मरुतः] १, १९, ४; २४४१
उग्रजित् अथ० ६, ११८, १; २३८१
उग्रपश्यः अथ० ७, १०९, ६; २३७० ।
६, ११८, १, २; २३८१ - ८२
उत्पतन्, दिवस् - अथ० १९, ६५, १;
२३४९
उज्जिद् वा० य० २८, २५; २०९६
उपमातिः ८, ६०, ११; १३९९
उपवक्ता ४, २, ५; ७१६
उपसद्यः ७, १५, १; ११७७
उपस्थसत् १०, १५६, ५; १७०७
उपाके [उषासानक्ते] ६, १४२, ७;
१९२४ । ३, ४, ६; १९५८
उभयाविन् - वी १०, ८७, ३; १८३१
उराणः ४, ६, ३ - ४, ६८४ - ८५
४, ७, ८; ७००
उरुकृत् ८, ७५, ११; १३८३
उरुगायः ३, ६, ४, ४८३
उरुज्याः ५, ८, ६; ८२६
उरुप्रथा [इन्द्र] वा० य० २०, ३९
२०१७
उर्विया २, ३५, ८, २४२९
उशान् २, ३६, ४ । २, ३७, ६ ।
१०, १६, १२; १५६८ । १०, ९१, १३;
१६६३ । १०, ७०, ९; २००५
उशान् समानान् - ६, ४, १, ९७१
उशती १०, ७०, ५ - ६; २००१ - २

उशिक १, ६०, ४; १२२ । ३, ११, २,
५१९ । ३, २७, १०; ५४६ ।
१०, ४५, ७, १५९५ । ३, २६, ४;
१७३० । ३, ३, ७ - ८; १७४८ - १७४९
उषर्द्धः १, १२७, १०; २८१ । ४, ६, ८;
७८९ । ६, १५, १, १०२३ । ३, २, १४;
१७४०
उषर्भुत् १, ६५, ९, १३२ । ६, ४, २;
९७२
उषसः चेकितानः ३, ५, १; ४७०
उषसः महान् १, ९४, ५; २६०
उषसां अग्ने आ अशोवि ७, ८, १,
११४९
उषसां अग्ने भाति ७, ९, ३; ११५७
उषसां हृधानः १०, ४५, ५; १५९३
उषसां जारः ७, ९, १, ११५५
उषासानक्ता [देवते] १, १३, ७;
१९१२ । १, १४२, ७, १९२४ ।
१, १८८, ६; १९३६ । २, ३, ६, १९४७ ।
३, ४, ६; १९५८ । ५, ५, ६; १९६९ ।
७, २, ६, १९७९ । ९, ५, ६, १९८६ ।
१०, ७०, ६, १९९७ । १०, ११०, ६;
२००८ । अथ० ५, २७, ८; २०७९ ।
५, १२, ६; २००८
उषासानक्ते [देवते] वा० य० २०, ४१;
२०१९ । २०, ६२; २०३१ ।
२१, १७, ३५; २०४२, २०५४ ।
२७, १७, २०६६ । २८, ६, २९, २०८९,
२१०० । २९, ६, ३१; २१११, २१२३ ।
ऋ० प्रैष ७, २१३५
ऊर्जः पुत्रः १, ९६, ३, १८८१
ऊर्ज्यन् २, ३५, ७; २४२८
ऊर्जसनः ६, ४, ४; ९७४
ऊर्जो नपात् १, ५८, ८; ११७ । २, ६, २;
४३४ । ३, २७, १२; ५४८ । ५, १७, ५,
८८० । ६, ६, २५; १०६६ । ६, ४८, २;
१०९१ । ७, १६, १; ११९२ । ७, १७, ६;
१२०९ । ८, १९, ४; १२७७ ।

८, ४४, १३, १३५५। ८, ६०, २;
१३९०। ८, ७१, ३, ९, १४११, १४१७।
८, ८४, ४, १४५७। १०, २०, १०;
१५८०। १०, ११५, ८, १६७३।
१०, १४०, ३, १६८६
कर्जापतिः १, २६, १, २८। ८, १९, ७;
१२३०। ८, २३, १२; १२८१।
८, ६, ९; १३९७
ऊर्जाह्रतिः ८, ३९, ४; १३०३
ऊर्ध्वः १०, ७०, १, १९९७
ऊर्ध्वः जिह्वासाम्- २, ३५, ९, २४३०
ऊर्ध्वः शोचिः ६, १५, २; १०२४
ऊर्णम्रदाः [बहिः] ५, ५, ४, १२६७
ऋग्मिथः ८, २३, ३; १२७२।
८, ३९, १, १३००। ६, ८, ४; १७८३
ऋजूयमानः पृथिवीम् उत ग्राम्
१०, ८८, ९; २४०५
ऋज्जन् १, ९५, ७, १८७४
ऋज्जसानः १, ९६, ३, १८८१
ऋतः १, ६५, ३, १२६। १, ६८, ४;
१५७। १, ६८, ५ १५८। ५ १५, २;
८६७। ८, ६०, ५, १३९३
१०, ११०, ११; २०१८
ऋतम् ३, ७, ८; ४९७। ४, २, १४;
६६०। ७, ७, ६, ११४६
ऋतस्य गोपाः १०, ११८, ७, १८५९
ऋतस्य चक्षुः १०, ८, ५, १५३८
ऋतस्य दीदिविः १, १, ८; ८
ऋतस्य धारा १, ६७, ७, १५०
ऋतस्य पतिः अथ० ६, ३६, १; २१८१
ऋतस्य पदम् १०, ५, २, १५१४
ऋतस्य माता [उषासानक्ते] १, १४२, ७;
१९२४। ५, ५, ६; १९६९
ऋतस्य योना गर्भे सुजातः १, ६५, ४,
१२७
ऋतस्य वृषा ५, १२, १, ८४८
ऋते भाजातः ६, ७०, १; १७७३
ऋतचित् १, १४५, ५; ३३७। ४, ३, ४,

६६९। ५, ३, ९; ७८६
ऋतजातः १, ३६, १९, ८४। १, १४४, ७,
३३२। १, १८९, ६; ३६६। ३, ६, १०;
४८९। ३, २०, २१, ६१५। ६, १३, ३,
१०१४
ऋतप्रजातः १, ६५, १०; १३३
ऋतप्रवीत १, ७०, ७, १८०
ऋतावान्-वा १, ७७, १; २, ५,
२३४-३५, २३८। ३, २०, ४; ६१७।
४, २, १; ६४७। ४, ६, ५, ६८६।
४, ७, ३, ७; ६९५, ६९९। ४, १०, ७;
७२६। ५, १, ६; ७६०। ५, २५, १;
९११। ६, १२, १; १००६। ६, १५, १३;
१०३५। ७, १, १९ १११८। ७, ३, १;
११२४। ७, ७, ४; ११४५। ८, १०३, ८,
१२६४। ८, १३, १९; १२७८। ८, ७५, ३;
१३७५। १०, २, २, १४९३। १०, ६, २,
१५२१। १०, १४०, ६, १६८९।
३, २, १३; १७३९। २, ३५, ८, २४२९
ऋतावान्-वा अथ० ६, ३६, १, २१८१
ऋतावान् [वरुणः] ४, १, २, २४४९
ऋतावृध् ३, २, १; १७२७।
१, १४२, ६; १९२३
ऋतुपतिः १०, २, १; १४९२
ऋतुपाः ३, २०, ४, ६१७
ऋतुपाः ऋतूनाम् ५, १२, ३, ८५०
ऋत्विक् १, १, १; १। १, ४४, ११,
९६। १, ४५, ७, १०६। २, ५, ७,
४३१। ३, १०, २; ५१०। ५, २२, २,
९००। ५, २६, ७; ९२६। ८, ४४, ६;
१३४८। १०, ७, ५, १५३१।
१०, २१, ७, १५८७
ऋत्विगः ३, २९, १०; ५६७
ऋत्विगम् तव २, १, २; ३७०
ऋध्वारः ६, ३, २, ९६४
ऋध्व १०, ११०, २; २००९
ऋभुः ३, ५, ६, ४७५। ५, ७, ७, ८१७
ऋम्वा १०, २०, ५; १५७५।
१०, ६९, ७; १६३१
ऋषभाः वा० य० २१, ३८, २०५७

ऋषिः ३, २१, ३; ६२०। ६, १४, २,
१०१९। ऋ० ९, ६६, २०; साम०
२, ७, १, १२
ऋषिकृत् १, ३१, १६; ६५
ऋषीणां पुत्र अथ० ४, ३९, ९; २२८२
ऋषूणां पुत्रः ५, २५, १, ९११
ऋष्वः १, १४६, २; ३३९। ३, ५, ७;
४७६। ४, २, २; ६४८
ऋकः १०, १, ५, १५१३। १०, ९१, ३;
१६५३। ६, ९, ५; १७९१। अथ०
६, ३६, ३; २१८३
एम अस्य तिग्मं चित् ६, ३, ४; ९६६
एम ते कृष्णम् १, ५८, ४, ११३।
४, ७, ९, ७०१।
एरथामः त्वम् शरीरे मांसं असुम्-
अथर्व० ५, २९, ५; २३०९
ओजसा विरुक्मता पुरुचित् दीधानः
१, १२७, ३; २७४
ओजसा स्थिरा अन्नानि निरिणाति
१, १२७, ४; २७५
ओजायमानः तन्वश्च शुग्भते
१, १४०, ६; २९७
ओजिष्ठः चर्षणीसदाम् वा० य० २८, १;
२०८४
ओषधीः विश्वा आविवेश १, ९८, २;
१७२५
ओषधीभिः उक्षितः ५, ८७; ८२७
ओषधीनां गर्भः ३, १, १३; ४५९
ओषधाषु विभृतः १०, १, २; १४८६
औषसः अग्निः [देवता] १, ९५ (१-११);
१८६८-७८
ककुत् ८, ४४, १६; १३५८
ककुबान् १०, ८२; १५३५
कण्वतमः १०, ११५, ५; १६७०
कण्वसखा १०, ११५, ५, १६७०
कनिकदत् १, १२८, ३; २८५। ९, ५, १;
१९८६

कम् ८, ४४, २४; १३६६
 कपिः अथ० ६, ४२, १, २३३७
 कविः १, १२, ६-७; १५-१६ ।
 १, ३१, २; ५१ । १, ७६, ५; २३३ ।
 १, ७९, ५; २४८ । १, १२८, ८, २९० ।
 २, १, १३; ३८१ । २, ६, ७; ४३९ ।
 ३, २८, ४; ५५५ । ३, २९, ५, १२;
 ५६२, ५६९ । ३, १९, १, ६१० ।
 ३, २३, १; ६२७ । ४, २, १२, ६५८ ।
 ४, २, २०, ६६६ । ४, ३, १६; ६८१ ।
 ४, १५, ३; ७५१ । ५, १, ६, १२;
 ७६०, ७६६ । ५, ४, ३; ७९२ । ५, ११, ३
 ८४४ । ५, १४, ५; ८६४ । ५, १५, १;
 ८६६ । ५, २१, ३; ८९७ । ५, २६, ३;
 ९२२ । ६, १, ८; ९४६ । ६, १५, ७,
 १०२९ । ६, १५, ११; १०३३ । ७, ४, ४;
 ११३७ । ७, ९, ३; ११५७ । ७, १५, २;
 ११७८ । ८, ३९, १, ९; १३००, १३०८ ।
 ८, ४४, १२, २१; २६, ३०; १३५४,
 १३६३, १३६८, १३७२ । ८, ७५, ४;
 १३७६ । ८, ६०, ३, ५, १३९१,
 १३९३ । ८, १०२, १, ५; १७-१८;
 १४६३-१४६७, १४७९-८० ।
 १०, २०, ४, १५७४ । १०, १४, १;
 १६८४ । ३, २, ७, १०; १७३३, १७३६ ।
 ३, ३, ४; १७४४ । ६, ७, १, ७,
 १७७३, १७७९ । ७, ६, २, १८०४ ।
 १०, ८७, २१; १८४८ । १, ९५, ४, ८;
 १८७१, १८७५ । १, १३, २, ८;
 १९०७, १९१३ । १, १४२, ८;
 १९२५ । १, १८८, १, १९३१ ।
 १०, ११०, १; २००८ । ५, ५, २;
 १९६५ । १०, ८८, १४, २४१० ।
 कविः वा० य० २८, ३४, २१०५ ।
 २९, २५; २११७ । अथ० १९, ३, ४;
 २२०८
 कविः काव्यस्य १०, ९१, ३; १६५३ ।
 कविऋतुः १, १, २; २ । ३, २७, १२;
 ५४८ । ३, १४, ७, ५८७ । ५, ११, ४;
 ८४५ । ६, १६, १३; १०६४ ।

८, ४४, ७; १३४९ । ३, २, ४; १७३०
 कवितमः ३, १४, १; ५८१ । ७, ९, १;
 ११५५
 कविप्रशस्तः ५, १, ८, ७६२
 कविशस्त ३, ११, ४; ६२१ । ३, २९, ७,
 ५६४
 कवीनां पदवीः ३, ५, १; ४७०
 कामः अथ० ३, २१, ४; २३५८
 कामः भूतस्य भव्यस्य अथ० ६, ३६, ३
 २१८३
 काम्यः यमस्य १०, २१, ५; १५८५
 कारू [देव्यौ होतारौ] १०, ११०, ७,
 २००९ । ७, २, ७; १९८०
 कीलालपे (चतु०) १०, ९१, १४; १६६४
 क्वचिदर्थी ४, ७, ६; ६९८
 कृत्यः ६, २, ८, ९५९
 कृपनीळ १०, २०, ३; १५७३
 कृष्ण-अध्वा २, ४, ६; ४२१ । ६, १०, ४,
 ९९६
 कृष्णजंघस् (हाः) १, १४१, ७, ३११
 कृष्णपविः ७, ८, २, ११५०
 कृष्णयामः ६, ६, १; ९८६
 कृष्णवर्तनिः अथ० ८, २३, १९,
 १२८८ । अथ० १, २८, २; २२९४
 कृष्टीनां पतिः ७, ५, ५; १७९८
 केतुः ४, ७, ४; ६९६ । ७, ६, २; १८०४
 केतुः दैव्यः १, २७, १२, ४९
 केतुः अध्वराणाम् ३, १०, ४, ५१२
 केतुः अमृतस्य ६, ७, ६; १७७८
 केतु उषसाम् अह्नाम् ७, ५, ५; १८९८
 केतुः यज्ञस्य १, १२७, ६; २७७ ।
 ५, ११, २, ८४२ । ६, ७, ९; १७७४
 केतुः यज्ञानाम् ३, ३, ३; १७४४
 केतुः विदथस्य १, ६०, १; ११९
 केतुः विश्वस्य १०, ४५, ६, १५९४
 केतुना बृहता प्रयाति १०, ८, १; १५३४
 केवलः १, १३, १०; १९१५
 केशिनः [दिवता] १, १६४, ४४; २४५६
 क्रतुः १, ६, ७, २; १४५ । १, ७, ७, ३;
 २३६ । ६, ९, ५; १७९१

क्रतुः एकः ६, ९, ५; १७९१
 क्रतुः देवानाम् ३, ११, ६, ५२३
 क्रतुः क्षुम्भितमः ते १, १२७, ९; २८०
 क्रतुविद् १०, २, ५; १४९६
 क्रवा चेतिष्ठः विशाम् १, ६५, ९; १३२
 क्रव्यवाहनः १०, १६, ११; १५६७
 क्रव्याद् अथर्व० १२, २, ३४-३९;
 २२४७-५२
 क्रव्यादः-त् १०, १६, ९, १०, १५६५-६६
 अथ० १२, २, ९-१०; २२३५-३६ ।
 ३, २१, ८-९, २३६२-६३ ।
 क्राणा १, ५८, ३; ११२ । ५, ७, ८; ८१८
 क्षत्रः वा० य० २८, ३४, २१०५
 क्षत्रभृत् अथ० ७, ८४, १, १८६६
 क्षत्राणि धारयन् अथ० ७, ७८, २; २१९९
 क्षपावान् १, ७०, ५; १७८ । ७, १०, ५,
 ११६५ । ८, ११, २; १४१०
 क्षयः दिवि ३, २, १३; १७३९
 क्षयत् ३, २५, ३, ५३४
 क्षयत् महः राक्षस १०, १४०, ५;
 १६८८
 क्षेमः १०, २०, ६, १५७६
 क्षेम्यः अथ० १२, २, ४९; २२६२
 क्षोद. १, ६५, ६; १२९
 क्षाम् जातस्य च जायमानस्य च
 १, ९६, ७, १८८५
 गणश्रीः ८, २३, ४; १२७३
 गर्भः ६, १५, १; १०२३ । १०, ८, २;
 १५३५ । १०, ४६, ५; १६०५
 गर्भ. अदितेः क्र० प्रेष २, २१३०
 गर्भः अपसां बह्वीनाम् १, ९५, ४;
 १८७१
 गर्भः अपाम् १, ७०, ३; १७६
 गर्भः चरथाम् १, ७०, ३, १७६
 गर्भः भुवनस्य १०, ४५, १; १५९४
 गर्भः वनानाम् १, ७०, ३; १७६
 गर्भः स्थाताम् १, ७०, ३; १७६
 गातु १०, २०, ४, १५७४
 गातुवित्तमः ८, १०३, १; १२५७

गायत्र्येवम्-पाः [इन्द्रः] १, १४२, १२; १९२९

गार्हपत्यः अथर्व० १२, २, ३४, ४४, २२४७, २२५७। ६, १२१, २, २३८८

गावः [देवता] ४, ५८, (१-११); १८९५-१९०५

गिर्वणाः (णस्) २, ६, २, ४३५

गुहमानः ४, १, ११; ६३७

गुहा चतन् १, ६५, १; १२४। १०, ४६, २, १६०२

गुहा चरन् ३, १, ९, ४५५

गुहा निषीदन् १, ६७, ३, १४६

गुहा भवन् १, ६७, ७, १५०

गुहा सन् १, १४१, ३, ३०७। ३, ५, १०, ४७९। ५, ८, ३, ८२३

गुहा हितः ४, ७, ६, ६९८। ५, ११, ६; ८४७

गृह्यः ३, १, २; ४४८। ३, १९, १, ६१०। ७, ४, २; ११३५। ४, ५, २; १७५९

गृध्रुः १, ७०, ११; १८४

गृहपतिः १, १२, ६; १५। १, ३६, ५; ७२। १, ६०, ४; १२२। २, १, २; ३७०। ४, ९, ४; ७१५। ४, ११, ५; ७३२। ५, ८, १-२; ८२१-२२।

६, १५, १३, १९; १०३५, १०४१। ६, १६, ४२; १०८३। ७, १, १, ११००। ७, १५, २; ११७८। ७, १६, ५; ११९६।

८, ६०, १९; १४०७। ८, १०२, १, १४६३। १०, १२२, १; १६७५। १०, ११८, ६; १८५८। वा० य०

२८, ३४; २१०५; अथ० १९, ५५, ३४, २३७१-७२

गृहपतिः मानुषाम् विश्वासां विशाम् ६, ४८, ८; १०९७

गोत्रभिद् [इन्द्रः] वा० य० २०, ३८; २०१६

गोपाः २, ९, ६; ४०८। ३, १५, २; ५८९। १०, ७, ७; १५३३। १०, ८, ५;

१५३८। १०, ६२, ५; १६२९। ६, ७, ७; १७७९। ९, ५, ९; १९८९

गोपाः अध्वराणाम् १, १, ८, ८

गोपाः ऋतस्य १०, ११८, ७; १८५९

गोपाः जनस्य ५, ११, १; ८४२

गोपाः भुवनस्य ऋ० प्रैष २, २१३०

गोपाः विशाम् १, ९६, ४; १८८२

गोपाः सतश्च भवतश्च भूरे १, ९६, ७, १८८७

गौः गावः [देवता] 'गावः' (पश्य)।

ग्राः उत अध्वरे ४, ९, ४; ७१५

घर्मः [देवता] १, ११२, १, १८६७

घर्मः अजस्रः ३, २६, ७, १७५६

अथ० ६, ३६, १; २१८१

घृणिः ६, १६, ३८, १०७२

घृगीवान् १०, १७६, ३; १७०२

घृतम् [देवता] ४, ५८, (१-११),

१८९५-१९०५

घृतम् अस्य अन्नम् १०, ६९, २; १६२६

घृतम् (अस्य) चक्षुः ३, २६, ७; १७५६

घृतम् (अस्य) मेदनम् १०, ६९, २; १६२६

घृतम् (अस्य) वर्धनम् १०, ६९, २; १६२६

घृतकेशः ८, ६०, २, १३९०

घृतनिर्णिकृ ३, २७, ५, ५४१। ३, १७, १; ६००। १०, १२२, २; १६७६।

२, ३५, ४, २४२५

घृतपदी [सरस्वती] १०, ७०, ८; २००४

घृतपृष्ठः ५, ४, ३; ७९२। ५, १४, ५; ८६४। १०, १२२, ४; १६७८

घृतपृष्ठम् [बहिः] ७, २, ४; १९७७

घृतप्रतीकः १, १४३, ७, ३२४। ३, १, १८; ४६४। ५, ११, १, ८४२। १०, २१, ७, १५८७

घृतप्रसक्तः ५, ११, १; ८४२

घृतयोनिः ५, ८, ६; ८२६

घृतश्रीः १, १२८, ४; २८६। ५, ८, ३; ८२३। वा० य० २८, ९; २०९२

घृतस्तुः ५, २६, २; ९२१। १०, १२२, ५; १६८०

घृतान्नः ७, ३, १; ११२४

घृताहवनः १, १२, ५; १४। १, ४५, ५; १०४। ८, ७४, ५; १४४६

घृताहुतः अथ० ४, २३, ३; २३३९

घृष्टिः ४, २, १३ ६५९

घोरः ४, ६, ६, ६८७

घोरवर्षसः [मरुतः] १, १९, ५; २४४२

घ्नन् द्विषः अप ८, ४३, २३; १३३२

चकानः ५, ३, १०, ७८७

चकानः ऋतस्य संदशः- ३, ५, २, ४७१

चक्राणः विश्वा अमृतानि सन्ना-

१, १७२, १; १९५

चक्रिः ३, १६, ४; ५९७

चक्षणिः ६, ४, २; ९७२

चक्षुः देवानां उत मानुषाणाम्-

अथ० ४, १४, ५; २२२१

चतुरक्ष १, ३१, १३; ६२

चनोहितः ३, ११, २; ५१९। ३, २६, २-७; १७२८-१७३३

चन्द्रः ५, १०, ४; ८३८। ६, ६, ७; ९९२। ३, ३, ५; १७४६। [देवता]

अथ० ३, ३१, ६; २३४४

चन्द्ररथः १, १४१, १२; ३१३। ३, ३, ५; १७४६

चन्द्री वा० य० २०, ३७; २०१५

चरथां गर्भः १, ७०, ३; १७६

चरिणु धूमः ८, २३, १; १२७०

चर्षणिप्राः ४, २, १३; ६५९

चर्षणीधृत्-तः [वरुणः] ४, १, २; २४४९

चर्षणीनां सन्नाद् ३, १०, १; ५०९

चष्टे आभि एकः विश्वं शचीभिः-

[सूर्य देवता] १, १६४, ४४; २४५६

चारुः १, ९४, १३; २६८। १०, १, २; १४८६। १०, २१, ७; १५८७। १, ९५, ५; १८७२। साम० १, १, ७, ३

चारुतमः ५, १, ९; ७६३
 चारुप्रतीकः २, ८, २, ३९८
 चिकित् १०, ३, १; १४९९
 चिकितानः ३, १८, २; ६०६
 चिकितुः ८, ५६, ५; २४५५
 चिकित्रः १०, ९१, ४-५; १६५४-५५
 चिकित्वान् १, ६८, ६; १५९ ।
 १, ७१, ७; १९१ । १, ७७, ५; २३८ ।
 १, १४५, १; ३३३ । २, ६, ८, ४४० ।
 ३, ७, ३, ९; ४९२, ४९८ । ३, २५, १;
 ५३२ । ३, २९, ८; ५६५ । ३, २९, १६;
 ५७३ । ३, १७, २; ६०१ । ३, १७, ५;
 ६०४ । ४, ३, ८; ६७३ । ४, ७, ५;
 ६९७ । ४, ८, ४; ७०७ । ५, २, ५, ७
 ७७१, ७७३ । ५, ३, ७; ७८४ । ५, १२, २;
 ८४९ । ५, २२, ३; ९०१ । ६, ५, ३;
 ९८१ । ८, ४४, ९, १३५१ । १०, ४, ४;
 १५०९ । १०, १२, २; १५५० । ४, ५, १२;
 १७६९ । १०, ११०, १; २००८ । वा० य०
 २९, २५; २११७
 चिकित्वान् पुरुषः-- १, ५३, १, १६१६
 चित्तस्य माता [आकृति देवता] अथ०
 १९, ४, २; २२१०
 चित्तिः १, ६७, १०; १५३
 चित्रः १, ९४, ५; २६० । २, ८, ४;
 ४०० । ३, ७, ९; ४९८ । ४, ७, ६;
 ६९८ । ६, ४, ६; ९७६ । ६, ६, ७;
 ९९२ । ६, ४८, ९; १०९८ । ७, ३, ६;
 ११२९ । १०, १, २; १४८६ । १०, २, ६;
 १४९७ । ३, २, १५; १७४१ ।
 चित्रः वनेषु ४, ७, १, ७९३
 चित्रक्षत्रः ६, ६, ७; ९९२
 चित्रध्वजतिः ६, ३, ५; ९६७
 चित्रभानुः १, २७, ६; ४३ । २, १०, २;
 ४१० । ५, २६, २; ९२१ । ७, ९, ३;
 ११५७ । ७, १२, १; ११७१ ।
 ८, ४४, ६; १३४८ । १०, ५१, ३;
 १६१२ । १०, ६९, ११; १६३५
 चित्रमहसू-हाः १०, १२२, १; १६७५ ।

चित्ररथः १०, १, ५; १४८९
 चित्रराधस्-धाः ८, ११, ९; १२२२
 चित्रयामः ३, २, १३; १७३९
 चित्रशोचिः ५, १७, २; ८७७ । ६, १०, ३;
 ९९५ । ८, १९, २; १२२५
 चित्रश्रवस्तमः १, १, ५; ५ । १, ४५, ६;
 १०५
 चित्रा १, ६६, १; १३४
 चेकितानः ३, २९, ७; ५६४
 चेतनः २, ५, १, ४२५
 चेतनः अध्वराणाम् ३, ३, ८; १७४९
 चेतिष्ठः १, ६५, ९; १३२ । ७, १६, १,
 ११९२ । १०, २१, ७; १५८७ ।
 वा० य० २७, १५; २०६४
 चेत्यः ६, १, ५, ९४३
 चोदः १, १४३, ६; ३२३
 चोदिष्ठः ८, १०२, ३; १४६५
 च्यवनः १०, ६९, ५-६; १६२९-३०
 जज्ञणामवन् अर्चिषा ८, ४३, ८;
 १३१७
 जनयन् भुवना ७, ५, ७; १८००
 जनयोपनः अथ० १२, २, १५, २२४१
 जनानां वसतिः ५, २, ६; ७७२
 जनिता रोदस्योः १, ९६, ४, १८८२
 जनिता वसूनाम् १, ७६, ४, २३२
 जनिस्त्वम् (अग्नि. एव) १, ६६, ८; १४१
 जन्यः १०, ९१, २, १६५२
 जनिमा अन्न अश्वस्य स्वर च २, ३५, ६;
 २४२७
 जयन् १०, ४६, ५; १६०५
 जरद्विद् ५, ८, २; ८२२
 जरमाणः १०, ११८, ५; १८५७
 जरमाणः जागृवद्भिः १०, ९१, १,
 १६५१
 जरयन् अरिम् २, ८, २, ३९८
 जराबोधः १, २७, १०; ४७
 जरिता ३, १५, ५; ५९२ । ८, ६०, १९;
 १४०७

जर्भुराणः तन्वा २, १०, ५; ४१३
 जर्हषाण १०, १६, ७, १५६३
 जविष्ठः मनः-(सः) ६, ९, ५; १७९१
 जागृविः १, ३१, ९; ५८ । ३, २४, ३;
 ५२९ । ५, ११, १, ८४२ । ६, १५, ८;
 १०३० । २, २, १२, १७३८ । ३, ३, ७;
 १७४८ । ३, २६, ३, १७५५
 जातः १, ६६, ८, १४१ । १०, १, २-३;
 १४८६-८७ । १०, ४६, १, ३;
 १६०१, १६०३
 जातः अथर्वणा १०, २१, ५, १५८५
 जातः पृथिव्या नाभौ ह्य्याया पदे
 १०, १, ६; १४९०
 जातः शीर्षत १०, ८८, १६; २४१२
 जातः सद्यः वा० य० २९, ११, ३६;
 २११६, २१२८
 जातवेदाः १, ४४, १, ८६ । १, ४४, ४,
 ८९ । १, ४५, ३; १०२ । १, ७७, ५;
 २३८ । १, ७८, १, २३९ । १, ७९, ४,
 २४७ । १, ९४, १, २५६ । १, १२७, १,
 २७२ । २, २, १; ३८५ । २, २, १२;
 ३९६ । ३, १, २०; ४६६ । ३, १, २१;
 ४६७ । ३, ५, ४; ४७३ । ३, ६, ६;
 ४८५ । ३, १०, ३, ५११ । ३, ११, ४;
 ५२१ । ३, २८, १, ४, ६; ५५२, ५५५,
 ५५७ । ३, २९, २; ५५९ । ३, २९, ४;
 ५६१ । ३, १५, ४; ५९१ ।
 ३, १७, २-४, ६०१-३ । ३, ११, ८;
 ५२५ । ३, २५, ५; ५३६ । ३, २०, ३;
 ६१६ । ३, २१, १; ६१८ । ३, २२, १;
 ६२३ । ३, २३, १; ६२७ । ४, १, २०,
 ६४६ । ४, ३, ८; ६७३ ।
 ४, १२, १; ७३४ । ४, १४, १; ७४५ ।
 ५, ४, ४, ९-११; ७९३, ७९८-८०० ।
 ५, ९, १; ८२८ । ५, २२, २; ९०० ।
 ५, २६, ७; ९२६ । ६, ४, २; ९७२ ।
 ६, ५, ३; ९८५ । ६, १०, १; ९९३ ।
 ६, १२, ४; १००९ । ६, १५, ७, १०२९ ।
 ६, १५, १३; १०३५ । ६, १६, २९;
 १०७० । ६, १६, ३०; १०७१ ।

द, १६, ३६; १०७७। द, ४८, १;
 १०९०। ७, ३, ८, ११३१। ७, ९, ४, ६;
 ११५८, ११६०। ७, १४, १, ११७४।
 ७, १७, ३-४, १२०६-७। ७, १०४, १४;
 १२१३। ८, ११, ३-५; १२१६-१८।
 ८, २३, १, १७, २२, १२७०, १२८६,
 १२९१। ८, ४३, २, २३; १३११, १३३२
 ८, ७१, ७, ११; १४१५, १४१९।
 ८, ७४, ३, ५; १४४४, १४४६।
 १०, ४, ७, १६१२। १०, ६, ५,
 १५२४। १०, ८, ५, १५३८।
 १०, १६, १; १५५७। १०, १६, २, ४,
 ५, ९, १०, १५५८, १५६०-६१,
 १५६५-६६। १०, ४५, १; १५९०।
 १०, ५१, १-२; १६११-१२। १०, ५१, ७;
 १६१४। १०, ६९, ८-९; १६३२-३३,
 १०, ९१, १२, १६६२। १०, ११५, ६;
 १६७१। १०, १४०, ३, १६८६।
 १०, १५०, ३; १७००। १०, १७६, २,
 १७०८। १, ५९, ५, १७२१। ३, ३, ८,
 १७४२। ३, २६, ७, १७५६।
 ४, ५, ११-१२; १७६८-६९। ६, ८, १;
 १७८०। ७, ५, ७-८; १८००-१।
 ७, १३, २; १८११। १०, ८७, २, ५-७,
 ११; १८२९, १८३२-३४, १८३८।
 १, ९९, १; १८६२। ४, ५८, ८; १९०२।
 ५, ५, १, १९६४। १०, ११०, १;
 २००३
 जातवेदाः-वा० य० २७, २२; २०७१।
 २९, १, २१०६। २९, ३, २१०८।
 २९, २५, २११७। अथ० ७, ८४, १;
 १८६६। ५, २७, १२; २०८३।
 १, ९, ३, २१४२। २, २९, २; २१५०।
 ५, ८, २; २१६४। ७, ३४, १; २१९३।
 ७, ३५, १; २१९४। ७, ७४, ४; २१९७।
 ७, १०६, १; २२००। १९, ३, १, २२०५।
 १२, ४, १, २२०९। ७, १०८, २, २
 २२२८, ३, १, १; २१५२।
 ४, ३९, १०, १०; २२८३। १०, ८८,
 ४-५; २४००-१। १, ७, २, ५-६;

२२८५, २२८८-८९। १, ८, ४; २२९२।
 ५, २९, १-३, १०, २३०५-७, २३१४।
 ५, २९, १२-१४; २३१५-१७।
 ७, ८२, ४-५; २३२७-२८। ४, २३, २, ४;
 २३३१, २३३३। ४, ४०, १; २३४२।
 १२, ६५, १; २३४९। १९, ६६, १,
 २३५०। १९, ६४, १-२; २३५१-५२।
 ६, ७७, ३; २३९९
 जातवेदाः [अग्निदेवता] १, ९९, १;
 १८६२। १०, ८८, १-३; १८६३-६५।
 अथर्व० ७, ८४, १, १८६६। अथ०
 ७, ६३, १; २३७४। ६, ७७, १-३;
 २३९४-९६
 जातवेदाः जन्मना- ३, २६, ७, १७५६
 जानन्न १, १४०, ७; २९८
 जामिः जनानाम्- १, ७५, ४; २२७
 जामिः सिन्धूनाम्- १, ६५, ७; १३०
 जायमानः सहसा- १, ९९, १; १८७९
 जायुः वनेषु- १, ६७, १; १४४
 जारः १, ६९, १; १६४। १, ६९, २;
 १७२। ७, ९, १, ११५५। ७, १०, १,
 ११६१
 जारः कनीनाम्- १, ६६, ८; १४१
 जिन्वन्ति अग्नय दिवम्- १, १६४, ५१।
 (वामनसूक्त)
 जिह्वांचक्रिरे त्वां शुचयः- २, १, १३,
 ३८१
 जीवपीतसर्गः १, १४९, २; ३५४
 जीवितयोपनः अथ० १२, २, १६; २२४२
 जीरः १, ४४, ११; ९६। ३, ३, ६; १७४७
 जीराश्वः १, १४१, १२, ३१६। २, ४, २,
 ४१७
 जुगुर्बणिः १, १४२, ८; १९२५
 जुजुर्वान् यः सुहुः आयुवामूत् २, ४, ५;
 ४२९
 जुजुषाणः १०, १५०, २; १६९२
 जुषत्-न् भाजुषस्य हव्या १०, २०, ५;
 १५७५
 जुषमाणः अथ० १९, ३, १; २२०५
 जुषाणः १०, १२२, २; १६७६

जुषाणः अक्तेः, १०, ६, ४; १५२३
 जुषाणः उप [इन्द्र] वा० य० २०, ३८,
 २०१६
 जुषाणः बर्हिः [इन्द्रः] वा० य० २०, ३९,
 २०१७
 जुषाणः हव्यानि ८, ४४, ८; १३५०
 जुषाणौ घृतस्य गुह्या [अग्नाविष्णू] अथ.
 ८, २९, २; २४५४
 जुष्टः ५, ४, ५; ७९४। ५, १३, ४; ८५७।
 ८, ४४, ७; १३४९
 जुष्टः दाशुषे जनाय १, ४४, ४; ८९
 जुह्व तमिद् गच्छन्ति १, १४५, ३, ३३५
 जुह्व सदानाम् १०, ६, ५, १५२४
 जुह्वास्यः १, १२, ६, १५
 जूर्णिः ८, ७२, ९; १४३२ *
 जेता वा० य० २८, २; २०८५
 जेता जनानाम् १, ६६, ३; १३६
 जेन्यः १, ७१, ४; १८८। १, १२८, ७;
 २८९। १, १४०, २; २९३। १, १४६, ५;
 ३४२। १०, ४, ३; १५०८
 जेन्यः जनिष्ट अह्नां अग्ने ५, १, ५; ७५९
 जेहमानः १०, ३, ६, १५०४
 जोष्टा धियः वा० य० २८, १०; २०९३
 जोह्वः २, १०, १; ४०९
 ज्येष्ठः ८, ७४, ४; १४४५। ८, १०२, ११;
 १४७३। [वरुणः] ४, १, २, २४४९
 ज्योतिः ४, १०, ३; ७२२
 ज्योतिः अमृतम् ६, ९, ४; १७९०
 ज्योतिः ध्रुवम् ६, ९, ५; १७९१
 ज्योतिषः पतिः ऋतस्य अथ० ६, ३६, १;
 २१८१
 ज्योतिषा बृहता भाति ५, २, ९; ७७५
 ज्योतीषि विभ्रत्, विषाम् ३, १०, ५;
 ५१३
 ज्यसातः १०, ११५, ४; १६६९
 तक्मन् अथर्व० १९, २५, १-४;
 २२७५-७८
 ततुरिः १, १४५, ३; ३३५
 तनुषाणः ६, १५, ५; १०२७

तनूनपात् ३, २९, ११; ५६८। १, १३, २;
१९०७ । १, १४२, २; १९१९ ।
९, ५, २; १९८७
तनूनपात् लक्ष्यते गर्भः ३, २९, ११; ५६८
तनूनपात् [देवतामन्त्रा] १, १३, २;
१९०७ । १, १४२, २; १९१९ ।
१, १८८, २; १९३२। ३, ४, २; १९५४।
९, ५, २; १९८२ । १०, ११०, २;
२००४ । वा० य० २०, ३७; २०१५ ।
२०, ५६, २०२६। २१, १३; २०३८।
२१, ३०; २०४९। २७, १२; २०६१।
२८, २; २०८५ । २८, २५; २०९६।
२९, २; २१०७। २९, २६; २११८
ऋ० प्रैष २; २१३०
अथर्व० ५, २७, १; २०७२। ५, १२, २;
२००४
तनूपाः ८, ७१, १३; १४२१। १०, ४६, १;
१६०१ । १०, ६९, ४; १६२८ ।
१०, ८८, ८; २४०४
तनूरुक्-कृ २, १, ९; ३७७
तनूवशिन्-शी अथ० १, ७, २; २२८५।
७, १०९, (११४), १; २३६५
तन्तुं तन्वन् १०, ५३, ६; १६१९
तन्यतुः ६, ६, २; ९८७
तन्वन्ति आ ये रश्मिभिः तिरः समुद्रम्
भोजसा-[मरुतः] १, १९, ८, २४४५
तपस्वान् ६, ५, ४; ९८२
तपिष्ठः ६, ५, ४; ९८२
तपुर्जम्भः १, ५८, ५; ११४। ८, १२३, ४;
१२७३
तपुर्मूर्धा ७, ३, १; ११२४
तमसि तस्थिवान् ६, ९, ७, १७९३
तपोहन्-हा १, १४०, १; २९२
तरणिः ३, २९, १३; ५७०। ६, १, ५;
९४३ । १०, ८८, १६, २५१२
तरुः ६, १, ११; ९४९
तरुणः ७, ४, २; ११३५। ८, १९, २२;
१२४५
तरुषः परस्य अवरस्य अर्थः ६, १५, ३;
१०२५। १०, ११५, ५; १६७०
दै० [अग्निः] ३२

तलित् इव अतिरोचते दूरेचित् सन्
१, ९४, ७; २६२
तवस् (से-चतुर्थी) ३, १, २, १३;
४४८, ४५९। ७, ५, १; १७९४। ७, ६, १;
१८०३
तविषीभिः आवृतः ३, ३, ५; १७४६
तव्यांसः ५, १७, १; ८७६
तस्थिवान् तमसि ६, ९, ७, १७९३
तस्थिवान् परमेपदे १, ७२, ४; १९८।
२, ३५, १४; २४३५
तानुषाणः यः वना आभाति २, ४, ६;
४२१
तिग्मः ४, ६, ८; ६८९। ८, ७२, २;
१४२५
तिग्मजम्भः १, ७९, ६; २४९। ४, १५, ५,
७५३। ८, १९, २२; १२४५। ८, ४४, २७;
१३६९। ४, ५, ४, १७६१
तिग्मशोचिः १, ७९, १०; २५३
तिग्म हेतिः ४, ४, ४; १८१६
तिग्मानीकः १, ९५, २; १८६९
तुप्त अथ० १९, ४, १; २२०९
तुराषाद् [इन्द्रः] वा० य० २०, ४६;
२०२४
तुर्वणिः १, १२८, ३; २८५
तुविजातः ४, ११, २, ७२९। ५, २, ११,
७७७। ५, २७, ३; ९३०
तुविद्युन्नः ३, १६, ३, ६; ५९६, ५९९
तुविश्रवस्तमः ३, ११, ६; ५२३
तुविष्मान् ४, ५, ३; १७६०
तुविष्वगस्-णाः ५, ८, ३; ८२३
तुविष्वणिः १, ५८, ४; ११३। १, १२७, ६;
२७७
तूर्णिः ३, ३, ५; १७४६
तूर्णितमः ४, ४, ३; १८१५
तूर्णी ३, ११, ५; ५२२
तृतीयकः अथ० १, २५, ४; २२७८
तृष्युतः १, १४०, ३; २९४
तेपानः घृतस्य धीतिभिः ८, १०२, १६;
१४७८

तेपानः रक्षसः ८, ६०, १९; १४०७
त्रययावयः ६, २, ७, ९५८
त्राता १, ४४, ५, ९०। ५, २४, १; ९०७।
६, १, ५; ९४३। ८, ६०, ५; १३९३
त्रासदस्यवः ८, १९, ३२; १२५५
त्रितः १०, ४६, ६; १६०६
त्रिधातुः ८, ७२, ९; १४३२
त्रिधातुः अर्कः ३, २६, ७; १७५६
त्रिपस्त्यः ८, ३९, ८; १३०७
त्रिमूर्धा १, १४६, १; ३३८
त्रिवस्त्यः ६, १५, ९; १०३१
त्रिषधस्थः ५, ४, ८, ७७७। ६, १२, २;
१००७। ६, ८, ७; १७८६
त्रेधा अकृण्वन् देवासः भुवे कं तम् ऊ
१०, ८८, १०; २४०६
त्वष्टा त्वम् २, १, ५; ३७३
त्वष्टा [देवता] १, १३, १०, १९१५।
१, १४२, १०; १९२७। १, १८८, ९;
१९३९। २, ३, ९, १९५०। ३, ४, ९,
१९६१। ५, ५, ९; १९७१। ७, २, ९;
१९६१। ९, ५, ९; १९८९। १०, ७०, ९;
२०००। १०, ११०, ९, २०११।
वा० य० २०, ४४, ६५; २०२२, २०३४।
२१, २०, ३८; २०४५, २०५७।
२७, २०; २०६९। २८, ९, ३२, २०९२,
२१०३। २९, ९, ३४; २११४, २१२६।
अथ० ५, २७, १०, २०८१। ऋ० प्रैष०
१०; २१३८। अथ० ५, १२, ९; २०११
त्वाष्टः ३, ७, ४; ४९३
त्वे विश्वेदेवाः ५, ३, १; ७७९
त्वेषः १, ६६, ६; १३९। १, ७०, ११;
१८४। २, ९, १, ४०३। ३, २२, २;
६२४। ८, ७४, १०; १४५१
त्वेषः (षष्ठी वि०) ६, २, ६; ९५७
दक्षः ३, १४, ७; ५८७। १, ५९, ४;
१७२०
दक्षस्-क्षाः [दक्षसे] ६, ४८, १, १०९०
दक्षस्य साधनम् ५, २०, ३; ८९३
दक्षपतिः दक्षाणाम् १, ९५, ६;
१८७२

दक्षायः २, ४, ३; ४१८। ७, १, २,
११०१
दक्षय १, १४१, ७; ३११
दत् (न) अदत् ४, ६, ८, ६८९
दत् (दा) १०, ११५, २, १६६७
ददशान नेदिष्टम् १, १२७, ११; २८२
ददशान पविः १०, १, ६; १५०४
दधान नयां पुरुणि हस्ते १, ७२, १;
१९५
दधानः वयो वयो जरसे ५, १५, ४,
८६९
दधानौ सप्त रत्ना दमे दमे [अज्ञाविष्णु]
अथ० ७, २९ (३०), १, २४५३
दधिः १०, ४६, १, १६०१
दधक्-ग १०, १६, ७; १५६३
दमयन् पृतन्यून ७, ६, ४; १८०६
दमाम् अग्निः १०, ४६, ७, १६०७
दमूनाः (नस्) १, ६०, ४, १२२।
१, ६८, १०; १६३। १, १४१, १०;
३०१। ३, १, ११; ४५७। ३, १, १७,
४६३। ३, ५, ४, ४७३। ४, ११, ५;
७३२। ५, १, ८, ७६२। ५, ४, ५;
७९४। ५, ८, १; ८२१। ७, ९, २;
११५६। १०, ४६, ६; १६०६।
१०, ९१, १; १६५१। ३, २, २५,
१७४१। ३, ३, ६, १७४७। ४, ४, ११;
१८२३
दम्पतिः १, १२७, ८; २७९। ५, २२, ४;
९०२। ८, ८४, ७; १४६०
दम्भः ८, २३, २४, १२९३
दयमान वि वसुरत्नानि दाशुषे
३, २, ११, १७३७
दर्मा (मन्) पुराम् १०, ४६, ५; १६०५
दर्शत्-न् १, १४४ ७; २३२। ३, २७, १३;
५४९। ६, १, ३; ९४१। ८, ७१, १०,
१४१८। ३, २, १५; १७४१
दर्शत् तिर तमांसि ८, ७४, ५; १४४६
दर्शनश्रीः १०, ९१, २; १६५२
दविद्युत् ७, १०, १; ११६१।

६, १६, ४५; १०८६। अथ० ७, ६२ (६४),
१, २३७३
दविद्युत् घृतेन आहुतः १०, ६९, १;
१६२५
दशस्यन् अपत्याय ७, ५, ७; १८००
दशान्तरुष्यात् अतिरोचमानः
१०, ५१, ३; १६१२
दस्म १, ७७, ३; २३६। २, १, ४;
३७२। २, ९, ५; ४०७। ३, १, ७;
४५३। ५, १७, ४; ८७९। ६, १, १;
९३९। ८, १०३, ७; १२६३।
८, ७४, ७; १४४८। १०, ७, १,
१५२७। १०, ११, ४; १५४३। ३, ३, २;
१७४३ [वरुणः] ४, १, ३, २४५०
दस्मवर्चाः ६, १३, २; १०१३
दस्युहन्तमः ६, १६, १५; १०५६
दस्युहन्तमः मान्यातुः ८, ३९, ८;
१३०७
दाता ३, १३, ३; ५७६। अथ०
३, २१, ४; २३५८
दाता वाजस्य गोमतः ५, २३, २, ९०४
दाता सौमनसस्य अथ० १९, ५५, ३-४,
२२७१-७२
दामा (मन्) रथानाम् ८, २३, २; १२७१
दारुः ७, ६, १; १८०३
दाशुस्-शूः (षः-षष्ठी) ७, ३, ८;
११३१
दास्वत् १, १२७, १; २७२
दिदक्षेण्याः परिकाष्टासु १, १४६, ५;
३४२
दिदक्षेयः ३, १, १२, ४५८
दिद्युतान ३, ७, ४, ४९३
दिधिषायः १, ७३, २; २०६। २, ४, १;
४१६
दिव्-घ्नैः (दिवः-षष्ठी) १, ७३, ७,
२११। ६, २, ४, ९५५
दिवः केतुः ३, २, १४; १७४०
दिवः चित् पूर्वः १, ६०, २; १२०
दिवः दुहितरौ [उषासानक्ते] १०, ७०, ६;
२००२

दिवः पायुः (दिवस्पायुः) ८, ६०, १९;
१४०७
दिवः मूर्धा ८, ४४, १६; १३५८।
३, २, १४; १७४०
दिवः सूतुः ३, २५, १; ५३२
दिविजाः ८, ४३, २८; १३३७
दिवियोनि १०, ८८, ७; २४०३
दिविस्पृक्-शू १०, ८८, १; २३९७
दिव्यः ६, ६, १, ९८६। ६, १०, १;
९९३। अथ० ४, १४, ६; २०२२
दिशन्ता प्राचीनं ज्योतिः प्रदिशा
[द्वैतौ होतासौ] १०, ११०, ७; २००९
दिदानः शल्यान् १०, ८७, ४; १८३१
दीदियुस्-युः ८, २३, ४; १२७३
दीदिवान् १, १२, ५; १४। १, १२, १०;
१९। २, ९, १; ४०३। ३, १३, ५;
५७८। ३, २७, १२; ५४८। ५, २४, ४;
९१०। ६, १, ६; ९४४। ७, १, ८, ११०७।
८, ४४, ४, १३४६। ८, ६०, ५, १३९३।
४, ४, ९; १८२१। २, ३५, ३; २४२४
दीदिवान् विश्वहा- ६, १, ३; ९४१।
१०, ८८, १४, २४१०। २, ३५, १४;
२४३५। साम० १, ६, १३, १
दीदिविः ऋतस्य- १, १, ८; ८
दीद्यत्-न् १, १४३, ७, ३२४। ३, २७, १५;
५५१। ७, १०, १; ११६१। १०, ११८, १-८,
१८५३-६०
दीद्यत्, त्रिः ऋतानि-१, १२२, ५, १६८०
दीद्यान. १, १२७, ३; २७४। ३, ५, ७;
४७६। १०, २०, ४; १५७४। ४, ५, ९;
१७६६
दीर्घतन्तुः १०, ६९, ७, १६३१
दीर्घश्रुत्तम. ८, १०२, ११; १४७३
दीर्घायु शोचिः ५, १८, ३; ८८३
दुरोकशोचिः १, ६६, ५; १३८
दुरोगुः ८, ६०, १९; १४०७
दुर्वरीतुः १०, २०, २, १५७२
दुर्ध. ७, १, ११; १११०
दुर्वर्तुः ६, ६, ५; ९९०
दुष्टः ३, २४, १; ५२७

बुहन् सुबुधां विश्वधायसं ह्यम्

१०, १२२, ६; १६८०

वृत्तः १, १२, १, १० । १, १२, ८; १७ ।

१, ३६, ३, ७० । १, ४४, २; ८७ ।

१, ४४, ११; ९६ । १, ५८, १; ११० ।

१, ६०, १, ११९ । १, ७२, ७, २०१ ।

२, ९, २, ४०४ । २, ६, ६; ४३८ । ३, ५, २,

४७१ । ३, ६, ५, ४८४ । ३, ९, ८; ५०७ ।

३, ११, २, ५१९ । ३, १७, ४; ६०३ ।

४, १, ८; ६३४ । ४, ७, ८; ७०० ।

४, ८, १; ७०४ । ५, ८, ६; ८२६ ।

५, ११, ४, ८४५ । ५, १२, ३, ८५० ।

५, २१, ३, ८९७ । ५, २६, ६, ९२५ ।

६, १५, ८; १०३० । ६, १६, २३, १०६४ ।

७, ७, १, ११४२ । ७, ११, ३; ११६८ ।

८, १९, २१, १२४४ । ८, २३, ६, १८-१९,

१२७५, १२८७-८८ । ८, ३९, ९; १३०८ ।

८, ४४, ३, ३०; १३४५, १३६२ ।

८, १०२, १८; १४८० । १०, ८, ५;

१५३८ । १०, १२२, ५, १६७९ ।

३, ३, २, १७४३ । १, १८८, १; १९३१ ।

७, २, ३; १९७७ । १०, ११०, १, २००८ ।

वा० य० २९, २५; २११७ । ऋ० प्रैष

४, २१३२ । अथर्व० ३, २, १, २१५६ ।

३, ४, ३; २१६० । १, ७, ६; २२८९

वृत्तः देवानां मर्त्यानां च- ६, १५, ९;

१०३१ । १०, ४, २, १५०७

वृत्तः देवानां विश्वेषाम्- ४, ९, २, ७१३

वृत्तः विवस्वतः- ४, ७, ४; ६९६ ।

८, ३९, ३; १३०२ । १०, २१, ५, १५८५

वृत्तः विश्वाम्- १, ३६, ५; ७२ । १, ४४, ९;

९४

वृत्तः विश्वस्य ७, ६, १; ११९२

वृत्तः मिथ्यः २, ६, ७; ४३९

वृत्तः ७, १, १; ११००

वृत्तः १, ६५, १०; १३३

वृत्तः ३, २, २, ५०१

वृत्तः ४, ९, २; ७१३ । ३, २६, २,

१७२८

बृहन् जनान् वज्रेण मृधुम् अथ०

१२, २, ९; २२३५

वृत्तः यस्य अरेषा ... ६, ३, ३, ९६५

वृत्तः १०, ४५, ८, १५९६

वृत्तः रभसम् २, १०, ४; ४१२

वृत्तः १, ६६, १०, १४३

वृत्तः महिना १०, ८८, ७, २४०३

वृत्तः १, १, १, १ । १, १, ५, ५ । १, १२, ७;

१६ । १, २४, २; २७ । १, ४४, ११; ९६ ।

१, ७४, ९; २२३ । १, ९४, ७, १६;

२६२, २७१ । १, १२७, १; २७२ ।

१, १२८, २-३; २८४-८५ । १, १८५, १,

३६१ । १, १८९, ३; ३६३ । १, १८९, ६,

३६६ । २, १, ४, ७, ३७२, ३७५ । २, ६;

३९७ । २, ४, १; ४१६ । ३, ५, ६; ४७५ ।

३, ६, ६; ४८५ । ३, ७, ९, ४९८ ।

३, ९, १, ५०० । ३, ९, ८; ५०७ ।

३, २७, ३; ५३९ । ३, २७, ७, ५४३ ।

३, १३, १; ५७४ । ३, १४, ७; ५८७ ।

३, १५, ६, ५९३ । ३, १९, ४; ६१३ ।

३, २०, ३; ६१६ । ४, १, १, ६, ९;

६३१, ६३२, ६३५ । ४, २, १, १९, ६४७-

६५४ । ३, ३, ६६८ । ४, ७, २, ६९४ ।

४, ८, ३, ७०६ । ४, ११, ५, ७३२ ।

४, ११, ६, ७३३ । ४, १३, १; ७४० ।

४, १४, १; ७४५ । ४, १५, १, ७४९ ।

५, १, २, ७५६ । ५, २, २, ७७७ ।

५, ३, ४, ५, ८; ७८१, ७८२, ७८५ ।

५, ६, ४, ८०४ । ५, ८, ४, ८२४ ।

५, ९, १; ८२८ । ५, १४, १, ८६१ ।

५, १५, ५; ८७० । ५, १६, १, ८७१ ।

५, १७, १; ८७६ । ५, २१, ४; ८९८ ।

५, २२, २; ९०० । ५, २२, ३, ९०१ ।

५, २५, १; ९११ । ५, २६, १, ७;

९२०, ९२६ । ६, २, २, ९६२ । ६, ३, १,

९६३ । ६, ११, २, १००१ । ६, १३, २, ४,

१०१३, १०१५ । ६, १५, ४, १०२६ ।

६, १६, ३, ७, १०४४, १०४८ ।

६, १६, १२, ३२, ४१, ४३; १०५३,

१०७३, १०८२, १०८४ । ६, १६, ४६;

१०८७ । ६, ४८, ७, १०९६ । ७, १,

२०, २५, १११९ । ७, ३, १, ११२४ ।

७, १४, १-३, ११७४-११७६ ।

७, १५, ७, १३; ११८३, ११८९ ।

७, १६, ११, १२०२ । ७, १७, ७, १२१० ।

८, ११, १, ६; १२१४, १२१९ । ८, १९,

१, ३, १७, २४, २४, २८, १२२४,

१२२६, १२४०, १२४७, १२५१ ।

८, २३, १८, १२८७, ८, ३९, ७, १३०६ ।

८, ४४, ११, १५; १३५३-५७८, ७५, २;

१३७४, ८, ६०, १९; १४०७, ८, ७, १८,

१४१६ । ८, १०२, १५, १४७७ ।

८, १०२, १६; १४७८ । १०, २, २; १४९३ ।

१०, ७, १, ६, १५२७-३२१०, १२, १, ३

१५४७, १५५१ । १०, १६, ९, १६६५ ।

१०, ११५, ३; १६६८ । १०, १२२, ४,

१६७८ । १०, १५०, ४; १७०१ । १०,

१७६, २, १७०८ । १०, १७६, ४; १७१०

३, ३, ९; १७५० । ३, २६, १; १७५३ ।

४, ५, २; १७५९ । ७, ६, ३; १८०९ ।

वृत्तः १, १३, ११; १९१६ । १, १४२, ३;

१९२० । १, १४२, ११; १९२८ । १, १८८,

१; १९३१ । २, ३, १, १९४२ । ३, ४, १, ९;

१७५३-६१७, २, ९, १९६१ । ५, ४, ७;

१९८४, १९८७ । १०, ७०, ४, ६, १०;

२०००, २, ६ । १०, ११०, १, २००८ ।

१, ११०, १०; २०१७ । १०, ८८, १४,

२४१० । २, ३५, ५, २४२६ । वा० य०

२७, १२-१३; २०६१-६२ । २९ २५,

३४; २११७, २१२६ । ऋ० प्रैष ४, २१३२

अथर्व० ५, २७, २; २०७३ । ५, २८, २-३

२०८५-८६, १२, २, १२, ३३, २२३८,

२२४६ । २, ३४, ३, २१५१ । ४, ३३, १०,

२२८३ । १, ७, १; २२८४ । १, ८, १, २;

२२९३-९४ । ३, २१, ३-४, २३५७-

५८ । साम० १, १, १, १०

वृत्तः प्रथमः अथ० ५, २८, ११; २१७७

वृत्तः महः मर्त्यान् आविवेश ४, ५८, ३,

१८९७

देवासः [मरुतः] १, १९, ६, २४४३
 देवकामः (त्वष्टा) २, ३, ९, १९५०
 देवतमः १०, ३, ६; १५०४। १०, ७०, २,
 १९९८
 देवतातिं उराणः ३, १९, २; ६११
 देवयावा दूतः ७, १०, २, ११६२
 देवयु १०, १७६, ३; १७०२
 देववाहनः ३, २७, १४; ५५०
 देववीतमः १, ३६, ९; ७६
 देवहूतमः ३, १३, ६; ५१९
 देवानां केतुः ३, १, १७; ४६३
 देवानां दूतः ६, १५, ९, १०३१
 देवानां देवः १, ३१, १, ५०। १, ६८, २;
 १५५। १, ९४, १३; २६८। वा० य०
 २०, ४१, २०१९ इन्द्रः
 देवानां पिता १, ६९, २; १६५
 देवानां पुत्रः १, ६९, २, १६५
 देवावी ३, २९, ८, ५६५
 देवेषु जागृविः १, ३१, ९; ५८
 देवेषु देवः वा० य० २७, १२, २०६१।
 अथ० ५, २७, २; २०७३
 देव्यः १, १४०, ७; २९८
 देव्यः तिस्रः सरस्वती इत्या भारत्यः
 मल्लः वा १, १३, ९; १९१४।
 १, १४२, ९, १९२६। १, १८८, ८, १९३८।
 २, ३, ८, १९४९। ३, ४, ८; १९६०।
 ५, ५, ८; १९१४। ७, २, ८, १९८१।
 १, ५, ८; १९८८। १०, ७०, ८; १९९९।
 १०, ११०, ८; २०१०। वा० य० २०, ४३,
 ६४; २०२१, २०३३। २१, १९, ३७,
 २०४४, २०५६। २७, १९; २०६८।
 २८, ८; २०९१। २८, ३१; २१०२। २९, ८,
 २११३। २९, ३३; २१२५। क्र० प्रैष
 ९, २१३७। अथ० ५, २७, ९; २०८०।
 ५, १२, ८; २००९
 दैव्यः १, २७, १२; ४९
 दैव्यः अतिथिः ७, ८, ४, ११५२
 दैव्यः केतुः १, २७, १२, ४९
 दैवोदास ८, १०३, २, १२५८
 द्यौं परिजमान इव १, १२७, २; २७३

द्युक्षः २, २, १; ३८५
 द्युक्षवचा ६, १५, ४; १०२६
 द्युतानः ६, १५, ४; १०२६। ७, ८, ४;
 ११५२। ४, ५, १०; १७६७
 द्युभिः हितः १०, ७, ५, १५३१
 द्युमः (संजी०) ६, १०, २; २९४
 द्युमान् २, ९, ६; ४०८। ४, १५, ४, ७५२।
 ५, ६, ४; ८०४। ५, २६, ३; ९२२।
 ७, १, ४; ११०३। ७, १५, ७, ११८३।
 १०, २, ७; १४९८। ९, ५, ३; १९८३
 द्युमान् द्युमासु १०, ६९, ७; १६३१
 द्युमवान् ५, २८, ४; ९३६
 द्युम्नी १, ३६, ८, ७५। ८, १०३, ९;
 १२६५। १०, ६९, ५; १६२९
 द्रविणः अथ० ७, ७८, २, २१९९
 द्रविणस्-णाः ३, ७, १०; ४९९
 द्रविणस्युः २, ६, ३, ४३५। ६, १६, ३४;
 १०७५
 द्रविणोदा अग्निः [देवता] १, ९६, १-२;
 १८७९-१८८७
 द्रविणोदा २, १, ७, ३७५। २, ६, ३;
 ४३५। ७, १६, ११; १२०२। ८, ३९, ६;
 १३०५। १०, २, २; १४९३। १०, ७०, ९,
 २००५। अथ० १९, ३, ३; २२०६
 द्रुषद् १०, ११५, ३, १६६८
 द्रुहन्तरः १, १२७, ३, २७४
 द्रवन्तः ६, १२, ४, १००९। २, ७, ६,
 ४४६
 द्वारः देवी. [देवता] १, १३, ६, १९११।
 १, १४२, ६; १९२३। १, १८८, ५, १९३५।
 २, ३, ५; १९४६। ३, ४, ५; १९५७।
 ५, ५, ५; १९६८। ७, २, ५, १९७८।
 ९, ५, ५, १९८४। १०, ७०, ५; १९९६।
 १०, ११०, ५, २००७। वा० य० २०, ४७;
 २०१८। २०, ६१; २०३०। २१, १६,
 २०४१। २१, ३४, २०५३। २७, १६,
 २०६५। २८, ५; २०८८। २८, २८;
 २०२९। २९, ५, २११०। २९, ३०;
 २१२२। क्र० प्रैष ५, २१३४। अथ०
 ५, २७, ७, २०७८। ५, १२, ५; २००७

द्विजन्मा १, ६०, १; ११९। १, १४०, २;
 २९३। १, १४९, ४-५; ३५६-३५७
 द्विबर्हाः ४, ५, ३; १७६०
 द्विमाता १, ३१, २; ५१
 द्वेषोद्युतः ४, ११, ५; ७३२
 धक्षुः १०, ११५, ४, १६६९
 धनञ्जयः १, ७४, ३; २१७। ६, १६, १५;
 १०५६
 धनर्चः १०, ४९, ५; १६०५
 धनस्पृत् १, ३६, १०, ७७। ५, ८, २;
 ८२२
 धरुणः ५, १५, १-२; ८६६-६७
 धर्णसिः ५, ८, ४; ८२४
 धर्णिः १, १२७, ७; २७८
 धर्ता ५, १, ६; ७६०
 धर्ता मालुषीणां विशाम् ५, ९, ३; ८३०
 धर्ता रायः ५, १५, १; ८६६
 धर्मः ३, १७, १; ६००
 धवीयान् सद्यः ६, १२, ५; १०१०
 धामनि उरुजयः विरोचमानम्
 १, ९५, ९, १८७६
 धामनि (युक्त) सप्त ४, ७, ५; ६९५
 धालिः ३, ७, १; ४९०। ७, ६, २;
 १८०४
 धितावान् ३, २७, २; ५३८
 धियधिः ७, १३, १; १८१०
 धियं साधयन्ती [सरस्वती] ९, ३, ८;
 १९४९
 धियावसु १, ५८, ९; ११८। १, ६०, ५;
 १२३। ३, २८, १; ५५२। ३, ३, २; १७४३
 धीः १, ९५, ८; १८७५
 धीनां यन्ता ३, ३, ८; १७४९
 धीरः १, ९४, ६, २६१। ८, ४४, २९;
 १३७१। अथ० ३, २१, ४; २३५८
 धुनिः १, ७९, १; २४४
 धूमः ३, २९, ९; ५६६
 धूमः ते केतुः दिविश्रितः ५, ११, ३; ८४४
 धूमं ऋणवन् ७, २, १; १९७५
 धूमकेतुः १, २७, ११; ४८। १, ४४, ३;

८८ । ८,४४,१०; १३५२ । १०,४,५;
१५१० । १०,१२,२; १५५०
धूर्षद् १,१४३,७,३२४।२,२,१; ३८५
धृतव्रतः ८,६४,२५; १३६७
धृषद्वर्णः १०,८७,२२; १८४९
धृष्टः ६,१६,२२, १०६३ ।
१०,१६,७, १५६३ । १०,६२,५-६;
१६२९ ३०। अथ० ५,२९,१०; २३१४
धृजिमान् १,७९,१; २४४
ध्राजिः एकस्य दृढशे [वायुदेवता]
१,१६४,४४, २४५६
ध्रुवः ६,१५,७; १०२९।६,९,४; १७९०
ध्वंसयन् १,१४०,३ २९४
नक्षति धाम् आभि शुक्रैः ऊर्मिभिः
१,९५,१०; १८७७
नक्षयः ७,१५,७; ११८३
नडे अथ० १२,२,१९; २२४५
नसा अध्वराणाम् ८,१०२,७; १४६९
नक्षमत् जिह्वाभिः ८,४३,८, १३१७
नभोविद् १०,४६,१; १६०१
नमसा उपवाक्यः १०,६९,१२, १६३९
नमसा रातहव्यः ४,७,७; ६९९
नमो युजान् १६५,१; १२४
नमो वहन् १,६५,१; १२४
नमस्यः १,७२,५, १९९।२,१,३,३७१ ।
२,१,१०; ३७८ । ३,५,२; ४७१
३,२७,१३; ५४९
नराशंसः [अग्निदेवता] १,१३,३,
१९०८ । १,१४१,३; १९२० । २,३,३,
१९४४ । ५,५,२, १९६५ । ७,२,२,
१९७५ । १०,७०,२; १९९३। वा० य०
२०,३७, २०१५ । २०,५७, २०२७ ।
२१,३१; २०५० । २७,१३, २०६२।
२८,२; २०८५ । २९,३; २१०८ ।
२९,२७; २११९। ऋ० प्रैष ३,२१३१।
अथ० ५,२७,३, २०७४
नराशंसः भवति यद् विजायते आसुरः
३,२९,११, ५६८

नर्यापसः [त्वष्टा] वा० य० २१,३८;
२०५७ । २८,४; २०८६
नर्यां पुरुणि हस्ते दधानः १,७२,१,
१९५
नवः सदा ३,११,५; ५२२
नवजातः ५,१५,३; ८६८
नव्यः १,१४१,१०; ३१४।१,१८९,२,
३६२। ६,१,७; ९४५। १०,४,५; १५१०
नव्यः सनात् ८,११,१०; १२२३
नाकः ५,१७,२; ८७७
नाद्यः २,३५,१; २४२२
नानदत् एति १,१४०,५ १९६
नानदत् चित्रेषु ३,२,११; १७३७
नाभिः पृथिव्या १,५९,२; १७१८
नाभिः यशानाम् ६,७,२, १७७४
नाभिः रोचनस्य १०,४६,३; १६०३
नाभिः विश्वस्य चरतः ध्रुवस्य १०,५,३;
१५१५
नाम अत्य चारु २,३५,११; २४३२
निषवः १,९५,४; १८७१
नितोशतः ६,१,८; ९४६
नित्यः १,६६,१,५; १३४,१३८ ।
३,२५,५; ५३६ । ५,१,७; ७,६१ ।
१०,१२,२; १५५०
नित्यहोता १०,७,४; १५३०
निधुविः मत्स्येषु ७,३,१; ११२४
निर्ऋतः अथ० १२,२,१४; २२४०
निर्मथितः ३,२३,१; ६२७
निवेशनी जगतः [रात्रिः] १,३५,१;
२४४८
निषत्तः १,५८,३, ११२ । ३,३,२;
१७४३ । ६,९,४; १७९०
निषत्तः सन्मध्ये १,६९,४; १६७
निषद्वारः वा० य० २८,४; २०८७
निष्पदमाणः यमते नायते १,१२७,३;
२७४
निःस्वरः अथ० १२,२,१४; २२४०
नीलपृष्ठः ३,७,३; ४९२
नू च पुरा च १,९६,७; १८८५

नृचक्षाः ३,१५,३; ५९० । ३,२२,२;
६२४ । ४,३,३; ६६८ । ८,१९,१७;
१२४० । १०, ८७, ८-१०, १७;
१८३५-३७, १८४४।९,५,७; १९९२ ।
अथ० १,७,५, २२८८
नृतमः १,७७,४, २३७ । ३,१,१२;
४५८ । ५,४,६; ७९५ । १,५९,४;
१७२० । ४,५,२, १७५९ । ६,५,४,
१८०६
नृपतिः २,१,७; ३७५
नृपेशसः [देवीः द्वारः] ३,४,५; १९५७
नृमणा १०,४५,१; १५८९
नृम्णा विश्वानि हस्ते दधानः १,६७,३,
१४६
नृशस्तः मैत्रा० ४,१३,२; २१३१
नृशस्त्रः ऋ० प्रैष ३,२१३१
नृषद् १०,४६,१, १६०१
नृः प्रणेत्रः ऋ० प्रैष ३, २१३१
नृः प्रणेत्र मैत्रा० ४,१३,२; २१३१
नेता अध्वराणाम् १०,४६,४; १६०४
नेता हषाम् ३,२३,२; ६२८
नेता क्षितीनां दैवीनाम् ३,२०,४; ६१७
नेता चर्षणीनाम् ३,६,५; ४८४
नेता यज्ञस्य २,५,२; ४२६। ३,१५,४;
५९१
नेता यज्ञस्य रजसश्च १०,५,६; १५३९
नेता सिन्धूनाम् ७,५,२; १७९५
नेष्टा २,५,५, ४२९
नेष्टू तव २,१,२; ३७०
युचतिसः विश्वरूपाः ओषधीः १०,८८,
१०; २४०६
पक्कः १,६६,३; १३६
पतिः वा० य० २८,३१, २१०२
पतिः ३,७,३; ४९२
पतिः जनीनाम् १,६६,८; १४१
पतिः पृथिव्याः ८,४४,१६; १३५८
पतिः शतिनः सदस्त्रिणः वाजस्य
८,७५,४; १३७६

पदा त्वे एव निदिताः त्रिः सप्त गुह्यानि
 १, ७२, ६; २००
 पदे तस्थिवान् परमे १, ७२, ४; १९८
 पनिष्ठ ३, १, १३; ४५९
 पन्यासः ८, ७४, ३; १४४४
 पप्रथानः ५, १५, ४; ८६९
 पप्रिः अथ० १२, २, ४७; २२६१
 पयसाः-स् अथ० ४, १४, ६; २२२२
 पयस्वत्-स्वान् १, २३, २३
 पयस्वतो [उषासानके] २, ३, ६; १९४७
 परः आमासु पूर्ण २, ३५, ६; २४२७
 परमेष्ठी अथ० १, ७, २; २२८५
 परस्याः २, ९, २, ६; ४०४, ४०८
 परिजमा ६, २, ८; ९५९ । ९, ७२, १०;
 १४३३ । ३, २६, ९; १७३५ । ७, १३, ३;
 १८१२
 परिधिः मनुष्याणाम् अथ० १२, २, ४४,
 २२५७
 परिभूः अथ० ३, २१, ४; २३५८
 परिभूः देवान् १०, १२, २; १५५०
 परिभूः विश्वातात्मना ३, २, १०; १७५१
 परिभूतमः १०, ९, ८; १६५८
 परियन् वर्तिर्यशम् १०, १२२, ५; १६८०
 परिवीतः १०, ४६, ६; १६०६
 परिष्कृतः ८, ३९, ९; १३०८
 पर्जन्य क्रन्धः ८, १०२, ५, १४६७
 पर्णेति पार्थिवं एवेन सद्यः १, १२८, ३;
 २८५
 पर्वतानां मित्रः ३, ५, ४; ४७३
 पलितः १०, ४, ५; १५१०
 पवमानः ९, ५, १-११; १९८१-९१
 ९, ६६, २० । साम० २, ७, १, १२
 पविता अथ० ६, ११९, ३; २३८६ ।
 ९, ६६, २०; । साम० २, ७, १, १२
 पाजः अस्य रुशत् ३, २९, ३; ५६०
 पाञ्चजन्यः अथ० ४, २३, १; २३३०
 पात्रः ६, ७, १, १७७७
 पादाः अस्य त्रयः ४, ५८, ३; १८९७
 पाथुः ६, १५, ८; १०३० । ४, ४, ३;
 १८१५

पावकः १, २२, १०; १९ । १, ६०, ४;
 १२२ । २, ७, ४; ४४४ । ३, ५, ७;
 ४७६ । ३, १०, ८; ५१६ । ३, २७, ४;
 ५४० । ३, १७, १; ६०० । ३, २१, २,
 ६१९ । ४, ६, ७; ६८८ । ५, ४, ३, ७;
 ७९२, ७९६ । ५, ७, ४; ८१४ ।
 ५, २३, ४; ९०६ । ५, २६, १; ९२० ।
 ६, १, ८; ९४६ । ६, २, ६, ९६८ ।
 ६, ४, ३; ९७३ । ६, ५, २; ९८० ।
 ६, ६, २; ९८७ । ६, १५, ७; १०२२ ।
 ६, ४८, ७; १०९६ । ७, ३, १; ११२४ ।
 ७, ३, ९; ११३२ । ७, ९, १; ११५५ ।
 ७, १५, १०; ११८६ । ८, २३, १९;
 १२८८ । ८, ४४, २८, १३७० । ८, ६०, ३;
 ११; १३९१, १३९९ । ८, ७४, ११;
 १४५२ । १०, ४५, ७; १५९५ ।
 १०, ४६, ४, ७-८, १६०४, १६०७, १६०८ ।
 ४, ५, ६; १७६३ । १, ९५, ११, १८७८ ।
 १, ९६, ९; १८८७ । १, १३, १; १९०६ ।
 १, १४२, ३, ६; १९२०, १९२३ । २, ३, १;
 १९४२ । अथ० ६, ४७, १; २३७२
 पावक वर्चाः १०, १४०, २; १६८५
 पावक शोचिः ३, ९, ८, ५०७३, ११, ७,
 ५२४ । ४, ७, ५; ६२७ । ५, २२, १;
 ८९९ । ६, १५, १४; १०३६ । ८, ४३, ३१;
 १३४० । ८, ४४, १३; १३५५ । ८,
 १०२, ११, १४७३ । १०, २१, १, १५८१ ।
 ३, २६, ६; १७३२
 पिता १, ३१, १०; ५९ । १, ३१, १६;
 ६५ । २, १, ९; ३७७ । २, ५, १; ४२५ ।
 ३, २७, ९; ५४५ । ५, ४, २; ७९१
 पिता आश्रय चित् १, ३१, ४, ६३
 पिता यज्ञानाम् ३, ३, ४, १७४५
 पिता माता मनुषाणां सदमित् ६, १, ५,
 ९४३
 पितृमान् १, १४१, २, ३०६
 पितृषिपता ६, १६, ३५, १०७६
 पितृयन् १०, १४२, २; १६९१
 पिन्वमानः मधुमत् घृतम् वा० य०

२९, १; २१०६
 पिशाङ्गरूपः [त्वष्टा] २, ३, ९, १९५०
 पुनानः क्रतुम् ३, १, ५; ४५१
 पुमान् ४, ३, १०; ६७५
 पुरः १०, ८७, २२; १८४९
 पुर एता १, ७६, २; २३०
 पुर एता विशाम् ३, ११, ५; ५२२
 पुरन्दरः ६, १६, १४; १०५५ । ७, ६, २
 १८०४
 पुरन्दरः [इन्द्रः] वा० य० २०, ३८
 २०१६ । २८, ३, २०८६
 पुराजाः १०, ५, ५; १५१७
 पुरीष्याः [व्यासः बहु०] ३, २२, ४;
 ६२६
 पुरुषः १, ६८, १०; १६३ । ३, २५, २;
 ५३३
 पुरुचेतनः ६, १६, १२; १०६०
 पुरुतमः ६, ६, २; ९८७
 पुरुषप्रतीक ३, ७, ३; ४९२
 पुरुनिष्ठः ५, १, ६; ७६०
 पुरुषेशासु गर्भैः भुवत् २, १०, ३; ४११
 पुरुप्रशस्तः १, ७३, २; २०६ ।
 ८, १०३, १२, १२६८ । ८, ७०, १०;
 १४१८
 पुरुमिथः १, १२, २, ११ । १, ४४, ३
 ८८ । १, ४५, ६; १०५ । ५, १८, १;
 ८८१ । ८, ४३, ३१; १३४० । ८, ७४, १;
 १४४२ । ३, ३, ४, १७४५
 पुरुषैषः १, १४५, ३ ३३५
 पुरुषः ५, ८२, ५, ८२२, ८२५ । वा० य०
 २८, ९; २०९२
 पुरुवारः २, २, २; ३८६ । ४, २, २०;
 ६६६ । ६, १, ३; ९५१ । ६, ५, १, ९७९ ।
 ६, १५, ७; १०२९ । ४, ५, १५; १७७२;
 पुरुवारपुष्टिः १, ९६, ४; १८८२
 पुरुषेपसम् (द्वि०) ८, ४४, २६; १३६८
 पुरुशोभन ५, २, ४, ७७०
 पुरुश्चन्द्रः १, २७, ११, ४८ । ३, २५, ३;
 ५३४ । ५, ८, १; ८२१

पुरुषरेषणः अथ० ३,२१,९; २३६३
पुरुष्टुतः १,१४१,६; ३१० । १,८,५,
८२५
पुरुषग्रहः ५,७,६; ८१६ । १,१४२,६;
१९२३
पुरुहूतः १,४४,७, ९२ । अथ०
१९,५५,६; २२७४
पुरुहूते [नक्तोषाला] ७,२,६; १९७९
पुरु (रु) चरन् १,१४४,४; ३२९
पुरुतमः ८,१०२,७; १४६९
पुरुवसुः २,१,५, ३७३ । ८,१०३,५;
१२६१ । ८,७०,१०; १४१८
पुरोगाः १०,१२४,१,१६८३ । १,१८८,
११; १९४१ । १०,११०,११; २०१३ ।
वा० य० २९,११,३६; २११६, २१२८
पुरोधावा (वन्) ८,८४,८; १४६१ ।
९,५,९; १९८९
पुरोहितः १,१,१; १११,४४,१०,९५ ।
१,४४,१२, ९७ । १,५८,३; ११२ ।
१,९४,६; २६१ । १,१२८,४, २८६ ।
३,११,१; ५१८ । ५,११,२; ८४३ ।
१०,१,६; १४७० । १०,१२२,४; १६७८ ।
१०,१५०,४; १७०१ । १०,१५०,५;
१७०२ । ३,२,८; १७३४ । ३,३,२;
१७३३ । ९,६,२० । अथ० ७,६२ (६४), १ ।
२३७३ । साम० १,१,५,४, २,७,
१,१२
पुर्वणीकः ६,१०,२; ९९४ । ६,५,२,
९८० । ६,११,६; १००५ ।
पुष्टिः वा० य० २८,३२; २१०३
पुष्टिवर्धनः १,३१,५; ५४
पुष्टिवर्धनः [इन्द्राग्नी] वा० य० २१,२०;
२०४५
पुतकक्षः ३,१,३; ४४९
पूर्वः ७,६,३; १८०५ । १०,८७,७;
१८२४
पूर्वः असमत् १०,५३,१; १६१६
पूर्वकृत [इन्द्रः] वा० य० २०,३६; २०१४
पूर्यः १,२६,५; ३२११, ७४,२; २१६ ।

२,२,९, ३९३ । १,१,३; ५२० । ३,१४,३,
५८३ । ३,२,३, ६२९ । ५,८,२; ८२२ ।
५,१५,१, ३; ८६६, ८६८ । ५,२,३; ८९३ ।
८,१९,२; १२२५ । ८,२३,७, २२;
१२७६, १२९१ । ८, ३९, ३, १०;
१३०२, १३०९ । ८, ७५, १; १३६३
पूर्यः यज्ञेषु ८,३९,८; १३०७ ।
८, ६०, २; १३९० । ८, १०२, १०; १४७२
पूषा अथ० ६, ११२, ३; १९२ । [देवता]
ऋ० ७, ४१, १; २४३७
पूषा स्वम् २, १, ६; ३७४
पूषणवान् वा० य० २१, १५, २०४० ।
२८, २७; २०९८
पूषणवान् [इन्द्रः] १, १४२, १२, १९२९
पूः शतभुजिः मदो न आयसी भव
७, १५, १४; ११९०
पृक्षः १, १४१, २; ३०६ । ६, ८, १; १७८०
पृच्छन्ति तम् इत् १, १४५, २; ३३४
पृणन् १०, १२२, ४, १६७८
पृतनाजित् अथ० ७, ६३ (६५), १;
२३७४
पृतनाषाद् ३, २९, ९; ५६६
पृथिव्याः तनः ३, २५, १; ५३२
पृथुः २, १०, ४; ४१२
पृथुपाजाः ३, ५, १; ४७० । ३, २, ७, ५,
५४१ । ३, २, ११, १७३७ । ३, ३, १;
१७४२
पृथुप्रगामा १, २७, २; ३९
पृषद्वत् [बर्हिः] ७, २, ४; १९७८
पृषबन्धुः ३, २०, ३; ६१६
पृष्टः दिवि पृथिव्याम् विश्वा १, २८, २;
१७२५
पोता १, ९४, ६; २६१ । २, ५, २; ४२६ ।
७, १६, ५; ११९६ । ४, ९, ३; ६१४
पौत्रम् तव २, १, २; ३७०
प्रकेतः १, ९४, ५; २६०
प्रकेतः अध्वरस्य महान् ७, ११, १;
११६६
प्रचेताः १, ४४, ११; ९६ । २, १०, ३;
४११ । ३, २५, १; ५३२ । ३, २९, ५;

५६२ । ४, १, ११; ६३१ । ४, ६, २;
६८३ । ६, ५, १; ९७९ । ६, १३, ३;
१०१४ । ६, १४, २; १०१९ । ७, ४, ४;
११३७ । ७, १६, ५, १२; ११९६, १२०३ ।
७, १७, ५, १२०८ । १०२, १८; १४८० ।
१०, ७९, ४, १६४० । १०, १४०, ५;
१६८८ । १०, ८७, ८, १८३५ । १०, ११०,
३, २००३ । वा० य० २९, २५; २११७ ।
अथर्व० ७, १०६, १, २२०० । ४, २३, १;
२३३० । [वरुण देवता]
प्रचेतसौ [देवते] ' होतारौ देव्यौ ' पश्य
प्रचोदयन् विद्यानि ३, २७, ७; ५४३
प्रचोदयन्ता विदधेयु [देव्यौ होतारौ]
१०, ११०, ७; २०१४
प्रजानन् ३, २९, १६; ५७३ । ४, १, १०;
६३६ । १०, १६, ९, १५६५ । १०,
८८, ६; २४०२ । अथ० ४, २३, २;
२३३१
प्रजानन् [वनस्पतिः] २, ३, १०; १९५१
प्रजानन् तव ऋत्विग्यं योनिः १०, ९१, ४,
१६५४
प्रजानन् देवयानान् पथः वा० य०
२९, २, २१०७
प्रजापतिः ९, ५, ९; १९८९
प्रणेताः वस्य आ २, ९, २, ४०४
प्रतरणः अथ० १२, २, ४९; २२६२ ।
ऋ० २, १, १२, ३८०
प्रतिक्षियन् विश्वा भुवनानि २, १०, ४;
४१२
प्रतिगृह्णन् अथ० ३, २१, ४, २३५८
प्रतिदहन् अभिशस्ति अरातिम् अथ०
३, १, १; २२५२ । ३, २, १; २२५६
प्रतिमिमानः [इन्द्रः] वा० य० २०, ३७
२०१५
प्रतिहर्ष्यन् (त्) ८, ४३, २; १३११
प्रतिव्य. ८, २३, १; १२७०
प्रत्न. ३, ९, ८; ५०७ । ५, ८, १; ८२१ ।
८, ११, १०; १२२३ । ८, २३, २०; १२८९ ।
८, २३, २५; १२९४ । ८, ४४, ७; १३४९

१०,४,१; १५०६ । १०,७,५, १५३१ ।
 १०,९,१,१२; १६६३
 प्रत्नः होता २,७,६; ४४६
 प्रत्यङ् विश्वतः १,१४४,७,३३२।२,१०,
 ५, ४१३ । १०,७,५; १६४१
 प्रत्यङ् तस्यौ सः विश्वा भुवनानि १०,८८,
 १६; २४१२
 प्रथमः १,३१,२; ५१२,१०,१; ४०९ ।
 ३,२९,५; ५६२ । ४,१,२१; ६३७ ।
 ४,७,१,६९३।४,११,५; ७३२ । ५,११,
 २; ८४३।६,१,१; ९३९।६,१५,१६;
 १०३८ । ८,२३,२२; १२९१ ।
 १०,१२,२; १५५० । १०,४६,९;
 १६०९ । १०,१२२,४; १६७८ । १०,
 १२२,५, १६७९।१,१६,३; १८८१।
 १,१८८,७, १९३७ । ३,४,३, १९५५।
 अथ० ७,८२, (८७), ४,५, २३२७-२८।
 ४,२३,१, २३३०
 प्रथम. अंगिरस्तमः १,३१,२; ५१
 प्रथमः अंगिरा ऋषिः १,३१,१; ५०
 प्रथमः अमृतानाम् १,२४,२; २७
 प्रथमः देवः अथ० ५,२८,११; २१७७
 प्रथमः देवतानाम् अथ० ४,१४,५,
 २२२१
 प्रथमः मात रिविश्वेने विवस्वते आवि.
 भव १,३१,३; ५२
 प्रथमः होता ७,११,१; ११६६। ३,४७;
 १९५९
 प्रथमजाः ऋतस्य १०,५,७; १५१९
 प्रदिवः ४,६,४; ६८५ । ४,७,८, ७००।
 ५,८,७; ८२७। ६,५,३, ९८१।२,३,१;
 १९४२
 प्रभुः ८,४३,२१; १३३०
 प्रभुः रूपाणि १,१८८,९; १९३९
 प्रभुः विश्वा विशः अनु ८,११,८; १२२१
 प्रमतिः १,३१,१०, १४,१६; ५९, ६३,
 ६५ । ८,१९,२९; १२५२
 प्रमहाः (हस्) ५,२८,४; ९३६

प्रमृणन् सपत्नान् अथ० १९,६६,१;
 २३५०
 प्रयज्युः ३,६,२; ४८१
 प्रयतः ४,५,१०, १७६५
 प्रयन्ता वसूनाम् १,७६,४, २३२
 प्रवपन् १०,११५,३; १६६८
 प्रविद्वान् अथ० ५,२६,१; २३४५
 प्रविशिवान् विशः विशः अथ० ४,२३,
 १, २३३०
 प्रशस्यः २,२,३; ३८७
 प्रशस्तः १,३६,९; ७६ । ७,१,१; ११००
 प्रशस्त विष्णु १,६६,४; १३७
 प्रशस्यः विद्येषु ८,११,२, १२१५
 प्रशासन् ऋतुन् १,९५,३, १८७०
 प्रशास्ता १,९४,६, २६१। २,५,४; ४२८
 प्रशास्त्रम् तव २,१,२; ३७०
 प्रशिषः तस्मिन् सन्ति १,१४५,१; ३३३
 प्रसूषु नवासु अन्तः चरति १,९५,१०;
 १८७७
 पाञ्च क् १०,४६,४; १६०४
 प्राचा जिह्वा १,१४०,३; २९४
 प्राचीनम् ९,५,४, १९८९
 प्रावीः ४,९,२; ७१३
 प्रियः १,२६,७; ३४ । १,१२८,७-८;
 २८९,२९० । १,१४३,१; ३१८ ।
 ३,२३,२; ६२९ । ५,२३,३, ९०५ ।
 ६,१,६; ९४४ । ६,१६,४२; १०८३।
 ६,४८,१; १०९०। ७,१६,१, ११९२।
 १,१३,३; १९०८ ।
 प्रियः चमस्य १०,२१,५; १५८५
 प्रियः देवानाम् साम० १,१,७,३
 प्रियः विशाम् ५,१,९; ७६३
 प्रिय जातः ८,७१,२; १४१०
 प्रिय धामा (मः) १,१४०,१; २९२
 प्रियप्रियम् (द्वितीया) ६,१५,६,
 १०२८
 प्रीणन् ९,५,१; १९८६
 प्रीणानः १,७३,१; २०५ । वा० य०
 २७,१३; २०६२

प्रीतः १,६६,४; १३७। १,६९,५; १६८
 प्रेतीषणिः चर्षणीनाम् ६,१,८, ९४६
 प्रेद्धः सनकात् १०,६९,१२; १६३६
 प्रेष्ठः ८,८४,१, १४५४। १०,१५६,
 ५; १७०७
 प्रेष्ठः प्रियाणाम् ८,१०३,१०; १२६६
 प्रैणानः अथ० ५,२,७; २०७४
 प्रोथन् (त्) १०,११५,३; १६६८
 प्लव. अथ० १२,२२,४८, २२६१
 बृद्धः त्रिधा ४,५८,३, १८९७
 बप्सत्-न् १०,१४२,३; १६९२
 बप्सन्, उपस्रक्केषु ८,७२,१५, १४३८
 बन्निः ३,१,१२, ४५८
 बम्हः अथ० ७, १०९, १, ७;
 २३६५, २३७१
 बर्हिः [देवता] १,१३,५; १९१० ।
 १,१४२,५; १९२२। १,१८८,४; १९३४।
 २,३,४; १९४५ । ३,४,४, १९५६ ।
 ५,५,४; १९६७ । ७,२,४; १९७७ ।
 ९,५,४; १९८४। १०,७०,४, १९९५।
 १०,११०,४; २०१६ । वा० य०
 २०, ३९, ५९; २०१७, २०२९ ।
 २१,१५,३३; २०४०, २०५२। २७,१५,
 २०६४। २८,४; २०८७ । २८,२७;
 २०९८। २९,४,२९; २१०९, २१२१ ।
 ऋ० प्रैष ५, २१३३ । अथ० ५, १२,४;
 २००६ । ५, २७, ९; २०८०
 बर्हिषः राट् ६,१२,१; १००६
 बहुलः २,१,१२; ३८०
 बाहुमान् [ह्वन्द्रः] अथ० १,७,४; २२८७
 बृहन् [त्] १,४५,८; १०७ । २,१,१२;
 ३८० । ३,२७,१५; ५५१। ३,१५,१;
 ५८८ । ५,१२,१; ८४८ । ५,२६,३;
 ९२२ । ६,१,३; ९४१। ६,२,४, ९५५।
 ८,१०३,८; १२६४ । १०,१,१, १४८५।
 १०,१,३; १४८७। १०,३,४-५; १५०२-
 ३। १०,७,३; १५२९। ३,२,१४; १७४०।
 ४,५,१; १७५८ । १०,७०,७; २००३।

१०.८८,३; २३९९। अथ० १९,६४,१,
२३५१। [इन्द्र] वा० य० २०,४१,
२०१९। अथ० ४,१४,६; २२२२
बृहत् तिरश्चा वयसा २,१०,४, ४१२
बृहता ज्योतिषा भाति ५,२,९; ७७५
बृहतीः [देवीः द्वार] १०,११०,५;
२००७
बृहत्केतुः ५,८,२, ८२२
बृहत्सुरः ८,५६,५; २४५५
बृहदर्चाः ५,२५,७, ९१७
बृहदुक्षा १०,६९,७; १६३१
बृहद्भाः १ ४५,८,१०७। ७,८ ४; ११५२
बृहद्भातुः १,२७,१२; ४९। १,३६,१५;
८०। १०,१४,१, १६८४
बृहत्सतिः ३,२६,२; १७५४
बृहत्सपतिः [देवता] अथ० १९,४,४;
२२१२। २,२९,१; २१४९। ३,२१,८,
२३६२
ब्रह्मः ३,७,५; ४९४
ब्रह्मन्- ह्या २,१,२; ३७०। २,१,३;
३७१। ४,९,४; ७१५। ७,७,५, ११४६।
४,४,६, १८१८। वा० य० २८,२८;
२०९९
ब्रह्मणस्कविः ६,१६,३०, १०७१
ब्रह्मणस्सतिः २,१,३; ३७१
" [देवता] ७,४१,१; २४३७।
अथ० ४,४,६, २१६२
भृग त्वम् २,१,७, ३७५। ६,१३,२,
१०१३। वा० य० २८,३३; २१०४।
[देवता] ऋ० ७,४१,१; २४३७
भद्रः १,६७,२; १४५। १०,३,३; १५०१
भद्रम् ४,१०,१, ७२०
भद्रशोचिः ५,४,७, ७९६। ७,१४,२,
११७५। ८,७१,३; १४११। १०,४५,९;
१५१७
भन्दमानः सुमन्मभिः ३,२,२; १७३८
भन्दमाने [उषासानक्ते] १,१४२,७;
१९२४। ३,४,६, १९५८
भरतम्-त-तः (द्वि०) १,९६,३; १८८१

भरतस्य अग्निः ७,८,४; ११५२
भरद्वाजे समिधान. ६,४८,७; १०९६
भर्वन् पुरुणि पृथूनि ६,६,२, ९८७
भाः १,४५,८, १०७। ४,५,१, १७५८
भाक्कजीकः १,४४,३, ८८। ३,१,१२,
१४; ४५८,४६०
भाक्कजीकः समिधा १०,१५,२, १५५०
भाजयुः २,१,४, ३७२
भाति बृहता ज्योतिषा ५,२,९, ७७५
भातु ३,२२,२, ६२४। ५,१६,१;
८७१। ७,४,१; ११३४
भानवः अस्यत्वेषाः अजराः १,१४३,३,
३२०
भारती [देवता] पश्य 'निस्त्रः देव्यः'
१,१४२,९; १९२६। अथ० ५,२७,९;
२०८०
भारती २,७,१; ४४१। २,७,५, ४४५।
६,१६,१९,४५, १०६०, १०८६
भारती त्वम् २,१,११, ३७९
भासाकेतु १०,२०,३; १५७३
भिषज्-क् वा य० २८,९; २०९२।
अथ० ५,२९,१; २३०५
भीमः १,७०,११; १८४। ६,६,५;
९९०। १,९५,७, १८७४
भीमः [वनस्पतिः] वा० य० २१,३९,
२०५८
भुजम् १,६५,५; १२८
भुरण्युः १,६८,१; १५४। १०,४६,७;
१६०७
भुवनस्य गर्भः १०,४५,६; १५९४
भूमा देवानाम् २,४,२; ४१७
भूरिः १०,४६,३; १६०३
भूरिजन्मा १०,५,१, १५१३
भूरिपाणिः अथ० ५,२७,१, २०७२
भूर्जयन् १०,४६,५; १६०५
भूर्णिः १,६६,२; १३५। ३,५; १७४६
भूषन् ३,२५,२; ५३३
भेषजस्य कर्ता अथ० ५,२९,१; २३०५
भृगवान् ४,७,४; ६९६
भृमिः १,३१,१६; ६५

भेषजः वा० य० २८,३४, २१०५
भोजनः विश्वस्य १,४४,५, ९०
भ्राजमानः ९,५,१०; १९९५। १०,८८,
१६; २४१२
भ्राता ८,४३,१६, १३२५
" [वरुणः] ४,१,२, २४४९
मंहिष्ठ ८,१०३,८; १२६४
मघवत्-घवा १,५८, ९; ११८।
१,१२७,११, २८२। १, १४६, ५;
३४२। २,६,४; ४३६। ५,१६,३;
८७३। ६,१५,१५, १०३७। ८,१०३,९,
१२६५। वा० य० २८,९, २०९२
मघोनी [उषासानक्ते] ७,२,६; १९७९
मति. १,९१,८, १६५८
मदः ते शृणिनाम. १,१२७,९; २८०
मधुजिह्वा १,४४,६; ९१। १,६०,३;
१२१। १,१३,३, १९०८
मधुपृच्छ-क् २,१०,६; ४५४
मधुप्रतीक. १०,११८,४; १८५६
मधुवचाः ४,६,५; ६८५। ७,७, ४;
११४५
मधु हस्त्यः ५,५,२, १९६५
मनीषिणां प्रार्पणः १०,४५,५; १५९३
मनुहितः ८, १९, २१, २४; १२४४,
१२४७। ३,२,१५; १७४१। १,१३,४,
१९०९
मनोता प्रथमः २,९,४; ४०६। ६,१,१;
९३९
मन्द्रः १, २६, ७; ३४। १, ३६, ५;
७२। १,१४१,१२; ३१६। १,१४४,७,
३३२। ३,१,१७; ४६३। ३,१०,७;
५१५। ३,१४,१; ५८१। ४,६,२,५;
६८३, ६८६। ४,९,३, ७१४। ५,११,३;
८४४। ५,१७,२, ८७७। ६,१,१६;
९४४। ६,१०,१; ९२३। ७,७,२,४;
११४३, ११४५। ७,८,२, ११५०।
७,९,१-२, ११५५-५६। ७,१०,५;
११६५। ८, १०३, ६; १२६२।
८, ४३, ३१; १३४०। ८, ४४, ६;

१३४८। ८, ६०, ३, १३९१। ८, ७४, ७;
 १४४८। १०, ६, ४, १५२३। १०, १२, २;
 १५५०। १०, ४६, ४, ८; १६०४,
 १६०८। ३, २६, ४; १७३०। ३, २, १५,
 १७४१
 मन्द्रजिह्व ४, ११, ५, ७३२। ५, २५, २;
 ९१२। १, १४२, ८, १२२५
 मन्द्रतरः ३, ७, ९; ४९८
 मन्द्रतम ५, २२, १; ८९९। ६, ११, २;
 ११०१। ६, ४, ७, ९७७। ८, ७०, ११,
 १४१९
 मन्धाता १०, २, २, १४९३
 मन्मनि (सप्तमी) १०, १२, ८, १५५६
 मन्मसाधनः-वेः १, ९६, ६, १८८४
 मन्यु १०, ८७, १३, १८४०। वा०य०
 २१, ३९; २०५८
 मयोभूः [तिस्रः देव्यः] १, १३, ९,
 १९१४। ५, ५, ८, १९१४
 मरुत. [देवता] १, १९, १-९, २४३८-
 २४४६। ८, १०३, १४; २४४७
 मरुत्वान् [इन्द्रः] १, १४२, १२; १९२९
 मरुत्सखः ८, १०३, १४; २४४७
 मरुजेन्यः २, १०, १; ४०९
 मर्यः १, ७७, ३, २३६
 मर्यश्रीः २, १०, ५, ४१३
 महत्-हान् १, २७, ११; ४८। १, ३६, ९,
 ७६। १, ३६, १२, ७९। १, ९४, ५;
 २६०। १, १४६, २, ३३९। ३, १, ११-१९,
 ४५७-६५। ३, ६, ४; ४८३। ४, ७, ७;
 ७९९। ४, ८, २; ७०५। ४, ९, १,
 ७१२। ५, १, २; ७५६। ६, ४८, ३,
 १०९२। ८, ६०, ६, १९; १३९४,
 १४०७। १०, ४, २, १५०७। १०, ४६, ५,
 १६०५। १०, ७७, १; १६३७।
 ३, २६, ३, १७२९। १, ९५, ४; १८७१
 महयन् छावाष्टयिवी भूरिरेतसा-
 ३, ३, ११; १७५२
 महयमानः सधस्यानि ३, २५, ५; ५३६
 महत्-महे (चतुर्थी) १, १२७, १०, २८१।
 १, १४६, ५; ३४२। १, १४२, १; ३५३।

६, १, १०; ९४८। ७, १७, ७; १२१०
 महाम् अनीकम् ४, ५, ९; १७६६
 महाम् आहावम् ६, ७, २, १७७४
 महागय. ९, ६६, २०, साम. २, ७, १, १२
 महि ३, ७, ४; ४९३। ४, ५, ९; १७६६
 महिन्तमः १०, ११५, ६; १६७१
 महिम्ना यः उर्वी परिवभूव
 १०, ८८, १४; २४१०
 महिरत्न. १, १४१, १०; ३१४
 महिर्वपः अस्य ६, ३, ४; ९६६
 महिषत १, ४५, ३; १०२। १०, ११५, ३,
 १६६८
 महिषः १०, १४०, ६; १६८९।
 १, ९५, ९; १८७६
 मही [देवता] पश्य ' देव्यः तिस्रः '।
 मही [देवीः द्वारः] १, १४२, ६, १९२३
 मही [उषासानक्ते] ७, २, ६, १९७९।
 ९, ५, ६, १९८६
 मङ्गा विश्वानि भुवना जजान २, ३५, २;
 २४२३
 मातरिश्वा ३, २६, २; १७५४। १, ९६, ४;
 १८८२
 मातरिश्वा यत् अमिमीत मातरि ३, २९,
 ११, ५६८
 मातरिश्वने प्रथमः १, ३१, ३; ५२
 माता मानुषाणां सद्धमित् ६, १, ५, ९४३
 मातृषु शश्वतीषु वने आसन् ४, ७, ६;
 ६२८
 मानुषः १, ४४, १०; ९५
 मानुषाणां अरतिः ७, १०, ३; ११६३
 मार्जाल्य ५, १, ८; ७६२
 मितहुः ४, ६, ५; ६८६। ७, ७, १; ११४२
 मित्रः [देवता] अथ० ३, २१, ८, २३६२
 मित्रः ३, ५, ३, ९; ४७२, ४७८। ५, ३, १;
 ७७९। ५, ९, ६; ८३३। ७, ९, ३,
 ११५७। १०, ७९, ७, १६४३। ६, ८, ३;
 १७८२। १०, ८७, १; १८२८
 मित्रः अद्भुतः १, ९४, १३, २६८। ६, ८, ३;
 १७८२

मित्रः त्वम् ७, १२, ३; ११७३
 मित्रः त्वं दस्मः ईड्यः २, १, ४; ३७२
 मित्रः त्वया शाश्वते १, १४१, ९; ३१३
 मित्र प्रिय. १, ७५, ४; २२७
 मित्र. मर्तेषु १, ६७, १; १४४
 मित्रः शासा १०, २०, २; १५७२
 मित्रः समिद्धः भवति ३, ५, ४, ४७३
 मित्रमहः १, ४४, १२; ९७८, १९, २५;
 १२४८। ८, ४४, १४, १३५६। १०,
 ११०, १; २००३। वा०य० २९, २५,
 २११७
 मित्रमहस्-हाः १, ५८, ८, ११७। २,
 १, ५; ३७३। ६, २, ११, ९६२। ६,
 ३, ६; ९६८। ६, १४, ६, ९६२। ८,
 ६०, ७; १३९५। ७, ५, ६; १७९९।
 ४, ४, १५; १८२७
 मित्रावरुणौ [देवता] १, ३५, १; २४४८।
 ७, ४१, १, २४३७
 मित्रियः ८, १९, ८; १२३१
 मिमाना यशम् [देव्यौ होतारौ]
 १०, ११०, ७, २०१४
 मिषेधः १०, ७०, २; १९९३
 मिषेध्यः १, २६, १; २८। १, ३६, ९
 ७६। १, ४४, ५; ९०
 मीढवान् १, २७, २; ३९५। २, ८, १; ३९७।
 ३, १६, ३, ५९६। ४, १५, ५; ७५३।
 ७, १५, १; ११७७। ७, १६, ३, ११९४।
 ८, १०२, १५; १४७७। ४, ५, १; १७५८।
 १०, १८८, २, १८६४। वा०य० २८, ५;
 २०८८
 मुच्यमानः निरेणसः अथ० १२, २, १२;
 २२३८
 मुहुर्गीः १, १२८, ३; २८५
 मूर्धा दिवः ६, ७, १, १७७३। १, ५९, २;
 १७१८
 मूर्धन् भुवनस्य अतिष्ठाः १०, ८८, ५;
 २४०१
 मूर्धा भुव. अग्निः नक्तं भवति १०, ८८, ६;
 २४०२

मूर्धा रयीणाम् ८, ७५, ४, १३७६
 मृगः स ईम् १, १४५, ५; ३३७
 मृज्यमानः नृभिः १०, ६९, ७, १६३१
 मृष्यते न प्रथमं ना परं वचः १, १४५, २;
 ३३४
 मृळयत्तमः १, ९४, १४; २६२
 मेधाकारः १०, ९१, ८; १६५८
 मेधिरः १, ३१, २; ५१ । १, १२७, ७;
 २७८ । ३, १, ३, ४४९, ३, २१, ४, ६२१ ।
 १, १४२, ११; १९२८
 मेध्य ५, १, १२; ७६६
 युक्ष्यः ८, ६०, ३, १३९१
 यजत्-न् ५, ८, १; ८२१
 यजन् यज्ञैः वा०य० २९, २७, २११९
 यजन्तौ [दैव्यौ होतारौ] देवान्
 २, ३, ७; १९४८
 यजतः ४, १, १, ६३१ । ७, २, २, १९७५
 यजत. रयीणाम् ६, १, ८; ९४६
 यजत्रः १, ७६, ४, २३२ । १, १८९, ३, ७;
 ३६३-३६७ । ३, १४, २, ५८२ । ३, २२, २;
 ६२४ । ६, १२, ७, १००७ । ७, १४, २;
 ११७५ । १०, ११, ८; १५४७ ।
 १०, ४६, ९-१०, १६०९-१०
 यजिष्ठः १, ३६, १०; ७७ । १, ४४, ५;
 ९० । १, ५८, ७; ११६ । १, ७७, १;
 २३४ । १, १२८, १; २८३ । १, १४९, ४;
 ३५६ । २, ६, ६; ४३८ । ३, १०, ७;
 ५१५ । ३, १३, १, ५७४ । ४, १, ४,
 ४, ११९; ६०५ । ४, २, १; ६४७ ।
 ४, ७, १, ५; ६९३-६९७ । ४, ८, १;
 ७०४ । ५, १४, २; ८६१ । ७, १५, ६;
 ११८२ । ८, १९, ३, २१; १२२६, १२४४ ।
 ८, ६०, १, ३; १३८९, १३९१ । १०, २, ५,
 १४९६ । १०, ६, ४, १५२३ । १०, ४६, ८,
 १६०८ । १०, ११८, ९; १८६१
 यजिष्ठः देवानां उत मर्त्यानाम्
 ६, १५, १३; १०३५
 यजीयान् २, ९, ४; ४०६ । ३, १९, १,
 ६१० । ४, ६, १-२; ६८२-८३ ।

५, १, ५-६, ७५२-६० । ५, ३, ५, ७८२ ।
 ६, १, २, ६; ९४०, ९४४ । १०, १२, २;
 १५५० । १०, ४३, १-२, १६१६-१७ ।
 ३, ४, ३; १९५५ । वा०य० २९, २८, ३४,
 २१२०, २१२६
 यज्ञः ७, १६, २, ११९३ । १०, ४६, ४;
 १६०४ । १०, ५३, ३; १६१८ ।
 १, १८८, २; १९३२ । १०, ८८, ८,
 २४०४
 यज्ञः सः १०, २, ६, १५७६
 यज्ञं तन्वानः ३, ३, ६; १७४७
 यज्ञं मिमाना [दैव्यौ होतारौ]
 १०, ११०, ७; २०१४
 यज्ञ विशिष्टः २, १, १०, ३७८
 यज्ञस्य केतुः ३, ११, ३; ५२० । ३, २९, ५;
 ५६२ । ५, ११, २, ८४३ । ६, २, ३;
 ९५४ । १०, १२२, ४; १६७८ ।
 ६, ७, २; १७७४ । १, ९६, ६, १८८४
 यज्ञस्य यज्ञस्य केतुः १०, १, ६, १४८९
 यज्ञस्य साधनः ८, २३, ९; १२७८
 यज्ञानां केतु ८, ४४, १०, १३५२ ।
 ३, ३, ३; १७४४
 यज्ञानां नाभिः ६, ७, २, १७७४
 यज्ञानां पिता ३, ३, ४; १७४५
 यज्ञनीः १, १५, १२; २३
 यज्ञवन्धु. ४, १, २, ६३५
 यज्ञवृध् अथ० ४, २३, ३; २३३२
 यज्ञसाध. १, १२८, २; २८४ । १, ९६, ३;
 १८८१
 यज्ञसाधनः १, १४५, ३, ३३५ ।
 ३, २७, २, ८; ५३८, ५४४
 यज्ञसाह यज्ञसाह. १०, २, ७, १५७७
 यज्ञियः ३, १, २१; ४६७ । ४, १५, १;
 ७४९ । ५, १२, १, ८४८ । ६, १६, ४;
 १०४५ । ८, १०३, ११; १२६७ ।
 ८, ३९, ७, १३०६ । ८, ७५, ३; १३७५ ।
 १०, २१, १; १५४० । ३, २, १३;
 १७३९ । १, १४२, ३; १९२०
 यज्ञियः प्रथमः ८, २३, १८; १२८७
 यज्ञिये [उषासानक्ते] ७, २, ६; १९७९

यज्वन्-ज्वा ३, १४, १, ५८१ । ६, १५,
 १४; १०३६
 यत् (यन्) वृतेव बहुभिः वसव्यैः
 ६, १, ३; ९४१
 यतमः यतमानः सूर्यस्य रश्मिभिः
 ५, ४, ४, ७२३
 यतिः मतीनाम् ७, १३, १; १८१०
 यन्ता १०, ४६, १; १६०१
 यन्ता धीनाम् ३, ३, ८; १७४२
 यन्ता यज्ञानाम् ३, १३, ३; ५७६
 यन्तुरः ३, २७, ११; ५४७ । ८, १९, २,
 १२२५
 यमः १, ६६, ८, १४१
 यम रथानाम् ८, १०३, १०, १२६६
 यमति जन्मनीं उभेय १, १४१, ११,
 ३१५
 यविष्ठः १, २२, १०, २५ । १, २६, २,
 २९ । १, ४४, ४; ८९ । १, १४१, ४,
 १०; ३०८, ३१४ । १, १४७, २, ३४४ ।
 १, १८९, ४, ३६४ । २, ६, ६; ४३८ ।
 २, ७, १; ४४१ । ३, १५, ३; ५९० ।
 ३, १९, ४, ६१३ । ४, २, १०, १३,
 ६५६, ६५९ । ४, २, ३-४, ७३६-३७ ।
 ५, १, १०, ७६४ । ५, ३, ११, ७८८ ।
 ६, ५, १, ९७९ । ६, ६, २, ९८७ ।
 ६, १५, १४; १०३६ । ६, ४८, ८, १०९७ ।
 ७, १, ३; ११०२ । ७, ३, ५; ११२८ ।
 ७, ४, २; ११३५ । ७, ७, ३, ११४४ ।
 ७, १०, ५, ११६५ । ७, १२, १; ११७१ ।
 ८, २३, २८; १२९८ । ८, ८४, ३,
 १४५६ । १०, १, ७; १४९१ । १०, २, १;
 १४९२ । १०, ४, २; १५०७ ।
 १०, ४५, ९, १५९७ । १०, ६२, १०;
 १६३४ । १०, ८०, ७; १६५० ।
 ४, ४, ६, ११; १८१८, १८२३ ।
 १०, ८७, ८; १८३५ । अथ० ५, २९, ४;
 २३०८
 यविष्ठः भुजाम् १०, २०, २, १५७२
 यविष्ठ्य १, ३६, ६, १५; ७३, ८० ।
 १, ४४, ६, ९१ । ३, १, ६, ५०५ ।

३, २८, २, ५५३ । ५, ८, ६, ८२६ ।
 ५, २६, ७; ९२६ । ६, १६, ११; १०५२ ।
 ६, ४८, ७, १०९६ । ७, १६, १०;
 १२०१ । ८, ७५, ३; १३७५ ।
 ८, ६०, ४, ८; १३९२, १३९६ ।
 ८, १०२, ३, २०, १४६५, १४८२ ।
 अथ० १९, ६४, ३; २३५३
 यशस्-शाः १, ६०, १, ११२ । ८, २३, ३०;
 १२९९ । अथ० ३, २१, ५, २३५९ ।
 [इन्द्रः] वा० य० २०, ४४, २०२२
 यशस्तमः २, ८, १, ३९७ । ७, १६, ४;
 ११९५
 यशस्तमः, विश्वेषां होतृणाम्
 ८, १०२, १०; १४७२
 यज्ञः १, ३६, १, ६८ । ३, १, १२;
 ४५८ । ३, ५, ५, ९; ४७४, ४७८ ।
 ३, २८, ४; ५५५ । ४, ७, ११; ७०३ ।
 ७, ८, २, ११५० । १०, ११, १, १५४० ।
 ३, २६, ९, १७३५ । ३, ३, ८, १७४९ ।
 ४, ५, २; १७५९ । ७, ६, ५, १८०७ ।
 १०, ११०, ३, २००५ । वा० य०
 २९, २८, २१२०
 यज्ञी [उषासानक्त] १, १४२, ७,
 १९२४ । ५, ५, ६, १९६२
 यातयज्जनः ८, १०२, १२; १४७४
 यातुमान् अथ० १, ७, ४, २२८७
 युक्त अथ० ५, २९, १, २३०५
 युजानः नमः १, ६५, १, १२४
 युवा १, १२, ६, १५ । १, १४४, ४, ३२९ ।
 ३, २३, १, ६२७ । ४, १, १२, ६३८ ।
 ५, १, ६, ७६० । ६, ५, १; ९७९ ।
 ७, १५, २; ११७८ । ८, ४४, २६; १३६८ ।
 ८, १०२, १, १४३३ । १०, ४६, ३, १६०३
 युवा आ भूत् सुहु. जुहुवाँः २, ४, ५,
 ४२०
 योषणे दिव्ये [उषासानक्त] ७, २, ६,
 १९७९ । १०, ११०, ६; २००८
 रंसुजिह्वः ४, १, ८, ६३४
 रक्षिता अमृतस्य ६, ७, ७; १७७९

रक्षोहा [अग्निदेवता] ४, ४, (१-१५);
 १८१३-१८२७ । १०, ८७, (१-२५),
 १८२८-५२ । १०, ११८, (१-९), १८५३-
 ६१ । १०, १६२, (१-६), २४१६-२४२१
 रक्षोहा अथ० १, २८, १, २२९३ ।
 ४, २३, ३, २३३२
 रघुपत्यन्-त्वा १०, ६, ४; १५२३
 रघुयत्- नृ ४, ५, ९; १७६६
 रघुप्य (स्य) द्व ३, २६, २, १७५४
 रघुप्यद् गुहा ४, ५, ९; १७६६
 रज आततन्वान् शुक्रैभिः अङ्गैः ३, १, ५,
 ४५१
 रजसा विमान. ३, २६, ७; १७५६
 रणवः १, ६५, ५, १२८ । १, ६६, ३;
 १३६ । १, १४४, ७, ३३२ । २, ४, ६,
 ४२१ । ४, ७, ५; ६९७ । ६, २, ७,
 ९५८ । ३, २६, १, १७५३
 रणवः कुत्राचिद् ६, ३, ३, ९६५
 रणव दुरोणे १, ६९, ४५, १६७-६८
 रणवः सदा ४, १, ८, ६३४
 रणव संदश ६, १६, ३७, १०७८ ।
 ७, १, २१, ११२०
 रत्नधा ७, १६, ६, ११९७
 रत्नधातमः १, १, १, १ । ५, ८, ३; ८२३
 रत्ना दधान दमेदमे सप्त ५, १, ५;
 ७५९
 रथः ३, ११, ५, ५२२
 रथप्रा ८, ७४, १०; १४५१
 रथयुः १०, ७, ५; २००१
 रथिरः ७, ७, ४; ११४५ । ३, २६, १;
 १७५३
 रथीः ३, २, ८; १७३४ । ३, ३, ६, १७४७
 रथीः अध्वराणाम् १, ४४, २, ८७ ।
 ८, ११, २; १२१५
 रथीः क्रनोः ४, १०, २; ७२१
 रथी. यज्ञानाम् ८, ४४, २७, १३६९
 " वार्याणाम् ६, ५, ३; ९८१
 रथ. ६, ७, २; १७७४
 रभस्वान् १०, ३, ७, १५०५

रयि ९, ५, ३; १९८३
 रयिः हव श्रवस्यते १, १२८, १; २८३
 रयिः त्वम् २, १, १२; ३८०
 रयिः महिषी त्वत् षदीरते ५, २५, ७,
 ९१७
 रयीणां दाशत् १, ७०, ५; १७८
 " धरुणः १७३, ४, २०८ ।
 १०, ५, १, १५१३ । १०, ४५, ५; १५९३
 रयीणाम् पतिः १, ६०, ५; १२३ ।
 १, ६८, ७, १६० । ३, ७, ३, ४९२ ।
 ८, ७५, ४, १३७६
 रयीणाम् रथ्यः ७, ५, ५, १७९८
 रयीणाम् रयिपतिः १, ७२, १; १९५ ।
 २, ९, ४, ४०६ ।
 रयीणाम् रयिवित् ३, ७, ३; ४९२
 रयीणाम् राजा ८, १९, ८, १२३१
 रयीणाम् सदनम् (नूच पुरा च) ६, ७, २;
 १७७४ । (१, ९६, ७, १८८५)
 रयिपति १, ६०, ४, १२२
 रयिवान् ६, ५, ७; ९८५
 रयिवित् २, १, ३; ३७१
 रयिवित् रयीणाम् ३, ७, ३, ४९२
 रराण ३, १, २२; ४६८ । ४, २, १०;
 ६५६ । ४, १, ५, २४५२
 रराणः [त्वष्टा] ३, ४, ९, १९६१ ।
 ७, २, ९, १९६१
 रराण वसु [सविता] अथ० ७, ११५, २;
 २२०२
 रवः वृषभस्य हव ते १, ९४, १०; २६५
 रशनां विभ्रत् वा० य० २८, ३३, २१०४
 राजत् (नृ) राजन्तम् (द्वि०) १, १, ८;
 ८ । १, ४५, ४; १०३ । ६, १, ८, १३;
 ९४६, ९५१ । ८, १९, २२; १२४५ ।
 १०, १, ६, १४९० । १०, ३, १; १४९९ ।
 १०, ४, १; १५०६ । ३, २६, ४; १७३० ।
 ६, ७, ३; १७७५ । ६, ८, ५; १७८४ ।
 १०, ८७, २१, १८४८ । [वनस्पतिः]
 वा० य० २१, ३९; २०५८
 राजसि त्वं दिव्यस्य १, १४४, ६; ३३१

राजन् (राजा) २, १, ८, ३७६, ६, १२, २;
१००७ । ६, १५, १३, १०३५। ७, ८, १;
११४९। १०, १२, ५, १५५३। १०, ४५, ५;
१५९३ । १०, ८७, ३; १८३०
राजन् अध्वरस्य ४, ३, १, साम० १, १,
७, ७
राजा [वरुणः] ४, १, २, २४४९
राजा [सोम] अथ० २, ३६, ३; २३४०
राजा कृष्टीनां मानुषीणाम् १, ५९, ५,
१७२१
राजा पर्वतेषु ओषधीषु मानुषीषु वा
१, ५९, ३; १७१९
राजा भुवनानाम् १, ९८, १; १७२४
राजा मर्त्यानाम् ३, १, १८, ४६४
राट् (राट्) बर्हिषः ६, १२, १, १००६
रातहव्यः नमसा ४, ७, ७, ६९९
रातिः वामस्य १०, १४०, ५; १६८८
रात्री [देवता] १, ३५, १, २४४८
रात्र्याश्चिदन्धः अति पश्यसि १, ९४, ७;
२६२
रायः ईशिषे २, १, १०, ३७८
रायः पतिः १, १४९, १; ३५३
रायः ब्रुहः १, ९६, ६, १८८४
राष्ट्रभृत् अथ० ७, १०९(११४), ७;
२३७० । ६, ११८, २, २३८२
रिप्रवाहः १०, १६, ९; १५३५
रिशादस् (दाः) १, ७७, ४, २३७
रिशादसः [मरुतः] १, १९, ५; २४४२
रीतिः अपाम् ६, १३, १; १०१२
रुक्मः १०, ४५, ८; १५१६ । १, ९६, ५;
१८८३
रुक्मी १, ६६, ६; १३९
रुक्षः ६, ३, ७, ९६९
रुचानः दुर्मर्षम् १०, ४५, ८, १५९६
रुचानः सुरुचा ३, १५, ६; ५९३
रुद्रः ८, ७२, ३; १४२६ । ३, २, ५;
१७३१ । ४, ३, १, साम० १, १, ७, ७;
अथ० १९, ५५, ५; २२७३
रुद्रः [देवता] ७, ४१, १; २४३७

रुद्रः त्वं असुरः महा दिवः २, १, ६, ३७४
रुक्कान् १, १४९, ३; ३५५
रुक्चानः भानुना ज्योतिषा ३, २६, ३;
१७२९
रुशत् (न्) ४, ७, ९; ७०१ । ६, १, ३,
९४१ । ६, ६, १, ९८६ । ८, ७२, ५;
१४२८ । १०, १, ५; १४८९
रुशद् वसानः ४, ५, १५; १७७२
रुशदूर्मिः १, ५८, ४; ११३
रूपं त्वेष कृणुते १, ९५, ८, १८७५
रूप न ददसि एकस्य [वायु देवता]
१, १६४, ४४; २४५६
रूपाणि बिभ्रत् पृथक् वा० य० २८, ३२;
२१०३
रूपे (सप्तमी) ४, ११, १, ७२८
रुरः अथ० १, २५, ४; २२७८
रेजमानः १०, ६, ५; १५२४
रेत दधत् १, १२८, ३; २८५
रेभत् ८, ४४, २०; १३६२
रेरिहत् क्षामा १०, ४५, ४, १५९२
रेवत् ३, २३, २, ६२८
रोचनस्यः (स्त्राम्) ६, ६, २; ९८७ ।
३, २, १४; १७४०
रोचनानां उत्तमः ३, ५, १०, ४७९
रोचमान ७, २, ९, ११३२ । १०, ३, ५,
१५०३ । १०, ११८, ४; १८५६
रोदसी अधीवास वावसाने १०, ५, ४,
१५१६
रोदसी आ अपृणाः जायमानः ३, ६, २,
४८१
रोदस्योः जनिता १, ९६, ४; १८८२
रोदस्योः राज्यम् ७, ६, २, १८०४
रोरुचानः ४, १, ७, ७३३
रोहिदश्वः ४, १, ८; ६३४ । ८, ४३, १६;
१३२५
रौद्रः १०, ३, १, १४९९
वज्रः [देवता] अथ० १९, ६६, १; २३५०
वज्रबाहु [इन्द्रः] वा० य० २०, ३६, ३८,
२०१४, २०१६

वज्रहस्तः वा० य० २८, ३; २०८६
वत्स १, ७२, २; १९६ । १०, ८, २;
१५३५
वत्सः चरन् ८, ७२, ५; १४९८
वत्सः पृथिवी धेनुः तस्याः अथ०
४, ३९, २; २२८१
वद्मा ६, ४, ४; ९७४ । ६, १३, ६;
१०१७
वध्वश्वः १०, ६९, १, १६२५
वनर्गुः १, १४५, ५; ३३७
वनर्षद् १०, ४६, ७, १६०७
वनस्पतिः [देवता] १, १३, ११, १९१६ ।
१, १४२, ११; १२२८ । १, १८८, १०;
१९४० । २, ३, १०; १९५१ । ३, ४, १०;
१९६२ । ५, ५, १०; १९७२ । ७, २, १०,
१९६२ । ९, ५, १०; १९९० ।
१०, ७०, १०; २००१ । १०, ११०, १०,
२०१२ । वा० य० २०, ४५, ६६,
२०२३, २०३५ । २१, २१, ३९;
२०४६, २०५८ । २७, २१, २०७० ।
२८, १०, ३३; २०९३, २१०४ ।
२९, १०, ३५; २११५, २१२७ । ऋ० ऋष
११; २१३९ । अथ० ५, २७, ११;
२०८२ । ५, १२, १०; २०१२
वनस्पतीनां अधिपति अथ० ५, २४, २;
२१६६
वनस्पतीनां सूनुः ८, २३, २५, १२९४
वनाम् (द्वि०) १०, ४६, ५, १६०५
वना कायमानः ३, ९, २; ५०१
वनानां गर्मः १, ७०, ३; १७६
वनिता मघम् ३, १३, ३, ५७६
वनिष्टः ७, १०, २; ११६२
वनेजाः ६, ३, ३, ९६५ । १०, ७९, ७;
१६४३ ।
वनेवने शिश्रियाणः ५, ११, ६, ८४७
वन्धः १, ३१, १२; ६१ । २, ७, ४;
४४४ । १०, ४, १, १५०६ । १०, ११०, ३;
२००५
वन्धः विश्वासु धीषु १, ७९, ७, २५०

वन्यः वा०य० २९, २८, २१२०
 वन्यन् महित्वना ६, १२, ४, १००९।
 ६, १६, १०, १०६१
 वपते संवत्सरे एकः १, १६४, ४४;
 २४५६
 वपावान् ६, १, ३; ९४१
 वपावान् [इन्द्रः] वा० य० २०, ३७;
 २०१५
 वपु १, १४१, २; २९३
 वपुष्टरा (रौ) [दैव्यौ होतारौ] २, ३, ७;
 १९४८
 वपुष्यः ४, १, ८, १२; ६३४, ६३८।
 ५, १, ९; ७६३
 वयः त्वं उत्तमम् २, १, १२, ३८०
 वयः कृण्वानः स्वापै तन्वे ५, ४, ६;
 ७९५
 वयस्कृत् १०, ७, ७, १५३२
 वयुनम् ३, ३, ४, १७४५
 वयुनानि विद्वान् १, ७२, ७, २०१
 वयुना व्यब्रवीत् मर्त्येभ्यः १, १४५, १;
 ३३७
 वयोधाः १, ७३, १, २०५। ८, ७२, ४;
 १४२७। १०, ७, ७, १५३३। वा०य०
 २८, २४-३४, २०९५-२१०५
 वयोधा [त्वष्टा] २, ३, ९; १९५०
 वयोवृधा [उषासानक्ते] ५, ५, ६; १९६९
 वरुणः [देवता] ४, १, २, ५, २४४९,
 २४५२। १, ३५, १; २४४८। ७, ४१, १;
 २४३७ अथ० ३, २१, ८, २३६२
 वरुणः २, १, ४, ३७२। ३, ५, ४, ४७३।
 ५, ३, १; ७७९। १०, २२, ८, १५५६
 वा०य० २८, ३४, २१०५
 वरुणः त्वम् ७, १३, ३; १८१२
 वरुणः धृतव्रतः त्वया १, १४१, ९; ३१३
 वरुणस्य पुत्रः अथ० १, २५, ३, २२७७
 वरूथ्यः ५, २४, १, ९०७
 वरेण्यः १, २६, २-३, ७; २९-३०, ३४।
 १, ५८, ६; ११५। १, ६०, ४; १२२।
 २, ७, ६, ४४६। ३, २७, ९-१०, ५४५-४६।

५, ८, १, ८२१। ५, १३, ४; ८५७।
 ५, २२, ३; ९०१। ५, २५, ३, ९१३।
 ८, १०२, १८, १४८०। १०, ९१, १;
 १६५१। १०, १२२, ५, १६७९।
 वा०य० २१, १२; २०३७। २८, २४;
 २०९५
 वरेण्यः होता १, २६, २, २९
 वरेण्य क्रतु ८, ४३, १२; १३२१
 वचोधाः अथ० ३, २१, ५; २३५६
 वर्तनिः ३, ७, २; ४९१
 वर्धनः १०, ९१, १२, १६६२
 वर्धनः आर्वस्य ८, १०३, १; १२५७
 वर्धमान तन्वा ६, ९, ४; १७९०
 वर्धमानः त्वे दमे १, १, ८; ८
 वर्षः अस्य महि असत् ६, ३, ४, ९६६
 वर्षिष्ठः ५, ७, १, ८११
 वशाजः ८, ४३, ११; १३२०; अथर्व०
 ३, २१, ६; २३६०
 वशिः वा०य० २८, ३३, २१०४
 वशी अथ० ६, ३६, २, २१८२
 वषट् कृतिं जुषाणः ७, १४, ३, ११७६
 वसतिः ६, ३, ३, ९६५
 वसवः अथ० ५, २७, ६; २०७७
 वसव्यैः यन् बहुभिः ६, १, ३, ९४१
 वसानः रुशत् ४, ५, १५; १७७२
 वसानः वस्त्राणि पेशनानि १०, १, ६;
 १४९०
 वसान विद्युतम् २, ३५, ९, २४३०
 वसिष्ठः २, ९, १, ४०३। ७, १, ८; ११०७।
 अथ० ६, ११९, १; २३८४
 वसुः १, ३१, ३, ५२। १, ४४, ३; ८८।
 १, ४५, ९; १०८। १, ६०, ४, १२२।
 १, ७९, ५; २४८। १, १२७, १; २७२।
 १, १२८, ६, २८८। १, १४३, ६; ३२३।
 २, ७, १, ४४१। ३, १५, ३, ५९०।
 ३, १८, २, ६०६। ३, २१, ५; ६२२।
 ४, १२, ६; ७३९। ५, ३, १२; ७८९।
 ५, ६, १-२; ८०१-२। ५, २४, २; ९०८।
 ५, २५, १; ९११। ६, १, १२; ९५०।

६, २, १; ९५२। ६, १६, २४; १०६५।
 ६, ४८, ९; १०९८। ८, १९, १२, २६,
 २८-२९, १२३५, १२४९, १२५१-५२।
 ८, १०३, ४, १२-१३; १२६०,
 १२६८-६९। ८, २३, २८, १२९७।
 ८, ४४, २४, ३०, १३६६, १३७२।
 ८, ६०, ४; १३९२। ८, ७९, ९, १३;
 १४१७, १४२१। १०, ७, २; १५२८।
 १०, ८, ४, १५३७। १०, ४५, ५; १५९३।
 १०, ९१, १२; १६६२। ४, ५, १५; १७७२।
 वा०य० २७, १५; २०६४। अथ०
 १९, १५, २; २२७०
 वसुः नेमानाम् ६, १६, १९, १०५९
 वसुदानः अथ० १९, ५५, ३, २२७१
 वसुदावन्-वा २, ६, ४, ४३६
 २, ६, ४; ४३६
 वसुधातमः वा०य० २७, १५; २०६४
 वसुधातरः अथ० ५, २७, ६, २०७७
 वसुधितिः १, १२८, ८, २९०
 वसुपतिः २, १, ११, ३७९। २, ६, ४;
 ४३६। ८, ४४, २४; १३२६
 वसुविद् ८, २३, १६; १२८५; साम०
 १, ६, १३, १
 वसुवित्तमः १, ४५, ७, १०६। ६, १६, ४१;
 १०८२
 वसुश्रवाः ५, २४, २, ९०८
 वसुभिः हृष्यमानः ५, ३, ८; ७८५
 वसूनां अरतिः विश्वेषाम् १, ५८, ७;
 ११६
 वसूनां ईशानः ७, ७, ७; ११४८
 वसूनां ईशे १, १२७, ७; २७८। ८, १,
 ८; १४१६
 वसूनां वसुः १, ९४, १३; २६८।
 १०, ९१, ३, १६५३
 वसूनां वसुपतिः ५, ४, १; ७९०
 वसूनां सगमनः १, ९६, ६; १८८४
 वसाम् राजा ५, २, ६; ७७२
 वस्यः १, १४१, १२; ३१६
 वस्यः आ प्रणेता २, ९, २; ४०४

वस्त्राणि वसानः पेशनानि १०, १, ६;
१४९०
वस्वः १, १४३, ४; ३२१ । ५, १५, १,
८६६
वहन् नमः १, ६५, १, १२४
वाह्निः १, ६०, १; ११९ । १, १२८, ४,
२८६ । ३, ११, ४, ५२१ । ७, ७, ५,
११४६ । ७, ७, १२; १२०३ । ८, ४३,
२०; १३२९ । १०, ११, ६; १५४५ ।
अथ० ५, २, ७, २०७५ । १२, २, ४७;
२२६०
वाह्निः आता ६, ११, २, १००१ । ६, १६,
९, १०५० । ७, १६, ९; १२०० ।
१०, ११५, ३; १६६८
वह्निमतः ४, १४; २४५१
वाजः त्वम् २, १, १२, ३८०
वाजस्य ह्यज्ञानः १, ७९, ४; २४६
वाजस्य पतिः १, १४५, १; ३३३
वाजस्य श्रुत्यस्य राजसि १, ३६, १२, ७९
वाजपतिः ४, १५, ३, ७५१
वाजश्रवस्-वाः ३, २६, ५; १७३१
वाजसातमः १, ७८, ३; २४१ । ५, १३,
५, ८५८ । ५, २०, १; ८९१
वाजाः त्वद् उदीरते ५, २५, ७, ९१७
वाजिनं वहन् वा० य० २९, १; २१०६
वाजिन्तमः १०, ११५, ६; १६७१
वाजी २, १०, १, ४०९ । ३, २७, ३, ८;
५३९, ५४४ । ३, २९, ७, ५६४ । ५, १४,
७, ७५८, ७६१ । ८, ४३, २०, २५;
१३२९, १३३४ । ८, ८४, ८; १४६१ ।
१०, १२२, ४, ८; १६७८, १६८२ ।
३, २, १४; १७४० । १०, ८७, १, १८२८ ।
१०, १८८, १; १८६३ । वा० य०
२९, १-२; २१०६-७
वाजी [हन्द्रः] अथ० ५, २९, १०; २३१४
वाजी त्वां याति ६, २, २, ९५३
वाजी वाजेषु धीयते ३, २७, ८; ५४४
वातः [वायु देवता] ८, १८, ९, २४५७
वातचोदितः १, ५८, ५; ११४ ।

१, १४१, ७; ३११
वातजूनः १, ५८, ४; ११३ । १, ६५, ८;
१३१
वातस्वनः ८, १०२, ५, १४६७
वातस्य सर्गः अभवत् सरीमणि ३, २९,
११, ५६८
वातोपधूतः १०, ९१, ७, १६५७
वाध्यश्चः १०, ६९, १२, ९; १६३६,
१६३३
वामः १०, १२२, १, १६७५
वायुः १०, ४६७, १६०७
वायुः [देवता] १०, १४२, १२; १९२२ ।
१, १६४, ४४, २४५६
वायौणाम् ईशे ८, ७१, १३, १४२१
वावसानः १०, ५, ५, १५१७
वावृधानः ५, २, १२; ७७८ । ५, ३, १०,
१२; ७८७७८९ । ५, ८, ७; ८२७ ।
५, २७, २, ९२९ । ७, ५, २; १७९५ ।
अथ० ५, २८, ४; २१७०
वावृधानः पर्वभिः १०, ७१, ७, १६४३
वावृधानः पुरोरुचा [हन्द्रः] वा० य०
२०, ३६, २०१४
वावृधान प्रजापतेः तपसा वा० य०
२९, ११; २११६
वावृधानः ब्रह्मणा अथ० १, ८, ४; २२९२
वावृधान वरेण ७, ५, २, १७९५
वावृधानौ दमेदमे सुष्टुत्या [अग्नाविष्णु]
अथ० ७, २९ (३०), २; २४५४
वाशीमान् १०, २०, ६; १५७६
विः ३, ५, ६, ४७५
विकसुकः अथ० १२, २, १४; २२४०
विगाहः ३, ३, ५; १७४६
विचक्षणः ३, ३, १०; १७५१
विचर्षणिः १, ३१, ६; ५५ । १, ७८, १;
२३९ । १, ७९, १२; २५५ । ६, २, १;
९५२ । ६, २९, ३६, १०७०, १०७७ ।
८, ४३, २; १३११ । ३, २६, ८, १७३४
विचेताः २, १०, १-२, ४०९-१० ।
४, ७, ३, ६९५ । ५, १७, ४, ८७९ ।

१०, ७९, ४, १६४० । ४, ५, २; १७५९
विजावन् १, ६९, ३; १६६ । १०, २, ५;
१४९६
वितपन् अरातिम् अथ० १२, २, ४५;
२२५८
विदथस्य प्रसाधन १०, ९१, ८; १६५८
विदथस्य साधनम् ३, ३, ३; १७४४
विदानः २, ९, १, ४०३
विदिद्युतानः ६, १६, ३५; १०७६
विदुष्ट ४, ७, ८; ७०० । ६, १५, १०;
१०३२ । ६, १६, ९, १०५० । ७, १६, ९;
१२०० । ८, ७५, २; १३७४ ।
१०, ७०, ७, २००३
विदुष्टौ [द्वैयौ होतारौ] २, ३, ७;
१९४८
विद्यना जिगाति अन्तः विश्वानि
जन्विषि ७, ४, १; ११३४
विद्युथः ३, १४, १, ५८१
विद्वान् १, १४५, ५; ३३७ । २, ६, ७;
४३९ । ३, २५, २; ५३१ । ३, २९, १६;
५७३ । ३, १४, २; ५८२ । ३, १७, ३;
६०२ । ४, २, ११, ६५७ । ४, ३, १६;
६८१ । ४, ७, ८; ७०० । ५, १, ११;
७६५ । ५, ४, ५; ७९४ । ७, १, २४;
११२३ । ७, ७, २; ११४२ । १०, १, ३;
१४८७ । १०, २, १, ३; १४९२, १४९४ ।
१०, १, ४, १४९५ । १०, ५, ५; १५१७ ।
१०, ७०, ९-१०; २०००-१ । ४, १, ४,
२४९१ । अथ० ५, २९, ५; २३०९ ।
३, १, १, २१५२ । ३, २, १; २१५६
विद्वान् अन्तः अध्वन देवयानान्
१, ७२, ७; २०१
विद्वान् आरोधन दिवः ४, ८, ४; ७०७
विद्वान् आर्विज्या विश्वा १, ९४, ६, २६१
विद्वान् काव्यानि विश्वा ३, १, १७-१८;
४६३-६४ । १०, २१, ५, १५८५
विद्वान् देवानां जन्म मर्तान् च
१, ७०, ६; १७९
विद्वान् जन्मानि ७, १०, २; ११६२

विद्वान् पितृयाण पन्थाम् अनु प्र
१०, २, ७; १४९८
विद्वान् यज्ञस्य १०, ५३, १. १६१६
विद्वान् वयुनानि १, ७२, ७; २०१
विद्वान् विश्वा वयुनानि १, १८९, १,
३६१। ३, ५, ६; ४७५। ६, १५, १०;
१०३२। १०, १२२, २, १६७६।
अथ० ४, ३९, १०; २२८३
विधत्ता २, १, ३, ३७१। ७, ७, ५; ११४६
विपश्चित्र ३, २७, २, ५३८।
विपश्चित्रा असुरः ३, ३, ४, १७४५
विषां ज्योतीषि विभ्रत् ३, १०, ५, ५१३
विपोधाः १०, ४५, ५; १६०५
विप्रः १, १२७, १-२, २७२-७३।
१, १५०, ३; ३६०। ३, ५, १, ३; ४७०,
४७२। ३, २७, ८, ५४४। ३, २९, ७;
५६४। ३, १३, ३; ५७६। ३, १४, ५;
५८५। ४, ३, १६; ६८१। ४, ८, ८;
७११। ५, १, ७; ७६१। ६, १३, ३;
१०१४। ६, १५, ४, ७, १०२६, १०२९।
८, ११, ६; १२१९। ८, १९, १७; १२४०।
८, ३९, ९, १३०८। ८, ४३, १; १३१०।
८, ४३, १४; १३२३। ८, ४४, १०, २१,
१३५२, १३६३। ८, ७१, ५; १४१३।
३, २, १३, १७३९। ३, २६, २, १७५४।
१०, ८७, २२, २४; १८४९, १८५१
विप्रवीरः १०, १८८, २; १८६४
विभाति अप्सु अन्तः २, ३५, ७-८;
२४२८-२९
विभाति सुसंज्ञा भानुना ७, ९, ४;
११५८
विभानुः ८, १०२, २; १४६४
विभावसुः १, ४४, १०, ९५। ५, २५, २, ७;
९१२, ९१७। ८, ४३, ३२, १३४१।
८, ४४, ६, १०, २४; १३४८, १३५२,
१३६६। १०, १४०, १; १६८४।
३, २६, २; १७२८। १०, ११८, ४;
१८५६
विभावा १, ५८, ९; ११८। १, ६६, २;
१३५। १, ६९, ९; १७२। १, १४८, ४;

३५१। ४, १, ८, १२; ६३४, ६३८।
५, १, ९; ७६३। ५, ४, २; ७९१। ६, ४, २,
९७२। ६, १०, १; ९९३। ६, ११, ४;
१००३। १०, ६, १-२, १५२०-२१।
१०, ८, ४, १५३७। १०, ९१, १;
१६५१। १, ५९, ७, १७२३। ३, ३, ९;
१७५०। १०, ८८, ५; २४०३
विभूतरातिः ८, १९, २, १२२५
विभूषन् उभयान् ६, १५, ९, १०३१
विभ्रः विश्वेविश्वे ४, ७, १; ६९३
विभ्रवा १०, ३, ६, १५०४
विमान. रजसः ३, २६, ७; १७५६
विमानम् ३, ३, ४; १७४५
विमृष्टः १०, ८८, १६; २४१२
विरण्शी शोचिषा १०, ११५, ३; १६६८
विराट् अथ० ७, ८४, १; १८६६
विरूपः ३, १, १३; ४५९
विरूपे [उषालानक्ते] ३, ४, ६, १९५८
विरोचमानः १, २५, २; १८६९
विवस्त्रान् ७, ९, ३; ११५७। साम०
१, १, १, १०
विविचिः ५, ८, ३; ८२३
विविद्वान् ४, ५, ३; १७६०
विशां ईड्य ८, २३, २०; १२९९
विशां केतुः १०, १५६, ५; १७०७
विशां गोपाः १, ९४, ५; २६०।
१, ९६, ४, १८८२
विशां पतिः विश्वासाम् १, १२७, ८;
२७९। ६, १५, १, १०२३
विशां प्रियः ५, १, ९; ७६३
विशां राजा २, २, ८, ३९२। ८, ४३, २४,
१३३३
विशः राजा ६, ८, ४, १७८३
विशां विप्रपतिः ३, १३, ५, ५७८,
विप्रपतिः १, १२, २, ११। १, २६, ७;
३४। १, २७, १२; ४९। १, ६०, २,
१२०। १, १२८, ७, २८९। २, १, ८,
३७६। ५, ६, ५, ८७६। ६, १, ८;
९४६। ६, २, १०; ९६१। ६, १५, ८;
१०३०। ७, ४, ७; ११४०। ७, १५, ७;

११८३। ७, ७, ४, ११४५। ८, १०३, ७;
१२६३। ८, २३, १३-१४; १२८२-८३।
८, ४४, २६; १३६८। ८, ६०, १९;
१४०७। ३, ३, ८; १७४९
विश्रति मानुषीणां विशाम् ५, ४, ३;
७१२। ३, २, १०, १७३६
विश्रपतिः शश्वतीनां विशाम् ६, १, ८;
९४६
विश्वः १०, ९१, २, १६५२
विश्वः १, १२८, ६; २८८। १०, ८७, १५;
१८४२। वा०य० २८, २९; २१००
विश्वकर्मा अथ० २, ३४, ३, २१५१।
२, ३५, १; २२७९
विश्वकर्मा [देवता] अथ० २, ३५, १,
२२७९
विश्वकृत् अथ० ६, ४७, १; २३७२
विश्वकृष्टिः १, ५९, ७, १७२३
विश्वचर्षणिः १, २७, ९; ४६। ५, ६, ३;
८०३। ५, १४, ६, ८६५। ५, २३, ४;
९०६। ३, २, १५; १७४१
विश्वतः प(स्प)तिः ९, ५, १; १९८१
विश्वतः परिभूः १, ९७, ६; १८९२
विश्वतः प्र(स्पृ)ष्टः २, १, १२; ३८०
विश्वतः प्रत्यञ्च-ङ् ७, १२, १, ११७१
विश्वतः भानवः यन्ति १, ९७, ५, १८९१
विश्वतः (तो) मुखः १, ९७, ६-७;
१८९२-९३
विश्वतूर्तिः २, ३, ८; १९४९
विश्वदर्शत १, ४४, १०, ९५।
१, १४६, ५, ३४२। ५, ८, ३; ८२३।
१०, १४०, ६; १६८९
विश्वदाव्यः अथ० ३, २१, ३, ९;
२३५७, २३६३
विश्वदेवः १, १४२, १२; १९२९
विश्वदेव्यः १, १४८, १, ३४८। ३, २६, ५;
१७३१
विश्वधाया. १, ७३, ३, २०७। ५, ८, १;
८२१। ७, ४, ५; ११३८
विश्वभरस्-राः ४, १, १९; ६४५

विश्वभानवः [मरुतः] ४, १०, ३; २४५०
 विश्वभृत् अथ० ५, २८, ५; २१७१
 विश्वमिन्व. ३, २०, ३; ६१६
 विश्वमिन्वा [देवीर्द्धारः] १०, ११, ५;
 २००७
 विश्वरूपः १, १३, १०; १९१५
 विश्ववारः ३, १७, १; ६०० । ७, ७, ५;
 ११४६ । ७, १६, ५, ११९६ ।
 १०, १५०, ३; १७०० । ७, ५, ८;
 १८०१ । वा०य० २७, १३, २०६२ ।
 अथ० ५, २, ७, २०७४
 विश्ववार्यः ८, ११, ११; १२३४
 विश्वविद् ३, २९, ७, ५६४ । ३, १९, १;
 ६१० । ५, ४, ३; ७९२ । १०, ९१, ३,
 १६५३
 - विश्ववेदाः १, १२, १; १० । १, ३६, ३;
 ७० । १, ४४, ७, ९२ । १, १२८, ८;
 २९० । १ १४३, ४; ३२१ । १, १४७, ३;
 ३४५ । ३, २५, १, ५३२ । ३, २०, ४;
 ६१७ । ४, ८, १, ७०४ । ४, ४, १३;
 १८२५ । वा०य० २७, १२; २०६१
 विश्वशंभूः अथ० ६, ४७, १; २३७२
 विश्वशुक्-क् ७, १३, १; १८१०
 विश्वशुष्टिः १, १२८, १; २८३
 विश्वस्य केतुः १०, ४५, ६, १५९४
 विश्वस्य नाभिः चरतः ध्रुवस्य १०, ५, ३;
 १५१५
 विश्वादः ८, ४४, २६; १३६८
 विश्वाप्सुः १, १४८, १, ३४८
 विश्वायुः १, २७, ३, ४० । १, ६७, ६, १०;
 १४९, १५३ । १, ६८, ५; १५८ । १, ७३, ४;
 २०८ । १, १२८, ८; २९० । ६, ४, २;
 ९७२ । १०, ६, ३, १५२२
 विश्वायु वेपलम् (द्विती०) ८, ४३, २५;
 १३३४
 विश्वेदेवाः [देवता] अथ० ३, २१, ८;
 २३६२
 विश्वेदेवाः त्वे ५, ३, १, ७७९
 विश्वेदेवासः [मरुतः] १, १९, ३, २४४०
 द्वे [अग्निः] ३४

विवितः ६, १२, ५; १०१०
 विषुणः ४, ६, ६; ६८७
 विषुरूपः त्मना परिजिगासि ५, १५, ४;
 ८६९
 विष्णुः १०, १, ३; १४८७
 विष्णु [देवता] अथर्व० ७, २९(३०),
 १-२; २४५३-५४
 विष्णुः त्वम् उरुगायः २, १, ३; ३७१
 विह्वयः अथ० २, ६, ४; २३२३
 विहायाः १, १२८, ६; २८८ । ६, १३, ६,
 १०१७ । ८, २३, १९, २४; १२८८,
 १२९३
 वीः उच्यस्य कुवित् १, १४३, ६, ३२३
 वीतः ४, ७, ६; ६९८
 वीतिहोत्रः ३, २४, २, ५२८ । ५, २६, ३;
 ९२२
 वीरः ८, २३, १४; १२८३
 वीरः [त्वष्टा] २, ३, ९, १९५०
 वीरपेशाः १०, ८०, ४; १६४७
 वीरुर्धा गर्भः २, १, १४, ३८२
 वीळुः ८, ४४, २७; १३६९
 वीळु जम्भः ३, २९, १३; ५७०
 वृत्रहन्तमः १, ७८, ४, २४२ । ६, १६,
 ४८; १०८९ । ८, ७४, ४; १४४५
 वा० य० २८, २६; २०९७
 वृत्रहा २, १, ११३७९ । ३, २०, ४; ६१७
 ६, १६, १४, १९; १०५५, १०६० । १०,
 ६२, १२; १६३६ । १, ५९, ६, १७२२
 वृद्धवृष्णः अथ० ७, ६२(६४), १, २०७३
 वृद्धशोचिः ५, १६, ३; ८७३
 वृधः भूः दक्षस्य ६, १५, ३; १०२५
 वृधः शूषेभिः १०, ६, ४, १५२३
 वृधत्-त् ८, १०२, ७, १४६९
 वृधानः समिधा ३, २८, ६; ५५७ ।
 १, ९५-९६, ११, ९; १८७८
 वृधसानः धिषण्यासु ४, ३, ६; ६७१
 वृश्चद्वनः ६, ६, १; ९८६
 वृषः ३, २७, १४; ५५०
 वृषणः ३, २९, ३, ९; ५६०, ५६६

वृषत्-षा १, ३६, ८; ७५ । १, १२७, २;
 २७३ । १, १४०, २; २९३ । ३, १, ८,
 ४५४ । ३, ७, २, ५, ९; ४९१, ४९४,
 ४९८ । ३, २७, १३, १५, ५४९, ५५१ ।
 ५, १, १२; ७६६ । ५, १२, ६; ८५३ ।
 ६, १, १; ९३९ । ६, ३, ७; ९६९ ।
 ६, ६, ५; ९९० । ६, ४८, ३, ६, १०९२,
 १०९५ । ७, ३, ३, ५; ११२६, ११२८ ।
 ७, १०, १; ११६१ । ८, ७५, ६, १३७८ ।
 १०, ३, ४, १५०२ । १०, ११, १; १५४० ।
 १०, १८७, ३, १७१३ । १०, १९१, १,
 १७१६ । ३, २, ११; १७३७ । ४, ५; १०,
 १५; १७६७, १७७२ । ६, ८, १, १७८० ।
 ९, ५, १, ७, ९; १९८१, १९८७, १९८९ ।
 २, ३५, १३; २४३४ । वा०य० २०, ४४;
 २०२२ । अथ० ४, ३६, १; २२९५ ।
 साम० १, १, १०, ३
 वृषत्-षा [इन्द्र] वा०य० २०, ४०,
 ४४; २०१८, २०२२
 वृषभः १, ३१, ५, ५४ । १, १२८, ३;
 २८५ । १, १४०, १०, ३०१ । २, १, ३;
 ३७१ । २, ९, २, ४०४ । ३, ६, ५, ४८४ ।
 ३, १५, ३, ४, ६; ५९०, ५९१, ५९३ ।
 ४, ३, १०, ६७५ । ५, १, ८, १२, ७६२,
 ७६६ । ५, २, १२; ७७८ । ५, २८, ४;
 ९३६ । ६, १, ८; ९४६ । ८, ६०, १४;
 १४०२ । १०, ८, १-२; १५३४-३५ ।
 १, ५९, ६; १७२२ । ४, ५, ३, १७६० ।
 २, ३, ११; १९५२ । २, ४, ३; १९५५ ।
 वा०२८, ४, २०८७
 वृषभ [इन्द्र] वा०य० २०, ४६; २०२४
 वृषभः क्षितीनाम् १०, १८७, १; १७११
 वृषभः रोरवीति १०, ८, १; १५३४ ।
 ४, ५८, ३; १८९७
 वृषभः स्तियानाम् ७, ५, २; १७९५
 वृषायमाणः [इन्द्र] वा०य० २०, ४६;
 २०२४
 वेः मन्मसाधनः १, ९६, ६, १८८४
 वेत्तलः ४, ५८, ५; १८९९

वेत्थ हि अध्वनः पथः ६, १६, ३, १०४४
 वेत्त सः १, १४५, १, ३२३
 वेद जनिमानि देवानाम् ३, ४, १०,
 ७, २, १०; १९६२
 वेद जाता देवानाम् ८, ३९, ६, १३०५
 वेद विश्वा जनिमा ६, १५ १३, १०३५
 वेद मर्तानां अपीच्यम् ८, ३९, ६, १३०५
 वेदिता ८, १०३, ११; १२६७
 वेदिषत् १, १४०, १ २९२
 वेद्य ५, १५, १; ८६६। ६, ४, २, ९७२।
 अथ० १९ ३, ४; २२०८
 वेधस्-घाः १, ६५, १०, १३३१, १, ६९, ३,
 १६६। १, ७३, १०; २१४। १, १२८, ४,
 २८६। ३, १०, ५, ५१३। ३, १४, १;
 ५८१। ४, २, २०, ६६६। ४, ३, १६;
 ६८१। ५, १५ १, ८६६। ६, १६, ३, २२;
 १०४४, १०६३। ८, ४३, १ ११; १३१०,
 १३२०। ८, ६०, ३; १३९१। १०, ९१,
 १४, १६६४। अथ० ३, २१, ६; २३६०
 वेधस्तमः १, ७५, २; २२५। ६, १४, २,
 १०१९
 वेन. ४, ५८, ४, १८९८
 वैश्वानरः [अग्नि देवता] सूक्तानि
 १, ५९, (१-७), १७१७-२३। १, ९८,
 (१-३) १७२४-२६। ३, २, (१-१५),
 १७२७ ४१। ३, (१-११) १७४२-५२।
 ३, २६, (१-३, ७-८); १७५३-५७।
 ४, ५, (१-१५), १७५८-७२। ६, ७,
 (१-७), १७७३-७९। ६, ८, (१-७);
 १७८०-८६। ६, ९, (१-७); १७८७-
 ९३। ७, १५, (१-९), १७९४-
 १८०२। ७, ६, (१-७); १८०३-९।
 ७, १३, (१-३); १८१०-१२।
 वैश्वानरः ५, २७, १-२, ९२८-२९। १०,
 ४५, १२; १६००। १०, ८८ १२-१४;
 २४०८-१०। अथ० ६, ३६, १,
 २१८१। ७, १०८, २; २२२८। ४,
 ३६, १-२; २२९५-९६। ४, २३, ४;
 २३७३। ६, ७१, ३, २३४८। ३, २१,
 ३; २३५७। ६, ४७, १, २३७२।

६, ३५, १, २, ३, २३७५-७६-७७।
 ६, ११९, १, २, ३; २३८४-८५-८६।
 वैश्वानर ज्येष्ठः अथ० ३, २१, ६, २३६०।
 व्यध्वा १, १४१, ७; ३११।
 व्यचस्वतीः [देवीद्वरः] २, ३, ५;
 १९४६। १०, ११०५; २००७।
 व्याघ्रः [वनस्पतिः] वा० २१, ३९,
 २०५८।
 व्रजनम् कृष्णम् ते ७, ३, २, ११२५।
 व्रतपतिः अथ० ७, ७४, ४; २१९७।
 व्रतपाः १, ३१, १०; ५९। ८, ११, १;
 १२१४। ६, ८, २, १७८१।
 व्रता विश्वा ध्रुवा ते संगतानि १, ३६,
 ५; ७२।
 व्रतेन समक्त अथ ७, ७४, ४, २१९७।
 श्रावः ४, ६, ११; ६९२
 शक्रः अथ० ३, २१, ४; २३५८
 शचीवस्-वान् ३ २१, ४; ६२१
 शचीवसुः ८, ६०, १२, १४००
 शतक्रतुः [वनस्पतिः] वा० य०
 २१, ३९; २०५८। २८, १०; २०९३
 २८, ३३; २१०४
 शतनीथः १०, ६९, ७, १६३१
 शतात्मा १, १४९, ३; ३५५
 शन्तमः १, १२८, ७, २८९।
 शन्तमः अध्वरेषु १, ७७, २, २३५
 शम् ७, ६ २; १८०४।
 शमिता २, ३, १०; १९५१। ३, ४, १०;
 १९६२। ७, २, १०, १९६२। १०, ११०,
 १०. २०१२। वा० य० २७, २१,
 २०७०
 शमिता [वनस्पतिः] वा० य २१,
 ३९, २०५८। २८, १०, २०९३।
 २८, ३३; २१०४। अथ० ५, ७, ११,
 २०८२
 शम्भुः १, ६५, ५; १२८। ३, १७, ५;
 ५०४
 शयिष्ठाः आ ज्योक् एव दीर्घं तमः
 १०, १२४, १; १६८३

शयुः कतिधा चिद् आयवे १, ३१, २, ५१।
 शर्धः त्वम् २, १, ५; ३७३
 शर्धमानः [इन्द्र] वा० य० २०, ३८,
 २०१६
 शर्महा ६, १६ ३९; १०८०
 शवसस्पतिः १ १४५, १; ३३३।
 ५, ६, ९, ८०९
 शवसा सुतुः १ २७, २; ३९
 शविष्ठः १, १२७, ११; २८२
 शशमान १०, १४२, ६; १६९५
 अथ० १२, २, १०; २३३६
 शशमानः विप्रस्य उक्थ्यम् १०, ११, ५;
 १५९४
 शशली (शकली) अथ० १, २५, २;
 २२७६
 शश्वत. ५, १९, ४; ८८९
 शश्वत्तमः १०, ७०, ३; १९९४
 शास् (शासुः षष्ठी) १, ६०, २; १२०
 शिक्षस् ६, २, ९; ९६०
 शितः ८, २३, १३; १२८२
 शितिष्ठः ३, ७, १; ४९०
 शिमीवान् १०, ८, २, १५३५
 शिव १, ३१, १; ५०। ५, १, ८, ७६२।
 ५, २४, १, ९०७। ८, ३९, ३; १३०२।
 १०, ३, ४; १५०२
 शिवः [त्वष्टा] ५, ५, ९; १९७१
 शिवः दोषा ४, ११, ६; ७३३
 शिशानः १०, ८७, १, ३, ६; १८२८,
 १८३०, १८३१
 शिशानः शृगे ९, ५, २, १९८२
 शिशुः १०, १, २, १४८६
 शिश्वा १, ६५, १०, १३३
 शितः अथ० १, २५, ४; २२७८
 शीर ३, २, ८; ५०७। ८ ४३, ३;
 १३४०। ८, १, २, ११; १४७३। १०,
 २१, १; १५८१
 शीरशो चिस्-चिः ८, ७१, १०, १४;
 १४१८, १४२२
 शीर्षे द्वे अस्य ४, ५८, ३, १८९७

शुक्रः १, ६९, १, १६४ । १, १२७, २, २७३ । ४, १, ७, ६३३ । ४, ६, ८, ६८९ । ४, ११, २, ७२९ । ५, २१, ४, ८९८ । ६, १६, ३४, १०७५ । ६, ४८, ७, १०९६ । ७, १, ८, ११०७ । ७, ४, १, ११३४ । ८, ६०, ३, १३९१ । १०, २१, ७, १५८७ । १०, १८७, ५, १७१५ । १, ९५, १, १८६८ ।
 शुक्रवर्चाः १०, १४०, २, १६८५ ।
 शुक्रशोचिः २, २, ३, ३८७ । ७, १४, १, ११७४ । ७, १५, १०, ११८६ । ८, १०३, ८, १२६४ । ८, २३, २०, २३, १२८९, १२९२ । ८, ४४, ९, १३५१
 शुचत्-न् ६, ३, ३, ९६५
 शुचयत्-न् १०, ४६, ८, १६०८
 शुचिः १, ३१, १७, ६६ । १, ६६, २, १३५ । १, १२७, ७, २७८ । १, १४१, ४-५, ३०८-९ । २, १, १, ३६९ । २, १, १४, ३८२ । २, ५, ४, ४२८ । २, ७, ४, ४४४ । ३, ५, ७, ४७६ । ४, १, ७, ७३३ । ५, १, ३, ७५७ । ५, ४, ३, ७९२ । ५, ७, ८, ८१८ । ५, ११, १, ३, ८४२, ८४४ । ६, ६, ३, ९८८ । ६, १५, १, ७, १०२३, १०२९ । ७, १०, १, ११६१ । ७, १५, १०, ११८६ । ८, ४३, १३, १३२२ । ८, ४४, २१, १३६३ । ८, १०२, ४, १४६६ । ३, २, १४-१५, १७४०-४१ । १, १४२, ३, १९२० । २, ३५, ३, २४२४, वा० य० २८, २५, २०९६
 शुचिः [तिस्र देव्य] १, १४२, ९, १९२६
 शुचिः [अग्निदेवता] १, ९७, (१-८); १८८७-१८९४
 शुचिजन्मा १, १४१, ७, ३११
 शुचिजिह्वा २, ९, १, ४०३
 शुचिदत्-न् ५, ७, ७, ८१७ । ७, ४, २, ११३५
 शुचिप्रतीक १, १४३, ६, ३२३

शुचिवर्णः ५, २, ३, ७६९
 शुचिमतः ८, ४३, १६, १३२५ । १० ११८, १, १८५३ । वा० य० २१, १३, २०३८
 शुचिमततमः ८, ४४, २१, १३६३
 शुचिष्मः (सं०) ६, ६, ४, ९८९
 शुभ्रः ३, २६, २, १७५४
 शुभ्रः [बर्हिः] ५, ५, ४, १९६७
 शुभ्राः [मरुतः] १, १९, ५, २४४२
 शुभ्रमान स्वातन्त्र्यम् ८, ४४, १२, १३५४
 शुश्रुकनिः ८, २३, ५, १२७४
 शुश्रुकान् १, ६९, १, १६४
 शुश्रुचानः ४, १, १९, ६४५ । ४, १, ३, २४५०
 शुमिणस्पतिः १, १४५, १, ३३३
 शुमिन्मतः १, १२७, ९, २८०
 शुमिन्-ष्मी ८, १०२, १२, १४७४
 शूरः १, ७०, ११, १८४ । ४, ३, १५, ६८० । ६, १५, ११, १०३३
 शृङ्गाः अस्य चत्वारि-४, ५८ ३, १८९७ ।
 शृण्वन् ८, ४३, २३, १३३२ । १०, १२२ ४, १६७८
 शृण्वन् आरे अस्मे च १, ७४, १, २१५
 शोचः १, ५८ ६, ११५ । १, ६९, ४, १६७ । १, ७३, २, २०६ । १०, १२९, १, १६७५
 शोचधः १०, ४६ ३, १६०३
 शोकः अथ० १, २५, ३, २२७७
 शोचिः ५, ५, १, १९६४
 शोचिः परिवसानः ३, १, ५, ४५१
 शोचीषि ऊर्ध्वां शुक्रा द्युमत्तमा अथ० ५, २, ७, २०७२
 शोचिष्केशः १, ४५, ६, १०५ । १, १२७, २, २७३ । ३, २७, ४, ५४० । ३, १४, १, ५८१ । ३, १७, १, ६०० । ५, ८, २, ८२२
 शोचिषस्पतिः ५, ६, ५, ८०५
 शोचिषा अरोचत शुक्रेण ८, ५६, ५, २४५५

शोचिष्ठः ५, २४, ४, ९१० । ८ ६०, ६, १३९४
 शोचिष्मान् २, ४, ७, ४२२
 शोभमानः पुरु ५, २, ४, ७७०
 शोशुचत् १०, ८७, २०, १८४७
 शोशुचत् अजस्रण शोचिषा ६, ४८, ३, १०९२
 शोशुचानः ७, १०, १, ११६१ । ७, ५, ३, १७९६ । ७, १३ २, १८११ । ४, ४, २, १८१४ । १०, ८७, ७, १८३४ । १०, ८७, ९, १४, १८३६, १८४१ । ४, १, ४, २४५१
 शोशुचानः पाजसा पृथुना ३, १५, १, ५८८
 शोशुचानः अजस्रेण शोचिषा ७, ५ ४, १७९७
 श्येतः १, ७१, ४, १८८
 श्रवस्यः २, १०, १, ४०९
 श्रवस्यः श्रवोभिः ६, १, ११, ९४९
 श्रियः यस्य स्वाहाः दृशे ४, १५, ५, ११८१
 श्रिय दधाने शुक्रपिशम् [उवासानक्ते] १०, ११०, ६, २००८
 श्रियं वसान २, १०, १, ४०९
 श्रीणां उदारः १०, ४५, ५, १५९३
 श्रुत्कर्णः १, ४४, १३, ९८ । १, ४५, ७, १०६ । १०, १४०, ६, १६८९ । अथ० १९, ३, ४, २२०८
 श्रुष्टिः १, ६७, १, १४४
 श्रुष्टी[त्वष्टा] २, ३, ९, १९५०
 श्रुष्टीवान् ३, २७, २, ५३८
 श्रणिदन् १०, २०, ३, १५७३
 श्रेष्ठः १, ४४, ४, ८९ । ३, २१, ३, ६२० । १०, १४६, ५, १७०७
 श्रेष्ठशोचिस्-चिः ८, १९, ४, १२२७
 श्रोता ३, २६, २, १७५४
 श्रुसीवान् १, १४०, १०, ३०१
 श्रात्र (०त्रासः-बहु०) १०, ४६, ७, १६०७

श्वितान ६, ६, २, ९८७
 श्वित्विचिः- चयः (बहु०) १०, ४६, ७;
 १६०७
 श्वेत ३, १, ४; ४५० । ५, १, ४;
 ७५८
 श्वेत्रेय ५, १९, ३, ५८८
 सः ५, १३, ४, ९०६
 संयत २, २, २, ३८६
 संवथन्ती तत् तन्नुम् [उषासानक्ते]
 २, ३, ६, १९४६
 संवसवः [देवता] अथ० ७, १०९
 (११४), ६, २३७०
 संविदान ब्रह्मणा १०, १६२, १, २४१६
 संविदान विश्वेभिः देवैः सह
 अथ० ५, २९, २, २३०६
 संविद्वान् अथ० १, २५, १, २, ३, २२७५-
 ७६ ७७
 सकृत् वा० य० २७, १३, २०६२
 सखा १, ३१, १, ५० । २, १, ९, ३७७ ।
 ८, ४३, १४; १३२३ । ८, ७१, ९; १४१७ ।
 १०, ३, ४, १५०२ । १०, ८७, २१, १८४८ ।
 ३, ४, १; १९५३
 सखा साखिभ्यः १, ७५, ४; २२७
 सख्यं जुषाण. देवानाम् ७, ७, २, ११४३
 सकसुक अथ १२, २, ११, १४, १९, ४०;
 २२३७, २२४०, २२४५, २२५३
 सचन्तः देवोभि १, १२७, ११; २८२
 सचाभूः अङ्गिरसाम् १०, ७०, ९, २००५
 सजोषसः अग्रयः ३ २२, ४, ६२६
 सञ्चित्वा ४, ७, ८, ७००
 संज्ञातरूपः १, ६९, ९. १७२
 सत्-न् ८, ४३, १४, १३२३ । ८, ७१, १३,
 १४२१ । १०, ११५, ६; १६७१
 सत्पति. २, १, ४, ३७२ । ६ १६, १९,
 १०६० । ८, ७४, १०, १४५१ । अथ०
 ७, ६२ (६४). १, २३७३ । साम०
 १, २, १, ९
 सत्यः १, १, ५, ५ । १, १४५, ५; ३७७ ।
 ३, १४, १, ५८१ । ५, ७३, २; ९०२ ।

५, २५, २, ९१२
 सत्यतरः १, ७६, ५, २३३ । ३, ४, १०,
 १९६२ । ७, २, १०; १९६२
 सत्यतातिः ४, ४, १४, १८२६
 सत्यधर्मा १, १२, ७; १६
 सत्यमन्मा १, ७३, २; २०६
 सत्ययजः ६, १६ ४६; १०८७ ।
 ४, ३, १; साम० १, १, ७, ७
 सत्यवाक् ७, २, ३, १९७७
 सत्यशुभः १, ५९, ४; १७२०
 सत्यौजाः अथ० ४, ३६, १, २२९५
 सत्वनः-नम् १०, ११५, ४; १६६९
 सदः दधानः उपरेषु परेषु सासुषु
 १, १२८, ३; २८५
 सदानवः ३, ११, ५; ५२२
 सदक् ८, ११, ८, १२२१ । ८, ४३, २१;
 १३३०
 सद्यो अर्थः १, ६०, १; ११९
 सद्यो जात. १० ११०, ११, २०१३
 वा० य० २९, ११; २११६
 सनकात् ३, २९, १४; ५७१
 सनश्रुतः ३, ११, ४; ५२१
 सनानि जठरेषु धन्ते विश्वा १, ९५, १०;
 १८७७
 सनुतः चरन् ५, २, ४, ७७०
 सनृजः १, १५, १२; २३ । १, ३६, २;
 ६९ । १, ४५, ५, ९, १०४, १०८ ।
 ३, २०, ४, ६१७ । ३, २१, ३; ६२० ।
 ८, १९, २९; १२४९ । ८, ४४, ९, २८,
 १३५१, १३७०
 सदक् १, ६६, १, १३४
 सदक् विश्वतः सुप्रतीकः १, ६४, ७;
 २६२
 सदक् भद्रा चाश्च ते ४, ६, ६; ६८७
 सदष्टि वस्वी ते ६, १६, २५, १०६६
 संनममान इष्टः १०, ८७, ४, १८३१
 सपत्नहा अथ० २, ६, ३; २३२१
 सपर्येण्यः ६, १, ६, ९४४
 सप्त आस्थानि तव अथ० ४, ३९, १०,
 २२८३

सप्त धामानि परियन् १०, १२२, ३;
 १६७७
 सप्तमानुष. ८, ३९, ८, १३०७
 सप्तरश्मिः १, १४६, १; ३३८
 सप्तहोता ३, २९, १४; ५०१
 सप्तिः वा० य० २९, २; २१०७
 सप्रथः ६, १५, ३; १०२५
 सप्रथस्-थाः ५, १३, ४, ८५७, ८, ६०, ५;
 १३९३
 सप्रथस्तम १, ४५, ७, १०६ । १०, १४०,
 ६; १६८९
 सभ्यः अथ० १९, ५५, ६; २२७४
 समक्तः ब्रतेन अथ० ७, ७४, ४; २१९७
 समञ्जन् ऋतस्य यानान् पथ. १०, ११,
 २; २००४ । वा० य० २९, २६; २११८
 समञ्जन् मधुना [इन्द्रः] वा० य० २०,
 ३७; २०१५
 समञ्जन् वीरुधः १०, ४५, ४; १५९२
 समनगा ७, ९, ४; ११५८
 समानः ४, ५ ७, १७६४
 समित् समित् ३, ४, १; १९५२
 समिद्धः [देवता] 'हृधमः' पश्य. वा० य०
 २०, ३६, ५५; २०१४, २०२५ ।
 २१, १२, २९; २०३७, २०४८ ।
 २७, ११; २०६० । २८, १, २४,
 २०८४, २०९५ । २९, १, २५; २१०६,
 २११७ । ऋ० प्रेष १ २१२९ । अथ०
 ५, २७, १; २०७२ । ५, १२, १, २००३
 समिद्धः ३, ९, ३; ४०५, ३, ५, १४७० ।
 ३, ९, ७, ५०६ । ५, २८, १, ४-५, ९३३,
 ९३६-३७ । ६, १६, ३४; १०७५ ।
 १०, ३, १, १४९९ । १०, १५, १, १६९८ ।
 १०, ८७, १-२, १८२८-२९ । १०, ७०, ७;
 १९९८ । ७, २, ३; १९७६ । १०, ८८, ७;
 २४०३ । अथर्व० ७, ७४ ४; २१९७ ।
 १२, २, ११, १८, २२३७, २२४४
 समिद्धः [इन्द्रः] वा० य० २०, ३६;
 २०१४
 समिद्धः समिधा ६, १५, ७; १०२९

समिधानः १, १४३, २; ३१९, २, २, १,
६; ३८५, ३९०। ४, ६, ११, ६९२। ५,
८, ४, ६; ८२४ ८२६। ६, ४८, ७, १०९६।
७, ९, ४; ११५८। ८ ४४, ९, १३५१।
८, ६०, ५, १३९३। १०, २, ७; १४९८।
१०, १५०, ९; १६९९। ४, ५, १५, १७७२।
४, ४, ४, १८१६। ३, ४, ११, १९६३।
७, २, ११; १९६३। वा० य० २८, २४;
२०९५। साम० १, ६, १३, १
समिधः अत्य ऊर्ध्वा अथ० ५, २, ७;
२०७२
समिध्यमानः अध्वरे ३, २७, ४, ५४०
समिध्यमानः अनु प्रथमा ३, १७, १;
६००
समीची [उवासानक्ते] २, ३, ६,
१९४४
समुद्रः ४, ५८, १; १८९५। १०, ५,
१, १५१३
समुद्रथ. ३, ३, ९, १७५०
सम्पृचानः सद्ने आग्निः गोभिः १, ९५,
८; १८७५
सम्प्रेक्षः अथ० ६, ७६, १; २३९०
सम्मिश्रः १०, ६, ४; १५२३
सम्राज्-ट ८, १९, ३२, १२५५। ७,
६, १; १८०३। अथ० ६, ३६, ३,
२१८३
सम्राजत्-न् अध्वराणाः १, २७, १, ३८
सरजत्-न् अध्वनः १०, ११५, ३,
१६६८
सरण्यन् ३, १, १९; ४६५
सरस्वती [देवता] पश्य 'देव्यः तिस्रः'
अथ० ४, ४, ६; २१६२
सरस्वती त्वम् २, १, ११; ३७९
सर्पिरासुतिः २, ७, ६, ४४६। ५, ७,
९; ८१९। ५, २१, २, ८९६। १०,
६९, २; १६२६
सविता [देवता] ४, १३, २; ७४१।
१, ३५, १; २४४८। वा० य० २७, १३,
२०६२। अथ० ५, २७, ३; २०७४।

२, २९, २; २१५०। ७, ११५, २, २२०२।
३, २१, ८; २३६२। ४, ४, ६; २१६२
सविता त्वं देव- रत्नधा २, १, ७,
३७५
सवीर्यः वा० य० २८, ३; २०८६
सवेदाः अथ० १२, २, १४, २२४०
ससः ३, ५, ६, ४७५
ससवान् वाजम् १०, ११, ५, १५४४
सस्रुः अथ० ५, २७, १; २०७२
सस्त्रिः ३, १५, ५, ५९२
सहः [द्वन्द्वः] वा० य० २१, ४०; २०५९।
२८, ३६, २०९७
सहः १, ३६, १८; ८३। ८, १०२, ५;
१४६७
सहन्तमः १, १२७९, २८०
सहन्त्यः १, २७, ८; ४५। ६, १६, ३३;
१०७४। ८, ११, २; १२१५
सहमानः अथ० १२, २, ४६, २२५९।
७, ६३ (६५), १; २३७३
सहसस्पुत्रः २, ७, ६, ४४६। ३, १४,
१, ४, ६, ५८१, ५८४, ५८६। ३, १६ ५,
५८८। ३, १८ ४, ६०८। ५, ३, १, ६,
७७९, ७८३। ५, ४, ६; ७९५। ५, ११,
६; ८४७
सहसः सूतरः १०, ११५, ७, १६७२
सहसः सूतुः १, ५८, ८, ११७। १, १२७, १;
२७२। १, १४३, १; ३१८। ३, १८;
४५४। ३, ११, ४; ५२१। ३, २४, ३;
५२९। ३, २५, ५, ५३६। ३, २८, ३, ५,
५५४, ५५६। ४, २, २, ६४८। ४, ११, ६;
७३३। ५, ३, ९; ७८६। ५, ४, ८, ७९७।
६, १, १०; ९४८। ६, ४, १, ९७१।
६, ५, १; ९७९। ६, ५, ५, ९८३।
६, ६, १, ९८६। ६, ११, ६, १००५।
६, १२, १, १००६। ६, १३, ४-५,
१०१५-१६। ६, १३, ६; १०१७।
६, १५, ३; १०२५। ७, १, २१-२२;
११२०-२१। ७, ३, ८; ११३१।
७, ७, ७; ७, ८, ७, ११४८। ७, १६, ४,

११९५। ८, १९, ७, २५, १२३०, १२४८।
८, ७५, ३; १३७५। ८, ६०, २; १३९०।
८, ७१, ११, १४१९। १०, ११, ७;
१५४६। १०, ४५, ५; १५९३।
१०, १४२ १, १६९०
सहसान १, १८९, ८, ३६८। २, १०, ६;
४१४। ५, २५, ९, ९१९। ७, ७, १;
११४२
सहसावान् १, १८९, ५; ३६५।
३, १, २२; ४६८। ५, २० ४, ८९४।
७, ४, ९; १०३४। ६, १५, १२;
१०३४। ७, १, २४, ११२३। ७, ४, ६;
११३९। १०, २१, ४; १५८४।
१०, ११५, ८, १६७३
सहसिन्-सी ४, ११, १; ७२८
सहसो यहुः १, २६, १०; ३७।
१, ७४, ५, २१९। १, ७९, ४, २४७।
७, १५, ११, ११८७। ८, १९, १२;
१२३५। ८, ६०, १३; १४०१।
८, ८४, ५; १४५८
सहसो युवा १, १४१, १०, ३१४
सहस्रकृतः १, ४५, ९; १०८। ३, २७, १०;
५४६। ५, ८, १; ८२१। ६, १६, ३७;
१०७८। ८, ४३, १६, २८, १३२५,
१३३७। ८, ४४, ११, १३५३
सहस्यः १, १४७, ५, ३४७। २, २, ११;
३९५। ५, २२, ४; ९०२। ७, १, ५;
११०४। ७, १६ ८, १११९। १०, १, ७,
१४९१। १०, ८७, २२; १८४९
सहस्रकृष्टिः [वज्रः] अथ० १९, ६६, १;
२३५०
सहस्रजित् ५, २६, ६, ९२५। १, १८८, १;
१९३१
सहस्रवती १०, ६९, ७, १६३१
सहस्रमुष्कः ८, १९, ३२; १२५५
सहस्रम्भरः २, ९, १; ४०३
सहस्ररेता. ४, ५, ३; १७६०
सहस्रवदशः [वनस्पतिः] ९, ५, १०;
१९९०

सहस्रशृंगः ५,१,८, ७६२
 सहस्रसाः १,१८८,३, १९३३
 सहस्रसातमः ३,१३,६; ५७९
 सहस्राक्ष १,७९,१२; २५५
 सहस्वान् १,१२७,१०,२८११,१८९,
 ४, ३६४। ३,१४,२,४, ५८२,५८४।
 ५,७,१, ८११। ६,५,६; ९८४। ७,४,४;
 ११३७। ८,४३,३३,१३४२। ८,१०२,७;
 १४६९। १,९७,५; १८९१
 सहावान् ६,१४,५; १०२२
 सहीयान् सहस्रश्चित् १०,१७६,४,
 १७१०
 सहोजा १,५८,१; ११०
 सहोवृधः १,३६,२, ६९। ३,१०,९,
 ५१७
 सहासू-ह्या १०,११५,६; १६७१
 साधदिष्टिः अपसां यज्ञानाम् ३,२६,५,
 १७३१
 साधनम् यज्ञस्य १,४४,११; ९६
 साधुः १,६७,२; १४५। १,७७,३; २३६
 साधुः अध्वरेषु ५,१,७, ७६१
 साधुया ५,११,४; ८४५
 सानसिः ४,१५,६, ७५४। ८,१०२,
 १२; १४७४
 सान्तपनः [अग्निदेवता] अथ० ६,
 ७६, (१-४); २३९०-२३९३
 साम्राज्याय प्रतरं दधानः १,१४१,१३;
 ३१७
 नासहिः ३,१६,४, ५९७
 सासहिः पृतनासु अथ० ३,२१,३;
 २३५७
 साह्वान् विश्वा अभियुज ३,११,६,
 ५२३
 सिंह १,९५,५; १८७२
 सिंहः [इन्द्र] वा० य० २१,४०,
 २०५९.
 सिन्धूनां जामिः १,६५,७, १३०
 सिन्धूनां नेता ७,५,२; १७९५
 सिन्धूनां मित्र ३,५,४; ४७३

सिन्धुषु श्रितः विश्वेषु ८,३९,८,
 १३०७
 सिष्णुः ८,१९,३१, १२५४
 सीदत्-न् अपा उपस्थे १०,४६,१;
 १६०१
 सीदत् पस्यासु योनौ अन्त १०,४६,
 ६; १६०६
 सीदत् प्राचीनम् [इन्द्रः] वा० य०
 २०,३९, २०१७
 सीदत् प्रिये अमृते बर्हिषि वा० य०
 २८,२७; २०९८
 सुकृत् अथ० ५,२७,३, २०७४
 सुकृत्तरः १,३१,४; ५३
 सुकृत्तुः १,१२८,४, २८६। १,१४१,
 ११, ३१५। १,१४४,७, ३३२।
 ३,१,२२; ४६८। ५,११,२; ८४२।
 ५,२०,४, ८९४। ५,२५,९; ९१९।
 ६,१६,३, २९; १०४४, १०७०। ७,३,
 ९; ११३२। ७,९,२, ११५६। ७,
 १६,६; ११९७। ८,१९,१७; १२४०।
 ८,७४,७, १४५८। ८,८४,८; १४६१।
 १०, १२२, २, ६; १६७६, १६८०।
 ३,३,७; १७४८। ६,७,७, १७७९।
 ६,८,२; १७८१। ४,४,११; १८२३।
 १०,७०,१; १९९२
 सुकृत् क्रतुना १०,९१,३, १६५३
 सुकृत्तुः यज्ञस्य ८,१९,३, १२२६
 सुक्षत्रासः [मरुतः] १,१९,५;
 २४४२
 सुक्षितिः २,३५,१५, २४३६
 सुगार्हपत्यः अथ० १२,२,४५; २२५८
 सुजम्भः ८,६०,१३; १४०१
 सुजात २,१,१५; ३८३। २,६,२;
 ४३४। ३,२३,३; ६२९। ५,२१,२;
 ८९६। ७,८,५; ११५३। ८,१०३,१;
 १२५७। ८, ७४, ७, १४४८।
 १०, ५, ४; १५१६। १०, ७, २, ६;
 १५२८, १५३२। १०, ५१, ७, १६१४।
 अथ० ४, २३, ४; २३३३

सुजातः ऋतस्य योना गर्भे १,६५,४;
 १२७
 सुजातः तन्वा ३,१५,२; ५८९
 सुजातः वसुभिः १०,७९,७। १६४३
 सुजिह्वः १,१०,८, १९१३। १,१४२,
 ४; १९२१। १०,११०,२; २००४
 वा० य० २९,२६; २११८
 सुतुकः १०,३,७; १५०५
 सुत्यजः ८,६०,१६; १४०४
 सुर्दसस् २,२,३; ३८७। (३,९,१;
 ५००)
 सुदक्षः २,९,१; ४०३। ३,२३,२,
 ६२८। ५,११,१; ८४१। ७,१,६,
 ११०५। ८,१९,१३; १२३६। ७,२,
 ३; १९७६
 सुदक्षः दक्षैः १०,९१,३; १६५३
 सुदन्न ७,८,३; ११५१
 सुदर्शतरः नक्त यः दिवातरात्
 १,१२७,५; २७६
 सुदालुः ३,२९,७; ५६४। ६,२,४;
 ९५५। ६,१६,८, १०४९। ३,२६,
 १, १७५३
 सुदिव्-सुद्यौः १०,३,५; १५०३
 सुदीतिः ३,२७,१०; ५४६। ३,१७
 ४; ६०२। ३,२,१३; १७३९
 सुदीदितिः ३,२,१; ५००। ८,१९,
 ४, १२२७
 सुदुवे [उषासानक्ते] २,३,६,
 १९४७
 सुदृग्-क् ३,१७,४; ६०३। ६,१५,
 १०, १०३२
 सुदृशीकः ५,४,२; ७९१
 सुदृशीकरूपः ४,५,१५; १७७२
 सुदेवः १,७४,५; २१९
 सुद्युत् १,१४०,१; २९२। १,१४३,
 ३; ३२०। ८,२३,४; १२७३
 सुद्योत्मा १,१४१,१२; ३१६। २,४,
 १; ४१६
 सुद्रविणः १,९४,१५; २७०

सुधितः ३,२३,१; ६२७ । ४,६,७;
६८८ । ८,२३,८; १२७७
सुधितः वनस्पतौ ६,१५,२; १०२४
सुनाथः २,८,२; ३९८
सुपर्णः अथ० ४,१४,६; २२२२ ।
१९,६५,१, २३४९
सुपिण्डः १०,११५,६; १६७१
सुपेशसः १,१४२,७, १९२४ । १,
१८८,६, १९३६ । ९,५८, १९८८
सुप्रणीतिः १,७३,१; २०५ । ४,२,
१३; ६५९
सुप्रतिचक्षुः ७,१,२; ११०१
सुप्रतीकः १,१४३,३; ३२० । ३,२७,
५; ५९२ । ६,१५,१०; १०३२ ।
७,१०,३, ११६३ । वा० य० २७,
११; २०६० । अथ० ५,२७,१;
२०७२
सुप्रतः ८,२३,२९; १२९८
सुप्रतृप्तिः ३,९,१; ५००
सुप्रथाः २,२,१; ३८५ । २,४,१; ४१६ ।
६,१,४; १००३ । वा० य० २७,१५,
२०६४
सुप्रायणाः [देवीद्वार] २, ३, ५;
१९४६ । ५,५,५; १९६८ । १०,११०,
५; २००७
सुप्राव्यः १,६०,१, ११९
सुप्रीतः ६,१५,२, १०२४ । ८,२३,
१३; १२८२
सुबन्धुः ३,१,३, ४४७
सुबर्हिः १,७४,५; २१९ । वा० य०
२१,१५, २०४० । २८,२७; २०९८
सुबह्ना ७,१६,२, ११९३
सुभगः १,३६,६; ७३ । ३,१,४; ४५० ।
३,१६,६; ५९९ । ४,१,६; ६३२ ।
५,८,२३, ८२३ । ६,१३,१; १०१२ ।
८,१९,४,९, १८-१९; १२२७, १२३२,
१२४१-४२ । अथ० १९,४,२; २२१०
भगे [उपासानके] १०,७०,६,
१९९७

सुभरः [त्वष्टा] २,३,९; १९५०
सुभास् (भाः) आसः ८,२३,२०;
१२८९
सुभरवः ४,३,१४, ६७९
सुमतीः इयानः १०,२०,१०; १५८०
सुमद्वयः ८,५६,५; २४५५
सुमनस्-नाः ३,९,३; ५०२ । ४,
१०,३; ७२२ । ४,१३,१, ७४० ।
५,१,२, ७५६ । ७,१,९; ११०८ ।
७,८,५; ११५३ । ३,४,१; १९५३ ।
अथ० ७,७४,४; २१९७
सुमनस्यमानः १०,५१,५,७, १६१३-
१४
सुमहत्-हान् ७,८,२; ११५०
सुमहस् हा ४,११,२; ७२९ । १०,
७,७; १५३३
सुसृज्जीकः ४,१,२०; ६४६ । ४,३,३;
६९८
सुमेधाः ३,१५,५; ५९२ । १०,४५,
७, १५९५ । २,३,१, १९४२
सुयजः ५,८,३, ८२३ । वा० य०
२८,९; २०९२
सुयज्ञः ३,१७,१; ६००
सुरणः ३,२९,१४; ५७१ । ३,३,९;
१७५०
सुरत्नः १० ७० ९; २००५
सुरथाः ४,२,४; ६५०
सुराधाः ४,२,४, ६५० । ४,५,४,
१७६१
सुरूकमे [उपासानके] १,१८८,६,
१९३६ । १०,११०,६; २००८
सुरूक् १,११२,१, १८६७ । ३,२६,
५; १७३१
सुरेताः [त्वष्टा] वा० य० २१,३८;
२०५७ । २८,९; २०९२ । २८,३२;
२१०३
सुवर्चाः १,९५,१; १८६८
सुवाचसा [दैव्यौ होतासौ] १,१८८,७,
१९३७

सुवाचा [दैव्यौ होतासौ] १०,११०,७;
२००९
सुविद्वजः २,९,६, ४०८
सुवीरः १,३१,१०; ५९ । ३,२९,९;
५६६ । ७,१,४; ११०३ । ७,१५,७;
११८३ । ८,१९,७, १२३० । अथ०
१२,२,४९; २२६२
सुवृत्तिः २,४,१; ४१६ । ६,१०,१;
९९३
सुवेदः ४,७,६; ६९८
सुशंसः गृणते १,४४,६, ९१
सुशमी ७,१६,२; ११९३
सुशर्मा ३,१५,१; ५८८ । ५,८,२;
८२२
सुशिप्र ५,२२,४, ९०२
सुशिल्पे [उपासानके] ९,५,६;
१९८६ । १०,७०,६, १९९७
सुशिक्षिः पन्वा १,६५,४; १२७
सुशेवः १,२७,२; ३९ । २,१,९;
३७७ । ३,२२,५; ५६२ । ५,१५,१;
८६६ । ७,७,३, ११४४ । १०,४५,
१२; १६००
सुशोकः १,७०,१, १७४
सुश्वन्द्रः १,७४,६, २२० । ४,२,१९;
६६५ । ५,६,५,९; ८०५,८०९ ।
सुश्रीः ३,३,५; १७४६
सुषखः १०,९१,१, १६५१
सुषुमान् १०,३,१; १४९९
सुष्ठुतः ५,१३,५, ८५८ । ५,२७,२;
९२९ । ८,७४ ८; १४४९
सुष्वयन्ती [उपासानके] १०,११०,
६; २०१३
सुसंसद् ७ ९,३; ११५७
सुसनिता ३,१८,५; ६०९
सुसदृश १,१४३,३, ३२० । ७,३,६;
११२९ । ७,१०,३; ११६१
सुसमिद्धः १,१३,१; १९०६ । ५,५,
१; १९६४ । वा० य० २१,१२;
२०३७ । २८,२४; २०९५

सुहव. ३, १५, १, ५८८। ७, १, २१; ११२०। ४, १, ५; २४५२
 सुहवः जनेभ्यः १, ५८, ६, ११५
 सुहव्यः १, ७४, ५, २१९
 सुहोता ८, १०३, १२, १२६८
 सुनुः ६, ४, ४, ९७४। वा० य० २७, ११, २०६०
 सुनृतावान् १, ५९, ७, १७२३। अथ० ३, २१, ५, २३५९
 सुः-सूरः (षष्ठी) १०, ८, ३; १५३६
 सूरः [सूर्यः] ८, ५६, ५, २४५५
 सूरिः २, ६, ४, ४३६
 सूर्यः ३, १४, ४, ५८४। अथ० १२, २, १८; २२४४। ४, ३६, ५, २२९९
 सूर्यः [देवता] ४, ५८, (१-११); १८९५-१९०५। १०, ८८, (१-१९); २३९७-२४१५। ८, १८, ९, २४५७। अथ० २, २९, १, २१४९। १९, ६५, १; २३४९। १८, ५६, ५; २४५५। १, १६४, ४४; २४५६
 सूर्यः आदितेयः १० ८८, ११, २४०७
 सूर्यः जायते प्रातः उद्यन् १०, ८८, ६; २४०२
 सूर्यः देवः ४, १३, १; ७४०
 सुप्रदातुः १, ९६, ३; १८८१
 सोमः वा० य० २८, २६; २०९७ [देवता] ७, ४१, १; २४३७। [देवता] अथ० २, ३६, ३; २३४०
 सोमः अथ० ५, २९, १०; २३१४
 सोमगोपाः १०, ४५, ५, १२, १५९३, १६००
 सोमपा अथ० १, ८, ३; २२९१
 सोमपृष्ठः ८, ४३, ११; १३२०। १०, ९१, १४; १६६४। अथ० ३, २१, ६, २३६०
 सौभागानि विश्वा त्वत् यन्ति ६, १३, १; १०१२
 रुक्मः आयोः १०, ५, ६; १५१८
 स्तनयन् एति १, १४०, ५, २९६

स्तभूयन् १०, ४६, ६; १६०६
 स्तभूयमान ३, ७, ४; ४९३
 स्तवमानः १, १४७, ५; ३४७
 स्तवान् ५, १०, ७, ८४१। ६, ८, ७, १७८६
 स्तिपाः १०, ६९, ४, १६२८
 स्तिपानां वृषभः ७, ५, २, १७९५
 स्तीर्ण बहिः वा० य० २१, १५ २०४०
 स्तुतः (ह्रुतः) ३, ५, ९; ४७८। ५, १०, ७, ८४१
 स्तुभवा १, ६६, ४; १३७
 स्थातां गर्भः १, ७०, ३, १७६
 स्पन्द्ः ६, १२, ५; १०१०
 स्पार्हः ४, १, १२, ६३८
 स्पृहयद्वर्णः २, १०, ५, ४१३
 स्वङ्गः १०, १, १; १४८५
 स्वञ्चः ६, १५, १०; १०३२। ७, १०, ३; ११६३
 स्वतवान् ४, २, ६; ६५२
 स्वधावान् १, १४४, ७, ३३२। १, १४७, २; ३४४। ३, २०, ३; ६१६। ४, १०, ६, ७२५। ४, १२, ३; ७३६। ५, ३, २, ५, ७८०, ७८२; ८, ४४, २०; १३६२। १०, ११८; १५४७। १०, १४२, ३, १६९२। ४, ५, २, १७५९। १, ९५, १, ४, १८६८; १८७१
 स्वध्वरः १, १२७, १, २७२। २, २, ८; ३९२। ३, ९, ८, ५०७। ५, ९, ३; ८३०। ६, १५, ४; १०२६। ६, १६, ४०; १०८१। ७, १६, १; ११९२। ८, १९, २४, १२४७। ८, १०३, १२; १२६८। ८, २३, ५; १२७४। १०, ११५, २, १६६७। ३, २६, ८, १७३४
 स्वनीकः २, १, ८; ३७६। ४, ६, ६, ६८७। ६, १५, १६, १०३८। ७, १, २३; ११२२। ७, ३, ६, ११२९
 स्वपसः [तिष्ठः देव्यः] १०, ११०, ८; २०१५
 स्वभिष्टिः ८, १९, ३२; १२५५
 स्वयक्षाः १, ९५, २, ५; १८६९, १८७२
 स्वराद् १, ३६, ७; ७४

स्वराज्यः २, ८, ५; ४०१
 स्वर्चिः २, ३, २; १९४३
 स्वर्णरः ६, १५, ४; १०२६। ८, १९, १; १२२४
 स्वर्हक् ५, २६, २, ९२१। ३, २, १४; १७४०
 स्वर्षतिः ८, ४४, १८; १३६०
 स्वर्वान् १, ५९, ४; १७२०
 स्वर्वित् ३, ३, ५, १०; १७४६, १७५१। ३, २६, १; १७५३। १, ९६, ४, १८८२। १०, ८८, १; २३९७। वा० य० २८, २; २०८५
 स्ववसः ५, ८, २; ८२२
 स्वश्वः ४, २, ४, ६५०
 स्वाद्य (द् म) न् १, ६९, ३; १६६
 स्वाधीः १, ६७, २, १४५। १, ७०, ४; १७७। ४, ३, ४, ६६९
 स्वासः (षष्ठी) ४, ६, ८, ६८९। १०, ३, ४; १५०२
 स्वाहाकृतयः [देवता] १, १३, १२; १९१७। १, १४२, १२; १९२९। १, १८८, ११. १९४१। २, ३, ११। १९५२। ३, ४, ११; १९६३। ५, ५, ११; १९७३। ७, २, ११; १९७३। ९, ५, ११; १९९१। १०, ७०, ११; २००२। १०, ११०, ११; २०१३। वा० य० २०, ४६, ६६; २०२४, २०३६। २१, २२, ४०; २०४७, २०५९। २७, २२; २०७१। २८, ११, ३४, २०९४, २१०५। २९, ११, ३६, २११६, २१२८। १०, ३, १३, २१४१। अथ० ५, १२, ११; २०१३। ५, २७, १२, २०८३
 हन्ता दस्योः अथ० १, ७, १; २२८४
 हन्ता भंगुरावताम् १०, ८७, २२, १८४९
 हरिः ७, १०, १, ११६१। १०, ७९, ६; १६४२। १, ९५, १, १८६८। ९, ५, ४, ९; १९८४, १९८९। अथ० १९, ६५, १; २३४९
 हरिकेशः ३, २, १३; १७३९
 हरितः [वनस्पतिः] ९, ५, १०; १९९०

हरितस्य देवः अथ० १, २५, २-३,
२२७६-७७
हरिवान् [हन्त्रः] वा०य० २०, ३८-३९,
२०१६-१७
हरिमत ३, ३, ५, १७४६
हर्यतः-त (सबो०) ८, ४४, ५; १३४७
हर्यमाणः ३, ६, ४; ४८३
हर्षत् १, १२७, ६; २७७ । १०, ४, ३;
१५०८
हविः सः १०, २०, ६; १५७६
हविः अस्मि नाम ३, २६, ७, १७५६
हविर्वाद् १ ७२, ७, २०१
हविष्कृत्-त-तम् (द्वि०) १, १३, ३;
१९०८
हव्यः जज्ञानः सद्यः बभूथ १०, ६, ७;
१५२६
हव्यदातिः ३, २, ८; १७३४
हव्यवाद् १, १२, २; ११ । १, १२, ६;
१५ । १, ६७, २, १४५ । १, १२८, ८;
२९० । ३, ५, १०; ४७९ । ३, १०, ९;
५१७ । ३, ११, २, ५१९ । ३, २९, ७;
५६४ । ३, १७, ४; ६०३ । ४, ८, १,
७०४ । ५, ४, २, ७९१ । ५, ६, ५;
८०५ । ५, २८, ५; ९३७ । ६, १५, ४, ८;
१०२६, १०३० । ७, १०, ३; ११६३ ।
७, १७, ६; १२०९ । ८, ४४, ३, १३४५ ।
८, १०२, १७-१८, १४७९-८० ।
१०, ४६, ४, १०, १६०४, १६१० ।
१०, १२४, १; १६८३ । ३, २६, २;
१७२८ । १०, ११८, ९, १८६१ ।
८, ५६, ५, २४५५ । अथ० ४, २३, ४;
२३३३ । ऋ० प्रैष ४, २३३२, २१४०;
हव्यवाद् यज्ञस्य ३, २७, ५; ५४१
हव्यवाहनः १, ३६, १०; ७७ । १, ४४,
२, ५; ८७, ९० । २, ४१, १९; ४१५ ।
३, ९, ६; ५०५ । ५, ८, ६; ८२६ ।
५, ११, ४; ८४५ । ५, २५, ४; ९१४ ।
५, २८, ६; ९३८ । ६, १६, २३;
१०६४ । ७, १५, ६; ११८२ । ८, १९;
६० ३५

२१, १२४४ । ८, २३, ६; १२७५ ।
१०, १५०, १; १६९८ । १०, ११८, ५,
१८५७
हव्या जुह्वानः १, ७५, १, २२४
हस्तासः अस्य सप्त ४, ५८, ३, १८२७
हिंस्रः १०, ८७, ३, ८, १८३०, १८३५
हितः १, १२८, ७, २८९ । ३, २८, ३,
५५४ । ५, १, ५; ७५९
हितः देवोभि मानुषे जने ६, १६, १,
१०४२
हिन्वान. प्र अञ्जोभिः धेनाभिः
ऋ० प्रैष १२, २१४०
हिरण्यकेशः १ ७९, १, २४४
हिरण्यदन्तः ५, २, ३, ७६९
हिरण्यपर्णं वा० य० २८, ३३, २१०४
हिरण्यपाणि. अथ० ३, २१, ८; २३६२
हिरण्ययः ४, ५८, ५, १८९९ । ९, ५,
१०, १९९०
हिरण्यरथः ४, १, ८, ६३४
हिरण्यरूपः २, ३५, १०; २४३१ ।
४, १, ३, साम० १, १, ७, ७,
हिरण्यवर्णः २, ३५, १०-११;
२४३१-३२
हिरण्यसदृश-क् ६, १६ ३८; १०७९ ।
२, ३५, १०; २४३१
हिरण्यहस्त. अथ० ७ ११५, २, २२०२
हिरिनिप्रः २, २, ५; ३८९
हिरिश्मश्रुः ५, ७, ७; १८१७ । १०,
४६, ५; १६०५
हूयमानः १०, १२२, ५; १६७९
हृदः जायमानः १, ६०, ३, १२१
हृदिस्थि-क् ४, १०, १, ७२०
हृषीवत् १, १२७, ६; २७७
होता १, १, १; १ । १, १, ५; ५ ।
१, १२, १, ३, १०, १२ । १, २६, २, ५,
७; २९, ३२, ३४, १, ३६, ३, ५, ७०, ७२ ।
१, ४४, ७, ११; ९२, ९६ । १, ४५, ७;
१०६ । १, ५८, १, ३, ६-७, ११०, ११२,
११५-१६ । १, ६०, २, ४; १२०, १२२ ।

१, ६७, २, १४५ । १, ६८, ७, १६० ।
१, ७०, ८; १८१ । १, ७६, २, ५; २३०,
२३३ । १, ७७, १-२, २३४-३५ । १,
७९, १२, २५५ । १, १२७, १, २७२ ।
१, १२८, १, २८३ । १, १२८, ८, २९० ।
१, १४१, ६, १२, ३१०, ३१६ ।
१, १४३, १; ३१८ । १, १४८, १; ३४८ ।
१, १४९, ४-५, ३५६-५७ । २, २, १,
५; ३८५, ३८९ । २, ९, १; ४०३ ।
२, ५, १; ४२५ । २, ६, ६, ४३८ ।
२ ७, ६; ४४६ । ३, १, २२; ४६८ ।
३, ५, ४; ४७३ । ३, ६, ३, १०; ४८२,
४८९ । ३, ७, ९; ४९८ । ३, ९, ९, ५०८ ।
३, १०, २, ५, ७, ५१०, ५१३, ५१५ ।
३, ११, १, ५१८ । ३, १३, ५; ५७८ ।
३, १४, १, ५८१ । ३, १९, ५; ६१४ ।
३, २१, १; ६१८ । ३, २९, ८; ५६५ ।
३, २९, १६; ५७३ । ३, २९, १, ६१० ।
४, १, ८, १९, ६३४, ६४५ । ४, २, १;
६४७ । ४, ६, १, ४, ५, ११; ६८२, ६८५-
८६, ९१ । ४, ७, १, ५, ६९३, ६९७ ।
४, ८, ४; ७०७ । ४, ९, ३; ७१४ ।
४, १५, १, ७४९ । ५, १, २, ५, ६, ७;
७५६, ७५९-६०-६१ । ५, २, ७, ७७३ ।
५, ४, ३, ७९२ । ५, ९, २; ८२९ ।
५, १०, ७; ८४१ । ५, ११, २; ८४३ ।
५, १३, ४; ८५७ । ५, १६, २, ८७२ ।
५, २०, ३, ८९३ । ५, २२, १; ८९९ ।
५, २३, ३; ९०५ । ५, २५, २; ९१२ ।
५, २६, ४; ९२३ । ६, १, १-२, ६;
९३९-४०, ९४४ । ६, २, १०; ९६१ ।
६, ४, १, ९७१ । ६, ६, १; ९८६ ।
६, १०, २; ९९४ । ६, ११, १-२, ६,
१०००-१, १००५; ६, १२, १; १००६ ।
६, १४, २, १०१९ । ६, १५, ४, ७, १३,
१०२६, १०२९, १०३५ । ६, १६, ९,
१०, २३, ४६; १०५०-५१, १०६४,
१०८७ । ७, ८, २; ११५० । ७, ९, १;
११५५ । ७, १०, ५; ११६५ । ७, १६, ५,
१२; ११९६, १२०३ । ८, ११, १०;
१२२३ । ८, १९, ३, २४, १२२६, १२४७ ।

८, १०३, ६; १२६२ । ८, २३, १७,
१२८६ । ८, ४३, १२; १३२१ ।
८, ४३, २०; १३२९ । ८, ४४, ६-७,
१०; १३४८-४९, १३५२ । ८, ७५,
१; १३७३ । ८, ६०, १, ३; १३८९,
१३९१ । ८, ६०, १४; १४०२ । ८, ७१,
११, १४१९ । १०, १, ५; १४८९ ।
१०, २, ३, ५, १४९४, १४९६ । १०, ६, ४;
१५२३ । १०, ११, ३-४; १५४२-४३ ।
१०, १२, १-२, १५४९-५० । १०,
२१, १; १५८१ । १०, ४६, १, ४, ८;
१६०१, १६०४, १६०८ । १०, ५३, २;
१६१७ । १०, ९१, ८-९, ११; १६५८-
५९, १६६१ । १०, १२२, १; १६७५, १०,
१७६, ३; १७०९ । १०, ५९, ४; १७२० ।
३, २६, १, ६, १७२७, १७३२, ३, २, १५;
१७४१ । ४, ४, ११; १८२३ । १, १३,
१, ४, ८; १९०६, १९०९, १९१३ । १,
१४२, ८, १९२५ । २, ३, १, १९४२ ।
३, ४, ३-४, १९५५-५६ । १०, ७०, ३;
१९९९ । १०, ११०, ३, ११; २०१०,
२०१८ । ४, ३, १, अथ० ६, ७१, १-२;

२३४६-४७ । ३, २१, ५, २३५९ ।
साम० १, १, ७, ७,
होता अध्वरस्य ६, १५, १४; १०३६
होता चर्षणीनाम् १, २७, २; २७३ ।
८, २३, ७; १२७६ । ८, ६०, १७; १४०५
होता देवानाम् वा० य० २९, २८,
२१२०
होता पूर्वः ५, ३, ५; ७८२
होता पूर्यः १, ९४, ६, २६१ । ८, ७५, १;
१३७३
होता प्रथमः ७, ११, १; ११६६ ।
६, ९, ४; १७९०
होता प्रथम देवजुष्टः १०, ८८, ४,
२४००
होता मनुर्हितः ६, १६, ९; १०५०
होता यज्ञानां विश्वेषाम् ६, १६, १;
१०४२
होता यशस्तमः विश्व ८, २३, १०;
१२७९
होता रोदस्योः ६, १६, ४६, १०८७
होता विश्व मानुषीषु १०, १, ४; १४४८,
१०, ७, ५; १५३१

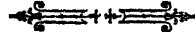
होता शश्वतीनाम् ८, ३९, ५; १३०४
होता सनात् ८, ११, १०, १२२३
होता हविष विश्वस्य १०, ९१, १;
१६५१
होतारौ दैव्यौ १, १३, ८, १९१३ ।
१, १४२, ८; १९२५ । १, १८८, ७;
१९३७ । २, ३, ७; १९४८
" (प्रचेतसौ) [देवता] ३, ४, ७;
१९५९ । ५, ५, ७; १९७० । ७, २, ७;
१९८० । ९, ५, ७, १९८७ । १०, ७०, ७;
१९९८ । १०, ११०, ७; २००९ ।
वा० य० २०, ४२, ६३, २०२०, २०३२ ।
२१, १८, ३६, २०४३, २०५५ । २७,
१८, २०६७ । २८, ७, ३०; २०९०,
२१०१ । २९, ७, ३२; २११२, २१२४ ।
ऋ० प्रैष ८, २१३६ । अथ० ५, १२,
७, २००९ । ५, २७, ९; २०८०
होत्रम् तव २, १, २, ३७१
होत्रवाह ५, २६, ७; ९२६
होत्राविद् ५, ८, ३; ८२३
हृष्टः अथ० १, २५, २-३; २२७६-७७ ।



दैवत-संहिता

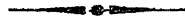
(२)

इन्द्रदेवता



संपादक

भट्टाचार्य श्रीपाद दामोदर सातवलेकर
स्वाध्याय-मण्डल, औरंग (जि० सातारा)



संवत् १९९८, शक १८६३, सन १९४२



मुद्रक और प्रकाशक- व० श्री० सातवलेकर, B. A.
स्वाध्याय-मण्डल, भारतमुद्रणालय, औंध, (जि० सातारा)

इन्द्रदेवता का परिचय ।

मेघस्थानीय विद्युत् ।

अब इन्द्रदेवता के स्वरूप का परिचय करनेका यत्न करना है। इन्द्रदेवता कौन है, कहां रहता है, क्या करता है, हमसे उनका संबंध क्या है, उसकी सहायता हमें किस तरह मिल सकती है ? इसका विचार करना है। इन्द्रदेवता 'मेघस्थानीय विद्युत्' है, ऐसा कई कहते हैं। इन्द्रका अर्थ Thunderbolt [मेघस्थानीय विद्युत्] है, ऐसा इनका कहना है। इन्द्रदेवताके अनंतविधस्वरूप में मेघस्थानीय विद्युत् यह एक रूप है, इसमें सन्देह नहीं है। पर युरोपीयन लोग सर्वथा मेघस्थानीय विद्युत् ही 'इन्द्र' है, ऐसा जब कहने लगते हैं, तब हम कहते हैं कि, वेदका संपूर्ण इन्द्रदेवता का वर्णन 'मेघस्थानीय विद्युत्' पर घट नहीं सकता। इसका विचार करना हो, तो 'इन्द्रिय' शब्दका प्रथम विचार कीजिये। ✓

इन्द्रिय = इन्द्रकी शक्ति ।

'इन्द्रिय' शब्द इन्द्र शब्दसे ही बनता है। 'इन्द्र + य' ये तीन विभाग इन्द्रपदमें हैं, इन्द्र [इ] की [य] शक्ति, यह इसका अर्थ है। इन्द्रिय 'इन्द्रकी शक्ति' है। भगवान् पाणिनी महामुनि 'इन्द्रिय' शब्दका निर्वचन ऐसा करते हैं—

इन्द्रियं इन्द्रलिङ्गं इन्द्रदृष्टं इन्द्रसृष्टं इन्द्रजुष्टं
इन्द्रदत्तं इति वा । [अष्टा० ५।२।९३]

इन्द्र आत्मा, तस्य लिङ्गं, करणेन कर्तुः अनु-
मानात् । इन्द्रेण दुर्जयमिन्द्रियम् । [भट्टोजी०]
इन्द्रेण दृष्टं ज्ञातं 'मम चक्षुः, मम श्रोत्रं'
इत्यादिक्रमेण सृष्टं, अदृष्टद्वारा जुष्टं, प्रीणितं
सेवितं वा । दत्तं यथायथं विषयेभ्यः ॥

[कौमुदी तत्त्वबोधिनी टीका]

'इन्द्र आत्माका नाम है। इस आत्माका ज्ञान इससे होता है, इन्द्रने यह अपना साधन है, ऐसा जाना है, इन्द्रने अपनी साधना के लिये इसको निर्माण किया, इन्द्रने इसका सेवन किया, इन्द्रने यह विषयोंके प्रति भेजा है, वह इन्द्रिय है।'

यहां भगवान् पाणिनी मुनि अपने व्याकरण में "इन्द्र की शक्ति" इस अर्थमें इन्द्रिय शब्द सिद्ध करते हैं। यह इन्द्रिय शब्द वेदमें है। अर्थात् इन्द्रकी शक्ति अर्थमें यह इन्द्रिय शब्द है और वह वेदमें है। केवल मेघस्थानीय विद्युत् ही अर्थ लेनेसे हम पाणिनी महामुनिके बताये अर्थकी सिद्धि नहीं हो सकती।

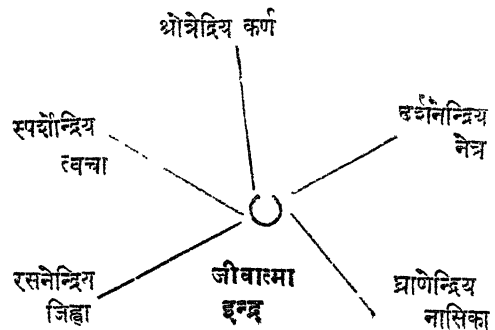
हम भी अपने आंख, नाक, कान आदि साधनोंको 'इन्द्रिय' ही कहते हैं। ये ज्ञानके साधन और कर्मके साधन इन्द्रिय ही हैं, अर्थात् ये इन्द्रके साधन हैं, ये इन्द्रकी शक्तियाँ हैं। अर्थात् इन्द्र इनके पीछे है, इन्द्रसे इनमें शक्ति आ रही है, इनसे इन्द्रका ज्ञान हो रहा है। यह विवरण देखनेसे मेघस्थानीय विद्युत् ही केवल इन्द्र नहीं है, यह बात सिद्ध हो जाती है। वेदमें कहा है—

आदित् ह नेम इन्द्रियं यजन्ते । [ऋ० ४।२।४।०]

"[नेमे] अन्य लोग [आत् इत्] उस समय [इन्द्रिय]—
इन्द्रियोंको बल देनेवाले इन्द्रका [यजन्ते] यजन करते हैं।'
इस मन्त्रमें 'इन्द्रिय' शब्दही इन्द्रका वाचक आया है, क्योंकि इन्द्रमें जो शक्ति है, वह इन्द्रकी है, इन्द्रही इन्द्रिय-
रूप बना है और मानवी देहोंमें कार्य कर रहा है।

देहधारी जीवके पास सब इन्द्रियाँ हैं, वह सबकी सब इन्द्रकी शक्तियाँ हैं, अर्थात् इन्द्रियोंके पीछे इन्द्र छिपकर रहा है, अपनी शक्तिको इन्द्रियोंद्वारा प्रकट कर रहा है। इस तरह स्पष्ट हो जाता है कि, जीवात्मा इन्द्र है और इन्द्रियाँ उसकी शक्तियाँ हैं।

इन्द्रके इन्द्रिय



इन्द्रके ये इन्द्रिय हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है, कि यह इन्द्र-विःसन्देह आत्मा है, जो अन्दर रहता है और अपनी शक्तियोंको बाहर इन्द्रियस्थानोंमें भेजकर विविध कार्य करता है।

हमारे इन्द्रियभी बाह्य देवताओंपर अवलम्बित हैं। जैसा नेत्र सूर्यपर, जिह्वा जलपर, नासिका पृथ्वीपर, त्वचा वायुपर और कर्ण आकाशपर अवलम्बित है। बाह्य देवताओंसेही ये इन्द्रियगोलक बने हैं। इसका वर्णन ऐतरेय उपनिषदमें इस तरह किया है—

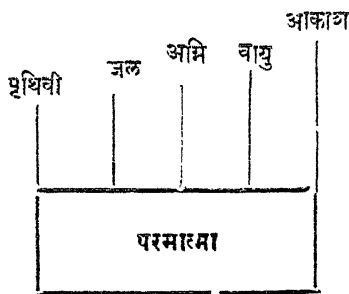
आदित्यश्चभूर्भूत्वाऽक्षिणीं प्राविशत् ।

दिशः श्रोत्रं भूत्वा कर्णौ प्राविशत् ।

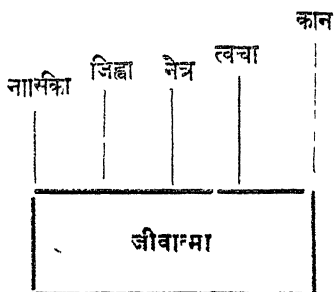
वायुः प्राणो भूत्वा नासिके प्राविशत् ॥ [ऐतरेय]

‘सूर्य आख बन कर नेत्रस्थानमें प्रविष्ट हुआ, दिश (आकाश) कान बन कर श्रवणोन्द्रियके स्थानमें प्रविष्ट हुई, वायु प्राण बन कर नासिकाके स्थानमें प्रविष्ट हुआ।’ इसी तरह अन्यान्य देवतापुं अन्यान्य इन्द्रियस्थानोंमें प्रविष्ट हुई हैं।

विश्वसृष्टि



व्यक्तिसृष्टि



इससे स्पष्ट हो जाता है, जो देवता इस विशाल जगत् में परमात्मदेहमें हैं, वे ही सूक्ष्म अंशरूपसे इस जीवके देहमें इंद्रियों रूपमें प्रकट हुई हैं। इस तरह विचार

करनेपर यह बात प्रकट होगी कि, जैसा इंद्रियोंके पीछे जीवात्माके रूपमें ‘इंद्र’ है, उसी तरह विश्वव्यापक शक्तियों के पीछे परमात्मारूप में भी इन्द्रही है। अर्थात् एकही इन्द्रके जीवात्मा और परमात्मा ये रूप क्रमशः शरीरमें और विश्वमें हैं। यहाँतक हमने इन्द्र का स्वरूप सामान्यतः मेघस्थानीय विद्युत् से पृथक् है, यह देख लिया। अब इसका विचार अधिक करनेके लिये सबसे प्रथम हम निरुक्त-कार श्री यास्क्याचार्यजीका निर्वचन देखते हैं—

निरुक्तकी व्युत्पत्ति ।

इन्द्र इरां दृणातीति वा, इरां ददातीति वा, इरां दधातीति वा, इरां दारयति इति वा, इरां धारयति इति वा, इन्द्रवे द्रवतीति वा, इन्द्रौ रमत इति वा, इन्धे भूतानीति वा, ‘तद्यदेन प्राणैः समैन्धन्स्तदिन्द्रस्येन्द्रत्वं’ इति विज्ञायते, इदं करणादित्याग्रयणः, इदं दर्शनादित्यौपमन्यवः, इन्द्रतेवैश्वर्यकर्मणः, इन्द्रच्छत्राणां दारयिता वा द्रावयिता वा, आदरयिता च यज्वनाम् ।

(निरुक्त० १०।१।९)

इसमें निम्नलिखित प्रकार की निरुक्तियां दीं हैं। क्रमशः ये अब देखिये—

- (१) इरां दृणाति= जो भस्मको, जलको, बीजको फोड़ता है,
- (२) इरां ददाति= जो भस्म वा जलको देता है,
- (३) इरां दधाति= जो भस्म वा जलका धारण करता है,
- (४) इरां दारयति= जो भस्म वा जलका विदारण करता है,
- (५) इरां धारयति= जो भस्म वा जलका धारण करता है,
- (६) इन्द्रवे द्रवति= जो इन्दु-चन्द्रमा के लिये द्रवरूप होता है, रस निष्पन्न करता है,
- (७) इन्द्रौ रमते= जो जल या रसमें रमता है,
- (८) इन्धे भूतानी= जो भूतोंको प्रकाशित करता है, उजाला करता है, तेजस्वी करता है,
- (९) प्राणैः समैन्धन्= प्राणोंसे जिसका दीपन होता है, प्राणोंसे जो प्रकाशित होता है,
- (१०) इदं करोति= इस जगत् को जो निर्माण करता है,
- (११) इदं पश्यति= इस विश्व को जो देखता है,
- (१२) इन्द्रतीति इन्द्रः= परम ऐश्वर्यसे जो संपन्न होता है,

(१३) इन्द्र शत्रूणां दारयिता = शत्रुओं को विदारण करनेवाला,

(१४) इन्द्र शत्रूणां द्राघययिता = शत्रुओंको जो भगा देता है,

(१५) यज्वनां आदरयिता = याजकोंका आदर करनेवाला, ये निर्वचन श्री यास्काचार्य के दिये हैं । इस प्रत्येक निर्वचन की सत्यता की परीक्षा करना हो, तो इन अर्थोंके दर्शक मन्त्र वेदोंमें ढूँढने चाहिये । जिस अर्थके वेदमन्त्र मिलेंगे, वह अर्थ वेदप्रमाणयुक्त है, अतः आदरणीय है, और जो वेदमें नहीं दीखेगा, वह लेनेयोग्य नहीं, ऐसा समझना योग्य है । अन्तिम तीनों अर्थ वेदके प्रमाणोंसे परिपुष्ट हैं, इसके प्रमाण हम आगे देंगे । क्रमांक ९-१२ तकके अर्थ अध्यात्म में पाठक देख सकते हैं, इस विषयमें पाणिनी मुनि का सूत्र पूर्वस्थलमें दिया है और उसका विवरण किया है और इसी तरह की ऐतरेयोपनिषद् की व्युत्पत्ति आगे हम देंगे । अध्यात्मपक्ष के मन्त्र भी पर्याप्त मिलेंगे । अन्य व्युत्पत्तियोंके लिये वेदमें मन्त्र देखने चाहिये । यह एक बड़ा खोज करनेका विषय है । इसका निर्देश यहां इसलिये किया है कि, इससे पाठकोंके मनमें इस बातका प्रकाश हो जाय कि, निरुक्तकार आदिकोंके अर्थ उस समय ही लेने चाहिये, जिस समय उस अर्थ को दर्शानेवाले मंत्र मिल जायँ । अस्तु ! हम अब ब्राह्मणों और उपनिषदों में दिये हुए 'इन्द्र' पद के निर्वचन देखते हैं । सबसे प्रथम ऐतरेय उपनिषदमें एक उत्तम निर्वचन दिया है, वह देखिये—

उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ ।

तस्मादिन्द्रो नाम इन्द्रो ह वै नाम तमिन्द्रं संतं इन्द्र इत्याचक्षते परोक्षेण परोक्षप्रिया इव हि देवाः ॥ [ऐ० उ० ४।३।१४]

'इसका नाम 'इंद्र-द्र' था । इस 'इंद्र-द्र' को ही 'इंद्र' परोक्षक्षत्तिसे कहने लगे । 'इंद्र-द्र' का अर्थ है, (इंद्र) इस शरीरमें (द्र) सुराख करनेवाला । इस शरीरमें सुराख करके वहां इंद्रियों को निर्माण करनेवाला । इस आत्माने इस शरीरमें अनेक सुराख किये और उनसे अपने विविध कार्य करने लगा । इन सुराखोंका नाम ही इंद्रियाँ हैं । इस विषय में पहिले दी हुई 'इंद्रिय' शब्दकी व्युत्पत्ति देखिये । इस सम्बन्धमें 'हरां हणाति' यह यास्कीय निरुक्ति देखने

योग्य है । इस तरह ऐतरेय उपनिषद् की यह व्युत्पत्ति इन्द्रका स्वरूप 'आत्मा' निश्चित करती है । अब और देखिये—

एष ब्रह्मा, एष इन्द्रः एष प्रजापतिः, एते सर्वे देवाः । [ऐ० उ० ५।३]

'यही ब्रह्मा है, यही इन्द्र है, यही प्रजापति है, यही सब देव हैं ।' अर्थात् इन्द्र नामसे अथवा 'इंद्र-द्र' नामसे यहां वर्णन किया है, वही सब देवतारूप है अथवा उसीके रूप सब देवता हैं ।

ततः प्राणोऽजायत, स इन्द्रः स एषोऽसपत्नोऽद्वितीयः । [बृ० उ० १।५।१२]

'उससे प्राण हुआ, वही इन्द्र है और वही शत्रुरहित एक तथा अद्वितीय है ।' यहां प्राणकोही इन्द्र कहा है । तथा— एतं इन्धं सन्तं इन्द्र इत्याचक्षते । [बृ० उ० ४।१।२] 'इस इन्ध अर्थात् प्रदीप्त करनेवालेकोही इन्द्र कहते हैं ।' निरुक्तकारने यह व्युत्पत्ति दी है । 'इन्धे भूतानि' [निरु०] जो भूतोंको प्रकाशित करता है । निम्नलिखित वर्णनमें इन्द्रको परमात्मासे छोटा बताया है—

भीमास्मादग्निश्चेन्द्रश्च । [तै० उ० २।८।१]

इस परमात्माके भयसे अग्नि और इन्द्र डरते हुए भीमे प्रकाशते हैं । तथा—

शतं देवानां आनन्दाः स एक इन्द्रस्यानन्दः ।

शतं इन्द्रस्यानन्दाः स एको बृहस्पतेरानन्दः ॥

[तै० उ० २।८।१]

'देवोंके सौ आनन्दोंके बराबर इन्द्रका एक आनन्द है । इन्द्रके सौ आनन्दोंके बराबर बृहस्पतिकी एक आनन्द है ।'

एष खलु आत्मा इन्द्रः । [मै० उ० ६।८]

असौ वा आदित्य इन्द्रः [मै० उ० ६।३३]

चाक्षुष इन्द्रोऽयम् । [मै० उ० ७।११]

इन्द्रस्त्वं प्राण तेजसा रुद्रोऽसि परिरक्षिता ।

त्वमन्तरिक्षे चरसि सूर्यस्त्वं ज्योतिषां पतिः ॥

[प्रश्न० २।९]

स ब्रह्मा, स शिवः, स हरिः, सेन्द्रः, सोऽक्षरः,

परमः स्वराट् । [नृ० पू० ता० उ० १।४]

'यह आत्मा निःसंदेह इन्द्र है । यह सूर्य इन्द्र है । चक्षु में तो तेज है, वह इन्द्र है । प्राण ही इन्द्र है, वही तेजसे रक्षण करता है, अन्तरिक्षमें यही संचार करता है,

सूर्यभी यही है । वही ब्रह्मा, शिव, हरि, इन्द्र, अक्षर और परम स्वराट् है ।' अर्थात् प्राण ही इन्द्र है और वही सब देवताओंका रूप धारण करता है ।

मस्तकमें इन्द्रशक्ति ।

अपने शरीर मस्तकमें एक स्तन जैसा अवयव है, इसका वर्णन तै० उपनिषद् में निम्नलिखित प्रकार आया है—

अन्तरेण तालुके य एष स्तन इव अवलंबने सा इन्द्रयोनिः । [तै० उ० १।६।१]

‘तालुके अन्दर [मस्तकके बीचमें] एक स्तन जैसा अवयव है, वह इन्द्रशक्तिको उत्पन्न करनेवाला है ।’ अपने शरीर में इन्द्रशक्ति का संचार यहांसे होता है । इस को ‘पीनियल ग्लण्ड’ [इन्द्रग्रंथी] कहते हैं । योगसाधन करते हुए इस पर ध्यान करनेसे यह ग्रन्थी उत्तेजित होती है, जिससे अनेक लाभ होते हैं । इस विषयमें ‘इन्द्र-शक्तिका विकास’ नामक पुस्तक अवश्य देखिये ।

इन्द्रके विषयमें ब्राह्मणग्रंथोंमें निम्नलिखित वचन मिलते हैं । वे अब देखिये—

ब्राह्मणग्रंथोंमें इन्द्रका अर्थ ।

- (१) इंधो वै नाम एष योऽयं दक्षिणेऽक्षन् पुरुषः
तं वा एतं इंधं संतं इन्द्र इत्याचक्षते । [श० ब्रा० १।४।१।१२]
- (२) अस्मिन् वा इदमिन्द्रियं प्रत्यस्थादिति तदिन्द्रस्य
इन्द्रत्वम् । [तै० ब्रा० २।२।१।०।४]
- (३) इन्द्रस्य इन्द्रियेणाभिपिञ्चामि । [ऐ० ब्रा० ८।७]
- (४) इन्द्र [एवैनं] इन्द्रियेण [अवति] [तै० ब्रा० १।७।६।१६]
- (५) दधातु इन्द्र इन्द्रियम् । [तां० ब्रा० १।३।५]
- (६) मयि इन्द्र इन्द्रियं दधातु । [श० ब्रा० १।८।१।१४२]
- (७) इन्द्र इति ह्येतं आचक्षते य एषः [सूर्यः] तपति ।
[श० ब्रा० ४।६।७।११]
- (८) एष वै शुक्रो य एष तपति एष उ एवेन्द्रः ।
[श० ब्रा० ४।५।५।७; ४।५।९।४]
- (९) स यः स इन्द्र एष एव स य एष तपति ।
[जै० ब्रा० उ० १।२।८।२; १।३।५]
- (१०) यः स इन्द्रोऽसौ स आदित्यः । [श० ब्रा० ८।५।३।२]

- (११) अथ यत्रैतत्प्रदीप्तो भवति । उच्चैर्धूमः परमया
जूत्या बल्वलीति तर्हि हैय [अग्निः] भवतीन्द्रः ।
[श० ब्रा० २।३।२।११]
- (१२) इन्द्रो वाग् इत्यु वाऽआहुः [श० ब्रा० १।४।५।४]
- (१३) तस्मादाहुर्निन्द्रो वागिति [श० ब्रा० १।१।६।१८]
- (१४) अथ य इन्द्रः सा वाक् । [जै० ब्रा० उ० १।३।३।२]
- (१५) वाग्वा इन्द्रः । [कौ० ब्रा० २।७; १।३।५]
- (१६) वागिन्द्रः । [श० ब्रा० ८।७।२।६]
- (१७) यो वै वायुः स इन्द्रो य इन्द्रः स वायुः
[श० ब्रा० ४।१।३।१९]
- (१८) योऽयं चक्षुषि पुरुष एष इन्द्रः ।
[जै० ब्रा० उ० १।४।३।१०]
- (१९) ततः प्राणोऽजायत स इन्द्रः ।
[श० ब्रा० १।४।३।१९]
- (२०) प्राण एवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।२।९।१।१४]
- प्राण इन्द्रः । [श० ब्रा० ६।१।२।२८]
- (२१) हृदयमेवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।२।९।१।१५]
- (२२) यन्मनः स इन्द्रः । [गो० ब्रा० उ० ४।१।१]
- (२३) मन एवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।२।९।१।१३]
- (२४) इन्द्रो वै यजमानः । [श० ब्रा० २।१।२।११;
३।३।३।१०; ४।५।४।८; ५।१।३।४; ८।५।३।८]
- (२५) द्रयेन वा एष इन्द्रो भवति यश्च क्षत्रियो यदु
च यजमानः । [श० ब्रा० ५।३।५।२७]
- (२६) ऐन्द्रो वै राजन्यः । [तै० ब्रा० ३।८।२।३।२]
- (२७) इन्द्रः क्षत्रम् । [श० ब्रा० १।०।४।१।५; कौ० ब्रा० १।२।८;
श० ब्रा० २।५।२।२७; २।५।४।८; ३।९।१।१६; ४।३।३।६]
- (२८) यदशनिर्इन्द्रः । [कौ० ब्रा० ६।९]
- (२९) स्तनयित्तुरेवेन्द्रः । [श० ब्रा० १।१।६।३।९]
- (३०) इन्द्रो ब्रह्मेति । [कौ० ब्रा० ६।१।४]
- (३१) प्रजापतिर्वा स इन्द्रः । [श० ब्रा० २।३।१।७]
- (३२) देवलोको वा इन्द्रः । [कौ० ब्रा० १।६।८]
- (३३) इन्द्रो बलं बलपतिः । [श० ब्रा० १।१।४।३।१२;
तै० ब्रा० २।५।७।४]
- (३४) वीर्यं वा इन्द्रः [तां० ब्रा० ९।७।५, ८।गौ० ब्रा० उ० ६।७]
- (३५) इन्द्रियं वीर्यं इन्द्रः [श० ब्रा० २।५।४।८; ३।९।१।१५;
५।४।३।१८]

- (३६) शिस्नमिन्द्रः । [श० ब्रा० १२।९।११६]
 (३७) रेत इन्द्रः । [श० ब्रा० १२।९।११७]
 (३८) अर्जुनो ह वै नाम इन्द्रः । [श० ब्रा० २।१२।११:
 ५।४।३।७]
 (३९) इन्द्रो ह्याहवनीयः । [श० ब्रा० २।६।१।३८; २।३।२।२]
 (४०) इन्द्र एष यदुद्राता । [जै० ब्रा० ७।१२।२]
 (४१) इन्द्रः खलु वै श्रेष्ठो देवतानाम् ।
 [तै० ब्रा० २।३।१।३]
 (४२) इन्द्रः सर्वा देवता, इन्द्रश्रेष्ठो देवाः ।
 [श० ब्रा० ३।४।२।२; १।६।३।२२]
 (४३) ततो वा इन्द्रो देवानामधिपतिरभवत् ।
 [तै० ब्रा० २।२।१।०।३]
 (४४) इन्द्रो वै देवानामोजिष्ठो बलिष्ठः सहिष्ठः
 सत्तमः, पारयिष्णुतम । [ऐ० ब्रा० ७।१६।८।१०]
 (४५) इन्द्रो वै देवानां ओजिष्ठो बलिष्ठः ।
 [कौ० ब्रा० ६।१४; गो० ब्रा० ७।१।३]
 (४६) इन्द्र ओजसां पते । [तै० ब्रा० ३।१।१।४।२]
 (४७) इन्द्राय अहोमुचे । [तै० ब्रा० १।१।३।७]
 (४८) इन्द्राय सुत्राम्णे । [तै० ब्रा० १।१।३।७]
 (४९) ओकः काशी हैवैषामिन्द्रो भवति ।
 [गो० ब्रा० ६।४; ५।१५; ऐ० ब्रा० ६।१७; २०]
 (५०) इन्द्रो यज्ञस्यात्मा, इन्द्रो देवता ।
 [श० ब्रा० ९।५।१।३३]
 (५१) ऋक्सामे वा इन्द्रस्य हरी । [ऐ० ब्रा० २।२४;
 तै० ब्रा० १।६।३।५]
 (५२) इन्द्रस्य हरी बृहद्रथन्तरे । [तां० ब्रा० ९।४।८]
 (५३) सेना इन्द्रस्य पत्नी । [गो० ब्रा० २।९]
 (५४) ऐन्द्राः पशवः । [ऐ० ब्रा० ६।२५]
 (५५) एतद्वा इन्द्रस्य रूपं यद्वपभः । [श० ब्रा० २।५।३।१८]
 (५६) इन्द्रो वा अश्वः । [कौ० ब्रा० १।५।४]
 (५७) ऐन्द्रो वै माध्यन्दिनः । [गो० ब्रा० ७।१२३, ६।९।
 कौ० ब्रा० ५।५; २२।७; ऐ० ब्रा० ६।३०]
 (५८) इन्द्रो ज्योतिर्ज्योतिरिन्द्र इति । [कौ० ब्रा० १।४।१]
 (५९) यत् शुक्रं तदैन्द्रम् । [श० ब्रा० १२।९।१।१२]

इतने ब्राह्मणग्रन्थोंके वचनों में 'इन्द्र' के जो अर्थ दिये हैं, वे ये हैं—[१] दक्षिण नेत्रमें जो पुरुष है, वह इन्द्र है, [२] इन्द्रियकी शक्तिसे इन्द्र का बोध होता है, [३] इन्द्र

इन्द्रियसे रक्षा करता है, [४] सूर्य ही इन्द्र है, [५] अग्नि जो बलसे जलता है, जिसका धूम ऊपर जाता है वह इन्द्र है, [६] वाणी ही इन्द्र है, [७] वायुही इन्द्र है, प्राण इन्द्र है, [८] हृदय, मन ये इन्द्र है, [९] यजमान इन्द्र है, [१०] क्षत्रिय, राजन्य इन्द्र है, [११] क्षात्र तेज इन्द्र है, [१२] मेघस्थानीय विद्युत् इन्द्र है, [१३] ब्रह्मा इन्द्र है, [१४] प्रजापति, देवलोक, ये इन्द्र हैं, [१५] बल और बलवान् दोनों इन्द्र हैं, [१६] वीर्य इन्द्र है, [१७] शिस्न और रेत इन्द्रिय है, [१८] अर्जुन इन्द्र है (इन्द्र पुत्र होनेसे), [१९] आहवनीय अग्नि इन्द्र है, [२०] उद्राता इन्द्र है, [२१] देवोंमें श्रेष्ठ देव इन्द्र है, सब देवताही इन्द्र है, देवोंका राजा इन्द्र है । [२२] जो देवोंमें बलिष्ठ, ओजिष्ठ, सहिष्ठ और संकटोंसे पार ले जानेवाला है, वह इन्द्र है, [२३] पापसे छुड़ानेवाला, रक्षा करनेवाला इन्द्र है, [२४] घर बनानेवाला इन्द्र है, [२५] यज्ञ का आत्मा, यज्ञ का देवता इन्द्र है, [२६] बैल इन्द्र का रूप है, अश्व इन्द्र है, [२७] ज्योति इन्द्र है, जो श्वेत तेज है, वह इन्द्र है, [२८] ऋचा व साम, बृहत् और रथन्तर ये इन्द्रके घोड़े हैं । [२९] सेना इन्द्रकी पत्नी है ।

इन इन्द्रके अर्थों या स्वरूपों को देखनेसे केवल मेघ-स्थानीय विद्युत् ही इन्द्र है, ऐसा कहना योग्य नहीं हो सकता ।

शरीरमें इन्द्र= आँखकी पुतली, इन्द्रिय, हृदय, मन, प्राण, आत्मा, वाणी, बल, ओज, सह, गौरवर्ण, शिस्न, रेत ये शरीरमें इन्द्रके रूप हैं ।

मानवोंमें इन्द्र= यजमान, ब्रह्मा, उद्राता, राजा, क्षत्रिय, वीर, बलिष्ठ, ओजिष्ठ, दृढिष्ठ, दुःखोंके पार ले जानेवाला, वक्ता, घर बनानेवाला इन्द्र है ।

देवोंमें इन्द्र= सब देवता, देवोंका राजा, सूर्य, आदित्य, अग्नि, तेज, विद्युत्, मेघस्थानीय बिजुली इन्द्र है ।

पशुओंमें इन्द्र= बैल और अश्व ये पशुओंमें इन्द्र हैं । इस तरह इन्द्रके रूप विविध स्थानोंमें हैं । इन्द्रा मायाभिः पुरुरूप ईयते' [ऋ० ६।४७।१८] इन्द्र अपनी शक्तियोंसे नाना रूप धारण करता है, यह इस तरह उनके नाना रूप हैं । सब विश्वही उसका रूप है और विश्वान्तर्गत हर एक रूप इन्द्रकाही रूप है ।

इस तरह इन्द्र की महिमा देखनेयोग्य है । अब वेदमें जो नाम इन्द्रके लिये आये हैं, उनका विचार करते हैं—

वेदमें इन्द्रके विशेषण ।

परमेश्वर का ही नाम 'इन्द्र' है, ऐसा स्पष्ट दर्शानेवाले कई पद वेदके मंत्रोंमें हैं देखिये—[अनुजः] किसी स्थानपर न्यून्य नहीं, सब स्थानोंमें एक जैसा भरा है, सर्व व्यापक [दिवि-क्षाः शुश्रूः] शुलोकमें, आकाशमें रहनेवाला [स्वर्पति] शुलोक अथवा आकाशका स्वामी, [विश्वतस्पृथुः] विश्वके चारों ओर भरपूर विश्वसे भी अधिक व्यापक, [अन्तरिक्षप्राः] अन्तरिक्षमें, बीचके अवकाशमें परिपूर्ण होकर रहनेवाला, [विभुः] व्यापक, विश्वव्यापक, [विश्वभूः] विश्वमें भरपूर, विश्वभरमें रहनेवाला, [दिविस्पृशः] आकाशमें व्यापक ये शब्द इन्द्रदेव विश्वभरमें परिपूर्ण-तया व्यापक हैं, यह भाव बताते हैं कि सर्वव्यापक परमेश्वर ही इन्द्र है, यह बात इन शब्दोंसे सिद्ध होती है ।

[विश्वकर्मा] सब विश्वकी रचना करनेवाला, विश्वरूप कर्म करनेवाला [लोककृत्] सब सूर्यादि लोकोंका निर्माण करनेवाला [विश्वमनाः] विश्व जितना जिसका व्यापक मन है, [विश्ववेदाः] विश्वको यथावत् जाननेवाला ये पदभी इन्द्र परमात्माही हैं, ऐसा बताते हैं । ये पद वेदमंत्रों में इन्द्रके गुण बताते हैं । विश्वकी रचना करनेवाला और विश्वको जाननेवाला इन्द्र निःसन्देह परमेश्वर है ।

[विश्वरूपः] विश्व ही जिसका रूप है, विश्वमें जो जो वस्तु है, वह सब इन्द्रकाही रूप है । इन्द्रही नाना रूप धारण कर विश्वमें रहता है । भगवद्गीता का ११वाँ अध्याय इसी 'विश्वरूपदर्शन' नामका है । वही भाव दर्शानेवाला इन्द्रवाचक यह शब्द वेदमंत्रमें है । [विश्व-देवः] सब देव जिसके अंश है । विश्वरूपी परमेश्वरकाही यह वर्णन है । सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, आदि सब देवताएं जिसके शरीरके अंग-प्रत्यंग हैं । परमात्मा ही इन्द्र है, यह आशय इन्द्रवाचक इन शब्दोंसे व्यक्त होता है ।

(ईशानकृत्) स्वामियोंको बनानेवाला अर्थात् राजाओंका भी जो राजा है, प्रभुका भी प्रभु, [बृहत्पतिः] इस बड़े विश्व का एकमात्र पालन करनेवाला, [वास्तोष्पतिः] सब वस्तुओंका पालक, [ज्येष्ठ राजः] सब राजाओंमें जो सबसे श्रेष्ठ राजा है, [ज्येष्ठतमः] श्रेष्ठोंमें जो श्रेष्ठ है, [देवतमः] सब देवोंमें जो श्रेष्ठ देव है, [द्युमत्तमः] प्रकाशवानोंमें जो सबसे अधिक प्रकाशमान है, [पितृतमः]

पिताओंका भी जो पिता है, [शिवतमः, शंतमः, शंभूः] कल्याण करनेवालोंमें जो सबसे अधिक कल्याण करनेवाला है, [असमः] जिसके समान कोई नहीं है, ये सब इन्द्र-वाचक पद परमेश्वरका ही बोध कराते हैं ।

[स्वरोचिः] उसका अपना निज तेज है, किसी दूसरेके तेजसे वह तेजस्वी नहीं बना, अपने तेजसेही वह सदा प्रकाशता रहता है, [बृहद्भानुः] उसका तेज बड़ा भारी है, उससे बड़ा किसीका भी तेज नहीं है, [चित्रभानुः] उसका तेज चित्रविचित्र है । वह स्वयं ज्योति है । ये शब्द परमेश्वरका स्वयं तेजस्वी होना बताते हैं । इन्द्रके लिये ये शब्द प्रयुक्त हुए हैं । अपने तेजसे सब विश्वको सुंदर रूप देता है, यह भाव [सुरूपकृत्] पदसे व्यक्त होता है ।

यह [अमर्त्यः] अमर है, [अजरः] अजर है । [अजुरः, अजुर्यः, अजुर्यत्] क्षीण होनेवाला नहीं है, सबका [पूर्वजाः] पूर्वज है, सबका आदि है, सब धर्मोंका निर्माणकर्ता [धर्मकृत्] है, [विधर्ता] सबका आधार है, ये पद इन्द्रके लिये प्रयुक्त हुए हैं और ये स्पष्टताके साथ ईश्वरके वाचक प्रतीत होते हैं । [अनपच्युत्] इसको स्वस्थानसे कोई हिला नहीं सकता, यह अपने स्थानमें सदा रहता है ।

[विश्वचर्षणि] सर्व मनुष्यसमाजही परमेश्वरका रूप है, जनता-जनार्दन ही उसको कहते हैं, [पाञ्चजन्यः] पञ्च जन अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद ये पांच प्रकारके लोग उसका स्वरूप है, [विश्वानरः] सब मानवजातिही ईश्वरका स्वरूप है । ब्राह्मण इस ईश्वरकी सिर है, क्षत्रिय इसके बाहु है, वैश्य इसका उदर है और शूद्र इसके पांव हैं । [ऋ० १०।९०।१२] इस वेदोक्त वर्णन के अनुसार ये पद निःसन्देह परमात्मवाचक हैं ।

ये पद किस मन्त्रमें प्रयुक्त हुए हैं, यह पाठक इन सूचियों में देख सकते हैं और इनके मन्त्रभी देख सकते हैं । पर ये सब शब्द इन्द्रवाचक हैं और ये सब शब्द परमात्माके ही वाचक हैं । अर्थात् 'इन्द्र' परमात्माही है । इस वर्णन से यह स्पष्ट हो जाता है कि, जो इन्द्र को केवल मेव-स्थानीय विद्युत् ही मानते हैं, वे इन्द्रके इस परमेश्वरीय भाव को नहीं जान सकते ।

एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति ।

अग्निं यमं मातरिश्वानं आहुः ॥ [ऋ० १।१६४।४६]

“एकही सत् है, जिसका वर्णन विद्वाक् लोक अनेक प्रकार से करते हैं, उसको अग्नि, यम, मातरिश्वा, वायु, इन्द्र, मित्र, वरुण आदि कहते हैं ।” इस तरह उस ‘एकं सत्’ को इन्द्रपद से वर्णन किया । अतः इन्द्र आत्मा है अथवा ‘एकं-सत्’ ही है । अब इस विषयके कुछ मन्त्र यहां देखते हैं—

सबका एक राजा ।

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च
शृंगिणो वज्रबाहुः । सेदु राजा क्षयति चर्ष-
णीनां अराज्ञ नेमिः परि ता बभूव ॥

(७२९ ऋ० १३२-१५)

इंद्र (यातः अवसितस्य राजा) जंगम और स्थावर पदार्थमात्र का राजा है, वही (वज्रबाहु) वज्र के समान जिसके बाहु हैं, ऐसा इन्द्र (शमस्य च शृंगिणः) शान्त और सींगवालों का अर्थात् शान्त और क्रूरों का भी राजा है । वही (चर्षणीनां राजा) सब प्रजाजनों का राजा है । जिस तरह (अराज्ञ नेमिः) अरों को चक्र की लोहपट्टि घेरती है, उस तरह (ताः परि बभूव) इन सब को वही घेरता है ।

सब का एकमात्र प्रभु है, वह सब को घेरता है, वह सब के चारों ओर है । सर्वव्यापक है । सब स्थावर जंगम का एकमात्र प्रभु है । तथा और देखिए—

य एकश्चर्षणीनां वसूनां इरज्यति ।

इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम् ॥ (३६ ऋ० १-७-९)

“इन्द्र ही पञ्चजनों का, और सब प्रजाजनों का तथा (वसूनां) सब धनों का एकमात्र स्वामी है ।”

स्थावरजंगम का एक ही प्रभु है । इस विश्व के अनेक ईश्वर नहीं हैं, यही सब का एकमात्र एक ही प्रभु है । मनुष्यों, पशुओं और सब अन्य वस्तुओं का अधिष्ठाता यही है । इसकी आज्ञा का कोई उल्लंघन कर नहीं सकता । यह ब्रह्मलोक से भी बड़ा है । इस विषय में आगे का मन्त्र देखिए—

ब्रह्मलोक से बड़ा ।

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मत्ता
पृथिवी च न प्रति । भीमस्तुविष्मान् चर्ष-
णिभ्य आतपः शिशीते वज्रं तेजसे न वंसग ॥

(७९७ ऋ० १-५५-१)

ब्रह्मलोक से भी (अस्य वरिमा) इस इन्द्र का महिमा

बहुत बड़ा है । पृथ्वी से भी बहुत बड़ा है । वह इन्द्र (भीमः) भयंकर (तुर्विष्मान्) बलवान् और (चर्ष-
णिभ्यः आतपः) लोगों के लिये प्रकाश देनेवाला है । (वंसगः) ब्रह्म जैसा वह वीर (तेजसे वज्रं शिशीते) तीक्ष्ण करने के लिये शूर के वज्र को तेज करता है ।

आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्धधे रोचना दिवि ।

न त्वावाँ इंद्र कश्चन न जातो न जनिष्यते
अति विश्वं ववक्षिथ ॥ (९२० ऋ० १-८१-५)

इन्द्र ने (पार्थिवं रजः पप्रौ) पृथ्वी और अन्तरिक्ष को व्यापा है, उसने (दिवि रोचना बद्धधे) ब्रह्मलोक में तेजस्वी तारागण रखे हैं । तेरे समान दूसरा कोई नहीं है, न कोई है और न होगा । (विश्व अति ववक्षिथ) तू विश्व से बढकर है ।

नहि त्वा रोदसी उभे ऋषायमाणमिन्वतः ।

जेपः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ॥

(६५ ऋ० १-१०-८)

हे इन्द्र ! (उभे रोदसी) ब्रह्मलोक और पृथिवी ये दोनों (त्वा न इन्वतः) तुझ को अपने अन्दर समा नहीं सकते । तू (ऋषायमाण) शत्रुओं का नाश करनेवाला है । (स्वर्वतीः अपः जेष) तेजस्वी उदकों का जय करके वह उदक और (गाः) गौवं (अस्मभ्यं सं धूनुहि) हम सब के लिये दो ।

इन्द्र पृथ्वी और ब्रह्मलोक से भी बढकर है । सर्वत्र व्यापक रहनेवाला वह है और वह इससे भी अधिक व्यापक है, अर्थात् वह जहां नहीं, ऐसा स्थान नहीं है ।

त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा
अवसे धृषन्मनः । चकृषे भूमिं प्रतिमानमो-
जसोऽपः स्व परिभूरेप्या दिवम् ॥

(७७१ ऋ० १-५२-१२)

(त्वं अस्य रजसः व्योमनः पारे) तूने इस अन्तरिक्ष और आकाश के परे रहकर (भूमिं चकृषे) भूमि का निर्माण किया । (स्वभूत्योजा धृषन्मनः) तू अपने सामर्थ्य से युक्त और शत्रुका धर्षण करनेवाला है, अतः हमारी (अवसे) रक्षा करने के लिये यह सब (ओजसः प्रतिमानं) अपने बल के योग्य कर्म करता है । तू (स्वः दिवं अपः परिभूः एषि) ब्रह्मलोक, अन्तरिक्ष और अपोलोक को घेर कर रहता है ।

त्रिलोक इन्द्र से विभक्त नहीं ।

न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रि-
णम् । अमादिदस्य तित्विषे समोजसः ॥

(३११ ऋ० ८-१२-२४)

(यं वज्रिण) जिस इन्द्र को (रोदसी) ध्रुलोक और पृथ्वी तथा (नान्तरिक्षाणि) अन्तरिक्ष (न विविक्तः) अपने से पृथक् कर नहीं सकते । उस इन्द्र के (ओजसः) बल से सब कुछ (तित्विषे) प्रकाशित होता है ।

कुछ भी दूर नहीं है ।

न ते दूरे परमा चिद् रजांसि आ तु प्र याहि
हरिवो हरिभ्याम् । स्थिराय वृष्णे सवना
कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्नौ ॥

(१२३९ ऋ० ३-३८-२)

(परमा रजांसि) दूर रजोलोक भी तेरे लिये (न ते दूरे) दूर नहीं है, हे (हरिवः) अश्वयुक्त इन्द्र ! (हरिभ्याम्) अपने दोनों घोड़ों के साथ (आ प्र याहि) आओ, (स्थिराय वृष्णे) तुज जैसे स्थिर बलवान् वीर के लिये ये सवन किये हैं और अग्नि प्रज्वलित करके (ग्रावाणः युक्ताः) रस निकालने के लिये प्रावों को लगा दिया है ।

ध्रुलोक का उत्पादक इन्द्र ।

जनिता दिवो जनिता पृथिव्या पिबा सोमं
मदाय कं शतक्रतो । यं ते भागमधारयन्
विश्वाः सेहानः पृतना उरु ज्रयः समप्सुजित्
मस्तुवा इन्द्र सन्पते ॥ (१७७२ ऋ० ८-३६-४)

इन्द्र, ध्रुलोक और पृथ्वीका उत्पन्न करनेवाला है । तू सोमका पान कर, आनन्द प्राप्त कर । सब देव जो भाग तेरे लिए निश्चित करते हैं, वह यह है । सब (पृतनाः) सैन्य का पराभव करनेवाला तू है और (अप्सु जित्) जलमें अथवा अन्तरिक्षमें विजय करनेवाला भी तू ही है ।

पृथ्वी और जल का उत्पादक ।

स वृत्रहेन्द्रः कृष्णयोनीः पुरंदुरो दासीरैरयद्
वि । अजनयन् मनवे क्षां अपश्च सत्रा शंसं
यजमानस्य तूतोत् ॥ (१२१४ ऋ० २-२०-७)

“ वह वृत्र का नाश करनेवाला और (पुरन्दरः) शत्रु के नगरों का भेदन करनेवाला इन्द्र (कृष्णयोनीः

दासी.) काले दासों अर्थात् शत्रुओं को (वि परयत्) भगा देता है । उसने मनुष्योंके लिए (क्षां अपः च) पृथ्वी और जल उत्पन्न किया । वह इन्द्र यज्ञ करनेवालों की प्रशंसा की वृद्धि करे ।

‘ कृष्णयोनी ’ शब्द का अर्थ कृष्ण कृत्य करनेवाले दुष्ट शत्रु है । ऐसे शत्रुओं को इन्द्र भगा देता है ।

आकाश खड़ा करनेवाला ।

अवंशे घामस्तभायद् बृहन्तं आ रोदसी अपृ-
णदन्तरिक्षम् । स धारयत् पृथिवी पप्रथञ्च
सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ॥ सन्नेव प्राचो वि
मिमाय मानैः वज्रेण खान्यतृणत् नदीनाम् ।
वृथासृजत् पथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता
मद इन्द्रश्चकार (११६३-६४ ऋ० २।१।५।२-३)

(अवंशे) आधाररहित आकाश में (बृहन्तं घां अस्त-भायत्) बड़े आकाश को स्थिर किया और (रोदसी) पृथ्वी और आकाश को तथा (अन्तरिक्षं) अन्तरिक्ष को (आ अपृणत्) भर दिया । उसने पृथ्वी का धारण किया और बढ़ाया ।

(मानैः) नाप लेकर (प्राचः सञ्च इव) जैसा मकान बनाते हैं, वैसा (नदीनां खानि अवृणत्) वज्रसे नदियोंके मार्ग बना दिये (दीर्घयाथै, पथिभिः) दीर्घ मार्गों से जानेवाली नदियां उसने सहजी उत्पन्न की हैं ।

विश्वकी रचना करनेका यह अपूर्व वर्णन है । सब लोक-लोकांतर निराधार अन्तराल में रखे हैं, यह प्रभु का अद्भुत सामर्थ्य है । और देखिए—

नक्षत्र स्थिर किये ।

इन्द्रेण रोचना दिवो दृळ्हानि दंहितानि च ।
स्थिराणि न पराणुदे ॥ (३६२ ऋ० ८-१४-९)

इन्द्रने आकाशमें तेजस्वी तारागण स्थिर और सुदृढ किए । उन स्थिरोंको कोई (न पराणुदे) हिला नहीं सकता ।

नक्षत्र स्थिर हैं, यह यहाँ कहा है । नक्षत्रों को स्थिर करनेवाला यही इन्द्र है । अतः इसकी शक्ति अगाध है, सब उसके सामने कांपते हैं—

— स्थावर, जंगम कांपते हैं ।

अभिष्टने ते अद्रिवो यत् स्था जगच्च रेजते ।
त्वष्टा चित् तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया
अर्चन् अनु स्वराज्यम् ॥ (११३ क्र० १८०-१४)

हे (अद्रिवः) इन्द्र ! (ते अभिष्टने) तेरे गर्जन से जो स्थावर, जंगम है, वह सब (रेजते) कांपने लगता है, (तव मन्यवे) तेरा क्रोध होनेपर त्वष्टा भी (भिया वेविज्यते) डर से कांपता है । ऐसा तेरा प्रभाव है, अतः स्वराज्य की अर्चना कर ।

तव त्विषो जनिमन् रेजत द्यौ रेजद् भूमिर्मि-
यसा स्वस्य मन्योः । ऋचायन्त सुभ्रः पर्व-
तास आर्दन् धन्वानि सरयन्त आपः ॥२॥
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौर्इन्द्रस्य कर्ता
स्वपस्तमोभूत् । य ई जजान स्वयं सुवज्रं
अनपच्युतं सदसो न भूम ॥४॥ य एक इच्छ्या-
वयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्र ।
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रार्तिं देवस्य गृणतो
मघोनः ॥५॥ (१४८९, ९१-९२ क्र. ४१७। २, ४, ५।)

(तव त्विष जनिमन्) तेरे जन्मके समय तेरे तेजसे (द्यौः रेजत) शुलोक कांपने लगा, (भूमिः रेजत्) भूमी भी कांपने लगी, (स्वस्य मन्योः भियसा) तेरे क्रोध के भयसे ये भयभीत हुए, (पर्वतासः सुभ्रः ऋचायन्तः) उत्तम पर्वत फट गए, (धन्वानि आर्दन्) शुष्क देश गीले हुए, और (आपः सरयन्त) जल बहने लगा ।

(ते जनिता द्यौ सुवीर. अमन्यत्) तेरा जनक पिता शुलोक उत्तम पुत्र से युक्त अपने आपको मानने लगा, (इन्द्रस्य कर्ता) वह इन्द्र का प्रकट करनेवाला था और वह (सु-अप-तमः) बड़े कर्मों का कर्ता हुआ । उसने (सुवज्रं) उत्तम वज्रधारी (अनपच्युतं) न गिरनेवाले (स्वयं) तेजस्वी इन्द्र को उत्पन्न किया ।

वह एक ही वीर (भूमा व्यावयति) बड़े शत्रुको हटाव है, वही स्तुत्य इन्द्र (कृष्टीनां राजा) प्रजाओंका एकमात्र राजा है । वह इन्द्र उपासक को धन देता है, इसलिये सब संसार (विश्वे एनं सत्यं अनुमदन्ति) इस सच्चे वीर का अनुमोदन करता है ।

सब का वश करनेवाला इन्द्र ।

अर्चा शक्राय शाकिने शचीवने शृण्वन्तमिन्द्रं
महयन्त्रमिन्द्रं । यो धृष्णुना शवसा गोदसी
उभे वृषा वृषन्वा वृषभो न्यृञ्जते ॥

(७८७ क्र. १।५४।२)

उस शक्तिमान् और बुद्धिमान् इन्द्र की स्तुति करो कि, जो अपने (धृष्णुना शवसा) धर्षणशील बल से दोनों द्यावापृथिवी को अपने वश में करता है । जैसा (वृषभ) वीर्यशाली वीर अपने सामर्थ्य से स्त्री को वश करता है ।

सब विश्व जिस के सामने कांपता है, भयभीत होता है, जिस की मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकता । अतः प्रभु सब को वश करनेवाला है ।

— इन्द्र का असीम सामर्थ्य ।

असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा
सन्तु नेमे । ये त इन्द्र ददुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं
स्थविरं वृष्ण्यं च ॥ (७९३ क्र. १।५४।८)

(अ-समं क्षत्र) इन्द्र का क्षात्र तेज असीम है, उस की (मनीषा असमा) बुद्धि भी असीम है । (नेमे) ये याजक (अपसा प्र सन्तु) अपने कर्म से उत्कर्ष को प्राप्त हों । क्योंकि जो लोक तेरी वधाई करते हैं, वे (महि स्थविरं वृष्ण्यं क्षत्रं) बड़ा विशाल, पौरुषयुक्त क्षात्र तेज प्राप्त करने हैं ।

इतना असीम सामर्थ्य है, इसीलिये सब पर उस का प्रभुत्व चल रहा है, सब को वश में वह रखता है । उस पर कोई हुक्मत नहीं कर सकता, पर सब पर उसी की हुक्मत चलती है । देखिये—

सत्यमित् तन्न त्वावां अन्यो अस्तीन्द्र देवो न
मर्त्यो ज्यायान् । अहन्नहिं परिशयानमर्णोऽवा-
सृजो अपो अच्छा समुद्रम् ॥ (१९७१ क्र. ६।३०।४)

हे इन्द्र ! यह सत्य है कि, तेरे जैसा न कोई देव है और (न मर्त्यः) न मानव है । तेरे से (ज्यायान्) बड़ा तो कोई नहीं है । (अर्णः परिशयानं अहिं अहन्) जल को प्रतिबंध करनेवाले शत्रु का वध कर के तूने (अपः समुद्रं) जल खुला किया, जो समुद्र तक बहता रहा ।

हर एक वस्तुमात्र में प्रभु का सामर्थ्य दीखता है । क्या जल में, क्या वनरूपि में, क्या अन्य पदार्थों में, उस का

सामर्थ्य विश्वभर में ओतप्रोत भरा है। अतः सब पर उस का प्रभुत्व स्थिर है और उस की आज्ञा का कोई उलंघन नहीं कर सकता, इस विषय में देखिये—

तेरे मार्ग का अतिक्रमण सूर्य नहीं करता ।

दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा दिवेदिवे हर्यश्व-
प्रसूताः । सं यदानलध्वन आदिदश्वैर्विमोचनं
कृणुते तत् त्वस्य ॥ (१२४९ ऋ. ३।३०।१२)

(प्रदिष्टाः दिशः) निश्चित किये दिशाओं को जो कि, (हर्यश्व-प्रसूताः) इन्द्रने निश्चित किये हैं, (सूर्य न मिनाति) सूर्य नहीं छोड़ता । (अश्वैः यद् अध्वनः आनट्) घोड़ों से जब वह मार्गपर से चला जाता है, तब [विमोचनं कृणुते] विमोचन करता है। यह इसी का कार्य है ।

इस तरह अनेक मन्त्र पाठक इन सूक्तों में परमेश्वर के वाचन देख सकते हैं, तथा पूर्वस्थान में जो विशेषण के शब्द ईश्वरवाचक करके बताये हैं, उन पदों का भाव पाठक इन मंत्रों में देख सकते हैं और अनुभव कर सकते हैं कि, इन्द्रदेवता के मंत्रों में ईश्वरविषयक वर्णन का अच्छा स्थान है ।

मैं इन्द्र हूँ = इन्द्रका साक्षात्कार ।

प्र सुस्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि
सत्यमस्मि । नेन्द्रोऽस्तीति नेम उ त्व आह क
ई ददर्श कमभि श्रवाम ॥ ३ ॥ अयमस्मि
जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मन्हा ।
ऋतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्ति आदिर्दिरो भुव-
ना ददर्शमि ॥४॥ (९९३-९४ ऋ० ८।१००।३-४)

यदि इन्द्र (सत्यं अस्ति) सचमुच है, तब तो उस की (स्तोमं भरत) स्तुति करो, पर नेमने (आह) कहा कि (न इन्द्रः अस्ति) इन्द्र नहीं है, (क ई ददर्श) किसने उसे देखा ? और हम (कं अभि स्तवामः) किसकी स्तुति करें ?

इन्द्रने उत्तर दिया— हे (जरितः) स्तोता ! (अयं अस्मि) यह मैं हूँ (इह मा पश्य) यहां मुझे देख । (मन्हा विश्वा जातानि अभि अस्मि) अपने महत्त्व से सब वस्तुओं पर मैं ही प्रभाव करता हूँ। अतः (ऋतस्य

प्रदिशः) सत्य को बतानेवाले (मा वर्धयन्ति) मुझे ही बढ़ाते हैं । (आ दिर्दिरो) क्रुद्ध होने पर मैं [भुवना ददर्शमि] सब भुवनों का नाश करता हूँ ।

भक्त को इन्द्र प्रत्यक्ष दर्शन देता है, यह बात यहाँ दर्शायी है। ईश्वरसाक्षात्कार होता है। ईश्वर साक्षात् होकर 'मैं हूँ' ऐसा कहता है। जिसका भाग्य हो, उस को यह दर्शन होगा ।

इस तरह ईश्वरवर्णनपरक मंत्रों का नमूना देखने के बाद हम वीरत्वविषयक वर्णन का नमूना देखना चाहते हैं। ऊपर के स्थान में जहाँ ब्राह्मणग्रंथों के वचन दिये हैं, वहाँ 'राजा, क्षत्रिय, वीर, शूर' आदि का वाचक (इन्द्र) पद आया है। इन्द्र के इस भाव का अब विचार करना है—

क्षत्रिय वीर इन्द्र ।

अब हम क्षत्रिय पराक्रमी वीर इन्द्र का विचार करते हैं। इन्द्रदेवता के जो मन्त्र वेद में हैं, उन में उसके पराक्रम के मंत्र ही बहुत हैं। अर्थात् क्षत्र भाव इन्द्र में विशेष प्रकट है। शत्रु का हनन यह भाव इसमें मुख्य है। इस भाव के वाचक शब्द इन्द्र के नामों में ये हैं—

(असुरहा) असुरों का नाश करनेवाला, (अहिहा) अहि नामक शत्रु का वध करनेवाला, (दस्युहा) शत्रुओंका नाश करनेवाला, (वृत्रहा, वृत्रहन्ता) वृत्र का वध करनेवाला, (अचहन्ता) सब प्रकार से वैरियों का नाश करनेवाला, (विहन्ता) विशेष रीति से दुष्टों का वध करनेवाला, (सत्राहा) मित्रदल को इकट्ठा कर के शत्रु का नाश करनेवाला, (महावधः) बड़ी कत्तल करनेवाला, ये इन्द्र के वाचक शब्द शत्रुवध करने का उस का स्वभाव बताते हैं ।

शत्रु का हमला होने पर उसको सहकर अपने स्थान में सुस्थिर रहने का भाव निम्नलिखित शब्दोंद्वारा व्यक्त होता है— (अभिमातिषाह, अभिमातिहा) शत्रु को सहना, (चर्षणीसहः) शत्रुसेना के आक्रमण को सहनेवाला, (जनं सह, नृपहः) जनताकी चढ़ाईको सहनेवाला, (प्रसह) विशेष प्रकारकी चढ़ाई को सहनेवाला, (पृतनाषाह) शत्रु की सेना के हमले को सहनेवाला, (तुराषाह) त्वरा के साथ शत्रु के हमले को सहनेवाला,

(विश्वाधाह्) सब प्रकारके शत्रु को सहनेवाला, (सत्रा-
धाह्) मिलकर अनेक शत्रु हमला करते हुए आ गये, तो
उसको सहनेवाला, (प्राशुधाह्) अति शीघ्रता के साथ
शत्रु के हमले को सहने की तैयारी करनेवाला, इन्द्र है ।
शत्रु को सहने का अर्थ अपनी वीरता से, अपने बल से,
अपनी शक्ति से शत्रु के हमले को सहना है । शत्रु का
हमला होने पर अपना स्थान न छोड़ना, अपने स्थान
पर रहते हुए शत्रु को पराजय देकर भगा देने का नाम
है, शत्रु को सहना । स्वयं शत्रु को सहना और स्वयं
शत्रु को असह्य होना, यह द्विविध वैदिक युद्ध-
कौशल्य है ।

इस तरह शत्रु को असह्य बनने के लिये उत्तम वीर
बनना आवश्यक है । यह भाव इन्द्रवाचक निम्नलिखित
शब्दों में देखना उचित है- (सुवीरः) उत्तम वीर
होना, (महावीरः, प्रवीरः, एकवीरः) सब से बड़ा वीर
होना, बलवान् और वीर्यवान् होना, अजिंक्य वीर होना,
(अभिवीरः, पुरुवीरः) सब प्रकार का वीरत्व अपने पास
रखना, अपनी सेना में सब वीर ऐसे रखने कि, जो उक्त
प्रकार वीर्य दिखा सकें, (वीरतरः वीरतमः) वीरों में
उत्तम वीर बनना, (अभिभूतरः) शत्रुका पराभव करना,
विशेष प्रवीण बनना, (अवोजित्) रक्षणशक्ति के साथ
शत्रु को जीतना (संसृष्टजित्, सत्राजित्, सजित्वानः)
सब शत्रुओं को जीतनेवाला, विजय प्राप्त करने की शक्ति
से युक्त, ये इन्द्रवाचक शब्द बताते हैं कि, इन्द्र किस
तरह के वीर का नाम है ।

(अपराजितः) कभी जो पराभूत नहीं होता,
(धनंजयः) युद्ध में शत्रु के धन को जीतनेवाला, युद्ध में
विजयी, (पूर्मित् पूर्मित्तमः) शत्रु के नगरों और कीलों
का नाश करनेवाला, (पुरंदरः) शत्रु के नगरों का भेदन
करके अन्दर प्रवेश करनेवाला, (अभिभूः) सब प्रकार से
शत्रु का पराभव करनेवाला (अभीरुः, विभीषणः) जिस
को स्वयं कभी भय नहीं होता, पर जो शत्रु को भयंकर
मालूम होता है, (वीर्युः) जो वीरों को अपने पास
रखता है, वीरों को वीरोचित कार्यों में जो लगाता रहता
है, (आजिक्त् रणक्त्) जो युद्ध करने में परम कुशल
है, (आजितुरः) जो युद्ध में स्वयं से अपने कर्म करता

है, अतः जो (आजिपतिः) युद्ध का स्वामी कहलाता है,
ये इन्द्र के शब्द इन्द्र का रणकौशल्य बता रहे हैं ।

(वाजिनीवसुः) सेना ही जिसका धन है, सेना
को ही जो अपना धन मानता है, (महाघ्नानः) बड़े
सेनासमुदायों को जो युद्धों में चलाता है, बड़ी से बड़ी
सेना का संचालन करने में जो कभी प्रमाद नहीं करता,
(सेना-नीः) जो बड़ी कुशलता से सेना को चलाता है,
(बलविज्ञाय, सवलः) बल के लिये, चतुरंगबल के
लिये जिसकी सर्वत्र प्रसिद्धि है, (सत्यशुष्मा) जिसका
बल सत्य है, अर्थात् सदा विजय पाने में निश्चित सामर्थ्य
से जो युक्त है, जो (पुरोहितः, पुर-स्थाता, पुरपता)
अपनी सेना के अग्रभाग में रहता है, तथा शत्रु के ऊपर
हमला करने में जो सदा आगे बढ़ता है ।

(रथयुः, रथितमः) रथयुद्ध में जो प्रवीण है, जिसके
पास बहुत रथ हैं, रथसेना के संचालन में जो प्रवीण है,
(उरुक्रमः) शत्रुपर जो बड़े आक्रमण करता है, (वृषरथः,
सुखरथः) बैलोंके रथ और सुख देनेवाले रथ जिसके पास
हैं, (रथेष्टाः) रथपर जो रहता है, (यन्धुरेष्टाः) रथमें
विशेष स्थानपर जो बैठता है । ये शब्द इन्द्र का रथयुद्ध-
कौशल्य बतानेवाले हैं ।

(शवसः सूनुः, सहसः सूनुः) बलका पुत्र ये शब्द
इसके असीम बलके सूचक हैं । (महाहस्ती) इस से
उस के बड़े हाथ, बड़े बलवाले हाथ हैं, अथवा उस के
पास बड़े हाथी हैं, यह भाव व्यक्त होता है । (उग्र-
धन्वा) बड़े प्रखर मनुष्य को बर्तनेवाला, (इषुहस्तः)
हाथ में बाण लेनेवाला, (वज्रहस्तः, वज्रभृत्,) हाथ
में वज्र लेनेवाला, वज्र का धारण करनेवाला, (वज्रबाहु,
सुबाहुः, उग्रबाहुः, सुपाणिः) उत्तम बाहु, वज्र जैसे
कठोर बाहु, बलवान् बाहु और हाथों से युक्त इंद्र है,
(तिग्मायुधः) जिस के शस्त्र अति तीक्ष्ण हैं ।

इस की शक्ति के विषय में निम्नलिखित शब्द देखिये-
(अभिभूत्योजा) शत्रु का पराभव करनेवाला जिस का
सामर्थ्य है, (अमितौजाः) जिस के बल की सीमा नहीं
है, (असमात्योजाः धृष्णु- ओजाः) जिस का सामर्थ्य
शत्रु का धर्षण करने में प्रकट होता है, (स्वधृत्योजाः,
स्वौजाः, विश्वौजाः) सब प्रकार का सामर्थ्य जिस के

पास सदा तैयार रहता है। (बाहु-ओजाः) जिस का बाहुबल बहुत ही बड़ा है। (सहस्वान्, तवीयान्) जिस का बल बड़ा है। ये शब्द इंद्र का बल बता रहे हैं। (पुरुवर्पा) शब्द उस का शरीर विशाल है, यह भाव बताता है। यह भी उस के बड़े सामर्थ्य का सूचक है।

(हरिष्ठाः) इन्द्र घोड़े पर सवार होता है, (पर्वतेष्ठाः) पर्वत पर अथवा पर्वत के कीले में रहकर शत्रु से लड़ता है, वह ऐसा युद्ध करता है कि इस का युद्धकौशल देखकर शत्रु भी इसकी प्रशंसा करते हैं, यह भाव (अरि-पुत्तः) इस शब्द से व्यक्त होता है।

(पुरुमायः) वह शत्रु के साथ लड़ने में कष्ट भी करता है, (वामनीतिः) वह शत्रु के साथ (सुनीतिः, सुनीथः) अच्छी नीति भी बरतता है और बुरी भी। (शतनीथः, सहस्रनीथः) सैकड़ों और सहस्रों प्रकार की युक्तियाँ उस के पास रहती हैं, इसलिए वह (अच्युत्, अनपच्युत्) अपने स्थान से च्युत नहीं होता, (दुश्च्यवनः) उसको अपने स्थान से अष्ट करना अशक्य है, पर वह ऐसा है कि, वह दूसरे बड़े बड़े शत्रुओं को (अच्युतच्युत्) उनके स्थानों से हटा देता है, जो अपने स्थानों पर स्थिर हुए शत्रु हैं, उनको परास्त करके हटा देता है, (अद्ब्धा, अदाभ्यः) वह शत्रुओं से कभी न डरनेवाला है, कभी न दबनेवाला और कभी दबाया न जानेवाला है। (सचेताः, प्रचेताः, विचेता, सहस्रचेताः) वह अनन्त प्रकार की कुशल बुद्धियों से युक्त है, इसलिए अपने बल को शत्रु के नाश करने में उत्तम रीति से लगाता है और विजय प्राप्त करता है।

इंद्र (प्रमति) विशेष बुद्धिमान है, (विप्रतमः, कवितमः) विशेष ज्ञानी, (सुवेदा, सुविद्वान्) उत्तम ज्ञानी है, (सुमनाः) उत्तम मनवाला है, (अज्ञात-शास्त्रः, अज्ञातः) स्वयं किसी की शत्रुता नहीं करता, (विश्वतो-धीः) उस की बुद्धि चारों ओर पहुंचनेवाली है, सब ओर वह खुली आंखों से देखता है, अतएव किसी शत्रु के द्वारा (अनाधृष्यः, अधृष्य) उस का पराभव या धर्षण नहीं होता, अतः (अप्रतिधृष्टश्चाः) उसको सदा विजयी बलवाला कहा गया जाता है।

इंद्र [एकराट्, संराट्, स्वराट्] उत्तम राजा है, ऐसा कहते हैं, (नृपाता) मानवों की रक्षा वह उत्तम

रीति से करता है। उसको (उर्वरापतिः) भूमि का सच्चा पालन करनेवाला कहते हैं। (गणपतिः) सब गणों का पालन करता है। एक एक कार्य करनेवालों के सर्वों को गण कहते हैं। इन गणों का उत्तम रीति से पालन इंद्र करता है, क्योंकि (कारुधायाः) कारीगरों का पोषण करने का कार्य वह करता है। कारी-गरों के पोषण से राष्ट्र में सुस्थिति रहती है। (नृपतिः, विशस्पतिः, विशपतिः) मानवों की पालना वह करता है, (मित्रपतिः, सत्पतिः) सज्जनों का पालन करता है, मित्रजनों का, मित्रदलों का पालन करता है, (रायि-पतिः, रायस्पति, वसुपतिः) वह धन का पालन और संग्रह करता है। यह इंद्र (गोपाः, शुचिपाः, व्रतपाः, चर्पणिप्राः, संवननः) अर्थात् सब प्रजाओं का, पशुओं का, प्रजा के सब कर्मों का रक्षण करता है, इस से उस के राष्ट्र का उदय होता है। (प्राविता) इसीलिये उसको सूचार्थ रक्षक कहते हैं और यह रक्षण वह (शवसस्पतिः) सब के बल का रक्षण करता हुआ करता है। यही उस की बुद्धिमत्ता है।

इंद्र का पशुपालनरूप कर्तव्य बतानेवाले शब्द ये हैं- (संभृताश्वः) उत्तम अश्वों को पास रखनेवाला, (स्वश्वः) उत्तम घोड़े जिस के पास हैं, (हर्यश्वः) शीघ्रगामी घोड़े जिस के पास है, अथवा हरिद्वर्ण घोड़े जिस के पास हैं, (स्वश्वयुः) उत्तम घोड़े जिस के रथ को जोड़े जाते हैं, (अश्वपतिः) जो घोड़ों की पालना उत्तम करता है, (गवां पति, गोपतिः) गोपालन करता है, (गव्युः, भूरिगुः) जिस के पास बहुत गौवे रहती हैं, (शाचिगुः, अभ्रिगुः) जो उत्तम गौवों से युक्त है। ये शब्द इंद्र के पशुपालन का भाव बता रहे हैं।

प्रजाजनों के लिये उस की रक्षा कैसी मिलती है, यह बात निम्नलिखित इद्रवाचक शब्दों से ज्ञात होती है, (अश्वितोतिः) जिस का संरक्षण का सामर्थ्य कभी कम नहीं होता, (ऊर्वी-ऊतिः) जिस की रक्षण करने की शक्ति बड़ी भारी है, (शतमूतिः, सहस्रोतिः) सैकड़ों और हजारों साधनों से जो प्रजा की रक्षा करता है, (भद्रकृत्) वह सब का कल्याण करता है।

उसकी शक्ति [अपारः] अपार है, पर वह सुगमता से

शत्रु के (सुपारः) पार होता है ।

इस तरह इन्द्र के वाचक, गुणबोधक अनेक शब्द हैं, जो वेदमंत्रों में प्रयुक्त हुए हैं और इन्द्र के गुण, कर्म, स्वभाव बताते हैं । इन्द्र राजा, वीर, शूर, बली, विजयी है और उसका शासन प्रजा का कल्याण करनेवाला है, इत्यादि भाव इन शब्दों से स्पष्ट प्रतीत होते हैं ।

यदि पाठक इन्द्र के वर्णन के सब पदों का इस तरह अभ्यास करेंगे, तो इन्द्र का स्वरूप सहजी से ज्ञात हो सकता है । और इन्द्र के मन्त्रोंद्वारा शौर्यवीर्यादि गुणों का संवर्धन करने का जो कार्य वेद को अभीष्ट है, वह भी पाठकोंके अन्तःकरणमें प्रकट हो सकता है ।

जो इन्द्र के पराक्रम इन शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, उनका वर्णन पाठक अब मन्त्रोंद्वारा देखें । अब हम ऐसे मन्त्र देते हैं, जिनमें पूर्वोक्त स्थान में जो इन्द्र के गुण शब्दोंद्वारा प्रकट हुए हैं, वे ही मंत्रों के वर्णनों से प्रकट होंगे ।

आर्य के लिये प्रकाश दो ।

धिष्वा शवः शूर येन वृत्रमवाभिनद् दानुमौ-
र्णवामम् । अपावृणोज्योतिरार्याय नि सव्यतः
सादि दस्युरिन्द्र ॥ सनेम ये त ऊतिभिस्त-
रन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून् । अस्मभ्यं
तत् त्वाप्द्रं विश्वरूपमरन्धयः साख्यस्य
त्रिताय ॥ (१११८-१९ ऋ० २-११-१८।१९)

हे शूर इन्द्र ! (शवः धिष्वा) तू बल धारण कर (येन वृत्रं दानुं अवाभिनत्) जिससे शत्रु का नाश हो जाय । (आर्याय ज्योतिः अपावृणोः) आर्य के लिये प्रकाश की ज्योति बताओ । (सव्यतः दस्युः नि सादि) सीधी और शत्रु को दबा दो ।

(ये ते ऊतिभिः तरन्तः) जो तेरी रक्षाओं से शत्रु के पार हो जाते हैं । (आर्येण विश्वा स्पृधः दस्यून्) आर्य के द्वारा स्पर्धा करनेवाले दस्युओं का नाश करता है । (अस्मभ्यं) हम सब के लिये उस विश्वरूपी त्वष्टृपुत्र का नाश कर । शत्रु का पूर्णता से नाश कर ।

यहां (आर्याय ज्योतिः अपावृणोः) आर्यों के लिये प्रकाश कर, ऐसा स्पष्ट कहा है । आर्यों का मार्ग विश्वभरमें खुला रहे, किसी स्थान पर आर्यों को रोकठोक या प्रति-

बंध न हो, यहाँ यहाँ तात्पर्य है । आर्य सर्वत्र विजयी होते हुए अपनी और विश्व की उन्नति करते जाय, यही यहां तात्पर्य है ।

धार्मिकों का हितकर्ता ।

अनुव्रताय रन्ध्रयन्त्रपत्रता नाभूमिरिन्द्रः श्रथयन्त्र-
नाभुवः । वृद्धस्य चिद्धर्धतो द्यामिनक्षत स्तवानो
वप्नो वि जघान संदिहः ॥ (७५३ ऋ० १।५।१९)
(अनुव्रताय) धर्मव्रत का पालन करनेवालोंका हित करनेके लिए (अपव्रतान् रन्धयन्) व्रतहीनोंका नाश करता हुआ इन्द्र (आ-भूमिः) उपासकों के साथ रहकर (अन्-आभुवः श्रथयन्) अभक्तों का नाश करता है । (वृद्धस्य चित् वर्धतः) इन्द्र प्रथम से ही बड़ा है, पर वह और भी बढ़ता भी है और (द्यां इनक्षतः) दुलोक तक पहुंचता है । ऐसे इन्द्र की (स्तवानः) स्तुति करनेवाला (वप्नः संदिहः विजघान) संदेह दूर करता है, अर्थात् इन्द्र का महारव जानता है ।

यहां (अनुव्रत) और (अपव्रत) ये दो शब्द बड़े बोधप्रद हैं । धर्मानुकूल चलनेवाले अनुव्रत कहलाते हैं और अधर्म में प्रवृत्ति होना अपव्रतियोंका लक्षण है । इन्द्र का यहां कर्तव्य है कि वह अधार्मिकों का नाश करे और धार्मिक सत्यव्रतियों की उन्नति करने में सहायक हो ।

‘ परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
(गीता ४।८)

यह वचन इस मन्त्रके साथ देखनेसे बड़ा बोध मिलता है ।

पंचजनों का रक्षक ।

विश्वेदनु रोधना अस्य पौंस्यं ददुरस्यै दधिरे
कृत्नवे धनम् । षलस्तभ्ना विष्टिरः पञ्च संदश
परि परो अभवः सास्युक्थ्यः (११४६ ऋ० २।१३।१०)
सबने इसके बल की वृद्धि की है । इसके पराक्रम के लिए सबने धन दिया है । पृथ्वीके (षट् विष्टिरः अस्तभ्ना) छः भाग स्थिर किए हैं । (पञ्च संदशः) पंच जनों का विजय करनेवाला तू ही है, अतः तू (उक्थ्यः असि) प्रशंसनीय हो । तथा-

आ यस्मिन् हस्ते नर्या मिमिश्रुरा रथे हिरण्यये
रथेष्ठाः । आ रश्मयो गभस्त्योः स्भूरयोः आध्वन्न-
श्वासो वृषणो युजानाः ॥ (१२६३ ऋ० ६।२९।२)

(यस्मिन् हस्ते) जिस इन्द्र के जिस हाथ में (नयो मिमिक्षुः) मनुष्यों के हितके लिए ही सब धन है और जो सुवर्ण के रथमें बैठकर सब को धन देता है, जिसके (स्थूयथोः) स्थूल हाथ में रथके लगाम हैं, जो अपने रथको घोड़े जोतता है और जो घोड़े सरल मार्ग से चलते हैं । वह इन्द्र है । तथा—

एकं नु त्वा सत्यति पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि
यशसं जनेषु । तं मे जगृभ्र आशसो नविष्टं
दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम् ॥

(१७१५ क्र० ५।३२।११)

इन्द्र ही एक (सत्यति) सब का उत्तम पालनकर्ता है और (पाञ्चजन्यं) पञ्चजनों का हित करनेवाला है, तू हि (जनेषु) लोगों में यशस्वी है, ऐसा मैं (शृणोमि) सुनता हूँ । उपासक लोग दिनरात तेरा ही स्वीकार करें । तथा—

लोकहितार्थ युद्ध ।

स इन्महानि समिथानि मज्जना कृणोति युध्म
ओजसा जनेभ्यः । अधा चन श्रद् दधाति
त्विषीमते इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम् ॥

(८०१ क्र० १।५५।५)

(स. युध्मः) वह इन्द्र बड़ा योद्धा है, वह (जनेभ्यः) जनों के हित के लिये (ओजसा महानि समिथानि कृणोति) अपने सामर्थ्य से बड़े युद्ध करता है । अतः सब लोग (वधं वज्रं निघनिघ्नते) शत्रु पर मारक शास्त्र का प्रहार करनेवाले (त्विषीमते इन्द्राय) तेजस्वी इन्द्र के विषय में (श्रद् दधाति) श्रद्धा रखते हैं ।

सब जनता के हित करने के लिये युद्ध किया जावे, यह सूचना यहाँ मिलती है । जनता के हित करने के लिये क्या करना चाहिये, इस का दर्शन अगले मन्त्र में पाठक करें—

दस्युको दण्ड और आर्यांकी उन्नति करो ।

वि जानीहि आर्यान् ये च दस्यवो वहिष्मते
रंधया शासद्वतान् । शाकी भव यजमानस्य
चोदिता विश्वेत्ता ते सधमादेषु चाकन ।

(७५२ क्र० १-५१-८)

हे इन्द्र ! (आर्यान् विजानीहि) आर्य कौन हैं, यह तू जान, और (ये च दस्यवः) जो दस्यु या शत्रु हैं, उनको

भी तू जान । (वहिष्मते) यज्ञकर्ता के हित के लिये (अवतान् शासत्) व्रतहीन शत्रुओं को दण्ड देकर (रन्धय) नष्टभ्रष्ट कर । (शाकी भव) समर्थ होकर रह (यज-मानस्य चोदिता) यजमान को प्रेरणा दे । (सध-मादेषु) साथ साथ मिलजुल कर जहाँ सत्कर्म किये जाते हैं, ऐसे यज्ञों में (ते ता विश्वा इत्) तेरे वे सब सत्कर्म प्रशंसा-योग्य होते हैं ।

शत्रु को दण्ड देना और सज्जनों की उन्नति करना ही राजा का कर्तव्य इस मंत्र से प्रकट होता है । प्रजा के रक्षण करने के लिये क्षत्रिय को सदैव तत्पर रहना चाहिये, यह सूचना अगला मंत्र देता है—

रक्षण के लिये खड़ा रहो ।

ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतयेऽस्मिन् वाजे शतक्रतो ।

सं अन्येषु ब्रवावहै ॥ (७०४ क्र० १-३०-६)

हे शतक्रतो ! (अस्मिन् वाजे) इस युद्ध में (नः ऊतये) हमारा रक्षण करने के लिये (ऊर्ध्वः तिष्ठ) युद्धमें सुसज्ज होकर खड़ा रह । (अन्येषु सं ब्रवावहै) अन्य प्रसंगों में हम मिलकर बात करेंगे कि, वहाँ क्या करना चाहिये ।

आ घागमद् यदि श्रवत् सहस्रिणीभिरूतिभिः ।

वाजेभिरुप नो हवम् । (७०६ क्र० १।३०।८)

(यदि श्रवत्) यदि इन्द्रने हमारी पुकार सुनी, तो वह (सहस्रिणीभिः ऊतिभिः वाजेभिः) सहस्रों सामर्थ्यों और बलों के साथ (नः हवं) हमारी पुकार के स्थान के प्रति (आगमत्) अवश्य दौड़ते हुए आ जायगा ।

यहाँ (वाजे ऊर्ध्वः तिष्ठ) युद्ध में उठकर खड़ा रह, ऐसा कहा है । राष्ट्र में क्षत्रियों की प्रजारक्षणार्थ ऐसा ही खड़ा रहना चाहिये । दुष्टों का नाश करने के विषय में वेद का आदेश स्पष्ट है—

दुष्टों का नाश कर ।

उद् बृह रक्ष सहमूलं इन्द्र वृश्वा मध्यं प्रत्यग्रं
शृणीहि । आ कीवतः सललूकं चकर्थ ब्रह्मद्विषे
तपुषि हेतिमस्य ॥ (१२५४ क्र० ३।३०।१७)

हे इन्द्र ! (रक्षः) राक्षसों को जड़के साथ (उद् बृह) उखाड़ दो, (मध्यं वृश्वा) उनका मध्य काट दो और (अग्रं

प्रति शृणीहि) उनका अन्तभाग काट दो । (कीवतः सल-
लूक आचकर्थ) दुष्टोंको दूर कर और ज्ञान का द्वेष करनेवाले
दुष्टपर तपा शस्त्र (अस्य) फेंक ।

यह मन्त्र दुष्टोंको उखाड़ देनेके लिये विशेष स्पष्टतापूर्वक
उपदेश देता है । वृत्र शत्रु का नाम है । इन्द्रसे वृत्र का वैर
प्रसिद्ध है । इस वृत्र का वध इन्द्रने किया है । इस वर्णनके
सैकड़ों मंत्र वेदमें हैं । उनमेंसे कुछ देखिये —

वृत्रवध ।

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जह्ने महावीरं तुविबाधं
ऋजीषम् । नातारीदस्य समृतिं वधानां स
रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रु ॥ अपादहस्तो
अपृतन्यदिन्द्रमास्य वज्रं अधिसानौ जघान ।
वृष्णो वध्निः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो
अशयद् व्यस्तः ॥ [७२०-२१; ऋ० १।३२।६-७]

[अ-योद्धा इव] अब मेरे साथ युद्ध करनेयोग्य कोई
नहीं रहा, ऐसा माननेवाला वह [दुर्मदः] दुष्टबुद्धि शत्रु
[महावीरं] बड़े शूर [तुविबाधं] बहुतोंका पराभव करने-
वाले [ऋजीष] अदम्य इन्द्रको [आजह्ने] अपने सम्मुख
आह्वान करने लगा । परन्तु वह [इन्द्रशत्रु] इन्द्र का शत्रु
[वधानां समृतिं न अतारीत्] इन्द्रके शस्त्रके धावों को
सहन न कर सका । अन्तमें [रुजानाः सं पिपिषे] छिन्नभिन्न
होकर चूर्ण हुआ ।

पश्चात् उस [अपाद-हस्तः] पांव और हाथसे विहीन
[अ-पृतन्यत्] सेनारहित वृत्रने [इन्द्रं वज्र अधिमानौ
जघान] इन्द्रपर उसकी गर्दनमें शस्त्र मारा, पर[वध्निः वृष्णो
प्रतिमानं बुभूषन्] नपुंसक का सामना जैसा वीर्यवान्से
होता है, वैसी उसकी अवस्था हुई और [पुरुत्रा व्यस्तः]
अनेक स्थानोंमें फेंका जाकर [अशयत्] गिर पड़ा ।

तथा और देखिये—

वज्रको नचाया ।

त्वं गोत्रं अङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोतात्रये शतदुरेषु
गातुवित् । ससेन चिद् विमदायावहो वसु आज-
वर्द्रि वावसानस्य नर्तयन् ॥ [७४७; ऋ० १।४१।३]
हे इन्द्र ! तूने अंगिरोंके लिये [गोत्र अप अवृणोः] गौंके
स्थान को खुला कर दिया, अत्रि के लिये [शतदुरेषु गातु-

वित् । सौ द्वारोंवाले स्थानसे गमनका मार्ग बताया, विमद
के लिये [ससेन वसु अवहः] धान्यके द्वारा धन दिया और
वावसान के लिये [अर्द्रि नर्तयन्] अपने वज्र को नचाया,
अर्थात् वज्र से शत्रुको मारा, तथा—

युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप
तंतमिद्धतं वज्रेण तंतमिद्धतम् । दूरे चत्ताय
छन्सद् गहनं यदिनक्षत् । अस्माकं शत्रून् परि शूर
विश्वतो दर्मा दर्षीष्ट विश्वत [१०३३ऋ० १।१३२।६]

[पुरोयुधा] आगे होकर युद्ध करनेवाले तुम [यः नः
पृतन्यात्] जो हमपर सैन्यसे चढाई करे, उसका वध करो,
उमका [वज्रेण त हत] वज्रसे वध करो । [दूरे चत्ताय दूर
रहनेवाले पर भी जो वज्र हमला करता है वह गहन स्थान
में भी जा सकता है । [अस्माकं शत्रून्] हमारे शत्रुओंको
[विश्वतः परि] चारों ओरसे घेरो और [विश्वत दर्मा दर्षीष्ट]
चारों ओरसे विदारण करो ।

सेना लकर हमपर हमला करनेवाला तथा अन्य प्रकार
से सतानेवाला ये सब शत्रु ही हैं और शत्रु को दूर करना
ही इन्द्र का कर्तव्य है । क्योंकि शत्रु वध्यही है—

शत्रु वध्य हैं ।

इन्द्र दृष्ट्या यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष
गृणते सखिभ्यः । दुर्मायवो दुरेवा मर्त्यासो
निषङ्गिणो रिपवो हन्त्वास [१२५२; ऋ० ३।३०।१५]
हे इन्द्र ! [दृष्ट्या] प्रबल बन । [याम-कोशा अभूवन्]
कोशोंको प्रतिबंध हो रहा है । [यज्ञाय गृणते सखिभ्यः]
यज्ञकर्म, उपामना और मित्रोंको [शिक्ष] शिक्षा दे । [दुः-
मायव । दुष्ट, कपटी, दुः एवाः] दुश्चरित्र, [निषङ्गिणः मर्त्यासः]
रिपवः] तर्कस लिये शत्रुरूप मानव हैं, वे [हन्त्वास] हनन
करनेयोग्य हैं ।

शस्त्रास्त्र लिये शत्रु हमारे चारों ओर खड़े हैं, उनका
वध होनेके बिना मानवों को सुख प्राप्त नहीं हो सकता ।
इसलिये शत्रुको दूर करना योग्य है—

स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्मन्युषर्वुधः स्वस्मिन्न-
ञ्जसि ऋणस्य स्वस्मिन्नञ्जसि । अहर्निद्रो
यथा विदे शीर्ष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः । अस्मत्रा ते
सध्र्यक् संतु रातयोः भद्रा भद्रस्य रातयः ॥

[१०२९, ऋ० १।१३२०]

[स्वर्जय] सुख देनेवाले युद्धमें [उषर्बुधः] प्रातःकालमें जाग्रत होनेवाले वीर । आक्रमण करनेवाले शत्रुको लूँ पराजित करता है । और उसका वध करता है । [त रातयः अस्त्रत्रा सध्यक्] तेरे दान हमारे पास इकट्ठे हों, तेरे दान कल्याण-कारक हों ।

शत्रुको परास्त करके विजय संपादन करना आवश्यक है । इस विषयमें देखिये—

युद्धोंमें विजयी ।

तं त्वा वाजेषु वाजिनं वाजयाम शतक्रतो ।

धनानामिन्द्र सातये । [१२, ऋ० ३।४।१०]

धनोकी हमें प्राप्ति होनेके लिये, हे सैकड़ों कर्म करने-वाले इन्द्र ! [वाजेषु] युद्धोंमें [त्वा वाजिनं वाजयाम] युद्धोंमें लड़नेवाले तुस वीर को बहाते है, [बलिष्ठ करते है, युद्धमें भेजते है ।]

सैकड़ों पराक्रम करनेवाले वीरको शतक्रतु कहते हैं। युद्धोंमें अपने नेता वीरका बल बढ़ानेयोग्य कर्म उसके अनुयायिकोंको करने चाहिये। कभी ऐसा कर्म करना नहीं चाहिये, जिससे अपने नेताकी शक्ति कम या क्षीण हो । तथा—

शाश्वद्भिः पोप्रुथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्व-
न्नाद्भिः धनानि । स नो हिरण्यरथं दंसनावान्
स्स नः सनिता सनये स नोऽदात् ॥

[७१४; ऋ० १।३०।१६]

इन्द्रने [पोप्रुथद्भिः] स्फुरण जिनमें दीखता है, [नानदद्भिः] जो हिनहिनाते है, [शाश्वतद्भिः] जिनका जोरसे श्वासोच्छ्वास हो रहा है, ऐसे घोड़ोंके साथ [धनानि जिगाय] धन देनेवाले युद्धोंमें विजय प्राप्त किया । उसने [नः हिरण्यरथं दंसनावान्] हमें सुवर्णका रथ दिया, और उसने हमें [सनये अदात्] दान कर दिया ।

इन्द्र युद्धोंमें हिनहिनानेवाले घोड़ोंके साथ जाता है और विजय प्राप्त करता है । तथा—

कपटी शत्रुका नाश ।

गुहा हिनं गुह्यं गूळहमप्सु अपीवृतं मायिनं
क्षियन्तम् । उतो अपो द्यां तस्तर्भासं अहन्नाहिं
शूर वीर्येण ॥ [११०५; ऋ० २।११।५]

[गुहा हित] गुहामें रहनेवाले, [गुह्यं] गुप्त [अप्सु गूळहं]

पानीमें गुप्त रहनेवाले [अपीवृतं मायिनं] कपटी शत्रुको [क्षियन्तं] अपने कीलेमें रखनेवाले [द्यां अपः तस्तर्भासं] जलोंको बंद करनेवाले [अहिं] शत्रुको अपने [वीर्येण अहन्] पराक्रमसे नष्ट कर दिया है ।

शत्रु जलको प्रतिबंधमें रखता है, क्योंकि जल न मिलनेसे सैनिक हैरान होते है और शीघ्र वश होते हैं । आजभी युद्धमें यही हम देखते है । जल जिसके पास है, वह जिसके पास जल नहीं है उसको, अपने काबू करता है । वही हम इन्द्र और वृत्रके युद्धमें देखते है । वृत्र प्रथम जलपर कब्जा करता है, इस कारण इन्द्रके अनुयायी हैराण होते है, पश्चात् इन्द्र शत्रुका वध करके जलके स्रोत खुले करता है, तब जनता आनंदित होती है । इन्द्र-वृत्रके युद्धमें यह वर्णन स्थानस्थानपर है—

जल सुप्राप्य करना ।

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन् निरुद्धा आपः पणिनेव
गावः । अपां बिलं अपिहितं यदासीत् वृत्रं जघन्वां
अप तद्ववार । [७२५; ऋ० १।३२।११]

[दास-पत्नीः अहिगोपाः आपः अतिष्ठन्] दास शत्रुने अपने आधीन किये जल [निरुद्धाः] रोके हुए थे, जैसे [पणिना इव गावः] बनिया गौवोंको रोकता है । इन जलोंका द्वार [अपिहितं आसीत्] ढंका हुआ था । पर इन्द्रने [वृत्रं जघन्वान्] वृत्रको मारा और [तत् अप ववार] वह द्वार खोल दिया ।

शत्रुने जलको अपने अधीन किया था, उस शत्रुको परास्त करके जल सबको मिलनेयोग्य खुला कर दिया । यह युद्धनीति है । युद्धयमान एक पक्ष दूसरेका जल बंद करता है, जिससे उसके सैनिक जलके बिना तड़पने लगते हैं । फिर वह इस शत्रुको परास्त करता और जलको सुप्राप्य बनाता है । इसी तरह अन्न, वस्त्र, तथा स्थानके विषयमें जानना योग्य है ।

जेता नृभिः इन्द्रः पृत्सु शूरः श्रोता हवं नाधमा-
नस्य कारोः । प्रभर्ता रथं दाशुप उपाक उद्यंता गिरो
यदि च त्मना भूत् ॥ [१०९८; ऋ० १।१७८।३]

[शूरः इन्द्रः] शूर इन्द्र [नृभिः] अपने वीरोंके साथ [पृत्सु] युद्धोंमें [जेता] विजय करता है । [नाधमानस्य कारोः]

हवं श्रोता] नाथ होनेकी इच्छा करनेवाले कारीगरका कहना सुनता है । [दाक्षुषः रथं उपाके प्रभर्ता] दाताके रथ को वित्तके पास पहुंचाता है । [यदि त्मना भूत] यदि उसमें इच्छा हुई, तो वह [गिरः उद्यन्ता] वाणियों को भी प्रेरणा करता है ।

वीर अपने अनुयायियोंको युद्धमें जानेकी प्रेरणा करता है । इसकी प्रेरणासे प्रेरित हुए वीर युद्ध करते और जीजयी होते हैं ।

शत्रुको जंजिरोसे बांधकर कारागारमें रखना ।

स त्वर्णिर्महौ अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः । येन शुष्णं मायिनं आयसो मदे दुध्र आभूषु रामयन्नि दामनि ॥ [८०७; ऋ० १।५६।३]

[सः] इन्द्र[तुर-वनिः] त्वरासे कार्य करता है, इसलिये [महान्] बड़ा है । उसका [तुजा शवः अरेणु] हिंसक बल निर्मल है, स्वच्छ है, वह [पौंस्ये] पौरुष दिखानेके युद्धमें [गिरेः भृष्टिः न भ्राजते] पर्वतके शिखरके समान चमकता है । [मदे] आनन्दमें [दुध्र] रहता हुआ वह इन्द्र [मायिनं शुष्णं] कपटी शोषक शत्रुको [आयसः आभूषु दामनि] लोहेके कारागृहमें जंजिरोसे [नि रामयन्] रख देता है ।

शत्रु जब पकड़ा जाता है, तब उसको प्रतिबंधमें रखना योग्य ही है—

फौलादका तीक्ष्ण वज्र ।

त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयोऽव त्मना धृषता शंवरं भिनत् । यन्मायिनो व्रन्दिनो मन्दिना धृषन् शितां गभस्ति अशनिं पृतन्यसि । [७८९; ऋ० १।५८।४]

[मन्दिना धृषत्] आनन्ददायक तामसे उत्साहयुक्त बना हुआ [शितां गभस्ति अशनिं] तीक्ष्ण वज्रको हाथमें लेकर [मायिनः पृतन्यसि] कपटी शत्रुसे जिस समय तू युद्ध करता है, उस समय [बृहतः दिवः सानु कोपयः] बड़े बुलोक के शिखरको तू ढिला देता है और शंवर राक्षस को अपने बलसे [अव भिनत्] छिन्न भिन्न करता है ।

शत्रुके शस्त्रास्त्रोंकी अपेक्षा अपने शस्त्र अधिक प्रखर रहने चाहिये । तब नि संदेह विजय होता है । इन्द्रका मुख्य शस्त्र वज्र है । यह फौलाद का अति तीक्ष्ण शस्त्र है । इन्द्रके पास अन्य भी अस्त्र बहुत होते हैं । शत्रुसे ये शस्त्रास्त्र अच्छे होते हैं, इसलिये इन्द्र विजयी होता है—

जघन्वां उ हरिभिः संभृतक्रनो इन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयन्नपः । अयच्छथा वाहोर्वृत्रमायसं आधारयो दिव्या सूर्यं दृशे ॥ [७९७; ऋ० १।५०।८]

हे [संभृतक्रनो इन्द्र] संपूर्ण बलोंसे युक्त इन्द्र ! [मनुषं अपः गातुयन्] मानवोंकी ओर जलके प्रवाह भेजनेके लिये [हरिभिः वृत्र जघन्वां] घोड़ोंको साथ लेकर तूने वृत्रको मार डाला, उस समय तूने [आयसं वज्र अवारयः] फौलादका वज्र धारण किया था और [दिवि दृशे सूर्य] आकाशमें सर्वत्र प्रकाश होनेके लिये सूर्यको स्थापन किया था ।

इन्द्र कपटी शत्रुओंसे कपट करता है, सीधे शत्रुओंसे सीधा बर्ताव करता है । कपटी शत्रुओंके कपटजालमें कभी फंसता नहीं । यह यहाँ विशेष रीतिसे देखना चाहिये ।

कपट करनेवालोंसे कपट ।

त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुभाचजुह्वत । त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्चानं दस्युहृत्येषु आविथ ॥

[७४९; ऋ० १।५१।५]

हे इन्द्र ! जो [स्वधाभिः शुभो अधि अजुह्वत] जो अपने ही मुखमें अन्नोंका हवन करते हैं, अर्थात् जो स्वयं भोग भोगते हैं, उन [मायिनः] कपटियोंको तूने [मायाभि अप अधमः] कपटोंसेही नीचे गिराया, [त्वं नृमणः पिप्रोः पुरः प्रारुजः] तूने धनेच्छु पिप्रु नामक शत्रुके नगरोंको तोड़ दिया, और तूने [ऋजिश्चानं] ऋजिश्वाको [दस्युहृत्येषु] शत्रुओंका वध करनेके समयमें बचाया ।

[मायाभिः मायिनः अप अधमः] कपटोंसे कपटी शत्रुओंको दबाना योग्य है । सर्वत्र यही न्याय है, जो वेदने बताया है । शत्रुके नगर, कीले, देश आदि जलाना, तोड़ना नष्ट करना, यह भी एक युद्ध की नीति ही है, देखिये—

शत्रुओंके नगर फोड़ डाले ।

अभि सिध्मो अजिगादस्य शस्त्रन् वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत् । सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मर्तिं अतिरच्छाशदानः । [७५२; ऋ० १।३३।१३]

[अस्य सिध्मः शस्त्रन् अभि अजिगात्] इस इन्द्रका यशस्वी वज्र शस्त्रपर जा गिरा, इसने [तिग्मेन पुरः विभेत्] तीक्ष्ण शस्त्रसे नगरोंको तोड़ डाला । इन्द्रने [वृत्रं वज्रेण स असृजत्] वृत्रपर वज्र फेंक दिया और [शाशदानः स्वः]

मतिं अतिरत्] प्रशंसित हुआ, वह इन्द्र अपनी बुद्धिके अनुसार विजयको प्राप्त कर सकता है ।

त्वं करञ्जमुत्तर्पण्य वधी तेजिष्ठयातिथिग्वस्य
वर्तनी । त्व शता वंगृदस्याभिनत् पुरोऽ-
नानुद परिषूता ऋजिष्विना ॥ [७८२; ऋ० १।५३।८]
अतिथिग्व राजाके तेजस्वी चक्रसे तू करज और पर्णय
शस्त्रोंका वध किया व ऋजिष्वाने घेर हुए [शता पुरः
अभिनत्] शस्त्रके सौ कीलों अथवा नगरोंको तोड़ दिया ।

आ यद्धरी इन्द्र विव्रता वेरा ते वज्रं जरिता
वाहोर्धात् । येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान् पुर
इष्णासि पुरुहूत पूर्वाः ॥ [८८६; ऋ० १।६३।२]

[यत्] जब हे इन्द्र ! तेरे [हरी] छोड़े [विव्रता वेः]
इधर, उधर भटकते थे, उनको तूने [आ] पाम लाकर रथ-
को जोड़ दिया, तब [ते बाह्योः वज्र] तेरे ब हुमें वज्र
[जरिता आधात्] स्तोताने रख दिया । हे [अ-वि-हर्यत
क्रतो] हे अजिंक्य वीर ! हे [पुरुहूत] बहुतों द्वारा प्रश-
सित ! तू [अमित्रान् पूर्वाः पुरः] शस्त्रोंको और उनके
बहुतसे नगरोंको [इष्णासि] नाश करनेकी इच्छा करता है ।

शत्रुके सैंकड़ों कीलोंका नाश ।

अध्वर्यवो य शतं शंबरस्य पुरो विभेदाश्वनेव
पूर्वाः । यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्र अपाव-
पद् भरता सोममस्मै ॥ [११५५; ऋ० २।१४।६]

जिसने शबरके [शतं पुर विभेद] सौ कीले तोड़ दिये,
[शत सहस्र अपावत्] जिसने लाखों सैनिकोंका नाश
किया, उस इन्द्रको सोम अर्पण करो ।

न्याविध्यदिलीविशस्य दृळ्हा वि शृङ्गिणं अभि-
नच्छुष्णमिन्द्र । यावत्तरो मधवन् यावदोजो वज्रेण
शत्रुं अवधीः पृतन्युम् ॥ [७४०; ऋ० १।३३।१२]

[इलिबिशस्य दृळ्हा न्याविध्यत्] शत्रुके सुदृढ़ कीलोंको
तोड़ दिया । [शृङ्गिण शुष्ण वि अभिनत्] शींगाले शुष्ण
को छिन्नभिन्न किया । हे इन्द्र ! त्वरासे और बलसे तूने
[पृतन्यु शत्रु वज्रेण अवधीः] युद्धकी इच्छा करनेवाले
शस्त्रका वज्रसे वध किया ।

प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदरः । याभिः
काण्वस्योप बर्हिंरासदं यासद् वज्री भिनत्पुरः ॥

[९४; ऋ० ८।१।८]

उसके लिये गायत्र सामका गायन करो, जो [पुरंदरः]
शस्त्रके नगरोंको तोड़नेवाला सबको पूज्य है, जो कण्वके
यज्ञमें जाता है और जो वज्रधारी [पुरः भिनत्] शस्त्रके
कीले तोड़ता है ।

शस्त्रके कीले अथवा नगर जलाकर, तोड़ कर जो शत्रुका
नाश करता है वह वीर इन्द्र है । कण्व नाम ज्ञानी का है ।
पुरां भिन्दुर्युवा कविरमितौजा अजायत । इन्द्रो वि-
श्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुषुतः ॥ [७३; ऋ० १।११।४]

इन्द्र [पुरा भिन्दु] शस्त्रके कीलोंका या नगरोंका
भेदन करनेवाला, [युवा कवि] तरुण कवि, [अमित भोजा]
अत्यंत बलवान् [वज्री] वज्रादि शस्त्र धारण करनेवाला,
[विश्वस्य कर्मणो धर्ता] सब कर्मोंका धारण करनेवाला
अर्थात् सब कर्मोंको निभानेवाला होनेके कारण [पुरुषुतः]
अनेकों द्वारा प्रशंसित [अजायत] हुआ है ।

इस तरह के शूरा के कारण वह सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

वि दृळ्हानि चिदद्रिवो जनानां शचीपते ।

वृह माया अनानतः ॥ [२०६८; ऋ० ६।४५।९]

हे वज्रधारी शचीपते इन्द्र ! शस्त्रके [दृळ्हानि] सदृढ़
कीले भी [विवह] तोड़ दो ।

बनावटी कीलोंका नाश ।

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओज-
सा विनाशयन् । ज्योतींषि कृण्वन्नवृकानि यज्यवेऽ-
व सुक्रतु सर्तवा अप सृजत ॥ [८०२; ऋ० १।५५।६]

[स श्रवस्युः] वह कीर्तिकी इच्छा करनेवाला इन्द्र
[ओजसा वृधान नः] अपने पराक्रमसे बढ़नेवाला । क्षमया
कृत्रिमा सदनानि] शत्रुके भूमिके साथ रहनेवाले बनावटी
कीलोंका [विनाशयत्] नाश करता है । [यज्यवे] याजकके हित
के लिये [नवृकानि ज्योतींषि कृण्वन्] तेजोंको खुड़ा करने-
वाला वह [सक्रतु] उत्तम कर्म करनेवाला इन्द्र [अपः सर्तवै
अव सृजत] जलोंको प्रवाह बननेके लिये उत्पन्न करता है ।

बनावटी कीले वे होते हैं । [कृत्रिमा सदना] कि जो
सेना अपनी रक्षार्थ थांडसे परिश्रमसे तैयार करती है ।
ये भी इन्द्र तोड़ता है और शत्रुको परास्त करता है ।

बीस राजोंसे युद्ध ।

त्वमेतान् जनराज्ञो द्विर्दशाऽबंधुना सुश्रवसो
पजग्मुषः । षष्टिं सहस्रा नवर्ति नव श्रुतो नि
चक्रेण रथ्या दुष्पदावृणक् ॥ [७८३; ऋ० १।५३।९]

[अवन्धुना] सहायता के बिना [सुश्रवसा] सुश्रव अर्थात् कीर्तिमान् राजाने जिन [द्विः दश जनराज] बीस जनराजोंके ऊपर हमला किया था, उनके ६००९९ रथोंसे युक्त दुर्धर्ष सेनाको अपने चक्रसे तूने [नि वृणक्] नष्ट कर दिया।

सेनामें ६००९९ रथों के लिये छः लाख सैनिक आवश्यक हैं। इतनी बड़ी सेनाके साथ यह युद्ध हुआ, ऐसा वर्णन यहां है। यह वर्णन काल्पनिक या रूपरुभी माना जाय, तो भी बड़ी सेनाका संचालन यहां दीखता है, वह विचार के योग्य है।

इन्द्रके रथके घोड़े ।

आ द्वाभ्यां हरिभ्यां इंद्र याहि आ चतुर्भिरा षड्भिर्ह्यमानः। आष्टाभिर्दशभिः सोमपेयमयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ॥ ४ ॥ आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वाडा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः। आपञ्चाशता सुरथेभिरिन्द्राऽऽ षष्ठ्या सप्तत्या सोमपेयम् ॥ ५ ॥ आशीत्या नवत्या याह्यर्वाडा शतेन हरिभिरुह्यमानः। अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इंद्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ॥ ६ ॥

[११९३-१५; ऋ० २।१।४-६]

हे इंद्र! दो, चार, छः, आठ, दस, बीस, तीस, चालीस, पचास साठ, सत्तर, अमी, नब्बे, अथवा सौ घोड़ों को जोते हुए रथमें बैठकर यहां आ और इस सोमका ग्रहण करो।

इन्द्रके घोड़ोंका यह वर्णन है। इस समय राष्ट्रपतिका जलूय पचास या साठ घोड़ोंके रथमें बिठलाकर निकालनेका वर्णन देखते हैं। इससे १०० घोड़ोंके रथमें इन्द्रका जलूय निकालना, विजय! वीरका जलूय ऐसा बड़ा निकालना संभव तो हो सकता है। इसमें कोई अत्युक्ति प्रतीत नहीं होती।

शिरस्त्राण धारण करनेवाला इंद्र ।

इंद्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रतस्तुविकूर्मिर्ऋधावान्। यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु क त्या त्ये वृषभ वीर्याणि॥ त्वं हि ष्मा च्यावयन्नच्युतानि एको वृत्रा चरसि जिघ्रमानः। तव द्यावापृथिवी पर्वतासोऽनु व्रताय निमित्तेव तस्थुः ॥ [१२४०-४१; ऋ० ३।३०।३-४]

हे [वृषभ] बलवान् इन्द्र! तू [सु-शिप्रः] उत्तम शिरस्त्राण धारण किया हुआ, [मघ-वा] धनवान् [तरुत्रः] त्वरासे

संरक्षण करनेवाला, [महाव्रतः] महासेनाको चलानेवाला, [तुवि-कूर्मिः] महापराक्रमी, [ऋधावान्] समृद्धिवान् और [उग्रः] बड़ा पराक्रमी है। तू [मर्त्येषु बाधित] मानवोंमें जो पराक्रम किये, वे तेरे पराक्रम [क] कहां हुए हैं?

तू [एकः] अकेलाही [अच्युतानि च्यावयन्] स्थिरों को हिलानेवाला है, तू [वृत्रा जिघ्रमानः] शत्रुओंका वध करता है। तेरे [अनुव्रताय] अनुकूल कार्य करनेके लिये बुलोक, भूलोक और सब पर्वत [निमिता इव तस्थुः] स्थिर जैसे रहे हैं।

बड़ा पादत्राण ।

अभिव्लग्या चिदद्विवः शीर्षा यातुमतीनाम् । छिन्धि बटूरिणा पदा महाबटूरिणा पदा ॥ २ ॥ अवासां मघवज्जहि शर्धो यातुमतीनाम् । वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ॥ ३ ॥

[१०३५-३६; ऋ० १।१३२]

हे [अद्विवः] वज्रधारी! [अभिव्लग्या] हूँ हूँ कर [यातु-मतीनां शीर्षा] दुष्टोंके शिर [बटूरिणा पदा छिन्धि] पादत्राण-युक्त पावसे तोड़, बड़े पादत्राणयुक्त पावसे तोड़, दुष्टोंको [अव जहि] बड़े स्तनानमें नष्ट कर।

शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य ।

इदं न हि त्वा न्यृषन्त्यूर्मयो ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना। त्वष्टा चित्ते युज्य वावृधे शवः ततक्ष वज्रं अभिभूत्योजसा ॥ [७६६; ऋ० १।५२।७] जिस तरह [ऊर्मयः हर्दं] जलप्रवाह जलाशय को भर देते हैं, उस तरह [ब्रह्माणि तव वर्धना] ये स्तोत्र तेरी बधाई को भर देते हैं, वर्णन करते हैं। त्वष्टाने [युज्यं शवः] तेरे योग्य बल [वावृधे] बढ़ाया और [अभिभूति-ओजसा वज्र ततक्ष] शत्रुका पराभव करनेकी शक्तिके साथ तेरे लिये वज्रभी बनाया।

इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु ।

त्वमेतान् रुदतो जक्षतश्च अयोधयो रजस इंद्र पारे। अवादहो दिव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमाव ॥ ७ ॥ चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुंभमानाः। न हिन्वानासस्तितिरुस्त इंद्रं परि स्पशो अदधात् सूर्येण ॥ ८ ॥ [७३६-३७; ऋ० १।३३।७-८]

हे इन्द्र ! तूने इन [रुद्रतः जक्षतः च] रोनेवाले और भोग भोगनेवाले शत्रुओंको (अयोधयः रजसः पारे) युद्ध करके अन्तरिक्षके पार भगा दिया । (दस्युं अदहः) तूने शत्रुको जला दिया और [दिवः अव] शुलोकसे उसको नीचे गिरा दिया । तथा [शंसं आवः] याजकोंकी स्तुतियोंको उच्च स्थानमें स्थिर किया है ।

सोनेके आभूषणोंसे सुशोभित हुए वे शत्रु [पृथिव्याः परीणहं चक्राणास] पृथ्वीके परिवर्षमें अमण करते थे, वेभी (स्पृशः) शत्रुके दूत [इन्द्रं हिन्वानामः न तितिरः] इन्द्रको परीजित न कर सके । पर [सूर्येण परि अदधात्] उमने ही शत्रुओंको सूर्यप्रकाशसे आच्छादित किया ।

यह युद्ध नि संन्देह पृथ्वीके ऊपरका नहीं है । यह आकाशमें होनेवाला युद्ध है अथवा यह रूपक भी होगा ।

शत्रुका वध और सत्यप्रचार ।

प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्ते शत्रून् । जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु ॥ [१२४३, ऋ० ३।३।१६]

हे इन्द्र ! [ते] तेरा रथ दो घोड़ोंके द्वारा शीघ्र यहां आवे [ते वज्रः] तेरा वज्र [शत्रून् प्रमृणन् प्र एतु] शत्रुओं का वध करता हुआ चले । [प्रतीचः] हमला करनेवाले शत्रुओंको, [अनूचः] दोनों ओरसे आनेवाले शत्रुओं को, तथा [पराचः] भागनेवाले शत्रुओंको तू नष्ट कर, [विश्वं सत्यं कृणुहि] विश्वमें सत्यका प्रचार कर और वह सर्वत्र [विष्टं अस्तु] प्रविष्ट हो कर रहे ।

आगे बढ़ ।

प्रेहि अभिहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते । इन्द्र नृमणं हि ते शवो हनो वृत्रं जया अपो अर्चन्नु स्वराज्यम् ॥ [१००, ऋ० १।८।१३]

हे इन्द्र [प्रेहि] शत्रुपर चढ़ाई कर, [अभिहि] शत्रुका नाश कर, [धृष्णुहि] शत्रुको परास्त कर । [ते वज्रः न नियंसते] तेरे वज्रका प्रतिकार कोई कर नहीं सकता । हे इन्द्र ! [ते शवः नृमणं] तेरा बल विजयकारी है, अतः [वृत्रं हनः] शत्रुका नाश कर, [अपः जय] जलोको प्राप्त कर, [स्वराज्यं अर्चन्नु] स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर ।

नव्वे नदियाँ ।

वि ते वज्रासो अस्थिरन् नवतिं नाव्या अनु । महत् त इन्द्र वीर्यं बाह्योस्ते बलं हितं अर्चन् अनु स्वराज्यम् ॥ [१०७, ऋ० १।८।१८]

हे इन्द्र ! [ते वज्रासः] तेरे वज्र [नवतिं नाव्या अनु] नौकाएं जिनमें चलती है, ऐसे नव्वे नदियोंके पास [वि अस्थिरन्] पहुंचे हैं । तेरा पराक्रम बहुत बड़ा है, तेरे बाहुओंमें बहुत बल है, स्वराज्यकी अर्चना करते हुए यह सब कर ।

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः । तमिन्महन्स्वाजिषूतमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् ॥ [११६, ऋ० १।८।११]

[वृत्रहा इन्द्रः] शत्रुनाशक इन्द्र [मदाय शवसे] आनन्द और बल बढ़ानेके लिये [नृभिः वावृधे] मनुष्योंने बढ़ाया है, मनुष्योंने उसकी बधाई की है । [तं महत्सु आजिषु] उसको हम बड़े समारोहमें तथा [अर्भे हवामहे] भयानक युद्धमें बुलाते हैं । वह हमें [वाजेषु अविषत्] युद्धोंमें बचावे ।

युद्धके समय इन्द्र की सहायता मांगी जाती है । क्योंकि इन्द्रही वीर्य बढ़ाता है ।

असि हि वीर सेन्योऽसि भूरि पदाददिः । असिदभ्रस्य चिद्वृधो यजमानाय शिशसि सुन्वते भूरि ते वसु ॥ [११७, ऋ० १।८।१२]

हे वीर ! तू [सेन्यः असि] सेना अपने पास रखनेवाला वीर है । शत्रुओंका [भूरि पदाददिः] परास्त करनेवाला है, [दभ्रस्य वृधः] छोटेको तू बढ़ानेवाला है, तू यजमान को ज्ञान सिखाता है [ते भूरि वसु सुन्वते] तेरा बहुत धन यज्ञ करनेवाले के लिये ही है ।

अरोरवीद् वृष्णो अस्य वज्रोऽमानुषं यन्मानुषो निर्जूवात् । नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत् पपिवान्सुतस्य ॥ [११९०, ऋ० २।१।१०]

[मानुषः] मनुष्यका हित करनेवाले इन्द्रने जब [अमानुषं] अमानुष शत्रुका वध किया, तब इसका वज्र [अरोरवीत्] गर्जना करने लगा । सोम रस पीनेवाले इन्द्रने [मायिनः दानवस्य मायाः निः अपादयत्] कपटी शत्रुके सब कपटोंका नाश किया ।

न क्षाणीभ्यां परिभे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्व-
तैरिन्द्र ते रथः । न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदा-
शुभिः पतासि योजना पुरा ॥ [११७८; ऋ० २।१६।३]

[त इन्द्रियं] तेरा सामर्थ्य आकाशपृथिवी [न परिभे] कम
नहीं कर सकते, समुद्रों और पर्वतोंसे तेरे रथको प्रतिबंध
नहीं होता, तेरे वज्रको कोई पराभूत नहीं कर सकता,
ऐसा तू अपने सत्वर चलानेवाले घोड़ोंसे बहुत योजन तक
[पतासि] दूर जाता है ।

अथाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद् यदस्याग्रे ब्रह्मणा
शुष्ममैरयः । रथेष्ठन हर्यश्वेन विच्युताः प्र जीरयः
सिस्वतं सधयक् पृथक् ॥ [११८३, ऋ० २।१७।३]

हे इन्द्र ! तू प्रथम बड़ा पराक्रम करने लगा, उस समय
ज्ञानके साथ बड़ा बल तूने प्रकट किया । रथमें बैठे इन्द्रने
[विच्युताः] अपने स्थानसे अष्ट किये शत्रु [सधयक्] इकट्ठे
मिलकर तथा [पृथक्] अलग अलग रहकर भी [सिस्वते]
भागते रहते हैं ।

विश्वजिते धनजिते स्वजिते सत्राजिते नृजिते
उर्वराजिते । अश्वजिते गोजिते अग्निजिते भर्ष-
द्राय सोमं यजनाय हर्यतम् ॥ १ ॥ अभिभुवे-
ऽभिभंगाय वन्वतेऽषाळहाय सहमानाय
वेधसे । तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे
नम इन्द्राय वोचत ॥२॥ [१२१७-१८; ऋ० २।२१]

[विश्वजिते] विश्वविजयी, [धनजिते] धनको जीतनेवाले,
[वजिते] तेजस्विता प्राप्त करनेवाले, [सत्राजिते] साथ साथ
जीतनेवाले, [नृजिते] मानवी शत्रुको जीतनेवाले, [उर्वरा-
जिते] उपजाऊ भूमिको जीतनेवाले, [अश्वजिते] घोड़ोंको
जीतनेवाले, [गोजिते] गौओंको जीतनेवाले, [अग्निजिते] जलको
जीतनेवाले, [अभिभुवे] सामनेसे शत्रुका पराभव करनेवाले,
[अभिभंगाय] शत्रुका नाश करनेवाले [अषाळहाय] जिसका
प्रताप शत्रुको सहन नहीं होता, [सहमानाय] पर शत्रुका
हमला सहन करनेवाले, [वेधसे] शत्रुका वेध करने-
वाले, अग्नि जैसे तेजस्वी, [दुष्टरीतवे] जिसका पार करना
अशक्य है, ऐसे [सत्रासाहे] मिलकर हमला करनेपर भी
जो अपने स्थानपर स्थिर रहता है, ऐसे इन्द्रका स्तोत्र हम
गाते हैं ।

यहां इकट्ठे इन्द्रके बहुतसे कर्म बताये हैं, ये देखनेयोग्य हैं—

सर्व कर्मोंमें अग्रेसर ।

त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसे महो नृम्णस्य
धर्मणामिरज्यसि । प्र वीर्येण देवताति चैकिते
विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः ॥

[७९९; ऋ० १।५।३]

हे इन्द्र ! तू [मह. नृम्णस्य] बड़े धनका और [धर्मणां
धर्मणामिरज्यसि] धर्मोंका अधिपति है । तू अपने पराक्रमसे देवता-
ओंमें प्रतिष्ठा पाता है, क्योंकि तू [विश्वस्मै कर्मणे] सब
कर्मोंमें [उग्रः पुरोहित] प्रबल अग्रगामी वीर है ।

पुरोहित का अर्थ यहाँ नेता है, जो कर्म करने के लिये
आगे होता है ।

बलशाली धन ।

अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्त्रिणम् ।

यस्मिन् विश्वानि पौंस्या ॥ [२२; ऋ० १।५।९]

[यस्मिन् विश्वानि पौंस्या] जिसमें सब प्रकारके बल
हैं, ऐसी शक्ति इन्द्र हमें देवे, क्योंकि [इन्द्रः अ-क्षित-
उतिः] इन्द्रके रक्षण करनेके सामर्थ्य अनंत हैं ।

हमें धन चाहिये, पर वह ऐसा चाहिये कि, जिसके साथ
हमारे पास सब प्रकारके सामर्थ्य भी प्राप्त हो । ऐसा धन
हमें नहीं चाहिये कि, जो हमें कमजोर बनावे ।

एन्द्र सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् ।

वर्षिष्ठमूतये भर ॥ [३८; ऋ० १।८।१]

हे इन्द्र । [स-जित्वानं] सदा जयशाली, [सदा-सहं]
सदा शत्रुका नाश करनेमें समर्थ और [वर्षिष्ठ] सदा
बढ़नेवाला और कभी न घटनेवाला ऐसा [सानसिं रयिं]
सुख देनेवाला धन [ऊतये आभर] हमारी रक्षाके लिये
हमारे पास भर कर ले आ ।

हमें धन ऐसा चाहिये कि, जिससे हमारा सदा जय
होता रहे, शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य हमारे पास रहे,
हमारे महत्कार्योंमें जितना धन हमें आवश्यक हो, उतना
सदा मिलता रहे, धनके अभावके कारण हमारे पुरुषार्थ
रुके न रहे, तथा हमारी रक्षा होती रहे । अर्थात् हमें ऐसा
धन नहीं चाहिये, जिस धनमें फंस कर हमारा पराभव
होता रहे, जिससे हम शत्रुका नाश करनेमें असमर्थ हो
जाय, जो आवश्यक कर्तव्योंके लिये न्यून हो जाय और
जिससे हम अपनी रक्षा करनेमें असमर्थ सिद्ध हो जाय ।

हमें धन मिले ।

सं गोमादिन्द्र वाजवदसे पृथु श्रवो बृहत् । विश्वा-
धर्होक्षितम् ॥ अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसा-
तमम् । इन्द्र ता रथिनीरिषः ॥ [५४-५५, ऋ० १।९।७-८]

हे इन्द्र ! हमें ऐसा धन मिले, जिसके साथ [गोमत्]
बहुत गौधे हों, [वाजवत्] बहुत घोड़े अर्थात् वाहन हो,
[अ-क्षितं] जो नाश न होनेवाला हो, जो [विश्व-आयु]
सब प्रकारसे आयुष्य बढ़ानेवाला हो, [पृथु-बृहत् श्रवः]
जो विपुल तथा श्रेष्ठ प्रकारके शशसे युक्त हो । हे इन्द्र !
हमें [सहस्र-सातमं] सहस्रों प्रकारका [बृहत् द्युम्न श्रवः]
विपुल और तेजस्वी धन हो । [ता रथिनी र्ष] तथा
अन्न ऐसा हो कि, जो अनेक गाड़ियोंमें भरकर लाया जा सके।

हमारे घरमें गौधे, घोड़े, वाहन, गाड़ियाँ, रथ, धन भरपूर
हो, किसी तरह न्यूनता न रहे । अन्नभी बहुत हमें प्राप्त
हो । हमसे इस धनका उत्तम उपयोग हो, जिससे हमारा
यश चारों दिशाओंमें फैले । इस तरहका धन हमें चाहिये ।

इन्द्रकी गुह्य मन्त्रणा ।

अथा ते अन्तमानां विद्याम सुमतीनाम् ।

मा नो अति ख्यः ॥ [६, ऋ० १।१३]

‘ तेरी गुह्य सुमतियां हमें मालूम हों, हमारे शत्रु उनको
न जान सके । ’

‘ अन्तम सुमति ’ वह है, जो राज्यशासन करनेवाले
वीरोंके पास ही रहती है । गुह्य सलाह या मसलत, गुप्त
मन्त्रणा इन्द्रके पास रहती है, क्योंकि यह इन्द्र सब
विश्वका साम्राज्य चलाता है । हम उसके अनुयायी हैं,
इसलिये वह मन्त्रणा हमें ही मालूम हों, पर शत्रुओं को
उनका पता न लगे ।

घुटने जोड़कर प्रार्थना ।

स वह्निभिः ऋक्भिः गोषु शश्वन् मितञ्जुभिः

पुरुकृत्वा जिगाय । पुरः पुरोहा सखिभिः

सखीयन् दृढ्वा सरोज कविभिः कविः सन् ।

[२०१३, ऋ० ६।३२।३]

[सः] उस इन्द्रने [मितञ्जुभिः] घुटने जोड़कर प्रार्थना
करनेवालोंके लिये [पुरुकृत्वा जिगाय] बारबार विजय
किया । उस इन्द्रने अनेक मित्रोंके साथ शत्रुके [दृढ्वा
पुरः] सुदृढ नगर तोड़ दिये ।

इन्द्र और माताका संवाद ।

जज्ञानो नु शतक्रतुः वि पृच्छदिति मातरम् ।

क उग्राः के ह शृण्विरे ॥ १॥

आर्दा शवस्यब्रवीत् और्णवाभं अहीशुवम् ।

ते पुत्र सन्तु निष्ठुरः ॥ २॥

समित् तान् वृत्रहासिदत् खे अरौ इव खेदया ।

प्रवृद्धो दस्युहाभवत् ॥ ३॥ [६४०-४२; ऋ० ८।७७]

इन्द्र उत्पन्न होते ही अपनी मातासे पूछने लगा कि,
कौन शूर हैं और कौन प्रसिद्ध वीर हैं ? वह माता उससे
बोली कि और्णवाभ और अहीशुव ये वीर हैं । हे पुत्र ! इन
का निःपात करना उचित है । इन्द्रने उनको खींच लिया
और नाश किया, इससे वह बड़ा हुआ ।

माता अपने पुत्रको वीरताकी शिक्षा कैसी देवे, यह इन
मन्त्रोंमें है । माताएं इस का मनन करे । बचपनसे इस
तरह माताएं बोध देती रहेगीं, तो पुत्र वीर ही बनेगे, इस
में संदेह नहीं है ।

अन्तिम निवेदन ।

इन्द्रदेवता के विषयमें इतना मनन यहां पर्याप्त है ।
इन्द्र आत्मा अथवा परमात्मा है, यह प्रथम बताया है
और उत्तर विभागमें इन्द्र क्षत्रिय शूर वीर है, यह भाव
बताया है । इन्द्रकी अन्यान्य विभूतियाँ मन्त्रोंका मनन
करनेके बाद पाठक स्वयं जान सकते हैं ।

इस स्थानपर जो इन्द्रवाचक पद दिये हैं, वे किस
मन्त्रमें कहां हैं, यह पाठक इन सूचियोंसे जान सकते हैं ।
तथा इन सूचियोंका उपयोग करनेपर पाठकोंको इसी तरह
अन्यान्य शब्द मिल सकते हैं कि, जिनसे इन्द्र का ठीक
ठीक स्वरूप जाना जा सकता है ।

अग्निकी अपेक्षा इन्द्रकी सूचियां अधिक हैं । तथा
इसमें उत्तरपदसूची भी विशेष उपयोगी है ।

धन्यवाद ।

इन्द्रकी विशेषण, उपमा, तथा अन्य सूचियां बनानेका
बड़े परिश्रमका कार्य श्री पं० अनंत दिनकर रास्ते, पूना-
निवासीने किया है । इसलिये वे धन्यवाद के लिये योग्य
हैं । अग्निकी सूचियां भी इन्हींकी बनायी हैं ।

अन्तमें पाठकोंसे प्रार्थना यही है कि, वे इस दैवत-
संहिता से जितना अधिक लाभ प्राप्त कर सकते हैं, उतना
प्राप्त करें और वेदके सत्य सिद्धान्त के पास पहुँचनेका
आनन्द प्राप्त करें ।

औध, जि० सातारा

संपादक

माघ वद्य सं० १९९८

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

इन्द्रदेवता का परिचय ।

भूमिका की विषय-सूची ।

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
१ मंत्रस्थानीय विद्युत् ।	३	३८ शत्रुको जजिरोसे बंधकर कारागार में रखना ।	१९
२ इन्द्रिय=इन्द्रकी शक्ति ।	"	३९ मौलादका तीक्ष्ण वज्र ।	"
३ इन्द्र के इन्द्रिय ।	"	४० कपट करनेवालोंसे कपट ।	"
४ विश्वसृष्टि ।	४	४१ शत्रुओंके नगर फोड़ डाले ।	"
५ व्यक्ति-सृष्टि ।	"	४२ शत्रुके सैकड़ों कीलों का नाग ।	२०
६ निरुक्तही व्युत्पत्ति ।	"	४३ बनावटी कीलोंका नाग ।	"
७ उपनिषदोंमें इन्द्रका अर्थ ।	५	४४ बीरा राजों से दुष्ट ।	"
८ मन्त्रकमें इन्द्रशक्ति ।	६	४५ इन्द्रके रथके घोड़े ।	२२
९ प्राज्ञगमन्योंमें इन्द्रका अर्थ ।	"	४६ शिरस्त्राण धारण करनेवाला इन्द्र ।	"
१० वेदमें इन्द्रके विनिषण ।	८	४७ बड़ा पादत्राण ।	"
११ सप्तका एक राजा ।	९	४८ शत्रुका पराभव करनेका सामर्थ्य ।	"
१२ सुलोक से बड़ा ।	"	४९ इन्द्रके अन्तरिक्षस्थ शत्रु ।	"
१३ त्रिलोक इन्द्र से विभक्त नहीं ।	१०	५० शत्रुका वध और सत्यप्रचार ।	२२
१४ कुछ भी दूर नहीं है ।	"	५१ आग बढ ।	"
१५ सुलोक का उत्पादक इन्द्र ।	"	५२ नइवे नदियाँ ।	"
१६ पृथ्वी और जल का उत्पादक ।	"	५३ सब कमोमें अग्नेसर ।	२३
१७ आकाश खड़ा करनेवाला ।	"	५४ बलशाली धन ।	"
१८ नक्षत्र स्थिर किये ।	"	५५ हमें धन मिले !	२४
१९ स्यावर, जंगम कांपते हैं ।	११	५६ इन्द्रकी गुह्य मन्त्रणा ।	"
२० सब का वश करनेवाला इन्द्र ।	"	५७ बुढ़ने जोड़कर प्रार्थना ।	"
२१ इन्द्र का असीम सामर्थ्य ।	"	५८ इन्द्र और माताका संवाद ।	"
२२ तेरे मार्गका अतिक्रमण सूर्य नहीं करता ।	१२	५९ अन्तिम निवेदन ।	"
२३ मैं इन्द्र हूँ= इन्द्र का साक्षात्कार ।	"	६० धन्यवाद ।	"
२४ क्षत्रिय वीर इन्द्र ।	"	इन्द्रदेवताकी सूचियाँ ।	
२५ आर्य के लिये प्रकाश दो ।	१५	१ पुनरुक्त-मन्त्रसूची ।	पृ० २२०-२६१
२६ धार्मिकों का हितकर्ता ।	"	प्रथम मण्डल ।	२२०-२२८
२७ पञ्चजनों का रक्षक ।	"	द्वितीय "	२२८-२२९
२८ लोकहितार्थ युद्ध ।	१६	तृतीय "	२२९-२३२
२९ दशुको दण्ड और आर्योंकी उन्नति करो ।	"	चतुर्थ "	२३२-२३४
३० रक्षण के लिये खड़ा रहो ।	"	पञ्चम "	२३५-२३६
३१ दुष्टों का नाश कर ।	"	षष्ठ "	२३६-२३९
३२ वृत्रवध ।	१७	सप्तम "	२३९-२४०
३३ वज्र को नचाया ।	"	अष्टम "	२४०-२५२
३४ शत्रु वध्य हैं ।	"	दशम "	२५२-२६१
३५ युद्धों में विजयी ।	१८	२ उपमासूची ।	२६२-२६९
३६ कपटी शत्रु का नाश ।	"	३ मन्त्राणां अकारानुक्रमसूची ।	२७०-२९७
३७ जल सुप्राप्य करना ।	"	४ (विशेषण) गुणबोधकपदसूची ।	२९८-३३७
		५ गुणबोधक-सामासिक-पदानां	
		उत्तर-पदसूची ।	३३८-३४८

इन्द्रमन्त्राणां ऋषिसूची ।

(१) इन्द्रः ।

ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठं	ऋषिः	मंत्रसंख्या	पृष्ठं
मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	१-६९	१	नोधा गौतमः	८५६-९९	४६
जेता माधुच्छन्दसः	७०-७७	४	गौतमो राहूगणः	९००-५६	५०
मेधातिथिः काण्वः	७८-८६	"	वार्षागिराः ऋजाश्वाऽम्बरिष-	९५७-७५	५४
प्रगाथो (घौर) काण्वः	८७-८८	५	सहदेव-भयमान-सुराधसः		
मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ	८९-११५	७	रेभः काश्यपः	९७६-९०	५५
मेधातिथिः काण्वः (आङ्गिरसः प्रियमेधश्च)	११६-१५५	"	नेमो भार्गवः	९९१-९३; ९९६-९९	५६
देवातिथिः काण्व	२२९-४२	१३	इन्द्रः	९९४-९५	"
वत्स काण्व	२४३-८७	१४	परुच्छेपो दैवोदासि-	१०००-१०४१	५७
शर्वतः काण्वः	२८८-३२०	१५	अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	१०४२-११००	६१
नारदः काण्वः	३२१-५३	१७	गृत्समदो भार्गवः शौनक-	११०१-१२३७	६५
गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ	३५४-८१	१८	गाथिनो विश्वामित्रः	१२३८-१४३६	७५
इरिम्बिठिः काण्वः	३८२-४०८	१९	कुशिक ऐषीरथिः	१२६०-१२८१	७७
सोभरिः काण्वः	४०९-२४	२०	वामदेवो गौतमः	१४६७-१६६६	९०
नीपातिथिः काण्वः	४२५-३९	२१	गौरिवीतिः शाक्यः	१६६७-८१	१०३
महत्तं वसुरोचिषोऽङ्गिरस	४४०-४२	"	बभ्रुरात्रेय-	१६८२-९२	१०४
त्रिशोकः काण्वः	४४३-८४	२२	अवस्थुरात्रेयः १६९३-१७०४; गातुरात्रेयः १७०५-१६	१०५	१०५
प्रस्कण्वः काण्वः	४८५-९४	२३	प्राजापत्यः संवरणः	१७१७-३५	१०६
पुष्टिगुः काण्वः	४९५-५०४	२४	प्रभूवसुराङ्गिरसः १७३६-४९; भौमोऽत्रिः १७५०-६८	१०८	१०८
श्रुष्टिगुः काण्वः	५०५-१४	२५	इयावाश्च आत्रेयः	१७६९-८२	११०
आयुः काण्वः	५१५-२४	"	आत्रेयी अपाला	१७८३-८९	१११
मेधयः काण्वः	५२५-३२	२६	विश्वमना वैयश्वः	१७९०-१८१६	"
मातरिश्वा काण्वः	५३३-३८	२७	वशोऽङ्ग्यः	१८१७-४०	११२
कृशः काण्वः	५३९-४३	"	बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	१८४१-२००५	११४
पृषध्रः काण्वः	५४४-४७	"	सुहोत्रो भारद्वाजः	२००६-१५	१२५
भर्गः प्रागाथः	५४८-६५	२८	शुनहोत्रो भारद्वाजः	२०१६-२५	१२६
प्रगाथो घौरः काण्वः	५६६-७७	२९	नरो भारद्वाजः	२०२६-३५	१२७
प्रगाथः काण्वः	५७८-६१२	३०	वायुर्बार्हस्पत्यः	२०३६-२१०३	१२८
कलिः प्रागाथः	६१३-२७	३१	गर्गो भारद्वाजः	२१०४-१८	१३२
कुरुसुतिः काण्वः	६२८-६०	३२	मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	२११९-२२९०	१३३
एकधूनौधसः ६६१-६९; कुसीदी काण्वः ६७०-८७		३४	प्रियमेध आङ्गिरसः	२२९१-२३२०	१४५
आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः	६८८-७१४	३५	पुरुहन्मा आङ्गिरसः	२३२१-३५	१४६
हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः	७१५-४४	३६	तिरश्चाराङ्गिरसः	२३३६-६३	१४७
सव्य आङ्गिरसः	७४५-८१६	३८	द्युतानो वा मारुतः	२३४५-६३	१४८
कृत्स आङ्गिरसः	८१७-५५	४४	नृमेध आङ्गिरसः	२३६४-८३	१४९
			नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ	२३८४-९६	१५०

श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः	२३९७-२४२९	१५१
सुकक्ष आङ्गिरसः	२४३०-६२	१५३
त्रिशिरास्त्वाष्ट्र	२४६३-६५	१५४
ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, } वासुको वसुकृद्वा	२४६६-९०	"
ऐन्द्रो वसुकः	२४९१-२५२९	१५६
कवष ऐल्लषः	२५३०-४०	१५९
सुष्कवातिन्द्रः	२५४१-४५	१६०
कृष्णः आंगिरसः	२५४६-७८	"
वेकुण्ठ इन्द्रः	२५७९-२६०७	१६२
बृहदुक्थो वामदेव्यः	२६०८-२१	१६५
बन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुगोपायनाः	२६२२	१६६
गौरिवीतिः शाक्यः	२६२३-३९	"
इन्द्र, ऐन्द्रो वृषाकपि, इन्द्राणी	२६४०-६२	१६७
रेणुवैश्वामित्रः	२६६३-७९	१६९
वज्रो वैखानसः	२६८०-९१	१७०
ऐन्द्रोऽप्रतिरथः	२६९२-२७०२	१७१
अष्टको वैश्वामित्रः	२७०३-१३	१७२
कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा	२७१४-२४	"
वैरूपांश्छादंष्ट्रः	२७२५-३४	१७३
वैरूपो नभःप्रभेदनः	२७३५-४४	१७४
वैरूपः शतप्रभेदनः	२७४५-५४	"
स्थीरोऽम्रियुतः स्थीरोऽम्रियूपो वा	२७५५-६३	१७५
आथर्वणो बृहद्विषः	२७६४-७२	१७६
सुकीर्तिः काक्षीवतः	२७७३-७७	१७७
सुदाः पैजवनः	२७७८-८४	"
मान्धाता यौवनाश्वः, गोधा ऋषिका	२७८५-९१	१७८
अङ्ग औरवः	२७९२-९७	"
तार्क्ष्यः सुपर्ण, यामायन } ऊर्ध्वकृशानो वा	२७९८-२८०३	१७९
सुवेदाः शैरीषिः	२८०४-८	"
पृथुर्देव्यः २८०९-१३, शासो भारद्वाजः	२८१४-१८	१८०
देवजामय इन्द्रमातरः	२८१९-२३	"
प्रणो वैश्वामित्रः	२८२४-२८	१८१
विश्वामित्र-जमदग्नी २८२९-३१, इदो भागर्वः	२८३२-३५	"
शिविरौक्षीनरः, काशिराजः } प्रतर्दनः, रौहिदस्थो वसुमनाः	२८३६-३८	"
जय ऐन्द्रः २८३९-४१, सप्तगुराङ्गिरसः	२८४२-४९	१८२
ऐन्द्रो लवः	२८५०-६२	"
भृगुराथर्वणः २८६३-६६, भृगारः	२८६७-७३	१८३
कण्वः २८७४-८६, जाटिकायनः	२८८७-८९	१८४

अथर्वा	२८९०-९५; २९०२-४;	१८५
"	२९१५-१६	१८६
कबन्धः २८९६-९८; भगः २८९९-२९०१		१८५
भृग्वङ्गिराः	२९०५, २९१३	१८६
अङ्गिराः (कितववधकामः)	२९०६-११	"
भृगुः २९१२; अप्रतिरथः	२९१४	"
गृत्समदो मेधातिथिर्वा	२९१७	"
विवस्वानृषिः	२९१८-७४	१८७
वामदेवो गौतमः	२९७५-७८	१९१
" " २९९१-८५, २९९३-९६		"
विश्वामित्रो गायिनः	२९७९	"
विश्वामित्रो गायिनोऽभीपाद् } उदलो वा	२९८०	"
त्रसदस्यु	२९८६-८९	१९२
बन्धुः सुबन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुश्च } क्रमेण गोपायना लोपायना	२९९०	"
कवष ऐल्लषः	२९९१	"
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः	२९९२	"

इन्द्रसहचारी देवगणः ।

(१) इन्द्राग्नी ।

मेधातिथिः काण्वः	३००२-७	१९३
कुत्स आङ्गिरसः	३००८-२८	१९४
परुच्छेपो देवोदासिः	३०२९	१९५
गायिनो विश्वामित्रः	३०३०-३८	"
त्रैवृष्णस्त्र्यरुणः, पौरकुत्स- स्त्रसदस्यु, भारतोऽश्वमेधश्च राजानः (अत्रिमौम इति केचित्)	३०३२	१९६
भौमोऽग्निः	३०४०-४५	"
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३०४६-७०	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३०७१-९०	१९७
श्यावाश्व आत्रेयः	३०९१-३१००	१९८
नाभाकः काण्वः	३१०१-१२	१९९
प्राजापत्यो यक्ष्मनाशनः, } राजयक्ष्मघ्नं वा	३११३-१७	२००
विवस्वानृषिः	३११८-१९	"
अथर्वा	३१२०-२७	"
प्रशोचनः ३१२८-३०; भृगुः	३१३१-३३	२०१

(२) इन्द्रावरुणौ ।

मेधातिथिः काण्वः	३१३५-४२	"
गायिनो विश्वामित्रः	३१४३-४५	२०२

वामदेवो गौतमः	३१४६-५३	२०२	मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३२५	२१६
त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः	३१५७-६०	२०३	तिरश्चिराङ्गिरसो धुतानो वा मारुतः ३३२६		"
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३१६१-७१	"	(१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः ।		
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३१७२-३००७	२०४	गर्गो भारद्वाजः	३३२७	"
सुपर्णो काण्वः	३२०२-८	२०६	अङ्गिराः	३३२८-२९	"
विवस्वानृषिः	३२०९	२०७	(११) इन्द्रापूर्वणौ ।		
(३) इन्द्रवायु ।			बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३३०-३५	"
अधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	३२१०-१०	"	अथर्वी	३३३६	"
मेधातिथिः काण्वः	३२१३-१४	"	(१२) ऋणश्चयेन्द्रौ ।		
परुच्छेपो देवोदासिः	३२१५-१९	"	वभग्नरात्रेयः	३३३७-४०	२१७
गुत्समदः शौनकः	३२२०	२०८	(१३) इन्द्र-ऋभधश्च ।		
वामदेवो गौतमः	३२२१-२९	"	विश्वामित्रो गाथिनः	३३४१-४३	"
स्वस्त्यात्रेयः	३२३०-३०	"	(१४) इन्द्रोपसौ ।		
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३२३३-४०	"	वामदेवो गौतमः	३३४५-४७	"
विवस्वानृषिः	३२४३	२०९	(१५) इन्द्राश्वौ ।		
वसिष्ठः	३२४४	"	वामदेवो गौतमः	३३४८-४९	"
(४) इन्द्र-मरुतश्च ।			(१६) इन्द्रस्त्वष्टा ।		
अधुच्छन्दा वैश्वामित्रः	३२४५-३६	"	गुत्समदः शौनकः	३३५०-५१	२१८
(५) मरुत्वानिन्द्रः ।			(१७) इन्द्रो गावश्च ।		
मेधातिथिः काण्वः	३२४७-४९	२१०	भरद्वाजो बार्हस्पत्यः	३३५२-५३	"
इन्द्रः	३२५०-५१, ३२५३, ३३५५,	"	(१८) इन्द्राकुत्सौ ।		
	३२५७, ३२५९-६१	"	अवस्थुगात्रेयः	३३५४	"
मारुतः	३२५२, ३२५४, ३२५६, ३२५९	"	(१९) इन्द्रद्यावापृथिव्यः ।		
अगस्त्यो मैत्रावरुणिः	३२६२-६८	"	वन्धुः धुतन्धुर्विप्रवन्धुगोपायनाः ३३५५		"
(६) इन्द्रामरुतौ ।			(२०) इन्द्रापूर्वतौ ।		
तिरश्चिराङ्गिरसो, धुतानो वा मारुतः ३२६९		२११	गाथिनो विश्वामित्रः	३३५६	"
(७) इन्द्रासोमौ ।			(२१) इन्द्रः सोमो ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च ।		
गुत्समदः शौनकः	३२७०	"	मेधातिथिः काण्वः	३३५७-५८	"
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३२७१-७५	"	(२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती ।		
रेणुवैश्वामित्रः	३२७६	२१२	गुत्समदः शौनकः	३३५९	२१९
अग्निः	३२७७	"	मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३६०-६१	"
वसिष्ठो मैत्रावरुणिः (चातनः) ३२७८-३३०२		"	(२३) दुन्दुभीन्द्रौ ।		
(८) इन्द्राविष्णौ ।			गर्गो भारद्वाजः	३३६२	"
दीर्घतमा औचथ्यः	३३०३-५	२१४	(२४) इन्द्रसूर्यादयः ।		
बार्हस्पत्यो भरद्वाजः	३३०६-१३	"	ब्रह्मा	३३६३	"
मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः	३३१४-१६	२१५			
(९) इन्द्राबृहस्पती ।					
वामदेवो गौतमः	३३१७-२४	"			



दैवत-संहिता ।

(ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।)

२ इन्द्रदेवता ।

(१-६९) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।३।४-६)

इन्द्रा याहि चित्रभानो	सुता इमे त्वायवः ।	अण्वीभिस्तना पूतासः	४	१
इन्द्रा याहि धियेषितो	विप्रजूतः सुतावतः ।	उप ब्रह्माणि वाघतः	५	
इन्द्रा याहि तूतुजान	उप ब्रह्माणि हरिवः ।	सुते दधिष्व नश्चनः	६	

॥ २ ॥ (ऋ० १।४।१-१०)

सुरूपकृत्नुमूतये	सुदुधामिव गोदुहे	। जुहुमसि द्यविद्यवि	१	
उप नः सवना गहि	सोमस्य सोमपाः पिब	। गोदा इद रेवतो मदः	२	५
अथा ते अन्तमानां	विद्याम सुमतीनाम्	। मा नो अति ख्य आ गहि	३	
परेहि विश्रमस्तृत	मिदं पृच्छा विपश्चितम्	। यस्ते सखिभ्य आ वरम्	४	
उत ब्रुवन्तु नो निवो	निरन्यतश्चिदारत	। दधाना इन्द्र इद दुवः	५	
उत नः सुभगाँ अरि	वोचैर्युर्दस्म कृष्टयः	। स्यामेदिन्द्रस्य शर्मणि	६	
एमाशुमाशवे भर	यज्ञश्रियं नूमादनम्	। पतयन् मन्दुयत्सखम्	७	१०
अस्य पीत्वा शतक्रतो	घनो वृत्राणामभवः	। प्रावो वाजेषु वाजिनम्	८	
तं त्वा वाजेषु वाजिनं	वाजयामः शतक्रतो	। धनानामिन्द्र सातये	९	
यो रायोऽवर्निर्महान्	त्सुपारः सुन्वतः सखा	। तस्मा इन्द्राय गायत	१०	

॥ ३ ॥ (ऋ० १।५।१-१०)

आ त्वेता नि षीदुते—न्द्रमभि प्र गायत	। सखायुः स्तोमवाहसः	१	
पुरुतमं पुरुणा—मीशानं वार्याणाम्	। इन्द्रं सोमे सचा सुते	२	१५
स घा नो योग आ भुवत् स राये स पुरंध्याम्	। गमद्वार्जेभिरा स नः	३	
यस्य संस्थे न वृण्वते हरीं समत्सु शत्रवः	। तस्मा इन्द्राय गायत	४	
सुतपात्रे सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये	। सोमासो दध्याशिरः	५	
त्वं सुतस्य पीतये सद्यो वृद्धो अजायथाः	। इन्द्र ज्यैष्ठ्याय सुक्रतो	६	
आ त्वा विशन्त्वाशवः सोमास इन्द्र गिर्वणः	। शं ते सन्तु प्रचेतसे	७	२०
त्वां स्तोमा अवीवृधन् त्वामुक्त्वा शतक्रतो	। त्वां वर्धन्तु नो गिरः	८	
अक्षितोतिः सनेदिमं वाजमिन्द्रः सहस्रिणम्	। यस्मिन् विश्वानि पौस्या	९	
मा नो मतीं अभि वृहन् तनूनामिन्द्र गिर्वणः	। ईशानो यवया वधम्	१०	

॥ ४ ॥ (ऋ० १।६।१-३, १०)

युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः	। रोचन्ते रोचना विवि	१	
युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे	। शोणा धूष्णा नृवाहसा	२	२५
केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे	। समुषद्विरजायथाः	३	
इतो वा सातिमीमहे दिवो वा पार्थिवादधि	। इन्द्रं महो वा रजसः	१०	

॥ ५ ॥ (ऋ० १।७।१-१०)

इन्द्रमिन्द्राथिनो बृह—दिन्द्रमर्केभिरर्किणः	। इन्द्रं वाणीरिनुषत	१	
इन्द्र इन्द्रयोः सचा संमिश्र आ वचोयुजा	। इन्द्रो वज्री हिंरण्ययः	२	
इन्द्रो व्रीर्घाय चक्षस आ सूर्य रोहयद् विवि	। वि गोभिरद्विमैरयत्	३	३०
इन्द्र वाजेषु नोऽव सहस्रप्रधनेषु च	। उग्र उग्रार्भिरुतिभिः	४	
इन्द्रं वयं महाधन इन्द्रमर्भे हवामहे	। युजं वृत्रेषु वज्रिणम्	५	
स नो वृषन्नमुं चरुं सत्रादावन्नपा वृधि	। अस्मभ्यमप्रतिष्कृतः	६	
तुञ्जेतुञ्जे य उत्तरे स्तोमा इन्द्रस्य वज्रिणः	। न विन्दे अस्य सुष्टुतिम्	७	
वृषा यूथेव वंसगः कृष्टीरियत्योजसा	। ईशानो अप्रतिष्कृतः	८	३५
य एकश्चर्षणीनां वसूनामिरज्यति	। इन्द्रः पञ्च क्षितीनाम्	९	
इन्द्रं वो विश्वतस्परि हवामहे जनेभ्यः	। अस्माकमस्तु केवलः	१०	

॥ ६ ॥ (ऋ० १।८।१-१०)

एन्द्रं सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् ।	वर्षिष्ठमूतये भर	१	
नि येन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै ।	त्वोतासो न्यर्वता	२	
इन्द्र त्वोतास आ वयं वज्रं घना ददीमहि ।	जयेम सं युधि स्पृधः	३	४०
वयं शूरोभिरस्तृभि—रिन्द्र त्वया युजा वयम् ।	सासह्याम पृतन्यतः	४	
महाँ इन्द्रः परश्च नु महित्वमस्तु वज्रिणे ।	द्यौर्न प्रथिना शवः	५	
समोहे वा य आशत नरस्तोकस्य सनितौ ।	विप्रासो वा धियायवः	६	
यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते ।	उर्वीरापो न काकुदः	७	
एवा ह्यस्य सूनृतां विरप्शी गोमती मही ।	एका शाखा न वृशुषे	८	४५
एवा हि ते विभूतय ऊतय इन्द्र मावते ।	सद्यश्चित् सन्ति वृशुषे	९	
एवा ह्यस्य काम्या स्तोम उक्थं च शंस्या ।	इन्द्राय सोमपीतये	१०	५५

॥ ७ ॥ (ऋ० १।९।१-१०)

इन्द्रेहि मत्स्यन्धसो विश्वेभिः सोमपर्वभिः ।	महाँ अभिष्टिरोजसा	१	
एमेनं सृजता सुते मन्दिमिन्द्राय मन्दिने ।	चक्रिं विश्वानि चक्रये	२	
मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।	सचैषु सर्वनेष्वा	३	५०
असृग्रमिन्द्र ते गिरः प्रति त्वामुदहासत ।	अजोषा वृषभं पतिम्	४	
सं चौदय चित्रमर्वाण राध इन्द्र वरेण्यम् ।	असदित ते विभु प्रभु	५	
अस्मान्सु तत्र चोदये—न्द्र राये रभस्वतः ।	तुर्विद्युम्न यशस्वतः	६	
सं गोमदिन्द्र वाजव—दुस्मे पृथु श्रवो बृहत् ।	विश्वायुर्धेह्यक्षितम्	७	
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् द्युम्नं सहस्रसातमम् ।	इन्द्र ता रथिनीरिषः	८	५५
वसोरिन्द्रं वसुपतिं गीर्भिर्गूणन्त ऋग्मियम् ।	होम गन्तारमूतये	९	
सुतेसुते न्योकसे बृहद् बृहत् एदुरिः ।	इन्द्राय शूषमर्चति	१०	

॥ ८ ॥ (ऋ० १।१०।१-१२) अनुष्टुप् ।

गायन्ति त्वा गायत्रिणो ऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।	ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद् वंशमिव येमिरे	१	
यत् सानोः सानुमारुहद् भूर्यस्पष्ट कर्त्तव्यम् ।	तादिन्द्रो अर्थं चेतति युथेन वृष्णिरेजति	२	
युक्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।	अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुतिं चर	३	६०
एहि स्तोमौ अभि स्वरा ऽभि गृणीह्या रुव ।	ब्रह्म च नो वसो सचे—न्द्र यज्ञं च वर्धय	४	

उक्थमिन्द्राय शंस्यं वर्धनं पुरुनिषिधे । शक्रो यथा सुतेषु णो रारणत सख्येषु च ५
 तमित् सखित्व ईमहे तं राये तं सुवीर्ये । स शक्र उत नः शक्र—दिन्द्रो वसु दयमानः ६
 सुविवृतं सुनिरज—मिन्द्र त्वादातमिद्यशः । गवामप ब्रजं वृधि कृणुष्व राधो अद्रिवः ७
 नहि त्वा रोदसी उभे ऋघायमाणमिन्वतः । जेषः स्वर्वतीरपः सं गा अस्मभ्यं धूनुहि ८ ६५
 आश्रुत्कर्ण श्रुधी हवन् न चिद्दधिष्व मे गिरः । इन्द्र स्तोममिमं मम कृष्वा युजश्चिदन्तरम् ९
 विद्मा हि त्वा वृषन्तमं वाजेषु हवनश्रुतम् । वृषन्तमस्य हूमह ऊतिं सहस्रसातमाम् १०
 आ तू न इन्द्र कौशिक मन्दसानः सुतं पिब । नव्यमायुः प्र सू तिर कृधी सहस्रसामृषिम् ११
 परि त्वा गिर्वणो गिर इमा भवन्तु विश्वतः । वृद्धायुमनु वृद्धयो जुष्टा भवन्तु जुष्टयः १२ ६९ ज२

॥ ९ ॥ (ऋ० १।१।१-८)

(७०-७७) जेता माधुच्छन्दसः । अनुष्टुप् ।

इन्द्रं विश्वा अवीवृधन् त्समुद्रव्यचसं गिरः । रथीतमं रथीनां वाजानां सत्पतिं पतिम् १ ७०
 सख्ये तं इन्द्र वाजिनो मा भेम शवसस्पते । त्वामभि प्र णोनुमो जेतामपराजितम् २
 पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो न वि दस्यन्त्युतयः । यदी वाजस्य गोमतः स्तोतृभ्यो मंहते मघम् ३
 पुरां भिन्दुर्युवा कवि—रमितौजा अजायत । इन्द्रो विश्वस्य कर्मणो धर्ता वज्री पुरुष्टुतः ४
 त्वं बलस्य गोमतो ऽपावरद्विवो बिलम् । त्वां देवा अबिभ्युषस् तुज्यमानास आविषुः ५
 तवाहं शूर रातिभिः प्रत्यायं सिन्धुमावदन् । उपातिष्ठन्त गिर्वणो विदुष्टे तस्य कारवः ६ ७५
 मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः । विदुष्टे तस्य मेधिरास् तेषां श्रवांस्युत्तिर ७
 इन्द्रमीशानमोजसा—भि स्तोमा अनूषत । सहस्रं यस्य रातय उत वा सन्ति भूर्यसीः ८ ७७

॥ १० ॥ (१।१६।१-९)

(७८-२३९) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

आ त्वा बहन्तु हरयो वृषणं सोमपीतये । इन्द्रं त्वा सूरचक्षसः १
 इमा धाना घृतस्नुवो हरी इहोप वक्षतः । इन्द्रं सुखतमे रथे २
 इन्द्रं प्रातर्हवामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे । इन्द्रं सोमस्य पीतये ३ ८०
 उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र केशिभिः । सुते हि त्वा हवामहे ४
 सेमं नः स्तोममा ग—ह्युपेदं सर्वनं सुतम् । गौरो न तृषितः पिब ५
 इमे सोमासो इन्द्रवः सुतासो अधि बर्हिषि । तां इन्द्र सहसे पिब ६
 अयं ते स्तोमो अग्रियो हविस्पृगस्तु शंतमः । अथा सोमं सुतं पिब ७

विश्वमित् सर्वनं सुत—मिन्द्रो मदाय गच्छति । वृत्रहा सोमपीतये ८
 सेमं नः काममा पूर्ण गोभिरश्वैः शतक्रतो । स्तवाम त्वा स्वाध्यः ९

८५

॥ ११ ॥ (ऋ० ८।१।१-२९)

[प्रगाथो (घौरः) काण्वः, ३-२९ मेघातिथि-मेघ्यातिथी काण्वौ ।] १-४ प्रगाथः=
 (विषमा बृहती, समा सतोबृहती), ५-२९ बृहती ।

मा चिद्वन्यद् वि शंसत सखायो मा रिषण्यत ।

इन्द्रमित् स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुर्बुक्था च शंसत १

अवक्रक्षिणं वृषभं यथाजुरं गां न चर्षणीसहम् ।

विद्वेषणं संवननोभयंकरं मंहिष्ठमुभयाविनम् २

यच्चिद्धि त्वा जना इमे नाना हवन्त ऊतये ।

अस्माकं ब्रह्मेदमिन्द्र भूतु ते ऽहा विश्वा च वर्धनम् ३

वि तर्तूर्यन्ते मघवन् विपश्चितो ऽर्यो विपो जनानाम् ।

उप क्रमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमूतये ४

महे चन त्वामद्विवः परा शुल्काय देयाम् ।

न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शतार्य शतामघ ५

वस्यो इन्द्रासि मे पितु—रुत भ्रातुरभुञ्जतः ।

माता च मे छदयथः समा वसो वसुत्वनाय राधसे ६

कैयथ केवसि पुरुत्रा चिद्धि ते मनः ।

अलर्षि युध्म खजकृत् पुरंदर प्र गायत्रा अंगासिषुः ७

प्रास्मै गायत्रमर्चत वावातुर्यः पुरंदरः ।

याभिः काण्वस्योप बर्हिषासदं यासद् वज्री भिनत् पुरः ८

ये ते सन्ति दशग्विनः शतिनो ये सहस्रिणः ।

अश्वांसो ये ते वृषणो रघुदुव—स्तेभिर्नस्तूयमा गहि ९

आ त्वद्य संबर्द्ध्यां हुवे गायत्रवेपसम् ।

इन्द्रं धेनुं सुदुघामन्यामिष—मुरुधारामरंकृतम् १०

यत् तुदत् सूर एतशं वङ्कू वातस्य पर्णिना ।

वहत् कुत्समार्जुनेयं शतक्रतुः त्सरद् गन्धर्वमस्तृतम् ११

९५

य ऋते चिदभिषिषः पुरा जन्तुभ्य आतृदः ।		
संधाता संधिं मघवा पुरुवसु—रिष्कर्ता विहृतं पुनः	१२	
मा भूम निष्टया इवे—न्द्र त्वदरणा इव ।		
वनानि न प्रजहितान्यद्विवो दुरोषासो अमन्माहि	१३	
अमन्महीदनाशवो ऽनुयासश्च वृत्रहन् ।		
सकृत् सु ते महता शूर राधसा ऽनु स्तोमं मुदीमहि	१४	१००
यद्वि स्तोमं मम श्रव—दुस्माकमिन्द्रमिन्द्रवः ।		
तिरः पवित्रं ससृवांस आशवो मन्दन्तु तुष्ट्यावृधः	१५	
आ त्वद्य सधस्तुतिं वावातुः सख्युरा गहि ।		
उपस्तुतिर्मघोनां प्र त्वाव—त्वधा ते वशिम सुष्टुतिम्	१६	
सोता हि सोममद्रिभि—रेमेनमप्सु धावत ।		
गव्या वल्लेव वासयन्त इन्नरो निर्धुक्षन् वक्षणाभ्यः	१७	
अध उमो अर्धं वा द्विवो बृंहतो रोचनादधि ।		
अया वर्धस्व तन्वां गिरा ममा ऽऽ जाता सुकतो पृण	१८	
इन्द्राय सु मदिन्तमं सोमं सोता वरेण्यम् ।		
शक्र एणं पीपयद् विश्वया धिया हिंन्वानं न वाजयुम्	१९	१०५
मा त्वा सोमस्य गल्दया सदा याचन्नहं गिरा ।		
भूणिं मुगं न सवनेषु चुकुधं क ईशानं न याचिषत्	२०	
मदेनेषितं मद—मुग्रमुग्रेण शर्वसा ।		
विश्वेषां तरुतारं मदुच्युतं मदे हि ष्मा ददाति नः	२१	
शेवारे वार्यां पुरु देवो मर्तीय वाशुषे ।		
स सुन्वते च स्तुवते च रासते विश्वगूर्तो अरिष्टुतः	२२	
एन्द्र याहि मत्स्व चित्रेण देव राधसा ।		
सरो न प्रास्युदरं सपीतिभि—रा सोमैभिरुरु स्फुरम्	२३	
आ त्वा सहस्रमा शतं युक्ता रथे हिरण्यये ।		
ब्रह्मयुजो हरय इन्द्र केशिनो वहन्तु सोमपीतये	२४	११०
आ त्वा रथे हिरण्यये हरीं मयूरशेप्या ।		
शितिपृष्ठा वहतां मध्वो अन्धसो विवक्षणस्य पीतये	२५	

पिबा त्वस्य गिर्वणः सुतस्य पूर्वपा इव ।	
परिष्कृतस्य रसिन इयमासुति—श्चारुर्मदाय पत्यते	२६
य एको अस्ति दुंसना महौ उग्रो अभि व्रतैः ।	
गमत् स शिप्री न स योषदा गम—द्धवं न परि वर्जति	२७
त्वं पुरं चरिष्वं वधैः शुष्णस्य सं पिणक् ।	
त्वं मा अनु चरो अध द्विता यदिन्द्र हव्यो भुवः	२८
मम त्वा सूर उदिते मम मध्यन्दिने विवः ।	
मम प्रपित्वे अपिशविरे वस—वा स्तोमासो अवृत्सत	२९ ११५

॥ १२ ॥ (ऋ० ८।१।१-४०)

[मेधातिथिः काण्वः, (आङ्गिरसः प्रियमेधश्च)] । गायत्री, २८ अनुष्टुप् ।

इदं वसो सुतमन्धः पिबा सुपूर्णमुदरम् ।	अनाभयिन् ररिमा ते १	
नृभिर्धृतः सुतो अश्वै—रव्यो वारैः परिपूतः ।	अश्वो न निक्तो नदीषु २	
तं ते यवं यथा गोभिः स्वादुर्मकर्म श्रीणन्तः ।	इन्द्र त्वास्मिन्त्सधमादे ३	
इन्द्र इत् सोमपा एक इन्द्रः सुतपा विश्वायुः ।	अन्तर्द्वान् मर्त्याश्च ४	
न यं शुक्रो न दुराशी—र्न तृपा उरुव्यचंसम् ।	अपस्पृण्वते सुहार्दम् ५	१२०
गोभिर्यदीमन्ये अस्मन् मृगं न वा मृगर्यन्ते ।	अमित्सरन्ति धेनुभिः ६	
त्रय इन्द्रस्य सोमाः सुतासः सन्तु देवस्य ।	स्वे क्षये सुतपात्रः ७	
त्रयः कोशासः श्रोतन्ति तिस्रश्चम्बः सुपूर्णाः ।	समाने अधि भार्मन् ८	
शुचिरसि पुरनिष्ठाः क्षीरैर्मध्यत आशीर्तः ।	दुग्धा मन्दिष्ठः शूरस्य ९	
इमे तं इन्द्र सोमा—स्तीवा अस्मे सुतासः ।	शुक्रा आशिरं याचन्ते १०	१२५
तां आशिरं पुरोळाश—मिन्द्रेमं सोमं श्रीणीहि ।	रेवन्तं हि त्वां शूणोमि ११	
हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम् ।	ऊधर्न नग्ना जरन्ते १२	
रेवा इद् रेवतः स्तोता स्यात् त्वावतो मघोनः ।	प्रेतु हरिवः श्रुतस्य १३	
उक्थं च न शस्यमान—मगोररिरा चिकेत ।	न गायत्रं गीयमानं १४	
मा न इन्द्र पीयूतवे मा शर्धते परा दाः ।	शिक्षा शचीवुः शचीभिः १५	१३०

वयमु त्वा तदिदं	इन्द्र त्वायन्तः सखायः । कण्वा उक्थेभिर्जरन्त	१६	
न घेमन्यदा पपन	वज्रिन्नपसो नविष्टौ । तवेदु स्तोमं चिकेत	१७	
इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं	न स्वप्राय स्पृहयन्ति । यन्ति प्रमादुमतन्द्राः	१८	
ओ पु प्र याहि वाजेभिर्मा हृणीथा अभ्यस्मान् । महौ इव युवजानिः		१९	
मो ष्वद्य दुर्हणावान्	त्सायं करद्वारे अस्मत् । अश्रीर इव जामाता	२०	१३५
विद्वा ह्यस्य वीरस्य	भूरिदावरीं सुमतिम् । त्रिषु जातस्य मनांसि	२१	
आ तू विंश्च कण्वमन्तं	न घा विद्व शवसानात् । यशस्तरं शतमूतैः	२२	
ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय	सोमं वीराय शक्राय । भरा पिबन्नयाय	२३	
यो वेदिष्ठो अव्यथि	ष्वश्वान्तं जरितृभ्यः । वाजं स्तोतृभ्यो गोमन्तम्	२४	
पन्यपन्यमित् सोतार	आ धावत मद्याय । सोमं वीराय शूराय	२५	१४०
पाता वृत्रहा सुतमा	घा गमन्नारे अस्मत् । नि यमते शतमूतिः	२६	
एह हरी ब्रह्मयुजा	शग्मा वक्षतः सखायम् । गीर्भिः श्रुतं गिर्वणसम्	२७	
स्वादवः सोमा आ याहि	श्रीताः सोमा आ याहि ।		
शिप्रिन्नृषीवः शचीवो	नायमच्छा सधमादम्	२८	
स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति	महे राधसे नृम्णाय । इन्द्र कारिणं वृधन्तः	२९	
गिरश्च यास्ते गिर्वाह	उक्था च तुभ्यं तानि । सत्रा दधिरे शवांसि	३०	१४५
एवेदेष तुविकूर्मिर्वाजाँ	एको वज्रहस्तः । सनादमृक्तो दयते	३१	
हन्ता वृत्रं दक्षिणेन	न्द्रः पुरु पुरुहूतः । महान् महीभिः शचीभिः	३२	
यस्मिन् विश्वाश्र्षणय	उत ज्यौत्ना ज्रयांसि च । अनु घेन्मन्दी मघोनः	३३	
एष एतानि चकारे	न्द्रो विश्वा योऽति शूण्वे । वाजदावा मघोनाम्	३४	
प्रभर्ता रथं गव्यन्त	मपाकाच्चिद् यमवति । इनो वसु स हि वोळ्हा	३५	१५०
सनिता विप्रो अर्वद्धि	हन्ता वृत्रं नृभिः शूरः । सत्योऽविता विधन्तम्	३६	
यजध्वैनं प्रियमेधा	इन्द्रं सत्राचा मनसा । यो भूत् सोमैः सत्यमद्रा	३७	
गाथश्रवसं सत्पतिं	श्रवस्कामं पुरुत्मानम् । कण्वासो गात वाजिनम्	३८	
य ऋते चिद् गारुदेभ्यो	दात् सखा नृभ्यः शचीवान् । ये अस्मिन् काममश्रियन्	३९	
इत्था धीवन्तमद्रिवः	काण्वं मेध्यातिथिम् । मेघो भूतोऽभि यन्नयः	४०	१५५

॥ १३ ॥ (ऋ० ८।३।१-२४)

[मेध्यातिथिः काण्वः] । प्रगाथः=(विषमा बृहती, समा सतोबृहती), २१ अनुष्टुप्, २२-२३ गायत्री, २४ बृहती ।

पिबा सुतस्य रसिनो मत्स्वा न इन्द्र गोर्मतः ।

आपिनी बोधि सधमाद्यो वृधेऽऽस्माँ अवन्तु ते धियः १

भूयाम ते सुमतौ वाजिनो वयं मा नः स्तरभिमातये ।

अस्माश्चित्राभिरवतादुभिष्टिभि—रा नः सुन्नेषु यामय २

इमा उ त्वा पुरुवसो गिरो वर्धन्तु या मम ।

पावकवर्णाः शुचयो विपश्चितो ऽभि स्तोमैरनूषत ३

अयं सहस्रमृषिभिः सहस्कृतः समुद्र इव पप्रथे ।

सत्यः सो अस्य महिमा गृणे शवो यज्ञेषु विप्रराज्ये ४

इन्द्रमिद देवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।

इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ५

इन्द्रो मुह्य रोदसी पप्रथच्छव इन्द्रः सूर्यमरोचयत् ।

इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिर् इन्द्रे सुवानास इन्द्रवः ६

अभि त्वा पूर्वपीतय इन्द्र स्तोमेभिरायवः ।

समीचीनास ऋभवः समस्वरन् रुद्रा गृणन्त पूर्व्यम् ७

अस्येदिन्द्रो वावृधे वृष्ण्यं शवो मदे सुतस्य विष्णावि ।

अद्या तमस्य महिमानमायवो ऽनु ष्ठुवन्ति पूर्वथा ८

तत् त्वा यामि सुवीर्यं तद् ब्रह्म पूर्वचित्तये ।

येना यतिभ्यो भृगवे धने हिते येन प्रस्कण्वमाविथ ९

येना समुद्रमसृजो महीरप—स्तदिन्द्र वृष्णि ते शवः ।

सद्यः सो अस्य महिमा न संनशे यं क्षोणीरनुचक्रदे १०

शग्धी न इन्द्र यत् त्वा रयिं यामि सुवीर्यम् ।

शग्धि वाजाय प्रथमं सिषासते शग्धि स्तोमाय पूर्व्य ११

शग्धी नो अस्य यन्द्र पौरमाविथ धिय इन्द्र सिषासतः ।

शग्धि यथा रुशमं श्यावकं कृप—मिन्द्र प्रावः स्वर्णरम् १२

कन्नव्यो अतसीनां तुरो गृणीत मर्त्यः ।

नही न्वस्य महिमानमिन्द्रियं स्वर्गुणन्त आनशुः १३

कदु स्तुवन्त ऋतयन्त देवत ऋषिः को विप्र ओहते ।

कदा हवं मघवान्निन्द्र सुन्वतः कदु स्तुवत आ गमः १४

उद्दु त्ये मधुमत्तमा गिरः स्तोमास ईरते ।		
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजयन्तो रथा इव	१५	१७०
कण्वा इव भृगवः सूर्यो इव विश्वमिदं धीतमानशुः ।		
इन्द्रं स्तोमेभिर्मह्यन्त आयवः प्रियमेधासो अस्वरन्	१६	
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम् हरीं इन्द्र परावतः ।		
अर्वाचीनो मघवन्त्सोमपीतय उग्र ऋग्वेभिरा गहि	१७	
इमे हि ते कारवो वावशुर्धिया विप्रासो मेधसातये ।		
स त्वं नो मघवन्निन्द्र गर्विणो वेनो न शृणुधी हवम्	१८	
निरिन्द्र बृहतीभ्यो वृत्रं धनुभ्यो अस्फुरः ।		
निरबुद्धस्य मृगयस्य मायिनो निः पर्वतस्य गा आजः	१९	
निरग्रयो रुरुचुर्निरु सूर्यो निः सोम इन्द्रियो रसः ।		
निरन्तरिक्षादधमो महामहिं कृषे तदिन्द्र पौंस्यम् ।	२०	१७५
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः पाकस्थामा कौरयाणः ।		
विश्वेषां त्मना शोभिष्ठमुपेव द्विवि धावमानम्	२१	
रोहितं मे पाकस्थामा सुधुरं कक्ष्यप्राम् ।		
अदाद् रायो विबोधनम्	२२	
यस्मा अन्ये दश प्रति धुरं वहन्ति वह्नयः ।		
अस्तं वयो न तुग्र्यम्	२३	
आत्मा पितुस्तनूवास ओजोदा अभ्यञ्जनम् ।		
तुरीयमिदं रोहितस्य पाकस्थामानं भोजं द्वातारमब्रवम्	२४	

॥ १४ ॥ (ऋ० ८।३२।१-३०)

[मेधातिथिः काण्वः] । गायत्री ।

प्र कृतान्यृजीषिणः कण्वा इन्द्रस्य गार्थया । मध्वे सोमस्य वोचत	१	१८०
यः सृबिन्दुमनर्शनिं पिष्टुं दासमहीशुर्वम् । वर्धीदुगो रिणन्नपः	२	
न्यबुद्धस्य विष्टपं वर्ष्माणं बृहतस्तिर । कृषे तदिन्द्र पौंस्यम्	३	
प्रति श्रुताय वो धूषत् तूर्णीशं न गिरैरधि । हुवे सुशिप्रमूतये	४	
स गोरश्वस्य वि व्रजं मन्वानः सोम्येभ्यः । पुरं न शूर दर्शसि	५	
यदि मे रारणः सुत उक्थे वा दधसे चनः । आरादुपं स्वधा गहि	६	१८५
वयं घा ते अपिं ष्मसि स्तोतारं इन्द्र गर्विणः । त्वं नो जिन्व सोमपाः	७	

उत नः पितुमा भर संरराणो अविक्षितम् । मघवन् भूरि ते वसु ८	
उत नो गोमंतस्कृधि हिरण्यवतो अश्विनः । इळाभिः सं रभेमहि ९	
बुबदुक्थं हवामहे सुप्रकरस्मृतये । साधु कृण्वन्तमवसे १०	
यः संस्थे चिच्छतक्रतु रादी कृणोति वृत्रहा । जरितृभ्यः पुरुवसुः ११	१९०
स नः शक्रश्चिदा शक्रद् दानवाँ अन्तराभरः । इन्द्रो विश्वाभिर्कृतिभिः १२	
यो रायोऽवनिर्महान् त्सुपारः सुन्वतः सखा । तमिन्द्रमाभि गायत १३	
आयन्तारं महि स्थिरं पृतनासु श्रवोजितम् । भूरेरीशानमोजसा १४	
नकिरस्य शचीनां नियन्ता सूनृतानाम् । नकिर्वक्ता न द्वादिति १५	
न नूनं ब्रह्मणामृणं प्राशूनामस्ति सुन्वताम् । न सोमो अप्रता पपे १६	१९५
पन्य इदुपं गायत पन्य उक्थानि शंसत । ब्रह्मा कृणोत पन्य इत् १७	
पन्य आ दर्दिरच्छता सहस्रा वाज्यवृतः । इन्द्रो यो यज्वनो वृधः १८	
वि पू चर स्वधा अनु कृष्टीनामन्वाहुवः । इन्द्र पिब सुतानाम् १९	
पिब स्वधैनवाना मुत यस्तुष्टे सचा । उतायमिन्द्र यस्तव २०	
अतीहि मन्युषाविणं सुषुवांसमुपारणे । इमं रातं सुतं पिब २१	२००
इहि तिस्रः परावत इहि पञ्च जनाँ अति । धेना इन्द्रावचाकशत् २२	
सूर्यो रश्मि यथा सृजा ऽऽ त्वा यच्छन्तु मे गिरः । निम्नमापो न सध्यक् २३	
अध्वर्यवा तु हि विश्व सोमं वीराय शिप्रिणे । भरा सुतस्य पीतये २४	
य उद्रः फलिगं भिन न्यक् सिन्धूरवासृजत् । यो गोषु पक्कं धारयत् २५	
अहन् वृत्रमृचीषम और्णवाभमहीशुवम् । हिमेनाविध्यद्वुदम् २६	२०५
प्र व उग्राय निष्ठुरे ऽषाळहाय प्रसक्षिणे । देवत्तं ब्रह्म गायत २७	
यो विश्वान्यभि व्रता सोमस्य मदे अन्धसः । इन्द्रो देवेषु चेतति २८	
इह त्या संधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळहामाभि प्रयो हितम् २९	
अर्वाञ्च त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी । सोमपेयाय वक्षतः ३०	

॥ १५ ॥ (ऋ० ८३३.१-१९)

[मेध्यातिथिः काण्वः] । बृहती, १६-१८ गायत्री, १९ अनुष्टुप् ।

वयं घ त्वा सुतावन्त आपो न वृक्तबर्हिषः ।

पवित्रस्य प्रस्रवणेषु वृत्रहन् परि स्तोतार आसते १

स्वरन्ति त्वा सुते नरो वसो निरेक उक्थिनः ।

कदा सुतं तृषाण ओक् आ गम इन्द्र स्वब्दीव वंसगः २

कण्वेभिर्धृष्णवा धूषद् वाजं दधिं सहस्रिणाम् ।		
पिशङ्गरूपं मघवन् विचर्षणे मक्षू गोमन्तमीमहे	३	
पाहि गायान्धसो मदु इन्द्राय मेध्यातिथे ।		
यः संमिश्रलो हयोर्यः सुते सचा वज्री रथो हिरण्ययः	४	
यः सुषव्यः सुदक्षिण इनो यः सुक्रतुर्गुणे ।		
य आकरः सहस्रा यः शतामघ इन्द्रो यः पूर्भिदारितः	५	
यो धृषितो योऽवृतो यो अस्ति श्मश्रुषु श्रितः ।		
विभूतद्युम्नश्च्यवनः पुरुषदुतः क्रत्वा गौरिव शाकिनः	६	२१५
क ईं वेद सुते सचा पिबन्तं कद् वयो दधे ।		
अयं यः पुरो विभिनच्योजसा मन्दानः शिष्यन्धसः	७	
वाना मृगो न वारणः पुरुत्रा चरथं दधे ।		
नर्किष्ठा नि यमदा सुते गमो महाश्चरस्योजसा	८	
य उग्रः सन्ननिष्ठृतः स्थिरो रणाय संस्कृतः ।		
यदि स्तोतुर्मघवा शृणवद्भवं नेन्द्रो योषत्या गमत्	९	
सत्यमित्था वृषेदसि वृषजूतिर्नोऽवृतः		
वृषा ह्युग्र शृण्विषे परावति वृषो अर्वावति श्रुतः	१०	
वृषणस्ते अभीशवो वृषा कशा हिरण्ययी ।		
वृषा रथो मघवन् वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो	११	२२०
वृषा सोता सुनोतु ते वृषन्नृजीपिन्ना भर ।		
वृषा दधन्वे वृषणं नदीष्व ताम्रं स्थातर्हरीणाम्	१२	
एन्द्र याहि पीतये मधु शविष्ठ सोम्यम् ।		
नायमच्छा मघवा शृणवद् गिरो ब्रह्मोक्था च सुक्रतुः	१३	
वहन्तु त्वा रथेष्ठा मा हरयो रथयुजः ।		
तिरश्चिदुर्य सर्वनानि वृत्रह ह्यन्येषां या शतक्रतो	१४	
अस्माकमद्यान्तमं स्तोमं धिष्व महामह ।		
अस्माकं ते सर्वना सन्तु शतमा मदाय द्युक्ष सोमपाः	१५	
नहि षस्तव नो मम शास्त्रे अन्यस्य रण्यति । यो अस्मान् वीर आनयत्	१६	२२५
इन्द्रश्चिद् या तदब्रवीत् स्त्रिया अशास्यं मनः । उतो अह क्रतुं रघुम्	१७	
सतीं चिद् घा मदच्युता मिथुना वहतो रथम् । एवेद् धूर्वणा उत्तरा	१८	

अधः पश्यस्व मोपरि संतरां पादुकौ हर ।

मा ते कशप्लुकौ दृशन् तस्त्री हि ब्रह्मा बभूविथ

१९

॥ १६ ॥ (ऋ० ८।४।१-१४)

[देवातिथिः काण्वः] । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

यदिन्द्र प्रागपागुदुङ् न्यग्वा हूयसे नृभिः ।

सिमां पुरु नृषूतो अस्यानवे ऽसि प्रशर्ध तुर्वशे

१

यद् वा रुमे रुशमे श्यावके कृप इन्द्र मादयसे सचा ।

कण्वासस्त्वा ब्रह्माभिः स्तोमवाहस इन्द्रा यच्छन्त्या गहि

२

२३०

यथा गौरो अपा कृतं तृष्यन्नेत्यवेरिणम् ।

आपित्वे नः प्रपित्वे तूयमा गहि कण्वेषु सु सचा पिब

३

मन्दन्तु त्वा मघवाग्निन्द्रेन्दवो राधोदेयाय सुन्वते ।

आमुष्या सोममपिबश्चमू सुतं ज्येष्ठं तद् दधिषे सहः

४

प्र चक्रे सहसा सहो बभञ्ज मन्युमोजसा ।

विश्वे त इन्द्र पृतनायवो यहो नि वृक्षा इव येमिरे

५

सहस्रेणेव सचते यवीयुधा यस्त आनलुपस्तुतिम् ।

पुत्रं प्रावृगं कृणुते सुवीर्यं द्वाश्चेति नमउक्तिभिः

६

मा भेम मा श्रमिष्मो—ग्रस्य सख्ये तव ।

महत ते वृष्णो अभिचक्ष्यं कृतं पश्येम तुर्वशं यदुम्

७

२३५

सव्यामनुं स्फिग्यं वावसे वृषा न दानो अस्य रोषति ।

मध्वा संपृक्ताः सारधेण धेनवस्तूयमेहि द्रवा पिब

८

अश्वी रथी सुरूप इद् गोमां इदिन्द्र ते सखा ।

श्वात्रभाज्जा वयसा सचते सदा चन्द्रो याति सभामुप

९

ऋश्यो न तृष्यन्नवपानमा गहि पिबा सोमं वशो अनु ।

निमेघमानो मघवन् द्विवेदिव ओजिष्ठं दधिषे सहः

१०

अध्वर्यो द्रावया त्वं सोममिन्द्रः पिपासति ।

उप नूनं युयुजे वृषणा हरी आ च जगाम वृत्रहा

११

स्वयं चित्रं स मन्यते दाशुर्जिनो यत्रा सोमस्य तुम्पसि ।

इदं ते अन्नं युज्यं समुक्षितं तस्येहि प्र द्रवा पिब

१२

२४०

रथेष्ठायाध्वर्यवः सोममिन्द्राय सोतन ।

अधि ब्रध्नस्याद्रयो वि चक्षते सुन्वन्तो वाश्वध्वरम् १३

उप ब्रध्नं वावाता वृषणा हरी इन्द्रमपसु वक्षतः ।

अर्वाञ्च त्वा सप्तयोऽध्वरथियो वहन्तु सवनेदुप १४

॥ १७ ॥ (ऋ० ८।३।१-४५)

[वत्सः काण्वः] । गायत्री ।

महाँ इन्द्रो य ओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव । स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे १

प्रजामृतस्य पिप्रतः प्र यद् भरन्त वह्नयः । विप्रा ऋतस्य वाहसा २

कण्वा इन्द्रं यदक्रत स्तोमैर्यज्ञस्य साधनम् । जामि ब्रुवत आयुधम् ३

समस्य मन्यवे विशो विश्वा नमन्त कृष्टयः । समुद्रायैव सिन्धवः ४

ओजस्तदस्य तित्विष उभे यत् समवर्तयत् । इन्द्रश्चर्मैव रोदसी ५

वि चिद् वृत्रस्य दोधतो वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद वृष्णिना ६

इमा अभि प्र णोनुमो विपामग्रेषु धीतयः । अग्नेः शोचिर्न दिद्युतः ७

गुहा सतीरुप त्मना प्र यच्छोचन्त धीतयः । कण्वा ऋतस्य धारया ८

प्र तमिन्द्र नशीमहि रथि गोमन्तमश्विनम् । प्र ब्रह्म पूर्वचित्तये ९

अहमिन्द्रि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभं । अहं सूर्य इवाजनि १०

अहं प्रत्नेन मन्मना गिरः शुम्भामि कण्ववत् । येनेन्द्रः शुष्ममिद् दुधे ११

ये त्वामिन्द्र न तुष्टुवुर्ऋषयो ये च तुष्टुवुः । ममेद् वर्धस्व सुष्टुतः १२

यदस्य मन्युरध्वनीद् वि वृत्रं पर्वशो रुजन् । अपः समुद्रमैरयत् १३

नि शुष्ण इन्द्र धर्णसिं वज्रं जघन्थ दस्यवि । वृषा ह्युग्र शृण्विषे १४

न द्याव इन्द्रमोजसा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । न विव्यचन्त भूमयः १५

यस्त इन्द्र महीरपः स्तभूयमान आशयत् । नि तं पद्यासु शिश्रथः १६

य इमे रोदसी मही समीची समजग्रभीत् । तमोभिरिन्द्र तं गुहः १७

य इन्द्र यतयस्त्वा भृगवो ये च तुष्टुवुः । ममेदुग्र श्रुधी हवम् १८

इमास्त इन्द्र पृश्नयो घृतं तुहत आशिरम् । एनामृतस्य पिप्युषीः १९

या इन्द्र प्रस्वस्त्वा ऽऽसा गर्भमचक्रिरन् । परि धर्मैव सूर्यम् २०

त्वामिच्छवसस्पते कण्वा उक्थेन वावृधुः । त्वां सुतास इन्दवः २१

तवेदिन्द्र प्रणीतिषूत प्रशस्तिरद्विवः । यज्ञो वितन्तसाध्यः २२

आ न इन्द्र महीमिधं पुरं न दर्षि गोमतीम् । उत प्रजां सुवीर्यम् २३

२४५

२५०

२५५

२६०

२६५

उत त्यवाश्वश्वयं यदिन्द्र नाहुषीष्वा	। अग्रे विश्व प्रदीदयत् २४	
अभि वृजं न तल्लिषे सूर उपाकचक्षसम्	। यदिन्द्र मूळयांसि नः २५	
यवृङ्ग तविषीयस इन्द्र प्रराजसि क्षितीः	। महौ अपार ओजसा २६	
तं त्वा हविष्मतीर्विश उप ब्रुवत ऊतये	। उरुञ्जयसमिन्दुभिः २७	
उपहरे गिरीणां संगथे च नदीनाम्	। धिया विप्रो अजायत २८	२७०
अतः समुद्रमुद्रतश्चिकित्वां अव पश्यति	। यतो विपान एजति २९	
आदित प्रत्नस्य रेतसो ज्योतिष्पश्यन्ति वासरम्	। परो यद्विध्यते दिवा ३०	
कण्वांस इन्द्र ते मतिं विश्वे वर्धन्ति पौंस्यम्	। उतो शविष्ठ वृष्ण्यम् ३१	
इमां म इन्द्र सुष्टुतिं जुषस्व प्र सु मामव	। उत प्र वर्धया मतिम् ३२	
उत ब्रह्मण्या वयं तुभ्यं प्रवृद्ध वज्रिवः	। विप्रो अतक्षम जीवसे ३३	२७५
अभि कण्वा अनूषताऽऽपो न प्रवता यतीः	। इन्द्रं वनन्वती मतिः ३४	
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः समुद्रमिव सिन्धवः	। अनुत्तमन्युमजरम् ३५	
आ नो याहि परावतो हरिभ्यां हर्यताभ्याम्	। इममिन्द्र सुतं पिब ३६	
त्वामिद् वृत्रहन्तम् जनांसो वृक्तबर्हिषः	। हवन्ते वाजसातये ३७	
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं न वृत्त्येतशम्	। अनु सुवानास इन्द्रवः ३८	२८०
मन्दस्वा सु स्वर्णर उतेन्द्र शर्यणावति	। मत्स्वा विवस्वतो मती ३९	
वावृधान उप द्यवि वृषा वज्रयरोरवीत्	। वृत्रहा सोमपातमः ४०	
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक ईशान ओजसा	। इन्द्रं चोष्कूयसे वसु ४१	
अस्माकं त्वा सुतां उप वीतपृष्ठा अभि प्रयः	। शतं वहन्तु हरयः ४२	
इमां सु पूव्यां धियं मधोघृतस्य पिप्युषीम्	। कण्वा उक्थेन वावृधुः ४३	२८५
इन्द्रमिद् विमहीनां मेधे वृणीत मर्त्यः	। इन्द्रं सनिष्युक्तये ४४	
अर्वाञ्च त्वा पुरुष्टुत प्रियमेधस्तुता हरी	। सोमपेयाय वक्षतः ४५	

॥ १८ ॥ (ऋ० ८।१२।१-३३)

[पर्वतः काण्वः] । उष्णिक्, ३३ शंकुमती (पिंगलमतेन) ।

य इन्द्र सोमपातमो मदः शविष्ठ चेतति । येना हंसि न्यत्रिणं तमीमहे १	
येना दशग्वमध्रिगुं वेपयन्तं स्वर्णरम् । येना समुद्रमाविथा तमीमहे २	
येन सिन्धुं महीरपो रथा इव प्रचोदयः । पन्थामृतस्य यातवे तमीमहे ३	२९०
इमं स्तोममभिष्टये घृतं न पूतमद्विवः । येना नु सद्य ओजसा ववक्षिथ ४	
इमं जुषस्व गर्विणः समुद्र इव पिन्वते । इन्द्र विश्वाभिरुतिभिर्ववक्षिथ ५	

यो नो देवः परावतः सखित्वनाय मामहे । द्विवो न वृष्टिं प्रथयन् ववक्षिथ	६
ववक्षुरस्य केतव उत वज्रो गर्भस्त्योः । यत् सूर्यो न रोदसी अवर्धयत्	७
यदि प्रवृद्ध सत्पते सहस्रं महिषां अघः । आदित् तं इन्द्रियं महि प्र वावृधे	८ १९५
इन्द्रः सूर्यस्य रुश्मिभिर्न्यर्शसानमोषति । अग्निर्वनेव सासहिः प्र वावृधे	९
इयं तं ऋत्वियावती धीतिरेति नवीयसी । सपर्यन्ती पुरुप्रिया मिमीत इत्	१०
गर्भो यज्ञस्य देवयुः क्रतुं पुनीत आनुषक् । स्तोमैरिन्द्रस्य वावृधे मिमीत इत्	११
सनिर्मित्रस्य पप्रथ इन्द्रः सोमस्य पीतये । प्राची वाशीव सुन्वते मिमीत इत्	१२
यं विप्रो उक्थवाहसो ऽभिप्रमन्दुरायवः । घृतं न पिप्य आसन्युतस्य यत्	१३ ३००
उत स्वराजे अदितिः स्तोममिन्द्राय जीजनत् । पुरुप्रशस्तमृतयं क्रतस्य यत्	१४
अभि वह्नय ऊतये ऽनूषत् प्रशस्तये । न देव विव्रता हरीं क्रतस्य यत्	१५
यत् सोममिन्द्र विष्णवि यद् वा घ त्रित आप्तये । यद् वा मरुत्सु मन्दसे समिन्दुभिः	१६
यद् वा शक्र परावति समुद्रे अधि मन्दसे । अस्माकमित् सुते रणा समिन्दुभिः	१७
यद् वासि सुन्वतो ब्रूधो यजमानस्य सत्पते । उक्थे वा यस्य रण्यसि समिन्दुभिः	१८ ३०५
देवदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि । अधा यज्ञाय तुर्वणे व्यानशुः	१९
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं सोमेभिः सोमपातमम् । होत्राभिरिन्द्रं वावृधुर्व्यानशुः	२०
महीरस्य प्रणीतयः पूर्वोरुत प्रशस्तयः । विश्वा वसूनि द्वाशुषे व्यानशुः	२१
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः । इन्द्रं वाणीरनूषता समोजसे	२२
महान्तं महिना वयं स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् । अकैरभि प्र णोनुमः समोजसे	२३ ३१०
न यं विविक्तो रोदसी नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् । अमादिदस्य तित्विषे समोजसः	२४
यदिन्द्र पृतनाज्ये देवास्त्वा दधिरे पुरः । आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२५
यदा वृत्रं नदीवृतं शवसा वज्रिन्नवधीः । आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२६
यदा ते विष्णुरोजसा त्रीणि पदा विचक्रमे । आदित् ते हर्यता हरीं ववक्षतुः	२७
यदा ते हर्यता हरीं वावृधाते दिवेदिवे । आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे	२८ ३१५
यदा ते मारुतीर्विशस्तुभ्यमिन्द्र नियेमिरे । आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे	२९
यदा सूर्यममुं द्विवि शुक्रं ज्योतिरधारयः । आदित् ते विश्वा भुवनानि येमिरे	३०
इमां तं इन्द्र सुष्टुतिं विप्र इयति धीतिभिः । जामिं पदेव पिप्रतीं प्राध्वरे	३१
यदस्य धामानि प्रिये समीचीनासो अस्वरन् । नाभा यज्ञस्य द्रोहना प्राध्वरे	३२
सुवीर्यं स्वश्व्यं सुगव्यमिन्द्र दद्धि नः । होतैव पूर्वचित्तये प्राध्वरे	३३ ३१०

॥ १९ ॥ (ऋ० ८।१३।१-३३)

[नारदः काण्वः] । उष्णिक् ।

इन्द्रः सुतेषु सोमेषु	क्रतुं पुनीत उक्थ्यम्	। विदे वृधस्य दक्षसो महान् हि षः	१
स प्रथमे व्योमनि	देवानां सद्ने वृधः	। सुपारः सुश्रवस्तमः समप्सुजित्	२
तमह्वे वाजसातय	इन्द्रं भराय शुष्मिणम्	। भवां नः सुम्ने अन्तमः सखा वृधे	३
इयं त इन्द्र गिर्वणो	रातिः क्षरति सुन्वतः	। मन्वानो अस्य बर्हिषो वि राजसि	४
नूनं तदिन्द्र दद्वि नो	यत् त्वा सुन्वन्त ईमहे	। रयिं नश्चित्रमा भरा स्वर्विदम्	५ ३२५
स्तोता यत् ते विचर्षणि	रतिप्रशर्धयद् गिरः	। वया इवानु रोहते जुषन्त यत्	६
प्रत्नवज्जनया गिरः	शृणुधी जर्तुर्हवम्	। मदेमदे ववक्षिथा सुकृत्वने	७
क्रीळन्त्यस्य सूनता	आपो न प्रवता यतीः	। अया धिया य उच्यते पतिर्दिवः	८
उतो पतिर्य उच्यते	कृष्टीनामेक इद् वशी	। नमोवृधैरवस्युभिः सुते रण	९
स्तुहि श्रुतं विपश्चितं	हरी यस्य प्रसक्षिणा	। गन्तारा दाशुषो गृहं नमस्विनः	१० ३३०
तुतुजानो महेमते	ऽश्वेभिः प्रुषितप्सुभिः	। आ याहि यज्ञमाशुभिः शमिद्धि ते	११
इन्द्र शविष्ठ सत्पते	रयिं गृणत्सु धारय	। श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुत्वनम्	१२
हवे त्वा सूर उदिते	हवे मध्यंदिने दिवः	। जुषाण इन्द्र सप्तिभिर्न आ गहि	१३
आ तू गहि प्र तु द्रव	मत्स्वा सुतस्य गोमतः	। तन्तुं तनुष्व पूर्य यथा विदे	१४
यच्छक्रासि परावति	यदवावति वृत्रहन्	। यद् वा समुद्रे अन्धसोऽवितेदसि	१५ ३३५
इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	इन्द्रं सुतासु इन्द्रवः	। इन्द्रे हविष्मतीर्विशो अराणिषुः	१६
तमिद् विप्रा अवस्यवः	प्रवत्वतीभिरुतिभिः	। इन्द्रं क्षोणीरवर्धयन् वया इव	१७
त्रिकद्रुकेषु चेतनं	देवासो यज्ञमन्नत	। तमिद् वर्धन्तु नो गिरः सदावृधम्	१८
स्तोता यत् ते अनुव्रत	उक्थान्यृतुथा वृधे	। शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः	१९
तदिद् रुद्रस्य चेतति	यहं प्रत्नेषु धामसु	। मनो यत्रा वि तद् वृधुर्विचेतसः	२० ३४०
यदि मे सख्यमावर	इमस्य पाह्यन्धसः	। येन विश्वा अति द्विषो अतारिम	२१
कदा त इन्द्र गिर्वणः	स्तोता भवाति शन्तमः	। कदा नो गव्ये अश्व्ये वसौ दधः	२२
उत ते सुष्टुता हरी	वृषणा वहतो रथम्	। अजुर्यस्य मदिन्तमं यमीमहे	२३
तमीमहे पुरुष्टुतं	यहं प्रत्नाभिरुतिभिः	। नि बर्हिषि प्रिये सन्दुध द्विता	२४
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत	ऋषिष्टुताभिरुतिभिः	। धुक्षस्व पिप्युषीमिषमवा च नः	२५ ३४५
इन्द्र त्वमवितेदसी	त्वा स्तुवतो अद्विवः	। ऋतादियमि ते धियं मनोयुजम्	२६
इह त्या संधमाद्या	युजानः सोमपीतये	। हरी इन्द्र प्रतद्रसु अभि स्वर	२७

अभि स्वरन्तु ये तव रुद्रासः सक्षत श्रियम् । उतो मरुत्वतीर्विशो अभि प्रयः	२८
इमा अस्य प्रतूर्तयः पदं जुषन्त यद् द्विवि । नामा यज्ञस्य सं दधुर्यथा विदे	२९
अयं दीर्घाय चक्षसे प्राचि प्रयत्यध्वरे । मिमीते यज्ञमानुषग्विचक्षय	३० ३५०
वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी । वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः	३१
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषा यज्ञो यमिन्वासि वृषा हवः	३२
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिश्चित्राभिरुतिभिः । वावन्थ हि प्रतिष्ठुतिं वृषा हवः	३३

॥ २० ॥ (ऋ० ८।१४।१-१५)

[गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ] । गायत्री ।

यदिन्द्राहं यथा त्वमीशीय वस्व एक इत् । स्तोता मे गोषखा स्यात्	१
शिक्षेयमस्मै दिक्सेयं शर्चीपते मनीषिणे । यदुहं गोपतिः स्याम्	२ ३५५
धेनुष्ट इन्द्र सूनृता यजमानाय सुन्वते । गामश्वं पिप्युषीं दुहे	३
न ते वर्तास्ति राधस इन्द्र देवो न मर्त्यः । यद् दिक्सासि स्तुतो मधम्	४
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद् यद् भूमिं व्यवर्तयत् । चक्राण ओपशं द्विवि	५
वावृधानस्य ते वयं विश्वा धनानि जिग्युषः । ऊतिमिन्द्रा वृणीमहे	६
व्यन्तरिक्षमतिरन्मदे सोमस्य रोचना । इन्द्रो यदभिनद् बलम्	७ ३६०
उद् गा आजदङ्गिरोभ्य आविष्कृण्वन् गुहा सतीः । अर्वाञ्च नुनुदे बलम्	८
इन्द्रेण रोचना द्विवो हृळ्हानि हंहितानि च । स्थिराणि न पराणुदे	९
अपामुर्मिर्मदन्निव स्तोम इन्द्राजिरायते । वि ते मदा अराजिषुः	१०
त्वं हि स्तोमवर्धन इन्द्राश्वकथवर्धनः । स्तोतृणामुत भद्रकृत्	११
इन्द्रमित केशिना हरी सोमपेयाय वक्षतः । उप यज्ञं सुराधसम्	१२ ३६५
अपो फेनेन नमुचेः शिर इन्द्रोदवर्तयः । विश्वा यदजयः स्पृधः	१३
मायाभिरुत्तिसृप्सत इन्द्र द्यामारुरुक्षतः । अव दस्यूरधूनुथाः	१४
असुन्वामिन्द्र संसदं विषूचीं व्यनाशयः । सोमपा उत्तरो भवन्	१५

॥ २१ ॥ (ऋ० ८।१५।१-१३)

[गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ] । उणिक् ।

तम्बभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुष्टुतं । इन्द्रं गीर्भिस्तविषमा विवासत	१
यस्य द्विर्हंसो बृहत् स हो दाधार रोदसी । गिरीरज्रा अपः स्वर्वृषत्वना	२ ३७०
स राजसि पुरुष्टुतं एको वृत्राणि जिघ्रसे । इन्द्र जैत्रा श्रवस्या च यन्तवे	३
तं ते मदं गृणीमसि वृषणं पुत्सु सांसहिम् । उ लोककृत्नुमद्विवो हरिश्रियम्	४

येन ज्योतींष्यायवे मनवे च विवेदिथ	। मन्द्रानो अस्य बर्हिषो वि राजसि	५
तदुद्या चित् त उक्थिनो ऽनु पुवन्ति पूर्वथा	। वृषपत्नीरपो जया द्विवेदिवे	६
तव त्यादिन्द्रियं बृहत् तव शुष्ममुत क्रतुम्	। वज्रं शिशति धिषणा वरेण्यम्	७ ३७५
तव द्यौरिन्द्र पौंस्यं पृथिवी वर्धति श्रवः	। त्वामापः पर्वतासश्च हिन्विरे	८
त्वां विष्णुर्बृहन् क्षयो मित्रो गृणाति वरुणः	। त्वां शर्धो मदृत्यनु मारुतम्	९
त्वं वृषा जनानां मंहिष्ठ इन्द्र जज्ञिषे	। सत्रा विश्वा स्वपत्यानि दधिषे	१०
सत्रा त्वं पुरुष्टुत एको वृत्राणि तोशसे	। नान्य इन्द्रात् करणं भूय इन्वति	११
यदिन्द्र मन्मशस्त्वा नाना हवन्त ऊतये	। अस्माकेभिर्नृभिरत्रा स्वर्जय	१२ ३८०
अरं क्षयाय नो महे विश्वा रूपाण्याविशन्	। इन्द्रं जैत्राय हर्षया शचीपतिम्	१३

॥ २२ ॥ (ऋ० ८।१६।१-१२)

[इरिम्बिठिः काण्व.] । गायत्री ।

प्र सत्राजं चर्षणीनामिन्द्रं स्तोता नव्यं गीर्भिः	। नरं नृषाहं मंहिष्ठम्	१
यस्मिन्नुक्थानि रण्यन्ति विश्वानि च श्रवस्या	। अपामवो न समुद्रे	२
तं सुष्टुत्या विवासे ज्येष्ठराजं भरे कृतुम्	। महो वाजिनं सनिभ्यः	३
यस्यानूना गभीरा मदा उरवस्तरुत्राः	। हर्षुमन्तः शूरसातौ	४ ३८५
तमिद् धनेषु हितेष्वधिवाकाय हवन्ते	। येषामिन्द्रस्ते जयन्ति	५
तमिच्चयौत्तरार्यन्ति तं कृतेभिश्चर्षणयः	। एष इन्द्रो वरिवस्कृत्	६
इन्द्रो ब्रह्मेन्द्र ऋषिरिन्द्रः पुरु पुरुहूतः	। महान् महीभिः शचीभिः	७
सः स्तोम्युः स हव्यः सत्यः सत्वा तुविकूर्मिः	। एकश्चित् सन्नाभिभूतिः	८
तमर्केभिस्तं सामभिस्तं गायत्रैश्चर्षणयः	। इन्द्रं वर्धन्ति क्षितयः	९ ३९०
प्रणेतारं वस्यो अच्छा कर्तारं ज्योतिः समत्सु	। सासह्वासं युधामित्रान्	१०
स नः परिः पारयाति स्वास्ति नावा पुरुहूतः	। इन्द्रो विश्वा अति द्विषः	११
स त्वं न इन्द्र वाजैभिर्दशस्या च गातुया च	। अच्छा च नः सुन्नं नैषि	१२

॥ २३ ॥ (ऋ० ८।१७।१-१५)

[इरिम्बिठिः काण्वः] । [१४ वास्तोष्पतिर्वा] । गायत्री, प्रगाथः = (१४ बृहती, १५ सतोबृहती) ।

आ याहि सुषुमा हि त इन्द्र सोमं पिबा इमम्	। एदं बर्हिः सद्गो मम	१
आ त्वा ब्रह्मयुजा हरी वहतामिन्द्र केशिना	। उप ब्रह्माणि नः कृणु	२ ३९५
ब्रह्माणस्त्वा वयं युजा सोमपामिन्द्र सोमिनः	। सुतावन्तो हवामहे	३
आ नो याहि सुतावतो ऽस्माकं सुष्टुतीरुप	। पिबा सु शिप्रिन्नन्धसः	४

आ ते सिञ्चामि कुक्ष्यो—रनु गात्रा वि धावतु । गृभाय जिह्वया मधु	५
स्वादुष्टे अस्तु संसुवे मधुमान् तन्वेहे तव । सोमः शर्मस्तु ते हृदे	६
अयमु त्वा विचर्षणे जनीरिवाभि संवृतः । प्र सोम इन्द्र सर्पतु	७ ४००
तुविग्रीवो वपोदरः सुबाहुर्गन्धसो मदे । इन्द्रो वृत्राणि जिघ्रते	८
इन्द्र प्रेहि पुरस्त्वं विश्वस्येशान ओजसा । वृत्राणि वृत्रहस्तहि	९
दीर्घस्ते अस्त्वङ्कुशो येना वसु प्रयच्छसि । यजमानाय सुन्वते	१०
अयं त इन्द्र सोमो निपूतो अधि बर्हिषि । एहीमस्य द्रवा पिब	११
शाचिगो शाचिपूजना—स्य रणाय ते सुतः । आखण्डल प्र हूयसे	१२ ४०५
यस्ते शृङ्गवृषो नपात् प्रणपात् कुण्डपाय्यः । न्यस्मिन् दध आ मनः	१३
वास्तोष्पते ध्रुवा स्थूणां—ऽसत्रं सोम्यानाम् ।	
इप्सो भेत्ता पुरां शश्वतीना—मिन्द्रो मुनीनां सखा	१४
पृदाकुसानुर्यजतो गवेपण एकः सन्नाभि भूर्यसः ।	
भूर्णिमश्वं नयत् तुजा पुरो गृभे—न्द्रं सोमस्य पीतये	१५

॥ २४ ॥ (ऋ० ८।२१।१-१६)

[सोभरिः काण्वः] । प्रगाथः— (विषमा ककुप्, समा सतोबृहती) ।

वयमु त्वामपूर्व्यं स्थूरं न कच्चिद् भरन्तोऽवस्यवः । वाजे चित्रं हवामहे	१
उप त्वा कर्मन्तये स नो युवो—ग्रश्वक्राम यो धूषत् ।	
त्वामिन्द्रयवितारं ववृमहे सखाय इन्द्र सानसिम्	२ ४१०
आ याहीम इन्नुवो ऽश्वपते गोपत उर्वरापते । सोमं सोमपते पिब	३
वयं हि त्वा बन्धुमन्तमबन्धवो विप्रांस इन्द्र येमिम ।	
या ते धामानि वृषभ तेभिरा गहि विश्वेभिः सोमपीतये	४
सीदन्तस्ते वयो यथा गोश्रीते मधौ मद्विरे विवक्षणे । अभि त्वामिन्द्र नोनुमः	५
अच्छा च त्वैना नमसा वदामसि किं मुहुश्चिद् वि दीधयः ।	
सन्ति कामासो हरिवो दुद्विहं स्मो वयं सन्ति नो धियः	६ .
नूत्ना इदिन्द्र ते वय—मूती अभूम नहि नू ते अद्रिवः । विद्या पुरा परीणसः	७ ४१५
विद्या सखित्वमुत शूर भोज्य—मा ते ता वज्रिन्नीमहे ।	
उतो समस्मिन्ना शिशीहि नो वसो वाजे सुशिप्र गोमति	८
यो न इदमिदं पुरा प्र वस्य आनिनाय तमु वः स्तुषे । सखाय इन्द्रमूतये	९
हर्षश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं स हि ष्मा यो अमन्दत ।	
आ तु नः स वयति गव्यमश्व्यं स्तोतृभ्यो मघवा शतम्	१०

त्वया ह स्विद् युजा वयं प्रति श्वसन्तं वृषभ जुवीमहि । संस्थे जनस्य गोमंतः	११
जयेम कारे पुरुहूत कारिणो ऽभि तिष्ठेम दूढ्यः ।	
नृभिर्वृत्रं हन्याम शूशुयाम चा—ऽवेरिन्द्र प्र णो धियः	१२ ४२०
अभ्रातृव्यो अना त्व—मनापिरिन्द्र जनुषां सनादसि । युधेदापित्वमिच्छसे	१३
नकी रेवन्तं सख्याय विन्दसे पीर्यन्ति ते सुराश्वः ।	
यदा कृणोषि नदुनुं समूहस्या—दित पितेव हूयसे	१४
मा ते अमाजुरो यथा मूरास इन्द्र सख्ये त्वावतः । नि षदाम सचा सुते	१५
मा ते गोदत्र निरराम राधस इन्द्र मा ते गृहामहि ।	
हृह्वा चिदुर्यः प्र मृशाभ्या भर न ते दामान आदभे	१६

॥ २५ ॥ (क्र० ८।३४।१-१८)

[नीपातिथिः काण्वः, १६-१८ सहस्रं वसुरोचिषोऽङ्गिरसः] । अनुष्टुप्, १६-१८ गायत्री ।

एन्द्र याहि हरिभि—रुप कण्वस्य सुष्टुतिम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१ ४२५
आ त्वा ग्रावा वदन्निह सोमी घोषेण यच्छतु । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	२
अत्रा वि नेमिरेषा—मुरां न धूनुते वृकः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	३
आ त्वा कण्वा इहावसे हवन्ते वाजसातये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	४
दधामि ते सुतानां वृष्णे न पूर्वपाय्यम् । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	५
स्मत्पुनन्धिर्न आ गहि विश्वतोधीर्न ऊतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	६ (४३०)
आ नो याहि महेमते सहस्रोते शतामघ । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	७
आ त्वा होता मनुर्हितो देवत्रा वक्षदीड्यः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	८
आ त्वा मकुच्युता हरी श्येनं पक्षेव वक्षतः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	९
आ याह्यर्य आ परि स्वाहा सोमस्य पीतये । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१०
आ नो याह्यपशु—त्युक्थेषु रणया इह । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	११ (४३५)
सरूपैरा सु नो गहि संभृतैः संभृताश्वः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१२
आ याहि पर्वतेभ्यः समुद्रस्याधि विष्टपः । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१३
आ नो गव्यान्यश्व्या सहस्रा शूर ददहि । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१४
आ नः सहस्रशो भरा—ऽयुतानि शतानि च । दिवो अमुष्य शासतो दिवं यय दिवावसो	१५
आ यदिन्द्रश्च ददहे सहस्रं वसुरोचिषः । ओर्जिष्ठमश्व्यं पशुम्	१६ (४४०)
य ऋजा वातरंहसो ऽरुषासो रघुव्यदः । भ्राजन्ते सूर्या इव	१७
पारावतस्य रातिषु इवच्चक्रैष्वाशुषु । तिष्ठं वनस्य मध्य आ	१८

॥ २६ ॥ (ऋ० ८।४५।१-४२)

[त्रिशोकः काण्वः] । [१ अग्नीन्द्रौ] । गायत्री ।

आ घा ये अग्निमिन्धुते	स्तृणन्ति बर्हिरानुषक् ।	येषामिन्द्रो युवा सखा	१
बृहन्निदिधम एषां	भूरि शस्तं पृथुः स्वरुः ।	येषामिन्द्रो युवा सखा	२
अयुद्ध इद युधा वृतं	शूर आर्जति सत्त्वभिः ।	येषामिन्द्रो युवा सखा	३ ४४५
आ बुन्दं वृत्रहा ददे	जातः पृच्छद् वि मातरम् ।	क उयाः के ह शृण्विरे	४
प्रति त्वा शवसी वदद्	गिरावप्सो न योधिषत् ।	यस्ते शत्रुत्वमाचके	५
उत त्वं मघवञ्छृणु	यस्ते वष्टि ववक्षि तत् ।	यद् वीळयासि वीळु तत्	६
यदाजिं यात्याजिकृ	दिन्द्रः स्वश्वयुरुष ।	रथीतमो रथीनाम्	७
वि षु विश्वा अभियुजो	वज्रिन् विष्वग्यथा बृह ।	भवा नः सुश्रवस्तमः	८ ४५०
अस्माकं सु रथं पुर	इन्द्रः कृणोतु सातये ।	न यं धूर्वन्ति धूर्तयः	९
वृज्याम ते परि द्विषो	ऽरं ते शक्र दावने ।	गमेमेदिन्द्र गोमतः	१०
शनैश्चिद् यन्तो अद्विवो	ऽश्वावन्तः शतग्विनः ।	विवक्षणा अनेहसः	११
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे	सहस्रां सुनृतां शता ।	जरितृभ्यो विमहते	१२
विद्वा हि त्वा धनंजय	मिन्द्र हृळ्हा चिदारुजम् ।	आदारिणं यथा गर्यम्	१३ ४५५
कुकुहं चित् त्वा कवे	मन्दन्तु धृष्णाविन्दवः ।	आ त्वां पणिं यदीमहे	१४
यस्ते रेवां अदाशुरिः	प्रममर्षं मघत्तये ।	तस्य नो वेदु आ भर	१५
इम उ त्वा वि चक्षते	सखाय इन्द्र सोमिनः ।	पुष्टावन्तो यथा पशुम्	१६
उत त्वाबधिरं वयं	श्रुत्कर्णं सन्तमूतये ।	दूराद्विह हवामहे	१७
यच्छुश्रूया इमं हवं	दुर्मर्षं चक्रिया उत ।	भवेरापिनो अन्तमः	१८ ४६०
यच्चिद्धि ते अपि व्यथि	र्जगन्वांसो अमन्माहि ।	गोदा इदिन्द्र बोधि नः	१९
आ त्वा रम्भं न जिवयो	रम्भा शवसस्पते ।	उश्मसि त्वा सुधस्थ आ	२०
स्तोत्रमिन्द्राय गायत	पुरुनुम्णाय सत्वने ।	नक्रियं वृण्वते युधि	२१
अभि त्वा वृषभा सुते	सुतं सृजामि पीतये ।	तुम्पा व्यश्रुही मदम्	२२
मा त्वा मूरा अविष्यवो	मोपहस्वान् आ दभन् ।	माकीं ब्रह्माद्विषो वनः	२३ ४६५
इह त्वा गोपरीणसा	महे मन्दन्तु राधसे ।	सरो गौरो यथा पिब	२४
या वृत्रहा परावति	सना नवा च चुच्युवे ।	ता संसत्सु प्र वोचत	२५
अपिबत् कद्रुवः सुत	मिन्द्रः सहस्रबाह्वे ।	अत्रदिदिष्ट पौंस्यम्	२६
सत्यं तत् तुर्वशे यदौ	विदानो अह्मवाय्यम् ।	व्यानद् तुर्वणो शमि	२७

तरणिं वो जनानां त्रदं वाजस्य गोमतः	। समानमु प्र शंसिषम्	२८ ४७०
ऋभुक्षणं न वर्तव उक्थेषु तुष्ट्यावृधम्	। इन्द्रं सोमे सचा सुते	२९
यः कुन्तदिद् वि योन्यं त्रिशोकाय गिरिं पृथुम्	। गोभ्यो गातुं निरेतवे	३०
यद् दधिषे मनस्यसि मन्दानः प्रेदियक्षसि	। मा तत् करिन्द्र मूळय	३१
दुभ्रं चिद्धि त्वावतः कृतं शृणवे अधि क्षमि	। जिगात्विन्द्र ते मनः	३२
तवेदु ताः सुकीर्तयो ऽसन्नुत प्रशस्तयः	। यदिन्द्र मूळयासि नः	३३ ४७५
मा न एकस्मिन्नागसि मा द्वयोरुत त्रिषु	। वृधीर्मा शूर भूरिषु	३४
बिभया हि त्वावत उग्रादभिप्रभङ्गिणः	। दुस्मादुहर्मृतीषहः	३५
मा सख्युः शूनमा विदे मा पुत्रस्य प्रभूवसो	। आवृत्वद् भूतु ते मनः	३६
को नु मर्या अभिथितः सखा सखायमब्रवीत्	। जहा को अस्मदीषते	३७
एवारं वृषभा सुते ऽसिन्वन् भूर्यावयः	। श्वघ्नीव निवता चरन्	३८ ४८०
आ त एता वचोयुजा हरीं गृण्णे सुमद्रथा	। यदीं ब्रह्मभ्य इहदः	३९
मिन्धि विश्वा अप द्विषः परि बाधो जही मृधः	। वसुं स्पार्हं तदा भर	४०
यद्वीळाविन्द्र यत् स्थिरे यत् पर्शानि पराभृतम्	। वसुं स्पार्हं तदा भर	४१
यस्य ते विश्वमानुषो भूरैर्दुत्तस्य वेदति	। वसुं स्पार्हं तदा भर	४२

॥ २७ ॥ (ऋ० ८।४९।१-१०)

[प्रस्कण्वः काण्वः] । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

अभि प्र वः सुरार्धस—मिन्द्रमर्चं यथा विदे ।		
यो जरितृभ्यो मघवा पुरुवसुः सहस्रेणेव शिक्षति	१	४८५
शतानीकेव प्र जिगाति धृष्णुया हन्ति वृत्राणि द्वाशुषे ।		
गिरोरिव प्र रसा अस्य पिन्विरे दत्राणि पुरुभोजसः	२	
आ त्वा सुतास इन्द्रवो मदा य इन्द्र गिर्वणः ।		
आपो न वज्रिन्नन्वोक्थं सरः पूणन्ति शूर राधसे	३	
अनेहसं प्रतरणं विवक्षणं मध्वः स्वादिष्ठमीं पिव ।		
आ यथा मन्दसानः किरासि नः प्र क्षुदेव त्मना धुषत्	४	
आ नः स्तोममुप द्रव—द्वियानो अश्वो न सोतृभिः ।		
यं ते स्वधावन्त्स्वदयन्ति धेनव इन्द्र कण्वेषु रातयः	५	
उग्रं न वीरं नमसोप सेदिम विभूतिमाक्षितावसुम् ।		
उद्रीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते क्षरन्तीन्द्र धीतयः	६	४९०

यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे यद्वा पृथिव्यामधि ।

अतो नो यज्ञमाशुभिर्महेमत उग्र उग्रेभिरा गहि

७

अजिरासो हरयो ये ते आशवो वार्ता इव प्रसक्षिणः ।

येभिरपत्यं मनुषः परीर्यसे येभिर्विश्वं स्वर्हृशे

८

एतावतस्त ईमह इन्द्र सुमनस्य गोमतः ।

यथा प्रावो मघवन् मेध्यातिथिं यथा नीपातिथिं धने

९

यथा कण्वे मघवन् त्रसदस्यवि यथा पक्थे दशव्रजे ।

यथा गोशर्ये असनोर्ऋजिष्वनीन्द्र गोमन्द्रिरण्यवत्

१०

॥ २८ ॥ (ऋ० ८।५०।१-१०)

[पुष्टिगुः काण्वः] । प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

प्र सु श्रुतं सुरार्धस मर्चा शक्रमभिष्टये ।

यः सुन्वते स्तुवते काम्यं वसु सहस्रेणेव मंहते

१

४९५

शतानीका हेतयो अस्य दुष्टरा इन्द्रस्य समिषो महीः ।

गिरिर्न भुज्मा मघवत्सु पिन्वते यदी सुता अमन्दिषुः

२

यदी सुतासु इन्द्रवो ऽभि प्रियममन्दिषुः ।

आपो न धायि सर्वनं म आ वसो दुधा इवोप द्वाशुषे

३

अनेहसं वो हवमानमूतये मध्वः क्षरन्ति धीतयः ।

आ त्वा वसो हवमानासु इन्द्रव उप स्तोत्रेषु दधिरे

४

आ नः सोमे स्वध्वर इयानो अत्यो न तोशते ।

यं ते स्वदावन्त्स्वदन्ति गूर्तयः पौरे छन्दयसे हवम्

५

प्र वीरमुग्रं विविचि धनस्पृतं विभूतिं राधसो महः ।

उद्रीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना सदा पीपेथ द्वाशुषे

६

५००

यद्ध नूनं परावति यद् वा पृथिव्यां विवि ।

युजान इन्द्र हरिर्भिर्महेमत ऋष्व ऋष्वेभिरा गहि

७

रथिरासो हरयो ये ते असिध ओजो वातस्य पिप्रति ।

येभिर्नि दस्युं मनुषो निघोषयो येभिः स्वः परीर्यसे

८

एतावतस्ते वसो विद्याम शूर नव्यसः ।

यथा प्राव एतं कृत्वये धने यथा वशं दशव्रजे

९

यथा कण्वे मघवन् मेधे अध्वरे वीर्धनीथे दमूनसि ।

यथा गोशर्ये असिषासो अद्रिवो मयि गोत्रं हरिभिर्यम्

१०

॥ २९ ॥ (ऋ० ८।५१।१-१०)

(५०५-५१४) श्रुष्टिगुः काण्वः । प्रगाथः- (विषमा बृहती; समा सतोबृहती) ।

यथा मनौ सांवरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।

नीपातिथौ मघवन् मेध्यातिथौ पुष्टिगौ श्रुष्टिगौ सचा १

५०५

पार्षद्वाणः प्रस्कण्वं समसादयच्छयानं जिब्रिमुद्धितम् ।

सहस्राण्यसिषासद् गवामृषिस्त्वोतो दस्यवे वृकः २

य उक्थेभिर्न विन्धते चिकिद्य ऋषिचोदनः ।

इन्द्रं तमच्छा वदु नव्यस्या मृत्यरिष्यन्तं न भोजसे ३

यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानुचुस्त्रिधातुमुत्तमे पदे ।

स त्विमा विश्वा भुवनानि चिक्रदुदादिजनिष्ट पौंस्यम् ४

यो नो दाता वसूनामिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।

विद्या ह्यस्य सुमतिं नवीयसीं गमेम गोमति व्रजे ५

यस्मै त्वं वसो वानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्रुते ।

तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे ६

५१०

कदा चन स्तरीरसि नेन्द्रं सश्वसि दाशुषे ।

उपोपेन्नु मघवन् भूय इन्द्र ते दानं देवस्य पृच्यते ७

प्र यो ननक्षे अभ्योर्जसा क्रिबि वधैः शुष्णं निघोषयन् ।

यदेदस्तम्भीत् प्रथयन्नुमं दिवमादिजनिष्ट पार्थिवः ८

यस्यायं विश्व आयो दासः शेषधिपा अरिः ।

तिरश्चिदुर्ये रुशमे पवीरवि तुभ्येत् सो अज्यते रयिः ९

तुरण्यवो मधुमन्तं घृतश्रुतं विप्रासो अर्कमानुचुः ।

अस्मे रयिः पंपथे वृष्ण्यं शवो ऽस्मे सुवानास इन्द्रवः १०

॥ ३० ॥ (ऋ० ८।५१।१-१०)

(५१५-५२४) आयुः काण्वः । प्रगाथः- (विषमा बृहती; समा सतोबृहती) ।

यथा मनौ विर्वस्वति सोमं शक्रापिबः सुतम् ।

यथा त्रिते छन्द इन्द्र जुजोषस्यायौ मादयसे सचा १

५१५

पृषधे मेधये मातरिष्वनीन्द्रं सुवाने अमन्दथाः ।

यथा सोमं दशशिप्रे दशोण्ये स्यूमरश्मावृजूनसि २

य उक्था केवला वृधे यः सोमं धृषितापिबत् ।

यस्मै विष्णुस्त्रीणि पदा विचक्रम उप मित्रस्य धर्मभिः ३

दे० ४ [इन्द्रः]

यस्य त्वमिन्द्र स्तोमेषु चाकनो वाजं वाजिच्छतक्रतो ।	
तं त्वा वयं सुदुर्घामिव गोदुहो जुहुमसि श्रवस्यवः	४
यो नो दाता स नः पिता महौ उग्र ईशानकृत् ।	
अयामन्नग्रो मधवा पुरुवसुर्गौरश्वस्य प्र दातु नः	५
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।	
वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे	६
कदा चन प्र युच्छस्युभे नि पांसि जन्मनी ।	
तुरीयादित्य हवनं त इन्द्रियमा तस्थावमृतं विवि	७
यस्मै त्वं मधवान्निन्द्र गिर्वणः शिक्षो शिक्षसि वाशुषे ।	
अस्माकं गिर उत सुष्टुतिं वसो कण्ववच्छृणुधी हवम्	८
अस्तावि मन्म पूर्य ब्रह्मेन्द्राय वोचत ।	
पूर्वीर्कृतस्य बृहतीरनूषत स्तोतुर्मेधा असृक्षत	९
समिन्द्रो रायो बृहतीरधूनुत सं क्षोणी समु सूर्यम् ।	
सं शुक्रासः शुचयः सं गवाशिरः सोमा इन्द्रममन्दिषुः	१०

॥ ३१ ॥ (ऋ० ८।५३।१-८)

(५२५-५३२) मेध्यः काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

उपमं त्वा मघोनां ज्येष्ठं च वृषभाणाम् ।	
पुर्भित्तमं मधवान्निन्द्र गोविदुमीशानं राय ईमहे	१
य आयुं कुत्समतिथिग्वमर्दयो वावृधानो विवेदिवे ।	
तं त्वा वयं हर्यश्वं शतक्रतुं वाजयन्तो हवामहे	२
आ नो विश्वेषां रसं मध्वः सिञ्चन्वद्रयः ।	
ये परावर्ति सुन्विरे जनेष्वा ये अर्वावतीन्दवः	३
विश्वा द्वेषांसि जहि चाव चा कृधि विश्वे सन्वन्त्वा वसु ।	
शीष्टेषु चित ते मदिरासो अंशवो यत्रा सोमस्य तुम्पसि	४
इन्द्र नेदीय एदिहि मितमेधाभिरुतिभिः ।	
आ शंतम शंतमाभिरभिष्टिभि रा स्वापि स्वापिभिः	५
आजितुरं सत्पतिं विश्वचर्षणिं कृधि प्रजास्वार्भगम् ।	
प्र सू तिरा शचीभिर्ये तं उक्थिनः क्रतुं पुनत आनुषक्	६
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ते स्याम भरेषु ते ।	
यं होत्राभिरुत देवहूतिभिः ससर्वासो मनामहे	७

अहं हि ते हरिवो ब्रह्म वाजयु—राजिं यामि सद्योतिभिः ।

त्वामिदेव तममे समश्वयु—र्गव्युरग्रे मथीनाम्

८

॥ ३२ ॥ (ऋ० ८।५४।१-६)

(५३३-५३८) मातरिष्वा काण्वः । प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

एतत् तं इन्द्र वीर्यं गीर्भिर्गुणान्ति कारवः ।

ते स्तोभन्त ऊर्जमावन् घृतश्रुतं पौरासो नक्षन् धीतिभिः

१

नक्षन्त इन्द्रमवसे सुकृत्यया येषां सुतेषु मन्दसे ।

यथा संवर्ते अमवो यथा कृश एवास्मे इन्द्र मत्स्व

२

यदिन्द्र राधो अस्ति ते मार्घो न मघवत्तम ।

तेन नो बोधि सधुमाद्यो वृधे भगो वृनाय वृत्रहन्

५

५३५

आजिपते नृपते त्वमिन्द्रि नो वाज आ वक्षि सुक्रतो ।

वीती होत्राभिरुत देववीतिभिः ससवांसो वि शृण्विरे

६

सन्ति ह्ययं आशिष इन्द्र आयुर्जनानाम् ।

अस्मान् नक्षस्व मघवन्नृपावसे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्

७

वयं तं इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम त्वमस्माकं शतक्रतो ।

महिं स्थुरं शशयं राधो अह्वयं प्रस्कण्वाय नि तोशय

८

॥ ३३ ॥ (ऋ० ८।५५।१-५)

(५३९-५४३) कृशः काण्वः । [प्रस्कण्वश्च] । गायत्री, ३, ५ अनुष्टुप् ।

भूरीदिन्द्रस्य वीर्यं व्यख्यमभ्यारयति । राधस्ते दस्यवे वृक

१

शतं श्वेतासं उक्षणो विवि तारो न रोचन्ते । मृहा दिवं न तस्तभुः

२

५४०

शतं वेणूञ्छतं शुनः शतं चर्माणि म्लानानि ।

शतं मे बल्वजस्तुका अरुषीणां चतुःशतम्

३

सुदेवाः स्थं काण्वायना वयोवयो विचरन्तः । अश्वांसो न चङ्क्रमत

४

आदित साप्तस्य चर्किरन्नानूनस्य महि श्रवः ।

श्यावीरतिध्वसन् पथश्चक्षुषा च न संनशे

५

॥ ३४ ॥ (ऋ० ८।५६।१-४)

(५४४-५४७) पृषधः काण्वः । गायत्री ।

प्रति ते दस्यवे वृक राधो अदृश्यह्वयम् । द्यौर्न प्रथिना शवः

१

दश मह्यं पौतक्रतः सहस्रा दस्यवे वृकः । नित्याद्वायो अमंहत

२

५४५

शतं मे गर्वभानां शतमूर्णावतीनाम् । शतं वृसाँ अति स्रजः

३

तत्रो अपि प्राणीयत पूतकृतयै व्यक्ता । अश्वानामिन्न यूथ्याम् ४

॥ ३५ ॥ (ऋ० ८।६।१-१८)

(५४८-५६५) भर्गः प्रागाथः । प्रगाथः- (विषमा बृहती, समा सतोषृहती); १७ शंकुमती ।

उभयं शृणवच्च न इन्द्रो अर्वागिदं वचः ।

सन्नाच्या मघवा सोमपीतये धिया शर्विष्ठ आ गमत् १

तं हि स्वराजं वृषभं तमोजसे धिषणे निष्टतक्षतुः ।

उतोपमानां प्रथमो नि षीदसि सोमकामं हि ते मनः २

आ वृषस्व पुरुवसो सुतस्येन्द्रान्धसः ।

विद्वा हि त्वा हरिवः पूतसु सासहि—मधृष्टं चिद् दधुष्वणिम् ३ ५५०

अप्रामिसत्य मघवन् तथेदस—दिन्द्र कत्वा यथा वशः ।

सनेम वाजं तव शिप्रिन्नवसा मक्षू चिद्यन्तो अद्विवः ४

शग्धूदृषु शचीपत् इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।

भगं न हि त्वा यशसं वसुविदु—मनु शूर चरामसि ५

पौरो अश्वस्य पुरुकृद् गवाम—स्युत्सो देव हिरण्ययः ।

नकिर्हि दानं परिमर्धिषत् त्वे यद्यद्यामि तदा भर ६

त्वं ह्येहि चेरवे विदा भगं वसुत्तये ।

उद्रावृषस्व मघवन् गर्विष्ठय उदिन्द्राश्वमिष्ठये ७

त्वं पुरू सहस्राणि शतानि च यूथा दानाय मंहसे ।

आ पुरंदुरं चकृम विप्रवचस इन्द्रं गायन्तोऽवसे ८ ५५५

अविप्रो वा यदविध—द्विप्रो वेन्द्र ते वचः ।

स प्र ममन्दत् त्वाया शतक्रतो प्राचामन्यो अहंसन ९

उग्रबाहुर्भक्षकृत्वा पुरंदुरो यदि मे शृणवद्वर्धम् ।

वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे १०

न पापासो मनामहे नारायासो न जलहवः ।

यदिद्विन्द्रं वृषणं सचा सुते सखायं कृणवामहे ११

उग्रं युयुज्म पृतनासु सासहि—मृणकातिमदाभ्यम् ।

वेदा भूमं चित्र सनिता रथीतमो वाजिनं यमिदु नशत् १२

यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।

मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभि—र्वि द्विषो वि मृधो जहि १३ ५६०

त्वं हि राधस्पते राधसो महः क्षयस्यासि विधृतः ।	
तं त्वा वयं मधवन्निन्द्र गिर्वणः सुतावन्तो हवामहे	१४
इन्द्रः स्पष्टुत वृत्रहा परस्पा नो वरेण्यः ।	
स नो रक्षिषच्चरमं स मध्यमं स पश्चात् पातु नः पुरः	१५
त्वं नः पश्चादधरादुत्तरात् पुर इन्द्र नि पाहि विश्वतः ।	
आरे अस्मत् कृणुहि दैव्यं भयमारे हेतीरदेवीः	१६
अद्याद्या श्वःश्व इन्द्र त्रास्व परे च नः ।	
विश्वा च नो जरितृन्तस्तपते अहा दिवा नक्तं च रक्षिषः	१७
प्रभङ्गी शूरो मधवा तुवीमघ्नः संमिश्रो वीर्याय कम् ।	
उभा ते बाहू वृषणा शतक्रतो नि या वज्रं मिमिक्षतुः	१८

५६५

॥ ३६ ॥ (क्र० ८।६२।१-१२)

(५६६-५७७) प्रगाथो घोरः काण्वः । पङ्क्तिः, ७-९ बृहती ।

प्रो अस्मा उपस्तुतिं भरता यज्जुजोषति ।	
उक्थैरिन्द्रस्य माहिर्न वयो वर्धन्ति सोमिनो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	१
अयुजो असमो नृभिरेकः कृण्टीरयास्यः ।	
पूर्वीरति प्र वावृधे विश्वा जातान्योजसा भद्रा इन्द्रस्य रातयः	२
अहितेन चिदर्वता जीरदानुः सिषासति ।	
प्रवाच्यमिन्द्र तत् तव वीर्याणि करिष्यतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	३
आ याहि कृणवाम त इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।	
येभिः शविष्ठ चाकनो भद्रमिह श्रवस्यते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	४
धूषतश्चिद् धूषन्मनः कृणोषीन्द्र यत् त्वम् ।	
तीव्रैः सोमैः सपर्यतो नमोभिः प्रतिभूषतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	५
अव चष्टु ऋचीषमो ऽवता इव मानुषः ।	
जुङ्घी दक्षस्य सोमिनः सखायं कृणुते युजं भद्रा इन्द्रस्य रातयः	६
विश्वे त इन्द्र वीर्यं देवा अनु क्रतुं ददुः ।	
भुवो विश्वस्य गोपतिः पुरुष्टुत भद्रा इन्द्रस्य रातयः	७
गूणे तदिन्द्र ते शव उपमं देवतातये ।	
यन्द्रंसि वृत्रमौजसा शचीपते भद्रा इन्द्रस्य रातयः	८
समनेव वपुष्यतः कृणवन्मानुषा युगा ।	
विदे तदिन्द्रश्चेतनमध श्रुतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः	९

५७०

उज्जातमिन्द्र ते शव उत त्वामुत तव क्रतुम् ।

भूरिगो भूरि वावृधु—र्मघवन् तव शर्मणि भद्रा इन्द्रस्य रातयः १०

५७५

अहं च त्वं च वृत्रहन् त्सं युज्याव सनिभ्य आ ।

अरातीवा चिदद्विवो ऽनु नौ शूर मंसते भद्रा इन्द्रस्य रातयः ११

सत्यमिदं वा उ तं वय—मिन्द्रं स्तवाम नानृतम् ।

महाँ असुन्वतो वधो भूरि ज्योतीषि सुन्वतो भद्रा इन्द्रस्य रातयः १२

॥ ३७ ॥ (ऋ० ८।६३।१-११)

(५७८-६१२) प्रगाथः काण्वः । गायत्री; १, ४-५, ७ अनुष्टुप् ।

स पूर्यो महानां वेनः क्रतुभिरानजे । यस्य द्वारा मनुष्पिता देवेषु धियं आनजे १

दिवो मानं नोत्सदुन् त्सोमपृष्ठासो अद्रयः । उक्था ब्रह्म च शंस्या २

स विद्रां अङ्गिरोभ्य इन्द्रो गा अवृणोदप । स्तुषे तदस्य पौंस्यम् ३ ५८०

स प्रत्नथा कविवृध इन्द्रो वाकस्य वक्षणिः । शिवो अर्कस्य होम—न्यस्मन्ना गन्त्ववसे ४

आदू नु ते अनु क्रतुं स्वाहा वरस्य यज्यवः । श्वात्रमर्का अनूषते—न्द्र गोत्रस्य दावने ५

इन्द्रे विश्वानि वीर्या कृतानि कर्त्तव्यानि च । यमर्का अध्वरं विदुः ६

यत् पाञ्चजन्यया विशे—न्द्रे घोषा असूक्ष्म । अस्तृणाद्वर्हणा विपोऽ ७

इयमु ते अनुष्टुति—श्चकृषे तानि पौंस्या । प्रावश्चक्रस्य वर्तनिम् ८ ५८५

अस्य वृष्णो व्योदन उरु क्रमिष्ट जीवसे । यवं न पश्व आ ददे ९

तद्दधाना अवस्यवो युष्माभिर्दक्षपितरः । स्याम मरुत्वतो वृधे १०

बळुत्वियाय धाम्न ऋक्भिः शूर नोनुमः । जेषमिन्द्र त्वया युजा ११

॥ ३८ ॥ (ऋ० ८।६४।१-१२) गायत्री ।

उत त्वा मन्दन्तु स्तोमाः कृणुष्व राधो अद्विवः । अव ब्रह्मद्विषो जहि १

पदा पूर्णिराधसो नि बाधस्व महाँ असि । नहि त्वा कश्चन प्रति २ ५९०

त्वमीशिषे सुताना—मिन्द्र त्वमसुतानाम् । त्वं राजा जनानाम् ३

एहि प्रेहि क्षयो दि—व्याऽघोषार्धणीनाम् । ओमे पूर्णासि रोदसी ४

त्यं चित् पर्वतं गिरिं शतवन्तं सहस्रिणाम् । वि स्तोतृभ्यो रुरोजिथ ५

वयमु त्वा दिवा सुते वयं नक्तं हवामहे । अस्माकं काममा पूर्ण ६

क १ स्य वृषभो युवा तुविशीवो अनानतः । ब्रह्मा कस्तं संपर्यति ७ ५९५

कस्य स्वित् सर्वनं वृषा जुजुष्वो अव गच्छति । इन्द्रं क उ स्विदा चके ८

कं ते वृाना असक्षत वृत्रहन् कं सुवीर्या	। उक्थे क उ स्विदन्तमः	९
अयं ते मानुषे जने सोमः पुरुषु सूयते	। तस्येहि प्र व्रवा पिब	१०
अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रियः	। आजीकीये मदिन्तमः	११
तमद्य राधसे महे चारुं मदाय घृष्वये	। एहीमिन्द्र व्रवा पिब	१२

६००

॥ ३९ ॥ (ऋ० ८।६५।१-१२)

यदिन्द्र प्रागपागुदुङ् न्यग्वा ह्यसे नृभिः	। आ याहि तूर्यमाशुभिः	१
यद्वा प्रस्रवणे दिवो मादयासे स्वर्णरे	। यद्वा समुद्रे अन्धसः	२
आ त्वा गीर्भिर्महामुरुं हुवे गामिव भोजसे	। इन्द्र सोमस्य पीतये	३
आ त इन्द्र महिमानं हरयो देव ते महः	। रथे वहन्तु बिभ्रतः	४
इन्द्रं गृणीष उ स्तुषे महां उग्र ईशानकृत	। एहि नः सुतं पिब	५
सुतावन्तस्त्वा वयं प्रयस्वन्तो हवामहे	। इदं नो बहिरासदे	६
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम्	। तं त्वा वयं हवामहे	७
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः	। जुषाण इन्द्र तत् पिब	८
विश्वो अर्यो विपश्चितो ऽति ख्यस्तूयमा गहि	। अस्मे धेहि श्रवो बृहत्	९
वृता मे पृषतीनां राजा हिरण्यवीनाम्	। मा देवा मघवा रिषत्	१०
सहस्रे पृषतीनामधि श्रन्द्रं बृहत् पृथु	। शुक्रं हिरण्यमा ददे	११
नपातो दुर्गहस्य मे सहस्रेण सुरार्धसः	। श्रवो देवेष्वकत	१२

६०५

६१०

॥ ४० ॥ (ऋ० ८।६६।१-१५)

(६१३-६१७) कलिः प्रागाथः । प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती), १५ अनुष्टुप् ।

तरोभिर्वो विद्वद्रसुमिन्द्रं सुबाध ऊतये ।

बृहद्वायन्तः सुतसेमि अध्वरे हुवे मरं न कारिणम् १

न यं दुधा वरन्ते न स्थिरा मुरो मदे सुशिप्रमन्धसः ।

य आहृत्या शशमानाय सुन्वते दाता जरित्र उक्थ्यम् २

यः शक्रो मूक्षो अश्व्यो यो वा कीजो हिरण्ययः ।

स ऊर्ध्वस्य रजयत्यपावृतिमिन्द्रो गव्यस्य वृत्रहा ३

निष्ठातं चिद्यः पुरुसंभूतं वसूद्विर्पति वाशुषे ।

वज्री सुशिप्रो हर्षश्च इत् करदिन्द्रः कत्वा यथा वशात् ४

यद् वावन्थ पुरुष्टुत पुरा चिच्छूर नृणाम् ।

वयं तत् त इन्द्र सं भरामसि यज्ञमुक्थं तुरं वचः ५

६१५

सचा सोमेषु पुरुहूत वज्रिवो मदाय द्युक्ष सोमपाः ।	
त्वमिन्द्रि ब्रह्मकृते काम्यं वसु देष्टः सुन्वते भुवः	६
वयमेनमिदा ह्यो ऽपीपेमेह वज्रिणम् ।	
तस्मा उ अद्य समना सुतं भ्रा—ऽऽ नूनं भूषत श्रुते	७
वृकश्चिदस्य वारुण उरामथि—रा वयुनेषु भूषति ।	
सेमं नः स्तोमं जुजुषाण आ गही—न्द्र प्र चित्रया धिया	८
कद्रु न्व—स्याकृत—मिन्द्रस्यास्ति पौंस्यम् ।	६२०
केनो नु कं श्रोमतेन न शुश्रुवे जनुषः परि वृत्रहा	९
कद्रु महीरधृष्टा अस्य तविषीः कद्रु वृत्रघ्नो अस्तृतम् ।	
इन्द्रो विश्वान् बेकनाटौ अहर्दश उत क्रत्वा पर्णारमि	१०
वयं घा ते अपूर्व्ये—न्द्र ब्रह्माणि वृत्रहन् ।	
पुरुतमांसः पुरुहूत वज्रिवो भूतिं न प्र भरामसि	११
पूर्वीश्चिन्द्रि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो हवन्त इन्द्रोतयः ।	
तिरश्चिद्वयः सवना वसो गहि शविष्ठ श्रुधि मे हवम्	१२
वयं घा ते त्वे इ—न्द्रिन्द्र विप्रा अपि ञ्सि ।	
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्दिता	१३
त्वं नो अस्या अमतेरुत क्षुधोऽ—ऽमिशस्तेरव स्पृधि ।	६२५
त्वं न ऊती तव चित्रया धिया शिक्षा शचिष्ठ गातुवित्	१४
सोम इद्रः सुतो अस्तु कलयो मा बिभीतन ।	
अपेदेष्ट ध्वस्मारयति स्वयं घैषो अपायति	१५

॥ ४१ ॥ (ऋ० ८।७६।१-१२)

(६२८-६६०) कुरुसुतिः काण्वः । गायत्री ।

इमं नु मायिनं हुव इन्द्रमीशानमोर्जसा	। मरुत्वन्तं न वृत्रसे	१
अयमिन्द्रो मरुत्सखा वि वृत्रस्याभिनच्छिरः	। वज्रेण शतपर्वणा	२
वावुधानो मरुत्सखे—न्द्रो वि वृत्रमैरयत्	। सृजन्तसमुद्रिया अपः	३
अयं ह येन वा इदं स्वमरुत्वता जितम्	। इन्द्रेण सोमपीतये	४
मरुत्वन्तमृजीषिण मोर्जस्वन्तं विरप्तिनम्	। इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे	५
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे	। अस्य सोमस्य पीतये	६
मरुत्वौ इन्द्र मीढुः पिबा सोमं शतक्रतो	। अस्मिन् यज्ञे पुरुषुत	७

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वन्ते सुताः सोमांसो अद्रिवः । हृदा हूयन्त उक्थिनः	८	६३५
पिबेदिन्द्र मरुत्सखा सुतं सोमं दिविष्टिषु । वज्रं शिशान ओजसा	९	
उत्तिष्ठन्नोजसा सह पीत्वी शिप्रे अवेपयः । सोममिन्द्र चमू सुतम्	१०	
अनु त्वा रोदसी उभे क्रक्षमाणमकृपेताम् । इन्द्र यद् दस्युहाभवं	११	
वाचमष्टार्पदीमहं नवसक्तिमृतस्पृशम् । इन्द्रात् परि तन्वं ममे	१२	

॥ ४२ ॥ (ऋ० ८।७७।१-११)

[गायत्री, १०-११ प्रगाथः = (बृहती, सतोबृहती)]

जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि पृच्छदिति मातरम् । क उग्राः के ह शृण्विरे	१	६४०
आदीं शवस्यब्रवीदौर्णवाभमहीशुवम् । ते पुत्र सन्तु निष्ठुरः	२	
समित् तान् वृत्रहासिदुत् खे अरां इव खेदया । प्रवृन्द्रो दस्युहाभवत्	३	
एकया प्रतिधापिबत् साकं सरांसि त्रिंशतम् । इन्द्रः सोमस्य काणुका	४	
अभि गन्धर्वमतृणदबुधेषु रजःस्वा । इन्द्रो ब्रह्मभ्य इद् वुधे	५	
निराविध्यद् गिरिभ्य आ धारयत् पक्रमोदुनम् । इन्द्रो बुन्दं स्वाततम्	६	६४५
शतब्रध्न इपुस्तव सहस्रपर्ण एक इत् । यमिन्द्र चकृषे युजम्	७	
तेन स्तोतृभ्य आ भर नृभ्यो नारिभ्यो अत्तवे । सद्यो जात क्रमुष्ठिर	८	
एता च्यौत्तानि ते कृता वर्षिष्ठानि परीणसा । हृदा वीङ्गधारयः	९	
विश्वेत् ता विष्णुराभरदुरुक्रमस्त्वेषितः ।		
शतं महिषान् क्षीरपाकमोदुनं वराहमिन्द्र एमुषम्	१०	
तुविक्षं ते सुकृतं सुमयं धनुः साधुर्बुन्दो हिरण्ययः ।		
उभा ते बाहू रण्या सुसंस्कृत क्रदूपे चिद्वद्वधा	११	६५०

॥ ४३ ॥ (ऋ० ८।७८।१-१०)

[गायत्री, १० बृहती ।]

पुरोळाशं नो अन्धस इन्द्र सहस्रमा भर । शता च शूर गोनाम्	१	
आ नो भर व्यञ्जनं गामश्वमभ्यञ्जनम् । सचा मना हिरण्यया	२	
उत नः कर्णशोभना पुरुणि धृष्णवा भर । त्वं हि शृण्विषे वसो	३	
नकीं वृधीक इन्द्र ते न सुषा न सुदा उत । नान्यस्त्वच्छूर वाघतः	४	
नकीमिन्द्रो निकर्तवे न शक्रः परिशक्तवे । विश्वं शृणोति पश्यति	५	६५५
स मुन्युं मर्त्यानामदब्धो नि चिकीषते । पुरा निदश्चिकीषते	६	
कत्व इत् पूर्णमुदरं तुरस्यास्ति विधतः । वृत्रघ्नः सौमपात्रः	७	

त्वे वसूनि संगता विश्वा च सोम सौभगा । सुदात्वपरिहृता	८
त्वामिद्यवयुर्मम कामो गव्युर्हिरण्ययुः । त्वामश्वयुरेषते	९
तवेदिन्द्राहमाशसा हस्ते दात्रं चना ददे ।	
विनस्य वा मघवन्त्संभृतस्य वा पूरि यवस्य काशिना	१० ६६०

॥ ४४ ॥ (ऋ० ८।८०।१-९)

(६६१-६६९) एकद्युर्नौधसः । गायत्री ।

नह्यन्यं ब्रूताकरं मर्दितारं शतक्रतो । त्वं न इन्द्र मृळय	१
यो नः शश्वत् पुराविथा—ऽमृधो वाजसातये । स त्वं न इन्द्र मृळय	२
किमङ्ग रध्रचोदनः सुन्वानस्यावितेदांसि । कुवित् स्विन्द्र णः शकः	३
इन्द्र प्र णो रथमव पश्वाच्चित् सन्तमद्विवः । पुरस्तादिनं मे कृधि	४
हन्तो नु किमांससे प्रथमं नो रथं कृधि । उपमं वाजयु श्रवः	५ ६६५
अवा नो वाजयुं रथं सुकरं ते किमित् परि । अस्मान्तसु जिग्युषस्कृधि	६
इन्द्र हह्यस्व पूरसि भद्रा त एति निष्कृतम् । इयं धीर्ऋत्विद्यावती	७
मा सीमवद्य आ भागु—वीं काष्ठा हितं धनम् । अपावृक्ता अरत्तयः	८
तुरीयं नाम यज्ञियं यदा करस्तर्दुश्मसि । आदित् पतिर्न ओहसे	९

॥ ४५ ॥ (ऋ० ८।८१।१-९)

(६७०-६८७) कुसीदी काण्वः ।

आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं चित्रं ग्राभं सं गृभाय । महाहस्ती दक्षिणेन	१ ६७०
विद्या हि त्वा तुविकूर्मिं तुविदेष्णं तुवीमघम् । तुविमात्रमवोभिः	२
नहि त्वा शूर देवा न मर्तासो दित्सन्तम् । भीमं न गां वारयन्ते	३
एतो न्विन्द्रं स्तवामे—शानं वस्वः स्वरार्जम् । न राधसा मधिषन्नः	४
प्र स्तोषदुषं गासिष—च्छ्रवत् सामं गीयमानम् । अभि राधसा जुगुरत्	५
आ नो भर दक्षिणेना—ऽभि सुव्येन प्र मृश । इन्द्र मा नो वसोर्निर्भाक्	६ ६७५
उषं क्रमस्वा भर धृषता धृष्णो जनानाम् । अदाशूष्टरस्य वेदः	७
इन्द्र य उ नु ते अस्ति वाजो विप्रेभिः सन्तित्वः । अस्माभिः सु तं संनुहि	८
सद्योजुवस्ते वाजा अस्मभ्यं विश्वश्चन्द्राः । वशैश्च मक्षू जरन्ते	९

॥ ४६ ॥ (ऋ० ८।८१।१-९)

आ प्र द्रव परावतो ऽर्वावतश्च वृत्रहन् । मध्वः प्रति प्रभर्मणि	१
तीव्राः सोमांस आ गहि सुतासो मादयिष्णवः । पिवा वृधृग्यथोचिषे	२ ६८०

[३६]

इषा मन्दस्वादु ते	ऽरं वराय मन्यवे	। भुवत् त इन्द्र शं ह्रुदे	
आ त्वंशत्रवा गहि	न्युक्थानि च हूयसे	। उपमे रोचने दिवः	
तुभ्यायमद्रिभिः सुतो	गोभिः श्रीतो मदाय कम्	। प्र सोम इन्द्र हूयते	
इन्द्र शुधि सु मे हव	मस्मे सुतस्य गोमतः	। वि पीतिं तृप्तिमश्नुहि	६
य इन्द्र चमसेष्वा	सोमश्चमूषु ते सुतः	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	७ ६८५
यो अप्सु चन्द्रमा इव	सोमश्चमूषु ददृशे	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	८
यं ते इयेनः पदार्भरत्	तिरो रजांस्यस्पृतम्	। पिबेदस्य त्वमीशिषे	९

॥ ४७ ॥ (ऋ० १।२८।१-४)

(६८८-७१४) आजीगर्तिः शुनःशेषः स कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः । अनुष्टुप् ।

यत्र ग्रावा पृथुबुध	ऊर्ध्वो भवति सोतवे	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जलगुलः	१
यत्र द्वाविंश जघना	धिषवण्या कृता	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जलगुलः	२
यत्र नार्यपच्यव	मुपच्यवं च शिक्षते	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जलगुलः	३ ६९०
यत्र मन्थां विबुधते	रश्मीन् यमित्वा इव	। उलूखलसुताना मवेद्विन्द्र जलगुलः	४

॥ ४८ ॥ (ऋ० १।२९।१-७) पंक्तिः ।

यच्चिन्द्रि संत्य सोमपा	अनाशस्ता इव स्मसि ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ १
शिप्रिन् वाजानां पते	शचीवस्तव दुंसना ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ २
निष्वापया मिथूहशा	सस्तामबुध्यमाने ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ ३
ससन्तु त्या अरातयो	बोधन्तु शूर रातयः ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ ४ ६९५
समिन्द्र गर्दभं मृण	नुवन्तं पापयामुया ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ ५
पताति कुण्डूणाच्या	दूरं वातो वनादधि ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ ६
सर्वं परिक्रोशं जहि	जम्भया कृकदाश्वम् ।	
आ तू न इन्द्र शंसय	गोष्वश्वेषु शुभिषु	सहस्रेषु तुवीमघ ७

ले

॥ ४९ ॥ (ऋ० १।३०।१-१६)

१-१०, १२-१५ गायत्री, ११ पादनिचृद्रायत्री, १६ त्रिष्टुप् ।

आ व इन्द्रं क्रिवि यथा वाजयन्तः शतक्रतुम् । मंहिष्ठं सिञ्च इन्दुभिः १	
शतं वा यः शुचीनां सहस्रं वा समाशिराम् । एदुं निम्नं न रीयते २	७००
सं यन्मदाय शुष्मिण एना ह्यस्योदरे । समुद्रो न व्यचो वृधे ३	
अयमुं ते समतसि कपोत इव गर्भधिम । वचस्तच्चिन्न ओहसे ४	
स्तोत्रं राधानां पते गिर्वीहो वीर यस्य ते । विभूतिरस्तु सुनृता ५	
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये ऽस्मिन् वाजे शतक्रतो । समन्येषु ब्रवावहै ६	
योगेयोगे तवस्तरं वाजेवाजे हवामहे । सखाय इन्द्रमूतये ६	७०५
आ वा गमद्यादि श्रवत् सहस्रिणीभिरुतिभिः । वाजेभिरुप नो हवाम ८	
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे तुविप्रतिं नरम् । यं ते पूर्वं पिता हुवे ९	
तं त्वा वयं विश्ववारा ऽऽ शास्महे पुरुहूत । सखे वसो जरितृभ्यः १०	
अस्माकं शिप्रिणीनां सोमपाः सोमपात्राम् । सखे वज्रिन्त्सखीनाम् ११	
तथा तदस्तु सोमपाः सखे वज्रिन् तथा कृणु । यथा त उश्मसीष्टये १२	७१०
रेवतीर्नः सधमादु इन्द्रे सन्तु तुविवाजाः । क्षुमन्तो याभिर्मदेम १३	
आ व त्वावान् त्मनाप्तः स्तोतृभ्यो धृष्णवियानः । ऋणोरक्षं न चक्रयोः १४	
आ यद् दुर्वः शतक्रतुवा कामं जरितृणाम् । ऋणोरक्षं न शचीभिः १५	
शश्वदिन्द्रः पोप्रुथद्भिर्जिगाय नानदद्भिः शाश्वसद्भिर्धनानि ।	
स नो हिरण्यरथं वंसनावान् त्स नः सनिता सनये स नोऽदात १६	७१४

॥ ५० ॥ (ऋ० १।३२।१-१५)

(७१५-७४४) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।	
अहन्नहिमन्वपस्तर्दु प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम् १	७१५
अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वयं ततक्ष ।	
वाश्वा इव धेनवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रमव जग्मुरापः २	
वृषायमाणो ऽवृणीत् सोमं त्रिकदुकेष्वपिबत् सुतस्य ।	
आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेन प्रथमजामहीनाम् ३	
यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीनामान्मायिनामभिनाः प्रोत मायाः ।	
आत् सूर्यं जनयन् द्यामुषासं तादीत्ना शत्रुं न किला विवित्से ४	

अहन् वृत्रं वृत्रतरं व्यस—मिन्द्रो वज्रेण महता वधेन ।
 स्कन्धांसीव कुलिशेना विवृक्णा—ऽहिः शयत उपपृक् पृथिव्याः ५
 अयोद्धेव दुर्मदु आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम् ।
 नातारीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानां पिपिष इन्द्रशत्रुः ६ ७२०
 अपादहस्तो अपृतन्यदिन्द्र—मास्य वज्रमधि सानौ जघान ।
 वृष्णो वधिः प्रतिमानं बुभूषन् पुरुत्रा वृत्रो अशयद् व्यस्तः ७
 नदं न भिन्नममुया शयानं मनोरुहाणा अति यन्त्यापः ।
 याश्चिद् वृत्रो महिना पर्यतिष्ठत् तासामहिः पत्सुतः शीर्षभूव ८
 नीचावया अभवद् वृत्रपुत्रे—न्द्रो अस्या अव वधर्जभार ।
 उत्तरा सूरधरः पुत्र आसीद् दानुः शये सहवत्सा न धेनुः ९
 अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां काष्ठानां मध्ये निहितं शरीरम् ।
 वृत्रस्य निणयं वि चरन्त्यापो दीर्घं तम् आशयदिन्द्रशत्रुः १०
 दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन् निरुद्धा आपः पणिनेव गावः ।
 अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रं जघन्वा अप तद् ववार ११ ७२५
 अश्व्यो वारो अभवस्तादिन्द्र सूके यत् त्वा प्रत्यहन् देव एकः ।
 अजयो गा अजयः शूर सोम—मवांसृजः सतैवे सप्त सिन्धून् १२
 नास्मै विद्युन्न तन्यतुः सिंधु न यां मिहमकिरद् धादुनि च ।
 इन्द्रश्च यद् युयुधाते अहिश्चो—तापरीभ्यो मघवा वि जिग्ये १३
 अहेर्यातारं कर्मपश्य इन्द्र हृदि यत् ते जघनुषो भीरगच्छत् ।
 नव च यन्नवतिं च सर्वन्तीः श्येनो न भीतो अतरो रजांसि १४
 इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शर्मस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः ।
 सेदु राजा क्षयति चर्षणीना—मरान् न नेमिः परि ता बभूव १५

॥ ५१ ॥ (ऋ० १।३३।१-१५)

एतायामोषं गव्यन्त इन्द्र—मस्माकं सु प्रमतिं वावृधाति ।
 अनामृणः कुविदादस्य शयो गवां केतं परमावर्जते नः १ ७३०
 उपेदुहं धनदामप्रतीतिं जुष्टां न श्येनो वसतिं पतामि ।
 इन्द्रं नमस्यन्नुपमेभिरकै—र्यः स्तोतृभ्यो हव्यो अस्ति यामन् २
 नि सर्वसेन इषुधीरसक्त समर्यो गा अजति यस्य वष्टि ।
 चोष्क्यमाण इन्द्र भूरि वामं मा पणिभूरस्मदधि प्रवृद्ध ३

वधीर्हि दस्युं धनिनं घनेनैकश्वरन्नुपशाकोभिरिन्द्र ।		
धनोरधि विषुणक् ते व्यायन्नयज्वानः सनकाः प्रेतिमीयुः	४	
परां चिच्छीर्षा ववृजुस्त इन्द्राऽयज्वानो यज्वभिः स्पर्धमानाः ।		
प्र यद् द्विवो हरिवः स्थातरुग्र निरव्रतां अधमो रोदस्योः	५	
अयुयुत्सन्ननवद्यस्य सेनामयातयन्त क्षितयो नवगवाः ।		
वृषायुधो न वध्रयो निरंष्टाः प्रवद्भिरिन्द्राच्चितयन्त आयन्	६	७३५
त्वमेतान् रुद्रतो जक्षतश्चायोधयो रजस इन्द्र पारे ।		
अवादहो द्विव आ दस्युमुच्चा प्र सुन्वतः स्तुवतः शंसमावः	७	
चक्राणासः परीणहं पृथिव्या हिरण्येन मणिना शुभ्रमानाः ।		
न हिंन्वानासस्तितिरुस्त इन्द्रं परि स्पर्शो अदधात् सूर्येण	८	
परि यद्विन्द्र रोदसी उभे अबुभोजीर्महिना विश्वतः सीम् ।		
अमन्यमानो अभि मन्यमानैर्निर्ब्रह्मभिरधमो दस्युमिन्द्र	९	
न ये द्विवः पृथिव्या अन्तमापुर्न मायाभिर्धनदां पर्यभूवन् ।		
युजं वज्रं वृषभश्चक्र इन्द्रो निज्योतिषा तमसो गा अदुक्षत्	१०	
अनु स्वधामक्षरन्नापो अस्याऽवर्धत मध्य आ नाव्यानाम् ।		
सध्रीचीनेन मनसा तमिन्द्र ओजिष्ठेन हन्मनाहन्नाभि द्यून्	११	७४०
न्याविध्यदिलीविशस्य हृळ्हा वि शृङ्गिणामभिन्च्छुष्णमिन्द्रः ।		
यावत्तरो मघवन् यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः पृतन्युम्	१२	
आभि सिध्मो अजिगादस्य शत्रून् वि तिग्मेन वृषभेणा पुरोऽभेत् ।		
सं वज्रेणासृजद् वृत्रमिन्द्रः प्र स्वां मतिमतिरच्छाशदानः	१३	
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिञ्चाकन् प्रावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।		
शफच्युतो रेणुर्नक्षत् द्यामुच्छ्वित्रेयो नृषाह्याय तस्थौ	१४	
आवः शमं वृषभं तुग्रयासु क्षेत्रजेष मघवज्जिह्वं गाम् ।		
ज्योक् चिदत्र तस्थिवांसो अक्रञ्छन्नयतामधरा वेदनाकः	१५	
॥ ५२ ॥ (ऋ० १।५।१-१५)		
(७४५-८१६) सव्य आङ्गिरसः । जगती, १४-१५ त्रिष्टुप् ।		
आभि त्यं मेषं पुरुहूतमृगियमिन्द्रं गीर्भिर्मदता वस्वो अर्णवम् ।		
यस्य द्यावो न विचरन्ति मानुषा भुजे मंहिष्ठमभि विप्रमर्चत	१	७४५
अभीमवन्वन्त्स्वमिष्टिमूतयोऽन्तरिक्षप्रां तविषीभिरावृतम् ।		
इन्द्रं दक्षास ऋभवो मदच्युतं शतक्रतुं जवनी सूनुतारुहत्	२	

त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपो—तात्रये शतदुरेषु गातुवित् ।	
ससेनं चिद् विमदायावहो वस्वा—जावद्विं वावसानस्य नर्तयन्	३
त्वमपामपिधानावृणोरपा—ऽधारयः पर्वते दानुमद् वसु ।	
वृत्रं यदिन्द्र शवसार्वधीरहि—मादित् सूर्यं दिव्यारोहयो हृशे ।	४
त्वं मायाभिरप मायिनोऽधमः स्वधाभिर्ये अधि शुप्तावजुह्वत ।	
त्वं पिप्रोर्नृमणः प्रारुजः पुरः प्र ऋजिश्वानं दस्युहृत्येष्वाविथ	५
त्वं कुत्सं शुष्णहृत्येष्वाविथा—ऽरन्धयोऽतिथिगवाय शम्बरम् ।	
महान्तं चिदबुद्धं नि क्रमीः पदा सनादेव दस्युहृत्याय जज्ञिषे	६ ७५०
त्वे विश्वा तविषी सध्वग्निता तव राधः सोमपीथाय हर्षते	
तव वज्रश्रिकिते बाह्वोर्हितो वृश्वा शन्नोरव विश्वानि वृष्ण्या	७
वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बर्हिष्मते रन्धया शासद्वतान् ।	
शाकीं भव यजमानस्य चोदिता विश्वेत् ता ते सधमादेषु चाकन	८
अनुव्रताय रन्धयन्नपव्रता—नाभूमिरिन्द्रः श्रथयन्ननाभुवः ।	
वृद्धस्य चिद् वर्धतो धामिनक्षतः स्तवानो वम्रो वि जघान संदिहः	९
तक्षद् यत् तं उशना सहसा सहो वि रोदसी मज्मना बाधते शवः ।	
आ त्वा वार्तस्य नृमणो मनोयुज आ पूर्यमाणमवहन्नाभि श्रवः	१०
मन्दिष्टु यदुशने काव्ये सचां इन्द्रो वङ्कू वङ्कूतराधि तिष्ठति ।	
उग्रो ययिं निरपः स्रोतसासृजद् वि शुष्णस्य हंहिता ऐरयत् पुरः	११ ७५५
आ स्मा रथं वृषपाणेषु तिष्ठसि शार्यातस्य प्रभृता येषु मन्दसे ।	
इन्द्र यथा सुतसोमेषु चाकनोऽनुवाणं श्लोकमा रोहसे विवि	१२
अद्वु अभां महते वचस्यवे कक्षीवते वृचयामिन्द्र सुन्वते ।	
मेनाभवो वृषणश्वस्य सुक्रतो विश्वेत् ता ते सवनेषु प्रवाच्या	१३
इन्द्रो अश्रायि सुध्यो निरेके पञ्जेषु स्तोमो दुर्यो न यूपः ।	
अश्वयुग्व्यू रथयुर्वसूयु—रिन्द्र इद्रायः क्षयति प्रयन्ता	१४
इदं नमो वृषभार्य स्वराजे सत्यशुष्माय तवसेऽवाचि ।	
अस्मिन्निन्द्र वृजने सर्ववीराः स्मत् सूरिभिस्तव शर्मन्त्स्याम	१५

॥ ५३ ॥ (ऋ० १।५२।१-१५) जगती; १३; १५ त्रिष्टुप् ।

त्यं सु मेघं महया स्वविद् शतं यस्य सुभ्वः साकमीरते ।

अत्यं न वाजं हवनस्यद् रथ—मेन्द्रं ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः

१ ७६०

स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः सहस्रमूतिस्तविषीषु वावृधे ।	
इन्द्रो यद् वृत्रमवधीन्नदीवृत—मुञ्जन्नणींसि जह्मिषाणो अन्धसा	२
स हि द्वरो द्वरिषु वव ऊर्ध्वनि चन्द्रबुध्नो मद्वृद्धो मनीषिभिः ।	
इन्द्रं तमहे स्वप्सया धिया मंहिष्ठरातिं स हि पप्रिन्धसः	३
आ यं पूणन्ति द्विवि सद्गर्हिषः समुद्रं न सुभ्वः स्वा अमिष्टयः ।	
तं वृत्रहये अनु तस्थुरुतयः शुष्मा इन्द्रमवाता अहृतप्सवः	४
अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यतो रध्वीरिव प्रवणे संस्रुतयः ।	
इन्द्रो यद् वज्री धूषमाणो अन्धसा भिनद् वलस्य परिधीरिव त्रितः	५
परीं घृणा चरति तित्विषे शवो ऽपो वृत्वी रजसो बुध्नमाशयत् ।	
वृत्रस्य यत् प्रवणे दुर्गमिष्वनो निजघन्थ हन्वोरिन्द्र तन्यतुम्	६
	७६५
द्वदं न हि त्वा न्युषन्त्युर्मयो ब्रह्माणीन्द्र तव यानि वर्धना ।	
त्वष्टा चित् ते युज्यं वावृधे शर्व—स्ततक्ष वज्रमभिभूत्योजसम्	७
जघन्वाँ उ हरिभिः संभृतक्रतु—विन्द्र वृत्रं मनुषे गातुयज्ञपः ।	
अयच्छथा बाहोर्वज्रमायस—मधारयो द्विव्या सूर्यं हृशे	८
बृहत स्वश्चन्द्रमवद यदुक्थ्य—मकृण्वत भियसा रोहणं द्विवः ।	
यन्मानुषप्रधना इन्द्रमूतयः स्वनृषाचो मरुतोऽमदुन्ननु	९
द्यौश्चिदस्यामवाँ अहेः स्वना—दयोयवीद् भियसा वज्रं इन्द्र ते ।	
वृत्रस्य यद् बद्धधानस्य रोदसी मदे सुतस्य शवसाभिन्नच्छिरः	१०
यदिन्विन्द्र पृथिवी दशभुजि—रहानि विश्वा ततनन्त कृष्टयः ।	
अत्राह ते मघवन् विश्रुतं सहो द्यामनु शवसा बर्हणा भुवत्	११
	७७०
त्वमस्य पारे रजसो व्योमनः स्वभूत्योजा अवसे धूषन्मनः ।	
चक्रुषे भूमिं प्रतिमानमोर्जसो ऽपः स्वः परिभूरेष्या दिवम्	१२
त्वं भुवः प्रतिमानं पृथिव्या ऋष्ववीरस्य बृहतः पतिर्भूः ।	
विश्वमाप्रा अन्तरिक्षं महित्वा सत्यमन्द्रा नकिरन्यस्त्वावान्	१३
न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानुशुः ।	
नोत स्ववृष्टिं मदे अस्य युध्यत् एको अन्यच्चक्रुषे विश्वमानुषक्	१४
आर्चन्नत्र मरुतः सस्मिन्नाजौ विश्वे देवासो अमदुन्ननु त्वा ।	
वृत्रस्य यद् भृष्टिमता वधेन नि त्वमिन्द्र प्रत्यानं जघन्थ	१५

॥ ५४ ॥ (क्र० १।५३।१-११) जगती. १०-११ त्रिष्टुप् ।

न्यू॒ष्टं पु वाचं प्र म॒हे भ॑रामहे गिर॒ इन्द्रा॑य स॒र्दने वि॒वस्व॑तः ।		
नू चि॒द्धि रत्नं स॑स॒तामिवा॑विदुः—न्न दु॒ष्टुति॑र्द्रै॒विणो॑देषु शस्यते	१	७७५
दुरो अश्व॑स्य दुर इन्द्र॒ गोरा॑सि दुरो यव॑स्य वसु॒न इ॒नस्प॑तिः ।		
शि॒क्षा॒नरः प्र॒दिवो॑ अ॒काम॑कर्शनः सखा सखि॑भ्यस्तमिदं गृणीमसि	२	
शर्चा॑व इन्द्र पुरु॒कृद् द्यु॒मत्त॑म तवे॒दि॒दम॑भित॒श्चेकि॑ते वसु ।		
अतः संगृ॑भ्या॒भिभू॑त आ भ॒र मा त्वा॑यतो ज॒रितुः॑ काम॒मून॑यीः	३	
ए॒भिद्यु॑भिः सुमना॑ ए॒भिरि॑न्दु॒भिर्नि॑रु॒न्धानो॑ अम॒र्तिं गो॑भि॒रश्वि॑ना ।		
इन्द्रे॑ण दस्युं दुर॑यन्त इन्द्र॒भिर्यु॑त॒द्वेष॑सः समि॒षा र॑भेमहि	४	
समि॑न्द्र रा॒या समि॑षा र॑भेमहि सं वा॒जैभिः॑ पुरु॒श्चन्द्रै॑रभिद्यु॒भिः ।		
सं दे॒व्या प्र॑मत्या वी॒रशृ॑ष्मया गोअ॒ग्रया॑श्वा॒वत्या र॑भेमहि	५	
ते त्वा म॒दा अ॑मद॒न् तानि॑ वृ॒ष्ण्या ते सोमा॑सो वृ॒त्रह॑त्येषु स॒त्पते॑ ।		
यत् कार॑वे द॒श वृ॒त्राण्य॑प्रति ब॒र्हिष्म॑ते नि स॒हस्रा॑णि ब॒र्हयः॑	६	७८०
यु॒धा यु॒धमु॑प घे॒दैषि धृ॑ष्ण्या पुरा पुरं स॒मिदं॑ हंस्यो॒जसा॑ ।		
नम्या॑ यदिन्द्र सखा॑ परा॒वति॑ निब॒र्हयो॑ नमु॒चिं नाम॑ मा॒यिन॑म्	७	
त्वं कर॑ञ्ज॒मुत पर्ण॑यं व॒धीस्तेजि॑ष्ठयातिथि॒ग्वस्य॑ वर्त॒नी ।		
त्वं श॒ता ब॒द्धद॑स्याभि॒नत् पुरो॑ ऽनानु॒दः परि॑षू॒ता ऋ॒जिश्वा॑ना	८	
त्वमे॒ताञ्जन॑राजो द्वि॒र्दशा॑—ऽबन्धु॑ना सुश्रव॑सोप॒जग्मु॑षः ।		
ष॒ष्टिं स॒हस्रा॑ नव॒ति नव॑ श्रु॒तो नि च॒क्रेण॑ रथ्या॑ दु॒ष्पदा॑वृ॒णक्	९	
त्वमा॑विथ सुश्रव॑सं तवो॒तिभि॑—स्तव॒ त्राम॑भिरिन्द्र तू॒र्वया॑णम् ।		
त्वम॑स्मै कु॒त्सम॑तिथि॒ग्वमायुं॑ म॒हे राजे॑ यू॒ने अ॒रन्ध॑नायः	१०	
य उ॒हर्ची॑न्द्र दे॒वगो॑पाः सखा॑यस्ते शि॒वर्त॑मा अ॒साम॑ ।		
त्वां स्तो॑षाम॒ त्वया॑ सु॒वीरा॑ द्राघी॒य आयुः॑ प्र॒तरं॑ दधा॒नाः	११	७८५

॥ ५५ ॥ (क्र० १।५४।१-११) जगती; ६, ८-९, ११ त्रिष्टुप् ।

मा नो॑ अ॒स्मिन् म॑घवन् पु॒त्स्वंह॑सि न॒हि ते अ॒न्तः श॑र्वसः प॒रीण॑शे ।		
अ॒क्रन्द॑यो नद्यो॒ष्टं रो॑रुवद् वना॑ क॒था न क्षो॑णीभि॒यसा॑ समा॒रत॑	१	
अ॒र्चा श॑क्राय॒ शाकि॑ने शर्चा॑वते शृ॒ण्वन्त॑मिन्द्रं म॒हय॑न्नाभि ष्टु॒हि ।		
यो धृ॑ष्णु॒ना श॑र्वसा॒ रोद॑सी उ॒भे वृ॑षा वृष॒त्वा वृ॑षभो न्यू॒ञ्जते॑	२	

अर्चां दिवे बृहते शुष्यं वचः स्वक्षत्रं यस्य धृषता धूषन्मनः ।	
बृहच्छ्रवा असुरो बर्हणा कृतः पुरो हरिभ्यां वृषभो रथो हि षः	३
त्वं दिवो बृहतः सानु कोपयो ऽव त्मना धृषता शम्बरं भिनत् ।	
यन्मायिनो वृन्दिनो मन्दिना धूषच्छ्रितां गर्भस्तिमशानिं पृतन्यसि	४
नि यद् वृणक्षि श्वसनस्य मूर्धनि शुष्णस्य चिद् वृन्दिनो रोरुवद् वना ।	
प्राचीनेन मनसा बर्हणावता यदुद्या चित् कुणवः कस्त्वा परि	५
त्वमाविथ नयं तुर्वशं यदुं त्वं तुर्वीति वृष्यं शतक्रतो ।	
त्वं रथमेतं कृत्वये धने त्वं पुरो नवति दम्भयो नव	६
स वा राजा सत्पतिः शूशुवज्जनो रातहव्यः प्रति यः शासमिन्वति ।	
उक्त्वा वा यो अभिगुणाति राधसा दानुरस्मा उपरा पिन्वते दिवः	७
असमं क्षत्रमसमा मनीषा प्र सोमपा अपसा सन्तु नेमे ।	
ये त इन्द्र दुदुषो वर्धयन्ति महि क्षत्रं स्थविरं वृष्ण्यं च	८
तुभ्येदेते बहुला अद्रिदुग्धाश्चमूषदश्चमसा इन्द्रपानाः ।	
व्यश्रुहि तर्पया काममेषा मथा मनो वसुदेयाय कृष्व	९
अपामतिष्ठद्भरुणह्वरं तमो ऽन्तर्वृत्रस्य जठरेषु पर्वतः ।	
अभीमिन्द्रो नद्यो वविणा हिता विश्वा अनुष्ठाः प्रवृणेषु जिघ्रते	१०
स शेवृधमधि धा युध्मस्मे महि क्षत्रं जनाषाळिन्द्र तव्यम् ।	
रक्षां च नो मघोनः पाहि सूरिन राये च नः स्वपत्या इषे धाः	११

॥ ५६ ॥ (ऋ० १।५।१-८) जगती ।

दिवश्चिदस्य वरिमा वि पप्रथ इन्द्रं न मत्ता पृथिवी च न प्रति ।	
भीमस्तुर्विष्माश्चर्षणिभ्य आतपः शिशीति वज्रं तेजसे न वंसंगः	१
सो अर्णवो न नद्यः समुद्रियः प्रति गृभ्णाति विञ्चिता वरीमभिः ।	
इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते मनात् स युध्म ओजसा पनस्यते	२
त्वं तमिन्द्र पर्वतं न भोजसं महो नृष्णस्य धर्मणामिरज्यसि ।	
प्र वीर्येण देवताति चेकिते विश्वस्मा उग्रः कर्मणे पुरोहितः	३
स इद वने नमस्युभिर्वचस्यते चारु जनेषु प्रब्रुवाण इन्द्रियम् ।	
वृषा छन्दुर्मवति हर्यतो वृषा क्षेमेण धेनां मघवा यद्विन्वति	४
स इन्महानि समिथानि मज्मना कुणोति युध्म ओजसा जनेभ्यः ।	
अधा च न श्रद् दधति त्विषीमत् इन्द्राय वज्रं निघनिघ्नते वधम्	५

स हि श्रवस्युः सदनानि कृत्रिमा क्षमया वृधान ओजसा विनाशयन् ।
 ज्योतीषि कृण्वन्नवृकाणि यज्यवे ऽव सुक्रतुः सर्तवा अपः सृजत ६
 वृणाय मनः सोमपावन्नस्तु ते ऽर्वाञ्चा हरी वन्दनश्रुदा कृधि ।
 यमिष्ठासः सारथ्यो य इन्द्र ते न त्वा केता आ दभ्नुवन्ति भूर्णयः ७
 अप्रक्षितं वसुं विभर्षि हस्तयो रषाळहं सहस्तन्वि श्रुतो दधे ।
 आवृतासोऽवतासो न कर्तुमिस्तनूषु ते कर्तव इन्द्र भूरयः ८

॥ ५७ ॥ (ऋ० १।५६।१-६)

एष प्र पूर्वीरव तस्य चन्निषो ऽत्यो न योषामुदयस्त भुवर्णिः ।
 दक्षं महे पाययते हिरण्यं रथमावृत्या हरियोगमृभ्वसम १
 तं गुर्यो नेमन्निषः परीणसः समुद्रं न संचरणे सनिष्यवः ।
 पतिं दक्षस्य विदथस्य नू सहो गिरिं न वेना अधि रोह तेजसा २
 स तुर्वणिर्महां अरेणु पौंस्ये गिरेर्भृष्टिर्न भ्राजते तुजा शवः ।
 येन शुष्णं मायिनमायसो मदे दुध आभूषु रामयन्नि दामनि ३
 देवी यद्वि तर्विषी त्वावृधोतय इन्द्रं सिषक्त्युषसं न सूर्यः ।
 यो धूष्णुना शवसा बाधते तम् इयति रेणुं बृहदहंरिष्वणिः ४
 वि यत् तिरो धरुणमच्युतं रजो ऽतिष्ठिपो विव आतासु बर्हणा ।
 स्वर्मीळहे यन्मद इन्द्र हर्ष्याहन् वृत्रं निरपामौजो अर्णवम् ५
 त्वं विवो धरुणं धिष ओजसा पृथिव्या इन्द्र सदनेषु माहिनः ।
 त्वं सुतस्य मदे अरिणा अपो वि वृत्रस्य समया पाण्यारुजः ६

॥ ५८ ॥ (ऋ० १।५७।१-६)

प्र मंहिष्ठाय बृहते बृहदये सत्यशुष्माय तवसे मतिं भरे ।
 अपामिव प्रवणे यस्य दुर्धरं राधो विश्वायु शवसे अपावृतम् १
 अध ते विश्वमनु हासविष्टय आपो निम्नेव सर्वना हविष्मतः ।
 यत् पर्वते न समशीत हर्यत इन्द्रस्य वज्रः श्रथिता हिरण्ययः २
 अस्मै भीमाय नमसा समध्वर उषो न शुभ्र आ भरा पनीयसे ।
 यस्य धाम श्रवसे नामेन्द्रियं ज्योतिरकारि हरितो नायसे ३
 इमे त इन्द्र ते वयं पुरुष्टुत ये त्वारभ्य चरामसि प्रभूवसो ।
 नहि त्वदुन्यो गिर्वणो गिरः सर्वत् क्षोणीरिव प्रति नो हर्य तद् वचः ४
 भूरि त इन्द्र वीर्यं तव स्मस्यस्य स्तोतुर्मववन् काममा पृण ।
 अनु ते द्यौर्बृहती वीर्यं मम इयं च ते पृथिवी नैम ओजसे ५

त्वं तमिन्द्र पर्वतं महामुरुं वज्रेण वज्रिन् पर्वशश्चकतिथ ।

अवासृजो निर्वृताः सर्तवा अपः सत्रा विश्वं दधिषे केवलं सहः ६

॥ ५९ ॥ (ऋ० १।१०।१।१-११)

(८१७-८५५) कुत्स आङ्गिरसः । (१ गर्भस्त्राविण्युपनिषद्) । जगती, ८-११ त्रिष्टुप् ।

प्र मन्दिने पितुमर्चता वचो यः कृष्णगर्भा निरहन्नृजिष्वना ।

अवस्यवो वृषणं वज्रदक्षिणं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे १

यो व्यसं जाह्णणेन मन्युना यः शम्बरं यो अहन् पिप्रुमव्रतम् ।

इन्द्रो यः शुष्णमशुषं न्यावृणङ् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे २

यस्य द्यावापृथिवी पौंस्यं महद् यस्य व्रते वरुणो यस्य सूर्यः ।

यस्येन्द्रस्य सिन्धवः सश्रति व्रतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ३

यो अश्वानां यो गवां गोपतिर्वशी य आरितः कर्मणि कर्मणि स्थिरः ।

वीळोश्चिदिन्द्रो यो असुन्वतो वधो मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ४

यो विश्वस्य जगतः प्राणतस्पतिर्यो ब्रह्मणे प्रथमो गा अविन्दत् ।

इन्द्रो यो दस्युरधरां अवातिरन् मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ५

यः शूरेभिर्हव्यो यश्च भीरुभिर्यो धावन्निर्हूयते यश्च जिग्युभिः ।

इन्द्रं यं विश्वा भुवनाभि संदुधु मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ६

रुद्राणामेति प्रदिशां विचक्षणो रुद्रेभिर्योषां तनुते पृथु जयः ।

इन्द्रं मनीषा अभ्यर्चति श्रुतं मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ७

यद् वा मरुत्वः परमे सधस्थे यद् वावमे वृजने मादयासे ।

अत आ याह्यध्वरं नो अच्छा त्वाया हविश्चक्रुमा सत्यराधः ८

त्वायेन्द्र सोमं सुधुमा सुदक्ष त्वाया हविश्चक्रुमा ब्रह्मवाहः ।

अधा नियुत्वः सर्गणो मरुद्भिर्रस्मिन् यज्ञे बर्हिषि मादयस्व ९

मादयस्व हरिभिर्ये त इन्द्र विष्यस्व शिप्रे वि सृजस्व धेने ।

आ त्वा सुशिप्र हरयो वहन्तूशन् हव्यानि प्रति नो जुषस्व १०

मरुत्स्तोत्रस्य वृजनस्य गोपा वयमिन्द्रेण सनुयाम वाजम् ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ११

॥ ६० ॥ (ऋ० १।१०२।१-११) १-१० जगती, ११ त्रिष्टुप् ।

इमां ते धियं प्र भरे महो मही मस्य स्तोत्रे धिषणा यत् त आनजे ।

तमुत्सवे च प्रसवे च सासहि मिन्द्र देवासः शर्वसामदुन्ननु १

अस्य श्रवो नद्यः सप्त विभ्रति द्यावाक्षामा पृथिवी दर्शितं वपुः ।	
अस्मे सूर्याचन्द्रमसाभिचक्षे श्रद्धे कर्मिन्द्र चरतो वितर्तुरम्	२
तं स्मा रथं मघवन् प्रावं सातये जैत्रं यं ते अनुमदाम संगमे ।	
आजा न इन्द्र मनसा पुरुषुत त्वायन्द्र्यो मघवच्छर्मं यच्छ नः	३ ८३०
वयं जयेम त्वया युजा वृतं मस्माकमंशमुदवा भरेभरे ।	
अस्मभ्यामिन्द्र वरिवः सुगं कृधि प्र शत्रूणां मघवन् वृणया रुज	४
नाना हि त्वा हवमाना जना इमे धनानां धर्तृर्वसा विपन्यवः ।	
अस्माकं स्मा रथमा तिष्ठ सातये जैत्रं हीन्द्र निभृतं मनस्तव	५
गोजिता बाहू अमितक्रतुः मिमः कर्मन्कर्मच्छतमूर्तिः खजंकरः ।	
अकल्प इन्द्रः प्रतिमानमोजसा—ऽथा जना वि ह्वयन्ते सिषासवः	६
उत् ते शतान्मघवच्छुच्च भूर्यस उत सहस्राद् रिरिचे कृष्टिषु श्रवः ।	
अमात्रं त्वा धिषणां तित्विषे म—ह्यधा वृत्राणि जिघ्रसे पुरंदर	७
त्रिविष्टिधातुं प्रतिमानमोजस—स्तिस्रो भूमीर्नृपते त्रीणि रोचना ।	
अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथा—ऽशत्रुरिन्द्र जनुषां सनादसि	८ ८३५
त्वां देवेषु प्रथमं हवामहे त्वं बभूथ पृतनासु सासहिः ।	
सेमं नः कारुमुपमन्युमुद्भिदु—मिन्द्रः कृणोतु प्रसवे रथं पुरः	९
त्वं जिगेथ न धनां रुरोधिथा—ऽभैवाजा मघवन् महत्सु च ।	
त्वामुग्रमवसे सं शिशीम—स्यथा न इन्द्र हवनेषु चोदय	१०
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अ—स्त्वपरिहृताः सनुयाम वाजम् ।	
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	११

॥ ३१ ॥ (ऋ० १।१०३।१ ८) त्रिष्टुप् ।

तत् ते इन्द्रियं परमं पराचै—रधारयन्त कवयः पुरेदम् ।	
क्षमेदमन्यद् दिव्यं न्यदस्य समी पृच्यते समनेव केतुः	१
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च वज्रेण हत्वा निरपः संसर्ज ।	
अहन्नहिमभिनद्रौहिणं व्यहन् व्यंसं मघवा शचीभिः	२ ८४०
स जातुर्भर्मा श्रद्धधान ओजः पुरो विमिन्द्रन्नचरद् वि दासीः ।	
विद्वान् वज्रिन् दस्यवे हेतिमस्या—ऽऽर्यं सहो वर्धया द्युमिन्द्र	३
तदुचुषे मानुषेमा युगानि कीर्तेन्यं मघवा नाम बिभ्रत् ।	
उपप्रयन् दस्युहत्याय वज्री यद्ध सूनुः श्रवसे नाम दुधे	४

तदस्येदं पश्यता भूरि पुष्टं श्रदिन्द्रस्य धत्तन वीर्यीय ।
 स गा अविन्दुत् सो अविन्दुदश्वान् त्स ओषधीः सो अपः स वनानि ५
 भूरिकर्मणे वृषभाय वृष्णे सत्यशुष्माय सुनवाम सोमम् ।
 य आहृत्या परिपन्थीव शूरो ऽयज्वनो विभजन्नेति वेदः ६
 तदिन्द्र प्रेव वीर्यं चकर्थ यत् ससन्तं वज्रेणाबोधयोऽहिम् ।
 अनु त्वा पत्नीर्हृषितं वयश्च विश्वे देवासो अमदुन्ननु त्वा ७ ८४५
 शुष्णं पिपुं कुर्यवं वृत्रमिन्द्र यदावधीर्वि पुरः शम्बरस्य ।
 तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ८

॥ ६२ ॥ (ऋ० १।१०४।१-९)

योनिष्ट इन्द्र निषेदं अकारि तमा नि धीद स्वानो नार्वा ।
 विमुच्या वयोऽवसायाश्वान् द्रोषा वस्तोर्वर्हीयसः प्रपित्वे १
 ओ त्ये नर इन्द्रमृतये गुर्नू चित् तान्त्सद्यो अध्वनो जगम्यात् ।
 देवासो मन्युं दासस्य श्रमन्ते ते न आ वक्षन्त्सुविताय वर्णम् २
 अव त्मना भरते केतवेदा अव त्मना भरते फेनमुदन् ।
 क्षीरेण स्नातः कुर्यवस्य योषे हुते ते स्यातां प्रवणे शिफायाः ३
 युयोप नाभिरुपरस्यायोः प्र पूर्वाभिस्तिरते राष्ट्रि शूरः ।
 अञ्जसी कुलिशी वीरपत्नी पयो हिनवाना उदभिर्भरन्ते ४ ८५०
 प्रति यत् स्या नीथादर्शि दस्यो रोको नाच्छा सदनं जानती गात् ।
 अध स्मा नो मघवश्चकृतादिन्मा नो मघेव निष्पपी परा दाः ५
 स त्वं न इन्द्र सूर्ये सो अप्सव नागास्त्व आ भज जीवशंसे ।
 मान्तरां भुजमा रीरिषो नः श्रद्धितं ते महत इन्द्रियाय ६
 अधा मन्ये श्रत् ते अस्मा अधायि वृषा चोदस्व महते धनाय ।
 मा नो अकृते पुरुहूत योना विन्द्र क्षुध्यन्त्यो वय आसुतिं दाः ७
 मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा नः प्रिया भोजनानि प्र मोषीः ।
 आण्डा मा नो मघवञ्छक्र निर्भेन्मा नः पात्रा भेत् सहजानुषाणि ८
 अर्वाडेहि सोमकामं त्वाहु रयं सुतस्तस्य पिबा मदाय ।
 उरुव्यचा जठर आ वृषस्व पितेव नः शृणुहि हूयमानः ९ ८५५

॥ ६३ ॥ (ऋ० १।६१।१-१६)

[८५६-८९९] नोधा गौतमः ।

अस्मा इदु प्र तवसे तुराय प्रयो न हर्मि स्तोमं माहिनाय ।
 ऋचीषमायाभिगव ओह मिन्द्राय ब्रह्माणि राततमा १

अस्मा इदु प्रय इव प्र यंसि भराभ्याङ्गुषं बाधे सुवृक्ति ।	
इन्द्राय हृदा मनसा मनीषा प्रत्ताय पत्ये धियो मर्जयन्त	२
अस्मा इदु त्यमुपमं स्वर्षा भराभ्याङ्गुषमास्येन ।	
मंहिष्ठमच्छोक्तिभिर्मतीनां सुवृक्तिभिः सूरिं वावृधध्वै	३
अस्मा इदु स्तोमं सं हिनोमि रथं न तष्टेव तत्सिनाय ।	
गिरश्च गिर्वाहसे सुवृक्तीन्द्राय विश्वमिन्वं मेधिराय	४
अस्मा इदु सतिमिव श्रवस्येन्द्रायार्कं जुह्वातु समञ्चे ।	
वीरं वृनौकसं वन्दध्वै पुरां गूर्तश्रवसं दुर्माणम्	५ ८६०
अस्मा इदु त्वष्टा तक्षद् वज्रं स्वपस्तमं स्वयं रणाय ।	
वृत्रस्य चिद् विदद् येन मर्मं तुजन्नीशानस्तुजता कियेधाः	६
अस्येदु मातुः सर्वनेषु सद्यो महः पितुं पपिवाश्चार्वाक्षा ।	
मुषायद् विष्णुः पचतं सहीयान् विध्यद् वराहं तिरो अद्रिमस्ता	७
अस्मा इदु ग्राश्चिद् देवर्षत्नीरिन्द्रायार्कमहिहत्य ऊवुः ।	
परि द्यावापृथिवी जभ्र उर्वी नास्य ते महिमानं परि षटः	८
अस्येदेव प्र रिरिचे महित्वं विवस्पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात् ।	
स्वराळिन्द्रो दम आ विश्वगूर्तः स्वरिरमत्रो ववक्षे रणाय	९
अस्येदेव शर्वसा शुषन्तं वि वृश्चद् वज्रेण वृत्रमिन्द्रः ।	
गा न त्राणा अवनीरमुञ्चदुभि श्रवो द्वावने सचेताः	१० ८६५
अस्येदु त्वेषसा रन्त सिन्धवः परि यद् वज्रेण सीमयच्छत् ।	
ईशानकृद् द्वाशुषे दशस्यन् तुर्वीतये गाधं तुर्वणिः कः	११
अस्मा इदु प्र भरा तूतुजानो वृत्राय वज्रमीशानः कियेधाः ।	
गोर्न पर्व वि रदा तिरश्चेव्यन्नणीस्यपां चरध्वै	१२
अस्येदु प्र ब्रूहि पूर्व्याणि तुरस्य कर्माणि नव्य उक्थैः ।	
युधे यद्विष्णान आयुधा न्यृद्यायमाणो निरिणाति शत्रून्	१३
अस्येदु भिया गिर्यश्च हृळ्हा द्यावा च भूमा जनुषस्तुजेते ।	
उपो वेनस्य जोगुवान ओणिं सद्यो भुवद् वीर्याय नोधाः	१४
अस्मा इदु त्यदनु दाय्येषा मेको यद् वज्रे भूरेरीशानः ।	
प्रेतशं सूर्ये पस्पृधानं सौर्वश्ये सुष्विमावदिन्द्रः	१५ ८७०

एवा ते हारियोजना सुवृक्ती—न्द्र ब्रह्माणि गोतमासो अक्रन् ।
 ऐषु विश्वपेशसं धियं धाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्

१६

॥ ६४ ॥ (क० १।६२।१-१३)

प्र मन्महे शवसानाय शूष—माङ्गुषं गिर्वेणसे अङ्गिरस्वत् ।

सुवृक्तिभिः स्तुवत क्रग्मियाया—ऽर्चीमार्कं नरे विश्रुताय

१

प्र वो महे महि नमो भरध्व—माङ्गुष्यं शवसानाय साम ।

येना नः पूर्वे पितरः पदुज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्

२

इन्द्रस्याङ्गिरसां चेष्टौ विदत् सुरमा तनयाय धासिम् ।

बृहस्पतिर्भिनदद्भिं विदद् गाः समुस्त्रियाभिर्वावशन्त नरः

३

स सुष्टुभा स स्तुभा सप्त विप्रैः स्वरेणाद्भिं स्वर्योऽं नवर्गैः ।

सरण्युभिः फलिगमिन्द्र शक्र वलं रवेण दुर्यो दशगवैः

४

८७५

गुणानो अङ्गिरोभिर्दस्म वि व—रुषसा सूर्येण गोभिरन्धः ।

वि भूम्या अप्रथय इन्द्र सानुं द्विवो रज उपरमस्तभायः

५

तद् प्रयक्षतममस्य कर्म दुस्मस्य चारुतममस्ति दंसः ।

उपह्वरे यदुपरा अपिन्वन् मध्वर्णसो नद्यश्चतस्रः

६

द्विता वि ववे सनजा सनीळे अयास्यः स्तवमानेभिरकैः ।

भगो न मेने परमे व्योम—न्नधारयद् रोदसी सुदंसाः

७

सनाद् दिवं परि भूमा विरूपे पुनर्भुवा युवती स्वेभिरैवैः ।

कृष्णेभिरुक्तोषा रुशद्भिर्वर्षुभिरा चरतो अन्यान्या

८

सनैमि सख्यं स्वपस्यमानः सुनुर्दाधार शवसा सुदंसाः ।

आमासुं चिद् दधिषे पक्रमन्तः पयः कृष्णासु रुशद् रोहिणीषु

९

८८०

सनात् सनीळा अवनीरवाता व्रता रक्षन्ते अमृताः सहोभिः ।

पुरु सहस्रा जनयो न पत्नी—र्दुवस्यन्ति स्वसारो अह्नयाणम्

१०

सनायुवो नमसा नव्यो अकै—र्वसुयवो मतयो दस्म दद्भुः

पतिं न पत्नीरुशतीरुशन्तं स्पृशन्ति त्वा शवसावन् मनीषाः

११

सनावेव तव रायो गर्भस्तौ न क्षीर्यन्ते नोप दस्यन्ति दस्म ।

द्युमौ असि क्रतुमौ इन्द्र धीरः शिक्षा शचीवस्तव नः शचीभिः

१२

सनायते गोतम इन्द्र नव्य—मतक्षद् ब्रह्म हरियोजनाय ।

सुनीथार्य नः शवसान नोधाः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्

१३

॥ ६५ ॥ (ऋ० १।६३।१-९)

त्वं महाँ इन्द्र यो ह शुष्मैर्द्यावा जज्ञानः पृथिवी अमे धाः ।
 यद्ध ते विश्वा गिरयश्चिदभ्वा भिया हृळ्हासः किरणा नैजन्
 आ यद्धरीं इन्द्र विवता वेरा ते वज्रं जरिता बाह्वोर्धात् ।
 येनाविहर्यतक्रतो अमित्रान् पुरं इष्णासि पुरुहूत पूर्वीः
 त्वं सत्य इन्द्र धूष्णुरेतान् त्वमृभुक्षा नर्यस्त्वं षाट् ।
 त्वं शुष्णं वृजने पृक्ष आपौ यूने कुत्साय द्युमते सचाहन्
 त्वं ह त्यदिन्द्र चोद्रीः सखा वृत्रं यद् वज्रिन् वृषकर्मब्रुभ्नाः ।
 यद्ध शूर वृषमणः पराचैर्वि दस्यूर्योनावक्रतो वृथाषाट्
 त्वं ह त्यदिन्द्रारिषण्यन् हृळ्हास्य चिन्मर्तीनामजुण्डौ ।
 व्यस्मदा काष्ठा अर्वते वधेनेव वज्रिञ्जथिह्यमित्रान्
 त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसातौ स्वर्मीळहे नर आज्ञा हवन्ते ।
 तव स्वधाव इयमा समर्य ऊतिर्वाजेष्वतुसाय्या भूत्
 त्वं ह त्यदिन्द्र सप्त युध्यन् पुरो वज्रिन् पुरुकुत्साय ददेः ।
 बर्हिन् यत् सुदासे वृथा वर्गहो राजन् वरिवः पूरवे कः
 त्वं त्यां न इन्द्र देव चित्रा मिषमापो न पीपयः परिज्मन् ।
 यया शूर प्रत्यस्मभ्यं यंसि त्मनमूर्जं न विश्वध क्षरधै
 अकारि त इन्द्र गोतमेभिर्ब्रह्माण्योक्ता नमसा हरिभ्याम् ।
 सुपेशंसं वाजमा भरा नः प्रातर्मक्षु धियावसुर्जगम्यात्

१ ८८५

२

३

४

५

६ ८९०

७

८

९

॥ ६६ ॥ (ऋ० ८।८८।१-६)

[प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।]

तं वो वृस्ममृतीषहं वसोर्मन्दानमन्धसः ।
 अमि वृत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गीर्भिर्नैवामहे
 द्युक्षं सुदानुं तर्विषीभिरावृतं गिरिं न पुरुभोजसम् ।
 क्षुमन्तं वाजं श्रुतिनं सहस्रिणं मक्षु गोमन्तमीमहे
 न त्वा बृहन्तो अद्रयो वरन्त इन्द्र वीळवः ।
 यद् दिर्त्ससि स्तुवते मावते वसु नक्लिष्टदा मिनाति ते
 योन्द्रासि क्रत्वा शर्वसोत वृंसना विश्वा जातामि मज्मना
 आ त्वायमर्क ऊतये ववर्तति यं गोतमा अजीजनन्

१

२ ८९५

३

४

प्र हि रिंरिक्ष ओजसा विवो अन्तेभ्यस्परि
 न त्वा विव्याच रज इन्द्र पार्थिव—मनु स्वधां ववक्षिथ ५
 नक्रिः परिण्ठिर्मघवन् मघस्य ते यद् द्वाशुषे दशस्यसि ।
 अस्माकं बोध्युचथस्य चोद्विता मंहिष्ठो वाजसातये ६

॥ ६७ ॥ (ऋ० १।८०।१-१६)

[९००-९५६] गोतमो राह्वगणः । (अथर्वा, मनुः, दध्यङ् च) । पंक्तिः ।

इत्था हि सोम इन्मदे ब्रह्मा चकार वर्धनम् ।
 शर्विष्ठ वज्रिन्नोजसा पृथिव्या निः शशा अहि—मर्चन्ननु स्वराज्यम् १ ९००
 स त्वामदुद् वृषा मदुः सोमः श्येनाभृतः सुतः ।
 येना वृत्रं निरुद्धयो जघन्थ वज्रिन्नोजसा—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् २
 प्रेह्यभीहि धृष्णुहि न ते वज्रो नि यंसते ।
 इन्द्र नृम्णं हि ते शत्रो हनो वृत्रं जया अपो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ३
 निरिन्द्र भूम्या अधि वृत्रं जघन्थ निर्विवः ।
 सृजा मरुत्वतीरव जीवधन्या इमा अपो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् ४
 इन्द्रो वृत्रस्य दोधतुः सानुं वज्रेण हीलितः ।
 अभिक्रम्याव जिघ्रते ऽपः समीय चोदय—र्चन्ननु स्वराज्यम् ५
 अधि सानौ नि जिघ्रते वज्रेण शतपर्वणा ।
 मन्दान इन्द्रो अन्धसः सखिभ्यो गातुमिच्छ—त्यर्चन्ननु स्वराज्यम् ६ ९०५
 इन्द्र तुभ्यमिदद्विवो ऽनुत्तं वज्रिन् वीर्यम् ।
 यद्ध त्वं मायिनं मुगं तमु त्वं माययावधी—र्चन्ननु स्वराज्यम् ७
 वि ते वज्रासो अस्थिर—न्नवाति नाव्याड अनु ।
 महत् तं इन्द्र वीर्यं बाह्वोस्ते बलं हित—मर्चन्ननु स्वराज्यम् ८
 सहस्रं साकमर्चतु परि ष्टोभत विंशतिः ।
 शतैनमन्वनोनवु—रिन्द्राय ब्रह्मोद्यत—मर्चन्ननु स्वराज्यम् ९
 इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं निरहन्त्सहसा सहः ।
 महत् तदस्य पौंस्यं वृत्रं जघन्वाँ असृज—दर्चन्ननु स्वराज्यम् १०
 इमे चित् तव मन्यवे वेपेते मियसा मही ।
 यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरुत्वाँ अवधी—र्चन्ननु स्वराज्यम् ११ ९१०

न वेपसा न तन्यते—न्द्रं वृत्रो वि बीभयत् ।

अभ्येनं वज्रं आयसः सहस्रभृष्टिरायता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १२

यद् वृत्रं तव चाशनिं वज्रेण समयोधयः ।

अहिमिन्द्र जिघांसतो द्विवि ते बद्धधे शवो ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १३

अभिष्टुने ते अद्विवो यत् स्था जगच्च रेजते ।

त्वष्टा चित् तव मन्यव इन्द्र वेविज्यते भिया—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १४

नहि नु यादधीमसी—न्द्रं को वीर्यो परः ।

तस्मिन्मृगमुत क्रतुं देवा ओजांसि सं दधु—र्चन्ननु स्वराज्यम् १५

यामथर्वा मनुष्पिता दध्यङ् धियमन्नत ।

तस्मिन् ब्रह्माणि पूर्वधे—न्द्र उक्था समग्मता—ऽर्चन्ननु स्वराज्यम् १६ ९१५

॥ ६८ ॥ (ऋ० १।८१।१-९)

इन्द्रो मदाय वावृधे शवसे वृत्रहा नृभिः ।

तमिन्महत्स्वाजिषू—तेमर्भे हवामहे स वाजेषु प्र नोऽविषत् १

असि हि वीर सेन्यो ऽसि भूरि परावृदिः ।

असि वृधस्य चिद् वृधो यजमानाय शिक्षसि सुन्वते भूरि ते वसु २

यद्वीरत आजयो धृष्णवे धीयते धना ।

युक्त्वा मवृच्युता हरी कं हनः कं वसौ दधो ऽस्माँ इन्द्र वसौ दधः ३

क्रत्वा महाँ अनुष्वधं भीम आ वावृधे शवः ।

श्रिय ऋष उपाकयो—नि शिप्री हरिवान् दधे हस्तयोर्वज्रमायसम् ४

आ पप्रौ पार्थिवं रजो बद्धधे रोचना द्विवि ।

न त्वावाँ इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते ऽति विश्वं ववक्षिथ ५ ९२०

यो अर्यो मर्तभोजनं पराददाति दाशुषे ।

इन्द्रो अस्मभ्यं शिक्षतु वि भजा भूरि ते वसु भक्षीय तव राधसः ६

मदेमदे हि नो वृदि—र्यूथा गवामृजुक्रतुः ।

सं गृभाय पुरु शतो—भयाहस्त्या वसु शिशीहि राय आ भर ७

मादयस्व सुते सचा शवसे शूर राधसे ।

विद्वा हि त्वा पुरुवसु—मुप कामान्तससृज्महे ऽथा नोऽविता भव ८

एते तं इन्द्र जन्तवो विश्वं पुण्यन्ति वार्यम् ।

अन्तर्हि ख्यो जनाना—मर्यो वेदो अदाशुषां तेषां नो वेदु आ भर ९

॥ ६९ ॥ (ऋ० १।८२।१-६) पंक्तिः, ६ जगती ।

उपो षु शृणुही गिरो मघवन् मातथा इव ।		
यदा नः सूनृतावतः कर आदुर्थयास इद् योजा न्विन्द्र ते हरी	१	९२५
अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।		
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी	२	
सुसंद्दृशं त्वा वयं मघवन् वन्दिषीमहि ।		
प्र नूनं पूर्णवन्धुरः स्तुतो याहि वशां अनु योजा न्विन्द्र ते हरी	३	
स घा तं वृषणं रथमधि तिष्ठाति गोविदम् ।		
यः पात्रं हारियोजनं पूर्णमिन्द्र चिकेतति योजा न्विन्द्र ते हरी	४	
युक्तस्ते अस्तु दक्षिण उत सव्यः शतक्रतो ।		
तेन जायामुप प्रियां मन्दानो याह्यन्धसो योजा न्विन्द्र ते हरी	५	
युनज्मि ते ब्रह्मणा केशिना हरी उप प्र याहि दधिषे गभस्त्योः		
उत त्वा सुतासो रभसा अमन्दिषुः पूषण्वान् वज्रिन्त्समु पत्न्यामदः	६	९३०

॥ ७० ॥ (ऋ० १।८३।१-६) जगती ।

अश्वावति प्रथमो गोषु गच्छति सुप्रावीरिन्द्र मर्त्यस्तवोतिभिः ।		
तमित् पृणक्षि वसुना भवीयसा सिन्धुमापो यथाभितो विचेतसः	१	
आपो न देवीरुपं यन्ति होत्रियमवः पश्यन्ति विततं यथा रजः ।		
प्राचैर्देवासः प्र णयन्ति देवयुं ब्रह्मप्रियं जोषयन्ते वरा इव	२	
अधि द्वयोरदधा उक्थ्यं वचो यतस्तुचा मिथुना या संपर्यतः ।		
असंयतो व्रते ते क्षेति पुष्यति भद्रा शक्तिर्यजमानाय सुन्वते	३	
आदङ्गिराः प्रथमं दधिरे वयं इन्द्राग्रयः शम्या ये सुकृत्यया ।		
सर्वं पणोः समविन्दन्त भोजनमश्वावन्तं गोमन्तमा पशुं नरः	४	
यज्ञैरथर्वा प्रथमः पथस्तते ततः सूर्यो व्रतपा वेन आजनि ।		
आ गा आजदुशना काव्यः सचा यमस्य जातममृतं यजामहे	५	९३५
बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय वृज्यते ऽर्को वा श्लोकमाघोषते द्विवि ।		
ग्रावा यत्र वदति कारुरुक्थ्यं स्तस्येदिन्द्रो अभिपित्वेषु रणयति	६	

॥ ७१ ॥ (ऋ० १।८४।१-२०)

[१-६ अनुष्टुप्; ७-९ उष्णिक्; १०-१२ पंक्तिः; १३-१५ गायत्री; १६-१८ त्रिष्टुप्,

(प्रगाथः= १९ बृहती; २० सतोबृहती ।)]

असावि सोम इन्द्र ते शविष्ठ धृष्णवा गहि । आ त्वा पृणक्त्विन्द्रियं रजः सूर्यो न रुग्मिभिः १

इन्द्रमिन्द्ररीं वहतो ऽप्रतिधृष्टशवसम् । ऋषीणां च स्तुतीरुप यज्ञं च मानुषाणाम्	२
आ तिष्ठ वृत्रहन् रथं युक्ता ते ब्रह्मणा हरी । अर्वाचीनं सु ते मनो ग्रावा कृणोतु वग्नुना	३
इममिन्द्र सुतं पिब ज्येष्ठममर्त्यं मदम् । शुक्रस्य त्वाभ्यक्षरन् धारा ऋतस्य सार्दने	४ ९४०
इन्द्राय नूनमर्चतो—कथानि च ब्रवीतन । सुता अमत्सुरिन्दवो ज्येष्ठं नमस्यता सहः	५
नकिङ्खद् रथीतरो हरी यदिन्द्र यच्छसे । नकिङ्खानु मज्मना नकिः स्वश्व आनशे	६
य एक इद् विदयते वसु मर्तीय दाशुषे । ईशानो अप्रतिष्कृत इन्द्रो अङ्ग	७
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत् । कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अङ्ग	८
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावां आविवांसति । उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अङ्ग	९ ९४५
स्वादोरित्था विषूवतो मध्वः पिबन्ति गौर्यैः ।	
या इन्द्रेण सयावरी—वृष्णा मदन्ति शोभसे वस्वीरनु स्वराज्यम्	१०
ता अस्य पृशनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृश्रयः ।	
प्रिया इन्द्रस्य धेनवो वज्रं हिन्वन्ति सायकं वस्वीरनु स्वराज्यम्	११
ता अस्य नमसा सहः सपर्यन्ति प्रचेतसः ।	
व्रतान्यस्य सश्विरे पुरुणि पूर्वचित्तये वस्वीरनु स्वराज्यम्	१२
इन्द्रो दधीचो अस्थभि—वृत्राण्यप्रतिष्कृतः । जघान नवतीर्नव	१३
इच्छन्नश्वस्य यच्छिरः पर्वतेष्वपश्रितम् । तद् विदच्छर्यणार्वति	१४ ९५०
अत्राह गोरमन्वत् नाम त्वष्टुरपीच्यम् । इत्था चन्द्रमसो गृहे	१५
को अद्य युङ्क्ते धुरि गा ऋतस्य शिमीवतो भामिनो दुर्हणायून् ।	
आसन्निषून् हृत्स्वसो मयोभून् य एषां भृत्यामूणधत् स जीवात्	१६
क ईषते तुज्यते को बिभाय को मंसते सन्तमिन्द्रं को अन्ति ।	
कस्तोकाय क इभायोत राये ऽधि ब्रवत् तन्वेऽ को जनाय	१७
को अग्निमीद्रे हविषा घृतेन सुचा यजाता ऋतुभिर्धुवेभिः ।	
कस्मै देवा आ वहानाशु होम को मंसते वीतिहोत्रः सुदेवः	१८
त्वमङ्ग प्र शंसिषो देवः शविष्ठ मर्त्यम् ।	
न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्द्धिते—न्द्र ब्रवीमि ते वचः	१९ ९५५
मा ते राधांसि मा त ऊतयो वसो ऽस्मान् कदा चना दभन् ।	
विश्वा च न उपमिमीहि मानुष वसूनि चर्षणिभ्य आ	२०

॥ ७९ ॥ (ऋ० १।१००।१-१९)

(९५७-९७५) वार्षागिराः ऋज्राश्वाऽम्बरीष-सहदेव-भयमान-सुराधसः । त्रिष्टुप् ।

स यो वृषा वृष्येभिः समोका महो दिवः पृथिव्याश्च सम्राट् ।	
सतीनसत्वा हव्यो भरेषु मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१
यस्यानाप्तः सूर्यस्येव यामो भरेभरे वृत्रहा शुष्मो अस्ति ।	
वृषन्तमः सखिभिः स्वेभिरेवै मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	२
द्विवो न यस्य रेतसो दुर्घानाः पन्थासो यन्ति शवसापरीताः	
तरङ्गेषाः सासहिः पौंस्येभि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	३
सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो भूद् वृषा वृषभिः सखिभिः सखा सन् ।	
ऋग्मिभिर्ऋग्मी गातुभिर्ज्येष्ठो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	४ ९६०
स सूनुभिर्न रुद्रेभिर्ऋग्वा नृषाह्ये सासह्ये अमित्रान् ।	
सनीळेभिः श्रवस्यानि तूर्वन मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	५
स मन्थुमीः समर्दनस्य कर्ता ऽस्माकेभिर्नृभिः सूर्यं सनत् ।	
अस्मिन्नहन्तसर्पातिः पुरुहूतो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	६
तमूतयो रणयञ्छूरसातौ तं क्षेमस्य क्षितयः कृण्वत त्राम् ।	
स विश्वस्य करुणस्येश एको मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	७
तमप्सन्तु शर्वस उत्सवेषु नरो नरमवसे तं धनाय ।	
सो अन्धे चित् तमसि ज्योतिर्विदन् मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	८
स सव्येन यमति वार्धतश्चित् स दक्षिणे संगृभीता कृतानि ।	
स कीरिणा चित् सनिता धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	९ ९६५
स ग्रामेभिः सनिता स रथेभिर्विदे विश्वाभिः कृष्टिभिर्नृथ ।	
स पौंस्येभिरभिभूरशस्ती मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१०
स जामिभिर्यत् समजाति मीळहे ऽजामिभिर्वा पुरुहूत एवैः ।	
अपां तोकस्य तनयस्य जेषे मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	११
स वज्रभृद् दस्युहा भीम उग्रः सहस्रचेताः शतनीथ ऋग्वा ।	
चम्रीषो न शर्वसा पाञ्चजन्यो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१२
तस्य वज्रः क्रन्दति स्मत् स्वर्षा द्विवो न त्वेषो रवथः शिमीवान् ।	
तं संचन्ते सनयस्तं धनानि मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१३

यस्याजस्रं शर्वसा मानमुक्थं परिभुजद् रोदसी विश्वतः सीम् ।		
स पारिषत् क्रतुभिर्मन्दसानो मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१४	९७०
न यस्य देवा देवता न मर्ता आपश्च न शर्वसो अन्तमापुः ।		
स प्ररिक्वा त्वक्षसा क्षमो विवश्वं मरुत्वान् नो भवत्विन्द्र ऊती	१५	
रोहिच्छयावा सुमदंशुर्ललामीर्द्युक्षा राय ऋज्राश्वस्य ।		
वृषण्वन्तं बिभ्रती धूर्षु रथं मन्द्रा चिकेत नाहुषीषु विश्व	१६	
एतत् त्यत् तं इन्द्र वृष्ण उक्थं वार्षागिरा अभि गृणन्ति राधः ।		
ऋज्राश्वः प्रष्टिभिरम्बरीषः सहदेवो भयमानः सुराधाः	१७	
दस्युञ्छिभ्यश्च पुरुहूत एवैर्हत्वा पृथिव्यां शर्वा नि बर्हीत् ।		
सनत् क्षेत्रं सखिभिः श्वित्येभिः सनत् सूर्यं सनदुपः सुवज्रः	१८	
विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिहृताः सनुयाम वाजम् ।		
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः	१९	९७५

॥ ७३ ॥ (ऋ० ८।९७।१-१५)

(९७६-९९०) रेभः काश्यपः । बृहती, १०, १३ अतिजगती, ११-१२ उपरिष्टाद्बृहती, १४ त्रिष्टुप्, १५ जगती ।

या इन्द्र भुज आभरः स्वर्वाँ असुरेभ्यः		
स्तोतारमिन्मघवन्नस्य वर्धय ये च त्वे वृक्तबर्हिषः	१	
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं गां भागमव्ययम् ।		
यजमाने सुन्वति दक्षिणावति तस्मिन् तं धेहि मा पुणौ	२	
य इन्द्र सस्त्यवतोऽनुष्वापमर्देवयुः ।		
स्वैः ष एवैर्मुमुरत् पोष्यं रथिं संनुतर्धेहि तं ततः	३	
यच्छक्रासिं परावति यदर्वावति वृत्रहन् ।		
अतस्त्वा गीर्भिर्द्युगदिन्द्र केशिभिः सुतावाँ आ विवासति	४	
यद्वासिं रोचने दिवः संमुद्रस्याधिं विष्टपिं ।		
यत् पार्थिवे सदाने वृत्रहन्तम् यदुन्तरिक्ष आ गहि	५	९८०
स नः सोमेषु सोमपाः सुतेषु शवसस्पते ।		
मादर्यस्व राधसा सूनृतावतेन्द्र राया परीणसा	६	
मा न इन्द्र परा वृणग् भवा नः सधमाद्यः ।		
ध्वं न ऊती त्वमिह आप्यं मा न इन्द्र परा वृणक्	७	

अस्मे इन्द्र सचा सुते नि षदा पीतये मधु ।		
कूधी जरित्रे मधवन्नवो मह—दुस्मे इन्द्र सचा सुते	८	
न त्वादेवास आशत न मर्त्यासो अद्विवः ।		
विश्वा जातानि शर्वसाभिभूरासि न त्वा देवास आशत	९	
विश्वाः पृतना अभिभूतरं नरं सजू—स्ततक्षुरिन्द्रं जजनुश्च राजसे ।		
क्रत्वा वरिष्ठं वरं आमुरिमुतो—ग्रमोजिष्ठं तवसं तरस्विनम्	१०	९८५
समी रेभासो अस्वर—न्निन्द्रं सोमस्य पीतये ।		
स्वर्पतिं यदीं वृधे धृतव्रतो ह्योजसा समूतिभिः	११	
नेमिं नमन्ति चक्षसा मेघं विप्रा अभिस्वरा ।		
सुदीतयो वो अद्रुहो ऽपि कर्णे तरस्विनः समृक्त्रभिः	१२	
तमिन्द्रं जोहवीमि मधवानमुग्रं सत्रा दधानमप्रतिष्कृतं शवांसि ।		
मंहिष्ठो गीर्भिरा च यज्ञियो ववर्तद् राये नो विश्वा सुपथा कृणोतु वज्री	१३	
त्वं पुर इन्द्र चिकिदेना व्योजसा शविष्ठ शक्र नाशयध्वै ।		
त्वद् विश्वानि भुवनानि वज्रिन् द्यावा रेजेते पृथिवी च भीषा	१४	
तन्म क्रतमिन्द्र शूर चित्र पात्व—पो न वज्रिन् दुरितातिं पर्षि भूरि ।		
कदा न इन्द्र राय आ दशस्ये—विश्वप्स्यस्य स्पृहयाय्यस्य राजन्	१५	९९०

॥ ७४ ॥ (ऋ० ८।१००।१-९)

(९९१-९९९) नेमो भार्गवः, ४-५ इन्द्रः, ९ वज्रो वा । त्रिष्टुप्, ६ जगती, ७, ९ अनुष्टुप् ।

अयं त एमि तन्वा पुरस्ताद् विश्वे देवा अभि मा यन्ति पश्चात् ।		
यदा मह्यं दीधरो भागमिन्द्रा—ऽऽदिन्मया कृणवो वीर्याणि	१	
दधामि ते मधुनो मक्षमग्रे हितस्ते भागः सुतो अस्तु सोमः ।		
असश्च त्वं दक्षिणतः सखा मे ऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि	२	
प्र सु स्तोमं भरत वाजयन्त इन्द्राय सत्यं यदि सत्यमस्ति ।		
नेन्द्रो अस्तीति नेम उ त्व आह क ईं ददर्श कमभि ष्टवाम	३	
अयमस्मि जरितः पश्य मेह विश्वा जातान्यभ्यस्मि मुह्ना ।		
क्रतस्य मा प्रदिशो वर्धयन्त्या—दर्दिरो भुवनं ददर्शमि	४	
आ यन्मा देना अरुहन्तस्य एकमासीनं हर्यतस्य पृष्ठे ।		
मनश्चिन्मे हृद् आ प्रत्यवोच—दचिक्रवुज्जिह्वमन्तः सखायः	५	९९५

विश्वेत् ता ते सर्वनेषु प्रवाच्या या चकर्थं मघवन्निन्द्र सुन्वते ।

पारावतं यत् पुरुसंभृतं व—स्वपावृणोः शरभाय ऋषिबन्धवे ६

प्र नूनं धावता पृथङ् नेह यो वो अवावरीत् ।

नि षीं वृत्रस्य मर्मणि वज्रमिन्द्रो अपीपतत् ७

समुद्रे अन्तः शयत उद्गा वज्रो अभीवृतः ।

भरन्त्यस्मै संयतः पुरःप्रस्रवणा बलिम् ९

सखे विष्णो वितुरं वि क्रमस्व द्यौर्देहि लोकं वज्राय विष्कभे ।

हनाव वृत्रं रिणचाव सिन्धु—निन्द्रस्य यन्तु प्रसवे विसृष्टाः १२ ९९९

॥ ७५ ॥ (ऋ० १।१२९।१-११)

(१०००-१०४१) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ८-९ अतिशक्त्यौ; ११ अष्टिः ।

यं त्वं रथमिन्द्र मेधसातये ऽपाका सन्तमिषिर प्रणयसि प्रानवद्य नयसि ।

सद्यश्चित् तमभिष्टये करो वशश्च वाजिनम् ।

सास्मार्कमनवद्य तूतुजान वेधसा—मिमां वाचं न वेधसाम् १ १०००

स श्रुधि यः स्मा पृतनासु कासु चिद् दुक्षार्य इन्द्र भरद्वातये नृभि—रसि प्रतूर्तये नृभिः ।

यः शूरैः स्वः सनिता यो विप्रैर्वाजं तरुता ।

तमीशानास इरधन्त वाजिनं पृक्षमत्यं न वाजिनम् २

दुस्मो हि ष्मा वृषणं पिन्वसि त्वचं कं चिद् यावीररुं शूर मर्त्यं परिवृणक्षि मर्त्यम् ।

इन्द्रोत तुभ्यं तद् विवे तद् रुद्राय स्वयंशसे ।

मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः समृच्छीकार्य सप्रथः ३

अस्माकं व इन्द्रमुश्मसीष्टये सखायं विश्वायुं प्रासहं युजं वाजेषु प्रासहं युजम् ।

अस्माकं ब्रह्मोतये ऽवा पृत्सुषु कासु चित् ।

नहि त्वा शत्रुः स्तरते स्तृणोषि यं विश्वं शत्रुं स्तृणोषि यम् ४

नि षू नमार्तिमतिं कयस्य चित् तेजिष्ठाभिररणिभिर्नोतिभि—रुग्राभिरुग्रोतिभिः ।

नेषि णो यथा पुरा ऽनेनाः शूर मन्यसे ।

विश्वानि पुरोरपं पषि वह्नि—रासा वह्निर्नो अच्छ ५

प्र तद् वोच्यं भव्यायेन्दवे हव्यो न य इष्वान् मन्म रेजति रक्षोहा मन्म रेजति ।

स्वयं सो अस्मदा निदो वधैरजेत दुर्मतिम् ।

अव स्रवेकृषांसोऽवतर—मव क्षुद्रमिव स्रवेत् ६ १००५

दै० [इन्द्रः] ८

वनेम तद्धोत्रया चितन्त्या वनेम रयिं रयिवः सुवीर्यं रणवं सन्तं सुवीर्यम् ।

दुर्मन्मानं सुमन्तुभिरेमिषा पृचीमहि ।

आ सत्याभिरिन्द्रं द्युमन्तूतिभिर्यजत्रं द्युमन्तूतिभिः ७

प्रपा वो अस्मे स्वयंशोभिरुती परिवर्ग इन्द्रो दुर्मतीनां दरीमन् दुर्मतीनाम् ।

स्वयं सा रिषयध्वै या न उपेषे अत्रैः ।

हतेमसन्न वक्षति क्षिता जूणिर्न वक्षति ८

त्वं न इन्द्र राया परीणसा याहि पथाँ अनेहसा पुरो याह्यरक्षसा ।

सचस्व नः पराक आ सचस्वास्तमीक आ ।

पाहि नो दुरादाराकुभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ९

त्वं न इन्द्र राया तरूषसो ग्रं चित् त्वा महिमा संक्षदवसे महे मित्रं नावसे ।

ओजिष्ठ त्रातरविता रथं कं चिदमर्त्य ।

अन्यमस्मद् रिषिषेः कं चिदद्रिवो रिषिक्षन्तं चिदद्रिवः १०

पाहि न इन्द्र सुष्टुत सिधोः ऽवयाता सद्रुमिद् दुर्मतीनां देवः सन् दुर्मतीनाम् ।

हन्ता पापस्य रक्षसं छाता विप्रस्यु मावतः ।

अथा हि त्वां जनिता जीजनद् वसो रक्षोहणं त्वा जीजनद् वसो ११

१०१०

॥ ७६ ॥ (क० १।१३०।१-१०) अत्यष्टिः; १० त्रिष्टुप् ।

एन्द्र याह्युप नः परावतो नायमच्छा विदथानीव सत्पतिरस्तं राजेव सत्पतिः ।

हवामहे त्वा वयं प्रयस्वन्तः सुते सचा ।

पुत्रासो न पितरं वाजसातये मंहिष्ठं वाजसातये १

पिबा सोममिन्द्र सुवानमद्रिभिः कोशेन सिक्तमवतं न वंसंगस्तातृषाणो न वंसंगः ।

मदाय हर्यतार्य ते तुविष्टमाय धार्यसे ।

आ त्वा यच्छन्तु हस्तिो न सूर्यमहा विश्वेव सूर्यम् २

अविन्दद् द्विवो निहितं गुहा निधिं वेन गर्भं परिवीतमश्मन्यनन्ते अन्तरश्मनि ।

व्रजं वज्री गवामिव सिषासन्नङ्गिरस्तमः ।

अपावृणोदिष इन्द्रः परीवृता द्वार इषः परीवृताः ३

द्राहृहाणो वज्रमिन्द्रो गर्भस्त्योः क्षत्रेव तिग्ममसनाय सं श्यदहिहत्याय सं श्यत् ।

संविद्यान् ओजसा शवोभिरिन्द्र मज्मना ।

तष्टेव वृक्षं वनिनो नि वृश्चसि परश्वेव नि वृश्चसि ४

त्वं वृथा नद्यं इन्द्र सर्तवे ऽच्छा समुद्रमसृजो रथौ इव वाजयतो रथौ इव ।

इत ऊतीरयुञ्जत समानमर्थमक्षितम् ।

धेनूर्निव मनवे विश्वदोहसो जनाय विश्वदोहसः

५

१०१५

इमां ते वाचं वसूयन्त आयवो रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः सुम्नाय त्वामतक्षिषुः ।

शुम्भन्तो जेन्यं यथा वाजेषु विप्र वाजिनम् ।

अत्यमिव शर्वसे सातये धना विश्वा धनानि सातये

६

भिनत् पुरो नवतिमिन्द्र पूरवे दिवोदासाय महिं द्वाशुषे नृतो वज्रेण द्वाशुषे नृतो ।

अतिथिग्वाय शम्बरं गिरेरुग्रो अवाभरत् ।

महो धनानि दयमान ओजसा विश्वा धनान्योजसा

७

इन्द्रः समत्सु यजमानमार्यं प्रावद् विश्वेषु शतमूतिराजिषु स्वर्मीळहेष्वाजिषु ।

मनवे शासद्व्रतान् त्वचं कृष्णामरन्धयत् ।

दक्षन्न विश्वं ततृषाणमोषति न्यर्शसानमोषति

८

सूरश्चक्रं प्र वृहज्जात ओजसा प्रपित्वे वाचमरुणो मुषायती—ज्ञान आ मुषायति ।

उशना यत् परावतो ऽजगन्नूतये कवे ।

सुम्नानि विश्वा मनुषेव तुर्वणि—रहा विश्वेव तुर्वणिः

९

स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुक्थैः पुरां दर्तः पायुभिः पाहि शग्मैः ।

दिवोवासेभिरिन्द्र स्तवानो वावृधीथा अहोभिरिव द्यौः

१०

१०२०

॥ ७७ ॥ (ऋ० ११३११-७) अत्यष्टिः ।

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनमन्ते—न्द्राय मही पृथिवी वरीमभि—द्युम्नसाता वरीमभिः ।

इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दधिरे पुरः ।

इन्द्राय विश्वा सर्वनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा

१

विश्वेषु हि त्वा सर्वनेषु तुञ्जते समानमेकं वृषमण्यवः पृथक् स्वः सनिग्यवः पृथक् ।

तं त्वा नावं न पर्षणिं शूषस्य धुरि धीमहि ।

इन्द्रं न यज्ञैश्चितयन्त आयवः स्तोमेभिरिन्द्रमायवः

२

वि त्वा ततस्ते मिथुना अवस्यवो ब्रजस्य साता गव्यस्य निःसृजः सक्षन्त इन्द्र निःसृजः ।

यद् गव्यन्ता द्वा जना स्वयन्ता समूहसि ।

आविष्करिक्वद् वृषणं सचाभुवं वज्रमिन्द्र सचाभुवम्

३

विदुष्टे अस्य वीर्यस्य पूरवः पुरो यदिन्द्र शारदीरवातिरः सासहानो अवातिरः ।

शासस्तमिन्द्र मर्त्य—मयज्यं शवसस्पते ।

महीममुष्णाः पृथिवीमिमा अपो मन्दसान इमा अपः

४

आदित् ते अस्य वीर्यस्य चर्किरन् मर्देषु वृषन्नुशिजो यदाविथ सखीयतो यदाविथ ।
चकर्थं कारमेभ्यः पृतनासु प्रवन्तवे ।

ते अन्यामन्यां नृद्यं सनिष्णत श्रवस्यन्तः सनिष्णत ५ १०२५

उतो नो अस्या उवसो जुषेत ह्यः—कस्य बोधि हविषो हवीमभिः स्वर्षाता हवीमभिः ।
यदिन्द्र हन्तवे मृधो वृषा वज्रिश्चिकेतसि ।

आ मे अस्य वेधसो नवीयसो मन्म श्रुधि नवीयसः ६

त्वं तमिन्द्र वावृधानो अस्मयु—रमित्रयन्तं तुविजात मर्त्यं वज्रेण शूर मर्त्यम् ।

जहि यो नो अघायति शृणुष्व सुश्रवस्तमः ।

रिष्टं न यामन्नप भूत दुर्मति—विर्वाप भूत दुर्मतिः ७

॥ ७८ ॥ (ऋ० १।१३१।१-६) [६ (अर्धर्चस्य) इन्द्रापर्वतौ] ।

त्वया वयं मघवन् पूर्ये धन इन्द्रत्वोताः सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतः ।

नेदिष्ठे अस्मिन्नह—न्यधि वोचा नु सुन्वते ।

अस्मिन् यज्ञे वि चयेमा भरे कृतं वाजयन्तो भरे कृतम् १

स्वर्जेषे भर आप्रस्य वक्रम—न्युषर्बुधः स्वास्मिन्नश्वसि क्राणस्य स्वास्मिन्नश्वसि ।

अहन्निन्द्रो यथा विदे शीष्णाशीष्णोपवाच्यः ।

अस्मन्ना ते सध्व्यक् सन्तु रातयो भद्रा भद्रस्य रातयः २

तत् तु प्रयः प्रतथा ते शुशुक्वनं यस्मिन् यज्ञे वारमकृण्वत् क्षय—मृतस्य वारसि क्षयम् ।

वि तद् वोचेरध द्विता—ऽन्तः पश्यन्ति रश्मिभिः ।

स घा विदे अन्विन्द्रो गवेषणो बन्धुक्षिद्ध्यो गवेषणः ३ १०३०

नू इत्था ते पूर्वथा च प्रवाच्यं यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रज—मिन्द्र शिक्षन्नप व्रजम् ।

ऐभ्यः समान्या विशा ऽस्मभ्यं जेषि योत्सि च ।

सुन्वद्ध्यो रन्धया कं चिद्व्रतं हृणायन्तं चिद्व्रतम् ४

सं यज्जनान् क्रतुभिः शूर ईक्षयद् धने हिते तरुषन्त श्रवस्यवः प्र यक्षन्त श्रवस्यवः ।

तस्मा आयुः प्रजावदिद् बाधे अर्चन्त्योजसा ।

इन्द्र ओक्यं दिधिषन्त धीतयो देवाँ अच्छा न धीतयः ५

युवं तमिन्द्रापर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिन्द्रतं वज्रेण तंतमिन्द्रतम् ।

दूरे चत्तारं च्छन्तसद् गहनं यदिनक्षत् ।

अस्माकं शत्रून् परि शूर विश्वतो दुर्मा दर्शीष्ट विश्वतः ६

॥ ७९ ॥ (ऋ० १।१३३।१-७) १ त्रिष्टुप्, २-४ अनुष्टुप्, ५ गायत्री, ६ धृतिः, ७ अष्टिः ।

उभे पुनामि रोदसी ऋतेन दुहो दहामि सं महीरनिन्द्राः ।

अभिब्लग्य यत्र हता अमित्रा वैलस्थानं परि तुळहा अशेरन् १

अभिब्लग्या चिदद्विवः शीर्षा यातुमतीनाम् । छिन्धि वटूरिणा पदा महावटूरिणा पदा २ १०३५

अवासां मघवञ्चहि शर्धो यातुमतीनाम् । वैलस्थानके अर्मके महावैलस्थे अर्मके ३

यासां तिस्रः पञ्चाशतोऽभिब्लङ्गैरुपावपः । तत् सु ते मनायति तक्तत् सु ते मनायति ४

पिशङ्गभृष्टिमम्भूणं पिशाचिमिन्द्र सं मृण । सर्वं रक्षो नि बर्हय ५

अवर्मह इन्द्र दाहहि श्रुधी नः शुशोच हि द्यौः क्षा न भीषा अद्रिवो घृणान्न भीषा अद्रिवः ।

शुष्मिन्तमो हि शुष्मिभिर्वधैरुग्रेभिरीयसे ।

अपूरुषघ्नो अपतीति शूर सत्वमिच्छिसत्तैः शूर सत्वमिः ६

वनोति हि सुन्वन् क्षयं परीणसः सुन्वानो हि ष्मा यजत्यव द्विषो देवानामव द्विषः ।

सुन्वान इत् सिंषासति सहस्रा वाज्यवृतः ।

सुन्वानायेन्द्रो ददात्याभुवं रयिं ददात्याभुवम् ७ १०४०

॥ ८० ॥ (ऋ० १।१३९।६) अत्यष्टिः ।

वृषन्निन्द्र वृषपाणास इन्दव इमे सुता अद्रिषुतास उद्भिद्वस्तुभ्यं सुतास उद्भिद्वः ।

ते त्वा मन्दन्तु द्वावने महे चित्राय राधसे ।

गीर्भिर्गिर्वाहः स्तवमान आ गंहि सुमृळीको न आ गंहि ६ १०४१

॥ ८१ ॥ (ऋ० १।१६७।१) (१०४२-११००) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

सहस्रं त इन्द्रोतयो नः सहस्रमिषो हरिवो गूर्तर्तमाः ।

सहस्रं रायो मादुयधै सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः १

॥ ८२ ॥ (ऋ० १।१६९।१-८) त्रिष्टुप्, २ चतुष्पदा विराट् ।

महश्चित् त्वमिन्द्र यत् एतान् महश्चिदसि त्यजसो वरुता ।

स नो वेधो मरुतां चिकित्वान् त्सुम्ना वनुष्व तव हि प्रेष्ठा १

अयुञ्जन्त इन्द्र विश्वकृष्ठी विद्वानासो निषिधो मर्त्यत्रा ।

मरुतां पृतसुतिर्हासमाना स्वर्माळहस्य प्रधनस्य सातौ २

अम्यक् सा त इन्द्र ऋष्टिरस्मे सनेम्यभ्वं मरुतो जुनन्ति ।

अग्निश्चिद्धि ष्मातसे शुशुक्ता नापो न द्वीपं दधति प्रयांसि ३ १०४५

त्वं तू न इन्द्र तं रयिं द्वा ओजिष्ठया दक्षिणयेव रातिम् ।

स्तुतश्च यास्ते चकनन्त वायोः स्तनं न मध्वः पीपयन्त वाजैः ४

त्वे रायं इन्द्र तोशतमाः प्रणेतारः कस्य चिह्नायोः ।
 ते षु णो मरुतो मृळयन्तु ये स्मा पुरा गातूयन्तीव देवाः ५
 प्रति प्र याहीन्द्र मीळ्हुषो नृन् महः पार्थिवे सदेने यतस्व ।
 अध यदेषां पृथुबुध्रास एता स्तीर्थे नार्यः पौस्यानि तस्थुः ६
 प्रति घोराणामेतानामयासां मरुतां शृण्व आयतामुपब्धिः ।
 ये मर्त्यं पृतनायन्तमूमे कृणावानं न पतयन्त सर्गेः ७
 त्वं मानेभ्य इन्द्र विश्वजन्या रदा मरुद्भिः शुरुधो गोअग्राः ।
 स्तवानेभिः स्तवसे देव देवैर्विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम् ८ १०५०

॥ ८३ ॥ (क्र० ११७०११-५)

[इन्द्रः (४ अगस्त्यो वा) ; २, ५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः] । १ बृहती, २-४ अनुष्टुप्, ५ त्रिष्टुप् ।

न नूनमस्ति नो श्वः कस्तद् वेदु यदञ्जुतम् ।
 अन्यस्य चित्तमभि संचरेण्य मुताधीतं वि नश्यति १
 किं न इन्द्र जिघांससि भ्रातरो मरुतस्तव । तेभिः कल्पस्व साधुया मा नः समरणे वधीः २
 किं नो भ्रातरगस्त्य सखा सन्नति मन्यसे । विद्या हि ते यथा मनो ऽस्मभ्यमिन्न दित्ससि ३
 अरं कृण्वन्तु वेदिं समग्निमिन्धतां पुरः । तत्रामृतस्य चेतनं यज्ञं ते तनवावहै ४
 त्वमीशिषे वसुपते वसूनां त्वं मित्राणां मित्रपते धेष्ठः ।
 इन्द्र त्वं मरुद्भिः सं वदस्वा ऽध प्राशानि ऋतुथा हवीर्षि ५ १०५५

॥ ८४ ॥ (क्र० ११७३११-१३) त्रिष्टुप्, ४ विराट्स्थाना विषमपदा वा ।

गायत् सामं नभन्यं यथा वे रर्चाम तद् वावृधानं स्वर्वत् ।
 गावो धेनवो बर्हिण्यदब्धा आ यत् सद्धानं दिव्यं विवासान् १
 अर्चद् वृषा वृषभिः स्वेदुहव्यै मृगो नाश्रो अति यज्जुगुर्यात् ।
 प्र मन्वयुर्मनां गूर्तं होता भरते मर्यो मिथुना यजत्रः २
 नक्षद्भोता परि सदा मिता यन् भरद् गर्भमा शरद्ः पृथिव्याः ।
 क्रन्दुदश्वो नयमानो रुवद् गौ रन्तर्दूतो न रोदसी चरद् वाक् ३
 ता कर्माषतरास्मै प्र च्यौत्तानि देवयन्तो भरन्ते ।
 जुजोषदिन्द्रो दुस्मवर्चा नासत्येव सुगम्यो रथेष्ठाः ४
 तमु ष्णुहीन्द्रं यो ह सत्वा यः शूरो मघवा यो रथेष्ठाः ।
 प्रतीचश्चिद् योधीयान् वृषण्वान् ववृषश्चित् तमसो विहन्ता ५ १०६०
 प्र यद्वित्था महिना नृभ्यो अ स्त्यरं रोदसी कक्ष्ये न नास्मै ।
 सं विव्य इन्द्रो वृजनं न भूमा भर्ति स्वधावा ओपशमिव द्याम् ६

समत्सु त्वा शूर सतामुराणं प्रपथिन्तमं परितंसयध्वै ।	
सजोषस इन्द्रं मदे क्षोणीः सूरिं चिद् ये अनुमदन्ति वाजैः	७
एवा हि ते शं सर्वना समुद्र आपो यत् तं आसु मदन्ति कुवीः ।	
विश्वा ते अनु जोष्या भूद् गौः सूरिंश्चिद् यदि धिषा वेषि जनान्	८
असाम यथा सुषस्वाय एन स्वभिष्टयो नरां न शंसैः ।	
असद् यथा न इन्द्रो वन्दनेष्ठास्तुरो न कर्म नयमान उक्था	९
विष्वर्धसो नरां न शंसै रस्माकासदिन्द्रो वज्रहस्तः ।	
मित्रायुवो न पूर्पतिं सुशिष्टौ मध्यायुव उप शिक्षन्ति यज्ञैः	१०
यज्ञो हि ष्मेन्द्रं कश्चिदुन्ध-श्रुहुराणश्चिन्मनसा परियन् ।	१०६५
तीर्थे नाच्छा तातृषाणमोको कीर्घो न सिध्रमा कृणोत्यध्वा	११
मो षू ण इन्द्रात्र पुत्सु देवै रस्ति हि ष्मा ते शुष्मिन्नवयाः ।	
महश्चिद् यस्य मीळहुषो यव्या हविष्मतो मरुतो वन्दते गीः	१२
एष स्तोम इन्द्र तुभ्यमस्मे एतेन गातुं हरिवो विदो नः	
आ नो ववृत्याः सुविताय देव विद्यामेष वृजनं जीरदानुम्	१३

॥ ८५ ॥ (ऋ० १।१७४।१-१०) त्रिष्टुप् ।

त्वं राजेन्द्र ये च देवा रक्षा नृन् पाह्यसुर त्वमस्मान् ।	
त्वं सत्पतिर्मघवा नस्तरुत्र-स्त्वं सत्यो वसवानः सहोदाः	१
दनो विश इन्द्र मूधवाचः सप्त यत् पुरः शर्म शारदीर्दत् ।	
ऋणोरपो अनवद्याणा यूने वृत्रं पुरुकुत्साय रन्धीः	२
अजा वृत् इन्द्र शूरपत्नी-र्या च येभिः पुरुहूत नूनम् ।	१०७०
रक्षो अग्निमशुषं तूर्वयाणं सिंहो न दमे अपांसि वस्तोः	३
शेषन् नु त इन्द्र सस्मिन् योनौ प्रशस्तये पवीरवस्य मृहा ।	
सृजदणीस्यव यद् युधा गा-स्तिष्ठन्द्रीं धृषता मृष्ट वाजान्	४
वह कुत्समिन्द्र यस्मिन्नाकन् त्स्यून्यू ऋजा वातस्याश्वः ।	
प्र सूरश्चक्रं वृहताकुभीके ऽभि स्पृधो यासिषद् वज्रबाहुः	५
जघन्वा इन्द्र मित्रे-ओदप्रवृद्धो हरिवो अदाशून् ।	
प्र ये पश्यन्नयमणं सचायो-स्त्वया शूर्ता वहमाना अपत्यम्	६
रपत् कविरिन्द्रार्कसातौ क्षां दासायोपबर्हणीं कः ।	
करत् तिस्रो मघवा दानुचित्रा नि दुर्योणे कुर्यवाचं मूधि श्रेत्	७

सना ता त इन्द्र नव्या आगुः सहो नभोऽविरणाय पूर्वीः
 भिनत् पुरो न भिक्षो अदेवी—नैनमो वधरदेवस्य प्रीयोः ८
 त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती—ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।
 प्र यत् समुद्रमतिं शूरं पर्षिं पारयां तुर्वशं यदुं स्वस्ति ९
 त्वमस्माकमिन्द्र विश्वधं स्या अवृकतमो नरां नृपाता ।
 स नो विश्वासां स्पृधां सहोदा विद्यामेघं वृजनं जीरदानुम् १०

॥ ८६ ॥ (ऋ० १।१७।१-६) १ स्कन्धोग्रीवी बृहती; २-५ अनुष्टुप्, ६ त्रिष्टुप् ।

मत्स्यपायि ते महः पात्रस्येव हरिवो मत्सरो मदः । वृषां ते वृष्ण इन्दु—र्वाजी सहस्रसातमः १
 आ नस्ते गन्तु मत्सरो वृषा मदो वरेण्यः । सहावाँ इन्द्र सानसिः पृतनाषाळमर्त्यः २ १०८०
 त्वं हि शूरः सन्तिता चोदयो मनुषो रथम् । सहावान् दस्युमव्रत—मोषः पात्रं न शोचिषा ३
 मुषाय सूर्यं कवे चक्रमीशान् ओजसा । वह शुष्णाय वधं कुत्सं वातस्याश्वैः ४
 शुष्मिन्तमो हि ते मदो द्युम्निन्तम उत क्रतुः । वृत्रघ्ना वरिवोविदा मंसीष्ठा अश्वसातमः ५
 यथा पूर्वैभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृष्यते बभूथ ।
 तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेघं वृजनं जीरदानुम् ६

॥ ८७ ॥ (ऋ० १।१७६।१-६) अनुष्टुप्, ६ त्रिष्टुप् ।

मत्सि नो वस्यइष्टय इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश । ऋचायमाण इन्वसि शत्रुमन्ति न विन्दसि १ १०८५
 तस्मिन्ना वेशया गिरो य एकश्चर्षणीनाम् । अनु स्वधा यमुप्यते यवं न चर्कृषद् वृषा २
 यस्य विश्वानि हस्तयोः पञ्च क्षितीनां वसु । स्पाशयस्व यो अस्मधुग् विग्येवाशनिर्जहि ३
 असुन्वन्तं समं जहि दूणाशं यो न ते मयः । अस्मभ्यमस्य वेदनं कुन्धि सूरिश्रिदोहते ४
 आवो यस्य द्विर्हंसो ऽर्केषु सानुषगसत् । आजाविन्द्रस्येन्द्रो प्रावो वाजेषु वाजिनम् ५
 यथा पूर्वैभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मय इवापो न तृष्यते बभूथ ।
 तामनु त्वा निविदं जोहवीमि विद्यामेघं वृजनं जीरदानुम् ६ १०९०

॥ ८८ ॥ (ऋ० १।१७७।१-६) त्रिष्टुप् ।

आ चर्षणिप्रा वृषभो जनानां राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।
 स्तुतः श्रवस्यन्नवसोर्प मद्विष् युक्त्वा हरी वृषणा याह्यर्वाङ् १
 ये ते वृषणो वृषभास इन्द्र ब्रह्मयुजो वृषरथासो अत्याः ।
 ताँ आ तिष्ठ तेभिरा याह्यर्वाङ् हवामहे त्वा सुत इन्द्र सोमै २
 आ तिष्ठ रथं वृषणं वृषां ते सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।
 युक्त्वा वृषभ्यां वृषभ क्षितीनां हरिभ्यां याहि प्रवतोर्प मद्विक् ३

अयं यज्ञो देवया अयं मियेध इमा ब्रह्माण्ययमिन्द्र सोमः ।
 स्तीर्णं बर्हिरा तु शक्र प्र याहि पिबा निषद्य वि मुचा हरीं इह ४
 ओ सुष्टुत इन्द्र याह्यर्वा—दुप ब्रह्माणि मान्यस्य कारोः ।
 विद्याम वस्तोरवसा गुणन्तो विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ५ १०९५

॥ ८९ ॥ (ऋ० १।१७८।१-५)

यद्ध स्या त इन्द्र श्रुष्टिरस्ति यया बभूथ जरितृभ्य ऊती ।
 मा नः कामं महयन्तमा धग् विश्वा ते अश्यां पर्याप आयोः १
 न घा राजेन्द्र आ दभन्तो या नु स्वसारा कृणवन्तु योनौ ।
 आपश्चिदस्मै सुतुका अवेषन् गमन्त इन्द्रः सख्या वयश्च २
 जेता नृभिरिन्द्रः पूत्सु शूरः श्रोता हवं नार्धमानस्य कारोः ।
 प्रभर्ता रथं वृशुष उपाक उद्यन्ता गिरो यदि च तमना भूत् ३
 एवा नृभिरिन्द्रः सुश्रवस्या प्रखादः पूक्षो अभि मित्रिणो भूत् ।
 समर्थ इषः स्तवते विवाचि सत्राकरो यजमानस्य शंसः ४
 त्वया वयं मधवन्निन्द्र शत्रू नभि ष्याम महतो मन्यमानान् ।
 त्वं ज्ञाता त्वमु नो वृधे भू—विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम् ५ ११००

॥ ९० ॥ (ऋ० २।११।१-२१)

(११०१-१२३७) गृत्समद (आंगिरसः शौनहोत्रः पश्चाद्) भार्गवः शौनकः । विराटस्थाना; २१ त्रिष्टुप् ।

श्रुधी हवमिन्द्र मा रिषण्यः स्याम ते दावने वसूनाम् ।
 इमा हि त्वामूर्जो वर्धयन्ति वसूयवः सिन्धवो न क्षरन्तः १
 सूजो महीरिन्द्र या अपिन्वः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।
 अमर्त्यं चिद् वासं मन्यमान—मवाभिनदुक्थैर्वीवृधानः २
 उक्थेष्विन्नु शूर येषु चाकन् तस्तोमेष्विन्द्र रुद्रीयेषु च ।
 तुभ्येदेता यासु मन्दसानः प्र वायवे सिष्यते न शुभ्राः ३
 शुभ्रं नु ते शुष्मं वर्धयन्तः शुभ्रं वज्रं बाह्वोर्दधानाः ।
 शुभ्रस्त्वमिन्द्र वावृधानो अस्मे दासीर्विशः सूर्येण सहाः ४
 गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्स्व—पीवृतं मायिनं क्षियन्तम् ।
 उतो अपो द्यां तस्तभ्वांस—महन्नहि शूर वीर्येण ५ ११०५
 स्तवा नु त इन्द्र पूर्या महा—न्युत स्तवाम नूतना कृतानि ।
 स्तवा वज्रं बाह्वोरुशन्तं स्तवा हरी सूर्यस्य केतू ६

हरी नु त इन्द्र वाजयन्ता घृतश्चुतं स्वारमस्वाष्टाम् ।	
वि समना भूमिरप्राथिष्ठा—ऽस्त पर्वतश्चित् सरिण्यन्	७
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन् त्सं मातृभिर्वावशानो अक्रान् ।	
दूरे पारे वाणीं वर्धयन्त इन्द्रैषितां धमनिं पप्रथन् नि	८
इन्द्रो मह्यं सिन्धुमाशयानं मायाविनं वृत्रमस्फुरन्निः ।	
अरेजेतां रोदसी भियाने कर्निकदतो वृष्णो अस्य वज्रात्	९
अरोरवीद् वृष्णो अस्य वज्रो ऽमानुषं यन्मानुषो निजूर्वात् ।	
नि मायिनो दानवस्य माया अपादयत् पपिवान्सुतस्य	१० १११०
पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मन्दन्तु त्वा मन्दिनः सुतासः ।	
पूणन्तस्ते कुक्षी वर्धयन्त्वित्था सुतः पौर इन्द्रमाव	११
त्वे इन्द्राप्यभूम विप्रा धियं वनेम क्रतया सपन्तः ।	
अवस्यवो धीमहि प्रशस्तिं सद्यस्ते रायो द्वावने स्याम	१२
स्याम ते त इन्द्र ये त ऊती अवस्यव ऊर्जं वर्धयन्तः ।	
शुष्मिन्तमं यं चाकनाम देवा—ऽस्मे रयिं रासि वीरवन्तम्	१३
रासि क्षयं रासि मित्रमस्मे रासि शर्धे इन्द्र मारुतं नः ।	
सजोषसो ये च मन्दसानाः प्र वायवः पान्त्यग्रणीतिम्	१४
व्यन्त्वित्नु येषु मन्दसान—स्तूपत् सोमं पाहि ब्रह्मदिन्द्र ।	
अस्मान्सु पुत्स्वा तरुत्रा—ऽवर्धयो द्यां बृहद्भिरकैः	१५ १११५
बृहन्त इन्नु ये ते तरुत्रो—क्थेभिर्वा सुमन्माविवासान् ।	
स्तृणानासो बर्हिः पस्त्यावत् त्वोता इदिन्द्र वाजमगमन्	१६
उग्रेष्वित्नु शूर मन्दसान—स्त्रिकदुकेषु पाहि सोममिन्द्र ।	
प्रदोषुवच्छ्रुषु प्रीणानो याहि हरिभ्यां सुतस्य पीतिम्	१७
धिष्वा शवः शूर येन वृत्र—मवाभिन्द दानुमौर्णवाभम् ।	
अपावृणोज्योतिरार्याय नि सव्यतः सादि दस्युरिन्द्र	१८
सनेम ये त ऊतिमिस्तरन्तो विश्वाः स्पृध आर्येण दस्यून् ।	
अस्मभ्यं तत् त्वाष्ट्रं विश्वरूप—मरन्धयः साख्यस्य त्रिताय	१९
अस्य सुवानस्य मन्दिनस्त्रितस्य न्यर्बुदं वावृधानो अस्तः ।	
अवर्तयत् सूर्यो न चक्रं भिन्द वलमिन्द्रो अङ्गिरस्वान्	२० १११०

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।	
शिक्षा स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	२१
॥ ९१ ॥ (ऋ० २।१२।१-१५) त्रिष्टुप् ।	
यो जात एव प्रथमो मनस्वान् देवो देवान् क्रतुना पर्यभूषत् ।	
यस्य शुष्माद् रोदसी अभ्यसेतां नृम्णस्य महा स जनास इन्द्रः	१
यः पृथिवीं व्यथमानामहं हृद् यः पर्वतान् प्रकुपितो अरम्णात् ।	
यो अन्तरिक्षं विममे वरीयो यो द्यामस्तभ्नात् स जनास इन्द्रः	२
यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् यो गा उदाजदपधा वलस्य ।	
यो अश्मनोरन्तरग्निं जजान संवृक् समत्सु स जनास इन्द्रः	३
येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि यो दासं वर्णमधरं गुहाकः ।	
श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाददुर्यः पुष्टानि स जनास इन्द्रः	४ ११२५
यं स्मा पृच्छन्ति कुह सेति घोरमुतेमाहुर्नैषो अस्तीत्येनम् ।	
सो अर्यः पुष्टीर्विज इवा मिनाति श्रदस्मै धत्त स जनास इन्द्रः	५
यो रधस्य चोदिता यः कूशस्य यो ब्रह्मणो नार्धमानस्य कीरे ।	
युक्तग्राव्णो योऽविता सुशिपः सुतसोमस्य स जनास इन्द्रः	६
यस्याश्वासः प्रादिशि यस्य गावो यस्य ग्रामा यस्य विश्वे रथासः ।	
यः सूर्यं य उषसं जजान यो अपां नेता स जनास इन्द्रः	७
यं क्रन्दसी संयती विह्वयेते परेऽवर उभयां अमित्राः ।	
समानं चिद् रथमातस्थिवांसा नाना हवते स जनास इन्द्रः	८
यस्मान्न ऋते विजयन्ते जनासो यं युध्यमाना अवसे हवन्ते ।	
यो विश्वस्य प्रतिमानं बभूव यो अच्युतच्युत् स जनास इन्द्रः	९ ११३०
यः शश्वतो महेनो दधाना नमन्यमानाऽच्छवीं जघान ।	
यः शर्धते नानुददाति शूध्यां यो दस्योर्हन्ता स जनास इन्द्रः	१०
यः शम्बरं पर्वतेषु क्षियन्तं चत्वारिंश्यां शरद्यन्वविन्दत् ।	
ओजायमानं यो अहिं जघान दानुं शयानं स जनास इन्द्रः	११
यः सप्तर्षिमवृषभस्तुविष्मानवासृजत् सप्तैवे सप्त सिन्धून् ।	
यो रौहिणमस्फुरद् वज्रबाहुर्धामारोहन्तं स जनास इन्द्रः	१२
द्यावां चिदस्मै पृथिवी नमेते शुष्माच्चिदस्य पर्वता भयन्ते ।	
यः सोमपा निचितो वज्रबाहुर्यो वज्रहस्तः स जनास इन्द्रः	१३

यः सुन्वन्तमवति यः पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।		
यस्य ब्रह्म वर्धनं यस्य सोमो यस्येदं राधः स जनासु इन्द्रः	१४	११३५
यः सुन्वते पचते दुध आ चिद् वाजं ददर्षि स किलासि सत्यः ।		
वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम	१५	

॥ ९९ ॥ (क्र० २।१३।१-१३) जगती, १३ त्रिष्टुप् ।

ऋतुर्जनित्री तस्या अपस्परि मक्षु जात आविशद् यासु वर्धते ।		
तदाहना अभवत् पिप्युषी पयोऽशोः प्रियूषं प्रथमं तदुक्थ्यम्	१	
सुधीमा यन्ति परि बिभ्रतीः पयो विश्वप्सन्त्याय प्र भरन्त भोजनम् ।		
समानो अध्वा प्रवतामनुष्यदे यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युकथ्यः	२	
अन्वेको वदति यद् ददाति तद् रूपा मिनन्तदपा एक ईयते ।		
विश्वा एकस्य विनुदस्तिक्षते यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युकथ्यः	३	
प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पुष्टं प्रभवन्तमायते ।		
असिन्वन् दंष्ट्रैः पितुरन्ति भोजनं यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युकथ्यः	४	११४०
अधाकृणोः पृथिवीं संहशे द्विवे यो धौतीनामहिहन्नारिणकू पथः ।		
तं त्वा स्तोमेभिर्दुदभिर्न वाजिनं देवं देवा अजनन्तसास्युकथ्यः	५	
यो भोजनं च दयसे च वर्धनं मार्द्रादा शुष्कं मधुमद् दुदोहिथ ।		
स शेवधिं नि दधिषे विवस्वति विश्वस्यैक ईशिषे सास्युकथ्यः	६	
यः पुष्पिणीश्च प्रस्वश्च धर्मणा ऽधि दाने व्यवनिरधारयः ।		
यश्चासमा अजनो द्विद्युतो द्विव उरुर्वीं अभितः सास्युकथ्यः	७	
यो नार्मरं सहवसुं निहन्तवे पृक्षाय च दासवेशाय चार्वहः ।		
ऊर्जर्यन्त्या अपरिविष्टमास्य मुतैवाद्य पुरुकृत् सास्युकथ्यः	८	
ज्ञातं वा यस्य दश साकमाद्य एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ ।		
अरज्जौ दस्युन्तसमुनब्धभीतये सुप्राव्यो अभवः सास्युकथ्यः	९	११४५
विश्वेदनु रोधना अस्य पौस्यं ददुरस्मै दधिरे कृत्तवे धनम् ।		
षष्ठस्तभ्रा विष्टिरः पञ्च संहशः परि परो अभवः सास्युकथ्यः	१०	
सुप्रवाचनं तव वीर वीर्यं यदेकेन क्रतुना विन्दसे वसु ।		
जातूष्ठीरस्य प्र वयः सहस्वतो या चकथ्य सेन्द्र विश्वासास्युकथ्यः	११	

अरमयः सरपसस्तराय कं तुर्वीतये च वय्याय च सुतिम् ।
नीचा सन्तमुदनयः परावृजं प्रान्धं श्रोणं श्रवयन्त्सास्युक्थयः १२
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १३

॥ ९३ ॥ (ऋ० २।१४।१-१२) त्रिष्टुप् ।

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोममामन्त्रेभिः सिञ्चता मद्यमन्धः ।
कामी हि वीरः सदर्भस्य पीतिं जुहोत वृष्णे तदिदेष वष्टि १ ११५०
अध्वर्यवो यो अपो वन्निवासं वृत्रं जघानाशन्येव वृक्षम् ।
तस्मा एतं भरत तद्वशाय एष इन्द्रो अर्हति पीतिमस्य २
अध्वर्यवो यो हभीकं जघान यो गा उदाजदप हि वलं वः ।
तस्मा एतमन्तरिक्षे न वातमिन्द्रं सोमैरोर्णुत जूर्न वस्त्रैः ३
अध्वर्यवो य उरणं जघान नवं चरुवासं नवतिं च बाहून् ।
यो अर्बुमुमव नीचा बबाधे तमिन्द्रं सोमस्य भूथे हिनोत ४
अध्वर्यवो यः स्वश्वं जघान यः शुष्णमशुषं यो व्यंसम् ।
यः पिप्पुं नमुचिं यो रुधिक्रां तस्मा इन्द्रायान्धसो जुहोत ५
अध्वर्यवो यः शतं शम्बरस्य पुरो बिभेदाश्मनेव पूर्वीः ।
यो वर्चिनः शतमिन्द्रः सहस्रमपावपद् भरता सोममस्मै ६ ११५५
अध्वर्यवो यः शतमा सहस्रं भूम्या उपस्थेऽवपजघन्वान् ।
कुत्सस्यायोरतिथिग्वस्य वीरान् न्यावृणग् भरता सोममस्मै ७
अध्वर्यवो यन्नरः कामयाध्वे श्रुष्टी वहन्तो नशथा तादिन्द्रे ।
गभस्तिपूतं भरत श्रुतायेन्द्राय सोमं यज्यवो जुहोत ८
अध्वर्यवः कर्तेना श्रुष्टिमस्मै वने निपूतं वन उन्नयध्वम् ।
जुषाणो हस्त्यमाभि वावशे व इन्द्राय सोमं मदिरं जुहोत ९
अध्वर्यवः पयसोध्वयथा गोः सोमैभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
वेदाहमस्य निमृतं म एतद् दित्सन्तं भूयो यजतश्चिकेत १०
अध्वर्यवो यो दिव्यस्य वस्वो यः पार्थिवस्य क्षम्यस्य राजा ।
तमूर्ध्वं न पृणता यवेनेन्द्रं सोमैभिस्तदपो वो अस्तु ११ ११६०
अस्मभ्यं तद् वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते वसव्यम् ।
इन्द्र यच्चित्रं श्रवस्या अनु द्यून् बृहद् वदेम विदथे सुवीराः १२

॥ ९४ ॥ (ऋ० २।१५।१-१०)

प्र घा न्वस्य महतो महानि सत्या सत्यस्य करणानि वोचम् ।	
त्रिकद्वुकेष्वपिबत् सुतस्याऽस्य मदे अहिमिन्द्रो जघान	१
अवंशे घामस्तभायद् बृहन्तमा रोदसी अपृणदुन्तरिक्षम् ।	
स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	२
सञ्ज्ञेव प्राचो वि मिमाय मानैर्वज्रेण खान्यतृणन्नदीनाम् ।	
वृथासृजत् पृथिभिर्दीर्घयाथैः सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	३
स प्रबोळ्हन् परिगत्या दुभीते विश्वमधागायुधमिन्द्रे अग्नौ ।	
सं गोभिरश्वैरसृजद् रथेभिः सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	४ ११६५
स ईं महीं धुनिमेतोररम्णात् सो अस्तातृनपारयत् स्वस्ति ।	
त उत्स्राय रयिमाभि प्र तस्थुः सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	५
सोदञ्चं सिन्धुमरिणान्महित्वा वज्रेणान उषसः सं पिपेय ।	
अजवसो जविनीभिर्विवृश्चन् त्सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	६
स विद्रां अपगोहं कनीनामाविर्भवन्नुदतिष्ठत् परावृक् ।	
प्रति श्रोणः स्थाद् व्यनगचष्ट सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	७
भिनद् बलमङ्गिरोभिर्गृणानो वि पर्वतस्य हंहितान्यैरत् ।	
रिणग्रोधांसि कूत्रिमाण्येषां सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	८
स्वप्नेनाभ्युष्या चुमुंरिं धुनिं च जघन्थ दस्युं प्र दुभीतिमावः	
रम्भी चिदत्र विविदे हिरण्यं सोमस्य ता मदु इन्द्रश्चकार	९ ११७०
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।	
शिक्षा स्तोतृभ्यो मार्ति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	१०

॥ ९५ ॥ (ऋ० २।१६।१-९) जगतीः ९ त्रिष्टुप् ।

प्र वः सुतां ज्येष्ठतमाय सुष्टुतिमुग्धाविव समिधाने हविर्भरे ।	
इन्द्रमजुयं जरयन्तमुक्षितं सनाद् युवानमवसे हवामहे	१
यस्मादिन्द्राद् बृहतः किं चनेमूते विश्वान्यस्मिन्संभूताधि वीर्या ।	
जठरे सोमं तन्वीः सहो महो हस्ते वज्रं भरति शीर्षणि क्रतुम्	२
न क्षोणीभ्यां परिभवे त इन्द्रियं न समुद्रैः पर्वतैरिन्द्र ते रथः ।	
न ते वज्रमन्वश्नोति कश्चन यदाशुभिः पतंसि योजना पुरु	३

विश्वे ह्यस्मै यजताय धृष्णवे क्रतुं भरन्ति वृषभाय सश्वते ।		
वृषा यजस्व हविषा विदुष्टरः पिबेन्द्र सोमं वृषभेण भानुना ।	४	११७५
वृष्णाः कोशः पवते मध्व ऊर्मिर्वृषभान्नाय वृषभाय पातवे ।		
वृषणाध्वर्यू वृषभासो अद्वयो वृषणं सोमं वृषभाय सुष्वति	५	
वृषा ते वज्र उत ते वृषा रथो वृषणा हरीं वृषभाण्यायुधा ।		
वृष्णो मदस्य वृषभ त्वमीशिष इन्द्र सोमस्य वृषभस्य तृष्णुहि	६	
प्र ते नावं न समने वचस्युवं ब्रह्मणा यामि सर्वनेषु दाधृषिः ।		
कुविन्नो अस्य वचसो निबोधिष दिन्द्रमुत्सं न वसुनः सिचामहे	७	
पुरा संबाधादृभ्या ववृत्स्व नो धेनुर्न वत्सं यवसस्य पिप्युषी ।		
सकृत्सु ते सुमतिभिः शतक्रतो सं पत्नीभिर्न वृषणो नसीमहि	८	
नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।		
शिक्षा स्तोतृभ्यो मार्ति धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	९	११८०

॥ ९६ ॥ (ऋ० २।१७।१-९) जगती; ८-९ त्रिष्टुप् ।

तदस्मै नव्यमङ्गिरस्वदर्वत शुष्मा यदस्य प्रत्नथोदीरते ।		
विश्वा यद् गोत्रा सहसा परीवृता मदे सोमस्य हंहितान्यैरयत्	१	
स भूतु यो ह प्रथमाय धार्यस ओजो मिमानो महिमान्मार्तिरत् ।		
शूरो यो युत्सु तन्वं परिव्यत शीर्षणि द्यां महिना प्रत्यमुञ्चत	२	
अर्धाकृणोः प्रथमं वीर्यं महद् यदस्याग्रे ब्रह्मणा शुष्ममैरयः ।		
रथेष्टेन हर्थश्वेन विच्युताः प्र जीरयः सिस्रते सध्यैक् पृथक्	३	
अधा यो विश्वा भुवनाभि मज्जने शानकृत् प्रवया अभ्यवर्धत ।		
आद् रोदसी ज्योतिषा वह्निरातनोत् सीव्यन् तमांसि दुर्धिता समव्ययत्	४	
स प्राचीनान् पर्वतान् हंहदोर्जसा ऽधराचीनमकृणोदुपामपः ।		
अधारयत् पृथिवीं विश्वधार्यस मस्तभ्रान्मायया द्यामवस्रसः	५	११८५
सास्मा अरं बाहुभ्यां यं पिताकृणोद् विश्वस्मादा जनुषो वेदसस्परि ।		
येना पृथिव्यां नि क्रिविं शयध्वै वज्रेण हत्व्यवृणक् तुविष्वणिः	६	
अमाजूरिव पित्रोः सचा सती समानादा सदसस्त्वामिये भगम् ।		
कृधि प्रकृतमुप मास्या भर दुद्धि भागं तन्वोऽ येन मामहः	७	

भोजं त्वामिन्द्र वयं हुवेम वृदिद्वमिन्द्रापांसि वाजान् ।
 अविर्द्वीन्द्र चित्रया न ऊती कृधि वृषन्निन्द्र वस्यसो नः
 नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
 शिक्षां स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः

॥ ९७ ॥ (ऋ० २।१८।१-९) त्रिष्टुप् ।

प्राता रथो नवो योजि सस्नि—श्चतुर्युगास्त्रिकशः सप्तर्श्मिः ।
 दशारित्रो मनुष्यः स्वर्षाः स इष्टिभिर्मतिभी रंहो भूत् १ ११९०
 सास्मा अरं प्रथमं स द्वितीयं—मुतो तृतीयं मनुष्यः स होता ।
 अन्यस्या गर्भमन्य ऊं जनन्त सो अन्येभिः सचते जेन्यो वृषा २
 हरी नु कं रथ इन्द्रस्य योज—मायै सूक्तेन वचसा नवेन ।
 मो षु त्वामत्र बृहवो हि विप्रा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ३
 आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र या—ह्या चतुर्भिरा षड्भिर्ह्यमानः ।
 आष्टाभिर्दुशभिः सोमपेयं—मयं सुतः सुमख मा मृधस्कः ४
 आ विंशत्या त्रिंशता याह्यर्वा—डा चत्वारिंशता हरिभिर्युजानः ।
 आ पञ्चाशता सुरथेभिर्निन्द्रा—ऽऽ षष्ठ्या सप्तत्या सोमपेयम् ५
 आशीत्या नवत्या याह्यर्वा—डा शतेन हरिभिरुह्यमानः ।
 अयं हि ते शुनहोत्रेषु सोम इन्द्र त्वाया परिषिक्तो मदाय ६ ११९५
 मम ब्रह्मेन्द्र याह्यच्छा विश्वा हरी धुरि धिष्वा रथस्य ।
 पुरुत्रा हि विहव्यो बभूथा—ऽस्मिन्नुत्तरं सर्वान् मादयस्व ७
 न म इन्द्रेण सुख्यं वि योष—दुस्मभ्यमस्य दक्षिणा दुहीत ।
 उप ज्येष्ठे वरुथे गर्भस्तौ प्रायेप्राये जिगीवांसः स्याम ८
 नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।
 शिक्षां स्तोतृभ्यो मातिं धग्भगो नो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ९

॥ ९८ ॥ (ऋ० २।१९।१-९)

अपाय्यस्यान्धसो मदाय मनीषिणः सुवानस्य प्रयसः ।
 यस्मिन्निन्द्रः प्रदिवि वावृधान ओको दुधे ब्रह्मण्यन्तश्च नरः १
 अस्य मन्वानो मध्वो वज्रहस्तो ऽहिमिन्द्रो अर्णोवृतं वि वृश्चत् ।
 प्र यद् वयो न स्वसराण्यच्छा प्रयांसि च नदीनां चकृमन्त २ ११००

स माहि॑न इन्द्रो॑ अ॒र्णो॑ अ॒पां॑ प्रैर॑यदहिहाच्छा॑ समुद्रम् ।	
अ॒र्जन॑यत् सूर्यं॑ वि॒दद् गा॑ अ॒क्तु॒नाह्वा॑ व॒युना॑नि साधत्	३
सो अ॒प्रती॑नि मन॒वे पु॒रूणी॑—न्द्रो॑ दाशद् दाशुषे॑ हन्ति॑ वृ॒त्रम् ।	
सद्यो॑ यो नृ॒भ्यो॑ अत॒साय्यो॑ भूत् प॑स्पृ॒धाने॒भ्यः सूर्य॑स्य सा॒तौ	४
स सु॒न्वत॑ इन्द्रः॑ सूर्य॒मा—ऽऽ दे॒वो रि॑ण॒ङ्मर्त्या॑य स्त॒वान् ।	
आ यद् र॒यिं गु॒हर्द॑वद्यमस्मै॑ भ॒रदं॑शं नै॒तशो॑ द॒शस्य॑न्	५
स र॑न्धयत् स॒दिवः॑ सा॒रथ्ये॑ शु॒ष्णम॑शुषं॒ कुर्य॑वं कु॒त्साय॑ ।	
दि॒वोदा॑साय नव॒तिं च॑ नवे॒न्द्रः पुरो॑ व्यैर॑च्छ॒म्बर॑स्य	६
ए॒वा त॑ इन्द्रो॑च॒थम॑हेम॒ श्रव॑स्या न त्मना॑ वाज॒यन्तः॑ ।	
अ॒श्याम॑ तत् सा॒प्तमा॑शुषाणा॒ न॒नमो॑ व॒धर॑दे॒वस्य॑ प्री॒योः	७
ए॒वा ते॑ गृ॒त्सम॑दाः शू॒र म॑न्मा—ऽव॒स्यवो॑ न व॒युना॑नि तक्षुः ।	
ब्र॒ह्मण्य॑न्त॒ इन्द्र॑ ते नवी॑य इष॒मूर्जं॑ सु॒क्षितिं॑ सु॒न्नम॑श्युः	८
नूनं॑ सा ते॒ प्रति॑ वरं॒ जरि॑त्रे दु॒हीय॑दिन्द्र दक्षि॒णा म॒घोनी॑ ।	
शि॒क्षा स्तो॒तृभ्यो॑ मा॒ति ध॑ग्भ॒र्गो नो॑ बृ॒हद् व॑देम वि॒दथे॑ सु॒वीराः॑	९

॥ ९९ ॥ (ऋ० २।२०।१-९) त्रिष्टुप्; ३ विराड्रूपा ।

वयं॑ ते वयं॑ इन्द्र॑ वि॒द्धि॒ षु णः॑ प्र॒ भर॑महे वाज॒युर्न॑ रथम् ।	
वि॒प॒न्यवो॑ दी॒ध्यतो॑ मनी॒षा सु॒न्नमि॑र्यक्षन्त॒स्त्वाव॑तो नृन्	१
त्वं न॑ इन्द्र॑ त्वाभि॒रूती॑ त्वा॒यतो॑ अ॒भिष्टि॑पासि॒ जनान्॑ ।	
त्वमि॒नो दा॑शुषो॑ वरू॒ते—त्वा॒धीर॑भि यो नक्ष॑ति त्वा	२
स नो॑ युवेन्द्रो॑ जो॒हूत्रः॑ सखा॑ शि॒वो न॒राम॑स्तु पा॒ता ।	
यः शंस॑न्तं यः शं॒शमा॑नमू॒ती प॑च॒न्तं च॑ स्तु॒वन्तं॑ च प्र॒णेष॑त्	३
तमु॑ स्तुष॑ इन्द्रं॑ तं गृ॒णीषे॑ यस्मि॑न् पुरा॑ वा॒वुधुः॑ शा॒शुदु॑श्च ।	
स व॒स्वः का॑मं पी॒पर॑दिया॒नो ब्र॒ह्मण्य॑तो नू॒तन॑स्यायोः	४
सो अ॒ङ्गिर॑सामु॒चथा॑ जुजु॒ष्वान् ब्र॒ह्मा तू॒तोदि॑न्द्रो॑ गा॒तुमि॑ष्णन् ।	
मु॒ष्णन्नु॑षसः॒ सूर्ये॑ण स्त॒वान—श्र॑स्य चिच्छि॒श्रथ॑त् पू॒र्याणि॑	५
स ह॑ श्रुत॑ इन्द्रो॑ नाम॑ दे॒व ऊ॒र्ध्वो भु॑व॒न्मनु॑षे द॒स्मर्त॑मः ।	
अव॑ प्रि॒यम॑र्श॒सान॑स्य सा॒ह्वा—ञि॒ष्ठरो॑ भ॒रद् दा॑सस्य॒ स्वधा॑वान्	६
स वृ॒त्रहे॑न्द्रः॒ कृष्ण॑योनीः॒ पुरं॑व॒रो दा॑सीरै॒रय॑द् वि ।	
अ॒र्जन॑यन् मन॒वे क्षा॑मप॒श्च स॒त्रा शंसं॑ यज॒मान॑स्य तू॒तोत्	७

तस्मै तवस्य मनु दायि सत्रेन्द्राय देवेभिरर्णसातौ ।

प्रति यदस्य वज्रं बाह्वोर्धु—हृत्वी दस्युन् पुर आर्यसीर्नि तारीत

८

१२१५

नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयदिन्द्र दक्षिणा मघोनी ।

शिक्षां स्तोतृभ्यो मार्ति धर्मभगो नो बृहद् वदेन विदथे सुवीराः

९

॥ १०० ॥ (ऋ० २।२१।१-६) जगती; ६ त्रिष्टुप् ।

विश्वजिते धनजिते स्वर्जिते सत्राजिते नृजिते उर्वराजिते ।

अश्वजिते गोजिते अजिते भरेन्द्राय सोमं यजताय हर्यतम्

१

अभिभुवेऽभिभङ्गाय वन्वते ऽषाळहाय सहमानाय वेधसे ।

तुविग्रये वह्नये दुष्टरीतवे सत्रासाहे नम इन्द्राय वोचत

२

सत्रासाहो जनभक्षो जनसह—श्च्यवनो युध्मो अनु जोषमुक्षितः ।

वृत्तंचयः सहुरिर्विद्वारित इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या

३

अनानुदो वृषभो दोधतो वधो गम्भीर ऋष्वो असमष्टकाव्यः ।

रध्रचोदः श्रथनो वीळितस्पृथु—रिन्द्रः सुयज्ञ उषसः स्वर्जनत्

४

१२२०

यज्ञेन गातुमप्तुरो विविद्रे धियो हिन्वाना उशिजो मनीषिणः ।

अभिस्वरा निषदा गा अवस्यव इन्द्रे हिन्वाना द्रविणान्याशत

५

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे ।

पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वादानं वाचः सुदिनत्वमहाम्

६

॥ १०१ ॥ (ऋ० २।२१।१-४) १ अष्टिः, २-३ अनिशकरी, ४ अष्टिः अतिशकरी वा ।

त्रिकटुकेषु महिषो यवांशिरं तुविशुष्म—स्तूपत् सोममपिबद् विष्णुना सुतं यथावशत् ।

स ई ममाद् महि कर्म कर्तवे महामुरुं सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः १

अध त्विषीमाँ अभ्योजसा क्रिवि युधाभव—दा रोदसी अपृणदस्य मज्मना प्र वावृधे ।

अधत्तान्यं जठरे प्रेमरिच्यत् सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः २

साकं जातः क्रतुना साकमोजसा ववक्षिथ साकं वृद्धो वीर्यैः सासहिर्मृधो विचर्षणिः ।

दाता राधः स्तुवते काम्यं वसु सैनं सश्वद् देवो देवं सत्यमिन्द्रं सत्य इन्दुः ३

१२२५

तव त्यन्नर्यं नृतोऽर्प इन्द्र प्रथमं पूर्यं द्विवि प्रवाच्यं कृतम् ।

यद् देवस्य शवसा प्रारिणा असुं रिणन्नपः ।

भुवद् विश्वमभ्यादेवमोजसा विदादूर्जं शतक्रतुर्विदादिषम्

४

॥ १०२ ॥ (ऋ० २।३०।१-५; ७-८; १०) [८ पूर्वाऽर्धर्चस्य सरस्वती] । त्रिष्टुप् ।

ऋतं देवाय कृण्वते सवित्र इन्द्रायाहिमे न रमन्त आपः ।

अहरहयात्यकुरपां कियत्या प्रथमः सर्ग आसाम्

१

यो वृत्राय सिनमत्राभरिष्यत् प्र तं जनित्री विदुष उवाच ।	
पथो रदन्तीरनु जोषमस्मै दिवेदिवे धुनयो यन्त्यर्थम्	२
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे ऽर्धा वृत्राय प्र वधं जभार ।	
मिहं वसान उप हीमदुद्रोत् तिग्मायुधो अजयच्छत्रुमिन्द्रः	३
बृहस्पते तपुषाश्वेव विध्य वृकद्वरसो असुरस्य वीरान् ।	
यथा जघन्थ धृषता पुरा चि—देवा जहि शत्रुमस्मार्कमिन्द्र	४
अव क्षिप दिवो अश्मानमुच्चा येन शत्रुं मन्दसानो निजूवीः ।	१२३०
तोकस्य सातौ तनयस्य भूरे—रस्माँ अर्धं कृणुतादिन्द्र गोनाम्	५
न मा तमन्न श्रमन्नोन तन्द्र—न्न वोचाम मा सुनोतेति सोमम् ।	
यो मे पुणाद् यो ददुद् यो निबोधाद् यो मा सुन्वन्तमुप गोभिरार्यत्	७
सरस्वति त्वमस्माँ अविद्धि मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून् ।	
त्यं चिच्छर्धन्तं तविषीयमाण—मिन्द्रो हन्ति वृषभं शण्डिकानाम्	८
अस्माकैभिः सत्वभिः शूर शूरै—वीर्यी कृधि यानि ते कर्त्वीनि ।	
ज्योगभूवन्ननुधूपितासो हत्वी तेषामा भरा नो वसूनि	१०

॥ १०३ ॥ (ऋ० २।४१।१०-१२) गायत्री ।

इन्द्रो अङ्ग महद् भय—मभी षट्प चुच्यवत् । स हि स्थिरो विचर्षणिः	१०	१२३५
इन्द्रश्च मूळयाति नो न नः पश्चाद्वधं नशत् । भद्रं भवाति नः पुरः	११	
इन्द्र आशाभ्यस्पृषि सर्वाभ्यो अभयं करत् । जेता शत्रून् विचर्षणिः	१२	१२३७

॥ १०४ ॥ (ऋ० ३।३०।१-२२) (१२३८-१४६६) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इच्छन्ति त्वा सोम्यासः सखायः सुन्वन्ति सोमं दधति प्रयांसि ।	
तितिक्षन्ते अभिशस्ति जनाना—मिन्द्र त्वदा कश्चन हि प्रक्रेतः	१
न ते दूरे परमा चिद् रजां—स्या तु प्र याहि हरिवो हरिभ्याम् ।	
स्थिराय वृष्णे सर्वना कृतेमा युक्ता ग्रावाणः समिधाने अग्रौ	२
इन्द्रः सुशिप्रो मघवा तरुत्रो महाव्रातस्तुविकूर्मिर्ऋधावान् ।	
यदुग्रो धा बाधितो मर्त्येषु कर्त्तुं त्या ते वृषभ वीर्याणि	३
त्वं हि प्मा च्यावयन्नच्युता—न्येको वृत्रा चरसि जिघ्रमानः ।	
तव द्यावापृथिवी पर्वतासो ऽनु व्रताय निमितेव तस्थुः	४
उताभये पुरुहूत श्रवोभि—रेको हृळ्मघदो वृत्रहा सन् ।	
इमे चिदिन्द्र रोदसी अपारे यत् संगुग्णा मघवन् काशिरित् ते	५

प्र सू त इन्द्र प्रवता हरिभ्यां प्र ते वज्रः प्रमृणन्नेतु शत्रून् । जहि प्रतीचो अनूचः पराचो विश्वं सत्यं कृणुहि विष्टमस्तु यस्मै धायुरदधा मर्त्यायाऽभक्तं चिद् भजते गेह्यं सः ।	६	
भद्रा त इन्द्र सुमतिर्धृताची सहस्रदाना पुरुहूत रातिः सहदानं पुरुहूत क्षियन्त महस्तमिन्द्र सं पिणक् कुणारुम् । अभि वृत्रं वर्धमानं पियारु मपादमिन्द्र तवसा जघन्थ नि सामनामिषिरामिन्द्र भूमिं महीमपारां सदाने ससत्थ ।	७	
अस्तभ्नाद् द्यां वृषभो अन्तरिक्ष मर्षन्त्वापस्त्वयेह प्रसूताः अलातुणो बल इन्द्र व्रजो गोः पुरा हन्तोर्भयमानो व्यार । सुगान् पथो अकृणोन्निरजे गाः प्रावन् वाणीः पुरुहूतं धमन्तीः एको द्वे वसुमती समीची इन्द्र आ पप्रौ पृथिवीमुत द्याम् ।	८	१२४५
उतान्तरिक्षादुभि नः समीक इषो रथीः सयुजः शूर वाजान् दिशः सूर्यो न मिनाति प्रदिष्टा द्विवेदिवे हर्यश्वप्रसूताः । सं यदानळध्वन आदिद्वै विमोचनं कृणुते तत् त्वस्य दिदक्षन्त उषसो यामन्नक्तो विवस्वत्या महि चित्रमनीकम् ।	९	
विश्वे जानन्ति महिना यदागा दिन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि महि ज्योतिर्निहितं वक्षणा स्वामा पक्वं चरति विभ्रती गौः । विश्वं स्वाद्य संभृतमुस्रियायां यत् सीमिन्द्रो अदधाद् भोजनाय इन्द्र दृष्टं यामकोशा अभूवन् यज्ञाय शिक्ष गृणते सखिभ्यः ।	१०	
दुर्मयवो दुरेवा मर्त्यासो निषङ्किणो रिपवो हन्त्वांसः सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रैर्जही न्येष्वशनिं तपिष्ठाम् । वृश्चेमधस्ताद् वि रुजा सहस्व जहि रक्षो मघवन् रन्धयस्व उद् बृह रक्षः सहमूलमिन्द्र वृश्वा मध्यं प्रत्यग्रं शृणीहि ।	११	
आ कीवतः सललूकं चकथ ब्रह्मद्विषे तपुषि हेतिमस्य स्वस्तये वाजिभिश्च प्रणेतः सं यन्महीरिष आसत्सि पूर्वीः । रायो वन्तारो बृहतः स्यामाऽस्मे अस्तु भग इन्द्र प्रजावान् आ नो भर भगमिन्द्र द्युमन्तं नि ते देष्णस्य धीमहि प्ररेके ।	१२	१२५०
ऊर्व इव पप्रथे कामो अस्मे तमा पूण वसुपते वसूनाम् इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च । स्वर्यवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन्	१३	
	१४	१२५५
	१५	
	१६	
	१७	
	१८	
	१९	
	२०	

आ नो गोत्रा दद्वहि गोपते गाः समस्मभ्यं सनयो यन्तु वाजाः ।
 द्विवक्षा असि वृषभ सत्यशुष्मो ऽस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः २१
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शुण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् २२ .

॥ १०५ ॥ (ऋ० ३।२१।१-२२) कुशिक ऐषीरथिः, गाथिनो विश्वामित्रो वा ।

शासद् वह्निर्दुहितुर्नृत्यं गाद् विद्रौ ऋतस्य दीधितिं सपर्यन् ।
 पिता यत्र दुहितुः सेकमृञ्चन् त्सं शग्म्येन मनसा दधन्वे १ १२६०
 न जामये तान्वो रिक्थमारैक् चकार गर्भं सनितुर्निधानम् ।
 यदी मातरो जनयन्त वह्निं मन्यः कर्ता सुकृतोरन्य ऋन्धन् २
 अग्निर्जज्ञे जुह्वाऽ रेजमानो महस्पुत्रां अरुषस्य प्रयक्षे ।
 महान् गर्भो मह्या जातमेषां मही प्रवृद्धर्यश्वस्य यज्ञैः ३
 अभि जैत्रीरसचन्त स्पृधानं महि ज्योतिस्तमसो निरंजानन् ।
 तं जानतीः प्रत्युदायन्नुषासः पतिर्गवामभवदेक इन्द्रः ४
 वीळौ सतीरभि धीरा अतृन्दन् प्राचाहिन्वन् मनसा सप्त विप्राः ।
 विश्वामविन्दन् पथ्यामृतस्य प्रजानन्निता नमसा विवेश ५
 विदद् यदी सरमा रुग्णमद्रेर्महि पार्थः पूर्व्यं सध्र्यक्कः ।
 अग्रं नयत् सुपद्यक्षराणां मच्छा खं प्रथमा जानती गात् ६ १२६५
 अगच्छद्दु विप्रतमः सखीयन्नसूदयत् सुकृते गर्भमद्रिः ।
 ससान् मर्यो युवभिर्मखस्यन्नथाभवदङ्गिराः सद्यो अर्चन् ७
 सुतःसतः प्रतिमानं पुरोभूविश्वा वेदु जनिमा हन्ति शुष्णम् ।
 प्र णो द्विवः पद्वीर्गव्युरर्चन् त्सखा सखीरमुञ्चन्निरवद्यात् ८
 नि गव्यता मनसा सेदुरकैः कृण्वानासो अमृतत्वार्यं गातुम् ९
 इदं चिन्तु सदनं भूर्येषां येन मासाँ असिषासन्नृतेन
 संपश्यमाना अमदन्नभि स्वं पयः प्रत्नस्य रेतसो दुधानाः ।
 वि रोदसी अतपद् घोषं एषां जाते निःष्ठासदधुर्गोषु वीरान् १०
 स जातेर्भिवृत्रहा सेदु हव्यैरुदुस्रिया असृजदिन्द्रो अकैः ।
 उरूच्यस्मै घृतवद् भरन्ती मधु स्वाद्यं दुदुहे जेन्या गौः ११ १२७०
 पित्रे चिच्चक्रुः सदनं समस्मै महि त्विषीमत् सुकृतो वि हि ख्यन् ।
 विष्कभ्रन्तः स्कम्भनेना जनित्री आसीना ऊर्ध्वं रभसं वि भिन्वन् १२

मही यदि धिषणां शिश्वे धात् सद्योवृधं विभ्वं रोदस्योः ।	
गिरो यस्मिन्ननवद्याः समीची-विश्वा इन्द्राय तविषीरनुत्ताः	१३
मह्या ते सख्यं वशिम् शक्ती-रा वृत्रघ्ने नियुतो यन्ति पूर्वीः ।	
महिं स्तोत्रमव आगन्म सुरे-रस्माकं सु मघवन् बोधि गोपाः	१४
महि क्षेत्रं पुरुश्चन्द्रं विविद्रा-नादित् सखिभ्यश्चरथं समैरत् ।	
इन्द्रो नृभिर्जनद दीद्यानः साकं सूर्यमुषसं गातुमग्निम्	१५
अपश्चिदेष विभ्वोऽर्धं दर्मनाः प्र सधीचीरसृजद् विश्वश्चन्द्राः ।	
मध्वः पुनानाः कुविभिः पवित्रै-र्द्युभिर्हिन्वत्यक्तुभिर्धनुञ्जीः	१६
अनु कृष्णे वसुधिते जिहाते उभे सूर्यस्य मंहना यजत्रे ।	
परि यत् ते महिमानं वृजध्वै सखाय इन्द्र काम्या ऋजिप्याः	१७
पतिर्भव वृत्रहन्सूनृतानां गिरां विश्वायुर्वृषभो वयोधाः ।	
आ नो गहि सख्येभिः शिवेभि-र्महान् महीभिर्रुतिभिः सरण्यन्	१८
तमङ्गिरस्वन्नमसा सपर्यन् नव्यं कृणोमि सन्यसे पुराजाम् ।	
द्रुहो वि याहि बहुला अदेवीः स्वश्च नो मघवन्सातये धाः	१९
मिहः पावकाः प्रतता अभूवन् त्वस्ति नः पिपृहि पारमासाम् ।	
इन्द्र त्वं रथिरः पाहि नो रिषो मक्ष्मक्ष्म कृणुहि गोजितो नः	२०
अदेदिष्ट वृत्रहा गोपतिर्गा अन्तः कृष्णो अरुषैर्धामभिर्गात ।	
प्र सूनृतां दिशमानं ऋतेन दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः	२१
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र-मस्मिन् भरे नृतमं वार्जसातौ ।	
शृण्वन्तमग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	२२

॥ १०६ ॥ (ऋ० ३।३२।१-१७)

इन्द्र सोमं सोमपते पिबेम माध्यंदिनं सर्वनं चारु यत् ते ।	
प्रपुथ्या शिप्रे मघवन्नृजीषिन् विमुच्या हरीं इह मादयस्व	१
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र शुक्रं पिबा सोमं ररिमा ते मदीय ।	
ब्रह्मकृता मारुतेना गुणेन सजोषा रुद्रैस्तृपदा वृषस्व	२
ये ते शुष्मं ये तविषीमवर्ध-न्नर्चन्त इन्द्र मरुतस्त ओजः ।	
माध्यंदिने सर्वने वज्रहस्त पिबा रुद्रेभिः सगणः सुशिप्र	३
त इन्वस्य मधुमद् विविप्र इन्द्रस्य शर्धो मरुतो य आसन् ।	
येभिर्वृत्रस्येषितो विवेदा-ऽमर्मणो मन्यमानस्य मर्म	४

मनुष्वदिन्द्र सर्वनं जुषाणः पिब सोमं शश्वते वीर्याय ।	
स आ ववृत्स्व हर्यश्व यज्ञैः सरण्युभिर्पो अर्णी सिसर्षि	५
त्वमपो यद्ध वृत्रं जघन्वाँ अर्त्याँ इव प्रासृजः सर्तवाजौ ।	
शयानमिन्द्र चरता वधेन वन्निवांसं परि देवीरदेवम्	६
यजाम इन्नमसा वृद्धमिन्द्रं बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।	
यस्य प्रिये ममर्तुर्यज्ञिर्यस्य न रोदसी महिमानं ममाते	७
इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि व्रतानि देवा न भिनन्ति विश्वे ।	
वाधार यः पृथिवीं द्यामुतेमां जजान सूर्यमुषसं सुदंसाः	८
अद्रोघ सत्यं तव तन्महित्वं सद्यो यज्जातो अपिबो हु सोमम् ।	
न द्याव इन्द्र तवसस्त ओजो नाहा न मासाः शरदो वरन्त	९
त्वं सद्यो अपिबो जात इन्द्र मदाय सोमं परमे व्योमन् ।	
यद्ध द्यावापृथिवी आविवेशी रथाभवः पूर्यः कारुधायाः	१०
अहन्नहिं परिशयानमर्णं ओजायमानं तुविजात तव्यान् ।	
न ते महित्वमनु भूदध द्यौ र्यदुन्यया स्फिग्याः क्षामवस्थाः	११
यज्ञो हि त इन्द्र वर्धनो भूदुत प्रियः सुतसोमो म्रियेधः ।	
यज्ञेन यज्ञमव यज्ञियः सन् यज्ञस्ते वज्रमहिहित्य आवत्	१२
यज्ञेनेन्द्रमवसा चक्रे अर्वा गैर्न सुम्नाय नव्यसे ववृत्याम् ।	
यः स्तोमैर्भिर्वावृधे पूर्योभि र्यो मध्यमेभिरुत नूतनेभिः	१३
विवेष यन्मा धिषणां जजान स्तवै पुरा पार्यादिन्द्रमहः ।	
अहंसो यत्र पीपरद् यथा नो नावेव यान्तमुभये हवन्ते	१४
आपूर्णा अस्य कलशः स्वाहा सेक्तेव कोशं सिसिचे पिबध्वे ।	
समु प्रिया आववृत्रन् मदाय प्रदक्षिणिदुभि सोमांस इन्द्रम्	१५
न त्वा गभीरः पुरुहूतः सिन्धु नार्द्रयः परि षन्तो वरन्त ।	
इत्था सखिभ्य इषितो यद्विन्द्राः ऽऽहृहं चिदरुजो गव्यमूर्वम्	१६
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
गृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१७

॥ १०७ ॥ (ऋ० ३।३३।६-७)

इन्द्रो अस्माँ अरदुद् वज्रबाहु रपाहन् वृत्रं परिधिं नदीनाम् ।
 देवोऽनयत् सविता सुपाणि स्तस्य वयं प्रसवे याम उर्वीः

६

प्रवाच्यं शश्वधा वीर्यं तदिन्द्रस्य कर्म यदहिं विवृश्वत् ।
वि वज्रेण परिषदो जघानाऽऽयन्नापोऽयनमिच्छमानाः

७

१३००

॥ १०८ ॥ (ऋ० ३।३४।१-११)

इन्द्रः पूभिर्दातिरिदं दासमर्के विददं वसुर्दयमानो वि शत्रून् ।
ब्रह्मजुतस्तन्वा वावृधानो भूरिदात्र आपृणद रोदसी उभे
मखस्य ते तविषस्य प्र जूतिमिर्यमि वाचममृताय भूषन् ।
इन्द्रं क्षितीनामसि मानुषीणां विशां दैवीनामुत पूर्वयावा
इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्धनीतिः प्र मायिनाममिनाद वर्षणीतिः ।
अहन् व्यसमुशधग्वनेष्वाविर्धना अकृणोद राम्याणाम्
इन्द्रः स्वर्षा जनयन्नहानि जिगायोशिग्भिः पृतना अभिष्टिः ।
प्रारोचयन्मनवे केतुमह्ना मविन्दुज्ज्योतिर्बृहते रणाय
इन्द्रस्तुजो बर्हणा आ विवेश नृवद दधानो नर्या पुरूणि ।
अचेतयद धिर्य इमा जरित्रे प्रेमं वर्णमतिरच्छुक्रमासाम्
महो महानि पनयन्त्यस्येन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरूणि ।
वृजनेन वृजिनान्सं पिपेष मायामिदस्यैरभिभूत्योजाः
युधेन्द्रो मह्ना वरिवश्चकार देवेभ्यः सत्पतिश्चर्षणिप्राः ।
विवस्वतः सद्ने अस्य तानि विप्रा उक्थेभिः कवयो गृणन्ति
सत्रासाहं वरेण्यं सहोदां ससवांसं स्वरपश्च देवीः ।
ससान यः पृथिवीं द्यामुतेमा मिन्द्रं मदन्त्यनु धीरणासः
ससानात्यौ उत सूर्यं ससानेन्द्रः ससान पुरुभोजसं गाम् ।
हिरण्ययमुत भोगं ससान हत्वी दुस्युन् प्रार्थं वर्णमावत्
इन्द्र ओषधीरसनोदहानि वनस्पतीरसनोदुन्तरिक्षम् ।
विभेदं वलं नुनुदे विवाचो ऽथाभवद् दमिताभिकृतूनाम्
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रं मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु ब्रन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

१

२

३

४

५

१३०५

६

७

८

९

१०

१३१०

११

॥ १०९ ॥ (ऋ० ३।३५।१-११)

तिष्ठा हरी रथ आ युज्यमाना याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।
पिबास्यन्धो अभिमृष्टो अस्मे इन्द्र स्वाहा ररिमा ते मदीय
उपाजिरा पुरुहूताय सप्ती हरी रथस्य धूर्वा युनज्मि ।
द्वद यथा संभृतं विश्वतश्चिदुपेमं यज्ञमा वहात इन्द्रम्

१

२

उपो नयस्व वृषणा तपुषो—तेमव त्वं वृषभ स्वधावः ।	
ग्रसेतामश्वा वि मुचेह शोणा द्विवेदिवे सहशीरन्धि धानाः ।	३
ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा युनजि हरी सखाया सधमाद आशू ।	
स्थिरं रथं सुखमिन्द्राधितिष्ठन् प्रजानन् विद्रां उप याहि सोमम्	४
मा ते हरी वृषणा वीतपृष्ठा नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।	
अत्यायाहि शश्वतो वयं ते ऽरं सुतेभिः कृणवाम सोमैः	५
तवायं सोमस्त्वमेह्यर्वाङ् शश्वत्तमं सुमना अस्य पाहि ।	
अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या दधिष्वेमं जठर इन्दुमिन्द्र	६
स्तीर्णं ते बर्हिः सुत इन्द्र सोमः कृता धाना अत्तवे ते हरिभ्याम् ।	
तदोक्ते पुरुशाकाय वृष्णे मरुत्वते तुभ्यं राता हवीषि	७
इमं नरः पर्वतास्तुभ्यमापः समिन्द्र गोभिर्मधुमन्तमक्रन् ।	
तस्यागत्या सुमना ऋष्व पाहि प्रजानन् विद्वान् पृथ्याङ् अनु स्वाः	८
याँ आर्मजो मरुत इन्द्र सोमे ये त्वामवर्धन्नभवन् गुणस्ते ।	
तेभिरेतं सजोषा वावशानोऽग्नेः पिब जिह्वया सोममिन्द्र	९
इन्द्र पिब स्वधया चित् सुतस्या—ऽग्नेर्वा पाहि जिह्वया यजत्र ।	
अध्वर्योर्वा प्रयतं शक्र हस्ता—द्वोर्तुर्वा यज्ञं हविषो जुषस्व	१०
शुनं हुवेम मधवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	११

॥ ११० ॥ (क्र० ३।३६।१-११) [१० घोर आङ्गिरसः ।]

इमाम् षु प्रभृतिं सातये धाः शश्वच्छश्वद्वृतिभिर्यादमानः ।	
सुतेसुते वावृधे वर्धनेभि—र्यः कर्मभिर्महद्भिः सुश्रुतो भूत्	१
इन्द्राय सोमाः प्रदिवो विद्वाना ऋभुर्येभिर्वृषपर्वा विहायाः ।	
प्रयम्यमानान् प्रति षू गृभाये—न्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्णः	२
पिबा वर्धस्व तव घा सुतास इन्द्र सोमासः प्रथमा उतेमे ।	
यथापिबः पूर्याँ इन्द्र सोमाँ एवा पाहि पन्यो अद्या नवीयान्	३
महाँ अर्मत्रो वृजने विरप्स्यु—ग्रं शवः पत्यते धूष्णवोजः ।	
नाहं विव्याच पृथिवी चनैनं यत् सोमासो हर्यश्वमर्मन्दन्	४
महाँ उग्रो वावृधे वीर्याय समाचक्रे वृषभः काव्येन ।	
इन्द्रो भगो वाज्रदा अस्य गावः प्र जायन्ते दक्षिणा अस्य पूर्वीः	५

प्र यत् सिन्धवः प्रसवं यथाय—ज्ञापः समुद्रं रथ्येव जग्मुः ।	
अतश्चिदिन्द्रः सर्वसो वरीयान् यवीं सोमः पूणति दुग्धो अंशुः	६
समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तः ।	
अंशुं दुहन्ति हस्तिनो भरित्रैर्मध्वः पुनन्ति धारया पवित्रैः	७
वृद्धा इव कुक्षयः सोमधानाः समीं विव्याच सर्वना पुरूणि ।	
अज्ञा यदिन्द्रः प्रथमा व्याशं वृत्रं जघन्वाँ अवृणीत सोमम्	८
आ तू भर माकिरितत् परि ष्ठाद् विद्वा हि त्वा वसुपतिं वसूनाम् ।	१३३०
इन्द्र यत् ते माहिर्न दन्नमस्त्यस्मभ्यं तद्धर्यश्च प्र यन्धि	९
अस्मे प्र यन्धि मघवन्नृजीषि—स्त्रिन्द्र रायो विश्ववारस्य भूरः ।	
अस्मे शतं शरदो जीवसे धा अस्मे वीराञ्छ्वेत इन्द्र शिप्रिन्	१०
शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तमुग्रमतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	११

॥ १११ ॥ (ऋ० ३।३७।१-११) गायत्री, ११ अनुष्टुप् ।

वात्रंहत्याय शर्वसे पृतनाषाह्याय च । इन्द्र त्वा वर्तयामसि	१	
अर्वाचीनं सु ते मन उत चक्षुः शतक्रतो । इन्द्रं कृण्वन्तु वाघतः	२	१३३५
नामानि ते शतक्रतो विश्वाभिर्गीर्भिरीमहे । इन्द्राभिमातिषाह्ये	३	
पुरुष्टुतस्य धामभिः शतेन महयामसि । इन्द्रस्य चर्षणीधृतः	४	
इन्द्रं वृत्राय हन्तवे पुरुहूतमुपं ब्रुवे । भरेषु वाजसातये	५	
वाजेषु सासहिर्भवं त्वामीमहे शतक्रतो । इन्द्रं वृत्राय हन्तवे	६	
द्युम्नेषु पृतनाज्ये पृतसूतुषु श्रवःसु च । इन्द्र साक्षवाभिमातिषु	७	१३४०
शुष्मिन्तमं न ऊतये द्युम्निनं पाहि जागृविम् । इन्द्र सोमं शतक्रतो	८	
इन्द्रियाणि शतक्रतो या ते जनेषु पञ्चसु । इन्द्र तानि त आ वृणे	९	
अगन्निन्द्र श्रवो बृहद् द्युम्नं दधिष्व दुष्टरम् । उत ते शुष्मं तिरामसि	१०	
अर्वावतो न आ ग—ह्यथो शक्र परावतः ।		
उ लोको यस्तं अद्रिष्व इन्द्रेह तत् आ गहि	११	

॥ ११२ ॥ (ऋ० ३।३८।१-१०)

[प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा; तावुभावपि वा गाथिनो विश्वामित्रो वा ।] त्रिष्टुप् ।

अभि तष्टेव दीधया मनीषा—मत्यो न वाजी सुधुरो जिहानः ।	
अभि प्रियाणि मर्मशत पराणि कुर्वीरिच्छामि संहशे सुमेधाः	१ * १३४५

इनोत पृच्छ जनिमा कवीनां मनोधृतः सुकृतस्तक्षत द्याम् ।	
इमा उ ते प्रण्योऽवर्धमाना मनोवाता अध नु धर्मेणि गमन्	२
नि धीमिदन्न गुह्या दधाना उत क्षत्राय रोदसी समञ्चन् ।	
सं मात्राभिर्ममिरे येमुरुर्वी अन्तर्मेही समृते धार्यसे धुः	३
आतिष्ठन्तं परि विश्वे अभूष—डिह्यो वसानश्चरति स्वरोचिः ।	
महत तद् वृष्णो असुरस्य नामा—ऽऽ विश्वरूपो अमृतानि तस्थौ	४
असूत पूर्वी वृषभो ज्याया—निमा अस्य शुरुधः सन्ति पूर्वीः ।	
दिवो नपाता विदथस्य धीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवो दधाथे	५
त्रीणि राजाना विदथे पुरुणि परि विश्वानि भूषथः सदांसि ।	
अपश्यमन्न मनसा जगन्वान् व्रते गन्धर्वी अपि वायुकेशान्	६
तदिन्वस्य वृषभस्य धेनो—रा नामभिर्ममिरे सक्म्यं गोः ।	१३५०
अन्यदन्यदसुर्यं वसाना नि मायिनो ममिरे रूपमस्मिन्	७
तदिन्वस्य सवितुर्नकिर्मे हिरण्ययीममतिं यामशिश्रित् ।	
आ सुष्ठुती रोदसी विश्वमिन्वे अपीव योषा जनिमानि ववे	८
युवं प्रतस्य साधथो महो यद् दैवी स्वस्तिः परि णः स्यातम् ।	
गोपाजिह्वस्य तस्थुषो विरूपा विश्वे पश्यन्ति मायिनः कृतानि	९
शुनं हुवेम मघवानिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।	
शृण्वन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१०

॥ ११३ ॥ (ऋ० ३।३९।१-९)

इन्द्रं मतिर्हुद् आ वच्यमाना ऽच्छा पतिं स्तोमं तष्टा जिगाति ।	
या जागृविर्विदथे शस्यमाने—न्द्र यत् ते जायते विन्द्रि तस्य	१
विदश्चिदा पूर्या जायमाना वि जागृविर्विदथे शस्यमाना ।	१३५५
भद्रा वज्राण्यर्जुना वसाना सेयमस्मे सनजा पित्र्या धीः	२
यमा चिदन्न यमसूरत जिह्वाया अग्रं पतदा ह्यस्थात् ।	
वपूषि जाता मिथुना संचेते तमोहना तपुषो बुध एता	३
नकिरेषां निन्विता मर्त्येषु ये अस्माकं पित्रो गोषु योधाः ।	
इन्द्र एषां हंहिता माहिनावा—नुद् गोत्राणि ससृजे कुंसनावान्	४
सखा ह यत्र सखिभिर्नवगै—रभिश्वा सत्वभिर्गी अनुगमन् ।	
सत्यं तदिन्द्रो वृशभिर्दशगैः सूर्यं विवेदु तर्मासि क्षियन्तम्	५

इन्द्रो मधु संभृतमुस्त्रियायां पद्वद् विवेद शफवन्नमे गोः ।
 गुहा हितं गुह्यं गूळहमप्सु हस्ते दधे दक्षिणे दक्षिणावान्
 ज्योतिर्वृणीत तमसो विज्ञान—द्वारे स्याम दुरितादुभीके ।
 इमा गिरः सोमपाः सोमवृद्ध जुषस्वेन्द्र पुरुतमस्य कारोः
 ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी अनु व्या—द्वारे स्याम दुरितस्य भूरः ।
 भूरिं चिद्धि तुजतो मर्त्यस्य सुपारासो वसवो बर्हणावत्
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शृण्वन्तमुग्रभूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

६

१३६०

७

८

९

॥ ११४ ॥ (ऋ० ३।४०।१-९) गायत्री ।

इन्द्र त्वा वृषभं वयं सुते सोमे हवामहे । स पाहि मध्वो अन्धसः
 इन्द्र क्रतुविदं सुतं सोमं हर्य पुरुषदुत । पिबा वृषस्व तातृपिम्
 इन्द्र प्र णो धितावानं यज्ञं विश्वेभिर्देवेभिः । तिर स्तवान विशपते
 इन्द्र सोमाः सुता इमे तव प्र यन्ति सत्पते । क्षयं चन्द्रास इन्द्रवः
 दुधिष्वा जठरे सुतं सोममिन्द्र वरेण्यम् । तव द्युक्षास इन्द्रवः
 गिर्विणः पाहि नः सुतं मधोर्धाराभिरज्यसे । इन्द्र त्वादातमिद यशः
 अभि द्युम्नानि वनिन इन्द्रं सचन्ते अक्षिता । पीत्वी सोमस्य वावृधे
 अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् । इमा जुषस्व नो गिरः
 यदन्तरा परावत—मर्वावतं च हूयसे । इन्द्रेह तत् आ गहि

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१३६५

१३७०

॥ ११५ ॥ (ऋ० ३।४१।१-९)

आ तू न इन्द्र मघा—ग्धुवानः सोमपीतये । हरिभ्यां याह्यद्विवः
 सत्तो होता न ऋत्विग्य—स्तिस्तिरे बर्हिर्गानुषक् । अयुञ्जन् प्रातरद्रयः
 इमा ब्रह्म ब्रह्मवाहः क्रियन्त आ बर्हिः सीद । वीहि शूर पुरोळाशम्
 रारन्धि सर्वनेषु ण एषु स्तोमेषु वृत्रहन् । उक्थेष्विन्द्र गिर्विणः
 मतयः सोमपासुरुं रिहन्ति शवस्रस्पतिम् । इन्द्रं वृत्सं न मातरः
 स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे । न स्तोतारं निदे करः
 वयमिन्द्र त्वायवो हविष्मन्तो जरामहे । उत त्वमस्मयुर्वसो
 मारे अस्मद् वि मुमुचो हरिप्रियावाङ् याहि । इन्द्र स्वधावो मत्स्वेह
 अर्वाञ्च त्वा सुखे रथे वहतामिन्द्र केशिना । घृतस्नू बर्हिर्गसदे

१

२

३

४

५

६

७

८

९

१३७५

१३८०

॥ ११६ ॥ (ऋ० ३।४२।१-९)

उप नः सुतमा गहि । सोममिन्द्र गवाशिरम् । हरिभ्यां यस्ते अस्मयुः १

तमिन्द्र मद्रुमा गहि बर्हिःष्ठां ग्रावाभिः सुतम् । कुविन्नवस्य तूष्णवः	२	
इन्द्रमिथा गिरो ममा—ऽच्छागुरिषिता इतः । आवृते सोमपीतये	३	
इन्द्रं सोमस्य पीतये स्तोमैरिह हवामहे । उक्थेभिः कुविदागमत्	४	१३८५
इन्द्र सोमाः सुता इमे तान् दधिष्व शतक्रतो । जठरे वाजिनीवसो	५	
विद्वा हि त्वा धनंजयं वाजेषु दधूषं कवे । अधा ते सुम्रमीमहे	६	
इममिन्द्र गवाशिरं यवाशिरं च नः पिब । आगत्या वृषभिः सुतम्	७	
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्थेऽ सोमं चोदामि पीतये । एष रारन्तु ते दृदि	८	
त्वां सुतस्य पीतये प्रत्नमिन्द्र हवामहे । कुशिकासो अवस्यवः	९	१३९०

॥ ११७ ॥ (ऋ० ३।४३।१-८) त्रिष्टुप् ।

आ याह्यर्वाङ्गुपं वन्धुरेष्ठा—स्तवेदनुं प्रदिवः सोमपेयम् ।		
प्रिया सखाया वि मुचोपं बर्हि—स्त्वामिमे हव्यवाहो हवन्ते	१	
आ याहि पूर्वीरति चर्षणीरां अर्य आशिष उपं नो हरिभ्याम् ।		
इमा हि त्वा मतयः स्तोमंतष्टा इन्द्र हवन्ते सख्यं जुषाणाः	२	
आ नो यज्ञं नमोवृधं सजोषा इन्द्र देव हरिभिर्याहि तूयम् ।		
अहं हि त्वा मतिभिर्जोहवीमि घृतप्रयाः सधमाद्रे मधूनाम्	३	
आ च त्वामेता वृषणा वहातो हरी सखाया सुधुरा स्वङ्गा ।		
धानावदिन्द्रः सर्वनं जुषाणः सखा सख्युः शृणवद् वन्दनानि	४	
कुविन्मा गोपां करसे जनस्य कुविद् राजानं मघवन्नृजीषिन् ।		
कुविन्म ऋषिं पपिवासं सुतस्य कुविन्मे वस्वो अमृतस्य शिक्षाः	५	१३९५
आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना अर्वागिन्द्र सधमादो वहन्तु ।		
प्र ये द्विता द्विव ऋञ्जन्त्याताः सुसंमृष्टासो वृषभस्य मूराः	६	
इन्द्र पिब वृषधूतस्य वृष्ण आ यं ते श्येन उंशते जभारं ।		
यस्य मदे च्यावयसि प्र कूष्ठी—र्यस्य मदे अप गोत्रा ववर्थं	७	
शूनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृणवन्तमुग्रमृतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	८	

॥ ११८ ॥ (ऋ० ३।४४।१-५) बृहती ।

अयं ते अस्तु हर्यतः सोम आ हरिभिः सुतः ।		
जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ ग—ह्या तिष्ठ हरितं रथम्	१	
हर्यन्नुषसमर्चयः सूर्य हर्यन्नरोचयः ।		
विद्वांश्चिकित्वान् हर्यश्व वर्धस इन्द्र विश्वा अमि श्रियः	२	१४००

द्यामिन्द्रो हरिं धायसं पृथिवीं हरिर्वर्षसम् ।	
अधारयद्भरितो भूरि भोजनं ययोरन्तर्हरिश्चरत्	३
जज्ञानो हरितो वृषा विश्वमा भाति रोचनम् ।	
हर्यश्चो हरितं धत्त आयुधमा वज्रं बाह्वोर्हरिम्	४
इन्द्रो हर्यन्तमर्जुनं वज्रं शुक्रैर्भीवृतम् ।	
अपावृणोद्भरिभिरद्विभिः सुतमुद् गा हरिभिराजत	५

॥ ११९ ॥ (ऋ० ३।४।१-५)

आ मन्द्रैरिन्द्र हरिभिर्—र्याहि मयूररोमाभिः ।	
मा त्वा के चिन्नि यमन्विं न पाशिनो ऽति धन्वेव ताँ इहि	१
वृत्रखादो बलं रुजः पुरां दुर्मो अपामजः ।	
स्थाता रथस्य हयोरभिस्वर इन्द्रो हृळ्हा चिदारुजः	२ १४०५
गम्भीराँ उदुधीरिव क्रतुं पुण्यसि गा इव ।	
प्र सुगोपा यवसं धेनवो यथा हृदं कुल्या इवाशत	३
आ नस्तुजं रायि भराँ—ऽशं न प्रतिजानते ।	
वृक्षं पक्वं फलमङ्गीव धूनुहीन्द्रं संपारणं वसु	४
स्वयुरिन्द्र स्वराळंसि स्मद्विष्टिः स्वयंशस्तरः ।	
स वावृधान ओजसा पुरुष्टुत भवाँ नः सुश्रवस्तमः	५

॥ १२० ॥ (ऋ० ३।४।१-५) त्रिष्टुप् ।

युध्मस्य ते वृषभस्य स्वराज उग्रस्य यूनः स्थविरस्य वृष्वेः ।	
अजूर्यतो वज्रिणो वीर्याङ्गीन्द्रं श्रुतस्य महतो महानि	१
महौ असि महिष वृष्ण्येभिर्धनस्पृहुग्र सहमानो अन्यान् ।	
एको विश्वस्य भुवनस्य राजा स योधया च क्षयया च जनान्	२ १४१०
प्र मात्राभी रिरिचे रोचमानः प्र देवेभिर्विश्वतो अप्रतीतः ।	
प्र मज्जना दिव इन्द्रः पृथिव्याः प्रोरोर्महो अन्तरिक्षादृजीषी	३
उरुं गभीरं जनुषाभ्युग्रं विश्वव्यचसमवतं मतीनाम् ।	
इन्द्रं सोमासः प्रदिवि सुतासः समुद्रं न स्रवत आ विशन्ति	४
यं सोममिन्द्र पृथिवीद्यावा गर्भं न माता बिभूतस्त्वाया ।	
तं ते हिन्वन्ति तमु ते मृजन्त्यध्वर्यवो वृषभ पातवा उ	५

॥ १२१ ॥ (ऋ० ३।४७।१-५)

मरुत्वाँ इन्द्र वृषभो रणांय पिब सोममनुष्वधं मदाय ।
 आ सिञ्चस्व जठरे मध्वं ऊर्मिं त्वं राजासि प्रदिवः सुतानाम् १
 सजोषा इन्द्र सर्गणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ।
 जहि शत्रूरप मृधो नुवस्वा—ऽथाभयं कृणुहि विश्वतो नः २ १४१५
 उत ऋतुभिर्ऋतुपाः पाहि सोम—मिन्द्र देवेभिः सखिभिः सुतं नः ।
 याँ आभजो मरुतो ये त्वा ऽन्वहन् वृत्रमदधुस्तुभ्यमोजः ३
 ये त्वाहिहत्ये मघवन्नवर्धन् ये शाम्बरे हरिवो ये गविष्टौ ।
 ये त्वा नूनमनुमदन्ति विप्राः पिबेन्द्र सोमं सर्गणो मरुद्भिः ४
 मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान—मकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।
 विश्वासाहमवसे नूतनायो—ग्रं सहोदामिह तं हुवेम ५

॥ १२२ ॥ (ऋ० ३।४८।१-५)

सद्यो ह जातो वृषभः कनीनः प्रभर्तुमावदन्धसः सुतस्य ।
 साधोः पिब प्रतिकामं यथा ते रसाशिरः प्रथमं सोम्यस्य १
 यज्जार्थथास्तदहरस्य कामे—ऽशोः पीयूषमपिबो गिरिष्ठाम् ।
 तं ते माता परि योषा जनित्री महः पितुर्दम आसिञ्चदग्रे २ १४२०
 उपस्थाय मातरमन्नमैदृ तिग्ममपश्यदुभि सोममूधः ।
 प्रयावयन्नचरद् गृत्सो अन्त्यान् महानि चक्रे पुरुधप्रतीकः ३
 उग्रस्तुराषाळभिभूत्योजा यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
 त्वष्टारमिन्द्रो जनुषाभिभूया—ऽऽमुष्या सोममपिबच्चमूषु ४
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ १२३ ॥ (ऋ० ३।४९।१-५)

शंसा महामिन्द्रं यस्मिन् विश्वा आ कृष्टयः सोमपाः काममव्यन् ।
 यं सुक्रतुं धिषणे विश्वतष्टं घनं वृत्राणां जनयन्त देवाः १
 यं नु नक्तिः पृतनासु स्वराजं द्विता तरति नृतमं हरिष्ठाम् ।
 इनतमः सत्वभिर्यो ह शूषैः पृथुजया अमिनादायुर्दस्योः २ १४२५
 सहावा पृत्सु तरणिर्नवी व्यानशी रोदसी मेहनावान् ।
 भगो न कारे हव्यो मतीनां पितेव चारुः सुहवो वयोधाः ३

धृता द्विवो रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वो रथो न वायुर्वसुभिर्नियुत्वान् ।
 क्षपां वस्ता जनिता सूर्यस्य विभक्ता भागं धिषणेव वाजम् ४
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ १२४ ॥ (ऋ० ३।५०।१-५)

इन्द्रः स्वाहा पिबतु यस्य सोमं आगत्या तुम्रो वृषभो मरुत्वान् ।
 ओरुव्यचाः पृणतामेभिरह्नै—रास्यं हविस्तन्वः काममृध्याः १
 आ ते सपर्यु जवसे युनजिम ययोरनु प्रदिवः श्रुष्टिमावः ।
 इह त्वा धेयुर्हरयः सुशिप्र पिबा त्वस्य सुष्ठुतस्य चारोः २ १४३०
 गोभिर्मिमिक्षुं दधिरे सुपार—मिन्द्रं ज्यैष्ठ्याय धार्यसे गृणानाः ।
 मन्द्वानः सोमं पपिवां क्रजीषिन् त्समस्मभ्यं पुरुधा गा इषण्य ३
 इमं कामं मन्द्या गोभिरश्वै—श्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च ।
 स्वयवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो अक्रन् ४
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।
 शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम् ५

॥ १२५ ॥ (ऋ० ३।५१।१-१२) त्रिष्टुप्, १-३ जगती, १०-१२ गायत्री ।

चर्षणीधृतं मघवानमुक्थ्य—मिन्द्रं गिरो बृहतीरभ्यनूषत ।
 वावृधानं पुरुहूतं सुवृक्तिभि—रमर्त्यं जरमाणं द्विवेदिवे १
 शतक्रतुमर्णवं शाकिनं नरं गिरो म इन्द्रमुप यन्ति विश्वतः ।
 वाजसनिं पुभिर्द्वं तूष्णिमपुत्रं धामसाचमभिषाचं स्वविदम् २ १४३५
 आकरे वसोजरिता पनस्यते ऽनेहसः स्तुभ इन्द्रो दुवस्यति ।
 विवस्वतः सदन आ हि पिप्रिये सत्रासाहमाभिमातिहनं स्तुहि ३
 नृणामु त्वा नृतमं गीभिर्कथै—रभि प्र वीरमर्चता सुबाधः ।
 सं सहसे पुरुमायो जिहीते नमो अस्य प्रदिव एक ईशे ४
 पूर्वीरस्य निष्पिधो मर्त्येषु पुरु वसूनि पृथिवी विभर्ति ।
 इन्द्राय द्याव ओषधीरुतापो रयि रक्षन्ति जीरयो वनानि ५
 तुभ्यं ब्रह्माणि गिर इन्द्र तुभ्यं सत्रा दधिरे हरिवो जुषस्व ।
 बोध्याइपिरवसो नूतनस्य सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः ६
 इन्द्र मरुत्व इह पाहि सोमं यथा शार्याते अपिबः सुतस्य ।
 तव प्रणीती तव शूर शर्म—न्ना विवासान्ति कवयः सुयज्ञाः ७ १४४०

स वावशान इह पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः सुतं नः ।
जातं यत् त्वा परि देवा अभूषन् महे भराय पुरुहूत विश्वे ८
अप्तूर्ये मरुत आपिरेषो ऽमन्दुन्निन्द्रमनु दार्तिवाराः ।
तेभिः साकं पिबतु वृत्रखादः सुतं सोमं दाशुषः स्वे सधस्थे ९
इदं ह्यन्वोजसा सुतं राधानां पते । पिब त्वस्य गिर्वणः १०
यस्ते अनु स्वधामसत् सुते नि यच्छ तन्वम् । स त्वा ममत्तु सोम्यम् ११
प्र ते अश्रोतु कुक्षयोः प्रेन्द्र ब्रह्मणा शिरः । प्र बाहू शूर राधसे १२ १४४५

॥ १२६ ॥ (ऋ० ३।५२।१-८) त्रिष्टुप्, १-४ गायत्री, ६ जगती ।

धानावन्तं करम्भिणामपुपर्वन्तमुक्थिनम् । इन्द्रं प्रातर्जुषस्व नः १
पुरोळाशं पचत्यं जुषस्वेन्द्रा गुरस्व च । तुभ्यं हव्यानि सिस्रते २
पुरोळाशं च नो घसौ जोषयसि गिरश्च नः । बधूयुरिव योषणाम् ३
पुरोळाशं सनश्नुत प्रातःसावे जुषस्व नः । इन्द्र क्रतुर्हि ते बृहन् ४
माध्यंदिनस्य सर्वनस्य धानाः पुरोळाशमिन्द्र कृष्वेह चारुम् ।
प्र यत् स्तोता जरिता तूर्यर्थो वृषायमाण उर्प गीर्भिरीड्वे ५ १४५०
तृतीयं धानाः सर्वने पुरुष्टुत पुरोळाशमाहुतं मामहस्व नः ।
ऋभुमन्तं वाजवन्तं त्वा कवे प्रयस्वन्त उर्प शिक्षेम धीतिभिः ६
पूषण्वते ते चक्रमा करम्भं हरिवते हर्यश्वाय धानाः ।
अपूपमद्भिः सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान् ७
प्रति धाना भरत तूर्यमस्मै पुरोळाशं वीरतमाय नूणाम् ।
दिवेदिवे सदृशीरिन्द्र तुभ्यं वर्धन्तु त्वा सोमपेयाय धृष्णो ८

॥ १२७ ॥ (ऋ० ३।५३।२-१४) त्रिष्टुप्, १० जगती, १२ अनुष्टुप्, १३ गायत्री ।

तिष्ठा सु कै मघवन् मा परा गाः सोमस्य नु त्वा सुषुतस्य यक्षि ।
पितुर्न पुत्रः सिचमा रमे त इन्द्र स्वादिष्ठया गिरा शचीवः २
शंसावाध्वर्यो प्रति मे गृणीहीन्द्राय वाहः कृणवाव जुष्टम् ।
एवं बर्हिर्यजमानस्य सीदा ऽथा च भूदुक्थमिन्द्राय शस्तम् ३ १४५५
जायेदस्तं मघवन्सेदु योनिस्तदित् त्वा युक्ता हरयो वहन्तु ।
यदा कदा च सुनवाम् सोममग्निष्ठा दूतो धन्वात्यच्छ ४
परा याहि मघवन्ना च याहीन्द्र भ्रातरुभयत्रा ते अर्थम् ।
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो रासभस्य ५

अपाः सोममस्तमिन्द्र प्र याहि कल्याणीर्जाया सुरणं गृहे ते ।	
यत्रा रथस्य बृहतो निधानं विमोचनं वाजिनो दक्षिणावत्	६
इमे भोजा अङ्गिरसो विरूपा दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।	
विश्वामित्राय ददतो मघानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः	७
रूपंरूपं मघवा बोभवीति मायाः कृण्वानस्तन्वं परि स्वाम् ।	
त्रिर्यद् दिवः परि मुहूर्तमागात् स्वैर्मन्त्रैरनुतुपा क्रतावा	८ १४६०
मुहूर्तं ऋषिर्देवजा देवजुतो ऽस्तभ्नात् सिन्धुमर्णवं नृचक्षाः ।	
विश्वामित्रो यदवहत् सुदासमप्रियायत् कुशिकेमिरिन्द्रः	९
हंसा इव कृणुथ श्लोकमद्रिभिर्मदन्तो गीर्भिरध्वरे सुते सचा ।	
देवेभिर्विप्रा ऋषयो नृचक्षसो वि पिबध्वं कुशिकाः सोम्यं मधु	१०
उप प्रेतं कुशिकाश्चेतयध्वमश्वं राये प्र मुञ्चता सुदासः ।	
राजा वृत्रं जङ्घनत् प्रागपागुदुग्धा यजाते वर आ पृथिव्याः	११
य इमे रोदसी उभे अहमिन्द्रमनुष्टवम् ।	
विश्वामित्रस्य रक्षति ब्रह्मेदं भारतं जनम्	१२
विश्वामित्रा अरासत् ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे । करदिन्नः सुरार्धसः	१३ १४६५
किं ते कृण्वन्ति कीर्कटेषु गावो नाशिरं दुहे न तपन्ति घर्मम् ।	
आ नो भर प्रमगन्दस्य वेदो नैचाशाखं मघवन् रन्धया नः	१४ १४६६

॥ १२८ ॥ (ऋ० ४।१६।१-२१) (१४६७-१४६६) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

आ सत्यो यातु मघवाँ ऋजीषी द्रवन्त्वस्य हरय उप नः ।	
तस्मा इदन्धः सुषुमा सुदक्षमिहाभिपित्वं कर्ते गृणानः	१
अव स्य शूराध्वनो नान्ते ऽस्मिन् नो अद्य सवने मन्दध्वै ।	
शंसात्युक्थमुशनेव वेधाश्चिकितुषे असुर्याय मन्म	२
कविर्न निण्यं विदथानि साधन् वृषा यत् सेकं विपिपानो अर्चीत् ।	
दिव इत्था जीजनत् सप्त कारू नह्ना चिच्चकुर्वयुना गृणन्तः	३
स्वय्यद् वेदिं सुहृशीकमर्कैर्महि ज्योतीं रुरुचुर्यद् वस्तोः ।	
अन्धा तमांसि दुधिता विचक्षे नृभ्यश्चकार नृतमो अभिष्टौ	४ १४७०
वचक्ष इन्द्रो अमितमृजीष्युभे आ पशौ रोदसी महित्वा ।	
अतश्चिदस्य महिमा वि रेच्यमि यो विश्वा भुवना बभूव	५

विश्वानि शक्रो नयीणि विद्वा—नपो रिरिच सखिभिर्निकामैः ।	
अश्मानं चिद् ये बिभिदुर्वचोभि—व्रजं गोमन्तमुशिजो वि वब्रुः	६
अपो वृत्रं वत्रिवांसं पराहन् प्रावत् ते वज्रं पृथिवी सचेताः ।	
प्राणींसि समुद्रियाण्यैनोः पतिर्भवच्छवसा शूर धृष्णो	७
अपो यदद्रिं पुरुहूत ददं—राविर्भुवत् सरमा पूर्वं ते ।	
स नो नेता वाजमा दर्षि भूरि गोत्रा रुजन्नङ्गिरोभिर्गृणानः	८
अच्छा कविं नृमणो गा अभिष्टौ स्वर्षाता मधवन्नाधमानम् ।	
ऊतिभिस्तमिषणो द्युमहूतौ नि मायावानब्रह्मा दस्युरर्त	९ १४७५
आ दस्युघ्ना मनसा याह्यस्तं भुवत् ते कुत्सः सख्ये निकामः ।	
स्वे योनौ नि षदत् सखपा वि वां चिकित्सहतचिद्ध नारी	१०
यासि कुत्सेन स्रथमवस्यु—स्तोदो वातस्य हर्योरीशानः ।	
ऋज्रा वाजं न गध्यं युयूषन् कविर्यदहन् पार्याय भूषात्	११
कुत्साय शुष्णमशुषं नि बर्हीः प्रपित्वे अह्नः कुर्यवं सहस्रा ।	
सद्यो दस्यून् प्र मृण कुत्स्येन प्र सूररुचक्रं वृहतादुभीके	१२
त्वं पिपुं मृगयं शूशुवांसं—मृजिष्वने वैदधिनाय रन्धीः ।	
पञ्चाशत् कृष्णा नि वपः सहस्रा ऽत्कं न पुरो जरिमा वि ददः	१३
सूर उपाके तन्वं१ दधानो वि यत् ते चेत्यमृतस्य वर्षः ।	
मृगो न हस्ती तविषीमुषाणः सिंहो न भीम आयुधानि बिभ्रत्	१४ १४८०
इन्द्रं कामा वसूयन्तो अगमन् त्वर्मीळहे न सर्वने चक्रानाः ।	
श्रवस्यवः शशमानास उक्थै—रोको न रणवा सुदृशीव पुष्टिः	१५
तमिद् व इन्द्रं सुहवं हुवेम यस्ता चकार नयीं पुरूणि ।	
यो मावते जरित्रे गध्यं चि—न्मक्षू वाजं भरति स्पर्हराधाः	१६
तिग्मा यदुन्तरशनिः पताति कस्मिंश्चिच्छूर मुहुके जनानाम् ।	
घोरा यदर्यं समृतिर्भवा—त्यधं स्मा नस्तन्वो बोधि गोपाः	१७
भुवोऽविता वामदेवस्य धीनां भुवः सखावृको वाजसातौ ।	
त्वामनु प्रमतिमा जगन्मो—रुशंसो जरित्रे विश्वधं स्याः	१८
एभिर्नृभिरिन्द्र त्वायुभिर्द्धा मघवन्निर्मघवन् विश्वं आजौ ।	
द्यावो न द्युमैरभि सन्तो अर्यः क्षपो मदेम शरदश्च पूर्वीः	१९ १४८५

एवेदिन्द्राय वृषभाय वृष्णे ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।	
नू चिद् यथा नः सख्या वियोष—दसन्न उग्रोऽविता तनूपाः	२०
नू ष्टुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	२१

॥ १२९ ॥ (ऋ० ४।१७।१-२१) त्रिष्टुप्, १५ एकपदा विराट् ।

त्वं महाँ इन्द्र तुभ्यं ह क्षा अनु क्षत्रं मंहना मन्यत द्यौः ।	
त्वं वृत्रं शर्वसा जघन्वान् तसृजः सिन्धूरहिना जग्रसानान्	१
तव त्विषो जनिमन् रेजत द्यौ रेजद् भूमिर्भियसा स्वस्य मन्योः ।	
ऋधायन्त सुभ्वः पर्वतास् आर्दुन् धन्वानि सरयन्त आपः	२
भिनद् गिरिं शर्वसा वज्रमिष्णन्नाविष्कृण्वानः सहसान ओजः ।	
वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः सरन्नापो जर्वसा हतवृष्णीः	३ १४९०
सुवीरस्ते जनिता मन्यत द्यौ—रिन्द्रस्य कर्ता स्वर्पस्तमो भूत् ।	
य ईं जजान स्वयं सुवज्र—मनपच्युतं सदर्सो न भूमं	४
य एक इच्छयावयति प्र भूमा राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः	
सत्यमेनमनु विश्वे मदन्ति रातिं देवस्य गृणतो मघोनः	५
सत्रा सोमा अभवन्नस्य विश्वे सत्रा मर्दासो बृहतो मर्दिष्ठाः	
सत्राभवो वसुपतिर्वसूनां दत्ते विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः	६
त्वमर्धं प्रथमं जायमानो ऽमे विश्वा अधिथा इन्द्र कृष्टीः ।	
त्वं प्रतिं प्रवत आशयान्—महिं वज्रेण मघवन् वि वृश्चः	७
सत्राहणं दाधृषिं तुम्रमिन्द्रं महामपारं वृषभं सुवज्रम् ।	
हन्ता यो वृत्रं सनितो न वाजं दाता मघानि मघवा सुराधाः	८ १४९५
अयं वृत्श्चातयते समीची—र्य आजिषु मघवा शृण्व एकः ।	
अयं वाजं भरति यं सनोत्य—स्य प्रियासः सख्ये स्याम	९
अयं शृण्वे अध जयन्नुत ब्र—ह्मयमुत प्र कृणुते युधा गाः ।	
यदा सत्यं कृणुते मन्युमिन्द्रो विश्वं दृळ्हं भयत एजदस्मात्	१०
समिन्द्रो गा अजयत् सं हिरण्या समश्विया मघवा यो ह पूर्वाः ।	
एभिर्नृभिर्नृतमो अस्य शकै रायो विभक्ता संभरश्च वस्वः	११
कियत् स्वदिन्द्रो अध्येति मातुः कियत् पितुर्जनितुर्यो जजान ।	
यो अस्य शुभं मुहुकैरियति वातो न जूतः स्तनयन्दिर्भैः	१२

क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं कृणोती—यति रेणुं मघवा समोहम् ।		
विभञ्जनुरशनिमाँ इव द्यौ—रुत स्तोतारं मघवा वसौ धात्	१३	१५००
अयं चक्रमिषणत् सूर्यस्य न्येतशं रीरमत ससृमाणम् ।		
आ कृष्ण ई जुहुराणो जिघर्ति त्वचो बुधे रजसो अस्य योनौ	१४	
असिक्न्यां यजमानो न होता	१५	
गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।		
जनीयन्तो जनिदामक्षितोति—मा च्यावयामोऽवते न कोशम्	१६	
त्राता नो बोधि ददृशान आपि—रभिख्याता मर्दिता सोम्यानाम् ।		
सखा पिता पितृतमः पितृणां कर्तेमु लोकमुशते वयोधाः	१७	
सखीयतामविता बोधि सखा गृणान इन्द्र स्तुवते वयो धाः ।		
वयं ह्या ते चकूमा सबाध आभिः शमीभिर्महयन्त इन्द्र	१८	१५०५
स्तुत इन्द्रो मघवा यद्ध वृत्रा भूरीण्येको अप्रतीनि हन्ति ।		
अस्य प्रियो जरिता यस्य शर्म—न्नकिर्देवा वारयन्ते न मर्तीः	१९	
एवा न इन्द्रो मघवा विरप्शी करत् सत्या चर्षणीधृदनुर्वा ।		
त्वं राजा जनुषां धेह्यस्मे आधि श्रवो माहिनें यज्ररित्रे	२०	
नू षुत इन्द्र नू गृणान इधं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।		
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	२१	

॥ १३० ॥ (ऋ० ४।१८।१-१३)

[१३ वामदेवो गौतमः, १ इन्द्रः, ४ (उत्तरार्धर्चस्य), ५-७ अदितिः] ।

[१, ४ उत्तरार्धस्य, ५, ६, ७ वामदेवः, २, ३, ४ पूर्वार्धस्य, ८-१३ इन्द्रः ।] त्रिष्टुप् ।

अयं पन्था अनुवित्तः पुराणो यतो देवा उदजायन्त विश्वे ।		
अतश्चिदा जनिषीष्ट प्रवृद्धो मा मातरममुया पत्तवे कः	१	
नाहमतो निरया दुर्गहितत् तिरश्चता पार्श्वाग्निर्गमाणि ।		
बहूनि मे अकृता कर्त्वीनि युधयै त्वेन सं त्वेन पृच्छे	२	१५१०
परायतीं मातरमन्वचष्ट न नानु गान्यनु नू गर्मानि ।		
त्वष्टुर्गृहे अपिबत् सोममिन्द्रः शतधन्यं चम्बोः सुतस्य	३	
किं स ऋधक् कृणवद् यं सहस्रं मासो जभार शरदश्च पूर्वीः ।		
नही न्वस्य प्रतिमानम्—स्त्यन्तर्जातेषूत ये जनित्वाः	४	

अवद्यमिव मन्यमाना गुहाक—रिन्द्रं माता वीर्येणा न्यूष्टम् । अथोदस्थात् स्वयमत्कं वसान आ रोदसी अपृणाज्जायमानः एता अर्षन्त्यललाभवन्ती—ऋतावरीरिव संक्रोशमानाः ।	५
एता वि पृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति किमुं विदस्मै निविदो भनन्ते—न्द्रस्यावद्यं दिधिषन्त आपः ।	६
ममैतान् पुत्रो महता वधेन वृत्रं जघन्वाँ असृजद् वि सिन्धून् ममच्चन त्वा युवतिः परास ममच्चन त्वा कुषवा जगारं ।	७ १५१५
ममच्चिदापः शिशवि ममृडयु—ममच्चिदिन्द्रः सहसोदतिष्ठत् ममच्चन ते मघवन् व्यंसो निविविध्वाँ अप हनू जघान ।	८
अधा निर्विन्द्र उत्तरो बभूवा—डिछरो दासस्य सं पिणग्वधेन गृष्टिः संसूव स्थविरं तवागा—मनाधूष्यं वृषभं तुभ्रमिन्द्रम् ।	९
अरीकहं वृत्सं चरथाय माता स्वयं गातुं तन्वं इच्छमानम् उत माता महिषमन्वेन—दुमी त्वा जहति पुत्र देवाः ।	१०
अथाब्रवीद् वृत्रमिन्द्रो हनिष्यन् त्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व कस्ते मातरं विधवामचक्र—च्छयुं कस्त्वामजिघांसञ्चरन्तम् ।	११
कस्ते देवो अर्थि मारुतिं आसीद् यत् प्राक्षिणाः पितरं पादुगृह्य अवर्त्या शुन आन्त्राणि पेचे न देवेषु विविदे मर्दितारम् ।	१२ १५२०
अपश्यं जायाममहीयमाना—मधा मे श्येनो मध्वा जभार	१३

॥ १३१ ॥ (ऋ० ४।१९।१-११)

एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र विश्वे देवासः सुहवास ऊमाः । महामुभे रोदसी वृद्धमृष्वं निरेकमिद् वृणते वृत्रहत्ये अवासृजन्तु जिवयो न देवा भुवः सम्राळिन्द्र सत्ययोनिः ।	१
अहन्नाहिं परिशयानमर्णः प्र वर्तनीररदो विश्वधेनाः अतृण्णुवन्तं वियतमबुध्य—मबुध्यमानं सुषुपाणामिन्द्र ।	२
सप्त प्रति प्रवत आशयान—महिं वज्रेण वि रिणा अपर्वन् अक्षोदयच्छवसा क्षाम बुधं वार्ण वातस्तविषीभिरिन्द्रः ।	३
हृळ्हान्यौभ्रादुशमान ओजो ऽवामिनत् ककुभः पर्वतानाम् अभि प्र ददुर्जनयो न गर्भं रथा इव प्र ययुः साकमद्रयः ।	४ १५२५
अतर्पयो विसृत उज्ज ऊर्मीन् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्	५

त्वं महीमवर्निं विश्वधेनां तुर्वीतये वय्याय क्षरन्तीम् ।
 अरमयो नमसैजदर्णः सुतरणां अकृणोरिन्द्र सिन्धून्
 प्रागुवो नभन्वोऽं न वक्रा ध्वसा अपिन्वद् युवतीर्कृतज्ञाः ।
 धन्वान्यज्रां अपृणक् तृषाणां अधोगिन्द्रः स्तर्योऽं दंसुपत्नीः
 पूर्वीरुषसः शरदश्च गूर्ता वृत्रं जघन्वां असृजद् वि सिन्धून् ।
 परिष्ठिता अतृणद् बद्धधानाः सीरा इन्द्रः स्रवितवे पृथिव्या
 वृषीभिः पुत्रमगुवो अदानं निवेशनाद्धरिव आ जमर्थ ।
 व्यन्धो अख्यदहिमाददानो निर्भूदुखच्छित् समरन्त पर्व
 प्र ते पूर्वाणि करणानि विपा—ऽविद्रां आह विदुषे करांसि ।
 यथायथा वृष्ण्यानि स्वगूर्ता ऽपांसि राजन् नर्याविवेपीः
 नू षुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।
 अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः

६

७

८

९

१५३०

१०

११

॥ १३२ ॥ (ऋ० ४।२०।१-११)

आ न इन्द्रो दूरादा न आसा—दभिष्टिकृदवसे यासदुग्रः ।
 ओजिष्ठेभिर्नृपतिर्वज्रबाहुः संगे समत्सु तुर्वणिः पृतन्यून
 आ न इन्द्रो हरिभिर्यात्वच्छा—ऽर्वाचीनोऽवसे राधसे च ।
 तिष्ठाति वज्री मघवा विरप्शी—मं यज्ञमनु नो वाजसातौ
 इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र पुरो दधत् सनिष्यसि क्रतुं नः ।
 श्वघ्नीव वज्रिन्त्सुनये धनानां त्वया वयमयं आजिं जयेम
 उशन्तु षु णः सुमना उपाके सोमस्य तु सुषुतस्य स्वधावः ।
 पा इन्द्र प्रतिभृतस्य मध्वः समन्धसा ममदः पृष्ठ्येन
 वि यो ररप्श ऋषिभिर्नर्वेभि—वृक्षो न पक्वः सृण्यो न जेता ।
 मर्यो न योषामभि मन्यमानो ऽच्छा विवक्मि पुरुहूतमिन्द्रम्
 गिरिर्न यः स्वतवां ऋष्व इन्द्रः सनादेव सहसे जात उग्रः ।
 आदत्ता वज्रं स्थाविरं न भीम उद्रेव कोशं वसुना न्यृष्टम्
 न यस्य वर्ता जनुषा न्वस्ति न राधस आमरीता मघस्य ।
 उद्रावृषाणस्तविषीव उग्रा—ऽस्मभ्यं दद्धि पुरुहूत रायः
 ईक्षे रायः क्षयस्य चर्षणीना—मुत व्रजमपवर्तासि गोनाम् ।
 शिक्षानरः समिथेषु प्रहावान् वस्वो राशिर्मभिनेतासि भूरिम्

१

२

३

१५३५

४

५

६

७

८

१५४०

कया तच्छृण्वे शच्या शचिष्ठो यया कुणोति मुहु का चिह्वः ।	
पुरु दाशुषे विचयिष्ठो अंहो ऽथा दधाति द्रविणं जरित्रे	९
मा नो मर्धिरा भरा वृद्धि तन्नः प्र दाशुषे दातवे भूरि यत् ते ।	
नव्ये वृष्णे शस्ते अस्मिन् त उक्थे प्र ब्रवाम वयमिन्द्र स्तुवन्तः	१०
नू षुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३३ ॥ (ऋ० ४।२१।१-११)

आ यात्विन्द्रोऽवस उष न इह स्तुतः संधमादस्तु शूरः ।	
वावृधानस्तविषीर्यस्य पूर्वी—द्यौर्न क्षत्रमभिभूति पुण्यात्	१
तस्येद्विह स्तवथ वृष्ण्यानि तुविद्युन्नस्य तुविरार्धसो नून ।	
यस्य कर्तुर्विदुथ्योऽ न सम्राट् साह्वान तरुत्रो अभ्यस्ति कृष्ठीः	२ १५४५
आ यात्विन्द्रो विव आ पृथिव्या मक्ष समुद्रादुत वा पुरीषात् ।	
स्वर्णरादवसे नो मरुत्वान् परावतो वा सदर्नाहतस्य	३
स्थुरस्य रायो बृहतो य ईशे तमु ष्टवाम विदथेऽविन्द्रम् ।	
यो वायुना जयति गोमतीषु प्र धृष्णुया नयति वस्यो अच्छ	४
उष यो नमो नमसि स्तभाय—न्निर्यति वाचं जनयन् यजधै ।	
ऋक्षसानः पुरुवार उक्थै—रेन्द्रं कृण्वीत सदर्नेषु होता	५
धिषा यदि धिषण्यन्तः सरण्यान् त्सर्दन्तो अद्रिमौशिजस्य गोहे ।	
आ दुरोषाः पास्त्यस्य होता यो नो महान्तसंवरणेषु वह्निः	६
सत्रा यदी भार्वरस्य वृष्णः सिषक्ति शुष्मः स्तुवते भराय ।	
गुहा यदीमौशिजस्य गोहे प्र यद् धिये प्रायसे मदाय	७ १५५०
वि यद् वरांसि पर्वतस्य वृण्वे पयोभिर्जिन्वे अपां जवांसि ।	
विदद् गौरस्य गवयस्य गोहे यदी वाजाय सुध्योऽ वहन्ति	८
भद्रा ते हस्ता सुकृतोत पाणी प्रयन्तारा स्तुवते राध इन्द्र ।	
का ते निषक्तिः किमु नो ममत्सि किं नोर्दुदु हर्षसे दातवा उ	९
एवा वस्व इन्द्रः सत्यः सम्रा—ङ्कन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः ।	
पुरुषुत कर्त्वा नः शग्धि रायो भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य	१०
नू षुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः	११

॥ १३४ ॥ (ऋ० ४।२२।१-११)

यज्ञ इन्द्रो जुजुषे यच्च वष्टि तन्नो महान् करति शुष्म्या चित् ।

ब्रह्म स्तोमं मघवा सोममुक्था यो अश्मानं शर्वसा बिभ्रदेति १ १५५५

वृषा वृषन्धिं चतुरश्रिमस्यन्नुग्रो बाहुभ्यां नृतमः शचीवान् ।

श्रिये परुष्णीमुषमाण ऊर्णा यस्याः पर्वाणि सख्याय विव्ये २

यो देवो देवतमो जायमानो महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः

दधानो वज्रं बाह्वोरुशन्तं द्याममेन रेजयत् प्र भूमं ३

विश्वा रोधांसि प्रवतश्च पूर्वीर्योर्ऋषवाज्जनिमन् रेजत् क्षाः ।

आ मातरा भरति शुष्म्या गोर्नृवत् परिज्मन् नोनुवन्त वाताः ४

ता तू तं इन्द्र महतो महानि विश्वेष्वित् सर्वनेषु प्रवाच्या ।

यच्छूर धृष्णो धृषता दधुष्वा नहिं वज्रेण शवसाविवेषीः ५

ता तू ते सत्या तुविनृम्ण विश्वा प्र धेनवः सिस्रते वृष्ण ऊर्ध्वः ।

अर्धा ह त्वद् वृषमणो भियानाः प्र सिन्धवो जर्वसा चक्रमन्त ६ १५६०

अत्राह ते हरिक्स्ता उ देवीरवोभिरिन्द्र स्तवन्त स्वसारः ।

यत् सीमन् प्र मुचो बद्धधाना कीर्धामनु प्रसितिं स्यन्दुयधै ७

पिपीले अंशुर्मद्यो न सिन्धुरा त्वा शमी शशमानस्य शक्तिः ।

अस्मद्वाक् शुशुचानस्य यम्या आशुर्न रुश्मिं तुव्योजसं गोः ८

अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि ज्येष्ठा नृम्णानि सत्रा सहुरे सहांसि ।

अस्मभ्यं वृत्रा सुहनानि रन्धि जहि वर्ध्वनुषो मर्त्यस्य ९

अस्माकमित् सु शृणुहि त्वमिन्द्राऽस्मभ्यं चित्राँ उप माहि वाजान् ।

अस्मभ्यं विश्वा इषणः पुरंधीरस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः १०

नू षुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।

अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ११ १५६५

॥ १३५ ॥ (ऋ० ४।२३।१-११) ८-१० ऋतं वा ।

कथा महामवृधत् कस्य होतुर्यज्ञं जुषाणो अभि सोममूधः ।

पिबन्नुशानो जुषमाणो अन्धो ववक्ष ऋष्वः शुचते धनाय १

को अस्य वीरः सध्रमादमाप समानंश सुमतिभिः को अस्य ।

कदस्य चित्रं चिकिते कदूती वृधे भुवच्छशमानस्य यज्योः २

कथा शृणोति हूयमानमिन्द्रः कथा शृण्वन्नवसामस्य वेद ।	
का अस्य पूर्वीरुपमातयो ह कथैर्नमाहुः पपुर्णि जरित्रे	३
कथा सबार्धः शशमानो अस्य नश्वुभि द्रविणं दीध्यानः ।	
देवो भुवन्नवेदा म क्रतानां नमो जगृभ्वां अभि यज्जुजोषत्	४
कथा कदस्या उषसो व्युष्टौ देवो मर्तस्य सख्यं जुजोष ।	
कथा कदस्य सख्यं सखिभ्यो ये अस्मिन् कामं सुयुजं ततसे	५
किमादमत्रं सख्यं सखिभ्यः कदा नु ते भ्रात्रं प्र ब्रवाम ।	
भ्रिये सुदृशो वपुस्स्य सर्गाः स्वर्गं चित्रतममिष आ गोः	६
द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमनिन्द्रां तेतिक्ते तिग्मा तुजसे अनीका ।	
ऋणा चिद् यत्र ऋणया न उग्रो दूरे अज्ञाता उषसो बबाधे	७
ऋतस्य हि शुरुधः सन्ति पूर्वी—ऋतस्य धीतिर्वृजिनानि हन्ति ।	
ऋतस्य श्लोको बधिरा ततर्कु कर्णा बुधानः शुचमान आयोः	८
ऋतस्य हृळ्हा धरुणानि सन्ति पुरुणि चन्द्रा वपुषे वपूषि ।	
ऋतेन दीर्घमिषणन्त पृक्षं ऋतेन गावं ऋतमा विवेशुः	९
ऋतं येमान ऋतमिद् वनो—त्युतस्य शुष्मस्तुरया उ गव्युः ।	
ऋताय पृथ्वी बह्वले गभीरे ऋताय धेनू परमे दुहाते	१०
नू द्रुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽं न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सद्भासाः	११

॥ १३६ ॥ (४।२४।१-११) त्रिष्टुप्, १० अनुष्टुप् ।

का सुष्टुतिः शवसः सुनुमिन्द्र—मर्वाचीनं राधस आ ववर्तत् ।	
वुदिर्हि वीरो गृणते वसूनि स गोपतिर्निषिधां नो जनासः	१
स वृत्रहत्ये हव्यः स ईड्यः स सुदुत इन्द्रः सत्यराधाः ।	
स यामन्ना मधवा मर्त्याय ब्रह्मण्यते सुष्वये वरिवो धात्	२
तमिन्नरो वि ह्वयन्ते समीके रिरिकांसस्तन्वः कृण्वत त्राम् ।	
मिथो यत् त्यागमुभयासो अगमन् नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ	३
ऋतूयन्ति क्षितयो योग उग्रा—ऽऽशुषाणासो मिथो अर्णसातौ ।	
सं यद् विशोऽववृत्रन्त युध्मा आदिन्नेम इन्द्रयन्ते अभीके	४
आदिन्द्र नेम इन्द्रियं यजन्त आदित् पक्तिः पुरोळाशं रिरिच्यात् ।	
आदित् सोमो वि पपृच्यादसुष्वी—नादिज्जुजोष वृषभं यजध्वै	५

कृणोत्यस्मै वरिवो य इत्थेन्द्राय सोममुशते सुनोति ।	
सध्रीचीनेन मनसाविवेनन् तमित सखायं कृणुते समत्सु	६
य इन्द्राय सुनवत् सोममद्य पचात् पक्तीरुत भूज्जाति धानाः ।	
प्रति मनायोरुचथानि हर्यन् तस्मिन् दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्रः	७
यदा समयं व्यचेदघावा दीर्घं यदाजिमभ्यख्यदुर्यः ।	
अचिक्रिदद् वृषणं पत्न्यच्छा दुरोण आ निशितं सोमसुद्धिः	८
भूर्यसा वस्नमचरत् कनीयो ऽविक्रीतो अकानिषं पुनर्यन् ।	
स भूर्यसा कनीयो नारिरेचीद् दीना दक्षा वि दुहन्ति प्र वाणम्	९
क इमं दूशभिर्ममेन्द्रं क्रीणाति धेनुभिः ।	
यदा वृत्राणि जङ्घनदथैनं मे पुनर्ददत्	१०
नू द्रुत इन्द्र नू गृणान इषं जरित्रे नद्योऽ न पीपेः ।	
अकारि ते हरिवो बह्व नव्यं धिया स्याम रथयः सदासाः	११

॥ १३७ ॥ (क्र० ४।२५।१-८) अष्टुप् ।

को अद्य नर्यो देवकाम उशान्निन्द्रस्य सख्यं जुजोष ।	
को वा महेऽवसे पायीय समिन्द्रे अग्नौ सुतसोम ईद्वे	१
को नानाम वचसा सोम्याय मनायुर्वो भवति वस्तं उस्त्राः ।	
क इन्द्रस्य युज्यं कः सखित्वं को भ्रात्रं वष्टि कवये क ऊती	२
को देवानामवो अद्या वृणीते क आदित्याँ अदितिं ज्योतिरीद्वे ।	
कस्याश्विनाविन्द्रो अग्निः सुतस्यां ऽशोः पिबन्ति मनसाविवेनम्	३
तस्मा अग्निभरतः शर्म यंस ज्ज्योक् पश्यात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।	
य इन्द्राय सुनवामेत्याह नरे नर्याय नृतमाय नृणाम्	४
न तं जिनन्ति बहवो न दुभ्रा उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत् ।	
प्रियः सुकृत प्रिय इन्द्रे मनायुः प्रियः सुप्रावीः प्रियो अस्य सोमी	५
सुप्राव्यः प्राशुषाळे वीरः सुष्वेः पक्तिं कृणुते केवलन्द्रः ।	
नासुष्वेरापिर्न सखा न जामि दुष्प्राव्योऽवहन्तेदवाचः	६
न रेवतां पणिनां सख्यमिन्द्रो ऽसुन्वता सुतपाः सं गृणीते ।	
आस्य वेदः खिदति हन्ति नग्रं वि सुष्वये पक्तये केवलो भूत्	७
इन्द्रं परेऽवरे मध्यमास इन्द्रं यान्तोऽवसितास इन्द्रम् ।	
इन्द्रं क्षियन्त उत युध्यमाना इन्द्रं नरो वाजयन्तो हवन्ते	८

१५८५

१५९०

१५९१

॥ १३८ ॥ (ऋ० ४।२६।१-३) [१-३ इन्द्रो वा] । [१-३ आत्मा वा] ।

अहं मनुरभवं सूर्यश्चा—ऽहं कक्षीवाँ ऋषिरस्मि विप्रः ।
 अहं कुत्सामार्जुनेयं न्यूञ्जे ऽहं कविरुशना पश्यता मा १
 अहं भूमिमददामार्याया—ऽहं वृष्टिं दाशुषे मर्त्याय ।
 अहमपो अनयं वावज्ञाना मम देवासो अनु केतमायन् २
 अहं पुरो मन्दसानो वयैरं नव साकं नवतीः शम्बरस्य ।
 शततमं वेश्यं सर्वताता दिवोदासमतिथिग्वं यदावम् ३

॥ १३९ ॥ (ऋ० ४।२८।१-५) [इन्द्रासोमौ वा ।]

त्वा युजा तव तत् सोम सख्य इन्द्रो अपो मनवे सुसुतस्कः ।
 अहन्नहिमरिणात् सप्त सिन्धू—नपावृणोदपिहितेव खानि १
 त्वा युजा नि खिदुत् सूर्यस्ये—न्द्रश्चक्रं सहसा सद्य इन्द्रो ।
 अधि ण्णुना बृहता वर्तमानं महो द्रुहो अप विश्वायु धायि २
 अहन्निन्द्रो अर्दहदुग्निरिन्द्रो पुरा दस्यून् मध्यंदिनादुभीके ।
 दुर्गे दुरोणे क्रत्वा न यातां पुरु सहस्रा शर्वा नि बर्हीत् ३
 विश्वस्मात् सीमधमाँ इन्द्र दस्यून् विशो दासीरकृणोरप्रशस्ताः ।
 अबोधेधाममृणतं नि शत्रू—नविन्देधामपचितिं वधत्रैः ४
 एवा सत्यं मघवाना युवं त—दिन्द्रश्च सोमोर्वमश्वयं गोः ।
 आर्दहन्तमपिहितान्यश्ना रिरिचथुः क्षाश्चित् ततृदाना ५

॥ १४० ॥ (ऋ० ४।२९।१-५)

आ नः स्तुत उप वार्जेभिरूती इन्द्र याहि हरिभिर्मन्दसानः ।
 तिरश्चिदुर्यः सर्वना पुरुण्या—ङ्गुषेभिर्गृणानः सत्यराधाः १
 आ हि ष्मा याति नर्यश्चिकित्वान् हूयमानः सोतृभिरुप यज्ञम् ।
 स्वश्चो यो अभीरुर्मन्यमानः सुष्वाणेभिर्मदति सं ह वीरैः २
 श्रावयेदस्य कर्णां वाजयध्वै जुष्टामनु प्र दिशं मन्दूयध्वै ।
 उद्धावृषाणो राधसे तुविष्मान् करन्न इन्द्रः सुतीर्थाभयं च ३
 अच्छा यो गन्ता नार्धमानमूती इत्था विप्रं हवमानं गृणन्तम् ।
 उप त्मनि दधानो धुर्यादशून् त्सहस्राणि शतानि वज्रबाहुः ४
 त्वोतासो मघवानिन्द्र विप्रा वयं ते स्याम सूरयो गृणन्तः ।
 भेजानासो बृहद्विदस्य राय आकाय्यस्य दावने पुरुक्षोः ५

१६००

१६०५

॥ १४१ ॥ (ऋ० ४।३०।१-८; १२-२४) गायत्री; ८, १४ अनुष्टुप् ।

नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो न ज्यायाँ अस्ति वृत्रहन् । नकिरेवा यथा त्वम् १	
सत्रा ते अनु कृष्टयो विश्वा चक्रेव वावृतुः । सत्रा महौ असि श्रुतः २	
विश्वे चनेदुना त्वा देवास इन्द्र युयुधुः । यदहा नक्तमातिरः ३	
यत्रोत बाधितेभ्यश्चक्रं कुत्साय युध्यते । मुषाय इन्द्र सूर्यम् ४	
यत्र देवाँ क्रधायतो विश्वाँ अयुध्य एक इत् । त्वमिन्द्र वनूरहन् ५	
यत्रोत मर्त्याय क—मरिणा इन्द्र सूर्यम् । प्रावः शचीभिरेतशम् ६	
किमादुतासि वृत्रहन् मर्धवन् मन्युमत्तमः । अत्राह दानुमातिरः ७	
एतद् घेदुत वीर्यं—मिन्द्र चकर्थ पौंस्यम् । स्त्रियं यद् दुर्हणायुवं वधीर्दुहितरं दिवः	
उत सिन्धुं विबाल्यं वितस्थानामधि क्षामि । परि ष्ठा इन्द्र मायया १२	
उत शुष्णस्य धृष्णुया प्र मृक्षो अभि वेदनम् । पुरो यदस्य संपिणक् १३	
उत द्रासं कौलितरं बृहतः पर्वतादधि । अवाहन्निन्द्र शम्बरम् १४	
उत द्रासस्य वर्चिनः सहस्राणि शतावधीः । अधि पञ्च प्रधीरिव १५	
उत त्वं पुत्रमग्रुवः परावृक्तं शतक्रतुः । उक्थेष्विन्द्र आभजत् १६	
उत त्या तुर्वशायदू अस्नातारा शचीपतिः । इन्द्रो विद्वौ अपारयत् १७	
उत त्या सद्य आर्या सरयोरिन्द्र पारतः । अर्णाचित्ररथावधीः १८	
अनु द्वा जहिता नयो ऽन्धं श्रोणं च वृत्रहन् । न तत् ते सुममष्टवे १९	
शतमश्मन्मयीनां पुरामिन्द्रो व्यास्यत् । दिवोदासाय द्राशुषे २०	
अस्वापयद् दुभीतये सहस्रा त्रिंशतं हथैः । द्रासानामिन्द्रो मायया २१	
स घेदुतासि वृत्रहन् त्समान इन्द्र गोपतिः । यस्ता विश्वानि चिच्युषे २२	
उत नूनं यदिन्द्रियं करिष्या इन्द्र पौंस्यम् । अद्या नकिष्टदा मिनत् २३	
वामं वामं त आदुरे देवो ददात्वयमा । वामं पूषा वामं भगो वामं देवः करुळती	

॥ १४२ ॥ (४।३१।१-१५) गायत्री, ३ पादनिचृत् ।

कया नश्चित्र आ भुव—दूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता १	
कस्त्वा सत्यो मदानां मंहिष्ठो मत्सदन्धसः । हृळ्हा चिद्वारुजे वसु २	
अभी शु णः सखीनामविता जरितृणाम् । शतं भवास्यूतिभिः ३	
अभी न आ ववृत्स्व चक्रं न वृत्तमर्वतः । नियुद्धिश्चर्षणीनाम् ४	
प्रवता हि क्रतूनामा हा पदेव गच्छसि । अभक्षि सूर्ये सचा ५	
सं यत् ते इन्द्र मन्यवः सं चक्राणि दधन्विरे । अध त्वे अध सूर्ये ६	

उत स्मा हि त्वामाहुरि—न्मघवानं शचीपते । दातारमविदीधयुम्	७
उत स्मा सद्य इत् परि शशमानाय सुन्वते । पुरु चिन्महसे वसु	८
नहि ष्मा ते शतं चन राधो वरन्त आमुरः । न च्यौत्नानि करिष्यतः	९
अस्माँ अंन्तु ते शत—मस्मान्तसहस्रमूतयः । अस्मान् विश्वा अभिष्टयः	१०
अस्माँ इहा वृणीष्व सखायं स्वस्तये । महो राये दिवित्मते	११
अस्माँ अविद्धि विश्वहे—न्द्र राया परीणसा । अस्मान् विश्वाभिरूतिभिः	१२
अस्मभ्यं ताँ अपा वृधि व्रजाँ अस्तेव गोमंतः । नवाभिरिन्द्रोतिभिः	१३
अस्माकं धृष्ण्या रथो द्युमाँ इन्द्रानपच्युतः । गव्युरश्वयुरीयते	१४
अस्माकमुत्तमं कृधि श्रवो देवेषु सूर्य । वर्षिष्ठं द्यामिवोपरि	१५

१६४०

॥ १४३ ॥ (ऋ० ४।३२।१-२२) गायत्री ।

आ तू न इन्द्र वृत्रह—न्मस्माकमर्धमा गंहि । महान् महीभिरूतिभिः	१	१६४५
भूमिश्चिद् घासि तूतुजि—रा चित्र चित्रिणीष्व । चित्रं कृणोष्युतये	२	
वृध्रेभिश्चिच्छशीयांसं हंसि वार्धन्तमोजसा । सखिभिर्ये त्वे सचा	३	
वयमिन्द्र त्वे सचा वयं त्वाभि नोनुमः । अस्माँ अस्माँ इदुद्व	४	
स नश्चित्राभिरद्विवो ऽनवद्याभिरूतिभिः । अनाधृष्टाभिरा गंहि	५	
भूयामो षु त्वावतः सखाय इन्द्र गोमंतः । युजो वाजाय घृष्वये	६	१६५०
त्वं ह्येक ईशिष इन्द्र वाजस्य गोमंतः । स नो यन्धि महीमिषम्	७	
न त्वा वरन्ते अन्यथा यद् दित्संसि स्तुतो मघम् । स्तोतृभ्य इन्द्र गिर्वणः	८	
अभि त्वा गोतमा गिरा ऽनूषत प्र द्वावने । इन्द्र वाजाय घृष्वये	९	
प्र ते वोचाम वीर्याँ या मन्दसान आरुजः । पुरो दासीरभीत्यं	१०	
ता ते गृणन्ति वेधसो यानि चक्रथ पौस्या । सुतेष्विन्द्र गिर्वणः	११	१६५५
अवीवृधन्त गोतमा इन्द्र त्वे स्तोमवाहसः । ऐषु धा वीरवद् यशः	१२	
यन्चिद्धि शश्वतामसी—न्द्र साधारणस्त्वम् । तं त्वा वयं हवामहे	१३	
अवाचीनो वसो भवा—ऽस्मे सु मत्स्वान्धसः । सोमानामिन्द्र सोमपाः	१४	
अस्माकं त्वा मतीना—मा स्तोम इन्द्र यच्छतु । अवागा वर्तया हरी	१५	
पुरोळाशं च नो घसो जोषयासि गिरिश्च नः । वधूयुरिव योषणाम्	१६	१६६०
सहस्रं व्यतीनां युक्तानामिन्द्रमीमहे । शतं सोमस्य खार्यः	१७	
सहस्रा ते शता वयं गवामा च्यावयामासि । अस्मन्ना राध एतु ते	१८	
दश ते कलशानां हिरण्यानामधीमहि । भूरिदा असि वृत्रहन्	१९	

भूरिवा भूरि देहि नो मा दुभ्रं भूर्या भर	। भूरि घेदिन्द्र दित्ससि	२०	
भूरिदा ह्यसि श्रुतः पुरुत्रा शूर वृत्रहन्	। आ नो भजस्व राधसि	२१	१६६५
प्र ते बभू विचक्षणं शंसामि गोषणो नपात्	। माभ्यां गा अनु शिश्रथः	२२	१६६६

॥ १४४ ॥ (ऋ० ५ २९।१-१५)

(१६६७-१६८१) गौरिवातिः शाक्त्यः । [९ (प्रथमपादस्य) उशना वा] । त्रिष्टुप् ।

त्र्ययमा मनुषो देवताता त्री रौचना दिव्या धारयन्त ।		
अर्चन्ति त्वा मरुतः पूतदक्षा—स्त्वमेषामृषिरिन्द्रासि धीरः	१	
अनु यदी मरुतो मन्दसान—मार्चन्तिन्द्रं पपिवांसं सुतस्य ।		
आदत्त वज्रमभि यदहिं ह—ज्ञपो यद्वीरिसृजत् सर्तवा उ	२	
उत ब्रह्माणो मरुतो मे अस्ये—न्द्रः सोमस्य सुषुतस्य पेयाः ।		
तद्वि हव्यं मनुषे गा अविन्दु—दहन्नाहिं पपिवां इन्द्रो अस्य	३	
आद् रोदसी वितरं वि ष्कभायत् संविद्यानश्चिद् भियसे मृगं कः		
जिर्गतिमिन्द्रो अपजर्गुराणः प्रति श्वसन्तमव दानवं हन्	४	१६७०
अध क्त्वा मघवन् तुभ्यं देवा अनु विश्वे अदहुः सोमपेयम् ।		
यत् सूर्यस्य हरितः पतन्तीः पुरः सतीरुपरा एतंशे कः	५	
नव यदस्य नवति च भोगान् त्साकं वज्रेण मघवा विवृश्वत् ।		
अर्चन्तीन्द्रं मरुतः सधस्थे त्रैष्टुभेन वचसा बाधत द्याम्	६	
सखा सख्ये अपचत् तूर्यमग्नि—रस्य क्त्वा महिषा त्री शतानि ।		
त्री साकमिन्द्रो मनुषः सरांसि सुतं पिबद् वृत्रहत्याय सोमम्	७	
त्री यच्छता महिषाणामघो मा—स्त्री सरांसि मघवा सोम्यापाः ।		
कारं न विश्वे अह्वन्त देवा भरमिन्द्राय यदहिं जघान	८	
उशना यत् सहस्यैर्यातं गृहमिन्द्र जूजुवानेभिरश्वैः ।		
वन्वानो अत्र सरथं ययाथ कुत्सेन देवैरवनोर्ह शुष्णम्	९	१६७५
प्रान्यच्चक्रमवृहः सूर्यस्य कुत्सायान्यद् वरिवो यातवेऽकः ।		
अनासो दस्यूरमृणो वधेन नि दुर्योण आवृणद् मृधवाचः	१०	
स्तोमासस्त्वा गौरिवातिरवर्ध—न्नरन्धयो वैदथिनाय पिप्रुम् ।		
आ त्वामृजिश्वा सख्याय चक्रे पचन् पत्तीरपिबः सोममस्य	११	
नवगवासः सुतसोमास इन्द्रं दशगवासो अभ्यर्चन्त्यकैः ।		
गव्यं चिदूर्धमपिधानवन्तं तं चिन्नरः शशमाना अप वन्	१२	

कथो नु ते परि चराणि विद्वान् वीर्यां मघवन् या चकर्थ ।		
या चो नु नव्या कृणवः शविष्ठ प्रेडु ता ते विदथेषु ब्रवाम	१३	
एता विश्वा चकृवाँ इन्द्र भूर्य—परीतो जनुषा वीर्येण ।		
या चिन्नु वज्रिन् कृणवो दधुष्वान् न ते वर्ता तविष्या अस्ति तस्याः	१४	१६८०
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा जुषस्व या ते शविष्ठ नव्या अकर्म ।		
वस्त्रैव भद्रा सुकृता वसू रथं न धीरः स्वपा अतक्षम्	१५	१६८१

॥ १४५ ॥ (क्र० ५।३०।१-११) (१६८२-१६९२) बभ्रुरात्रेयः ।

क्र०स्य वीरः को अपश्यदिदं सुखरथमीर्यमानं हरिभ्याम् ।		
यो राया वज्री सुतसोममिच्छन् तदोको गन्ता पुरुहूत ऊती	१	
अवाचचक्षं पदमस्य सस्व—रुग्रं निधातुरन्वायमिच्छन् ।		
अपृच्छमन्याँ उत ते म आहु—रिन्द्रं नरो बुबुधाना अशेम	२	
प्र नु वयं सुते या ते कृतानी—न्द्र ब्रवाम यानि नो जुजोषः ।		
वेदुदविद्वाञ्छृणवच्च विद्वान् वहतेऽयं मघवा सर्वसेनः	३	
स्थिरं मनश्चकृषे जात इन्द्र वेषीदेको युधये भूर्यसाश्रित ।		
अश्मानं चिच्छवसा दिद्युतो वि विदो गवामूर्वमुस्त्रियाणाम्	४	१६८५
परो यत् त्वं परम आजनिष्ठाः परावति श्रुत्यं नाम बिभ्रत् ।		
अतश्चिदिन्द्रादभयन्त देवा विश्वा अपो अजयद् दासपत्नीः	५	
तुभ्येदेते मरुतः सुशेवा अर्चन्त्यर्कं सुन्वन्त्यन्धः ।		
अहिमोहानमप आशयानं प्र मायाभिर्मायिनं सक्षदिन्द्रः	६	
वि षू मृधो जनुषा दानमिन्व—न्नहन् गवा मघवन्त्संचकानः ।		
अत्रा दासस्य नमुचेः शिरो य—दवर्तयो मनवे गातुमिच्छन्	७	
युजं हि मामकथा आदिदिन्द्र शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।		
अश्मानं चित् स्वर्यं वर्तमानं प्र चक्रियेव रोदसी मरुद्भ्यः	८	
स्त्रियो हि दास आयुधानि चक्रे किं मा करन्नबला अस्य सेनाः ।		
अन्तर्ह्यख्यदुभे अस्य धेने अथोप प्रैद् युधये दस्युमिन्द्रः	९	१६९०
समत्र गावोऽभितोऽनवन्ते—हेह वत्सैर्वियुता यदासन् ।		
सं ता इन्द्रो असृजदस्य शाकै—र्यद्रीं सोमासः सुषुता अमन्दन्	१०	
यद्रीं सोमा बभ्रुधूता अमन्दु—न्नरोरवीद् वृषभः सादनेषु ।		
पुरंदरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य पुनर्गवामददादुस्त्रियाणाम्	११	१६९२

॥ १४६ ॥ (५।३।१-८, १०-१३) (१६९३-१७०४) अवस्युरात्रेयः, (८ तृतीयपादस्य कुत्सो वा, चतुर्थपादस्य उशना वा) ।

इन्द्रो रथाय प्रवर्तं कृणोति यमध्यस्थान्मघवा वाजयन्तम् ।	
यूथेव पश्वो व्युनोति गोपा अरिष्ठो याति प्रथमः सिषासन्	१
आ प्र द्रव हरिवो मा वि वेनः पिशङ्गराते अभि नः सचस्व ।	
नहि त्वदिन्द्र वस्यो अन्यदस्त्य मेनोश्चिज्जनिवतश्चकथं	२
उद्यत् सहः सहस्र आर्जनिष्ठ देदिष्ट इन्द्र इन्द्रियाणि विश्वा ।	
प्राचोदयत् सुदुर्घा ववे अन्त वि ज्योतिषा संववृत्वत् तमोऽवः	३
अनवस्ते रथमश्वाय तक्षन् त्वष्टा वज्रं पुरुहूत द्युमन्तम् ।	१६९५
ब्रह्माण इन्द्रं महयन्तो अकै रवर्धयन्नहये हन्तवा उ	४
वृष्णे यत् ते वृषणो अर्कमर्चा निन्द्र ग्रावाणो अदितिः सजोषाः ।	
अनश्वासो ये पवयोऽरथा इन्द्रेषिता अभ्यवर्तन्त दस्यून्	५
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन् या चकथं ।	
शक्तीवो यद् विभरा रोदसी उभे जयन्नपो मनवे दानुचित्राः	६
तदिन्द्र ते करणं दस्म विप्राऽहिं यद् घ्नन्नोजो अत्रामिमिथाः ।	
शुष्णस्य चित्र परि माया अगृभ्णाः प्रपित्वं यन्नप दस्यूरसेधः	७
त्वमपो यदवे तुर्वशायाऽरमयः सुदुर्घाः पार इन्द्र ।	
उग्रमयातमवहो ह कुत्सं सं ह यद् वामुशनारन्त देवाः	८
वातस्य युक्तान्तस्युजश्चिदश्वान् कविश्चिदेषो अजगन्नवस्युः ।	१७००
विश्वे ते अत्र मरुतः सखाय इन्द्र ब्रह्माणि तविषीमवर्धन्	१०
सूरश्चिद् रथं परितक्म्यायां पूर्वं करदुपरं जूजुवांसम् ।	
भरच्चक्रमेतज्ञः सं रिणाति पुरो दधत् सनिष्यति क्रतुं नः	११
आयं जना अभिचक्षे जगामेन्द्रः सखायं सुतसोममिच्छन् ।	
वदन् ग्रावाव वेदिं भ्रियाते यस्य जीरमध्वर्यवश्चरन्ति	१२
ये चाकनन्त चाकनन्त नू ते मतीं अमृत मो ते अंह आरन् ।	
वावन्धि यज्यूरुत तेषु धेह्यो जो जनेषु येषु ते स्याम	१३
	१७०४

॥ १४७ ॥ (क्र० ५।३।१-१२) (१७०५-१७१६) गानुरात्रेयः ।

अर्द्वरुत्समसृजो वि खानि त्वमर्णवान् बद्धधानां अरम्णाः ।	
महान्तमिन्द्र पर्वतं वि यद् वः सृजो वि धारा अव दानवं हन्	१
	१७०५

त्वमुत्साँ ऋतुभिर्बद्धधानाँ अरंह ऊधुः पर्वतस्य वज्रिन् ।	
अहिं चिदुग्र प्रयुतं शयानं जघन्वाँ इन्द्र तविषीमधत्थाः	२
त्यस्य चिन्महतो निर्मृगस्य वधर्जघान तविषीभिरिन्द्रः ।	
य एक इदप्रतिर्मन्यमान आदस्मादन्यो अजनिष्ट तव्यान्	३
त्यं चिदेषां स्वधया मदन्तं मिहो नपातं सुवृधं तमोगाम् ।	
वृषप्रभर्मा दानवस्य भामं वज्रेण वज्री नि जघान शुष्णम्	४
त्यं चिदस्य क्रतुभिर्निषत्तम—मर्मणो विददिदस्य मर्म ।	
यदीं सुक्षत्र प्रभृता मदस्य युयुत्सन्तं तमसि हर्म्ये धाः	५
त्यं चिद्विथा कत्पयं शयान—मसूर्ये तमसि वावृधानम् ।	
तं चिन्मन्दानो वृषभः सुतस्यो—चैरिन्द्रो अपगूर्यां जघान	६
उद् यद्विन्द्रो महते दानवाय वधर्यमिष्ट सहो अप्रतीतम् ।	१७१०
यदीं वज्रस्य प्रभृतौ दुदाभ विश्वस्य जन्तोर्धमं चकार	७
त्यं चिद्वर्णं मधुपं शयान—मसिन्वं वज्रं मह्यादुग्रः ।	
अपादमत्रं महता वधेन नि दुर्योण आवृणद् मृधवाचम्	८
को अस्य शुष्मं तविषीं वरात् एको धनां भरते अप्रतीतः ।	
इमे चिदस्य ज्रयसो नु देवी इन्द्रस्यौजसो भियसा जिहाते	९
न्यस्मै देवी स्वधितिर्जिहीत इन्द्राय गातुरुशतीव येमे ।	
सं यदोजो युवते विश्वमाभि—रनु स्वधात्रे क्षितयो नमन्त	१०
एकं नु त्वा सत्पतिं पाञ्चजन्यं जातं शृणोमि यशसं जनेषु ।	
तं मे जगृध्र आशसो नविष्ठं दोषा वस्तोर्हवमानास इन्द्रम्	११
एवा हि त्वामृतुथा यातयन्तं मघा विप्रेभ्यो ददतं शृणोमि ।	१७१५
किं ते ब्रह्माणो गृहते सखायो ये त्वाया निदुधुः काममिन्द्र	१२
	१७१६

॥ १४८ ॥ (ऋ० ५।३३।१-१०) (१७१७-१७३५) प्राजापत्यः संवरणः ।

महिं महे तवसे दीध्ये नृ—निन्द्रायेत्था तवसे अतव्यान् ।	
यो अस्मै सुमतिं वाजसातौ स्तुतो जने समर्थश्चिकेत	१
स त्वं न इन्द्र धियसानो अकै—हरीणां वृषन् योक्त्रमश्रेः ।	
या इत्था मघवन्ननु जोषं वक्षो अभि प्रार्यः संक्षि जनान्	२
न ते त इन्द्राभ्यस्मद्वृषा—ऽयुक्तासो अब्रह्मता यदसन् ।	
तिष्ठा रथमधि तं वज्रहस्ता—ऽऽरुहिं देव यमसे स्वश्वः	३

पुरु यत् तं इन्द्र सन्त्युक्त्वा गवे चकथोर्वरासु युध्यन् ।		
तत्क्षे सूर्याय चिदोकासि स्वे वृषा समत्सु दासस्य नाम चित्	४	१७२०
वयं ते तं इन्द्र ये च नरः शर्धो जज्ञाना याताश्च रथाः ।		
आस्माश्चगम्यादहिशुष्म सत्वा भगो न हव्यः प्रभृथेषु चारुः	५	
पृक्षेण्यमिन्द्र त्वे ह्योजो नृम्णानि च नृतमानो अमर्तः ।		
स न एनीं वसवानो रयिं दाः प्रार्यः स्तुषे तुविमघस्य दानम्	६	
एवा न इन्द्रोतिभिर्व पाहि गृणतः शूर कारुन् ।		
उत त्वचं ददतो वाजसातौ पिप्रीहि मध्वः सुषुतस्य चारोः	७	
उत ते मा पौरुकुत्स्यस्य सुरे—स्त्रसदस्योर्हिरणिनो रराणाः ।		
वहन्तु मा दश श्येतासो अस्य गैरिक्षितस्य क्रतुभिर्नु संश्वे	८	
उत ते मा मारुताश्वस्य शोणाः क्रत्वामघासो विदथस्य रातौ ।		
सहस्रा मे च्यवतानो ददान आनूकमर्यो वपुषे नाचैत्	९	१७२५
उत ते मा ध्वन्यस्य जुष्टा लक्ष्मण्यस्य सुरुचो यतानाः ।		
महा रायः संवरणस्य ऋषे—व्रजं न गावः प्रयता अपि गमन्	१०	

॥१४९॥ (ऋ० ५।३४।१-९) जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

अजातशत्रुमजरा स्वर्व—त्यनु स्वधार्मिता दुस्मर्मीयते ।		
सुनोतन पचत् ब्रह्मवाहसे पुरुष्टुताय प्रतरं दधातन	१	
आ यः सोमेन जठरमपिप्रता—ऽमन्दत मघवा मध्वो अन्धसः ।		
यदीं मुगाय हन्तवे महावधः सहस्रभृष्टिमुशना वधं यमत	२	
यो अस्मै घंस उत वा य ऊर्धनि सोमं सुनोति भवति द्युमाँ अहं ।		
अपाप शक्रस्तनुष्टिमूहति तनूशुभ्रं मघवा यः कवास्रवः	३	
यस्यावधीत् पितरं यस्य मातरं यस्य शक्रो भ्रातरं नार्त ईषते ।		
वेतीद्वस्य प्रयता यतंकरो न किल्बिषादीषते वस्व आक्रः	४	१७३०
न पञ्चभिर्विशभिर्वष्ट्यारभं नासुन्वता सचते पुण्यता चन ।		
जिनाति वेदमुया हन्ति वा धुनि—रा देवयुं भजति गोमति व्रजे	५	
वित्वक्षणः समृतौ चक्रमासजो ऽसुन्वतो विषुणः सुन्वतो वृधः ।		
इन्द्रो विश्वस्य दमिता विभीषणो यथावशं नयति दासमार्यः	६	
समीं पणेरजति भोजनं मुषे वि दाशुषे भजति सूनरं वसु ।		
दुर्गे चन ध्रियते विश्व आ पुरु जनो यो अस्य तविधीमचुकुधत्	७	

सं यज्जनौ सुधनौ विश्वशर्धसा ववेदिन्द्रो मघवा गोषु शुभिषु ।

युजं ह्यन्यमकृत प्रवेपन्युदीं गव्यं सृजते सत्वाभिर्धुनिः ८

सहस्रसामाग्निवेशिं गृणीषे शत्रिमग्न उपमां केतुमर्यः ।

तस्मा आपः संयतः पीपयन्त तस्मिन् क्षत्रममवत् त्वेषमस्तु ९

१७३५

॥ १५० ॥ (५।३५।१-८) (१७३६-१७४९) प्रभूवसुराङ्गिरसः । अनुष्टुप्, ८ पङ्क्तिः ।

यस्ते साधिष्ठोऽवस इन्द्र क्रतुष्टमा भर । अस्मभ्यं चर्षणीसहं सस्मिन् वाजेषु दुष्टरम् १

यदिन्द्र ते चतस्रो यच्छूर सन्ति तिस्रः । यद् वा पञ्च क्षितीनामवस्तत् सु न आ भर २

आ तेऽवो वरेण्यं वृषन्तमस्य हूमहे । वृषजूतिर्हि जजिष आभूर्भिरिन्द्र तुर्वणिः ३

वृषा ह्यसि राधसे जजिषे वृष्णि ते शवः । स्वक्षत्रं ते धूषन्मनः सत्राहमिन्द्र पौंस्यम् ४

त्वं तमिन्द्र मर्त्यममित्रयन्तमद्विवः । सर्वरथा शतक्रतो नि याहि शवसस्पते ५ १७४०

त्वामिद् वृत्रहन्तम् जनांसो वृक्तवर्हिषः । उग्रं पूर्वीषु पूर्य हवन्ते वाजसातये ६

अस्माकमिन्द्र दुष्टरं पुरोयावानमाजिषु । सयावानं धनेधने वाजयन्तमवा रथम् ७

अस्माकमिन्द्रेहि नो रथमवा पुरंध्या ।

वयं शविष्ठ वार्यं द्विवि श्रवो दधीमहि द्विवि स्तोमं मनामहे ८

॥ १५१ ॥ (ऋ० ५।३६।१-६) त्रिष्टुप्, ३ जगती ।

स आ गमदिन्द्रो यो वसूनां चिकेतद् दातुं दामनो रयीणाम् ।

धन्वचरो न वंसगस्तृषाणश्चक्रमानः पिबतु दुग्धमंशुम् १

आ ते हनू हरिवः शूर शिप्रे रुहत् सोमो न पर्वतस्य पृष्ठे ।

अनु त्वा राजन्नर्वतो न हिन्वन् गीर्भिर्मदेम पुरुहूत विश्वे २ १७४५

चक्रं न वृत्तं पुरुहूत वेपते मनो भिया मे अमतेरिद्विवः ।

रथादधि त्वा जरिता सदावृध कुविन्नु स्तोषन्मघवन् पुरुवसुः ३

एष ग्रावेव जरिता त इन्द्रेयति वाचं बृहदाशुषाणः ।

प्र सव्येन मघवन् यंसि रायः प्र दक्षिणिद्धरिवो मा वि वेनः ४

वृषा त्वा वृषणं वर्धतु द्यौर्वृषा वृषभ्यां वहसे हरिभ्याम् ।

स नो वृषा वृषरथः सुशिप्र वृषक्रतो वृषा वज्रिन् भरे धाः ५

यो रोहितौ वाजिनौ वाजिनीवान् त्रिभिः शतैः सचमानावदिष्ट ।

यूने समस्मै क्षितयो नमन्तां श्रुतरथाय मरुतो दुवोया ६ १७४९

॥ १५२ ॥ (ऋ० ५।३७।१-५) (१७५०-१७६८) भौमोऽजि । त्रिष्टुप् ।

सं भानुना यतते सूर्यस्याऽऽजुह्वानो घृतपृष्ठः स्वश्वाः ।

तस्मा अमृधा उषसो व्युच्छान् य इन्द्राय सुनवामेत्याह १ १७५०

समिन्द्राग्निर्वनवत् स्तीर्णबर्हि—युक्तग्रावा सुतसोमो जराते ।
 ग्रावाणो यस्येषिरं वदन्त्य—यदध्वर्युर्हविषाव सिन्धुम् २
 वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति य ईं वहाति महिषीमिषिराम् ।
 आस्यं श्रवस्याद् रथ आ च घोषात् पुरू सहस्रा परि वर्तयाते ३
 न स राजा व्यथते यस्मिन्निन्द्र—स्तीव्रं सोमं पिबति गोसंखायम् ।
 आ संत्वनैरजति हन्ति वृत्रं क्षेति क्षितीः सुभगो नाम पुष्यन् ४
 पुष्यात् क्षेमे अभि योगे भवा—त्युभे वृतौ संयती सं जयाति ।
 प्रियः सूर्यं प्रियो अग्रा भवाति य इन्द्राय सुतसोमो ददाशत् ५

॥ १५३ ॥ (ऋ० ५।३८।१-५) अनुष्टुप् ।

उरोष्ट इन्द्र राधसो विभ्वी रातिः शतक्रतो । अधा नो विश्वचर्षणे द्युम्ना सुक्षत्र मंहय १ १७५५
 यदीमिन्द्र श्रवाय्य—मिषं शविष्ठ दधिषे । पप्रथे दीर्घभुक्तं हिरण्यवर्णं दुष्टरम् २
 शुष्मासो ये ते अद्रिवो मेहना केतसापः । उभा देवावभिष्टये दिवश्च गमश्च राजथः ३
 उतो नो अस्य कस्य चिद् दक्षस्य तव वृत्रहन् । अस्मभ्यं नृमणमा भरा—अस्मभ्यं नृमणस्यसे ४
 नू त आभिरभिष्टिभि—स्तव शर्मच्छतक्रतो । इन्द्र स्याम सुगोपाः शूर स्याम सुगोपाः ५

॥ १५४ ॥ (ऋ० ५।३९।१-५) अनुष्टुप्, ५ पङ्क्तिः ।

यदिन्द्र चित्र मेहना ऽस्ति त्वादातमद्रिवः । राधस्तन्नो विदद्वस उभयाहस्त्या भर १ १७६०
 यन्मन्यसे वरेण्य—मिन्द्र द्युक्षं तदा भर । विद्याम तस्य ते वय—मकूपारस्य दावने २
 यत् ते दित्सु प्रराध्यं मनो अस्ति श्रुतं बृहत् । तेन हृळ्हा चिदद्रिव आ वाजं दधि सातये ३
 महिष्ठं वो मघोना राजानं चर्षणीनाम् । इन्द्रमुप प्रशस्तये पूर्वीभिर्जुजुषे गिरः ४
 अस्मा इत् काव्यं वच उक्थमिन्द्राय शंस्यम् ।
 तस्मा उ ब्रह्मवाहसे गिरो वर्धन्त्यत्रयो गिरः शुभ्रमन्यत्रयः ५

॥ १५५ ॥ (ऋ० ५।४०।१-४) उष्णिक्, ४ त्रिष्टुप्,

आ याह्यद्रिभिः सुतं सोमं सोमपते पिब । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम् १ १७६५
 वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अयं सुतः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम् २
 वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिच्छित्राभिरूतिभिः । वृषन्निन्द्र वृषभिर्वृत्रहन्तम् ३
 ऋजीषी वज्री वृषभस्तुराषाद्—द्युष्मी राजा वृत्रहा सोमपावा ।
 युक्त्वा हरिभ्यामुप यासवूर्वाद् माध्यंदिने सर्वने मत्सदिन्द्रः ४ १७६८

॥ १५६ ॥ (ऋ० ८।३६।१-७)

(१७६९-१७८२) इयावाश्व आत्रेयः । शकरी, ७ महापङ्क्तिः ।

अवितासि सुन्वतो वृक्तबर्हिषः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
 यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते १
 प्राव स्तोतारं मधवन्नव त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
 यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते २ १७७०
 ऊर्जा देवाँ अवस्यो जसा त्वां पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
 यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ३
 जनिता द्विवो जनिता पृथिव्याः पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
 यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ४
 जनिताश्वानां जनिता गवामसि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
 यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ५
 अत्रीणां स्तोममद्विवो महस्कृधि पिबा सोमं मदाय कं शतक्रतो ।
 यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृतना उरु जयः समप्सुजिन्मरुत्वाँ इन्द्र सत्पते ६
 इयावाश्वस्य सुन्वतस्तस्था शृणु यथाशृणो रत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।
 प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इच्छुषाह्य इन्द्र ब्रह्माणि वर्धयन् ७ १७७५

॥ १५७ ॥ (ऋ० ८।३७।१-७) महापङ्क्तिः, १ अतिजगती ।

प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वविथ प्र सुन्वतः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
 माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः १
 सेहान उग्र पृतना अभि दुहः शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
 माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः २
 एकराळस्य भुवनस्य राजसि शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
 माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ३
 सस्थावाना यवयसि त्वमेक इच्छेचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
 माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ४
 क्षेमस्य च प्रयुजश्च त्वमीशिषे शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
 माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ५ १७८०
 क्षत्राय त्वमवसि न त्वमाविथ शचीपत इन्द्र विश्वाभिरूतिभिः ।
 माध्यंदिनस्य सर्वनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ६

इयावाश्वस्य रेभत—स्तथा शृणु यथाशृणो—रत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।

प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्द्रषाह्य इन्द्र क्षत्राणि वर्धयन्

७ १७८९

॥ १५८ ॥ (ऋ० ८।९।१-७)

(१७८३-१७८९) आत्रेयी अपाला । अनुष्टुप्, १-२ पङ्क्तिः ।

कन्याऽ वारवायती सोममपि सुताविदत् ।

अस्तं भरन्त्यब्रवी—दिन्द्राय सुनवै त्वा शक्राय सुनवै त्वा

१

असौ य एषि वीरको गृहंगृहं विचारकशत् ।

इमं जम्भसुतं पिब धानावन्तं करम्भिण—मपूपवन्तमुक्थिनम्

२

आ चन त्वा चिकित्सामो ऽधि चन त्वा नेमसि ।

शनैरिव शनकैरिवे—न्द्रायेन्द्रो परि स्रव

३

१७८५

कुविच्छकत् कुवित् करत् कुविन्नो वस्यस्करत् ।

कुवित् पतिद्विषो यती—रिन्द्रेण संगमामहै

४

इमानि त्रीणि विष्टपा तानीन्द्र वि रोहय ।

शिरस्ततस्योर्वरा—मादिदं म उपोदरे

५

असौ च या न उर्वरा—दिमां तन्वं मम

अथो ततस्य यच्छिरः सर्वा ता रोमशा कृधि

६

खे रथस्य खेऽनसः खे युगस्य शतक्रतो ।

अपालामिन्द्र त्रिष्णु—त्व्यकृणोः सूर्यत्वचम्

७

१७८९

॥ १५९ ॥ (ऋ० ८।२४।१-२७)

(१७९०-१८१६) विश्वमना वैयाजः । उष्णिक् ।

सखाय आ शिषामहि ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे

। स्तुष ऊ षु वो नृत्तमाय धृष्णवे

१ १७९०

शर्वसा ह्यसि श्रुतो वृत्रहत्येन वृत्रहा

। मघैर्मघोनो अति शूर दाशसि

२

स नः स्तवान् आ भर रयिं चित्रश्रवस्तमम्

। निरेके चिद् यो हरिवो वसुर्वदिः

३

आ निरेकमुत प्रिय—मिन्द्र दधि जनानाम्

। धृषता धृष्णो स्तवमान् आ भर

४

न ते सव्यं न दक्षिणं हस्तं वरन्त आमुर्गः

। न परिबाधो हरिवो गर्विष्णिषु

५

आ त्वा गोभिरिव व्रजं गीर्भिक्रिणोम्यद्विवः

। आ स्मा कामं जरितुरा मनः पूण

६ १७९५

विश्वानि विश्वमनसो धिया नो वृत्रहन्तम

। उग्रं प्रणेतरधि षू वसो गहि

७

वयं ते अस्य वृत्रहन् विद्यामं शूर नव्यसः

। वसोः स्पार्हस्य पुरुहूत राधसः

८

इन्द्र यथा ह्यस्ति ते ऽपरीतं नृतो शर्वः

। अमृक्ता रातिः पुरुहूत दाशुषे

९

आ वृषस्व महामह महे नृतम राधसे	। हृळहश्चिद् वृह्य मधवन् मधत्तये	१०
नू अन्यत्रां चिदद्विस्त्वन्नो जग्मुराशसः	। मधवञ्छग्धि तव तन्न ऊतिभिः	११ १८००
नह्यङ्ग नृतो त्वद्वन्यं विन्दामि राधसे	। राये द्युम्नाय शर्वसे च गिर्वणः	१२
एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत पिबति सोम्यं मधु	। प्र राधसा चोदयाते महित्वना	१३
उपो हरीणां पतिं दक्षं पूश्चन्तमब्रवम्	। नूनं श्रुधि स्तुवतो अश्व्यस्य	१४
नह्यङ्ग पुरा चन जज्ञे वीरतरस्त्वत्	। नकीं राया नैवथा न भन्दना	१५
एदु मध्वो मदन्तिरं सिञ्च वाध्वर्यो अन्धसः	। एवा हि वीरः स्तवते सदावृधः	१६ १८०५
इन्द्रं स्थातर्हरीणां नकिंष्टे पूर्यस्तुतिम्	। उदानंश शर्वसा न भन्दना	१७
तं वो वाजानां पतिं महूमहि श्रवस्यवः	। अप्रायुभिर्यज्ञेभिर्वावृधेन्यम्	१८
एतो न्विद्वं स्तवाम सखायः स्तोम्यं नरम्	। कृष्टीर्यो विश्वा अभ्यस्त्येक इत्	१९
अगोरुधाय गविषे द्युक्षाय दस्म्यं वचः	। घृतात् स्वादीयो मधुनश्च वोचत	२०
यस्यामितानि वीर्याः न राधः पर्येतवे	। ज्योतिर्न विश्वमभ्यस्ति दक्षिणा	२१ १८१०
स्तुहीन्द्रं व्यश्ववदूनमिं वाजिनं यमम्	। अर्यो गयं मंहमानं वि दाशुषे	२२
एवा नूनमुप स्तुहि वैर्यश्च दशमं नवम्	। सुविद्वांसं चकृत्यं चरणीनाम्	२३
वेत्था हि निर्र्क्तीनां वज्रहस्त परिवृजम्	। अहरहः शुन्ध्युः परिपदामिव	२४
तदिन्द्राव आ भर येना दंसिष्ठ कृत्वेने	। द्विता कुत्साय शिश्वथो नि चोदय	२५
तमु त्वा नूनमीमहे नव्यं दंसिष्ठ सन्यसे	। स त्वं नो विश्वा अभिमातीः सक्षणिः	२६ १८१५
य ऋक्षादंहसो मुचद् यो वार्यात् सप्त सिन्धुषु	। वर्धर्वासस्य तुविन्मण नीनमः	२७ १८१६

॥ १६० ॥ (ऋ० ८।४६।१-२०. २९-३१;३३)

(१८१७-१८४०) वशोऽश्वयः । गायत्री, १ पादनिचृत्; ५ ककुप्, ७ बृहती, ८ अनुष्टुप्, ९ सतोबृहती, ११-१२ विपरीतोत्तरः प्रगाथः=(बृहती, विपरीता), १३ द्विपदा जगती, १४ बृहती पिपीलिकमभ्या, १५ ककुप्न्यंकुशिरा, १६ विराद्, १७ जगती, १८ उपरिष्ठाद् बृहती, १९ बृहती, २० विषमपदा बृहती; ३० द्विपदा विराद्, ३१ उष्णिक् ।

त्वावतः पुरुवसो वयमिन्द्र प्रणेतः	। स्मसिं स्थातर्हरीणाम्	१
त्वां हि सत्यमद्विवो विद्म दातारमिषाम्	। विद्म दातारं रयीणाम्	२
आ यस्य ते महिमानं शतमूते शतक्रतो	। गीर्भिर्गृणन्ति कारवः	३
सुनीथो घा स मर्त्यो यं मरुतो यमर्यमा	। मित्रः पान्त्यद्वहः	४ १८२०
दधानो गोमदश्ववत् सुवीर्यमादित्यजुत एधते	। सदा राया पुरुस्पृहा	५
तमिन्द्रं दानमीमहे शवसानमभीर्वम्	। ईशानं राय ईमहे	६

तस्मिन् हि सन्त्युतयो विश्वा अभीरवः सचा ।	
तमा वहन्तु सप्तयः पुरुवसुं मदाय हरयः सुतम्	७
यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।	
य आदुदिः स्वर्नृभिर्—र्यः पृतनासु दुष्टरः	८
यो दुष्टरो विश्ववार श्रवाय्यो वाजेष्वस्ति तरुता ।	
स नः शविष्ठ सवना वसो गहि गमेम गोमति व्रजे	९ १८२५
गव्यो षु णो यथा पुरा ऽश्वयोत रथया । वरिवस्य महामह	१०
नहि ते शूर राधसो ऽन्तं विन्दामि सत्रा ।	
दशस्या नो मघवन्नू चिदद्रिवो धियो वाजैभिराविथ	११
य ऋष्वः श्रावयत्सखा विश्वेत् स वेदुर्जनिमा पुरुन्दुतः ।	
तं विश्वे मानुषा युगे—न्द्रं हवन्ते तविषं यतस्तुचः	१२
स नो वाजेष्वविता पुरुवसुः पुरःस्थाता मघवा वृत्रहा भुवत्	१३
अभि वो वीरमन्धसो मर्देषु गाय गिरा महा विचेतसम् ।	
इन्द्रं नाम श्रुत्यंशाकिनं वचो यथा	१४ १८३०
वुदी रेक्णस्तन्वे दुर्दिवसुं दुर्दिवाजेषु पुरुहूत वाजिनम् । नूनमथ	१५
विश्वेषामिरज्यन्तं वसूनां सास्रह्वासं चिदस्य वर्षसः । कूपयतो नूनमत्यथ	१६
महः सु वो अरमिषे स्तवामहे मीळहुषे अरंगमाय जग्मये ।	
यज्ञेभिर्गीर्भिर्विश्वमनुषां मरुता—मियक्षसि गार्धे त्वा नमसा गिरा	१७
ये पातयन्ते अजम्भि—गिरीणां स्नुभिरेषाम् ।	
यज्ञं महिष्वणीनां सुभ्रं तुविष्वणीनां प्राध्वरे	१८
प्रभङ्गं दुर्मतीना—मिन्द्र शविष्ठा भर ।	
रयिमस्मभ्यं युज्यं चोदयन्मते ज्येष्ठं चोदयन्मते	१९ १८३५
सनितः सुसनितरुग्र चित्र चेतिष्ठ सूनृत ।	
प्रासहा सम्राट् सहुरिं सहन्तं भुज्यं वाजेषु पूर्व्यम्	२०
अर्धं प्रियमिषिराय षष्टिं सहस्रासनम् । अश्वानामिन्न वृष्णाम्	२१
गावो न यूथमुप यन्ति वध्रय उप मा यन्ति वध्रयः	२०
अध यच्चारथे गणे शतमुष्ट्राँ अचिक्रदत् । अध श्वितेषु विंशतिं शता	२१
अध स्या योषणा मही प्रतीची वशमश्वयम् । अधिरुक्मा वि नीयते	२३ १८४०

॥ १६१ ॥ (ऋ० ६।१७।१-१५)

(१८४१-२००५) बार्हस्पत्यो भरद्वाज । त्रिष्टुप्; १५ द्विपदा त्रिष्टुप् ।

पिबन्ता सोममभि यमुग्र तर्दं ऊर्वं गव्यं महिं गृणान इन्द्र ।	
वि यो धृष्णो वर्धिषो वज्रहस्त विश्वा वृत्रममित्रिया शवोभिः	१
स ईं पाहि य ऋजीषी तरुत्रो यः शिप्रवान् वृषभो यो मतीनाम् ।	
यो गोत्रभिद् वज्रभृद् यो हरिष्ठाः स इन्द्र चित्रां अभि तृन्धि वाजान्	२
एवा पाहि प्रत्नथा मन्दतु त्वा श्रुधि ब्रह्म वावृधस्वोत गीर्भिः ।	
आविः सूर्यं कृणुहि पीपिहीषो जहि शत्रूरभि गा इन्द्र तृन्धि	३
ते त्वा मदा बृहदिन्द्र स्वधाव इमे पीता उक्षयन्त द्युमन्तम् ।	
महामनूनं तवसं विभूतिं मत्सरासो जर्हन्त प्रसाहम्	४
येभिः सूर्यमुषसं मन्दसानो ऽवासयोऽप हृळ्हानि दर्दत ।	
महामर्द्धिं परि गा इन्द्र सन्तं नुत्था अच्युतं सदर्सस्परि स्वात्	५
तव क्रत्वा तव तद् दुंसनाभि—रामासु पक्वं शच्या नि दीधः ।	१८४५
और्णोर्दुरं उस्त्रियाभ्यो वि हृळ्हो—दुर्वाद गा असृजो अङ्गिरस्वान्	६
पप्राथ क्षां महि दंसो व्युर्वी—मुप द्यामृष्वो बृहदिन्द्र स्तभायः ।	
अधारयो रोदसी देवपुत्रे प्रत्ने मातरा यद्वा क्रतस्य	७
अर्धं त्वा विश्वे पुर इन्द्र देवा एकं तवसं दधिरे भरीय ।	
अदेवो यदुभ्यौहिष्ठ देवान् त्वर्षाता वृणत इन्द्रमत्र	८
अध द्यौश्चित्ते ते अप सा नु वज्राद् द्वितानमद् भियसा स्वस्य मन्योः ।	
अहिं यदिन्द्रो अभ्योहसानं नि चिद् विश्वायुः शयथे जघान	९
अध त्वष्टा ते मह उग्र वज्रं सहस्रभृष्टिं ववृतच्छताश्रिम् ।	
निकाममरमणसं येन नवन्तमहिं सं पिणगृजीषिन्	१०
वर्धान् यं विश्वे मरुतः सजोषाः पचच्छतं महिषां इन्द्र तुभ्यम् ।	१८५०
पूषा विष्णुस्त्रीणि सरांसि धावन् वृत्रहणं मदिरमंशुर्मसै	११
आ क्षोदो महि वृतं नदीनां परिष्ठितमसृज ऊर्मिमपाम् ।	
तासामनु प्रवत इन्द्र पन्थां प्रादयो नीचीरपसः समुद्रम्	१२
एवा ता विश्वा चकृवांसमिन्द्रं महामुग्रमजुर्यं सहोदाम् ।	
सुवीरं त्वा स्वायुधं सुवज्र—मा ब्रह्म नव्यमवसे ववृत्यात्	१३
स नो वाजाय श्रवस इषे च राये धेहि द्युमत इन्द्र विप्रान् ।	
भरद्वाजे नूवत इन्द्र सूरीन् द्विवि च स्मैधि पार्ये न इन्द्र	१४

अया वाजं देवाहितं सनेम मदेम शतहिमाः सुवीराः

१५

१८५५

॥ १६२ ॥ (ऋ० ६।१८।१-१५)

तमुं षुहि यो अभिभूत्योजा वृन्वन्नवातः पुरुहूत इन्द्रः ।

अषाब्धमुग्रं सहमानमाभिर्गीर्भिर्विर्ध वृषभं चर्षणीनाम्

१

स युध्मः सत्वा खजकृत् समद्रा तुविम्रक्षो नदनुमां क्रज्जीषी ।

बृहद्रेणुश्च्यवनो मानुषीणा मेकः कृष्टीनामभवत् सहावा

२

त्वं ह नु त्यददमायो दस्युं रेकः कृष्टीरवनोरार्याय ।

अस्ति स्विन्नु वीर्यं तत् त इन्द्र न स्विदस्ति तद्वतुथा वि वोचः

३

सदिन्द्रि ते तुविजातस्य मन्ये सहः सहिष्ठ तुरतस्तुरस्य ।

उग्रमुग्रस्य तवसस्तवीयो ऽरधस्य रधतुरो बभूव

४

तन्नः प्रत्नं सख्यमस्तु युष्मे इत्था वदन्दिर्वलमङ्गिरोभिः ।

हन्नच्युतच्युद् दस्मेष्यन्तमृणोः पुरो वि दुरो अस्य विश्वाः

५

१८६०

स हि धीभिर्हव्यो अस्त्युग्र ईशानकृन्महति वृत्रतूर्ये ।

स लोकसाता तनये स वज्री वितन्तसाय्यो अभवत् समत्सु

६

स मज्मना जनिम मानुषाणा ममर्त्येन नाम्नाति प्र सस्रि ।

स द्युन्नेन स शवसोत राया स वीर्येण नृतमः समोकाः

७

स यो न मुहे न मिथू जनो भूत् सुमन्तुनामा चुमुरिं धुनिं च ।

वृणक् पिपुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्ताय शयथाय नू चित्

८

उदावता त्वक्षसा पन्यसा च वृत्रहत्याय रथमिन्द्र तिष्ठ ।

धिष्व वज्रं हस्त आ दक्षिणत्रा ऽभि प्र मन्द पुरुदत्र मायाः

९

अग्निर्न शुष्कं वनमिन्द्र हेती रक्षो नि धक्ष्यशनिर्न भीमा ।

गम्भीरयं क्रध्वया यो रुरोजा ऽध्वानयद् दुरिता दुम्भयच्च

१०

१८६५

आ सहस्रं पृथिभिर्निन्द्र राया तुविद्युन्न तुविवाजेभिरवाक् ।

याहि सूनो सहसो यस्य नू चिददेव ईशं पुरुहूत योतोः

११

प्र तुविद्युन्नस्य स्थविरस्य घृष्वे दिवो ररप्शे महिमा पृथिव्याः ।

नास्य शत्रुर्न प्रतिमानमस्ति न प्रतिष्ठिः पुरुमायस्य सद्योः

१२

प्र तत् ते अद्या करणं कृतं भूत् कुत्सं यदायुर्मतिथिग्वर्मस्मै ।

पुरु सहस्रा नि शिशा अभि क्षा मुत् तूर्वयाणं धृषता निनेथ ।

१३

अनु त्वाहिंघ्ने अर्धं देव देवा मदन् विश्वे कवितमं कवीनाम् ।
 करो यत्र वरिवो बाधिताय दिवे जनाय तन्वे गृणानः
 अनु द्यावापृथिवी तत् त ओजो ऽमर्त्या जिहत इन्द्र देवाः
 कृष्वा कृत्नो अकृतं यत् ते अस्त्युक्थं नवीयो जनयस्व यज्ञैः

१४

१५

१८७०

॥ १६३ ॥ (ऋ० ६।१९।१-१३)

महो इन्द्रो नृवदा चर्षणिप्रा उत द्विर्हो अमिनः सहोभिः ।
 अस्मद्वागवावृधे वीर्यायोरुः पृथुः सुकृतः कर्तृभिर्भूत
 इन्द्रमेव धिषणा सातये धाद् बृहन्तमृष्वमजरं युवानम् ।
 अर्षाळहेन शवसा शूशुवांसं सद्यश्चिद् यो वावृधे असांमि
 पृथू करस्ना बहुला गर्भस्ती अस्मद्वाक् सं मिमीहि श्रवांसि ।
 युथेव पश्वः पशुपा दमूना अस्मां इन्द्राभ्या ववृत्स्वाजौ
 तं व इन्द्रं चतिर्नमस्य शकैरिह नूनं वाजयन्तो हुवेम ।
 यथा चित् पूर्वं जरितार आसुरनेद्या अनवद्या अरिष्ठाः
 धृतव्रतो धनदाः सोमवृद्धः स हि वामस्य वसुनः पुरुक्षुः ।
 सं जग्मिरे पृथ्याऽरायो अस्मिन् त्समुद्रे न सिन्धवो यार्दमानाः
 शर्विष्ठं न आ भर शूर शव ओजिष्ठमोजो अभिभूत उग्रम् ।
 विश्वा द्युम्ना वृष्ण्या मानुषाणा मस्मभ्यं दा हरिवो मादुयध्यै
 यस्ते मदः पृतनाषाळमृध इन्द्र तं न आ भर शूशुवांसम् ।
 येन तोकस्य तनयस्य सातौ मंसीमहि जिगीवांसस्त्वोताः
 आ नो भर वृषणं शुष्ममिन्द्र - धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
 येन वंसाम् पृतनासु शत्रून् तवोतिभिरुत जाम्भीरजामीन्
 आ ते शुष्मो वृषभ एतु पश्वा दोत्तरादधरादा पुरस्तात् ।
 आ विश्वतो अभि समेत्वर्वा इन्द्र द्युम्नं सर्व्वद्वेहास्मे
 नृवत् तं इन्द्र नृतमाभिरूती वंसीमहि वामं श्रोमतेभिः ।
 ईक्षे हि वस्व उभयस्य राजन् धा रत्नं महि स्थूरं बृहन्तम्
 मरुत्वन्तं वृषभं वावृधान मकवारिं दिव्यं शासमिन्द्रम् ।
 विश्वासाहमवसे नूतनायो ग्रं सहोदामिह तं हुवेम
 जनं वज्रिन् महि चिन्मन्यमान मेभ्यो नृभ्यो रन्धया येष्वस्मि ।
 अधा हि त्वा पृथिव्यां शूरसातौ हवामहे तनये गोष्वप्सु

१

२

३

४

५

१८७५

६

७

८

९

१०

१८८०

११

१२

वयं त एभिः पुरुहूत सख्यैः शत्रोःशत्रोरुत्तर इत् स्याम ।

घ्नन्तो वृत्राण्युभयानि शूर राया मदेम बृहता त्वोताः

१३

॥ १६४ ॥ (ऋ० ६।२०।१-१३) त्रिष्टुप्, ७ विराट् ।

द्यौर्न य इन्द्राभि भूमार्थस्तस्थौ रयिः शर्वसा पुत्सु जनान् ।

तं नः सहस्रभरमुर्वरासां वृद्धि सूनो सहसो वृत्रतुरम्

१

दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र सत्रा ऽसुर्य वेवेभिर्धायि विश्वम् ।

अहिं यद् वृत्रमपो वव्रिवांसं हर्षजीषिन् विष्णुना सचानः

२

१८८५

तूर्वन्नोर्जीयान् तवसस्तवीयान् कृतब्रह्मेन्द्रो वृद्धमहाः ।

राजाभवन्मधुनः सोम्यस्य विश्वासां यत् पुरां दुर्नुमावत्

३

शतैरपद्रन् पुण्य इन्द्रात्र दशोणये कवयेऽर्कसातौ ।

वधैः शुष्णास्याशुषस्य मायाः पित्वो नारिरेचीत् किं चन प्र

४

महो ब्रह्मो अपं विश्वायु धायि वज्रस्य यत् पतने पादु शुष्णाः ।

उरु ष सरथं सारथये क—रिन्द्रः कुत्साय सूर्यस्य सातौ

५

प्र श्येनो न मदिरमंशुमस्मै शिरो दासस्य नमुचेर्मथायन् ।

प्रावन्नमीं साप्यं ससन्तं पूणग्राया समिषा सं स्वस्ति

६

वि पिप्रोरहिमायस्य हृळ्हाः पुरो वज्रिञ्जवसा न दर्दः ।

सुदामन् तद् रेक्णो अप्रमूष्य—मृजिश्चने दात्रं दाशुषे दाः

७

१८९०

स वेतसुं दशमायं दशोणिं तूर्तुजिमिन्द्रः स्वमिष्टिसुम्नः ।

आ तुग्रं शश्वदिभं द्योतनाय मातुर्न सीमुप सृजा इयध्यै

८

स ई स्पृधो वनते अप्रतीतो बिभ्रद् वज्रं वृत्रहणं गभस्तौ ।

तिष्ठद्वरी अध्यस्तेव गते वचोयुजा वहत इन्द्रमृष्वम्

९

सनेम तेऽवसा नव्य इन्द्र प्र पूरवः स्तवन्त एना यज्ञैः

सप्त यत् पुरः शर्म शारदीर्द—र्द्धन् दासीः पुरुकुत्साय शिक्षन्

१०

त्वं वृध इन्द्र पूर्यो भू—र्वरिवस्यन्नशने काव्याय ।

परा नववास्त्वमनुदेयं महे पित्रे ददाथ स्वं नपातम्

११

त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमती—ऋणोरपः सीरा न स्रवन्तीः ।

प्र यत् समुद्रमतिं शूर पथि पारयां तुर्वशं यदु स्वस्ति

१२

१८९५

तव ह त्यदिन्द्र विश्वमाजौ सस्तो धुनीचुमुरी या ह सिष्वप् ।

दीदधदित् तुभ्यं सोमेभिः सुन्वन् वृभीतिरिधमभूतिः पृक्थ्यर्कैः

१३

॥ १६५ ॥ (ऋ० ६।२१।१-८, १०, १२)

इमा उ त्वा पुरुतमस्य कारो—हृदयं वीर हव्या हवन्ते ।	
धियो रथेष्ठा मजरं नवीयो रयिर्विभूतिरीयते वचस्या	१
तमु स्तुष इन्द्रं यो विदानो गिर्वीहसं गीर्भिर्यज्ञवृद्धम् ।	
यस्य दिवमतिं महा पृथिव्याः पुरुमायस्य रिरिचे महित्वम्	२
स इत् तमोऽवयुनं ततन्वत् सूर्येण वयुनवच्चकार ।	
कदा ते मर्ता अमृतस्य धामे—यक्षन्तो न भिनन्ति स्वधावः	३
यस्ता चकार स कुहं स्विदिन्द्रः कमा जनं चरति कामुं विश्व ।	
कस्ते यज्ञो मनसे शं वराय को अर्क इन्द्र कतमः स होता	४ १९००
इदा हि ते वेविषतः पुराजाः प्रत्नास आसुः पुरुकृत सखायः ।	
ये मध्यमास उत नूतनास उतावमस्य पुरुहूत बोधि	५
तं पृच्छन्तोऽवरासः पराणि प्रत्ना तं इन्द्र श्रुत्यानु येमुः ।	
अर्चीमसि वीर ब्रह्मवाहो यादेव विद्म तात् त्वा महान्तम्	६
अभि त्वा पाजो रक्षसो वि तस्थे महिं जज्ञानमभि तत् सु तिष्ठ ।	
तव प्रत्नेन युज्येन सखा वज्रेण धृष्णो अप ता नुदस्व	७
स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य ब्रह्मण्यतो वीर कारुधायः ।	
त्वं ह्यादिपिः प्रदिवि पितृणां शश्वद् बभूथ सुहव एष्टौ	८
इम उ त्वा पुरुशाक प्रयज्यो जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।	
श्रुधी हवमा हुवतो हुवानो न त्वावा अन्यो अमृत त्वदस्ति	१० १९०५
स नो बोधि पुरेता सुगेषु—त दुर्गेषु पथिकृद् विदानः ।	
ये अश्रमास उरवो वहिष्ठा—स्तेभिर्न इन्द्राभि वीक्षि वाजम्	१२

॥ १६६ ॥ (६।२१।१-११)

य एक इन्द्रव्यश्र्वर्षणीना—मिन्द्रं तं गीर्भिरभ्यर्च आभिः ।	
यः पत्यते वृषभो वृष्ण्यावान् तस्यः सत्वा पुरुमायः सहस्वान्	१
तमु नः पूर्वे पितरो नवग्वाः सप्त विप्रासो अभि वाजयन्तः ।	
नक्षद्भामं ततुरिं पर्वतेष्ठा—मद्रोघवाचं मतिभिः शविष्ठम्	२
तमीमह इन्द्रमस्य रायः पुरुवीरस्य नूततः पुरुक्षोः ।	
यो अस्कृधोयुरजरः स्वर्वान् तमा भर हरिवो मावुयधै	३

तन्नो वि वोचो यदि ते पुरा चि—ज्जरितारं आनुशुः सुममिन्द्र ।		
कस्ते भागः किं वयो दुध खिद्रः पुरुहूत पुरुवसोऽसुरघ्नः	४	१९१०
तं पृच्छन्ती वज्रहस्तं रथेष्ठा—मिन्द्रं वेपी वक्वरी यस्य नू गीः ।		
तुविग्रभं तुविकूर्मि रभोदां गातुमिषे नक्षते तुम्रमच्छ	५	
अया ह त्वं मायया वावृधानं मनोजुवां स्वतवः पर्वतेन ।		
अच्युता चिद् वीळिता स्वोजो रुजो वि हृच्छा धृषता विरग्निन्	६	
तं वो धिया नव्यस्या शविष्ठं प्रत्नं प्रत्नवत् परितंसयध्वै ।		
स नो वक्षदनिमानः सुवह्ने—द्वो विश्वान्यति दुर्गहाणि	७	
आ जनाय द्रुहणे पार्थिवानि दिव्यानि दीपयोऽतरिक्षा ।		
तपां वृषन् विश्वतः शोचिषा तान् ब्रह्मद्विषे शोचय क्षामपश्च	८	
भुवो जनस्य दिव्यस्य राजा पार्थिवस्य जगतस्त्वेषसंहक् ।		
धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र हस्ते विश्वा अजुर्य दयसे वि मायाः	९	१९१५
आ संयतमिन्द्र णः स्वस्तिं शत्रुतूर्याय बृहतीममृधाम्		
यया दासान्यार्याणि वृत्रा करो वज्रिन् सुतुका नाहुषाणि	१०	
स नो नियुद्धिः पुरुहूत वेधो विश्ववाराभिरा गहि प्रयज्यो ।		
न या अदेवो वरते न देव आभिर्याहि तूयमा मद्रद्यद्रिक्	११	

॥ १६७ ॥ (ऋ० ६.२३.१-१०)

सुत इत् त्वं निमिश्ल इन्द्र सोमे स्तोमे ब्रह्माणि शस्यमान उक्थे ।		
यद् वा युक्ताभ्यां मघवन् हरिभ्यां बिभ्रद् वज्रं ब्रह्मोरिन्द्र यासि	१	
यद् वा दिवि पार्ये सुष्विमिन्द्र वृत्रहत्येऽवसि शूरसातौ ।		
यद् वा दक्षस्य बिभ्युषो अबिभ्य—दरन्धयः शर्धत इन्द्र दस्यून्	२	
पातां सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं प्रणेनीरुग्रो जरितारमूती ।		
कर्ता वीराय सुष्वय उ लोकं दाता वसुं स्तुवते कीरये चित्	३	१९२०
गन्तेयान्ति सर्वना हरिभ्यां बभ्रिर्वज्रं पपिः सोमं दुर्दिगाः ।		
कर्ता वीरं नर्यं सर्ववीरं श्रोता हवं गृणतः स्तोमवाहाः	४	
अस्मै वयं यद् वावान् तद् विविष्म इन्द्राय यो नः प्रदिवो अपस्कः ।		
सुते सोमे स्तुमसि शंसदुक्थे—न्द्राय ब्रह्म वर्धनं यथासत्	५	
ब्रह्माणि हि चकृषे वर्धनानि तावत् त इन्द्र मतिभिर्विविष्मः ।		
सुते सोमे सुतपाः शंतमानि रान्ध्या क्रियास्म वक्षणाणि यज्ञैः	६	

स नो बोधि पुरोळाशं रराणः पिबा तु सोमं गोऋजीकमिन्द्र ।
 एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदो—रुं कृधि त्वायत उ लोकम् ७
 स मन्दस्वा ह्यनु जोषमुग्र प्र त्वा यज्ञास इमे अश्रुवन्तु ।
 प्रेमे हवासः पुरुहूतमस्मे आ त्वेयं धीरवस इन्द्र यम्याः ८ १९२५
 तं वः सखायः सं यथा सुतेषु सोमैभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।
 कुवित् तस्मा असति नो भंराय न सुष्विमिन्द्रोऽवसे मृधाति ९
 एवेदिन्द्रः सुते अस्तावि सोमै भरद्वाजेषु क्षयदिन्मघोनः ।
 असद् यथा जरित्र उत सूरि—रिद्रौ रायो विश्ववारस्य दाता १०

॥ १६८ ॥ (ऋ० ६।२४।१-१०)

वृषा मदु इंद्रे श्लोक उक्त्वा सचा सोमेषु सुतपा ऋजीषी ।
 अर्चत्र्यो मघवा नृभ्य उक्थै—द्युक्षो राजा गिरामक्षितोतिः १
 ततुर्विरीरो नर्यो विचेताः श्रोता हव गृणत उर्व्यूतिः ।
 वसुः शंसो नरां कारुधाया वाजी स्तुतो विदथे दाति वाजम् २
 अक्षो न चक्रयोः शूर बृहन् प्र ते मृहा रिरिचे रोदस्योः ।
 वृक्षस्य नु ते पुरुहूत वया व्युडतयो रुरुहुरिन्द्र पूर्वीः ३ १९३०
 शचीवितस्ते पुरुशाक शाका गवामिव सुतयः संचरणीः ।
 वत्सानां न तंतयस्त इन्द्र दामन्वन्तो अदामानः सुदामन् ४
 अन्यदुद्य कर्वरमन्यदु श्वो ऽसच्च सन्मुहुराचक्रिरिन्द्रः ।
 मित्रो नो अत्र वरुणश्च पूषा ऽर्यो वशस्य पर्येतास्ति ५
 वि त्वदापो न पर्वतस्य पूष्ठा—दुक्थेभिरिद्रानयंत यज्ञैः ।
 तं त्वाभिः सुष्टुतिभिर्वाजयंत आजिं न जग्मुर्गिर्वाहो अश्वाः ६
 न यं जरंति शरदो न मासा न द्याव इन्द्रमवकर्शयंति ।
 वृद्धस्य चिद् वर्धतामस्य तनूः स्तोमैभिरुक्थैश्च शस्यमाना ७
 न वीळवे नमते न स्थिराय न शर्धते दस्युज्जाताय स्तवान् ।
 अत्रा इन्द्रस्य गिरयश्चिदृष्वा गम्भीरे चिद् भवति गाधमरमे ८ १९३५
 गम्भीरेण न उरुणामत्रिन् प्रेषो यन्धि सुतपावन् वाजान् ।
 स्था ऊ षु ऊर्ध्व ऊती अरिषण्य—न्नक्तोर्व्युष्टौ परितक्म्यायाम् ९
 सचस्व नायमवसे अभीक इतो वा तमिन्द्र पाहि रिषः ।
 अमा चैनमरण्ये पाहि रिषो मदेम शतहिमाः सुवीराः १०

॥ १६९ ॥ (ऋ० ६।२५।१-९)

या त ऊतिरवमा या परमा या मध्यमेन्द्र शुष्मिन्नस्ति ।	
ताभिर्बुधु वृत्रहृत्येऽवीर्न एभिश्च वाजैर्महान् न उग्र	१
आभिः स्पृधो मिथतीररिषण्यन्नमित्रस्य व्यथया मन्युमिन्द्र ।	
आभिर्विश्वा अभियुजो विषूचीरार्याय विशोऽव तारीर्दासीः	२
इन्द्र जामय उत येऽजामयो ऽर्वाचीनासो वनुषो युयुजे ।	
त्वमेषां विथुरा शवांसि जहि वृष्ण्यानि कृणुही पराचः	३ १९४०
शूरो वा शूरं वनते शरीरैस्तनुरुचा तरुषि यत् कृण्वैते ।	
तोके वा गोषु तनये यदृप्सु वि क्रन्दसी उर्वरासु ब्रवैते	४
नहि त्वा शूरो न तुरो न धृष्णुर्न त्वा योधो मन्यमानो युयोध ।	
इन्द्र नर्किष्ठा प्रत्यस्त्येषां विश्वा जातान्यभ्यसि तानि	५
स पत्यत उभयोर्नृम्णमयो र्यदी वेधसः समिथे हवन्ते ।	
वृत्रे वा महो नूवति क्षये वा व्यचस्वन्ता यदि वितन्तसैते	६
अर्धस्मा ते चर्षणयो यदेजा निन्द्र त्रातोत भवा वरूता ।	
अस्माकासो ये नृतमासो अर्य इन्द्र सूरयो दधिरे पुरो नः	७
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय सत्रा ते विश्वमनु वृत्रहृत्ये ।	
अनु क्षत्रमनु सहो यजत्रेन्द्र देवेभिरनु ते नृषह्ये	८ १९४५
एवा नः स्पृधः समजा सम त्स्विन्द्र रारन्धि मिथतीरदेवीः ।	
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो भरद्वाजा उत त इन्द्र नूनम्	९

॥ १७० ॥ (ऋ० ६।२६।१-८)

शुधी न इन्द्र ह्वयामसि त्वा महो वाजस्य सातौ वावृषाणाः	
सं यद् विशोऽयन्त शूरसाता उग्रं नोऽवः पार्ये अहन् दाः	१
त्वां वाजी हवते वाजिनेयो महो वाजस्य गध्यस्य सातौ ।	
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं तरुत्रं त्वां चष्टे मुष्टिहा गोषु युध्यन्	२
त्वं कविं चोदयोऽर्कसातौ त्वं कुत्साय शुष्णं वाशुषे वर्क ।	
त्वं शिरो अमर्मणः पराहन्नतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्	३
त्वं रथं प्र भरो योधमृष्वमावो युध्यन्तं वृषभं दशद्युम् ।	
त्वं तुग्रं वेतसवे सचाहन् त्वं तुर्जिं गृणन्तमिन्द्र तूतोः	४ १९५०

त्वं तदुक्थमिन्द्र बर्हणा कः प्र यच्छता सहस्रा शूर दधि ।
 अव गिरेर्दासं शम्बरं हन् प्रावो दिवोदासं चित्राभिर्हृती ५
 त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसानः सोमैर्दुभीतये चुरिर्मिन्द्र सिष्वप् ।
 त्वं रजिं पिठीनसे दशस्यन् षष्टिं सहस्रा शच्या सचाहन् ६
 अहं चन तत् सूरिभिरानश्यां तव ज्याय इन्द्र सुम्रमोजः ।
 त्वया यत् स्तवन्ते सधवीर वीरास्त्रिवरुथेन नहुषा शविष्ठ ७
 वयं ते अस्यामिन्द्र द्युम्रहूतौ सखायः स्याम महिन प्रेष्ठाः ।
 प्रातर्दनिः क्षत्रश्रीरस्तु श्रेष्ठो घने वृत्राणां सनये धनानाम् ८

॥ १७१ ॥ (ऋ० ६।२७।१-७)

किमस्य मदे किम्वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार ।
 रणा वा ये निषद्वि किं ते अस्य पुरा विविद्वे किमु नूतनासः १ १९५५
 सवस्य मदे सवस्य पीताविन्द्रः सवस्य सख्ये चकार ।
 रणा वा ये निषद्वि सत् ते अस्य पुरा विविद्वे सदु नूतनासः २
 नहि नु ते महिमनः समस्य न मघवन् मघवत्त्वस्य विद्व ।
 न राधसोराधसो नूतनस्येन्द्र नकिर्ददृश इन्द्रियं ते ३
 एतत् त्यत् त इन्द्रियमचेति येनावधीर्वरशिखस्य शेषः ।
 वज्रस्य यत् ते निहतस्य शुष्मात् स्वनाच्चिदिन्द्र परमो वुदार ४
 वधीदिन्द्रो वरशिखस्य शेषो ऽभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन् ।
 वृचीवतो यद्धरियूपीयायां हन् पूर्वे अर्धे भियसार्परो दत् ५
 त्रिंशच्छतं वर्मिण इन्द्र साकं यव्यावत्यां पुरुहूत श्रवस्या ।
 वृचीवन्तः शरवे पत्यमानाः पात्रा भिन्द्वाना न्यर्थान्यायन् ६ १९६०
 यस्य गावावरुषा स्रूयवसू अन्तरू षु चरतो रेरिहाणा ।
 स सृञ्जयाय त्वंशं परादाद् वृचीवतो दैववाताय शिक्षन् ७

॥ १७२ ॥ (ऋ० ६।२९।१-६)

इन्द्रं वो नरः सख्याय सेपुर्महो यन्तः सुमतये चकानाः ।
 महो हि दृता वज्रहस्तो अस्ति महामुं रणवमवसे यजध्वम् १
 आ यस्मिन् हस्ते नयीं मिमिक्षु रा रथे हिरण्यये रथेष्ठाः ।
 आ रुमयो गर्भस्त्योः स्थूरयो राध्वन्नश्वासो वृषणो युजानाः २

श्रिये ते पादा दुव आ मिमिक्षु—धृष्णुर्वज्री शर्वसा दक्षिणावान् ।

वसानो अत्कं सुरभिं हृशे कं स्वर्णं नृतविषिरो बभूथ ३

स सोम आर्मिश्लतमः सुतो भूद् यस्मिन् पक्तिः पच्यते सन्ति धानाः ।

इन्द्रं नरः स्तुवन्तो ब्रह्मकारा उक्था शंसन्तो देववाततमाः ४ १९६५

न ते अन्तः शर्वसो धार्यस्य वि तु बाबधे रोदसी महित्वा ।

आ ता सूरिः पृणति तूतुजानो यूथेवाप्सु समीजमान ऊती ५

एवेदिन्द्रः सुहवं क्रुवो अस्तूती अनूती हिरिशिप्रः सत्वा ।

एवा हि जातो असमात्योजाः पुरु च वृत्रा हनति नि दस्यून् ६

॥ १७३ ॥ (ऋ० ६।३०।१-५)

भूय इद् वावृधे वीर्यायै एको अजुर्यो दयते वसूनि ।

प्र रिरिचे दिव इन्द्रः पृथिव्या अर्धमिदस्य प्रति रोदसी उभे १

अधा मन्ये बृहदसुर्यमस्य यानि दाधार नक्रिरा मिनाति ।

दिवेदिवे सूर्यो दर्शतो भूद् वि सद्भान्युर्विया सुकतुर्धात् २

अद्या चिन्न चित् तदपो नदीनां यदाभ्यो अरदो गातुमिन्द्र ।

नि पर्वता अद्भसदो न सेदु—स्त्वया हृळ्हानि सुकतो रजांसि ३ १९७०

सत्यमित् तन्न त्वावाँ अन्यो अस्तीन्द्र देवो न मर्त्यो ज्यायान् ।

अहन्नहिं परिशयानमर्णो ऽवासृजो अपो अच्छा समुद्रम् ४

त्वमपो वि दुरो विषूची—रिन्द्र हृळ्हमरुजः पर्वतस्य ।

राजाभवो जगतश्चर्षणीनां साकं सूर्यं जनयन् द्यामुषासम् ५

॥ १७४ ॥ (ऋ० ६।३७।१-५)

अर्वाग्रथं विश्ववारं त उग्रे—न्द्र युक्तासो हरयो वहन्तु ।

कीरिशिन्द्रि त्वा हवते स्वर्वा—नृधीमहिं सधमादस्ते अद्य १

प्रो द्रोणे हरयः कर्मागमन् पुनानास क्रज्यन्तो अभूवन् ।

इन्द्रो नो अस्य पूर्यः पपीयाद् द्युक्षो मदस्य सोम्यस्य राजा २

आसस्राणासः शवसानमच्छे—न्द्रं सुचक्रे रथ्यासो अश्वाः ।

अभि श्रव क्रज्यन्तो वहेयु—नू चिन्नु वायोरमृतं वि दस्येत् ३ १९७५

वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्ती—न्द्रो मघोनां तुविकुर्मितमः ।

यया वज्रिवः परियास्यहो मघा च धृष्णो दयसे वि सूरीन् ४

इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य दाते—न्द्रो गीर्भिर्विधतां वृद्धमहाः ।

इन्द्रो वृत्रं हनिष्ठो अस्तु सत्वा ऽऽ ता सूरिः पृणति तूतुजानः ५

॥ १७५ ॥ (ऋ० ६।३८।१-५)

अपाङ्कित उदु नश्चित्रतमो महीं भर्षद् द्युमतीमिन्द्रहूतिम् ।
 पन्यसीं धीतिं दैव्यस्य याम्—अनस्य रातिं वनते सुदानुः १
 दुराच्चिदा वसतो अस्य कर्णा घोषादिन्द्रस्य तन्यति ब्रुवाणः ।
 एयमेनं देवहूतिर्ववृत्या—न्मद्रा—गिन्द्रमियमूच्यमाना २
 तं वो धिया परमया पुराजा—मजरमिन्द्रमभ्यनूयकैः ।
 ब्रह्मा च गिरो दधिरे समस्मिन् मुह्यंश्च स्तोमो अधि वर्धादिन्द्रे ३ १९८०
 वर्धाद् यं यज्ञ उत सोम इन्द्रं वर्धाद् ब्रह्म गिरं उक्त्वा च मन्म ।
 वर्धाहैनमुषसो यामन्नक्तो—वर्धान् मासाः शरदो द्याव इन्द्रम् ४
 एवा जज्ञानं सहसे असांमि वावृधानं राधसे च श्रुताय ।
 महामुग्रमवसे विप्र नून—मा विवासेम वृत्रतूयेषु ५

॥ १७६ ॥ (ऋ० ६।३९।१-५)

मन्द्रस्य कवेर्दिव्यस्य बह्वे—विप्रमन्मनो वचनस्य मध्वः ।
 अपा नस्तस्य सचनस्य देवे—वो युवस्व गृणते गोअंघ्राः १
 अयमुज्ञानः पर्यद्विमुष्ठा क्रतुधीतिभिर्कृतयुग्युज्ञानः ।
 रुजदरुणं वि वलस्य सानुं पर्णोर्वचोभिर्भि योधदिन्द्रः २
 अयं द्योतयदुद्युतो व्य—क्तून् दोषा वस्तोः शरदु इन्दुरिन्द्र ।
 इमं केतुमदधुनू चिदह्नां शुचिजन्मन उषसश्चकार ३ १९८५
 अयं रोचयदुरुचो रुचानोः—ऽयं वासयद् व्यृतेन पूर्वीः ।
 अयमीयत क्रतुयुग्भिर्श्वैः स्वर्विदा नाभिना चर्षणिप्राः ४
 नू गृणानो गृणते प्रत्न राज—न्निषः पिन्व वसुदेयाय पूर्वीः ।
 अप ओषधीरविषा वनानि गा अर्वतो नृनुचसे रिरीहि ५

॥ १७७ ॥ (ऋ० ६।४०।१-५)

इन्द्र पिब तुभ्यं सुतो मद्राया—ऽव स्य हरी वि मुचा सखाया ।
 उत प्र गांय गृण आ निषद्या—ऽथा यज्ञाय गृणते वयो धाः १
 अस्य पिब यस्य जज्ञान इन्द्र मदाय क्रत्वे अपिबो विरग्निन् ।
 तमु ते गावो नर आपो अद्वि—रिन्दुं समह्यन् पीतये समस्मै २
 समिन्द्रे अग्नौ सुत इन्द्र सोम आ त्वा वहन्तु हरयो वहिष्ठाः ।
 त्वायता मनसा जोहवीमी—न्द्रा याहि सुविताय महे नः ३ १९९०

आ याहि शश्वदुशता ययाथे—न्द्र महा मनसा सोमपेयम् ।
 उप ब्रह्माणि शृणव इमा नो ऽथा ते यज्ञस्तन्वे३ वयो धात ४
 यदिन्द्र द्विवि पार्ये यदधग् यद् वा स्वे सदेने यत्र वासि ।
 अतो नो यज्ञमवसे नियुत्वान् त्सजोषाः पाहि गर्विणो मरुद्भिः ५

॥ १७८ ॥ (ऋ० ६।४१।१-५)

अहेळमान उप याहि यज्ञं तुभ्यं पवन्त इन्द्रवः सुतासः ।
 गावो न वञ्चित्स्वमोको अच्छे—न्द्रा गहि प्रथमो यज्ञियानाम् १
 या ते काकुत् सुकृता या वरिष्ठा यया शश्वत् पिबसि मध्व ऊर्मिम् ।
 तया पाहि प्र ते अध्वर्युरस्थात् सं ते वज्रो वर्ततामिन्द्र गव्युः २
 एष द्वप्सो वृषभो विश्वरूप इन्द्राय वृष्णे समकारि सोमः
 एतं पिब हरिवः स्थातरुग्र यस्येशिषे प्रदिवि यस्ते अन्नम् ३ १९९५
 सुतः सोमो असुतादिन्द्र वस्या—नयं श्रेयाश्चिकितुषे रणाय ।
 एतं तितिव उप याहि यज्ञं तेन विश्वास्तविषीरा पृणस्व ४
 हयामसि त्वेन्द्र याह्यर्वा—डरं ते सोमस्तन्वे भवाति ।
 शतक्रतो मादयस्वा सुतेषु प्रास्माँ अव पृतनासु प्र विश्व ५

॥ १७९ ॥ (ऋ० ६।४२।१-४) अनुष्टुप्, ४ बृहती ।

प्रत्यस्मै पिपीषते विश्वानि विदुषे भर । अरंगमाय जग्मये ऽपश्चाद्दध्वने नरे १
 एमेनं प्रत्येतन सोमेभिः सोमपातमम् । अमन्त्रेभिर्ऋजीषिण—मिन्द्रं सुतेभिरिन्दुभिः २
 यदी सुतेभिरिन्दुभिः सोमेभिः प्रतिभूषथ । वेदु विश्वस्य मेधिरो धूषत् तंतमिदेषते ३ २०००
 अस्माअस्मा इदन्धसो ऽध्वर्यो प्र भरा सुतं । कुवित् संमस्य जेन्यस्य शर्धतो ऽभिज्ञस्तेरवस्परत् ४

॥ १८० ॥ (ऋ० ६।४३।१-४) उष्णिक् ।

यस्य त्यच्छम्बरं मदे दिवोदासाय रन्धयः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब १
 यस्य तीव्रसुतं मवुं मध्यमन्तं च रक्षसे । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब २
 यस्य गा अन्तरश्मनो मदे हृळ्हा अवासृजः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ३
 यस्य मन्दानो अन्धसो माघोनं दधिषे शवः । अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ४ २००५

॥ १८१ ॥ (ऋ० ६।३१।१-५)

(२००६-२०१५) सुहोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप्, ४ शकरी ।

अभूरेको रयिपते रयीणा—मा हस्तयोरधिथा इन्द्र कुष्टीः ।
 वि तोके अप्सु तनये च सूरै ऽवोचन्त चर्षणयो विवाचः १

त्वद्भियेन्द्र पार्थिवानि विश्वा ऽच्युता चिच्छ्यावयन्ते रजांसि ।

द्यावाक्षामा पर्वतासो वनानि विश्वं हृळ्हं भयते अजमन्ना ते २

त्वं कुत्सेनाभि शुष्णमिन्द्रा—ऽशुषं युध्य कुर्यवं गविष्ठौ ।

दश प्रपित्वे अध सूर्यस्य मुषायश्चक्रमविधे रपांसि ३

त्वं शतान्यव शम्बरस्य पुरो जघन्थाप्रतीनि दस्योः ।

अशिक्षो यत्र शच्या शचीवो दिवोदासाय सुन्वते सुतक्रे भरद्वाजाय गृणते वसूनि ४

स सत्यसत्त्वन् महते रणाय रथमा तिष्ठ तुविनृम्ण भीमम् ।

याहि प्रपथिन्नवसोप मद्विक् प्र च श्रुत श्रावय चर्षणिभ्यः ५ २०१०

॥ १८२ ॥ (क्र० ६।३१।१-५)

अपूर्व्या पुरुतमान्यस्मै महे वीराय तवसे तुराय ।

विरिञ्चिने वज्रिणे शतमानि वचांस्यासा स्थविराय तक्षम् १

स मातरा सूर्येणा कवीना—मवासयद् रुजदग्निं गृणानः ।

स्वाधीभिर्ऋक्भिर्वावशान उदुस्रियाणामसृजन्निदानम् २

स वह्निभिर्ऋक्भिर्गोषु शश्वन् मितजुभिः पुरुकृत्वा जिगाय ।

पुरः पुरोहा सखिभिः सखीयन् हृळ्हा रुरोज कविभिः कविः सन् ३

स नीव्याभिर्जरितारमच्छा महो वाजेभिर्महन्दिश्च शुष्मैः ।

पुरुवीराभिर्वृषभ क्षितीना—मा गिर्वणः सुविताय प्र याहि ४

स सर्गेण शर्वसा तक्तो अत्यै—रप इन्द्रो दक्षिणतस्तुराषाट् ।

इत्था सृजाना अनपावृद्धं दिवेदिवे विविषुरप्रमृष्यम् ५ २०१५

॥ १८३ ॥ (क्र० ६।३३।१-५)

(२०१६-२०२५) शुनहोत्रो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

य ओजिष्ठ इन्द्र तं सु नो दा मदो वृषन्त्स्वमिष्टिर्दास्वान् ।

सौवर्ग्यं यो वनवत् स्वश्वो वृत्रा समत्सु सासहदुमित्रान् १

त्वां हीडुन्द्रावसे विवाचो हवन्ते चर्षणयः शूरसातौ ।

त्वं विप्रैर्भिर्वि पूर्णारंशाय—स्त्वोत इत् सनिता वाजमवी २

त्वं तां इन्द्रोभयां अमित्रान् दासा वृत्राण्यार्यां च शूर ।

वधीर्वनेव सुधितेभिरत्कै—रा पूत्सु दधि नृणां नृतम ३

स त्वं न इन्द्राकवाभिरूती सखा विश्वायुरविता वृधे भूः ।

स्वर्षाता यदध्वयामासि त्वा युध्यन्तो नेमधिता पूत्सु शूर ४

नूनं न इन्द्रापुराय च स्या भवा मृळीक उत नो अभिष्टौ ।
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्मन् द्विवि ष्याम पार्ये गोषतमाः

५ २०२०

॥ १८४ ॥ (ऋ० ६।३४।१-५)

सं च त्वे जग्मुर्गिरं इन्द्र पूर्वी—र्वि च त्वद् यन्ति विभ्वो मनीषाः ।
पुरा नूनं च स्तुतय ऋषीणां पस्पृध इन्द्रे अध्युक्थार्का
पुरुहूतो यः पुरुगूर्त ऋभ्वौ एकः पुरुप्रशस्तो अस्ति यज्ञैः ।
रथो न महे शर्वसे युजानोऽस्माभिरिन्द्रो अनुमाद्यो भूत्
न यं हिंसन्ति धीतयो न वाणी—रिन्द्रं नक्षन्तीदुभि वर्धयन्तीः ।
यदि स्तोतारः शतं यत् सहस्रं गृणन्ति गिर्वेणसं शं तदस्मै
अस्मा एतद् द्विव्युर्वेव मासा मिमिक्ष इन्द्रे न्ययामि सोमः ।
जनं न धन्वन्नाभि सं यदापः सत्रा वावृधुर्हवनानि यज्ञैः
अस्मा एतन्मह्याङ्गुषमस्मा इन्द्राय स्तोत्रं मतिभिरवाचि ।
असद् यथा महति वृत्रतूर्य इन्द्रो विश्वायुरविता वृधश्च

१

२

३

४

५

२०२५

॥ १८५ ॥ (ऋ० ६।३५।१-५)

(२०२६-२०३५) नरो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

कदा भुवन् रथक्षयाणि ब्रह्म कदा स्तोत्रे सहस्रपोष्यं दाः ।
कदा स्तोमं वासयोऽस्य राया कदा धियः करसि वाजरत्नाः
कर्हिं स्वित्र तदिन्द्र यन्नृभिर्नृन् वीरैर्वीरान् नीळयासे जयाजीन् ।
त्रिधातु गा अर्धि जयासि गोष्वि—न्द्र द्युम्नं स्वर्वद् धेह्यस्मे
कर्हिं स्वित्र तदिन्द्र यज्जरित्रे विश्वप्सु ब्रह्म कृणवः शविष्ठ ।
कदा धियो न नियुतो युवासे कदा गोमघा हवनानि गच्छाः
स गोमघा जरित्रे अश्वश्चन्द्रा वाजश्रवसो अर्धि धेहि पृक्षः ।
पीपिहीषः सुदुर्गामिन्द्र धेनुं भरद्वाजेषु सुरुचो रुरुच्याः
तमा नूनं वृजनमन्यथा चि—च्छूरो यच्छक्र वि दुरो गृणीषे ।
मा निररं शुक्रदुर्घस्य धेनो—राङ्गिरसान् ब्रह्मणा विप्र जिन्व

१

२

३

४

५

२०३०

॥ १८६ ॥ (ऋ० ६।३६।१-५)

सत्रा मदासस्तव विश्वजन्याः सत्रा रायोऽध ये पार्थिवासः ।
सत्रा वाजानामभवो विभक्ता यद् देवेषु धारयथा असुर्यम्

१

अनु प्र येजे जन् ओजो अस्य सत्रा दधिरे अनु वीर्याय ।	
स्युमगृभे दुधयेऽर्वते च क्रतुं वृञ्जन्त्यपि वृञ्जहत्ये	२
तं सध्रीचीरुतयो वृण्णयानि पौस्यानि नियुतः सश्चुरिन्द्रम् ।	
समुद्रं न सिन्धव उक्थशुष्मा उरुव्यचंसं गिर आ विशन्ति	३
स रायस्वामुप सृजा गृणानः पुरुश्चन्द्रस्य त्वमिन्द्र वस्वः ।	
पतिर्बभूथासमो जनानां मेको विश्वस्य भुवनस्य राजा	४
स तु श्रुधि श्रुत्या यो दुवोयुर्द्यौर्न भूमाभि रायो अर्यः ।	
असो यथा नः शर्वसा चक्रानो युगेयुगे वर्यसा चेकितानः	५ २०३५

॥ १८७ ॥ (क्र० ६।४४।१-२४)

(२०३६-२१०३) शंयुर्बार्हस्पत्यः । त्रिष्टुप्, १-६ अनुष्टुप्, ७-९ (८ वा) विराट् ।

यो रयिवो रयितमो यो द्युमैद्युम्वत्तमः । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः	१
यः शग्मस्तुविशग्म ते रायो द्रामा मतीनाम् । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः	२
येन वृद्धो न शर्वसा तुरो न स्वाभिरुतिभिः । सोमः सुतः स इन्द्र ते ऽस्ति स्वधापते मदः	३
त्यमुं वो अप्रहणं गृणीषे शर्वसस्पतिम् । इन्द्रं विश्वासाहं नरं मंहिष्ठं विश्वचर्षणिम्	४
यं वर्धयंतीद् गिरः पतिं तुरस्य राधसः । तमिन्द्रस्य रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः	५ २०४०
तद् व उक्थस्य बर्हणेन्द्रायोपस्तुणीषणि ।	
विपो न यस्योतयो वि यद् रोहति सक्षितः	६
अर्विवुद् दक्षं मित्रो नवीयान् पपानो देवेभ्यो वस्यो अचैत् ।	
ससवान्स्तौलाभिर्धौतरीभि रुरुण्या पायुरभवत् सखिभ्यः	७
ऋतस्य पथि वेधा अपायि श्रिये मनांसि देवासो अक्रन् ।	
दधानो नाम महो वचोभिर्वपुर्हृशये वेन्यो व्यावः	८
द्युमत्तमं दक्षं धेह्यस्मे सेधा जनानां पूर्वीररातीः ।	
वर्षीयो वर्यः कृणुहि शचीभिर्धनस्य सातावस्माँ अविद्धि	९
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्नभूम वयं द्वात्रे हरिवो मा वि वेनः ।	
नकिरापिर्दृशे मर्त्यत्रा किमङ्ग रध्रचोदनं त्वाहुः	१० २०४५
मा जस्वने वृषभ नो ररीथा मा ते रेवतः सरुये रिषाम ।	
पूर्वीष्टं इन्द्र निषिधो जनेषु जह्यसुष्वीन् प्र ब्रुहापृणतः	११
उदुभ्राणीव स्तनयन्नियतीन्द्रो राधांस्यश्व्यानि गव्यां ।	
त्वमांसि प्रदिवः कारुधाया मा त्वादामान आ दभन् मघोनः	१२

अध्वर्यो वीर प्र महे सुताना—मिन्द्राय भर स ह्यस्य राजा ।		
यः पुर्व्याभिरुत नूतनाभि—र्गीभिर्वीवृधे गृणतामृषीणाम्	१३	
अस्य मदे पुरु वर्षीसि विद्रा—निन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान ।		
तमु प्र होषि मधुमन्तमस्मै सोमं वीराय शिप्रिणे पिबध्वै	१४	
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमं हन्ता वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।		
गन्ता यज्ञं परावतश्चिदच्छा वसुधीनामविता कारुधायाः	१५	२०५०
इदं त्यत् पात्रमिन्द्रपान—मिन्द्रस्य प्रियममृतमपायि ।		
मत्सद् यथा सौमनसाय देवं व्यस्मद् द्वेषो युयवद् व्यहः	१६	
एना मँवानो जहि शूर शत्रू—आमिमजामिं मघवन्नमित्रान् ।		
अभिषेणौ अभ्यादेदिशानान् पराच इन्द्र प्र मृणा जही च	१७	
आसु ष्मा णो मघवन्निन्द्र पृ—त्स्वस्मभ्यं महि वरिवः सुगं कः ।		
अपां तोकस्य तनयस्य जेष इन्द्र सूरिन् कृणुहि स्मा नो अर्धम्	१८	
आ त्वा हरयो वृषणो युजाना वृषरथासो वृषरश्मयोऽत्याः ।		
अस्मत्त्राओ वृषणो वज्रवाहो वृष्णे मदाय सुयुजो वहन्तु	१९	
आ ते वृषन् वृषणो द्रोणमस्थु—धृतप्रुषो नोर्मयो मदन्तः ।		
इन्द्र प्र तुभ्यं वृषभिः सुतानां वृष्णे भरन्ति वृषभाय सोमम्	२०	२०५५
वृषासि द्विवो वृषभः पृथिव्या वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियाणाम् ।		
वृष्णे त इन्दुर्वृषभ पीपाय स्वाद्र रसो मधुपेयो वराय	२१	
अयं देवः सहसा जायमान इन्द्रेण युजा पणिमस्तभायत् ।		
अयं स्वस्य पितुरायुधानी—न्दुरमुष्णादशिवस्य मायाः	२२	
अयमकृणोद्वषसः सुपत्नी—रयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।		
अयं त्रिधातुं द्विवि रोचनेषु त्रितेषु विन्दुमृतं निगूळहम्	२३	
अयं द्यावापृथिवी वि ष्कभाय—द्वयं रथमयुनक् सप्तरीश्मिम् ।		
अयं गोषु शच्या पक्रमन्तः सोमो दाधार दशयन्त्रमुत्सम्	२४	

॥ १८८ ॥ (ऋ० ६।४।५।१-३०) गायत्री, २९ अतिनिवृत्त ।

य आनयत् परावतः सुनीती तुर्वशं यदुम् । इन्द्रः स नो युवा सखा	१	२०६०
अविप्रे चिद् वयो दध—दनाशुना चिदर्वता । इन्द्रो जेता हितं धनम्	२	

महीरस्य प्रणीतयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः	। नास्य क्षीयन्त ऊतयः	३	
सखायो ब्रह्मवाहसे ऽर्चत प्र च गायत	। स हि नः प्रमतिर्मही	४	
त्वमेकस्य वृत्रह—न्नविता द्वयोरसि	। उतेदृशे यथा वयम्	५	
नयसीद्वति द्विषः कृणोष्युक्थशंसिनः	। नृभिः सुवीर उच्यसे	६	२०६५
ब्रह्माणं ब्रह्मवाहसं गीर्भिः सखायमृगमियम्	। गां न द्रोहसे हुवे	७	
यस्य विश्वानि हस्तयो—रुचुर्वसूनि नि द्विता	। वीरस्य पृतनाषहः	८	
वि हृळ्हानि चिदद्विवो जनानां शचीपते	। बृह माया अनानत	९	
तमु त्वा सत्य सोमपा इन्द्र वाजानां पते	। अहूमहि श्रवस्यवः	१०	
तमु त्वा यः पुरासिंथ यो वा नूनं हिते धने	। हव्यः स श्रुधी हवम्	११	२०७०
धीभिरर्वन्द्रिर्वतो वाजो इन्द्र श्रवाय्यान्	। त्वया जेष्म हितं धनम्	१२	
अभूरु वीर गिर्वणो महो इन्द्र धने हिते	। भरे वितन्तसार्यः	१३	
या त ऊतिरमित्रहन् मक्षूजवस्तमासति	। तया नो हिनुही रथम्	१४	
स रथेन रथीतमो ऽस्माकेनाभियुग्वना	। जेषि जिष्णो हितं धनम्	१५	
य एक इत् तमु ष्टुहि ऋष्टीनां विचर्षणिः	। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः	१६	२०७५
यो गृणतामिदासिंथा—ऽऽपिरुती शिवः सखा	। स त्वं न इन्द्र मुळय	१७	
धिष्व वज्रं गर्भस्त्यो रक्षोहत्याय वज्रिवः	। सासहीष्ठा अभि स्पृधः	१८	
प्रत्नं रयीणां युजं सखायं कीरिचोदनम्	। ब्रह्मवाहस्तमं हुवे	१९	
स हि विश्वानि पार्थिवाँ एको वसूनि पत्यते	। गिर्वणस्तमो अभिगुः	२०	
स नो नियुद्धिरा पृण कामं वाजेभिरश्विभिः	। गोमद्भिर्गोपते धृषत्	२१	२०८०
तद् वो गाय सुते सचा पुरुहूताय सत्वने	। शं यद् गवे न शाकिने	२२	
न घा वसुनि रयमते दानं वाजस्य गोमंतः	। यत् सीमुप श्रवद् गिरः	२३	
कुवित्सस्य प्र हि ब्रजं गोमन्तं दस्युहा गर्भत्	। शचीभिरप नो वरत्	२४	
इमा उ त्वा शतक्रतो ऽभि प्र णोनुवुर्गिरः	। इन्द्र वत्सं न मातरः	२५	
दूणाशं सख्यं तव गौरसि वीर गव्यते	। अश्वो अश्वायते भव	२६	२०८५
स मन्दस्वा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे	। न स्तोतारं निदे करः	२७	
इमा उ त्वा सुतेसुते नक्षन्ते गिर्वणो गिरः	। वत्सं गावो न धेनवः	२८	
पुरुतमं पुरुणां स्तोतृणां विवाचि	। वाजेभिर्वाजयताम्	२९	
अस्माकमिन्द्र भूत ते स्तोमो वाहिष्ठो अन्तमः। अस्मान् राये महे हिनु		३०	

॥ १८९ ॥ (ऋ० ६।४६।१-१४) प्रगाथः (= विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

त्वामिद्धि हवामहे साता वाजस्य कारवः ।		
त्वां वृत्रेष्विन्द्र सत्पतिं नर—स्त्वां काष्ठास्वर्वतः	१	२०९०
स त्वं नश्चित्र वज्रहस्त धृष्णुया महः स्तवानो अद्रिवः ।		
गामश्वं रथ्यमिन्द्र सं किर सत्रा वाजं न जिग्युषे	२	
यः सत्राहा विचर्षणि—रिन्द्रं तं हूमहे वयम् ।		
सहस्रमुष्क तुर्विन्मण सत्पते भवा समत्सु नो वृधे	३	
बाधसे जनान् वृषभेव मन्युना घृषौ मीळ्ह क्रीचीषम ।		
अस्माकं बोध्यविता महाधने तनूष्वप्सु सूर्ये	४	
इन्द्र ज्येष्ठं न आ भरं ओजिष्ठं पपुंरि श्रवः ।		
येनेमे चित्र वज्रहस्त रोदसी ओभे सुशिप्र प्राः	५	
त्वामुग्रमवसे चर्षणीसहं राजन् देवेषु हूमहे ।		
विश्वा सु नो विथुरा पिबुना वसो ऽमित्रान्सुषहान् कृधि	६	२०९५
यदिन्द्र नाहुषीष्वा ओजो नृम्णं च कृष्टिषु ।		
यद् वा पञ्च क्षितीनां द्युम्नमा भर सत्रा विश्वानि पौस्या	७	
यद् वा तृक्षौ मघवन् दुह्यावा जने यत् पूरौ कच्च वृष्ण्यम् ।		
अस्मभ्यं तद् रिरीहि सं नृषाह्ये ऽमित्रान् पूत्सु तुर्वणे	८	
इन्द्र त्रिधातुं शरणं त्रिवरूथं स्वस्तिमत् ।		
छर्दियच्छ मघवद्भ्यश्च मह्यं च यावया दिद्युर्मेभ्यः	९	
ये गव्यता मनसा शत्रुमादभु—रभिप्रघ्नन्ति धृष्णुया ।		
अध स्मा नो मघवन्निन्द्र गिर्वण—स्तनूपा अन्तमो भव	१०	
अध स्मा नो वृधे भवे—न्द्र नायमवा युधि ।		
यदुन्तरिक्षे प्रतरन्ति पर्णिनो दिद्यवस्तिग्ममूर्धानः	११	२१००
यत्र शूरांसस्तन्वो वितन्वते प्रिया शर्म पितृणाम् ।		
अध स्मा यच्छ तन्वेऽ तने च छर्दि—रचित्तं यावय द्वेषः	१२	
यदिन्द्र सर्गे अर्वत—श्चोदयासे महाधने ।		
असमने अध्वनि वृजिने पथि श्येनाँ इव श्रवस्यतः ।	१३	
सिन्धूरिव प्रवण आश्रुया यतो यद्वि क्लोशमनु ष्वणि ।		
आ ये वयो न वर्वतत्यामिषि गृभीता ब्राह्मोर्गीर्वि	१४	२१०३

॥ १९० ॥ (ऋ० ६।४७।६-१९; २१) (२१०४-२११८) गगौ भारद्वाजः । त्रिष्टुप्; १९ बृहती ।

धूषत् पिब कलशे सोममिन्द्र वृत्रहा शूर समरे वसूनाम् ।		
माध्यंदिने सर्वन् आ वृषस्व रयिस्थानो रयिमस्मासु धेहि	६	
इन्द्र प्र णः पुरएतेव पश्य प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।		
भवा सुपारो अतिपारयो नो भवा सुनीतिरुत वामनीतिः	७	२१०५
उरुं नो लोकमनु नेषि विद्वान् त्वर्वज्ज्योतिरभयं स्वस्ति ।		
ऋषा त इन्द्र स्थविरस्य बाहू उप स्थेयाम शरणा बृहन्ता	८	
वरिष्ठे न इन्द्र वन्धुरे धा वहिष्ठयोः शतावन्नश्वयोरा ।		
इषमा वक्षीषां वर्षिष्ठां मा नस्तारीन्मघवन् रायो अर्यः	९	
इन्द्र मूळ मह्यं जीवार्तुमिच्छ चोदय धियमयसो न धाराम् ।		
यत् किं चाहं त्वायुरिदं वदामि तज्जुषस्व कृधि मा देववन्तम्	१०	
ज्ञातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रं हवेहवे सुहवं शूरमिन्द्रम् ।		
ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रं स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः	११	
इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृलीको भवतु विश्ववेदाः ।		
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोत सुवीर्यस्य पतयः स्याम	१२	२११०
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्याऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।		
स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्छिद् द्वेषः सनुतयुयोतु	१३	
अव त्वे इन्द्र प्रवतो नोर्मि-गिरी ब्रह्माणि नियतो धवन्ते ।		
उरु न राधः सर्वना पुरुष्यपो गा वज्रिन् युवसे समिन्दून्	१४	
क ई स्तवत् कः पूणात् को यजाते यदुग्रमिन्मघवा विश्वहावेत् ।		
पादाविव प्रहरन्नन्यमन्यं कृणोति पूर्वमपरं शचीभिः	१५	
शृण्वे वीर उग्रमुग्रं दमायन्नन्यमन्यमतिनेनीयमानः ।		
एधमानद्विष्टुभयस्य राजा चोष्कूयते विश इन्द्रो मनुष्यान्	१६	
परा पूर्वेषां सख्या वृणक्ति वितर्तुराणो अपरेभिरेति ।		
अनानुभूतीरवधून्वानः पूर्वीरिन्द्रः शरदस्तर्तरीति	१७	२११५
रूपंरूपं प्रतिरूपो बभूव तदस्य रूपं प्रतिचक्षणाय ।		
इन्द्रो मायाभिः पुरुरूप ईयते युक्ता ह्यस्य हरयः शता दश	१८	
युजानो हरिता रथे भूरि त्वष्टेह राजति ।		
को विश्वाहा द्विषतः पक्ष आसत उतासीनेषु सुरिषु	१९	

द्विवेदिवे सद्दशीरन्यमर्धं कृष्णा असेधदप सञ्जनो जाः ।

अहन् द्वासा वृषभो वस्नयन्तो द्रजे वर्चिनं शम्बरं च

२१

२११८

॥ १९१ ॥ (ऋ० ७।१८।१-२१) (२११९-२२९२) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप ।

त्वे ह यत् पितरंश्चिन्न इन्द्र विश्वा वामा जरितारो असन्वन् ।

त्वे गावः सुदुद्यास्त्वे ह्यश्वा स्त्वं वसु देवयते वनिष्ठः

१

राजैव हि जनिभिः क्षेप्येवाऽव द्युभिरभि विदुष्कविः सन् ।

पिशा गिरो मघवन् गोभिरश्वैः स्त्वायतः शिशीहि राये अस्मान्

२

२१२०

इमा उ त्वा पस्पृधानासो अत्र मन्द्रा गिरो देवयन्तीरुप स्थुः ।

अर्वाचीं ते पथ्या राय एतु स्याम ते सुमतार्विन्द्र शर्मन्

३

धेनुं न त्वा सूर्यवसे दुदुक्षन्नुप ब्रह्माणि ससृजे वसिष्ठः ।

त्वामिन्मे गोपतिं विश्व आहा ऽऽ न इन्द्रः सुमतिं गन्त्वच्छ

४

अर्णांसि चित् पप्रथाना सुदास इन्द्रो गाधान्यकृणोत् सुपारा ।

शर्धन्तं शिभ्युमुचथस्य नव्यः शापं सिन्धूनामकृणोदशस्तीः

५

पुरोळा इत् तुर्वशो यक्षुरासीद् राये मत्स्यासो निशिता अपीव ।

श्रुष्टिं चक्रुर्भृगवो द्रुह्यवश्च सखा सखायमतरद् विषूचोः

६

आ पक्थासो भलानसो भनन्ता ऽलिनासो विषाणिनः शिवासः ।

आ योऽनयत् सधमा आर्यस्य गव्या तृत्सुभ्यो अजगन् युधा नृन्

७

२१२५

दुराध्योऽ आदितिं स्नेवयन्तो ऽचेतसो वि जगृभ्रे परुष्णीम् ।

मह्नाविव्यक् पृथिवीं पत्यमानः पशुक्विरंशयच्चार्यमानः

८

इयुरर्थं न न्यर्थं परुष्णी माशुश्चनेर्दभिपित्वं जगाम ।

सुदास इन्द्रः सुतुकां अमित्रा नरन्धयन्मानुषे वार्धवाचः

९

इयुर्गावो न यवसादगोपा यथाकृतमभि मित्रं चितासः ।

पृश्निगावः पृश्निनिप्रेषितासः श्रुष्टिं चक्रुर्नियुतो रन्तयश्च

१०

एकं च यो विशतिं च श्रवस्या वैकर्णयोजनान् राजा न्यस्तः ।

दुस्मो न सञ्जन् नि शिशाति बर्हिः शूरः सर्गमकृणोदिन्द्र एषाम्

११

अर्धं श्रुतं कवषं वृद्धमप्स्व नु दुह्युं नि वृणग्वज्रबाहुः ।

वृणाना अत्र सखायं सख्यं त्वायन्तो ये अमदुन्ननु त्वा

१२

२१३०

वि सद्यो विश्वा हंहितान्येषा मिन्द्रः पुरः सहसा सप्त दर्दः ।

व्यानवस्य तृत्सवे गयं भाग् जेष्म पुरुं विदथे मध्रवाचम्

१३

नि गव्यवोऽनवो ब्रुहवश्च षष्टिः शता सुषुपुः षट् सहस्रा । षष्टिर्वीरासो अधि षड् दुवोयु विश्वेदिन्द्रस्य वीर्या कृतानि	१४
इन्द्रेणैते तृत्सवो वेविषाणा आपो न सृष्टा अधवन्त नीचीः । दुर्मित्रासः प्रकलविन्मिमाना जहुर्विश्वानि भोजना सुदासे	१५
अर्धं वीरस्य शृतपामनिन्द्रं परा शर्धन्तं नुनुदे अभि क्षाम् । इन्द्रो मन्युं मन्युम्यो मिमाय भेजे पथो वर्तनिं पत्यमानः	१६
आध्रेण चित् तद्वेकं चकार सिंहां चित् पेत्वेना जघान । अव स्रक्तीर्वेश्यावृश्चदिन्द्रः प्रायच्छद् विश्वा भोजना सुदासे	१७
शश्वन्तो हि शत्रवो रारधुष्टे भेदस्य चिच्छर्धतो विन्दु रन्धिम् । मर्ता एनः स्तुवतो यः कृणोति तिग्मं तस्मिन् नि जहि वज्रमिन्द्र	१८
आवदिन्द्रं यमुना तृत्सवश्च प्रात्र भेदं सर्वताता मुषायत् । अजासश्च शिश्रवो यक्षवश्च बलिं शीर्षाणि जभुरश्व्यानि	१९
न त इन्द्र सुमतयो न रायः संचक्षे पूर्वा उषसो न नूताः । देवकं चिन्मान्यमानं जघन्थाऽव त्मना बृहतः शम्बरं भेत्	२०
प्र ये गृहादर्ममदुस्त्वाया पराशरः शतयातुर्वसिष्ठः । न ते भोजस्य सख्यं मृषन्ताऽधा सूरिभ्यः सुदिना व्युच्छान्	२१

॥ १९२ ॥ (क्र० ७।१९।१-११)

यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो न भीम एकः कृष्टीश्च्यावयति प्र विश्वाः । यः शश्वतो अदाशुषो गयस्य प्रयन्तासि सुष्वितराय वेदः	१
त्वं ह त्यदिन्द्र कुत्समावः शुश्रूषमाणस्तन्वा समर्थे । दासं यच्छुष्णं कुर्यवं न्यस्मा अरन्धय आर्जुनेयाय शिक्षन्	२
त्वं धृष्णो धृषता वीतहव्यं प्रावो विश्वाभिरुतिभिः सुदासम् । प्र पौरुकुत्सिं त्रसदस्युमावः क्षेत्रसाता वृत्रहत्येषु पूरुम्	३
त्वं नृभिर्नृमणो देववीतौ भूरीणि वृत्रा हर्यश्च हंसि । त्वं नि दस्युं चुर्मुरिं धुनिं चाऽस्वापयो दुभीतये सुहन्तु	४
तव च्यौत्तानि वज्रहस्त तानि नव यत् पुरो नवतिं च सद्यः । निवेशनि शततमाविवेधीरहश्च वृत्रं नमुचिमुताहन्	५
सना ता त इन्द्र भोजनानि रातहव्याय दाशुषे सुदासे । वृष्णे ते हरी वृषणा युनज्मि व्यन्तु ब्रह्माणि पुरुशाक् वाजम्	६

२१३५

२१४०

२१४५

मा ते अस्यां सहसावन् परिष्टा—वृधाय भूम हरिवः परादे ।	
त्रायस्व नोऽवृकेभिर्वरुथै—स्तव प्रियासः सुरिषु स्याम	७
प्रियास इत् ते मघवन्नभिष्टौ नरो मदेम शरणे सखायः ।	
नि तुर्वशं नि याद्वं शिशी—ह्यतिथिग्वाय शंस्यं करिष्यन्	८
सद्यश्चिन्तु ते मघवन्नभिष्टौ नरः शंसन्त्युक्थशास उक्था ।	
ये ते हवोभिर्वि पूर्णीरदाश—न्नस्मान् वृणीष्व युज्याय तस्मै	९
एते स्तोमा नरां नूतम तुभ्य—मस्मद्यञ्चो ददतो मघानि ।	
तेषामिन्द्र वृत्रहत्ये शिवो भूः सखा च शूरोऽविता च नृणाम्	१०
नू इन्द्र शूर स्तवमान ऊती ब्रह्मजतस्तन्वा वावृधस्व ।	
उप नो वाजान् मिमीह्युप स्तीन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	११ २१५०

॥ १९३ ॥ (ऋ० ७।२०।१-१०)

उग्रो जज्ञे वीर्याय स्वधावा—ञ्चक्रिरपो नर्यो यत् करिष्यन् ।	
जग्मिर्युवा नृषदन्मवोभि—स्त्राता न इन्द्र एनसो महश्चित्	१
हन्ता वृत्रमिन्द्रः शूशुवानः प्रावीन्तु वीरो जरितारमूती ।	
कर्ता सुदासे अह वा उ लोकं दाता वसु मुहुरा दाशुषे भूत	२
युध्मो अनर्वा खजकृत् समद्वी शूरः सत्राषाड् जनुषेमषाळहः ।	
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा अधा विश्वं शत्रूयन्तं जघान	३
उभे चिदिन्द्र रोदसी महित्वा ऽऽ पंप्राथ तविषीभिस्तुविष्मः ।	
नि वज्रमिन्द्रो हरिवान् मिमिक्षन् त्समन्धसा मदेषु वा उवोच	४
वृषा जजान् वृषणं रणाय तमु चिन्नारी नर्यं ससूव ।	
प्र यः सेनानीरध नृभ्यो अस्ती—नः सत्वा गवेषणः स धृष्णुः	५ २१५५
नू चित् स भ्रेषते जनो न रेषन् मनो यो अस्य घोरमाविवासात् ।	
यज्ञैर्य इन्द्रे दधते दुवांसि क्षयत् स राय क्रतुपा क्रतेजाः	६
यदिन्द्र पूर्वा अपराय शिक्ष—न्नयज्ज्यायान् कनीयसो दुष्णम् ।	
अमृत इत् पर्यासीत दूर—मा चित्र चित्र्यं भरा रयिं नः	७
यस्त इन्द्र प्रियो जनो ददाश—दसन्निरेके अद्रिवः सखा ते ।	
वयं ते अस्यां सुमतौ चनिष्टाः स्याम वरुथे अन्नतो नृपीतौ	८
एष स्तोमो अचिक्रदुद् वृषा त उत स्तामुर्मघवन्नक्रपिष्ट ।	
रायस्कामो जरितारं त आगन् त्वमङ्ग शक्र वस्व आ शको नः	९

स न इन्द्र त्वयताया इषे धा—स्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।

वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१०

२१६०

॥ १९४ ॥ (ऋ० ७।२१।१-१०)

असावि देवं गोक्रजीकमन्धो न्यस्मिन्निन्द्रो जनुषेमुवोच ।

बोधामसि त्वा हर्यश्व यज्ञै—र्बोधा नः स्तोममन्धसो मर्देषु

१

प्र यन्ति यज्ञं विपर्यन्ति बर्हिः सोममादो विदथे दुधवाचः ।

न्यु भ्रियन्ते यशसो गृभादा दूरउपब्दो वृषणो नृषाचः

२

त्वमिन्द्र सवितृवा अपस्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वीः ।

त्वद् वावके रथ्योऽं न धेना रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि भीषा

३

भीमो विवेषायुधेभिरेषा—मपांसि विश्वा नर्याणि विद्वान् ।

इन्द्रः पुरो जहृषाणो वि दूधोत् वि वज्रहस्तो महिना जघान

४

न यातव इन्द्र जूजुवुर्नो न वंदना शविष्ठ वेद्याभिः ।

स शर्धदुर्यो विषुणस्य जंतो—र्मा शिश्रदेवा अपि गुर्कतं नः

५

२१६५

अभि क्रत्वेंद्र भूरध जमन् न ते विव्यङ् महिमानं रजांसि ।

स्वेना हि वृत्रं शर्वसा जघंथ न शत्रुरंतं विविदद् युधा ते

६

देवाश्चित् ते असुर्याय पूर्वे ऽनु क्षत्राय ममिरे सहांसि ।

इन्द्रो मघानि दयते विषह्ये—द्रं वाजस्य जोहुवत सातौ

७

कीरिश्चिद्धि त्वामवसे जुहावे—शानमिन्द्र सौभगस्य भूरैः ।

अवो बभूथ शतमूते अस्मे अभिक्षत्तुस्त्वावतो वरूता

८

सखायस्त इन्द्र विश्वह स्याम नमोवृधासो महिना तरुत्र ।

वन्वन्तु स्मा तेऽवसा समीके—ऽभीतिमर्यो वनुषां शवांसि

९

स न इन्द्र त्वयताया इषे धा—स्मना च ये मघवानो जुनन्ति ।

वस्वी षु ते जरित्रे अस्तु शक्ति—र्युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१०

२१७०

॥ १९५ ॥ (ऋ० ७।२१।१-९) विराट्, ९ त्रिष्टुप् ।

पिबा सोममिन्द्र मंदतु त्वा यं ते सुषाव हर्यश्वाद्रिः । सोतुर्बाहुभ्यां सुर्यतो नावी

१

यस्ते मवो युज्यश्चारुरस्ति येन वृत्राणि हर्यश्वा हंसि । स त्वामिन्द्र प्रभूवसो ममत्तु

२

बोधा सु मे मघवन् वाचमेमां यां ते वसिष्ठो अर्चति प्रशस्तिम् । इमा ब्रह्म सधमादे जुषस्व

३

श्रुधी हवं विपिपानस्याद्वे—र्बोधा विप्रस्यार्चतो मनीषाम् । कृष्वा दुवांस्यन्तमा सचेमा

४

न ते गिरो अपि मृष्ये तुरस्य न सुष्टुतिमसुर्यस्य विद्वान् । सदा ते नाम स्वयशो विवक्मि ५ २१७५

भूरि हि ते सर्वना मानुषेषु भूरि मनीषी हवते त्वामित् । मारे अस्मन्मघवञ्जयोक् कः ६
 तुभ्येदिमा सर्वना शूर विश्वा तुभ्यं ब्रह्माणि वर्धना कृणोमि । त्वं नृभिर्हव्यो विश्वधासि ७
 नू चिन्तु ते मन्यमानस्य दुस्मो—दश्रुवन्ति महिमानमुग्र । न वीर्यमिन्द्र ते न राधः ८
 ये च पूर्व ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः ।
 अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ९

॥ १९६ ॥ (ऋ० ७।२३।१-६)

उदु ब्रह्माण्यैरत श्रवस्ये—न्द्रं समर्थे महया वसिष्ठ ।
 आ यो विश्वानि शर्वसा ततानो—पश्रोता म ईवतो वचांसि १ २१८०
 अयामि घोष इन्द्र देवजामि—रिरज्यन्त यच्छुरुधो विवाचि ।
 नहि स्वमायुश्चिकित्ते जनेषु तानीदंहांस्यति पश्यस्मान् २
 युजे रथं गवेषणं हरिभ्या—मुप ब्रह्माणि जुषाणमस्थुः ।
 वि बाधिष्ट स्य रोदसी महित्वे—न्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ३
 आपाश्चित् पिप्युः स्तर्यो—न गावो नक्षत्रातं जरितारस्त इन्द्र ।
 याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छा त्वं हि धीभिर्दयसे वि वाजान् ४
 ते त्वा मदा इन्द्र मादयन्तु शुष्मिणं तुविराधसं जरित्रे ।
 एको देवत्रा दयसे हि मर्तो—नस्मिञ्छूरं सर्वने मादयस्व ५
 एवेदिन्द्रं वृषणं वज्रबाहुं वसिष्ठासो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
 स नः स्तुतो वीरवद् धातु गोमद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६ २१८५

॥ १९७ ॥ (ऋ० ७।२४।१-६)

योनिष्ट इन्द्र सदर्ने अकारि तमा नृभिः पुरुहूत प्र याहि ।
 असो यथा नोऽविता वृधे च ददो वसूनि ममदश्च सोमैः १
 गृभीतं ते मन इन्द्र द्विबर्हीः सुतः सोमः परिषिक्ता मधूनि ।
 विसृष्टधेना भरते सुवृक्ति—रियमिन्द्रं जोहुवती मनीषा २
 आ नो द्विव आ पृथिव्या ऋजीषि—न्निदं बर्हिः सोमपेयाय याहि ।
 वहन्तु त्वा हरयो मद्राश्च—माङ्गूषमच्छा तवसं मदाय ३
 आ नो विश्वाभिहृतिभिः सजोषा ब्रह्म जुषाणो हर्यश्च याहि ।
 वरीवृजत् स्थविरोभिः सुशिप्रा—ऽस्मे दधद् वृषणं शुष्ममिन्द्र ४
 एष स्तोमो मह उग्राय वाहे धुरी—वात्यो न वाजयन्नाधायि ।
 इन्द्र त्वायमर्क ईडे वसूनां दिवीव द्यामधि नः श्रोमतं धाः ५ २१९०

एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धिं प्र ते महीं सुमतिं वैविदाम ।
इषं पिन्व मघवन्धः सुवीरां युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

६

॥ १९८ ॥ (ऋ० ७।२५।१-६)

आ ते मह इन्द्रोत्युग्र समन्यवो यत् समरन्त सेनाः ।
पताति द्रिद्युन्नर्यस्य बाहोर्मा ते मनो विष्वद्यग्वि चारीत
नि दुर्ग इन्द्र श्रथिह्यमित्रा नभि ये नो मतीसो अमन्ति ।
आरे तं शंसं कृणुहि निनिस्सोरा नो भर संभरणं वसूनाम्
ज्ञतं ते शिप्रिन्नृतयः सुदासे सहस्रं शंसा उत रातिरस्तु ।
जहि वर्धर्वनुषो मर्त्यस्याऽस्मे द्युमन्मधि रत्नं च धेहि
त्वावतो हीन्द्र क्रत्वे अस्मि त्वावतोऽवितुः शूर रातौ ।
विश्वेदहानि तविषीव उग्रं ओकः कृणुष्व हरिवो न मर्धीः
कुत्सा एते हर्यश्वाय शूषमिन्द्रे सहो देवजूतमियानाः ।
सत्रा कृधि सुहना शूर वृत्रा वयं तरुत्राः सनुयाम वाजम्
एवा न इन्द्र वार्यस्य पूर्धिं प्र ते महीं सुमतिं वैविदाम ।
इषं पिन्व मघवन्धः सुवीरां युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१

२

३

४

११९५

५

६

॥ १९९ ॥ (ऋ० ७।२६।१-५)

न सोम इन्द्रमसुतो ममादु नाब्रह्माणो मघवानं सुतासः ।
तस्मा उक्थं जनये यज्जुजोष नृवन्नवीयः शृणवद् यथा नः
उक्थउक्थे सोम इन्द्रं ममाद नीथेनीथे मघवानं सुतासः ।
यदी सबाधः पितरं न पुत्राः समानदक्षा अवसे हवन्ते
चकार ता कृणवन्नूनमन्या यानि ब्रुवन्ति वेधसः सुतेषु ।
जनीरिव पतिरेकः समानो नि मांभुजे पुर इन्द्रः सु सर्वाः
एवा तमाहुरुत शृण्व इन्द्र एको विभक्ता तरणिर्मघानाम् ।
मिथस्तुर ऊतयो यस्य पूर्वी रस्मे भद्राणि सश्रत प्रियाणि
एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये नृन् कृष्टीनां वृषभं सुते गृणाति ।
सहस्रिण उप नो माहि वाजान् युयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

१

२

३

११९००

४

५

॥ २०० ॥ (ऋ० ७।२७।१-५)

इन्द्रं नरो नेमर्धिता हवन्ते यत् पार्यो युनर्जते धियस्ताः ।
शूरो नृषाता शवसश्चक्रान् आ गोमति ब्रजे भजा त्वं नः

१

य इन्द्र शुष्मो मघवन् ते अस्ति शिक्षा सखिभ्यः पुरुहूत नृभ्यः ।

त्वं हि हृळ्हा मघवन् विचेता अपा वृधि परिवृतं न राधः २

इन्द्रो राजा जगतश्चर्षणीनामधि क्षमि विषुरूपं यदस्ति ।

ततो ददाति दाशुषे वसूनि चोदद् राध उपस्तुतश्चिदुर्वाक् ३ २२०५

नू चिन्न इन्द्रो मघवा सहृती दानो वाजं नि यमते न ऊती ।

अनूना यस्य दक्षिणा पीपाय वामं नृभ्यो अभिवीता सखिभ्यः ४

नू इन्द्र राये वरिवस्कृधी न आ ते मनो ववृत्याम मघाय ।

गोमदश्वावद् रथवद् व्यन्तो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०१ ॥ (ऋ० ७।२८।१-५)

ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि विद्रा नर्वाञ्चस्ते हरयः सन्तु युक्ताः ।

विश्वे चिद्धि त्वा विहवन्त मती अस्माकमिच्छृणुहि विश्वमिन्व १

हवं त इन्द्र महिमा व्यानङ् ब्रह्म यत् पासि शवसिचृषीणाम् ।

आ यद् वज्रं दधिषे हस्त उग्र घोरः सन् क्रत्वा जनिष्ठा अषाळ्हः २

तव प्रणीतीन्द्र जोहुवानान् त्सं यन्नू न रोदसी निनेथ ।

महे क्षत्राय शवसे हि जज्ञे ऽतूतुजि चित् तूतुजिरशिश्नत् ३ २२१०

एभिर्न इन्द्राहर्भिर्दशस्य दुर्मित्रासो हि क्षितयः पवन्ते ।

प्रति यच्चष्टे अनृतमनेना अव द्विता वरुणो मायी नः सात् ४

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०२ ॥ (ऋ० ७।२९।१-५)

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्व आ तु प्र याहि हरिस्तदोकाः ।

पिन्ना त्वस्य सुपुतस्य चारो ददो मघानि मघवान्नियानः १

ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृतिं जुषाणो ऽर्वाचीनो हरिभिर्याहि तूयम् ।

अस्मिन्नू षु सर्वने मादयस्वोप ब्रह्माणि शृणव इमा नः २

का ते अस्त्यरंकृतिः सूक्तैः कदा नूनं ते मघवन् दाशेम ।

विश्वा मतीरा ततने त्वाया ऽर्धा म इन्द्र शृणवो हवेमा ३ २२१५

उतो घा ते पुरुष्या इदासन् येषां पूर्वेषामशृणोर्कषीणाम् ।

अधाहं त्वा मघवञ्जोहवीमि त्वं न इन्द्रासि प्रमतिः पितेव ४

वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।

यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्ठो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ५

॥ २०३ ॥ (ऋ० ७।३०।१-५)

आ नो देव शर्वसा याहि शुभिन् भवा वृध इन्द्र रायो अस्य ।	
महे नृम्णाय नृपते सुवज्र महि क्षत्राय पौंस्याय शूर	१
हवन्त उ त्वा हव्यं विधाचि तनूषु शूराः सूर्यस्य सातौ ।	
त्वं विश्वेषु सेन्यो जनेषु त्वं वृत्राणि रन्धया सुहन्तु	२
अहा यदिन्द्र सुदिना व्युच्छान् दधो यत् केतुमुपमं समत्सु ।	
न्यग्निः सीदुदसुरो न होता हुवानो अत्र सुभगाय देवान्	३
वयं ते त इन्द्र ये च देव स्तवन्त शूर ददतो मघानि ।	
यच्छा सूरिभ्य उपमं वरूथं स्वाभुवो जरणामश्रवन्त	४
वोचेमेदिन्द्रं मघवानमेनं महो रायो राधसो यद् ददन्नः ।	
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्टो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	५

२२२०

॥ २०४ ॥ (ऋ० ७।३१।१-१२) गायत्री, १०-१२ विराट् ।

प्र व इन्द्राय मारदन् हर्यश्वाय गायत । सखायः सोमपात्रे	१
शंसेदुक्थं सुदानव उत द्युक्षं यथा नरः । चकूमा सत्यराधसे	२
त्वं न इन्द्र वाज्युस्त्वं गव्युः शतक्रतो । त्वं हिरण्ययुर्वसो	३
वयमिन्द्र त्वायवो ऽभि प्र णोनुमो वृषन् । विन्द्री त्वस्य नो वसो	४
मा नो निदे च वक्तवे ऽर्यो रन्धीररावणे । त्वे अपि क्रतुर्मम	५
त्वं वर्मासि सप्रथः पुरोयोधश्च वृत्रहन् । त्वया प्रति ब्रुवे युजा	६
महो उतासि यस्य ते ऽनु स्वधावरी सहः । नम्राते इन्द्र रोदसी	७
तं त्वा मरुत्वती परि भुवद् वाणीं स्यावरी । नक्षमाणा सह द्युभिः	८
ऊर्ध्वासुस्त्वान्विन्दवो भुवन् द्रुममुप द्यवि । सं ते नमन्त कृष्टयः	९
प्र वो महे महिवृधे भरध्वं प्रचेतसे प्र सुमतिं कृणुध्वम् । विशः पूर्वीः प्र चरा चर्षणिप्राः	१०
उरुव्यचसे महिर्मे सुवृक्तिमिन्द्राय ब्रह्म जनयन्त विप्राः । तस्य व्रतानि न मिनन्ति धीराः	११
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव सत्रा राजानं दधिरे सहधै । हर्यश्वाय बर्हया समापीन्	१२

२२३०

॥ २०५ ॥ (ऋ० ७।३२।१-२७) २६ पूर्वार्धवर्षस्य शक्तिर्वासिष्ठो वा (शाठ्यायने ब्राह्मणे); २६-२७ शक्तिर्वासिष्ठो वा (ताण्डके ब्राह्मणे) । प्रगाथः- (बृहती, सतोबृहती), ३ द्विपदा विराट् ।

मो पु त्वा वाघतश्चना ऽऽरे अस्मन्नि रीरमन् ।	
आरात्ताञ्चित् सधमादं न आ गहीह वा सन्नप श्रुधि	१
इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा मधौ न मक्ष आसते ।	
इन्द्रे कामं जरितारो वसूयवो रथे न पावुमा दधुः	२

२२३५

रायस्का॒मो वज्र॑हस्तं सु॒दक्षिणं॑ पु॒त्रो न पि॒तरं॑ हुवे	३
इ॒म इन्द्रा॑य सु॒न्विरे सोमा॑सो द॒ध्याशिरः॑ ।	
ताँ आ म॒दाय॑ वज्रहस्त पी॒तये॑ ह॒रिभ्यां॑ या॒ह्योक् आ	४
श्रव॑च्छ्रु॒त्कर्ण॑ ईयते वसू॒नां नू चि॑न्नो म॒र्धिषद् गिरः॑ ।	
स॒द्याश्चिद् यः स॒हस्राणि॑ श॒ता द॒वृत्र॑कि॒र्दित्सन्त॑मा मि॒नत्	५
स वी॒रो अ॒प्रति॑ष्कृत इन्द्रे॑ण शू॒शुवे॑ नृभिः ।	
यस्ते॑ ग॒भीरा॑ सर्व॒नानि॑ वृ॒त्रहन्॑ त्सु॒नोत्या॑ च धा॒वति॑	६
भवा॑ व॒रुथं॑ मघवन् म॒घोनां॑ यत् स॒मजा॑सि श॒र्धतः॑ ।	२२४०
वि त्वा॒र्हत॑स्य वे॒दनं॑ भजेम॒ह्या दू॒णाशो॑ भरा॒ गय॑म्	७
सु॒नोता॑ सोमपा॒त्रे सोम॑मिन्द्रा॑य व॒ज्रिणे॑ ।	
प॒चता॑ प॒क्तीर॑वसे कृ॒णुध्व॑मि॒त् पू॒णान्नि॑त् पृ॒णते॑ मयः	८
मा स्रै॑धत सोमि॒नो दक्ष॑ता म॒हे कृ॒णुध्वं॑ रा॒य आ॒तुजे॑ ।	
त॒रणि॑रिज्ज॒यति॑ क्षेति पु॒ष्यति॑ न दे॒वासः॑ क॒वत्तवे॑	९
नकिः॑ सु॒दासो॑ रथं॒ पर्या॑स न री॒रमत् ।	
इन्द्रो॑ यस्या॒विता॑ यस्य॒ मरु॑तो ग॒मत् स गो॑मति ब्रजे	१०
ग॒मद् वाजं॑ वा॒जया॑न्निन्द्र म॒र्त्यो यस्य॑ त्वम॒विता॑ भुवः ।	
अ॒स्माकं॑ बो॒ध्यवि॒ता रथा॑ना—म॒स्माकं॑ शूर नृ॒णाम्	११
उदि॑वस्य रि॒च्यते॑—ऽशो॒ धनं॑ न जि॒ग्युषः॑ ।	२२४५
य इन्द्रो॑ ह॒रिवा॑न् न द॒मन्ति॑ तं रि॒पो दक्षं॑ दधाति सोमि॒नि	१२
मन्त्र॑म॒खर्वं॑ सु॒धितं॑ सु॒पेश॑सं दधा॒त यजि॑ये॒ष्वा ।	
पूर्वा॑श्चन प्र॒सित॑यस्तरन्ति तं य इन्द्रे॑ क॒र्मणा॑ भुव॒त्	१३
कस्तमि॑न्द्र त्वा॒वसु॑—मा म॒र्त्यो दध॑र्षति ।	
श्र॒द्धा इत् ते॑ मघवन् पा॒र्ये दि॒वि वा॒जी वाजं॑ सि॒षास॑ति	१४
म॒घोनः॑ स्म वृ॒त्रह॑त्येषु चोद॒य ये द॑दति प्रि॒या वसु॑ ।	
तव॑ प्र॒णीती॑ ह॒र्यश्च॑ सू॒रिभि॑—वि॒श्वा तरे॑म दु॒रिता॑	१५
तवे॑दिन्द्रा॒वमं॑ वसु॒ त्वं पु॑ष्यसि म॒ध्यम॑म् ।	
स॒त्रा वि॒श्वस्य॑ प॒रम॑स्य॒ राज॑सि नकि॒द्वा गो॑षु वृ॒ण्वते॑	१६
त्वं वि॒श्वस्य॑ धन॒दा अ॑सि श्रु॒तो य ई॑ भव॒न्त्याज॑यः ।	२२५०
तवा॑यं वि॒श्वः पुरु॑हू॒त पा॒थिवो॑ ऽव॒स्युर्नाम॑ भि॒क्षते॑	१७

यदिन्द्र यावत्स्त्वमेतावदुहमीशीय ।

स्तोतारमिदं दिधिषेय रदावसो न पापत्वार्यं रासीय १८

शिक्षेयमिन्महयते दिवेदिवे राय आ कुहचिद्विदे ।

नहि त्वदुन्यन्मघवन् न आप्यं वस्यो अस्ति पिता चन १९

तरणिरित् सिंघासति वाजं पुरंध्या युजा ।

आ व इंद्रं पुरुहूतं नमे गिरा नेमिं तष्टेव सुद्धम् २०

न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते वसु न स्नेधन्तं रयिर्नशत् ।

सुशक्तिरिन्मघवन् तुभ्यं मावते वृष्णं यत् पार्यं द्विवि २१ २२५५

अभि त्वां शूर नोनुमो ऽदुग्धा इव धेनवः ।

ईशानमस्य जगतः स्वर्हशमीशानमिन्द्र तस्थुषः २२

न त्वावां अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो न जनिष्यते ।

अश्वायन्तो मघवन्निन्द्र वाजिनो गव्यन्तस्त्वा हवामहे २३

अभी षतस्तदा भरेन्द्र ज्यायः कनीयसः ।

पुरुवसुर्हि मघवन्त्सनादसि भरेभरे च हव्यः २४

परां णुदस्व मघवन्नामित्रान् त्सुवेदां नो वसू कृधि ।

अस्माकं बोध्यविता महाधने भवां वृधः सर्वाणाम् २५

इन्द्रं क्रतुं न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा ।

शिक्षां णो अस्मिन् पुरुहूतं यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि २६ २२६०

मा नो अज्ञाता वृजनां दुराध्योऽं माशिवासो अव क्रमुः ।

त्वया वयं प्रवतः शश्वतीरपो ऽति शूर तरामसि २७

॥ २०६ ॥ (क्र० ७।३।१-९) १-९ वसिष्ठपुत्राः इन्द्रो वा । त्रिष्टुप् ।

श्रित्यश्रौं मा दक्षिणतस्कपदा धियंजिन्वासो अभि हि प्रमन्दुः ।

उत्तिष्ठन् वोचे परिं बर्हिषो नृन् न मे दूरादवितवे वसिष्ठाः १

दूरादिन्द्रमनयन्ना सुतेन तिरो वैशन्तमति पान्तमुग्रम् ।

पाशद्युन्नस्य वायतस्य सोमात् सुतादिन्द्रोऽवृणीता वसिष्ठान् २

एवेन्नु कं सिन्धुमेभिस्ततारेवेन्नु कं भेदमेभिर्जघान ।

एवेन्नु कं दाशराज्ञे सुदासं प्रावदिन्द्रो ब्रह्मणा वो वसिष्ठाः ३

जुष्टीं नरो ब्रह्मणा वः पितृणां मक्षमव्ययं न किला रिषाथ ।

यच्छक्रीषु बृहता रवेणेन्द्रे शुष्ममदधाता वसिष्ठाः ४ २२६५

उद् द्यामिवेत् तूष्णजो नाथितासो ऽशीधयुर्दाशराज्ञे वृतासः ।	
वसिष्ठस्य स्तुवत इन्द्रो अश्रो—दुरुं तृप्तुभ्यो अकृणोदु लोकम्	५
दुण्डा इवेद् गोअर्जनास आसन् परिच्छिन्ना भरता अर्भकासः ।	
अर्भवच्च पुरएता वसिष्ठ आदितृ तृत्सूनां विशो अप्रथन्त	६
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु रेत—स्तिष्ठः प्रजा आर्या ज्योतिरग्राः ।	
त्रयो घर्मासं उषसं सचन्ते सर्वो इत् तां अनु विदुर्वसिष्ठाः	७
सूर्यस्येव वक्षथो ज्योतिरेषां समुद्रस्येव महिमा गभीरः ।	
वार्तस्येव प्रजवो नान्येन स्तोमो वसिष्ठा अन्वेतवे वः	८
त इन्निण्यं हृदयस्य प्रकेतैः सहस्रवल्शमभि सं चरन्ति ।	
यमेन ततं परिधिं वर्यन्तो ऽप्सरस उप सेदुर्वसिष्ठाः	९

२२७०

॥ २०७ ॥ (ऋ० ७।५।२-८) (प्रस्वापिनी उपनिषद्) । २-४ उपरिष्ठाद्बृहती, ५-८ अनुष्टुप् ।

यदर्जुन सारमेय वृतः पिशङ्ग यच्छसे ।	
वीव भ्राजन्त ऋष्टय उप स्रक्तेषु वप्सतो नि षु स्वप	२
स्तेनं राय सारमेय तस्करं वा पुनःसर ।	
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि षु स्वप	३
त्वं सूकरस्य दर्दहि तव दर्दतु सूकरः ।	
स्तोतृनिन्द्रस्य रायसि किमस्मान् दुच्छुनायसे नि षु स्वप	४
सस्तु माता सस्तु पिता सस्तु श्वा सस्तु विश्वपतिः ।	
ससन्तु सर्वे ज्ञातयः सस्त्वयमभितो जनः	५
य आस्ते यश्च चरति यश्च पश्यति नो जनः ।	
तेषां सं हन्मो अक्षाणि यथेदं हर्म्यं तथा	६
सहस्रशृङ्गो वृषभो यः समुद्रादुदाचरत् ।	
तेना सहस्येना वयं नि जनान्त्स्वापयामसि	७
प्रोष्ठेशया वह्येशया नारीर्यास्तल्पशीवरीः ।	
स्त्रियो याः पुण्यगन्धा—स्ताः सर्वाः स्वापयामसि	८

२२७५

॥ २०८ ॥ (ऋ० ७।९।१) त्रिष्टुप् ।

यज्ञे विवो नृषदने पृथिव्या नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।	
इन्द्राय यत्र सर्वनानि सुन्वे गमन्मदाय प्रथमं वर्यश्च	१

॥ २०९ ॥ (ऋ० ७।१८।१-६)

अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।	
गौराद् वेदीयाँ अवपानमिन्द्रो विश्वाहेद् याति सुतसोममिच्छन्	१
यद् दधिषे प्रदिवि चार्वन्नं दिवेदिवे पीतिमिदस्य वक्षि ।	
उत हृदोत मनसा जुषाण उशन्निन्द्र प्रस्थितान् पाहि सोमान्	२
जज्ञानः सोमं सहसे पपाथ प्र ते माता महिमानमुवाच ।	
एन्द्र पपाथोर्वन्तरिक्षं युधा देवेभ्यो वरिवश्चकथ	३
यद् योधया महतो मन्यमानान् त्साक्षाम् तान् बाहुभिः शाशदानान् ।	
यद् वा नृभिर्वृत इन्द्राभियुध्यास्तं त्वयार्जि सौश्रवसं जयेम	४
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवा या चकार ।	
यदेददेवीरसहिष्ट माया अथाभवत् केवलः सोमो अस्य	५
तवेदं विश्वमभितः पशव्यं यत् पश्यसि चक्षसा सूर्यस्य ।	
गवामसि गोपतिरेकं इन्द्र भक्षीमहि ते प्रयतस्य वस्वः	६

॥ २१० ॥ (ऋ० ७।१०४।८, १६, १९-२२) । त्रिष्टुप्; २१ जगती ।

यो मा पाकेन मनसा चरतमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।	
आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता	८
यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह ।	
इन्द्रस्तं हंतु महता वधेन विश्वस्य जन्तोरधमस्पदीष्ट	१६
प्र वर्तय दिवो अश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्त्सं शिशधि ।	
प्राक्तादपाक्तादधरादुक्तादुभिर्जहि रक्षसः पर्वतेन	१९
एत उ त्वे पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति विप्सवोऽदाभ्यम् ।	
शिशीति शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदुशानि यातुमद्भ्यः	२०
इन्द्रो यातूनामभवत् पराशरो हविर्मथीनामभ्याद्विवासताम् ।	
अभीदुं शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एति रक्षसः	२१
उलूकयातुं शुश्रूलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् ।	
सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं हृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र	२२

॥ २११ ॥ (ऋ० ८।६८।१-१३)

(२२९१-२३२०) प्रियमेध आङ्गिरसः । गायत्री, अनुष्टुप्मुखः प्रगाथः=
(अनुष्टुप्+गायत्र्यौ); १, ४, ७, १० अनुष्टुप् ।

आ त्वा रथं यथोतये सुम्नाय वर्तयामसि । तुविकूर्मिमृतीषह—मिन्द्र शर्विष्ठ सत्पते १
तुर्विशुष्म तुर्विक्रतो शर्चीवो विश्वया मते । आ पंप्राथ महित्वना २
यस्य ते महिना महः परि ज्मायन्तमीयतुः । हस्ता वज्रं हिरण्ययम् ३
विश्वानरस्य वस्पति—मनानतस्य शर्वसः । एवैश्च चर्षणीना—मूती हुवे रथानाम् ४
अभिष्टये सदावृधं स्वर्मीळहेषु यं नरः । नाना हवन्त ऊतये ५ २२९५
पुरोमात्रमृचीषम—मिन्द्रमुग्रं सुरार्धसम् । ईशानं चिद्वसूनाम् ६
तंतमिद्रार्धसे मह इन्द्रं चोदामि पीतये । यः पूर्यामनुष्टुति—मीशे कृष्टीनां नृतुः ७
न यस्य ते शवसान सख्यमानंश मर्त्यः । नक्तिः शर्वासि ते नशत् ८
त्वोतासस्त्वा युजा ऽप्सु सूर्ये महद्भनम् । जयेम पृत्सु वज्रिवः ९
तं त्वा यज्ञेभिरीमहे तं गीर्भिर्गिर्वणस्तम ।
इन्द्र यथा चिदाविथ वाजेषु पुरुमाय्यम् १० २३००
यस्य ते स्वादु सख्यं स्वाद्वी प्रणीतिरद्विवः । यज्ञो वितन्तसाय्यः ११
उरु णस्तन्वेऽतनं उरु क्षयाय नस्कृधि । उरु णो यन्धि जीवसे १२
उरुं नृभ्य उरुं गव उरुं रथाय पन्थाम् । देववीतिं मनामहे १३

॥ २१२ ॥ (ऋ० ८।६९।१-१०, [११ पूर्वार्धः], १३-१८)

अनुष्टुप्, २ उष्णिक्, ४-६ गायत्री, १६ पङ्क्तिः, १७-१८ बृहती ।

प्रप्र वस्त्रिष्टुभमिषं मन्दद्वीरायेन्दवे । धिया वो मेधसातये पुरंध्या विवासति १
नदं व ओदतीनां नदं योयुवतीनाम् । पतिं वो अघ्न्यानां धेनूनामिषुध्यसि २ २३०५
ता अस्य सूददोहसः सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
जन्मन् देवानां विश—स्त्रिष्वा रोचने दिवः ३
अभि प्र गोपतिं गिरे—न्द्रमर्च यथा विदे । सूनुं सत्यस्य सत्पतिम् ४
आ हरयः ससृजिरे ऽरुषीरधि बर्हिषि । यत्राभि संनवामहे ५
इन्द्राय गाव आशिरं दुदुहे वज्रिणे मधु । यत् सीमुपह्वरे विदत् ६
उद्यद्भस्य विष्टपं गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।
मध्वः पीत्वा संचेवहि त्रिः सप्त सख्युः पदे ७ २३१०
अर्चतु प्रार्चतु प्रियमेधासो अर्चत । अर्चन्तु पुत्रका उत पुरं न धूष्णवर्चत ८

अयं रवराति गर्गरो गोधा परि सनिष्पणत् ।

पिङ्गा परि चनिष्कवृ—दिन्द्राय ब्रह्मोद्यतम्

९

आ यत् पतन्त्येन्यैः सुदुद्या अनपस्फुरः । अपस्फुरं गृभायत् सोममिन्द्राय पातवे १०

अपादिन्द्रो अपादुग्नि—विश्वे देवा अमत्सत । (पूर्वार्धः)

११

यो व्यतीरफाणयत् सुयुक्तां उप द्वाशुषे । तक्रो नेता तदिद्वपु—रुपमा यो अमुच्यत १२ २३१५

अतीदु शक्र ओहत इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।

मिनत् कनीन ओदुनं पच्यमानं परो गिरा

१४

अर्मको न कुमारको ऽधि तिष्ठन् नवं रथम् । स पक्षन्महिषं मृगं पित्रे मात्रे विभुक्तुम् १५

आ तू सुशिप्र दंपते रथं तिष्ठा हिरण्ययम् ।

अध द्युक्षं सचेवहि सहस्रपादमरुषं स्वस्तिगामनेहसम्

१६

तं धेमिथा नमस्विन उप स्वराजमासते ।

अथं चिदस्य सुधितं यदेतव आवर्तयन्ति द्वावने

१७

अनु प्रत्नस्यौकसः प्रियमेधास एषाम् ।

पूर्वामनु प्रयति वृक्तबर्हिषो हितप्रयस आशत

१८

२३२०

॥ २१३ ॥ (ऋ० ८।७०।१-१५)

(२३२१-२३३५) पुरुहन्मा आङ्गिरसः । बृहती; १-६ प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती),
१२ शंकुमती, १३ उष्णिक्, १४ अनुड्डप्, १५ पुरउष्णिक् ।

यो राजा चर्षणीनां याता रथेभिरधिगुः ।

विश्वासां तरुता पृतनानां ज्येष्ठो यो वृत्रहा गूणे

१

इन्द्रं तं शुभम् पुरुहन्मन्त्रवसे यस्य द्विता विधर्तरि ।

हस्ताय वज्रः प्रति धायि दर्शतो महो दिवे न सूर्यः

२

नकिष्टं कर्मणा नश—द्यश्चकार सदावृधम् ।

इन्द्रं न यज्ञैर्विश्वगूर्तमृभ्वस—मधृष्टं धृष्णवो जसम्

३

अषाढमुग्रं पृतनासु सासहिं यस्मिन् महीरुरुजयः ।

सं धेनवो जायमाने अनोनवु—द्यावः क्षामो अनोनवुः

४

यद्यथा इन्द्र ते शतं शतं भूमीरुत स्युः ।

न त्वा वज्रिन्सहस्रं सूर्या अनु न जातमष्ट रोदसी

५

२३२५

आ पप्राथ महिना वृष्ण्या वृषन् विश्वा शविष्ठ शवसा ।

अस्मां अं व मघवन् गोमति व्रजे वज्रिञ्चित्राभिरूतिभिः

६

न सीमदेव आप—दिषं दीर्घायो मर्त्यः ।

एतंवा चिद्य एतंशा युयोजते हरी इन्द्रे/ युयोजते ७

तं वो महो महाय्य—मिन्द्रं दानाय सक्षणिम् ।

यो गाधेषु य आरणेषु हव्यो वाजेष्वस्ति हव्यः ८

उदू षु णो वसो महे मृशस्व शूर राधसे ।

उदू षु मह्यै मघवन् मघत्तय उदिन्द्र श्रवसे महे ९

त्वं न इन्द्र ऋतयु—स्त्वानिदो नि तृप्पसि ।

मध्ये वसिष्व तुविनुम्णोर्वो—नि द्रासं शिश्वथो हथैः १० २३३०

अन्यव्रतममानुष—मयज्वानमदेवयुम् ।

अव स्वः सखा दुधुवीत पर्वतः सुघ्नाय दस्युं पर्वतः ११

त्वं न इन्द्रासां हस्ते शविष्ठ दावने । धानानां न सं गृभायास्मयु—र्द्विः सं गृभायास्मयुः १२

सखायः क्रतुमिच्छत कथा राधाम शरस्य । उपस्तुतिं भोजः सूरियो अह्नयः १३

भूरिभिः समह कषिभि—र्बर्हिष्मद्भिः स्तविष्यसे ।

यवित्थमेकमेकमि—च्छर वत्सान् पराददः १४

कर्णगृह्या मघवा शौरवेव्यो वत्सं नस्त्रिभ्य आनयत् । अजां सूरिर्न धातवे १५ २३३५

॥ २१४ ॥ (ऋ० ८।९।१-९) (२३३६-२३६५) तिरश्चीराङ्गिरसः । अनुष्टुप् ।

आ त्वा गिरो रथीरिवा—ऽस्थुः सुतेषु गिर्वणः ।

अभि त्वा समनूषते—न्द्र वत्सं न मातरः १

आ त्वा शुक्रा अचुच्यवुः सुतासं इन्द्र गिर्वणः ।

पिबा त्वस्यान्धस इन्द्र विश्वासु ते हितम् २

पिबा सोमं मदाय क—मिन्द्र श्येनाभृतं सुतम् ।

त्वं हि शश्वतीनां पती राजा विशामसि ३

श्रुधी हवं तिरश्च्या इन्द्र यस्त्वा सपर्यति ।

सुवीर्यस्य गोमतो रायस्पूर्धि महाँ असि ४

इन्द्र यस्ते नवीयसीं गिरं मन्द्रामजीजनत् ।

चिकित्विन्मनसं धियं प्रत्नामृतस्य पिप्युषीम् ५ २३४०

तमुष्टवाम यं गिर इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।

पुरुण्यस्य पौस्या सिषासन्तो वनामहे ६

एतो न्विन्द्रं स्तवाम शुद्धं शुद्धेन साध्ना ।	
शुद्धैरुक्थैर्वीवृध्वांसं शुद्ध आशीर्वान् ममत्तु	७
इन्द्रं शुद्धो न आ गहि शुद्धः शुद्धाभिरुतिभिः ।	
शुद्धो रयिं नि धारय शुद्धो ममाद्धि सोम्यः	८
इन्द्रं शुद्धो हि नो रयिं शुद्धो रत्नानि दाशुषे ।	
शुद्धो वृत्राणि जिघ्रसे शुद्धो वाजं सिषाससि	९

॥ २१५ ॥ (ऋ० ८।१६।१-१३, १६-२१)

[द्युतानो वा माखतः । त्रिष्टुप्, ४ विराट्, २१ पुरस्ताज्ज्योतिः ।]

अस्मा उषास आतिरन्त याम—मिन्द्राय नक्तमूर्म्याः सुवाचः ।	
अस्मा आपो मातरः सप्त तस्थु—र्तभ्यस्तराय सिन्धवः सुपाराः	१ २३४५
अतिविन्द्रा विथुरेणा चिदस्त्रा त्रिः सप्त सानु संहिता गिरीणाम् ।	
न तद्देवो न मर्त्यस्तुतुर्या—द्यानि प्रवृद्धो वृषभश्चकार	२
इन्द्रस्य वज्रं आयसो निर्मिश्र इन्द्रस्य बाह्वोभूर्यिष्ठमोजः ।	
शीर्षन्निन्द्रस्य क्रतवो निरेक आसन्नेषन्त श्रुत्या उपाके	३
मन्ये त्वा यज्ञियं यज्ञियानां मन्ये त्वा च्यवनमच्युतानाम् ।	
मन्ये त्वा सत्वनामिन्द्र केतुं मन्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम्	४
आ यद्वज्रं बाह्वोरिन्द्र धत्से मदच्युतमहये हन्तवा उ ।	
प्र पर्वता अनवन्त प्र गावः प्र ब्रह्माणो अभिनक्षन्त इन्द्रम्	५
तमुं ष्टवाम य इमा जजान विश्वा जातान्यवराण्यस्मात् ।	
इन्द्रेण मित्रं दिधिषेम गीर्भि—रूपो नमोभिर्वृषभं विशेम	६ २३५०
वृत्रस्य त्वा श्वसथादीर्षमाणा विश्वे देवा अंजहुर्ये सखायः ।	
मरुद्भिरिन्द्र सख्यं ते अस्त्व—थेमा विश्वाः पृतना जयासि	७
त्रिः पृष्टिस्त्वा मरुतो वावृधाना उस्मा इव राशयो यज्ञियासः ।	
उप त्वेमः कूधि नो भागधेयं शुष्मं त एना हविषा विधेम	८
तिग्ममारुधं मरुतामनीकं कस्त इन्द्र प्रति वज्रं दधर्ष ।	
अनायुधासो असुरा अदेवा—श्चक्रेण तां अप वप ऋजीषिन्	९
मह उग्राय तवसे सुवृक्तिं प्रेरय शिवतमाय पश्वः ।	
गिर्वाहसे गिर इन्द्राय पूर्वी—र्धेहि तन्वे कुविदुङ्ग वेदत्	१०

उद्धथाहसे विभ्वे मनीषां दृणा न पारमीरया नदीनाम् । नि स्पृश धिया तन्वि श्रुतस्य जुष्टतरस्य कुविदुङ्ग वेदत्	११	२३५५
तद्विविद्धि यत् त इन्द्रो जुजोषत् स्तुहि सुष्टुतिं नमसा विवास ।		
उप भूष जरितर्मा रुवण्यः श्रावया वाचं कुविदुङ्ग वेदत्	१२	
अव द्रुप्तो अंशुमतीमतिष्ठ—दियानः कृष्णो दुशर्मिः सहस्रैः ।		
आवत् तमिन्द्रः शच्या धर्मन्त—मप स्नेहितीर्नुमणा अधत्त	१३	
त्वं ह त्यत् सप्तभ्यो जायमानो ऽशत्रुभ्यो अभवः शत्रुरिन्द्र ।		
गूळहे द्यावापृथिवी अन्वविन्दो विभुमद्भ्यो भुवनेभ्यो रणं धाः	१६	
त्वं ह त्यदप्रतिमानमोजो वज्रेण वज्रिन् धृषितो जघन्थ ।		
त्वं शुष्णस्यावातिरो वधत्रै—स्त्वं गा इन्द्र शच्येदविन्दः	१७	
त्वं ह त्यद्वृषभ चर्षणीनां घ्नो वृत्राणां तविषो बभूथ ।		
त्वं सिन्धूरसृजस्तस्तभानान् त्वमपो अजयो दासपत्नीः	१८	२३६०
स सुक्रतू रणिता यः सुतेष्व—नुत्तमन्युर्यो अहेव रेवान् ।		
य एक इन्नर्यपांसि कर्ता स वृत्रहा प्रतीदून्यमाहुः	१९	
स वृत्रहेन्द्रश्चर्षणीधृत् तं सुष्टुत्या हव्यं हुवेम ।		
स प्राविता मघवा नोऽधिवक्ता स वाजस्य श्रवस्यस्य दाता	२०	
स वृत्रहेन्द्रं क्रभुक्षाः सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।		
कृण्वन्नपांसि नयीं पुरूणि सोमो न पीतो हव्यः सखिभ्यः	२१	२३६३

॥ २१६ ॥ (ऋ० ८ ९८।१-१२)

(२३६४-२३८३) नृमेध आङ्गिरसः । उष्णिक्, ७, १०-११ ककुप्, ९, १२ पुरउष्णिक् ।

इन्द्राय सामं गायत् विप्राय बृहते बृहत् । धर्मकृते विपश्चिते पत्नस्यवे	१	
त्वमिन्द्राभिभूरासि त्वं सूर्यमरोचयः । विश्वकर्मा विश्वदेवो महाँ असि	२	२३६५
विभ्राजअयोतिषा स्व—रगच्छो रोचनं दिवः । देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे	३	
एन्द्रं नो गाधि प्रियः सत्राजिदगोहाः । गिरिर्न विश्वतस्पृथुः पतिर्दिवः	४	
अभि हि संत्य सोमपा उभे बभूथ रोदसी । इन्द्रासि सुन्वतो वृधः पतिर्दिवः	५	
त्वं हि शश्वतीना—मिद्रं कृता पुरामसि । हन्ता दस्योर्मनोर्वृधः पतिर्दिवः	६	
अधा हीन्द्रं गिर्वण उप त्वा कामान् महः संसृज्महे । उदेव यतं उदभिः	७	२३७०
वारणं त्वा यव्याभि—र्वधन्ति शूर ब्रह्माणि । वावृध्वासं चिदद्रिवो दिवेदिवे	८	

युञ्जन्ति हरीं इषिरस्य गार्थयो—रौ रथ उरुयुगे । इन्द्रवाहा वचोयुजा	९	
त्वं न इन्द्रा भरे ओजो नृम्णं शतक्रतो विचर्षणे । आ वीरं पृतनाषहम्	१०	
त्वं हि नः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधा ते सुममीमहे	११	
त्वां शुष्मिन् पुरुहूत वाजयन्त—मुप ब्रुवे शतक्रतो । स नो रास्व सुवीर्यम्	१२	२३७५

॥ २१७ ॥ (ऋ० ८।९९।१-८) प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

त्वामिदा ह्यो नरो ऽपीप्यन् वज्रिन् भूर्णयः ।		
स इन्द्र स्तोमवाहसामिह श्रुध्यु—प स्वसरमा गहि	१	
मत्स्वा सुशिप्र हरिवस्तदीमहे त्वे आ भूषन्ति वेधसः ।		
तव श्रवांस्युपमान्युक्थ्या सुतेष्विन्द्र गिर्वणः	२	
आयन्त इव सूर्य विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत ।		
वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागं न दीधिम	३	
अनर्शरार्ति वसुदामुप स्तुहि भद्रा इन्द्रस्य रातर्यः ।		
सो अस्य कामं विधतो न रोषति मनो दानाय चोदयन्	४	
त्वमिन्द्र प्रतीतिष्व—भि विश्वा असि स्पृधः ।		
अशस्तिहा जनिता विश्वतूरसि त्वं तूर्य तरुण्यतः	५	२३८०
अनु ते शुष्मं तुरयन्तमीयतुः क्षोणी शिशुं न मातरा ।		
विश्वास्ते स्पृधः श्रथयन्त मन्यवे वृत्रं यदिन्द्र तूर्वसि	६	
इत ऊती वो अजरं प्रहेतारमप्रहितम् ।		
आशु जेतारं हेतारं रथीतम्—मतूर्तं तुग्यावृधम्	७	
इष्कर्तारमनिष्कृतं सहस्कृतं शतमूर्तिं शतक्रतुम् ।		
समानमिन्द्रमवसे हवामहे वसवानं वसूजुवम्	८	२३८३

॥ २१८ ॥ (ऋ० ८।८९।१-७)

(२२८४-२३९६) नृमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । १-४ प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती), ५-६ अनुष्टुप्, ७ बृहती ।

बृहदिन्द्राय गायत मरुतो वृत्रहंतमम् ।		
येन ज्योतिरजनयन्नृतावृधो देवं देवाय जागृवि	१	
अपाधमदृभिर्शस्तीरशस्तिहा ऽथेन्द्रो द्युमन्याभवत् ।		
देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे बृहद्भानो मरुद्गण	२	२३८५

प्र व इंद्राय बृहते मरुतो ब्रह्मार्चत ।

वृत्रं हनति वृत्रहा शतक्रतुर्वज्रेण शतपर्वणा ३

अभि प्र भर धृषता धृषन्मनः श्रवश्चित् ते असद्वृहत् ।

अर्षन्त्वापो जर्वसा वि मातरो हनो वृत्रं जया स्वः ४

यज्जायथा अपूर्य मधवन् वृत्रहत्याय ।

तत् पृथिवीमप्रथयस्तदस्तभ्रा उत द्याम् ५

तत् ते यज्ञो अजायत तदुर्क उत हस्कृतिः ।

तद्विश्वमभिभूरसि यज्जातं यच्च जन्त्वम् ६

आमासु पक्रमैरय आ सूर्य रोहयो दिवि ।

धर्म न सामन् तपता सुवृक्तिभिर्जुष्टं गिर्वणसे बृहत् ७ २३९०

॥ २१९ ॥ (ऋ० ८।९०।१-६) प्रगाथः= (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

आ नो विश्वासु हव्य इंद्रः समत्सु भूषतु ।

उप ब्रह्माणि सर्वनानि वृत्रहा परमज्या ऋचीषमः १

त्वं दाता प्रथमो राधसामस्यसि सत्य ईशानकृत् ।

तुविद्युन्नस्य युज्या वृणीमहे पुत्रस्य शर्वसो महः २

ब्रह्मा त इंद्र गिर्वणः क्रियन्ते अनतिद्धता ।

इमा जुषस्व हर्यश्च योजनेन्द्र या ते अमन्महि ३

त्वं हि सत्यो मधवन्नानतो वृत्रा भूरि न्यूञ्जसे ।

स त्वं शविष्ठ वज्रहस्त दाशुषे स्वाञ्च रयिमा कृधि ४

त्वमिन्द्र यशा अस्यूजीषी शवसरपते ।

त्वं वृत्राणि हंस्यप्रतीन्येक इदनुत्ता चर्षणीधृता ५ २३९५

तमु त्वा नूनमसुर प्रचेतसं राधो भागमिवेमहे ।

महीव कृत्तिः शरणा त इंद्र प्र ते सुम्ना नो अश्ववन् ६ २३९६

॥ २२० ॥ (८।९२।१-३३)

(२३९७-२४२९) श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री, १ अनुष्टुप् ।

पान्तमा वो अर्धस इंद्रमभि प्र गायत । विश्वासाहं शतक्रतुं मंहिष्ठं चर्षणीनाम् १

पुरुहूतं पुरुहूतं गाथान्यं सनश्रुतम् । इंद्र इति ब्रवीतन २

इंद्र इन्नो महानां दाता वाजानां नूतुः । महां अभिज्ञा यमत ३

अपादु शिप्र्यन्धसः सुदक्षस्य प्रहोषिणः । इंद्रोरिन्द्रो यवाशिरः ४ २४००

तम्बभि प्राचते—न्द्रं सोमस्य पीतये	। तदिन्द्रस्य वर्धनम्	५
अस्य पीत्वा मदानां देवो देवस्यौजसा	। विश्वाभि भुवना भुवत्	६
त्यमु वः सत्रासाहं विश्वासु गीर्घायतम्	। आ च्यावयस्युतये	७
युध्मं सन्तमनर्वाणं सोमपामनपच्युतम्	। नरमवार्यकृतम्	८
शिक्षां ण इन्द्र राय आ पुरु विद्रां क्रचीषम	। अवा नः पार्ये धने	९ २४०५
अतश्चिदिन्द्र ण उपा ऽऽ याहि शतवाजया	। इषा सहस्रवाजया	१०
अयाम् धीवतो धियो ऽर्वाद्भिः शक्र गोदरे	। जयेम पूत्सु वज्रिवः	११
वयमु त्वा शतक्रतो गावो न यवसेष्वा	। उक्थेषु रणयामसि	१२
विश्वा हि मर्त्यत्वना ऽनुकामा शतक्रतो	। अगन्म वज्रिन्नाशसः	१३
त्वे सु पुत्र शवसो ऽवृत्रन् कामकातयः	। न त्वामिन्द्रातिं रिच्यते	१४ २४१०
स नो वृषन्त्सनिष्ठया सं घोरया द्रवित्वा	। धियाविद्धि पुरंध्या	१५
यस्ते नूनं शतक्रतु—विन्द्र द्युम्नितमो मदः	। तेन नूनं मदे मदेः	१६
यस्ते चित्रश्रवस्तमो य इन्द्र वृत्रहन्तमः	। य ओजोदातमो मदः	१७
विद्वा हि यस्ते अद्रिव—स्त्वादत्तः सत्य सोमपाः	। विश्वासु दस्म कृष्टिषु	१८
इन्द्राय मद्रने सुतं परि ष्टोभन्तु नो गिरः	। अर्कमर्चन्तु कारवः	१९ २४१५
यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो रणन्ति सप्त संसदः	। इद्रं सुते हवामहे	२०
त्रिकटुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमन्तत	। तमिद्रर्धन्तु नो गिरः	२१
आ त्वा विशन्तिवन्दवः समुद्रमिव सिंधवः	। न त्वामिन्द्रातिं रिच्यते	२२
विव्यक्थं महिना वृषन् भक्षं सोमस्य जागृवे	। य इन्द्र जठरेषु ते	२३
अरं त इन्द्र कुक्षये सोमो भवतु वृत्रहन्	। अरं धामभ्य इद्वः	२४ २४२०
अरमश्वाय गायति श्रुतकक्षो अरं गवे	। अरमिन्द्रस्य धाम्ने	२५
अरं हि ष्मा सुतेषु णः सोमेष्विन्द्र भूषसि	। अरं ते शक्र दावने	२६
पराकात्ताच्चिदद्रिव—स्त्वां नक्षन्त नो गिरः	। अरं गमाम ते वयम्	२७
एवा ह्यासि वीर्यु—रेवा शूर उत स्थिरः	। एवा ते राध्यं मनः	२८
एवा रातिस्तुवीमघ विश्वेभिर्धायि धातुभिः	। अधा चिदिन्द्र मे सचा	२९ २४२५
मो षु ब्रह्मेव तन्द्रयु—भुवो वाजानां पते	। मत्स्वा सुतस्य गोमतः	३०
मा न इन्द्राभ्यादृदिशः सूरौ अक्तुष्वा यमन्	। त्वा युजा वनेम तत्	३१
त्वयेदिन्द्र युजा वयं प्रति ब्रुवीमहि स्पृधः	। त्वमस्माकं तव स्मसि	३२
त्वामिन्द्रि त्वायवो ऽनुनोनुवत्श्वरान्	। सखाय इन्द्र कारवः	३३ २४२९

॥ २२१ ॥ (ऋ० ८। १३। १-३३)

(२४३०-२४६२) सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

उद्धेदुभि श्रुतामघं वृषभं नयीपसम् । अस्तारमेषि सूर्य	१	२४३०
नव यो नवतिं पुरो बिभेद बाह्वोजसा । अहिं च वृत्रहावधीत्	२	
स न इन्द्रः शिवः सखा ऽश्वावद्धोमद्यवमत् । उरुधरिव दोहते	३	
यदुद्य कच्च वृत्रह—क्षुदगा अभि सूर्य । सर्वं तदिन्द्र ते वशे	४	
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते न मरा इति मन्यसे । उतो तत् सत्यमित् तव	५	
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे । सर्वास्ताँ इन्द्र गच्छसि	६	२४३५
तमिन्द्रं वाजयामसि महे वृत्राय हन्तवे । स वृषा वृषभो भुवत्	७	
इन्द्रः स दामने कृत ओजिष्ठः स मदं हितः । द्युम्नी श्लोकी स सोम्यः	८	
गिरा वज्रो न संभृतः सबलो अनपच्युतः । ववक्ष ऋष्वो अस्तृतः	९	
दुर्गे चिन्नः सुगं कृधि गृणान इन्द्र गिर्वणः । त्वं च मधवन् वशः	१०	
यस्य ते नू चिदादिशं न मिनन्ति स्वराज्यम् । न देवो नाग्निगुर्जनः	११	२४४०
अधा ते अप्रतिष्कृतं देवी शुष्मं सपर्यतः । उभे सुशिप्र रोदसी	१२	
त्वमेतदधारयः कृष्णासु रोहिणीषु च । परुष्णीषु रुशत् पर्यः	१३	
वि यदहेरधं त्विषो विश्वे देवासो अक्रमुः । विदन्मृगस्य ताँ अमः	१४	
आहु मे निवरो भुवद् वृत्रहादिष्ट पौंस्यम् । अजातशत्रुरस्तृतः	१५	
श्रुतं वो वृत्रहन्तमं प्र शर्धं चर्षणीनाम् । आ शुषे राधसे महे	१६	२४४५
अया धिया च गव्यया पुरुणामन् पुरुष्टुत । यत् सोमैसोम आभवः	१७	
बोधिन्मना इदस्तु नो वृत्रहा भूयीसुतिः । शृणोतु शक्र आशिषम्	१८	
कया त्वं न ऊत्या ऽभि प्र मन्दसे वृषन् । कया स्तोतृभ्य आ भर	१९	
कस्य वृषा सुते सचा नियुत्वान् वृषभोरणत् । वृत्रहा सोमपीतये	२०	
अभी षु णस्त्वं रयिं मन्दसानः सहास्रिणम् । प्रयन्ता बोधि वाशुषे	२१	२४५०
पत्नीवन्तः सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये । अपां जग्मिनिचुम्पुणः	२२	
इष्टा होत्रा असृक्षते—न्द्रं वृधासो अध्वरे । अच्छावभूथमोजसा	२३	
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेश्या । वोळहामभि प्रयो हितम्	२४	
तुभ्यं सोमाः सुता इमे स्तीर्णं बहिर्विभावसो । स्तोतृभ्य इन्द्रमा वह	२५	
आ ते दक्षं वि रोचना दधद्रत्ना वि वाशुषे । स्तोतृभ्य इन्द्रमर्चत	२६	२४५५
आ ते दधामीन्द्रिय—मुक्था विश्वा शतक्रतो । स्तोतृभ्य इन्द्र मृळय	२७	

भद्रंभद्रं न आ भरेषूजं शतक्रतो	। यदिन्द्र मूळयासि नः	२८	
स नो विश्वान्या भर सुवितानि शतक्रतो	। यदिन्द्र मूळयासि नः	२९	
त्वामिद् वृत्रहन्तम सुतार्वन्तो हवामहे	। यदिन्द्र मूळयासि नः	३०	
उप नो हरिभिः सुतं याहि मदानां पते	। उप नो हरिभिः सुतम्	३१	२४६०
द्विता यो वृत्रहन्तमो विद इन्द्रः शतक्रतुः	। उप नो हरिभिः सुतम्	३२	
त्वं हि वृत्रहन्तेषां पाता सोमानामसि	। उप नो हरिभिः सुतम्	३३	२४६१

॥ २२२ ॥ (ऋ० १०।८।७-९)

(२४६३-२४६५) त्रिशिरास्त्वाष्टः । त्रिष्टुप् ।

अस्य त्रितः क्रतुना ववे अन्त-रिच्छन् धीतिं पितुरेवैः परस्य ।		
सचस्यमानः पित्रोरुपस्थे जामि ब्रुवाण आयुधानि वेति	७	
स पित्र्याणयायुधानि विद्वा-निन्द्रेषित आप्त्यो अभ्ययुध्यत् ।		
त्रिशीर्षाणि सप्तरीर्षिं जघन्वान् त्वाष्ट्रस्य चिन्निः संसृजे त्रितो गाः	८	
भूरीदिन्द्र उदिनक्षन्तमोजो ऽवाभिन्त सत्पतिर्मन्यमानम् ।		
त्वाष्ट्रस्य चिद् विश्वरूपस्य गोना-माचक्राणस्त्रीणि शीर्षा परां वर्क	९	२४६५ .

॥ २२३ ॥ (ऋ० १०।२२।१-१५)

(२४६६-२४९०) ऐन्द्रो विमदः प्राजापत्यो वा, वासुक्रो वसुहृदा । पुरस्ताद्बृहती;

५, ७, ९ अनुष्टुप्; १५ त्रिष्टुप् ।

कुह श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नद्य जने मित्रो न श्रूयते ।		
ऋषीणां वा यः क्षये गुहा वा चर्कषे गिरा	१	
इह श्रुत इन्द्रो अस्मे अद्य स्तवै वडयुचीषमः ।		
मित्रो न यो जनेष्वा यशश्चक्रे असाम्या	२	
महो यस्पतिः शर्वसो असाम्या महो नृम्णस्य तूतुजिः ।		
भर्ता वज्रस्य धृष्णोः पिता पुत्रमिव प्रियम्	३	
युजानो अश्वा वार्तस्य धुनी देवो देवस्य वज्रिवः ।		
स्यन्ता पथा विरुक्मता सृजानः स्तोष्यध्वनः	४	
त्वं त्या चिद् वातस्याश्वागा क्रज्जा त्मना वहध्वै ।		
ययोर्देवो न मर्त्यो यन्ता नर्किर्विदाव्यः	५	२४७०
अध गमन्तोशना पृच्छते वां कदर्था न आ गृहम् ।		
आ जग्मथुः पराकाद् दिवश्च गमश्च मर्त्यम्	६	

आ न इन्द्र पृक्षसे ऽस्माकं ब्रह्मोद्यतम् ।

तत् त्वा याचामहेऽवः शुष्णं यद्धन्नमानुषम् ७

अकृमा दस्युरभि नो अमन्तु—रन्यव्रतो अमानुषः ।

त्वं तस्यामित्रहन् वर्धर्वासस्य दम्भय ८

त्वं न इन्द्र शूर शूरैरुत त्वोतासो बर्हणा ।

पुरुत्रा ते वि पूर्तयो नवन्त क्षोणयो यथा ९

त्वं तान् वृत्रहत्ये चोदयो नृन् कार्पाणे शूर वज्रिवः ।

गुहा यदी कवीनां विशां नक्षत्रशवसाम् १०

२४७५

मक्षू ता त इन्द्र दानाप्रस आक्ष्माणे शूर वज्रिवः ।

यद्ध शुष्णस्य दुम्भयो जातं विश्वं सयावभिः ११

माकुध्यगिन्द्र शूर वस्वीरस्मे भूवन्नभिष्टयः ।

वयंवयं त आसां सुप्ते स्याम वज्रिवः १२

अस्मे ता त इन्द्र सन्तु सत्या ऽहिंसन्तीरुपस्पृशः ।

विद्याम यासां भुजो धेनूनां न वज्रिवः १३

अहस्ता यदुपद्वी वर्धत क्षाः शर्चीभिर्विद्यानाम् ।

शुष्णं परि प्रदक्षिणिद् विश्वायवे नि शिश्रथः १४

पिबापिबेदिन्द्र शूर सोमं मा रिषण्यो वसवान् वसुः सन् ।

उत त्रायस्व गृणतो मघोनो महश्च रायो रेवतस्कृधी नः १५

२४८०

॥ २२४ ॥ (क्र० १०।२३।१-७) जगती; १, ७ त्रिष्टुप्, ५ अमितारिणी ।

यजामह इन्द्रं वज्रदक्षिणं हरीणां रथ्यं विव्रतानाम् ।

प्र इमश्रु दोधुवदूर्ध्वथा भूद् वि सेनाभिर्दर्यमानो वि राधसा १

हरी न्वस्य या वने विदे वस्विन्द्रो मधैर्मघवा वृत्रहा भुवत् ।

ऋभुर्वाजं ऋभुक्षाः पत्यते शवो ऽव क्षणौमि दासस्य नाम चित् २

यदा वज्रं हिरण्यमिदथा रथं हरी यमस्य वहतो वि सूरिभिः ।

आ तिष्ठति मघवा सनश्रुत इन्द्रो वाजस्य दीर्घश्रवसस्पतिः ३

सो चिन्नु वृष्टिर्युथया३ स्वा सचां इन्द्रः इमश्रूणि हरिताभि प्रुष्णुते ।

अव वेति सुक्षयं सुते मधूदिन्द्रनोति वातो यथा वनम् ४

यो वाचा विवाचो मधुवाचः पुरू सहस्राशिवा जघान ।

तत्तदिदस्य पौंस्यं गृणीमसि पितेव यस्तविषीं वावृधे शवः ५

२४८५

स्तोमं त इन्द्र विमदा अजीजन—अपूर्व्यं पुरुतमं सुदानवे ।
 विद्वा ह्यस्य भोजनमिनस्य य—दा पशुं न गोपाः करामहे ६
 मार्किर्न एना सख्या वि यौषु—स्तव चेन्द्र विमदस्य च ऋषेः ।
 विद्वा हि ते प्रमतिं देव जामिव—दुस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ७

॥ २२५ ॥ (ऋ० १०।२४।१-३) आस्तारपङ्क्तिः ।

इन्द्र सोममिमं पिब मधुमन्तं चमू सुतम् ।
 अस्मे रयिं नि धारय वि वो मदे सहास्रिणं पुरुवसो विवक्षसे १
 त्वां यज्ञेभिरुक्थै—रुपं हव्येभिरीमहे ।
 शचीपते शचीनां वि वो मदे श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्षसे २
 यस्पतिर्वार्याणा—मसि रधस्यं चोदिता ।
 इन्द्र स्तोतृणामविता वि वो मदे द्विषो नः पाह्यंहसो विवक्षसे ३ २४९०

॥ २२६ ॥ (ऋ० १०।२७।१-२४) (२४९१-२५२९) ऐन्द्रो वसुकः । त्रिष्टुप् ।

असत् सु मे जरितः साभिवेगो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।
 अनाशीर्दामहमस्मि प्रहन्ता सत्यध्वृतं वृजिनायन्तमाभुम् १
 यदीदृहं युधये संनया—न्यदेवयून् तन्वाइ शूशुजानान् ।
 अघा ते तुम्रं वृषभं पचानि तीव्रं सुतं पञ्चदशं नि पिञ्चम् २
 नाहं तं वेदु य इति ब्रवी—त्यदेवयून्तसमरणे जघन्वान् ।
 यदावाख्यत् समरणमृधाव—दादिन्द्र मे वृषभा प्र भुवन्ति ३
 यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं विश्वे सतो मघवानो म आसन् ।
 जिनामि वेत् क्षेम आ सन्तमाभुं प्र तं क्षिणां पर्वते पादुगृह्य ४
 न वा उ मां वृजने वारयन्ते न पर्वतासो यदृहं मनस्ये ।
 मम स्वनात् कृधुर्कणो भयात् एवेदन् यून् किरणः समेजात् ५ २४९५
 दर्शन्वत्र शृतपो अन्निद्रान् बाहुक्षदुः शरवे पत्यमानान् ।
 घृषुं वा ये निनिदुः सखाय—मध्यु न्वेषु पवयो ववृत्युः ६
 अभूर्वीक्षीर्व्युः आयुरानङ् दर्षन्तु पूर्वो अपरो नु दर्षत् ।
 द्वे पवस्ते परि तं न भूतो यो अस्य पारे रजसो विवेष ७
 गावो यवं प्रयुता अर्यो अक्षन् ता अपश्यं सहगोपाश्चरन्तीः ।
 हवा इदुर्यो अभितः समायन् किर्यदासु स्वर्पतिश्छन्दयाते ८

सं यद्वयं यवसादो जनानां—महं यवादं उर्वज्रे अन्तः ।

अत्रा युक्तोऽवसातारमिच्छा—दथो अयुक्तं युनजद्ववन्वान् ९

अत्रेदु मे मंससे सत्यमुक्तं द्विपाच्च यच्चतुष्पात् संसृजानि ।

स्त्रीभिर्यो अत्र वृषणं पृतन्या—दयुद्धो अस्य वि भजानि वेदः १० २५००

यस्यानक्षा दुहिता जात्वास कस्तां विद्रां अभि मन्याते अन्धाम् ।

कतरो मेनिं प्रति तं मुचाते य ईं वहति य ईं वा वरेयात् ११

किर्यती योषा मर्यतो वधूयोः परिप्रीता पन्यसा वार्येण ।

भद्रा वधूर्भवाति यत् सुपेशाः स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित् १२

पुत्तो जंगार प्रत्यञ्चमसि शीर्ष्णा शिरः प्रति दधौ वरुथम् ।

आसीन ऊर्ध्वामुपसि क्षिणाति न्यङ्कुत्तानामन्वेति भूमिम् १३

बृहन्नच्छायो अपलाशो अवीं तस्थौ माता विपितो अत्ति गर्भः ।

अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया भुवा नि दधे धेनुरुधः १४

सप्त वीरासो अधरादुदाय—ब्रूणोत्तरात्तात् समजग्निरन्ते ।

नव पश्चातात् स्थिविमन्त आयन् दश प्राक् सानु वि तिरन्त्यश्रः १५ २५०५

दुशानामेकं कपिलं समानं तं हिन्वन्ति क्रतवे पार्यीय ।

गर्भं माता सुधितं वक्षणा—स्ववेनन्तं तुपर्यन्ती बिभर्ति १६

पीवानं मेषमपचन्त वीरा न्युप्ता अक्षा अनु द्वीव आसन् ।

द्वा धनुं बृहतीमप्स्वन्तः पवित्रवन्ता चरतः पुनन्ता १७

वि क्रौशनासो विष्वञ्च आयन् पचाति नेमो नहि पक्षदुर्धः ।

अयं मे देवः सविता तदाह ईं ब्रू इद्वनवत् सर्पिरञ्चः १८

अपश्यं ग्रामं वहमानमारा—दचक्रया स्वधया वर्तमानम् ।

सिषक्त्ययः प्र युगा जनानां सद्यः शिश्वा प्रमिनानो नवीयान् १९

एतौ मे गावौ प्रमरस्य युक्तौ मो षु प्र सैधीर्मुहुरिन्ममन्धि ।

आपश्चिदस्य वि नशन्त्यर्थं सूरश्च मर्क उपरो बभूवान् २० २५१०

अयं यो वज्रः पुरुधा विवृत्तो ऽवः सूर्यस्य बृहतः पुरीषात् ।

श्रव इद्रेना परो अन्यदस्ति तदव्यथी जरिमाणस्तरन्ति २१

वृक्षेवृक्षे निर्यता मीमयद्वौ—स्ततौ वयः प्र पतान् पूरुषादः ।

अथेदं विश्वं भुवनं भयात् इन्द्राय सुन्वदृषये च शिक्षत् २२

देवानां माने प्रथमा अतिष्ठन् कुन्तत्रादिषामुपरा उदायन् ।

त्रयस्तपन्ति पृथिवीमनुपा द्वा बृहूकं बहतः पुरीषम् २३

सा ते जीवातुरुत तस्य विद्धि मा स्मैतादृगप गूहः समर्थे ।
आविः स्वः कृणुते गूहते ब्रुसं स पादुरस्य निर्णिजो न मुच्यते २४

॥ २२७ ॥ (ऋ० १०।२९।१-८) । -

वने न वा यो न्यधायि चाक—उच्छुचिर्वा स्तोमो भुरणावजीगः ।
यस्येदिन्द्रः पुरुदिनेषु होता नृणां नर्यो नृतमः क्षपावान् १ २५१५
प्र ते अस्या उषसः प्रापरस्या नृतौ स्याम नृतमस्य नृणाम् ।
अनु त्रिशोकः शतमावहन्नृन् कुत्सेन रथो यो असत् ससवान् २
कस्ते मद इन्द्र रन्त्यो भूद् दुरो गिरो अभ्युग्रो वि धाव ।
कद्वाहो अर्वागुप मा मनीषा आ त्वा शक्यामुपमं राधो अन्नैः ३
कटु द्युम्नमिन्द्र त्वावतो नृन् कया धिया कर्से कन्न आगन् ।
मित्रो न सत्य उरुगाय भूत्या अन्ने समस्य यदसन् मनीषाः ४
प्रेरय सूरौ अर्थं न पारं ये अस्य कामं जनिधा इव गमन् ।
गिरश्च ये ते तुविजात पूर्वी—नर इन्द्र प्रतिशिक्षन्त्यन्नैः ५
मात्रे नु ते सुमिते इन्द्र पूर्वी द्यौर्मज्मना पृथिवी काव्येन ।
वराय ते घृतवन्तः सुतासः स्वाद्यन् भवन्तु पीतये मधूनि ६ २५२०
आ मध्वो अस्मा असिचन्नमन्न—मिन्द्राय पूर्णं स हि सत्यराधाः ।
स वावृधे वरिमन्ना पृथिव्या अभि कृत्वा नर्यः पौंस्यैश्च ७
व्यानल्लिन्द्रः पृतनाः स्वोजा आस्मै यतन्ते सख्याय पूर्वीः ।
आ स्मा रथं न पृतनासु तिष्ठ यं भद्रया सुमत्या चोदयासे ८

॥ २२८ ॥ (१०।२८।१, ३-५, ७, ९, ११)

[१ इन्द्रस्तुषा वसुकपली ऋषिका; ३-५, ७, ९, ११ ऐन्द्रो वसुक ऋषिः ।]

विश्वो ह्यन्यो अरिराजगाम ममेदह श्वशुरो ना जगाम ।
जक्षीयाद्धाना उत सोमं पपीयात् स्वाशितः पुनरस्तं जगायात् १
अद्रिणा ते मन्दिन इन्द्र तूयान् त्सुन्वन्ति सोमान् पिबसि त्वमेषाम् ।
पवन्ति ते वृषभा अत्सि तेषां पृक्षेण यन्मघवन् हूयमानः ३
इदं सु मे जरितरा चिकिद्धि प्रतीपं शापं नद्यो वहन्ति ।
लोपाशः सिंहं प्रत्यश्रमत्साः क्रोष्टा वराहं निरतक्त कक्षात् ४ २५२५
कथा त एतद्वहमा चिकेतं गृत्सस्य पाकस्तवसो मनीषाम् ।
त्वं नो विद्वां क्रतुथा वि वोचो यमर्धं ते मघवन् क्षेम्या धूः ५

एवा हि मां तवसं जजुरुग्रं कर्मन्कर्मन् वृषणमिन्द्र देवाः ।	
वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानो ऽपं व्रजं महिना दाशुषे वम्	७
शशः क्षुरं प्रत्यश्र्वं जगारा—ऽर्द्रिं लोगेन व्यभेदमारात् ।	
बृहंतं चिद्वहते रंधयानि वयं द्रुत्सो वृषभं शूशुवानः	९
तेभ्यो गोधा अयथं कर्षदेत—द्ये ब्रह्मणः प्रतिपीयन्त्यन्नैः ।	
सिम उक्ष्णोऽवसृष्टौ अदन्ति स्वयं बलानि तन्वः शृणानाः	११ २५२९

॥ २२९ ॥ (ऋ० १०।३२।१-९)

(२५३०-२५४०) कवष ऐलूषः । जगती, ६-९ त्रिष्टुप् ।

प्र सु गमन्ता धियसानस्य सक्षणि वरोभिर्वरां अभि षु प्रसीदतः ।	
अस्माकमिन्द्र उभयं जुजोषति यत् सोम्यस्यान्धसो बुबोधति	१ २५३०
धीन्द्र यासि दिव्यानि रोचना वि पार्थिवानि रजसा पुरुष्टुत ।	
ये त्वा वहन्ति मुहुर्ध्वरां उप ते सु वन्वन्तु वग्वनां अराधसः	२
तदिन्मे छन्त्सद्वपुषो वपुष्टरं पुत्रो यज्जानं पित्रोरधीयति ।	
जाया पतिं वहति वग्वनां सुमत् पुंस इन्द्रो वहतुः परिष्कृतः	३
तदित् सधस्थमभि चारु दीधय गावो यच्छासन् वहतुं न धेनवः ।	
माता यन्मन्तुर्युथस्य पूव्या ऽभि वाणस्य सप्तधातुरिज्जनः	४
प्र वोऽच्छा रिरिचे देवयुष्पद—मेको रुद्रेभिर्याति तुर्वणिः ।	
जरा वा येष्वमृतेषु दावने परि व ऊमेभ्यः सिञ्चता मधु	५
निधीयमानमपगूळहमप्सु प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।	
इन्द्रो विद्रो अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने अनुशिष्ट आगाम्	६ २५३५
अक्षेत्रवित् क्षेत्रविवं ह्यप्राद् स प्रैति क्षेत्रविदानुशिष्टः ।	
एतद्वै भद्रमनुशासनस्यो—त सुतिं विन्दत्यञ्जसीनाम्	७
अद्येदु प्राणीदममन्निमाहा ऽपीवृतो अधयन्मातुरूधः ।	
एमेनमाप जरिमा युवान—महेल्लन् वसुः सुमना बभूव	८
एतानि भद्रा कलश क्रियाम् कुरुश्रवण ददतो मघानि ।	
वान इद्वो मघवानः सो अ—स्त्वयं च सोमो हृदि यं बिभर्मि	९

॥ २३० ॥ (ऋ० १०।३३।२-३) प्रगाथः= (२ बृहती, ३ सतोबृहती)

सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पशवः ।	
नि बाधते अमतिर्नृगता जसु—र्वेन वेवीयते मतिः	२

मूषो न शिश्ना व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं ते शतक्रतो ।

सकृत् सु नो मघवन्निन्द्र मृळयाऽधा पितेर्व नो भव

३

२५४०

॥ २३१ ॥ (क्र० १०१३८।१-५) (२५४१-२५४५) मुष्कवानिन्द्रः । जगती ।

अस्मिन् न इन्द्र पृत्सुतौ यशस्वति शिमीवति क्रन्दसि प्राव सातये ।

यत्र गोषाता धृषितेषु खादिषु विष्वक् पतन्ति दिद्यवो नृषाह्ये

१

स नः क्षुमन्तं सदनं व्यूर्णुहि गोअर्णसं रयिमिन्द्र श्रवाय्यम् ।

स्याम ते जयतः शक्र मेदिनो यथा वयमुश्मसि तद्वसो कृधि

२

यो नो दास आर्यो वा पुरुषदुताऽदेव इन्द्र युधये चिकेतति ।

अस्माभिष्टे सुषहाः सन्तु शत्रवस्त्वया वयं तान् वनुयाम संगमे

३

यो वृध्रेभिर्हव्यो यश्च भूरिभिर्यो अभीके वरिवोविनृषाह्ये ।

तं विखादे सन्निमद्य श्रुतं नरं मर्वाञ्चमिन्द्रमवसे करामहे

४

स्ववृजं हि त्वामहमिन्द्र शुश्रवा नानुदं वृषभ रधचोर्दनम् ।

प्र मुञ्चस्व परि कुत्सादिहा गहि किमु त्वावान् मुष्कयोर्विन्द्र आसते

५

२५४५

॥ २३२ ॥ (क्र० १०१४२।१-११)

(२५४६-२५७८) कृष्ण आङ्गिरसः । त्रिष्टुप् ।

अस्तेव सु प्रतरं लायमस्यन् भूषन्निव प्र भरा स्तोममस्मै ।

वाचा विप्रास्तरत् वार्चमर्यो नि रामय जरितः सोम इन्द्रम्

१

दोहेन गामुप शिक्षा सखायं प्र बोधय जरितर्जारमिन्द्रम् ।

कोशं न पूर्णं वसुना न्यृष्टमा च्यावय मघदेयाय शूरम्

२

किमङ्ग त्वा मघवन् भोजमाहुः शिशीहि मां शिशयं त्वां शृणोमि ।

अप्रस्वती मम धीरस्तु शक्र वसुविदं भर्गमिन्द्रा भरा नः

३

त्वां जना ममसत्येष्विन्द्र संतस्थाना वि ह्वयन्ते समीके ।

अत्रा युजं कृणुते यो हविष्मान् नासुन्वता सख्यं वष्टि शूरः

४

धनं न स्पन्दं बहुलं यो अस्मै तीव्रान्तोमो आसुनोति प्रयस्वान् ।

तस्मै शत्रून्सुतुकान् प्रातरहो नि स्वष्ट्रान् युवति हन्ति वृत्रम्

५

२५५०

यस्मिन् वयं दधिमा शंसुमिन्द्रे यः शिश्राय मघवा काममस्मे ।

आराच्चित् सन् भयतामस्य शत्रुन्त्यस्मै द्युम्ना जन्या नमन्ताम्

६

आराच्छत्रुमप बाधस्व दूरमुग्रो यः शम्भः पुरुहूत तेन ।

अस्मे धेहि यवमद्वोमदिन्द्र कृधी धियं जरित्रे वाजरत्नाम्

७

प्र यमन्तर्वृषसवासो अगमन् तीवाः सोमा बहुलान्तास इन्द्रम् ।
 नाहं वामानं मघवा नि यंसन्नि सुन्वते वहति भूरि वामम् ८
 उत प्रहामतिदीव्या जयाति कृतं यच्छुग्नी विचिनोति काले ।
 यो देवकामो न धना रुणद्धि समित् तं राया सृजति स्वधावान् ९
 गोभिष्टरेमार्मतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
 वयं राजभिः प्रथमा धना न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १० २५५५
 बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।
 इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११

॥ २३३ ॥ (ऋ० १०।४३।१-११) जगती, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अच्छा म इन्द्रं मतयः स्वर्विदः सधीचीर्विश्वा उशतीरनूषत ।
 परि ष्वजन्ते जनयो यथा पतिं मयं न शुन्ध्युं मघवानमूतये १
 न घा त्वद्विगप वेति मे मनस्त्वे इत् कामं पुरुहूत शिश्रय ।
 राजेव दस्म नि षदोऽधि बर्हिष्यस्मिन्त्सु सोमेऽवपानमस्तु ते २
 विषूवृदिन्द्रो अमतेरुत क्षुधः स इद्रायो मघवा वस्व ईशते ।
 तस्येदिमे प्रवृणे सप्त सिधवो वयो वर्धति वृषभस्य शुष्मिणः ३
 वयो न वृक्षं सुपलाशमासदन् त्सोमास इन्द्रं मंदिनश्चमूषदः ।
 प्रैषामनीकं शर्वसा दविद्युतद्विदत् स्वर्गमनवे ज्योतिरार्यम् ४ २५६०
 कृतं न श्वग्नी वि चिनोति देवने संवर्गं यन्मघवा सूर्यं जयत् ।
 न तत् ते अन्यो अनु वीर्यं शक्नोन्न पुराणो मघवान् नोत नूतनः ५
 विश्विंविशं मघवा पर्यशायत् जनानां धेनां अवचाकशद् वृषा ।
 यस्याहं शक्रः सर्वनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः ६
 आपो न सिंधुमभि यत् समक्षरन् त्सोमास इन्द्रं कुल्या इव हृदम् ।
 वर्धन्ति विप्रा महो अस्य सार्दने यवं न वृष्टिर्दिव्येन दानुना ७
 वृषा न क्रुद्धः पतयद्रजःस्वा यो अर्यपत्नीरकृणोदिमा अपः ।
 स सुन्वते मघवा जीरदानवे ऽविन्दुज्ज्योतिर्मनवे हविष्मते ८
 उज्जायतां परशुज्योतिषा सह भूया क्रतस्य सुदुघा पुराणवत् ।
 वि रौचतामरुषो भानुना शुचिः स्वर्गं शुक्रं शुशुचीत् सत्पतिः ९ २५६५
 गोभिष्टरेमार्मतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
 वयं राजभिः प्रथमा धना न्यस्माकेन वृजनेना जयेम १०

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चाद्दुतोत्तरस्मादधरादद्यायोः ।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११

॥ २३४ ॥ (ऋ० १०।४४।१-११) जगती, १-३, १०-११ त्रिष्टुप् ।

आ यात्विन्द्रः स्वपतिर्मदाय यो धर्मेणा तूतुजानस्तुविष्मान् ।

प्रत्वक्षाणो अति विश्वा सहांस्यपारेण महता वृष्ण्येन १

सुष्ठामा रथः सुयमा हरीं ते मिम्यक्ष वज्रो नृपते गर्भस्तौ ।

शीर्षं राजन्सुपथा याह्यर्वाङ् वर्धाम ते पृषो वृष्ण्यानि २

एन्द्रवाहो नृपतिं वज्रबाहुमुग्रमुग्रासस्तविषास एनम् ।

प्रत्वक्षसं वृषमं सत्यशुष्ममेमस्मन्ना संधमादो वहन्तु ३ २५७०

एवा पतिं द्रोणसाचं सचैतसमूर्जः स्क्रुभं धरुण आ वृषायसे ।

ओजः कृष्व सं गृभाय त्वे अप्यसो यथा केनिपानामिनो वृधे ४

गमन्त्रस्मे वसुन्या हि शंसिषं स्वाशिषं भरमा याहि सोमिनः ।

त्वमीशिषे सास्मिन्ना संत्सि बर्हिष्यनाधूया तव पात्राणि धर्मेणा ५

पृथक् प्रार्यन् प्रथमा देवहूतयो ऽकृण्वत श्रवस्यानि दुष्टरा ।

न ये शेकुर्यज्ञियां नावमारुहमीमेव ते न्यविशन्त केपयः ६

एवैवापागपरे संतु दूढ्यो ऽश्वा येषां दुर्युज आयुयुजे ।

इत्था ये प्रागुपरे संति दावने पुरुणि यत्र वयुनानि भोजना ७

गिरीरञ्जान् रेजमानो आधारयद् द्यौः क्रन्ददन्तरिक्षाणि कोपयत् ।

समीचीने धिषणे वि ष्कभायति वृष्णः पीत्वा मद उक्थानि शंसति ८ २५७५

इमं बिभर्मि सुकृतं ते अङ्कुशं येनारुजासि मघवच्छफारुजः ।

अस्मिन्त्सु ते सर्वने अस्त्वोक्त्यं सुत इष्टौ मघवन् बोध्याभगः ९

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।

वयं राजभिः प्रथमा धना न्यस्माकेन वृजनैना जयेम १०

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चाद्दुतोत्तरस्मादधरादद्यायोः ।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ११ २५७८

॥ २३५ ॥ (ऋ० १०।४८।१-११)

(२५७९-२६०७) वैकुण्ठ इन्द्रः । जगती, ७, १०-११ त्रिष्टुप् ।

अहं भुवं वसुनः पूर्व्यस्पतिं र्हं धनानि सं जयामि शश्वतः ।

मां हवन्ते पितरं न जंतवो ऽहं दाशुषे वि भजामि भोजनम् १

अहमिन्द्रो रोधो वक्षो अथर्वण—स्त्रिताय गा अजनयमहेरधि ।

अहं दस्युभ्यः परि नृम्णमा ददे गोत्रा शिक्षन् दधीचे मातरिष्वने
मह्यं त्वष्टा वज्रमतक्षदायसं मयि देवासोऽवृजन्नपि क्रतुम् ।

२ २५८०

ममानीकं सूर्यस्येव दुष्टरं मामार्यन्ति कृतेन कर्त्वेन च

३

अहमेतं गव्ययमश्वयं पशुं पुरीषिणं सार्यकेना हिरण्ययम् ।

पुरु सहस्रा नि शिशामि दाशुषे यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः

४

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इन्द्रं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन ।

सोममिन्मा सुन्वन्तो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिपाथन

५

अहमेताञ्छाश्वसतो द्वाद्वे—न्द्रं ये वज्रं युधयेऽकृण्वत ।

आह्वयमानां अव हर्मनाहनं हृळ्हा वदन्ननमस्युर्नमस्विनः

६

अभीः दमेकमेको अस्मि निष्ठा—ळभी द्वा किमु त्रयः करन्ति ।

खले न पर्षान् प्रति हन्मि भूरि किं मा निदन्ति शत्रवोऽनिद्राः

७ २५८५

अहं गृङ्गुभ्यो अतिथिग्वमिष्कर—मिषं न वृत्रतुरं विश्व धारयम् ।

यत् पर्णयन्न उत वा करञ्जहे प्राहं महे वृत्रहत्ये अशुश्रवि

८

प्र मे नमी साप्य इषे भुजे भूद् गवामेपे सख्या कृणुत द्विता ।

द्विद्युं यदस्य समिथेषु मंहय—मादिदेनं शंस्यमुक्थ्यं करम्

९

प्र नेमस्मिन् ददृशे सोमो अन्त—र्गोपा नेममाविरस्था कृणोति ।

स तिग्मशृङ्गं वृषभं युयुत्सन् द्रुहस्तस्थौ बहुले बद्धो अन्तः

१०

आदित्यानां वसूनां रुद्रियाणां देवो देवानां न मिनामि धाम ।

ते मा भद्राय शर्वसे ततक्षु—रपराजितमस्तृतमषाळहम्

११

॥ २३६ ॥ (ऋ० १०।४९।१-११) जगती; २, ११ त्रिष्टुप् ।

अहं दां गृणते पूर्यं वस्व—हं ब्रह्म कृणवं मह्यं वर्धनम् ।

अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ऽयज्वनः साक्षि विश्वस्मिन् भरे

१ २५९०

मां धुरिन्द्रं नाम देवतां दिवश्च रमश्चापां च जन्तवः ।

अहं हरी वृषणा विव्रता रघू अहं वज्रं शर्वसे धूष्णा ददे

२

अहमत्कं कवये शिश्रथं हथै—रहं कुत्सावमाभिरुतिभिः ।

अहं शुष्णस्य श्रथिता वर्धयमं न यो रर आर्यं नाम दस्यवे

३

अहं पितेर्व वेतसूरभिष्टये तुष्टं कुत्साय स्मदिभं च रन्धयम् ।

अहं भुवं यजमानस्य राजनि प्र यन्तरे तुजये न प्रियाधुषे

४

अहं रंधयं मृगयं श्रुतर्वणे यन्मार्जिहीत वयुना चनानुषक् ।	
अहं वेशं नम्रमायवेऽकरमहं सव्याय पङ्कभिमरन्धयम्	५
अहं स यो नववास्त्वं बृहद्रथं सं वृत्रेव दासं वृत्रहारुजम् ।	
यद्वर्धयन्तं प्रथयन्तमानुषग् दूरे पारे रजसो रोचनाकरम्	६ २५९५
अहं सूर्यस्य परि याम्याशुभिः प्रैतशेभिर्वहमान ओजसा ।	
यन्मा सावो मनुष आह निर्णिज ऋधक् कृषे दासं कृत्वयं हथैः	७
अहं सप्तहा नहुषो नहुष्टरः प्राश्रावयं शवसा तुर्वशं यदुम् ।	
अहं न्यन्यं सहसा सहस्करं नव वार्धतो नवति च वक्षयम्	८
अहं सप्त स्रवतो धारयं वृषा द्रवित्वः पृथिव्यां सीरा अधि ।	
अहमर्णासि वि तिरामि सुक्रतु र्युधा विदुं मनवे गातुमिष्टये	९
अहं तदासु धारयं यदासु न देवश्च न त्वष्टाधारयदुशत् ।	
स्पाहं गवामूर्धःसु वक्षणास्वा मधोर्मधु श्वात्र्यं सोममाशिरम्	१०
एवा देवो इन्द्रो विव्ये नृन् प्र च्यौत्तेन मधवा सत्यराधाः ।	
विश्वेत् ता ते हरिवः शचीवो ऽभि तुरासः स्वयशो गृणन्ति	११ २६००

॥ २३७ ॥ (ऋ० १०।५०।१-७) जगती; ३, ४ अभिसारिणी, ५ त्रिष्टुप् ।

प्र वो महे मन्दमानायान्धसो ऽर्ची विश्वानराय विश्वाभुवे ।	
इन्द्रस्य यस्य सुमखं सहो महि श्रवो नृम्णं च रोदसी सपर्यतः	१
सो चिच्छु सख्या नयं इनः स्तुत श्रुत्य इन्द्रो मावते नरे ।	
विश्वासु धूर्षु वाजकृत्येषु सत्पते वृत्रे वाप्स्वभि शूर मंदसे	२
के ते नर इन्द्र ये त इषे ये ते सुस्रं सधन्यमियक्षान् ।	
के ते वाजायासुर्याय हिन्विरे के अप्सु स्वासूर्वरासु पौंस्ये	३
भुवस्त्वभिन्द्र ब्रह्मणा महान् भुवो विश्वेषु सर्वनेषु यज्ञियः ।	
भुवो नृश्च्यौत्तो विश्वस्मिन् भरे ज्येष्ठश्च मन्त्रो विश्वचर्षणे	४
अवा नु कं ज्यायान् यज्ञवन्सो महीं त ओमात्रां कृष्टयो विदुः ।	
असो नु कमजरो वर्धाश्च विश्वेदेता सर्वना तूतुमा कृषे	५ २६०५
एता विश्वा सर्वना तूतुमा कृषे स्वयं सूनो सहमो यानि दधिषे ।	
वराय ते पात्रं धर्मणे तना यज्ञो मन्त्रो ब्रह्मोद्यतं वचः	६
ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा वसूनां च वसुनश्च दावने ।	
प्र ते सुस्रस्य मनसा पथा भुवन् मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः	७ २६०७

॥ २३८ ॥ (क्र० १०५४।१-६)

(२६०८-२६२१) बृहदुक्थो वामदेव्यः । त्रिष्टुप् ।

तां सु ते कीर्तिं मघवन् महित्वा यत् त्वा भीते रोदसी अह्वयेताम् ।

प्रावो देवाँ आतिरो दासमोर्जः प्रजायै त्वस्यै यदक्षिंक्ष इन्द्र १

यदचरस्तन्वा वावृधानो बलानीन्द्र प्रब्रुवाणो जनेषु ।

मायेत् सा ते यानि युद्धान्याहुर्नाद्य शत्रुं ननु पुरा विवित्से २

क उ नु ते महिमनः समस्याऽस्मत् पूर्व ऋषयोऽन्तमापुः ।

यन्मातरं च पितरं च साकमजनयथास्तन्वः स्वायाः ३ २६१०

चत्वारिं ते असुर्याणि नामाऽदाभ्यानि महिषस्य सन्ति ।

त्वमङ्ग तानि विश्वानि वित्से येभिः कर्माणि मघवञ्चकथं ४

त्वं विश्वा दधिषे केवलानि यान्याविर्या च गुहा वसूनि ।

काममिन्मे मघवन् मा वि तारीस्त्वमाज्ञाता त्वमिन्द्रासि दाता ५

यो अर्द्धाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तर्यो असृजन्मधुना सं मधूनि ।

अर्धं प्रियं शूषमिन्द्राय मन्म ब्रह्मकृतो बृहदुक्थादवाचि ६

॥ २३९ ॥ (क्र० १०५५।१-८)

दूरे तन्नाम गुह्यं पराचैर्यत् त्वा भीते अह्वयेतां वयोधै ।

उदस्तभ्राः पृथिवीं द्यामभीके भ्रातुः पुत्रान् मघवन् तित्विषाणः १

महत् तन्नाम गुह्यं पुरुस्पृग् येन भूतं जनयो येन भव्यम् ।

प्रत्नं जातं ज्योतिर्यदस्य प्रियं प्रियाः समविशन्त पञ्च २ २६१५

आ रोदसी अपृणादोत मध्यं पञ्च देवाँ क्रतुशः सप्तसप्त ।

चतुस्त्रिंशता पुरुधा वि चण्टे सरूपेण ज्योतिषा विव्रतेन ३

यदुष औच्छः प्रथमा विभानामजनयो येन पुष्टस्य पुष्टम् ।

यत् ते जामित्वमवरं परस्या महन्महत्या असुरत्वमेकम् ४

विधुं दंष्ट्राणं समने बहूनां युवानं सन्तं पलितो जगार ।

देवस्य पश्य काव्यं महित्वा ऽद्या ममार स ह्यः समान ५

शाकर्मना शाको अरुणः सुपूर्ण आ यो महः शूरः सनादनीळः ।

यच्चिकेत सत्यमित् तन्न मोघं वसुं स्पार्हमुत जेतोत् दाता ६

ऐभिर्द्वे वृष्ण्या पौस्यानि येभिरौक्षद् वृत्रहत्याय वज्री ।

ये कर्मणः क्रियमाणस्य महं क्रतेकर्ममुदजायन्त देवाः ७ २६२०

युजा कर्माणि जनयन् विश्वौजा अशस्तिहा विश्वमनास्तुराषाट् ।
पीत्वी सोमस्य विव आ वृधानः शूरो निर्युधार्धमद् दस्यून्

८ २६२१

॥ २४० ॥ (ऋ० १०।६०।५) (२६२२) वन्धुः श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गौपायनाः गायत्री ।

इन्द्रं क्षत्रासमातिषु रथप्रोष्ठेषु धारय । दिवीव सूर्यं हृशे

५ २६२२

॥ २४१ ॥ (ऋ० १०।७३।१-११)

(२६२३-२६३९) गौरिवीति. शाक्यः । त्रिष्टुप् ।

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय मन्द्र ओजिष्ठो बहुलाभिमानः ।

अवर्धन्निन्द्रं मरुतश्चिदत्र माता यद्वीरं वृधनन्दनिष्ठा

१

ब्रुहो निषत्ता पृशनी चिदेवैः पुरु शंसेन वावृधुष्ट इन्द्रम् ।

अभीवृतेव ता महापदेन ध्वान्तात् प्रपित्वादुदरन्त गर्भाः

२

ऋष्वे ते पादौ प्र यजिगा—स्यवर्धन् वार्जा उत ये चिदत्र ।

त्वमिन्द्र सालावृकान्तसहस्रमासन् दधिषे अश्विना ववृत्त्याः

३

२६२५

समना तूर्णिरुप यासि यज्ञमा नासत्या सख्याय वक्षि ।

वसाव्यामिन्द्र धारयः सहस्राः अश्विना शूर ददतुर्मघानि

४

मन्दमान कृतादधि प्रजायै सखिभिरिन्द्र इषिरेभिरर्थम् ।

आभिर्हि माया उप दस्युमागा—न्मिहः प्र तस्मा अवपत् तर्मांसि

५

सनामाना चिद् ध्वसयो न्यस्मा अवाहन्निन्द्र उपसो यथानः ।

ऋष्वैरगच्छः सखिभिर्निकामैः साकं प्रतिष्ठा हृद्या जघन्थ

६

त्वं जघन्थ नमुचिं मखस्युं दासं कृण्वान ऋषये विमायम् ।

त्वं चकर्थ मनवे स्योनान् पथो देवत्रास्त्रसेव यानान्

७

त्वमतानि पप्रिषे वि नामे—शान इन्द्र दधिषे गर्भस्तौ ।

अनु त्वा देवाः शवसा मद—न्त्युपरिबुधान् वनिनश्चकर्थ

८

२६३०

चक्रं यदस्याप्स्वा निषत्त—मुतो तदस्मै मध्विच्चच्छद्यात् ।

पृथिव्यामतिपितं यदूधः पयो गोष्वदधा ओषधीषु

९

अश्वदिद्यायेति यद्वदु—न्त्योजसो जातमुत मन्य एनम् ।

मन्योरियाय हर्म्येषु तस्थौ यतः प्रजज्ञ इन्द्रो अस्य वेद

१०

वर्यः सुपर्णा उप सेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नार्धमानाः ।

अप ध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षु—र्मुमुग्ध्यस्मान् निधयेव बद्धान्

११

॥ २४२ ॥ (ऋ० १०।७४।१-६)

वसूनां वा चर्कष इयक्षन् धिया वा यज्ञैर्वा रोदस्योः ।		
अर्वन्तो वा ये रयिमन्तः सातौ वनुं वा ये सुश्रुणं सुश्रुतो धुः	१	
हव एषामसुरो नक्षत द्यां श्रवस्यता मनसा निसत क्षाम् ।		
चक्षाणा यत्र सुविताय देवा द्यौर्न वारोभिः कृणवन्त स्वैः	२	२६३५
इयमेषाममृतानां गीः सर्वताता ये कृणवन्त रत्नम् ।		
धियं च यज्ञं च साधन्तस्ते नो धान्तु वसव्यमसामि	३	
आ तत् त इन्द्रायवः पनन्ताऽभि य ऊर्वं गोमन्तं तितृत्सान् ।		
सकृत्स्वं ये पुरुपुत्रां महीं सहस्रधारां बृहतीं दुर्दुक्षन्	४	
शचीव इन्द्रमवसे कृणुध्वमनानतं दमयन्तं पृतन्यून् ।		
ऋभुक्ष्णं मघवानं सुवृक्तिं भर्ता यो वज्रं नयं पुरुक्षुः	५	
यद्वावानं पुरुतमं पुराषाळा वृत्रहेन्द्रो नामान्यप्राः ।		
अचेति प्रासहस्पतिस्तुर्विष्मान् यदीमुश्मसि कर्तवे करत् तत्	६	२६३९

॥ २४३ ॥ (ऋ० १०।८६।१-२३)

(२६४०-२६६२) इन्द्रः, ७, १३, २३ ऐन्द्रो वृषाकपिः, २-६, ९-१०, १५-१८ इन्द्राणी । पङ्क्तिः ।

वि हि सोतो रसृक्षत नेन्द्रं देवममंसत ।		
यत्रामदद् वृषाकपि रयः पुष्टेषु मत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	१	२६४०
परा हीन्द्र धावसि वृषाकपेरति व्यथिः ।		
नो अह प्र विन्दस्यन्यत्र सोमपीतये विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	२	
किमयं त्वां वृषाकपि श्वकार हरितो मृगः ।		
यस्मा इरस्यसीदु न्वर्यो वा पुष्टिमद्वसु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	३	
यमिमं त्वं वृषाकपिं प्रियमिन्द्राभिरक्षसि ।		
श्वा न्वस्य जम्भिषदपि कर्णे वराहयु विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	४	
प्रिया तृष्टानि मे कपिर्व्यक्ता व्यदूदुषत् ।		
शिरो न्वस्य राविषं न सुगं दुष्कृते भुवं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	५	
न मत् स्त्री सुभसत्तरा न सुयाशुतरा भुवत् ।		
न मत् प्रतिच्यवीयसी न सक्थ्युद्यमीयसी विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	६	२६४५
उवे अम्ब सुलाभिके यथेवाङ्ग भविष्यति ।		
भसन्मे अम्ब सक्थि मे शिरो मे वीव हृष्यति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः	७	

किं सुबाहो स्वङ्गुरे - पृथुष्टो पृथुजाघने ।

किं शूरपत्नि नस्त्वमभ्यमीषि वृषाकपिं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ८

अवीरोमिव मामयं शरारुरभि मन्यते ।

उताहमस्मि वीरिणीन्द्रपत्नी मरुत्सखा विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ९

संहोत्रं स्म पुरा नारी समनं वाव गच्छति ।

वेधा ऋतस्य वीरिणीन्द्रपत्नी महीयते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १०

इन्द्राणीमासु नारिषु सुभगामहमश्रवम् ।

नह्यस्या अपरं चन जरसा मरते पतिर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ११ २६५०

नाहमिन्द्राणि रारण सख्युर्वृषाकपेर्ऋते ।

यस्येदमप्यं हविः प्रियं देवेषु गच्छति विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १२

वृषाकपायि रेवति सुपुत्र आदु सुस्तुषे ।

घसत त इन्द्र उक्षणः प्रियं काचित्करं हविर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १३

उक्षणो हि मे पञ्चदश साकं पचति विंशतिम् ।

उताहमस्मि पीव इदुभा कुक्षी घृणन्ति मे विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १४

वृषभो न तिग्मशृङ्गोऽन्तर्युथेषु रोरुवत् ।

मथस्त इन्द्र शं हृदे यं ते सुनोति भावयुर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १५

न सेज्ञे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्याऽकपृत् ।

सेदींशे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १६ २६५५

न सेज्ञे यस्य रोमशं निषेदुषो विजृम्भते ।

सेदींशे यस्य रम्बतेऽन्तरा सक्थ्याऽकपृद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १७

अयमिन्द्र वृषाकपिः परस्वन्तं हतं विदत् ।

असिं सूनां नवं चरुमादेधस्यान आर्चितं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १८

अयमेमि विचारकशद् विचिन्वन् दासमार्थम् ।

पिबामि पाकसुत्वन्नोऽभि धीरमचाकशं विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः १९

धन्वं च यत् कुन्तत्रं च कर्ति स्वित् ता वि योजना ।

नेदीयसो वृषाकपेऽस्तमेहिं गृह्णां उप विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २०

पुनरोहिं वृषाकपे सुविता कल्पयावहै ।

य एष स्वप्ननंशनोऽस्तमेषिं पथा पुनर्विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २१ २६६०

यदुदञ्चो वृषाकपे गृहमिन्द्राजगन्तन ।

क्र१ स्य पुल्वघो मृगः कर्मगञ्जनयोपनो विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २२

पर्शुर्ह नाम मानवी साकं ससूव विंशतिम् ।

भद्रं भलं त्यस्या अभुद् यस्या उदरमामयद् विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः २३

२६६२

॥ २४४ ॥ (२६६३-२६७९) (ऋ० १०।८९।१-४, ६-१८) रेणुवैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्य मृहा विबबाधे रोचना वि ज्मो अन्तान् ।

आ यः प्रपौ चर्षणीधृद्वरोभिः प्र सिन्धुभ्यो रिरिचानो महित्वा १

स सूर्यः पर्युरु वरांस्येन्द्रो ववृत्याद्रथ्येव चक्रा ।

अतिष्ठन्तमप्रस्यं न सर्गं कृष्णा तमांसि त्विष्या जघान २

समानमस्मा अनपावृदच क्षमया दिवो असमं ब्रह्म नव्यम् ।

वि यः पृष्ठेव जनिमान्यय इन्द्रश्चिकाय न सखायमीषे ३

२६६५

इन्द्राय गिरो अनिशितसर्गा अपः प्रेरयं सर्गरस्य बुधात् ।

यो अक्षेणेव चक्रिया शचीभिर्विष्वक् तस्तम्भं पृथिवीमुत द्याम् ४

न यस्य द्यावापृथिवी न धन्व नान्तरिक्षं नाद्रयः सोमो अक्षाः ।

यदस्य मन्युरधिनीयमानः शृणाति वीळु रुजति स्थिराणि ६

जघान वृत्रं स्वाधितिर्वनेव रुरोज पुरो अर्दुन्न सिन्धून् ।

बिभेद गिरिं नवमिन्न कुम्भमा गा इन्द्रो अकृणुत स्वयुग्भिः ७

त्वं ह त्यदृणया इन्द्र धीरो ऽसिर्न पर्व वृजिना शृणासि ।

प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं न जनां मिनन्ति मित्रम् ८

प्र ये मित्रं प्रार्यमणं दुरेवाः प्र संगिरः प्र वरुणं मिनन्ति ।

न्यमित्रेषु वधमिन्द्र तुभ्रं वृषन् वृषाणमरुषं शिशीहि ९

२६७०

इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे पृथिव्या इन्द्रो अपामिन्द्र इत् पर्वतानाम् ।

इन्द्रो वृधामिन्द्र इन्मेधिराणां मिन्द्रः क्षेमे योगे हव्य इन्द्रः १०

प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र वृधो अहभ्यः प्रान्तरिक्षात् प्र समुद्रस्य धासेः ।

प्र वारस्य प्रथसः प्र ज्मो अन्तात् प्र सिन्धुभ्यो रिरिचे प्र क्षितिभ्यः ११

प्र शोशुचत्या उषसो न केतुरसिन्वा ते वर्ततामिन्द्र हेतिः ।

अश्मेव विध्य दिव आ सृजानस्तर्पिष्ठेन हेषसा द्रोघमित्रान् १२

अन्वह मासा अन्विद्वना न्यन्वोषधीरनु पर्वतासः ।

अन्विन्द्रं रोदसी वावशाने अन्वापो अजिहत जायमानम् १३

कर्हि स्वित्र सा त इन्द्र चेत्यास—दुधस्य यद् भिनदो रक्ष एषत् ।		
मित्रक्रुवो यच्छसने न गावः पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते	१४	२६७५
शत्रूयन्तो अभि ये नस्ततस्त्रे महि ब्राधन्त ओगणास इन्द्र ।		
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां सुज्योतिषो अक्तवस्तां अभि ह्युः	१५	
पुरूणि हि त्वा सर्वना जनानां ब्रह्माणि मर्दन् गृणतामृषीणाम् ।		
इमामाघोषन्नवसा सहतिं तिरो विश्वाँ अर्चतो याह्यर्वाङ्	१६	
एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम सुमतीनां नवानाम् ।		
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो विश्वामित्रा उत त इन्द्र नूनम्	१७	
शुनं हुवेम मधवानमिन्द्र—मस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।		
शृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्	१८	२६७९

॥२४५॥ (ऋ० १०।९९।१-१२) (२६८०-२६९१) वज्रो वैखानसः ।

कं नश्चित्रमिषण्यसि चिकित्वान् पृथुग्मानं वाश्रं वावृधधै ।		
कत् तस्य दातु शर्वसो व्युष्टौ तक्षद्वज्रं वृत्रतुरमपिन्वत्	१	२६८०
स हि द्युता विद्युता वेति सामं पृथुं योनिमसुरत्वा संसाद ।		
स सनीलोभिः प्रसहानो अस्य भ्रातुर्न ऋते सप्तथस्य मायाः	२	
स वाजं यातापदुष्पदा यन् त्वर्षाता परि षदत् सनिष्यन् ।		
अनर्वा यच्छतदुरस्य वेदो घञ्जिह्वश्रदेवाँ अभि वर्षसा भून्	३	
स यद्वयोऽवनीर्गोष्वर्वा ऽऽ जुहोति प्रधन्यासु सस्रिः ।		
अपादो यत्र युज्यासोऽरथा द्रोण्यश्वास ईरते घृतं वाः	४	
स रुद्रेभिरशस्तवार ऋभ्वा हित्वी गर्यमारेअवद्य आगात् ।		
वभ्रस्य मन्ये मिथुना विवव्री अन्नमभीत्यारोदयन्मुषायन्	५	
स इद् दासं तुवीरवं पतिदन् षळक्षं त्रिशीर्षाणं दमन्यत् ।		
अस्य त्रितो न्वोर्जसा वृधानो विपा वराहमयोअग्रया हन्	६	२६८५
स द्रुहणे मनुष ऊर्ध्वसान आ साविषदर्शसानाय शरुम् ।		
स नृतमो नहृषोऽस्मत् सुजातः पुरोऽभिनदहन् दस्युहत्ये	७	
सो अभ्रियो न यवस उदून्यन् क्षयाय गातुं विदन्नो अस्मे ।		
उप यत् सीदुदिन्दुं शरीरैः श्येनोऽयोपाष्टिर्हन्ति दस्यून्	८	
स ब्राधतः शवसानेभिरस्य कुत्साय शृष्णं कृपणे परादात् ।		
अयं कविर्मनयच्छस्यमान—मत्कं यो अस्य सनितोत नृणाम्	९	

अयं दशस्यन् नर्येभिरस्य दुस्मो देवेभिर्वरुणो न मायी ।		
अयं कनीनं क्रतुपा अवेद्यमिमीतारुं यश्चतुष्पात्	१०	
अस्य स्तोमेभिरौशिज क्रजिश्वा व्रजं दूरयद् वृषभेण पिप्रोः ।		
सुत्वा यद् यजतो वीदयद्रीः पुर इयानो अभि वर्षसा भूत्	११	२६९०
एवा महो असुर वक्षथाय वभ्रकः पङ्क्तिरुप सर्पादिन्द्रम् ।		
स इयानः करति स्वस्तिमस्मा इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः	१२	२६९१

॥ २४६ ॥ (ऋ० १०।१०३।१-३, ५-११, १३)

(२६९२-२७०२) ऐन्द्रोऽप्रतिरथः । [१३ मरुतो वा] । त्रिष्टुप्, १३ अनुष्टुप् ।

आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।		
संकन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतं सेना अजयत् साकमिन्द्रः	१	
संकन्दनेनानिमिषेण जिष्णुना युत्कारेण दुश्च्यवनेन धृष्णुना ।		
तदिन्द्रेण जयत् तत् संहध्वं युधो नर इषुहस्तेन वृष्णा	२	
स इषुहस्तैः स निषङ्गिभिर्वशी संघ्रष्टा स युध इन्द्रो गणेन ।		
संसृष्टजित् सौमपा बाहुशर्धुः—ग्रधन्वा प्रतिहिताभिरस्ता	३	
बलविज्ञायः स्थविरः प्रवीरः सहस्वान् वाजी सहमान उग्रः ।		
अभिर्वीरो अभिसत्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्	५	२६९५
गोत्राभिर्दं गोविदं वज्रबाहुं जयन्तमज्मं प्रमृणन्तमोजसा ।		
इमं सजाता अनु वीरयध्वमिन्द्रं सखायो अनु सं रभध्वम्	६	
अभि गोत्राणि सहसा गार्हमानो ऽद्वयो वीरः शतमन्युरिन्द्रः ।		
दुश्च्यवनः पृतनाषाळयुध्योऽस्माकं सेना अवतु प्र युत्सु	७	
इन्द्र आसा नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः ।		
देवसेनानामभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्	८	
इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य राज्ञ आदित्यानां मरुतां शर्धं उग्रम् ।		
महार्मनसां भुवनच्यवानां घोषो देवानां जयतामुदस्थात्	९	
उद्धर्षय मघवन्नायुधा—न्युत् सत्त्वंनां मामकानां मनांसि ।		
उद्ध्वहन् वाजिनां वाजिना—न्युदथानां जयतां यन्तु घोषाः	१०	२७००
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु ध्वजे—ष्वस्माकं या इषवस्ता जयन्तु ।		
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँ उ देवा अवता हवेषु	११	

प्रेता जयता नर इन्द्रो वः शर्मं यच्छतु ।

उग्रा वः सन्तु बाहवो ऽनाधृष्या यथासथ

१३

२७०२

॥ २४७ ॥ (ऋ० १०।१०४।१-११)

(२७०२-२७१३) अष्टको वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

असावि सोमः पुरुहूत तुभ्यं हरिभ्यां यज्ञमुप याहि तूयम् ।

तुभ्यं गिरो विप्रवीरा इयाना दधन्विर इन्द्र पिबा सुतस्य

१

अप्सु धूतस्य हरिवः पिबेह नृभिः सुतस्य जठरं पृणस्व ।

२

मिमिक्षुर्यमद्रय इन्द्र तुभ्यं तेभिर्वर्धस्व मदमुक्थवाहः

प्रोग्रां पीतिं वृष्ण इयमि सत्यां प्रयै सुतस्य हर्यश्च तुभ्यम् ।

इन्द्र धेनाभिरिह मादयस्व धीभिर्विश्वाभिः शच्या गृणानः

३

२७०५

ऊती शचीवस्तव वीर्येण वयो दधाना उशिज ऋतज्ञाः ।

प्रजावदिन्द्र मनुषो दुरोणे तस्थुर्गुणतः सधमाद्यासः

४

प्रणीतिमिष्टे हर्यश्च सुष्टोः सुषुम्नस्य पुरुचो जनासः ।

मंहिष्ठाभूतिं वितिरे दधानाः स्तोतार इन्द्र तव सूनृताभिः

५

उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि पीतये सुतस्य ।

इन्द्र त्वा यज्ञः क्षममाणमानङ् द्वाश्वौ अस्यध्वरस्य प्रकेतः

६

सहस्रवाजमभिमातिषाहं सुतेरणं मघवानं सुवृक्तिम् ।

उप भूषन्ति गिरो अप्रतीतमिन्द्रं नमस्या जरितुः पनन्त

७

सप्तापो देवीः सुरणा अमृक्ता याभिः सिन्धुमतर इन्द्र पूर्मित् ।

नवतिं श्रोत्या नव च स्रवन्ती देवेभ्यो गातुं मनुषे च विन्दः

८

२७१०

अपो महीरभिर्शस्तेरमुञ्चो ऽजागरास्वधि देव एकः ।

इन्द्र यास्त्वं वृत्रतूर्ये चकथ ताभिर्विश्वायुस्तन्वं पुपुष्याः

९

वीरेणयः क्रतुरिन्द्रः सुशस्तिरुतापि धेना पुरुहूतमीडे ।

आर्दयद् वृत्रमकृणोदु लोकं ससाहे शक्रः पृतना अभिष्टिः

१०

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं वाजसातौ ।

शूणवन्तमुग्रमतये समत्सु ब्रन्तं वृत्राणि संजितं धनानाम्

११

२७१३

॥ २४८ ॥ (ऋ० १०।१०५।१-११)

(२७१४-२७२४) कौत्सो दुर्मित्रः सुमित्रो वा । उष्णिक्, १ गायत्री वा, २, ७ पिपीलिकमध्याः, ११ त्रिष्टुप् ।

कदा वसो स्तोत्रं हर्यत आव श्मशा रुधद्वाः । दीर्घं सुतं वाताप्याय १

हरी यस्य सुयुजा विव्रता वे—खन्तानु शेपा । उभा रजी न केशिना पतिर्दन्	२	२७१५
अप योरिन्द्रः पापज आ मर्तो न शश्रमाणो विभीवान् । शुभे यद्युयुजे तविषीवान्	३	
सचायोरिन्द्रश्चर्कष ओं उपानसः सपर्यन् । नदयोर्विव्रतयोः शूर इन्द्रः	४	
अधि यस्तस्थौ केशवन्ता व्यचस्वन्ता न पुष्ट्यै । वनोति शिप्राभ्यां शिप्रिणीवान्	५	
प्रास्तौदृष्वौजा ऋष्वेभिस्ततक्ष शूरः शवसा । ऋभुर्न क्रतुभिर्मातरिश्वा	६	
वज्रं यश्चक्रे सुहनाय दस्यवे हिरीमशो हिरीमान् । अरुतहनुरज्जुतं न रजः	७	२७२०
अव नो वृजिना शिशी—ह्युचा वनेमानृचः । नाब्रह्मा यज्ञ ऋध्वजोषति त्वे	८	
ऊर्ध्वा यत ते त्रेतिनी भूद यज्ञस्य धूर्धु सद्यन् । सजूर्नावं स्वयंशसं सचायोः	९	
श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी भू—च्छ्रिये दर्विररेपाः । यया स्वे पात्रे सिञ्चस उत	१०	
शतं वा यदस्युहत्ये प्रति त्वा सुमित्र इत्थास्तौद दुर्मित्र इत्थास्तौत् ।		
आवो यदस्युहत्ये कुत्सपुत्रं प्रावो यदस्युहत्ये कुत्सवत्सम्	११	२७२४

॥ २४९ ॥ (ऋ० १०।११।१।१-१०)

(२७२५-२७३४) वैरूपोऽष्टादंष्ट्र । जिह्वुप ।

मनीषिणः प्र भरध्वं मनीषां यथायथा मतयः सन्ति नृणाम् ।		
इन्द्रं सत्यैरेरयामा कृतोभिः स हि वीरो गिर्वेणस्युर्विदानः	१	२७२५
ऋतस्य हि सदसो धीतिरद्यौत् सं गर्ष्टियो वृषभो गोभिरानद् ।		
उदतिष्ठत् तविषेणा रवेण महान्ति चित् सं विव्याचा रजांसि	२	
इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य वेदु स हि जिष्णुः पथिकृत् सूर्याय ।		
आन्मेनां कृण्वन्नच्युतो भुवद्भोः पतिर्विवः सनजा अप्रतीतः	३	
इन्द्रो मृह्ना महतो अर्णवस्य व्रतामिनादङ्गिरोभिर्गृणानः ।		
पुरुणि चिन्नि तताना रजांसि द्वाधार यो धरुणं सत्यताता	४	
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं पृथिव्या विश्वा वेदु सर्वना हन्ति शुष्णम् ।		
महीं चिद् द्यामातनोत् सूर्येण चास्कम्भं चित् कम्भेन स्कम्भीयान्	५	
वज्रेण हि वृत्रहा वृत्रमस्त—रदेवस्य शूशुवानस्य मायाः ।		
वि धृष्णो अत्र धृषता जघन्था—ऽथाभवो मघवन् ब्राह्मोजाः	६	२७३०
सचन्त यदुषसः सूर्येण चित्रामस्य केतवो रामविन्दन् ।		
आ यन्नक्षत्रं ददृशे दिवो न पुनर्यतो नकिरन्द्रा नु वेद	७	
दूरं किल प्रथमा जग्मुरासा—मिन्द्रस्य याः प्रसवे ससुरापः ।		
कं स्विदग्रं कं बुध्न आसा—मापो मध्यं कं वो नूनमन्तः	८	

सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानाँ आदिदेताः प्र विविज्रे जवेन ।

मुमुक्षमाणा उत या मुमुत्रे ऽधेदेता न रमन्ते नितित्ताः ९

सधीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन् त्सनाज्जार आरितः पूभिर्दासाम् ।

अस्तमा ते पार्थिवा वसू—न्यस्मे जग्मुः सूनृता इन्द्र पूर्वीः १०

२७३४

॥ २५० ॥ (ऋ० १०।११२।१-१०) (२७३५-२७४४) वैरूपो नमःप्रभेदनः ।

इन्द्र पिब प्रतिकामं सुतस्य प्रातःसावस्तव हि पूर्वपीतिः ।

हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रू—नुक्थेभिष्टे वीर्याँ प्र ब्रवाम १

२७३५

यस्ते रथो मर्नसो जवीया—नेन्द्र तेन सोमपेयाय याहि ।

तूयमा ते हरयः प्र द्रवन्तु येभिर्यासि वृषभिर्मन्दमानः २

हरित्वता वर्चसा सूर्यस्य श्रेष्ठै रूपैस्तन्वं स्पर्शयस्व ।

अस्माभिरिन्द्र सखिभिर्हुवानः सधीचीनो मादयस्वा निषद्य ३

यस्य त्यत् ते महिमानं मदे—ष्विमे मही रोदसी नाविंवित्ताम् ।

तदोक्त आ हरिभिरिन्द्र युक्तैः प्रियेभिर्याहि प्रियमन्नमच्छ ४

यस्य शश्वत् पपिवाँ इन्द्र शत्रू—ननानुकृत्या रण्या चकर्थ ।

स ते पुरंधिं तविषीमियर्ति स ते मदाय सुत इन्द्र सोमः ५

इदं ते पात्रं सनवित्तमिन्द्र पिबा सोममेना शतक्रतो ।

पूर्ण आहावो मदिरस्य मध्वो यं विश्व इदंभिर्हयन्ति देवाः ६

२७४०

वि हि त्वामिन्द्र पुरुधा जनांसो हितप्रयसो वृषभ ह्वयन्ते ।

अस्माकं ते मधुमत्तमानी—मा भुवन्त्सर्वना तेषु हर्य ७

प्र त इन्द्र पूर्व्याणि प्र नूनं वीर्याँ वोचं प्रथमा कृतानि ।

सतीनमन्युरश्रथायो आद्रिं सुवेदूनामकृणोर्ब्रह्मणे गाम् ८

नि षु सीद गणपते गणेषु त्वामाहुर्विप्रतमं कवीनाम् ।

न ऋते त्वत् क्रियते किं चनारे महामर्कं मघवाञ्चित्रमर्च ९

अभिख्या नो मघवन् नार्धमानान् त्सखे बोधि वसुपते सखीनाम् ।

रणं कृधि रणकृत् सत्यशुष्मा ऽमक्ते चिदा भजा राये अस्मान् १०

२७४४

॥ २५१ ॥ (ऋ० १०।११३।१-१०) (२७४५-२७५४) वैरूपः शतप्रभेदनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

तमस्य द्यावापृथिवी सचेतसा विश्वेभिर्देवैरनु शुष्ममावताम् ।

यदैत कृण्वानो महिमानमिन्द्रियं प्रीत्वी सोमस्य क्रतुमाँ अवर्धत १

२७४५

तमस्य विष्णुर्महिमानमोजसां—ऽहं दधन्वान् मधुनो वि रंशते ।	
देवेभिरिन्द्रो मघवा सयावभिर्वृत्रं जघन्वा अभवद् वरेण्यः	२
वृत्रेण यदहिना बिभ्रदायुधा समस्थित्या युधये शंसमाविदे ।	
विश्वे ते अत्र मरुतः सह त्मना ऽवर्धन्नुग्र महिमानमिन्द्रियम्	३
जज्ञान एव व्यबाधत स्पृधः प्रापश्यद् वीरो अभि पौंस्यं रणम् ।	
अवृश्चदद्विमव सस्यदः सृज—दस्तभ्नाक्षाकं स्वपस्यया पृथुम्	४
आदिन्द्रः सत्रा तविषीरपत्यत् वरीयो द्यावापृथिवी अबाधत ।	
अवाभरद्भूषितो वज्रमायसं शेवं मित्राय वरुणाय द्वाशुषे	५
इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो विरिजानं ऋघायतो अरंहयन्त मन्यवे ।	
वृत्रं यदुग्रो व्यवृश्चदोजसा ऽपो बिभ्रतं तमसा परीवृतम्	६
या वीर्याणि प्रथमानि कर्त्वा महित्वेभिर्यतमानौ समीयतुः ।	
ध्वान्तं तमोऽव दध्वसे हुत इन्द्रो मृहा पूर्वहूतावपत्यत	७
विश्वे देवासो अध वृष्ण्यानि ते ऽवर्धयन्त्सोमवत्या वचस्यया ।	
रुद्धं वृत्रमहिमिन्द्रस्य हन्मना ऽग्निर्न जम्भैस्तृष्वन्नमावयत्	८
भूरि दक्षेभिर्वचनेभिर्ऋक्भिः सख्येभिः सख्यानि प्र वोचत ।	
इन्द्रो धुनिं च चुमुरिं च दुम्भय—ऊर्ध्वद्वामनस्या गृणुते दुभीतये	९
त्वं पुरुण्या भरा स्वश्व्या येभिर्मसै निवचनानि शंसन् ।	
सुगेभिर्विश्वा दुरिता तरेम विदो षु ण उर्विया गाधमद्य	१०

२७५०

॥ २५२ ॥ (ऋ० १०।११६।१-९)

(२७५५-२७६३) स्थौरोऽग्नियुत स्थौरोऽग्नियूपो वा । त्रिष्टुप् ।

पिबा सोमं महत इन्द्रियाय पिबा वृत्राय हन्तवे शविष्ठ ।	
पिब राये शवसे हूयमानः पिब मध्वस्तृपदिन्द्रा वृषस्व	१
अस्य पिब क्षुमतः प्रस्थितस्येन्द्र सोमस्य वरुमा सुतस्य ।	
स्वस्तिदा मनसा मादयस्वा—ऽर्वाचीनो रेवते सौभगाय	२
ममत्तु त्वा दिव्यः सोम इन्द्र ममत्तु यः सूयते पार्थिवेषु ।	
ममत्तु येन वरिवश्चकर्थं ममत्तु येन निरिणासि शत्रून्	३
आ द्विर्हो अमिनो यात्विन्द्रो वृषा हरिभ्यां परिषिक्तमन्धः ।	
गव्या सुतस्य प्रभृतस्य मध्वः सत्रा खेदामरुशहा वृषस्व	४

२७५५

नि तिग्मानि भ्राशयन् भ्राश्या—न्यव स्थिरा तनुहि यातुजूनाम् ।

उग्राय ते सहो बलं ददामि प्रतीत्या शत्रून् विगदेषु वृश्च ५

व्ययं इन्द्र तनुहि श्रवांस्यो—जः स्थिरेव धन्वन्नोऽभिमातीः ।

अस्मद्वावृधानः सहोभि—रनिभृष्टस्तन्वं वावृधस्व ६

२७६०

इदं हविर्मघवन् तुभ्यं रातं प्रति सम्राळहणानो गृभाय ।

तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वोऽ—ऽद्वीन्द्र पिब च प्रस्थितस्य ७

अद्वीद्रिन्द्र प्रस्थितेमा हवींषि चनो दधिष्व पचतोत सोमम् ।

प्रयस्वन्तुः प्रति हयामसि त्वा सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः ८

प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवचस्यामियमि सिंघाविव प्रेरयं नावमकैः ।

अया इव परि चरन्ति देवा ये अस्मभ्यं धनुदा उन्निदंश्च ९

२७६३

॥ २५३ ॥ (ऋ० १०।१२०।१-९)

(२७६४-२७७२) आथर्वणो बृहद्विवः ।

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः ।

सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रू—ननु यं विश्वे मदन्त्यूमाः १

वावृधानः शर्वसा भूर्योजाः शत्रुर्दुसाय भियसं दधाति ।

अव्यनच्च व्यनच्च सस्ति सं ते नवन्त प्रभृता मदेषु २

२७६५

त्वे क्रतुमपि वृञ्जन्ति विश्वे द्विर्यदेते त्रिर्भवन्त्यूमाः ।

स्वादोः स्वादीयः स्वादुना सृजा स—मदः सु मधु मधुनाभि योधीः ३

इति चिद्धि त्वा धना जयन्तं मदमदे अनुमदन्ति विप्राः ।

ओर्जीयो धृष्णो स्थिरमा तनुष्व मा त्वा दभन् यातुधाना दुरेवाः ४

त्वया वयं शाश्वन्नेहे रणेषु प्रपश्यन्तो युधेन्यानि भूरि ।

चोदयामि त आयुधा वचोभिः सं ते शिशामि ब्रह्मणा वयांसि ५

स्तुषेय्यं पुरुवर्षसमृभ्व—मिनतममाप्यमाप्यानाम् ।

आ दर्षते शर्वसा सप्त दानून् प्र साक्षते प्रतिमानानि भूरि ६

नि तद्वधिषेऽवरं परं च यस्मिन्नाविथावसा दुरोणे ।

आ मातरां स्थापयसे जिगत्नू अत इनोषि कर्वरा पुरूणि ७

२७७०

इमा ब्रह्म बृहद्विवो विवक्ती—न्द्राय शूषमग्निः स्वर्षाः ।

महो गोत्रस्य क्षयति स्वराजो दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ८

एवा महान् बृहद्विबो अथर्वा ऽवोचत् स्वां तन्व मिन्द्रमेव ।
स्वसारो मातरिभ्वरीरप्रिा हिन्वन्ति च शर्वसा वर्धयन्ति च

९

२७७२

॥ २५४ ॥ (ऋ० १०।१३।१-३, ६-७) (२७७३-२७७७) सुकीर्तिः काक्षीवत ।

अप प्राचं इन्द्र विश्वाँ अमित्रा नपापाचो अभिभूते नुदस्व ।

अपोदीचो अप शूराधराचं उरौ यथा तव शर्मन् मदेम

१

कुविदुङ्ग यवमन्तो यवं चिद् यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूर्य ।

इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नमोवृक्तिं न जग्मुः

२

नहि स्थूर्युतथा यातमस्ति नोत श्रवो विविदे संगमेषु ।

गव्यन्त इन्द्रं सख्याय विप्रा अश्वायंतो वृषणं वाजयन्तः

३

२७७५

इन्द्रः सुत्रामा स्ववाँ अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।

बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम

६

तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्या ऽपि भद्रे सौमनसे स्याम ।

स सुत्रामा स्ववाँ इन्द्रो अस्मे आराच्छिद् द्वेषः सनुतयुयोतु

७

२७७७

॥ २५५ ॥ (१०।१३।१-७)

(२७७८-२७८४) सुदाः पैजवनः । शकरी, ४-६ महापङ्क्तिः, ७ त्रिष्टुप् ।

प्रो ष्वस्मै पुरोरथ मिन्द्राय शूषमर्चत ।

अभीके चिदु लोककृत् संगे समत्सु वृत्रहा ऽस्माकं बोधि चोद्विता

नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

१

त्वं सिधूरवासृजो ऽधराचो अहन्नहिम् ।

अशत्रुरिन्द्र जज्ञिषे विश्वं पुण्यसि वार्यं तं त्वा परि ष्वजामहे

नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

२

वि षु विश्वा अरांतयो ऽर्यो नशंत नो धियः ।

अस्तासि शत्रवे वधं यो न इन्द्र जिघांसति या ते रातिर्वुर्दिवसु

नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

३

२७८०

यो न इन्द्राभितो जनो वृकायुरादिदेशति ।

अधस्पदं तर्मा कृधि विबाधो असि सासहि नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

४

यो न इन्द्राभिदासति सनाभिर्यश्च निष्ठ्यः ।

अव तस्य बलं तिर महीव द्यौरध त्मना नभन्तामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु

५

वयमिन्द्र त्वायवः सखित्वमा रभामहे ।

ऋतस्य नः पथा नया—ऽति विश्वानि दुरिता नभंतामन्यकेषां ज्याका अधि धन्वसु ६
अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र तां शिक्ष या दोहते प्रति वरं जरित्रे ।

अच्छिद्रोक्षी पीपयद् यथा नः सहस्रधारा पर्यसा मही गौः

७ २५८४

॥ २५६ ॥ (ऋ० १०।१३४।१-७)

(२७८५-२७९१) १-६ (पूर्वार्धस्य) मान्धाता यौवनाश्वः, ६ (उत्तरार्धस्य)-७ गोधा ऋषिका ।
महापङ्क्तिः, ७ पंक्तिः ।

उभे यदिन्द्र रोदसी आप्राथोषा इव ।

महान्तं त्वा महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् १ २७८५
अव स्म दुर्हणायतो मर्तस्य तनुहि स्थिरम् ।

अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्मां आदिदेशति देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् २
अव त्या बृहतीरिषो विश्वश्चन्द्रा अमित्रहन् ।

शचीभिः शक्र धूनुहीन्द्र विश्वाभिरुतिभिर्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ३
अव यत् त्वं शतक्रतुविन्द्र विश्वानि धूनुषे ।

रथिं न सुन्वते सचा सहस्रिणीभिरुतिभिर्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ४
अव स्वेदा इवाभितो विष्वक् पतन्तु दिद्यवः ।

दूर्वाया इव तंतवो व्यस्मदेतु दुर्मतिर्देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ५
वृधि ह्यङ्कुशं यथा शक्तिं बिभर्षि मंतुमः ।

पूर्वेण मघवन् पदा ऽजो वृथा यथा यमो देवी जनित्र्यजीजनद् भद्रा जनित्र्यजीजनत् ६ २७९०
नकिर्देवा मिनीमसि नकिरा योपयामसि मंत्रश्रुत्यं चरामसि ।

पक्षेभिरपिकक्षेभिर्त्राभि सं रभामहे

७ २७९१

॥ २५७ ॥ (ऋ० १०।१३८।१-६) (२७९२-२७९७) अङ्ग औरवः । जगती ।

तव त्य ईन्द्र सख्येषु वह्नय ऋतं मन्वाना व्यददिरुर्वलम् ।

यत्रा दशस्यन्नुषसो रिणन्नपः कुत्साय मन्मन्त्रह्यश्च दुंसयः १

अवांसृजः प्रस्वः श्वश्रयो गिरीनुदाज उस्त्रा अपिबो मधु प्रियम् ।

अवर्धयो वनिनो अस्य दंससा शुशोच सूर्यं ऋतजातया गिरा २

वि सूर्यो मध्ये अमुचद् रथं दिवो विद् दासाय प्रतिमानमार्थः ।

हृळ्हानि पिशोरसुरस्य मायिन ईन्द्रो व्यास्यच्चकृवाँ ऋजिश्चन ३

अनाधृष्टानि धृषितो व्यास्य—स्त्रिधीरदेवाँ अमृणदुयास्यः ।

मासेव सूर्यो वसु पुयमा ददे गृणानः शत्रौरशृणाद्विरुक्मता

४ २७९५

अयुद्धसेनो विभ्वा विभिंदुता दाशद् वृत्रहा तुज्यानि तेजते ।

इंद्रस्य वज्रादविभेदमिश्रथः प्राक्रामच्छुन्ध्यूरजहादुषा अनः

५

एता त्या ते श्रुत्यानि केवला यदेक एकमकृणोरयज्ञम् ।

मासां विधानमदधा अधि द्यवि त्वया विभिन्नं भरति प्रधि पिता

६ २७९७

॥ २५८ ॥ (क्र० १०१४४।१-६)

(२७९८-२८०३) ताक्ष्यः सुपर्णः, यामायन ऊर्ध्वकृशलो वा ।

गायत्री, २ बृहती, ५ सतोबृहती, ६ विष्टारपङ्क्तिः ।

अयं हि ते अमर्त्य इंदुरत्यो न पत्यते । दक्षो विश्वार्युर्वधसे

१

अयमस्मासु काव्य ऋभुर्वज्रो दास्वते ।

अयं बिभर्त्यूर्ध्वकृशनं मद—मृभुर्न कृत्वयं मदम्

२

वृषुः श्येनाय कृत्वन आसु स्वासु वंसगः । अव दीधेदहीशुवः

३ २८००

यं सुपर्णः परावतः श्येनस्य पुत्र आभरत् । शतचक्रं योऽह्यो वर्तनिः

४

यं ते श्येनश्चारुमवृकं पदाभर—दरुणं मानमन्धसः ।

एना वयो वि तार्यायुर्जीवस एना जागार बंधुता

५

एवा तदिन्द्र इंदुना देवेषु चिद्धारयाते महि त्यजः ।

क्रत्वा वयो वि तार्यायुः सुक्रतो क्रत्वायमस्मदा सुतः

६ २८०३

॥ २५९ ॥ (क्र० १०१४७।१-५)

(२८०४-२८०८) सुवेदाः शैरीषिः । जगती, ५ त्रिष्टुप् ।

श्रत् ते दधामि प्रथमाय मन्यवे ऽहन्यद् वृत्रं नयं विवेरपः ।

उभे यत् त्वा भवतो रोदसी अनु रेजते शुष्मात् पृथिवी चिदद्विवः

१

त्वं मायाभिरनवद्य मायिनं श्रवस्यता मनसा वृत्रमर्दयः ।

त्वामिन्नरो वृणते गार्विष्टिषु त्वां विश्वासु हव्यास्विष्टिषु

२ २८०५

ऐषु चाकन्धि पुरुहूत सूरिषु वृधासो ये मघवन्नानशुमघम् ।

अर्चन्ति तोके तनये परिष्टिषु मेधसाता वाजिनमहये धने

३

स इन्द्र रायः सुभृतस्य चाकन—न्मदं यो अस्य रंह्यं चिकेतति ।

त्वावृधो मघवन् दाश्वध्वरो मक्षू स वाजं भरते धना नृभिः

४

त्वं शर्धीय महिना गृणान उरु कृधि मघवच्छग्धि रायः ।

त्वं नो मित्रो वरुणो न मायी पित्वो न दस्म दयसे विभक्ता

५ २८०८

॥ २६० ॥ (ऋ० १०।१४।१-५) (२८०९-२८१३) पृथुर्वैन्यः । त्रिष्टुप् ।

सुष्वाणासं इन्द्रं स्तुमसिं त्वा सस्रवांसंश्च तुविनृम्णं वाजम् ।		
आ नो भर सुवितं यस्य चाकन् त्मना तनां सनुयाम त्वोताः	१	
ऋष्वस्त्वमिन्द्र शूर जातो दासीर्विशः सूर्येण सहाः ।		
गुहां हितं गुह्यं गूळहमप्सु बिभ्रुमसिं प्रस्रवणे न सोमम्	२	२८१०
अर्यो वा गिरो अर्भ्यर्चं विद्रा नृषीणां विप्रः सुमतिं चक्रानः ।		
ते स्याम ये रणयन्त सोमैरेनोत तुभ्यं रथोळ्ह भक्षैः	३	
इमा ब्रह्मेन्द्र तुभ्यं शंसि दा नृभ्यो नृणां शूर शवः ।		
तेभिर्भव सक्रतुर्येषु चाकञ्जुत त्रायस्व गृणत उत स्तीन्	४	
श्रुधी हवामिन्द्र शूर पृथ्या उत स्तवसे वेन्यस्याकैः ।		
आ यस्ते योनिं धृतवन्तमस्वा रूमिर्न निमैर्द्रवयन्त वक्ताः	५	२८१३

॥ २६१ ॥ (ऋ० १०।१५।१-५) (२८१४-२८१८) शासो भारद्वाजः । अनुष्टुप् ।

शास इत्था मह्यं अस्य मित्रखादो अजुतः ।		
न यस्य हन्यते सखा न जीर्यते कदा चन	१	
स्वस्तिदा विशस्पतिं वृत्रहा विमृधो वृशी ।		
वृषेन्द्रः पुर एतु नः सोमपा अर्भयंकरः	२	२८१५
वि रक्षो वि मृधो जहि वि वृत्रस्य हनू रुज ।		
वि मन्युमिन्द्र वृत्रह मित्रस्याभिदासतः	३	
वि न इन्द्र मृधो जहि नीचा यच्छ पृतन्यतः ।		
यो अस्मौ अभिदास त्यधरं गमया तमः	४	
अपेन्द्र द्विष्टो मनो ऽप जिज्यासतो वृधम् ।		
वि मन्योः शर्म यच्छ वरीयो यवया वृधम्	५	२८१८

॥ २६२ ॥ (ऋ० १०।१५।१-५) (२८१९-२८२३) देवजामय इन्द्रमातरः । गायत्री ।

ईङ्घ्र्यन्तीरपस्युव इन्द्रं जातमुपासते । भेजानासः सुवीर्यम्	१	
त्वमिन्द्र बलादधि सहसो जात ओजसः । त्वं वृषन् वृषेदसि	२	२८२०
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा व्यन्तरिक्षमातिरः । उद् ग्रामस्तभ्ना ओजसा	३	
त्वमिन्द्र सजोषस मर्कं बिभर्षि ब्राह्मोः । वज्रं शिशान ओजसा	४	
त्वमिन्द्राभिभूरसि विश्वा जातान्योजसा । स विश्वा भुव आभवः	५	२८२३

॥ २६३ ॥ (१०१६०१-५) (२८२४-२८२८) पूरणो वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

तीव्रस्याभिर्वयसो अस्य पाहि सर्वरथा वि हरीं इह मुञ्च ।		
इन्द्र मा त्वा यजमानासो अन्ये नि रीरमन् तुभ्यमिमे सुतासः	१	
तुभ्यं सुतास्तुभ्यमु सोत्वास-स्त्वां गिरः श्वाञ्च आ ह्वयन्ति ।		
इन्द्रेदमद्य सर्वनं जुषाणो विश्वस्य विद्वां इह पाहि सोमम्	२	२८२५
य उशता मनसा सोममस्मै सर्वहृदा देवकामः सुनोति ।		
न गा इन्द्रस्तस्य परा ददाति प्रशस्तमिच्चारुमस्मै कृणोति	३	
अनुस्पष्टो भवत्येषो अस्य यो अस्मै रेवान् न सुनोति सोमम् ।		
निररन्तौ मघवा तं दधाति ब्रह्मद्विषो हन्त्यनानुदिष्टः	४	
अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो हवामहे त्वोर्पगन्तवा उ ।		
आभूषन्तस्ते सुमतौ नवायां वयमिन्द्र त्वा शुनं हुवेम	५	२८२८

॥ २६४ ॥ (क्र० १०१६७१-२, ४) (२८२९-२८३१) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

तुभ्येदमिन्द्र परिं पिच्यते मधु त्वं सुतस्य कुलशस्य राजसि ।		
त्वं रयिं पुरुवीरामु नस्कृधि त्वं तपः परितप्याजयः स्वः	१	
स्वर्जितं महि मन्दानमन्धसो हवामहे परिं शक्रं सुतां उप ।		
इमं नो यज्ञमिह बोध्या गहि स्पृधो जयन्तं मघवानमीमहे	२	२८३०
प्रसूतो भक्षमकरं चरावपि स्तोमं चेमं प्रथमः सूरिरुन्मृजे ।		
सुते सातेन यद्यागमं वां प्रति विश्वामित्रजमदग्नी दमे	४	२८३१

॥ २६५ ॥ (क्र० १०१७११-४) (२८३२-२८३५) इटो भार्गवः । गायत्री ।

त्वं त्यमिष्टतो रथ-मिन्द्र प्रावः सुतावतः । अशृणोः सोमिनो हवम्	१	
त्वं मखस्य दोधतः शिरोऽव त्वचो भरः । अगच्छः सोमिनो गृहम्	२	
त्वं त्यमिन्द्र मर्त्य-मास्त्रबुधाय वेन्यम् । मुहुः श्रद्धा मनस्यवे	३	
त्वं त्यमिन्द्र सूर्यं पश्चा संतं पुरस्कृधि । देवानां चित् तिरो वशम्	४	२८३५

॥ २६६ ॥ (क्र० १०१७९१-३)

(२८३६-२८३८) क्रमेण शिविरौशीनरः, काशिराजः प्रतर्दनः, रौहिदस्वो वसुमनाः । त्रिष्टुप्, १ अनुष्टुप् ।

उत् तिष्ठताव पश्यते-न्द्रस्य भागमृत्विषम् ।		
यदि श्रातो जुहोतन् यद्यश्रातो ममत्तन्	१	
श्रातं हविरो ष्विद्व प्र चाहि जुगाम सूरौ अध्वनो विमध्यम् ।		
परि त्वासते निधिभिः सखायः कुलपा न ब्राजपतिं चरतम्	२	

श्रातं मन्य ऊर्ध्वनि श्रातमग्नौ सुश्रातं मन्ये तद्वतं नवीयः ।

माध्यंदिनस्य सर्वनस्य दुग्धः पिबेन्द्र वज्रिन् पुरुकृज्जुषाणः

३

१८३८

॥ २६७ ॥ (ऋ० १०।१८०।१-३) (२८३९-२८४१) जय ऐन्द्र । । त्रिष्टुप् ।

प्र संसाहिषे पुरुहूत शत्रूञ्ज्येष्ठस्ते शुष्म इह रातिरस्तु ।

इन्द्रा भर दक्षिणेना वसूनि पतिः सिन्धूनामसि रेवतीनाम्

१

मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः परावत आ जगन्था परस्याः ।

सुकं संशायं पविर्मिन्द्र तिमं वि शत्रून् ताळिह वि मृधो नुदस्व

२

१८४०

इन्द्र क्षत्रमभि वाममोजो ऽर्जायथा वृषभ चर्षणीनाम् ।

अपानुदो जनममित्रयन्तं मुरुं देवेभ्यो अकृणोरु लोकम्

३

१८४१

॥ २६८ ॥ (ऋ० १०।४७।१-८) (२८४२-२८४९) सप्तगुरांगिरसः । [वैकुण्ठ इन्द्रः] ।

जगृभ्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तं वसूयवो वसुपते वसूनाम् ।

विद्वा हि त्वा गोपतिं शूर गोनामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

१

स्वायुधं स्ववसं सुनीथं चतुःसमुद्रं धरुणं रयीणाम् ।

चकृत्यं शंस्यं भूरिवारमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

२

सुब्रह्माणं देववन्तं बृहन्तं मुरुं गभीरं पृथुबुध्नमिन्द्र ।

श्रुतक्रषिमुग्रमभिमातिषाहमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

३

सनद्राजं विप्रवीरं तरुत्रं धनुस्पतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।

द्रुस्युहनं पूर्भिदमिन्द्र सत्यमस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

४

१८४५

अश्वावंतं रथिनं वीरवन्तं सहस्रिणं शतिनं वाजमिन्द्र ।

भद्रवातं विप्रवीरं स्वर्षामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

५

प्र सप्तगुप्तधीतिं सुमेधां बृहस्पतिं मतिरच्छा जिगाति ।

य आङ्गिरसो नमसोपसद्यो ऽस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

६

वनीवानो मम दूतास इन्द्रं स्तोमाश्चरन्ति सुमतीरियानाः ।

हृदिस्पृशो मनसा वच्यमाना अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

७

यत् त्वा यामिं दुद्धि तन्न इन्द्र बृहन्तं क्षयमसमं जनानाम् ।

अभि तद् द्यावापृथिवी गृणीतामस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः

८

१८४९

॥ २६९ ॥ (ऋ० १०।११९।१-१३)

(२८५०-२८६२) ऐन्द्रो लवः । [आत्मा (इन्द्रः)] । गायत्री ।

इति वा इति मे मनो गामर्ध्वं सनुयामिति । कुवित् सोमस्यापामिति

१

१८५०

प्र वाता इव दोर्धत उन्मा पीता अयंसत । कुवित् सोमस्यापामिति २	
उन्मा पीता अयंसत रथमश्वा इवाशवः । कुवित् सोमस्यापामिति ३	
उप मा मतिरस्थित वाश्ना पुत्रमिव प्रियम् । कुवित् सोमस्यापामिति ४	
अहं तष्टेव वन्धुरं पर्यचामि हृदा मतिम् । कुवित् सोमस्यापामिति ५	
नहि मे अक्षिपच्चनाऽच्छान्तसुः पञ्च कूटयः । कुवित् सोमस्यापामिति ६	२८५५
नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति । कुवित् सोमस्यापामिति ७	
अभि द्यां महिना भुव मभीर्मां पृथिवीं महीम् । कुवित् सोमस्यापामिति ८	
हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा । कुवित् सोमस्यापामिति ९	
ओषमित् पृथिवीमहं जङ्घनानीह वेह वा । कुवित् सोमस्यापामिति १०	
द्विवि मे अन्यः पक्षोऽधो अन्यमचीकृषम् । कुवित् सोमस्यापामिति ११	२८६०
अहमस्मि महामहोऽभिनभ्यमुदीषितः । कुवित् सोमस्यापामिति १२	
गृहो याम्यरंकृतो देवेभ्यो हव्यवाहनः । कुवित् सोमस्यापामिति १३	२८६२

॥ २७० ॥ (अथर्व० २।५।१-४)

(२८६३-२८६६) भृगुराथर्वणः । १ उपरिप्राञ्चिद्वृहती, २ उपरिष्ठाद् विराड्वृहती,
३ विरादपथ्या बृहती, ४ जगती पुरोविराट् ।

इन्द्रं जुषस्व प्र ब्रहा याहि शूर हरिभ्याम् ।	
पिबा सुतस्य मतेरिह मधोश्चक्रानश्चारुमदाय १	
इन्द्रं जठरं नव्यो न पूणस्व मधोर्दिवो न ।	
अस्य सुतस्य स्वर्णोप त्वा मदाः सुवाचो अगुः २	
इन्द्रस्तुराषाणिमत्रो वृत्रं यो जघान यतीर्न ।	
बिभेद वलं भृगुर्न संसहे शत्रून्मदे सोमस्य ३	२८६५
आ त्वा विशन्तु सुतास इन्द्र पूणस्व कुक्षी विद्धि शक्र धियेह्या नः ।	
श्रुधी हवं गिरो मे जुषस्वेन्द्र स्वयुग्भिर्मत्स्वेह महे रणाय ४ + २८६६	

॥ २७१ ॥ (अथर्व० ४।२४।१-७)

(२८६७-२८७३) मृगारः । जिष्टुप्, १ शाकरीगर्भा पुरःशकरी ।

इन्द्रस्य मन्महे शश्वदिदस्य मन्महे वृत्रघ्न स्तोमा उप मेम आगुः ।	
यो दाशुषः सुकृतो हवमेति स नो मुञ्चत्वंहसः १	
य उग्रीणामुग्रबाहुर्ययु र्यो दानवानां बलमारुरोज ।	
येन जिताः सिंधवो येन गावः स नो मुञ्चत्वंहसः २	

यश्चर्षणिप्रो वृषभः स्वविद् यस्मै ग्रावाणः प्रवदन्ति नृम्णम् ।

यस्याध्वरः सप्तहोता मदिष्टः स नो मुञ्चत्वंहसः

३

यस्य वशासं ऋषभासं उक्षणो यस्मै मीयन्ते स्वरवः स्वविदे ।

यस्मै शुक्रः पर्वते ब्रह्मशुम्भितः स नो मुञ्चत्वंहसः

४

१८७०

यस्य जुष्टं सोमिनः कामयन्ते यं हवन्त इषुमन्तं गविष्टौ ।

यस्मिन्नर्कः शिश्रिये यस्मिन्नोजः स नो मुञ्चत्वंहसः

५

यः प्रथमः कर्मकृत्याय जज्ञे यस्य वीर्यं प्रथमस्यानुबुद्धम् ।

येनोद्यतो वज्रोऽभ्यायताहिं स नो मुञ्चत्वंहसः

६

यः संग्रामान्नयति सं युधे वशी यः पुष्टानि संसृजति द्वयानि ।

स्तौमीन्द्रं नाथितो जोहवीमि स नो मुञ्चत्वंहसः

७

१८७३

॥ १७२ ॥ (अथर्व० ५।२३।१-१३) (२८७४-२८८६) कण्वः । अनुष्टुप्, १३ विराट् ।

ओते मे द्यावापृथिवी ओता देवी सरस्वती । ओतौ म इन्द्रश्चाग्निश्च क्रिमिं जम्भयतामिति १

अस्येन्द्रं कुमारस्य क्रिमीन्धनपते जहि । हुता विश्वा अरांतय उग्रेण वचसा मम २ १८७५

यो अक्षयौ परिसर्पति यो नासे परिसर्पति । दृतां यो मध्यं गच्छति तं क्रिमिं जम्भयामसि ३

सरूपौ द्वौ विरूपौ द्वौ कृष्णौ द्वौ रोहितौ द्वौ । बभुश्च बभुर्कर्णश्च गृध्रः कोकश्च ते हुताः ४

ये क्रिमयः शितिकक्षा ये कृष्णाः शितिबाहवः । ये के च विश्वरूपास्तान्क्रिमीन्जम्भयामसि ५

उत्पुस्तत्सूर्य एति विश्वहृष्टो अदृष्टहा । हृष्टांश्च घ्नन्नहृष्टांश्च सर्वांश्च प्रमृणान्क्रिमीन् + ६

येवाषासः कर्कषास एजत्काः शिपवित्नुकाः । हृष्टश्च हन्यतां क्रिमिं रुताहृष्टश्च हन्यताम् ७ १८८०

हतो येवाषः क्रिमीणां हतो नदन्मोत । सर्वांश्चि मण्मषाकरं हृषदा खल्वौ इव ८

त्रिशीर्षाणं त्रिककुदं क्रिमिं सारङ्गमर्जुनम् । शृणाम्यस्य पृष्टीरपि वृश्चामि यच्छिरः ९

अत्रिवद्रः क्रिमयो हन्मि कण्ववज्जमदग्निवत् । अगस्त्यस्य ब्रह्मणा संपिन्म्यहं क्रिमीन् १०

हतो राजा क्रिमीणां मुतैषां स्थपतिर्हतः । हतो हतमाता क्रिमिं हतभ्राता हतस्वसा ११

हतासो अस्य वेशसो हतासः परिवेशसः । अथो ये क्षुल्लका इव सर्वे ते क्रिमयो हुताः १२ १८८५

सर्वेषां च क्रिमीणां सर्वासां च क्रिमीणाम् । भिनन्नश्चर्मना शिरो दहाम्यग्निना मुखम् १३ १८८६

॥ १७३ ॥ (अथर्व० ६।३३।१-३) (२८८७-२८८९) जाटिकायनः । गायत्री, २ अनुष्टुप् ।

यस्येदमा रजो युजस्तुजे जना वनं स्वर्गः । इन्द्रस्य रन्त्यं बृहत् १

नाधृष आ दधृषते धृषाणो धृषितः शर्वः । पुरा यथा व्यथिः श्रव इन्द्रस्य नाधृषे शर्वः २

स नो ददातु तां रयिं—मुरुं पिशङ्गसंहशम् । इन्द्रः पतिस्तुविष्टमो जनेष्वा

३ १८८९

॥ २७४ ॥ (अथर्व० ६।६६।१-३) (२८९०-२८९५) अथर्वा । अनुष्टुप्, १ त्रिष्टुप् ।

निर्हस्तः शत्रुरभिदासन्नस्तु ये सेनाभिर्युधमायन्त्यस्मान् ।

समर्पयेन्द्र महता वधेन द्रात्वेषामघहारो विविद्धः

१ २८९०

आतन्वाना आयच्छन्तो ऽस्यन्तो ये च धावथ ।

निर्हस्ताः शत्रवः स्थनेन्द्रो वोऽद्य पराशरीत्

२

निर्हस्ताः सन्तु शत्रवो ऽङ्गेषां म्लापयामसि ।

अथैषामिन्द्र वेदांसि शतशो वि भजामहै

३

॥ २७५ ॥ (अथर्व० ६।६७।१-३) अनुष्टुप् ।

परि वर्त्मानि सर्वत इन्द्रः पूषा च सप्ततुः । मुह्यन्त्वद्यामूः सेना अमित्राणां परस्तराम् १

मूढा अमित्राश्चरता शीर्षाण इवार्हयः । तेषां वो अग्निमूढाना मिन्द्रो हन्तु वरवरम् २

एषु नह्य वृषाजिनं हरिणस्या भियं कृधि । पराङ्गमित्र एष त्वर्वाची गौरुपेषतु ३ २८९५

॥ २७६ ॥ (अथर्व० ६।७५।१-३) (२८९६-२८९८) कबन्धः । अनुष्टुप्, ३ षट्पदा जगती ।

निरमुं नुक् ओकंसः सपत्नो यः पृतन्यति । नैर्बाध्येन हविषेन्द्र एनं पराशरीत् १

परमां तं परावत मिन्द्रो नुदतु वृत्रहा । यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यः २

एतु तिस्रः परावत एतु पञ्च जना अति ।

एतु तिस्रोऽति रोचना यतो न पुनरायति शश्वतीभ्यः समाभ्यो यावत्सूर्यो असद्विवि ३ २८९८

॥ २७७ ॥ (अथर्व० ६।८१।१-३) (२८९९-२९०१) भगः । अनुष्टुप् ।

आगच्छत आगतस्य नाम गृह्णाम्यायतः । इन्द्रस्य वृत्रघ्नो वन्वे वासवस्य शतक्रतोः १

येन सूर्या सावित्री मश्विनोहतुः पथा । तेन मामब्रवीद्भगो जायामा वहतादिति २ २९००

यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो बृहन्निन्द्र हिरण्ययः । तेना जनीयते जायां मह्यं धेहि शचीपते ३ २९०१

॥ २७८ ॥ (अथर्व० ६।९८।१-३) (२९०२-२९०४) अथर्वा । त्रिष्टुप्, २ बृहतीगर्भास्तारपङ्क्तिः ।

इन्द्रो जयाति न परा जयाता अधिराजो राजसु राजयातै ।

चकृत्य ईड्यो वन्द्यश्चो पसद्यो नमस्यो भवेह

१

त्वमिन्द्राधिराजः श्रवस्युस्त्वं भूरभिभूतिर्जनानाम् ।

त्वं दैवीर्विश इमा वि राजा ऽऽयुष्मत्क्षत्रमजरं ते अस्तु

२

प्राच्यां विशस्त्वमिन्द्रासि राजो तोदीच्या विशो वृत्रहन्छत्रहोसि ।

यत्र यन्ति स्रोत्यास्तज्जितं ते दक्षिणतो वृषभ एषि हव्यः

३

२९०४

॥ २७९ ॥ (अथर्व० ७।३१।१) (२९०५) भृग्वङ्गिराः । भुरिक् त्रिष्टुप् ।

इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो अद्य यावच्छ्रेष्ठाभिर्मघवन्धूर जिन्व ।

यो नो द्वेष्ट्यधरः सस्पदीष्ट यमुं द्विष्मस्तमुं प्राणो जहातु

१

२९०५

॥ २८० ॥ (अथर्व० ७।५०।१-३, ५, ८-९)

(२९०६-२९११) अङ्गिराः (कितववधकामः) । अनुष्टुप्, ३ त्रिष्टुप् ।

यथा दृक्षमशनिर्विश्वाहा हन्त्यप्रति । एवाहमद्य कितवा नक्षैर्बध्यासमप्रति १
 तुराणामतुराणां विशामवर्जुषीणाम् । समैतु विश्वतो भगो अन्तर्हस्तं कृतं मम २
 ईडे अग्निं स्वावसुं नमोभि-रिह प्रसक्तो वि चयत्कृतं नः ।

रथैरिव प्र भरे वाजयन्द्भिः प्रदक्षिणं मरुतां स्तोममृध्याम् ३ +
 अजैषं त्वा संलिखितमजैषमुत संरुधम् । अविं वृको यथा मथ देवा मथनामि ते कृतम् ५
 कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ।

गोजिद्ध्यासमश्वजिद्धनंजयो हिरण्यजित् ८ २९१०

अक्षाः फलवतीं द्युवं वृत्त गां क्षीरिणीमिव ।

सं मा कृतस्य धारया धनुः स्रात्रेव नह्यत ९ २९११

॥ २८१ ॥ (अथर्व० ७।५।१) (२९१२) भृगुः । विराट् परोष्णिक् ।

ये ते पन्थानोऽव दिवो येभिर्विश्वमैरयः । तेभिः सुम्नया धेहि नो वसो १ २९१२

॥ २८२ ॥ (अथर्व० ७।९३।१) (२९१३) भृग्वङ्गिराः । गायत्री ।

इन्द्रेण मन्युना वयमभि ष्याम पृतन्यतः । घ्नन्तो वृत्राण्यप्रति १ २९१३

॥ २८३ ॥ (अथर्व० १९।१३।१) (२९१४) अप्रतिरथः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ वृषाणौ चित्रा इमा वृषभौ परगिष्णू ।

तौ योक्षे प्रथमो योग आगतिं याभ्यां जितमसुराणां स्वयं १ × २९१४

॥ २८४ ॥ (अथर्व० १९।१५।२-३) (२९१५-२९१६) अथर्वी । त्रिष्टुप्, ३ पथ्यापङ्क्तिः ।

इन्द्रं वयमनूराधं हवामहे ऽनु राध्यास्म द्विपदा चतुष्पदा ।

मा नः सेना अरुरुषीरुप गुर्विषूचीरिन्द्र दुहो वि नाशय २ ✽ २९१५

इन्द्रं स्नातोत वृत्रहा परस्फानो वरेण्यः ।

स रक्षिता चरमतः स मध्यतः स पश्चात्स पुरस्तान्नो अस्तु ३ २९१६

॥ २८५ ॥ (अथर्व० २०।२।३) (२९१७) गृत्समदो मेधातिथिर्वा । आच्युष्णिक् ।

इन्द्रो ब्रह्मा ब्राह्मणात्सुष्टुभः स्वर्काद्वतुना सोमं पिबतु ३ २९१७

+ अथर्व० ७।५०।४, ६-७, ऋ० १।१०।१४, १०।४२।९-१०; १०।४३-४४।१०, दै० [इन्द्रः] ८३०, २५५४-५५, २५६६, २५७७ ।

× अथर्व० १९।१३।२-७, ९-११, ऋ० १०।१०।१-३, ५-११, १३, दै० [इन्द्रः] २६९२-२७०२ ।

✽ अथर्व० १९।१५।१, ४; ऋ० ८।६१।१३; ६।४७।८; दै० [इन्द्रः] ५६०, २१०६ ।

॥ २८६ ॥ (वा० य० १।४)

सा विश्वायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वधायाः ।

इन्द्रस्य त्वा भागः सोमेनातनन्मि विष्णो हव्यः रक्ष

४ २९१८

॥ २८७ ॥ (वा० य० ३।४९-५०)

पूर्णां दर्वि परां पतु सुपूर्णां पुनरापत ।

वस्नेव विक्रीणावहा ऽइषमूर्जः शतक्रतो

४९ +

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे ।

निहारं च हरांसि मे निहारं निहराणि ते स्वाहा

५० २९२०

॥ २८८ ॥ (वा० य० ५।२८, ३०)

ध्रुवासि ध्रुवोऽयं यजमानोऽस्मिन्नायतने प्रजयां पशुभिर्भूयात् ।

घृतेन द्यावापृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्य छेदिरसि विश्वजनस्य छाया

२८ x

इन्द्रस्य स्यूरसीन्द्रस्य ध्रुवोऽसि । ऐन्द्रमसि वैश्वदेवमसि

३० २९२२

॥ २८९ ॥ (वा० य० ७।४, १४-१५, २५)

उपयामगृहीतोऽस्यन्तर्यच्छ मघवन् पाहि सोमम् । उरुष्य राय ऽ एषो यजस्व ४

अच्छिन्नस्थ ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो ऽ अग्निः

१४

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्मा ऽ इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा ।

तृष्पन्तु होत्रा मध्वो याः स्विष्ठा याः सुप्रीताः सुहुता यत्स्वाहायाडुशीत्

१५ २९२५

ध्रुवं ध्रुवेण मनसा वाचा सोममवन्यामि ।

अथा न ऽ इन्द्र इद्विशो ऽसप्तनाः समनसस्करत्

२५ * २९२६

॥ २९० ॥ (वा० य० ८।३२, ३६)

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम् । पिपृतां नो भरीमभिः

३२ ::

यस्मान्न जातः परो ऽ अन्यो ऽ अस्ति य ऽ आविवेश भुवनानि विश्वा ।

प्रजार्पतिः प्रजयां सः सराणि स्त्रीणि ज्योतींश्चि सचते स षोडशी

३६ २९२८

+ वा० य० ३।५१-५२; ऋ० १।८१।२-३; अथर्व० ३।७।१०; १।८।४।६१; दै० सं० [इन्द्रः] ९२६-२७ ।

x वा० य० ५।२९; ऋ० १।१०।१२; दै० सं० [इन्द्रः] ६९ ।

* वा० य० ७।२५; ऋ० १०।१७३।६, अथर्व० ७।९४।१ ।

:: वा० य० ८।३३-३५; ऋ० १।१०।३, १।८।१।२-३; साम० १०।२९-३०, १।३४६; दै० सं० [इन्द्रः] ६०, ९३८-३९ ।

॥ २९१ ॥ (वा० य० १२।६६)

निवेशनः संगमनो वसूनां विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः ।

देव ऽ इव सविता सत्यधर्मेन्द्रो न तस्थौ समरे पथीनाम्

६६ [] २९२९

॥ २९२ ॥ (वा० य० १३।१४)

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या ऽ अयम् । अपा२ रेता२सि जिन्वाति १४ + २९३०

॥ २९३ ॥ (वा० १७।२३, ३६, ४४-४५, ५१, ६३)

वाचस्पतिं विश्वकर्माणमूतये मनोजुवं वाजे ऽ अद्या हुवेम ।

स नो विश्वानि हव्नानि जोषद् विश्वशम्भूरवसे साधुकर्मा

२३ ×

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहामित्राँऽपबार्धमानः ।

प्रभञ्जन्त्सेनाः प्रमृणो युधा जयं ह्यस्माकमेध्यविता रथानाम्

३६ *

अमीषां चित्तं प्रतिलोभयन्ती गृहाणाङ्गान्यप्ये परेहि ।

अभि प्रेहि निर्देह हृत्सु शोकैरन्धेनामित्रास्तमसा सचन्ताम्

४४

अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्मसंशिते । गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषां कञ्चनोच्छिषः ४५

इन्द्रेमं प्रतरां नय सजातानामसदृशी । समेनं वर्चसा सृज देवानां भागदाऽअसत् ५१ २९३५

वाजस्य मा प्रसव उद्ग्राभेणोदग्रभीत् । अर्धा सपत्नानिन्द्रो मे निग्राभेणार्धराँऽअकः ६३ २९३६

॥ २९४ ॥ (वा० य० १९।३२, ८०-९५)

सुरावन्तं बार्हिषदं सुवीरं यज्ञं हिंन्वन्ति महिषा नमोभिः ।

दधानाः सोमं दिवि देवतासु मदेमेन्द्रं यजमानाः स्वर्काः

३२ ::

सीसेन तन्त्रं मनसा मनीषिणं ऊर्णासूत्रेण कवयो वयन्ति ।

अश्विना यज्ञं सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणो भिषज्यन्

८०

तदस्य रूपममृतं शचीभिस्तिप्तो दधुर्देवताः सः सराणाः ।

लोमानि शष्पैर्बहुधा न तोकमभिस्त्वर्गस्य माः समभवन्न लाजाः

८१

तदाश्विना भिषजा रुद्रवर्तनी सरस्वती वयति पेक्षो ऽ अन्तरम् ।

अस्थि मज्जानं मासरैः कारोतरेण दधतो गवां त्वाचि

८२ २९४०

[] ऋ० १०।१३९।३, अथर्व० १०।८।४२

+ ऋ० ८।४४।१६, साम० २७, १५३२, दै० सं० [अग्निः] १३५८ ।

× ऋ० १०।८।१७

* वा० य० १७।२३-४५, ५१, ६३; ऋ० १०।१०३।१-१२; ६।७५।१६, साम० १८४९-१८६१, १८६३, अथर्व० ३।२।५;

१९।६।८, ६।५।२, ६।९।७।३, ८।५।२, १९।१३।२-११; दै० सं० [इन्द्रः] २६९२-२७०१ ।

+ वा० य० १९।७।१; ऋ० ८।१४।१३; साम० २११, अथर्व० २०।२९।३; दै० सं० [इन्द्रः] ३६६ ।

सरस्वती मनसा पेशलं वसु नासत्याभ्यां वयति दर्शतं वपुः ।	
रसं परिमुता न रोहितं नग्रहूर्ध्वरस्तसरं न वेम	८३
पर्यसा शुक्रममृतं जनित्रं सुरया मूत्राज्जनयन्त रेतः ।	
अपामर्तिं दुर्मतिं बाधमाना ऊर्वध्यं वातं सव्वं तद्वारात्	८४
इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं पुरोडाशेन सविता जजान ।	
यकृतं कलोमानं वरुणो भिषज्यन् मर्तस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम्	८५
आन्त्राणि स्थालीर्मधु पिन्वमाना गुदाः पात्राणि सुदुघा न धेनुः ।	
श्येनस्य पत्रं न प्लीहा शचीभि—रासन्दी नाभिरुदरं न माता	८६
कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता शचीभि—र्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भोऽ अन्तः ।	
प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽ उत्सो दुहे न कुम्भी स्वधां पितृभ्यः	८७ २९४५
मुखं सदस्य शिरऽ इत् सतेन जिह्वा पवित्रमश्विनासन्त्सरस्वती ।	
चप्यं न पायुर्भिषगस्य वालो वस्तिर्न शेषो हरसा तरस्वी	८८
अश्विभ्यां चक्षुरमृतं ग्रहाभ्यां छागेन तेजो हविषा शूतेन ।	
पक्ष्माणि गोधूमैः कुर्वलैरुतानि पेशो न शुक्रमसितं वसाते	८९
अविर्न मेषो नृसि वीर्याय प्राणस्य पन्थाऽ अमृतो ग्रहाभ्याम् ।	
सरस्वत्युपवाकैर्व्यानं नस्यानि बर्हिर्बदरैर्जजान	९०
इन्द्रस्य रूपमृषभो बलाय कर्णीभ्यां श्रोत्रममृतं ग्रहाभ्याम् ।	
यवा न बर्हिर्भ्रुवि केसराणि कर्कन्धुं जज्ञे मधुं सारघं मुखात्	९१
आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम ।	
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिंहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि	९२ २९५०
अङ्गान्यात्मन् मिषजा तदश्विना—त्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती ।	
इन्द्रस्य रूपं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतं दधानाः	९३
सरस्वती योन्यां गर्भमन्त—रश्विभ्यां पत्नी सुकृतं विभर्ति ।	
अपां रसेन वरुणो न साम्नेन्द्रं श्रियै जनयन्नप्सु राजा	९४
तेजः पशूनां हविरिन्द्रियावत् परिसुता पर्यसा सारघं मधु ।	
अश्विभ्यां दुग्धं मिषजा सरस्वत्या सुतासुताभ्याममृतः सोमऽ इन्दुः	९५ २९५३

॥२९५॥ (वा० य० २०।३१, ७१-७७, ८०, ९०)

अध्वर्योऽ अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्रं आ नय । पुनाहीन्द्राय पातवे ३१ +

सविता वरुणो दधद् यजमानाय दाशुषे । आदत्त नमुचेर्वसु सुत्रामा बलमिन्द्रियम् ७१ २९५५
 वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं भगेन सविता श्रियम् । सुत्रामा यशसा बलं दधाना यज्ञमाशत ७२
 अश्विना गोभिरिन्द्रियं मश्वेभिर्वीर्यं बलम् । हविषेन्द्रः सरस्वती यजमानमवर्धयन् ७३
 ता नासत्या सुपेशसा हिरण्यवर्तनी नरा । सरस्वती हविष्मतीन्द्र कर्मसु नोऽवत ७४
 ता मिषजा सुकर्मणा सा सुदुघा सरस्वती । स वृत्रहा शतक्रतुर्निद्राय दधुरिन्द्रियम् ७५
 युवः सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा । विपिपानाः सरस्वतीन्द्रं कर्मस्वावत ७६ २९६०
 पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दुः सनाभिः ।

यत्सुरामं व्यपिबः शर्चीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ७७
 अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम् । वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ८०
 अश्विना पिबतां मधु सरस्वत्या सजोषसा ।
 इंद्रः सुत्रामा वृत्रहा जुषन्ताः सोम्यं मधु ९० । २९६३

॥ २९६ ॥ (वा० य० २६।४-५, १०)

इंद्र गोमन्निहा याहि पिबा सोमः शतक्रतो । विद्यद्भिर्ग्रावभिः सुतम् ४
 इंद्रा याहि वृत्रहन् पिबा सोमः शतक्रतो । गोमन्निर्ग्रावभिः सुतम् ५ २९६५
 महारऽइन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योऽस्मान् द्वेष्टि १० § २९६६
 ॥ २९७ ॥ (वा० य० २९।५७)

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमर्दुन्दुभिर्वावदीति ।

समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरो ऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ५७ । २९६७
 ॥ २९८ ॥ (वा० य० ३३।२७, ७८-७९, ९०)

कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं तं ऽ इत्था ।

सं पृच्छसे समराणः शुभान्नैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत्ते ऽ अस्मे २७ §

ब्रह्माणि मे मतयः शः सुतासः शुष्मं ऽ इयर्ति प्रभृतो मे ऽ अद्रिः ।

आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थेमा हरी वहतस्ता नो ऽ अच्छ ७८

॥ वा० य० २०।७६-७७, ऋ० १०।१३।४-५, अथर्व० २०।१२५।४-५ ।

† वा० य० २०।८७-८९, ऋ० १।३।४-६, साम० १।४६-४८ अथर्व० २०।८४।१-३, दै० सं० [इन्द्र.] १-३ ।

§ वा० य० २६।११।२३, ऋ० ८।८।१, ३।३।६; साम० २३६, ६८५, अथर्व० २०।९।१, ४९।४, दै० सं० [इन्द्रः] ८९४, १३१७ ।

† वा० य० २९।५७, ऋ० ६।४७।३१; अथर्व० ६।१२५।६ ।

§ वा० य० ३३।१८।२९; ऋ० १।९।१; १०।११; १६।५३-४, ९; ३।३।३; ३८, ४, ७।२३।४, ६६।४; ८।४५।२।
 ८।७२।१२-१३, १०।५।१; ७४।४; साम० १।१७, १।८०, १।३३९, १।३५१, १।४८०, १।६०२; अथर्व० ४।८।३, ७।२३।४,
 २०।११।३, ७।१।७, दै० सं० [इन्द्रः] २।८३; १।३४८, २।६०१, ४।४४, ४।८, १।३०३, ८।१८, २।६३७, दै० सं० [अग्नि] १।४३५-३६

अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावाँर ऽ अस्ति देवता विदानः ।

न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ७९ २९७०

चन्द्रमा ऽ अप्सवन्तरा सुपर्णो धावते दिवि ।

रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहम् हरिरेति कनिकदत् ९० २९७१

॥ २९९ ॥ (वा० य० ३५।१८)

परीमे गार्मनेषत् पर्यग्निमहषत् । देवेष्वक्रतु अवः क ऽ इमोर् ऽ आ दधर्षति १८ × २९७२

॥ ३०० ॥ (वा० य० ३६।८)

इन्द्रो विश्वस्य राजति । शं नो ऽ अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ८ × २९७३

॥ ३०१ ॥ (वा० य० ३८।२६)

यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे ।

तावन्तमिन्द्र ते ग्रहं—मूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम् २६ * २९७४

॥ ३०२ ॥ (साम० १९०)

२ ३ १ २२ ३ २४ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २ २ ३ २ ३ १ २
क इमं नाहुषीष्वा इन्द्रं सोमस्य तर्पयात् । स नो वसूण्या भरात् १९० २९७५

॥ ३०३ ॥ (साम० १९६)

१ २ ३ २ ३ १ २ ३ २ ३ ३ ३ ३ १ २ २ ३ २ ३ ३ १ २
सदा व इन्द्रश्चकृषदा उपो नु स सपर्यन् । न देवो वृतः शूर इन्द्रः १९६ २९७६

॥ ३०४ ॥ (साम० २०९, २१२)

१ २ १ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
अरं त इन्द्र श्रवसे गमेम शूर त्वावतः । अरं शक्र परमाणि २०९ २९७७

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इमे त इन्द्र सोमाः सुतासौ ये च सोत्वाः । तेषां मत्स्व प्रभूवसो २१२ २९७८

॥ ३०५ ॥ (साम० २२६, २३१)

१ २ ३ ३ ३ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठौ वाजानां च वाजपतिः । हरिवान्सुतानां सखा २२६

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
एन्द्र पृक्षु कासु चिन्मृष्णं तनूषु धेहि नः । सत्राजिदुग्र पौस्यम् २३१ २९८०

॥ ३०६ ॥ (साम० २९४, २९८)

३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
इम इन्द्र मदाय ते सोमाश्चिकित्र उक्थिनः ।

१ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २ ३ १ २
मधोः पपान उप नो गिरः शृणु रास्व स्तोत्राय गिर्वणः २९४

॥ वा० य० ३३।५९, ६३-६७, ९५-९६; क्र० ३।३१६; ४७।४; ४।३२।१, ८।८९।२-३; ९९।५-६, साम० १८१, २५७, ३११, १६३७-३८, वै० सं० [इन्द्रः] १२६५, १४१७, १६४५, २३८०-८१, २३८५-८६, २६२३ ।

× वा० य० ३५।१८; क्र० १०।२५५।५; अथर्व० ६।२८।२ ।

× वा० य० ३६।४-७, क्र० ४।३१।१-३, ८।९३।१९; साम० १६९, ६८२-८४, १५८६; अथर्व० २०।१२४।१-३, वै० सं० [इन्द्रः] १६३०-३२, २४४८ ।

* वा० य० ३८।२६, अथर्व० ४।६।२

^{१ २ ३} यदिन्द्र ^{१ २} शासो ^{३ २} अव्रतं ^{३ २ ३} च्यावया ^{१ २ ३ १ २} सदसस्पति ।

^{३ १ २ ३ १} अस्माकमंशु ^१ मघवन् ^{३ १ २} पुरुस्पृहं ^{३ २ ३} वसव्ये ^{१ २} अधि बर्हय

२९८

२९८१

॥ ३०७ ॥ (साम० ३२७)

^{३ १} मेडिं ^{२ ३ १ २} न त्वा ^{३ १ २} वज्रिणं ^{३ १ २} भृष्टिमन्तं ^{३ १ २} पुरुधस्मानं ^{३ २} वृषभं ^{३ १ २} स्थिरप्सुम् ।

^{३ २ २} करोष्यस्तुरुषीर्दुवस्यु- ^{२ ३ १} रिन्द्र ^{२ ३ १ २} द्युक्षं ^{१ २} वृत्रहणं ^{१ २} गृणीषे

३२७

२९८३

॥ ३०८ ॥ (साम० ३३६, ३३७)

^{१ २} यो नो ^{३ १ २ ३ २ ३} वनुष्यन्नभिदाति ^{२ ३} मर्तं ^{१ २} उगणा ^{३ १ २} वो मन्यमानस्तुरो ^{३ १ २} वा ।

^{३ २} क्षिधी ^{३ १} युधा ^{२ ३} शवसा ^{३ १ २} वा तमिन्द्रा- ^१ भी ^२ ष्याम ^{३ १ २} वृषमणस्त्वाताः

३३६

^{२ ३ १ २} यं वृत्रेषु ^{३ २ ३} क्षितिय ^{१ २} स्पर्धमाना ^{३ १ २} यं युक्तेषु ^{३ १ २} तुरयन्तो ^{३ १ २} हवन्ते ।

^{१ २} यं शूरसातौ ^{२ ३ १ २ ३} यमपामुपज्म- ^१ न्यं ^{२ ३} विप्रासो ^{३ १ २ ३ १} वाजयन्ते ^{२ ३} स इन्द्रः

३३७

२९८५

॥ ३०९ ॥ (साम० ४३८, १७६८, ४४४-४४६, १११३-१५)

^{३ २} एष ^{३ २ ३} ब्रह्मा ^{२ ३} य ऋत्विय ^{१ २} इन्द्रो ^{३ २} नाम ^{३ २} श्रुतो ^{३ २} गृणे

४३८

^{१ २} उप ^{३ १} प्रक्षे ^{२ ३} मधुमति ^{१ २} क्षियन्तः ^{३ २} पुष्येम ^{३ २} रायिं ^{३ १ २} धीमहे ^{३ १ २} त इन्द्र

४४४

^{१ २} अर्चन्त्यकं ^{३ २} मरुतः ^{३ १} स्वर्का ^{२ ३} आ ^{२ ३} स्तोभति ^{३ १} श्रुतो ^{३ १} युवा ^{२ ३} स इन्द्रः

४४५

^{२ ३} प्र व ^{१ २} इन्द्राय ^{३ १ २} वृत्रहन्तमाय ^{१ २} विप्राय ^{३ १} गार्थं ^{२ ३} गायत ^{३ १ २} यं जुजोषते

४४६

२९८९

॥ ३१० ॥ (साम० ४४९, ४५३, ४५६, १७७०)

^{२ ३} भगो न ^१ चित्रो ^{३ २} अग्नि- ^{३ २ ३}र्महोनां ^{१ २ ३} दधाति ^{१ २} रत्नम्

४४९

२९९०

^{२ ३ १ २} वि सुतयो ^{१ २} यथा ^{३ २ ३} पथा ^३ इन्द्र ^{१ २} त्वद्यन्तु ^{३ १ २} रातयः

४५३

^{२ ३} इन्द्रो ^{१ २} विश्वस्य ^{१ २} राजति

४५६

२९९२

॥ ३११ ॥ (साम० ५८८)

^{२ ३ २ ३} यस्येदमा ^{२ ३ १ २} रजोयुज- ^{३ २ ३}स्तुजे ^३ जने ^{२ ३ ३} वने ^{२ ३} स्वः । ^{१ २ ३} इन्द्रस्य ^{१ २} रन्त्यं ^{३ २} बृहत्

५८८

२९९३

॥ ३१२ ॥ (साम० ६२३-६२५)

^{१ २} हरी त इन्द्र ^३ श्मश्रू- ^{३ १ २}ण्युतो ^{३ २ ३} ते ^{१ २} हरितौ ^{१ २} हरी ।

^{१ २} तं त्वा ^{३ १ २} स्तुवन्ति ^{३ १ २} कवयः ^{३ १ २} पुरुषासो ^{३ १ २} वनर्गवः

६२३

यद्वर्चो^{२३} हिरण्यस्य^३ यद्वा^{२३} वर्चो^{२३} गवामुत ।

सत्यस्य^३ ब्रह्मणो^३ वर्चस्तेन^३ मा^३ संसृजामसि^३ ६२४

सहस्तन्न^{२३} इन्द्र^३ दन्द्र्योज^३ ईशो^३ ह्यस्य^३ महतो^३ विरिञ्चिन् ।

क्रतुं^{२३} न नृम्णं^३ स्थविरं^३ च वाजं^३ वृत्रेषु^३ शत्रून्सहना^३ कृधी नः^३ ६२५ २९९६

॥ ३१३ ॥ (साम० ९५२-९५४)

इन्द्र^३ जुषस्व^३ प्र वहा^३ याहि^३ शूर^३ हरिह ।

पिबा^३ सुतस्य^३ मतिर्न^३ मधोश्चकानश्चारुर्मदाय^३ ९५२ २९९७

इन्द्र^३ जठरं^३ नव्यं^३ न पूणस्व^३ मधोर्दिवो^३ न ।

अस्य^३ सुतस्य^३ स्वार्त्तर्नोप^३ त्वा^३ मदाः^३ सुवाचो^३ अस्थुः^३ ९५३

इन्द्रस्तुराषाणिमत्रो^३ न जघान^३ वृत्रं^३ यतिर्न^३ ।

बिभेद्^३ वलं^३ भृगुर्न^३ ससाहे^३ शत्रून्मदे^३ सोमस्य^३ ९५४ २९९९

॥ ३१४ ॥ (साम० १८६९)

इन्द्रस्य^३ बाहू^३ स्थविरौ^३ युवाना^३ वनाधृष्यौ^३ सुप्रतीकावसह्यौ^३ ।

तौ^३ युञ्जीत^३ प्रथमौ^३ योग^३ आगते^३ याभ्यां^३ जितमसुराणां^३ सहो^३ महत् १८६९ ३०००

॥ ३१५ ॥ (साम० १८७१)

अन्धा^३ अमित्रा^३ भवता^३ शीर्षाणोऽह्य^३ इव ।

तेषां^३ वो^३ अग्निनुन्नाना^३ मिन्द्रो^३ हन्तु^३ वरंवरम्^३ १८७१ ३००१

इन्द्रसहचारी-देवगणः ।

(१) इन्द्राग्नी ।

॥ ३१६ ॥ (ऋ० ११२११-६)

(३००२-३००७) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

इहेन्द्राग्नी^३ उप ह्वये^३ तयोरित्^३ स्तोममुश्मसि^३ । ता^३ सोमं^३ सोमपातमा^३ १

ता^३ यज्ञेषु^३ प्र शंसते^३ इन्द्राग्नी^३ शुम्भता^३ नरः^३ । ता^३ गायत्रेषु^३ गायत^३ २

ता^३ मित्रस्य^३ प्रशस्तय^३ इन्द्राग्नी^३ ता^३ हवामहे^३ । सोमपा^३ सोमपीतये^३ ३

उग्रा^३ सन्ता^३ हवामह^३ उपेदं^३ सर्वनं^३ सुतम्^३ । इन्द्राग्नी^३ एह^३ गच्छताम्^३ ४ ३००५

ता^३ महान्ता^३ सदुस्पती^३ इन्द्राग्नी^३ रक्ष^३ उज्जतम्^३ । अप्रजाः^३ सन्त्वत्रिणः^३ ५

तेन^३ सत्येन^३ जागृत^३ मधिं^३ प्रचेतुर्न^३ पदे^३ । इन्द्राग्नी^३ शर्मं^३ यच्छतम्^३ ६ ३००७

॥ ३१६ ॥ (ऋ० १।१०८।१-१३)

(३००८-३०२८) कुत्स आंगिरसः । त्रिष्टुप् ।

य इन्द्राग्नी चित्रतमो रथो वा—मभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।

तेना यातं स्रथं तस्थिवांसा—था सोमस्य पिबतं सुतस्य १

यावद्विदं भुवनं विश्वम—स्त्युरुव्यचा वरिमता गभीरम् ।

तावाँ अयं पातवे सोमो अ—स्त्वरमिन्द्राग्नी मनसे युवभ्याम् २

चक्राथे हि सध्यङ्ङनाम भद्रं संधीचीना वृत्रहणा उत स्थः ।

ताविन्द्राग्नी सध्यश्चा निषद्या वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् ३ ३०१०

समिद्धेष्वग्निग्वानजाना यतस्तुचा बर्हिर् तस्तिराणा ।

तीवैः सोमैः परिषिक्तेभिर्वा—गेन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ४

यानीन्द्राग्नी चक्रथुर्वीर्याणि यानि रूपाण्युत वृष्ण्यानि ।

या वाँ प्रत्नानि स्रया शिवानि तेभिः सोमस्य पिबतं सुतस्य ५

यदब्रवं प्रथमं वाँ वृणानोइ ऽयं सोमो असुरैर्नो विहव्यः ।

तां सत्यां श्रद्धामभ्या हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ६

यदिन्द्राग्नी मदथः स्वे दुरोणे यद् ब्रह्मणि राजानि वा यजत्रा ।

अतः परि वृषणावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ७

यदिन्द्राग्नी यदुषु तुर्वशेषु यद् ब्रह्मण्वनुषु पूरुषु स्थः ।

अतः परि वृषणावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ८ ३०१५

यदिन्द्राग्नी अवमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यां परमस्यामुत स्थः

अतः परि वृषणावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ९

यदिन्द्राग्नी परमस्यां पृथिव्यां मध्यमस्यामवमस्यामुत स्थः ।

अतः परि वृषणावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य १०

यदिन्द्राग्नी द्विवि ष्ठो यत् पृथिव्यां यत् पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।

अतः परि वृषणावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ११

यदिन्द्राग्नी उदिता सूर्यस्य मध्ये द्विवः स्वधया मादयेथे ।

अतः परि वृषणावा हि यात—मथा सोमस्य पिबतं सुतस्य १२

एवेन्द्राग्नी पपिवांसा सुतस्य विश्वास्मभ्यं सं जयतं धनानि ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता—मदितिः सिंधुः पृथिवी उत द्यौः १३ ३०२०

॥ ३१८ ॥ (ऋ० १।१०९।१-८)

वि ह्यस्य मनसा वस्य इच्छन्निन्द्राग्नी जास उत वा सजातान् ।

नान्या युवत् प्रमतिरस्ति मह्यं स वां धियं वाजयन्तीमतक्षम् १

अश्रवं हि भूरिदावत्तरा वां विजामातुरुत वा घा स्यालात् ।

अथा सोमस्य प्रयती युवभ्यामिन्द्राग्नी स्तोमं जनयामि नव्यम् २

मा च्छेद्य रश्मौरिति नार्धमानाः पितॄणां शक्तीरनुयच्छमानाः ।

इन्द्राग्निभ्यां कं वृषणो मदन्ति ता ह्यग्नी धिषणाया उपस्थे ३

युवाभ्यां देवी धिषणा मदायेन्द्राग्नी सोममुशती सुनोति ।

तावश्विना भद्रहस्ता सुपाणी आ धावतं मधुना पृङ्गमप्सु ४

युवामिन्द्राग्नी वसुनो विभागे तवस्तमा शुश्रव वृत्रहत्ये ।

तावासद्यो बर्हिषि यज्ञे अस्मिन् प्र चर्षणी मादयेथां सुतस्य ५ ३०२५

प्र चर्षणिभ्यः पृतनाहवेषु प्र पृथिव्या रिरिचाथे दिवश्च ।

प्र सिन्धुभ्यः प्र गिरिभ्यो महित्वा प्रेन्द्राग्नी विश्वा भुवनात्यन्या ६

आ भरतं शिक्षतं वज्रबाहू अस्माँ इन्द्राग्नी अवतं शचीभिः ।

इमे नु ते रश्मयः सूर्यस्य येभिः सपित्वं पितरो न आसन् ७

पुरंदरा शिक्षतं वज्रहस्तास्माँ इन्द्राग्नी अवतं भरेषु ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ८ ३०२८

॥ ३१९ ॥ (ऋ० १।१३९।९) (३०२९) परच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः ।

बुध्यङ् ह मे जुनुषं पूर्वं अङ्गिराः प्रियमेधः कण्वो अत्रिमनुर्विदुस्ते मे पूर्वं मनुर्विदुः ।

तेषां देवेष्वायतिरस्माकं तेषु नाभयः । तेषां पदेन मह्या नमे गिरेन्द्राग्नी आ नमे गिरा ९ ३०२९

॥ ३२० ॥ (ऋ० ३।१२।१-९) (३०३०-३०३८) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्राग्नी आ गतं सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यम् । अस्य पातं धियेषिता १ ३०३०

इन्द्राग्नी जरितुः सचा यज्ञो जिगाति चेतनः । अया पातमिमं सुतम् २

इन्द्रमग्निं कविच्छदा यज्ञस्य जूत्या वृणे । ता सोमस्येह तुम्पताम् ३

तोशा वृत्रहणा हुवे सजित्वानापरजिता । इन्द्राग्नी वाजसातमा ४

प्र वामचन्त्युक्थिनो नीथाविदो जरितारः । इन्द्राग्नी इष आ वृणे ५

इन्द्राग्नी नवतिं पुरो दासपत्नीरधूनुतम् । साकमेकेन कर्मणा ६ ३०३५

इन्द्राग्नी अपसस्पयुप प्र यन्ति धीतयः । ऋतस्य पथ्याऽनु ७

इन्द्राग्नी तविषाणि वां सधस्थानि प्रयांसि च । युवोरुत्पूर्य हितम् ८

इन्द्राग्नी रोचना दिवः परि वाजेषु भूषथः । तद् वां चेति प्र वीर्यम् ९ ३०३८

॥ ३२१ ॥ (ऋ० ५।२७।६)

(३०३९) त्रैवृणस्त्र्यरुणः, पौरुकुत्सस्त्रसदस्युः, भारतोऽश्वमेधश्च राजानः (अत्रिभौम इति केचित्) । अनुष्टुप् ।
इन्द्राग्नी शतदाहय-श्वमेधे सुवीर्यम् । क्षत्रं धारयतं बृहद् दिवि सूर्यमिवाजरम् ६ ३०३९

॥ ३२२ ॥ (ऋ० ५।८६।१-६) (३०४०-३०४५) भौमोऽत्रिः । अनुष्टुप्, ६ विराट्पूर्वा ।

इन्द्राग्नी यमवथ उभा वाजेषु मर्त्यम् । हृळ्हा चित् स प्र भेदति द्युम्ना वाणीरिव त्रितः १ ३०४०
या पृतनासु दुष्टश या वाजेषु श्रवाय्या । या पञ्च चर्षणीरभीन्द्राग्नी ता हवामहे २
तयोरिदमवच्छव-स्तिग्मा दिद्युन्मघोनोः । प्रति दुणा गर्भस्त्यो-र्गवां वृत्रघ्न एषते ३
ता वामेषे रथाना-मिन्द्राग्नी हवामहे । पतीं तुरस्य राधसो विद्रांसा गिर्वणस्तमा ४
ता बृधन्तावनु द्यून् मतींय देवावदभा । अहन्ता चित् पुरो दुधे-ऽशैव देवावर्वते ५
एवेन्द्राग्निभ्यामहावि हव्यं शूष्यं घृतं न पूतमद्रिभिः ।

ता सूरिषु श्रवो बृहद् रयिं गूणत्सु दिधृत-मिषं गूणत्सु दिधृतम् ६ ३०४५

॥ ३२३ ॥ (ऋ० ६।५२।१-१०) (३०४६-३०७०) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । बृहती, ७-१० अनुष्टुप् ।

प्र तु वोचा सुतेषु वां वीर्याऽयानि चक्रथुः ।

हतासो वां पितरो देवशत्रव इन्द्राग्नी जीवथो युवम् १

बलित्था महिमा वा-मिन्द्राग्नी पनिष्ठ आ ।

समानो वां जनिता भ्रातरा युवं यमाविहेहमातरा २

ओक्निवांसा सुते सचाँ अश्वा सती इवादने ।

इन्द्रा न्वग्नी अवसेह वज्रिणा वयं देवा हवामहे ३

य इन्द्राग्नी सुतेषु वां स्तवत् तेष्वृतावृधा ।

जोषवाकं वदतः पञ्चहोषिणा न देवा भसथश्चन ४

इन्द्राग्नी को अस्य वां देवौ मर्ताश्चिकेतति ।

विषूचो अश्वान् युयुजान ईयत् एकः समान आ रथे ५ ३०५०

इन्द्राग्नी अपादियं पूर्वागात् पद्वतीभ्यः । हित्वी शिरो जिह्वया वावदुच्चरत् त्रिंशत् पदा न्यक्रमीत् ६

इन्द्राग्नी आ हि तन्वते नरो धन्वानि बाह्वोः । मा नो अस्मिन् महाधने परा वक्तुं गविष्टिबु ७

इन्द्राग्नी तपन्ति मा-ऽद्या अर्यो अरातयः । अप द्वेषांस्या कृतं युयुत सूर्यादधि ८

इन्द्राग्नी युवोरपि वसु दिव्यानि पार्थिवा । आ न इह प्र यच्छतं रयिं विश्वायुपोषसम् ९

इन्द्राग्नी उक्थवाहसा स्तोमेभिर्हवनश्रुता । विश्वाभिर्गीर्भिरा गत-मस्य सोमस्य पीतये १० ३०५५

॥ ३२४ ॥ (ऋ० ६।६०।१-१५) गायत्री, १-३, १३ त्रिष्टुप्, १४ बृहती, १५ अनुष्टुप् ।

श्रथद् वृत्रमुत संनोति वाज—मिन्द्रा यो अग्नी सहुरी सपर्यात् ।	
इरज्यन्ता वसव्यस्य भूरेः सहस्तमा सहसा वाजयन्ता	१
ता योधिष्ठमाभि गा इन्द्र नून—मपः स्वरुषसो अग्र ऊळहाः ।	
दिशः स्वरुषस इन्द्र चित्रा अपो गा अग्ने युवसे नियुत्वान्	२
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः शुष्मै—रिन्द्र यातं नमोभिरग्ने अर्वाक् ।	
युवं राधोभिरकवेभिरिन्द्रा—ऽग्ने अस्मे भवतमुत्तमेभिः	३
ता हुवे ययोरिदं पमे विश्वं पुरा कृतम् । इन्द्राग्नी न मर्धतः	४
उग्रा विधनिना मृध इन्द्राग्नी हवामहे । ता नो मृळात ईदृशे	५ ३०६०
हतो वृत्राण्यायां हतो दासानि सत्पती । हतो विश्वा अप द्विषः	६
इन्द्राग्नी युवामिमेऽभि स्तोमा अनूषत । पिबतं शंभुवा सुतम्	७
या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो दाशुषे नरा । इन्द्राग्नी ताभिरा गतम्	८
ताभिरा गच्छतं नरो—पेदं सर्वनं सुतम् । इन्द्राग्नी सोमपीतये	९
तमीळिष्व यो अर्चिषा वना विश्वा परिष्वजत् । कृष्णा कृणोति जिह्वया	१० ३०६५
य इन्द्र आविवांसति सुमामिन्द्रस्य मर्त्यः । द्युम्नाय सुतरा अपः	११
ता नो वाजवतीरिष आशून् पिपृतमर्वतः । इन्द्रमग्निं च वोळहवे	१२
उभा वामिन्द्राग्नी आहुवध्या उभा राधसः सह माद्वयध्वै ।	
उभा दाताराविषां रयीणा—मुभा वाजस्य सातये हुवे वाम्	१३
आ नो गव्येभिरश्व्यै—वसव्यैरुप गच्छतम् ।	
सखायौ देवौ सख्याय शंभुवे—न्द्राग्नी ता हवामहे	१४
इन्द्राग्नी शृणुतं हवं यजमानस्य सुन्वतः । वीतं हव्यान्या गतं पिबतं सोम्यं मधु	१५ ३०७०

॥ ३२५ ॥ (ऋ० ७।९३।१-८) (३०७१-३०९०) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

शुचिं नु स्तोमं नवजातमध्ये—न्द्राग्नी वृत्रहणा जुषेथाम् ।	
उभा हि वां सुहवा जोहवीमि ता वाजं सद्य उशते धेष्ठा	१
ता सानसी शवसाना हि भूतं साकंवृधा शवसा शूशुवांसा ।	
क्षयन्तौ रायो यवसस्य भूरेः पूङ्कं वाजस्य स्थविरस्य वृष्वेः	२
उपो ह यद् विदथं वाजिनो गु—र्धीभिर्विप्राः प्रमतिमिच्छमानाः ।	
अर्वन्तो न काष्ठां नक्षमाणा इन्द्राग्नी जोहुवतो नरस्ते	३

गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमानं ईद्रे रायं यशसं पूर्वभाजम् ।	
इन्द्राग्नी वृत्रहणा सुवज्रा प्र नो नव्येभिस्तिरतं देुष्णैः	४
सं यन्मही मिथ्यती स्पर्धमाने तनुरुचा शूरसाता यतैते ।	
अदेवयुं विदथे देवयुभिः सत्रा हतं सोमसुता जनेन	५ ३०७५
इमामु षु सोमसुतिमुप न एन्द्राग्नी सौमनसाय यातम् ।	
नू चिद्धि परिमन्नाथे अस्माना वां शश्वद्विर्ववृतीय वाजैः	६
सो अग्र एना नमसा समिद्धो ऽच्छा मित्रं वरुणमिन्द्रं वोचे ।	
यत् सीमार्गश्चकूमा तत् सु मृळ तदर्यमादितिः शिश्रथन्तु	७
एता अग्र आशुषाणासं इष्टीर्युवोः सचाभ्यश्याम वाजान् ।	
मेन्द्रो नो विष्णुर्मरुतः परि ख्यन् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः	८

॥ ३२३ ॥ (ऋ० ७।९४।१-१२) गायत्री, १२ अनुष्टुप् ।

इयं वामस्य मन्मन इन्द्राग्नी पूर्व्यस्तुतिः	। अभ्राद् वृष्टिरिवाजनि	१	
शृणुतं जरितुर्हवमिन्द्राग्नी वनतं गिरः	। ईशाना पिप्यतं धिर्यः	२	३०८०
मा पापत्वाय नो नरेन्द्राग्नी माभिः शस्तये	। मा नो रीरधतं निदे	३	
इन्द्रे अगना नमो बृहत् सुवृक्तिमेरयामहे	। धिया धेना अवस्यवः	४	
ता हि शश्वन्त ईळत इत्था विप्रास ऊतये	। सबाधो वाजसातये	५	
ता वां गीर्भिर्विपन्यवः प्रयस्वतो हवामहे	। मेधसाता सनिष्यवः	६	
इन्द्राग्नी अवसा गतमस्मभ्यं चर्षणीसहा	। मा नो दुःशंस ईशत	७	३०८५
मा कस्य नो अररुषो धूर्तिः प्रणङ्गर्त्यस्य	। इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम्	८	
गोमन्द्रिरण्यवद् वसु यद् वामश्वावदीमहे	। इन्द्राग्नी तद् वनेमहि	९	
यत् सोम आ सुते नर इन्द्राग्नी अजोहवुः	। ससीवन्ता सपर्यवः	१०	
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा या मन्दाना चिदा गिरा	। आङ्गैराविवांसतः	११	
ताविद् दुःशंसं मर्यं दुर्विद्वांसं रक्षस्विनम् । आभोगं हन्मना हतमुदधिं हन्मना हतम् १२३०९०			

॥ ३२७ ॥ (ऋ० ८।३८।१-१०) (३०९१-३१००) श्यावाश्व आत्रेयः । गायत्री ।

यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा सस्नी वाजेषु कर्मसु । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	१
तोशासा रथयावाना वृत्रहणापराजिता । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	२
इदं वां मदिरं मध्वधुक्षन्नद्रिभिर्नरः । इन्द्राग्नी तस्य बोधतम्	३
जुषेथां यज्ञमिष्टये सुतं सोमं सधस्तुती । इन्द्राग्नी आ गतं नरा	४
इमा जुषेथां सर्वना येभिर्हव्यान्यूहथुः । इन्द्राग्नी आ गतं नरा	५ ३०९५

इमां गायत्रवर्तनि जुषेथां सुष्टुतिं मम	। इन्द्राग्नी आ गतं नरा	६
प्रातर्यावाभिरा गतं देवोर्भिर्जन्यावसू	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	७
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ऽत्रीणां शृणुतं हवम्	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	८
एवा वामह्व ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः	। इन्द्राग्नी सोमपीतये	९
आहं सरस्वतीवतो—रिन्द्राग्न्योरवो वृणे	। याभ्यां गायत्रमूच्यते	१० ३१००

॥ ३२८ ॥ (ऋ० ८।४०।१-१२)

(३१०१-३११२) नाभाकः काण्वः । महापंक्तिः, २ शकरी, १२ त्रिष्टुप् ।

इन्द्राग्नी युवं सु नः सहन्ता दासथो रुयिम् ।
येन हृळ्हा समत्स्वा वीळु चित् साहिषीमह्य—ग्निर्वनेव वात इ—न्नभन्तामन्यके समे १
नहि वां वय्यामहे ऽथेन्द्रमिद् यजामहे शर्विष्ठं नृणां नरम् ।
स नः कदा चिद्वता गमदा वार्जसातये गमदा मेधसातये नभन्तामन्यके समे २
ता हि मध्यं भराणा—मिन्द्राग्नी अधिक्षितः ।
ता उ कवित्वना कवी पृच्छयमाना सखीयते सं धीतमश्नुतं नरा नभन्तामन्यके समे ३
अभ्यर्च नभाकव—दिन्द्राग्नी यजसा गिरा ।
ययोर्विश्वमिद् जग—द्वियं द्यौः पृथिवी मद्भु—पस्थे बिभ्रतो वसु नभन्तामन्यके समे ४
प्र ब्रह्माणि नभाकव—दिन्द्राग्निभ्यामिरज्यत ।
या सप्तबुधमणवं जिह्वारमपोर्णुत इन्द्र ईशान ओजसा नभन्तामन्यके समे ५ ३१०५
अपि वृश्च पुराणवद् व्रततेरिव गुष्पित—मोजो दासस्य दम्भय ।
वयं तदस्य संभृतं वस्विद्रेण वि भजेमहि नभन्तामन्यके समे ६
यदिन्द्राग्नी जना इमे विह्वयन्ते तना गिरा ।
अस्माकेभिर्नृभिर्वयं सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुष्यतो नभन्तामन्यके समे ७
या नु श्वेताववो द्विव उच्चरात उप द्युभिः ।
इन्द्राग्न्योरनु व्रत—मुहाना यन्ति सिंधवो यान्त्सीं बंधादमुञ्चतां नभन्तामन्यके समे ८
पूर्वाष्ट इन्द्रोपमातयः पूर्वीरुत प्रशस्तयः सूनो ह्रिन्वस्य हरिवः ।
वस्वो वीरस्यापृचो या नु सार्धन्त नो धियो नभन्तामन्यके समे ९
तं शिशीता सुवृक्तिभि—स्त्वेषं सत्वानमृग्निर्यम् ।
उतो नु चिद् य ओजसा शुष्णस्याण्डानि भेदन्ति जेषत् स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे १० ३११०
तं शिशीता स्वध्वरं सत्यं सत्वानमृत्त्विर्यम् ।
उतो नु चिद् य ओहत् आण्डा शुष्णस्य भेद—त्यजैः स्वर्वतीरघो नभन्तामन्यके समे ११

एवेन्द्राग्निभ्यां पितृवन्नवीयो मंधातुवदङ्गिरस्वदवाचि ।

त्रिधातुना शर्मणा पातमस्मान् वयं स्याम परयो रयीणाम्

१२ ३११२

॥ ३२९ ॥ (ऋ० १०।१६।१-५)

(३११३-३११७) प्राजापत्यो यक्ष्मनाशनः, राजयक्ष्मघ्नं वा । त्रिष्टुप्, ५ अनुष्टुप् ।

मुञ्चामि त्वा हविषा जीवनाय क—मज्ञातयक्ष्माहुत राजयक्ष्मात् ।

ग्राहिर्जग्राह यदि वैतदेनं तस्या इन्द्राग्नी प्र मुमुक्तमेनम्

१

यदि क्षितायुर्यदि वा परेतो यदि मृत्योरन्तिकं नीत एव ।

तमा हरामि निर्ऋतेरुपस्था—दस्पर्धमेनं शतशारदाय

२

सहस्राक्षेण शतशारदेन शतायुषा हविषाहर्धमेनम् ।

शतं यथेमं शरद्वो नयाती—द्वो विश्वस्य दुरितस्य प्रारम्

३

३११५

शतं जीव शरद्वो वर्धमानः शतं हेमंताञ्छतमु वसंतान् ।

शतभिर्द्राग्नी सविता बृहस्पतिः शतायुषा हविषेम पुनर्दुः

४

आहर्षि त्वाविदं त्वा पुनरागाः पुनर्नव । सर्वाङ्ग सर्वं ते चक्षुः सर्वमायुश्च तेऽविदम् ५ ३११७

॥ ३३० ॥ (वा० य० १४।११)

इन्द्राग्नी अव्यथमाना—मिष्टकां ह—हतं युवम् । पृष्ठेन द्यावापृथिवी अंतरिक्षं च विबाधसे ११+३११८

॥ ३३१ ॥ (वा० य० १७।६४)

उद्गमं च निग्रामं च ब्रह्म देवा अवीवृधन् । अधा सपत्नानिद्राग्नी मे विषूचीनान्वयस्यताम् ६४३११९

॥ ३३२ ॥ (अथर्व० ७।९७।१-८)

(३१२०-३१२७) अथर्वा । त्रिष्टुप्, ५ त्रिपदार्षी सुरिगायत्री, ६ त्रिपदा प्राजापत्या बृहती,

७ त्रिपदा साम्नी सुरिजगती, ८ उपरिग्राद्बृहती ।

यदुद्य त्वा प्रयति यज्ञे अस्मिन् होतश्चिकित्वन्नवृणीमहीह ।

ध्रुवमयो ध्रुवमुता शविष्ठ प्रविद्वान् यज्ञमुप याहि सोमम्

१

३१२०

सामिन्द्र नो मर्नसा नेष गोभिः सं सुरिभिर्हरिद्वन्त्सं स्वस्त्या ।

सं ब्रह्मणा देवाहितं यदस्ति सं देवानां सुमतौ यज्ञियानाम्

२

यानावह उशतो देव देवां—स्तान् प्रेरयु स्वे अग्ने सुधस्थे ।

जक्षिवांसः पपिवांसो मधून्य—स्मै धत्त वसवो वसूनि

३

+ वा० य० ३।३३; ७।३१; ऋ० ६।६०।१३; ३।१२।१, सा० ६६९, दै० सं० [इन्द्रः] ३०३३, ३०७१ ।

× वा० य० ३३।६१, ७६, ९३; ऋ० ६।५९।६; ६।६०।५; ७।९४।११; सा० ८५४, २८१; दै० सं० [इन्द्रः] ३०५४, ३०६३, ३०९२ ।

सुगा वो देवाः सदर्ना अकर्म य आजगम सर्वने मा जुषाणाः ।
 वहमाना भरमाणाः स्वा वसूनि वसुं धर्मं दिवमा रोहतानु ४
 यज्ञं यज्ञं गच्छ यज्ञपतिं गच्छ । स्वां योनिं गच्छ स्वाहा ५
 एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः । सुवीर्यः स्वाहा ६ ३१२५
 वर्षडुतेभ्यो वर्षडुतेभ्यः । देवा गातुविदो गातुं विच्चा गातुमित ७
 मनसस्पत इमं नो द्विवि देवेषु यज्ञम् ।
 स्वाहा द्विवि स्वाहा पृथिव्यां स्वाहान्तरिक्षे स्वाहा वाते धां स्वाहा ८ ३१२७

॥३३३॥ (अथर्व० ६।१०४।१-३) (३१२८-३१३०) प्रशोचनः । ३ सोम इन्द्रश्च । अनुष्टुप् ।

आदानेन सदानेना—ऽमित्राना द्यामसि । अपाना ये चैषां प्राणा असुनासुन्त्समच्छिदन् १
 इदमादानमकरं तपसेन्द्रेण संशितम् । अमित्रा येऽत्र नः सन्ति तानग्न आ द्या त्वम् २
 ऐनान्द्यतामिन्द्राग्नी सोमो राजा च मेदिनौ ।
 इन्द्रो मरुत्वानादानममित्रेभ्यः कृणोतु नः ३ ३१३०

॥३३४॥ (अथर्व० ७।११०।१-३) (३१३१-३१३३) भृगुः । १ गायत्री, २ त्रिष्टुप्, ३ अनुष्टुप् ।

अग्न इन्द्रश्च दाशुषे हतो वृत्राण्यप्रति । उभा हि वृत्रहन्तमा १
 याभ्यामजयन्त्स्व१रग्र एव यावातस्थतुर्भुवनानि विश्वा ।
 प्रचर्षणी वृषणा वज्रबाहू अग्निमिन्द्रं वृत्रहणा हुवेऽहम् २
 उप त्वा देवो अग्रभी—चमसेन बृहस्पतिः ।
 इन्द्रं गीर्भिर्न आ विश यजमानाय सुन्वते ३ ३१३३

(२) इन्द्रावरुणौ ।

॥ ३३५ ॥ (ऋ० १।१७।१-९) ।

(३१३४-३१४२) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री, ४-५ पादनिचृत् (५ हर्षायसी वा) गायत्री ।

इन्द्रावरुणयोरहं सम्राजोरव आ वृणे । ता नो मृळात ईदृशे १
 गन्तारा हि स्थोऽवसे हवं विप्रस्य मावतः । धर्तारा चर्षणीनाम् २ ३१३५
 अनुकामं तर्पयेथा—मिन्द्रावरुण राय आ । ता वां नेदिष्ठमीमहे ३
 युवाकु हि शचीनां युवाकु सुमतीनाम् । भूयाम वाज्रदात्राम् ४
 इन्द्रः सहस्रदात्रां वरुणः शंस्यानाम् । क्रतुर्भवत्युक्थ्यः ५
 तयोरिदवसा वयं सनेम नि च धीमहि । स्यादुत प्ररेचनम् ६
 इन्द्रावरुण वामहं हुवे चित्राय राधसे । अस्मान्सु जिग्युषस्कृतम् ७ ३१४०

इन्द्रावरुण नू नु वां सिषासन्तीषु धीष्वा । अस्मभ्यं शर्मं यच्छतम् ८
प्र वामश्रोतु सुष्ठुतिरिन्द्रावरुण यां हुवे । यामूधार्थे सुधस्तुतिम् ९

३१४२

॥ ३३६ ॥ (ऋ० ३।६२।१-३)

(३१४३-३१४३) गाथिनो विश्वामित्रः । १-३ त्रिष्टुप् ।

इमा उ वां भूमयो मन्यमाना युवावते न तुज्या अभूवन् ।

क्रत्यदिन्द्रावरुणा यशो वां येन स्मा सिनं भरथः सखिभ्यः १

अयमु वां पुरुतमो रयीय उच्छ्वत्तममवसे जोहवीति ।

सजोषाविन्द्रावरुणा मरुद्भिर्विवा पृथिव्या शृणुतं हवं मे २

अस्मे तदिन्द्रावरुणा वसु ष्या दुस्मे रयिर्मरुतः सर्ववीरः ।

अस्मान् वरूत्रीः शरुगैरवन्त्वस्मान् होत्रा भारती दक्षिणाभिः ३

३१४५

॥ ३३७ ॥ (ऋ० ४।४१।१-११)

(३१४६-३१५६) वामदेवो गौतमः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रा को वां वरुणा सुममाप स्तोमो हविर्मा अमृतो न होता ।

यो वां हृदि क्रतुमाँ अस्मदुक्तः पस्पशीदिन्द्रावरुणा नमस्वान् १

इन्द्रा ह यो वरुणा चक्र आपी देवौ मर्तः सुख्याय प्रयस्वान् ।

स हन्ति वृत्रा समिथेषु शत्रू नवोभिर्वा महद्भिः स प्र शृण्वे २

इन्द्रा ह रत्नं वरुणा धेष्ठे तथा नृभ्यः शशमानेभ्यस्ता ।

यदी सखाया सुख्याय सोमैः सुतेभिः सुप्रयसां मादयैते ३

इन्द्रा युवं वरुणा द्विद्युमस्मिन्नोजिष्ठमुग्रा नि वधिष्टं वज्रम् ।

यो नो हुरेवो वृकतिर्दुभीतिस्तस्मिन् मिमाथामभिभूत्योजः ४

इन्द्रा युवं वरुणा भूतमस्या धियः प्रेतारा वृषभेव धेनोः ।

सा नो हुहीयद् यवसेव गत्वी सहस्रधारा पर्यसा मही गौः ५

३१५०

तोके हिते तनय उर्वरासु सूरौ दृशीके वृषणश्च पौंस्ये ।

इन्द्रा नो अत्र वरुणा स्यातामवोभिर्दुस्मा परितक्म्यायाम् ६

युवामिन्द्रश्चवसे पूर्याय परि प्रभूती गविषः स्वापी ।

वृणीमहे सुख्याय प्रियाय शूरा मंहिष्ठा पितरेव शंभू ७

ता वां धियोऽवसे वाजयन्तीराजिं न जग्मुर्युवयूः सुदानू ।

श्रिये न गाव उप सोममस्थुरिन्द्रं गिरो वरुणं मे मनीषाः ८

इमा इन्द्रं वरुणं मे मनीषा अगमन्नुप द्रविणमिच्छमानाः ।

उपेमस्थुर्जोष्टार इव वस्वो रघ्वीरिव श्रवसो भिक्षमाणाः ९

अश्वस्य त्मना रथस्य पुष्टे निर्यस्य रायः पतयः स्याम ।		
ता चक्राणा ऊतिभिर्नव्यसीभि रस्मन्ना रायो नियुतः सचन्ताम्	१०	३१५५
आ नो बृहन्ता बृहतीभिरूती इन्द्र यातं वरुण वाजसातौ ।		
यद् द्विद्यवः पृतनासु प्रकीळान् तस्य वां स्याम सनितार आजेः	११	३१५६

॥ ३३८ ॥ (ऋ० ४।४२।७-१०)

(३१५७-३१६०) त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः । त्रिष्टुप् ।

विदुष्टे विश्वा भुवन्नानि तस्य ता प्र ब्रवीषि वरुणाय वेधः ।		
त्वं वृत्राणि शृण्विषे जघन्वान् त्वं वृताँ अरिणा इन्द्र सिन्धून्	७	
अस्माकमत्र पितरस्त आसन् त्सत ऋषयो दौर्गहे बध्यमानि ।		
त आर्यजन्त त्रसदस्युमस्या इन्द्रं न वृत्रतुरमर्धदेवम्	८	
पुरुकुत्सानी हि वामदाश द्रव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।		
अथा राजानं त्रसदस्युमस्या वृत्रहणं ददथुरर्धदेवम्	९	
राया वयं संसवांसो मदेम हव्येन देवा यवसेन गावः ।		
तां धेनुभिर्न्द्रावरुणा युवं नो विश्वाहा धत्तमनपस्फुरन्तीम्	१०	३१६०

॥ ३३९ ॥ (ऋ० ६।६८।१-११) (३५६१-३१७१) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप्, ९-१० जगती ।

श्रुष्टी वाँ यज्ञ उद्यतः सजोषा मनुष्वद् वृक्तबर्हिषो यजधै ।		
आ य इन्द्रावरुणाविषे अद्य महे सुम्नाय मह आववर्तत्	१	
ता हि श्रेष्ठा देवताता तुजा शूराणां शर्विष्ठा ता हि भूतम् ।		
मघोनां महिष्ठा तुविशुष्मं क्रतेन वृत्रतुरा सर्वसेना	२	
ता गृणीहि नमस्येभिः शूषैः सुम्नेभिरिन्द्रावरुणा चक्राना ।		
वज्रेणान्यः शर्वसा हन्ति वृत्रं सिषक्त्यन्यो वृजनेषु विप्रः	३	
ग्राश्च यन्नरश्च वावृधन्त विश्वे देवासो नरां स्वगूर्ताः ।		
प्रैभ्य इन्द्रावरुणा महित्वा द्यौश्च पृथिवि भूतः पूर्वी	४	
स इत् सुदानुः स्ववाँ क्रतावेन्द्रा यो वाँ वरुण दाशति त्मन् ।		
इषा स द्विषस्तेरेद् दास्वान् वंसद् रयिं रयिवर्तश्च जनान्	५	३१६५
यं युवं वृश्वध्वराय देवा रयिं धृत्यो वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।		
अस्मे स इन्द्रावरुणावपि प्यात् प्र यो भनक्ति वनुषामशस्तीः	६	
उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः सूरिभ्य इन्द्रावरुणा रयिः प्यात् ।		
येषां शुष्मः पृतनासु साह्वान् प्र सद्यो द्यूम्ना तिरते ततुरिः	७	

नू न इन्द्रावरुणा गृणाना पूङ्गं रथि सौश्रवसाय देवा ।		
इत्था गृणन्तो महिनस्य शर्धो ऽपो न नावा दुरिता तरेम	८	
प्र सञ्जाजे बृहते मन्म नु प्रियमर्चं देवाय वरुणाय सप्रथः ।		
अयं य उर्वी महिना महिब्रतः क्रत्वा विभात्यजरो न शोचिषा	९	
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं सुतं सोमं पिबतं मद्यं धृतव्रता ।		
युवो रथो अध्वरं देववीतये प्रति स्वसरमुप याति पीतये	१०	३१७०
इन्द्रावरुणा मधुमत्तमस्य वृष्णः सोमस्य वृष्णा वृषेथाम् ।		
इदं वामन्धः परिषिक्तमस्मे आसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयेथाम्	११	३१७१
॥३४०॥ (ऋ० ७/८२।१-१०) (३१७२-३२०१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती ।		
इन्द्रावरुणा युवमध्वराय नो विशे जनाय महि शर्मं यच्छतम् ।		
दीर्घप्रयज्युमति यो वनुष्यति वयं जयेम पृतनासु दूढ्यः	१	
सञ्जाळन्यः स्वराळन्य उच्यते वां महान्ताविन्द्रावरुणा महावसू ।		
विश्वे देवासः परमे व्योमनि सं वामोजो वृषणा सं बलं दधुः	२	
अन्वपां खान्यतृन्तमोजसा सूर्यमैरयतं विवि प्रभुम् ।		
इन्द्रावरुणा मदे अस्य मायिनो ऽपिन्वतमपितः पिन्वतं धियः	३	
युवामिद् युत्सु पृतनासु वह्नयो युवां क्षेमस्य प्रसवे मितज्ञवः ।		
ईशाना वस्वं उभयस्य कारव इन्द्रावरुणा सुहवा हवामहे	४	३१७५
इन्द्रावरुणा यद्विमानि चक्रथुर्विश्वा जातानि भुवनस्य मज्जना ।		
क्षेमेण मित्रो वरुणं दुवस्यति मरुद्भिरुग्रः शुभमन्य ईयते	५	
महे शुल्काय वरुणस्य नु त्विष ओजो मिमाते ध्रुवमस्य यत् स्वम् ।		
अजामिमन्यः श्रथयन्तमातिरद् दुभ्रेभिरन्यः प्र वृणोति भूयसः	६	
न तमंहो न दुरितानि मर्त्यमिन्द्रावरुणा न तपः कुतश्चन ।		
यस्य देवा गच्छथो वीथो अध्वरं न तं मर्तस्य नशते परिहृतिः	७	
अवाङ्मरा दैव्येनावसा गतं शृणुतं हवं यदि मे जुजोषथः ।		
युवोर्हि सुख्यमुत वा यदाप्यं मर्द्धीर्कमिन्द्रावरुणा नि यच्छतम्	८	
अस्माकमिन्द्रावरुणा भरेभरे पुरोयोधा भवतं कृष्ट्योजसा ।		
यद् वां हवन्त उभये अध स्पृधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु	९	३१८०
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युम्नं यच्छन्तु महि शर्मं सप्रथः ।		
अवधं ज्योतिरदितेर्ऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे	१०	

॥३४१॥ (ऋ० ७।८३।१-१०)

युवां नरा पश्यमानास आप्यं प्राचा गव्यन्तः पृथुपशीवो ययुः ।	
दासा च वृत्रा हतमार्याणि च सुदासमिन्द्रावरुणावसावतम्	१
यत्रा नरः समर्यन्ते कृतध्वजो यस्मिन्नाजा भवति किं चन प्रियम् ।	
यत्रा भयन्ते भुवना स्वर्दशस्तत्रा न इन्द्रावरुणाधि वोचतम्	२
सं भूम्या अन्ता ध्वसिरा अहक्षतेन्द्रावरुणा दिवि घोष आरुहत् ।	
अस्थुर्जनानामुप मामरातयो सर्वागवसा हवनश्रुता गतम्	३
इन्द्रावरुणा वधनाभिरप्रति भेदं वन्वन्ता प्र सुदासमावतम् ।	
ब्रह्माण्येषां शृणुतं हवीमनि सत्या तृत्सूनामभवत् पुरोहितिः	४
इन्द्रावरुणावभ्या तपन्ति माघान्यर्यो वनुषामरातयः ।	
युवं हि वस्व उभयस्य राजथो ऽधं स्मा नोऽवतं पोर्यं दिवि	५
युवां हवन्त उभयास आजिष्विन्द्रं च वस्वो वरुणं च सातये ।	
यत्र राजभिर्दशभिर्निबाधितं प्र सुदासमावतं तृत्सुभिः सह	६
दश राजानः समिता अर्यज्यवः सुदासमिन्द्रावरुणा न युयुधुः ।	
सत्या नृणामद्यसदामुपस्तुतिर्देवा एषामभवन् देवहूतिषु	७
दाशराज्ञे परियन्ताय विश्वतः सुदास इन्द्रावरुणावशिक्षतम् ।	
श्वित्यञ्चो यत्र नमसा कपादिनीं धिया धीवन्तो असपन्त तृत्सवः	८
वृत्राण्यन्यः समिथेषु जिघ्रते व्रतान्यन्यो अभि रक्षते सदा ।	
हवामहे वां वृषणा सुवृक्तिभिर्रस्मे इन्द्रावरुणा शर्म यच्छतम्	९
अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युमन् यच्छन्तु महि शर्म सप्रथः ।	
अवधं ज्योतिरदितेर्कतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे	१०

॥ ३४२ ॥ (ऋ० ७।८४।१-५) त्रिष्टुप् ।

आ वां राजानावध्वरे ववृत्यां हव्येभिरिन्द्रावरुणा नमोभिः ।	
प्र वां घृताचीं बाह्वोर्दधाना परि त्मना विष्वरूपा जिगाति	१
युवो राष्ट्रं बृहदिन्वति द्यौर्यौ सेतृभिररज्जुभिः सिनीथः ।	
परि नो हेळो वरुणस्य वृज्या उरुं न इन्द्रः कृणवदु लोकम्	२
कृतं नो यज्ञं विदथेषु चारुं कृतं ब्रह्माणि सूरिषु प्रशस्ता ।	
उपो रयिर्देवजूतो न एतु प्र णः स्पार्हाभिरूतिभिस्तिरेतम्	३
अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववारं रयिं धत्तं वसुमन्तं पुरुक्षुम् ।	
प्र य आदित्यो अनृता मिनात्यामिता शूरो दयते वसूनि	४

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।

सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

५

॥ ३४३ ॥ (ऋ० ७।८५।१-५)

पुनीषे वामरक्षसं मनीषां सोममिन्द्राय वरुणाय जुह्वत् ।

घृतप्रतीकामुषसं न देवीं ता नो यामन्नुरुण्यतामभीके

१

स्पर्धन्ते वा उ देवहूये अत्र येषु ध्वजेषु दिद्यवः पतन्ति ।

युवं तां इन्द्रावरुणावमित्रान् हतं पराचः शर्वा विषूचः

२

आर्षश्चिद्वि स्वयंशसः सद्ःसु देवीरिन्द्रं वरुणं देवता धुः ।

कृष्टीरन्यो धारयति प्रविक्ता वृत्राण्यन्यो अप्रतीनि हन्ति

३

स सुक्रतुर्कृतचिदस्तु होता य आदित्य शर्वसा वां नमस्वान् ।

आववर्तदवसे वां हविष्मा नसदित् स सुविताय प्रयस्वान्

४

३२००

इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत् तोके तनये तूतुजाना ।

सुरत्नासो देववीतिं गमेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

५

३२०१

॥ ३४४ ॥ (ऋ० ८।५९।१-७)

(३२०२-३२०८) सुपर्णः काण्वः । जगती ।

इमानि वां भागधेयानि सिंस्रत इन्द्रावरुणा प्र महे सुतेषु वाम् ।

यज्ञेयज्ञे ह सर्वना भुरण्यथो यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षथः

१

निष्विध्वरीरोषधीराप आस्तामिन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।

या सिंस्रतु रजसः पारे अध्वनो ययोः शत्रुर्नकिरादेव ओहते

२

सत्यं तदिन्द्रावरुणा कृशस्य वां मध्व ऊर्मि दुहते सप्त वाणीः ।

ताभिर्दुर्ध्वासंभवतं शुभस्पती यो वामदग्धो अभि पाति चित्तिभिः

३

घृतप्रुषः सौम्या जीरदानवः सप्त स्वसारः सदन क्रतस्य ।

या ह वामिन्द्रावरुणा घृतश्रुतस्ताभिर्धत्तं यजमानाय शिक्षतम्

४

३२०५

अवोचाम महते सौभगाय सत्यं त्वेषाभ्यां महिमानमिन्द्रियम् ।

अस्मान् त्विन्द्रावरुणा घृतश्रुतस्त्रिभिः साप्तेभिरवतं शुभस्पती

५

इन्द्रावरुणा यद्विष्यो मनीषां वाचो मतिं श्रुतमदत्तमग्रे ।

यानि स्थानान्यसृजन्त धीरा यज्ञं तन्वानास्तपसाभ्यपश्यम्

६

इन्द्रावरुणा सौमनसमहंतं रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।

प्रजां पुष्टिं भूतिमस्मासु धत्तं दीर्घायुत्वाय प्र तिरतं न आयुः

७

३२०६

॥ ३४५ ॥ (वा० य० ८।३७) त्रिष्टुप् यजुरन्ता ।

इन्द्रश्च सम्राड् वरुणश्च राजा तौ ते भक्षं चक्रतुरग्रं ऽएतम् ।

तयोरुहमनु भक्षं भक्षयामि वाग्देवी जुषाणा सोमस्य तृप्यतु सह प्राणेन स्वाहा ॥ ३७ ॥ ३२०९

(३) इन्द्र-वायू ।

॥ ३४६ ॥ (ऋ० १।२।४-६) (३२१०-३२१२) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

इन्द्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् ।

इन्द्रवो वामुशन्ति हि ४ ३२१०

वायुविन्द्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू ।

तावा यातमुप द्ववत् ५

वायुविन्द्रश्च सुन्वत आ यातमुप निष्कृतम् ।

मक्षिवत्था धिया नरा ६ ३२१२

॥ ३४७ ॥ (ऋ० १।२३।२-३) (३२१३-३२१४) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

उभा देवा दिविस्पृशेन्द्रवायू हवामहे ।

अस्य सोमस्य पीतये २ ३२१३

इन्द्रवायू मनोजुवा विप्रा हवन्त ऊतये ।

सहस्राक्षा धियस्पती ३ ३२१४

॥ ३४८ ॥ (ऋ० १।१३।५ ४-८) (३२१५-३२१९) परुच्छेपो दैवोदासिः । अत्यष्टिः, ७-८ अष्टिः ।

आ वां रथो नियुत्वान् वक्षदवसे ऽभि प्रयांसि सुधितानि वीतये वायो हव्यानि वीतये ।

पिबतं मध्वो अन्धसः पूर्वपेयं हि वां हितम् ।

वायवा चन्द्रेण राधसा गतमिन्द्रश्च राधसा गतम् ४ ३२१५

आ वां धियो ववृत्युरध्वराँ उपेममिन्दुं मर्मजन्त वाजिनमाशुमत्यं न वाजिनम् ।

तेषां पिबतमस्मयू आ नो गन्तमिहोत्या ।

इन्द्रवायू सुतानामद्रिभिर्युवं मदाय वाजदा युवम् ५

इमे वां सोमा अप्स्वा सुता इहाध्वर्युभिर्भरमाणा अयंसत वायो शुका अयंसत ।

एते वामभ्यसृक्षत तिरः पवित्रमाशवः ।

युवायवोऽति रोमाण्यव्यया सोमासो अत्यव्यया ६

अति वायो ससतो याहि शश्वतो यत्र गावा वदति तत्र गच्छतं गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।

वि सूनृता ददृशे रीयते घृतमा पूर्णया नियुता याथो अध्वरमिन्द्रश्च याथो अध्वरम् ७

अत्राह तद् वहिथे मध्व आहुतिं यमश्चत्थमुपतिष्ठन्त जायवो ऽस्मे ते संन्तु जायवः ।

साकं गावः सुवते पच्यते यवो न ते वायु उप दस्यन्ति धेनवो नाप दस्यन्ति धेनवः ८ ३२१९

॥ ३४९ ॥ (ऋ० २।४१।३)

(३२२०) शृत्समदः शौनकः । गायत्री ।

शूक्रस्याद्य गवांशिर इन्द्रवायू नियुत्वन्तः । आ यातं पिबन्तं नरा ३ ३२२०

॥ ३५० ॥ (ऋ० ४।४६।२-७)

(३२२१-३२२९) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

शतेना नो अभिष्टिभिर्नियुत्वा इन्द्रसारथिः । वायो सुतस्य तृम्पतम् २

आ वां सहस्रं हरय इन्द्रवायू अभि प्रयः । वहन्तु सोमपीतये ३

रथं हिरण्यवन्धुरमिन्द्रवायू स्वध्वरम् । आ हि स्थार्थो दिविस्पृशम् ४

रथेन पृथुपाजसा द्वाश्वासमुप गच्छतम् । इन्द्रवायू इहा गतम् ५

इन्द्रवायू अयं सुतस्तं देवेभिः सजोषसा । पिबन्तं द्वाशुषो गृहे ६ ३२२५

इह प्रयाणमस्तु वा मिन्द्रवायू विमोचनम् । इह वां सोमपीतये ७

॥ ३५१ ॥ (ऋ० ४।४७।२-४) अनुष्टुप् ।

इन्द्रश्च वायवेषां सोमानां पीतिर्महथः ।

युवां हि यन्तीन्द्रवो निम्नमापो न सध्वयक् २

वायविन्द्रश्च शुष्मिणा सरथं शवसस्पती ।

नियुत्वन्ता न ऊतय आ यातं सोमपीतये ३

या वां सन्ति पुरुस्पृहो नियुतो द्वाशुषे नरा ।

अस्मे ता यज्ञवाहसेन्द्रवायू नि यच्छतम् ४ ३२२९

॥ ३५२ ॥ (ऋ० ५।५१।४, ६-७)

(३२३०-३२३२) स्वस्त्यात्रेयः । गायत्री, (६, ७) उष्णिक् ।

अयं सोमश्चमू सुतो ऽमत्रे परि पिच्यते । प्रिय इन्द्राय वायवे ४ ३२३०

इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिर्महथः । ताश्वेषेथामरेपसावभि प्रयः ६

सुता इन्द्राय वायवे सोमासो दध्याशिरः । निम्नं न यन्ति सिन्धवोऽभि प्रयः ७ ३२३२

॥ ३५३ ॥ (ऋ० ७।९०।५-७) (३२३३-३२४२) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

ते सत्येन मनसा दीध्यानाः स्वेन युक्तासः क्रतुना वहन्ति ।

इन्द्रवायू वीरवाहं रथं वामीशानयोर्भि पृक्षः सचन्ते ५ ३२३३

ईशानासो ये दधते स्वर्णो गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यैः ।

इन्द्रवायू सूरयो विश्वमायुर्वद्विर्वीरैः पृतनासु सहाः ६

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।

वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

७

३२३५

॥ ३५४ ॥ (ऋ० ७।९।२, ४-७)

उशन्तां दूता न दभाय गोपा मासश्च पाथः शरदश्च पूर्वीः ।

इन्द्रवायू सुष्टुतिर्वामिना मर्डीकमीद्वे सुवितं च नव्यम्

२

यावत् तरस्तन्वोऽ यावदोजो यावन्नरश्चक्षसा दीध्यानाः ।

शुचिं सोमं शुचिपा पातमस्मे इन्द्रवायू सदतं बर्हिरेदम्

४

नियुवाना नियुतः स्पर्हवीरा इन्द्रवायू सरथं यातमर्वाक् ।

इदं हि वां प्रभृतं मध्वो अग्रमधं प्रीणाना वि मुमुक्तमस्मे

५

या वां शतं नियुतो याः सहस्रमिन्द्रवायू विश्ववाराः सचन्ते ।

आभिर्यातं सुविदत्राभिरर्वाक् पातं नरा प्रतिभृतस्य मध्वः

६

अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।

वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

७

३२४०

॥ ३५५ ॥ (ऋ० ७।९।२, ४)

प्र सोतां जीरो अध्वरेष्वस्थात् सोममिन्द्राय वायवे पिबूध्वै ।

प्र यद् वां मध्वो अग्रियं भरन्त्यध्वर्यवो देवयन्तः शचीभिः

२

ये वायवं इन्द्रमादनास आदेवासो नितोशनासो अर्यः ।

घ्नन्तो वृत्राणि सूरिभिः व्याम सासह्रांसो युधा नृभिरभित्रान्

४

३२४२

॥ ३५६ ॥ (वा० य० ३३।८६)

इन्द्रवायू सुसन्द्वा सुहवेह हवामहे ।

यथा नः सर्वेऽइज्जनोऽनमीवः सङ्गमे सुमनाऽसत् ॥ ८६ ॥ x

३२४३

॥ ३५७ ॥ (अथर्व० ३।२०।६) वसिष्ठः । पथ्यापङ्क्तिः ।

इन्द्रवायू उभाविह सुहवेह हवामहे ।

यथा नः सर्वे इज्जनः संगत्यां सुमना असहानकामश्च नो भुवत्

६

३२४४

(४) इन्द्र-मरुतश्च ।

॥ ३५८ ॥ (ऋ० १।६।५, ७) (३२४५-३२४६) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

वीळु चिदारुजत्नुभिर्गुहां चिदिन्द्र वह्निभिः । अविन्द उभ्रिया अनु

५

३२४५

इन्द्रेण सं हि दृक्षसे संजग्मानो अविभ्युषा । मन्द्रू समानवर्चसा

७

३२४६

x [वा० य० ७।८; ३३, ५६, ८६, ऋ० १।२।४, १०।१४।४; अथर्व० ३।२०।६;] वै० सं० [इन्द्रः] ३२१५ ।

वै० [इन्द्रः] २७

(५) मरुत्वानिन्द्रः ।

॥ ३५९ ॥ (ऋ० १।२३।७-९) (३२४७-३२४९) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मरुत्वन्तं हवामह इन्द्रमा सोमपीतये । सज्जुर्गणेन तृप्पतु ७
 इन्द्रज्येष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः । विश्वे मम श्रुता हवम् ८
 हत वृत्रं सुदानव इन्द्रेण सहसा युजा । मा नो दुःशंस ईशत ९ ३२४९

॥ ३६० ॥ (ऋ० १।२६।१-१५)

(३२५०-३२६४) इन्द्रः, ३, ५, ७, ९ मरुतः, १३-१५ अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

कया शुभा सर्वयसः सनीळाः समान्या मरुतः सं मिमिक्षुः ।
 कया मती कुत एतास एते ऽर्चन्ति शुष्मं वृषणो वसूया १ ३२५०
 कस्य ब्रह्माणि जुजुषुर्युवानः को अध्वरे मरुत आ वर्वत ।
 इयेनो इव ध्रजतो अन्तरिक्षे केन महा मनसा रीरमाम २
 कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः सन्नेको यासि सत्पते किं त इत्था ।
 सं पृच्छसे समराणः शुभानैर्वोचेस्तन्नो हरिवो यत ते अस्मे ३
 ब्रह्माणि मे मतयः शं सुतासः शुष्म इयति प्रभृतो मे अद्रिः ।
 आ शासते प्रति हर्यन्त्युक्थे मा हरी वहतस्ता नो अच्छ ४
 अतो वयमन्तमेभिर्युजानाः स्वक्षत्रेभिस्तन्वः शुभमानाः ।
 महोभिरेतो उप युजमहे न्विन्द्र स्वधामनु हि नो बभूथ ५
 क स्या वो मरुतः स्वधासीद् यन्मामेकं समधत्ताहिहत्ये ।
 अहं ह्युग्रस्तविषस्तुविष्मान् विश्वस्य शत्रोरनमं वधस्नैः ६ ३२५५
 भूरि चकथ युज्येभिरस्मे समानेभिर्वृषभ पौंस्येभिः ।
 भूरीणि हि कृणवामा शविष्ठेन्द्र क्रत्वा मरुतो यद् वशाम ७
 वधी वृत्रं मरुत इन्द्रियेण स्वेन भामेन तविषो बभूवान् ।
 अहमेता मनवे विश्वश्चन्द्राः सुगा अपश्चकर वज्रबाहुः ८
 अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्नु न त्वावा अस्ति देवता विदानः ।
 न जायमानो नशते न जातो यानि करिष्या कृणुहि प्रवृद्ध ९
 एकस्य चिन्मे विभवस्त्वोजो या नु दधुष्वान् कृणवै मनीषा ।
 अहं ह्युग्रो मरुतो विदानो यानि च्यवमिन्द्र इदीश एषाम् १०
 अमन्दन्मा मरुतः स्तोमो अत्र यन्मै नरः श्रुत्यं ब्रह्म चक्र ।
 इन्द्राय वृष्णे सुमखाय मह्यं सख्ये सखायस्तन्वे तनूभिः ११ ३२६०

एवेदेते प्रति मा रोचमाना अनेद्यः श्रव एषो दधानाः ।	
संचक्ष्या मरुतश्चन्द्रवर्णा अच्छान्त मे छुदयाथा च नूनम्	१२
को न्वत्र मरुतो मामहे वः प्र यातन सखीरच्छा सखायः ।	
मन्मानि चित्रा अपिवातयन्त एषां भूत नवेदा म क्रतानाम्	१३
आ यद् दुवस्याद् दुवसे न कारु—रस्माञ्चक्रे मान्यस्य मेधा ।	
ओ षु वर्त्त मरुतो विप्रमच्छे—मा ब्रह्माणि जरिता वो अर्चत्	१४
एष वः स्तोमो मरुत इयं गी—मन्दिार्यस्य मान्यस्य कारोः ।	
एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्	१५ ३२६४

॥ ३६१ ॥ (क्र० १।१७१।३-६) (३२६५-३२६८) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । त्रिष्टुप् ।

स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तु—त स्तुतो मघवा शंभविष्ठः ।	
ऊर्ध्वा नः सन्तु कोम्या वना—न्यहानि विश्वा मरुतो जिगीषा	३ ३२६५
अस्मादुहं तविषादीषमाण इन्द्राद् भिया मरुतो रेजमानः ।	
युष्मभ्यं हव्या निशितान्यासन् तान्यारे चक्रमा मृळता नः	४
येन मानासश्चितयन्त उस्त्रा व्युष्टिषु शर्वसा शश्वतीनाम् ।	
स नो मरुद्भिर्वृषभ श्रवो धा उग्र उग्रेभिः स्थविरः सहोदाः	५
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो नृन् भवा मरुद्भिरवयातहेळाः ।	
सुप्रकेतेभिः सासुहिर्दधानो विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्	६ ३२६८

(६) इन्द्रामरुतौ ।

॥ ३६२ ॥ (क्र० ८।९६।१४)

(३२६९) तिरश्चीराङ्गिरसो, युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

द्वप्समपश्यं विषुणे चरन्त—मुपह्वरे नद्यो अंशुमत्याः ।	
नभो न कृष्णमवतस्थिवांस—मिष्यामि वो वृषणो युध्यताजौ	१४ ३२६९

(७) इन्द्रासोमौ ।

॥ ३६३ ॥ (क्र० २।३०।६) (३२७०) गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

प्र हि क्रतुं वृहथो यं वनुथो रधस्य स्थो यजमानस्य चोदौ ।	
इन्द्रासोमा युवमस्माँ अविष्ट—मस्मिन् भयस्थे कृणुतमु लोकम्	६ ३२७०

॥ ३६४ ॥ (क्र० ६।७२।१-५) (३२७१-३२७५) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रासोमा महि तद् वा महित्वं युवं महानि प्रथमानि चक्रथुः ।	
युवं सूर्यं विविदथुर्युवं स्व—विश्वा तमांस्यहतं निदश्च	१

इन्द्रासोमा वासयथ उषासमुत्सूयं नयथो ज्योतिषा सह ।

उप द्यां स्कम्भथुः स्कम्भनेनाऽप्रथतं पृथिवीं मातरं वि २

इन्द्रासोमावाहिमपः परिष्ठां हथो वृत्रमनु वां द्यौरमन्यत ।

प्राणीस्यैरयतं नदीनामा समुद्राणि पप्रथुः पुरुणि ३

इन्द्रासोमा एकमासास्वन्तर्नि गवाभिद् दधथुर्वक्षणासु ।

जगृभथुरनपिनद्धमासु रुशच्चित्रासु जगतीष्वन्तः ४

इन्द्रासोमा युवमङ्ग तरुत्रमपत्यसाचं श्रुत्यै रराथे ।

युवं शुष्मं नयै चर्षणिभ्युः सं विव्यथुः पृतनाषाहमुग्रा ५

३२७५

॥ ३६५ ॥ (क्र० १०।८९।५) (३२७६) रेणुर्वैश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

आपान्तमन्यस्तुपलप्रभर्मा धुनिः शिमीवाञ्छरुमाँ ऋजीषी ।

सोमो विश्वान्यतसा वनानि नार्वाग्निद्रं प्रतिमानानि देभुः ५

३२७६

॥ ३६६ ॥ (क्र० १०।१२४।९) (३२७७) अग्निः (सोमेन्द्रौ) । त्रिष्टुप् ।

बीभत्सूनां सयुजं हंसमाहुर्पां दिव्यानां सख्ये चरन्तम् ।

अनुष्टुभमनु चर्चुर्यमाणमिन्द्रं नि चिक्वुः कवयो मनीषा ९

३२७७

॥ ३६७ ॥ (अथर्व० ८।४।१-२५)

(३२७८-३३०२) चातनः । जगती, ८-१४, १६-१७, १९, २२, २४ त्रिष्टुप्, २०; २३ मुक्त्विक्; २५ अनुष्टुप् ।

इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उज्जतं न्यर्पयितं वृषणा तमोवृधः ।

परां शृणीतमचितो न्योषितं हतं नुदेथां नि शिशीतमत्त्रिणः १

इन्द्रासोमा समवशांसमभ्युधं तपुर्ययस्तु चरुरग्निमाँ इव ।

ब्रह्मद्विषे क्रव्यादे घोरचक्षसे द्वेषो धत्तमनवायं किमीदिने २

इन्द्रासोमा दुष्कृतो ववे अन्तरनारम्भणे तमसि प्र विध्यतम् ।

यतो नैषां पुनरेकश्चनोदयत् तद्वामस्तु सहसे मन्युमच्छवः ३

३२८०

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो वधं सं पृथिव्या अघशसाय तर्हणम् ।

उत्तक्षतं स्वयं पर्वतेभ्यो येन रक्षो वावृधानं निजूर्वथः ४

इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवस्पयं गितसेभिर्युवमश्महन्मभिः ।

तपुर्वधेभिरजरोभिरत्त्रिणो नि पर्शानि विध्यतं यन्तु निस्वरम् ५

इन्द्रासोमा परि वां भूतु विश्वत इयं मतिः कक्ष्याश्वैव वाजिनां ।

यां वां होत्रां परिहिनोमि मेधयेमा ब्रह्माणि नूपती इव जिन्वतम् ६

प्रति स्मरेथां तुजयन्दिरेवै—हंतं दुहो रक्षसो भङ्गुरावतः ।		
इन्द्रासोमा दुष्कृते मा सुगं भूद्यो मा कदा चिदभिदासति दुहुः	७	
यो मा पाकेन मनसा चरन्तमभिचष्टे अनृतेभिर्वचोभिः ।		
आप इव काशिना संगृभीता असन्नस्त्वासत इन्द्र वक्ता	८	३२८५
ये पाकशंसं विहरन्त एवै—र्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधार्मिः ।		
अहये वा तान्प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे	९	
यो नो रसं दिप्सति पित्वो अग्ने अश्वानां गवां यस्तनूनाम् ।		
रिपु स्तेन स्तेयकृद्भ्रमेतु नि ष हीयतां तन्वाइ तना च	१०	
परः सो अस्तु तन्वाइ तना च तिस्रः पृथिवीरधो अस्तु विश्वाः ।		
प्रति शुष्यतु यशो अस्य देवा यो मा दिवा दिप्सति यश्च नक्तम्	११	
सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सच्चासच्च वचसी पस्पृधाते ।		
तयोर्यत्सत्यं यतरद्वर्जीय—स्तदित्सोमोऽवति हन्त्यासत्	१२	
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धारयन्तम् ।		
हन्ति रक्षो हन्त्यासद्वदन्त—मुभाविन्द्रस्य प्रसितौ शयाते	१३	३२९०
यदि वाहमनृतदेवो अस्मि मोघं वा देवाँ अप्युहे अग्ने ।		
किमस्मभ्यं जातवेदो हृणीषे द्रोघवाचस्ते निर्ऋथं सचन्ताम्	१४	
अद्या मुरीय यदि यातुधानो अस्मि यद्वि वायुस्ततप पूरुषस्य ।		
अधा स वीरैर्दशभिर्वि यूया यो मा मोघं यातुधानेत्याह	१५	
यो मायातुं यातुधानेत्याह यो वा रक्षाः शुचिरस्मीत्याह ।		
इन्द्रस्तं हन्तु महता वधेन विश्वस्य जन्तोर्धमस्पदीष्ट	१६	
प्र या जिगाति खर्गलेव नक्त—मप दुहुस्तन्वं१ गूहमाना ।		
ववर्मनन्तमव सा पदीष्ट ग्रावाणो भ्रन्तु रक्षसं उपब्दैः	१७	
वि तिष्ठध्वं मरुतो विक्ष्वीडच्छत गृभायत रक्षसः सं पिनष्टन ।		
वयो ये भूत्वा पतयन्ति नक्तभि—र्ये वा रिपो दधिरे देवे अध्वरे	१८	३२९५
प्र वर्तय दिवोऽश्मानमिन्द्र सोमशितं मघवन्तसं शिशाधि ।		
प्राक्तो अपाक्तो अधरादुदुक्तोऽभि जहि रक्षसः पर्वतेन	१९	
एत उ त्ये पतयन्ति श्वयातव इन्द्रं दिप्सन्ति दिप्सवोऽदाभ्यम् ।		
शिशीते शक्रः पिशुनेभ्यो वधं नूनं सृजदुशानि यातुमज्यः	२०	

इन्द्रो यातूनामभवत्पराशरो हविर्मथीनामभ्याऽविवासताम् । अभीदु शक्रः परशुर्यथा वनं पात्रेव भिन्दन्त्सत एतु रक्षसः उलूकयातुं शुशुलूकयातुं जहि श्वयातुमुत कोकयातुम् । सुपर्णयातुमुत गृध्रयातुं वृषदेव प्र मृण रक्ष इन्द्र मा नो रक्षो अभि नड्यातुमावदपोच्छन्तु मिथुना ये किमीदिनः । पृथिवी नः पार्थिवात्पात्वंहसो ऽन्तरिक्षं दिव्यात्पात्वस्मान् इन्द्र जहि पुमांसं यातुधानं सुत स्त्रियं मायया शशदानाम् । विशीवासो मूरदेवा ऋदन्तु मा ते हशन्सूर्यमुच्चरन्तम् प्रति चक्ष्व वि चक्ष्वेन्द्रश्च सोम जागृतम् । रक्षोभ्यो वधमस्यत मशनिं यातुमर्धः	२१ २२ २३ २४ २५ ×	३३०० ३३०२
---	------------------------------	--------------

(८) इन्द्राविष्णू ।

॥ ३६८ ॥ (क्र० १।१५५।१-३)

(३३०३-३३०५) दीर्घतमा औचथ्यः । जगती ।

प्र वः पान्तमन्धसो धियायते महे शूराय विष्णवे चार्चत । या सानुनि पर्वतानामदाभ्या महस्तस्थतुरर्वतेव साधुना त्वेषमिथा समरणं शिमीवतो रिन्द्राविष्णू सुतपा वामुरुष्यति । या मर्त्याय प्रतिधीयमानमित् कूशानोरस्तुरसनामुरुष्यथः ता ईं वर्धन्ति मह्यस्य पौंस्यं नि मातरां नयति रेतसे भुजे । - दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमधि रोचने दिवः	१ २ ३	३३०५
॥ ३६९ ॥ (क्र० ६।६९।१-८) (३३०६-३३१३) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । त्रिष्टुप् । सं वां कर्मणा समिषा हिनोमीन्द्राविष्णू अपसस्पारे अस्य । जुषेथां यज्ञं द्रविणं च धत्तमरिष्टैर्नः पृथिभिः पारयन्ता या विश्वासां जनितारा मतीनामिन्द्राविष्णू कुलशां सोमधाना । प्र वां गिरः शस्यमाना अवन्तु प्र स्तोमासो गीयमानासो अर्कैः इन्द्राविष्णू मदपती मदानामा सोमं यातुं द्रविणो दधाना । सं वामञ्जन्वक्तुर्मितीनां सं स्तोमासः शस्यमानास उक्थैः आ वामश्वासो अभिमातिषाह इन्द्राविष्णू सधमादो वहन्तु । जुषेथां विश्वा हवना मतीनामुप ब्रह्माणि शृणुतं गिरो मे	१ २ ३ ४	

इन्द्राविष्णू तत् पनयार्थं वां सोमस्य मदं उरु चक्रमाथे ।		
अकृणुतमन्तरिक्षं वरीयो ऽप्रथतं जीवसे नो रजांसि	५	३३१०
इन्द्राविष्णू हविषा वावृधाना ऽग्राद्वाना नमसा रातहव्या ।		
घृतासुती द्रविणं धत्तमस्मे समुद्रः स्थः कलशः सोमधानः	६	
इन्द्राविष्णू पिबतं मध्वो अस्य सोमस्य दस्रा जुठरं पृणोथाम् ।		
आ वामन्धांसि मदिराण्यग्म—न्नुप ब्रह्माणि शृणुतं हवं मे	७	
उभा जिग्यथुर्न परा जयेथे न परा जिग्ये कतरश्चैनोः ।		
इन्द्रश्च विष्णो यदपस्पृधेथां त्रेधा सहस्रं वि तदैरयेथाम्	८	३३१३

॥ ३७० ॥ (ऋ० ७.९९।४-६) (३३१४-३३१६) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः त्रिष्टुप् ।

उरुं यज्ञाय जक्रथुरु लोकं जनयन्ता सूर्यमुषासमग्निम् ।		
दासस्य चिद् वृषशिप्रस्य माया जघ्नथुर्नरा पृतनाज्येषु	४	
इन्द्राविष्णू दंदिताः शम्बरस्य नव पुरो नवतिं च श्रथिष्टम्		
शतं वर्चिनः सहस्रं च साकं हथो अप्रत्यसुरस्य वीरान्	५	
इयं मनीषा बृहती बृहन्तो—रुक्रमा तवसा वर्धयन्ती ।		
ररे वां स्तोमं विदथेषु विष्णो पिबतमिषो वृजनेष्विन्द्र	६	३३१६

(९) इन्द्राबृहस्पती ।

॥ ३७१ ॥ (ऋ० ४।४९।१-६) (३३१७-३३२४) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

इदं वामास्ये हविः प्रियमिन्द्राबृहस्पती । उक्थं मदंश्च शस्यते	१	
अयं वां परिं पिच्यते सोम इन्द्राबृहस्पती । चारुमदाय पीतये	२	
आ न इन्द्राबृहस्पती गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् । सोमपा सोमपीतये	३	
अस्मे इन्द्राबृहस्पती रयिं धत्तं शतग्विनम् । अश्वावन्तं सहस्रिणाम्	४	३३२०
इन्द्राबृहस्पती वयं सुते गीर्भिर्हवामहे । अस्य सोमस्य पीतये	५	
सोममिन्द्राबृहस्पती पिबतं दाशुषो गृहे । मादयेथां तदोक्सा	६	

॥ ३७२ ॥ (४।५०।१०-११) त्रिष्टुप्, १० जगती ।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन् यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू ।		
आ वां विशन्तिवन्दवः स्वाभुवो ऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम्	१०	
बृहस्पत इन्द्र वर्धतं नः सचा सा वां सुमतिर्भूत्वस्मे ।		
अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः	११	३३२४

॥ ३७३ ॥ (ऋ० ७।९७-९८।१०, ७) (३३२५) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्वो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।

धत्तं रयिं स्तुवते कीरये चिद् यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७ ३३२५

॥ ३७४ ॥ (ऋ० ८।९६।१५)

(३३२६) तिरश्चीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । त्रिष्टुप् ।

अधं वृप्सो अँशुमत्या उपस्थे धारयत् तन्वं तित्विषाणः ।

विशो अदेवीरभ्याश्चरन्ती बृहस्पतिना युजेन्द्रः ससाहे १५ ३३२६

(१०) देव-भूमि-बृहस्पतीन्द्राः ।

॥ ३७५ ॥ (ऋ० ६।४७।२०) (३३२७) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

अगृव्यति क्षेत्रमार्गन्म देवा उर्वी सती भूमिरंहूरणाभूत् ।

बृहस्पते प्र चिकित्सा गर्विष्ठा वित्था सते जरित्र इन्द्र पन्थाम् २० ३३२७

॥ ३७६ ॥ (अथर्व- ७।५१।१) (३३२८) अङ्गिराः । त्रिष्टुप् ।

बृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्मादधरादघायोः ।

इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरीयः कृणोतु १ ३३२८

॥ ३७७ ॥ (अथर्व० २०।१३।१) (३३२९) जगती ।

इन्द्रश्च सोमं पिबतं बृहस्पते ऽस्मिन्यज्ञे मन्दसाना वृषण्वसू ।

आ वां विशन्तिवन्दवः स्वाभुवोऽस्मे रयिं सर्ववीरं नि यच्छतम् १ ३३२९

(११) इन्द्रापूषणौ ।

॥ ३७८ ॥ (ऋ० ६।५७।१-६) (३३३०-३३३५) बार्हस्पत्यो भरद्वाजः । गायत्री ।

इन्द्रा नु पूषणा वयं सखायं स्वस्तये । हुवेम वाजसातये १ ३३३०

सोममन्य उपासदुत् पातवे चम्बोः सुतम् । करम्भमन्य इच्छति २

अजा अन्यस्य वह्नयो हरीं अन्यस्य संभृता । ताभ्यां वृत्राणि जिघ्रते ३

यदिन्द्रो अनयद्रितो महीरपो वृषन्तमः । तत्र पूषाभवत् सचा ४

तां पूषणः सुमतिं वयं वृक्षस्य प्र वयामिव । इन्द्रस्य चा रभामहे ५

उत् पूषणं युवामहे ऽभीशूरिव सारथिः । मह्या इन्द्रं स्वस्तये ६ ३३३५

॥ ३७९ ॥ (अथर्व० ६।३।१) (३३३६) अथर्वी । पथ्या बृहती ।

पात न इन्द्रापूषणा ऽदितिः पान्तु मरुतः । अपां नपात्सिधवः सप्त पातन् पातु नो विष्णुरुत द्यौः १३३६

(१२) ऋणंचयेन्द्रौ ।

॥३८०॥ (ऋ० ५।३०।१२-१५) (३३३७-३३४०) बभ्रुरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

भद्रमिदं रुशमा अग्ने अक्रन् गवां चत्वारि ददतः सहस्रा ।	
ऋणंचयस्य प्रयता मघानि प्रत्यग्रभीष्म नृतमस्य नृणाम्	१२
सुपेशसं माव सृजन्त्यस्तं गवां सहस्रै रुशमासो अग्ने ।	
तीवा इंद्रमममन्दुः सुतासो ऽक्तोर्व्युष्टौ परितक्मयायाः	१३
औच्छत् सा रात्री परितक्म्या याँ ऋणंचये राजनि रुशमानाम् ।	
अत्यो न वाजी रघुरज्यमानो बभ्रुश्चत्वार्यसनत् सहस्रा	१४
चतुः सहस्रं गव्यस्य पश्वः प्रत्यग्रभीष्म रुशमेष्वग्ने ।	
घर्मश्चित् तप्तः प्रवृजे य आसीदयस्मयस्तम्बादाम् विप्राः	१५ ३३४०

(१३) इन्द्र ऋभवश्च ।

॥३८१॥ (ऋ० ३।६०।५-७) (३३४१-३३४३) विश्वामित्रो गाथिनः । जगती ।

इंद्रं ऋभुभिर्वाजवद्भिः समुक्षितं सुतं सोममा वृषस्वा गर्भस्त्योः ।	
धियेषितो मधवन् दाशुषो गृहे सौधन्वनेभिः सह मत्स्वा नृभिः	५
इंद्रं ऋभुमान् वाजवान् मत्स्वेह नो ऽस्मिन् त्सर्वने शच्या पुरुष्टुत ।	
इमानि तुभ्यं स्वसराणि येमिरे व्रता देवानां मनुषश्च धर्मभिः	६
इंद्रं ऋभुभिर्वाजिभिर्वाजयन्निह स्तोमं जरितुरुप याहि यज्ञियम् ।	
शतं केतेभिःषिरेभिःरायवे सहस्रणीथो अध्वरस्य होमनि	७ ३३४३

॥३८२॥ (ऋ० ८।९३।३४) (३३४४) सुकक्ष आङ्गिरसः । गायत्री ।

इंद्रं इषे ददातु न ऋभुक्षणमृभुं रयिम् । वाजी ददातु वाजिनम्	३४ ३३४४
--	---------

(१४) इन्द्रोषसौ ।

॥३८३॥ (ऋ० ४।३०।९-११) (३३४५-३३४७) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

द्विविश्वद् वा दाहितरं महान् महीयमानाम् । उषासमिन्द्र सं पिणक्	९ ३३४५
अपोषा अनसः सरत् संपिष्टादहं बिभ्युषी । नि यत् सीं शिश्रथद् वृषा	१०
एतदस्या अनः शये सुसंपिष्टं विपाश्या । सुसारं सीं पशवतः	११ ३३४७

(१५) इन्द्राश्वौ ।

॥३८४॥ (ऋ० ४।३२।२३-२४) (३३४८-३३४९) वामदेवो गौतमः । गायत्री ।

कनीनकेव विद्वधे नवे द्रुपदे अर्भके । बभ्रू यामेषु शोभेते	२३
अरं म उग्रयाम्णे ऽरमनुग्रयाम्णे । बभ्रू यामेष्वसिधा	२४ ३३४९

(१६) इन्द्रस्त्वष्टा ।

॥३८५॥ (ऋ० २।३२।२-३) (३३५०-३३५१) गृत्समदः शौनकः । जगती ।

मा नो गुह्या रिपे आथोरहन् दभन् मा न आभ्यो रीरधो दुच्छुनाभ्यः ।

मा नो वि यौः सखा विद्धि तस्य नः सुमनायता मनसा तत् त्वेमहे २ ३३५०

अहेलता मनसा श्रुष्टिमा वह दुहानां धेनुं पिप्युषीमसश्चतम् ।

पद्याभिराशुं वचसा च वाजिनं त्वां हिनोमि पुरुहूत विश्वहा ३ ३३५१

(१७) इन्द्रो गावश्च ।

॥३८६॥ (ऋ० ६।२८।२,८) (३३५२-३३५३) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । जगती, ८ अनुष्टुप् ।

इन्द्रो यज्वने पृणते च शिक्षत्युपेद् ददाति न स्वं मुषायति ।

भूयोभूयो रयिमिदस्य वर्धयन्नभिन्ने खिल्ये नि दधाति देवयुम् २

उपेदमुपपचनमासु गोषूप पृच्यताम् । उप ऋभस्य रेतस्युपेन्द्र तव वीर्ये ८ ३३५३

(१८) इन्द्राकुत्सौ ।

॥३८७॥ (ऋ० ५।३१।९) (३३५४) अवस्युरात्रेयः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्राकुत्सा वहमाना रथेनाऽऽ वामत्या अपि कर्णे वहन्तु ।

निः पीमन्धो धमथो निः पृथस्था न्मघोनो हृदो वरथस्तमांसि ९ ३३५४

(१९) इन्द्रयावापृथिव्यः ।

॥३८८॥ (ऋ० १०।५९।१०) (३३५५) बन्धुःश्रुतबन्धुर्विप्रबन्धुर्गोपायनाः । त्रिष्टुप् (पंक्युत्तरा) ।

समिन्द्रेय गार्मनङ्गाहं य आवहदुशीनराण्या अनः ।

भरतामप यद्रपो द्यौः पृथिवि क्षमा रपो मो षु ते किं चनाममत् १० ३३५५

(२०) इन्द्रापर्वतौ ।

॥३८९॥ (ऋ० ३।५३।१) (३३५६) गाथिनो विश्वामित्रः । त्रिष्टुप् ।

इन्द्रापर्वता बृहता रथेन वामीरिष आ वहतं सुवीराः ।

वीतं हव्यान्यध्वरेषु देवा वर्धेथां गीर्भिरिल्या मदन्ता १ ३३५६

(२१) इन्द्रः, सोमो, ब्रह्मणस्पतिर्दक्षिणा च ।

॥३९०॥ (ऋ० १।१८।४-५) (३३५७-३३५८) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

स वा वीरो न रिण्यति यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः । सोमो हिनोति मर्त्यम् ४

त्वं तं ब्रह्मणस्पते सोम इन्द्रश्च मर्त्यम् । दक्षिणा पात्वंहसः ५ ३३५८

(२२) इन्द्राब्रह्मणस्पती ।

॥३९१॥ (ऋ० २।२४।१२) (३३५९) गृत्समदः शौनकः । त्रिष्टुप् ।

विश्वं सत्यं मघवाना युवोरिदा—पश्चन प्र मिनन्ति व्रतं वाम् ।

अच्छेन्द्राब्रह्मणस्पती हविर्नो ऽन्नं युजेव वाजिना जिगातम् १२ ३३५९

॥३९२॥ (ऋ० ७।९।३,९) (३३६०-३३६१) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप् ।

तमु ज्येष्ठं नमसा हविर्भिः सुशेवं ब्रह्मणस्पतिं गृणीषे ।

इन्द्रं श्लोको महि दैव्यः सिषक्तु यो ब्रह्मणो देवकृतस्य राजा ३ ३३६०

इयं वां ब्रह्मणस्पते सुवृक्ति—ब्रह्मेन्द्राय वाजिणे अकारि ।

अविष्टं धियो जिगृतं पुरंधी—र्जजस्तमर्यो वनुषामरातीः ९ ३३६१

(२३) दुन्दुभीन्द्रौ ।

॥३९३॥ (ऋ० ६।४७।३१) (३३६२) गर्गो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः केतुमद् दुन्दुभिर्वीवदीति ।

समश्वपर्णाश्चरन्ति नो नरो ऽस्माकमिन्द्र रथिनो जयन्तु ३१ ३३६२

(२४) इन्द्रसूर्यादयः ।

॥३९४॥ (अथर्व० १९।७०।१) (३३६३) ब्रह्मा । गायत्री ।

इन्द्र जीव सूर्य जीव देवा जीवा जीव्यासमहम् । सर्वमायुर्जीव्यासम् १ ३३६३



इन्द्रदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।

ऋग्वेदस्य प्रथमं मण्डलम् ।

- [३] १।३।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 इन्द्रा याहि तनुजान उप ब्रह्माणि हरिवः ।
 सुते वधिष्व नश्चन ।
 (२७०८) १०।१०४।६ (अष्टको वैश्वामित्र । इन्द्र)
 उप ब्रह्माणि हरिवो हरिभ्यां सोमस्य याहि
 पीतये सुनस्य ।
- [४] १।४।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 सुदुधामिव गोदुहे ।
 जुहूममि ।
 (५१८) ८।५२ (वालखिल्यं ४) । ४ (आयु काण्व । इन्द्र)
 सुदुधामिव गोदुहे जुहूममि ।
- [६] १।४।३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 विद्याम सुमतीनाम् ।
 (२६७८) १०।८९।१७ (रेणुवैश्वामित्र । इन्द्र)
 विद्याम सुमतीना नवानाम् ।
- [७] १।४।४ यस्ते सखिभ्य आ वरम् ।
 ९।४।२ (अयास्य आङ्गिरस । पवमान सोम)
 देवान् सखिभ्य आ वरम् ।
- [९] १।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 स्यामदिन्द्रस्य शर्मणि ।
 ८।४७।५ (त्रित आण्य । आदित्या)
- [११] १।४।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 प्रावो वाजेषु वाजिनम् ।
 (१०८९) १।१७६।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुण । इन्द्र)
- [१३] १।४।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्रः)
 यो रायोऽवनिर्महान्सुपारः सुन्वतः सखा ।
 तस्मा इन्द्राय गायत ।
 (१९२) ८।३२।१३ (मेधातिथिः काण्व । इन्द्र)
 यो रायोऽवनिर्महान्सुपारः सुन्वतः सखा ।
 तमिन्द्रमभि गायत ।
 (१७) १।५।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 तस्मा इन्द्राय गायत ।
- [१४] १।५।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 इन्द्रमभि प्र गायत ।
 (२३९७) ८।९२।१ (श्रुतकक्षः मुक्तको वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)

- [१५] १।५।२ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 पुरुतम पुरुणामीशानं वार्याणाम् ।
 इन्द्र सोमे सचा सुते ।
 (२०८८) ६।४।२९ (शंयुर्वाहस्पत्य । इन्द्र)
 पुरुतमं पुरुणां ।
 १।२४।३ (शुन गेप आजीगर्ति कृत्रिमो देवरातो
 वैश्वामित्रो वा । सविता)
 ईशानं वार्याणाम् ।
 (अग्निः १४२१) ८।७१।१३ (सुदीति-पुरुमीळहावाङ्गि-
 रसौ, तयोर्वान्यतर । अग्नि)
 ईशे यो वार्याणाम् ।
 १०।९।५ (त्रिगिरास्त्वाप्त् सिन्धुद्वीप आम्बरीषो वा । आपः)
 ईशाना वार्याणां ।
 (४७१) ८।४।२९ (त्रिशोक काण्व । इन्द्रः)
 इन्द्र सोमे सचा सुते ।
- [१७] १।५।४ (१३) १।४।१०
- [१८] १।५।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
 सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये
 सोमासो दध्याशिरः ।
 (२४५१) ८।२३।२२ (मुक्तक्ष आङ्गिरसः । इन्द्र)
 सुता इम उशन्तो यन्ति वीतये ।
 १।३३।७।२ (परच्छेपो देवोदामि । मित्रावरुणौ)
 सोमासो दध्याशिरः ।
 ५।५।७ (स्वरत्यात्रेय । विश्वेदेवा)
 सोमासो दध्याशिरः ।
 (२२३८) ७।३२।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्र)
 ९।२२।३ (अमित काश्यपो देवलो वा । पवमान सोम)
 ९।६३।१५ (निध्रुवि काश्यप । पवमानः सोम)
 ९।१०१।१२ (मनु सावरण । पवमानः सोम)
- [२१] १।५।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्रः)
 त्वां स्तोमा अवीवृधन्त्वा मुक्ता शतक्रतो ।
 त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।
 (अग्निः १३६१) ८।४४।१९ (विरूप आङ्गिरस । अग्नि)
 स्वाममे मनीषिणस्त्वां हिन्वन्ति चित्रिभि ।
 त्वां वर्धन्तु नो गिरः ।

- [२३] १।५।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्र । इन्द्र)
ईशानो यवया वधम् ।
(२८१८) १०।१५२।५ (शासो भारद्वाज । इन्द्र)
वरीयो यवया वधम् ।
[३०] १।७।३ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
आ सूर्य रोहयदिवि ।
... . ऐरयत् ।
(१३९०) ८।८९।७ (ऋमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । इन्द्रः)
ऐरय आ सूर्य रोहयो दिवि ।
९।१०७।७ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
आ सूर्य रोहयो दिवि ।
(अग्निः १७०६) १०।१५६।४ (केतुरामेयः । अग्निः)
आ सूर्य रोहयो दिवि ।
[३१] १।७।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
उग्र उग्रामिरुतिभिः ।
(१००४) १।१२९।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
उग्रामिरुग्रोतिभिः ।
[३५] १।७।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
(९४३) १।८४।७ (गोतमो राहृगणः । इन्द्रः)
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
[३६] १।७।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
य एवाश्वर्षणीनां ।
(१०८६) १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
[३७] १।७।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
हवामहे जनेभ्यः ।
अस्माकमस्तु केवलः ।
(अग्निः १९१५) १।१३।१० (मेधातिथिः काण्वः । त्वष्टा)
ह्वये ।
अस्माकमस्तु केवलः ।
[४१] १।८।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
सासह्याम पृतन्यतः ।
(३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
सासह्याम पृतन्यतो ।
९।६१।२९ (अमर्हयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
[४२] १।८।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
द्यौर्न प्रथिना शव ।
(५४४) ८।५६। (वाल्खित्यं ८)।१ (पृषग्नः काण्वः । इन्द्रः)
[४४] १।८।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
समुद्र इव पिन्वते ।

- (२९२) ८।१२।५ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
[५०] १।९।३ स्तोमेभिर्विश्वचर्षणे ।
(अग्निः ८६५) ५।१४।६ (सुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
स्तोमेभिर्विश्वचर्षणिम् ।
[५३] १।९।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
राये रभस्ततः ।
तुविद्युन्न यशस्वतः ।
(अग्निः ५९९) ३।१६।६ (उत्कीलः कालः । अग्निः)
सं राया भूयसा सृज मयोभुना तुविद्युन्न यशस्वता ।
[५५] १।९।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
अस्मे धेहि श्रवो बृहद् ।
(अग्निः ८७) १।४४।२ (परुक्ण्वः काण्वः । अग्निः, अश्विनौ, उपा)
(६०९) ८।६५।९ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
[५७] १।९।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
इन्द्राय शूषमर्चति ।
१०।९६।२ (वरुङ्गिरसः सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः । हरिः)
इन्द्राय शूषं हरिवन्तमर्चतः ।
(२७७८) १०।१३३।१ (मुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
[६१] १।१०।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
ब्रह्म च नो वसो सचेन्द्र यज्ञं च वर्धय ।
१०।१४।१६ (अग्निस्तापसः । विश्वेदेवाः)
ब्रह्म यज्ञं च वर्धय ।
[६२] १।१०।५ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
उक्थमिन्द्राय शंस्यं ।
(१७६४) ५।३९।५ (अत्रिभौमः । इन्द्रः)
[६४] १।१०।७ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
इन्द्र त्वादातमिच्छशः ।
कृणुष्व राधो अद्रिवः ।
(१३६९) ३।४०।६ (विश्वामित्रो गायिनः । इन्द्रः)
इन्द्र त्वादातमिच्छशः ।
(५८९) ८।६४।१ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
कृणुष्व ।
[६५] १।१०।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
ऋषायमाणमिन्वतः ।
जेष स्वर्वातीरपः ।
(१०८५) १।१७६।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
ऋषायमाण इन्वति ।
(३११०) ८।४०।१० (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
तं शिशीता सुवृत्तिभिरुषेणं मन्वानमृगिमयम् ।

- उतो नु चिद्य ओजसा ऋणस्याण्डानि भेदति
जेषस्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥
(३१११) ८१४०११ (नाभाक काण्वः । इन्द्राग्नी)
तं शिशीता स्वधरं मयं सत्त्वानमृत्विद्यम् ।
उतो नु चिद्य ओहत आण्डा ऋणस्य भेदत्यजैः
स्वर्वतीरपो नभन्तामन्यके समे ॥
[६७] ११०११० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
वृषन्तमस्य हूमह ऊर्ति ।
(१७३८) ५३५३ (प्रभवमुराक्षिरमः । इन्द्रः)
वृषन्तमस्य हूमहे ।
[७०] १११११ (जेता माधुच्छन्दसः । इन्द्रः)
रथीतमं रथीनां ।
(४४९) ८१४५१७ (त्रियोकः काण्वः । इन्द्रः)
रथीतमो रथीनाम् ।
[७१] ११११२ (जेता माधुच्छन्दसः । इन्द्रः)
जेतारमपराजितम् ।
(अग्निः ९१६) ५३५३ (वसूयव आत्रेयाः । अग्निः)
११११८ (जेता माधुच्छन्दसः । इन्द्रः)
इन्द्रमीशानमोजसाभि स्तोमा अनूषत ।
(६२८) ८१७६१ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रमीशानमोजसा ।
(३०६२) ६१६०७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
युवामिमेऽभि स्तोमा अनूषत ।
११५११ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः [ऋतुदेवता])
त्वा विशन्विन्दवः ।
(२४१८) ८१९२२२ (श्रुतकक्ष सुकक्षो वा
आक्षिरमः । इन्द्रः)
आ त्वा ... ।
[८०] ११६३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं प्रानह्वामह इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्र सोमस्य पीतये ।
(१६०) ८३५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रमिदिवतातय इन्द्रं प्रयत्यध्वरे ।
इन्द्रं समीके वनिनो हवामह इन्द्रं धनस्य सातये ।
(१३८५) ३१४२१४ (विश्वामित्रो गायिनः । इन्द्रः)
इन्द्र सोमस्य पीतये स्तौमैरिह हवामहे ।
(४०८) ८१७०१५ (उरिम्बिष्ठि काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्र सोमस्य पीतये ।
(२४०१) ८१९२१५ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आक्षिरमः । इन्द्रः)
इन्द्र सोमस्य पीतये ।
(९८६) ८१९७११ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
९११२२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
[८१] ११६१४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
उप नः सुतमा गहि हरिभिरिन्द्र ।
(१३८२) ३१४२११ (विश्वामित्रो गायिनः । इन्द्रः)
उप नः सुतमा गहि भोममिन्द्र गवाक्षिरम् ।
हरिभ्यां ।
५१७१३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
उप न सुतमा गतं ।
[८२] ११६१५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
आ गच्छपेदं सवनं सुतम् ।
(३००५) ११२११४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
उपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी एह गच्छताम् ।
(३०६४) ६१६०९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
आ गच्छत नरोपेदं सवनं सुतम् ।
इन्द्राग्नी ।
[८३] ११६१६ इमे सोमास इन्द्रवः ।
९१४६३ (अयाम्य आक्षिरसः । पवमानः सोमः)
एते सोमास इन्द्रवः ।
[८५] ११६१८ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
वृत्रहा सोमपीतये ।
(२४४९) ८१९३२० (सुकक्ष आक्षिरमः । इन्द्रः)
[८६] ११६१९ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सेमं नः काममा पृण ।
(५९४) ८१६४६ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
अरमाकं काममा पृण ।
[६८८-६९१] ११२८११-४ शुन शेष आजीगर्तिः स कृत्रिमो
विश्वामित्रो देवरातः । इन्द्रः)
उल्लुखलसुतानामवेद्विन्द्र जल्गुलः ।
[६९२] ११२९११ (शुन शेष आजीगर्तिः । इन्द्रः)
अनाशस्ताइव स्मसि ।
आ तू न इन्द्र शंसय ।
२१४२१६ (गृत्समदः शौनकः । सरस्वती)
अप्रशस्ताइव स्मसि प्रशस्तिम् ।
[६९३] ११२९१२ (शुन शेष आजीगर्तिः । इन्द्रः)
शिप्रिन् वाजानां पते ।
आ तू न इन्द्र शंसय ।

- (२०६९) ६।४५।१० (अंशुवार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
इन्द्र वाजानां पते ।
[७०५] १।३०।७ (शुन शेष आजीगतिः । इन्द्रः)
सखाय इन्द्रमूतये ।
(४१७) ८।२१।९ (सोमरिः काण्वः । इन्द्रः)
[७०६] १।३०।८ (शुनःशेष आजीगतिः । इन्द्रः)
सहस्रिणीभिरुतिभिः ।
(२७८८) १०।१३४।४ (पूर्वार्धः) मान्धाता यौवनाथः । इन्द्रः
[७०७] १।३०।९ (शुन शेष आजीगतिः । इन्द्रः)
अनु प्रत्नस्यौकसो । यं ते पूर्वं ॥
(२३२०) ८।६९।१८ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
अनु प्रत्नस्यौकसः । पूर्वा ।
[७०८] १।३०।१० (शुनःशेष आजीगतिः । इन्द्रः)
सखे वसो जरितृभ्यः ।
(१४३९) ३।५१।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
सखे वसो जरितृभ्यो वयो धाः ।
(अग्निः १४१७) ८।७१।९ (सुदीति-पुर्माळहावाङ्गिरसौ
तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
[७१५] १।३२।१ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । इन्द्रः)
इन्द्रस्य नु वीर्याणि प्र वोचं ।
(१२१९) २।२१।३ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
इन्द्रस्य वोचं प्र कृतानि वीर्या ।
[७१७] १।३२।३ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्रिकटुकेष्वपिबस्वुतस्य ।
अहर्जेनं प्रथमजामहीनाम् ।
(११६२) २।१५।१ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
त्रिकटुकेष्वपिबस्वुतस्यास्य मदे अहिमिन्द्रो जघान ।
[७१८] १।३२।४ आसुर्यं जनयन्द्यामुषासं ।
(१९७२) ६।३०।५ साकं सूर्य— ।
[७१९] १।३२।५ अहिः शयत उपपृक्पृथिव्याः ।
(२६७५) १०।८९।१४ पृथिव्या आपृगमुया शयन्ते ।
[७२६] १।३२।१२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । इन्द्रः)
अवासृजः सर्वे सप्त सिन्धून् ।
(११३३) २।१२।१२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
अवासृजत् सर्वे— ।
[७२९] १।३२।१५ अराक्ष नेमिः परि ता बभूव ।
(अग्निः ३३३) १।१४।९ (दीर्घतमा औचल्यः । अग्निः)
अराक्ष नेमिः परिभूरजायथा ।
[७३४] १।३३।५ प्र यद्विवो हरिवः स्थातरुम् ।
(१९९५) ६।४१।३ एतं पिब हरिवः स्थातरुम् ।

- [७४१] १।३३।२२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । इन्द्रः)
यावत्तरो मधवन् यावदोजो ।
(३२३७) ७।९१।४ (वमिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रवायू)
यावत्तरस्तन्वोऽ यावदोजो ।
[७४३] १।३३।१४ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । इन्द्रः)
आवः कुत्समिन्द्र यस्मिन्नाकन् प्रावो युध्यन्तं
वृषभं दशशुम् ।
(१०७३) १।१७४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
वह कुत्समिन्द्र यस्मिन्नाकन् ।
(१९५०) ६।२६।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
आवो युध्यन्त वृषभं दशशुम् ।
[७४७] १।५१।३ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्व गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपोत् ।
९।८६।२३ (पृथिव्योऽजा । पवमानः सोमः)
सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ।
[७५०] १।५१।६ अरन्ध्रयोऽतिथिगवाय शम्बरम् ।
(१०१७) १।१३०।७ अतिथिगवाय शम्बरम् ।
[७५२] १।५१।८ आर्का भव यजमानस्य चोदिता ।
(२५९०) १०।४९।१ (वैकुण्ठ इन्द्रः । इन्द्रः)
अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ।
[७५७] १।५१।१३ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
— सुन्वते ।
विश्वेता ते सवनेषु प्रवाच्या ।
(९९६) ८।१००।६ (नेमो मार्गवः । इन्द्रः)
विश्वेता ते सवनेषु प्रवाच्या ... सुन्वते ।
१०।३९।४ (घोषा काक्षीवती । अश्विनो)
विश्वेता वा सवनेषु प्रवाच्या ।
[७६०] १।५२।१ एन्द्रं ववृत्त्यामवसे सुवृक्तिभिः ।
१।१६८।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुतः)
महे ववृत्त्यामवसे— ।
[७६१] १।५२।२ इन्द्रो यद्वृत्रमवधीक्षदीवृतम् ।
(३१३) ८।१२।२६ यदा वृत्र नदीवृतं शवसा वाञ्छिन्नवधीः ।
[७६४, ७७३] १।५२।५, १४ अभि (१४ नोत) स्ववृष्टि मदे
अस्य युध्यतो ।
[७७४] १।५२।१५ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
विश्वे देवासो अमदन्ननु त्वा ।
(८४५) १।१०३।७ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[७८५] १।५३।११ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्वां स्तोषाम त्वया सुवीरा द्वावीय आयुः
प्रतरं दधानाः ।

- (अग्नि १६७३) १०।११५।८ (उपस्तुतो वाष्टिहव्य । अग्नि)
 [७८८] १।५४।३ स्वक्षत्र यस्य धृपतो धृषन्मनः ।
 (१७३९) ५।३५४ स्वक्षत्र ते धृषन्मनः ।
 [७८९] १।५४।४ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 त्वं दिवो बृहतः सानु कोपथो ऽव त्मना धृषता
 शम्बरं भिनत् ।
 (२१३८) ७।१८।२० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 आव त्मना बृहतः शम्बरं भेत् ।
 [७९६] १।५४।११ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 रक्षा च नो मघोनः पाहि सूरिन् राये ।
 १०।६१।२२ (नाभानेदिष्ठो मानवः । विश्वेदेवाः)
 — सूरिन् ।
 [७९८] १।५५।२ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 इन्द्रः सोमस्य पीतये वृषायते ।
 (२९९) ८।१२।१२ (पर्वतः कण्वः । इन्द्रः)
 इन्द्रः सोमस्य पीतये ।
 [८०६] १।५६।२ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 समुद्रं न संचरणे सनिष्पवः ।
 ४।५५।६ (वामदेवो गौतमः । विश्वेदेवाः)
 [८०८] १।५६।४ इन्द्रं सिषक्स्युषसं न सूर्यः ।
 ९।८४।२ (प्रजापतिर्वाच्यः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रः सिषक्स्युषसं न सूर्यः ।
 [८०९] १।५६।५ (सव्य आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 अहन् वृत्र निरपामौब्जो अर्णवम् ।
 १।८५।९ (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 अहन् वृत्रं निरपामौब्जदर्णवम् ।
 [८६०] १।६१।५ अस्मा इदु ससिमिव श्रवस्या ।
 ९।९६।१६ (प्रतव्नो देवोदासिः । पवमानः सोमः)
 अभि वाजं ससिरिव श्रवस्या ।
 [८७३] १।६२।२ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 येना नः पूर्वं पितरः पदज्ञा अर्चन्तो आङ्गिरसो
 गा अविन्दन ।
 ९।९७।३९ (पराशरः शाकल्यः । पवमानः सोमः)
 येना नः पूर्वं पितरः पदज्ञा स्वर्विदो अभि
 गा अद्रिमुष्णन् ।
 [८७४] १।६२।३ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 बृहस्पतिर्भिनदक्षिं विदद्वाः ।
 १०।६८।११ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)
 [८८३] १।६२।१२ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 शिक्षा शचीस्तव नः शचीवभिः ।

- (१३०) ८।२।१५ (मेधातिथिः काण्वः
 प्रियमेधश्चाङ्गिरसः । इन्द्रः)
 शिक्षा शचीवः शचीभिः ।
 [८९१] १।६३।७ (नोवा गौतमः । इन्द्रः)
 अंहो राजन् वरिवः पूरवे कः ।
 (१५५३) ४।२१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 सम्राड्दन्ता वृत्रं वरिवः पूरवे कः ।
 [९००-९१६] १।८०।१-१६ अर्चन्तु स्वराज्यम् ।
 [९०५] १।८०।६ (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 जिघ्रते वज्रेण शतपर्वणा ।
 (२४८) ८।६।६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 वज्रेण शतपर्वणा । शिरो बिभेद . . ॥
 (६२९) ८।७६।२ (कुरुमुनिः काण्वः । इन्द्रः)
 अभिनन्धिरः ।
 वज्रेण शतपर्वणा ।
 (२३८६) ८।८९।३ (तुमेध-पुरुमेधावाङ्गिरसौ । इन्द्रः)
 वृत्रं हनति वृत्रहा शतकतुर्वज्रेण शतपर्वणा ।
 [९०७] १।८०।८ महन् इन्द्र वीर्यं ।
 (५३९) ८।५५। (वाल० ७) १ भूरीदिन्द्रस्य वीर्यम् ।
 [९०८] १।८०।९ (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।
 (२३१२) ८।६९।९ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 [९०९] १।८०।१० महत्तदस्य पौत्रं ।
 (५८०) ८।६३।३ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
 रतुषे तदस्य पौत्रम् ।
 ["] १।८०।१० (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 वृत्रं जघन्वाँ असृजद् ।
 (१५१५) ४।१८।७ (वामदेवो गौतमः । अदितिः
 ऋषिका । इन्द्रः, वामदेवः)
 ... असृजद्भि सिन्धून् ।
 (१५२९) ४।१९।८ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 [९२०] १।८१।५ आ पप्रौ पार्थिवं रजो ।
 ६।६१।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । सरस्वती)
 आपमुषी पार्थिवान्युरु रजो अन्तरिक्षम् ।
 ["] १।८१।५ (गौतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 न त्वावो इन्द्र कश्चन न जातो न जनिष्यते ।
 (२२५७) ७।३२।२३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 न त्वावो अन्यो दिव्यो न पार्थिवो न जातो
 न जनिष्यते ।

- [९२०] १।८१।५ अति विश्वं ववक्षिथ ।
(८३५) १।१०२।८ अतीदं विश्वं भुवनं ववक्षिथ ।
- [९२३] १।८१।८ अथा नोऽविता भव ।
१।९१।९ (गीतमो राहूगणः । सोमः)
तामिनोऽविता भव ।
- [९२४] १।८१।९ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
विश्वं पुष्यन्ति वार्यम् ।
अदाशुषां तेषां नो वेद आ भर ।
(अग्निः ८०६) ५।६।६ (वसुश्चत आग्नेयः । अग्निः)
विश्वं —
(२७७९) १०।१३३।२ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
विश्वं पुष्यसि वार्यं ।
(४५७) ८।४५।१५ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
अदाशुरि ... ।
तस्य नो वेद आ भर ।
- [९२५-२६] १।८२।१-५ योजा निवन्द्वा ते हरी ।
- [९२६] १।८२।२ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
विप्रा नविष्ठया मती ।
८।२५।२४ (विश्वमना वैयश्वः । मित्रावरुणौ)
- [९२७] १।८२।३ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
सुसंद्दशं त्वा वयं ।
१०।१५८।५ (चक्षुः सौर्यः । सूर्यः)
- [९३१] १।८३।१ अश्ववति प्रथमो गोषु गच्छति ।
२।२५।४ (गुत्समदः गौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
स सत्वमि प्रथमो गोषु गच्छति ।
- [९३८] १।८४।२ ऋषीणां च स्तुतीरूप ।
(३९७) ८।१७।४ (इरिम्बिष्ठिः काण्वः । इन्द्रः)
अम्माकं सुष्टुतीरूप ।
- [९३९] १।८४।३ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
अर्वाचीनं सु ते मनो प्रावा कृणोतु वगुना ।
(१३३५) ३।३७।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
अर्वाचीनं सु ते मन ।
इन्द्र कृणवन्तु ... ।
- [९४०] १।८४।४ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
इममिन्द्र सुतं पिब ।
(२७८) ८।६।३६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
- [९४३] १।८४।७ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
वसु मर्ताय दाशुषे ।
९।९८।४ (अम्बरीषो वार्षागिरः ऋजिश्वा भारद्वाजश्च ।
पवमानः सोमः)

- [९४३] १।८४।७ ईशानो अप्रतिष्कृत इन्द्रो अट्ग ।
(३५) १।७।८ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)
ईशानो अप्रतिष्कृतः ।
- [९४५] १।८४।९ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
सुतावाँ आविवासति ।
(९७९) ८।९७।४ (रैमः काश्यपः । इन्द्रः)
सुतावाँ आ विवासति ।
- [९४६-९४८] १।८४।१०-१२ वस्वीरनु स्मराज्यम् ।
- [९४७] १।८४।११ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
ता अस्य पृथनायुवः सोमं श्रीणन्ति पृथयः ।
(२३०६) ८।६९।३ (प्रियमेध आडियारसः । इन्द्रः)
ता अस्य मृदोहस सोमं श्रीणन्ति पृथयः ।
- [९४९] १।८४।१३ जघान नवतीर्नव ।
९।६१।१ (अमर्त्यायुगाडियारसः । पवमानः सोमः)
अवाहन्नवतीर्नव ।
- [९५०] १।८४।१४ (गीतमो राहूगणः । इन्द्रः)
पर्वतेष्वपश्रितम् ।
५।६१।१९ (श्यावाश्व आग्नेयः । रथर्वातिर्दाभ्यः)
- [९५५] १।८४।१९ न त्वदन्यो मघवन्नस्ति मर्दिता ।
(६२५) ८।६६।३ (कलिः प्रागायः । इन्द्रः)
नहि त्वदन्यः पुरुहूत कश्चन मघवन्नस्ति मर्दिता ।
- [९५७-९७१] १।१००।१-१५ (वर्षागिराः ऋज्वाश्वाऽम्बरीष-
सहदेव-भयमान-सुराधमः । इन्द्रः)
मरुत्वाज्ञो भवस्विन्द्र जती ।
- [९६७] १।१००।११ (ऋज्वाश्वाऽम्बरीषः । इन्द्रः)
अपां तोकस्य तनयस्य जेषे ।
(२०५३) ६।४४।१८ (शंयुर्वाहिस्पत्यः । इन्द्रः)
- [९६८] १।१००।१२ (ऋज्वाश्वाऽम्बरीषः । इन्द्रः)
सहस्रचेताः शतनीथ ऋभवा ।
(अग्निः १६३१) १०।६९।७ (सुमित्रो वा-यश्वः । अग्निः)
सहस्रस्तरीः शतनीथ ऋभवा ।
- [९७१] १।१००।१५ आपश्चन शवसो अन्तमापुः ।
१।१६७।९ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । मरुतः)
आरात्ताञ्चिच्छवसो अन्तमापुः ।
- [९७५] १।१००।१९ (ऋज्वाश्वाऽम्बरीषः । इन्द्रः)
(८३८) १।१०२।११ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
विश्वहेन्द्रो अधिवक्ता नो अस्त्वपरिहृताः
सनुयाम वाजम् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः
पृथिवी उत द्यौः ॥

- [८२३] १।१०१।१-७ मरुत्वन्तं सख्याय हवामहे ।
 [८२४-२५] १।१०१।८-९ त्वाया इविश्रुकुमा सत्यराधः ।
 (९ ब्रह्मवाहः)
 [८३१] १।१०२।४ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 अस्मभ्यमिन्द्र वरिवः सुगं कृषिं प्र गन्तूणा
 मघवन् वृष्ण्या रुज ।
 (२०५३) ६।४४।१८ (गंयुर्बाह्विस्पत्यः । इन्द्रः)
 मघवन्निन्द्र पृत्स्वस्यभ्यं महि वरिवः सुगं कः ।
 [८३५] १।१०२।८ अतीदं विश्वं भुवं ववाक्षिथ ।
 (९२०) १।८१।५ (गोतमो राहूगणः । इन्द्रः)
 अति विश्वं ववाक्षिथ ।
 ["] १।१०२।८ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 अशत्रुरिन्द्र जनुषा सनादासि ।
 (४२१) ८।२१।१३ (सोमरि काण्वः । इन्द्रः)
 अनापिरिन्द्र— ।
 (२७७९) १०।१३३।२ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
 अशत्रुरिन्द्र जाज्ञेषे ।
 [८३८] १।१०२।११ = (९७५) १।१००।१९
 [८४०] १।१०३।२ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 स धारयत् पृथिवीं पप्रथच्च ।
 (११६३) २।१५।२ (यत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
 [८४५] १।१०३।७ = (७७४) १।५२।१५
 [८४७] १।१०४।१ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 योनिष्ठ इन्द्र निषटे अकारि तमा ।
 (२१८६) ७।२४।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः)
 —इन्द्र सदेने अकारि तमा ।
 [८५४] १।१०४।८ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 मा नो वधीरिन्द्र मा परा दा मा ।
 ७।४६।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । रुद्रः)
 मा नो वधी रुद्र मा परा दा मा ।
 [८५५] १।१०४।९ उरुव्यचा जठर आ वृषस्व ।
 १०।९६।१३ (बरुआङ्गिरसः, सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः । हर्गिः)
 सत्रा वृषजठर आ वृषस्व ।
 [१००१] १।१२९।२ पृथ्वमस्यं न वाजिन्सू ।
 (३२१६) १।१३५।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)
 आशुमस्यं— ।
 [१००२] १।१२९।३ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
 मित्राय वोचं वरुणाय सप्रथः सुमृलीकाय
 सप्रथः ।

- १।१३६।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
 मित्राय वोचं वरुणाय मीळुषे सुमृलीकाय मीळुषे ।
 [१००४] १।१२९।५ उग्रामिरुग्रोतिभिः । पश्य—(३१) १।७।४
 [१००८] १।१२९।९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
 त्वं न इन्द्र राया परीणसा ।
 अभिष्टिभिः सदा पाह्यभिष्टिभिः ।
 (१६४१) ४।३१।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 एन्द्र राया परीणसा ।
 (९८१) ८।९७।६ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
 १०।९३।११ (तान्त्रः पार्थ्यः । विश्वेदेवाः)
 अभिष्टये सदा पाह्यभिष्टये ।
 [१०११] १।१३०।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
 महिष्ठं वाजसातये ।
 ८।४।१८ (देवातिथिः काण्वः । पृषा)
 अस्माकं — भव मंहिष्ठो वाजसातये ।
 (८९९) ८।८८।६ (नोधा गौतमः । इन्द्रः)
 [१०१६] १।१३०।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
 — वाचं — रथं न धीरः स्वपा अतक्षिषुः ।
 (अग्निः ७७७) ५।२।११ (कुमार आत्रेयः, वृषो वा
 जानः उमौ वा, २ वृषो जानः । अग्निः)
 — स्तोमं — रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।
 (१६८१) ५।२९।१५ (गौरिवीतिः शाक्यः । इन्द्रः)
 ब्रह्म . ।
 रथं न धीरः स्वपा अतक्षम् ।
 [१०१७] १।१३०।७ अतिथिगवाय शम्बरं ।
 पश्य—(७५०) १।५१।६
 [१०१८] १।१३०।८ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
 न्यर्शसानमोषति ।
 (२९६) ८।१२।९ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
 [१०१९] १।१३०।९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
 उशना यत् परावतो ।
 ८।७।२६ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
 [१०२१] १।१३१।१ = (३०९) ८।१२।२२
 देवासो दधिरे पुरः ।
 (अग्निः ८७१) ५।१६।१ (पुरुरात्रेयः । अग्निः)
 मर्तासो दधिरे पुरः ।
 (३१२) ८।१२।२५ देवास्त्वा दधिरे पुरः ।
 [१०२४] १।१३१।४ पुरो यदिद शारदीरवातिरः ।
 (१०७०) १।१७४।२ = (१८९३) ६।२०।१०
 सप्त यत्पुरः शर्म शारदीर्द्वै ।

- [१०२८] १।१३२।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
 इंद्रत्वोतः सासह्याम पृतन्यतो वनुयाम वनुयतः ।
 (३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
 सासह्याम— ।
- [१०३१] १।१३२।४ यदङ्गिरोभ्योऽवृणोरप व्रजम् ।
 (७४७) १।५।३ त्वं गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ।
- [१०३२] १।१३२।५ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
 धीतयो देवो अच्छा न धीतयः ।
 १।१३२।१ (परुच्छेपो दैवोदासिः । विश्वेदेवा)
- [१०४०] १।१३३।७ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रः)
 सहसा वाज्यवृतः ।
 (१९७) ८।३२।१८ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
- [१०४१] १।१३३।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इंद्रः)
 सुसृळीको न आ गहि ।
 १।९२।११ (गोतमो राहूगणः । सोमः)
 सुसृळीको न आ विज ।
- [१०४२] १।१६७।१ सहस्रिण उप नो यन्तु वाजाः ।
 (२२०२) ७।२६।५ —नो माहि वाजान् ।
- [१०४७] १।१६९।५ ते शु णो मरुतो मृळयन्तु ।
 (३२६५) १।१७।१३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः ।
 मरुत्वानिन्द्रः)
 स्तुतासो नो मरुतो मृळयन्तु ।
- [१०५५] १।१७०।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इंद्रः)
 त्वमीशिषे वसुपते वसुनां ।
 (अग्निः १४१६) ८।७१।८ (सुदीति-पुरुमीळहावाङ्गिरसौ,
 तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
 त्वमीशिषे वसुनाम् ।
- [१०७०] १।१७४।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इंद्रः)
 मृधवाच सस यत्पुः शर्म शारदीर्दर्व ।
 (१८९३) ६।२०।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 सस यत्पुः शर्म शारदीर्दर्व दामीः पुरुकुत्साय ।
- [१०७३] १।१७४।५ = (७४३) १।३३।१४
 ["] १।१७४।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 प्र सूरश्चक्रं बृहतादभीके ।
 (१४७८) ४।१६।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
- [१०७६] १।१७४।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 नमो वधरदेवस्य पीयोः ।
 (१२०५) २।१९।७ (गृत्समदः शौनकः । इंद्रः)
- [१०७७] १।१७४।९ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इंद्रः)
 (१८९५) ६।२०।१२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इंद्रः)

- त्वं धुनिरिन्द्र धुनिमतीर्कणोरपः सीरा न खवंतीः ।
 प्र यत्समुद्रमति शूर पर्वि पारया तुर्वशं यदुं स्वस्ति ॥
- [१०८०] १।१७५।२ वृषा मदो वरेण्यः ।
 (१८२४) ८।४६।८ यत्ते मदो वरेण्य ।
- [१०८१] १।१७५।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 सहावार दस्युमव्रतम् ।
 ९।४१।२ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
 साहासो दस्युमव्रतम् ।
- [१०८३] १।१७५।५ शुषिमन्तमो हि ते मदो धुमिन्तम उत क्रतुः
 (अग्निः २८०) १।२७।९ (परुच्छेपो दैवोदासिः । अग्निः)
- [१०८४] १।१७५।६ =
 (१०९०) १।१७६।६ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 यथा पूर्वभ्यो जरितृभ्य इन्द्र मयद्वापो न
 तृप्यते बभूथ । तामनु त्वा निविदं जोहवीमि
 विद्यामेष वृजनं जीरदानुम् ॥
- [१०८५] १।१७६।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः ।)
 इन्द्रमिन्दो वृषा विश ।
 ९।२।१ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
- ["] १।१७६।१ ऋचायमाण इन्वसि ।
 (६५) १।१०।८ —मिन्वतः ।
- [१०८६] १।१७६।२ = (३६) १।७।९
 ["] १।१७६।२ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 यवं न चर्षकृद् वृषा ।
 १।२३।१५ (मेधानिथिः काण्वः । पया)
- [१०८७] १।१७६।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 यस्य विश्वानि हस्तयोः ।
 (२०६७) ६।४५।८ (शंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
- [१०८९] १।१७६।५ = (११) १।४।८
 [१०९०] १।१७६।६ = (१०८४) १।१७५।६
 [१०९१] १।१७७।१ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 राजा कृष्टीनां पुरुहूत इन्द्रः ।
 (१४९२) ४।१७।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
- ["] १।१७७।१ युक्त्वा हरी वृषगा याह्यर्शद् ।
 (१७६८) ५४०।४ युक्त्वा हरिभ्यामुप यामदर्वीद् ।
- [१०९३] १।१७७।३ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 सुतः सामः परिषिक्ता मधूनि ।
 (२१८७) ७।२४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
- [१०९५] १।१७७।५ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
 विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो ।

(१९४६) ६।२५।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

एवा... .. इन्द्र ।

विद्याम ... ।

(२६७८) १०।८९।१७ (रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः)

एवा . इन्द्र ।

विद्याम ।

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

[११०२] २।११।२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

मृजो महिरिद्र परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वी ।

(२१६३) ७।२१।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

म्वितनवा अपम्कः परिष्ठिता अहिना शूर पूर्वी ।

[११०४-५] २।११।४-५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

दासीर्विशः सूर्येण सहाः ॥४॥

गुहा हितं गुह्यं गृह्णामासु ॥५॥

(१३६०) ३।३९।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

गुहा हितं— ।

(२८१०) १०।१४।२ (पृथुवेन्यः । इन्द्रः)

दासी— ।

गुहा— ।

[११११] २।११।११ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

पिवापिबेदिन्द्र शूर सोमं ।

(२४८०) १०।२२।१५ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा

वसुकृटा वासुकः । इन्द्रः)

["] २।११।११ मदन्तु त्वा मन्दिनः सुतामः ।

१।१३।२ (पुरुच्छेपो देवोदासि । वायु)

मदन्तु त्वा मन्दिनो वायचिन्दवो ।

[११२१] २।११।२ = (११७१) २।१५।१० = (११८०) २।१६।९

= (११८९) २।१७।९ = (११९८) २।१८।९

= (१२०६) २।१९।९ = (१२१६) २।२०।९

(गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

नूनं सा ते प्रति वर जरित्रे दुर्हीयदिन्द्र दक्षिणा

मघोनी ।

शिक्षा स्तोत्रभ्यो माति धर्मगो नो बृहद्वदेम

विदधे सुवीराः ॥

[११२४] २।१२।३ यो हत्वाहिमरिणात् सप्त सिन्धून् ।

(१५९९) ४।२८।१ = १०।६७।१२ (अयाम्य आगिरमः ।

बृहस्पतिः)

अहन्नहिम ।

[११३३] २।१२।१२ यः सप्त रश्मिर्बृषभस्तुविष्मान् ।

(अग्निः १७६०) ४।५।३ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)

महसरेता बृषभस्तुविष्मान् ।

["] २।१२।१२ = (७२६) १।३२।१२

[११३५] २।१२।१४ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

पचन्तं यः शंसन्तं यः शशमानमूती ।

(१२१०) २।२०।३ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

यः शंसन्तं यः शशमानमूती पचन्तं ।

[११३६] २।१२।१५ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

वयं त इन्द्र विश्वह प्रियासः ।

८।४८।१४ (प्रगाथो घोरः काण्वः । सोमः)

वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः ।

["] २।१२।१५ सुवीरासो विदधमा वदेम ।

१।११।२५ (कधीवान् औशिजो दैर्घतमसः । अश्विनौ)

[११३८-४०] २।१३।२-४ यस्ताकृणोः प्रथमं सास्युवध्यः ।

[११४५] २।१३।९ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

एकस्य श्रुष्टौ यद्ध चोदमाविथ ।

(१६७) ८।३।२ (मेयातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

शग्धी नो अस्य यद्ध पारमाविथ ।

[११४९] २।१३।१३ =

(११६१) २।१४।२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

अस्मभ्यं तद्वसो दानाय राधः समर्थयस्व बहु ते

वसव्यम् । इन्द्र यस्त्रिंश्रवस्या अनु धृन् बृहद्वदेम

विदधे सुवीराः ॥

[११५०] २।१४।१ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

अध्वर्यवो भरतेन्द्राय सोमम् ।

१०।३०।१५ (कवष ऐलषः । आपः अपानपात वा)

अध्वर्यवः सुनुतेन्द्राय सोमम् ।

[११५१] २।१४।२ (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

अध्वर्यवो — ।

तस्मा एतं भरत तद्वशाँ ।

२।३७।१ (गृत्समदः शौनकः । द्रविणोदा कृतवश्र)

— अवर्यवः — ।

तस्मा एत भरत तद्वशो ददि ।

[११५९] २।१४।१० (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)

सोमेभिरीं पृणता भोजमिन्द्रम् ।

— दित्सन्तम् ॥

(१९४६) ६।२३।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

सोमे — । — सुचिम् ॥

[११६१] २।१४।१२ = (११४९) २।१३।१३
 [११६२] २।१५।१ = (७१७) १।३२।३
 [११६३] २।१५।२ = (८४०) १।१०३।२
 [११६३-७०] २।१५।२-९ सोमस्य ता मद इन्द्रश्चकार ।
 [११७१] २।१५।१० = (११२१) २।११।२१
 [११८०] २।१६।९ = (११२१) २।११।२१
 [११८४] २।१७।४ (गृत्समदः जौनकः । इन्द्रः)
 अधा यो विश्वा भुवनाभि मजन्मना ।
 ... रोदसी ।
 ९।११०।९ (व्यरुणबैरुण त्रसदस्युः पौरुकुत्स्यः ।
 पवमानः सोम)
 अध रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मजन्मना ।
 [११८६] २।१७।६ = (११२१) २।११।२१
 [११९२] २।१८।३ (गृत्समदः जौनकः । इन्द्रः)
 हरी ... ।
 मो बहवो नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।
 (१३१६) ३।३५।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 मा हरी नि रीरमन् यजमानासो अन्ये ।
 शध्वनौ ।
 [११९६] २।१८।७ (गृत्समदः जौनकः । इन्द्रः)
 ब्रह्मा ... हरी ... ।
 अस्मिन्दूर सवने मादयस्व ।

(२१८४) ७।२३।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 अस्मिन् ... ।
 (२२१४) ७।२९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 ब्रह्मकृति । हरिभिः ... ।
 अस्मिन् पु सवने मादयस्वोप ब्रह्माणि ।
 [११९८] २।१८।९ = (११२१) २।११।२१
 [१२०५] २।१९।७ = (११७६) १।१७४।८
 [१२०७] २।१९।९ = (११२१) २।११।२१
 [१२१०] २।२०।३ = (११३५) २।१२।१४
 [१२१२] २।२०।५ (गृत्समदः जौनकः । इन्द्रः)
 अश्वस्य चिच्छिन्नथत् पूर्याणि ।
 (अग्निः ९७३) ६।४।३ (भरद्वाजो वार्हस्पत्यः । अग्निः)
 [१२१६] २।२०।९ = (११२१) २।११।२१
 [१२१८] २।२१।२ (गृत्समदः जौनकः । इन्द्रः)
 अषाढहाय सहमानाय वेधसे ।
 ७।४६।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 अषाढहाय — ।
 [१२१९] २।२१।३ = (७१५) १।३२।१
 [१२२३-२५] २।२२।१-३ सैनं सश्वदेवो देवं सत्यामिन्द्रं
 सत्य इन्दुः ।
 [१२२६] २।२२।४ दिवि प्रवाच्यं कृतम् ।
 १।१०५।१६ (त्रित आत्स्यः कुत्स आङ्गिरसो वा । विश्वेदेवाः)
 दिवि प्रवाच्यं कृतः ।

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[१२३६] ३।३०।२ स्थिराय वृष्णे सवना कृतेमा ।
 (अग्निः ४६६) ३।१।२० (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 महान्ति वृष्णे सवना कृतेमा ।
 [१२५०] ३।३०।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्रस्य कर्म सुकृता पुरुणि ।
 (१२८९) ३।३२।८ = (१३०६) ३।३४।६
 [१२५४] ३।३०।१७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 ब्रह्मद्विषे तपुषि हेतिस्य ।
 ६।५२।३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
 [१२५७] ३।३०।२० = (१४३२) ३।५०।४
 (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इमं कामं मन्दया गोभिरश्वैश्चन्द्रवता राधसा पप्रथश्च ।
 स्वयंवो मतिभिस्तुभ्यं विप्रा इन्द्राय वाहः कुशिकासो
 अक्रन् ।

[१२५८] ३।३०।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अस्मभ्यं सु मघवन् बोधि गोदाः ।
 (१२७३) ३।३१।१४ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो
 गाथिनो वा । इन्द्रः)
 अस्माकं सु मघवन् बोधि गोपाः ।
 (१५६४) ४।२२।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 अस्माकं सु मघवन् बोधि गोदाः ।
 [१२५९] ३।३०।२२ = (१२८१) ३।३१।२२ = (१२९८)
 ३।३१।१७ = (१३११) ३।३४।११ = (१३२२)
 ३।३५।११ = (१३३३) ३।३६।११ = (१३५४)
 ३।३८।१० = (१३६३) ३।३९।९ = (१३९८)
 ३।४३।८ = (१४२३) ३।४८।५ = (१४२८)
 ३।४९।५ = (१४३३) ३।५०।५ = (२६७९)
 १।०।८९।१८

=(२७१३)१०।१०४।११ (विश्वामित्रोः गाथिनः । इन्द्रः)
 शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन् भरे नृतमं
 वाजसातौ ।
 मृध्वन्तमुग्रमूतये समस्सु घ्नन्तं वृत्राणि संजितं
 धनानाम् ॥

[१२६७] ३।३।१८ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा ।
 इन्द्रः)
 प्रतिमानं... विश्वावेदं जनिमा हन्ति शुष्णम् ।
 (२७२९) १०।१११।५ (अष्टादंष्ट्रो वैरूप । इन्द्रः)
 प्रतिमानं विश्वावेदं सवना हन्ति शुष्णम् ।

[१२६८] ३।३।१९=(अग्निः २०३) १।७२।९
 (पराशर शाक्यः । अग्निः)
 [१२७३] ३।३।१४=(१२५८) ३।३०।२१
 [१२७५] ३।३।१६=(अग्निः ४५१) ३।१।५
 (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 [१२७६] ३।३।१७ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा ।
 इन्द्रः)
 अनु कृष्णे वसुधितौ जिहाते ।
 धा४८।३ (वामदेवौ गौतम । वायुः)
 ... वसुधितौ येमाते ।

[१२७७] ३।३।१८=(अग्निः ४६५) ३।१।१९
 (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 [१२८०] ३।३।२१ (कुशिक ऐषीरथिः विश्वामित्रो गाथिनो वा ।
 इन्द्रः)
 गोपति ।
 . दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।
 (२७७१) १०।१२०।८ (बृहद्वि आथर्वण । इन्द्रः)
 गोत्रस्य दुरश्च . ।

[१२८१] ३।३।२२=(१२५९) ३।३०।२२
 [१२८५] ३।३।४ अमर्मणो मन्यमानस्य मर्म ।
 (१७०९) ५।३।५ अमर्मणो विददितस्य मर्म ।
 [१२८८] ३।३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्रं बृहन्तमृषमजरं युवानम् ।
 (१८७२) ६।१९।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 इन्द्रं बृहन्त ।
 ६।४९।१० (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वेदेवाः)
 बृहन्तमृषमजरं सुपुत्रम् — ।

[१२८९] ३।३।८=(१२५०) ३।३०।१३
 ["] ३।३।८ दाधार यः पृथिवीं द्यामुत्तेमाम् ।
 (१३०८) ३।३।८ असान यः . . ।

[१२९२] ३।३।११ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अहन्नहिं परिशयानमर्णः ।
 (१५२३) ४।१९।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 अवास्तुजन्त ।
 अहन्नहिं ।
 (१९७१) ६।३०।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 अहन्नहिं परिशयानमर्णोऽवास्तुजो ।

[१२९८] ३।३।१७=(१२५९) ३।३०।२२
 [१३०२] ३।३।२=(अग्निः १७१९) १।५९।५
 (नोधा गौतम । अग्निर्वैश्वानरः)
 [१३०५] ३।३।२=(अग्निः १९५) १।७२।१
 (पराशर शाक्यः । अग्निः)
 [१३०६] ३।३।६=(१२५०) ३।३०।१३
 [१३०७] ३।३।७=(अग्निः १७२१) १।५९।५
 [१३०८] ३।३।८=(अग्निः २५१) १।७९।८
 (गौतमो राहूगणः । अग्निः)
 ["] ३।३।८=(१२८९) ३।३।८
 [१३११] ३।३।११=(१२५९) ३।३०।२२
 [१३१२] ३।३।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 याहि वायुर्न नियुतो नो अच्छ ।
 ... इन्द्र ... ।
 (२१८३) ७।२३।४ (वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 इन्द्र ।
 याहि ।

[१३१५] ३।३।४=(अग्निः ५७३) ३।२९।१६
 (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 [१३१६] ३।३।५=(१२९२) २।१८।३
 [१३१७] ३।३।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अस्मिन् यज्ञे बर्हिष्या निषद्या ।
 १०।१४।५ (यमो वैवस्वतः । यमः)
 ... निषद्य ।

[१३२२] ३।३।११=(१२५९) ३।३०।२२
 [१३२४] ३।३।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्रं विष वृषधृतस्य वृष्णः ।
 (१३९७) ३।४३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 [१३२९] ३।३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 समुद्रेण सिन्धवो यादमाना इन्द्राय सोमं
 सुषुतं भरन्तः ।
 (१८७५) ६।१९।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 समुद्रे न सिन्धवो यादमानाः ।

१०३०१३ (कवष ऐलषः । आपः अपानपात्वा)
 इन्द्राय सोमं सुषुतं भरन्तीः ।
 [१३३३] ३।३६।११ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३३५] ३।३७।२ = (९३९) १।८४।३
 [१३३८] ३।३७।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
 (३०९) ८।१२।२२ (पर्वत काण्वः । इन्द्रः)
 ९।६१।२२ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 [१३४१] ३।३७।८ पाहि । इन्द्र सोमं शतक्रतो ।
 (६३४) ८।७६।७ इन्द्र ... पिबा सोमं .. ।
 [१३४४] ३।३७।११ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अर्वावतो न आ गच्छथो शक्र परावतः ।
 इन्द्रेह तत आ गहि ।
 (१३७१) ३।४०।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 अर्वावतो न आ गहि परावतश्च वृत्रहन् ।
 (१३७२) ३।४०।९
 परावतमर्वावतम् ।
 इन्द्रेह तत आ गहि ।
 [१३५२] ३।३८।८ हिरण्ययीममतिं यामश्निश्रेत् ।
 ७।३८।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सविता)
 [१३५४] ३।३८।१० = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३६०] ३।३९।६ = (११०५) २।११।५
 [१३६३] ३।३९।९ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३६७] ३।४०।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 इन्द्र सोमाः सुता इमे ।
 (१३८६) ३।४२।५ इन्द्र सोमाः सुता इमे ।
 [१३६९] ३।४०।६ = (६४) १।१०।७
 [१३७१] ३।४०।८ = (१३४४) ३।३७।११
 [१३७२] ३।४०।९ = (१३४४) ३।३७।११
 [१३७४] ३।४१।२ = (अग्निः १९१०) १।१३।५
 [१३७८] ३।४१।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः) =
 (२०८६) ६।४५।१७ (शंयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)
 स मन्दस्त्रा ह्यन्धसो राधसे तन्वा महे ।
 न स्तोतारं निदे करः ।
 [१३७९] ३।४१।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 वयमिन्द्र त्वायवो . । वसो ।
 (२२६६) ७।३१।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 वयमिन्द्र त्वायवो । वसो ।
 (२७८३) १०।१३।६ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
 वयमिन्द्र त्वायवः ।

[१३८१] ३।४१।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 वहतामिन्द्र केशिना ।
 (३९५) ८।१७।२ (इरिम्बिठः काण्वः । इन्द्रः)
 [१३८२] ३।४२।१ = (८१) १।१६।४
 [१३८५] ३।४२।४ = (८०) १।१६।३
 [१३८६] ३।४२।५ = (१३६७) ३।४०।४
 [१३८७] ३।४२।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 विद्या हि त्वा धनंजयं ।
 अधा ते सुस्त्रमीमहे ।
 (४५५) ८।४५।१३ (त्रिशोक काण्वः । इन्द्रः)
 विद्या ... ।
 (अग्निः १३८८) ८।७५।१६ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 विद्या हि... ।
 अधा ते सुस्त्रमीमहे .. ।
 (२३७४) ८।९८।११ (तृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 [१३८९] ३।४२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 सोमं चोदामि पीतये ।
 (२२९७) ८।६८।७ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 इन्द्र चोदामि पीतये ।
 [१३९३] ३।४३।३ इन्द्र देव हरिभिर्याहि त्वयम् ।
 (२२१४) ७।२९।२ अर्वाचीनो हरिभिः— ।
 [१३९६] ३।४३।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 आ त्वा बृहन्तो हरयो युजाना . वहन्तु ।
 (२०५४) ६।४४।१९ (शंयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)
 आ त्वा हरयो वृषणो युजाना ।
 वहन्तु ।
 [१३९७] ३।४३।७ = (१३२४) ३।३६।२
 [१३९८] ३।४३।८ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१३९९] ३।४४।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 जुषाण इन्द्र हरिभिर्न आ गहि ।
 ८।१३।१३ (नारद काण्वः । इन्द्रः)
 . इन्द्र सतिभिर्न ।
 [१४०२] ३।४४।४ = १।४९।४ (प्रस्कण्वः काण्वः । उषा)
 [१४१०] ३।४६।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 एको विश्वस्य भुवनस्य राजा जनान् ।
 (२०३४) ६।३६।४ (नरो भारद्वाजः । इन्द्रः)
 जनानामेको— ।
 [१४१५] ३।४७।२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा
 शूर विद्वान् ।

- (१४५२) ३।५२।७ अपूपमद्धि सगणो मरुद्भिः ।
 [१४१६] ३।४७।३ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः)
 पाहि सोममिन्द्र देवेभिः सखिभि सुतं नः ।
 (१४४१) ३।५१।८ पाहि सोमं मरुद्भिरिन्द्र सखिभिः
 सुतं नः ।
 [१४१८] ३।४७।५ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः) =
 (१८८१) ६।१९।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 मरुत्स्वन्तं वृषभं वावृधानमकवारि दिव्यं शासमिन्द्रम् ।
 विश्वासाहमवसे नूतनायोमं सहोदामिह तं हुवेम ॥
 [१४२२] ३।४८।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 यथावशं तन्वं चक्र एषः ।
 ७।१०।१।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः [वृष्टिकामः],
 कुमार आग्नेयो वा । पर्जन्यः)
 [१४२३] ३।४८।५ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१४२८] ३।४९।५ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१४३०] ३।५०।२ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः)
 हरयः सुशिप्र पिबा त्वयस्य सुषुतस्य चारोः ।
 (२२१३) ७।२९।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः)
 ... हरिवः ।
 पिबा. . ।
 [१४३२] ३।५०।४ = (१२५७) ३।३०।२०
 [१४३३] ३।५०।५ = (१२५९) ३।३०।२२
 [१४३८] ३।५१।५ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 पूर्वोरस्य निषिधो मल्लेषु ।
 (२०४६) ६।४४।११ (गंयुर्बार्हस्पत्य । इन्द्रः)
 पूर्वोष्ट इन्द्र निषिधो जनेषु ।
 [१४३९] ३।५१।६ = (७०८) १।३०।१०
 [१४४१] ३।५१।८ = (१४१६) ३।४७।३
 [१४४३] ३।५१।१० (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 . सुतं ... ।
 पिबा त्वयस्य गिर्वणः ।
 (११२) ८।१२।६ (मेधातिथि-मेधातिथ्या काण्वौ । इन्द्रः)
 पिबा त्वयस्य गिर्वणः सुतस्य ।
 [१४४६] ३।५२।१ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)

- धानावन्त करम्भिणमपूपवन्तमुक्थितम् ।
 (१७८४) ८।१२।२ (अपाला आत्रेयी । इन्द्रः)
 [१४४८] ३।५२।३ (विश्वामित्रो गाथिन । इन्द्रः)
 (१६६०) ४।३२।१६ (वामदेवो गौतम । इन्द्रः)
 जोषयासे गिरश्च न । वधूयुरिव योषणाम् ।
 ३।६२।८ (विश्वामित्रो गाथिनः । पूषा)
 जुषस्व गिरं । वधूयुरिव योषणाम् ।
 [१४५२] ३।५२।७ = (१४१५) ३।४७।२
 [१४५५] ३।५३।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 एदं बर्हिर्यजमानस्य सीदा ।
 (१२२४) ६।२३।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 [१४५७-५८] ३।५३।५-६ यत्रा रथस्य बृहतो निधानं ।
 [१४५९] ३।५३।७ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 ... अंगिरसो ... दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
 ददतो मर्षानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।
 १०।६७।२ (अयास्य आगिरसः । बृहरपतिः)
 दिवस्पुत्रासो असुरस्य वीराः ।
 अंगिरसो
 ७।१०३।१० (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मण्डकाः । पर्जन्यस्तुति-
 संहृष्टाः)
 ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।
 [१४६४] ३।५३।१२ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 य इमे रोदसी उभे ।
 (२५२) ८।६।१७ (वत्स काण्व । इन्द्रः)
 रोदसी मही ।
 ९।१८।५ (असित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 . . रोदसी मही ।
 [१४६५] ३।५३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे ।
 (१७९०) ८।२४।१ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)
 ['] ३।५३।१३ (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 करद्विजः सुराधसः ।
 १।२३।६ (मेधातिथि काण्वः । मित्रावरुणौ)
 करतां न सुराधसः ।

ऋग्वेदस्य चतुर्थ मण्डलम् ।

- [१४७१] ४।१६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 उभे आ प्रयौ रोदसी महित्वा ।
 ३।५४।१५ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
 विश्वेदेवाः)
 [१४७२] ४।१६।६ विश्वानि शक्रो नर्याणि विद्वान् ।
 (२१६४) ७।२१।४ अपासि विश्वा... ।
 ["] ४।१६।६ = (अग्निः ६४१) ४।१।१५
 (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[१४७८] ४।१६।१२ = (१०७३) १।१७४।५
 [१४८६] ४।१६।२० ब्रह्माकर्म भृगवो न रथम् ।
 १०।३९।१४ (घोषा काक्षीवती । अर्दिवनौ)
 अतक्षाम भृगवो ... ।
 [१४८७] ४।१६।२१ = (१५०८) ४।१७।२१
 (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः) =
 (१५३२) ४।१९।११ = (१५४३) ४।२०।११ =
 (१५५४) ४।२१।११ = (१५६५) ४।२२।११ =
 (१५७६) ४।२३।११ = (१५८७) ४।२४।११
 नू ह्युत इन्द्र नू गृणान इष जज्ञिरे नद्योऽ न पीयेः ।
 अकारि ते हरिवो ब्रह्म नव्यं धिया स्याम रथ्यः सदासाः ।
 ४।५६।४ (वामदेवो गौतमः । द्यावापृथिवी)
 नू ।
 धिया स्याम रथ्य सदासाः ।
 [१४८८] ४।१७।१ (वामदेवो गौतम । इन्द्रः)
 सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानान् ।
 (१७३३) १०।११।१९ (अष्टावृन्दो वैरूपः । इन्द्रः)
 [१४९०] ४।१७।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
 (२५२७) १०।२८।७ (वसुक ऋषिः । इन्द्रः)
 वर्धौ वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
 [१४९२] ४।१७।५ = (१०९१) १।१७७।१
 [१४९४] ४।१७।७ त्वं प्रति प्रवत आशयानमहिं वज्रेण
 मधवन् वि वृश्चः ।
 (१५२४) ४।१९।३ सप्त प्रति प्रवत आशयानमहिं
 वज्रेण वि रिणा अपर्वन् ।
 [१५०१] ४।१७।१४ त्वचो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।
 (अग्निः ६३७) ४।१।११ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 महो बुध्ने रजसो अस्य योनौ ।
 [१५०३] ४।१७।१६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 गव्यन्त इन्द्र सख्याय विप्रा अश्वयन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
 (२७७५) १०।१३।१३ (सुर्कालीः काक्षीवत । इन्द्रः)
 [१५०८] ४।१७।२१ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५१२] ४।१८।४ नही न्वस्य प्रतिमानमस्ति ।
 (१८६७) ६।१८।१२ नास्य गजुर्न प्रतिमानमस्ति ।
 [१५१३] ४।१८।५ आ रोदसी अपृणाजायमानः ।
 (अग्निः ४८१) ३।६।२ (विश्वामित्रो गाथिन । अग्निः)
 आ रोदसी अपृणा जायमानः ।
 [१५१५] ४।१८।७ = (९०९) १।८०।१०
 [१५१९] ४।१८।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 दै० [इन्द्रः] ३०

वृत्रमिन्द्रो... हनिष्यन्सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।
 (९९९) ८।१००।१२ (नेमो भार्गव । इन्द्रः)
 सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।
 हनाव वृत्रं... ।
 [१५२३] ४।१९।२ = (१२९२) ३।३२।११
 [१५२४] ४।१९।३ = (१४९४) ४।१७।७
 [१५२६] ४।१९।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 त्वं वृत्तो अरिणा इन्द्र सिन्धून् ।
 (३१५७) ४।४२।७ (त्रसदस्यु पौरुकुन्त्यः । इन्द्रावरुणौ)
 [१५२९] ४।१९।८ = (९०९) १।८०।१०
 [१५३२] ४।१९।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५३५] ४।२०।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 पुरो दधत् सनिष्यसि क्रतु नः ।
 (१७०२) ५।३१।११ (अवस्युरात्रेयः । इन्द्रः)
 [१५३८] ४।२०।६ जज्ञेव कोशं वसुना न्यूष्टम् ।
 (२५४७) १०।४२।२ कोशं न पूर्णं वसुना— ।
 [१५४३] ४।२०।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५५३] ४।२१।१० = (८९१) १।६३।७
 ["] ४।२१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 भक्षीय तेऽवसो दैव्यस्य ।
 ५।५७।७ (द्यावापृथिवी आत्रेयः । मरुतः)
 भक्षीय वोऽवसो दैव्यस्य ।
 [१५५४] ४।२१।११ = (१५४३) ४।२०।११
 [१५५७] ४।२२।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 महो वाजेभिर्महद्भिश्च शुष्मैः ।
 (२०१४) ६।३२।४ (सुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
 [१५५९] ४।२२।५ = (७५७) १।५१।१३
 [१५६३] ४।२२।९ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 जहि वधर्वनुषो मर्त्यस्य ।
 (२१२४) ७।२५।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः)
 [१५६४] ४।२२।१० = (१२५८) ३।३०।२१
 [१५६५] ४।२२।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५६८] ४।२३।४ = (३२६२) १।१६५।१३
 [१५७६] ४।२३।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५७९] ४।२४।३ रिक्किवांसस्तन्वः कृण्वत ग्राम् ।
 (अग्निः १९९) १।७२।५ (पराशर शाकल्यः । अग्निः)
 कृण्वत स्वाः ।
 ["] ४।२४।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 वि ह्यन्ते सर्माके ।
 उभयासो . . नरस्तोकस्य तनयस्य सातौ ।

(३१८०) ७।८२।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
 न्वन्त उभये. रघुधि नरस्तोकस्य तनयस्य सातिषु ।
 [१५८७] ४।२४।११ = (१४८७) ४।१६।२१
 [१५९६] ४।२५।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 ज्योक्पइयात् सूर्यमुच्चरन्तम् ।
 य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।
 ६।५२।५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
 पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
 (३३०१) ७।१०४।२४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।
 (रक्षोहणौ) इन्द्रासौ माँ)
 मा ने दशन्सूर्यमुच्चरन्तम् ।
 १०।५९।४ (बभ्रुः श्रुतबभ्रुर्विप्रबभ्रुगौपायनाः ।
 निऋतिः सोमश्च)
 पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम् ।
 १०।५९।६ (बभ्रुः श्रुतबभ्रुर्विप्रबभ्रुगौपायनाः ।
 अमुर्नातिः)
 ज्योक्पइयेम सूर्यमुच्चरन्तम् ।
 (१७५०) ५।३७।१ (अग्निर्भूमिः । इन्द्रः)
 य इन्द्राय सुनवामेत्याह ।
 [१५९२] ४।२५।५ उर्वस्मा अदितिः शर्म यंसत् ।
 १।१०७।२ (कुन्त आङ्गिरसः । विश्वेदेवाः)
 आदित्येनो अदिति शर्म यंसत् ।
 [१५९७] ४।२६।२ मम देवासो अनु केनमायन् ।
 (अग्निः १५२६) १०।६।७ (त्रित आत्यः । अग्निः)
 तं ते देवासो ।
 [१६०४] ४।२९।१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 तिरश्चिदर्यः सवना पुरुणि ।
 (६२४) ८।६६।१२ (कलि प्रागाथः । इन्द्रः)
 तिरश्चिदर्यः सवना वरो गहि ।
 [१६२५] ४।३०।२० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 शतमश्मन् पुराम् ... ।
 दिवोदासाय दाशुषे ।
 (अग्नि १०४६) ६।१६।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 दिवोदासाय सुन्वते ।
 ... दाशुषे ।
 (२००९) ६।३१।४ (सुहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
 शतानि ... पुरो ... ।
 दिवोदासाय सुन्वते सुतके ।
 [१६२६] ४।३०।२१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 अस्वापयो दभीतये... ह्यैः ।

(२१४३) ७।१९।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः)
 अस्वापयो दभीतये सुहन्तु ।
 [१६२८] ४।३०।२३ करिष्या इन्द्र पौस्यम् ।
 (१७५) ८।३।२० = (१८२) ८।३२।३ कृषे तदिन्द्र पौस्यम् ।
 [१६३३] ४।३१।४ अभी न आ ववृस्व ।
 १०।८३।६ (मन्युस्तापसः । मन्युः)
 मन्यो वज्रन्त्रभि मामा ववृस्व ।
 [१६४०] ४।३१।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 सख्याय स्वस्तये ।
 (३३३०) ६।५७।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
 [१६४१] ४।३१।१२ = (१००८) १।१२९।९
 [१६४५] ४।३२।१ महान् महीभिर्बुधितिभिः ।
 (अग्नि ४६५) ३।१।१९ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 [१६५२] ४।३२।८ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 न त्वा वरन्ते अन्यथा यद्विस्सि स्तुतो मघम् ।
 स्तोतुभ्य इन्द्र गिर्वणः ।
 (३५७) ८।१४।४ (गोवृत्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
 न ते वर्तासि ।
 यद्विस्सि स्तुतो मघम् ।
 (१८६) ८।३२।७ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
 स्तोतार इन्द्र गिर्वणः ।
 [१६५३] ४।३२।९ अभि त्वा गौतमा गिरा ।
 (अग्निः २३९) १।७८।१ (गौतमो राहूगणः । अग्निः)
 [१६५५] ४।३२।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 वेधसो ... ।
 सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ।
 (२३७७) ८।९९।२ (रुमध आगिरसः । इन्द्रः)
 वेधसः ... ।
 सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ।
 [१६५६] ४।३२।१२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 ऐषु धा वीरवद्यशः ।
 ५।७९।६ (सत्यश्रवा आत्रेयः । उपाः)
 [१६५७] ४।३२।१३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः)
 (६०७) ८।६५।७ (प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः)
 यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र साधारणस्त्वम् ।
 तं त्वा वयं हवामहे ।
 (अग्निः १३३२) ८।४३।२३ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
 तं त्वा वयं हवामहे ।
 [१६६०] ४।३२।१६ = (१४४८) ३।५२।३

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [१६६७] ५।२९।१ त्री रोचना विड्या धारयन्त ।
२।२७।९ (कर्मो गार्त्समदो, गुत्समदो वा । आदित्यः)
[१६६९] ५।२९।३ अहवहि पपिवाँ इन्द्रो अस्य ।
(१६९२) ५।३०।११ पुरंदरः पपिवाँ इन्द्रो अस्य ।
[१६७५] ५।२९।१० (गौरिवीति शक्त्यः । इन्द्रः)
नि दुर्वीण आवृणद् मृधवाचः ।
(१७१२) ५।३२।८ (गानुरात्रेयः । इन्द्रः)
—मृधवाचम् ।
[१६७८] ५ २९।१२ दशम्वसो अभ्यर्चन्त्यकैः ।
६।५०।१५ (ऋजिद्वा भारद्वाजः । विदेवेदेवाः)
भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यकैः ।
[१६७९] ५।२९।१३ वीर्या मघवन्या चकर्थ ।
(१६९८) ५।३१।६ प्र नूतना मघवन्या चकर्थ ।
[१६८९] ५।३०।८ (बभ्रुरात्रेयः । इन्द्रः)
शिरो दासस्य नमुचेर्मथायम् ।
(१८८९) ६।२०।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
[१६९२] ५।३०।११ = (१६६९) ५।२९।३
[३३३८] ५।३०।१३ (बभ्रुरात्रेयः । ऋणचयेन्द्रौ)
अक्तोव्युष्टौ परितक्मयायाः ।
(१९३६) ६।२४।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
— परितक्मयायाम् ।
[१६९५] ५।३१।३ = (अग्निः ६३९) ४।१।१३
(वामदेवो गौतमः । अग्निः)
[१६९६] ५।३१।४ अवर्धयन्नहये हन्तवा उ ।
(२३४९) ८।९६।५ मदच्युतमहये हन्तवा उ ।
[१६९८] ५।३१।६ (अवस्युरात्रेयः । इन्द्रः)
प्र ते पूर्वाणि करणानि वोचं प्र नूतना मघवन्या चकर्थ ।
(२२८३) ७।९८।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा कृतानि प्र नूतना मघवाया चकार ।
[१७०२] ५ ३१।११ = १।१२।१३ (कक्षीवान् औगिजो
दैर्घतमसः । विदेवेदेवा इन्द्रो वा)
["] ५।३१।११ = (१५३५) ४।२०।३
[१७०९] ५।३२।५ = (१२८५) ३।३२।४
[१७११] ५।३२।७ (गानुरात्रेयः । इन्द्रः)
इन्द्रो...महते ..चधः ... । विश्वस्य जन्तोरधमं चकार ।
(२२८६) ७।१०४।१६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
इन्द्र... महता चधेन विश्वस्य जन्तोरधमसदीष्ट ।

- [१७१२] ५।३२।८ = (१६७६) ५।२९।१०
[१७२१] ५।३३।५ (संवरणः प्राजापत्यः । इन्द्रः)
वयं ते त इन्द्र ये च नर ।
(२२२१) ७।३०।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
—ये च देव ।
[१७३३] ५।३४।७ वि दाशुपे भजनि सूनर वसु ।
१।४०।४ (कण्वो घौरः । ब्रह्मणस्पतिः)
[१७३६] ५।३५।१ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
यस्ते साधिष्ठोऽवस ।
अस्मभ्यं चर्षणीसहम् ।
(५३१) ८।५३(वाल०)।७ (मेथ्य काण्वः । इन्द्रः)
यस्ते साधिष्ठोऽवसे ।
(३०८५) ७।९४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
अस्मभ्यं चर्षणीसहा ।
[१७३७] ५।३५।२ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
यदिन्द्र ... ।
यद्वा पञ्च क्षितीनाम् .. आ भर ।
(२०९६) ६।४६।७ (अंशुबार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
यदिन्द्र ... ।
यद्वा पञ्च क्षितीनां शुभ्रमा भर ।
[१७३८] ५ ३५।३ = (६७) १।१०।१०
[१७३९] ५ ३५।४ = (७८८) १।५४।३
[१७४०] ५।३५।५ त्वं तमिन्द्र मर्त्यम् ।
(२८३४) १०।१७१।३ त्वं त्वमिन्द्र मर्त्यम् ।
[१७४१] ५।३५।६ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । इन्द्रः)
त्वमिद् वृत्रहन्तम जनासो वृक्त्वर्हिषः ।
हवन्ते वाजसातये ।
(२७९) ८।६।३७ (वत्स काण्वः । इन्द्रः)
त्वमिद् ।
हवन्ते ... ।
(४२८) ८।३४।४ (नीपानिथिः काण्वः । इन्द्रः)
हवन्ते ।
(३३३०) ६।५७।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राप्रपणौ)
हुवेम वाजसातये ।
८।९।१३ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)
हुवेय वाजसातये ।
["] ५।३५।६ = ३।५९।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)

- [१७४२] पा३५।७ (प्रभूवसुराज्ञिरसः । इन्द्र)
पुरोयावानमाजिषु ।
वाजयन्तम् ।
(अग्नि १४६१) ८।८४।८ (उग्रना काव्य । अग्नि)
पुरो ।
... ..वाजिनम् ।
[१७५०] पा३७।१ = (१५९१) ४।२५।४
[१७५४] पा३७।५ (अग्निर्भौमः । इन्द्र)
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।
(अग्नि १५९८) १०।४५।१० (वत्सप्रिर्भालन्दनः । अग्निः)
प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना भवाति ।
[१७५७] पा३८।३ = १।२५।२० (शुनः शेष आजीगर्ति । वरुणः)
[१७६२] पा३९।३ आ वाज दधि सातये ।
९।६८।७ (वत्सप्रिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)
नृभिर्यतो वाजमा दधि ... ।
[१७६३] पा३९।४ महिष्ठ वो मघोनां ।
८।१।३० (आमङ्ग ष्टायोगिः । आसङ्ग)

- महिष्ठासो मघोनाम् ।
[१७६४] पा३९।४ = (६२) १।१०।५
["] पा३९।५ = (अग्निः ९०२) ५।२२।४
(विश्वामामा आत्रेय । अग्नि)
[१७६५] पा४०।१ (अग्निर्भौमः । इन्द्र)
आ याहि । सोम सोमपते पिब ।
(४११) ८।२१।३ (सोमर्गः काण्वः । इन्द्रः)
आ याहीम ।
सोमं सोमपते पिब ।
["] पा४०।१-३ वृषाजिन्द्र वृषाभिवृत्रहन्तम् ।
[१७६६-६७] पा४०।२-३ (अग्निर्भौमः । इन्द्रः)
वृषा ग्रावा वृषा मदो वृषा सोमो अय सुतः ॥३॥
वृषा त्वा वृषणं हुवे वज्रिज्जिवाभिरुतिभिः ॥४॥
(३५२-५३) ८।१३।३२-३३ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
वृषा ग्रावा ... ॥३२॥
वृषा त्वा ... ॥३३॥
[१७६८] पा४०।४ = (१०९१) १।१७।१

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

- [१८५७] ६।१८।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र)
म युधम सत्वा खजकृत्समद्वा ।
(२१५३) ७।२०।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
युधमो अनवा खजकृत्समद्वा ।
[१८६७] ६।१८।१२ = (१५१२) ४।१८।४
[१८७१] ६।१९।१ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र)
उरुः पृथुः सुकृतः कर्तुमिभूत् ।
७।६२।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । सूर्यः)
कृत्वा कृतः सुकृतः कर्तुमिभूत् ।
[१८७२] ६।१९।२ = (१२८८) ३।३२।७
[१८७३] ६।१९।३ = ३।५४।२२ (प्रजापतिर्विश्वामित्रः,
प्रजापतिर्वाच्यो वा । विश्वेदेवा)
[१८७५] ६।१९।५ = (१३२९) ३।३६।७
[१८७७] ६।१९।७ = (१५७९) ४।२४।३
[१८७८] ६।१९।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्र)
वृषण .. धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
येन वंसाम पृतनासु शङ्कन् ।
(२८४५) १०।४७।४ (सप्तगुरागिरसः । इन्द्रो वैकुण्ठः)
धनस्पृतं शूशुवांसं सुदक्षम् ।
... वृषणं ।

- (अग्निः १४००) ८।६०।१२ (भर्गः प्रागाथः । अग्निः)
येन वंसाम पृतनासु शङ्कन्तः ।
[१८७९] ६।१९।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
इन्द्रं युष्मं स्वर्बद्धेह्यस्मे ।
(२०२७) ६।३५।२ (नरो भरद्वाजः । इन्द्रः)
[१८८१] ६।१९।११ = (१४१८) ३।४७।५
[१८८८] ६।२०।५ = (१६००) ४।२८।२
[१८८९] ६।२०।६ = (१६८९) ५।३०।८
[१८९३] ६।२०।१० = (१०७०) १।१७।२
[१८९५] ६।२०।१२ = (१०७७) १।१७।९
[१९०५] ६।२१।१० जरितारो अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
६।५०।१५ (ऋजिन्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवा)
भरद्वाजा अभ्यर्चन्त्यर्कैः ।
[१९०८] ६।२२।२ = (अग्निः ९७९) ६।५।१ (भारद्वाजो
बार्हस्पत्यः । अग्निः)
[१९२०] ६।२३।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पाता सुतमिन्द्रो अस्तु सोमम् ।
... .. कीरये ।
(२०५०) ६।४४।१५ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
पाता ... । ... कारुधायाः ।

- [१९२०] द।२३।३ दाता वसु स्तुवते कीरये यत् ।
(३३२५) ७,९७।१० धत्तं रयि स्तुवते कीरये चित ।
- [१९२४] द।२३।७ = (१४५५) ३।५३।३
[१९२६] द।२३।९ = (११५९) २।१४।१०
[१९३६] द।२४।९ = (३३३८) ५।३०।१३
[१९४१] द।२५।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
तोके वा गोषु तनये यदासु ।
द।६६।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । मरुतः)
यमासु ।
- [१९४६] द।२५।९ = (१०९५) १।१७७।५
["] द।२५।९ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
एवा नः ।
विद्याम वस्तोरवसा गुणन्तो भरद्वाजा उत त
इन्द्र नूनम् ।
(२६७८) १०।८९।१७ (रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्रः)
एवा ते ।
गुणन्तो विश्वामित्रा उत ... ।
- [१९४८] द।२६।२ = (अग्निः ९९९) द।१०।६ (भरद्वाजो
बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
- [१९४९] द।२६।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
अतिथिगवाय शंस्यं करिष्यन् ।
(२१४७) ७।१९।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
- [१९५०] द।२६।४ = (७४३) १।३३।१४
[१९५५-५६] द।२७।१-२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
किमस्य मदे किम्वस्य पीताविन्द्रः किमस्य सख्ये चकार ।
रणा वा ये निषदि किं ते अस्य पुरा विविद्रे किमु नूननास ॥१
सदस्य . सदस्य ... सदस्य ... ।
... सन् सदु ... ॥२॥
- [१९५७] द।२७।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
नहि तु ते महिमनः समस्य ।
(२६१०) १०।५४।३ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । इन्द्रः)
क उ तु ते महिमनः समस्य ।
- [१९६४] द।२९।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
वसानो अत्कं सुरभिं दशे कं स्वर्णं नृताविषिरो बभूथ ।
१०।१२३।७ (वेनो भार्गवः । वेनः)
स्वर्णं नाम जनत प्रियाणि ।
- [१९७१] द।३०।४ = (१२९२) ३।३२।११
[१९७२] द।३०।५ = (७१८) १।३२।४
[२००९] द।३१।४ = (१६२५) ४।३०।२०
[२०११] द।३२।१ महे वीराय तवसे तुराय ।

- द।४९।१२ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विधेदेवाः)
प्र वीराय प्र तवसे तुराय ।
- [२०१४] द।३२।४ = (१५५७) ४।२२।३
[२०१७] द।३३।२ (शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
त्वोत इत्सनिता वाजमर्वा ।
७।५६।२३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
मरुद्विस्तिनिता वाजमर्वा ।
- [२०२०] द।३३।५ (शुनहोत्रो भारद्वाजः । इन्द्रः)
नूनं न इन्द्रः . ।
इत्था गुणन्तो महिनस्य शर्मन् ।
(३१६८) द।६८।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
नूनं न इन्द्रः ... ।
इत्था गुणन्तो महिनस्य शर्थो ।
- [२०३४] द।३६।४ = (१४१०) ३।४६।२
[१९९१] द।४०।४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
याहि ।
उप ब्रह्माणि शृण्व इमा नः ।
(२२१४) ७।२९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
याहि ।
उप— ।
- [१९९२] द।४०।५ = ४।३४।७ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
[१९९५] द।४१।३ = (७३४) १।३३।५
[१९९९] द।४२।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
सोमेभिः सोमपातमम् ।
(३०७) ८।१२।२० (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
- [२००२-५] द।४३।१-४ अयं स सोम इन्द्र ते सुतः पिब ।
[२०३६-३८] द।४४।१-३ सोमः सुतः स इन्द्र तेऽस्ति
स्वधापते मदः ।
- [२०४०] द।४४।५ = (३०४३) ५।८६।४
["] द।४४।५ (ज्युर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
रोदसी देवी शुष्मं सपर्यतः ।
(२४४१) ८।९३।१२ (मुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
देवी शुष्मं सपर्यतः ।
रोदसी ।
- [२०४४] द।४४।९ = १।११०।९ (कुत्स आङ्गिरसः । ऋभवः)
[२०४५] द।४४।१० ज्युर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
किमङ्ग रथचोदनं त्वाहुः ।
(६६३) ८।८०।३ (एकधूनीधसः । इन्द्रः)
किमङ्ग रथचोदनः ।
- [२०४६] द।४४।११ = (१४३८) ३।५१।५

[२०४९] द१४४।१४ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 इन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघान ।
 सोमं वीराय शिप्रिणे पिबभ्यै ।
 (२१८२) ७।२३।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 इन्द्रो वृत्राण्यप्रती जघन्वान् ।
 (२०३) ८।३२।२४ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
 सोम वीराय शिप्रिणे ।
 [२०५०] द१४४।१५ = (१९२०) द१२३।३
 ["] द१४४।१५ = (१४९०) ४।१७।३
 [२०५१] द१४४।१६ = २।३३।२ (गृत्समदः शौनवः । रुद्रः)
 [२०५२] द१४४।१७ एना मन्वानो जहि शूर शत्रून् ।
 (२७३५) १०।११।२।१ हर्षस्व हन्तवे शूर शत्रून् ।
 [२०५३] द१४४।१८ = (८३१) १।१०।२।४
 ["] द१४४।१८ = (९६७) १।१००।११
 [२०५४] द१४४।१९ = (१३९६) ३।४३।६
 [२०५५] द१४४।२० वृत्तपुषो नोर्मयो मदन्तः ।
 १०।६८।१ (अयास्य आक्षिरसः । बृहस्पतिः)
 गिरिभ्रजो नोर्मयो मदन्तः ।
 [२०५६] द१४४।२१ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 वृषा सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
 वराय ॥
 (अग्निः १७९५) ७।५।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
 नेता सिन्धूनां वृषभः स्तियानाम् ।
 वरेण ।
 [२०५८] द१४४।२३ अयं सूर्ये अदधाज्ज्योतिरन्तः ।
 (२६१३) १०।५४।६ यो अदधाज्ज्योतिषि ज्योतिरन्तः
 [२०६२] द१४५।३ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 महीरस्य प्रणीतयः पूर्वोरुत प्रशस्तयः ।
 (३०८) ८।१२।२१ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
 (३१०९) ८।४०।९ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
 पूर्वोरुतः प्रशस्तयः ।
 [२०६७] द१४५।८ = (१०८७) १।१७६।३
 [२०६९] द१४५।१० = (६९३) १।२९।२
 ["] द१४५।१० (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 तम् . वाजानां पते ।
 अहूमहि श्रवस्यवः ।
 (१८०७) ८।२४।१८ (विश्वमना वयस्यवः । इन्द्रः)
 तं ... वाजानां पतिमहूमहि श्रवस्यवः ।
 [२०७६] द१४५।१७ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 स त्वं न इन्द्र मृळय ।

(६६२) ८।८०।२ (एकधूनीधसः । इन्द्रः)
 [२०७९] द१४५।२० = (अग्निः १०६१) द१२६।२०
 (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)
 [२०८१] द१४५।२२ पुरुहताय सत्वने ।
 (४६३) ८।४५।२१ पुरुहताय सत्वने ।
 [२०८४] द१४५।२५ इमा उ त्वा शतक्रतो ।
 (२४०८) ८।९२।१२ वयमु त्वा शतक्रतो ।
 ["] द१४५।२५ = (१३७७) ३।४१।५ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 णोनुवर्गिरः ।
 इन्द्र वत्सं न मातरः ।
 [२०८६] द१४५।२७ = (१३७८) २।४१।६
 [२०८७] द१४५।२८ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 वत्सं गावो न धेनवः ।
 ९।१२।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 गावो वत्सं न मातरः ।
 [२०८८] द१४५।२९ = (२५) १।५।२
 [२०८९] द१४५।३० (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 अस्माकं भूतु...सोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
 ८।५।१८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 अस्माकं सोमो वाहिष्ठो अन्तमः ।
 .. . भूतु ।
 [२०९२] द१४६।३ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 इन्द्रं तं हूमहे वयम् ।
 (५०९) ८।५१ (वाल०३)।५ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
 ["] द१४६।३ = (अग्निः ८३४) ५।९।७ (गय आत्रेयः । अग्निः)
 [२०९३] द१४६।४ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 वायेसे जनान् ।
 अस्माकं ध्यविता महाधने ।
 (२२५९) ७।३२।२५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
 गुदस्व ... अमित्रान् ।
 अस्माकं बोध्यविता महाधने ।
 [२०९६] द१४६।७ (अंयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
 यदिन्द्र नाहुषीषां कृष्टिषु ।
 (२६६) ८।६।२४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 यदिन्द्र नाहुषीषा ।
 विक्षु ।
 ["] द१४६।७ = (१७३७) ५।३५।२
 [२०९८] द१४६।९ लर्दियच्छ मघवस्यश्च मर्हं च ।
 ९।३२।६ (शावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)
 मघवस्यश्च मर्हं च ।

- [२१०५] द।४७।७ (गगो भारद्वाजः । इन्द्रः)
प्र नो नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
(अग्निः १५९७) १०।४५।९ (वत्सप्रिर्मालन्दनः । अग्निः)
प्र तं नय प्रतरं वस्यो अच्छ ।
(अग्निः १४१४) ८।७१।६ सुदीतिः पुरुमीळ्हावागिरसौ
तयोर्वान्यतरः । अग्निः)
प्र णो नय वस्यो अच्छ ।
- [२११०] द।४७।१२ (गगो भारद्वाजः । इन्द्रः)
(२७७६) १०।१३१।६ (सुकीर्तिः काश्रीवतः । इन्द्रः)
इन्द्रः सुत्रामा स्वर्वा अवोभिः सुमृळीको भवतु विश्ववेदाः ।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥
- ["] द।४७।१२ = (२७७६) १०।१३१।६ = (अग्नि ६४६)
४।१।२० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
- ["] द।४७।१२ = (२७७६) १०।१३१।६ = ४।५१।१०
(वामदेवो गौतमः । उषाः)

- [२१११] द।४७।१३ = (२७७७) १०।१३१।७ = (अग्निः ४६७)
३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
- ["] द।४७।१३ (गगो भारद्वाजः । इन्द्रः) =
(२७७७) १०।१३१।७ (सुकीर्तिः काश्रीवतः । इन्द्रः)
तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे सौमनसे स्याम ।
स सुत्रामा स्वर्वा इन्द्रो अस्मे आराचिद् द्वेषः सनुतयुयोत ।
७।५८६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । मरुतः)
आराचिद् द्वेषो वृष्णो युयोत ।
१०।७७।६ (न्यूसरदिमर्भार्गवः । मरुतः)
आराचिद् द्वेषः सनुतयुयोत ।
- [३३२७] द।४७।२० = १।९१।२३ (गौतमो राहूगणः । सोमः)
द।४७।२८ (गगो भारद्वाजः । रथः)
देव रथ प्रति हव्या गृभाय ।
१।९१।४ (गौतमो राहूगणः । सोमः)

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

- [२१३०] ७।१८।१२ त्वायन्तो ये अमदन्नन्तु त्वा ।
(७७४) १।५२।१५ (सव्य आंगिरसः । इन्द्रः)
विश्वे देवासो अमदन्नन्तु त्वा ।
- [२१३८] ७।१८।२० = (७८९) १।५४।४
(८४५) १।१०३।७ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्रः)
- [२१४३] ७।१९।४ भूरीणि वृत्रा हर्यश्च हंसिः ।
(२६७२) ७।२२।२ येन वृत्राणि हर्यश्च हंसिः ।
- ["] ७।१९।४ = (१६२६) ४।३०।२१
- [२१४७] ७।१९।८ = (१९४९) ६।२६।३
- [२१५३] ७।२०।३ = (१८५७) ६।१८।२
- ["] ७।२०।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
व्यास इन्द्रः पृतनाः स्वोजा ।
(२५२२) १०।२९।८ (वसुक् ऐन्द्रः । इन्द्रः)
व्यानकिन्द्रः पृतनाः स्वोजाः ।
- [२१६०] ७।२०।१० = (२१७०) ७।२१।१० (वसिष्ठो
मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
स न इन्द्र त्वयताया इषे धास्मना च ये मघवानो जुनेन्ति ।
वर्वा षु ते जरित्रे अस्तु शक्तिर्यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः
- [२१६३] ७।२१।३ = (११०२) २।११।२
- [२१६४] ७।२१।४ = (१४७२) ४।१६।६
- [२१७०] ७।२१।१० = (२१६०) ७।२०।१०
- [२१७२] ७।२२।२ = (२१४३) ७।१९।४

- [२१७९] ७।२२।९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ।
(२४८७) १०।२३।७ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा
वसुक्त्वा वसुक्त्वा । इन्द्रः)
- [२१८२] ७।२३।३ = (२०४९) ६।४४।१४
- [२१८३] ७।२३।४ = (१३१२) ३।३५।१
- [२१८४] ७।२३।५ = (११९६) २।१८।७
- [२१८५] ७।२३।६ यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
९।९७।३,६ (इन्द्रप्रमतिर्वासिष्ठः । पवमानः सोमः)
- ["] ७।२३।६ = ६।५०।१५ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
- ["] ७।२३।६ = १।१९०।८ (अगस्त्यो मैत्रावरुणः । बृहस्पतिः)
- [२१८६] ७।२४।१ = (८४७) १।१०४।१
- [२१८७] ७।२४।२ = (१०९३) १।१७।३
- [२१८८] ७।२४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
आ नो दिव आ पृथिव्या ऋजीविन् ।
८७९।४ (कृतुर्भार्गवः । सोमः)
दिव आ . ।
- [२१८९] ७।२४।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)
आ नो विश्वाभिरुतिभिः ।
८।८।१ = ८।८।१८ (सध्वंसः काण्वः । अश्विनौ)
आ वां विश्वाभिरुतिभिः ।

- ८।८७।३ (कृष्ण आङ्गिरसो द्युम्नाको वा वसिष्ठः
प्रियमेध आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
भावां विश्वामिरुतिभिः ।
[२१९१] ७।२४।६ = (२१९७) ७।२५।६
(वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
एवान इन्द्र वार्यस्य पूरिं प्रते मही सुमतिं वेविदाम ।
इषं पिन्व मघवन्त्य सुवीरां यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
[२१९४] ७।२५।३ = (१५६३) ४।२२।९
[२१९७] ७।२५।६ = (२१९१) ७।२४।६
[२२०२] ७।२६।५ = (१०४२) १।१६७।१
[२२१२] ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५ =
(२२२२) ७।३०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
वोचेमेदिन्द्र मघवानमेन महो रायो राधसो यदन्न ।
यो अर्चतो ब्रह्मकृतिमविष्टो यूय पात स्वस्तिभिः सदा नः॥
[२२१३] ७।२९।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
अयं सोमश्चन्द्र तुभ्यं सुन्वे ।
९८८।१ (उगना काव्यः । पवमानः सोमः)
["] ७।२९।१ = (१४३०) ३।५०।२
[२२१४] ७।२९।२ = (१३९३) ३।४३।३
["] ७।२९।२ = (११९६) २।१८।७
["] ७।२९।२ = (१९९१) ६।४०।४
[२२१७] ७।२९।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२२२) ७।३०।५
[२२२१] ७।३०।४ = (१७२१) ५।३३।५
[२२२२] ७।३०।५ = (२२१२) ७।२८।५ = (२२१७) ७।२९।५
[२२२६] ७।३१।४ = (१३७९) ३।४१।७
[२२३४] ७।३१।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव ।
(३०९) ८।१२।२२ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्र वाणीरनूषता समोजसे ।
[२२३६] ७।३२।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः सुते सचा ।
(२६०७) १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः ... ।
[२२३८] ७।३२।४ = (१८) १।५।५
[२२४०] ७।३२।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
सुनोत्या च धावति ।
८।३१।५ (मनुर्वैवस्वतः । विश्वदेवाः)
सुसुत आ च धावतः ।
[२२४२] ७।३२।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

- [८९] ८।१।३ (मेधातिथि-मेध्यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
नाना हवन्त ऊतये ।
अस्माकं ... ।

- सुनोता सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
९।३०।६ (बिदुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
९।५१।२ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
... सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
... सुनोता ।
[२२४४] ७।३२।१० = १।८६।३ (गोतमो राहूगण । मरुतः)
[२२४५] ७।३२।११ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
अस्माकं बोध्यविता रथानाम् ।
१०।१०३।४ (अप्रतिरथ ऐन्द्रः । बृहस्पतिः)
अस्माकमेध्यविता रथानाम् ।
[२२५३] ७।३२।२२ अभि त्वा शर नोनुमः ।
... इन्द्र ... ।
(१३०) ८।२१।५ अभि त्वां इन्द्र नोनुमः ।
[२२५७] ७।३२।२३ = (९२०) १।८१।५
[२२५९] ७।३२।२५ अमित्रान्सुवेदा नो वसू कृधि ।
६।४८।१५ (अंयुर्बार्हिस्पत्यः । मरुतः)
करत्सुवेदा नो वसू करत् ।
[२२७८] ७।३७।१ नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
१।१५४।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
नरो यत्र देवयवो मदन्ति ।
[२२७९] ७।३८।१ जुहोतन वृषभाय क्षितीनाम् ।
(अग्निः १७११) १०।१८७।१ (वत्स आग्नेयः । अग्निः)
वृषभाय क्षितीनाम् ।
[२२८१] ७।३८।३ = (अग्निः १७२१) १।५९।५ (नोधा
गौतमः वैश्वानरोऽग्निः)
[२२८३] ७।३८।५ = (१६९८) ५।३१।६
[३३२५] ७।३८।१० = (३३२५) ७।३७।१०
बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वसूो दिव्यस्येशाथे उत पार्थिवस्य ।
धत्त रयिं स्तुवते कीरये चिद्यं पात स्वस्तिभिः सदा नः ।
[२२८६] ७।१०४।१६ = (१७११) ५।३२।७
[२२८७] ७।१०४।१९ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)
प्राक्कादपाक्कादधरादुक्काद् ।
(अग्निः १८४८) १०।८७।२१ (पायुर्भारद्वाजः ।
रक्षोहाग्निः)
पश्चात्पुरस्तादधरादुक्काद् ।
[२२८८, ३२९७] ७।१०४।२० नूनं सृजदशानि यातुमन्यः ।
(३३०२) ७।१०४।२५ अशानि यातुमन्यः ।

- (३८०) ८।१५।१२ (गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ ।
इन्द्रः)
नाना ... । अस्माकेभिः ... । स्वर्जय ।

(२२९५) ८६८५ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

स्वमाळहेषु ।

नाना ... ।

[९०] ८।१।४ (मेधातिथि-मे-यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
उप कमस्व पुरुरूपमा भर वाजं नेदिष्ठमृतये ।
(अग्निः १४०६) ८।६०।१८ (भर्गः, प्रागाथः । अग्निः)

इषण्यया नः पुरुरूपमा भर वाजं — ।

[९८] ८।१।२२ (मेधातिथि-मे-यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
इष्कर्ता विहृतं पुनः ।

८।२०.२६ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)

[१०३] ८।१।१७ सोता हि सोममद्रिभिः ।
९।३४।३ (त्रित आत्स । पवमानः सोमः)
सुन्वन्ति सोममद्रिभिः ।

[१०८] ८।१।२२ = (अग्निः १०७) १।४५।८
(प्रस्कण्व काण्व । अग्निः)

[११०] ८।१।२४ = (३२२२) ४।४६।३ (वामदेवो गौतमः ।
इन्द्रवायुः)

[१११] ८।१।२५ (मेधातिथि-मे-यातिथी काण्वौ । इन्द्रः)
विवक्षणस्य पीतये ।
८।३५।२३ (श्यावाश्व आत्रेय । अश्विनौ)

[११२] ८।१।२६ = (१४४३) ३।५१।१०

[१३०] ८।२।१५ = (८८३) १।६२।१२

[१४७] ८।२।३२ (मेधातिथि काण्व, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः । इन्द्रः)
इन्द्रः पुरु पुरुहूतः ।

महान् महीभिः शचीभिः ।

(३८८) ८।१६।७ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)

[१५६] ८।३।१ (मे-यातिथि काण्वः । इन्द्रः)
आपिनो बोधि सधमाद्यो वृधे ।

(५३५) ८।५४ (वाल० ६) । ५ (मातरिश्वा काण्वः ।
इन्द्रः)

तेन नो बोधि— ।

[१५९] ८।३।४ समुद्र इव पप्रथे ।
१०।६२।९ (नाभानेदिष्ठो मानव । सावर्णेर्दानस्तुति)
वि सिन्धुरिव पप्रथे ।

[१६०] ८।३।५ = (८०) १।१६।३

[१६१] ८।३।६ इन्द्रे ह विश्वा भुवनानि येमिरे ।
(३१५-१७) ८।१२।२८-३० आदिने विश्वा— ।

९।८६।३० (पृथिव्योऽजा । पवमानः सोमः)

तुभ्येमा विश्वा— ।

१०।५६।५ (बृहदुक्थो वामदेव्यः । विश्वेदेवाः)

वै० [इन्द्रः] ३१

तनूषु विश्वा भुवना नि येमिरे ।

[१६२] ८।३।७ = (अग्निः २४४६) १।१९।९
(मेधातिथि काण्व । अमिर्मरुतश्च)

['] ८।३।७ (मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

समीचीनास ऋभव यमस्वरन् ।

(३१९) ८।१२।३२ (पर्वतः काण्व । इन्द्रः)

समीचीनासो अस्वरन् ।

[१६३] ८।३।८ (मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

अनु ध्रुवन्ति पूर्वथा ।

(३७४) ८।१५।६ (गोष्वक्यध्वमृक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)

[१६७] ८।३।१२ = (११४५) २।१३।९

[१७०] ८।३।१५ (मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

गिरः स्त्रोमास ईरते ।

वाजयन्तो रथाह्व ।

(अग्निः १३१०) ८।४३।१ (विरूप आङ्गिरसः । अग्निः)
गिरः— ।

९।६७।१७ (जमदग्निर्मर्गवः । पवमानः सोमः)
वाजयन्तो— ।

[१७२] ८।३।१७ (मे-यातिथि काण्वः । इन्द्रः)
युक्त्वा...हरी .. पगवतः ।

. उग्र ऋग्वेभिरा गहि ।

(४९१) ८।४९ (वाल० १) । ७ (प्रस्कण्व काण्वः । इन्द्रः)

यद्ध नूनं यद्धा यजे यद्धा पृथिव्यामधि ।

. . महेमत् उग्र उग्रेभिरा गहि ।

(५०१) ८।५० (वाल० २) । ७ (पृथिव्यु काण्व । इन्द्रः)

यद्ध नूनं परावति यद्धा पृथिव्या दिवि ।

युजान हरिभिर्महेमत् ऋग्व ऋग्वेभिरा गहि ।

[१७५] ८।३।२० (मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

कृषे तदिन्द्र पौस्यम् ।

(१८२) ८।३२।३ (मेधातिथि काण्वः । इन्द्रः)

[२२९] ८।४।१ (देवातिथिः काण्व । इन्द्रः)

यदिन्द्र प्रागप्रागुदङ् न्यग्वा ह्यसे नृभिः ।

(६०१) ८।६५।१ (प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः)

[२३०] ८।४।२ इन्द्र मादयसे सचा ।

(५१५) ८।५२ (वाल० ४) । १ आयौ मादयसे सचा ।

[२४०] ८।४।२२ (देवातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

यत्रा सोमस्य नृमपि ।

तस्येहि प्र द्रवा पिब ।

(५२८) ८।५३ (वाल० ५) । ४ (मे-याः काण्वः । इन्द्रः)

यत्रा— ।

- (५९८) ८।६४।१० (प्रगाथः काण्वः । इन्द्र)
तस्येहि— ।
- [२४२] ८।४।१४ अर्वाञ्च त्वा ससयोऽध्वरश्रियो वहन्तु सवनेदुप
१।४७।८ (प्रस्कण्वः काण्वः । अश्विनौ)
अर्वाञ्च वा ससयोऽध्वरश्रियो ।
- [२४३] ८।६।१ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
पर्जन्यो वृष्टिर्माहव ।
९।२।९ (मेवातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
- [२४५] ८।६।३ = (अग्निः ९६) १।४४।११
(प्रस्कण्वः काण्वः । अग्निः)
- [२४६] ८।६।४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
समुद्रायेव सिन्धवः ।
(आनि. १३६७) ८।४४।२५ (विरूप आङ्गिरसः । आग्निः)
- [२४८] ८।६।३ = (९०५) १।८०।६
- [२५१] ८।६।९ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
राये गोमन्तमश्विनम् ।
९।६२।१२ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
९।६३।१२ (निःखिः काश्यपः । पवमानः सोमः)
- [२५५] ८।६।१३ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
वृत्रं पर्वशो रुजन् ।
८।७।२३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
नि वृत्रं पर्वशो ययु ।
- [२५६] ८।६।१४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
वृत्रा ह्यग्रं सृण्विषे ।
(२१९) ८।३३।१० (मेथ्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
वृषा ह्यग्रं सृण्विषे परावति ।
- [२५७] ८।६।१५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
यव नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।
विष्यचन्तः भूमय ।
(३११) ८।१२।२४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
त्रिविक्तो रोदगा नान्तरिक्षाणि वज्रिणम् ।
- [२५८] ८।६।१७ = (१४६४) ३।५३।१२
- [२६१] ८।६।१९ घृतं दुहत् आशिरम् ।
१।१३४।६ (परुच्छेपो देवोदाभिः । वायुः)
घृतं दुहत् आशिरम् ।
- [२६३] ८।६।२१ कण्वा उक्थेन वावृधु ।
(२८५) ८।६।४३ कण्वा उक्थेन.. ।
- [२६५] ८।६।२३ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
आ न इन्द्र महीमिषम् ।

- ९।६५।१३ (मृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा ।
पवमानः सोमः)
आ न इन्द्रो महीमिषम् ।
- [२६६] ८।६।२४ = (अग्निः ८१०) ५।६।१०
(वसुधृत आग्नेयः । अग्निः)
- ["] ८।६।२४ = (२०९६) ६।४६।७
- [२६७] ८।६।२५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
यदिन्द्रं मृळयासि नः ।
(४७५) ८।४५।३३ (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
- [२६८] ८।६।२६ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
यदङ्ग तविषीयस ।
८।७।२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
यदङ्ग तविषीयवो ।
- [२७१] ८।६।२९ चिकित्वा अव पश्यति ।
१।२५।११ (शुनः शेष आर्जोगतिः । वरुणः)
चिकित्वा अभि पश्यति ।
- [२७४] ८।६।३२ इमा म इन्द्र सुष्टुतिम् ।
(३१८) ८।१२।३१ इमां त इन्द्र... ।
- [२७६] ८।६।३४ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
आपो न प्रवता यतीः ।
(३२८) ८।१३।८ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
९।२४।२ (अस्मिन्तः काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)
- [२७७] ८।६।३५ (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रमुक्थानि वावृधु समुद्रमिव सिन्धवः ।
(२३४१) ८।९५।६ (तिरश्चाराङ्गिरसः । इन्द्रः)
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः ।
(२४१८) ८।९२।२२ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः ।
इन्द्रः)
- समुद्रमिव सिन्धवः ।
९।१०८।१६ (शक्तिर्वासिष्ठः । पवमानः सोमः)
समुद्रमिव सिन्धवः ।
- [२७८] ८।६।३६ = (९४०) १।८४।४
- [२७९] ८।६।३७ = (१७४१) ५।३५।६
- ["] ८।६।३७ = ३।५२।९ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
- ["] ८।६।३७ = (१७४१) ५।३५।६ =
(४२८) ८।३४।४ हवन्ते वाजसातये ।
(३३३०) ६।५७।१ हुवेम वाजसातये ।
८।९।१३ (शङ्करः काण्वः । अश्विनौ)
हुवेय वाजसातये ।

- [२८०] ८।६।३८ (वत्स. काण्व. । इन्द्र.)
अनु त्वा रोदसी उभे ।
(६३८) ८।७।११ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्र.)
[२८१] ८।६।३९ मन्दन्वा सु स्वर्णरे ।
(६०२) ८।६।५।२ मादयासे स्वर्णरे ।
(अग्निः२४४७) ८।१०।३।१४ (सोमरिः काण्व. । अश्वामस्तः)
मादयस्व स्वर्णरे ।
[२८३] ८।६।४१ ईशान ओजसा ।
(३१०५) ८।४।०।५ इन्द्र ईशान ओजसा ।
[२८७] ८।६।४५ (वत्स काण्व. । इन्द्र.) =
(२०९) ८।३।२।३० (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्र.)
अवाञ्छ त्वा पुरुषु न प्रियमेधस्तुता हरी ।
सोमपेयाय वक्षतः ।
(३६५) ८।१४।१२ (गोषुक्क्यथसक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
[२९१] ८।१२।४ = (३०४५) ५।८।६
[२९२] ८।१२।५ = (४४) १।८।७
["] ८।१२।५ (पर्वतः काण्वः । इन्द्र.)
इन्द्र विश्वाभिरुतिभिर्ववक्षिथ ।
(१९१) ८।३।१।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रो विश्वाभिरुतिभिः ।
(५५२) ८।६।१।५ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।
(२७८७) १०।१३।३ (मान्धाता यौवनाश्वः । इन्द्रः)
शचीभि शक्र इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।
[२९५] ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध सत्पते ।
(२४३४) ८।९।५ यदा प्रवृद्ध सत्पते ।
[२९६] ८।१२।९ = (१०१८) १।२३।०।८
[२९७] ८।१२।१० इयं त ऋत्विष्यावती ।
(६६७) ८।८०।७ इयं धीर्ऋत्विष्यावती ।
[२९८] ८।१२।११ (पर्वतः काण्वः । इन्द्र.)
ऋतुं पुनीत आनुषक् ।
(५३०) ८।५।३ (वाल० ५) ।६ (मे-य. काण्व. । इन्द्रः)
ऋतुं पुनत आनुषक् ।
[२९९] ८।१२।१२ = (७९८) १।५।२
[३०१] ८।१२।१४ उत स्वराजे अदिति ।
७।६।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । आदित्यः)
["] ८।१२।१४ (पर्वतः काण्वः । इन्द्रः)
पुरुषशस्तमूतय ऋतस्य यत् ।
(अग्निः १४१८) ८।७।१।१० (मुदीति-पुरुमीळहावाङ्गिरसौ
तथोर्वान्यनरः । अग्निः)

- पुरुषशस्तमूतये ।
[३०६] ८।१२।१९ (पर्वतः काण्व. । इन्द्रः)
देवदेवं वोऽवस इन्द्रमिन्द्रं गृणीषणि ।
८।२७।१३ (मनुर्वेवस्वतः । विश्वेदेवा)
... वोऽवसे देव देवमभिष्टये ।
गृणन्तो ।
[३०७] ८।१२।२० = (१९९९) ६।४।२
[३०८] ८।१२।२१ = (२०६२) ६।४।५।२
[३०९] ८।१२।२२ = (१३३८) ३।३।५
["] ८।१२।२२ = (१०२१) १।२३।१
["] ८।१२।२२ = (२२३४) ७।३।१
[३१०] ८।१२।२३ = (३०५५) ६।५।१।१०
[३११] ८।१२।२४ = (२५७) ८।६।१५
[३१२] ८।१२।२५ = (३०९) ८।१२।२२
[३१२-३१४] ८।१२।२५-२७ आदिते हर्यता हरी ववक्षतुः ।
[३१३] ८।१२।२६ = (७६१) १।५।२।२
[३१४] ८।१२।२७ = १।२२।१८ (मे-नानिधि. काण्वः । विश्वः)
त्रीणि पदा वि ऋक्मे ।
[३१५] ८।१२।२८ (पर्वतः काण्वः । इन्द्र.)
वावृधाते दिवेदिवे ।
(५२६) ८।५।३ (वाल० ५) ।२ (मे-य. काण्व. । इन्द्रः)
वावृधानो दिवेदिवे ।
[३१५-१७] ८।१२।२८-३० आदिते विश्वा सुवनानि
यमिरे ।
[३१८] ८।१२।३१ = (२७४) ८।६।३२
[३१९] ८।१२।३२ = (१६२) ८।३।७
[३२०] ८।१२।३३ = (अग्निः १७५५) ३।२६।३ (विश्वामित्रो
गायिनः । वैश्वानरोऽग्निः)
सुवीर्यं स्वइयं ।
[३२१] ८।१३।१ = (२९८) ८।१२।११
[३२४] ८।१३।४ (नारदः काण्व. । इन्द्रः)
मन्दानो अस्य बर्हिषो वि राजसि ।
(३७३) ८।१५।५ (गोषुक्क्यथसक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
[३२६] ८।१३।६ = २।५।४
[३२७] ८।१३।७ = (३०८०) ७।९।२
[३२८] ८।१३।८ = (२७६) ८।६।३४
[३३०] ८।१३।१० = ८।५।५ (ब्रह्मातिथि. काण्वः । अधिनौ)
गन्तारा वागुषो गृहम् ।
[३३१] ८।१३।११ (नारदः काण्व. । इन्द्रः)
अश्वेभिः प्रवितसुभिः ।

- ८।८७।५ (कृष्ण आगिरसो, दुम्नीको वा वासिष्ठ. प्रियमेध
आङ्गिरसो वा । अश्विनौ)
[३३२] ८।१३।१२ (नारद काण्व । इन्द्रः)
इन्द्र शविष्ठ सरस्ते ।
(२२९१) ८।६८।१ (प्रियमेध आङ्गिरस. । इन्द्रः)
['] ८।१३।१२ (३०४५) ५।८६।६
["] ८।१३।१२ = ७।८१।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । उषा)
श्रवः सूरिभ्यो अमृतं वसुध्वनम् ।
[३३३] ८।१३।१३ = (१३९९) ३।४४।१
[३३४] ८।१३।१४ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
मत्स्वा सुतस्य गोमतः ।
(२४२६) ८।९२।३० (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः ।
इन्द्रः)
["] ८।१३।१४ = (अग्नि १९१८) १।१४२।१ (दीर्घतमा
औच्य. । आप्रीसूक्तं [इधमः समिद्धोऽग्निर्वा])
तेनु तनुष्व पूर्य ।
[३३५] ८।१३।१५ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
यच्छक्रामि परावति यदवावति वृत्रहन् ।
(९७९) ८।९७।४ (रेमः काश्यपः । इन्द्रः)
[३३६] ८।१३।१८ तमिद्विप्रा अवस्यवः ।
९।१७७ (असित. काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।
९।६३।२० (निचवि काश्यपः । पवमानः सोमः)
[३३८] ८।१३।१८ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
(२४१७) ८।९२।२१ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः ।
इन्द्रः)
त्रिकङ्कुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमन्त ।
तमिद्वधन्तु नो गिरः सदावृधम् ।
९।६१।१४ (अमर्त्यायुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
तमिद्वधन्तु नो गिरो ।
[३३९] ८।१३।१९ शुचिः पावक उच्यते सो अद्भुतः ।
(अग्निः १९२०) १।१४२।३ (दीर्घतमा औच्य. ।
आप्रीसूक्तं [नराशंसः])
शुचि. पावको अद्भुतः ।
[३४५] ८।१३।२५ बुक्षस्व विभ्युषीमिषम् ।
८।७।३ (पुनर्वन्म काण्वः । भरत)
बुक्षन्त ... ।
[३४७] ८।१३।२७ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
इह स्या सधमाद्या ।
(२०८) ८।३२।२९ (मेधातिथि. काण्वः । इन्द्रः)
(२४५३) ८।९३।२४ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)

- [३५१] ८।१३।३१ (नारद काण्वः । इन्द्रः)
वृषायमिन्द्र ते रथ उतो ते वृषणा हरी ।
वृषा त्वं शतक्रतो वृषा हवः ।
(२२०) ८।३३।११ (मेध्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
वृषा रथो मघवन् वृषणा हरी वृषा त्वं शतक्रतो ।
[३५२] ८।१३।३२ = (१७६६) ५।४०।२
[३५३] ८।१३।३३ = (१७६७) ५।४०।३
[३५६] ८।१४।३ = (अग्नि ९२४) ५।२६।५ (वसुध्व
आत्रेयाः । अग्निः)
[३५७] ८।१४।४ = (१६५२) ४।३२।८
[३५९] ८।१४।६ (गोष्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
ते वय विश्वा धनानि जिग्युषः ।
अतिमिन्द्रा वृणीमहे ।
९।६५।९ (सुगुर्वाशुर्जमदभिर्भागो वा । पवमानः सोमः)
ते... वयं विश्वा धनानि जिग्युषः ।
सखित्वमा वृणीमहे ।
[३६०] ८।१४।७ (गोष्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
व्यशन्तरिक्षमतिरन् ।
(२८२१) १०।१५।३३ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)
व्यशन्तरिक्षमतिरन् ।
[३६५] ८।१४।१२ = (२८७) ८।६।४५
[३६९] ८।१५।१ (गोष्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
तम्बभि प्र गायत पुरुहूतं पुरुहुतं ।
इन्द्र ... ॥
(२४०१) ८।९२।५ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आङ्गिरसः ।
इन्द्रः)
तम्बभि प्रार्चतेन्द्र . ।
(२३९८) ८।९२।२ पुरुहूत पुरुहुतं ... ।
इन्द्र ... ।
[३७१] ८।१५।३ एको वृत्राणि जिघ्रसे ।
(२३४४) ८।९५।९ शुद्धो वृत्राणि जिघ्रसे ।
[३७३] ८।१५।५ = (३२४) ८।१३।४
[३७४] ८।१५।६ = (१६३) ८।३।८
[३८०] ८।१५।१२ = (८९) ८।१।३
[३८१] ८।१५।१३ = ७।५५।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वास्तोष्पतिः)
विश्वा रूपाण्याविशन् ।
["] ८।१५।१३ (गोष्रकृत्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ । इन्द्रः)
इन्द्र जैत्राय हर्षया शचीपतिम् ।
९।१११।३ (अनानतः पारुच्छेपि. । पवमानः सोमः)
इन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।

- [३८२] ८१६।१ = (अग्निः ५०९) ३।१०।१
(विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
(२७८५) १०।१३४।१ (मानवाना यौवनाश्च । इन्द्रः)
सन्नाजं चर्षणीनाम् ।
- [३८८] ८१६७ = (१४७) ८।२।३२
[३९२] ८१६।११ (इरिम्बिठिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
(२३१६) ८।६९।१४ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
- [३९४] ८।१७।१ एवं बर्हिं सद्यो मम ।
(अग्निः ५२९) ३।२४।३ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
- [३९५] ८।१७।२ = (१३८१) ३।४।१९
[३९६] ८।१७।३ (इरिम्बिठि काण्वः । इन्द्रः)
सुतावन्तो हवामहे ।
(५१०) ८।५१(वाल० २)।६ (भृष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
(५६१) ८।६१।१४ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
(२४५९) ८।९३।३० (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
- [३९७] ८।१७४ अस्माकं सुष्टुतीरुप ।
(९३८) १।८४।२ ऋषीणा च स्तुतीरुप ।
- [४०१] ८।१७।८ = ६।५६।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पृषा)
इन्द्रो वृत्राणि जिह्मते ।
- [४०३] ८।१७।१० = (३५६) ८।१४।३ =
(अग्निः ९२४) ५।२६।५ (वसूय आत्रेयाः । अग्निः)
(३०७०) ६।६०।१५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
- [४०४] ८।१७।११ (इरिम्बिठि काण्वः । इन्द्रः)
एहीमस्य द्रवा पिब ।
(६००) ८।६४।१२ (प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः)
एहीमिन्द्र द्रवा पिब ।
- [४०८] ८।१७।१५ = (८०) १।१६।३
इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
- [४११] ८।२१।३ = (१७६५) ५।४०।१
- [४१२] ८।२१।४ = १।१४।१ (मेधातिथि काण्वः । विश्वेदेवाः)
- [४१३] ८।२१।५ = (२२५६) ७।३२।२२
- [४१७] ८।२१।९ = (७०५) १।३०।७
- [४१९] ८।२१।११ (सोमरि काण्वः । इन्द्रः)
एवया ह स्विद्युजा वयं ।
(अग्निः १४६५) ८।१०२।३ (प्रयोगो भार्गव पावको-
ऽग्निर्बार्हस्पत्यो वा गृहपति-यविष्ठौ सहसः पुत्रौ-
ऽन्यतरो वा । अग्निः)
- [४२१] ८।२१।१३ = (८३५) १।१०२।८
- [१७९०] ८।२४।१ = (१४६५) ३।५३।१३

- [१७९२] ८।२४।३ = (अग्निः २०) १।१२।११
(मेधातिथि काण्वः । अग्निः)
- [१७९७] ८।२४।८ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)
विद्याम शूर नव्यसः ।
वसोः ।
(५०३) ८।५०(वाल० २)।९ (पुष्टिगु काण्वः । इन्द्रः)
वसो विद्याम ।
- [१८०२] ८।२४।१३ = (३०७०) ६।६०।१५
- [१८०७] ८।२४।१८ = (२०६९) ६।४५।१०
- [१८०८] ८।२४।१९ (विश्वमना वैयश्वः । इन्द्रः)
एतो निवन्द्र स्ववाम ।
(६७३) ८।८१।४ (कुसीटी काण्वः । इन्द्रः)
(२३४२) ८।९५।७ (तिरश्चीराङ्गिरसः । इन्द्रः)
- [१८१] ८।३२।२ (मेधातिथि काण्वः । इन्द्रः)
वधीदुग्धो रिणन्नयः ।
९।१०९।२२ (अग्रयो धिण्या ऐश्वरा । पवमान सोमः)
श्रीणन्नुग्धो रिणन्नयः ।
- [१८२] ८।३२।३ = (१७५) ८।३।२०
- [१८६] ८।३२।७ = (१६५२) ४।३२।८
- [१९१] ८।३२।१२ = (२९२) ८।१२।५
- [१९२] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१०
- ["] ८।३२।१३ = (१३) १।४।१० = (१७) १।५।४
- [१९७] ८।३२।१८ = (१०४०) १।१३३।७
- [२०१] ८।३२।२२ धेना इन्द्रावचाकशत् ।
(२५६२) १०।४३।६ जनाना धेना अवचाकशद् वृषा ।
- [२०२] ८।३२।२३ = (३२२७) ४।४७।२
(वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
- [२०३] ८।३२।२४ = (२०४९) ६।४४।१४
(शयुर्बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)
- [२०६] ८।३२।२७ = १।३७।४ (कण्वो घौरः । मरुतः)
- [२०८] ८।३२।२९ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः) =
(२४५३) ८।९३।२४ (सुकक्ष आङ्गिरसः । इन्द्रः)
इह त्या सधमाद्या हरी हिरण्यकेशा ।
वोळहामभि प्रयो हितम् ॥
- ["] ८।३२।२९ = (२४५३) ८।९३।२४
= (३४७) ८।१३।२७
- [२०९] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५
- ["] ८।३२।३० = (२८७) ८।६।४५
= (३६५) ८।१४।१२

- [२१२] ८।३३।३ (मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
मक्ष् गोमन्तमीमहे ।
(८९५) ८।८।२ (नोधाः गौतमः । इन्द्रः)
[२१९] ८।३३।१० (मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सत्यमित्था वृषेदसि ।
९।६४।२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
सत्यं वृषन् वृषेदसि ।
[२२०] ८।३३।१२ = (३५१) ८।१३।३१
[२२४] ८।३३।१५ (मे-यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
मदाय क्षुक्ष सोमपाः ।
(६१८) ८।६६।६ (कलिः प्रागाथ । इन्द्रः)
[४२५-३९] ८।३४।१-१५ दिवो अमुष्य शासतो दिवं
यय दिवावसो ।
[४२८] ८।३४।४ = (१७४१) ५।३५।६
[४३१] ८।३४।७ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
सहस्रोते शतामघ ।
९।६२।१४ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
सहस्रोतिः शतामघो ।
[४३२] ८।३४।८ आ त्वा होता मनुहितः ।
(अग्निः १९०९) १।१३।४ (मेधातिथिः काण्वः ।
आप्रीसूर्त्त [दृढ])
असि होता .।
१।१४।११ (मेधातिथिः काण्वः । विश्वदेवाः)
त्वं होता ...।
(अग्निः १०५०) ६।१६।९ (भरटाजो भार्हरपत्यः । अग्निः)
[४३५] ८।३४।११ आ नो याहुपश्रुति ... ।
८।८।५ (सन्वसः काण्वः । अश्विनौ)
आ नो यातमुपश्रुति ।
[४३७] ८।३४।१३ (नीपातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
समुद्रस्याधि विष्टप ।
(९८०) ८।९७।५ (रेभः काश्यपः । इन्द्रः)
.....विष्टपि ।
९।१२।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
विष्टपि ।
९।१०७।१४ (सतर्षथः । पवमानः सोमः)
.. विष्टपि मनीषिणो ।
[१७६९-७४] ८।३६।१-६ पिबा सोमं मदाय कं शतक्रनो ।
यं ते भागमधारयन् विश्वाः सेहानः पृत्तना
उरु जयः समण्डुजिन्मरुर्वो इन्द्र सत्पते ।
[१७७२] ८।३६।४ (श्यावाश्व आत्रेय । इन्द्रः)

- जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
९।९६।५ (प्रतर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
[१७७५] ८।३६।७ = (१७८२) ८।३७।७
(श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्रः)
श्यावाश्वस्य सुन्वतस्तथा [८।३७।७ रेभस्तथा]
शृणु यथाश्वगोरत्रेः कर्माणि कृण्वतः ।
प्र त्रसदस्युमाविथ त्वमेक इन्नुवाह्य इन्द्र ब्रह्माणि ।
[८।३७।७ क्षत्राणि] वर्धयन् ।
(३०९८) ८।३८।८ (श्यावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
श्यावाश्वस्य सुन्वतो ।
[१७७६-८१] ८।३७।१-६ इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।
माध्यन्दिनस्य सवनस्य वृत्रहन्नेद्य पिबा सोमस्य वज्रिवः ।
[१७८२] ८।३७।७ = (१७७५) ८।३६।७
["] ८।३७।७ = (१७७५) ८।३६।७
= (३०९८) ८।३८।८
[४४६] ८।४५।४ (त्रिजोक् काण्वः । इन्द्रः)
जात पृच्छद्भि मातरम् ।
क उग्राः के ह शृण्वरे ।
(६४०) ८।७७।१ (कुरुमुतिः काण्वः । इन्द्रः)
जजनो... वि पृच्छदिति मातरम् ।
क ।
[४४९] ८।४५।७ = (७०) १।११।१
[४५२] ८।४५।१० (त्रिशोकः काण्वः । इन्द्रः)
अर ते शक्र दावने ।
(२४२२) ८।९२।२६ (सुतकक्ष सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)
[४५३] ८।४५।११ शनैश्चिद्यन्तो अद्रिवः ।
(५५१) ८।६१।४ मक्ष् चिद्यन्तो ..।
[४५५] ८।४५।१३ = (१३८७) ३।४२।६
[४५७] ८।४५।१५ = (९२४) १।८१।९
[४६३] ८।४५।२१ स्तोत्रमिन्द्राय गायत ।
(२३८४) ८।८९।१ बृहदिन्द्राय गायत ।
["] ८।४५।२१ = (२०८१) ६।४५।२२
[४७१] ८।४५।२९ = (१५) १।५।२
[४७५] ८।४५।३३ = (२६७) ८।६।२५
[४८२-८४] ८।४५।४०-४२ वसु स्पर्ह तदा भर ।
[१८१९] ८।४६।३ (वज्रोऽश्व्य । इन्द्रः)
शतमूते शतक्रनो ।
गीर्भिगृणन्ति कारवः ।
(२३८३) ८।९९।८ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
शतमूर्तिं शतक्रतुम् ।

(५३३) ८।५४ (वाल० ६)।१ (मातरिवा काण्वः । इन्द्रः)
गीर्भिः ।
[१८२२] ८।४६।६ = ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
ईशानं राय ईमहे ।
[१८२४] ८।४६।८ (वज्रोऽद्वयः । इन्द्रः)
यस्ते मदो वरेण्यो य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।
९।६१।१९ (अमहीयुरागिरसः । पवमानः सोमः)
यस्ते मदो वरेण्यः ।
(२४१३) ८।९२।१७ (श्रुतकक्ष सुकक्षो वा आगिरसः ।
इन्द्रः)
यस्ते य इन्द्र वृत्रहन्तमः ।
य मदः ।
[१८२५] ८।४६।९ (वज्रोऽद्वयः । इन्द्रः)
गमेम गोमति व्रजे ।
(५०९) ८।५१ (वाल० ३)।५ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
[१८२९] ८।४६।१३ पुरः स्थाता मघवा वृत्रहा सुवत् ।
(२४८२) १०।२३।२ इन्द्रो मघैर्मघवा ।
[१८३६] ८।४६।२० = ८।२२।२ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
भुज्युं वाजेषु पूर्व्यम् ।
[४८५] ८।४९(वाल० १)।१ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
अभि प्र ... इन्द्रमर्चं यथा विदे ।
(२३०७) ८।६९।४ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
अभि प्र ... इन्द्रमर्चं यथा विदे ।
[४८९] ८।४९(वाल० १)।५ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
आ न...धियानो अथो ।
यं ते स्वदावन्स्वदयन्ति धेनवः ।
(४९९) ८।५०(वाल० २)।५ (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
आ नः इयानो अथो ।
यं ते स्वदावन्स्वदन्ति गूर्तयः ।
[४९०] ८।४९।(वाल० १)।६ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
उग्रं . वीरं .. विभ्रुतिम् ।
उद्गीव वज्रिन्नवतो न सिञ्चते ।
(५००) ८।५०(वाल० २)।६ (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
वीरमुग्रं विभ्रुतिम् ।
उद्गीव वज्रिन्नवतो वसुत्वना ।
[४९१] ८।४९(वाल० १)।७ = (१७२) ८।३।१७
[४९३] ८।४९(वाल० १)।९ (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
एतावतस्त ... ।
यथा प्रावो मघवन् मेभ्यानिथि यथा ।
(५०३) ८।५०(वाल० २)।९ (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)

एतावतस्ते ... ।
यथा प्राव एतज कृन्व्ये धने यथा ।
[४९४] ८।४९(वाल० १)।१० (प्रस्कण्वः काण्वः । इन्द्रः)
यथा कण्वे मघवन् त्रसदस्यवि ।
यथा गोशर्ये असनोर्ऋजिश्चनि ... गोमदः ।
(५०४) ८।५०।(वाल० २)।१० (पुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यथा कण्वे मघवन् मेवे अन्वरे ।
यथा गोशर्ये असिषानो अद्रिवो गोत्रं ।
[४९९] ८।५०(वाल० २)।५ = (४८९) ८।४९(वाल० १)।५
[५००] ८।५०(वाल० २)।६ = (४९०) ८।४९(वाल० १)।६
[५०१] ८।५०(वाल० २)।७ = (१७२) ८।३।१७
[५०३] ८।५० (वाल० २)।९ = (१७९७) ८।२४।८
["] ८।५० (वाल० २)।९ =
(४९३) ८।४९ (वाल० १)।९
[५०४] ८।५० (वाल० २)।१० =
(४९४) ८।४९ (वाल० १)।१०
[५०५] ८।५१ (वाल० ३)।१ (श्रुष्टिगुः काण्वः ।
इन्द्रः)
यथा मनौ सावरणौ सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।
(५१५) ८।५२(वाल० ४)।१ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
यथा मनौ विवस्वति सोमः शक्रापिबः सुतम् ।
[५०९] ८।५१ (वाल० ३)।५ = (२०९२) ६।४६।३
["] ८।५१ (वाल० ३)।५ = (१८२५) ८।४६।९
[५१०] ८।५१ (वाल० ३)।६ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यस्मै त्वं वसो दानाय जिह्मि स रायस्पोषमश्नुते ।
तं त्वा वयं मघवन्निन्द्र गिर्व्रणः सुतावन्तो हवामहे ।
(५२०) ८।५२(वाल० ४)।६ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
यस्मै त्वं वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।
(५६१) ८।६१।१४ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
तं त्वा वयं.....।
["] ८।५१ (वाल० ३)।६ = (५६१) ८।६१।१४
= (३९६) ८।१७।३
[५१५] ८।५२(वाल० ४)।१ यथा मनौ . सोमं शक्रापिबः सुतम्
. इन्द्र... सचा ।
(५०५) ८।५१ (वाल० ३)।१ (श्रुष्टिगुः काण्वः । इन्द्रः)
यथा मनौ.. सोममिन्द्रापिबः सुतम् ।
मघवन् सचा ।
["] ८।५२ (वाल० ४)।१ = (२३०) ८।४।२
[५१७] ८।५२ (वाल० ४)।३

विष्णुस्त्रीणि पदा वि चक्रम ।
 १।२२।१८ (मेवातिथि काण्व । विष्णु)
 त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णु ।
 [५१८] ८।५।२ (वाल० ४)। ४ जुहूमसि श्रवस्यवः ।
 (४) १।४।१ जुहूमसि यविद्यवि ।
 [५१९] ८।५२ (वाल० ४)। ५ (आयुः काण्वः । इन्द्रः)
 महौ उग्र ईशानकृत् ।
 (६०५) ८।६५।५ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
 [५२०] ८।५२ (वाङ्-४)। ६
 यस्मै त्व वसो दानाय मंहसे स रायस्पोषमिन्वति ।
 (५१०) ८।५२ (वाल० ३)। ६
 ...दानाय शिक्षसि स रायस्पोषमश्नुते ।
 ["] ८।५२ (वाल० ४)। ६ (आयुः काण्व । इन्द्रः)
 वसूयवो वसुपतिं शतक्रतुं स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।
 (५५७) ८।६१।१० (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
 [५२४] ८।५२ (वाल० ४)। १० सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
 ८।७।२२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
 [५२५] ८।५३ (वाल० ५)। १ ईशानं राय ईमहे ।
 ६।५४।८ (भरद्वाजो बार्हिरपत्यः । प्रवा)
 [५२६] ८।५३ (वाङ्-५)। २ = (३१५) ८।१२।२८
 ["] ८।५३ (वाल० ५)। २ वाजयन्तो हवामहे ।
 (अग्निः १२२२) ८।११।९ (वत्सः काण्वः । अग्निः)
 [५२७] ८।५३ (वाल० ५)। ३ ये परावति सुन्विरे जनेष्वा ये
 अर्वावतीन्दवः ।
 (२४३५) ८।९३।६ ये सोमासं परावति ये अर्वावति
 सुन्विरे ।
 ९।६५।२२ (सृगुर्वारुणिर्मजमिर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
 [५२८] ८।५३ (वाल० ५)। ४ = (२४०) ८।४।१२
 यत्रा सोमस्य तृग्गसि ।
 [५३०] ८।५३ (वाल० ५)। ६ = (२९८) ८।१२।११
 क्रतुं पुन (नी) त आनुषक् ।
 [५३१] ८।५३ (वाल० ५)। ७ = (१७३६) ५।३५।१
 यस्ते साधिष्ठोऽवसे ।
 [५३३] ८।५४ (वाल० ६)। १ = (१८१९) ८।४६।३
 गीर्भिर्गृणन्ति कारवः ।
 [५३५] ८।५४ (वाल० ६)। ५ = (१५६) ८।३।१
 नो बोधि सधमाद्यो वृधे ।
 [५३६] ८।५४ (वाल० ६)। ६ ससवांसो वि शृण्विरे ।
 (अग्निः ७०९) ४ ८।६ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
 [५३७] ८।५४ (वाल० ६)। ७ धृक्षस्व पिण्डुवीमिषम् ।

८।७।३ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
 धृक्षन्तः ।
 * [५३८] ८।५४ (वाल० ६)। ८ वय त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम ।
 (अग्निः ७९६) ५ ४।७ (वसुदन्त आत्रेयः । अग्निः)
 वयं ते अग्न उक्थैर्विधेम ।
 (अग्निः ११७५) ७।१४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)
 वयं ते अग्ने समिधा विधेम ।
 [५४४] ८।५६ (वाङ्-८)। १ = (४२) १।८।५
 द्यौर्न प्रथिना शवः ।
 [५५१] ८।६१।४ मक्ष् चिद् यन्तो अद्रिवः ।
 (४५३) ८।४५।११ शनैश्चिद् यन्तो अद्रिवः ।
 [५५२] ८।६१।५ = (२९२) ८।१२।५ इन्द्र विश्वाभिरुतिभिः ।
 [५५३] ८।६१।६ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
 उत्सो देव हिरण्ययः ।
 ९।१०७।४ (सप्तर्षयः पवमान सोमः)
 [५५७] ८।६१।१० = (५२०) ८।५२ (वाल० ४)। ६
 स्तोमैरिन्द्रं हवामहे ।
 [५६०] ८।६१।१३ (भर्गः प्रागाथः । इन्द्रः)
 वि द्विषो वि मृधो जहि ।
 (२८१६) १०।१५२।३ (शासो भारद्वाज । इन्द्रः)
 वि रक्षो वि मृधो जहि ।
 [५६१] ८।६१।१४ = (३९६) ८।१७।३ सुतावन्तो हवामहे ।
 [५६६-७७] ८।६२।१-१२ भद्रा इन्द्रस्य रातयः ।
 [५६९] ८।६२।४ इन्द्र ब्रह्माणि वर्धना ।
 ५।७३।१० (पौर आत्रेयः । अश्विनौ)
 इमा ब्रह्माणि ।
 [५७९] ८।६३।२ उक्था ब्रह्म च शंस्या ।
 (४७) १।८।१० सोम उक्थं च शंस्या ।
 [५८०] ८।६३।३ = (९०९) १।८०।१०
 [५८३] ८।६३।६ कृतानि कर्त्तानि च ।
 १।२५।११ (शुनः शेष आर्जागतिः । वरुणः)
 कृतानि या च कर्त्तानि ।
 [५८६] ८।६३।९ उरु क्रमिष्ट जीवसे ।
 १।१५५।४ (दार्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
 [५८९] ८।६४।१ = (६४) १।१०।७
 [५९२] ८।६४।४ ओमे पृणासि रोदसी ।
 (अग्निः १६८५) १०।१४०।२ (पावकोऽग्निः । अग्निः)
 पृणासि रोदसी उमे ।
 [५९४] ८।६४।६ = (८६) १।१६।९

[५९५] ८।६४।७ ब्रह्मा कलं सपर्यति ।
 ८।७।२० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
 ब्रह्मा को वः सपर्यति ।
 [५९८] ८।६४।१० = (२४०) ८।४।१२
 [६००] ८।६४।१२ = (४०४) ८।१७।११
 [६०१] ८।६५।१ = (२२९) ८।४।१
 [६०२] ८।६५।२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
 मादयासे स्वर्णरे ।
 (अग्निः २४४७) ८।१०३।१४ (सोमः काण्वः ।
 अग्रामरुतः)
 मादयस्व स्वर्णरे ।
 [६०३] ८।६५।३ = (८०) १।१६।३
 [६०५] ८।६५।५ = (५१९) ८।५२ (बाल० ४) ।५
 [६०६] ८।६५।६ प्रयस्वन्तो हवामहे ।
 (अग्निः ८९३) ५।२०।३ (प्रयस्वन्त आत्रेया । अग्निः)
 ["] ८।६५।६ इदं नो बर्हिःरासदे ।
 (अग्निः १९१२) १।१३।७ (मेधातिथिः काण्वः ।
 आप्रीसूक्तं = [उषासानक्ता])
 [६०७] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३
 तं त्वा वयं हवामहे ।
 ["] ८।६५।७ = (१६५७) ४।३२।१३ = (अग्नि १३३२)
 ८।४३।२३ (विरूप आगिरस । अग्निः)
 [६०८] ८।६५।८ इदं ते सोम्यं मध्वधुञ्जद्विभिर्नरः ।
 (३०९३) ८।३८।३ (शावाश्व आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
 इदं वा मर्दिरं मध्वधुञ्ज० ।
 [६०९] ८।६५।९ = (५५) १।९।८
 असे धेहि श्रवो बृहत् ।
 [६१२] ८।६५।१२ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
 श्रवो देवेष्वक्रन ।
 १०।६२।७ (नाभानेदिष्ठो मानवः । विश्वेदेवाः)
 [६१८] ८।६६।६ = (२२४) ८।३३।१५
 मदाय द्युक्ष सोमपाः ।
 [६२०] ८।६६।८ सोमं नः सोमं जुजुषाण आ गहि ।
 (८९) १।१६।५ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
 [६२४] ८।६६।१२ = (१६०४) ४।२९।१
 [६२५] ८।६६।१३ = (९५५) १।८४।१९
 [२२९१] ८।६८।१ = (३३२) ८।१३।१२
 इन्द्र शविष्ठ सप्तपते ।
 [२२९५] ८।६८।५ = (८९) ८।१३ नाना हवन्त ऊतये ।
 [२२९७] ८।६८।७ = (१३८९) ३।४२।८
 दै० [इन्द्रः] ३२

इन्द्रं (सोमं) चोदामि पीतये ।
 [२२९२] ८।६८।९ (प्रियमेध आगिरसः । इन्द्रः)
 जयेम घृत्सु वज्रिवः ।
 (२४०७) ८।९२।११ (श्रुतकक्षः मुकधो वा आगिरसः ।
 इन्द्रः)
 [२३०४] ८।६९।१ प्र वस्त्रिष्टुभमिषं ।
 ८।७।१ (पुनर्वत्स काण्वः । मरुतः)
 प्र यद्वस्त्रिष्टुभमिषं ।
 [२३०६] ८।६९।३ = (९४७) १।८४।११
 ता अस्य ... सोमं श्रीणन्ति पृश्नयः ।
 ["] ८।६९।३ त्रिषवा रोचने दिवः ।
 १।१०५।५ (त्रित आत्स्यः, कुत्स आगिरसो वा । विश्वेदेवाः)
 [२३०७] ८।६९।४ = (४८५) ८।४९ (बाल० १) ।१
 इन्द्रमर्चं यथा विदे ।
 [२३०९] ८।६९।६ दुदुहे वज्रिणे मधु ।
 ८।७।१० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
 [२३१०] ८।६९।७ = (३२१८) १।१३।५७
 (परच्छेपो देवोदासिः । इन्द्रवायु)
 [२३१२] ८।६९।९ = (९०८) १।८०।९ इन्द्राय ब्रह्मोद्यतम् ।
 [२३१३] ८।६९।१० = ९।१।९ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः ।
 पवमानः सोमः)
 सोममिन्द्राय पातवे ।
 ९।४।४ (हिरण्यस्तूप आगिरस । पवमानः सोमः)
 ९।२४।३ (अग्नि काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 सोमेन्द्राय पातवे ।
 [२३१६] ८।६९।१४ = (३९२) ८।१६।११
 इन्द्रो विश्वा अति द्विषः ।
 [२३१७] ८।६९।१५ अर्भको न कुमारकः ।
 ८।३०।१ (मनुवैवस्वतः । विश्वेदेवाः)
 [२३१८] ८।६९।१६ स्वस्तिगामनेहसम् ।
 ६।५।१६ (ऋजिश्वा भारद्वाजः । विश्वेदेवाः)
 [२३१९] ८।६९।१७ तं धेमिथा नमस्विन उप स्वराजमासते ।
 (अग्नि ७४) १।३६।७ (कण्वो घोरः । अग्निः)
 [२३२०] ८।६९।१८ = (७०७) १।३०।९ अनु प्रत्नस्यौकसः ।
 [२३२३] ८।७०।३ न किष्टं कर्मणा नशत् ।
 ८।३१।१७ (मनुवैवस्वतः । दम्पत्याग्निपः)
 [६२८] ८।७०।१ = (७७) १।११।८ इन्द्रमीशानमोजसा ।
 [६२९] ८।७०।२ = (९०५) १।८०।६ वज्रेण शतपर्शना ।
 [६३२] ८।७०।५ (कुत्सुतिः काण्वः । इन्द्रः)
 इन्द्रं गीर्भिर्हवामहे ।

(८९४) ८।८८।१ (नोधा गौतम । इन्द्रः)
 इन्द्रं गीर्भिर्नवामहे ।
 [६३३] ८।७६।६ मरुत्वन्तं हवामहे ।
 (३२४७) १।२३।७ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
 ["] ८।७६।६ = १।२२।१
 [६३४] ८।७६।७ पिबा सोमं शतक्रतो ।
 (१३४१) ३।३७।८ इन्द्र सोमं शतक्रतो !
 [६३६] ८।७६।९ सुतं सोमं दिविष्टिषु ।
 १।८६।४ (गौतमो राह्वगणः । मरुतः)
 सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
 ["] ८।७६।९ (कुरुसुति काण्वः । इन्द्रः)
 वज्र शिशान ओजसा ।
 (२८२२) १०।१५।४ (देवजामय इन्द्रमातङ्गः । इन्द्रः)
 [६३८] ८।७६।११ = (२८०) ८।६।३८ अनुत्वा रोदसी उभे ।
 [६४०] ८।७७।१ = (४४६) ८।४५।४ क उग्रा के ह शृण्वरे ।
 [६४७] ८।७७।८ तेन स्तोत्रभ्य आ भर ।
 (अग्निः ८०१-१०) ५।६।१-१० (तमुरस्त आग्नेयः । अग्निः)
 इष स्तोत्रभ्य आ भर ।
 [६५८] ८।७८।८ (कुरुसुति काण्वः । इन्द्रः)
 विश्वा च सोम सौभगा ।
 ९।४।२ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 ९।५।५।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 सोम विश्वा च सौभगा ।
 [६६१-६२] ८।८०।१-२ = (२०७६) ६।४५।१७
 स त्व न इन्द्र मृळय ।
 [६६३] ८।८०।३ = (२०४५) ६।४४।१०
 किमङ्ग रभ्रचोदनः (०००) ।
 [६६७] ८।८०।७ = (२९७) ८।१२।१०
 इयं वा (त) ऋत्विष्यावती ।
 [६७३] ८।८१।४ = (१८०८) ८।२४।१९ एतो न्विन्द्रं स्तवाम
 [६८०] ८।८२।२ तीव्राः सोमास आ गहि ।
 १।३३।१ (मेधातिथिः काण्वः । वायुः)
 [६८१] ८।८२।३ भुवत् त इन्द्र शं हदे ।
 (२६५४) १०।८६।१५ (इन्द्राणी । इन्द्रः)
 मंथस्त इन्द्र शं हदे ।
 [६८३] ८।८२।५ तुभ्यायमद्भिभिः सुतो ।
 १।१३।२ (परुच्छेपो दैवोदासिः । वायुः)
 तुभ्यायं सोमः परिपूतो अद्भिभिः ।
 [६८५-८७] ८।८२।७-९ पिबदस्य त्वमीशिषे ।
 [६८७] ८।८२।९ (कुमीदी काण्वः । इन्द्रः)

तिरो रजांस्यस्पृतम् ।
 ९।३।८ (शुनःशेष आजीगर्तिः, स देवरातः
 कृत्रिमो वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
 तिरो रजांस्यस्पृतः ।
 [८९४] ८।८८।१ अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।
 (अग्निः ३८६) २।२।२ (गुत्समदः सौनकः । अग्निः)
 अग्ने वत्सं न स्वसरेषु धेनवः ।
 ["] ८।८८।१ = (६३२) ८।७६।५
 इन्द्रं गीर्भिर्न (०हे) वामहे ।
 [८९५] ८।८८।२ = (२१२) ८।३३।३ मक्षू गोमन्तमीमहे ।
 [८९९] ८।८८।६ = (१०११) १।१३०।१
 मंहिष्ठो (०छं) वाजसातये ।
 [२३८४] ८।८९।१ = (४६३) ८।४५।२१
 बृहदि (स्तोत्रमि) न्द्राय गायत ।
 [२३८५] ८।८९।२ (नृमेध-नृमेधवावाङ्गिरसौ । इन्द्रः)
 देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ।
 (२३६६) ८।९८।३ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 [२३८६] ८।८९।३ = (९०५) १।८०।६ वज्रेण शतपर्वणा ।
 [२३९०] ८।८९।७ = (३०) १।७।३
 आ सूर्य रोहयो (रोहयद्) दिवि ।
 [२३९५] ८।९०।५ त्वमिन्द्र यशा असि ।
 (आग्निः १२९९) ८।२३।३० (विश्वमना वैयधः । आग्निः)
 अग्ने त्वं यशा असि ।
 [१७८४] ८।९१।२ = (१४४६) ३।५२।१
 धानावन्तं करम्भिणमपूपवन्तमुक्थिधनम् ।
 [१७८५] ८।९१।३ (अपाला आग्नेया । इन्द्रः)
 इन्द्रायेन्द्रो परिस्त्रव ।
 ९।१०६।४ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)
 [२३९७] ८।९२।१ = (१४) १।५।१
 इन्द्रमभि प्र गायत ।
 (३६९) ८।१५।१ तम्बभि प्र गायत ।
 [२३९८] ८।९२।२ = (३६९) ८।१५।१
 पुरुहूतं पुरुहूतं ।
 [२४०१] ८।९२।५ तम्बभि प्र गायत ।
 (३६९) ८।१५।१ तम्बभि प्रार्चत ।
 ["] ८।९२।५ = (८०) १।१६।३
 इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
 [२४०२] ८।९२।६ (भुतकक्षो सुकक्षो वा आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 अस्य पीत्वा मदानाम् ।

- ९।२३।७ (असित. काश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)
- [२४०७] ९।२३।११ = (२२९९) ८।६८।९
जयेम वृत्सु वज्रिवः ।
- [२४०८] ८।९२।१२ = (२०८४) ६।४५।२६
वयमु (इमा उ) स्वा शतक्रतो ।
- ["] ८।९२।१२ गावो न यवसेव्वा ।
१।९१।१३ (गौतमो राहूगणः । सोमः)
- [२४१०, २४१८] ८।९२।१४, २२ न त्वामिन्द्राति रिच्यते ।
- [२४१३] ८।९२।१७ = (१८२४) ८४६।८
य इन्द्र वृत्रहन्तम् ।
- [२४१६] ८।९२।२० यस्मिन् विश्वा अधि श्रियो ।
१।१३९।३ (परुच्छेपो देवोदामि । अश्विनौ)
युवोर्विश्वा... ।
- [२४१७] ८।९२।२१ = (३३८) ८।१३।१८
त्रिकटुकेषु चेतनं देवासो यज्ञमस्तन ।
तमिद्वधेन्तु नो गिरः (सदावृधम्) ॥
- ९।६१।१४ (अमहीयुरांगिरसः । पवमानः सोमः)
- [२४१८] ८।९२।२२ आ स्वा विशन्तिवन्दवः ।
१।१५।१ (मेधातिथिः काण्वः । ऋतवः [इन्द्र])
- ["] ८।९२।२२ = (२७७) ८।६।३५ समुद्रमिव सिन्धवः ।
- [२४२१] ८।९२।२५ (श्रुतकक्षः सुकक्षो वा आंगिरसः । इन्द्रः)
अरमिन्द्रस्य धाञ्जे ।
- ९।२४।५ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
- [२४२२] ८।९२।२६ (४५२) ८।४५।१० अरं ते शक्र दावने ।
- [२४२६] ८।९२।३० = (३३४) ८।१३।१४
मत्स्वा सुतस्य गोमतः ।
- [२४३२] ८।९३।३ (सुकक्ष आंगिरसः । इन्द्रः)
अश्वावद्गोमद्यवमत् ।
- ९।६९।८ (हिरण्यस्तूप आंगिरसः । पवमानः सोमः)
अश्वावद्गोमद्यवमत् सुवीर्यम् ।
- [२४३४] ८।९३।५ यद्वा प्रवृद्ध सत्पते ।
(२९५) ८।१२।८ यदि प्रवृद्ध ... ।
- [२४३५] ८।९३।६ (सुकक्ष आंगिरसः । इन्द्रः)
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।
९।६५।२२ (सृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागीर्वा वा ।
पवमानः सोमः)
- [२४४०] ८।९३।११ न मिनन्ति स्वराज्यम् ।
५।८२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । सविता)
- [२४४१] ८।९३।१२ = (२०४०) ६।४४।५

- देवी शुष्म सपर्यतः ।
- [२४४८] ८।९३।१९ कया स्तोत्रम्य आ भर ।
(अग्निः ८०१-१०) ५।६।१-१० (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
- [२४४९] ८।९३।२० = (८५) १।१६।८ वृत्रहा सोमपीतये ।
इषं स्तोत्रम्य आ भर ।
- [२४५१] ८।९३।२२ उशान्तो यन्ति वीतये ।
(१८) १।५।५ शुचयो यन्ति ... ।
- [२४५३] ८।९३।२४ = (२०८) ८।२२।२९
बोळहामभि प्रथो हितम् ।
- ["] ८।९३।२४ = (२०८) ८।३२।२९ = (३४७) ८।१३।२७
इह त्या सधमाद्या ।
- [२४५४] ८।९३।२५ = (१३६७) ३।४०।४
तुभ्यं (इन्द्र) सोमा सुता इमे ।
- [२४५५] ८।९३।२६ दधद्रत्ना वि दाशुषे ।
(अग्नि ७५१) ४।१५।३ (वामदेवो गौतमः । अग्निः)
दधद्रत्नानि दाशुषे ।
- ९।३।६ (शुन. जेप आजीर्गतिः स देवरातः कृत्रिमो वैश्वा-
मित्रः । पवमानः सोमः)
- [२४५७-५९] ८।९३।२८-३० = (२६७) ८।६।२५
यदिन्द्र मृळयासि नः ।
- [२४५८] ८।९३।२९ स नो विश्वान्या भर ।
(अग्निः १७१६) १०।१९।१ (संवन्न आङ्गिरसः । अग्निः)
स नो वसून्वा भर ।
- [२४५९] ८।९३।३० = (३९६) ८।१७।३
सुतावन्तो हवामहे ।
- [२४६०-६२] ८।९३।३१-३३ उप नो हरिमिः सुतम् ।
- [२४६६] ८।९५।१ = (२०८४) ६।४५।२५ इन्द्र वत्सं न मातरः ।
- [२४६७] ८।९५।२ सुतास इन्द्र गिर्वणः ।
(१६५५) ४।३२।११ सुतोष्विन्द्र... ।
- [२४६८] ८।९५।३ (तिरश्चीराङ्गिरसः । इन्द्रः)
इन्द्र ।
त्वं हि शश्वतीनां पती ।
(२३६९) ८।९८।६ (रुमेव आङ्गिरसः । इन्द्रः)
... शश्वतीनामिन्द्र ।
... पतिः ।
- [२४६१] ८।९५।६ = (२७७) ८।६।३५ इन्द्रसुकथानि वावृधुः ।
- ["] ८।९५।६ (तिरश्चीराङ्गिरसः । इन्द्रः)
सिषासन्तो वनामहे ।
- ९।६१।११ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
- [२४६२] ८।९५।७ = (१८०८) ८।२४।१९

- [२३४३] ८।९५।८ शुद्धो रथि नि धारय ।
 १।३०।२२ (शुनः शेष आजीगर्तिः । उपा)
 अस्मे रथि . ।
- [२३४४] ८।९५।९ = (३७१) ८।१५।३
 शुद्धो (एको) वृत्राणि जिघ्रसे ।
- ["] ८।९५।९ शुद्धो वाजं सिपाससि ।
 ९।२३।६ (काश्यपोऽसितो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 इन्द्रो वाजं सिपाससि ।
- [२३४५] ८।९६।५ = (१६९६) ५।३१।४ अहये हन्तवा उ ।
- [२३५१] ८।९६।७ (निरश्वीराङ्गिरसो, द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)
 अथेमा विश्वाः पृतना जयासि ।
 १०।५२।५ (अग्नि मौचीकः । विश्वे देवाः)
 ... जयाति ।
- [२३५६] ८।९६।१२ स्तुहि मुटुति नमसा विवास ।
 ५।८३।१ (भोमोऽग्नि । पर्जन्य)
 स्तुहि पर्जन्यं नमसाविवास ।
- [२३६३] ८।९६।२१ (निरश्वीराङ्गिरसो द्युतानो वा मारुतः । इन्द्रः)
 सद्यो जज्ञानो हव्यो बभूव ।
 (अग्नि १।५२६) १०।६।७ (त्रित आण्यः । अग्नि)
 बभूव ।
- [९७९] ८।९७।४ = (३३५) ८।१३।१५
 यच्छक्रासि परावति यदवावति वृत्रहन् ।
- ["] ८।९७।४ = (९४५) १।८४।९ सुतावो आ विधामति ।
- [९८०] ८।९७।५ = (४३७) ८।३४।१३
 समुद्रस्याधि विष्टपि (०५) ।
- ['] ८।९७।५ यदन्तरिक्ष आ गहि ।
 ५।७३।१ (पार आत्रेयः । अधिनो)
 ... गतम् ।
- [९८१] ८।९७।६ = (१६४१) ४।३१।१२ = (१००८) १।१२९।९
 त्वं न इन्द्र राया परीणसा ।
 (१००९) १।१२९।१० त्वं न इन्द्र राया तरुणसा ।
- [९८२] ८।९७।७ मा न इन्द्र परा वृणक् ।
- [९८३] ८।९७।८ अस्मे इन्द्र सचा सुते ।

- [९८६] ८।९७।११ = (८०) १।१६।३ इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
- [९९०] ८।९७।१५ कदा न इन्द्र राय आ दशस्येः ।
 ७।३७।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । विश्वेदेवाः)
- [२३६५] ८।९८।२ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 त्वमिन्द्राभिभूरसि ।
 (२८२३) १०।१५।३।५ (देवजामय इन्द्रमातरः । इन्द्रः)
- ["] ८।९८।२ त्वं सूर्यमरोचयः ।
 ९।६३।७ (निरुचिः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 यथा सूर्यमरोचयः ।
- [२३६६] ८।९८।३ (नृमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)
 विभ्राजओतिषा स्वः रगच्छो रोचनं दिवः ।
 १०।१७०।४ (विभ्राद् सौर्यः । सूर्यः)
- ["] ८।९८।३ = (२३८५) ८।८९।२
 देवास्त इन्द्र सख्याय येमिरे ।
- [२३६९] ८।९८।६ = (२३३८) ८।९५।३
- [२३७४] ८।९८।११ = (१३८७) ३।४२।६
 अथा ते सुश्रमीमहे ।
- [२३७५] ८।९८।१२ स नो रास्व सुवीर्यम् ।
 (अग्निः ८।५८) ५।१३।५ (सुतभर आत्रेयः । अग्निः)
- [२३७७] ८।९९।२ = (१६५५) ४।३१।११
 सुतेष्विन्द्र गिर्वणः ।
- [२३८३] ८।९९।८ = (१८१९) ८।४६।३
- [९९२] ८।१००।२ (नेमो भार्गवः । इन्द्रः)
 मधुनो भक्षमग्रे ।
 दक्षिणतः मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि ।
 १०।८३।७ (मनुयुस्तापसः । मनुयुः)
 दक्षिणतो भवा मेऽधा वृत्राणि जङ्घनाव भूरि ।
 ... मध्वो अग्रम् ।
- [९९४] ८।१००।४ विश्वा ज्ञातान्यभ्यासि मङ्गा ।
 २।२८।१ (कुर्मो गार्त्तमदो, गुत्समदो वा । वरुणः)
 विश्वानि सान्त्ययस्तु मङ्गा ।
- [९९९] ८।१००।१२ = (१५१९) ४।१८।१६
 सखे विष्णो वितरं वि क्रमस्व ।

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

- [२४६७] १०।२२।२ यशश्चक्रे असांभ्या ।
 १।२५।१५ (शुनः शेष आजीगर्तिः । वरुणः)
- [२४७३] १०।२२।८ वधर्दासस्य दम्भय ।
 (३१०६) ८।४०।६ (नामाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
 ओजो दासस्य दम्भय ।

- [२४८०] १०।२२।१५ = (११११) २।११।११
 पिवापिबेदिन्द्र शूरं सोमं ।
- ["] १०।२२।१५ (विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा, वसुकृद्वा
 वासुकः । इन्द्रः)
 उत त्रायस्व गृणतो मधोनः ।

- (२८१२) १०।१४८।४ (पृथुर्वैन्त्यः । इन्द्रः)
—गृणत उत स्तीन ।
[२४८२] १०।२३।२ = (१८२९) ८।४६।१३
मघवा वृत्रहा भुवत् ।
[२४८४] १०।२३।४ वातो यथा वनम् ।
५।७८।८ (सप्तवह्निरात्रेयः । अश्विनौ)
[२४८७] १०।२३।७ = (२१७९) = ७।२२।९
अस्मे ते सन्तु सख्या शिवानि ।
[२४८८] १०।२४।१ = (३२४) ८।१७।१
इन्द्र सोम (पिबा) इमं पिब ।
["] १०।२४।१ अस्मे रथि नि धारय ।
१।३०।२२ (शुन शेष आजीर्गतिः । उषा)
[२४८९] १०।२४।२ श्रेष्ठं नो धेहि वार्यं विवक्ष्ये ।
(अग्निः ६१९) ३।२१।२ (गाथी कौशिक । अग्निः)
श्रेष्ठं नो धेहि वार्यम् ।
[२४९१] १०।२७।१ यत् सुन्वते यजमानाय शिक्षम् ।
(३२०२) ८।५९ (बाल०११) । १ (सुपर्णः काण्व ।
इन्द्रावरुणौ) ... यजमानाय शिक्षथ ।
[२४९७] १०।२७।७ (वसुक ऐन्द्रः । इन्द्र)
यो अस्य पारे रजसो विवेष ।
(अग्नि १७१५) १०।१८७।५ (वत्स आग्नेयः । अग्निः)
... रजसः ।
[२५०३] १०।२७।१३ (वसुक ऐन्द्रः । इन्द्र)
न्यङ्कुत्तानामन्वेति भूमिम् ।
(अग्निः १६९४) १०।१४२।५ (सारिमृक्कः । अग्निः)
... न्वेति भूमिम् ।
[२५०४] १०।२७।१४ अन्यस्या वत्सं रिहती मिमाय कया
भुवा नि दधे धेनुरुधः ।
३।५५।१३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्र, प्रजापतिर्वीर्य्यो वा ।
विश्वेदेवाः)
[२५११] १०।२७।२१ श्रव इदेना परो अन्यदस्ति ।
१०।३१।८ (कवष ऐलषः । विश्वेदेवाः ।
नैतावदेना परो अन्यदस्ति ।
[२५२७] १०।२८।७ वधीं वृत्रं वज्रेण मन्दसानो ।
(१४९०) ४।१७।३ वधीद् वृत्रं वज्रेण मन्दसानः ।
[२५२२] १०।२९।८ व्यानकिन्द्रः पृतना स्त्रोजा ।
(२१५३) ७।२०।३ व्यास इन्द्रः ... ।
[२५३५] १०।३२।६ . प्र मे देवानां व्रतपा उवाच ।
इन्द्रो विद्वां अनु हि त्वा चचक्ष तेनाहमग्ने
अनुशिष्ट आगाम् ॥

- (अग्नि ७७४) ५।२।८ (कुमार आत्रेयः, वृशो वा
जानः, उभौ वा । अग्निः)
[२५३९] १०।३३।२ सं मा तपन्त्यभितः सपत्नीरिव पर्ववः ।
१।१०५।८ [पूर्वार्धः] (त्रित आग्लः, कुत्स आगिरसो
वा । विश्वेदेवाः)
[२५४०] १०।३३।३ मूषो न शिक्षा व्यदन्ति माध्यः स्तोतारं
ते शतक्रतो ... ।
१।१०५।८ [उत्तरार्धः] (त्रित आग्लः, कुत्स
आगिरसो वा । विश्वेदेवाः)
[२५४२] १०।३४।२ रयमिन्द्र श्रवाचयम् ।
९।६३।२३ (निरुविः काश्यप । पवमानः सोम)
रथि सोम श्रवाचयम् ।
[२५४४] १०।३४।४ अर्वाक्षमिन्द्रमवसे करामहे ।
८।२२।३ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
अर्वाक्षीना स्ववसे करामहे ।
[२५४७] १०।४२।२ कोशं न पूर्णं वसुना न्यूष्टम् ।
(१५३५) ४।४०।६ उद्रेव कोशं वसुना न्यूष्टम् ।
[२५५३] १०।४२।८ सुन्वते वहति भूरि वामम् ।
१।१२४।१२ (कक्षीवात् औशिजो दैर्घतमस । उषा)
स ते वहसि भूरि वामम् ।
[२५५५] १०।४२।१० = (२५६६) १०।४३।१० =
(२५७७) १०।४४।१० (कृष्ण आगिरमः । इन्द्रः)
गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम् ।
वयं राजभि प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजने ना जयेम ।
[२५५६] १०।४२।११ = (२५६७) १०।४३।११ =
(२५७८) १०।४४।११ (कृष्ण आगिरसः । इन्द्रः)
वृहस्पतिर्नः परि पातु पश्चादुतोत्तरस्यादधरादवायोः ।
इन्द्रः पुरस्तादुत मध्यतो नः सखा सखिभ्यो वरिवः कृणोतु ।
[२५६२] १०।४३।६ = (२०१) ८।३२।२२
धेना इन्द्रावचाकशत् ।
[२५६६-६७] १०।४३।१०-११ =
(२५५५-५६) १०।४२।१०-११
[२५७७-७८] १०।४४।१०-११ =
(२५५५-५६) १०।४२।१०-११
[२५८२] १०।४८।४ पुरु सहस्रा नि शिक्षामि ।
१०।२८।६ (इन्द्र ऋषिः । वसुक्नो देवता)
["] १०।४८।४ यन्मा सोमास उक्थिनो अमन्दिषुः ।
४।४२।६ (त्रसदस्यु पौरकुत्स्य । आत्मा)
यन्मा सोमामो ममटन्यदुक्थ ।

- [२५९०] १०।४९।१ अहं भुवं यजमानस्य चोदिता ।
(७५२) १।५१।८ शाकी भव यजमानस्य चोदिता ।
- [२६०७] १०।५०।७ ये ते विप्र ब्रह्मकृतः सुते सचा ।
(२२३६) ७।३२।२ इमे हि ते ब्रह्मकृतः ।
- ["] १०।५०।७ मदे सुतस्य सोम्यस्यान्धसः ।
१०।९४।८ (अर्बुदः काद्रवेयः सर्पः । आवाणः)
त ऊ सुतस्य ... ।
- [२६१०] १०।५४।३ = (१९५७) ६।२७।३
क उ (नहि) जु ते महिमनः समस्य ।
- [२६१३] १०।५४।६ = (२०५८) ६।४४।२३
- [२६१७] १०।५५।४ महन्महत्या असुरत्वमेकम् ।
३।५५।१-२३ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रः, प्रजापतिर्वाच्यो वा ।
विश्वेदेवाः)
- महद्देवानामसुरत्वमेकम् ।
- [२६३८] १०।७४।५ शचीव... अनानतं दमयन्तं पृतन्यून ।
(अग्निः १८०६) ७।६।४ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वैश्वानरोऽग्निः)
- ["] १०।७४।५ ऋभुक्षणं मघवानं सुवृक्षित ।
(२७०९) १०।१०४।७ सुतरेणं मघवानं सुवृक्षितम् ।
- [२६४०-६२] १०।८६।१-२३ विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।
- [२६४४] १०।८६।५ न सुगं दुष्कृते भुवं ।
(३२८४) ७।१०४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । (राक्षोघ्नं)
इन्द्रामोमौ)
- [२६५४] १०।८६।१५ = (६८१) ८।८२।३
- [२६५५-५६] १०।८६।१६-१७ अन्तरा सक्थ्याः कष्टवृत् ।
- ["] १०।८६।१६-१७ निषेदुषो विजृम्भते ।
- [२६६४] १०।८९।२ कृष्णा तर्मांसि त्विष्या जघान ।
९।६६।२४ (शतं वैश्वानसाः । पवमानः सोमः)
कृष्णा तर्मांसि जङ्घनन् ।
- [२६६९] १०।८९।८ प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम...
मिनन्ति मित्रम् ।
(अग्निः १७६१) ४।५।४ (वामदेवो गौतमः । वैश्वानरोऽग्निः)
प्र ये मिनन्ति वरुणस्य धाम प्रिया मित्रस्य ।
- [२६७५] १०।८९।१४ = (७१९) १।३२।५
- [२६७६] १०।८९।१५ दानूयन्तो अभि ये न तस्तस्त्रे ।
४।५०।२ (वामदेवो गौतमः । बृहस्पतिः)
बृहस्पते अभि ... ।
- ["] १०।८९।१५ (रेणुवैश्वामित्रः । इन्द्र)
अन्धेनामित्रास्तमसा सचन्तां ।
१०।१०३।१२ (अप्रतिरथ ऐन्द्रः । अप्वा देवी)
- [२६७८] १०।८९।१७ = (६) १।४।३ विद्याम सुमतीनाम् ।

- ["] १०।८९।१७ = (१९४६) ६।२५।९
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो ।
- [२६७९] १०।८९।१८ = (१२५९) ३।३०।२२
- [२७०८] १०।१०४।६ उप ब्रह्माणि हरिवः ।
१।४।६ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । विश्वेदेवाः)
- ["] १०।१०४।६ दार्शो अस्यध्वरस्य प्रकेतः ।
(अग्निः ११६६) ७।११।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अग्निः)
महो अस्यध्वरस्य ... ।
- [२७०९] १०।१०४।७ = (२६३८) १०।७४।५
- [२७१३] १०।१०४।११ = (१२५९) ३।३०।२२
- [२७२८] १०।११।४ इन्द्रो मङ्गा महतो अर्णवस्य ।
१०।६७।१२ (अयास्य आङ्गिरसः । बृहस्पतिः)
- [२७२९] १०।११।५ = (१२६७) ३।३१।८
विश्वो वेद सवना (जनिमा) हन्ति शुष्णम् ।
- [२७३३] १०।११।९ = (१४८८) ४।१७।१
सृजः सिन्धूरहिना जग्रसानो (नान्)
- [२७३५] १०।११।११ = (२०५२) ६।४४।१७
हन्तवे (जहि) शूर शत्रून् ।
- [२७४२] १०।११।१८ = (१६९८) ५।३१।६
- [२७५९] १०।११।५ अवस्थिरा तनुहि यातुज्जनाम् ।
..... शत्रून्
(अग्निः १८१७) ४।४।५ (वामदेवो गौतमः । राक्षोहाऽग्निः)
- [२७६१] १०।११।७
तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यं पक्वोऽ... पिब..... ।
२।३६।५ (गृत्समदः शौनकः । ऋतुदेवता
[इन्द्रो नभश्च])
- तुभ्यं सुतो मघवन् तुभ्यमाभृतः..... पिब ।
- [२८५०-६२] १०।११९।१-३ कुवित् सोमस्यापामिति ।
- [२८५१-५२] १०।११९।२-३ उन्मा पीता अयंसत ।
- [२८६२] १०।११९।१३ देवेभ्यो हव्यवाहनः ।
(अग्निः ५०५) ३।९।६ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
देवेभ्यो हव्यवाहनः ।
(अग्निः १८५७) १०।११८।५ (उरुक्षय आमहीयवः ।
रक्षोहाऽग्निः)
(अग्निः १६९८) १०।१५०।१ (मृळीको वासिष्ठः । अग्निः)
- [२७७५] १०।१३।१३ = (१५०३) ४।१७।१६
अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
- [२७७६] १०।१३।१६ = (२११०) ६।४७।१२
- ["] १०।१३।१६ सुमृळीको भवतु विश्व (जात) वेदाः ।
(अग्निः ६४६) ४।१।२० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)

[२७७६] १०।१३।१६ सुवीर्यस्य पतयः स्याम ।
 ४।५१।१० (वामदेवो गौतमः । उषाः)
 ९।८९।७ (उशाना काव्यः । पवमानः सोमः)
 ९।९५।५ (प्रस्कण्वः काण्व । पवमानः सोमः)
 [२७७७] १०।१३।१७ = (२१११) ६।४७।१३
 ["] १०।१३।१७ तस्य वयं सुमतौ यज्ञियस्यापि भद्रे
 सौमनसे स्याम ।
 (अग्निः४६७) ३।१।२१ (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)
 = ३।५९।४ (विश्वामित्रो गाथिनः । मित्रः)
 = १०।१४।६ (यमो वैवस्वतः । अङ्गिरः पित्रथर्वमृगुसोमा-)
 ["] १०।१३।१७ = (२१११) ६।४७।१३
 आराचिद् द्वेषः सनुतयुयोतु ।
 ७।५८।६ (वसिष्ठा मैत्रावरुणिः । मरुतः)
 आराचिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।
 १०।७७।६ (स्यूमरस्मिर्भागवः । मरुतः)
 [२७७८] १०।१३।१८ = (५७) १।९।१० =
 १०.९६।२ (बरुराङ्गिरसः, सर्वहरिर्वा ऐन्द्रः । हरिः)
 [२७७८-८३] १०।१३।१-६ नभन्तामन्यकेषां ज्याका
 अधिधन्वसु ।
 [२७७९] १०।१३।२ = (८३५) १।१०।२।८ = (४२१) ८।२।१।३
 ["] १०।१३।२ विश्वं पुण्यसि वार्यम् ।
 (९२४) १।८।१।९ विश्वं पुण्यन्ति वार्यम् ।
 (अग्निः८०६) ५।६।६ (वसुश्रुत आत्रेयः । अग्निः)
 [२७८०] १०।१३।३ अर्यो नशन्त नो धियः ।
 ९।७९।१ (कविर्भागवः । पवमानः सोमः)
 [२७८१] १०।१३।४ (सुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
 यो न.....आदिदेशति ।
 अधस्पदं तमीं कृधि ।
 (२७८६) १०।१३।२ (मान्धाता यौवनाश्व । इन्द्रः)
 अधस्पदं तमीं कृधि यो अस्मो आदिदेशति ।
 [२७८३] १०।१३।६ = (१३७९) ३।४।७ वयमिन्द्र त्वायवः ।
 ["] १०।१३।६ सखित्वमा रभाग्नेहे ।
 ९।६।१४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सखित्वमा वृणीमहे ।
 ९।६।९ (भृगुर्वारुणिर्जमद्विनर्भागवो वा । पवमानः सोमः)
 [२७८४] १०।१३।७ सहस्रधारा पयसा मही गौः ।
 १०।१०।१९ (बुधः सौम्यः । विश्वेदेवा, ऋत्विग् वा)
 [२७८५] १०।१३।८ = (अग्निः ५०९) ३।१०।१
 (विश्वामित्रो गाथिनः । अग्निः)

[२७८५-९०] १०।१३।१-६ देवी जनिश्रयजीजनद्वा
 जनिश्रयजीजनत् ।
 [२७८६] १०।१३।२ = (२७८१) १०।१३।४
 ["] १०।१३।२ यो अस्मो आदिदेशति ।
 ९।५२।४ (उचथ्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 [२७८७] १०।१३।३ = (२९२) ८।१२।५ = (१९१) ८।३२।१२ =
 (१७७६) ८।३७।१ = (५५२) ८।६।५
 [२७८८] १०।१३।४ = (७०६) १।३।८
 [२८०७] १०।१४।४ मक्ष स वाजं भरते धना नृभिः ।
 १।६।१३ (नोधा गौतमः । मरुतः)
 अर्वाङ्गिर्वाजं भरते... ।
 २।२६।३ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
 पुत्रैर्वाजं भरते... ।
 [२८१०] १०।१४।२ = (११०४) २।११।४
 दासीर्विशः सूर्येण सहाः ।
 ["] १०।१४।२ = (११०५) २।११।५
 गुहा हितं गुह्यं गूळइमप्सु ।
 [२८१२] १०।१४।४ = (२४८०) १०।२२।१५
 उत त्रायस्व गृणत (०णतो) ।
 [२८१६] १०।१५।३ = (५६०) ८।६।१।३
 वि रक्षो (द्विषो) वि मृधो जहि ।
 [२८१८] १०।१५।५ = (२३) १।५।१०
 वरीयो (ईशानो) यवया वधम् ।
 [२८२०] १०।१५।२ = (२१९) ८।३३।१० =
 ९।६।२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [२८२१] १०।१५।३ = (३६०) ८।१४।७
 व्यन्तरिक्षमतिर (०मतिरन्) ।
 [२८२२] १०।१५।४ = (६३६) ८।७६।९
 वज्रं शिशान ओजसा ।
 [२८२३] १०।१५।५ = (२३६५) ८।९।२ त्वमिन्द्राभिभूरसि ।
 [२८२४] १०।१६।१ = (११९२) २।१।३
 [२८२८] १०।१६।५ अश्वायन्तो गव्यन्तो वाजयन्तो ।
 (१५०३) ४।१७।१६ = (२७७५) १०।१३।३
 अश्वायन्तो वृषणं वाजयन्तः ।
 [२८३४] १०।१७।३ त्वं त्वमिन्द्र मर्त्यम् ।
 (१७४०) ५।३५।५ त्वं त्वमिन्द्र मर्त्यम् ।
 [२८४०] १०।१८।२ मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।
 १।१५।२ (दीर्घतमा औचथ्यः । विष्णुः)
 [३३५७] १।१८।४ सोमो हिनोति मर्त्यम् ।
 (३३५८) सोम मर्त्यम् ।

- [३३५८] १।१८।५ सोम इन्द्रश्च मर्त्यम् ।
४।३७।६ (वामदेवो गौतमः । ऋग्वेदः)
यूयमिन्द्रश्च मर्त्यम् ।
- [३३४७] १।२३।७ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
मरुत्वन्तं हवामहे इन्द्रमा सोमपीतये ।
(६३३) ८।७६।६ (कुरुमुतिः काण्वः । इन्द्रः)
इन्द्रं प्रत्नेन मन्मना मरुत्वन्तं हवामहे ।
अस्य सोमस्य पीतये ।
- [३२४८] १।२३।८ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः) =
२।४१।१५ (गृत्समदः शौनकः । विश्वेदेवा)
इन्द्रजेष्ठा मरुद्गणा देवासः पूषरातयः ।
विश्वे मम श्रुता हवम् ।
- [३२४९] १।२३।९ (मेधातिथिः काण्वः । मरुत्वानिन्द्रः)
... युजा ।
मा नो दुःशंस ईशत ।
२।२३।१० (गृत्समदः शौनकः । बृहस्पतिः)
... युजा । मा नो दुःशंसो अभिदिप्सुरीशत ।
(३०८५) ७।९४।७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्राग्नी)
मा नो दुःशंस ईशत ।
१०।२५।७ (विमदः ऐन्द्रः प्राजापत्या वा वसु-
कृद्धा वासुकः । सोमः)
मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ।
- [३१३४] १।१७।१ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
ता नो मृळात ईदृशे ।
४।५७।१ (वामदेवो गौतमः । क्षेत्रपतिः)
स नो मृळातीदृशे ।
(३०६०) ६।६०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
[३१३५] १।१७।२ हवं विप्रस्य मावतः ।
(अग्निः १९१९) (दीर्घतमा औचथ्यः । आप्रासूक्तं
[तनूनपात्])
१।१४।२ यज्ञं विप्रस्य ।
- ["] १।१७।२ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
धर्तारा चर्षणीनाम् ।
५।६७।२ (यजत आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
- [३३०५] १।१५।३ (दीर्घतमा औचथ्यः । इन्द्राविष्णू)
दधाति पुत्रोऽवरं परं पितुर्नाम तृतीयमग्नि रोचने दिवः ।
९।७५।२ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं । नामः ...।
- [१५७५] ४।२३।१० ऋताय पृथ्वी बहुले गभीरे ।
१०।१७८।२ (अरिष्टनेमिस्तार्क्ष्यः । तार्क्ष्यः)

- उर्वी न पृथ्वी बहुले गभीरे ।
- [३००४] १।२१।३ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
सोमपा सोमपीतये ।
(३०४१) ५।८६।२ (अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ताहवामहे ।
(३०६९) ६।६०।१४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
(३३१९) ४।४९।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्राबृहस्पती)
सोमपा सोमपीतये ।
- [३००५] १।२१।४ = (८२) १।१६।५
उपेदं सवनं सुतम् ।
- [३००६] १।२१।५ इन्द्राग्नी रक्ष उब्जतम् ।
७।१०४।१ इन्द्रासोमा तपतं रक्ष उब्जतं ।
- [३००७] १।२१।६ (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी शर्म यच्छतम् ।
(३०८६) ७।९४।८ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
- [३००८] १।१०८।१ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
अभि विश्वानि भुवनानि चष्टे ।
७।६१।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ)
अभि यो विश्वा भुवनानि चष्टे ।
- [३००८] १।१०८।१ = (३०१३-१९)
१।१०८।६-१२ अथा सोमस्य पिबतं सुतस्य ।
(३०१२) १।१०८।५ तेभिः सोमस्य।
- [३०१०] १।१०८।३ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
वृष्णः सोमस्य वृषणा वृषेथाम् ।
(३१७१) ६।६०।११ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
- [३०११] १।१०८।४ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
इन्द्राग्नी सोमनसाय यातम् ।
(३०७६) ७।९३।६ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
- [३०१४-१९] १।१०८।७-१२ अतः परि वृषणावा हि यातम् ।
- [३०१९] १।१०८।१२ (कुत्स आङ्गिरसः । इन्द्राग्नी)
मध्ये दिवः स्वधया मादयेथे ।
१०।१५।१४ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
.....स्वधया मादयन्ते ।
- [३२१३] १।२३।२ उभा देवा दिविस्पृशा ।
१।२२।२ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
- ['] १।२३।२ = १।२२।१ = (३३२१) ४।४९।५
= (३०५५) ६।५९।१०
= (६३३) ८।७६।६

अस्य सोमस्य पीतये ।

१।२२।१ (मेधातिथि काण्वः । अध्विनौ)

५।७।१३ (बाहुवृक्त आत्रियः । मित्रावरुणौ)

८।९४।१०-१२ (बिन्दुः पृतदक्षो वा आङ्गिरसः ।

मरुतः)

[३२१५] १।१३५।४ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)

अभि प्रयांसि सुधितानि वीतय वायो हव्यानि वीतये ।

(अग्निः १०८५) ६।१६।४४

(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

अभि प्रयांसि वीतये ।

["] १।१३५।४ वायवा चंद्रेण राधसा गतम् ।

४।४८।१-४ (वामदेवो गौतमः । वायुः ।)

वायवा चंद्रेण रथेन ।

[३२१६] १।१३५।५ आशुमस्यं न वाजिनम् ।

(१००१) १।१२९।२ पृथमस्यं ...।

[३२१७] १।१३५।६ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)

तिरः पवित्रमाशवः ।

९।६२।१ (जामदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)

इन्द्रवस्तिरः.....।

५।६७।७ (गौतमो राष्ट्रगणः । पवमानः सोमः)

इन्द्रवस्तिरः ...।

[३२१८] १।१३५।७ (परुच्छेपो दैवोदासिः । इन्द्रवायू)

गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।

(३३१९) ४।४९।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)

(२३१०) ८।६९।७ (प्रियमेध आङ्गिरसः । इन्द्रः)

गृहमिन्द्रश्च गन्वहि ।

[१५९९] ४।२८।१ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमौ वा)

अहन्नहिमरिणात्सप्त सिन्धून् ।

१०।६७।१२ (अयास्य आङ्गिरसः । वृहस्पतिः)

[१६००] ४।२८।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रः इन्द्रासोमौ वा)

महो दुहो अप विश्वायु धायि ।

(१८८८) ६।२०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

[३१५०] ४।४१।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

धियः... ।

सा नो दुहीयद्यवसेव गत्वी सहस्रधारा पयसा मही गौः ।

१०।१०।१९ (बुधः सौम्यः । विश्वेदेवा, ऋत्विग् वा)

धियम्... ।

सा नो ।

[३१५१] ४।४१।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

सूरो दक्षीके वृषणश्च पौत्ये ।

दै० [इन्द्रः] ३३

१०।९२।७ (शार्यातो मानवः । विश्वेदेवाः)

[३१५२] ४।४१।७ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

वृणीमहे सख्याय प्रियाय ।

९।६६।१८ (जनं वैखानसाः । पवमानः सोमः)

वृणीमहे सख्याय ।

[३१५५] ४।४१।१० (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावरुणौ)

नित्यस्य रायः पतयः स्याम ।

(अग्नि ११४०) ७।४७ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अग्निः)

[३१५७] ४।४२।७ = (१५२६) ४।१९।५

त्वं वृत्रो अरिणा इन्द्र सिन्धून् ।

[३१५९] ४।४२।९ हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।

१।१५३।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । मित्रावरुणौ)

हव्येभिर्मित्रावरुणा नमोभिः ।

[३२२१] ४।४६।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

नियुत्वो इन्द्रसारथिः ।

४।४८।२ (वामदेवो गौतमः । वायुः)

[३२२२] ४।४६।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

सहस्र हरय ।

वहन्तु सोमपीतये ।

(११०) ८।१।२४ (मेधातिथि-मे यातिर्था काण्वौ । इन्द्रः)

सहस्रं ।

हरय वहन्तु सोमपीतये ।

[३२२३] ४।४६।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

रथं हिरण्यवन्धुरम् ।

आ हि स्थायो दिविस्पृशम् ।

८।५।२८ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अध्विनौ)

रथं . . . ।

आ ।

[३२२४] ४।४६।५ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

रथेन पृथुपाजसा ।

८।५।२ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अध्विनौ)

["] ४।४६।५ द्वांश्चासमुप गच्छतम् ।

१।४७।३ (प्रस्कण्वः काण्वः । अध्विनौ)

[३२२५] ४।४६।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

पिबत दाशुषो गृहे ।

(३३२२) ४।४९।६ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती)

८।२२।८ (सोमरि काण्वः । अध्विनौ)

[३२२७] ४।४७।२ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)

इन्द्रश्च वायवेषां सोमाना पीतिमर्हथः ।

निम्नमापो न सध्यक् ।

(३०३१) ५।५१।६ (स्वरत्यात्रेय । इन्द्रवायू)
 इन्द्रश्च वायवेषां सुतानां पीतिमर्हथः ।
 (२०२) ८।३२।२३ (मेधानितिः काण्वः । इन्द्रः)
 निम्नमापो न सध्यक् ।
 [३२२८] ४।४७।३ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
 आ यातं सोमपीतये ।
 ८।२२।८ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 [३२२९] ४।४७।४ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रवायू)
 या वां सन्ति पुरुषष्टहो नियुतो दाक्षुषे नरा ।
 (३०६३) ६।६०।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 [३३१७] ४।४९।१ उक्थं मदश्च शस्यते ।
 १।८६।४ (गौतमो राह्वणः । मरुतः)
 [३३१९] ४।४९।३ = (३२१८) १।१३।७
 गृहमिन्द्रश्च गच्छतम् ।
 ["] ४।४९।३ = (३००४) १।२१।३ सोमपा सोमपीतये ।
 [३३२०] ४।४९।४ रथिं धत्त वसुमन्तं शतस्त्रिवन्म् ।
 १।१५।५ (दीर्घतमा औचथ्यः । यावापृथिवी)
 [३३२१] ४।४९।५ = १।२२।१ (मेधानितिः काण्वः । अश्विनौ)
 अस्य सोमस्य पीतये ।
 [३३२२] ४।४९।६ = (३२२५) ४।४६।६ पिबतं दाक्षुषो गृहे ।
 ८।२७।८ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)
 [३३२४] ४।५०।११ (वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृद्धरपती)
 अविष्ट धियो जिगतं पुरंधीर्जैजस्तमयो वज्रुषामराती ।
 ७।६४।५ = ७।६५।५ (वसिष्ठो मेत्रावरुणिः । मित्रावरुणौ)
 अविष्टं धियो जिगतं पुरंधी ।
 (३३६१) ७।९७।९ (वसिष्ठो मेत्रावरुणिः । इन्द्रावृद्धरपती)
 [३३३१] ५।५१।६ सुतानां पीतिमर्हथः ।
 १।३४।६ (पृच्छेपो देवोदामिः । वायु)
 सोमानां प्रथमः पीतिमर्हसि सुतानां पीतिमर्हसि ।
 (३२२७) ४।४७।२ सोमानां पीतिमर्हथः ।
 [३२३३] ५।५१।७ (स्वम्यात्रेय । इन्द्रवायू)
 सुता इन्द्राय वायवे ।
 ९।३३।३ (त्रित आत्यः । पवमानः सोमः)
 सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुतः ।
 सोमा अर्षन्ति विष्णवे ।
 ९।३४।२ (त्रित आत्यः । पवमानः सोमः)
 सुत ।
 सोमो अर्षति ।
 ९।६५।२० (शुगुर्वाणिर्जमदभिर्भागवो वा । पवमानः सोमः)
 आसा इन्द्राय . ।

सोमो.... ।

[३२३२] ५।५१।७ = (१८) १।५।५ सोमासो दध्याशिरः ।
 [३०४१] ५।८६।२ (अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी)
 श्रवायथा ।
 या पञ्च चर्षणीरभि ।
 (अग्निः ११७८) ७।१५।२ (वसिष्ठो मेत्रावरुणिः । अग्निः)
 यः पञ्च चर्षणीरभि ।
 ९।१०१।९ (नहुषो मानवः । पवमानः सोमः)
 श्रवायथम् ।
 यः पञ्च चर्षणीरभि ।
 ["] ५।८६।२ = (३००४) १।२१।३ इन्द्राग्नी ता हवामहे ।
 [३०४३] ५।८६।४ ता वामेषे रथानाम् ।
 ५।६६।३ (रातहव्य आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
 ["] ५।८६।४ (अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी)
 इन्द्राग्नी हवामहे ।
 पती तुरस्य राधसो ।
 (३०६०) ६।६०।५ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 इन्द्राग्नी हवामहे ।
 (३०४०) ६।४४।५ (शुगुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)
 पतिं तुरस्य राधसः ।
 [३०४५] ५।८६।६ (अत्रिभौमः । इन्द्राग्नी)
 घृतं न पूतमद्रिभिः ।
 सूरिषु श्रवो.....रथिं गृणत्सु दिधृतम् ।
 (२९१) ८।१२।४ (पर्वत काण्वः । इन्द्रः)
 घृतं न पूतमद्रिवः ।
 (३३२) ८।१३।२ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
 रथिं गृणत्सु धायम् ।
 श्रव. सूरिभ्यो ।
 [३३३०] ६।५७।१ वयं सख्याय स्वस्तये ।
 (१६४०) ४।३१।११ अस्मो..... सख्याय स्वस्तये ।
 ["] ६।५७।१ = (१७४१) ५।३५।६
 हुवेम (हवन्ते) वाजसातये ।
 [३०४८] ६।५९।३ इन्द्रा न्वग्नी अवसे ।
 ५।४५।४ (सदापृण आत्रेयः । विश्वेदेवा)
 [३०५२] ६।५९।७ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 मा नो अस्मिन् महाघने परा वक्त्रं गविष्ठिषु ।
 (अग्निः १३८४) ८।७५।१२ (विरूप आद्विरसः । अग्निः)
 —परा वग्भौरभृथथा ।
 [३०५३] ६।५९।८ अघा अयो अरातयः ।
 ६।४८।१६ (शुगुर्वाहस्पत्यः । तृणपाणिः) । पूषा

[३०५४] ६।५९।९ रयि विश्वायुषोवसम् ।
 (अग्निः २५२) १।७९।९ (गौतमो राष्ट्रगणः । अग्निः)
 [३०५५] ६।५९।१० (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।
 गीर्भिरा गतम् ।
 ८।८।७ (सन्वसः काण्वः । अश्विनौ)
 आ गतम् ।
 विभिः... स्तोमेभिर्हवनश्रुता ।
 (३१०) ८।१२।२३ (पर्वत काण्वः । इन्द्रः)
 स्तोमेभिर्हवनश्रुतम् ।
 ["] ६।५९।१० = १।२२।१ (मेधातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 [३०६०] ६।६०।५ = (३०४३) ५।८६।४
 ["] ६।६०।५ = (३१३४) १।१७।१
 [३०६२] ६।६०।७ = (७७) १।११।८
 [३०६३] ६।६०।८ = (३२२९) ४।४७।४
 [३०६४] ६।६०।९ = (८२) १।१६।५
 ["] ६।६०।९ = (३०९७-९९) ८।३८।७-९
 इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
 [३०६९] ६।६०।१४ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 आ नो गव्येभिरङ्गैर्वसव्यै रूप गच्छतम् ।
 ८।७३।१४ (गोपवन आग्नेयः सप्तवध्रिर्वा । अश्विनौ)
 आ नो गव्येभिरङ्गैः सहसैरुप गच्छतम् ।
 ["] ६।६०।१४ = (३००४) १।२१।३
 [३०७०] ६।६०।१५ = ६।५४।६ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पूषा)
 ["] ६।६०।१५ पिबतं सोम्यं मधु ।
 ७।७४।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । अश्विनौ)
 ८।५।११ (ब्रह्मातिथिः काण्वः । अश्विनौ)
 ८।८।१ (सन्वसः काण्वः । अश्विनौ)
 ८।३।२२ (शावाश्च आग्नेयः । अश्विनौ)
 (१८०२) ८।२४।१३ पिबति सोम्यं मधु ।
 [३१६२] ६।६८।२ अराणां गविष्ठा ता हि भूतम् ।
 (३०७२) ७।२३।२ ता सानसी गवसाना हि भूतं ।
 [३१६४] ६।६८।४ द्यौश्च पृथिवी भूतमुर्वी ।
 १०।९३।१ (तान्वः पार्थ्यः । विश्वेदेवा)
 महि द्यावापृथिवी भूतमुर्वी ।
 [३१६६] ६।६८।६ = १।१५९।५ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
 द्यावापृथिवी)
 [३१६८] ६।६८।८ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रावरुणौ)
 अपो न नावा दुरिता तरेम ।
 ७।६५।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मित्रावरुणौ)

[३१७१] ६।६८।११ = (३०१०) १।१०८।३
 ["] ६।६८।११ = ६।५२।१३ (ऋजिश्वा भारद्वाजः ।
 विश्वेदेवाः)
 [३३०९, ३३१२] ६।६९।४, ७ उप ब्रह्माणि शृणुतं गिरा
 (७ ह्रस्वं) मे ।
 [३२७२] ६।७२।२ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्राग्नी)
 उत्सृज्य नयथो ।
 ... अप्रथतं पृथिवीं मातरं वि ।
 १०।६२।३ (नाभानेदिष्ठो मानवः । विश्वेदेवा)
 सूर्यमारोहयन् . अप्रथन् पृथिवीं मातरं वि ।
 [३२७४] ६।७२।४ इन्द्राग्नी पक्वमामास्वन्तः ।
 २।४०।२ (गुत्समदः औनकः । सोमाप्रवर्णौ)
 आभ्यामिन्द्र पक्वमामास्वन्तः ।
 [३२७५] अपत्यसाचं श्रुत्य रराथे ।
 १।११७।२३ (कक्षीवान औजिजः दीर्घतनयः । अश्विनौ)
 रराथाम् ।
 [३१७७] ७।८२।१ विश्वे जनाय महि शर्म यच्छतम् ।
 (अग्निः २४७२) १।९३।८ (गौतमो राष्ट्रगणः । अग्नीषोमौ)
 [३१७८] ७।८२।७ न तमंहो न दुरितानि ... कुनश्चन ।
 २।२३।५ (गुत्समदः औनकः । ब्रह्मणस्पति)
 [३१८०] ७।८२।९ = (१५७९) ४।२४।३
 [३१८१] ७।८२।१० = (३१९१) ७।८३।१०
 (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रावरुणौ)
 अस्मे इन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा द्युश्च यच्छन्तु महि
 शर्म सप्रथ ।
 अत्रध उयोतिरदितेऋतावृधो देवस्य श्लोकं सवितुर्मनामहे ॥
 [३१९२] ७।८४।१ = १।१५३।१ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
 मित्रावरुणौ)
 ["] ७।८४।१ दधाना परि त्मना विपुरुषा जिगाति ।
 (अग्निः ८६९) ५।२५।४ (धरुण आगिर्मनः । अग्निः)
 [३१९३] ७।८४।२ परि नो हेळो वरुणस्य वृज्याः ।
 २।३३।१४ (गुत्समदः औनकः । रुद्रः)
 [३१९४] ७।८४।३ = ७।५८।३
 (वसिष्ठो मैत्रावरुणि । मरुतः)
 [३१९५] ७।८४।४ = १।१५९।५ (दीर्घतमा औचथ्यः ।
 द्यावापृथिवी)
 [३१९६] ७।८४।५ = (३२०१) ७।८५।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणि ।
 इन्द्रावरुणौ)
 इयमिन्द्रं वरुणमष्ट मे गीः प्रावत्तोके तनये तूतुजाना ।
 सुरत्नासो देववीर्ति गमेम यूयं पात स्वन्तिभिः सदा नः ॥

- [३१९६] ७।८४।५ तोके तनये तूतुजाना ।
७।६७।६ (वमिष्ठो मैत्रावरुणि । अश्विनौ)
[३२३४] ७।९०।६ (वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रवायू)
गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्हिरण्यै ।
१०।१०८।७ (पण्योऽसुराः । सरमा देवता)
गोभिरश्वेभिर्वसुभिर्न्युष्टः ।
[३२३५] ७।९०।७ = (३२४०) ७।९१।७ (वमिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
इन्द्रवायू)
अर्वन्तो न श्रवसो भिक्षमाणा इन्द्रवायू सुष्टुतिभिर्वसिष्ठाः ।
वाजयन्तः स्ववसे हुवेम यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥
[३२३७] ७।९१।४ = (७४१) १।३३।१२
[३२४०] ७।९१।७ = (३२३५) ७।९०।७
[३०७२] ७।९३।२ = (३१६२) ६।६८।२
[३०७६] ७।९३।६ = (३०११) १।१०८।४
[३०७७] ७।९३।७ = १।१७९।५ (अगरत्यग्निष्यः । रतिः)
[३०७८] ७।९३।८ = १।१६२।१ (दीर्घतमा औचथ्यः । अश्वः)
[३०८०] ७।९४।२ (वमिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्राग्नी)
शृणुत जरितुर्हवम् ।
(३२७) ८।१३।७ (नारद काण्व । इन्द्रः)
शृणुषी जरितुर्हवम् ।
८।८५।४ (कृष्ण आश्रितः । अश्विनौ)
["] ७।९४।२ ईशाना पिप्यतं धियः ।
५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[३०८१] ७।९४।३ (वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
मा नो रीरधतं निदे ।
८।८१।३ (मध्वंस काण्वः । अश्विनौ)
[३०८३] ७।९४।५ = (अग्निः ८६२) ५।१४।३
(सुतभर आत्रेय । अग्निः)
["] ७।९४।५ (वमिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्राग्नी)
सबाधो वाजसातये ।
(अग्निः १४५३) ८।७४।१२ (गोपवन आत्रेयः । अग्निः)
[३०८४] ७।९४।६ = (अग्निः ८९३) ५।२०।३
(प्रयस्वन्त आत्रेयाः । अग्निः)
[३०८५] ७।९४।७ = (१७३६) ५।३५।१
["] ७।९४।७ = (३२४९) १।२३।९
[३०८६] ७।९४।८ = १।१८।३ (मेधातिथिः काण्वः । ब्रह्मणस्पतिः)
["] ७।९४।८ = (३००७) १।२१।६
[३३६१] ७।९७।२ = (३३२४) ४।५०।११
[३३२५] ७।९७।१० = (३३२५) ७।९८।७
(वागिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रावृहस्पती)

- बृहस्पते युवमिन्द्रश्च वस्त्रो दिव्यस्येशाये उत पार्थिवस्य ।
धत्त रयिं स्तुवते कीरये चिद्यं पात स्वास्तिभिः सदा न ॥
[३३२५] ७।९७।१० = (१९२०) ६।२३।३
[३३१४] ७।९७।४ उरं यज्ञाय चक्रधुर लोकेम् ।
(अग्निः २४७०) १।९३।६ (गोतमो राहूगणः । अग्नीषोमौ)
[३०९१-९२] ८।३८।१-३ इन्द्राग्नी तस्य बोधतम् ।
[३०९२] ८।३८।२ = (३०३३) ३।१२।४
[३०९३] ८।३८।३ (स्यावाध आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
इदं वा मदिंरं मध्वधुक्षन्नादिभिर्नरः ।
(६०८) ८।६५।८ (प्रगाथ काण्वः । इन्द्रः)
इदं ते सोम्यं मध्वधुक्षन्नादिभिर्नरः ।
[३०९४] ८।३८।४ = ५।७२।३ (बाहुवृक्त आत्रेयः । मित्रावरुणौ)
[३०९४-९६] ८।३८।४-६ इन्द्राग्नी आ गतं नरा ।
[३०९७] ८।३८।७ = ५।५१।३ (स्वस्त्यात्रेय । विश्वेदेवाः)
[३०९७-९९] ८।३८।७-९ = (३०६४) ६।६०।९
[३०९८] ८।३८।८ = (१७७५) ८।३६।७
[३०९९] ८।३८।९ (स्यावाध आत्रेयः । इन्द्राग्नी)
एवा वामह ऊतये यथाहुवन्त मेधिराः ।
इन्द्राग्नी सोमपीतये ।
८।४२।६ (नाभाक काण्वः अर्चनाना आत्रेयो वा । अश्विनौ)
एवा ... ।
नामत्या सोमपीतये ।
[३१००] ८।३८।१० इन्द्राग्न्योरवो वृणे ।
८।९४।८ (विन्दुः प्रतदक्षो वा, आश्रितः । मरुतः)
देवोनामवो वृणे ।
[३१०५] ८।४०।५ = (७७) १।११।८
[३१०६] ८।४०।६ ओजो दासस्य दम्भय ।
[३१०७] ८।४०।७ = (१०) १।४।७
["] ८।४०।७ = (१०२८) १।१३।१
[३१०९] ८।४०।९ = (२०६२) ६।४५।३
[३११०-११] ८।४०।१०-११
उतो न चिद्य ओजसा (११ ओहेत)
[३११०] ८।४०।१० शुष्णस्याण्डानि भेदति ।
(३१११) ८।४०।११ आण्डा शुष्णस्य भेदति ।
["] ८।४०।१० = (६५) १।१०।८
[३११२] ८।४०।१२ वय स्याम पतयो रथीणाम् ।
४।५०।६ (वामदेवो गौतमः । बृहस्पतिः)
[५३९] ८।५५ (वाल० ७) १ (कृष्णः काण्वः । इन्द्रः प्रस्कण्वश्च)
राथस्ते दस्यवे वृक ।

(५४४) ८।५६ (वाल०८) । १ (पृषध्र काण्वः । इन्द्रः)
 प्रति ते दस्यवे वृक राधो ।
 [३२०२] ८।५९ (वाल०११) । १ (सुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
 यत्सुन्वते यजमानाय शिक्षथः ।
 (२४९१) १०।२७।१ (वसुक ऐन्द्रः । इन्द्रः)
 ... शिक्षम् ।
 [३२०३] ८।५९ (वाल०११) । २ = १।८५।२
 (गोतमो राहूराणः । मरतः)
 [३२०४] ८।५९ (वाल०११) । ३ = १।४७।५
 (प्ररकण्वः काण्वः । अश्विनौ)
 [३२०८] ८।५९ (वाल०११) । ७ (सुपर्णः काण्वः ।
 इन्द्रावरुणौ)
 रायस्पोषं यजमानेषु धत्तम् ।
 १०।१७।९ (देवश्रवा यामायनः । सरस्वती)
 ... धेहि ।
 (अग्निः १६८२) १०।१२२।८ (चित्रमहा वामिष्ठ ।
 अग्निः)
 . . धारय ।

[३२४४] ८।९३।३४ क्रमुक्षणमृशुं रयिम् ।
 ४।३७।५ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)
 क्रमुमृशुक्षणो रयिं ।
 [३३२६] ८।९६।१५ विशो अदेवीरभ्या३ चरन्ती ।
 ६।४९।५ (ऋजिश्वा भारद्वाज । विश्वेदेवः)
 विश आदेवीरभ्य१ श्रवाम ।
 [२८४२-४९] १०।४७।१-८ अस्मभ्यं चित्रं वृषणं रयिं दाः।
 [२८४५] १०।४७।४ = (१८७८) ६।१९।७
 [२६९१] १०।९९।१२ इषमूर्जं सुक्षितिं विश्वमाभाः ।
 (अग्निः १५८०) १०।२०।१० (विमद ऐन्द्रः, प्राजापत्ये
 वा, वसुकृद्वा वामुकः । अग्निः)
 [२७७१] १०।१२०।८ = (१२८०) ३।३१।२१
 दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।
 [२७७२] १०।१२०।९ द्विन्वन्ति च शवसा वर्धयन्ति च ।
 (अग्निः ८४६) ५।११।५ (मुतंभर आत्रेयः । अग्निः)
 पृणान्ति शवसा ।

सूचना

पुनरुक्त-मन्त्रसूची को निम्नलिखित विधिसे देखना चाहिये—

(१) चतुष्कोण [] कंसमें जो अंक है वह मन्त्रोंका 'क्रमांक' है। उसके साथके अंक ऋग्वेदादिके विभागोंके दर्शक हैं।

(२) गोल कंस () में पूर्व आये मन्त्रोंके क्रमांक हैं और उनके साथवाले अंक ऋग्वेदादिके दर्शक हैं।

(३) जहाँ तहाँ आवश्यक पुनरुक्त मन्त्रभाग दिया है। एक बार दिया पुनः नहीं दिया है। पुनः पुनः पुनरुक्त मन्त्रभाग नहीं दिया, केवल उसके स्थानका ही निर्देश किया है— जैसा— [२७७१] १०।१२०।८ = (१२८०) ३।३१।२१ इसका अर्थ यह है कि यह मन्त्र क्रम "[१२८०] पृ० २३०" पर देखिये। इन दो मन्त्रोंमें "...गोपति... दुरश्च विश्वा अवृणोदप स्वाः ।" इतना मन्त्रभाग पुनरुक्त हुआ है, पर दूसरे मन्त्रमें 'गोत्र' शब्द है, 'गोपति' नहीं है। इस तरह सर्वत्र समझना चाहिये।

इन्द्रमन्त्रान्तर्गतानां उपमानां सूची ।

— १९७७ —

अंशं न प्रतिजानते ३,४५,४; १४०७ रयिं आभर ।
 अंशा इव ५,८६,५; ३०४४ अहं पुरः दधे ।
 अक्षः न चक्रयोः ६,२४,३; १२३० बृहन् मङ्गा रोदस्यो ।
 अक्षं न चक्रयोः १,३०,१४ ७१२ व आ क्रणोः ।
 अक्षं न शचीभिः १,३०,१५; ७१३ जरितृणां कामं आ ।
 अक्षेण इव चक्रिया १०,८९,४; २६६६ शचीभिः विष्कृ ।
 अग्निः न जम्भैः १०,११३,८; २७५२ तृषु अन्नं आवयन् ।
 अग्निः वना इव ८,१२,९; २९६ अर्क्षसान नि ओषति ।
 अग्निः न शुष्कमनम् ६,१८,१० १८६५ हेतिः रक्षः ।
 अग्निमान् चरुः इव ७,१०४,२; अथ ८,४,२; ३२७९ तपु ।
 अग्नौ इव हविः समिधाने २,१६,१; ११७२ ज्येष्ठ तमाय ।
 अंकी इव वृक्षं पक्वं फलम् ३,४५,४; १४०७ सं पारणं वसु ।
 अंकुशम् यथा हि दीर्घं १०,१३४,६; २७९० शक्तिं विभर्षि ।
 अगिरस्वत् १,६२,१; ८७२ शूर्पं आंगुर्वं प्र मन्महे ।
 " ८,४०,१२; ३११२ नवीयः अवाचि ।
 अतथा इव १,८२,१; ९२५ मघवन् मा भूः ।
 अत्कं न ४,१६,१३; १४७९ पुरः विदर्दः ।
 अत्यः न ८,५०,५; ४९९ आ इयानः तोशते ।
 " १०,१४४,१; २७९८ इन्दुः पत्यते ।
 अत्यः न योषाम् १,५६,१; ८०५ पूर्वाः चम्रिषः प्र अव ।
 अत्यः न वाजी ५,३०,१४; ३३३९ रघुः अज्यमानः ।
 अत्यः न ७,२४,५; २१९० वाजयन् अधायि ।
 अत्यः न वाजी सुधुरः ३,३८,१; १३४५ जिहानः प्रियाणि ।
 अत्यम् इव १,१३०,६; १०१६ शवसे सातये धना ।
 अन्यम् न वाजम् १,५२,१; ७६० हवनस्यदं रथं ।
 अत्यं न वाजिनम् १,१२९,२; १००१ पृक्षं वाजिनं इन्द्रं ।
 अत्यं न वाजिनम् १,१३५,५; ३२१६ आहुं वाजिनं ।
 अत्यान् इव आजौ ३,३२,६; १२८७ (अन्तरिक्षात् अपः) ।
 अत्रेः यथा कृण्वतः ८,३६,७ १७७५ सुन्वतः ज्यावाश्वस्य ।
 " ८,३७,७ १७८२ रेभतः ज्यावाश्वस्य ।
 अतुरघा इव धेनवः ७,३२,२२; २२५६ त्वा अभि नोनुम् ।
 अहुतं न रजः १०,१०५,७; २७२० इन्द्रः अरुतहनुः ।
 अश्वमवः न ६,३०,३; १९७० पर्वनाः नि सेतुः ।

अध्वनः न अन्ते ४,१६,२; १४६८ सवने नः अवस्य ।
 अन्तरिक्षे न वातम् २,१४,३; ११५२ तस्मै सोमम् ... ।
 अतिष्ठन्तं अमस्यं न सर्गम् १०,८९,२; २६६४ कृष्णा नर्माणि ।
 अपः न नावा ६,६८,८; ३१६८ दुरिता तरेम ।
 अपाम् इव प्रवणे १,५७,१; ८११ बलं दुर्धरम् ।
 अपाम् ऊर्मिः मदन् इव ८,१४,१०; ३६३ स्तोमः अजिरायते ।
 अपाम् अवः न समुद्रे ८,१६,२; ३८३ यस्मिन् उक्थानि ।
 अपी इव योषा जनिमानि ३,३८,८; १३५२ रोदसी आ वज्रे ।
 अप्सः न ८,४५,५; ४४७ गिरौ योधिषत् ।
 अभीवृता इव महापदेन १०,७३,२; २६२४ गर्भाः उत् ।
 अभीशून् इव सारथिः ६,५७,६; ३३३५ इन्द्रं स्वस्तये ।
 अश्राणि इव सानयन् ६,४४,१२; २००७ इन्द्रः उत् इयति ।
 अमाजूः इव पित्रोः २,१७,७ ११८७ त्वाम् भगम् आ ह्वे ।
 अयम् (अग्निः सोमः वा) न १,१३०,१; १०११ परावतः ।
 अयसः न धाराम् ६,४७,१० २१०८ धियं चोदय ।
 अया इव १०,११६,९; २७६३ देवाः परिचरन्ति ।
 अरणा इव ८,१,१३; ९९ वयं मा भूम ।
 अरान् न नेमिः १,३२,१५, ७२९ राजा (चर्षणीः) परिवभूव ।
 अरान् इव खे खेदया ८,७७,३; ६४२ तान् इत् समखिदत् ।
 अर्चा इव मासा दिवि ६,३४,४; २०२४ इन्द्रे सोमः मिमिक्षः ।
 अर्णवः न १,५५,२; ७९८ नद्यः प्रति गृभ्णाति ।
 अर्थम् न शूरः १०,२९,५; २५१९ नः पारं प्रेरय ।
 अर्भकः न कुमारकः ८,६९,१५; २३१७ नवं रथन् ।
 अर्वा न ३,४२,३; १४२६ पृत्सु सदावा तरणिः ।
 अर्वन्तः न ७,९०,७; ३२३५ श्रवसः भिक्षमाणाः ।
 " ७,९१,७; ३२४० "
 अर्वन्तः न काष्ठां ७,९३,३; ३०७३ नरः इन्द्राग्नी ।
 अर्वतः न ५,३६,२; १७४५ त्वा अनु वयं गीर्भि हिन्वन् ।
 अर्वता इव साधुना १,१५५,१; ३३०३ महः तस्थतुः ।
 अवते न कोशम् ४,१७,१६; १५०३ अक्षितोतिं आच्या वयामः ।
 अवतासः न १,५५,८ ८०४ तनवः कर्तुभिः आवृतासः ।
 अवतम् न १,१३०,२; १०१२ सिक्तं सोमं पिब ।
 अवनाम् इव मानुषः ८,६२,६; ५७१ ऋचीषमः अव चष्टे ।

अवस्यवः न वयुनानि २,१९,८; १२०६ गृत्समदाः मन्म ।
 अविता यथा नः ७,२४,१; २१८६ एवा न वसुनि दद ।
 अवीराम् इव १०,८६,९; २६४८ माम् अभिमन्यते ।
 अशनिः न ६,८,१०; १८६५ भीमा हेतिः ।
 अशनिः यथा अथ०७,५०,१; २९०६ कितवान् अप्रति ।
 अशन्या इव वृक्षम् २,१४,२; ११५१ वृत्रं जवान ।
 अशनिमान् इव द्यौः ४,१७,१३; १५०० समोहं रेणुं ह्यति ।
 अशीर्षाणः इव अथ. ६,६७,२; २८९४ अमित्रा अहयः ।
 अशीर्षाणः अहयः साम १८७१, ३००१ अमित्राः अन्धाः ।
 अश्वा इव २,३०,४; १२३० वीरान् तपुषा विध्य ।
 अश्मा इव १०,८९,१२; २६७३ द्रोघ मित्रान् आविध्य ।
 अश्मना इव पूर्वाः २,१४,६; ११५५ शम्बरस्य पुरः विभेद ।
 अश्वः न निक्तः ८,२,२; ११७ धूत सोमः वारैः परिपूतः ।
 अश्व. न हियानः ८,४९,५; ४७९ स्तोमम् उप आ द्रवत् ।
 अश्वा इव वाजिना ७,१०४,६; अथ. ८,४,६; ३२८३ मतिः ।
 अश्वासः न ८,५५,४; ५४२ यूयम् चङ्क्रमत ।
 अश्वः क्रन्दत् (लुप्तोपमा) १,१७३,३; १०५८ अग्निः क्रन्दति ।
 अश्रीर इव जामाता ८,२,१०; १३५ अस्मत् आरे सायं ।
 असिः न पर्व १०,८९,८; २६६९ त्वम् वृजिना शृणासि ।
 अस्ता इव ४,३१,१३; १६४२ व्रजान् अपा वृधि ।
 अस्ता इव ६,२०,९; १८९२ हरी अधि तिष्ठत् ।
 अस्ता इव १०,४२,१; २५४६ सु प्रतरं लायं अस्यन् ।
 अह इव ८,९६,१९; २३६१ रेवान् ।
 अहा विश्वा इव सूर्यम् १,१३०,२; १०१२ ते मदाय त्वा ।
 अहोभिः इव द्यौः १,१३०,१०; १०२० दिवोदासेभिः ।
 आजिं न अश्वाः ६,२४,६; १९३३ गिर्वाहः त्वा जग्मुः ।
 आजिम् न ४,४१,८; ३१५३ युवयू. धियः वां जग्मुः ।
 आपः न १,६३,८; ८९२ इषं परिजम् पीपयः ।
 आपः न ८,३३,१; २१० वृक्तवर्हिष ।
 आपः न अनु ओक्थं सर ८,४९,३; ४८७ राधसे पृणन्ति ।
 आपः न तृष्यते १,१७५,६; १०८४ जरितुभ्यः मय इव बभूथ ।
 " १,१७६,६. १०९० " " "
 आपः न देवीः १,८३,२; ९३२ होत्रियं देवासः उप यन्ति ।
 आपः न द्वीपम् १,१६९,३; १०४५ प्रयांसि दधति ।
 आपः न निम्नम् ४,४७,२; ३२२७ इन्द्रवः युवाम् ।
 आपः न निम्नम् ८,३२,२३; २०२ मे गिरः त्वा यच्छन्तु ।
 आपः निम्नव १,५७,२; ८१२ हविष्मन्तः सवनासं वाजन्ते ।
 आपः न पर्वतस्य पृष्ठात् ६,२४,६; १९३३ उक्थेभिः यज्ञैः ।
 आपः न प्रवताः ८,६,३४; २७६ इन्द्रं वनन्वती मतिः ।
 आपः न प्रवताः ८,१३,८; ३२८ सूनुताः यतीः क्रीलन्ति ।

आप न सिन्धुम् १०,४३,७; २५६३ सोमासः इन्द्रम् ।
 आपः न सृष्टाः ७,१८,१५; २१३३ तृत्सवः नीचीः ।
 आपः न उर्वी. काकुदः १,८,७. ४४ एवा इन्द्रस्य ।
 आपः इव काशिना ७,१०४,८; २२८५ असतः वक्ता असन्
 संगृभीता अथ ८,४,८; ३२८५ अस्तु ।
 आपः न धायि ८,५०,३; ४९७ सवनं मे आ वसो ।
 आशु न रश्मिम् ४,२२,८; १५६२ आशुचानस्य ।
 इन्द्रम् न ४,४२,८; ३१५८ वृत्रतुरम् आ अयजन्त ।
 इन्द्रं न चितयन्तः १,१३१,२; १०२२ आयवः यज्ञैः ।
 इषम् न १०,४८,८; २५८६ वृत्रतुरम् विश्वु धारयम् ।
 उग्रं न वीरम् ८,४९,६; ४९० विभूतिं उपसेदिम ।
 उत्सम् न २,१६,७; ११७८ वयं इन्द्रं सिचामहे ।
 उदा इव यन्ता । ८,९८,७; २३७० उप त्वा कामान् ।
 उद्गा इव कोशम् ४,२०,६; १५३८ वसुनान्यृष्टं वज्रं ।
 उदभिः नवाजिनम् २,१३,५; ११४१ देवाः देवं स्तोमेभिः ।
 उदधीन् इव गभीरान् ३,४५,३; १४०६ त्वं क्रतुं पुष्यसि ।
 उद्री इव ८,४९,६; ४९० अवतः न सिञ्चते ।
 उद्री इव अवतः ८,५०,६; ५०० वसुत्वना सदा पीपेथ ।
 उप इव दिवि ८,३,२१; १७६ धावमानम् विश्वेषां त्मना ।
 उरा न वृकः ८,३४,३; ४२७ नेमिः एषां विधूनुते ।
 उरुधारा इव ८,९३,३; २४३२ इन्द्रः नः दोहते ।
 उशती इव ५,३२,१०; १७१४ गातुः इन्द्राय येमे ।
 उशतीः इव १०,१११,१०; २७३४ सध्रीचीः सिन्धुम् आयन् ।
 उशनाः इव ४,१६,२; १४६८ वेधाः असुर्याय मन्मशंसति ।
 उषा इव १०,१३४,१; २७८५ रोदसी आपप्राथ ।
 उषसम् न ७,८५,१; ३१९७ वृत्रप्रतीकां देवीम् ।
 उषसम् न सूर्यः १,५६,४; ८०८ इन्द्रं देवी तविषी सिषक्ति ।
 उषसः न ७,१८,२०; २१३८ रायः सुमतयः न संक्षे ।
 उषसः न केतुः १०,८९,१२; २६७३ हेतिः असिन्वा वर्तताम् ।
 उस्ता इव राशय. ८,९६,८; २३५२ मरुतः त्वा वावृधानाः ।
 ऊधः न ८,२,१२; १२७ नम्राः जरन्ते ।
 ऊधः गोः पयसा यथा २,१४,१०; ११५९ इन्द्रं सोमेभिः ।
 ऊर्जं न विश्वध क्षरध्वै १,६३,८; ८९२ यया त्मनम् अस्मभ्यं ।
 ऊर्द्वरम् न यवेन २,१४,११; ११६० इन्द्रं सोमेभि आपृणीत ।
 ऊर्व. इव ३,३०,१९; १२५६ अस्से कामः पप्रथे ।
 ऊणावानं न १,१६९,७; १०४९ वृत्रनायन्तं सगैः पतयन्त ।
 ऊधुः न १०,१०५,६; २७१९ क्रतुभिः मातरिश्वा ।
 ऊश्यः न तृष्यन् ८,४,१०; २३८ अप पानम् आ गहि ।

ओकः न ४,१६,१५, १४८१ रणवः ।

ओकः न जानती १,१०४,५, ८५१ दस्योः सदनं अच्छा गात् ।
ओपशम् इव १,१७३,६, १०६१ इन्द्रः धाम् भर्ति ।

कृपवा इव ८,३,१६, १७१ इन्द्रं स्तोमेभिः महयन्ते ।

कनीनका इव ४,३२,२३; ३३४८ कमनीयौ ।

कविः न निण्यम् ४,१६,३, १४६९ विदधानि साधन् ।

कारं न ५,२९,८; १६७४ इन्द्राय भरं अह्नन्त ।

कारुः उक्थ्यः [इव] १८३,६; ९३६ यत्र ग्रावा वदति ।

किरणाः न १,६३,१; ८८५ गिरयः अम्वा इलहासः ऐरयन् ।

कुलपाः न ब्राजपतिम् १०,१७९,२, २८३७ सखायः चरन्तं ।

कुल्याः इव हृदम् ३,४५,३, १४०६ सोमाः त्वाम्प्र आशत ।

" " " १०,४३,७; २५६३ सोमासः इन्द्रं अभि ।

कृतं न श्वनी देवने १०,४३,५, २५६१ सवर्गं यत् मघवा ।

कोशं न पूर्णं वसुना १०,४२,२; २५४७ न्यृष्टं इन्द्र ।

क्रिबिम् यथा १,३०,१; ६९९ इन्द्रं इन्दुभिः आसिञ्चे ।

क्षप्र इव १,१३०,४; १०१४ इन्द्रः वज्रं संश्यत् ।

क्षाः न १,१३३,६; १०३९ द्यौः भीषान् शुशोच ।

क्षुद्रम् इव १,१२९,६; १००५ अवशंसः अवतरं अव सवेत् ।

क्षुम्पम् इव १,८४,८, ९४४ मर्तं पदा अस्फुत् ।

क्षुलकाः इव अथर्वं ५,२३,१२; २८८५ क्रिमयः हताः ।

क्षोणयः यथा १०,२२,९; २४७४ पूर्वयः त्वां पुरुषा वि ।

क्षोणीः इव १,५७,४, ८१४ त्वं नः वचः हर्य ।

खले न पर्षान् १०,४८,७, २५८५ अहम् भूरि प्रति हन्मि ।

खर्गला इव ७,१०४,१७; ३२९४ तन्वं गूहमाना ।

अथ ८,४,१७;

गयम् यथा ८,४५,१३, ४५५ तथा त्वां वय विद्य ।

गर्भं न माता ३,४६,५; १४१३ सोमं द्यावापृथिवी ।

गर्भाधिम् इव कपोतः १,३०,४; ७०२ अयम् उ ते समतसि ।

गवे न शाकिने ६,४५,२२; २०८१ पुरुहूताय शम् गाय ।

गवां व्रजम् इव १,१३०,३; १०१३ वज्री सोमं अविन्दत् ।

गवाम् इव स्तुतयः ६,२४,४; १९३१ ते शाकाः संचरणीः ।

गावः न यवसात् ७,१८,१०; २१२८ चितासः मित्रम् ।

गावः न यूथम् ८,४६,३०; १८३८ वध्रयः मा उप यन्ति ।

गावः न यवसेषु ८,२२,१२; २४०८ त्वा उक्थेषु ।

गाम् न ८,१,२; ९० इन्द्रं शंसत ।

गाम् इव भोजसे ८,६५,३; ६०३ सोमस्य त्वा आ हुवे ।

गाम् न दोहसे ६,४५,७ २०६६ सखायं गीर्भिः हुवे ।

गाम् श्रीरिणाम् इव अथ ७,५०,३; २९११ फलवर्ती ध्रुवं ।

गाः न १,६१,१०; ८६५ इन्द्रः अवनीः अमुञ्चत् ।

गाः इव सुगोपाः ३,४५,३; १४०६ त्वम् कर्तुं पुष्यसि ।

गावः न ६,४१,१; १९९३ स्वम् ओकः अच्छ आ गहि ।

गावः न धेनवः वत्सम् । ६,४५,२८; २०८७ गिरः सुते ।

गिरिः न ४,२०,६; १५३८ स्वतवान् ऋषवः इन्द्रः ।

गिरिः न भुजम् ८,५०,२, ४९६ मघवस्तु पिन्वते ।

गिरिः न विश्वतस्पति ८,९८,४ २३६७ विश्वतस्पृथुः ।

गिरिम् न ८,८८,२; ८९५ इन्द्र ईमहे ।

गिरिं न वेनाः १,५६,२; ८०६ विदथस्य नू सदः ।

गिरेः इव ८,४९,२; ४८६ अस्य रसाः प्र पिन्विरे ।

गोभिः इव व्रजम् ८,२४,६; १७९५ त्वा गीर्भिः आ वृणोमि ।

गोः न १,६१,१२; ८६७ पर्वं तिरश्चा वि रदा ।

गौः रुवत् (लुप्तोपमा) १,१७३,३; १०५८ (अग्निः) ।

गौः इव ८,३३,६, २१५ पुरुष्टुतः कृत्वा शाकिनः ।

गौरः न १,१६,५; ८२ तृषितः (सोमं) पिब ।

गौरः यथा ८,४५,२४; ४६६ तथा सरः पिब ।

गौरः यथा अपा कृतं ८,४,३, २३१ तथा आपित्वे नः प्रपित्वे ।

ग्रावा इव ५,३६,४; १७४७ जरिता ते वाचं ह्यर्ति ।

घनेन इव १,६३,५, ८८९ अमित्रान् शथिहि ।

घर्मम् न सामन् ८,८९,७; २३९० जुष्टम् बृहत् तपत् ।

घृणात् न १,१३३,६; १०३९ द्यौः भीषां शुशोच ।

घृतम् न ८,१२,४; २९१ हमं स्तोत्रं अभिष्टये ।

घृतं न ८,१२,१३; ३०० ऋतस्य आसनि पिप्ये ।

घृतं न पूतं अग्निभिः ५,८६,६; ३०४५ इन्द्राग्निभ्यां हव्यं ।

घृतपुषः न ऊर्मयः ६,४४,२०; २०५५ वृषणः द्रोणं ।

चक्रं न वृत्तम् ४,३१,४; १६३३ अर्बतः नः चर्षणीनाम् ।

" " ५,३६,३, १७४६ मे मनः भिया वेपते ।

चक्रं न वर्ति एतशम् ८,६,३८, २८० रोदसी त्वा अनु ।

विश्वा चक्रा इव ४,३०,२; १६१० कृष्टयः ते अनु सन्ना ।

चक्रिया इव ४,३०,८, १६८९ मरुतः रोदसी ।

चन्द्रमा इव अस्तु ८,८२,८, ६८६ सोमः चमूषु ददशे ।

चञ्च्रीषः न १,१००,१२, ९६८ शवसा पाञ्चजन्यः ।

चर्म इव ८,६,५; २४७ रोदसी समवर्तयत् ।

जघना इव द्वौ १,२८,२; ६८९ अधिषवण्या कृता ।

जघन्थ यथा धृषता २,३०,४; १२३० अस्माकं शत्रुं जहि ।

जनं न धन्वन् अभि ६,३४,४; २०२४ सन्ना वावृष्टुः ।

जनयः न १,६२,१०, ८८९ स्वसारः पत्नीः दुवस्यन्ति ।

जनयः न गर्भम् ४,१९,५; १५२६ अद्रयः अभि प्र ददुः ।

जनयः यथा पतिम् १०,४३,१; २५५७ मघवानं मतयः ।

जनीः इव ८,१७,७; ५१० सोम त्वा अभि संवृतः ।
जनीः इव एकः पतिः ७,२६,३; २२०० सर्वाः पुरः सुसमानः ।
जनिधा इव १०,२९,५, २५१९ अस्य कामं गमन् ।
जामिवत् १०,२३,७; २४८७ ते प्रमतिं विद्या हि ।
जिह्वयः न ४,१९,२; १५२३ देवाः त्वां अवासृजन्त ।
जुष्टां न ज्येनः वसतिम् १,३३,२; ७३१ इन्द्र उत इव ।
जूः न वज्रैः २,१४,३; ११५२ इन्द्रं सोमैः आ ऊर्णुत ।
जेन्यम् यथा १,१३०,६; १०१६ वाजिनं शुम्भन्त ।
जोष्टारः इव वस्त्र ४,४१,९; ३१५४ मनीषां इन्द्रं वरुणं ।
ज्योतिः न ८,२४,१; १८१० दक्षिणा विश्व अभि ।
तष्टा इव ३,३८,१, ३३४५ मनीषां अभि दीधय ।

११ १,६१,४; ८५९ अहं स्तोमं सं हिनोमि ।
तष्टा इव सुद्रव्नेमिम् ७,३२,२०; २२५४ इन्द्रं गिरा ।
तष्टा इव बन्धुरम् १०,११९,५; २९५४ अहं मतिं पर्याचामि ।
तीर्थे न अर्थः १,१६९,६; १०४८ पृथुबुध्नासः एता ।
तीर्थे न तावृषाणम् ओकः १,१७३,११; १०६६ यज्ञः क्रन्धन् ।
तुजये न १०,४९,४; २५९३ यजमानाय प्रिया प्र भरे ।
तूर्णांशं न गिरेः अधि ८,३२,४, १८३ हुवे सुशिप्रम् ।
त्वष्टा न वृक्षं वनिनः १,१३०,४, १०१४ शवसा (शत्रून्) ।
दक्षिणया इव ओजिष्ठया १,१६२,४, १०४६ वयं रातिं ।
दरुमः न सद्यन् ७,१८,११; २१८९ इन्द्र सर्गं अकृणात् ।
दिवः न १,१००,३; ९५९ इन्द्रस्य पन्थासः दुवानाः ।
दिवः न १,१००,१३; ९६९ त्वेष शिमीवान् रवथः ।
दिवः न ६,२०,२; १८८५ असूर्यं विश्वं तुभ्यम् अनु ।
दिवः ,, अथर्व. २,५,२, २८६४ मधोः पृणस्व ।
दिवः ,, साम. ९५३, २९९८ ,, ,,
दिवः न वृष्टिम् ८,१२,६; २९३ प्रथयन् ववक्षिथ ।
दिवे न सूर्यः ८,७०,२, २३२२ दर्शतः हस्ताय वज्रः ।
दिवि इव ७,२४,५, २१९० द्याम् अधि नः श्रोमत् धा ।
दिवि इव सूर्यं दृशे १०,६०,५; २६२२ असमातिषु क्षत्र ।
दिवि तारः न ८,५५,२, ५४० श्वेतासः उक्षण रोचन्ते ।
दिन्या इव अशनिः १,१७६,३; १०८७ यः असाधुकु तं ।
दीर्घं न अध्वा मिध्र १,१७३,११, १०६६ यज्ञः जुहुराणः ।
दुवा इव ८,५०,३; ४९७ दाशुषे उप ।
दुर्गे दुरोगे ऋत्वान् ४,२८,३, १६०१ यातां सहस्त्रा ।
दुर्मदासः न सुरायाम् ८,२,१२; १२७७ हस्तु पीतासः ।
दुर्यः न यूपः १,५१,१४; ७५८ पज्रेषु स्तोम ।
दूत न १,१७३,३, १०५८ रोदसी अन्तः चरत् ।
दूर्वायाः इव तन्तवः १,१३४,५, २७८९ दिद्यवः विष्वक् ।

दृषदा इव ७,१०४,२२; अथ ८,४,२२; ३२९९ रसः प्रमृण ।
देव इव सावेता वा ०५०१२,६६, २९२९ सत्यधर्मा इन्द्रः ।
द्यौः न १,८,५; ४२ शव प्रथिना [युज्यताम् ।]
द्यौः न ४,२१,१; १५४४ अभिभूति क्षत्रं पुण्यात् ।
द्यौ न ६,२०,१; १८८४ यः अभि भूम ।
द्यौः न ६,३६,५, २०३५ दुवोयुः अर्थः रायः अभिभूम ।
द्यौ न ८,५६,१; ५४४ शवः प्रथिना ।
द्यावः न १,५१,१, ७४५ (कर्माणि) मानुषा विचरन्ति ।
द्यावः न द्युमनैः ४,१६,१९, १४०५ वयम् अर्थः मदेम ।
द्याम् इव उपरि वर्षिष्ठम् ४,३१,१५, १६४४ देवेषु अस्माकं ।
द्रुणा न पारं नदीनाम् ८,९६,१२; २३५५ उक्थ वाहसे विभ्वे ।
ध्वनं न जिग्युषः ७,३२,१२; २२९६ अस्य अंश उत रिच्यते ।
धन न स्पन्द्रम् १०,४२,५; २५५० सोमान् बहुलं आ सुनोति ।
धन्वा इव ३,४५,१, १४०४ तान् अति इहि ।
धन्वचर न वंसगः ५,३६,१, १७४४ रथीणां दामन आगमन् ।
धर्म इव सूर्यम् ८,६,२०; २६२ प्रस्व त्वा गर्भं अवक्रिन् ।
धानानाम् न ८,७०,१२, २३३२ आसां हस्ते नः दावने ।
धिषणा इव ३,४९,४; १४२७ आगं वाजं विभक्त ।
धुरि इव ७,२४,५, २१९० एष स्तोमः उत्राय अधायि ।
धेनु न वत्सं यवसस्य पिप्युषी २,१६,८, ११७९ सं बाधात् ।
धेनव यथा यवसम् ३,४५,३, १४०६ तथा त्वं सोमान् ।
धेनवः संपृक्ता मध्वा सारवेण ८,४,८; २३६ न सोमा वर्तन्ते ।
धेनुं न सृयवसे ७,१८,४, २१२२ ब्रह्माणि त्वा उप ससृजे ।
धेनूः इव मनवे १,१३०,५, १०१५ अस्मदर्थे समान ।
धेनूनां न [पयः] १०,२२,१३; २४७८ [स्तुतीनां] सुजः ।
नद न भिन्नम् १,३२,८, ७२२ शयानं आपः अति यन्ति ।
नद्यः न ४,१६,२१, १४८७ जरित्रे इषं पीपे ।
,, ४,२४,११-१५८७ ,,
(सूक्तान्ते अष्टवारः पुनरुक्तः) १४८७-१५८७
नभ न ८,९६,१४, ३२६९ कृष्ण अवतस्थिवांसं इष्ट्यामि ।
नभन्वान्वकाः ४,१९,७, १५२८ ध्वस्त्रा युवती प्र अपिन्वत् ।
नरां न शंसै १,१७३,९; १०६४ स्त्रमिष्टयः वयं अलाम ।
नरां न विष्पधांसः १,१७३,१०; १०६५ अस्माक शंसैः ।
नवं इत् न कुम्भम् १०,८९,७, २६६८ गिरिं बिभेद ।
नव्यः न । अथ ० २,५,२, २८६४ इन्द्र जठरं पृणस्व ।
नव्यं न । साम ० ९५३; २९९८ जठरं पृणस्व ।
नावम् न पर्वणिम् १,१३१,२, १०२२ इन्द्रं शूषस्य धुरि ।
नावम् न समन्त्रे २,१६,७; ११७८ वचस्युवं सवनेषु ।
नावा इव यान्तम् ३,३२,१४; १२९५ इन्द्रं उभये हवन्ते ।

नासत्या इव १,१७३,४; १०५९ सुगम्य इन्द्र ।
 निधया इव १०,७३,११, २६३३ अस्मान् सुमुग्धि ।
 निम्नम न १,३०,२; ७०० समाक्षिरां सहस्रं एदुरीयते ।
 निम्नम् न सिधव ५,५१,७, ३२३२ प्रयः युवाम् अभि ।
 निष्क्या इव ८,१,१३, ९९ वयं मा भूम ।
 नृपती इव ७,१०४,६; अथ ८,४,६; ३२८३ इमा ब्रह्माणि ।
 नृवत् ४,२२,४, १५५८ वाताः परिजमन् नो नुवन्त ।
 पृक्षा इव इयेनम् ८,३४,९; ४३३ मदच्युता हरी त्वा ।
 पणिना इव गावः १,३२,११, ७२५ आपः निरुद्धाः ।
 पति न पत्नीः उशतीः १,६२,११; ८८२ मनीषा त्वा ।
 पत्नीभि न वृषण. २,१६,८; ११७९ ते सुमतिभि ।
 पदा इव पिप्रती जातिम् ८,१२,३१; ३१८ विप्रः धीभि. ।
 पदा पूर्वेण अजः वयां यथा १०,१३४,६; २७९० तथा यम ।
 परशुः यथा वनम् ७,१०४,२१, अथ ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः ।
 परश्वा इव १,१३०,४; १०१४ (अस्मद् द्वेषिणः) निवृश्वासि ।
 परिधीन् इव त्रित १,५२,५; ७६४ वलस्य परिधीन् ।
 परिपन्थी इव १,१०३,६; ८४४ अयजन्नः वद विभजन् ।
 पर्जन्य. वृष्टिमान् इव ८,६,१; २४३ इन्द्रः ओजसा महान् ।
 पर्वतः न १,५२,२; ७६१ धरुणेषु अच्युतः ।
 पशुं न गोपा १०,२३,६, २४८६ भोजन. (प्रासये) वयं ।
 पशुम् पुष्टीवन्त यथा ८,४५,१६, ४५८ सोमिन. तथा ।
 पात्रं न शोचिषा १,१७५ ३, १०८१ सहावान् दस्यु ।
 पात्रा भिन्नाना ६,२७,६; १९६० वृचीवन्तः न्ययानि ।
 पात्रा इव ७,१०४,२१, अथ ८,४,२१; ३२९८ रक्षसः भिन्दन् ।
 पात्रस्य इव १,१७५,१; १०७९ (त्वया) महा अपायि ।
 पादौ इव ६,४७,१५; २११३ प्रहरन् अन्यं कृणोति ।
 पितृवत् ८,४२,१२, ३११२ नवीय अवाचि ।
 पिता इव १,१०४,९; ८५५ इन्द्र नः शृणुहि ।
 पिता इव ३,४९,३, १४२६ चारुः सुहवः च ।
 पिता इव ८,२१,१४, ४२२ त्वम् समूहस्य आत् इत् ।
 पिता इव ७,२९,४; २२१६ त्वं नः प्रमति असि ।
 पिता इव १०,२३,५; २४८५ यः तविषीं शवः वावृधे ।
 पिता इव १०,३३,३, २५४० इन्द्र त्वं नः भव ।
 पिता इव १०,४९,४; २५९३ अहम् वेतसून् अभिष्टये ।
 पिता यथा पुत्रेभ्यः ७,३२,२६; २२६० इन्द्र नः क्रतुम् ।
 पितरौ इव शम्भू ४,४१,७, ३१५२ युवां सख्याय ।
 पितरं न पुत्रासः १,१३०,१ १०११ वयं मंहिष्ठं त्वा ।
 पितर न पुत्रा. ७,२६,२; २१९९ सबाध समान दक्षाः ।
 पितरं न १०,४८,१, २५७९ जन्तवः माम् हवन्ते ।

पुत्रः न पितरम् ७,३२,३; २२३७ रायस्कामः सुदक्षिणं हुवे ।
 पुत्रः न पितुः ३,५३,२, १४५४ सिचम् स्वादिष्टया गिरा ।
 पुत्रम् इव प्रियं पिता १०,२२,३; २४६८ इन्द्रः [नः भवतु]
 पुर एता इव ६,४७,७; २१०५ इन्द्र नः पश्य ।
 पुरम् न ८,३२,५; १८४ अश्वस्य व्रजम् दर्शसि ।
 पुरम् न धृष्णु ८,६९,८, २३११ प्रियमेधासः इन्द्रं प्र अर्चत ।
 यथाचित् आविध वाजेषु ८,६८,१०, २३०० तथा माम् ।
 पूर्वथा १,८०,१६, ९१५ उक्था इन्द्रं समतात ।
 पूर्वपाः इव ८,१,२६; ११२ अस्य सुतस्य आ पिब ।
 पृष्टा इव १०,८९,३; २६६५ इन्द्रः जनिमग्नि विचिकाय ।
 प्र इव १,१०३,७; ८४५ तत् वीर्यं चकर्थ ।
 प्रय न १,६१,१; ८५६ इमं स्तोमं प्रहर्षि ।
 प्रय इव १,६१,२, ८५७ अस्ये आंगूषं भरामि ।
 प्रवत. न जर्मी ६,४७,१४, २११२ ब्रह्माणि त्वा अवधवन्ते ।
 बर्हि. न १,६३,७, ८९१ सुदासे अंहो. यत् वृथा वर्क ।
 ब्रह्मा इव तन्द्रयुः ८,९२,३०, २४२६ मा सु भवः ।
 भगः न १,६२,७, ८७८ मेने परमे व्योमन् ।
 भगः न ३,४९,३, १४२६ कारे मतीनां हव्यः ।
 भग. न ५,३३,५, १७२१ हव्यः, चारुः ।
 भगम् न ८,६१,५, ५५२ वसुविदं त्वा अनुचरामसि ।
 भगं न कारिणम् ८,६६,१; ६१३ अध्वरे इन्द्रं हुवे ।
 भागम् इव ८,९०,६; २३९६ प्रचेतसं त्वा राधः ईमहे ।
 भीमं न गाम् ८,८१,३; ६७२ दिस्सन्तं त्वा न वारयन्ते ।
 भूषत् इव १०,४२,१, २५४६ अस्मै स्तोमं आ भर ।
 भृगुः न । अथ २,५,३; २८६५ इन्द्रः बलं बिभेद ।
 " सामं ९५४; २९९९ " " "
 भृगवः रथं न ४,१६,२०; १४८६ इन्द्राय ब्रह्म अकर्म ।
 भृतिं न ८,६६,११; ६२३ वय ते ब्रह्माणि प्र भरामसि ।
 भृष्टिः न गिरेः १,५६,३; ८०७ इन्द्रस्य शवः पौस्वे ।
 मृधा इव निष्पपी १,१०४,५, ८५१ चर्कतात् इत् नः ।
 मधौ न मक्षः ७,३२,२; २२३६ इमे ब्रह्मकृतः सुते सचा ।
 मनुषा इव १,१३०,९, १०१९ विश्वा सुमनानि तुर्वणिः ।
 मनुषवत् ६,६८,१, ३१६१ वृत्रेबर्हिष. यजध्वै ।
 मंधातृवत् ८,४०,१२; ३११२ नवीयः अवाचि ।
 मर्तः न १०,१०५,३; २७१६ शश्रमाणः बिभीवान् इन्द्रः ।
 मर्ताय [मर्ताविव] ५,८६,५ ३०४४ ता अनु धून् ।
 मर्यः न योषाम् । ४,२०,५; १५३७ इन्द्रं अच्छा ।
 मर्यं न शुन्ध्युम् १०,४३,१; २५५७ मधवानम् मे ।

महान् इव युवजानिः ८,२,१९; १३४ अस्मान् मा अभि ।
मही इव ८,९०,६; २३९६ ते कृत्तिः शरणा ।
मही इव द्यौः १०,१३३,५; २७८२ तस्य बलं अव तिर ।
मातु न सीम् ६,२०,८; १८९१ उप सृज इयध्वै ।
मासा इव सूर्यः १०,१३८,४; २७९५ पुयं वसु आ ददे ।
मित्रः न १०,२२,१; २४६६ इन्द्रः जने श्रूयते ।
मित्रः न १०,२२,२; २४६७ इन्द्रः जनेषु असाभ्या ।
मित्रः न १०,२९,४; २५१८ नः कत् आगन् ।
मित्रः न । साम. ९५४, २९९९ इन्द्रः वृत्रं जघान ।
मित्रायुवः न पूर्वतिम् १,१७३,१०, १०६५ मध्यायुवः ।
मूषः न शिक्षा १०,३३,३, २५४० ते स्तोतारं मा आध्वः ।
मृगः न १,१७३,२; १०५७ अश्वा (सन्) अति ।
मृगः न कुचर १०,१८०,२; २८४० इन्द्रः भीमः ।
मृगः न वारणः दाना (नि) ८,३३,८; ३१७ त्व पुरुत्रा ।
मृगः न हस्ती ४,१६,१४, १४८० तविषी उषाणः भीमः ।
मृगं न त्राः ८,२,६; १२१ यत् ईम् अस्वत् अन्ये मृगयन्ते ।
मृगं न ८,१,२०, १०६ अहं गिरा भूर्णि त्वा मा लुकुधम् ।

यथा मेधिरा आहुवन्त ८,३८,९, ३०१९ एवावाम् ।
यजमानः न होता ४,१७,१५, १५०२ कृष्णः ईम् अजिघति ।
यति न । साम० ९५४; २९९९ इन्द्र वृत्रं जघान ।
यतीः न । अथ० २,५,३; २८६५ " " " "
यवम् न १,१७६,२; १०८६ इन्द्रः वृषा चर्कषत् ।
यवं न पश्यः आ ददे ८,६३,९; ५८६ अस्य वृष्णः ओदने ।
यवं न वृष्टिः १०,४३,७, २५६३ विप्राः अस्य महः ।
यवं यथा गोभिः श्रीणन्तः ८,२,३; ११८ वयं तथा तं ।
यवमन्तः यवं चित् यथा १०,१३१,२; २७७४ इह एषां ।
युजं न २०,८९,८; २६६९ जना मित्रं प्र मिनन्ति ।
युजा इव वाजिना अन्नं २,२४,१२, ३३५९ नः हविः ।
यूथा इव वंसगः १,७,८; ३५ वृषा कृष्टाः ओजसा इयति ।
यूथा इव पश्वः ५,३१,१, १६९३ इन्द्र (आनुसन्धानि) ।
यूथा इव पश्वः पशुपा ६,१९,३, १८७३ दमूना वाजौ ।
यूथा इव अप्सु ६,२९,५; १९६६ समीजमानः ऊती ।

रुच्रीः इव प्रवणे १,५२,५; ७६४ ऊतयः स्ववृष्टि ।
रुच्रीः इव श्रवसः ४,४१,९; ३१५४ प्रविणं इच्छमानाः ।
रुजी न १०,१०५,२; २७१५ यस्य हरी केशिना ।
रथः न ३,४९,४, १४३७ वायुः रजसस्पृष्ट ऊर्ध्वः ।
रथः न महे ६,३४,२; २०२२ इन्द्र अनुमाद्यः ।
रथाः इव ४,१९,५; १५२६ अद्रयः साकं प्र ययुः ।
रथाः इव वाजयन्तः ८,३,१५; १७० अक्षितोत्तयः ।

रथं न १,६१,४; ८५९ अस्मै स्तोमं सं हिनोमि ।
रथं न ५,२९,१५, १६८१ स्वपाः भद्रा सुकृता अतक्षम् ।
रथं न पृतनासु १०,२९,८, २५३२ अस्मान् आतिष्ठ ।
रथं न धीरः १,१३०,६, १०१६ आयवः ते इमां वाचं ।
रथम् यथा ८,६८,१; २२९२ तथा त्वाम् सुज्ञाय आवर्त- ।
रथम् इव अश्वाः १०,११९,३; २८५२ पीताः उत् मा अयं ।
रथान् इव १,१३०,५, १०१५ नद्यः समुद्रं असृजः ।
रथान् इव ८,१२,३; २९० येन सिन्धुम् प्रचोदयः ।
रथान् इव वाजयतः १,१३०,५; १०१५ नद्यः समुद्रं अच्छ ।
रथै इव । अथ. ७,५०,३; २९०८ वाजयन्तिः प्र भरे स्तोमम् ।
रथे न पादम् ७,३२,२; २२३६ जरितारः इन्द्रे कामं दधुः ।
रथीः इव ८,९५,१; २३३६ सुतेषु आ त्वा गिरः अस्थुः ।
रथ्यः न घेनाः ७,२१,३, २१६३ रेजन्ते विश्वा कृत्रिमाणि ।
रथ्या इव ३,३६,६, १३२८ आपः समुद्रं जग्मुः ।
रथ्या चक्रा इव १०,८९,२; २६६४ सूर्यः वरांसि उह ।
रथ्मं न जिह्वयः ८,४५,२०; ४६२ वयं त्वा आ ररम्भा ।
रथिम् न १०,१३४,४; २७८८ सुन्वते सचा ऊतिभि ।
रथिम् इव पृष्ठं प्रथवन्तं २,१३,४, ११४० पुष्टिं प्रजाभ्यः ।
रथीन् यमितवा इव १,२८,४, ६९ यत्र मन्थां विवक्षते ।
राजा इव १०,४३,२; २५५८ बर्हिषि अधि निषट् ।
राजा इव जनिभिः ७,१८,२; २१२० शुभि त्वं क्षेपि ।
राजा इव सत्पतिः १,१३०,१; १०११ विद्वानि अच्छ ।
रिष्टं न यामन् १,१३१,७, १०२७ विश्वा दुर्मतिः अप भूत ।

वंशम् इव १,१०,१; ५८ ब्रह्माणः त्वा उद् घेनिरे ।
वंसगः न १,५५,१; ७९७ इन्द्रः वज्रं शिशीते ।
वंसगः तातृषाणः न १,१३०,२; १०१२ इन्द्र स्तोमं पिब ।
वज्रः न संभृतः ८,९३,९, २४३८ सबलः अनपच्युतः ।
वत्सं न मातरः ३,४१,५, १३७७ मतयः इन्द्रं रिहन्ति ।
वत्सं न मातरः ६,४५,२५, २०८४ गिरः त्वा अभि प्रणो नुमः ।
वत्सं न मातरः ८,९५,१; २३३६ गिरः त्वा समनृषत ।
वत्सं न स्वसरेषु घेनवः ८,८८,१; ८९४ इन्द्रं गीभिः ।
वत्सानां न तन्तयः ६,२४,४; १९३१ ते दामन्वन्त ।
वधूयुः इव ३,५२,३; १४४८ नः गिरः जोषयासे ।
वधूयुः इव योषणाम् ४,३२,१६, १६६० " "
वना इव सुधितेभिः ६,३३,३; २०१८ प्रसु अकैः वधीः ।
वना इव अग्निः ८,४०,१; ३१०१ येन वृकडा समस्तु ।
वना इव स्वधितिः १०,८९,७, २६६८ इन्द्रः वृत्रं जघान ।
वनानि न ८,१,१३; ९९ प्रजहितानि अमन्महि ।
वने न वायो न्यधायि १०,२९,१; २५१५ वां स्तोम शुचिः ।
वयः न स्वसराणि २,१९,२, १२०० नदीनां प्रयांमि ।

वयः न ववृत्तति आमिषि ६,४६,१४; २१०३ बाह्योः गवि ।
 वयः न अस्तम् ८,३,२३; १७८ वह्नयः तुग्यं धुरं ।
 वयः यथा ८,२१,५, ४१३ तथा वयं मधौ सीदन्तः ।
 वय न वृक्षं १०,४३,४, २५६० सोमासः इन्द्र ।
 वया इव ८,१३,१७; ३३७ इन्द्र क्षोणीः अवर्धयन् ।
 वयाः इव ८,१३,६; ३२६ गिरः अनु रोहते ।
 वयाम् इव वृक्षस्य ६,५७,५, ३३३४ इन्द्रस्य सुमतिं ।
 वराः इव १,८३,२; ९३२ देवासः ब्रह्मप्रियं जोषयन्ति ।
 वरुणः न १०,९९,१०, २६८९ दस्मः मायी ।
 वरुणः न १०,१४७,५, २८०९ दस्मः त्वं मायी ।
 वस्त्रा इव ५,२९,१५, १६८१ अहं भद्रा सुकृता अतक्षम् ।
 वस्त्रा इव गव्या ८,१,१७; १०३ वासयन्तः नरः ।
 वहतुं न धेनवः १०,३२,४; २५३३ सधस्थं अभिचार ।
 वाचं न वेधसाम् १,१२९,१, १००० अस्माकं (हविः) ।
 वाजम् न जिग्युषे ६,४६,२; २०९१ रथ्य अश्व सं क्रि ।
 वाज न गध्यम् ४,१६,११; १४७७ ऋज्वा ।
 वाजयुः न रथम् २,२०,१; १२०८ ते वयः प्र भरामहे ।
 वाणीः इव त्रितः ५,८६,१, ३०४० स दृक्का चित् शुभ्रा ।
 वातः न जूतः स्तनयद्भिः ४,१७,१२; १४९९ सः अस्य शुष्मं ।
 वातः यथा वनं १०,२३,४; २४८४ इन्द्रः सुते मधु उत् ।
 वाताः इव ८,४९,८, ४९२ प्रसक्षिणः हरयः ।
 वाताः इव प्रदोषतः १०,११९,२, २८५१ उत् मा पीता ।
 वायुः न नियुतः ३,३५,१; १३१२ रथे युज्यमाना हरी ।
 वायुः न नियुतः ७,२३,४; २१८३ नः अच्छा आ याहि ।
 वारं न वातः तविषीभिः ४,१९,४, १५२५ इन्द्रः शवसा ।
 वाशी इव प्राची सुन्वते ८,१२,१२, २९९ सनिः मित्रस्य ।
 वाश्राः इव धेनवः १,३२,२, ७१६ आपः समुद्र अव जग्मुः ।
 वाश्रा पुत्र इव प्रियम् १०,११९,४; २८५३ मतिः मा उप ।
 विम् न पाशिन ३,४५,१, १४०४ त्वां केचित् मा ।
 वितत यथा रज १,८३,२; ९३२ देवासः अब पश्यन्ति ।
 विदध्यः न सत्राद् ४,२१,२, १५४५ क्रतुः कृष्टीः अभ्यस्ति ।
 विदे यथा ८,४९,१; ४८५ सुराधसम् इन्द्रम् अर्च ।
 विः इव १०,८६,७, २६४६ (मेपिता) ह्वयति ।
 विषः नः ६,४४,६; २०४१ यस्य ऊतय ।
 वी इव आजन्तः ७,५५,२; २२७१ ऋषयः उप सकेषु ।
 वृकः यथा अविम् । अथ. ७,५०,५; २९१० एव ते कृतं ।
 वृक्षः न पक्वः ४,२०,५, १५३० नवेभिः ऋषिभिः ।
 वृक्षस्य तु वयाः ६,२४,३, १९३० ते ऊतयः वि रुहु ।
 वृक्षाः इव ८,४,५; २३३ ते पृतनायवः नि येमिरे ।
 वृजनम् न १,१७३,६; १०६१ इन्द्रः भूमां संविध्ये ।

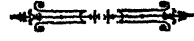
वृत्र इव दासम् १०,४९,६, २५९५ ग्रहम् बृहद्रथं ।
 वृषभः न भीमः तिग्मशृगः ७,१९,१; २१४० एकः विश्वाः ।
 वृषभः न १०,१०३,१; २६८२ भीम इन्द्रः ।
 वृषभः न तिग्मशृगः १०,८६,१५, २६५४ मन्थः ते इन्द्र ।
 वृषभा इव धेनो. ४,४१,५; ३१५० अस्याः धिय युवां ।
 वृषभा इव ६,६४,४; २०९३ मन्थुना मनुष्यान् बाधसे ।
 वृषभं यथा अवक्रक्षिणम् ८,१,२, ९० तथा इन्द्रं शंसत ।
 वृषा न क्रुद्धः १०,४३,८; २५६४ इन्द्र. रज सु आपतयत् ।
 वृष्णे न ८,३४,५, ४२९ सुतानां ते पूर्वपाथं दधामि ।
 वृषायुधः न वध्रयः १,३३,६; ७३५ निरष्टाः इन्द्रात् प्रवद्भिः ।
 वृष्टिः इव अत्रात् ७,९४,१; ३०७९ पूर्वस्तुतिः मन्मनः ।
 वेः न १०,३३,२, २५३९ अमतिः नम्रता नि बाधते ।
 वेः न गर्भम् १,१३०,३; १०१३ इन्द्रः गुहा निहितं ।
 वेनः न ८,३,१८, १७३ हवं शृणु धी ।
 व्रजं न गावः ५,३३,१०; १७२६ रायः प्रयता अपि गमन् ।
 व्रततेः इव पुराणवत् ८,४०,६; ३१०६ अपि वृश्च गुणितम् ।
 व्यथिः यथा । अथ. ६,३३,२; २८८८ इन्द्रस्य श्रवः नाष्टवे ।

शची इव १०,७४,५, २६३८ इन्द्रं अवसे कृणुध्वम् ।
 शतानीका इव ८,४९,२; ४८६ धृष्णुया प्र जिगाति ।
 शवः ते यथा अपरीतम् ८,२४,९; १७९८ तथा दाशुषे राति ।
 शसने न गावः १०,८९,१४; २६७५ पृथिव्या. आपृक् ।
 शाखा न पक्वा १,८,८; ४५ अस्य दाशुषे सन्ता ।
 शार्याते सुतस्य यथा अपिब. ३,५१,७; १४४० तथा इह ।
 शिशुम् न मातरा ८,९९,६; २३८१ क्षोणी तुरयन्तं अनु ।
 शुन्ध्यु. परिपदाम् ८,२४,२४, १८१३ निर्ऋतीनां परिवृजं ।
 शोचि न अग्ने ८,६,७, २४९ विद्युत. धीतयः विपाम् ।
 शमशा (लुप्तोपमा) १०,१०५,१; २७१४ (अवरुध्यच) कदा ।
 श्येतः न १,३२,१४, ७२८ स्रवन्तीः रजांसि अतिरः ।
 श्येनान् इव श्रवस्यतः ६,४६,१३; २१०२ महाधने सर्गे ।
 श्येनान् इव अन्तरिक्षे १,१६५,२; ३२५१ महा मनसा ।
 श्रायन्तः इव सूर्यम् ८,९९,३; २३७८ विश्वा इत् इन्द्रस्य ।
 श्रियेन गावः सोमम् ४,४१,८, ३१५३ मे मनीषाः इन्द्र ।
 श्वघ्नी इव ३,१२,४, ११२५ [इन्द्र.] लक्षं जिगीवान् ।
 श्वघ्नी इव ४,२०,३; १५३५ धनानां सनये आजि जयेम ।
 श्वघ्नी इव निवताचरन् ८,४५,३८; ४८० एवारे वृषभा ।

स्वपतिः इव १,१३०,१; १०११ इन्द्र विदधानि आ याहि ।
 सदसो न भूम ४,१७,४; १४९१ य ईम् जजान अनपच्युतम् ।
 सद्य इव मानैः २,१५,३; ११६४ इन्द्रः प्राचः वि मिमाय ।
 सपत्नीः इव १०,३३,२; २५३९ पर्शवः माम् अभितः ।

सूर्यः इव ८,६,१०, २६२ अहम् अजनि ।
सूर्यः रश्मिम् यथा ८,३२,२३, २०२ तथा मे गिरः त्वा ।
सूर्यम् इव दिवि ५,२७,६, ३०३७ शतदाज्ञि अश्वमेधे ।
सूर्यस्य इव १,१००,२, ९५८ इन्द्रस्य यामः अनासः ।
” ” १०,४८,३, २५८१ मम अनीकं दुस्तरम् ।
सूर्या इव ८,३,१६ १७१ भृगवः स्तोमेभिः महयन्ते ।
” ” ८,३४,१७, ४४१ रघुवपदः आजन्ते ।
सृण्वः न जेता ४,२०,५, १५३७ यः ऋषिभि विररप्ते ।
सेक्ता इव कोशम् ३,३२,१५, १२९६ सिसिचे पिबध्वे ।
सोमः न पीत ८,९६,२१, २३६३ नयां अपांसि कृण्वन् ।
सोमः न पृष्ठे पर्वतस्य ५,३६,२, १७४५ ते हनू शिमे ।
स्कन्धांसि इव कुविशेन १,३२,५, ७१९ इन्द्रः वज्रेण वृत्रं ।
स्तनं न मध्वः १,१६९,४ १०४६ त्वां वाजैः यीपयन्त ।
स्तर्यः न गावः ७,२३,४, २१८३ आप चित् पिप्युः ।
स्थिरा इव धन्वनः १०,११६,६ २७६० अभिमातीः ओजः ।
स्थूरं न कञ्चित् ८,२१,१, ४०९ वयं त्वां वाजे चित्रं ।
स्नात्रा इव धनु १ अथ०७,५०,९, २९११ कृतस्य धारया ।
स्वर्द्धी इव वंसग ८,३३,२, २११ सुतं वृषाणः ओकः ।
स्वर् न ४,२३,६, १५७१ गो चित्रतमं वपुः आ इवे ।
स्वर् न ६,२९,३, १९६४ इत्येकं नृतो इविरः बभूय ।
स्वर् न १०,४३,९, २५६५ शुक्रं शुशुचीत सत्पतिः ।
स्वर् न । अथ०२,५,२, २८६४ उप त्वा मदाः सुवाचः अगुः ।
स्वर् न । साम०९५३, २९९८ उप त्वा मदाः सुवाचः अस्थुः ।
स्वर् मीलदे न च ४,१६,१५, १४८१ सवने चकानाः ।
स्वानः न अवां १,१०४,१, ८४७ तम् (योनिम्) ।
स्वेदा इव १०,१३४,५, २७८९ दिद्यवः विष्वक् अभितः ।
हंसा इव ३,५३,१०, १४६२ हे कुशिकाः श्लोकं कृणुय ।
हरितः न १,५७,३, ८१३ यस्य ज्योतिः श्रवसे अकारि ।
हरितः न सूर्यम् १,१३०,२, १०१२ त्वा (अश्वः) आ ।
हर्म्यम् यथा इदं ७,५५,६, २२७५ तथा तेषां अक्षाणि ।
हव्यः न १,१२९,६, १००५ इषवान् मनम रेजति ।
हिन्वानं न वाजयुम् ८,१,१९, १०५ शक्र एनं विश्व ।
होता इव ८,१२,३३, ३२० पूर्व चित्तये प्राध्वरे ।
होता न अमृतः ४,४१,१, ३१४६ वां सुन्नम् कः स्तोमाः ।
हृदाः इव ३,२६,८, १३३० सोमधानाः कुक्षय ।
हृदं न ऊर्मयः १,५२,७, ७६६ ब्रह्माणि त्वां न्यूपमि ।

दैवत-संहितान्तर्गत-- इन्द्रमन्त्राणां सूची ।



अकर्म दस्युरभि	२४७३	अतीहि मन्युषाविणं	२००	अध स्या ते चर्षणयो	१९४४
अकारि त इन्द्र गोतमेभि०	८९३	अतृणुवन्तं वियतमबुध्य०	१५२४	अध स्या नो वृषे	२१००
अक्षन्मीमदन्त	९२६	अत्रा वि नेमिरेषामुरां	४२७	अध स्या योषणा	१८४०
अक्षाः फलवतीं युवं	२९११	अत्राह गोरमन्वत	९५१	अधाकृणोः पृथिवीं	११४१
अक्षितोतिः सनेदिमं	२२	अत्राह तद् वहेथे	३२१९	अधाकृणोः प्रथमं	११८३
अक्षेत्रवित् क्षेत्रविदं	२५३६	अत्राह ते हरिवस्ता	१५६१	अधा ते अप्रतिष्कृतं	२४४१
अक्षोदयच्छवसा	१५२५	अत्रिवद्वः क्रिमयो	२८८३	अधा मन्ये बृहदसुर्यम्	१९६९
अक्षो न चक्रयोः	१९३०	अत्रीणां स्तोममद्रिचो	१७७४	अधा मन्ये श्रुत् ते	८५३
अगच्छदु विप्रतमः	१२६६	अत्रेदु मे मंससे	२५००	अधा यो विश्वा	११८४
अगश्निन्द्र श्रवो बृहद्	१३४३	अथा ते अन्तमानां	६	अधा हीन्द्र गिर्वणः	२३७०
अगव्यूति क्षेत्रमागम्	३३२७	अददा अर्भा महते	७५७	अधि द्वयोरदधा	९३३
अगोरुधाय गविषे	१८०९	अदद्वैरुत्समसृजो	१७०५	अधि यस्तस्यौ केशवन्ता	२७१८
अग्न इन्द्रश्च दाशुषे	३१३१	अदेदिष्ट वृत्रहा	१२८०	अधि सानौ नि जिह्वते	९०५
अग्निर्जज्ञे जुह्वा	१२६२	अद्वीदिन्द्र प्रस्थितेमा	२७६२	अध्वर्यवः कर्तना	११५८
अग्निर्न शुष्कं	१८६५	अद्या चिन्तू चित्	१९७०	अध्वर्यवः पयसोध्वर्यथा	११५९
अग्निर्मूर्धो दिवः	२९३०	अद्याद्या श्वःश्च इन्द्र	५६४	अध्वर्यवा तुहि विञ्च	२०३
अङ्गान्यात्मन् भिषजा	२९५१	अद्या सुरीय यदि	३२९२	अध्वर्यवो भरतेन्द्राय	११५०
अच्छा कवि नृमणो	१४७५	अद्येदु प्राणीदम०	२५३७	अध्वर्यवो य उरणं	११५३
अच्छा च त्वेना नमसा	४१४	अद्रिणा ते मन्दिनः	२५२४	अध्वर्यवो य शतं	११५५
अच्छा म ईर्द्रं मतयः	२५५७	अद्रोघ सयं तव	१२९०	अध्वर्यवो यः शतमा	११५६
अच्छा यो गन्ता नाधमान	१६०७	अधः पश्यस्व मोपरि	२२८	अध्वर्यवो यः स्वभं	११५४
अच्छिन्नस्य ते देव	२९२४	अध कृत्वा मघवन्	१६७१	अध्वर्यवो यक्षरः	११५७
अजा अन्यस्य वह्नयो	३३३२	अध गमन्तोशना पृच्छते	२४७१	अध्वर्यवो यो अपो	११५१
अजातशत्रुमजरा	१७२७	अध उमो अध वा दिवो	१०४	अध्वर्यवो यो दिव्यस्य	११६०
अजा वृत् इन्द्र	१०७१	अध ते विश्वमनु	८१२	अध्वर्यवो यो दभीकं	११५२
अजिरासो हरयो	४९२	अध त्वष्टा ते मह	१८५०	अध्वर्यवोऽरुणं दुग्धमंशुं	२२७९
अजैषं त्वा संलिखितम्	२९०९	अध त्वा विश्वे पुर	१८४८	अध्वर्यो अद्रिभिः	२९५४
अतः समुद्रमुद्रतश्चिक्विर्वा	२७१	अध त्विषीमां	१२२४	अध्वर्यो द्रावया त्वं	२३९
अतश्चिदिन्द्र ण उपा	२४०६	अध द्यौश्चित् ते	१८४९	अध्वर्यो वीर प्र	२०४८
अति वायो ससतो याहि	३२१८	अध द्रप्तो अंशुमत्या	३३२६	अनशरार्ति वसुदामुष	२३७९
अतिविद्धा दिथुरेणा	२३४६	अध प्रियमिषिराय	१८३७	अनवस्ते रथमश्वाय	१६९६
अतिष्ठन्तीनामनिवेशनानां	७२४	अध यन्धारथे गणे	१८३९	अनाष्टानि ध्रुवितो	२७९५
अतीदु शक्र ओहत	२३१६	अध श्रुतं कवषं	२१३०	अनानुदो वृषभो	१२२०

अनुकामं तर्पयेथास्	३१३६	अपायस्यान्धसो मदाय	११९९	आंभि सिन्धो अजिगादस्य	७४२
अनु कृष्णे वसुधितौ	१२७६	अपिबत् कद्रुवः सुतम्	४६८	अभि स्वरन्तु ये तव	३४८
अनु ते दायि मह इन्द्रियाय	१९४५	अपि वृश्च पुराणवद्	३१०६	अभि स्ववृष्टिं मदे अस्य	७६४
अनु ते शुष्मं तुरथन्तमीयतु	२३८१	अपूर्या पुरुतमान्यस्मै	२०११	अभि हि सत्य सोमपा	२३६८
अनुत्तमा ते मघवन्नकिर्तुं	२९७०	अपेन्द्र द्विषतो मनो	२८१८	अभी इदमेकमेको	२५८५
अनुत्तमा ते मघवन्	३२५८	अपो महीरभिश्चस्तेः	२७११	अभी न आ ववृत्स्व	१६३३
अनु त्वा रोदसी उभे कक्षमाणं	६३८	अपो यदाद्रिं पुरुहूतं	१४७४	अभी मवन्वन्स्वभिष्टिमूतयो	७४६
अनु त्वा रोदसी उभे चक्रं	२८०	अपो वृत्रं वज्रिवांसं	१४७३	अभी धतस्तदा भरेन्द्र	२२५८
अनु त्वाहिमे अध देव	१८६९	अपोषा अनसः सरत्	३३४३	अभी धु णं सखीनाम्	१६३२
अनु द्यावापृथिवी	१८७०	अपूर्ये मरुत आपिरेषो	१४४२	अभी धु णस्त्वं रथिं	२४५०
अनु द्वा जहिता नयो	१६२४	अप्रक्षितं वसु बिभर्षिं	८०४	अभूरु वीर गिर्वृणो	२०७२
अनु प्रत्नस्यौकसः प्रिय०	२३२०	अग्रामिसत्य मघवन्	५५१	अभूरेको रथिपते	२००६
अनु प्रत्नस्यौकसो हुवे	७०७	अप्सु धृतस्य हरिवः	२७०४	अभूवौक्षीर्युः आयुरानङ्	२४९७
अनु प्र येजे जन आजो	२०३२	अभि कण्वा अनूषत	२७६	अभ्यर्चं नभाकवद्	३१०४
अनु यदीं मरुतो	१६६८	अभि क्रत्वेन्द्र भूरध	२१६६	अभ्रातृव्यो अना त्वम्	४२१
अनुव्रताय रन्धयन्	७५३	अभिरुया नो मघवन्	२७४४	अमन्दन्मा मरुतः	३२६०
अनुस्पष्टो भवत्येषो	२८२७	अभि गन्धर्वमनृणद्	६४४	अमन्महीदनाशवो	१००
अनु स्वधामक्षरन्नापो	७४०	अभि गोत्राणि सहसा	२६९७	अमाजूरिव पित्रोः	११८७
अनेहसं वो हवमानमूतये	४२८	अभि जैत्रीरसचन्त	१२६३	अमीषां चित्तं प्रति	२९३३
अनेहसं प्रतरणं	४८८	अभि तष्टेव दीधया	१३४५	अभ्यक् सा त इन्द्रः	१०४५
अन्धा अभित्रा भवता	३००१	अभि त्यं मेघं पुरुहूतम्	७४५	अयं यज्ञो देवया	१०९४
अन्यदद्य कर्वरमन्यदु	१९३२	अभि त्वा गोतमा गिरा	१६५३	अयं यो वज्रः पुरुधा	२५११
अन्यव्रतममानुषम्	२३३१	अभि त्वा पाजो रक्षसो	१९०३	अयं रोचयदरुचो	१९८६
अन्वपां खान्यतुन्तम्	३१७४	अभि त्वा पूर्वपीतय	१६२	अयं वां परि पिच्यते	३३१८
अन्वद् मासा अन्विद्वानानि	२६७४	अभि त्वा वृषभा सुते	४६४	अयं वृतश्चातयते	१४९६
अन्वेको वदति यद्	११३९	अभि त्वा दूर नोनुमो	२२५६	अयं शृण्वे अध	१४९७
अप प्राच इन्द्र विश्वा	२७७३	अभि द्यां महिना भुवम्	२८५७	अयं सहस्रमृषिभिः	१५९
अष योरिन्द्रः पापज	२७१६	अभि द्युन्नानि वनिन	१३७०	अयं सोम इन्द्र तुभ्य	२२१३
अपश्चिदेव विश्वो	१२७५	अभि प्र गोपति गिरा	२३०७	अयं सोमश्चमू सुतो	३२३०
अपश्यं ग्रामं वहमानम्	२५०९	अभि प्र दद्रुर्जनयो	१५२६	अयं ह येन वा इदं	६३१
अपाः सोममस्तमिन्द्र	१४५८	अभि प्र भर धृषता	२३८७	अयं हि ते अमर्त्य	२७९८
अपादहस्तो अपृतन्यद्	७२१	अभि प्र वः सुराधसम्	४८५	अयं चक्रमिषणत्	१५०१
अपादित उदु	१९७८	अभिभुवेऽभिभङ्गाय	१२१८	अयं त इन्द्र सोमो	४०४
अपादिन्द्रो अपादभिः	२३१४	अभि वह्नय ऊतये	३०२	अयं त एमि तन्वा	९९१
अपादु क्षिप्र्यन्धसः	२४००	अभि वो वीरमन्धसो	१८३०	अयं ते अस्तु हर्यतः	१३९९
अपाधमदभिश्चस्तीः	२३८५	अभि व्रजं न तन्निषे	२६७	अयं ते मानुषे जने	५९८
अपामतिष्ठद्वरुणह्वरं	७९५	अभि वल्लया चिद्विषः	१०३५	अयं ते शर्यणावति	५९९
अपामूर्मिर्मदञ्जिव	३६३	अभिष्टने ते अद्रिवो	९१३	अयं ते स्तोमो अभियो	८४
अपां फेनेन नमुचेः	३६६	अभिष्टये सदावृधं	२२९५	अयं दशस्यन्नयेभिरस्य	२६८९

अयं दीर्घाय चक्षसे	३५०	अर्चा शक्राय शाकिने	७८७	अवासृजन्त जिन्नयो	१५२३
अयं देवः सहसा	२०५७	अर्णासि चित् पप्रथाना	२१२३	अवितासि सुन्वतो	१७६९
अयं द्यावापृथिवी	२०५९	अर्धं वीरस्य श्रुतपाप्	२१३४	अविदद् दक्षं	२०४२
अथ द्योतयद्द्युतो	१९८५	अभर्को न कुमारको	२३१७	अविन्दद् दिवो	१०१३
अयमकृणोदुषसः	२०५८	अर्यो वा गिरो अभ्यर्च	२८११	अविप्रे चिद् वयो	२०६१
अयमस्मासु काव्यः	२७९९	अर्वन्तो न श्रवसो	३२३५; ३२४०	अविप्रो वा यद्विधद्विप्रो	५५६
अयमस्मि जरितः	९९४	अर्वाग्रथं विश्ववारं	१९७३	अविर्न मेषो नसि	२९४८
अयमिन्द्र वृषाकपिः	२६५७	अर्वाङ्गेहि सोमकामं	८५५	अवीरामिव मामयं	२६४८
अयमिन्द्रो मरुत्सखा	६२९	अर्वाङ् नरा दैव्येनावसा	३१७९	अवीवृधन्त गोतमा	१६५६
अयमु ते समतसि	७०२	अर्वाचीनं सु ते	१३३५	अवोचाम महते	३२०६
अयमु त्वा विचर्षणे	४००	अर्वाचीनो वसो	१६५८	अश्रवं हि भूरिदावत्तरा	३०२२
अयमु वां पुरुतमो	३१४४	अर्वाञ्चं त्वा पुरुहूत	२०९; २८७	अश्वाद्यायेति	२६३२
अयमुशानः पर्यद्रिमुत्ता	१९८४	अर्वाञ्चं त्वा सुखे	१३८१	अश्वायन्तो गव्यन्तो	२८२८
अयमेमि विचाकशद्	२६५८	अर्वावतो न आ गहि	१३७१	अश्वावति प्रथमो	९३१
अयं पन्था अनुवित्तः	१५०९	अर्वावतो न आ गह्यथो	१३४४	अश्वावन्तं रथिनं	२८४६
अया धिया च गव्यया	२४४६	अलात्तुणो वरु	१२४७	अश्विना गोभिरिन्द्रियं	२९५७
अयाम धीवतो धियो	२४०७	अवशे द्यामस्तभायद्	११६३	अश्विना तेजसा	२९६२
अयामि घोष इन्द्र	२१८१	अवक्रक्षिणं वृषभं	८८	अश्विना पिबतां	२९६३
अया वाजं देवहित	१८५५	अव क्षिप दिवो	१२३१	अश्विभ्यां चक्षुरमृतं	२९४७
अया ह त्वं मायया	१९१२	अव चष्ट क्रवीषमो	५७१	अश्वी रथी सुरूप इत्	२३७
अयुजो असमो नृभिरेकः	५६७	अव त्मना भरते	८४९	अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र	७२६
अयुजन्त इन्द्र	१०४४	अव त्या बृहतीरिषो	२७८७	अश्व्यस्य त्मना	३१५५
अयुद्ध इद् युधा	४४५	अव त्वे इन्द्र प्रवतो	२११२	अषाढइमुग्रं पृतनासु	२३२४
अयुद्धसेनो विभ्वा	२७९६	अवद्यमिव मन्यमाना	१५१३	असत् सु मे जरितः	२४९१
अयुयुत्सन्नवद्यस्य	७३५	अव द्रप्सो अंशुमती	२३५७	असम क्षत्रमसमा	७७३
अयोद्धेव दुर्मद	७२०	अव नो वृजिना	२७२१	असाम यथा सुषखाय	१०६४
अरं हि ण्मा सुतेषु	२४२२	अव यत् त्वं शतक्रतविन्द्र	२७८८	असावि देवं गोक्रजीकं	२१६१
अरं कृण्वन्तु वेदि	१०५४	अवत्यो शुन आन्त्राणि	१५२१	असावि सोम इन्द्र	९३७
अरं क्षयाय नो महे	३८१	अवर्मह इन्द्र दादहि	१०३९	असावि सोमः पुरुहूत	२७०३
अरं त इन्द्र कुक्षये	२४२०	अवसृष्टा परा पत	२९३४	असिक्न्यां यजमानो	१५०२
अरं त इन्द्र श्रवसे	२९७७	अव स्य दुर्हणायतो	२७८६	असि हि वीर सेन्यो	९१७
अरमयः सरपस	११४८	अव स्य शराध्वनो	१४६८	असुन्वन्तं समं	१०८८
अरमश्वाय गायति	२४२१	अव स्वराति गर्गरो	२३१२	असुन्वामिन्द्र संसदं	३६८
अरं म उस्त्रयाम्णे	३३४९	अव स्वेदा इवाभितो	२७८९	असुत पूर्वो वृषभो	१३४९
अरोरवीद् वृष्णो	१११०	अवाचचक्षं पदमस्य	१६८३	असौ च या न	१७८८
अर्चत प्रार्चत प्रियमेधासो	२३११	अवा लु कं ज्यायान्	२६०५	असौ य एषि वीरको	१७८४
अर्चद् वृषा वृषभिः	१०५७	अवा नो वाजयुं रथं	६६६	असृग्रमिन्द्र ते	५१
अर्चन्त्यर्कं मरुतः	२९८८	अवासां मघवज्जहि	१०३६	अस्तावि मन्म पूर्य	५२३
अर्चा दिवे बृहते	७८८	अवासृजः प्रस्वः	२७९३	अस्तेव सु प्रतरं	२५४६

अस्मभ्यं सु त्वमिन्द्र	२७८४	अस्मे इन्द्रावृहस्पती	३३२०	अहं तष्टेव वन्धुरं	२८५४
अस्मभ्यं तद् वसो	११४९, ११६१	अस्मे इन्द्रावरुणा विश्ववार	३१९५	अहं दां गृणते	२५९०
अस्मभ्यं तो अपा	१३४२	अस्मे इन्द्रो वरुणो	३१८१, ३१९१	अहन्नहि परिशयानम्	१२९२
अस्माअस्मा इदन्धसो	२००१	अस्मे तदिन्द्रावरुणा	३१४५	अहन्नहि पर्वते	७१६
अस्मा इत् काव्यं	१७६४	अस्मे ता त इन्द्र	२४७८	अहन्निन्द्रो अदहदग्निः	१३०१
अस्मा इदु माञ्चिद्	८६३	अस्मे वेहि श्रवो वृहद्	५५	अहन् वृत्रं वृत्रतरं	७१९
अस्मा इदु त्वदनु	८७०	अस्मे प्र यन्धि मघवन्	१३३२	अहन् वृत्रमृचीषम	२०५
अस्मा इदु त्वमुपम	८५८	अस्मे वर्षिष्ठा कृणुहि	१५६३	अहमत्क कव्ये	२५९२
अस्मा इदु त्वष्टा	८६१	अस्मै भीमाय नमसा	८१३	अहमस्मि महामहां	२८३१
अस्मा इदु प्र तवसे	८५६	अस्मै वय यद्	१९२२	अहमिद्धि पितृन्परि	२५२
अस्मा इदु प्र भरा	८६७	अस्य त्रितः क्रतुना	२४६३	अहमिन्द्रो न परा	२५८३
अस्मा इदु प्रय इव	८५७	अस्य पिब क्षुमत	२७५६	अहमिन्द्रो रोधो	२५८०
अस्मा इदु सतिमिव	८६०	अस्य पिब यस्य	१९८९	अहमेतं गव्ययमश्न्य	२५८२
अस्मा इदु स्तोमं	८५९	अस्य पीत्वा मदानां	२४०२	अहमेताच्छाश्वमतो	२५८४
अस्मा उपास आतिरन्त	२३४५	अस्य पीत्वा शतक्रतां	११	अहं पितेव वेतस्व	२५९३
अस्मा एतद् दिव्यं चैव	२०२४	अस्य मदे पुरु	२०४९	अह पुगे मन्दसानो	१५९८
अस्मा एतन्मह्याङ्गूषं	२०२५	अस्य मन्दानो मध्वो	१२००	अहं प्रत्नेन मञ्जना	२५३
अस्माकं व इन्द्रम्	१००३	अस्य वृष्णो व्योदन	५८६	अहं सुवं वसुनः	२५७९
अस्माकं शिप्रिणीनां	७०९	अस्य श्रवो नद्यः	८२९	अहं भूमिमददामार्याय	१५९७
अस्माकं सु रथं पुर	४५१	अस्य सुवानस्य	११२०	अहं मसुरभवं सूर्यश्चाहं	१५९६
अस्माकं त्वा मतीनाम्	१६५९	अस्य स्तोमेभिरौशिज	२६२०	अहस्ता यदपद्मी	२४७९
अस्माकं त्वा सुतां	२८४	अस्येदिन्द्रो वावृधे	१६३	अहा यदिन्द्र सुदिना	२२२०
अस्माकं वृष्ण्या	१६४३	अस्येदु त्वेषसा	८६६	अहितेन चिदर्वता	५६८
अस्माकमन्न पितर	३१५८	अस्येदु प्र ब्रूहि	८६८	अहेळता मनसा श्रुष्टि	३३५१
अस्माकमद्यान्तम	२२४	अस्येदु भिया गिरयश्च	८६९	अहेळमान उप याहि	१९९३
अस्माकमिस्तु शृणुहि	१५६४	अस्येदु मातु सवनेषु	८६२	अहंर्यातार कमपठय	७२८
अस्माकमिन्द्रः समृतेषु	२७०१	अस्येदेव प्र रिरिचे	८६४	आकरे वसोर्जग्निना	१४३६
अस्माकमिन्द्र भूतु	२०८९	अस्येदेव शवसा	८६५	आ क्षोदो महि वृतं	१८५२
अस्माकमिन्द्र दुष्टर	१७४२	अस्येन्द्र कुमारस्य	२८७५	आगच्छत आगतस्य	२८९९
अस्माकमिन्द्रावरुणा	३१८०	अस्मावयद् दभीतये	१६२६	आ घ त्वावान् रमना	७१२
अस्माकमिन्द्रेहि	१७४३	अह रन्ध्रयं मृगयं	२५९४	आ घा गमद्यदि श्रवत्	७०६
अस्माकमुत्तमं कृधि	१६४४	अहं सप्त स्रवतो	२५९८	आ घा ये अग्निमिन्धते	४४३
अस्माकेभि सत्वभि.	१२३४	अहं सप्तहा नहुषो	२५९७	आ च त्वामेता वृषणा	१३९४
अस्मादहं तविषा०	३२६६	अहं स यो नववास्वं	२५९५	आ चन त्वा चिकित्सामो	१७८५
अस्मा अवन्तु ते	१६३९	अहं सूर्यस्य परि	२५९६	आ चर्षणिग्रा वृषभो	१०९१
अस्मा अविद्धि विश्वहेन्द्र	१६४१	अहं हि ते हरिवो	५३२	आ जनाय द्रुहणे	१९१४
अस्मा इहो वृणीष्व	१६४०	अह गुह्यगुह्यो अतिथिग्व	२५८६	आजितुरं सत्पति	५३०
अस्मान्सु तत्र चोदय	५३	अहं च त्व च वृत्रहन्	५७६	आजिपते नृपते	५३६
अस्मिन् न इन्द्र पृत्सुतौ	२५४१	अहं चन तत् सूरिभि	१९५३	आ त इन्द्र महिमान	६०४
अस्मे इन्द्र सचा सुते	९८३	अहं तदासु धारयं	२५९९		

आ त एता वचोयुजा	४८१	आ त्वा वहन्तु हरयो	७८	आ नो दिव आ पृथिव्या	२१८८
आ तत् त दन्द्रायवः	२६३७	आ त्वा विशन्तु सुतास	२८६६	आ नो देव शवसा	२२१८
आतन्वाना आयच्छतो	२८९१	आ त्वा विशन्वाशवः	२०	आ नो बृहन्ता	३१५६
आतिष्ठन्त परि विश्वे	१३४८	आ त्वा विशन्विन्दवः	२४१८	आ नो भर दक्षिणेनाऽभि	६७५
आ तिष्ठ रथ वृषण	१०९३	आ त्वा शुक्रा अचुच्युः	२३३७	आ नो भर-भगमिन्द्र	१२५६
आ तिष्ठ वृत्रहन्	९३९	आ त्वा सहस्रमा	११०	आ नो भर वृषणं	१८७८
आ तू गहि प्र तु	३३४	आ त्वा सुतास इन्द्रवो	४८७	आ नो भर व्यजन	६५२
आ तू न इन्द्र कौशिक	६८	आ त्वा हरयो वृषणो	२०५४	आ नो यज्ञं नमोवृधं	१३९३
आ तू न इन्द्र क्षुमन्तं	६७०	आ त्वा होता मनुर्हितो	४३२	आ नो याहि परावतो	२७८
आ तू न इन्द्र मयग	१३७३	आ त्वेता नि षीदत	१४	आ नो याहि महेमते	४३१
आ तू न इन्द्र वृत्रहन्	१६४५	आदङ्गिराः प्रथमं	९३४	आ नो याहि सुतावतो	३९७
आ तू भर माकिरतन्	१३३१	आ दस्युघ्ना मनसा	१४७६	आ नो याह्यपशुत्युक्थेपु	४३५
आ तू सुक्षिप्र दपते	२३१८	आदानेन सदानेन	३१२८	आ नो विश्वाभिरुतिभिः	२१८९
आ तू पिञ्च कण्वमन्तं	१३७	आदित् ते अस्य	१०२५	आ नो विश्वासु हव्य	२३९१
आ ते दक्ष वि रोचना	२४५५	आदित् प्रत्नस्य रेतसो	२७२	आ नो विश्वेषां	५२७
आ ते दधागीन्द्रियम्	२४५६	आदित्यानां वसूनां	२५८९	आन्त्राणि स्थालीर्मधु	२९४४
आ ते मह इन्द्रोऽयुग्र	२१२२	आदित् सासस्य	५४३	आ पक्थासो भलानसो	२१२५
आ ते वृषन् वृषणो	२०५५	आदिद्ध नेम इन्द्रियं	१५८१	आ पप्राथ महिना	२३२६
आ तेऽवो वरेण्य	१७३८	आदिन्द्र सत्रा तविषी	२७४९	आ पप्रौ पार्थिवं रजो	९२०
आ ते शुष्मो वृषभ	१८७९	आदीं शवस्यज्वीव्	६४१	आपश्चित् पिप्यु स्तयो	२१८३
आ ते सपूर्य जवसे	१४३०	आदु मे निवरो	२४४४	आपश्चिद्धि स्वयंशलः	३१९९
आ ते सिद्धाभि कुक्षोरानु	३२८	आदू तु ते अनुक्रतुं	५८२	आपान्तमन्युः	३२७६
आ ते हनू हग्विः	१७४५	आद् रोदसी वितरं	१६७०	आपृगो अस्य कलशः	१२९६
आत्मन्नुपस्थेन	२९५०	आ द्वाभ्यां हरिभ्यामिन्द्र	११९३	आपो न देवीरुप	९३२
आत्मा पितृस्तनूवांस	१७३	आ द्विवर्हा अमिनो	२७५८	आपो न सिधुमभि	२५६३
आ त्वद्य सबस्तुति	१०२	आध्रेण चित् तद्वेक	२१३५	आ प्र द्रव परावतो	६७९
आ त्वद्य सबर्हुवां	९६	आ न इन्द्र पृक्षसे	२४७२	आ प्र द्रव हरिवो	१६९४
आ त्वजग्रवा गहि	६८२	आ न इन्द्र महीमिषं	२६५	आ बुन्द्र वृत्रहा	४४६
आ त्वा कण्वा इहावसे	४२८	आ न इन्द्राबृहस्पती	३३१९	आ भरतं शिक्षतं	३०२७
आ त्वा गिरो रथीरिव	२३३६	आ न इन्द्रो दूरादा	१५३३	आभिः स्पृधो मिथती	१९३९
आ त्वा गीर्मिर्हामुक्	६०३	आ न इन्द्रो हरिभिः	१५३४	आ मध्वो अस्मा	२५२१
आ त्वा गोभिरिज	१७९५	आ नः सहस्रशो	४३९	आ मन्द्रैरिन्द्र	१४०४
आ त्वा ग्रावा वदङ्गि	४२६	आ नस्तुजं रथि	१४०७	आमासु पक्कमरय	२३९०
आ त्वा युक्तो हरयो	१३९६	आ नस्ते गन्तु	१०८०	आमूरज प्रत्यावर्तयेमाः	२९६७; ३३६२
आ त्वा जल्युजा	३९५	आ नः स्तुत उष	१६०४	आ यः सोमेन जठरम्	१७२८
आ त्वा मदच्युता	४३३	आ नः स्तोममुप	४८९	आयं जना अभिचक्षे	१७०३
आ त्वा रथं यथोनये	२२९१	आ निरेकमुन	१७९३	आ यत् पतन्त्येन्यः	२३१३
आ त्वा रथे हिरण्यये	१११	आ नो गव्यान्वइव्या	४३८	आ यदिन्द्रश्च दद्वहे	४४०
आ त्वा रम्भं न जिन्नयो	४६२	आ नो गव्येभिः	३०६९	आ यद् दुवः शतक्रन्वा	७१३
		आ नो गोत्रा दईहि	१२५८	आ यद् दुवस्याद्	३२६३

आ यद्धरी इन्द्र	८८६	आ संयतमिन्द्र	१९१६	इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभि	३३४३
आ यद्धजं बाहोरिन्द्र	२३४९	आ सत्यो यातु मघवाँ	१४६७	इन्द्र ऋभुमान् वाजवान्	३३४२
आयन्तारं महि स्थिरं	१९३	आसस्त्राणासः शवसानम्	१९७५	इन्द्र ओषधीरसना	१३१०
आ यन्मा चेना	९९५	आ सहस्रं पथिभिरिन्द्र	१८६६	इन्द्रं वयं महाधन	३२
आ यं पृणन्ति दिवि	७६३	आसु ष्मा णो मघवन्निन्द्र	२०५३	इन्द्रं वयमनूराध	२९१५
आ यास्मिन् हस्ते नर्या	१९६३	आ स्मा रथ वृषपाणेषु	७५३	इन्द्रं वर्धन्तु नो गिर	३३६
आ यस्य ते महिमान	१८१९	आहं सरस्वतीवत्	३१००	इन्द्रं वाणीरनुत्तमन्युमेव	२०३४
आ यास्विन्द्र. स्वपति	२५६८	आ हरयः ससृजिरे	२३०८	इन्द्रं विश्वा अवीवृधन्	७०
आ यास्विन्द्रो दिव आ	१५४६	आहार्ष त्वाविदं त्वा	३११७	इन्द्रं वृत्राय हन्तवे	३०९; १३३८
आ यास्विन्द्रोऽवस	१५४४	आ हि ष्मा याति	१६०५	इन्द्र वो नरः सख्याय	१९६२
आ याहि कृणवाम	५६९	इच्छन्ति त्वा सोम्यामः	१२३८	इन्द्रं वो विश्वरूपरि	३७
आ याहि पर्वतेभ्यः	४३७	इच्छन्ति देवाः सुन्वन्तं	१३३	इन्द्रं मोमस्य पीतये	१३८५
आ याहि पूर्वोरिति	१३९२	इच्छन्तश्चरय यच्छिर.	९५०	इन्द्रं स्तवा नृतमं थस्य	२६६३
आ याहि शश्वदुशता	१९९१	इत ऊगी वो अजरं	२३८२	इन्द्रः किल श्रुत्या अस्य	२७०७
आ याहि सुषुमाहि	३९४	इति चिद्धि त्वा धना	२७६७	इन्द्रः प्रभिदातिरद्	१३०१
आ याहीम इंदवो	४११	इति वा इति मे मनो	२८५०	इन्द्रः स दामने	२४३७
आ याह्यद्विभिः सुतं	१७६५	इतो वा सातिमीमहे	२७	इन्द्रः समस्त्यु यजमानमाय	१०१८
आ याह्यर्य आ परि	४३४	इथा धीवन्तमद्रिव	१५५	इन्द्रः सहस्रदात्रां	३१३८
आ याह्यर्वाङ्मुप	१३९१	इथा हि सोम इन्मदे	९००	इन्द्रः सुतेषु सोमेषु	३२१
आराच्छन्नुमप बाधस्व	२५५२	इदं वसो सुतमन्धः	११६	इन्द्र सुत्रामा स्वर्वा	२११०; २७७३
आ रोदसी अपृणादोत	२६१६	इदं वामास्ये हविः	३३१७	इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन	२९४३
आर्चन्नम मरुतः	७७४	इदं वां मदिरं मधु	३०९३	इन्द्रः सुशिप्रो मघवा	१२४०
आ व इन्द्रं क्रिंवि	६९९	इदं सु मे जरितरा	२५२५	इन्द्रः सूर्यस्य रक्षिभिः	२९६
आ व कुत्समिन्द्र	७४३	इद हविर्मघवन्	२७६१	इन्द्रः स्पलुत वृत्रहा	५६२
आ व' शर्म वृषभं	७४४	इदं ह्यन्वोजसा सुतं	१४४३	इन्द्रः स्वर्षा जनयन्	१३०४
आवदिन्द्रं यमुना	२१३७	इदं ते पात्रं सनवित्त	२७४०	इन्द्रः स्वाहा पिबतु	१४२९
आ वां रथो नियुत्वान्	३२१५	इदं ते सोम्यं मधु	६०८	इन्द्रं क्रतुं न आ भर	२२६०
आ वां राजानावध्वरे	३१९२	इदं त्यत् पात्रम्	२०५१	इन्द्रं क्रतुविदं सुतं	१३६५
आ वां सहस्र हरय	३२२२	इदं नमो वृषभाय	७५९	इन्द्रं क्षत्रमभि वाममोजो	२८४१
आ वां धियो ववृयुः	३२१६	इदमादानमकरं	३१२९	इन्द्रं क्षत्रासमातिषु	२६०२
आ वामश्वासो अभिमातिषाह	३३०९	इदा हि ते वेविषनः	१९०१	इन्द्र गोमन्निहा याहि	२९६४
आ विशत्या त्रिशता	११९४	इनोत पृच्छ जनिमा	१३४६	इन्द्रं गृगीष उ स्तुये	६०५
आ वृत्रहणा वृत्रहभिः	३०५८	इन्द्र आमं नेता बृहस्पतिः	२६९८	इन्द्रं कामा वसूयन्तो	१४८१
आ वृषस्व पुरुवसो	५५०	इन्द्र आशाभ्यस्परि	१२३७	इन्द्रं जठरं नव्यं	२९९८
आ वृषस्व महामह	१७९९	इन्द्र इन् सोमपा	११९	इन्द्रं जठरं नव्यो	२८६४
आवो यस्य द्विबर्हसो	१०८९	इन्द्र इद्धर्योः सचा	२९	इन्द्रं जहि पुमांस यातुधान	३३०१
आशीत्या नवत्या	११९५	इन्द्र इजा महानां	२३९९	इन्द्रं जामय उत	१९४०
आशु शिशानो वृषभो	२६९२	इन्द्र इषे ददातुं न	३३४४	इन्द्रं जीव सूर्य जीव	३३६३
आशुर्कणं श्रुधी हवं	६६	इन्द्र उक्थेभिर्मन्दिष्ठो	२९७९	इन्द्रं लुषस्व प्र वहा	२८६३, २९९७
		इन्द्र ऋभुभिर्वाजिभिः	३३४३		

इन्द्र ज्येष्ठं न आ	२०९४	इन्द्र यथा ह्यस्ति	१७९८	इन्द्राग्नी अव्यथमानाम्	३११८
इन्द्र ज्येष्ठा मरुद्गणा	३२४८	इन्द्र यस्तं नवीयसी	२३४०	इन्द्राग्नी आ गतं	३०३०
इन्द्र तुभ्यमिदं द्विवो	९०६	इन्द्र वाजेषु नोऽव	३१	इन्द्राग्नी आ हि तन्वने	३०५२
इन्द्र तुभ्यमिन्मघवन्	२०४५	इन्द्रवायू अय	३२२५	इन्द्राग्नी उक्थवाहसा	३०५५
इन्द्र त्रिधानु शरण	२०९८	इन्द्रवायू इमे सुता	३२१०	इन्द्राग्नी जरितुः	३०३१
इन्द्र त्वयिनिनेदसीत्या	३४६	इन्द्रवायू उभाविवह	३२४४	इन्द्राग्नी तपन्ति	३०५३
इन्द्र त्वा वृषभ वय	१३६४	इन्द्रवायू मनोजुवा	३२१४	इन्द्राग्नी तविषाणि	३०३७
इन्द्र त्वोत्तास आ वय	४०	इन्द्रवायू सुसन्धशा	३२४३	इन्द्राग्नी नवति	३०३५
इन्द्र दद्या यामकोशा	१२५२	इन्द्र अविष्ठ सत्यते	३३२	इन्द्राग्नी यमवथ	३०४०
इन्द्र दद्यास्व पूगसि	६६७	इन्द्र शुद्धो न आ	२३४३	इन्द्राग्नी युव सु न	३१०१
इन्द्र नेदीय गृहिहि	५२९	इन्द्र शुद्धो हि नो	२३४४	इन्द्राग्नी युवामिमे	३०६२
इन्द्र तं शुभम पुरुहन्	२३२०	इन्द्रश्च मृळयाति नो	१२३६	इन्द्राग्नी युवोरपि	३०५४
इन्द्र नरो नेमधिता	२२०३	इन्द्रश्च वायवेषां	३२२७, ३२३१	इन्द्राग्नी रोचना	३०३८
इन्द्र पित्र तुभ्य	१९८८	इन्द्रश्च सञ्जाद् वरुणश्च	३२०९	इन्द्राग्नी शतदाज्ञि	३०३९
इन्द्र पित्र प्रतिकाम	२७३५	इन्द्रश्च सोमं पिबतं	३३२३, ३३२९	इन्द्राग्नी शृणुतं	३०७०
इन्द्र पिब वृषधृनस्य	१३९७	इन्द्रश्चिद् धा तदब्रवीत्	२२६	इन्द्राग्नीमासु नारिषु	२६५०
इन्द्र पिब स्वधया	१३२१	इन्द्र श्रुधि सु मे	६८४	इन्द्राग्नी पुषणा वय	३३३०
इन्द्र प्र णः पुरपुतेय	२१०५	इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि	१२२२	इन्द्राग्नी वृहता	३३५६
इन्द्र प्र णो धितावानं	१३६६	इन्द्र सोमं सोमपते	१२८२	इन्द्राग्नी वृहस्पती वयं	३३२१
इन्द्र प्र णो रथमव	६६४	इन्द्र सोममिम पिब	२४८८	इन्द्राग्नी गाव आशिरं	२३०९
इन्द्र प्रेही पुरस्त्रं	४०२	इन्द्र सोमाः सुता इमे	१३६७, १३८६	इन्द्राग्नी गिरो अनिशित	२६६६
इन्द्र ब्रह्म क्रियमाणा	१६८१	इन्द्रस्तुजो बर्हणा	१३०५	इन्द्राग्नी नूनमर्चतोकथानि	९४१
इन्द्रमग्निं कविच्छदा	३०३२	इन्द्रस्तुराषाणिमत्रो	२८६५, २९९९	इन्द्राग्नी मद्भने सुतं	२४१५
इन्द्र मरुन्व इह	१४४०	इन्द्रस्त्रातोत वृत्रहा	२९१६	इन्द्राग्नी साम गायत	२३६४
इन्द्रमिस्था गिरो	१३८४	इन्द्र स्थातर्हरीणां	१८०६	इन्द्राग्नी सु मद्रित्तमं	१०५
इन्द्रमित् केशिना	३६५	इन्द्रस्य कर्म सुकृता	१२८९	इन्द्राग्नी सोमाः प्रदिवो	१३२४
इन्द्रमिन्द्रायिनो	२८	इन्द्रस्य तु वीर्याणि	७१५	इन्द्राग्नी हि द्यौरसरो	१०२१
इन्द्रमिद् देवतातय	१६०	इन्द्रस्य बाहू स्थविरौ	२९१४, ३०००	इन्द्राग्नी याहि चित्रभानो	१
इन्द्रमिद्धरी वहतो	९३८	इन्द्रस्य मन्महे शश्वद्विद्व	२८६७	इन्द्राग्नी याहि तृजान	३
इन्द्रमिद् विमहीनां	२८६	इन्द्रस्य रूपमृषभो	२९४९	इन्द्राग्नी याहि धियेषितो	२
इन्द्रमीशानमोजसाभि	७७	इन्द्रस्य वज्र आयसो	२३४७	इन्द्राग्नी याहि वृत्रहन्	२९६५
इन्द्रमुक्थानि वावृधुः	२७७	इन्द्रस्य वृष्णो वरुणस्य	२६९९	इन्द्राग्नी युव वरुणा	३१४९, ३१५०
इन्द्र मृळ मल्ल	२१०८	इन्द्रस्य सयूरसिन्द्रस्य	२९२२	इन्द्राग्नी नू नु	३१४१
इन्द्रमेव धिपणा	१८७२	इन्द्रस्याङ्गिरसा	८७४	इन्द्राग्नी वरुणयोरहं	३१४४
इन्द्र परेऽवरे मध्यमास	१५९५	इन्द्रस्यात्र तविषीभ्यो	२७५०	इन्द्राग्नी वामहं	३१४०
इन्द्रं प्रन्नेन मन्मना	६३३	इन्द्राकुत्सा वहमाना	३३५४	इन्द्राग्नी मधुमत्तमस्य	३१७१
इन्द्रं प्रातर्हवामह	८०	इन्द्रा को वां वरुणा	३१४६	इन्द्राग्नी यद्विमानि	३१७६
इन्द्रं मतिर्हृद आ	१३५५	इन्द्राग्नी अपसर्युप	३०३६	इन्द्राग्नी यद्विषीभ्यो	३२०७
इन्द्र य उ नु ते अस्ति	६७७	इन्द्राग्नी अपादियं	३०५१	इन्द्राग्नी युवं	३१७२
		इन्द्राग्नी अवसा	३०८५		

इन्द्रावरुणा वधनाभि	३१८५	इन्द्रो ब्रह्मा बाह्यागात्	२९१७	इमा उ वां भुमयो	३१४३
इन्द्रावरुणावभ्या तपति	३१८६	इन्द्रो ब्रह्मन्द्र ऋषिरिन्द्रः	३८८	इमो सुपूर्वा धियं	२८५
इन्द्रावरुणा सुतपाविमं	३१७७	इन्द्रो मदाय वावृधे	९१६	इमां गायत्रवर्तनि	३०९६
इन्द्रावरुणा सौमनसं	३२०८	इन्द्रो मधु संभृतमुस्त्रियायां	१३६०	इमा जुषेयां सवना	३०९५
इन्द्राविष्णू तत् पनयाय	३३१०	इन्द्रो महां सिन्धुमाशया	११०९	इमा धाना धृतस्नुवो	७९
इन्द्राविष्णू दहिताः	३३१५	इन्द्रो महां महतो	२७२८	इमानि त्रीणि विष्टपा	१७८७
इन्द्राविष्णू पिबतं	३३१२	इन्द्रो महां रोदमी	१६१	इमानि वां भागधेयानि	३२०२
इन्द्राविष्णू मदपती	३३०८	इन्द्रो यज्वने पृणते	३३५२	इमां त इन्द्र सुष्टुति	३१८
इन्द्राविष्णू हविषा	३३११	इन्द्रो यातूनामभवत्	२२८९, ३२२८	इमां ते धियं प्रभरे	८२८
इन्द्रासोमा तपत्	३२७८	इन्द्रो यातोऽवासितस्य	७२९	इमां ते वाचं वसूर्यत	१०१६
इन्द्रासोमा दुष्कृतो	३२८०	इन्द्रो रथाय प्रवत	१६९३	इमां म इन्द्र सुष्टुति	२७४
इन्द्रासोमा पक्वमासु	३२७४	इन्द्रो राजा जगतः	२२०५	इमा ब्रह्म बृहद्विषो	२७७१
इन्द्रासोमा परि वां	३२८३	इन्द्रो वाजस्य स्थविरस्य	१९७७	इमा ब्रह्म ब्रह्मवाह	१३७५
इन्द्रासोमा महि	३२७१	इन्द्रो विश्वस्य राजति	२९७३; २९९२	इमा ब्रह्मन्त्र तुभ्यं	२८१२
इन्द्रासोमा युवमङ्ग	३२७५	इन्द्रो वृत्रमवृणोच्छर्वनीतिः	१३०३	इमासु पु सोमसुतिमुप	३०७६
इन्द्रासोमा वर्तयतं दिवो	३२८१	इन्द्रो वृत्रस्य तविषीं	९०९	इमामू पु प्रभृति	१३२३
इन्द्रासोमा वर्तयत दिवस्परि	३२८२	इन्द्रो वृत्रस्य दोषतः	९०४	इमास्त इन्द्र पृश्नयो	२६१
इन्द्रासोमावहिमपः	३२७३	इन्द्रो हर्यतमर्जुनं	१४०३	इमे चित् तव मन्थवे	९१०
इन्द्रासोमा वासयथ	३२७२	इम इन्द्र मदाय ते	२९८१	इमे त इन्द्र ते वय	८१४
इन्द्रासोमा समवशस	३२७१	इम इन्द्राय सुनिरे	२२३८	इमे त इन्द्र सोमाः	२९७८
इन्द्रा ह यो वरुणा	३१४७	इम उ त्वा पुरुशाक	१९०५	इमे त इन्द्र सोमास्तीव्रा	१२५
इन्द्रा ह रत्नं वरुणा	३१४८	इम उ त्वा वि चक्षते	४५८	इमे भोजा अङ्गिरसो	१४५९
इन्द्रियाणि शतक्रनो	१३४२	इमं यज्ञं त्वमस्माकमिन्द्र	१५३५	इमे वां सोमा अस्त्रा	३२१७
इन्द्रे अग्ना नमो	३०८२	इमं स्तोममभिष्टये	२९१	इमे सोमाम इन्द्रवः	८३
इन्द्रेण मन्थुना	२९१३	इमं कामं मदाय	१२५७, १४३२	इमे हि ते कारवो	१७३
इन्द्रेण रोचना दिवो	३६२	इम जुषस्व गिर्वर्णः	२९२	इमे हि ते ब्रह्मकृतः	२२३६
इन्द्रेण सं हि दक्षसे	३२४६	इमं नर पर्वतास्तुभ्यमाप	१३१९	इयं वामस्य मन्मन	३०७९
इन्द्रेणैते तृप्तवो	२१३३	इमं नु माथिनं हुव	६२८	इयं वां ब्रह्मगस्पते	३३६१
इन्द्रेमं प्रतरां नय	२९३५	इममिन्द्र गवाशिर	१३८८	इयं त इन्द्र गिर्वर्णो	३२४
इन्द्रे विश्वानि वीर्या	५८३	इममिन्द्र सुन पिब	९४०	इयं त ऋत्विवावती	२९७
इन्द्रेहि मत्स्यं धसो	४८	इमं विभर्मि सुकृतं	२५७६	इयमिन्द्रं वरुणमष्ट	३१९६; ३२०१
इन्द्रो अङ्ग महद्	१२३५	इमा अभि प्र णोनुमो	२४९	इयसु ते अनुष्टुतिः	५८५
इन्द्रो अश्राधि	७५८	इमा अस्य प्रतूर्तयः	३४९	इयमेषाममृतानां	२६३६
इन्द्रो अस्मो अरदद्	१२९९	इमा इन्द्रं वरुणं मे	३१५४	इयं मनीषा बृहती	३३१६
इन्द्रो जयानि न परा	२९०२	इमा उ त्वा पस्पृधानासो	२१२१	इषा मन्दस्वादु तेऽं	६८१
इन्द्रोतिभिर्बहुलाभिर्नो	२९०५	इमा उ त्वा पुरुतमस्प	१८९७	इष्कर्वारमनिष्कृतं	२३८३
इन्द्रो दधीचो अस्थभिः	९४९	इमा उ त्वा पुरुवसो	१५८	इष्टा होत्रा असृक्षत	२४५२
इन्द्रो दिव इन्द्र ईशे	२६७१	इमा उ त्वा शतक्रनो	२०८४	इह त्या सधमाद्या युजानः	३४७
इन्द्रो दिवः प्रतिमानं	२७२९	इमा उ त्वा सुतेसुने	२०८७	इह त्या सधमाद्या हरीरे०८, २४५३	
इन्द्रो दीर्घाय चक्षम	३०				

इह त्वा गोपरीणसा	४६६	उत दास कौलितरं	१६१९	उद्यत् सहः सहस	१६९५
इह प्रमाणमस्तु	३२२६	उत दासस्य चर्चिनः	१६२०	उद्यदिन्द्रो महते	१७११
इह श्रुत ईन्द्रो अस्मे	२४६७	उत न कर्णशोभना	६५३	उद्यद्भस्मस्य विष्टपं	२३१०
इहि तिस्त्र परावत	२०१	उत न पितुमा भर	१८७	उद् बृह रक्षः	१२५४
इहेन्द्राग्नी उप ह्वये	३००२	उत नः सुत्रात्रो देवगोपाः	३१६७	उन्मा पीता अयंसन	२८५२
ईक्षे रायः क्षयस्य	१५४०	उत न सुभर्गो	९	उप क्रमस्वा भर	६७६
ईक्ष्वर्यतीरपस्युव	२८१९	उत नूनं यदिन्द्रियं	१६२८	उप त्वा कर्मन्नुतये	४१०
ईडे अग्निं स्वावगु	२९०८	उत नो गोमत्स्कुधि	१८८	उप त्वा देवो अग्रमी०	३१३३
ईयुर्यं न न्यर्थ	२१२७	उत प्रहामतिदीव्या	२५५४	उप नः सवना	५
ईयुर्गावो न यवसाद्	२१२८	उत ब्रह्मण्या वय	२७५	उप नः सुतमा गहि सोम	१३८२
ईशानासो ये दधते	३२३४	उत ब्रह्माणो मरुतो	१६६९	उप नः सुतमा गहि हरिभि	८१
उक्थउक्थे सोम	२१९९	उत ब्रुवन्तु नो निदो	८	उप नो हरिभिः सुत	२४६०
उक्थं चन शस्यमानम्	१२२	उत माता महिषमन्त्रवेन	१५१९	उप प्रक्षे मधुमति	२९८७
उक्थमिन्द्राय शंस्यं	६२	उत शुष्णस्य धृणुया	१६१८	उप प्रेत कुशिकाश्चेतय	१४६३
उक्थवाहसे विभ्रे	२३५५	उत सिन्धु विबाल्यं	१६१७	उप ब्रह्मं वावाता	२४२
उक्थेभिर्वृत्रहन्तमा	३०८९	उत स्मा सद्य इत्	१६३७	उप ब्रह्माणि हरिवो	२७०८
उक्थेत्विन्नु ग्रा	११०३	उत स्मा हि त्वामाहु	१६३६	उपमं त्वा मयोनां	५२५
उक्ष्णो हि मे पञ्चदश	२६५३	उत स्वराजे अदितिः	३०१	उप मा मतिरस्थित	२८५३
उग्रं युयुत्सम पृथनासु	५५९	उताभये पुरुहूत	१२४२	उपयामगृहीतोऽसि	२९२३
उग्रं न वीरं नमसोप	४९०	उतो घा ते पुरुष्याः	२२१६	उप यो नमो नमसि	१५४८
उग्रबाहुर्भक्षकृत्वा	५५७	उतो नो अस्य कस्य	१७५८	उपस्थाय मातरमन्नं	१४२१
उग्रस्तुराषाळभि	१४२२	उतो नो अस्या उषसो	१०२६	उपह्वे गिरीणां संगथे	२७०
उग्रा विघनिना मृध	३०६०	उतो पतिर्य उच्यते	३२९	उपाजिरा पुरुहूताय	१३१३
उग्रा सन्ता हवामह	३००५	उत् तिष्ठताव पश्यत	२८३६	उपेदमुपपचनं	३३५३
उग्रेत्विन्नु गूर	१११७	उत् तिष्ठन्नोजसा सह	६३७	उपेदहं धनदामप्रतीतं	७३१
उग्रो जज्ञे वीर्याय	२१५१	उत् ते शतान्मघवन्नुच	८३४	उपो नयस्व वृषणा	१३१४
उज्जातमिन्द्र ते शव	५७५	उत् त्वा मन्दन्तु स्तोमाः	५८९	उपो पु शृणुहि गिरो	९२५
उज्जायतां परशुज्योतिषा	२५६५	उत् पूषणं युवामहे	३३३५	उपो ह यद विदथं	३०७३
उत ऋतुभिर्ऋतुपाः	१४१६	उदभ्राणीव स्तनयन्	२०४७	उपो हरीणां पति	१८०३
उत ते सुष्टुता हरी	३४३	उदावता त्वक्षसा	१८६४	उभयं शृगवन्न न	५४८
उत त्वदाश्वभ्य	२६६	उदिन्वस्य रिच्यते	२२४६	उभा जिग्यथुर्न परा	३३१३
उत त्वं पुत्रमयुवः	१६२१	उदु त्वे मधुमत्तमा	१७०	उभा देवा दिविस्पृशा	३२१३
उत त्वा तुर्वशायद्	१६२२	उदु ब्रह्माण्यैरत	२१८०	उभा वार्मिन्द्राग्नी	३०६८
उत त्वा सद्य आर्या	१६२३	उदू पु णो वसो महे	२३२९	उमे चिदिन्द्रोदसी	२१५४
उत त्वे मा ध्वन्यस्य	१७२६	उद् गा आजदङ्गिरोऽय	३६१	उमे पुनामि रोदसी	१०३४
उत त्वे मा पौरुकुस्यस्य	१७२४	उद्ग्राभं च निग्राभ	३११९	उमे यदिन्द्रोदसी	२७८५
उत त्वे मा माहताश्वस्य	१७२५	उद्देदभि श्रुतामघ	२४३०	उरं यज्ञाय चक्रधुर	३३१४
उत त्व मघवन्नुणु	४४८	उद्द्यामिवेत् तृणजो	२२६६	उरं गभीरं जनुषाम्युग्रं	१४१२
उत त्वा बधिरे जय	४५९	उद्वपय मघवन्नायुधा०	२७००	उर णस्तन्वे तन	२३०२

उरं नभ्य उरं गव	२३०३	एतदस्या अनःगये	३३४७	एवा ता विश्वा	१८५३
उरं नौ लोकमनु	२१०६	एतद् वेदुत वीर्यं मिन्द्र	१६१६	एवा ते गृत्समद्राः	१२०६
उरुव्यचसे महिने	२२३३	एता अश आशुषाणास	३०७८	एवा ते वयमिन्द्र	२६७८
उरोष्ट इन्द्र राधसो	१७५५	एता अर्षललला भवंती	१५१४	एवा ते हारियोजना	८७१
उल्लकयातुं शुशुल्लकयातुं २२९०, ३२९९		एता च्यौत्नानि ते कृता	६४८	एवा त्वामिन्द्र वज्रिन्नत्र	१५२२
उवे अम्ब सुलाभिके	२६४६	एता त्वा ते श्रुत्यानि	२७९७	एवा देवा इन्द्रो	२६००
उशना यत् सहस्यै.	१६७५	एतानि भद्रा कलश	२५३८	एवा न इन्द्र वार्यस्य	२१९१, २१९७
उशंता दृता न	३२३६	एतायामोप गव्यत	७३०	एवा न इन्द्रोतिभिरव	१७२३
उशन्तु षु णः सुमना	१५३६	एतावतस्त ईमह	४९३	एवा न इन्द्रो मववा	१५०७
ऊती शचीवस्तव	२७०६	एतावतस्ते वसो	५०३	एवा नः स्पृधः समजा	१९४६
ऊर्जा देवा अवस्योजसा	१७७१	एता विश्वा चक्रवा	१६८०	एवा नूनमुप स्तुहि	१८१२
ऊर्ध्वस्तिष्ठा न ऊतये	७०४	एता विश्वा सवना	२६०६	एवा नृभिरिन्द्रः	१०९९
ऊर्ध्वा यत् ते त्रेतिनी	२७२२	एतु तिस्र परावत	२८९८	एवा पतिं द्रोणसाचं	२५७१
ऊर्ध्वासस्त्वान्निवन्द्वो	२२३१	एते त इन्द्र जंतवो	९२४	एवा पाहि प्रसन्था	१८४३
ऊर्ध्वा हि ते दिवेदिवे	४५४	एते स्तोमा नरां नृतम	२१४९	एवा महान् बृहद्विवो	२७७२
ऊर्ध्वो ह्यस्थादध्यन्तरिक्षे	१२२९	एतो निवन्द्रं स्तवाम शुद्धं	२३४२	एवा महो असुर	२६९१
ऋजीषी वज्री वृषभः	१७६८	एतो निवन्द्रं स्तवाम सखाय	१८०८	एवा रातिस्तुवीमघ	२४२५
ऋतं येमान ऋतमिद्	१५७५	एतो निवन्द्रं स्तवामेशानं	६७३	एवारे वृषभा सुतेऽसिन्वन्	४८०
ऋतं देवाय कृण्वते	१२२७	एतो मे गावौ प्रमरस्य	२५१०	एवा वसिष्ठ इन्द्रमूतये	२२०२
ऋतस्य दृढा धरुणानि	१५७४	एतु मध्वो मदिन्तरं	१८०५	एवा वस्व इन्द्रः	१५५३
ऋतस्य पथि वेधा	२०४३	एना मदानो जहि	२०५२	एवा वामह ऊतये	३०९९
ऋतस्य हि शुरुध	१५७३	एन्दुमिन्द्राय सिञ्चत	१८०२	एवा सत्यं मघवाना	१६०३
ऋतस्य हि सदसो	२७२६	एन्द्र नो गधि प्रियः	२३६७	एवा हि ते विभूतय	४६
ऋतुर्जनित्री तस्या	११३७	एन्द्र पृष्ठु कासु	२९८०	एवा हि ते शं सवना	१०६३
ऋभुक्षणं न वर्तव	४७१	एन्द्र याहि पीतये	२२२	एवा हि त्वास्तुथा	१७१६
ऋशयो न तृष्यन्नवपानमा	२३८	एन्द्र याहि मस्व	१०९	एवा हि मां तवस	२५२७
ऋषिर्हि पूर्वजा अस्येक	२८३	एन्द्र याहि हरिभिरुप	४२५	एवा ह्यसि वीरयुरेवा	२४२४
ऋषवस्त्वामिन्द्र शूर	२८१०	एन्द्र याह्युप नः	१०११	एवा ह्यस्य काम्या	४७
ऋषवा ते पादा प्र	२६२५	एन्द्रवाहो नृपतिं	२५७०	एवा ह्यस्य सूनृता	४५
एकं च यो विंशति	२१२९	एन्द्र सानसिं रथि	३८	एवेदिन्द्रं वृषणं	२१८५
एकं नु त्वा सत्पतिं	१७१५	एभिर्द्युभिः सुमना	७७८	एवेदिन्द्रः सुते	१९२७
एकया प्रतिधापिबत्	६४३	एभिर्न इन्द्राहभिर्दशस्य	२२११	एवेदिन्द्र सुहव	१९६७
एकराळस्य भुवनस्य	१७७८	एभिर्नृभिर्मिन्द्र	१४८५	एवेदिन्द्राय वृषभाय	१४८६
एकस्य चिन्मे विश्वः स्वोजः	३२५९	एमाशुमाशवे	१०	एवेदेते प्रति मा	३२६१
एको द्वे वसुमती	१२४८	एमेनं सृजता सुते	४९	एवेदेष्ट तुविकूर्मिवाजां	१४६
एत उ त्वे पतयन्ति	२२८८, ३२९७	एमेनं प्रत्येतन	१९९९	एवेन्द्राग्निभ्यामहावि	३०४५
एतत् त इन्द्र वीर्य	५३३	एवा जज्ञानं सहसे	१९८२	एवेन्द्राग्निभ्यां पितृव०	३११२
एतत् त्वत् त इन्द्र वृष्ण	९७३	एवा त इन्द्रोवथ महेम	१२०५	एवेन्द्राग्नी पपिबांसा	३०२०
एतत् त्वत् त इन्द्रियमचेति	१९५८	एवा तदिन्द्र इंदुना	२८०३	एवेन्नु कं सिन्धुमे०	२२६४
		एवा तमाहुस्त शृण्व	२२०१		

एवैवापागपरे संतु	२५७४	कथा शृणोति हूयमान	१५६८	कि नो आतरगस्त्य	१०५३
एष एतानि चकारद्रो	१४२	कथा सबाधः शशमानो	१५६९	किमङ्ग त्वा मघवन्	२५४८
एष ग्रावेव जरिता	१७४७	कथो नु ते परि चराणि	१६७९	किमङ्ग रभ्रचोदन	६६३
एष ते यज्ञो यज्ञपते	३१२५	कदा चन प्रयुच्छस्युभ	५२१	किमयं त्वा वृषाकपि.	२६४२
एष द्रप्सो वृषभो	१९९५	कदा चन स्तरीरसि	५११	किमस्य मदे किम्वस्य	१९५५
एष प्र पूर्वोरव तस्य	८०५	कदा त इन्द्र गिर्वग	३४२	किमादमत्र सख्यं	१५७१
एष ब्रह्मा य ऋग्विय	२९८६	कदा भुवन् रथक्षयाणि	२०२६	किमादुतासि वृत्रहन्	१६१५
एष वः स्तोमो मरुत	३२६४	कदा मर्तमराधसं	९४४	किमु धिदस्यै निविदो	१५१५
एष स्तोम इन्द्र	१०६८	कदा वसो स्तोत्रं	२७१४	क्रियती योषा मर्यतो	२५०२
एष स्तोमो अचिक्रद्द	२१५२	कदु युष्मिन्द्र	२५१८	क्रियत् स्विदिन्द्रो	१४९९
एष स्तोमो मह उग्राय	२१९०	कदु स्तुवन्त ऋतयन्त	१६९	कीरिशिद्धि त्वामवसे	२१६८
एह हरी ब्रह्मयुजा शम्भा	१४२	कदू न्वशस्याकृतं	६२१	कुतस्त्वमिन्द्र माहिनः	२९६८; ३२५२
एहि ग्रहि क्षयो	५९२	कदू महीरथष्टा	६२२	कुत्सा एते हर्षशाय	२१९६
एहि स्तोमो अभि स्वरा	६१	कनीनकेव विद्रधे	३३४८	कुत्साय शुण्णमशुषं	१४७८
ऐनान्द्यतामिद्राग्नी	३१३०	कं ते दाना असक्षत	५९७	कुम्भो वनिष्ठुर्जनिता	२९४५
ऐभिर्ददे वृष्ण्या	२६२०	कन्नयो अतसीनां	१६८	कुविच्छकत् कुवित्	१७८६
ऐषु चाकन्धि पुरुहुत	२८०६	क नश्चित्रमिषण्यसि	२६८०	कुवित्सस्य प्र हि	२०८३
ऐषु नहा वृषाजिन	२८९५	कन्या वारवायती	१७८३	कुविदङ्ग यवमन्तो	२७७४.
ओकिवांसा सुते	३०४८	कया तच्छृण्वे शच्या	१५४१	कुविन्मा गोपां करसे	१३९५
ओजस्तदस्य तिल्विष	२४७	कया त्व न ऊत्या	२४४८	कुह श्रुत इन्द्रः कस्मिन्नय	२४६६
ओते मे द्यावापृथिवी	२८७४	कया नदिचत्र आ	१६३०	कृणोत्यस्यै वरिवो	१५८२
ओ त्ये नर इन्द्रमृतये	८४८	कया शुभा सवयसः	३२५०	कृतं न श्वघ्नी वि	२५६१
ओषमित् पृथिवीमहं	२८५९	कर्णगृह्णा मघवा	२३३५	कृतं नो यज्ञ विदधेषु	३१२४
ओषु प्र याहि वाजंभिर्मा	१३४	कहिं स्वित् तदिन्द्र यज्ञरिभ्रे	२०२८	कृतं मे दक्षिणे हस्ते	२९१०
ओ सुषुत इन्द्र	१०९५	कहिं स्वित् तदिन्द्र यन्मुभिर्नृन्	२०२७	केतुं कृण्वन्नकेतवे	२६
औच्छत् सा रात्री	३३३९	कहिं स्वित् सा त इन्द्र	२६७५	के ते नर इन्द्र ये	२६०३
क्र इमं दशभिर्ममेन्द्र	१५८६	कविर्न निष्य विदथानि	१४६९	को अग्निमीद्रे हविषा	९५४
क्र इमं नाहुषीष्वा	२९७५	कस्तमिन्द्र त्वावसुमा	२२४८	को अद्य नर्यो देवकामः	१५८८
क्र ई वेद सुते सचा	२१६	कस्ते मद इन्द्र रन्वो	२५१७	को अद्य युद्धे धुरि	९५२
क्र ई स्तवत् कः	२११३	कस्ते मातरं विधवामचक्र०	१५२०	को अस्य वीर. सधमा०	१५६७
क्र ईषते तुज्यते	९५३	कस्त्वा सत्यो मदानां	१६३१	को अस्य शुष्मं तविषी	१७१३
क्र उ नु ते महिमान.	२६१०	कस्य ब्रह्माणि जुष्टुयुवा	३२५१	को देवानामवो अद्या	१५९०
क्रकुहं चित् त्वा कवे	४५६	कस्य वृषा सुते सचा	२४४९	को नानाम वचसा	१५८९
कण्वा इन्द्रं यदक्रत	२४५	कस्य स्वित् सवन	५९६	को नु मर्यां अमिथित	४७९
कण्वा इव भृगवः	१७१	का ते अस्तरं कृतिः	२२१५	को न्वत्र मरुतो	३२६२
कण्वास इन्द्र ते	२७३	का सुष्टुतिः शवसः	१५७७	क्रतयन्ति क्षितयो	१५८०
कण्वेभिर्धृणवा	२१२	किं स ऋधक् कृणवद्	१५१२	क्रत्व इत् पूर्णमुदरं	६५७
कथा कदस्या उषसो	१५७०	कि सुबाहो स्वङ्गुरे	२६४७	क्रत्वा महो अनुष्वधं	९१९
कथा त एतदहमा	२५२६	किं ते कृणवन्ति कीकटेषु	१४६६	क्रीळन्त्यस्य स्रुता	३२८
कथा महामवृधत्	१५६६	कि न इन्द्र जिघांससि	१०५२		

कः स्य वीरः को अपश्यदिन्द्रं	१६८२	गोभिर्द्यदीमन्ये	१२१	तं वो धिया नव्यस्या	१९१३
कः स्य वृषभो युवा	५९५	गोभिष्टरेमामति	२५५५, २५६६, २५७७	तं वो धिया परमया	१९८०
कः स्या वो मरुतः	३२५५	गोमद्विरण्यवद्	३०८७	तं वो महो महायय०	२३२८
केयथ केदसि पुरुत्रा	९३	ग्राश्च यज्ञश्च	३१६४	तं वो वाजानां पति०	१८०७
क्षत्राय त्वमवसि	१७८१	घृतप्रुषः सौम्या	३२०५	तं शिशीता सुवृक्तिभि०	३११०
क्षियन्तं त्वमक्षियन्तं	१५००	घृषुः द्येनाय कृत्वन	२८००	त शिशीता स्वध्वरं	३१११
क्षेमस्य च प्रयुजश्च	१७८०	चकार ता कृणवन्नूनमन्या	२२००	त सध्रीचीरूनयो	२०३३
स्वे रथस्य खेऽनसः	१७८९	चक्र यदस्यास्वा	२६३१	तं सुष्टुत्या विवासे	३८४
गन्तारा हि स्थोऽवसे	३१३५	चक्र न वृत्तं पुरुहूत	१७४६	तं स्मा रथ मघवन्	८३०
गन्तेयान्ति सवना	१९२१	चक्राणास परीणहं	७३७	त हि स्वराज्यं वृषभं	५४९
गमद् वाजं वाजयन्तिन्द्र	२२४५	चक्राथे हि सध्र्यऽङ्नाम	३०१०	तक्षद् यत् त उगना	७५४
गमन्नस्ये वसून्त्या	२५७२	चतु सहस्रं गव्यस्य	३३४०	त गूनयो नेमन्निव.	८०६
गम्भीरौ उदधोरिव	१४०६	चत्वारि ते असुर्याणि	२६११	त धेमिन्धा नमस्विन	२३१९
गम्भीरण न	१९३६	चन्द्रमा ऽअप्स्वन्तरा	२९७१	ततुर्विरीरो नर्यो	१९२९
गर्भो यज्ञस्य देवयुः	२९८	चर्षणिष्टनं मघवान०	१४३४	तत् त इन्द्रियं परमं	८३९
गवाशिरं मन्थिनमिन्द्र	१२८३	जगुभमा ते दक्षिणमिन्द्र	२८४२	तत् तु प्रयः प्रस्तथा	१०३०
गव्यत इन्द्रं	१५०३	जघन्वा इन्द्र	१०७४	तत् ते यज्ञो अजायत	२३८९
गव्यो पु णो यथा	१८२६	जघन्वा उ हरिभिः	७६७	तत् त्वा यामि सुवीर्यं	१६४
गाथश्रवसं सत्पति	१५३	जघान वृत्र स्वभि०	२६६८	तत्रो अपि प्राणीयत	५४७
गायत् साम नभन्यं	१०५६	जज्ञान एव व्यबाधत	२७४८	तथा तदस्तु सोमपाः	७१०
गायति त्वा गायन्निणो	५८	जज्ञानः सोमं सहसे	२२८१	तद्या चित् त उक्थिनो	३७४
गावो न यूथमुप	१८३८	जज्ञानो नु शतक्रतुर्वि	६४०	तदक्षिना भिषजा	२९४०
गावो यवं प्रयुता	२४९८	जज्ञानो हरितो	१४०२	तदस्यै नव्यमङ्गिर०	११८१
गिरश्च यास्ते गिर्वाह	१४५	जनं वज्रिन् महि	१८८२	तदस्य रूपममृतं	२९३९
गिरा वज्रो न संभृतः	२४३८	जनिता दिवो जनिता	१७७२	तदस्येद पश्यता भूरि	८४३
गिरिर्न य. स्वतर्वा	१५३८	जनिताश्चानां जनिता	१७७३	तद्वित सध्र्यस्यमभि	२५३३
गिरीरज्रान् रेजमानां	२५७५	जनिष्ठा उग्र सहसे	२६२३	तदिदास भुवनेषु	२७६४
गिर्वणः पाहि नः	१३६९	जयेम कारे पुरुहूत	४२०	तदिद रुद्रस्य चेतति	३४०
गीर्भिर्विप्रः प्रमतिमिच्छमान	३०७४	जायेदस्त मघवन्सेदु	१४५६	तदिन्द्र प्रेव वीर्यं	८४५
गुहा सतीरुप त्मना	२५०	जुष्टी नरो ब्रह्मगा व	२२६५	तदिन्द्राव आ भर	१८१४
गुहा हित गुह्यं	११०५	जुषेथां यज्ञमिष्टये	३०९४	तदिन्नु ते करणं दस्म	१६९९
गृणानो अङ्गिरोभिर्दस्य	८७६	जेता नृभिरिन्द्रः	१०९८	तदिन्वस्य वृषभस्य	१३५२
गृणे तदिन्द्र ते शव	५७३	ज्येष्ठेन सोतरिन्द्राय	१३८	तदिन्वस्य सवितु.	१३५२
गृभीतं ते मन इन्द्र	२१८७	ज्योतिर्यज्ञाय रोदसी	१३६२	तदिन्मे छन्सद्वपुषो	२५३२
गृष्टिः समूव स्थविरं	१५१८	ज्योतिर्वृणीत तमसो	१३६१	तदु प्रयक्षतमस्य	८७७
गृहो याम्यरंक्रतो	२८६२	त इन्निष्यं हृदयस्य	२२७०	तदूचुषे मानुषेमा	८४२
गोजिता बाहू अभितक्रुतः	८३३	त इन्वस्य मधुमद्	१२८५	तदधाना अवस्यवो	५८७
गोत्रभिदं गोविदं	२६९६	तं व इन्द्रं चतितमस्य	१८७४	तद् व उक्थस्य	२०४१
गोभिर्मिभिक्षुं	१४३१	त वः सखायः	१९२६	तद् विविडिह यत्	२३५६
		तं वो दस्मृतीषह	८९४	तद् वो गाय सुते सचा	२०८१

ततमिद्राधसे मह	२२९७	तमु दृहि यो अभि०	१८५६	ता ई वर्धन्ति मद्यस्य	३३०५
त ते मदं गृणीमसि	३७२	तमु दृहीद्र यो	१०६०	तां सु ते कीर्तिं मधवन्	२६०८
त ते यय यथा गोभिः	११८०	तमु स्तुष इन्द्रं त	१२११	ता कर्माषतरास्मै	१०५९
तं त्वा मरुत्वती	२२३०	तमु स्तुष इन्द्र यो	१८९८	ता गृगीहि नमस्येभिः	३१६३
त त्वा यज्ञेभिरीमहे	२३००	तमूतयो रणयञ्छरसातौ	९६३	ता तू त इन्द्र महतो	१५५९
त त्वा विश्वजारा	७०८	त पृच्छन्ती वज्रहस्तं	१९११	ता तू ते सत्या तुविनृम्ण	१५६०
त त्वा वाजेषु वाजिन	१२	तं पृच्छन्तोऽवरासः	१९०२	ता ते गृणन्ति वेधसो	१६५५
त त्वा हविष्मतीर्विश	२६९	तम्बभि प्र गायत	३६९	तां आशिर पुरोळाशमिद्रेमं	१२६
तज्ञः प्रत्न रुख्यमस्तु	१८६०	तम्बभि प्रार्चतेन्द्रं	२४०१	ता नासत्या सुपेशसा	२९५८
तज्ञो वि वोचो	१९१०	तयोरिदमवच्छव०	३०४२	ता नो वाजवतीरिष	३०६७
तन्म ऋतमिन्द्र शूर	९९०	तयोरिदवसा वय	३१३९	ताभिरा गच्छतं	३०६४
तमङ्गिरस्वन्नमसा	१२७८	तरणि वो जनानां	४७०	ता भिषजा सुकर्मणा	२९५९
तमद्य राधसे महे	६००	तरणिरित् सिषासति	२२५४	ता महान्ता सदस्वती	३००६
तमप्सन्त शवस	९६४	तराभिर्वो विदद्भुसुमिन्द्रं	६१३	ता मित्रस्य प्रशस्तय	३००४
तमर्केभिस्त सामभिस्तं	३९०	तव ऋ-वा तव तद्	१८४६	तां पूष्णः सुमतिं वयं	३३३४
तमस्य द्यावापृथिवी	२७४५	तव व्यौत्नानि वज्रहस्त	२१४४	ता यज्ञेषु प्र शंसते०	३००३
नमस्य विष्णुर्महिमान०	२७४६	तव त्व इन्द्र सस्येषु	२७९२	ता योधिष्टमभि	३०५७
नमहे वाजसातय	३२३	तव त्वदिन्द्रियं बृहत्	३७५	ता वां गीर्भिर्विपन्यवः	३०८४
तमा नूनं वृजनमन्यथा	२०३०	तव त्यन्नर्थं नृतोऽप	१२२६	ता वां धियोऽवसे	३१५३
तमिच्छयौत्नैरार्यन्ति	३८७	तव त्विषो जनिमन्	१४८९	ता वामेषे रथाना०	३०४३
तमित् सखित्व ईमहे	६३	तव द्यौरिन्द्र पौंसं	३७६	ताविद् दु शंसं मर्य	३०९०
तमिद् धनेषु हितेषु	३८६	तव प्रणीतीन्द्र जोहुवा०	२२१०	ता वृधन्तावनु	३०४४
तमिद् व इन्द्र सुहव	१४८२	तव ह त्वदिन्द्र	१८९६	ता सानशी शवसाना	३०७२
तमिद् विप्रा अवस्यवः	३३७	तवायं सोमस्व०	१३१७	ता हि मध्यं भराणा०	३१०३
तमिन्द्र जोहवीमि	९८८	तवाहं शूर रातिभिः	७५	ता हि शश्वन्त ईळत	३०८३
तमिन्द्र वाजयामसि	२४३६	तवेद् विश्वमभितः	२२८४	ता हि श्रेष्ठा देवताना	३१६२
तमिन्द्र दानमीमहे	१८२२	तवेदिन्द्र प्रणीतिपूत	२६४	ता हुवे ययोरिदं	३०५९
तमिन्द्र मदमा	१३८३	तवेदिन्द्रावम वसु	२२५०	तिग्ममायुधं मरुता०	२३५३
तमिन्नरो वि ह्वयंते	१५७९	तवेदिन्द्राहमाशसा	६६०	तिग्मा यदन्तरशनिः	१४८३
तमीळिष्व यो अर्चिषा	३०६५	तवेदु ता सुकीर्तयो	४७५	तिष्ठा सु कं मधवन्	१४५४
तमीमह इन्द्रमस्य	१९०९	तस्मा अग्निर्भारतः शर्म	१५९१	तिष्ठा हरी रथ	१३१२
तमीनहे पुरुष्टुतं	३४४	तस्मिन्ना वेशया	१०८६	तीव्रस्याभिवयसो	२८२४
तमु उरैष्ठं नमसा	३३६०	तस्मिन् हि सन्त्यूयतो	१८२३	तीव्रा सोमास आ गहि	६८०
तमु त्वा नूनमसुर	२३९६	तस्मै तवस्यमनु	१२१५	तुङ्गेतुङ्गे य उत्तरे	३४
तमु त्वा नूनमीमहे	१८१५	तस्य वज्रः क्रन्दति	९६९	तुभ्यं सुतास्तुभ्यसु	२८२५
तमु त्वा यः पुरालिथ	२०७०	तस्य वयं सुमतौ	२१११; २७७७	तुभ्यं सोमाः सुता इमे	२४५४
तमु त्वा सत्य सोमपा	२०६९	तस्येदिह स्तवथ	१५४५	तुभ्यं ब्रह्माणि गिर	१४३९
तमु न. पूर्वे पितरो	१९०८	ता अस्य नमसा सहः	९४८	तुभ्यायमद्रिभिः सुतो	६८३
तमु द्रवाम य इमा	२३५०	ता अस्य पृशनायुवः	९४७	तुभ्येदमिन्द्र परि विच्यते	२८२९
तमु द्रवाम यं गिरः	२३४१	ता अस्य सूददोहसः	२३०६		

तुभ्येदिन्द्र मरुत्वते	६३५	त्रिशाच्छतं वर्मिण	१९६०	त्वं हि पमा च्यावयन्नच्युता०	१२४१
तुभ्येदिन्द्र स्व ओक्थे०	१३८९	त्रिः षष्टिस्त्वा मरुतो	२३५२	त्वं हि सत्यो मघवन्	२३९४
तुभ्येदिमा सवना	२१७७	त्रिकद्रुकेषु चेतनं	३३८, २४१७	त्वं हि स्तोमवर्धन	३६४
तुभ्येदेते बहुला	७९४	त्रिकद्रुकेषु महिषो	१२२३	त्व ह्येक ईशिष इन्द्र	१६५१
तुभ्येदेते मरुतः	१६८७	त्रिविष्टिधातु प्रातिमानमोजस०	८३५	त्वं ह्येहि चेरवे विदा	५५४
तुरण्यवो मधुमन्तं	५१४	त्रीशीर्षाणं त्रिककुटं	२८८०	त्वं करजमुत पर्णय	७८२
तुराणामतुराणां	२९०७	त्रीणि राजानां विदधे	१३५०	त्वं कवि चोदयोऽर्कसातौ	१९४९
तुरीयं नाम यज्ञियं	६६२	त्री यच्छता महिषाणामघो	१६७४	त्वं कुत्सं क्षुण्णहृत्पेवाविथा०	७५०
तुविक्षं ते सुकृतं	६५०	त्र्यर्थमा मनुषो	१६६७	त्व कुत्सेनाभि	२००८
तुविमीवो वपोदर.	४०१	त्व रथं प्र भरो	१९५०	त्व गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरपो	७४७
तुविश्रुम तुविक्रनो	२२२२	त्वं राजेन्द्र ये च	१०६९	त्वं जघन्थ नमुचि	२६२९
तुतुजानो महेमते	३३१	त्वं वर्मासि सप्रथः	२२२८	त्व जिगेथ न धना	८३७
तूर्वञ्जोजीयान् तवस०	१८८६	त्वं वलस्य गोमनो	७४	त्वङ्गियेन्द्र पार्थिवानि	२००७
तृतीये धानाः सवने	१४५१	त्व विश्वस्य धनदा	२२५१	त्वं तदुक्थमिन्द्र	१९५१
तेजःपशूनां हवि०	२९५३	त्वं विश्वा दधिषे	२६१२	त्वं तमिन्द्र पर्वत न	७९९
ते त्वा मदा अमदन्	७८०	त्वं वृथा नद्य इन्द्र	१०१५	त्व तमिन्द्र पर्वत महासुर	८१६
ते त्वा मदा इद्र	२१८४	त्वं वृध इन्द्र पूर्वो	१८९४	त्वं तमिन्द्र मर्त्य०	१७४०
ते त्वा मदा वृहदिन्द्र	१८४४	त्वं वृषा जनानां	३७८	त्व तमिन्द्र वावृधानो	१०२७
तेन सत्येन जागृत०	३००७	त्व शतान्यव शम्बरस्य	२००९	त्वं त ब्रह्मगस्यते सोम	३३५८
तेन स्तोतुभ्य आ भर	६४७	त्वं शर्धाय महिना	२८०८	त्वं तौ इन्द्रोभयो	२०१८
तेभ्यो गोधा अयथं	२५२९	त्वं श्रद्धाभिर्मन्दसान	१९५२	त्वं तान् वृत्रहृत्पे	२४७५
ते सत्येन मनसा	३२३३	त्वं सत्य इन्द्र धृष्टुरेतान्	८८७	त्वं तू न इन्द्र	१०४६
तोके हिते तनय	३१५१	त्वं सद्यो अपिबो	१२९१	त्वं त्वमिदतो रथमिन्द्र	२८३२
तोशा वृत्रहणा	३०३३	त्व सिधूत्वासृजो	२७७९	त्वं त्वमिन्द्र मर्त्य०	२८३४
तोशासा रथयावाना	३०९२	त्वं सुतस्य पीतये	१९	त्वं त्वमिन्द्र सूर्य	२८३५
त्वं सु मेघं महया	७६०	त्व सूकरस्य ददहि	२२७३	त्वं त्वा चिद् वातस्याश्वागा	२४७०
त्वं चित् पर्वत गिरिं	५९३	त्वं ह त्वात् ससभ्यो	२३५८	त्वं त्वां न इन्द्र देव	८९२
त्व चिदणं मधुपं	१७१२	त्वं ह त्वदप्रतिमानमोजो	२३५९	त्वं दाता प्रथमो	२३९२
त्वं चिदस्य क्रतुभि०	१७०९	त्वं ह त्वदिन्द्र कुत्समात्रः	२१४१	त्वं दिवो धरुग बिष	८१०
त्वं चिदिस्था कल्पयं	१७१०	त्वं ह त्वदिन्द्र चोदीः	८८८	त्व दिवो वृहतः	७८९
त्वं चिदेषां स्वधया	१७०८	त्वं ह त्वदिन्द्र सप्त	८९१	त्वं धुमिरिन्द्र	१०७७, १८९५
त्यमु व सत्रासाहं	२४०३	त्वं ह त्वदिन्द्राऽरिषण्यन्	८८९	त्व धृष्णो धृशता	२१४२
त्यमु वो अप्रहण	२०३९	त्व ह त्वदणया	२६६९	त्वं न इन्द्र क्रतयु०	२३३०
त्यस्य चिन्महतो	१७०७	त्वा ह त्वद् वृषभ	२३६०	त्वं न इन्द्र त्वाभिरुती	१२०९
त्रय इन्द्रस्य सोमाः	१२२	त्वं ह त्वा त्वददमायो	१८५८	त्व न इन्द्र राया तरुषसोमं	१००९
त्रयः कृण्वन्ति भुवनेषु	२२६८	त्व हि न. पिता वसो	२३७४	त्व न इन्द्र राया परीणसा	१००८
त्रय कोशासः श्रोतन्ति	१२३	त्वं हि राधस्पते	५६१	त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं	२२२५
त्राता नो बोधि दृशान	१५०४	त्वं हि वृत्रहज्ञेषां	२४६२	त्वं न इन्द्र शूर	२४७४
त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र	२१०९	त्वं हि शश्वतीनामिन्द्र	२३६९	त्वं न इन्द्रा भर	२३७३
		त्वं हि शूर सनिता	१०८१		

त्वं न इन्द्रासां हस्ते	२३३२	त्वं महौ इन्द्र तुभ्यं	१४८८	त्वे विश्वा तविषी	७५१
त्व नः पश्चादधरादुत्तरात्	५६३	त्वं महौ इन्द्र यो ह	८८५	त्वेषमिस्था समरण	३३०४
त्व नृभिर्नृमणो देववीतौ	२१४३	त्वं महीमननि	१५२७	त्वे सु पुत्र शवसे	२४१०
त्वं नो अस्या अमतेरुन	६२६	त्वं मायाभिरनवद्य	२८०५	त्वे ह यत् पितरश्चित्र	२११९
त्वमङ्ग प्र शसिषो	९५५	त्वं मायाभिरप	७४९	त्वोतासस्वा युजा	२२९९
त्वमध प्रथमं जायमानो	१४९४	त्वया वयं मघवन्निन्द्र	११००	त्वोतासो मघवन्निन्द्र	१६८८
त्वमपामपिधानावृणोरपा०	७४८	त्वया वयं मघवन् पूर्व	१०२८	दृण्डा इवेद् गोभजनास	२२६७
त्वमपो यद्वे तुर्वशाया०	१७००	त्वया वयं शाशङ्गहे	२७६८	ददी रेक्णस्तन्वे	१८३१
त्वमपो यद्ध वृथं	१२८७	त्वया ह स्विद् युजा	४१९	दधानो गोमदश्ववत्	१८२१
त्वमपो वि दुरो	१९७२	त्वयेदिन्द्र युजा वयं	२४२८	दधामि ते मधुनो	९९२
त्वमस्माकमिन्द्र	१०७८	त्वां यज्ञेभिरुक्थैरुप	२४८९	दधामि ते सुतानां	४२९
त्वमस्य पारे रजमो	७७१	त्वां वाजी हवते	१९४८	दधिष्वा जठरे सुतं	१३६८
त्व मानेभ्य इन्द्र	१०५०	त्वां विष्णुर्बृहन्	३७७	दध्यङ् ह मे जनुषं	३०२९
त्वमाविथ नर्य	७९१	त्वां शुष्मिन् पुरुहूत	२३७५	दनो विश इन्द्र	१०७०
त्वमाविथ सुश्रवस	७८४	त्वां सुतस्य पीतये	१३९०	दध्रे चिद्धि त्वावत	४७४
त्वमिन्द्र प्रतूर्तिष्वभि	२३८०	त्वां स्तोमा अवीवृधन्	२१	दध्रेभिश्चिच्छरीयां	१६४७
त्वमिन्द्र बलादधि	२८२०	त्वां ह त्यदिन्द्रार्णसानौ	८९०	दर्शनन्वन्न श्रुतपौ	२४९६
त्वमिन्द्र यशा अभ्यृजीषी	२३२५	त्वां हि सत्यमाद्रिवो	१८१८	दश ते कलशानां	१६६३
त्वमिन्द्र सजोषम०	२८२२	त्वा हींश्द्रावसे	२०१७	दश मङ्ग पौतकृतः	५४५
त्वमिन्द्र स्रवितवा	२१६३	त्वां जना ममस्ये०	२५४९	दश राजानः समिता	३१८८
त्वमिन्द्राधिराज	२९०३	त्वां देवेषु प्रथमं	८३६	दशानामेक कपिलं	२५०६
त्वमिन्द्राभिभूरामि विश्वा	२८२३	त्वामिच्छवसस्पते	२६३	दस्मो हि ण्मा वृषणं	१००२
त्वमिन्द्राभिभूरामि त्व	२३६५	त्वामिदा ह्यो नरो	२३७६	दस्यूच्छिष्यैश्च	९७४
त्वमिन्द्रासि वृत्रहा	२८२१	त्वामिद्धि त्वायवो	२४२९	दाता मे पृषतीनाम	६१०
त्वमीशिषे वसुपते	१०५५	त्वामिद्धि हवामहे	२०९०	दादहाणो वज्रमिन्द्रो	१०१४
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र	५९१	त्वामिद्यवयुर्मम	६५९	दाना मृगो न वारण	२१७
त्वमूर्त्तो ऋतुभि०	१७०६	त्वामिद् वृत्रहन्तम	२७९, १७४१	दानाय मनः सोमपावन्नस्तु	८०३
त्वमेकस्य वृत्रह०	२०६४	त्वमिद् वृत्रहन्तम सुतावन्तो	२४५९	दाशराज्ञे परियत्ताय	३१८९
त्वमेतदधारयः कृष्णासु	२४४२	त्वामुग्रमवसे	२०९५	दासपत्नीरहिगोपा	७२५
त्वमेताञ्जनराजी	७८३	त्वा युजा नव तत्	१५९२	दिदक्षन्त उषसो	१२५०
त्वमेतान् रुद्रतो	७३६	त्वा युजा नि खिदत्	१६००	दिवश्चिदस्य वरिमा	७९७
त्वं पाहीन्द्र सहीयसो	३२६८	त्वायेन्द्र सोमं सुषुमा	८२५	दिवश्चिदा पूर्व्या	१३५६
त्व पिप्पुं मृगय	१४७९	त्वावतः पुरुवसो	१८१७	दिवश्चिद् वा दुहितरं	३३४५
त्व पुर इन्द्र चिकिदेना	९८९	त्वावतो हीन्द्र क्रन्वे	२१९५	दिवि मे अन्यः पक्षोऽ	२८६०
त्व पुर चरिष्णवं	११४	त्वे इन्द्राप्यभूय	१११२	दिवेदिवे सदशीरन्यमर्थ	२११८
त्वं पुरुषया भरा	२७५४	त्वे ऋतुमपि वृञ्जन्ति	२७६६	दिवो न तुभ्यमन्विन्द्र	१८८५
त्वं पुरू सहस्राणि	५५५	त्वमेतानि परिषे	२६३०	दिवो न यस्य रेतसो	९५९
त्व भुव प्रतिमान	७७२	त्वे राय इन्द्र तोशतमाः	१०४७	दिवो मानं नोत्सदन्	५७९
त्वं मन्वस्य दोधत.	२८३३	त्वे वसुनि संगता	६५८	दिशः सूर्यो न मिनानि	१४४९

दीर्घं हाङ्कुशं यथा	२७२०	धेनुं न त्वा सूयवसे	२१२२	न दुष्टुती मर्त्यो विन्दते	२२५५
दीर्घस्ते अस्वङ्कुशो	४०३	धेनुष्ट इन्द्र सूनुता	३५६	न द्याव इन्द्रमोजसा	२५७
दुराध्यो अदितिं	२१२६	ध्रुवं ध्रुवेण मनसा	२९२६	न नूनमस्ति नो	१०५१
दुरो अश्वस्य दुर	७७६	ध्रुवालि ध्रुवोऽयं	२९२१	न नूनं ब्रह्मणामृणं	१९५
दुर्गे चित्रं सुगं कृधि	२४१९	नकिः परिष्टिर्मववन्	८९९	न पञ्चाभिर्दशभिर्वष्टयारभं	१७३१
दूणाशं सख्यं तव	२०८५	नकिः सुदासो रथं	२२४४	न पातो दुर्गहस्य	६१२
दूरं किल प्रथमा	२७३२	नकिरस्य शचीनां	१९४	न पापासो मनामहे	५५८
दूराच्चिद्रा वसतो	१९७९	नकिरिन्द्र त्वदुत्तरो	१६०९	न म इंद्रेण सख्यं	११९७
दूरादिन्द्रमनयज्ञा	२२६३	नकिरेषां निन्दिता	१३५८	न मत् स्त्री सुभसत्तरा	२६४५
दूरे तन्नाम गुह्यं	२६१४	नकिर्देवा मिनीमलि	२७९१	न मा तमज्ञ	१२३२
देवंदेवं वोऽवस	३०६	नकिष्टं कर्मणा नश०	२३२३	न यं विविक्तो रोदसी	३११
देवानां माने प्रथमा	२५१३	नकिष्टवद् रथीतरो	९४२	न यं शुक्रो न दुराशीर्न	१२०
देवाश्चित्ते असुर्याय	२१६७	नक्षत्रोता परि	१०५८	न यं हिंसन्ति भीतयो	२०२३
देवी यदि तविषी	८०८	नक्षन्त इन्द्रमवसे	५३४	न यं जरन्ति शरदो	१२३४
देहि मे ददामि ते	२९२०	न क्षोणीभ्यां परिभवे	११७४	न यं दुध्रा वरन्ते	६१४
दोहेन गामुप शिक्षा	२५४७	नकीं वृषीक इन्द्र ते	६५४	नयसीद्वति द्विषः	२०६५
द्यामिन्द्रो हरिधायमं	१४०१	नकीमिन्द्रो निकर्तये	६५५	न यस्य ते शवसान	२२९८
द्यावा चिदस्मै	११३४	नकी रेवन्तं सख्याय	४२२	न यस्य देवा देवता	९७१
द्युक्षं सुदानुं तविषीभिरावृतं	८९५	न वा त्वद्विगष वेति	२५५८	न यस्य द्यावापृथिवी अनु	७७३
द्युमत्तमं दक्षं	२०४४	न वा राजेन्द्र आ	१०९७	न यस्य द्यावापृथिवी न	२६६७
द्युक्षेषु पृतनाज्ये	१३४०	न वा वसुनि यमते	२०८२	न यस्य वर्तां जुनुषा	१५३९
द्यौर्न य इन्द्राभि	१८८४	न वेमन्यदा पपन	१३२	न यातव इन्द्र	२१६५
द्यौश्चिदस्यामर्वा	७६९	न जामये तान्वो	१२६१	न ये दिवः पृथिव्या	७३९
द्रष्टमपश्यं विपुणे	३२६९	न त इन्द्र सुमतयो	२१३८	न रेवता पणिना	१५९४
द्रुहं जिघांसन् ध्वरसमानिन्द्रां	१५७२	न तं जिनन्ति बहवो	१५२२	नवग्रासः सुतसोमास	१६७८
द्रुहो निषत्ता पृथानी	२६२४	न तमहो न दुरितानि	३१७८	नव यदस्य नवतिं	१६७२
द्रिता यो वृत्रहन्तमो	२४६१	न ते अंतः शवसो	१२६६	नव यो नवतिं	२४३१
द्रिता वि वज्रे सनजा	८७८	न ते गिरो अपि मृष्ये	२१७५	न वा उ मां वृजने	२४९५
धनं न स्पन्दं बहुलं	२५५०	न ते त इन्द्राभ्य०	१७१९	न वा उ सोमो वृजिनं	३२९०
धन्व च यत् कृन्तन्न	२६५९	न ते दूरे परमा	१२३९	न वीळवे नमते	१९३५
धर्ता दिवो रजसस्पृष्ट	१४२७	न ते वर्तास्ति राधस	३५७	न वेपसा न तन्यतेन्द्रं	९११
धानावन्तं करम्भिण०	१४४६	न ते सव्यं न दक्षिणं	१७९४	न स राजा व्यथते	१७५३
धिषा यदि धिषण्यतः	१५४९	न त्वा गभीरः	१२९७	न सीमदेव आपदिषं	२३२७
धिष्व वज्रं गभस्त्यो	२०७७	न त्वा देवास आशत	९८४	न सेशे यस्य रम्बते	२६५५
धिष्व शवः शूर	१११८	न त्वा वृहन्तो अद्रयो	८९६	न सेशे यस्य रोमशं	२६५६
धीभिर्वद्विरर्वतो	२०७१	न त्वा वरन्ते अन्यथा	१६५२	स सोम इन्द्रमसुतो	२१९८
धृतवतो धनदाः	१८७५	न त्वावां अन्यो दिव्यो	२२५७	नहि ते शूर राधसो	१८२७
धृषतश्चिद् धृषन्मनः	५७०	नदं व ओदतीनां	२३०५	नहि त्वा रोदसी उभे	६५
धृषन् पिब कलशे	२१०४	नदं न भिन्नमसुया	७२२	नहि त्वा शर देवा	६७२

नहि त्वा ज्ञूरो न	१९४२	नि भीमिदत्र गुह्या	१३४७	पन्य आ दर्दिरच्छता	१९७
नहि तु ते महिमानः	१९५७	नि तु सीद गणपते	२७४३	पन्य इदुप गायत	१९६
नहि तु यादधीमसीद्रं	९१४	नि पू नमातिमतिं	१००४	पन्य पन्यमित् सोतार	१४०
नहि मे अक्षिपञ्चना०	२८५५	नि एवापया मिथूदशा	६९४	पपृक्षेण्यमिन्द्र	१७२२
नहि मे रोदसी उभे	२८५६	निष्पिध्वरीरोषधीराप	३२०३	पप्राथ क्षां महि	१८४७
नहि वां वज्रयामहे	३१०२	नि सर्वसेन इधुधीरस	७३२	पयसा शुक्रममृतं	२९४२
नहि वस्तव नो मम	२२५	नि सामनामिषिरामिद्र	१२४६	परः सो अस्तु तन्वा	३२८८
नहि एमा ते शतं चन	१६३८	नीचावया अभवद्	७२३	परमां तं परावत०	२८९७
नहि स्थूर्युतथा	२७७५	नू अन्यत्रा चिद्विब०	१८००	पराकात्ताच्चिद्विबस्त्वां	२४२३
नह्यङ्ग नृतो त्वदन्यं	१८०१	नू इत्या ते पूर्वथा	१०३१	परा चिच्छीर्षा ववृजुस्त	७३४
नह्यङ्ग पुरा चन	१८०४	नू इद्र राये वरीव०	२२०७	परा गुदस्त्र मघवज्जमित्रान्	२२५३
नह्यङ्गन्यं बळाकरं	६६१	नू इद्र शूर स्तवमान	२१५०	परा पूर्वेषां सख्या	२११५
नाष्टष आ दष्टषते	२८८८	नू गृणानो गृणते	१९८७	परायतीं मातर०	१५११
नाना हि त्वा हवमाना	८३२	नू चित् स अषते	२१५६	परा याहि मघवज्जा	१४५७
नामानि ते शतक्रनो	१३३६	नू विज इद्रो मघवा	२२०६	परा हीन्द्र धावसि	२६४१
नास्मै विशुन्न तन्यतु.	७२७	नू चिन्तु ते मन्यमानस्य	२१७८	परि त्वा गिर्वणो गिर	६२
नाहं तं वेद य इति	२४९३	नू त आभिरभिष्टिमि०	१७५९	परि यदिन्द्र रोदसी	७३८
नाहमतो निरया	१५१०	नू ना इदिन्द्र ते	४१५	परि वरमानि सर्वत	२८९३
नाहमिद्राणी रारण	२६५१	नू न इंद्रावरुणा गृणाना	३१६८	परीं घृणा चरति	७६५
निखातं चिद्यः पुरुसंभृतं	६१६	नून सा ते प्रति ११२१; ११७१; ११८०.		परीमे गामनेषत	२९७२
नि गव्यता मनसा	१२६८	११८९; ११९८; १२०७; १२१६		परेहि विग्रमस्तृत०	७
नि गव्यवोऽनवो	२१३२	नूनं तदिन्द्र दद्धि	३२५	परोमात्रमृचीषम०	२२९६
नि तद्दधिषेऽवरं	२७७०	नूनं न इंद्रापराय	२०२०	परो यत् त्वं परम	१६८६
नि तिग्मानि आशयन्	२७५९	नू दृत् इंद्र नू १४८७; १५०८; १५३२.		पशुर्ह नाम मानवी	२६६२
नि दुर्ग इंद्र श्रथि०	२१९३	१५४३; १५५४; १५६५ १५७६ १५८७		पात न इंद्रापूर्वणा०	३३३६
निधीयमानमपगू०	२५३५	नृगासु त्वा नृतमं	१४३७	पाता वृत्रहा सुतमा	१४१
नि पर्वतः साद्यप्रयुच्छन्	११०८	नृभिर्धृतः सुतो	११७	पाता सुतमिन्द्रो अस्तु १९२०; २०५०	
नि यद् वृणक्षि	७९०	नृवत् त इद्र नृतमाभिरुती	१८८०	पान्तमा वो अंधस	२३९७
नियुवाना नियुनः	३२३८	नेभिं नमन्ति चक्षसा	९८७	पारावतस्य रातिषु	४४२
नि येन मुष्टिहस्तया	३९	न्यर्तुं दस्य विष्टपं	१८२	पार्षद्वाणः प्रस्कण्व समसादय	५०६
निरग्नयो रुरुचुर्निरु	१७५	न्यस्मै देवी स्वधिति०	१७१४	पाहि गायान्धसो मद	२१३
निरसु तुद ओकसः	२८९६	न्याविध्यदिलीविशस्य	७४१	पाहि न इद्र सुष्टुत	१०१०
निराविध्यद् गिरिभ्य	६४५	न्यू षु वाचं प्र महे	७७५	पित्रे चिच्चक्रुः सदन	१२७१
निरिन्द्र वृहतीभ्यो	१७४	पताति कुण्डणाच्य।	६९७	पिपीळे अंशुर्मद्यो	१५६२
निरिन्द्र भूम्या अधि	९०३	पतिर्भव वृत्रहन्सूनृतानां	१२७७	पिब स्वधैनवानामुत	१९९
निर्हस्तः शत्रुरभिदास०	२८९०	पत्तो जगार प्रत्यञ्चमन्ति	२५०३	पिबा त्वस्य गिर्वणः	११२
निर्हस्ताः संतु शत्रवो	२८९२	पत्नीवन्त सुता इम	२४५१	पिबापिबेदिन्द्र श्रा	११११. २४८०
निवेशनः संगमनो	२९२९	पवा पणीरराधसो	५२०	पिबा वर्धस्व तव	१३२५
नि शुष्ण इद पर्णभिं	२५६			पिबा सुतस्य रसिनो	१५६

पिबा सोममभि	१८४१	पौरौ अश्वस्य पुरुकृद्	५५३	प्रभंगं दुर्मतीनामिन्द्र	१८३५
पिबा सोममिन्द्र मंदतु	२१७१	प्र कृतान्यूर्जाषिणः	१८०	प्रभङ्गी शूरो मघवा	५६५
पिबा सोममिन्द्र सुवान	१०१२	प्र वा न्वस्य महतो	११६२	प्रभर्ता रथं गव्यन्तमपाकाच्चिद्	१५०
पिबा सोमं मदाय	२३३८	प्र चक्रे सहसा सहो	२३३	प्र मंहिष्ठाय बृहते	८११
पिबा सोमं महत	२७५५	प्र चर्षणिभ्यः पृतना०	३०२६	प्र मन्दिने पितुमदर्चता	८१७
पिबेदिन्द्र मरुसखा	६३६	अजाभ्यः पुष्टि	११४०	प्र मन्महे शवसानाय	८७२
पिशङ्गभृष्टिमभृष्टं	१०३८	प्रजामृतस्य पिप्रतः	२४४	प्र मात्राभी रिरिचे	१४११
पीवानं मेघमपचन्त	२५०७	प्रणीतिभिष्टे हर्यश्च	२७०७	प्र मे नमी साग्य	२५८७
पुत्रमिव पितरा०	२९६१	प्रणेतारं वस्यो अच्छा	३९१	प्र यज्ञ सिन्धव	१३२८
पुनरेहि वृषाकपे	२६६०	प्र त इन्द्र पूर्व्याणि	२७४२	प्र यदित्या महिना	१०६१
पुनीषे वामरक्षसं	३१९७	प्र तत् ते अद्या करणं	१८६८	प्र यन्ति यज्ञ विप०	२१६२
पुरादारा शिक्षतं	३०२८	प्र तद् वोचेयं	१००५	प्र यमन्तवृषसवासो	२५५३
पुरां भिन्दुर्युवा	७३	प्र तमिन्द्र नशीमहि	२५१	प्र या जिगाति खर्गलेव	३२९४
पुरा संवाधाद्भ्या	११७९	प्रति घोराणामेता०	१०४९	प्र ये गृहादममदुस्वाया	२१३९
पुरुकुसानी हि	३१५९	प्रति चक्ष्व वि चक्षेन्द्रश्च	३३०२	प्र ये मित्रं प्रार्थमणं	२६७०
पुरुष्टुतस्य धामभिः	१३३७	प्रति ते दस्यवे वृक	५४४	प्र यो ननक्षे अभ्योजसा	५१२
पुरुहूतं पुरुहूतं	२३९८	प्रति त्वा शवसी	४४७	प्र व इन्द्राय बृहते	२३८६
पुरुहूतो यः पुरुगूर्त	२०२२	प्रति धाना भरत	१४५३	प्र व इन्द्राय मादनं	२२२३
पुरुणि हि त्वा सवना	२६७७	प्रति प्र याहीन्द्र	१०४८	प्र व इन्द्राय वृत्रहन्तमाय	२९८९
पुरुतमं पुरुणां स्तोतृणां	२०८८	प्रति यत् स्या नीथादर्शि	८५१	प्र व उग्राय निष्टुरे	२०६
पुरुतमं पुरुणामीशान	१५	प्रति श्रुताय वो धृषत्	१८३	प्र व पान्तमन्वसो	३३०३
पुरु यत् त इन्द्र सन्त्युक्था	१७२०	प्रति स्मरेथां तुजय०	३२८४	प्र वः सतां ज्येष्ठतमाय	११७२
पुरोळा इत् तुर्वशो	२१२४	प्र तुविद्युन्नस्य	१८६७	प्रवता हि ऋतूनामा	१६३४
पुरोळाशं सनश्रुत	१४४९	प्र ते अश्रोतु कुक्ष्योः	१४४५	प्र वर्तय दिवो अश्मा० २२८७, ३२९६	
पुरोळाशं च नो वसो	१४४८, १६६०	प्र ते अस्या उषसः	२५१६	प्रवाच्यं शश्वधा	१३००
पुरोळाशं नो अन्धस	६५१	प्र ते नावं न समने	११७८	प्र वाता इव दोधत	२८५१
पुरोळाशं पचयं	१४४७	प्र ते पूर्वाणि करणानि	१५३१, १६९८	प्र वामर्चन्त्युक्थिनो	३०३४
पुष्यात् क्षेमे अभि	१७५४	प्र ते बभ्रू विचक्षण	१६६६	प्र वामश्रोतु सुष्टुति०	३१४२
पूर्णां दर्वि परा	२९१९	प्र ते वोचाम वीर्या	१६५४	प्र वीरसुग्रं विविचिं	५००
पूर्वीरस्य निषिधो	१४३८	प्रत्नं रथीणां युजं	२०७८	प्र वोच्छा रिरिचे	२५३४
पूर्वीरिन्द्रस्य रातयो	७२	प्रत्नवज्जनया गिरः	३२७	प्र वो महे मन्दमाना०	२६०१
पूर्वीरुषसः शरदश्च	१५२९	प्रत्यस्मै पिपीषते	१९९८	प्र वो महे महि नमो	८७३
पूर्वीश्चिद्धि त्वे तुविकूर्मिन्नाशसो	६२४	प्र तु वयं सुते या	१६८४	प्र वो महे महिवृषे	२२३२
पूर्वीष्ट इन्द्रोपमातयः	३१०९	प्र तु वोचा सुतेषु वां	३०४६	प्र ससगुप्तधीतिं	२८४७
पूषण्वते ते चक्रमा	१४५२	प्र नूनं धावता	९९७	प्र सत्राजं चर्षणीनामिन्द्रं	३८२
पृथक् प्रायन् प्रथमा	२५७३	प्र नेमस्मिन् दृढशे	२५८८	प्र सत्राजे बृहते मन्म	३१६९
पृथू करन्ना बहुला	१८७३	प्रम बलिष्टुभमिषं	२३०४	प्र ससाहिषे पुरुहूत	२८३९
पृदाकुसालुर्थजतो	४०८	प्रमा वो अस्मे	१००७	प्र सु रमन्ता धियसानस्य	२५३०
पृषध्रे मेध्ये मातरिश्वनीन्द्र	५१६	प्र ब्रह्माणि नभाकव०	३१०५	प्र सु श्रुतं सुराधसमर्चा	४९५

प्र सु स्तोमं भरत	९९३	वृषदुक्थ हवामहे	१८९	भूरिकर्मणे वृषभाय	८४४
प्र सू त इन्द्र प्रवता	१२४३	वृहत् स्वध्वन्द्रममवद्	७६८	भूरि चकर्थ युज्येभिरस्मे	३२५६
प्रसूतो भक्षमकर	२८३१	वृहदिन्द्राय गायत	२३८४	भूरिभिः समह	२३३४
प्र सोता जीरो अध्वरेषु	३२४१	वृहन्त इन्नु ये	१११६	भूरित इद्र वीर्यं	८१५
प्र स्तोषदुप गासिषच्छवत्	६७४	वृहन्नच्छायो भपलाशो	२५०४	भूरि दक्षेभिवचने०	२७५३
प्र हि ऋतुं वृहथो	३२७०	वृहन्निदिधम एषां	४४४	भूरिदा भूरि देहि	१६६४
प्र हि रिरिक्ष भोजसा	८९८	वृहस्पत इन्द्र वर्धतं	३३२४	भूरिदा ह्यसि श्रुतः	१६६५
प्र शोशुचत्या उषसो	२६७३	वृहस्पतिर्नः परि	२५५६, २५६७, २५७८, ३३२८	भूरि हि ते सवना	२१७६
प्र श्येनो न मदिरमंशुमसौ	१६८९	वृहस्पते तपुषाश्चैव	१२३०	भूरीदिन्द्र उद्दिनश्चन्त०	२४६५
प्राक्तुभ्य इन्द्रः प्र	२६७२	वृहस्पते परिदीया	२९३२	भूरिदिन्द्रस्य वीर्यं	५३९
प्राग्बुवो नभन्वो	१५२८	वृहस्पते युवमिन्द्रश्च	३३२५	भृमिश्रिष्ट वासि	१६४६
प्राच्या दिशस्वमिन्द्रासि	२९०४	बोधो सु मे मघवन्	२१७३	भोज त्वामिन्द्र वय	११८८
प्रातर्यावभिरा गतं	३०९७	बोधिन्मना इदस्तु	२४४७	मंहिष्ठ वो मघोना	१७६३
प्राता रथो नवो	११९०	ब्रह्मणा ते ब्रह्मयुजा	१३१५	मक्ष ता त इन्द्र दाना०	२४७६
प्रान्यच्छक्रमवृहः	१६७६	ब्रह्मन् वीर ब्रह्मकृति	२२१४	मखस्य ते तविषस्य	१३०२
प्राव स्तोतारं मघवन्नव	१७७०	ब्रह्मा ण इन्द्रोप याहि	२२०८	मघोनः स्य वृत्रहलेषु	२२४९
प्रास्तौद्वौजा ऋग्वेभि०	२७१९	ब्रह्माण ब्रह्मवाहसं	२०६६	मतयः सोमपासुरु	१३७७
प्रास्मै गायत्रमर्चत्र	९४	ब्रह्माणस्त्वा वय	३९६	मत्सि नो वस्वदृष्टय	१०८५
प्रिया तष्टानि मे	२६४४	ब्रह्माणि मे मतयः श	२९६९, ३२५३	मत्स्यपायि ते महः	१०७९
प्रियास इत् ते	२१४७	ब्रह्माणि हि चकृषे	१९२३	मत्स्वा सुशिप्र मन्दिभिः	५०
प्रेता जयता नर	२७०२	ब्रह्मा त इन्द्र गिर्वर्णः	२३९३	मत्स्वा सुशिप्र हरि०	२३७७
प्रेदं ब्रह्म वृत्रतूर्येष्वाविथ	१७७६	भृगो न चित्रो अग्नि०	२९९०	मदेनेपित मद्रमुग्रमुग्रण	१०७
प्रेन्द्रस्य वोचं प्रथमा	२२८३	भद्रमिदं रुशमा	३३३७	मदेमदे हि नो दद्विर्यूथा	९२२
प्रेन्द्राग्निभ्यां सुवच०	२७६३	भद्रमद्रं न आ भरेषमूर्ज	२४५७	मनमस्पत दमं नो	३१२७
प्रेरय स्रो अर्थ	२५१९	भद्रा ते हस्ता सुकृतोत	१५५२	मनीषिणः प्र भरध	२७२५
प्रेक्षभीहि वृष्णुहि	९०२	भवा वरुथं मघवन्	२२४१	मनुजदिन्द्र सवन	१२८६
प्रो अस्मा उपस्तुति	५६६	भिनत् पुरो नवतिमिन्द्र	१०१७	मन्त्रमखरं सुधित	२२४७
प्रोम्रां पीति वृष्ण	२७०५	भिनद् गिरि शवसा	१४९०	मन्दन्तु त्वा मघवन्निन्द्रेन्द्रवो	२३२
प्रो द्रोणे हरयः	१९७४	भिनद् वलमङ्गिरोभि०	११६९	मन्दमान ऋतादधि	२६२७
प्रोष्ठेशया वहेशया	२२७७	भिन्धि विश्वा अप	४८२	मन्दस्वा सु स्वर्णर	२८१
प्रो प्वस्मै पुरोरथ०	२७७८	भीमो विवेपायुधे०	२१६४	मन्दिष्ट यदुसने	७५५
ब्रालित्वा महिमा	३०४७	भुवस्त्वमिन्द्र ब्रह्मणा	२६०४	मन्द्रस्य कर्वाद्व्यस्य	१९८३
बलवियाय धास्र	५८८	भुवो जनस्य दिव्यस्य	१९१५	मन्ये त्वा यज्ञियं	२३४८
बर्हिर्वा यत् स्वपत्याय	९३६	भुवोऽविता वामदेवस्य	१४८४	ममञ्चन ते मघवन्	१५१७
बलविज्ञायः स्थविर	२६९५	भूय इद् वावृधे	१९६८	ममञ्चन त्वा युवतिः	१५१६
बाधसे जनान् वृषभेव	२०९३	भूयसा वल्लमचरत्	१५८५	मम ब्रह्मेन्द्र	११९६
बिभया हि त्वावत	४७७	भूयाम ते सुमती	१५७	ममत्तु त्वा दिव्यः	२७५७
बीभत्सूनां सयुजं	३२७७	भूयामो यु त्वावतः	१६५०	मम त्वा सूर उद्दिने	११५
				मरुवन्तं वृषभं	१४१८; १८८१

मरुत्वन्तं हवामह	३२४७	मा ते अस्यां सहसावन्	२१४६	मो सु ब्रह्मेव तन्द्रयु०	२४२६
मरुत्वन्तमृजीषिण०	६३२	मा ते गोदत्र निरराम	४२४	मो सु त्वा वावतश्चन्ता०	७२३५
मरुत्वा इन्द्र मीद्व	६३४	मा ते राधांसि मा त	९५६	मो पू ण इन्द्रात्र	१०६७
मरुत्वा इन्द्र वृषभो	१४१४	मा ते हरी वृषणा	१३१६	मो ष्वः च दुर्हणावान्	१३५
मरुस्तोत्रस्य वृजनस्य	८२७	मा त्वा मूरा अविष्यवो	४६५	य आनयत् परावतः	२०६०
मह उग्राय तवसे	२३५४	मा त्वा सोमस्य गल्दया	१०६	य आयुं कुत्समतिथिग्वर्दयो	५२६
महः सु वो अरमिषे	१८३३	मात्रे नु ते सुमिते	२५२०	य आस्ते यश्च चरति	२२७५
महत् तन्नाम गुह्यं	२६१५	मादयस्व सुते सचा	९२३	य इद्ध आविवासति	३०६६
महश्चित् त्वमिन्द्र	१०४३	मादयस्व हरिभिर्ये	८२६	य इन्द्र चमसेप्वा	६८५
महौ अमत्रो वृजने	१३२६	माध्यदिनस्य सवनस्य	१४५०	य इन्द्र यतयस्त्वा	२६०
महौ असि महिष	१४१०	मा न इन्द्र पीयत्नवे	१३०	य इन्द्र शुष्मो मधवन्	२२०४
महौ इन्द्र परश्च	४२	मा न इन्द्र परा	९८२	य इन्द्र सस्त्यव्रतो	९७८
महौ इन्द्रो नृवदा	१८७१	मा न इन्द्राभ्यादिशः	२४२७	य इन्द्राय सुवनत्	१५८३
महौ इन्द्रो य ओजसा	२४३	मा न एकस्मिन्नागसि	४७६	य इन्द्र सोमपातमो	२८८
महौ २ ऽ इन्द्रो वज्रहस्तः	२९६६	मा नो अज्ञाता वृजना	२२६१	य इन्द्राग्नी चित्रतमो	३००८
महौ उग्रो वावृषे	१३२७	मा नो अस्मिन् मधवन्	७८६	य इन्द्राग्नी सुतेषु वां	३०४९
महौ उतासि यस्य	२२२९	मा नो गुह्या रिप	३३५०	य इमे रोदसी उभे	१४६४
महौ ऋषिर्देवजा	१४६१	मा नो निदे च वक्तवे	२२२७	य इमे रोदसी मही	२५९
महान्तं महिना वयं	३१०	मा नो मर्ता अभि	२३	य उक्था केवला दधे	५१७
महि क्षेत्रं पुरु	१२७४	मा नो मर्धिरा भरा	१५४२	य उक्थेभिर्न विन्धते	५०७
महि ज्योतिर्निहितं	१२५१	मा नो रक्षो अभि नव्या०	३३००	य उग्रः सन्ननिष्टृतः	२१८
महि महे तवसे	१७१७	मा नो वधीरिन्द्र मा	८५४	य उग्रोणामुग्रबाहुय्ययुयो	२८६८
मही धौः पृथिवी च	२९२७	मां धुरिन्द्रं नाम	२५९१	य उह्वीन्द्र देवगोपाः	७८५
मही यदि धिषणा	१२७२	मा पापत्वाय नो	३०८१	य उग्रः फलिगं भिनन्त्य१क्	२०४
महीरस्य प्रणीतयः	३०८; २०६२	मा भूम निष्टया इवेन्द्र	९९	य उशता मनसा सोममस्मै	२८२६
महे चन त्वामद्रिवः	९१	मा भेम मा श्रमिषमोग्रस्य	२३५	य ऋक्षादंहसो	१८१६
महे शुल्काय वरुणस्य	३१७७	मायाभिरिन्द्रमायिनं	७६	य ऋक्षा वातरंहसो	४४१
महो दुहो अप विश्वायु	१८८८	मायाभिरुत्तिसुप्तत	३६७	य ऋते चिद् गास्पदेभ्यो	१५४
महोभिरेतो उप	३२५४	मारे अस्मद् वि मुमुचो	१३८०	य ऋते चिदभिप्रिषः	९८
महो महानि	१३०६	मा सख्युः जूनमा	४७८	य ऋतः श्रावयत्सखा	१८२८
महो यस्पतिः शवसो	२४६८	मा सोमवद्य आ भागुर्वी	६६८	य एक इच्छावयति	१४९२
मह्यं त्वष्टा वज्रमत०	२५८१	मा स्नेधत सोमिनो	२२४३	य एक इत् तमु	२०७५
मह्या ते सख्यं वरिम	१२७३	मिहः पावकाः प्रतता	१२७९	य एक इद्धव्यश्रवणीना०	१९०७
मा कस्य नो अरुषो	३०८६	मुखं सदस्य शिर ऽ इत्	२९४६	य एक इद् विदयते	९४३
माकिर्न एना सख्या	२४८७	मुञ्चामि त्वा हविषा	३११३	य एकश्रवणीनां	३६
माकुध्रयगिन्द्र शूर	२४७७	मुषाय सूर्य कवे	१०८२	य एको अस्ति	११३
मा चिदन्यद् वि शंसत	८७	मूढा अभित्राश्रता०	२८९४	य भोजिष्ठ इन्द्र त सु	२०१६
मा छेद्य रश्मीरिति	३०२३	मूषो न शिक्षा व्यदन्ति	२५४०	यं युवं दाश्वध्वराय	३१६६
मा जस्वने वृषभ	२०४६	मृगो न भीमः कुचरो	२८४०	यं वर्षयंतीद्	२०४०
मा ते अमाजुरो यथा	४२३	मेहिं न त्वा वज्रिणं	२९८३		

य विप्रा उक्थवाह नो०	३००	यज्ञे दिवो नृषदने	२२७८	यदार्जि यात्याजिकृदिन्द्रः	४४९
य वृत्रेषु क्षितिय	२९८५	यज्ञेन गातुमन्तुरो	१२२१	यदा ते मारुतीर्विश०	३१६
यं सुपर्णं परावत.	२८०१	यज्ञेनेन्द्रमवसा	१२९४	यदा ते विष्णुरोजसा	३१४
य सोममिन्द्र पृथिवी०	१४१३	यज्ञैरथर्वा प्रथमः	९३५	यदा ते हर्यता हरी	३१५
य स्मा पृच्छन्ति	११२६	यज्ञो हि त इन्द्र	१२९३	यदा वज्रं हिरण्यमिदथा	२४८३
यः कुक्षिः सोमपातम०	४४	यज्ञो हि ष्मेन्द्रं	१०६६	यदा वृत्रं नदीवृतं	३१३
यः कृन्तदिद् वि	४७२	यत् इन्द्र भयामहे	५६०	यदा समर्थं व्यचे०	१५८४
यः पुष्पिणीश्च	११४३	यत् तुदत् सूर	९७	यदा सूर्यमसुं दिवि	३१७
यः पृथिवी व्यथमानाम०	११२३	यत् ते दित्सु प्रार्थ्यं	१७६२	यदि क्षितायुर्यदि	३११४
यः प्रथम कर्मकृत्याय	२८७२	यत् त्वा यामि दद्धि	२८४९	यदिन्द्र चित्र मेहना	१७६०
यः शक्रो सृक्षो अश्वयो	६१५	यत् पाञ्चजन्यया	५८४	यदिन्द्र ते चतस्रो	१७३७
यः शरमस्तुविशरम	२०३७	यत्र ग्रावा पृथुबुध्न	६८८	यदिन्द्र दिवि पार्थे	१९९२
यः शम्बर पर्वतेषु	११३२	यत्र देवां ऋघायतो	१६१३	यदिन्द्र नाहुषीष्वा	२०९६
यः शश्वतो मर्ह्यो	११३१	यत्र द्वाविज जघनाधिषवण्या	६८९	यदिन्द्र पूर्वा अपराय	२१५७
यः शूरेभिर्हव्यो यश्च	८२२	यत्र नार्थपचयवमुपचयवं	६९०	यदिन्द्र पृतनाजये	३१२
यः संस्थे चिच्छतक्रतुरादीं	१९०	यत्र मन्थां विबध्नते	६९१	यदिन्द्र प्रागपागुदक्	२२९; ६०१
यः सग्रामाजयति	२८७३	यत्र शूरासस्तन्वो	२१०१	यदिन्द्र मञ्जशस्त्रा	३८०
यः सप्तारश्मिर्बृषभ०	११३३	यत्रा नरः समयन्ते	३१८३	यदिन्द्र यावतस्त्व०	२२५२
यः सत्राहा विचर्षणि०	२०९२	यत्रोत बाधितेभ्य०	१६१२	यदिन्द्र राधो अस्ति	५३५
यः सुन्वते पचते	११३६	यत्रोत मर्त्याय	१६१४	यदिन्द्र शासो अत्रतं	२९८२
यः सुन्वन्तमवति	११३५	यत् सानोः सातुमारुहद्	५९	यदिन्द्र सर्गे अर्वत०	२१०२
यः सुषव्यः सुदक्षिण	२१४	यत् सोम आ सुते	३०८८	यदिन्द्राग्नी अवमस्यां	३०१६
यः सृविन्दमनर्शनिं	१८१	यत् सोममिन्द्र	३०३	यदिन्द्राग्नी उदिता	३०१९
यं क्रन्दसी संयती	११२९	यथा कण्वे मघवन्	५०४	यदिन्द्राग्नी जना	३१०७
यच्चिद्धि ते अपि	४६१	यथा गौरो अपा कृतं	२३१	यदिन्द्राग्नी दिवि	३०१८
यच्चिद्धि त्वा जना	८९	यथा मनौ विवस्त्रति	५१५	यदिन्द्राग्नी परमस्यां	३०१७
यच्चिद्धि शश्वतामसीन्द्र ६०७; १६५७		यथा मनौ सांवरणौ	५०५	यदिन्द्राग्नी मदथः	३०१४
यच्चिद्धि सत्य सोमपा	६९२	यथा वृक्षमशानि	२९०६	यदिन्द्राग्नी यदुषु	३०१५
यच्छक्रासि परावति	३३५, ९७९	यथा पूर्वैभ्यो जरितृभ्य १०८४; १०९०		यदिन्द्राहं यथा	३५४
यच्छुश्रूया इमं हवं	४६०	यथा प्रावो मघवन्	४९४	यदिन्द्राहन् प्रथमजामहीना	७१८
यजध्वैर्न प्रियमेधा	१५२	यदङ्ग तविषीयस	२६८	यदिन्द्रो अनयद्रितो	३३३३
यजाम इक्षमसा	१२८८	यदचरस्तन्वा वावृधानो	२६०९	यदिन्निन्द्र पृथिवी	७७०
यजामह इन्द्र	२४८१	यदज्ञातेषु वृजनेष्वासं	२४९४	यदि प्रवृद्ध सत्पते	२९५
यजायथा अपूर्व	२३८८	यदद्य कञ्च वृत्रहन्नुदगा	२४३३	यदि मे रारण. सुत	१८५
यजायथास्तदहस्य	१४२०	यदद्य त्वा प्रयति	३१२०	यदि मे सख्यमावरं	३४१
यज्ञ इन्द्रमवर्धयद्	३५८	यदन्तरा परावत०	१३७२	यदि वाहमनुतदेवो	३२९१
यज्ञ यज्ञ गच्छ	३१२४	यदब्रवं प्रथमं	३०१३	यदि स्तोमं मम	१०१
यज्ञस्य हि स्थ ऋत्विजा	३०९१	यदर्जुन सारमेय	२२७१	यदीं सुतास इन्द्रवो	४२७
यज्ञेभिर्यज्ञवाहसं	३०७	यदस्य धामनि प्रिये	३१९	यदीं सोमा बन्धूना	१६९२
		यदस्य मन्थुरध्वनीद्	२५५	यदीदहं युधये संनया०	२४९२

यदीमिन्द्र अवाच्यामिषं	१७५६	यस्त इन्द्र महीरपः	२५८	यस्य द्यावापृथिवी	८१९
यदी सुतेमिरिन्दुभिः	२०००	यस्ता चकार स	१९००	यस्य द्विबर्हसो	३७०
यदुदञ्चो वृषाकपे	२६६१	यस्तिग्मशृङ्गो वृषभो	२१४०	यस्य मंदानो अन्धसो	२००५
यदुदीरत आजयो	९१८	यस्ते अनु स्वधामसत्	१४४४	यस्य वशाल ऋषभास	२८७०
यकुष औच्छः प्रथमा	२६१७	यस्तेऽङ्कुशो वसुदानो	२९०१	यस्य विश्वानि हस्तयो	१०८७
यद् दधिषे प्रदिवि	२२८०	यस्ते चित्रश्रवस्तमो	२४१३	यस्य विश्वानि हस्तयोरुचु०	२०६७
यद् दधिषे मनस्यसि	४७३	यस्ते नूनं शतक्रत	२४१२	यस्य शशत् पपिर्वा	२७३९
यद् द्याव इन्द्र ते	२३२५	यस्ते मद्ः पृतनाषाळमृध	१८७७	यस्य संस्थे न वृण्वते	१७
यद्ध नूनं परावति	५०१	यस्ते मदो युज्यश्चारुस्ति	२१७२	यस्याजस्र शवसा	९७०
यद्ध नूनं यद्वा यज्ञे	४९१	यस्ते मदो वरेण्यो	१८२४	यस्यानक्षा दुहिता	२५०१
यद्ध स्या त इन्द्र	१०९६	यस्ते रथो मनसो	२७३६	यस्यानासः सूर्यस्वेव	९५८
यद् योधया महतो	२२८२	यस्ते रेवां अदाशुरिः	४५७	यस्यानूना गभीरा	३८५
यद्वाचो हिरण्यस्य	२९९५	यस्ते शृङ्गवृषो	४०६	यस्यामितानि वीर्यांश्च	१८१०
यद्वा वृक्षौ मघवन्	२०९७	यस्ते साधिष्ठोऽवस	१७३६	यस्यायं विश्व आयो	५१३
यद्वा दक्षस्य बिभ्युषो	१९१९	यस्ते साविष्ठोऽवसे	५३१	यस्यावधीत् पितरं	१७३०
यद्वा प्रवृद्ध सत्पते	२४३४	यस्तिर्वायानामसि	२४९०	यस्याश्वासः प्रदिशि	११२८
यद्वा प्रस्रवणे दिवो	६०२	यस्मा अन्ये दशप्रति	१७८	यस्येदमा रजो युज० २८८७; २९९३	
यद्वा मरुतः परमे	८२४	यस्मा अर्कं सप्तशीर्षाणमानुचु०	५०८	यो आभजो	१३२०
यद्वा रुमे रुशमे	२३०	यस्मादिन्द्राद् बृहत	११७३	या इन्द्र प्रस्रस्वा	२६२
यद्वावन्थ पुरुषुत	६१७	यस्मान्न क्रते विजयन्ते	११३०	या इन्द्र भुज आभरः	९७३
यद्वावान पुरुतमं	२६३९	यस्मान्न जातः परो०	२९२८	या त ऊतिरमित्रहन्	२०७३
यद्वा शक्र परावति	३०४	यस्मिन्नुक्तानि रण्यन्ति	३८३	या त ऊतिरवमा	१९३८
यद्वासि रौचने दिवः	९८०	यस्मिन् वयं दधिमा	२५५१	या ते काकुत् सुकृता	१९९४
यद्वासि सुन्वतो वृषो	३०५	यस्मिन् विश्वा अधि	२४१६	यानावह उशतो देव	३१२२
यद्वा विन्द्वा यत्	४८३	यस्मिन् विश्वा अर्षण्य	१४८	यानीन्द्राङ्गी चक्रधुर्वीर्याणि	३०१२
यद् वृत्रं तव चाशनिं	९१२	यस्मै त्वं मघवर्जिन्द्र	५२२	या नु श्वेताववो	३१०८
यं ते श्येनः पदाभरत्	६८७	यस्मै त्वं वसो दानाय	५१०; ५२०	या पृतनासु दुष्टरा	३०४१
यं ते श्येनश्चा०	२८०२	यस्मै धायुरदधा	१२४४	याभ्यामजयन्स्वः १२४	३१३२
यं ते स्वदावन्स्वदन्ति	४९९	यस्य गा अन्तरश्मनो	२००४	यामथर्वा मनुष्यता	९१५
यं त्वं रथमिन्द्र	१०००	यस्य गावावरुषा	१९६१	यावती द्यावापृथिवी	२९७४
यज्ञ इन्द्रो जुजुषे	१५५५	यस्य जुष्टि सोमिनः	२८७१	यावत् तरस्तन्त्रो	३२३७
यं नु नकिः पृतनासु	१४२५	यस्य तीव्रसुतं	२००३	यावदिदं भुवनं	३००२
यन्मन्यसे वरेण्यमिन्द्र	१७६१	यस्य ते नू चिदादिशं	२४४०	या वां सन्ति पुरुस्पृहो ३०६३, ३२२९	३२२९
यमा चिदत्र	१३५७	यस्य ते महिना महः	२२९३	या वां शतं नियुतो	३२३९
यमिन्द्र दधिषे त्वमश्वं	९७७	यस्य ते विश्वमानुषो	४८४	या विश्वासां जनितारा	३३०७
यमिमं त्वं वृषाकपिं	२६४३	यस्य ते स्वादु सख्यं	२३०१	या वीर्याणि प्रथमानि	२७५१
यं मे दुरिन्द्रो मरुतः	१७६	यस्य त्यच्छम्बरं	२००२	या वृत्रहा परावति	४६७
यश्चर्षणिप्रो वृषभः	२८६९	यस्य त्यत् ते महिमानं	२७३८	यासां तिस्रः पञ्चाशतो	१०३७
यश्चिच्छि त्वा बहुभ्य	९४५	यस्य त्वमिन्द्र रजोमेधु	५१८	यासि कुत्सेन सरथ०	१४७७
यस्त इन्द्र मिथो जनो	२१५८			युक्तस्ते अस्तु दक्षिण	९२९

युक्ष्वा हि केशिना हरी	६०	येन ज्योतीर्ग्यायवे	३७३	यो नो वसुव्यन्नाभिदाति	२९८४
युक्ष्वा हि वृत्रहन्तम	१७२	येन मानासश्चितयन्त	३२६७	यो भोजनं च दयसे	११४२
युजं हि मामकृथा	१६८९	येन वृद्धो न शवसा	२०३८	यो मा पाकेन मनसा २२८५; ३२८५	
युजा कर्माणि जनयन्	२६२१	येन सिन्धुं महीरपो	२९०	यो मायातुं यातुधाने० २२८६, ३२९३	
युजानो अश्वा वातस्य	२४६९	येन सूर्या सावित्री	२९००	यो रभ्रस्य चोदिता	११२७
युजानो हरिता रथे	२११७	येना दशगवमधिगुं	२८९	यो रथिवो रथिन्तमो	२०३६
युजे रथ गवेषणं	२१८२	येना समुद्रमसृजो	१६५	यो राजा चर्षणीनां	२३२१
युज्जन्ति ब्रह्मरूपं	२४	येनेमा विश्वा च्यवना	११२५	यो रायोऽवनिर्महान्	१३; १९२
युज्जन्ति हरी इषि	२३७२	ये पाकशंसं विहरन्त	३२८६	यो रोहितौ वाजिनौ	१७४९
युज्जन्त्यस्य काम्या	२५	ये पातयन्ते अजमभि०	१८३४	यो वाचा विवाचो	२४८५
युधा युधसुप वेदेशि	७८१	येभिः सूर्यसुषंसं	१८४५	यो विश्वस्य जगत	८२१
युधेन्द्रो मङ्गा	१३०७	ये वायव इंद्रमादनास	३२४२	यो विश्वान्यभि व्रता	२०७
युधं सन्तमनर्वाणं	२४०४	येवाषास कष्कषास	२८८०	यो वृत्राय सिनमत्रा०	१२२८
युधस्य ते वृषभस्य	१४०९	ये सोमासः परावति	२४३५	यो वेदिष्ठो अव्यथिष्वश्वान्तं	१३९
युधो अनर्वा खज	२१५३	यो अक्ष्यौ परिसर्पति	२८७६	यो व्यंसं जाह्वाणेन	८१८
युनजिमे ते ब्रह्मणा	९३०	यो अद्धाज्ज्योतिषि	२६१३	यो व्यतीरफाणयत्	२३१५
युथोप नाभिरुपरस्त्रयोः	८५०	यो अस्तु चन्द्रमा इव	६८६	यो हत्वाहिमरिणात्	११२४
युर्व सुराममश्विना	२९६०	यो अर्यो मर्तभोजनं	९२१	रथं हिरण्यवन्धुर०	३२२३
युवं तमिन्द्रापर्वता	१०३३	यो अश्वानां यो गवां	८२०	रथिरासो हरयो	५०२
युवं प्रतनस्य साधयो	१३५३	यो अस्त्रे ग्रंस उत	१७२९	रथेन पृथुपाजसा	३२२४
युवां हवन्त उभयास	३१८७	यो गृणतामिदासिथा०	२०७६	रथेष्टायाध्वर्यवः	२४१
युवाकु हि शचीनां	३१३७	योगेयोगे तवस्तरं	७०५	रपत् कविरिन्द्रार्कसातौ	१०७५
युवां नरा पश्यमानास	३१८२	यो जात एव प्रथमो	११२२	राजेव हि जनिभिः	२१२०
युवामिद्धयवसे	३१५२	यो दग्धेभिर्हव्यो	२५४४	रायस्कामो वज्रहस्तं	२२३७
युवामिद युस्तु	३१७५	यो दुष्टो विश्ववार	१८२५	राया वयं ससवांभो	३१६०
युवामिन्द्राग्नी वसुनो	३०२५	यो देवो देवतमो	१५५७	रारन्धि सवनेषु	१३७६
युवाभ्यां देवी	३०२४	योद्धासि कृत्वा शवसोत	८९७	रासि क्षयं रासि	१११४
युवो राष्ट्र बृहदिन्वति	३१९३	यो धृषितो योऽवृत्तो	२१५	रुद्राणामेति प्रदिशा	८२३
ये क्रिमयः शितिकक्षा	२८७८	यो न इदमिदं पुरा	४१७	रूपरूपं प्रतिरूपो	२११६
ये गव्यता मनसा	२०९९	यो न इंद्राभितो	२७८१	रूपरूपं मघवा	१४६०
ये च पूर्व ऋषयो	२१७९	यो न इंद्राभिदासति	२७८२	रेवतीर्नः सधमाद्	७११
ये चाकनन्त चाकनन्त	१७०४	यो नः शश्वत् पुराविथा०	६६२	रेवां इद् रेवत	१२८
ये ते पन्थानोऽव	२९१२	यो नार्मर सहवसुं	११४४	रोहिच्छयावा	९७२
ये ते धिप्र ब्रह्मकृन्	२६०७	योनिष्ट इंद्र निषदे	८४७	रोहितं मे पाकस्यामा	१७७
ये ते वृषणो वृषभास	१०९२	योनिष्ट इंद्र सद्ने	२१८६	वज्रं यश्चक्रे सुहनाय	२७२०
ये ते शुभं ये	१२८४	यो नो दाता वसुनामिन्द्रं	५०९	वज्रेण हि वृत्रहा	२७३०
ये ते सन्ति दशविन्	९५	यो नो दाता म न.	५१९	वधीं वृत्रं मरुत	३२५७
ये त्वामिन्द्र न	२५४	यो नो दास आर्यो वा	२५४३	वधीदिन्द्रो वरशिखस्य	१९५९
ये त्वाहिहस्ये मघवन्	१४१७	यो नो देवः परावतः	२९३	वधीहि दस्युं धनिर्न	७३३
		यो नो रसं दिप्तति	३२८७	वधूरियं पतिमिच्छन्त्येति	१७५२

वनीवानो मम वृतास .	२८४८	वस्यां इन्द्रासि मे	९२	वि न इन्द्र मृधो जहि	२८१७
वने न वा यो न्यधायि	२५१५	वह कुत्समिन्द्र	१०७३	वि विप्रोरहिमायस्य	१८९०
वनेम तद्धोत्रया	१००६	वहन्तु त्वा रथेष्ठामा	२२३	विभ्राजज्ज्योतिषा	२३६६
वनीति हि सुन्वन्	१०४०	वाचमष्टापदीमहं	६३९	वि यदहेरध त्विषो	२४४३
वज्रीभिः पुत्रममुवो	१५३०	वाचस्पतिं विश्वकर्मा०	२९३१	वि यत् तिरो धरुणमच्युतं	८०९
वयं शूरोभिरस्तृभिः	४१	वाजस्य मा प्रसव	२९३६	वि यद् वरांसि पर्वतस्य	१५५१
वयं हित्वा बन्धुमन्तमबन्धवो	४१२	वाजेषु सासहिर्भव	१३३९	वि यो ररप्श ऋषिभि०	१५३७
वयः सुपर्णा उप सेदुः	२६३३	वातस्य युक्तान्सु०	१७०१	वि रक्षो वि मृधो	२८१६
वयं घ त्वा सुतावन्त	२१०	वामं वाम त आदुरे	१६२९	विवेष यन्मा धिषणा	१२९५
वयं घा ते अपिष्मसि	१८६	वायविन्द्रश्च चेतथः	३२११	विवकथ महिना	२४१९
वयं घा ते अपूर्व्येन्द्र	६२३	वायविन्द्रश्च शुष्मिणा	३२२८	विशंविशं मघवा	२५६२
वयं घा ते त्वे इन्द्रिन्द्र	६२५	वायविन्द्रश्च सुन्वत	३२१२	विश्वं सत्यं मघवाना	३३५९
वयं जयेम त्वया	८३१	वार्णं त्वा यग्याभि	२३७१	विश्वजिते धनजिते	१२१७
वयं त इन्द्र स्तोमेभिर्विधेम	५३८	वार्त्रहत्याय शवसे	१३३४	विश्वमित् सवनं	८५
वयं त एभिः पुरुहूत	१८८३	वावृधान उप द्यवि	२८२	विश्वस्मात् सीमधर्मा	१६०२
वयं ते अस्य वृत्रहन्	१७९७	वावृधानः शवसा	२७६५	विश्वो अर्यो विपश्चितो	६०९
वयं ते अस्यामिन्द्र	१९५४	वावृधानस्य ते वयं	३५९	विश्वा पृतना अभिभूतरं	९८५
वयं ते त इन्द्र ये	१७२१, २२२१	वावृधानो मरुत्सखेन्द्रो	६३०	विश्वा द्वेषांसि जहि	५२८
वयं ते वय इन्द्र	१२०८	वास्तोष्पते ध्रुवा	४०७	विश्वानरस्य वस्पति०	२२९४
वयमिन्द्र त्वे सचा	१६४८	वि क्रोशनासो विश्वञ्च	२५०८	विश्वानि विश्वमनसो	१७९६
वयमिन्द्र त्वायव	२७८३	वि चिद् वृत्रस्य दोधतो	२४८	विश्वानि शक्रो नर्याणि	१४७२
वयमिन्द्र त्वायवो	२२२६	वि जानीह्यार्यान् ये	७५२	विश्वामित्रा अरासत	१४६५
वयमु त्वा शतक्रतो	२४०८	वि तर्तूर्यन्ते मघवन्	९०	विश्वा रोधांसि	१५५८
वयमिन्द्र त्वायवो	१३७९	वि तिष्ठध्व मरुतो	३२९५	विश्वा हि मर्त्यत्वना	२४०९
वयमु त्वा तदिदधा	१३१	वि ते वज्रासो अस्थिरन्नवतिं	९०७	विश्वाहेन्द्रो अधिवक्ता	८३८, ९७५
वयमु त्वा दिवा सुते	५९४	वित्वक्षणः समृतौ	१७३२	विश्वे चनेदना त्वा	१६११
वयमु त्वा मपूर्यस्थूरं	४०९	वि त्वदापो न पर्वतस्य	१९३३	विश्वे त इन्द्र वीर्यं	५७२
वयमेनमिदा ह्यो	६१९	वि त्वा ततस्ते मिथुना	१०२३	विश्वे त् ता ते	९९६
वयो न वृक्षं सुपलाश०	२५६०	विदद् यदी सरमा	१२६५	विश्वे त् ता विष्णुराभर	६४९
वरिष्ठे न इन्द्र	२१०७	विदुष्टे अस्य वीर्यस्य	१०२४	विश्वेदनु रोधना	११४६
वरिष्ठो अस्य दक्षिणामियर्तान्द्रो	१९७६	विदुष्टे विश्वा भुवनानि	३१५७	विश्वे देवासो अध	२७५२
वरुणः क्षत्रमिन्द्रियं	२९५६	वि दृढानि चिद्विबो	२०६८	विश्वेषामिरज्यन्तं	१८३२
वर्धस्वा सु पुरुष्टुत	३४५	विद्या सखित्वमुत	४१६	विश्वेषु हि त्वा	१०२२
वर्धाद् यं यज्ञ	१९८१	विद्या हि त्वा तुविकूर्मिं	६७१	विश्वे ह्यस्मै यजताय	११७५
वर्धान् यं विश्वे	१८५१	विद्या हि त्वा धनंजयं वाजेषु	१३८७	विश्वो ह्यभ्यो अरिराजगाम	२५२३
ववक्ष इन्द्रो अमित०	१४७१	विद्या हि त्वा धनंजयमिन्द्र	४५५	वि षु विश्वा अभियुजो	४५०
ववक्षुरस्य केतव	२९४	विद्या हि त्वा वृषन्तमं	६७	वि षु विश्वा अरातयो	२७८०
वषट्हुतेभ्यो वषड्हुतेभ्यः	३१२६	विद्या हि यस्ते आद्रिव०	२४१४	वि पू चर स्वधा	१९८
वसूनां वा चर्कष	२६३४	विद्या ह्यस्य वीरस्य	१३६	विषूचो अश्वात्	३०५०
वसोरिन्द्रं वसुपतिं	५६	विधुं दद्राण ममने	२६१८		

वि षू मृधो जनुषा	१६८८	वेत्था हि निर्कृतीनां	१८१३	शास हत्था महाँ अस्थ०	२८१४
विषुवदिन्द्रो अमतेरुत	२५५२	वोचेमेदिन्द्र मघवानमेनं	२२१२;	शासद् वह्निर्दुहितु०	१२६०
विष्पर्धसो नरां	१०६५		२२१७; २२२२	शिक्षा ण इंद्र राय	२४०५
वि सद्यो विश्वा इंहिता०	२१३१	व्य१न्तरिक्षमतिन्मदे	३६०	शिक्षेयमस्मै दिस्सेयं	३५५
वि सूर्यो मध्ये	२७९४	व्यन्तिवन्नु येषु	१११५	शिक्षेयमिन्महयते	२२५३
वि स्तुतयो यथा पथा	२९२१	व्य१र्य इंद्र तनुहि	२७६०	शिभिन् वाजानां	६९३
वि हि त्वामिन्द्र	२७४१	व्यानलिन्द्रः पृतनाः	२५२२	शुक्रस्याथ गवाशिर	३२२०
वि हि सोतोरसक्षत	२६४०	शंसा महामिन्द्रं	१४२४	शुचिं नु स्तोमं	३०७१
वि ह्यस्थं मनसा	३०२१	शंसावाध्वर्यो प्रति	१४५५	शुचिरसि पुरुनिःष्ठाः	१२४
वीन्द्र यासि दिव्यानि	२५३१	शंसेदुक्थं सुदानव	२२२४	श्रुनं हुवेम मघवान०	१२५९; १२८१;
वीरेण्यः क्रतुरिन्द्र	२७१२	शग्धी न इन्द्र यत्	१६६	१२९८; १३११; १३२२; १३३३; १३५४;	
वीळु चिदारुजन्तुभि०	३२४५	शग्धी नो अस्थ यद्ध	१६७	१३६३; १३९८; १४२३; १४२८; १४३३;	
वीळौ सतीरभि	१२६४	शग्ध्यू३षु शचीपत	५५२	२६७९; २७१३	
वृकश्चिदस्य वारण	६२०	शचीव इन्द्र पुरुकृद्	७७७	शुभ्रं नु ते शुष्मं	११०४
वृक्षेवृक्षे नियता	२५१२	शचीव इन्द्रमवसे	२६३८	शुष्णं पिमुं कुयवं	८४६
वृज्याम ते परि द्विषो	४५२	शचीवतस्ते पुरुशाक	१९३१	शुष्मासो ये ते अद्रिवो	१७५७
वृत्रखादो वलंरुजः	१४०५	शतं वा यः शुचीनां	७००	शुष्मिन्तमं न ऊतये	१३४१
वृत्रस्य त्वा श्वसथा०	२३५१	शतं वा यस्य दश	११४५	शुष्मिन्तमो हि ते	१०८३
वृत्राण्यन्यः समिथेषु	३१९०	शतं वा यदसुर्यं	२७२४	शूरो वा शूरं वनते	१९४१
वृत्रेण यदहिना	२७४७	शतं वेणुच्छत श्रुनः	५४१	शृणुतं जरितुर्हव०	३०८०
वृषणस्ते अभीशत्रो	२२०	शतं श्वेतास उक्षणो	५४०	शृण्वे वीर उग्रमुग्रं	२११४
वृषभो न तिग्मशृङ्गो	२६५४	शतक्रतुमर्णवं	१४३५	शेवारे वार्या पुरु	१०८
वृषभिन्द्र वृषपाणास	१०४१	शतं जीव शरदो	३११६	शेषन् नु ते इन्द्र	१०७२
वृषाकपायि रेवति	२६५२	शतेना नो अभिष्टि०	३२२१	अथद् वृत्रमुत	३०५६
वृषा ग्रावा वृषा	३५२; १७६६	शतं ते शिभिन्नूतयः	२१९४	श्यावाश्वस्य रेभत०	१७८२
वृषा जजान वृषणं	२१५५	शतब्रध्न इषुस्तव	६४६	श्यावाश्वस्य सुन्वत०	१७७५
वृषा ते वज्र उत	११७७	शतमश्मन्मयीनां	१६२५	श्यावाश्वस्य सुन्वतो	३०९८
वृषा त्वा वृषणं वर्धतु	१७४८	शतं मे गर्दभानां	५४६	श्रुतं ते दधामि प्रथमाय	२८०४
वृषा त्वा वृषणं हुवे	३५३; १७६७	शतानीका हेतयो	४९६	श्रवच्छुर्कर्णं ह्वयते	२२३९
वृषा न क्रुद्धः पतय०	२५६४	शतानीकेव प्र	४८६	श्रातं हविरो षिंन्द्र	२८३७
वृषा मद इंद्रे	१९२८	शतैरपद्रन् पणय	१८८७	श्रातं मन्य ऊधनि	२८३८
वृषायमाणोऽवृणीत	७१७	शत्रूयन्तो अभि ये	२६७६	श्रायन्त इव सूर्य	२३७८
वृषायमिन्द्र ते रथ	३५१	शनैश्चिद् यन्तो	४५३	श्रावयेदस्य कर्णा	१६०६
वृषा यूथेव वंसगः	३५	शवसा ह्यसि श्रुतो	१७२१	श्रिये ते पादा दुव	१९६४
वृषा वृषान्धि	१५५६	शविष्ठं न आ भर	१८७६	श्रिये ते पृश्निरुपसेचनी	२७२३
वृषासि दिवो	२०५६	शशः क्षुरं प्रत्यञ्चं	२५२८	श्रुत वो वृत्रहन्तमं	२४४५
वृषा सोता सुनोतु	२२१	शश्वदिन्द्र पोमुथझिर्जिगाय	७१४	श्रुधी न इन्द्र ह्यामसि	१९४७
वृषा ह्यसि राधसे	१७३९	शश्वन्तो हि शत्रवो	२१३६	श्रुधी हवं विपिपान०	२१७४
वृष्णः कोश पवते	११७६	शाकमना शाको अरुणः	२६१९	श्रुधी हवं तिरश्चया	२३३९
वृष्णे यत् ते वृषणो	१६९७	शाचिगो शाचिपूजनाऽयं	४०५	श्रुधी हवामिन्द्र	११०१; २८१३

श्रुष्टी वां यज्ञ उद्यतः	३१६१	स वेदुतासि वृत्रहन्	१६२७	सदिद्धि ते तुविजातस्य	१८५९
श्रित्यञ्चो मा दक्षिणत०	२२६२	सं गोमदिन्द्र वाजवदस्मे	५४	सञ्जव प्राचो वि	११६४
स आ गमदिन्द्रो	१७४४	सं घोषः शृण्वेऽवमैरमित्रै०	१२५३	सद्यश्चिन्तु ते मधवन्	२१४८
स इत् तमोऽवयुनं	१८९९	सचन्त यदुषसः	२७३१	सद्योजुवस्ते वाजा	६७८
स इत् सुदानुः स्ववाँ	३१६५	सचस्व नायमवसे	१९३७	सद्यो ह जातो	१४१९
स इद् दासं तुवीरवं	२६८५	सचायो रिन्द्रश्चकृष	२७१७	स हुहणे मनुष	२६८६
स इद् वने नमस्युभिर्वचस्यते	८००	सचा सोमेषु पुरुहूत	६१८	स धारयत् पृथिवीं	८४०
स इन्नु रायः सुभृतस्य	२८०७	सं च त्वे जमर्गिर	२०२१	सध्रीचीः सिन्धुमुशतीरिवायन्	२७३४
स इन्महानि समिथानि	८०१	सं बोदय चित्रमवाङ्	५२	सध्रीमा यन्ति	११३८
स इषुहस्तैः स नि०	२६९४	स जातूभर्मा अद्धान	८४१	स न इन्द्रः शिवः	२४३२
स ई पाहि य ऋजीषी	१८४२	स जातेभिर्वृत्रहा	१२७०	स न इन्द्र त्वयताया २१६०; २१७०	२१७०
स ई महीं धुनिमेतो०	११६६	स जामिभिर्यत्	९६७	स नः क्षुमन्तं सदने	२५४२
स ई स्पृधो वनते	१८९२	सजोषा इन्द्र सगणो	१४१५	स नः पप्रिः पारयाति	३९२
सं यजनान् ऋतुभिः	१०३२	सतः सतः प्रतिमानं	१२६७	स नः शक्रश्चिदा	१९१
सं यजनौ सुधनौ	१७३४	स तुर्वणिर्महाँ अरेणु	८०७	स नः सोमेषु सोमपाः	९८१
सं यत् त इन्द्र मन्यवः	१६३५	स तु श्रुधि श्रुत्या	२०३५	स नः स्ववान	१७९२
सं यद्वयं यवसादो	२४९९	स तु श्रुधीन्द्र नूतनस्य	१९०४	स नश्चित्राभिरद्विवो	१६४९
सं यन्मदाय जुगिम्ण	७०१	सत्तो होता न ऋत्विग्य	१३७४	सनद्वाजं विप्रवीरं	२८४५
सं यन्मही मिथती	३०७५	सत्य तत् तुर्वशे	४६९	सना ता त इन्द्र भोजनानि	२१४५
सं वां कर्मणा समिषा	३३०६	सत्यं तदिन्द्रावरुणा	३२०४	सना ता त इन्द्र नव्या	१०७६
सं होत्रं स्म पुरा	२६४९	सत्यमित् तन्न	१९७१	सनात् सनीळा अवनीरवाता	८८१
सः स्तोम्यः स हव्यः	३८९	सत्यमित्था वृषेदसि	२१९	सनादेव तव रायो	८८३
संक्रन्देनानिमिषेण	२६२३	सत्यमिद् वा उ तं वयमिन्द्रं	५७७	सनाद् दिवं परि	८७९
सखाय आ शिषामहि	१७९०	स त्वं न इन्द्र धियसानो	१७१८	सनामाना चिद् ध्वसयो	२६२८
सखायः ऋतुमिच्छत	२३३३	स त्वं न इन्द्र वाजेभि०	३९३	सनायते गोतम	८८४
सखायस्त इन्द्र	२१६९	स त्वं न इन्द्र सूर्ये	८५२	सनायुवो नमसा०	८८२
सखायो ब्रह्मवाह से	२०६३	स त्वं न इन्द्राकवाभिरुती	२०१९	सनितः सुसनितरुद्र	१८३६
सखा सख्ये अपचत्	१६७३	स त्वं नश्चित्र	२०२१	सनिता विप्रो अर्वाङ्गिर्हन्ता	१५१
सखा ह यत्र सखिभि०	१३५९	स त्वामदद् वृषा	९०१	सनिर्मित्रस्य पप्रथ	२९९
सखीयतामविता	१५०५	सत्रा ते अनु कृष्टयो	१६१०	स नीव्याभिर्जरितारमच्छा	२०१४
सखे विष्णो वितरं	९९९	सत्रा त्वं पुरुष्टुतं	३७९	सनेम तेऽवसा	१८९३
सख्ये त इन्द्र वाजिनो	७१	सत्रा मदासस्तव	२०३१	सनेम ये त	१११९
स गोमघा जरित्रे	२०२९	सत्रा यदीं भार्वरस्य	१५५०	सनेमि सख्यं स्वपस्यमानः	८८०
स गोरश्वस्य वि ब्रजं	१८४	सत्रासाहं वरेण्यं	१३०८	स नो ददातु तां रयि०	२८८९
स ग्रामेभिः सनिता	९६६	सत्रासाहो जनभक्षो	१२१९	स नो नव्येभिर्वृषकर्मन्नुक्थैः	१०२०
स घा तं वृषणं रथमाधि	९२८	सत्रा सोमा अभवन्नस्य	१४९३	स नो नियुजिः पुरुहूत	१९१७
स घा नो योग आ	१६	सत्राहणं दाष्टिं	१४९५	स नो नियुजिः पृण	२०८०
स घा राजा सत्पतिः	७९२	सदस्य मदे सदस्य	१९५६	स नो बोधि पुरएता	१९०६
स घा वीरो न रिष्यति	३३५७	सदा व इन्द्रश्चकृषदा	२९७६	स नो बोधि पुरोळाशं	१९२४

स नो युवेन्द्रो	१२१०	समिन्द्रेय गामनद्वाहं	३३५५	स वृत्रहेद्वश्वर्षणीधृन्	२३६२
स नो वाजाय श्रवस	१८५४	समिन्द्रो गा भजयत्	१४९८	स वेतसु दशमायं	१८९१
स नो वाजेवविता	१८२९	समिन्द्रो रायो	५२४	सव्यामनु स्फिरयं	२३६
स नो विश्वान्या भर	२४५८	समी रेभासो अस्वरस्मिन्द्रं	९८६	स ब्राधतः शवसाने०	२६८८
स नो वृषन्सनिष्ठया	२४११	समीं पणेरजति	१७३३	स शेवृधमधि धा	७९६
स नो वृषन्नसुं चरुं	३३	समुद्रे अन्तः शयत	९९८	स श्रुधि यः स्ना	१००१
सन्ति ह्ययं आशिष	५३७	समुद्रेण सिन्धवो	१३२९	स सत्यसत्त्वन्	२०१०
स पत्यत उभयोर्नृणमयोर्यदी	१९४३	समोहे वा य आशत	४३	ससन्तु त्या अरातयो	६९५
स पर्वतो न धरुणेष्वच्युतः	७६१	संपश्यमाना अमदक्षभि	१२६९	स सर्गेण शवसा तक्तो	२०१५
स पित्र्याण्यायुधानि	२४६४	सं भानुना यतते	१७५०	स सव्येन यमति	९६५
स पृथ्वीं महानां वेनः	५७८	सं भूम्या अन्ताध्वसिरा	३१८४	ससानास्यो उत	१३०९
सप्त वीरासो अधरादुदाय	२५०५	सं मा तपन्त्यभितः	२५३९	स सुक्रतुर्ऋतचिदस्तु	३२००
ससापो देवीः सुरणा	२७१०	सत्रालन्यः स्वराळन्य	३१७३	स सुक्रतू रणिता	२३६१
ससी चिद् घा मदच्युता	२२७	स यङ्गयोऽवनीर्गोववा	२६८३	स सुन्वत इन्द्रः	१२०३
स प्रत्यथा कविबृध	५८१	स युधमः सत्त्वा खजकृत्	१८५७	स सुष्टुभा स स्तुभा	८७५
स प्रथमे व्योमनि	३२२	स यो न मुहे	१८६३	स सुतुभिर्न रुद्रेभिर्ऋवा	९६१
स प्रथमो बृहस्पति०	२९२५	स यो वृषा वृण्येभिः	९५७	स सूर्यः पर्युक्त	२६६४
स प्रबोळहृन्	११६५	स रथेन रथीतमो	२०७४	स सोम आमिश्रतमः	१९६५
स प्राचीनान्	११८५	स रन्धयत् सदिवः	१२०४	सस्तु माता सस्तु पिता	२२७४
स भूतु यो ह प्रथमाय	११८२	सरस्वति त्वमस्माँ	१२३३	सस्थावाना यवयसि	१७७९
स मज्जना जनिम	१८६२	सरस्वती मनसा	२९४१	सहदानां पुरुहूत	१२४५
समत्र गावोऽभितो०	१६९१	सरस्वती योन्यां	२९५२	स ह श्रुत इन्द्रो	१२१३
समस्तु त्वा शूर	१०६२	स राजसि पुरुष्टुतं	३७१	सहस्तन्न इन्द्र	२९९६
समना तूर्णिरूप यासि	२६२६	स रायस्त्रामुप	२०३४	सहस्रं व्यतीनां	१६६१
समनेव वपुष्यतः	५७४	स रुद्रेभिरशस्तवार	२६८४	सहस्रं साकमर्चत	९०८
स मन्दस्त्रा ह्यनु	१९२५	सरूपैरा सु नो गहि	४३६	सहस्रं त इन्द्रोतयो	१०४२
स मन्दस्त्रा ह्यन्धसो	१३७८; २०८६	सरूपौ द्वौ विरूपौ	२८७७	सहस्रवाजमभिमातिषाहं	२७०९
स मन्थु मर्त्याना०	६५६	सर्वं परिक्रोशं जहि	६९८	सहस्रशङ्खो वृषभो	२२७६
स मन्थुमीः समदनस्य	९६२	सर्वेषां च क्रिमीणां	२८८६	सहस्रसामाग्निवार्शि	१७३५
समस्य मन्यवे विशो	२४६	स वज्रभृद् दस्युहा	९६८	सहस्राक्षेण शतशरदेन	३११५
स मातरा सूर्येणा	२०१२	स वह्निभिर्ऋक्वभिर्गोषु	२०१३	सहस्रा ते शता	१६६२
समानमस्मा अनपा०	२६६५	स वाजं यातापदुष्पदा	२६८२	सहस्रेणैव सचते	२३४
स माहिन इन्द्रो	१२०१	स वावशान इह	१४४१	सहस्रे वृषतीनामधि	६११
समित् तान् वृत्रहाखिदत्	६४२	सविता वरुणो	२९५५	सहावा पृत्सु	१४२६
समिद्धाग्निर्वनवत्	१७५१	स विद्राँ अङ्गिरोभ्य	५८०	स हि धीभिर्हव्यो	१८६१
समिद्धे अग्नौ	१९९०	स विद्राँ अपगोहं	११६८	स हि ध्रुता विधुता	२६८१
समिद्धेवग्निस्वानजाना	३०११	स वीरो अप्रतिष्कृत	२२४०	स हि द्वरो द्वरिषु	७६२
समिन्द्र गर्दभं मृग	६९६	स वृत्रहस्ये हव्यः	१५७८	स हि विश्वानि पार्थिवौ	२०७९
समिन्द्र नो मनसा	३१२१	स वृत्रहेंद्र ऋशुक्षाः	२३६३	स हि श्रवस्तु सदनानि	८०२
समिन्द्र राया समिपा	७७९	स वृत्रहेंद्रः कृष्णयोनीः	१२१४	साकं जातः क्रतुना	१२२५

सा ते जीवातुरुत	२५१४	सेमं नः स्तोममा	८२	स्वयुरिन्द्र स्वराळसि	१४०८
सा विश्वायुः सा	२९१८	सेहान उग्र पृतना	१७७७	स्वरन्ति त्वा सुते नरो	२११
सास्मा अर प्रथमं	११९१	सो अग्र एता नमसा	३०७७	स्वर्जितं महि	२८३०
सास्मा अरं बाहुभ्यां	११८६	सो अङ्गिरसामुचथा	१२१२	स्वर्जेष भर	१०२९
सिन्धूरिव प्रवण	२१०३	सो अङ्गिरोभिरङ्गिरस्तमो	९६०	स्वार्थं वेदि सुदशीक०	१४७०
सीदन्तस्ते वयो यथा	४१३	सो अप्रतीनि	१२०२	स्ववृजं हि त्वामह०	२५४५
सीसेन तन्त्रं मनसा	२९३८	सो अभियो न यवस	२६८७	स्वस्तये वाजिभिश्च	१२५५
सुगा वो देवाः सदना	३१२३	सो अर्णवो न नद्यः	७९८	स्वास्तिदा विशस्पति	२८१५
सुत इत् त्वं निमिष्ठ	१९१८	सो चिन्नु वृष्टिर्युध्या	२४८४	स्वादवः सोमा आ	१४३
सुतः सोमो असुतादिन्द्र	१९९६	सो चिन्नु सख्या	२६०२	स्वादुष्टे अस्तु संसुदे	३९९
सुतपात्रे सुता इमे	१८	सोता हि सोममद्रिभि०	१०३	स्वादोरिस्था विपूवतो	९४६
सुता इन्द्राय वायवे	३२३२	सोदञ्चं सिन्धुमरि०	११६७	स्वायुधं स्ववसं	२८४३
सुतावन्तस्त्वा	६०६	सोम इद्रः सुतो अस्तु	६२७	हंसा इव कृणुथ	१४६२
सुतेसुते न्योकसे	५७	सोममन्य उपासदत्	३३३१	हत वृत्रं सुदानव	३२४९
सुदेवा स्थ काण्वायना	५४२	सोममिन्द्रावृहस्पती	३३२२	हतासो अस्य वेशसो	२८८५
सुनीथो वा स मर्यो	१८२०	स्तवा नु त इन्द्र	११०६	हतो येवाषः क्रिमीणां	२८८१
सुनोता सोमपात्रे	२२४२	स्तीर्ण ते बर्हिः	१३१८	हतो राजा क्रिमीणा०	२८८४
सुपेशसं माव सृजन्यस्तं	३३३८	स्तुत इन्द्रो मघवा	१५०६	हतो वृत्राण्यार्या	३०६१
सुप्रवाचनं तव	११४७	स्तुतश्च यास्त्वा वर्धन्ति	१४४	हन्ता वृत्रं दक्षिणेनेन्द्रः	१४७
सुप्राव्य प्राशुषाळेष	१५९३	स्तुतासो नो मरुतो	३२६५	हन्ता वृत्रमिन्द्रः	२१५२
सुब्रह्माणं देववन्तं	२८४४	स्तुषेर्यं पुरुवर्ष०	२७६९	हन्ताहं पृथिवीमिमां	२८५८
सुरावन्तं बर्हिषदं	२९३७	स्तुहि श्रुतं विपदिचतं	३३०	हन्तो नु किमाससे	६६५
सुरूपकृतुमृतये	४	स्तुहीन्द्रं व्यश्वव०	१८११	हरित्वता वर्चसा	२७३७
सुविज्ञानं चिकितुषे	३२८९	स्तेनं राय सारमेय	२२७२	हरी त इद्र इमश्रू०	२९९४
सुविवृतं सुनिरजमिन्द्र	६४	स्तोता यत् ते अनुग्रन	३३९	हरी नु कं रथ	११९२
सुवीरस्ते जनिता	१४९१	स्तोता यत् ते विचर्षणि०	३२६	हरी नु त इद्र वाजयन्ता	११०७
सुवीर्यं स्वश्व्यं	३२०	स्तोमं त इद्र	२४८६	हरी न्वस्य या वने	२४८२
सुधामा रथ सुयमा	२५६९	स्तोमासस्त्वा गौरिवीते	१६७७	हरी यस्य सुयुजा	२७१५
सुष्वाणास इद्रं स्तुमसि	२८०९	स्तोत्रं राधानां पते	७०३	हर्यन्नुषसमर्चयः	१४००
सुसंदशं त्वा वयं	९२७	स्तोत्रमिन्द्राय गायत	४६३	हर्यश्वं सत्पतिं चर्षणीसहं	४१८
सूर उपाके तन्वं	१४८०	स्त्रियो हि दास आयुधानि	१६९०	हव एषामसुरो	२६३५
सूरश्चक्रं प्र वृहजात	१०१९	स्थिरं मनश्चकृषे	१६८५	हवं त इद्र महिमा	२२०९
सूरश्चिद्र रथं	१७०२	स्थूरस्य रायो वृहतो	१५४७	हवन्त उ त्वा हव्यं	२२१९
सूर्यस्येव वक्षथो	२२६९	स्पर्धन्ते वा उ	३१९८	हवे त्वा सूर उदिते	३३३
सूर्यो रश्मि यथा सृजा	२०२	स्मत्पुरन्धिर्न आ	४३०	हस्तु पीतासो युध्यन्ते	१०७
सृजः सिन्धूरहिना	२७३३	स्याम ते त इद्र	१११३	हवं न हि त्वा	७६६
सृजो महीरिन्द्र	११०२	स्वमेताभ्युषा जुसुरि	११७०	हदा इव कुक्षय	१३३०
सेमं नः काममा पृण	८६	स्वयं त्वि स मन्यते	२४०	ह्यामसि त्वेन्द्र	१९९७

दैवत-संहितान्तर्गत-इन्द्रदेवतायाः गुणबोधक-पदानां सूची ।

अंहारणा [भूमिः] ६, ४७, २०, ३३२७

अमल्पः १, १०२, ६; ८३३

अकवारिः ३, ४७, ५, १४१८ । ६, १९, ११; १८८१

अकामकर्मनः १, ५४, २, ७७६

अक्षिता [त] वसुः ८, ४९, ६; ४९०

अक्षितोतिः १, ५, ९, २२, ४, १७, १६, १५०३, ६, २४, १; १९२८

अगोरुधः ८, २४, २०, १८०९

अगोह्यः ८, ९८, ४, २३६७

अगो अरिः ८, २, १४; १२९

अग्नि ५, ३४, ९, १७३५

अघ्नन् ७, २०, ८, २१५८

अङ्गिरस्तमः १, १३०, ३; १०१३

अङ्गिरस्तमः अङ्गिरोभिः १, १००, ४; ९६०

अङ्गिरसां उच्यथा जुजुष्वान् २, २०, ५, १२१२

अङ्गिरस्वान् २, ११, २०, ११२० । ६, १७, ६; १८४६

अङ्गिरोभिः गृणान ४, १६, ८, १४७४

अच्युतः १०, १११, ३; २७२७

अच्युतच्युत् २, १२, ९, ११३० । ६, १८, ५; १८६०

अच्युतानि च्यावयन् ३, ३०, ४; १२४१

अच्युतानां च्यवनः ८, ९६, ४; २३४८

अजरः ३, ३२, ७, १२८८ । ६, १९, २, १८७२ । २१ १; १८९७

२२, ३, १९०९ । ३८, ३, १९८० । ८, ६, ३५; २७७ । ९९, ७;

२३८२ । १०, ५०, ५; २६०५ । [वरुण] ६, ६८, ९, ३१६९

अजातशत्रु ५, ३४, १, १७२७ । ८, ९३, १५; १४४४

अजुरः ८, १, २; ८८

अजूर्यः २, १६, १, ११७२ । ६, १७, १३; १८५३ । २२, ९; १९१५ ।

३०, १; १९६८ । ८, १३, २३, ३४३

अजूर्यत् ३, ४६, १; १४०९

अतसाय्यः २, १९, ४; १२०२

अतिनेनीयमान अन्य अन्यम् ६, ४७, १६; २११४

अतिपान्तम् (द्वितीं) वैशान्तम् ७, ३३, २; २२६३

अतूर्तः ८, ५, ७; २३८७

अत्कं वसानः ४, १८, ५; १५१३ । ६, २९, ३; १९६४

अदब्धः ८, ७८, ६, ६५६

अदथा (थौ) [इन्द्राग्नी] ५, ८६, ५; ३०४४

अदयः १०, १०३, ७, २६२७

अदाभ्यः ७, १०४, २०; २२८८ । ८, ६१, १२; ५५९ । अथर्वं ८, ४, २०, ३२९७

अदष्टहा । अथर्वं ५, २३, ६; २८७९

अद्भुतः ८, १३, १९, ३३९ । १०, १५२, १; २८१४

अद्रिः ४, २१, ६; १५४९ । ५, ३८, ३; १७५७ । १, १०९, ३; ३०२३

अद्रिवत् १, १०, ७; ६४ । ११, ५; ७४ । ८०, ७, ९०६ । ८०,

१४; ९१३ । १२२, १०, १०, १००९, १००९ । १३३, २, ६, ६;

१०३५, १०३९-३९ । ३, ३७, ११; १३४४ । ४१, १; १३७३ ।

४, ३२, ५; १६४९ । ५, ३५, ५; १७४० । ३६, ३; १७४६ ।

३९, १, ३; १७६०, १७६२ । ६, ४५, ९; २०६८ । ४६, २, २०९१ ।

७, २०, ८; २१५८ । ८, १, ५, १३; ९१, ९९ । २, ४०; १५५ ।

६, २२, २६४ । १२, ४; २९१ । १३, २६, ३४६ । १५, ४, ३७२ ।

२१, ७; ४१५ । २४, ६, ११; १७९५, १८०० । ३६, ६; १७७४ ।

४५, ११, ४५३ । ४६, २, ११, १८१८, १८२७ । ५०, १०, ५०४ ।

६१, ४, ५५१ । ६२, ११, ५७६ । ६४, १; ५८९ । ६८, ११;

२३०१ । ७६, ८; ६३५ । ९२, १८, २४१४ । २७, २४२३ ।

९७, ९, ९८४ । ९८, ८, २३७१ । १०, १४७, १; २८०४

अद्रोघः ३, ३२, ९; १२९०

अद्रोघवाक् ६, २२, २; १९०८

अधिराजः । अथर्वं ६, ९८, १-२, २९०२-३

अधिवक्ता १, १००, १९; ९७५ । १०२, ११, ८३८ । ८, ९६, २०,

२३६२

अधृष्टः ८, ६१, ३; ५५० । ७०, ३, २३२३

अध्रिगुः १, ६१, १, ८५६ । ६, ४५, २०; २०७९ । ८, ७०, १;

२३२१ । ९३, ११; २४४०

अध्वरः ८, ६३, ६, ५८३

अनपच्युतः ८, ९२, ८, २४०४ । ९३, ९; २४३८

अनर्वा ४, १७, २०, १५०७ । ७, २०, ३; २१५३ । ८, ९२, ८;

२४०४ । १०, ९९, ३; २६८२

अनर्कारातिः ८, ९९, ४; २३७९

अनवद्यः १, १२९, १, १, १०००, १०००। १०, १४७, २, २८०५
 अनाधृष्यः ४, १८, १०, १५१८
 अनानतः ६, ४५, ९; २०६८। ८, ६४, ७, ५९५। ९०, ४;
 २३९४। १०, ७४, ५; २६३८
 अनानुदः २, २१, ४; १२२०। १०, ३८, ५, २५४५
 अनानुदिष्ट (ब्रह्मद्विषः हन्ति) १०, १६०, ४, २८२७
 अनापिः जनुषा ८, २१, १३, ४२१
 अनामृणः १, ३३, १, ७३०
 अनाश्रयिन् (यी) ८, २, १, ११६
 अनिभृष्टः १०, ११६, ६, २७६०
 अनिमानः ६, २२, ७, १९१३
 अनिमिषः १०, १०३, १-२, २६२२-९३
 अनिष्कृतः ८, ९९, ८; २३८३
 अनिष्ट (नि स्तुतः) ८, ३३, ९; २१८
 अनुत्तमन्युः ७, ३१, १२; २२३४। ८, ६, ३५, २७७
 अनुत्तमन्युः सुतेषु ८, ९६, १९, २३६१
 अनुमाद्यः ६, ३४, २; २०२२
 अनुस्पष्टः (अस्य य सोमं सुनोति) १०, १६०, ४ २८२७
 अनूनः ६, १७, ४; १८४४
 अनूगाधः। अथर्व० १९, १५, २, २९१५
 अनूर्मिः ८, २४, २२, १८११
 अनृतुपाः ३, ५३, ८, १४६०
 अनेद्य ८, ३७, १-६, १७७६-८१
 अन्तमः ६, ४६, १०; २०९९। ८, १३, ३, ३२३
 अन्तमः आपिः ८, ४५, १८, ४६०
 अन्तरा भरः ८, ३२, १२, १९१
 अन्तरिक्षप्राः १, ५२, २; ७४६
 अपजगुराणः ५, २९, ४, १६७०
 अपबाधमानः अमित्रान् [बृहस्पतिः] य० १७, ३६, २९३२
 अपराजित १, ११, २, ७१। १०, ४८, ११; २५८९। [इन्द्राग्नी]
 ३, १२, ४, ३०३३। ८, ३८, २, ३०९२
 अपरीतः ५, २९, १४, १६८०
 अपः रिषत्-न् ८, ३२, २; १८१
 अपर्वता गोनाम् ४, २०, ८, १५४०
 अपासि कर्ता ८, ९६, १९; २३६१
 अपां जगिमः ८, ९३, २२, २४५१
 अपामजः ३ ४५, २, १४०५
 अपारः ४, १७, ८, १४९५। ८, ६, २६, २६८
 अपूर्(तु)रुष्य १, १३३, ६, १०३९
 अपूर्वः ८, २१, १ ४०९। ६६, ११; ६२३। ८९, ५, २३८८

अप्पुर ३, ५१, ३, १४३६
 अप्रतिः ५, ३२, ३, १७०७
 अप्रतिभृष्टशवाः १, ८४, २, २३८
 अप्रतिष्कुन १, ७, ६, ८, ३३, ३५। ८४, ७, ९४३। १३ ९४९।
 ८, ९७, १३; ९८८
 अप्रतीतः १, ३३, २, ७३१। १३३, ६, १०३९। ५, ३२, ९,
 १७१३। ६, २०, ९, १८९२। १०, १०४, ७; २७०९।
 १११, ३; २७२७
 अप्रतीतः विश्वतः ३, ४६, ३; १४११
 अप्रभङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७
 अप्रहा-ह-न् ६, ४४, ४; २०३९
 अप्रहित ८, ९९, ७, २३८२
 अप्रामिसत्यः ८, ६१, ४, ५५१
 अप्सुजित् ८, १३, २; ३२२। ३६, १ ६, १७६९-७४
 अबधिरः ८, ४५, १७, ४५९
 अबिभीवान् १, ६, ७, ३२४६
 अबिजत् २, २१, १, १२१७
 अभयकर ८, १, २, ८८। १०, १५२, २; २८१५
 अभिख्याता ४, १७, १७, १५०४
 अभिगाहमान गोत्राणि सहसा १०, १०३, ७, २६९७
 अभिभङ्गाः २, २१, २; १२१८
 अभिभू २, २१, २, १२१८। ८, ९७, ९, ९८४। ९८, २,
 २३६५। १०, १५३, ५, २८२३
 अभिभू विश्वम् ८, ८९, ६, २३८९
 अभिभूतरः ८, ९७, १०; ९८५
 अभिभूतिः ६, १९, ६, १८७६। ८, १६, ८, ३८९। १०,
 १३१, १; २७७३
 अभिभूतिः जनानाम्। अथर्व० ६, ९८, २; २९०३
 अभिभूत्योजाः ३, ३४, ६; १३०३। ४८, ४; १४२२। ६,
 १८, १; १८५६
 अभिभूयसः ८, १७, १५; ४०८
 अभिमातिषा-स-हः १०, ४७, ३, २८४४। १०, ४, ७;
 २७०९
 अभिमातिहन्-हा ३, ५१, ३; १४३६
 अभित्रीर १०, १०३, ५; २६९५
 अभिवा-सा-चः ३, ५१, २; १४३५
 अभिष्टिः पृथनाः ३, ३४, ४; १३०४
 अभिष्टिः महान् १, ९, १; ४८
 अभिष्टिकृत् ४, २०, १; १५३३
 अभिष्टिपाः २, २०, २; १२०९

अभिसत्तः १०, १०३, ५, २६९५
 अभीरुः ४, २९, २, १६०५
 अभीर्वः ८, ४६, ६; १८२२
 अभ्रातृव्यः ८, २१, १३; ४२१
 अमत्र १, ६१, २, ८६४
 अमत्रः वृजने ३, ३६, ४, १३२६
 अमत्रिन् (त्री) ६, २४, ९, १९३६
 अमर्त्यः १, १२९, १०; १००९। १७५, २, १०८०। ३, ५१, १; १४३४
 अमितक्रतुः १, १०२, ६, ८३३
 अमितौजाः १, ११, ४; ७३
 अमित्रखाद १०, १५२, १; २८१४
 अमित्रहन् (हा) ६, ४५, १४; २०७३। १०, २२, ८; २४७३। १३४, ३, २७८७
 अमिन. १०, ११६, १४, २७५८
 अमिनः सहोभि ६, १२, १; १८७१
 अमृक्तः सनात् ८, २, ३१, १४६
 अमृतः ५, ३१, १३, १७०४। ६, २१, १; १९०५। ७, २०, ७; २१५७
 अमृधः ८, ८०, २; ६६२
 अयामन् ८, ५२, ५; ५१९
 अयास्यः १, ६२, ७, ८७८। ८, ६२, २; ५६७
 अयुजः ८, ६२, २; ५६७
 अयुद्धसेनः १०, १३८, ५, २७९६
 अयुध्य १०, १०३, ७; २६९७
 अयोपाष्टिः १०, ९९, ८, २६८७
 अरकृत् ८, १, ११, ९६
 अरंकृतः १०, १२९, १३; २८६२
 अरगमः ६, ४२, १, १९९८। ८, ४६, १७; १८३३
 अरधः ६, १८, ४, १८५९
 अरि अगोः ८, १२, १४; १२९
 अरिषण्यन् दृढहस्य चित् १, ६३, ५, ८८९
 अरिष्टः ५, ३१, १; १६९३
 अरिष्टु-स्तु-तः ८, १, २२; १०८
 अरीढहः ४, १८, १०, १५१८
 अरुणः १, १३०, ९, १०१९
 अरुतहनुः १०, १०५, ७, २७२०
 अरुशहा १०, ११६, ४; २७५८
 अरुषः १, ६, १; २४। १०, ४३, ९; २५६५
 अरेपसौ [इन्द्रवायू] ५, ५१, ६; ३२३१
 अर्कः १, १०, १; ५८

अर्चय्य ६, २४, १; १९२८
 अर्णवः ३, ५१, २, १४३५
 अर्भके [इन्द्राश्वौ] ४, ३२, २३, ३३४८
 अर्यः १, ३३, ३; ७३२। ८१, ९; ९२४। ३, ४३, २, १३९२। ४, १६, १७; १४८३। २४, ८, १५८४। २९, १; १६०४। ७, ३१, ५, २२२७। ८, २, २३, १३८। ३४, १०, ४३४। ५४, ७; ५३७। ६३, ७; ५८४। ६५, ९; ६०९। १०, ८९, ३, २६६५। ११६, ६; २७६०। १४८, ३; २८११
 अर्वन्-र्वा १०, २९, ४; २६८३
 अर्वाञ्च-र्वाक् ८, ४, १४, २४२। ६, ४५; २८७ ३२, ३०; २०९
 अर्वाचीन ४, २४, १; १५७७। ७, २९, २; २२१४। १०, ११६, २; २७५६
 अर्हस्तिस्वि-स्वणि १, ५६, ४; ८०८
 अर्हन्ता-(न्तौ) [इन्द्राग्नी] ५, ८६, ५; ३०४४
 अवकक्षिन्-क्षी ८, १, २; ८८
 अवत्-त् ३, ४६, ४; १४१२
 अवधून्वानः अनानुभूतीः ६, ४७, १७; २११५
 अवनि रायः १, ४, १०; १३। ८, ३२, १३; १९२
 अवयातहेळाः [मरुतः] १, १७१, ६; ३२६८
 अवयाता दुर्मतीनां सदमित् १, १२९, ११; १०१०
 अवस्युः ४, १६, ११; १४७७
 अवहन्ता दुष्प्राव्यः अवाच्यः ४, २५, ६; १५९३
 अवात्. ६, १८, १; १८५६
 अवार्थक्रतु ८, ९२, ८, २४०४
 अविता १, १२९, १०; १००९। ६, ३३, ४, २०१९। ३४, ५, २०२५। ४७, ११, २१०९। ७, ३२, ११; २२४५। ३२, २५; २२५९। ८, १३, १५, २६; ३३५, ३४६। २१, २; ४१०
 अविता एकस्य द्वयो ६, ४५, ५, २०६४
 अविता कारुधायोः ६ ४४, १५; २०५०
 अविता जरितृणाम् ४, ३१, ३; १६३२
 अविता नृणाम् ७, १९, १०, २६४९
 अविता रथानाम् [वृहस्पतिः] य० १७, ३६; २९३२
 अविता वामदेवस्य धीनाम् ४, १६, १८, २०, १४८४; १४८६
 अविता वाजेषु ८, ४६, १३, १८२९
 अविता विधन्तम् ८, २, ३६; १५१
 अविता सखीयताम् ४, १७, १८, १५०५
 अविता सुन्वत वृक्तवर्हिषः ८, ३६, १; १७६९
 अविता स्तोतृणाम् १०, २४, ३, २४९०
 अविदीधयुः ४, ३१, ७, १६३६
 अविहर्षतक्रतुः १, ६३, २, ८८६

अवृक्तः ४, १६, १८, १४८४
 अवृक्ततमः विश्वध १, १७४, १०; १०७८
 अवृतः ८, ३२, १८; १९७ । ३३, ६, १०, २१५, २१९
 अशत्रुः १, १०२, ८, ८३५ । ८, ९२, ४; ६८२ । १०, १३३, २;
 २७७९
 अशस्तवारः १०, ९९, ५, २६८४
 अशस्तिहा ८, ८९, २; २३८५ । ९९, ५; २३८० । १०, ५५, ८;
 २६२१
 अश्मानं विभ्रत् ४, २२, १, १५५५
 अश्वजित् २, २१, १; १२१७
 अश्वपतिः ८, २१, ३; ४११
 अश्वयु १, ५१, १४; ७५८
 अश्वसातमः १, १७५, ५; १०८३
 अश्वः भव अश्वायते ६, ४५, २६; २०८५
 अश्वानां जनिता ८, ३६, ५; १७७३
 अश्वानां पति १, १०१, ४, ८२०
 अश्ववान् १०, ४७, ५, २८४६
 अश्वयः ८, ६६, ३, ६१५
 अषाढः २, २१, २, १२१८ । ६, १८, १, १८५६ । ७, २०, ३,
 २१५३ । २८, २, २२०९ । ८, ३२, २; २०६। ७०, ४, २३२४ ।
 १०, ४८, ११; २५८९
 असमः ६, ३६, ४; २०३४ । ८, ६२, २, ५६७
 असमष्ट काव्यः २, २१, ४; १२२०
 असमालोजाः ६, २९, ६; १९६७
 असुतानाम् ईशिवे ८, ६४, ३, ५९१
 असुन्वतः विष्णुः ५, ३४, ६; १७३२
 असुरः १, ५५, ३; ७८८ । १७४, १, १०६९ । ३, ३८, ४; १३४८ ।
 ८, ९०, ६; २३९६ । १०, ९९, १२; २६२१
 असुरहा ६, २२, ४, १९१०
 असुर्यः ४, १६, २; १४६८ । ७, २२, ५; २१७५ । १०, १०५, ११,
 २७२४
 अस्कृधोयु ६, २२, ३; १९०९
 अस्तु [-स्ता] ८, २३, १; २४३० । १०, १०३, ३, २६२४
 अस्ता अद्रिम् १, ६१, ७; ८६२
 अस्तुत १, ४, ४, ७। ८, ९३, ९, १५; २४३८, २४४४ । १०, ४८,
 ११; २५८९
 अस्त्रा ८, ६३, ४; ५८१
 अस्त्रयु १, १३१, ७, १०२७ । ३, ४१, ७; १३७९ । [इन्द्रवायू]
 २, १३५, ५; ३२१६
 अस्त्रिधा [इन्द्राश्वौ] ४, ३२, २४; ३३४९
 अहसनः ८, ६१, ९; ५५३

अहिहन् [हा] २, १९, ३; १२०१ । ३०, १; १२२७
 अदेलमानः ६, ४१, १; १९९३
 अहणान १०, ११६, ७; २७६१
 अहयः ८, ७०, १३; २३३३
 आकरः वस्वः ५, ३४, ४, १७३०
 आकरः सहात्रा ८, ३३, ५; २१४
 आकाशयः ४, २९, ५; १६०८
 आखंडलः ८, १७, १२; ४०५
 आजिकृत् ८, ४५, ७, ४४९
 आजितुरः ८, ५३, ६, ५३०
 आजिपतिः ८, ५४, ६; ५३६
 आज्ञाता १०, ५४, ५; २६१२
 आतपः चर्षणीनाम् १, ५६, १, ७९७
 आदारिन्-री ८, ४५, १३, ४५५
 आदित्यः [वरुणः] ७, ८४, ४; ३१९५ । ७, ८५, ४; ३२००
 आदुरिः ४, ३०, २४, १६२९
 आनजाना (नौ) [इंद्राश्वौ] १, १०८, ४; ३०११
 आपान्तमन्युः [सोमः] १०, ८९, ५; ३२७६
 आपिः ३, ५१, ६; १४३९ । ५१, ९; १४४२ । ४, १७, १७;
 १५०४। ६, २१, ८; १९०४। ६, ४५, १७, २०७६। ८, ३, १, १५६
 आपिः अन्तमः ८, ४५, १८, ४६०
 आप्यः आप्यानाम् १०, १२०, ६; २७६९
 आसुरिः ८, ९८, १०, ९८५
 आयतः विश्वासु गीर्षु ८, ९२, ७, २४०३
 आयन्ता ८, ३२, १४; १९३
 आयसः १, ५७, ३; ८०७
 आयुधा विभ्रत् १०, ११३, ३; २७४७
 आरितः १, १०१, ४, ८२० । ८, ३३, ५; २१४। १०, १११,
 १०; २७१४
 आरितः विष्णु २, २१, ३; १२१९
 आरुज् दृढा चित् ८, ४५, १३, ४५५
 आरुजस्तु [महत्] १, ६, ५; ३२४५
 आरे अवद्यः १०, ९९, ५; २६८४
 आर्यः ५, ३४, ६, १७३२
 आविष्कृणान ओजः ४, १७, ३, १४९०
 आशुः १, ४, ७, १०। ८, ९९, ७, २३८२। १०, १०३, १; २६९२
 आश्रुकर्णः १, १०, ९; ६६
 आसीनः हर्यतस्य पृष्ठे ८, १००, ५; ९९५
 आहुवाः ८, ३२, १९, १९८

इच्छन् सुतसोमम् ७,९८,१; २२७९
 इनः २,२०,२; १२०९ । ७,२०,५; २१५५ । ८,३३,५;
 २३४ । १०,५०,२; २६०२
 इनः वसुन १,५४,२; ७७६
 इनतम ३,४९,२; १४२५ । १०,१२०,६; २७६९
 इन्द्रज्येष्ठाः [मरुद्गणाः] १,२३,८; ३२४८
 इन्द्रसारथि [वायुः] ४,४६,२; ३२२१
 इन्द्रियः ४,२४,५; १५८१
 इन्द्रियं प्रब्रुवाणः जनेषु १,५६,४; ८००
 इन्वन् दान गवा ५,३०,७; १६८८
 इयानः २,२०,४; १२११ । ७,२९,१; २२१३
 इरज्यन्तं विश्वेषां वसूनाम् ८,४६,१६; १८३२
 इरज्यन्तम् भूरेः वसव्यस्य [इन्द्राग्नी] ६,६०,१; ३०५६
 इरज्यति एकः चर्वणीनाम् १,७,९; ३६
 इरज्यति एकः पञ्चक्षितीनाम् १,७,९; ३६
 इरज्यति एकः वसूनाम् १,७,९; ३६
 इषां दाता ८,४६,२; १८१८
 इषितः धिया ३,६०,५; ३३४१
 इषिरः १,१२९,१; १०००
 इषुमान् । अथर्वं ४,२४,५; २८७१
 इषुः तव शतब्रह्मः सहस्रपणं एक इव ८,७७,७; ६४६
 इषुहस्तः १०,१०३,२; २६९३
 इषगानः आयुधानि १,६१,१६; ८६८
 ईक्षे वसन्तः उभयस्य ६,१९,१०; १८८०
 ईक्ष्यः ४,२४,२; १५७८ । ८,३४,८; ४३२ । अथर्वं
 ६,९८,१; २९०२
 ईशानः १,५,१०; २३ । ७,८; ३५ । ११,८; ७७ । ६१,
 ६,१२,१५; ८६१,८६७,८७० । ८४,७; ९४३ । १७५,
 ४; १०८२ । १०,७३,८; २६३० । [इन्द्राग्नी] ७,२४,२;
 ३०८० । [इन्द्राव्यू] ७,९०,५; ३२३३
 ईशानः अस्य जगतः ७,३२,२२; २२५६
 ईशानः एकः ओजसा ८,६,४१; १८३ । ७६,१; ६२८ ।
 ८,४०,५; ३१०५
 ईशानः तस्थुष ७,३२,२२; २२५६
 ईशानः भूरे ओजसा ८,३२,१४; १९३
 ईशानः रायः ८,४६,६; १८२२ । ५३,१; ५२५
 ईशानः वसूनाम् ८,६८,६; २२९६
 ईशानः वसवः ८,८१,४; ६७३ । [इन्द्रावरुगौ] ७,८२,४;
 ३१७५
 ईशानः वार्याणां पुरुणाम् १,५,२; १५

ईशानः विश्वस्य ओजसा ८,१७,९; ४०२
 ईशानः हयोः ४,१६,११; १४७७
 ईशानकृत् १,६१,११, ८६६ । २,१७,४; ११८४ । ६,
 १८,६; १८६१ । ८,५२,५; ५१९ । ६५,५; ६०५ । ९०,
 २; २३९२
 ईशिषे त्वम् १०,४४,५; २५७२
 ईशिषे असुतानाम् ८,६४,३; ५९१
 ईशिषे अस्य (सोमस्य) ८,८२,७,८,९; ६८५ ८६,८७
 ईशिषे क्षेमस्य प्रयुजश्च ८,३७,५; १७८०
 ईशिषे सुतानाम् ८,६४,३; ५९१
 ईशे कृधीनां पूर्या अनुष्टुतिम् ८,६८,७; २२९७
 ईशे दिवः पृथिव्याः अपाम् पर्वतानाम् वृधाम् मेधिराणाम्
 १०,८९,१०; २६७१
 ईशे विश्वस्य करणस्य एकः १,१००,७; ९६३
 ईशे स्थूयस्य रायः बृहतः ४,२१,४; १५४७
 ईशे वसवः रायः १०,४३,३; २५५९

उक्थवर्धनः ८,१४,११, ३६४

उक्थवाहस्-हाः ८,९६,११, २३५५ । १०,१०४,२, २७०४ ।
 ६,५९,१०; ३०५५
 उक्थः २,१३,२, १२, ११३७, ११४८ । ३,५१,१; १४३४
 उक्थ्य शस्यानाम् [वरुणः] १,१७,५; ३१३८
 उक्षितः २,१६,१; ११७२
 उग्रः १,७,४; ३१ । ३३,५, ७३४ । ५१,११; ७५५ ।
 ५६,३; ७९९ । १००,१२, ९६८ । १०२,१०; ८३७ ।
 १२९,५, १००४ । १३०,७; १०१७ । ३,३०,३, २२;
 १२४०, १२५९ । ३१,२२, १२८१ । ३२,१७, १२९८ ।
 ३४,११, १३११ । ३५,११, १३२२ । ३६,११, १३३३ ।
 ३८,१०, १३५४ । ३९,५, १३२७ । ४६,१; १४०९ ।
 २७,५; १४१८ । ४८,४; १४२२ । ३९,९; १३६३ । ४३,८;
 १३९८ । ४८,५, १४२३ । ४९,५, १४२८ । ५०,५;
 १४३३ । ४,१६,२०; १४८६ । २०,१,६-७, १५३३, ३८-
 ३९ । ४,२२,२, १५०६ । २३,७, १५७२ । २४,४; १५८० ।
 ५,३२,२, ८, १७०६, १२ । ३५,६; १७४१ । ६,१७,१,
 १०,१३; १८४१, ५०,५३ । १९,११, १८८१ । १८,१,४, ६;
 १८५६, ५९, ६१ । २३,३, ८; १९२०, २५ । २५,१, १९३८ ।
 ३७,१; १९७३ । ३८,५; १९८२ । ४१,३; १९९५ ।
 ६,४६,६; २०९५ । ७,२०,१, २१५१ । २२,८; २१७८ ।
 २४,५, २१९० । २५,१, ४, २१९२, २५ । २८,२; २२०९ ।
 ३३,२; २२६३ । ८,१,२७; ११३ । ३,१७; १७२ ।

४, ७, २३५ । ६, १४, १८, २५६, २६० । २१, २, ४१० । २४, ७, १७९६ । ३२, २, २७; १८१, २०६ । ३३, ९; २१८ । ३३, १०, २१९ । ३७, २, १७७७ । ४५, ३५, ४७७ । ४६, २०, १८३६ । ४९, ७; ४९१ । ५०, ६, ५०० । ५२, ५, ५, ५१९, ५१९ । ६१, १२, ५५२ । ६५, ५; ६०५ । ६८, ६, २२९६ । ७०, ४; २३२४ । ९६, १०, २३५४ । ९७, १०, १३; ९८५, ९८८ । १०, २९, ३; २५१७ । ४४, ३, २५७० । ७३, १, २६२३ । ८९, १८; २६७९ । १०३, ५, २६९५ । १०४, ११; २७१३ । ११३, ३, ६; २७४७, २७५० । ११६, ५; २७५९ । १२०, १, २७६४ । ४७, ३; २८४४ । ७, ८२, ५, ३१७६ । साम० २३१, २९८० । [इन्द्राग्नी] १, २१, ४, ३००५ । ऋ० ६, ६०, ५; ३०६० । [इन्द्रः] ऋ० १, १६५, ६, १०; ३२५५, ३२५९ । १, १७१, ५; ३२६७ । [इन्द्रासोमौ] ६, ७२, ५, ३२७५
उग्रः जनुषा ३, ४६, २, १४१०
उग्रधन्वा १०, १०३, ३; २६९४
उग्रबाहुः ८, ६१, १०; ५५७ । अ० ४, २४, २; २८६८
उग्राः [मरुतः] १, १७१, ५; ३२६७
उत्तरः ८, १४, १५; ३६८
उत्तरः विश्वस्मात् १०, ८६, १, २३; २६४०, २६६२
उत्सः हिरण्यय ८, ६१, ६; ५५३
उद्यन्ता गिरः १, १७८, ३; १०९८
उद्वा-द्व-वृषाणः ४, २०, ७, १५३९ । २९, ३; १६०६
उपदधानः आशून् धुरि ४, २९, ४, १६०७
उपमः मघोनाम् ८, ५३, १; ५२५
उपमानां प्रथमः ८, ६१, २; ५४९
उपसद्यः । अथर्व० ६, ९८, १; २९०२
उपस्तभायन् ४, २१, ५, १५४८
उभयस्य राजा ६, ४७, १६; २११४
उभयाविन्-वी ८, १, २, ८८
उराणः समस्तु सताम् १, १७३, ७; १०६२
उरुः २, १३, ७; ११४३ । २२, १; १२२३ । ३, ४१, ५, १३७७ । ४६, ४; १४१२ । ६, १९, १; १८७१ । ८, ६५, ३; ६०३ । १०, ४७, ३; २८४४
उरुक्रमः ८, ७७, १०; ६४९ । [इन्द्राविष्णू] ७, ९९, ६, ३३१६
उरुगायः १०, २२, ४; २५१८
उरुज्याः ८, ६, २७; २६९
उरुधारा ८, १, १०; ९६
उरुव्यचस्-चाः १, १०४, ९, ८५५ । ६, ३६, ३; २०३३ । ७, ३१, ११; २२३३ । ८, २, ५, १२० । ३, ५०, १, १४२९
उरुशंसः ४, १६, १८; १४८४

उर्वराजित् २, २१, १; १२१७
उर्वरापतिः ८, २१, ३; ४११
उर्वी [भूमिः] ६, ४७, २०; ३३२७
उर्व्यूतिः ६, २४, २, १९२९
उशान् १, १०१, १०; ८२६ । ३, ४३, ७, १३९७ । ४, २०, ४; १५३६
उशान् सोमम् सोमान् ४, २४, ६, १५८२ । ७, ९८, २; २२८०
उशधक् ३, ३४, ३, १३०३
ऊर्ध्वः रथः न ३, ४९, ४, १४२७
ऊर्ध्वसानः द्रुहणे मनुषे १०, ९९, ७; २६८६
ऊर्गमी ऋग्मिभिः १, १००, ४; ९६०
ऋग्मियः १, ९, ९, ५६ । ५१, १, ७७५ । ६२, १; ८७२ । ६, ४५, ७, २०६६ । ८, ४०, १०; ३११०
ऋचायन् १०, ११३, ६, २७५०
ऋचायमाणः १, १०, ८, ६५ । ६१, १३, ८६८ । १७६, १, १०८५
ऋचावान् ३, ३०, ३; १२४० । ४, २४, ८; १५८४
ऋचीषमः १, ६१, १, ८५६ । ६, ४६, ४, २०९३ । ८, ३२, २६; २०५ । ६२, ६, ५७१ । ६८, ६; २२९६ । ९०, १; २३९१ । ९२, ९; २४०५ । १०, २२, २; २४६७
ऋजीषः १, ३२, ६; ७२०
ऋजीषिन्-षी ३, ३२, १; १२८२ । ३६, १०; १३३२ । ४३, ५; १३९५ । ४६, ३; १४११ । ५०, ३; १४३१ । ४, १६, १, ५; १४६७, १४७१ । ५, ४०, ४, १७६८
ऋजीषिन् ६, १७, २, १०, १८४२, ५० । १८, २, १८५७ । २०, २, १८८५ । २४, १, १२२८ । ४२, २, १९९९ । ७, २४, ३; २१८८ । ८, ३२, १; १८० । ३३, १२, २२१ । ७६, ५, ६३२ । ८, ९०, ५; २३९५ । ९६, ९, २३५३ । [सोम] १०, ८९, ५; ३२७६
ऋजुकतुः १, ८१, ७; ९२२
ऋजसानः ४, २१, ५; १५४८
ऋणकातिः ८, ६१, १२; ५५९
ऋणयाः ४, २३, ७; १५७२
ऋतम् ४, २३, ८, ९, १०; १५७३ ७४-७५ । ८, ६, १०, २५२
ऋतं कृण्वन् २, ३०, १; १२२७
ऋतपाः ७, २०, ६; २१५६
ऋतस्य प्रजा ८, ६, २; २४४
ऋतयुः ८, ७०, १०; २३३०
ऋतावत्-वा ३, ५३, ८; १४६०
ऋतावृषा (धौ) [इन्द्राग्नी] ६, ५९, ४, ३०४९ । [सविता] ७, ८२, १०; ३१८१ । ७, ८३, १०; ३१९१

ऋत्वीष-तिस-दः ८,४५,३५; ४७७ । ६८,१; २२९१ ।
 ८८,१; ८९४
 ऋतुपाः ३,४७,३; १४१६ । १०,९९,१०; २६८९
 ऋतेजाः ७,२०,६; २१५६
 ऋत्विजा [इन्द्राग्नी] ८,३८,१; ३०९१
 ऋत्विगः ८,६३,११; ५८८ । ८,४०,११; ३१११
 ऋभुः १०,२३,२; २४८२ । १४४,२; २७९८
 ऋभुक्षाः १,६३,३; ८८७ । ८,४५,२९; ४७१ । ९६,२१;
 २३८३ । १०,२३,२; २४८२ । ७४,५; २६३८
 ऋभुमान् ३,५२,६; १४५१ । ६०,६; ३३४२
 ऋभुष्ठिरः ८,७७,८; ६४७
 ऋभवा १०,१२०,६; २७६९
 ऋभवा १,१००,१२,९६८ । ६,३४,२; २०२२ । ८,७०,३;
 २३२३
 ऋभवा रुद्रेभिः १,१७०,५; ९६१ । १०,९९,५; २६८४
 ऋषि ५,२९,१; १६६७ । ८,६,४१,२८३ । १६,७; ३८८
 ऋषिचोदनः ८,५१,३; ५०८
 ऋषीवस्-वान् ८,२,२८; १४३
 ऋषयः १,८१,४; २१९ । २,२१,४; १२२१ । ३,३२,७;
 १२८८ । ३५,८; १३१९ । ४,१९,१; १५२२ । २०,६,
 ९; १५३८,१५४१ । २३,१; १५६६ । ३३,३; १७१९ । ६,
 १९,२; १८७२ । २९,६; १९६७ । ८,४६,१२; १८२८ ।
 ५०,७; ५०१ । ९३,९; २४३८ । १०,१४८,२; २८१०
 ऋष्यौजा १०,१०५,६; २७१९
 एकः ५,३२,९,११; १७१३, १७१५ । ६,१८,३; १८५८ ।
 ८,२,३१; १४६ । १०,१३८,६; २७९७
 एकः आजिषु ४,१७,९; १४९६
 एकः ईशान ओजसा ८,६,४१; २८३
 एकः चर्षणीनाम् १,१७६,२,१०८६ । ३,३०,४-५; १२४१-४२
 एकराट् अस्य भुवनस्य ८,३७,३; १७७८
 एकवीरः १०,१०३,१; २६९२
 एधमानद्विर ६,४७,१६; २११४
 एनः १,१७३,९; १०६४
 एवया त्वत् न ८,२४,१५; १८०४
 ओजः आविष्कृण्वानः ४,१७,३; १४९०
 ओजः उशमानः ४,१९,४; १५२५
 ओजसा एकः ईशानः ८,६,४१; २८३
 ओजसा महान् ८,६,१,२६; २४३,२६८
 ओजसा साकं जातः २,२२,३; १२२५

ओजस्वान् ८,७६,५; ६३२
 ओजः मिमान २,१७,२; ११८२
 ओजिष्ठः १,१२९,१०; १००९ । ८,९३,८; २४३७ । ९७,
 १०, ९८५ । १०,७३,१; २६२३
 ओजीयान् ६,२०,३; १८८१ । १०,१२०,४; २७६७
 ओदतीनां नदः ८,६९,२; २३०५
 ककुद्-प् ८,४५,१४; ४५६
 ककुद् [अग्निः] वा० य० १३,१४; २९३०
 कण्वमत्-मान् ८,२,२२; १३७
 कनीनः ३,४८,१; १४१९ । ८,६९,१४; २३१६ । १०,
 ९९,१०; २६८९
 कर्ता अपांसि ८,९६,१९; २३६१
 कर्ता ज्योतिः समस्तु ८,१६,१०. ३९१
 कर्ता पितृणाम् ४,१७,१७; १५०४
 कर्ता वीर नयं सर्ववीरम् ६,२३,४; १९२१
 कर्ता समदनस्य १,१००,६; ९६२
 कर्ता सुदासे लोकम् ७,२०,२; २१५२
 कर्मणः धर्ता विश्वस्य १,११,४; ७३
 कवास्यः ५,३४,३; १७२९
 कविः १,११,४; ७३ । १७४,७; १०७५ । १७५,४; १०८२ ।
 ३,४२,६; १३८७ । ४,२५,२; १५८९ । ६,३२,३; २०१३ ।
 ७,१८,२; २१२० । ८,४५,१४; ४५६ । १०,९९,९;
 २६८८ । ८,४०,३; ३१०३
 कविच्छदा (दौ) [इन्द्राग्नी] ३,१२,३; ३०३२
 कविवृधः प्रत्यथा ८,६३,४; ५८१
 कवीनां कवितमः ६,१८,१४; १८६९
 कामी २,१४,१; ११५०
 कारुधायाः ३,३२,१०; १२९१ । ६,२४,२; १९२९
 काव्यः १०,१४४,२; २७९८
 कियेधाः १,६१,६,१२; ८६१, ८६७
 कीज ८,६६,३; ६१५
 कीरिचोदनः ६,४५,१९; २०७८
 कृणवत् मानुषायुगा ८,६२,९; ५७४
 कृणवन् पुरुणि नयां अपांसि ८,९६,२१; २३६३
 कृणवन् साधु ८,३२,१०; १८९
 कृणवानः मायाः ३,५३,८; १४६०
 कृतब्रह्मा ६,२०,३; १८८१
 कृतुः ६,१८,१५; १८७० । ८,१६,३; ३८४
 कृष्टीनां पति ६,४५,१६; २०७५
 कृष्टीनां राजा १,१७७,१; १०९७ । ४,१७,५; १४९२

केतुः सत्त्वनाम् ८,९६,४, २३४८
 केवल १,७,१०, ३७ । ४,२५,७; १५९४
 कौशिकः १,१०,११; ६८
 क्रतुः १०,१०४,१०, २७१२
 क्रतुः शुश्रूषितमः ते १,१७५,५, १०८३
 क्रतुः सहस्रदात्राम् १,१७,५, ३१३८
 क्रतुना साक जातः २,२२,३, १२२५
 क्रतुमान् १,६१,१२; ८८३ । १०,११३,१; २७४५
 क्रतुम् शीर्षणि भरति २,१६,२; ११७३
 क्वा योद्धा ८८८,४, ८९२
 क्षपावान् १०,२९,१ २५१५
 क्षपां वस्त्रा ३,४९,४, १४२७
 क्षममाणः १०,१०४,६, २७०८
 क्षयः मानस्य ८,६३,७; ५८४
 क्षयत् मघोनः ६,२३,१०; १९२८
 क्षेमस्य त्राम् १,१००,७; ९६३
 क्षोभणः चर्षणीनाम् १०,१०३,१, २६९२
 खजकृत् ६,१८,२; १८५७ । ७,२०,२,१७२३ । ८,१,७,९३
 खजंकरः १,१०२,६; ८३३
 गणपतिः १०,११२,९; २७४३
 गन्ता १,९,९, ५६
 गभीरः ३,४६,४; १४१२ । १०,४७,३; २८४४
 गम्भीरः २,२१,४, १२२०
 गवां जनिता ८,३६,५, १७७३
 गवां पतिः १,१०१४; ८२० । ३,३१,४; १२६३
 गविषे (चतुः) ८,२४,२०, १८०९
 गवेषणः १,१३२,३; १०३० । ७,२०,५; २१५५ । २३,३;
 २८१२ । ८,१७,१५; ४०८
 गव्युः १,५१,१४; ७५८ । ७,३१,३, २२२५
 गाथश्रवाः ८,२,३८; १५३
 गाथान्यः ८,९२,२; २३९८
 गायत्रवेपस्-पाः ८,१,१०; ९६
 गाष्ठेयः १०,१११,२, २७२६
 गर्वणस्-गा १,५,७,१०, २०,२३ । १०,१२; ६९ ।
 ११,६; ७५ । ६२,१, ८७२ । ३,४०,६; १३६९ । ४१,४;
 १३७६ । ५१,१०; १४४३ । ४,३२,८, ११, १६५२, १६५५ ।
 ६,३२,४, २०१४ । ३४,३; २०२३ । ४०,५, १९९२ ।
 ४५,१३, २०७२ । ४५,१८; २०८७ । ४६,१०; २०९९ ।
 ८,१,२६; ११२ । २,२,७; १४२ । ३,१८; १७३ । १२,५,
 द्वे [हृद्गुणः] ३९

२९२ । १३,४,२२, ३२४, ३४२ । २४,१२, १८०१ । ३२,७;
 १८६ । ४९,३, ४८७ । ५१,६; ५१० । ५२,८; ५२२ ।
 ६१,१४; ५६१ । ८९,७; २३९० । ९०,३; २३९३ ।
 ९३,१०; २४३९ । ९५,१; २३३६ । ९५,२ २३३७ ।
 ९८,७; २३७० । ९९,२, २३७७ । सामं २९४, २९८१
 गर्वणस्तमः ६,४५,२०; २०७९ । ८,६८,१०, २३०० ।
 ५,८६,४; ३०४३
 गर्वणस्युः १०,१११,१, २७२५
 गर्वाहस्-हा १,३०,५,७०३ । ६१,४,८५९ । १३९,३;
 १०४१ । ६,२१,२; १८९८ । २४,६; १९३३ । ८,२,३०,
 १४५ । ९६,१०, २३५४
 गीर्भिः श्रुतः ८,२,२७, १४२
 गीर्षु आयतः विश्वासु ८,९२,७; २४०३
 गूर्तः १,१७३,२ १०५७
 गूर्तश्रवाः १,६१,५; ८६२
 गृणानः ६,३२,२, २०१२ । ३६,४; २०३४ । ८,९३,१०;
 २४३९ । १०,१३८४, २७९५ । १४७,५; २८०८
 गृणाना [हृद्गुणौ] ६,६८,८; ३१६८
 गृणानः अंगिरसिभिः २,१५,८, ११६९ । ४,१६,८, १४७४ ।
 १०,१११,४, २७२८
 गृणानः अंगूषेभिः ४,२९,१, १६०४
 गृणानः विश्वाभिः धीभिः शच्या १०,१०४,३, २७०५
 गृत्सः ३,४८,३, १४२१ । १०,२८,५, २५२६
 गोजित २,२१,१; १२१७
 गोत्रमिद् ६,१७,२, १८४२ । १०,१०३,६, २६९६
 गोत्राणि सहसा अभिगाहमानः १०,१०३,७, २६९७
 गोद्वज्रः ८,२१,१६, ४२४
 गोदा. ३,३०,२१; १२५८ । ४,२२,१०; १५६४
 गोनाम् अपवर्ता ४,२०,८; १५४०
 गोपतिः १,१०१,४, ८२० । ३,३०,२१, १२५८ । ३१,२१;
 १२८० । ४,२४,१, १५७७ । ३०,२२,१६२७ । ६,४५,२१;
 २०८० । ७,१८,४; २१२२ । ८,२१,३, ४११ । ६९,४;
 २३०७ । १०,४७,१; २८४२
 गोपति. गवाम् पुरुः ७,९८,६; २२८४
 गोपतिः विश्वस्य ८,६२,७, ५७२
 गोपाः ३,३१,१४; १२७३ । [हृद्गुणौ] ७,९१,२, ३२३६
 गोमान् ४,३२,७; १६५१ । यं २६,४; २९६४
 गोविद् ८,५३,१, ५२५ । १०,१०३,५-६, २६९५-९६
 गोषणः [गोसनः] ४,३२,२२, १६६६
 गौः गव्यते अलि ६,४५,२६, २०८५

गमन्ता अथ १०, २२, ६, २४७१
 ह्यनः वृत्राणाम् १, ४, ८, ११ । ३, ४९, १, १४२४। ८, ९६, १८, २३६०
 धनाघन १०, १०३, १, २६२२
 घृतासुती [इन्द्राविष्णू] ६, ६९, ६; ३३११
 घृष्टुः १०, २७, ६, २४९६ । १४४, ३, २८००
 घृष्टिः ३, ४६, १; १४०९ । ६, १८, १०, १८६७
 घोर ७, २८, २, २२०९
 झन् वृत्राणि ३, ३०, २२; १२५८। ३६, २२; १२८१। ३२, १७; १२९८ । ३४, ११, १३११ । ३५, ११, १३२२ । ३६, ११; १३३३। ३८, १०, १३५४। ३९, ९, १३६३ । ४३, ८, १३२८। ४८, ५, १४२३ । ४९, ५, १४२८ । ५०, ५, १४३३
 चक्रमान ५, ३६, १, १७४४
 चक्रानः शवसा ६ ३६, ५, २०३५ । ७, २७, १, २२०३
 चक्रानः सुमनिम् १०, १४८, ३, २८११
 चक्रवस्-वान् विश्वा ६, १७, १३, १८५३
 चक्रमासजः ५, ३४, ६, १७३२
 चक्राणा [इन्द्रावरुणौ] ४ ४०, १०, ३१५५
 चक्रिः १, ९, २, ४९
 चतितः ६, १९, ४, १८७४
 चतु समुद्रः १०, ४७, २, २८४३
 चन्द्रबुधः १, ५२, ३, ७६२
 चन्द्रवर्णा. [मरुतः] १, १६१, १२, ३२६१
 चरन् १, ६, १ २४
 चर्यमाणः अनुष्टुभम् अनु १०, १२४, ९, ३२७७
 चक्रैः १०, ५०, २, २६०२ । १७, २, २८४३ । अथ ६, ९८, १, २९०२
 चक्रैः चरणीनाम् ८, २४, २३; १८१२
 चर्षणी [इन्द्राग्नी] १, १०९, ५, ३०२५
 चर्षणिप्रा. १, १७७, १, १०९१। ३, ३४, ७, १३०७। ६, १९, १, १८७१ । ३९, ४, १९८६ । ७, ३१, १० २२३२ । अ० ४, २४, ३, २८६९
 चर्षणा नृत् ३, ३७, ४, १३३७ । ५१, १; १४३४ । ४, १७, २०, १५०७ । ८, ९६, २०, २३६२ । १०, ८९, १, २६६३
 चर्षणीमहः ६ ४६, ६, २०९५ । ८, १, २, ८८ । २१, १०, ४१८ । ७, ९४, ७, ३०८५
 चर्षणीनाम् एकः १, १७६, २; १०८६
 चर्षणीनां धतारा [इन्द्रावरुणौ] १, १७, २ ३१३५
 चर्षणीनां राजा ७, २३, ३; २२०५ । ८, ७०, १, २३२१
 चर्षणीनां वृषभः ६, १८, १, १८५६ । ८, ९६, ४, १८; २३४८-६०

चर्षणीनां सत्राद् ८, १६, १; ३८२
 चारुः ३, ४९, ३; १४२६
 चिकित् ८, ५१, ३; ५०७
 चिकित्त्रः साम० २९४ २९८१
 चिकित्वान् १, १६९, १, १०४३ । ३, ४४, २; १४०० । ४, १६, २, १४६८ । २९, २, १६०५ । ८, ६, २९; २७१ । ९५, ५, २४० । १०, ९९, १, २६८० । अथ ०७, ९७, १; ३१२०
 चित्रः ४, ३१, १, १६३० । ३२, २, १६४६ । ५, ३९, १; १७६० । ६, ४६, २, ५, २०९१, २०९४। ७, २०, ७, २१५७ । ८ ४६, २०, १८३६ । ९७, १५, ९९० । [मरुतः] १, १६५, १३; ३२६२
 चित्रतमः ६, ३८, १; १९७८
 चित्रभानुः १, ३, ४; १
 चेकितानः युगेयुगे वयसा ६, ३६, ५, २०३५
 चेतिष्ठः ८, ४६, २०, १८३६
 चोदप्रवृद्धः १, १७४, ६, १०७४
 चोदिता रधस्य १०, २४, ३; २४९०
 चोदौ रधस्य [इन्द्रासोमौ] २, ३०, ६; ३२७०
 च्यवनः २, २१, ३, १२१९ । ६, १८, २; १८५७
 च्यवनः अच्युतानाम् ८, ९६, ४; २३४८
 च्यवनः विभूतद्युम्नः ८, ३३, ६; २१५
 च्यावयन् अच्युतानि ३, ३०, ४ १२४१
 च्यौत्नः विश्वस्मिन् भरे नृत् १०, ५०, ४; २६०४
 छन्दुः ऋतः १, ५५, ४; ८००
 जग्मि. ६ ४२, १, १९२८ । ७, २०, १; २१५१ । ८, ४६, १७, १८३३
 जनंसह. २, २१, ३; १२१९
 जनभक्षः २, २१, ३, १२१९
 जनयोपनः १०, ८६, २२, १६६१
 जनानां तरणिः ८ ४५, २८; ४७०
 जनानां राजा ८, ६४, ३; ५९१
 जनाषाद् १, ५४, ११; ७९६
 जनिता १, १२९, ११; १०१० । ८, ९९, ५, २३८०
 जनिता अश्वानाम् ८, ३६, ५, १७७३
 जनिता गत्राम् ८, ३६, ५; १७७३
 जनिता दिवः ८, ३६, ४, १७७२
 जनिता पृथिव्याः ८, ३६, ४, १७७२
 जनिता सूर्यस्य ३, ४९, ४; १४२७
 जनितारा मनीनाम् [इन्द्राविष्णू] ६, ६९, २; ३३०७

जनुषां राजा ४, १७, २०, १५०७
जज्ञान ३, ४४, ४, १४०२ । ६, ३८, ५; १९८२
जज्ञान; सद्यः ८, ९६, २१; २३६३
जयत्-न् १०, १०३, ६, २६९६
जयन् प्रमृगः [बृहस्पतिः] वा० य० १७, ३६, २९३०
जयन् धना १०, १२०, ४; २७६७
जयन् हृष्यः १०, १६७, २, २८३०
जरमाणः सुवृत्तिभिः दिवेदिवे ३, ५१, १; १४३४
जरयन् २, १६, १; ११७२
जरिता वसोः ३, ५१, ३; १४३६
जह्मबाणः ७, २१, ४; २१६४
जागृविः ८, ९२, २३, २४१९
जातः ३, ५१, ८; १४४१
जातः सहसे सनादेव ४, २०, ६, १५३८
जातुर्भर्मा १, १०३, ३, ८४१
जायमानः प्रथमम् ४, १७, ७; १४९४
जायमान सप्तभ्यः अशत्रुभ्यः ८, ९६, १६; २३५८
जारः १०, ४२, २; २५४७ । १०, १, १०; २७३४
जिज्ञमानः वृत्रा ३, ३०, ४, १२४१
जिष्णुः ६, ४५, १५; २०७४ । १०, १११, ३; २७२७
जीरदातुः ८, ६२, ३; ५६८ [१०३, २; २६९३]
जुजुषाणः ७, २३, ३, २१८९
जुजुषाणः स्तोमम् ८, ६६, ८, ६२०
जुजुष्वान् ८, ६४, ८; ५९६
जुषाण २, १४, ९, ११५८ । ८, १३, १३; ३३३ । १०, १७९, ३, २८३८
जुषाणः ब्रह्म ७, २४, ४, २१८९
जुषाणः ब्रह्मकृतिम् ७, २९, २, २२१४
जुषाणः सवनम् १०, १६०, २; २८२५
जुषाणः हृदा मनसा उत ७, ९८, २, २२८०
जुषाणः होतुः यज्ञम् ४, २३, १; १५६६
जुष्टतरः ८, ९६, ११; २३५५
जेता १, ११, २, ७१ । २, ४१, १२; १२३७ । ८, ९९, ७, २३८२
जेता पृथु १, १७८, ३, १०९८
जेन्वावसू [इन्द्राग्नी] ८, ३८, ७; ३०९७
जोहूत्रः २, २०, ३, १२१०
ज्यायस्-यान् ३, २८, ५; १३४९ । १०, ५०, ५; २६०५
ज्येष्ठः [ब्रह्मगस्पतिः] ७, ९७, ३; ३३६०
ज्येष्ठः गातुभिः १, १००, ४, ९६०
ज्येष्ठः वृषभाणाम् ८, ५३, १, ५२५

ज्येष्ठतमः २, १६, १, ११७२
ज्येष्ठराजः ८, १६, ३; ३८४
ज्योतिषा विभ्राजन् ८, ९८, ३, २३६६
तक्तः शवसा अत्यैः ६, ३२, ५, २०१५
तत्तुः ६, २२, २; १९०८ । २४, २; १९२९
तत्तुदानः ४, २८, ५; १६०३
तनान आ विश्वानि शवसा ७, २३, १, २१८०
तत् [बहिः] ओकाः ३, ३५, ७, १३१८
तत् [रथ] सिन १, ६१, ४, ८५९
तत् [सोम] कामः २, १४, २, ११५१
तत्तु ८, ९६, १०; २३५४
तनूगाः ४, १६, २०, १४८६ । ६, ४६, १०, २०९९
तनूरुचा (चौ) [इन्द्राग्नी] ७, ९३, ५; ३०७५
तन्वे इच्छमान ४, १८, १०, १५१८
तन्तं ८, ६८, ७; २२९७
तमसः विहन्ता ववमुषश्चित् १, १७३, ५; १०६०
तरणिः ७, २६, ४, २२०१
तरणि जनानाम् ८, ४५, २८, ४७०
तरणिः पृथु ३, ४९, ३; १४२६
तरद्वेषाः १, १००, ३; ९५९
तास्वी ८, ९८, १०, ९८५
तरुता पुतनानां विश्वासाम् ८, ७०, १; २३२१
तरुता वाज्यम् १, १२९, २, १००१
तरुत्रः १, १७४, १, १०६९ । २, ११, १५-१६, १११५-१६ । ३, ३०, ३; १२४० । ६, १७, २; १८४२ । २६, २, १२४८ । १०, ४७, ४, २८४५
तरुत्रः महिना ७, २१, ९, २१६९
तरुष्यत ८, ९९, ५; २३८०
तवस्-से (चतु०) १, ५१, १५; ७५९ । ५८, १८, ११ । ६१, १, ८५६ । ५, ३३, १, १७१७ । ६, १७, ४, ८, १८४४-१८४८ । १८, ४, १८५९ । ३२, १, २०११ । ८, ९६, १० २३५४ । ९८, १०, ९८५ । १०, २५, ५, २५२६
तवसः तवीयान् ६, २०, ३, १८८६
तवस्तः १, ३०, ७, ७०५
तवस्तमा (मौ) [इन्द्राग्नी] १, १०९, ५; ३०२५
तवागाः ४, १८, १०; १५१८
तविष ३, ३४ २; १३०२ । ८, १५, १; ३६९ । ४६, १२, १८२८ । ९६, १८, २३६० । १, १६५, ६, ८, ३२५५, ३२५७ । १, १७१, ४; ३०६६

तविषीवान् ४,२०,७, १५३९ । ७,२५,४, २१९५ ।
 १०,१०५,३; २७१६
 तविषीभिः आवृतः १,५१,२; ७४६ । ८,८८,२, ८९५
 तव्यान् ३,३२,११, १२९२
 तस्थिवस्-वान् ३,३८,९, १३५३
 निग्मायुधः २,३०,३; १२२९
 निविषाणः १०,५५,१, २६१४
 तिस्त्रिराणा (जां) बहिः [इन्द्राग्नी] १,१०८,४, ३०११
 तुग्न्यावृत् ८,४५,२९, ४७१ । ८,९९,७, २३८२
 तुजत्-न् १,६१,६; ८६१
 तुजा [इन्द्रावरुणौ] ६,६८,२; ३१६२
 तुज्रा ३,५०,१,१४२९ । ४,१७,८,१४९५ । १८,१०,१५१८
 तुसः १,६१,१,१३, ८५६,८६८ । ६,१८,४, १८५९ ।
 ३२,१; २०११ । ७,२२,५, २१७५ । ८,७८,७, ६५७
 तुसत् ६,१८,४, १८५९
 तुसाषाट् [साह] ३,४८,४, १४२२ । ५,४०,४; १७६८ ।
 ६,३२,५, २०१५ । १०,५५,८, २६२१ । अथ० २,५,३;
 २८६५ । साम० ९५४; २९९९
 तुरीयादित्य ८,५२,७; ५२१
 तुर्वणि १,५७,३; ८०७ । ६१,११, ८६६ । १३०,९,९,
 १०१९,१०१९ । ५,३५,३; १७३८ । १०,३२,५, २५३४
 तुर्वणि. घृतन्यून् ४,२०,१; १५३३
 तुविकृमि ३,३०,३,१२४० । ६,२२,५,१९११ । ८,२,३१,
 १४६ । १६,८; ३८९ । ६८,१, २२९१ । ८०,२; ६७१
 तुविकृमिन्-मी ८,६६,१२; ६२४
 तुविकृमिन्तमः ६,३७,४; १९७६
 तुविक्रतु ८,६८,२, २२९२
 तुविग्रामः ६,२२,५, १९११
 तुविमि. २,२१,२, १२१८
 तुविम्रीवः ८,१७,८; ४०१ । ६४,७ ५९५
 तुविजातः १,१३१,७; १०२७ । ३,३२,११, १२९२ ।
 ६,१८,४, १८५९ । १०,२९,५, २५१२
 तुविदेण ८,८१,२; ६७१
 तुविद्युम्नः १,९,६,५३ । ४,२१,२; १५०५ । ६,१८,११-१२;
 १८६६-६७ । ८,९०,२, २३९२
 तुविनृम्णः ४,२२,६; १५६० । ६,३०,५, २०१० ।
 ६४६,३,२०९२ । ८,२४,२७, १८१६ । ७०,१०, २३३० ।
 १०,१४८,१, २८०९
 तुविप्रति. १,३०,९; ७०८
 तुविबाध. १,३२,६; ७२०
 तुविमात्रः अवोभि ८,८१,२; ६७१

तुविमृक्षः ६,१८,२; १८५७
 तुविराधा. ४,२१,२; १५४५
 तुविशर्म. ६,४४,२, २०३७
 तुविश्रुमः [इन्द्रावरुणौ] २,२२,१; १२२३ । ८,६८,२;
 २२९२ । ६,६८,२; ३१६२
 तुविष्टमः अथ० ६,३३,३; २८८९
 तुविष्मान् १,५५,१; ७९७ । २,१२,१२, ११३३ । ४,२९,
 ३; १६०६ । ७,२०,४; २१५४ । १०,४४,१; २५६८ ।
 ७४,६; २६३९ । १,१६५,६; ३२५५
 तुविष्वाणिः (स्वनिः) २,१७,६; ११८६
 तुवी [वि] मघः १,२९,१-७, ६९२.९८ । ८,६१,१८;
 ५६५ । ८१,२; ६७१ । ९२,२९; २४२५
 तूतुजानः १,३,६; ३ । ६१,१२; ८६७ । ६,३७,५; १९७७
 ८,१३,११; ३३१ । १०,४४,१; २५६८
 तूतुजिः ४,३२,२, १६४६ । १०,२२,३, २४६८
 तूर्णि ३,५१,२; १४३५
 तूर्यः ८,९९,५; २३८०
 तूर्वन् ६,२०,३; १८८६
 तूर्वन् श्रवस्यानि १,१००,५; ९६१
 तृपल प्रभर्मा [सोमः] १०,८९,५; ३२७६
 तृषत् २,२२,१, १२२३
 तृषाणः ५,३६,१; १७४४
 तोकसाता ६,१८,६, १८६१
 तोद ४,१६,११, १४७७
 तोशा(शौ), [इन्द्राग्नी] ३,१२,४, ३०३३ । ८,३८,२; ३०९२
 त्यागः ४,२४,३, १५७९
 त्रदः ८,४५,२८, ४७०
 त्रा ४,२४,३; १५७६
 त्रा क्षेमस्य १,१००,७, ९६३
 त्राता १,१२९,१०; १००९ । १७८,४, ११०० । ६,२५,७;
 १९४४ । ६,४७,११; २१०९
 त्राता त्रिप्रस्य मावत् १,१२९,११; १०१० । ७,२०,१;
 २१५१ । ४,१७,१७; १५०४ । अथ० १९,१५,३; २९१६
 त्रिसप्तैः सध्वभिः [उपेतः] १,१३३,६; १०३९
 त्वष्टा ६,४७,१९, २११७
 त्वा प्रति कश्चन न ८,६४,२; ५९०
 त्विषीमान् १,५६,५; ८०१ । २,२२,२; १२२४
 त्वेषः १,१००,१३; ९६९ । ८,४०,१०, ३११०
 त्वेषनृम्ण १०,१२०,१, २७६४
 त्वेषसंढक ६,२२,९, १९१५

दंसना ८, १, २७, ११३ । ८८, ४, ८९७
 दंसनावान् १, ३०, १६, ७१४ । ३, ३९, ४, १३५८
 दक्षिष्ठः ८, २४, २५--२६ । १८१४--१५
 दक्षं घृण्वत् ८, २४, १४, १८०३
 दक्षायण भरहृतये प्रतूर्तये (च) १, १२९, २, १००१
 दक्षिणावान् ३, ३९, ६; १३६०
 दत्-न् १०, १०५, २; २७१५
 ददत् विप्रेभ्यः मघा ५, ३२, १२; १७१६
 ददिः गाः ६, २३, ४, १९२१
 ददशानः ४, १७, १७, १५०४
 दधत् पुरः ५, ३१, ११, १७०२
 दधानः पुरुणि नयां ३, ३४, ५, १३०५
 दधानः सत्रा शवांसि ८, ९७, १२, ९८७
 दधाना द्रविणः [इन्द्राविष्णू] ६, ६९, ३, ३३०८
 दध्व वाजेषु ३, ४२, ६; १३८७
 दध्ववणिः ८, ६१, ३, ५५०
 दधृण्वान् ४, २२, ५; १५५९ । ५, २९, १४, १६८०
 दध्वन्-ध्वा ६, ४२, १; १९९८
 दमयन् घृतन्यून १०, ७४, ५; २६३८
 दमायन् ६, ४७, १६, २११४
 दमिता अभिक्तूनाम् ३, ३४, १०, १३१०
 दमिता विश्वस्य ५, ३४, ६, १७३२
 दमूना ३, ३१, १६; १५७५ । ६, १९, ३, १८७३
 दम्पतिः ८, ६९, १६; २३१८
 दम्भयन् धुनिम् १०, ११३, ९; २७५३
 दयते एकः देवत्रा मर्तान् ७, २३, ५, २१८४
 दयमान. महो धनानि १, १३०, ७, १०१७
 दयमान सेनाभिः १०, २३, १; २८८१
 दरीमन् दुर्भतीनाम् १, १२९, ८, १००७
 दर्ता पुराम् १, १३०, १०, १०२० । ८, ४, ६; २३६९
 दर्भा पुराम् १, ६१, ५, ८६० । १३२, ६, १०३३ । ३, ४५, २, १४०५
 दशमः ८, २४, २३; १८१२
 दशस्यन् दाशुषे १, ६१, ११, ८६६
 दस्म १, ६२, ५-६, ११-१२, ८७६-७७, ८८२-८३, १२९, ३, १००२ । ५ ३१, ७, १६९९ । ३४, १, १७२७ । ६, १८, ५, १८६० । ७, २२, ८, २१७८ । ३१, ९, २२३१ । ८, ४५, ३५; ४७७ । ८८, १, ८९४ । ९२, १८; २४१४ । १०, ९९, १०; २६८९ । १४७, ५; २८, ८
 दक्षतमः २, २०, ६; १२१३

दस्यवर्चाः १, १७३, ४, १०५९
 दस्युहत्याय उपप्रयन् १, १०३, ४, ८४२
 दस्युहा १, १००, १२; ९६८ । ६, ४५, २४, २०८३ । ८, ७६, ११, ६३८ । ७७, ३, ६४२ । १०, ४७, ४; २८४५
 दस्योः हन्ता ८, ९८, ६; २३६९
 दस्त्रा [इन्द्राविष्णू] ६, ६९, ७; ३३१२
 दाता ४, १, ७, १६३६ । ६, २३, ३, १९२० । ८, ३३, ८ २१७ । ५२, ५, ५१९ । १०, ५४, ५, २६१२
 दाता इषाम् ८, ४६, २, १८४८ । ६, ३०, १३ ३०६८
 दाता प्रथमः ८, ९०, २ २३९२
 दाता मघानि ४, १७, ८, १४९५
 दाता मह ६, २९, १ १९६२
 दाता महानां वाजानाम् ८, ९२, ३, २३९९
 दाता रयीणाम् ८, ४६, २ १८५८ । ६, ६०, १३; ३०६८
 दाता वसु दाशुषे ७, २०, २; २१५२
 दाता वसूनाम् ८, ५१, ५, ५०९
 दाता वाजस्य श्रवस्यस्य ८, ९६, २०, २३६२
 दाता विश्ववारस्य रायः ६, २३, १०, १९२७
 दाता स्तुवते काम्यं वसु २, २२, ३; १२२५
 दाता स्थविरस्य वाजस्य ६, ३७, ५, १९७७
 दा [द] दहाणः १, १३०, ४, १०१४
 दाशुषि ४, १७, ८, १४९५
 दानः ७, २७, ४, २२०६
 दानवान् ८, ३२, १२, १९१
 दामनः रयीणाम् ५, ३६, १, १७४४
 दाशुषः अथर्वं ४, २४, १, २८६७
 दामने कृतः ८, ९३, ८, २४३७
 दाशत् १०, १३८, ५; २७९६
 दाश्वान् ८, ४९, २, ४८६ । १०, १०४, ६; २७०८
 दिस्तत् ८, ८१, ३; ६७२
 दिवक्षा ३, ३०, २१, १२५८
 दिवः अमुष्य शासत. ८, ३४, १-१५, ४२५ ४३९
 दिवः जनिता ८, ३६, ४; १७७२
 दिवः दुहिता [वषाः] ४, ३०, ९; ३३४५
 दिवः पतिः ८, १३, ८, ३२८ । ९८, ४-६, २३६७-६९
 दिवः मूर्धा [अग्नि] वा० य० १३, १४, २९३०
 दिव मानः ८, ६३, २, ५७९
 दिवा वसुः ८, ३४, १ १५, ४२५-४३९
 दिविस्पृशा [इन्द्रवायू] १, २३, २; ३२१३
 दिवे (चतुर्थी-द्यौः) १, ५५, ३, ७८८

दिव्यः ३, ४७, ५ १४१८ । ६, १९, ११; १८८१

नीद्यानः ३, ३१, १५, १२७४

नीर्वाणु ८, ७०, ७, २३२७

नुधः १, ५७, ३; ८०७ । २, १२, १५ ११३६

दुरः अश्वस्य १, ५४, २ ७७६

दुरः गोः १, ५४, २; ७७६

दुरः यवस्य १, ५४, २, ७७६

दुरोषाः ४, २१, ६, १५४९

दुर्मतीनां प्रभङ्गः ८, ४६, १९; १८३५

दुर्हणावान् ८, २, २०; ६३५

दुश्चयवनः १०, १०३, २, ७, २६९३, २६९७

दुष्टरा (रौ) [इन्द्राक्षी] ५, ८६, २, ३०४२

दुष्टरीतुः २, २१, २, १२१८

दुहिता दिवः [उषा] ४, ३०, ९, ३३४५

दूणाशः ७, ३२, ७; २२४१

दूता उशन्ता [इन्द्रवायू] ७, ९१, २, ३२३६

दृढहा ७, २७, २; २२०४

दृढहा चित् ८, २४, १०; १७९९

दृढहा चित् आरुज ३, ४५, २; १४०५

देवः १, ६३, ८; ८९२ । ८४, १९; ९५५ । १२९, १०, १०१० ।

१६९, ८, १०५० । १७३, १३; १०६८ । २, ११, १३; १११३ ।

१२, १; ११२२ । १३, ५, ११४१ । १२, ५, १२०३ ।

२०, ६, १२१३ । २२, १-३; १२२३-२५ । ३, ३३, ६, १२९९ ।

४, १७, ५; १४९२ । २२, ३, १५५७ । २३, ४-५; १५६९-७० ।

५, ३३, ३; १७१९ । ६, १८, १४, १८६९ । ३९, १, १; १९८३, १९८३ । ७, ३०, ४; २२२१ । ८, १, २२-२३, १०८९ । २, ७, १२२ । १२, ६, १५, १९, २९३, ३०२, ३०६ ।

५१, ७; ५११ । ६१, ६, ५५३ । ६५, ४, ६०४ । ९३, ११, २४४० । १०, २३, ७, २४८७ । ८६, १; २६४० । १०४, ९, २७११ । साम० १९६; २९७६ । क्र० ५, ८६, ५; ३०४४ ।

[इन्द्राक्षी] ६, ५९, ४-५; ३०४९-५० । ६, ६०, १४ ३०६९ । अथ० ७, ९७, ३; ३१२२

देवः [वरुणः] ६, ६८, ९, ३१६९

देवतमः ४, २२, ३, १५५७

देवज्ञा [अग्निः वि०] ८, ३४, ८, ४३२

देवः देवस्य ८, ९२, ६, २४०२ । १०, २२, ४, २४६९

देववत्-वान् १०, ४७, ३, २८४४

देवौ [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, २, ३१४७ । [इन्द्रावर्षतौ] ३, ५३, १, ३३५६ ।

देवण ३, ३०, १९; १२५६

दोधतः वधः २, २१, ४, १२३७

दोधवत् ऋश्रु १०, २३, १, २४८१

द्युक्ष ६, २४, १; १९२८ । ३७, २; १९७४ । ८, २४, २०; १८०९ । ६६, ६, ६१८ । ८८, २; ८९५

द्युमत्-मान् १, ६२, १२, ८८३ । ६, १७, ४, १८४४ ।

द्युमत्तमः १, ५४, ३; ७७७

द्युम्नी ८, ८९, २; २३८५ । ९३, ८, २४३७

द्रव्यः ८, १७, १४; ४०७

द्रुपदे [इन्द्राक्षी] ४, ३२, २३, ३३४८

द्रा. द्रुषिषु १, ५२, ३; ७६२

द्विर्बर्हस्-र्हा. ६, १९, १, १८७१ । ७, २४, २, २१८७ ।

८, १४, २; ३७० । १०, ११६, ४, २७५८

धनजित् २, २१, १, १२१७

धनञ्जयः ३, ४२, ६, १३८७ । ८, ४५, १३, ४५५

धनदाः १, ३३, २; ७३१ । ६, १९, ५; १८७५

धनदाः विश्वस्य-श्रुतः ७, ३२, १७; २२५१

धनपतिः अथर्व० ५, २३, २, २८७५

धनस्पृत् ३, ४६, २, १४१० । ८, ५०, ६, ५०० । १०, ४७, ४; २८४५

धनानां संजित. ३, ३०, २२, १२५९ । ३१-३२, २२, १७; १२८१, १२९८ । ३४-३६, ११, १३११, १३२२, १३३३ ।

३८-३९, १०, ९; १३५४, १३६३ । ४३, ८; १३९८ ।

४८-५०, ५; १४२३, १४२८, १४३३ । १०, ८९, १८; २६७९ । १०४, ११; २७१३

धनुः ते तुविक्षम् ८, ७७, ११, ६५०

धरुण रथीणाम् १०, ४७, २; २८४३

धर्तारा चर्षणीनाम् [इन्द्रावरुणौ] १, १७, २; ३१३५

धर्ता धनानाम् १, १०३, ५, ८३२

धर्ता दिवो रजस ३, ४९, ४; १४२७

धर्ता विश्वस्य कर्मणः १, ११, ४, ७३

धर्मकृत् ८, ९८, १; २३६४

धामन् ८, ६३, ११; ५८८

धामसाचः ३, ५१, २; १४३५

धायु ३, ३०, ७; १२४४

धियसानः नः ५, ३३, २; १७१८

धियस्पती [इन्द्रवायू] १, २३, ३; ३०१४

धीत ८, ३, १६; १७१

धीति ऋतस्य स्रदसः १०, १११, २, २७२६

धीरः १, ६२, १२; ८८३।५, २९, १; १६६७।१०, ८९, ८, २६६९

धुनिः १, १७४, ९; १०७७ । ५, ३४, ५ ८; १७३१-३४ ।

६, २०, १२, १८९५ । [सोमः] १०, ८९, ५; ३२७६

धुनी वातस्य १०, २२, ४; २४६०
 धृतमतः [हृन्द्वावरुणौ] ६, १९, ५; १८७५ । ८, ९७, ११,
 ९८६ । ६, ६८, १०, ३१७०
 धृषत् १, ५५, ३-४, ७८८-७८९ । ६, ४५, २१; २०७० ।
 ८, २१, २ ४१०
 धृषन्मनाः १, ५२, १२, ७७१ । ६२, ५; ५७० । ८, ८९, ४, २३८७
 धृषमाणः १, ५२, ५, ७६४
 धृषितः ८, ३३, ६ २१५ । ९६, १७; २३५९ । १०, ११३, ५;
 २७४९ । १३८, ४, २७५५
 धृष्णः ७, १९, ३; २१४२
 धृष्ण १, ३०, १४, ७१२ । ६३, ३; ८८७ । ८४, १, ९३७ ।
 २, १६, ४; ११७५ । ३, ५२, ८, १४५३ । ४, १६, ७, १४७३ ।
 २२, ५; १५५९ । ६, १७, १; १८४१ । २१, ७; १९०३ ।
 २९, ३, १२६४ । ३७, ४, १९७६ । ७, २०, ५, २१५५ ।
 ८, २४, १, ४, १७९०, १७९३ । ३३, ३, २१२ । ४५, १४;
 ४५६ । ७८, ३, ६५३ । ८१, ७, ६७६ । १०, १०३, ३;
 २६९३ । १११, ६, २७३० । १२०, ४; २७६७ ।
 धृष्ण्या ४, ३०, १३, १६१८ । ६ ४६, २; २०९१
 धृष्णव्रजाः ८, ७०, ३; २३२३
 धेनु ८, १, १०; ९६
 धेनूनां अष्टयानां पति ८, ६९, २, २३००
 नक्षत्राभः ६, २२, २, १९०८
 नदः ओदतीनाम् ८, ६९, २; २३०५
 नद योयुवतीनाम् ८, ६९, २; २३०५
 नदनुमान् ६, १८, २; १८५७
 नपात् ४, ३२, २२; १६६६
 नमस्यः । अथ ६, ९८, १, २९०२
 नरः ३, ५१, २, १४३५ । ४, २५, ४; १५९१ । ६, ४४, ४;
 २०३९ । ८, ४०, २, ३१०२ । ८, १६, १, ३०२ । २७, १९;
 १८०८ । ९२, ८; २४०४
 नरा [हृन्द्वामी] ६, ६०, ८९; ३०६३-६४ । ७, २४, ३,
 ३०८१ । ८, ३८, ५-६, ३०९५-९६ । ८, ४०, ३, ३१०३ ।
 [हृन्द्वावरुणौ] ७, ८२, ८; ३१७९ । ७, ८३, १, ३१८२ ।
 [हृन्द्वायू] ७, ९१, ६; ३२३९
 नरे (चतुर्थी) ६, ४२, १; १९९८
 नर्यः १, ६३, ३; ८८७ । ४, २५, ४; १५९१ । २९, २;
 १६०५ । २४, २, १९२९ । ७, २०, १; २१५१ । ५; २०५५ ।
 २५, १; २१९२ । १०, २९, १; २५१५ । ५०, २; २६०२ ।
 नर्यापसः ८, ९३, १, २४३०
 नर [मरुतः] १, १६५, ११; ३२६०

नवः ८, २४, २३; १८१२ । [हृन्द्वायू] ४, ३२, २३; ३३४८
 नविष्ठः ५, ३२, ११; १७१५
 नवीयस्-यान् २, १९, ८ १२०६ । ३, ३६, ३ १३२५ ।
 ६, २१, १; १८९७ । ६, ४४, ७, २०४२ । १०, २७, १९, २४०९
 नवेदाः ऋतानाम् ४, २३, ४, १५६९
 नव्यः ६, १७, १, १८५३ । ७, १८, ५; २१२३ । ८, १६, १
 ३८२ । २४, ८, २६, १७९७, १८१५
 नहुष नहुषरः १०, ४९, ८ २५९७
 नाम विभ्रत् श्रुत्यम् ५, ३०, ५, १६८६
 नामा ते चत्वारि असुर्याणि १०, ५४, ४; २६११
 निचुम्पुण ८, ९३, २२, २४५१
 निमेघमान दिवेदिवे ८, ४, १०; २३८
 नियन्ता सूनुतानां शचीनाम् ८, ३२, १५, १९४
 नियुत्वम्-वान् १, १०१, ९; ८२५ । ६, ४०, ५, १९९२ ।
 ८, ९३, २०; २४४९ । ६, ६०, २; ३०५७ । [हृन्द्वायू]
 २, ४१, ३; ३२२० । [वायु] ४, ४६, २, ३२२१ । ४, ४७, ३,
 ३२२८ । ७, ९१, ५; ३२३८
 नियुत्वान् वसुभिः ३, ४९, ४, १४२७
 निवरः ८, ९३, १५; २४४४
 निवेशनः [अग्नि] वा०यं १२, ६६; २९२९
 निशितः सोमसुद्धि ४, २४, ८, १५८४
 निष्ठुर ८, ३२, २७ २०६
 नृजित् २, २१, १, १२१७
 नृतमः ३, ३०, २२, १२५२ । अयं मन्त्रः द्वादशकृत्वः ३, ५०, ५;
 १४३३ । पुनरपि च १०, ८९, १८, २६७९ । १०४, ११, २७१३ ।
 इत्यादिस्थलेषु पुनरुक्तः । ३, ४९, २, १४२५ । ४, १७, ११,
 १४९८ । २२, २; १४५६ । ६, १८, ७; १८६२ । ८, २४,
 १-१०, १७९०-९९ । १०, २९, १ २; २५१५-१६ । ८९, १,
 २६६३
 नृतमः नृणाम् ४, २५, ४; १५८९ । ६, ३३, ३; २०१८
 नृतम नराम् ७, १९, १०, २१४९
 नृतमः शकैः ४, १७, ११; १७९८
 नृत्तुः २, २२, ४; १२२६ । ८, २४, १२, १८०१ । ६, ८, ७;
 २२९७ । ९२, ३; २३९९ । १, १३०, ७, १०१७
 नृपतिः १, १०२, ८, ८३५ । ४, २०, १, १५३३ । ७, ३०, १;
 २२१८ । ८, ५४, ६, ५३६ । १०, ४४, २ ३; २५६९ ७०
 नृपाता नराम् १, १७४, १०; १०७८
 नृमणः १, ५१, ५, १०; ७४९, ७५४ । ४, १६, ९, १ ६७५ ।
 ७, १९, ४; २१४३ । ८, ९६, १३; २३५७
 नृमणः २, १२, १; ११२२ । अथ ४, २४, ३, २८६९

नृवत् वान् ६,२२,३, १९०९
 नृषाता ७,२७,१, २२०३
 नृषाहः ८,१६,१, ३८२
 नेमिः ८,९७,१२, ९८७
 न्यूष्ट. वसुना १०,४२,२; २५४७
 न्योक्ताः १,९,१८, ५७
 पुणिः ८,४५,१४; ४५६
 पतिः १,५४,२; ७७६ । ६१,२; ८५७ । ३,३९,१, १३५५ ।
 ४,१६,७, १४७३ । ८,१३,९ ३२९ । ८०,९; ६६९ ।
 १०,७४,६, २६३९ । ९९,६; २६८५ । १०५,२, २७१५ ।
 अथर्वं ६,३३,३; २८८९
 पतिः अघ्न्यानां धेनूनाम् ८,६९,२; २३०५
 पतिः कृष्टीनाम् ६,४५,१६, २०७५ । ८,१३,९, ३२९
 पतिः जनानाम् ६,३४,४, २०३४
 पतिः दिवः ८,१३,८; ३२८ । ९८,४,५,६; २३६७-६८-६९ ।
 १११,३; २७२७
 पतिः पृथिव्याः [अग्नि] वा० य० १३,१४; २९३०
 पतिः राधस तुरस्य ६,४४,५, २०४५ । ५,८६,४, ३०४३
 पतिः राधानाम् ३,५१,१०; १४४३
 पतिः वाजस्य दीर्घश्रवसः १०,२३,३; १४८३
 पतिः वाजानाम् ६,४५,१०; २०६९ । ८,२४,८, १८०७ ।
 ९२,३; २४२६
 पतिः वार्गाणाम् १०,२४,३; २४९०
 पतिः विश्वस्य जगतः प्राणतः १,१०१,५; ८२१
 पतिः विश्वानरस्य अनानतस्य शवसः ८,६८,४; २२९४
 पतिः शवसः महः १०,२२,३; २४६८
 पतिः शश्वतीनाम् ८,९५,३; २३३८
 पतिः सिन्धूनां रेवतीनाम् १०,१८०,१; २८३९
 पतिः सुनुतानां गिराम् ३,३१,१८, १२७७
 पतिः सोमानाम् ८,९३,३३; २४६२
 पतिः हरीणाम् ८,२४,१४; १८०३
 पथिकृत् ६,२१,१२, १९०६
 पथिकृत् सूयौष १०,१११,३; २७२७
 पनस्य ८,९८,१; २३६४
 पनीयान् १,५८,३, ८१३
 पन्य ३,३६,३; १३२५ । ८,३२,१७-१८, १९६-१९७
 पपानः मघी. साम० २९४; २९८१
 पपिः सोमम् ६,२३,४; १९२१
 पपिवान् ५,२९,३, १६६९
 पपिवान् सुतस्य ५,२९,२, १६६८

पपुरिः ४,२३,३, १५६८
 पप्रिः ८,१६,११; ३९२
 पप्रिः अन्धसः १,५२,३; ७६२
 परः १,८,५,४२ । २,१३,१०; ११४६ । ५,३०,५, १६८६ ।
 ८,६९,१४; २३१६ । १०,८,७, २४६३
 परमः ५,३०,५; १६८६
 परमज्या ८,९०,१, २३९९
 परस्वा ८,६१,१५, ५६२
 परस्कानः अथ० १९,१५,३, २९१६
 पराददिः १,८१,२; ९१७
 पराश्वर. यातूनाम् ७,१०४,२१; २२८९
 परिप्रीतः वार्येण पन्यसा १०,२७,१२, २५०२
 परुष्णीं ऊर्णाम् उषमाणः ४,२२,२, १५५६
 परोमात्र ८,६८,६, २२९६
 पर्वतेष्ठा. ६,२२,२; १९०८
 पाञ्चजन्यः ५,३२,११; १७१५
 पाञ्चजन्यः शवसा १,१००,१२; ९६८
 पात् वैशन्तं पान्तम् (द्वि०) अति ७,३३,२; २२६३
 पाता ८,२,२६; १४१
 पाता नराम् २,२०,३, १२१०
 पाता सुतम् ६,२३,३, १९२० । ४४,१५, २०५०
 पादाः त ऋष्या १०,७३,३; २६२५
 पावकः ८,१३,१९; ३३९
 पिता ३,३१,१२; १२७१ । ४,१७,१७, १५०४ । ८,६,१०;
 २५२ । ५२,५; ५१९।९८,११, २३७४।१०,८,७, २४६३ ।
 २२,३, २४६८
 पितृतमः पितृणाम् ४,१७,१७; १५०४
 पितृणां कर्ता ४,१७,१७; १५०४
 पिपीषत् ६,४२,१, १९२८
 पिशंगरातिः ५,३१,२; १६९४
 पीत्वी सोमस्य १०,५५,८, २६२१ । ११३,१; २७४५
 पुत्रः शवसः ८,२०,२; २३९२
 पुरः स्थाता ८,४६,१३, १८२९
 पुर एता ६,२९,१२; १९०६
 पुरन्दर १,१०२,७; ८३४ । २,२०,७; १२१४ । ५,३०,
 ११, १६८२ । ८,१,७-८; ९३-९४। ६१,८,१०; ५५५,५५७
 पुरन्दरा (रौ) [इन्द्राग्नी] १,१०९,८; ३०२८
 पुरां भिन्दु १,११,४; ७३
 पुरां भेत्ता ८,१७,१४; ४०७
 पुराजाः ३,३१,१९; १२७८ । ६,३८,३; १९८१

पुराषाट्-साह् १०, ७४, ६; २६३९
 पुरुकृत् १, ५४, ३, ७७७ । २, १३, ८, ११४४ । ६, २१, ५, १९०१ । ८, ६१, ६, ५५३ । १०, १७९, ३, २८३८
 पुरुक्षुः ४, २९, ५, १६०८ । ६, २२, ३, १९०९ । १०, ७४, ५, २६३८
 पुरुक्षुः वामस्य वसुनः ६, १९, ५, १८७५
 पुरुगूर्तः ६, ३४, २; २०२२
 पुरुणामन्-नामन् ८, ९३, १७; २४४६
 पुरुतमः १, ५, २, १५ । ३, ३९, ७; १३६१
 पुरुत्मा ८, २, ३८; १५३
 पुरुत्रा ८, ३३, ८, २१७
 पुरुद्रवः ६, १८, ९; १८६४
 पुरुधप्रतीकः ३, ४८, ३; १४२१
 पुरुधस्मन् सामं ३२७; २९८३
 पुरुनिःषिध् १, १०, ५, ६२
 पुरुनृम्ण ८, ४५, २१; ४६३
 पुरुप्रशस्तः ६, ३४, २, २०२२
 पुरुभोजाः ८, ८८, २; ८९५
 पुरुमायः ३, ५१, ४; १४३७ । ६, १८, १२; १८६७ । २१, २, १८९८ । २२, १; १९०७
 पुरुहन् १०, १०४, ५; २७०७
 पुरुवर्षम्-पां १०, १२०, ६, २७६९
 पुरुवारः उक्थैः ४, २१, ५; १५४८
 पुरुवीर ६, २२, ३, १९०९
 पुरुशाकः ३, ३५, ७, १५१८ । ६, २१, १०, १९०५ । २४, ४; १९३१ । ७, १९९, ६; २६४५
 पुरुष्टु [स्तु] तः १, ११, ४; ७३ । ५८, ४; ८१४ । १०२, ३; ८३० । ३, ३७, ४, १३३७ । ४५, ५; १४०८ । ५२, ६, १४५१ । ४, २१, १०; १५५३ । ५, ३४, १; १७२७ । ८, १३, २४-२५, ३४४-४५ । १५, १, ३, ११; ३६९, ३७१, ३७९ । ३२, ३०; २०९ । ३३, ६; २१५ । ४६, १२, १८२८ । ६२, ७, ५७२ । ६६, ५; ६१७ । ७६, ७; ६३४ । ९२, २, २३९८ । ९३, १७, २४४६ । १०, ३२, २; २५३१ । ३८, ३; २५४३ । ३, ६०, ६, ३३४२ ।
 पुरुहूतः १, ३०, १०; ७०८ । ५१, १; ७४५ । ६३, २, ८८६ । १००, ६, ११, १८; २६२, ९६७, ९७४ । १०४, ७, ८५३ । ११४, ३; १०७१ । १७७, १; १०९१ । ३, ३०, ५, ७, ८, १०; १२४२, १२४४-४५ ४७ । ३२, १६, १२९७ । ३५, २; १३१३ । ३७, ५; १३३८ । ४०, २, १३६५ । ५१, १, १४३४ । ५१, ८, १४४८ । ४, १६, ८; १४७४ । १७, ५, १४९२ । २०, ५, ७, ६० [इन्द्रः] ४०

१५३७, ३९ । ५, ३०, १; १६८२ । ३१, ४, १६२६ । ३६, २-३; १७४५-४६ । ६, १८, १, १११; १८५६, १८६६ । १९, १३, १८८३ । २१, ५, १९०१ । २२, ४, ११; १९१०, १७ । २३, ८; १९२५ । २४, ३; १९३० । २७, ६; १९६० । ३४, २, २०२२ । ४५, २२, २०८१ । ४७, ११, २१०९ । ७, २४, १; २१८६ । २५, २, २२०४ । ३२, १७, २०, २६; २२५१, ५४, ६० । ८, १४, १; ३६९ । १६, ११, ३९२ । २१, १२, ४२० । २४, ८-९, १७९७-९८ । ४६, १५; १८३१ । १०, ४२, १०, २५५५ । ४३, २, १०; २५५८, २५६६ । ४४, २०, २५७७ । १०, ४, १, १०, २७०३, २७१२ । १४७, ३; २८०६ । १८०, १, २८३९ । ८, ६६, ६, ११, १३, ६१८, ६२३, ६२५ । ९२, २, २३९८ । ९८, १२, २३७५ । २, ३२, ३; ३३५१
 पुरुहूतः पुरु ८, २, ३२; १४७ । १६, ७, ३८८
 पुरुतमः पुरुणाम् ६, ४५, २९; २०८८
 पुरुवसुः १, ८१, ८, ९२३ । ६, २२, ४; १९१० । ८, १, १२, ९८ । ३, ३, १५८ । ३२, ११; १९० । ४६, १, ७ १३; १८१७, १८२३, १८२९; ४६, १३; १८२९ । ४९, १; ४८५ । ५२, ५; ५१९ । ६१, ३, ५५०
 पुरुवसुः सनात् ७, ३२, २४; २२५८
 पुरोभूः ३, ३१, ८; १२६७
 पुरोयुधः १, १३२, ६, १०३३
 पुरोयोधः ७, ३१, ६; २२२८ । [इन्द्रायुष्मन्] ७, ८२, ९, ३१८०
 पुरोहा ६, ३२, ३, २०१३
 पुरोहितः विश्वस्मा कर्मणे १, ५६, ३; ७९९
 पूः त्वम् असि ८, ८० ७, ६५७
 पूर्णबन्धुर १, ८२, ३ ९२७
 पूभिर् ३, ३४, १; १३०१ । ५१, २, १४३५ । ८, ३३, ५; २१४ । १०, ४७, ४, २८४५ । १११, १०, २७३४ । १०४, ८; २७१०
 पूभिर्त्तमः ८, ५३, १; ५२५
 पूर्व. ३, ३८, ५, १३४९
 पूर्वजा ८, ६, ४१, २८३
 पूर्वयावा क्षितीनां मानुषीणां विशां देवीनाम् ३, ३४, २ १३०२
 पूर्यः ३, ३२, १०, १२९१ । ५, ३५, ६; १७४१ । ६, २०, १६; १८९४ । ३७, २, १९७४ । ८, ३, ७, ११, १६२, १६६
 पूर्यः महानाम् ८, ६३, १, ५७८
 पूषण्वान् ३, ५२, ७; १४५२ । १, ८२, ६, ९३०
 पूषरातयः [मरुद्गणा] १, २३, ८; ३२४८
 पूजवन् दक्षम् ८, २४, १४; १८०३
 पृतनानां तृता विश्वासाम् ८, ७०, १, १३२१

पृतनापाद् १,१७५,२; १०८० । ६,१९,७,१८७७ । ४५,८,
 २०६७ । १०,१०३,७, २६९७
 पृतनासु सासहिः ८,७०,४; २३२४
 पृथिव्या जनिता ८,३६,४, १७७२
 पृथिव्याः पतिः [अग्निः] वा० य० १३,१४; २९३०
 पृथुः २,२१,४, १२२० । ६,१९,१, १८७१
 पृथुज्याः ३,४९,२, १४२५
 पृथुवृद्धः १०,४७,३; २८४४
 पृदाकुसानुः ८,१७,१५; ४०८
 पृष्ट ३,४९,४, १४२७
 पौरः अश्वस्य ८,६१,६, ५५३
 प्रकेतः अध्वरस्य १०,१०४,६; २७०८
 प्रखादः १,१७८,४ १०९८
 प्रचर्षणी [इन्द्राग्नी] अथ० ७,११०,२; ३१३२
 प्रचेताः ७,३१,१०, २२३२ । ८,९०,६, २३९६
 प्रजा कृतस्य ८,६,२; २४४
 प्रजानन् ३,३५,४,८; १३१५,१३१९
 प्रणेता ३,३०,१८,१२५५ । ८,२४,७,१७९६ । ४६,१; १८१७
 प्रणेता वस्यः अच्छ ८,१६,१०; ३९१
 प्रणेनीः ६,२३,३ १२२०
 प्रतिमानम् ओजसः १,१०२,८; ८३५
 प्रतिमानम् सतः सतः ३,३१,८, १२६७
 प्रतः १,६१,५, ८५७ । ३,४२,९, १३९० । ६,२२,७,
 १९१३ । ३९,५,१९८७ । ४५,१९; २०७८ । ८,६,३०,२७२
 प्रावक्ष्ण - अक्षम् [हिं] १०,४४,१,२५६८ । ४४,३, २५७०
 प्रथमः ५,३१,१; १६९३
 प्रथम उपमानाम् ८,६१,२, ५४९
 प्रथमः जातः एव २,१२,१; ११२२
 प्रथमः दाता ८,९०,२, २३२२
 प्रथमः ब्रह्मणे १,१०१,५; ८२१
 प्रथमः यज्ञियानाम् ६ ४१,१; १९९३
 प्रथमं जायमानः ४,१७,७, १४२४
 प्रदिवः १,५४,२; ७७६ । ३,५१,४, १४३७ । ६,२३,५,
 १९२२ । ४४,१२; २०४७
 प्रक्षिप्तमानः कृतेन ३,३१,२१, १२८०
 प्रपान्थितमः १,१७३,७; १०६२
 प्रब्रुवाणः जनेषु बलानि १०,५४,२; २६०९
 प्रभङ्गः दुर्मतीनाम् ८,४६,१९; १८३५
 प्रभङ्गी ८,६१,१८, ५६५
 प्रभञ्जन् सेनाः [बृहस्पतिः] वा० य० १७,३६; २९३२

प्रभर्ता १,१७८,३, १०९८ । ८,२,३५; १५०
 प्रभूवसुः १,५८,४; ८१४ । ८,४५,३६; ४७८ । साम०
 २१२, २९७८
 प्रमतिः ४,१६,१८; १४८४ । ६,४५,४; २०६३ । ७,२९,
 ४; २२१६
 प्रमथिन् ६,३१,५; २०१०
 प्रमरः १०,२७,२०; २५१०
 प्रमिनाः १०,२७,१९, २५०९
 प्रमृण्णन् ओजसा १०,१०३,६ २६९६
 प्रयज्युः ६,२१,१०; १९०५ । २२,११; १९१७
 प्रयन्ता ८,९३,२१, २४५०
 प्रया[य] वयन् अन्यान् ३,४८,३, १४२१
 प्ररिका क्षमः दिवः च १,१००,१५; ९७१
 प्रवयाः २,१७,४, ११८४
 प्रविद्वान् अथर्व० ७,९७,१; ३१२०
 प्रवीरः १०,१०३,५, २६९५
 प्रवृद्धः १,३३,३, ७३२ । ८,६,३३; २७५ । १२,८; २९५।
 ७७,३, ६४२। ९३,५, २४२४। ९६,२; २३४६ । वा० य०
 ३३,७९, २९७० । ऋ० १,१६५,९; ३२५८
 प्रवेपनी ५,३४,८; १७३४
 प्रवर्ध. ८,४,१, २२९
 प्रसक्षिन् ८,३२,२७; २७६
 प्रसाहः ६,१७,४; १८४४
 प्रहावान् समिधेषु ४,२०,८; १५४०
 प्रहेतु-ता ८,९९,७, २३८२
 प्र.चामन्युः ८,६१,९, ५५६
 प्राविता ८,९६,२०; २३६२
 प्राशुषाट् ४,२५,६; १५९३
 प्रासह. १,१२९,४,४। १००३,१००३ । १०,७४,६; २६३९।
 ८ ४६,२०; १८३६
 प्रिय. ८,५०,३; ४९७ । ९८ ४; २३६७
 प्रेतारा (रौ) धिय [इन्द्रावरुणौ] ४,४१,५; ३१५०
 प्रीणाना [इन्द्रवायू] ७,९१,५, ३२३८
 बन्धुमान् ८,२१,४, ४१२
 बभ्रिः वज्रम् ६,२३,४; १९२१
 बभ्रू [इन्द्राग्नी] ४,३२,२३-२४; ३३४८-४९
 बर्हणा १,५५,३; ७८८ । ५७,५; ८०९
 बर्हिः ओकाः [तदोका] ३,३५ ७, १३१८
 बलविज्ञायः १०,१०३,५; २६९५
 बहुलाभिमानः १०,७३,१, २६२३

बाहुशर्भी १०, १०३, ३; २६९४
 बाहूतेरण्यौ संस्कृते ८, ७७, ११; ६५०
 बाह्योजा. १०, १११, ६; २७३०
 बृबहुकथः ८, ३२, १०; १८९
 बृहत्-न् १, ९, १०; ५७ । ५५, ३; ७८८ । ५८, १; ८११ ।
 २, १६, २; ११७३ । ३, ३२, ७, १२०८ । ४, १७, ६; १४९३ ।
 ६, १८, २; १८७२ । २४, ३; १९३० । ८, ८९, ३; २३८६ ।
 ९८, १; २३६४ । १०, ४७, ३; २८४४ । [इन्द्रावरुणौ]
 ४, ४१, १०; ३१५६ । [वरुणः] ६, ६८, ९, ३१६९ ।
 [इन्द्राविष्णू] ७, ९९, ६; ३३१६
 बृहद्विबः ४, २९, ५; १६०८
 बृहज्जातुः ८, ८९, २; २३८५
 बृहद्भिः- द्वये (चतु०) १, ५७, १, ८११
 बृहद्रेण ६, १८, २; १८५७
 बृहच्छवाः १, ५४, ३; ७८८
 बृहत्सतिः २, ३०, ४, १२३०
 ब्रह्मः १, ६, १; २४
 ब्रह्मन्- ह्या ६, ४५, ७; २०६६ । ७, २९, २; २२१४ । ८,
 १६ ७; ३८८ । अथ २०, २, ३; २९१७
 ब्रह्मजुतः ३, ३४, १; १३०१ । ७, १९, ११; २१५०
 ब्रह्मवाहस्-ह्याः १, १०१, ९, ८२५ । ५, ३४, १; १७२७ । ३९, ५;
 १७६४ । ६, २१, ६; १९०२ । ६, ४५, ४, ७; २०६३, २०६६
 ब्रह्मवाहस्तमः ६, ४५, १९, २०७८
 ब्रह्मपंशितः [द्विपुः] वा० य० १७, ४५; २९३४
 भगः २, ११, २१; ११२१ । १५, १०, ११७१ । १६, ९;
 ११८० । १७, ७; ११८७ । १७, ९, ११८९ । १८, ९; ११९८ ।
 १९, ९; १२०७ । २०, ९; १२१६ । ३, ३६, ५; १३२७
 भद्रकृत् स्तोत्राणाम् ८, १४, ११; ३६४
 भद्रवातः १०, ४७, ५; २८४६
 भद्रहस्ता (स्तौ) [इन्द्राक्षी] १, १०९, ४; ३०२४
 भर्ता धृष्णोः वज्रस्य १०, २२, ३; २४६८
 भर्ता वज्रं नय्यम् १०, ७४, ५; २६३८
 भार्गवः ४, २१, १०; १५५०
 भिन्दुः पुराम् १, ११, ४, ७३
 भीमः १, ५६, १; ९७ । ५८, ३, ८१३ । ८१, ४; ९१९ ।
 १००, १२, ९६८ । ४, २०, ६; १५३८ । ७, २१, ४; २१६४ ।
 १०, १८०, २, २८४०
 भुवनिः १, ५७, १, ८०५
 भुवनस्य एकदा ८, ३७, ३, १७७८
 भूरिकर्मा १, १०३, ५, ८४३

भूरिगुः ८, ६२, १०, ५७५
 भूरिदाः ४, ३२, १९, २०, २१; १६६३-६४-६५
 भूरिवात्र ३, ३४, १; १३९१
 भूरिदावत्तरी [इन्द्राक्षी] १, १०९, १; ३०२२
 भूरिवारः १०, २७, २; २८४३
 भूः ईशानः ८, ३३, १४, १९३
 भूर्यासुतिः ८, ९३, १८, २४४०
 भूमि. ४, ३२, २; १६४६
 भृष्टिमान् साम० ३२७, २९८३
 भेत्ता पुराम् ८, १७, १४, ४०७ ।
 भोजः २, १४, १०; ११५९ । २, १७, ८, ११८८ । ८, ७०, १३;
 २३३३ । १०, ४२, ३; २५४८
 आता ३, ५३, ५, १४५७
 आतरा (रौ) [इन्द्राक्षी] ६, ५९, २; ३०४७
 आशयन् तिग्मानि आशयानि १०, ११६, ५, २७५९
 मंहिष्ठः १, ३०, १, ९९९ । ५०, १, ७४५ । ५८, १, ८११ ।
 ६१, ३; ८५८ । १३०, १, १०११ । ६, ४४, ४, २०३९ ।
 ८, १, २; ८८ । १५, १०, ३७८ । १६, १; ३८२ । ८८, ६,
 ८२९ । ९७, १३, ९८८ । [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, ७; ३१५०
 मंहिष्ठरातिः १, ५२, ३; ७६२
 मंहिष्ठः मघोनाम् ५, ३९, ४; १७६३ । [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, २,
 ३१६२
 मघवन् १, ३२, ३, १३; ७१७ ७२७ । ३३, २२, १५; ७४१, ४४ ।
 ५२, ११, ७०० । ५५, १; ७८६ । ५६, ४, ८०० । ८२, १, ३;
 ९२५, ९२७ । ८४, १९; ९५५ । १०२, ३, ३-४, ७, १०;
 ८३०-३०-३१, ३४, ३७ । १०३, २, ४, ८४०, ४२ । १०४, ५, ८;
 ८५१, ५४ । १३२, १, १०२८ । १३३, ३; १०३६ । १७३, ५,
 १०६० । १७४, १, ७, १०६९, १०७५ । १७८, ५, ११०० ।
 ३, ३०, ३, ५, १६, २१, २२, १२४०, १२४२, १२५३, ५८, ५९ ।
 ३१, १४, १९, २२, १२७३, ७८, ८१ । ३२, १, १७; १२८२, ९८ ।
 ३४-३५, ११; १३११, १३२२ । ३६, १०-११; १३३२-३३ ।
 ३८, १०; १३५४ । ३९, ९, १३६३ । ४३, ५, ८; १३९५,
 १३९८ । ४७, ४, १४१७ । ४८-५०, ५; १४२३, १४२८,
 १४३३ । ५१, १; १४३४ । ५३, २, ४, ५, ८, १४, १४५४,
 ५६, ५७, ६०, ६६ । ४, १६, १, ९, १९, १४६७, ७५, ८५ ।
 १७, ५, ७, ८, ९, ११, १३, १३, १९, २०; १४९२, १४९५, १५९६,
 १४९८, १५००, १५००, १५०६-७ । १८, ९; १५१७ ।
 २०, २; १५३४ । २२, १; १५५५ । १०; १५६४ ।
 ४, २४, २, १५७८ । २८, ५; १६०३ । २९, ५; १६०८ । ३०, ७;
 १६१५ । ३१, ७, १६३६ । ५, २९, ५, ६, ८; १६७ १७७, ७४ ।

३०, ३, ७, १६८४, ८८ । ३१, १, ६; १६९३, ९८ । ३४, २-३;
 १७२८ २९ । ३६, ३, ४; १७४६-१७४७ । ६, १९, १,
 १८७१ । २१, ६; १९०२ । २३, १ १९१८ । २४, १; १९२८ ।
 २७, ३, १९५७, ४४, १०, १७, १८, २०४५, ५२, ५३। ४६, ८, १०,
 २०९७, ९९ । ४७ ९, ११, १५, २१०७, ९, १३ । ७, १८, २,
 २१२० । १९, ८, ९, २१४७-४८ । २०, ९, २१५९। २२, ३, ६;
 २१७३, ७६। २६, १, २, २१९८-९९। २७, २, ४, २२०४, ४, ६ ।
 २८, ५, २२१२ । २९ १, ३, ४, ५, २२१३, १५, १६, १७। ३०, ५,
 २२२२ । ३२, ७, १४, १५, २२४१, ४८, ४९। ३२, १९, २१, २३,
 २४, २५, २२५३, ५५, ५७, ५८, ५९। ३८, ५, २२८३, १०४, १९,
 २२८७ । ८, १, ४, १२, ९०, ९८। २, १३; १२८। ३, १४, १७, १८,
 १६९, ७२, ७३। ४, ४, १०, २३२, ३८। २१, १०, ४१८। २४, १०,
 ११; १७९९, १८००। ३२, ८, १८७। ३३, ३, ९, ११, १३;
 २१२, १८, २०, २२। ३६, २ १७७० । ४५, ६ ४४८ ।
 ४६, ११, १३ १८२७, २९ । ४९, १, ९, १०, ४८५, ९३, ९४ ।
 ५०, १० ५०४ । ५१, १, ६, ७, ५०५, १०, ११। ५२, ५, ८;
 ५१९ २२ । ५३, १, ५२५ । ५४, ७, ५३७ । ६१, १, ४, ७,
 १३, १४, १८, ५४८, ५१, ५४, ६०, ६१, ६५ । ६२, १०, ५७५ ।
 ६५, १०; ६१० । ६६, १३; ६२५ । ७०, ६, ९, १५; २३२६,
 २९, ३५ । ७८, १०; ६६० । ८८, ६, ८१९ । ८९, ५; २३८८ ।
 ९०, ४; २३९४ । ९३, १०; २४३९ । ९६, २०, २३६२ ।
 ९७, १, ८, १३, ९७६, ८३, ८८ । १००, ६; ९९६ । १०, २३,
 ०, ३; २४८२-८३। २८, ३; २५२४ । ५; २५२६ । ३३, ३;
 २५४० । ४२, ३, ८; २५४८, ५३ । ४३, १, ३, ५, ५, ६, ८;
 २५५७, ५९, ६१, ६१, ६२, ६४ । ४४, ९, ९; २५७६-७६ ।
 ४९ ११, २६०० । ५४, १, ४, ५; २६०८, ११, १२ । ५५, १,
 २६१४ । ७४, ५; २६३८ । ८९, १८, २६७९ । १०३, १०;
 २७०० । १०४, ७, ११; २७०९, १३ । १११, ६; २७३० ।
 ११२, ९, १०; २७४३, २७४४ । ११३, २, २७४६ ।
 ११६, ७, ७, २७६१, २७६१ । १३४, ६; २७९० ।
 १०, १४७, ३; २८०६ । १४७, ४, ५, २८०७-८ । १६०, ४,
 २८२७ । १६७, २; २८३० । अथ० ७, ३१, १, २९०५ ।
 वा० य० ७, ४ २९२३ । २०, ७७, २९६१ । ३३, ७९;
 २९७० । साम० २९८, २९८२ । ऋ० ५ ८६, ३; ३०४२ ।
 १, १६५ ९; ३२५८ । १, १७१, ३; ३२६५ । अथर्व० ८, ४,
 १९; ३२९६ । ऋ० ३, ६०, ५, ३३४१ । [इन्द्राब्रह्मण-
 स्पती] २, २४ १२, ३३५९
 सधवत्तमः ८, ५४ ५, ५३५
 सधानां त्रिभक्ता ७, २६ ४, २२०१
 सधानि वाता ४, १७, ८, ४९५

सधोनां उपम ८, ५३, १, ५२५
 सधोनां महिष्ठा ५, ३९ ४, १७६३
 मतिः (ते- संबो०) ८, ६८, २; २२९२
 मत्वः ३, ३४, २, १३०२
 मथायन् नमुचेः शिरः ५, ३०, ८; १६८९
 मदः श्रुतिमन्तमः ते १, १७५, ५, १०८३
 मदच्युत् १, ५१, २; ७४६
 मदपती मदानाम् [इन्द्राब्रह्मणू] ६, ६९, ३, ३३०८
 मदवृद्धः १, ५२, ३, ७६२
 मदिन्तमः ८, १३, २३; ३४३
 मदे हितः ८, ९३, ८, २४३७
 मद्य ८, २, २५; १४०
 मद्गने (चतुर्थी) ८, ९२, १०, २४१५
 मनस्वान् २, १२, १; ११२२
 मनुर्हितः [अग्नि] ८, ३४, ८; ४३२
 मनोजुवः वा० य० १७, २३; २९३१ । [इन्द्रवायू]
 ऋ० १, २३, ३, ३२१४
 मनोः वृधः ८, ९८, ६, २३६९
 मन्तुमत् (मः- सं) १०, १३४, ६, २७९०
 मन्त्रः १०, ५०, ४; २६०४
 मन्दद्वोरः ८, ६९, १; २३०४
 मन्दमानः १०, ५०, १, २६०१ । ७३, ५, २६२७ । ११२,
 २; २७३६
 मन्दसानः १, १०, ११; ६८ । १००, १४; ९७० । १३१, ४;
 १०२४। २, ११, ३, १५, १७, ११०३, १५, १७। ३०, ५, १२३१ ।
 ४, २६, ३, १५२८। २९, १, १६०४ । ४, ३२, १०, १६५४।
 ५, २९, २; १५६८ । ६, २६, ६; १९५२ । ४, १७, ३, १४९० ।
 ६, १७, ५, १८४१ । ६, ४४, १५; २०५० । ८, ४९, ४,
 ४८८ । ९३, २१, २४५० । [इन्द्राब्रह्मस्पती] ४, ५०, १०;
 ३३२३ । अथ० २०, १३, १, ३३२९
 मन्दमान सुस्वनिभिः ४, २९, २; १६०५
 मन्त्रानः १, ८०, ६; ९०५। ८२, ४, ९९, २; १२०० ।
 ३, ५०, ३, १४३१ । ५, ३२, ६, १७१० । ८, १३, ४; ३२४ ।
 १५, ५, ३७३ । ३२, ५; १८४ । ३३, ७; २१६ । ८८, १;
 ८९४ । ४५, ३१; ४७३ । १९, १६७, २; २८३० । ७, ९४,
 ११, ३०८९
 मन्त्र [इन्द्रामरुत.] १, ६, ७, ३२४६
 मन्दिन्-न्दी १, ९, २, ४९
 मन्दिष्टः साम० २२६; २९७९
 मन्त्र १०, ७३, १; २६२३

मन्यमानः ७, २२, ८, २१७८
 मन्युः अथ० ७, ९३, १, २९१३
 मन्युमीः १, १००, ६, ९६२
 मरुतां वेधाः १, १६९, १; १०४३
 मरुत्वान् १, ९०, ११, ९१० । १००, १-१५, ९५७-९७१ ।
 १०१, १-७, ८; ८१७-८२३, ८२४ । ३, ३५ ७; १३१८ ।
 ४७, १, ५; १४१४, १८३, ५०, १; १४२९ । ५१. ७, १४४० ।
 ४, २१, ३; १५४६ । ६, १९, ११; १८८१ । ८, ३६, १-६;
 १७६९-१७७४ । ७६, १, ५-८; ६२८, ६३२-६३५ । १, २३, ७;
 ३२४७
 मरुसखा ८, ७६, २, ३, ९, ६२९-६३०, ६३६
 मर्दिता १, ८४, १९, ९५५ । ४, १७, १७, १५०४ । १८, १३,
 १५२१ । ८, ६६, १३; ६२५ । ८०, १; ६६१
 मर्यत् १०, २७, १२; २५०२
 महः १, १०२, १, ८२८ । ३, ३४, ६, १३०६ । ६, २९, १;
 १९६२ । ६, ४६, २, २०९१ । ८, १६, ३, ३८४ । १०, २२, ३;
 २४६८ । ९९, १२; २६९१ । १२०, ८; २७७१
 महे (चतु०) १, ६२, २; ८७३ । ५, ३३, १; १७१७ ।
 ६, ३२, १; २०११ । ७, २४, ५; २१९० । ३१, १०; २२३२ ।
 ८ ९६, १०; २३५४ । १०, ५०, १; २६०१ [विष्णुः] १, १५५, १;
 ३३०३ ।
 महाम् [दि०] २, २२, १, १२२३ । ३, ४९ १ १४२४ ।
 ४, १७, ८; १४९५ । ४, १९, १; १५२२ । ६, १७, १३;
 १८५३ । ४, २३, १ १५६६ । ६, ३८, ५, १९८२ । ६, २९ १;
 १९६२ । ६, १७, ४, १८४४ । ८, ६५, ३ ६०३
 मजान् १, ४, १०; १३ । ८, ५; ४२ । ५७, ३ ८०७ । ६३, १
 ८८५ । २, १५, १; ११६२ । ३, ३१, १८, १२७७ । ३६, ४, ५
 १३२६-२७ । ४६, १, २ १४०९-१० । ४, १७, १ १४८८ ।
 २१, ६, १५४९ । २२, १, ५ १५५५, १५५९ । ४, ३०, ९
 ३३४५ । ४, ३२, १ १६४५ । ७, ३१, ७, २२२९ । ८, १, २७
 ११३ । ६, ४५, १३ २०७२ । ८, १३, १, ३२१ । ३२, १३,
 १९२ । ५२, ५ ५१९ । ६४, २, ५९० । ६५, ४, ६०५ ।
 ९२, ३, २३९९ । ९५, ४; २३३९ । ९८, २, २३६५ ।
 वा० य० २६, १७, २९६६ । १, २१, ५; ३००६ । [इन्द्रावरुणौ]
 ७, ८२, २, ३१७३
 महान् भोजसा ८, ६ १, २६ २४३, २६८ । ३३, ८ २१७
 महान् क०वा १, ८१, ४; ९१९
 महान् ब्रह्मणा १०, ५०, ४ २६०४
 महान् महिना ८, १२, २३ ३१०
 महान् महीभिः शचीभि ८, २, ३२, १४७ । १६, ७, ३८८

महान् महीनाम् १०, १३४, १ २७८५
 महानां दाता ८, ९२, ३ २३९९
 महानां पतिः ८, ९३, ३१ २४६०
 महः दाता ६, २९, १ १२६२
 महः क्षयस्य ८, ६१, १४, ५६१
 महः धृष्णुया ६, ४६, २, २०९१
 महः राघस्य ८, ६१, १४ ५६१
 महामहः ८, २४, १० १७९२ । ३३, १५, २२४ । ४६, १०,
 १८२६ । १० ११९, १२, २७६१
 महाय्यः ८, ७०, ८, २३२८
 महावधः ५, ३४, २, १७२८
 महावसू [इन्द्रावरुणौ] ७, ८२, २; ३१७३
 महावीरः १, ३२, ६, ७२०
 महाव्रातः ३, ३०, ३ १०४०
 महाहस्ती ८, ८१, १, ८७०
 महिः ८, १७, १४ ४०७ । १०, १६७, २, २८३० । ७, ९३, ५;
 ३०७५
 महित्वा सिन्धुभ्यः रिचिचान १०, ८९, १, २६६३
 महिनः ६, २६, ८; १९५४
 महिने [चतुर्थी] ७, ३१, ११, २२३३
 महिवृध् ७, ३१, १०, २२३२
 महिजत [वरुणः] ६, ६८, ९, ३१६९
 महिषः १०, ५४, ४, २६११
 महीयमाना [उषाः] ४, ३०, ९; ३३४५
 महेमते ८, १३, ११, ३३१ । ३४, ७, ४३१ । ४९, ७, ४९१ ।
 ५० ७, ५०१
 मातरिश्वन्-श्वा १०, १०५, ६; २७१९
 माता त्वम् ८, ९८, ११; २३७४
 मानः दिवः ८, ६३, २, ५७९
 मानस्य क्षयः ८, ६३, ७; ५८४
 मानुषः १, १८४, २०; ९५६ । २, ११, १०; १११०
 मानुषीणाम् एकः ६, १८, २, १८५७
 मायाः कृण्वान् ३, ५३, ८; १४६०
 मायी ७, २८, ४; २२११ । ८, ७६, १; ६२८ । १०, १४७,
 ५, २८०८
 माहिन १, ६१, १; ८५६ । २, १९, ३; १२०१ । वा० य०
 ३३, २७ २९६८ । १, १६५, ३, ३२५२
 माहिनावान् ३, ३२, ४; १३५८
 मित्रः ६, ४४, ७; २०४२ । अथर्व० २, ५, ३, २८६५
 मित्रपतिः १, १७०, ५, १०५५

मित्रस्यः सनिः ८, १२, १२; २९९
 मिमान ओजः २, १७, २; ११८२
 मिमिक्षुः ३, ५०, ३. १४३१
 मीढवस्-इवान् ८, ४६, १७, १८३३ । ७६, ७. ६३४
 मुनीना सखा ८, १७, १४, ४०७
 मुष्कयोः बद्धः १०, ३८, ५; २५४५
 मूर्धा दिव -[अग्नि] वा० य० १३, १४; २९३०
 मृक्षः ८, ६६, ३, ६१५
 मृलीकः ६, ३३, ९; २०२०
 मेडिः साम० ३२७, २९८३
 मेधिरः १, ६१, ४; ८५९ । ६, ४२, ३; २०००
 मेषः १, ५१, १, ७४५ । ५२, १, ७६० । ८, ९७, १२; ९८७
 मेषः भूतः ८, २, ४०, १५५
 मेहनावान् ३, ४९, ३, १४२६
 म्रक्षकृत्वा ८, ६१, १०, ५५७
 युजतः २, १६, ४, ११७५।२१, १, १३१७।८, १७, १५; ४०८
 यजत्रः १, १२९, ७, १००६ । ३, ३५, १०; १३२१ । ६, २५, ८; १९४५
 ✓यज्ञवाहस्-हाः ८, १२, २०, ३०७।[इन्द्रवायू] ४, ४७, ४, ३२२९
 यज्ञवृद्धः ६, २१, २; १८९८
 यज्ञियः ३, ३२, ७, १२; १२८८, १२९३ । ६, ४७, १३, २१११ । ८, ९७, १३; ९८८
 यज्ञिय विश्वेषु सवनेषु १०, ५०, ४, २६०४
 यज्ञियानां यज्ञियः ८, ९६, ४, २३४८
 यज्वन वृधः ८, ३२, १८, १९७
 यत्तकरः ५, ३४, ४; १७३०
 यतस्तुचा (चौ) [इन्द्राग्नी] १, १०८, ४; ३०११
 यमः ८, २४, २२; १८११
 यमी [इन्द्राग्नी] ६, ५९, २, ३०४७
 यमाः ५, ३२, ११; १७१५ । ८, ६१, ५, ५५० । ९०, ५, २३९५
 यद्धः ८, १३, २४; ३४४
 यातयन् ऋतुथा ५, ३२, १२, १७१६
 याता रथेभिः ८, ७०, १, २३२१
 यादमानः शश्वत् गश्वत् ऊतिभिः ३, ३६, १; १३२३
 ✓युगा मानुषा कृण्वन् ८, ६२, ९, ५७४
 युजः १, ७, ५, ३२ । १२९, ४, ४; १००३, १००३
 युजम् रथीणाम् (हिं) ६, ४५, १९; २०७८
 युजानः अश्वा १०, २२, ४; २४६९
 युजान हरिभिः ८, ५०, ७; ५०१
 युजानः हरिभिः रथे ६, ४७, १९, २११७

युज (जा-तृती०) १, २३, ९, ३२४९
 युक्तागः १०, १०३, २, २६९३
 युधः १०, १०३, ३; २६९४
 युधमः २, २१, ३, १२१९ । ३, ४६, १; १४०९ । ६, १८, २, १८५७ । ७, २०, ३; २१५३ । ८, १, ७, २३ । ९२, ८, २४०४
 युवा १, ११, ४; ७३ । २, १६, १; ११७२ । २०, ३; १२१० । ३, ३२, ७, १२८८ । ४६, १, १४०९ । ६, १२, २, १८७२ । ४५, १; २०६० । ७, २०, १; २१५२ । ८, ४५, १, २, ३; ४४३-४४-४५ । ६४, ७, ५९५ । साम० ४४५; २९८८ ।
 [मरुत] १, १६५, २, ३२५१
 योद्धा ऋत्वा ८, ८८, ४, ८९७
 योद्धा शयसा ८, ८८, ४, ८९७
 योधीयान् प्रतीचश्चित् १, १७३, ५; १०६०
 योयुवतीनां नदः ८, ६९, २; २३०५
 रक्षिता चरमतः मध्यतः पश्चात् पुरस्तात् अथ० १९, १५, ३; २९१६
 रक्षोहा [वृहस्पतिः] वा० य० १७, ३६, २९३२
 रणकृत् १०, ११२, १०; २७४४
 रणिता ८, ९६, १२; २३६१
 रथः १, ५५, ३, ७८८
 रथयावाना [इन्द्राग्नी] ८, ३८, २; ३०९२
 रथयुः १, ५१, १४; ४५८
 रथिन्-थी १०, ४७, ५; २८४६
 रथिर ३, ३१, २०; १२७९
 रथीतमः ६, ४५, १५ २०७४ । ८, ६१, १२; ५५९ । ८, ९९, ७; २३८२
 रथीतमः रथीनाम् १, ११, १; ७० । ८, ४५, ७; ४४९
 रथेभिः याता ८, ७०, १; २३२१
 ✓रथेष्ठाः १, १७३, ४, ५; १०५९-६० । ६, २१, १, १८९७ । २२, ५; १९११ । २९ २; १९६३ । ८, ४, १३; २४१ । ३३, १४; २२३
 रथोक्त्या १०, १४८, २, २०११
 रथ्यः हरीणाम् विव्रतानाम् १०, २३, १; २४९०
 रदावसुः ७, ३२, १८; २२५२
 रध्रचोदः २, २१, ४; १२२०
 रध्रचोदनः ६, ४४, १०, २०४५ । ८, ८०, ३; ६६३ । १०, ३८, ५ २५४५
 रध्रस्य चोदिता १०, २४, ३; २४९०
 रभसाः ३, ३१, १२; १२७१
 रथिपतिः ६, ३१, १; २००६

रथिवस्-वान् १,१२९,७; १००६ । ६,४४,१, २०३६
 रथीणां दाता ८,४६,२; १८१८
 रथीणां युज्-क् ६,४५,१९, २०७८
 रराणः ६,२३,७, १९२४ । ३९,५, १९८७
 रवथः १,१००,१३, ९६९
 राजसि विश्वस्य परमस्य ७,३२,१६; २२५०
 राजा १,६३,७, ८९१ । १७४,१, १०६९ । १७८,२,
 १०९७ । ४,१९,१०,१५३१ । ५,३६,२; १७४५ । ४०,४,
 १७६८ । ६,१९,१०; १८८० । २४,१; १९२८ । ४६,६;
 २०९५ । ७,३१,१२, २२३४ । ८,९७,१५, ९९० ।
 १०,४४,२, २५६९ । [इन्द्रावरुणौ] ७ ८४,१, ३१९२ ।
 [वरुणः] वा० य० ८,३७, ३२०९
 राजा अवसितस्य शवस्य शृङ्गिणः १,३२,१५; ७२९
 राजा उभयस्य ६,४७,१६, २१४
 राजा कृष्टीनाम् १,१७७,१; १०९१ । ४,१७,५; १४९२
 राजा क्षम्यस्य २,१४,११, ११६०
 राजा चर्षणीनाम् १,३२,१५; ७२९ । ५,३९,४; १७६३ ।
 ७,२७,३; २२०५ । ८,७०१; २३२१
 राजा जगतः चर्षणीनाम् ६,३०,५; १९७२ । ७,२७,३; २२०५
 राजा जनानाम् ८,६४,३; ५९१
 राजा जनुषाम् ४,१७,२०; १५०७
 राजा दिव्यस्य वस्वः २,१४,११, ११६०
 राजा पार्थिवस्य २,१४,११; ११६० । ६,२२,९; १९१५
 राजा प्रदिवः सुतानाम् ३,४७,१; १४१४
 राजा ब्रह्मण देवकृतस्य ७,९७,३; ३३६०
 राजा भुवः दिव्यस्य जनस्य ६,२२,९; १९१५
 राजा मदस्य सोम्यस्य ६,३७,२; १९७४
 राजा मधुनः सोम्यस्य ६,२०,३; १८८६
 राजा विशः अथ० ६,९८,२, २९०३
 राजा प्राच्याः दिशः अथ० ६,९८,३; २९०४
 राजा उदीच्या दिशः अथ० ६,९८,३; २९०४
 राजा विशाम् ८,९५,३; २३३८
 राजा विश्वस्य भुवनस्य एकः ३,४६,२, १४१० । ६,३४,४;
 २०३४
 राजा विश्वस्य स्पृहयायस्य ८,९७,१५; ९९०
 राजा हिरण्ययीनाम् ८,६५,१०, ६१०
 रातिः सहस्रदाना [इन्द्रस्य] ३,३०,७; १२४४
 रातयः यस्य सहस्रम् १,११,८, ७७
 रातह्वया नमसा [इन्द्राविष्णू] ६,६९,६, ३३११
 राधानां पतिः १,३०,५; ७०३ । ३, ५१,१०; १४४३

राया नकिः त्वत् ८,२४,१५; १८०४
 रायः अवनि ८,३२,१३; १९२
 रायः ईशानः ८,४६,६, १८२२ । ५३, १; ५२५
 रायः विभक्ता ४,१७,११; १४९८
 रायः वृधः ७,३०,१; २२१८
 रायस्वतिः ८,६१,१४; ५६१
 रिणन् अप. ८,३२,२; १८१
 रिरिचानः सिन्धुभ्यः महित्वा प्र १०,८९,१; २६६३
 रिरिचे अकतुभ्यः दिव अन्तरिक्षात् प्र १०,८९,११; २६७२
 रुवान. ६,३९,४; १९८६
 रुजन् गोत्राणि ४,१६,८, १४७३
 रेवत्-वान् १,४,२, ५ । ६,४४,११, २०४६ । ८,२,११,
 १२६ । ४५,१५, ४५७
 रोचना [नौ] दिवः [इन्द्राग्नी] ३,१२,९; ३०३८
 रोचमानः ३,४६,३, १४११ । [मरुत] १,१६१,१२, ३२६१
 रोस्वत्-वना १,५४,५; ७९०
 लोककृत् १०,१३३,१, २७७८
 वंसगः १,१३०,२ १०१२ । १०,१४४,३, २८००
 वक्ता नकिः न दात इति ८,३२,१५, १९४
 वक्षणिः वाकस्य ८,६३,४; ५८१
 वज्रः दास्वते १०,१४४,२, २७९८
 वज्रं बाह्वोः दधान ४,२२,३; १५५७
 वज्रं गिज्ञानः ओजसा ८,७६,९; ६३६
 वज्रम् [वज्रधारिणम्] १०,४८,६; २५८४
 वज्रं हस्ते भरति २,१६,२; ११७३
 ✓ वज्रदक्षिणः १, १०१,१, ८१७ । १०,२३,१, २४८१
 वज्रबाहुः १, ३२, १५, ७२९ । १७४, ५; १०७३ ।
 २,१२,१२-१३; ११३३-३४ । ३,३३,६ १२९९ । ४,२०,१,
 १५३३ । २९,४, १६०७ । ८,१८,१२, २१३० । २३,६;
 २१८५ । १, १६५, ८, ३२५७ । १०, ४४, ३, २५७० ।
 १०३,६, २६२६ । [इन्द्राग्नी] १,१०९,७; ३०२७ [इन्द्राग्नी]
 अथ० ७,११०,२; ३१३२
 वज्रभृत् १,१००,१२, ९६८ । ६,१७,२, १८४२
 वज्रहस्त १,१७३,१०, १०६५ । २,१२,१३; ११३४ ।
 १९, २; १२०० । ३,३२,३; १२८४ । ५,३३,३; १७१९ ।
 ६,१७,१; १८४१ । ६,२२,५; १९११ । २९,१; १९६२ ।
 ४६,५; २०९४ । ७,१९,५, २१४४ । २१,४; २१६४ ।
 ३२,३-४; २२३७-३८ । ८,२,३; १४६ । २४,२४, १८१३ ।
 ९०,४; २३९४ । १०,४७,१; १८८२ । वा० य० २६,१०,
 २९६६ । १,१०९,८; ३०२८

वज्रिन्-त्री १,७,२,५,७: २९,३२,३४ । ८,५; ४२ ।
 ११,४, ७३ । ३०,११-१२, ७०९-१० । ३२,१; ७१५ ।
 ५२,५, ७६४ । ६३,४-५,७, ८८८८९,८९१ । ८०,
 १-२,७,११; ९००-१ ६,१० । ८२,६, ९३० । १०३,३,४;
 ८४१-४२ । १३०, ३; १०१३ । १३१, ६, १०२६ ।
 ३,४६,१. १४०९ । ५३,१३; १४६५ । ४,१९,१, १५२२ ।
 २०,२,३, १५३४-३५ । २९,१४, १६८० । ३०,१; १६८२ ।
 ३२,२,४, १७०६, ८ । ३६,५ १७४८ । ४०,३ ४; १७६७ ६८ ।
 ६,१८,६; १८६१ । १९,१२; १८८२ । २२,७; १८९० ।
 २२,१०; १९१६ । २९,३, १९६४ । ३२,१; २०११ ।
 ४१,१; १९९३ । ४७,१४; २११२ । ७,३२,८, २२४२ ।
 ८,१,८, ९४ । २,१७, १३२६, १५, २५७ । ६,४०; २८२ ।
 १२,२४,२६; ३११,३१३ । १३,१३, ३५३ । २१,८; ४१६ ।
 २४,१. १७९० । ३३,४; २१३ । ४५,८; ४५० । ४९,३,६;
 ४८७,४९० । ५०,६; ५०० । ६६,४,७, ६१६,६१९ ।
 ६९,६; २३०२ । ७०,५,६; २३२५-२६ । ९२,१३, २४०९ ।
 ९६,१७, २३५९ । ९७,१३, १४,१५; ९८८-९९-१० ।
 ९९,१; २३७६ । १०,२२,२; २४६७ । ५५,७, २६२० ।
 १७९,३, २९३८ । ७,९७,९; ३३६१ । साम० ३२७,२९८३ ।
 क्र० [इन्द्राक्षी] ६,५९,३, ३०४८
 वज्रिवत्स-वान् ८,३७,१-६; १७७६-८१ । ६६,६,११
 ६१८,६२३ । ६८,९, २२९९ । ९२,११, २४०७ । १०,२२,
 ४,१०,११,१२,१३; २४६२, २४७५-७६-७७-७८
 वध असुन्वतः वीळोश्चित् १,१०१,४; ८२०
 वध दोषतः २,२१,४, १२२०
 वनिष्ठः ७,१८,१; २११९
 वन्दनश्रुत् १,५६,७, ८०३
 वन्दनेष्टा. १,१७३,९; १०६४
 वन्यः अथ० ६,९८,१; २९०२
 वन्धुरेष्टाः ३,४३,१; १३२१
 वन्वत्-न् २,२१,१२, १२१८ । ६,१८,१. १८५६
 वपुः ४,२३,९, १५७४
 वपोदरः ८,१७,८; ४०१
 वयोधाः ३,३१,१८; १२७७ । ४२,३ १४२६ । ४,१७,
 १७, १५०४
 वरः १०,२२,६. २५२०
 वरिवस्कुत् ८,१६,६ ३८७
 वरिवोचित् १०,३८,४; २५०४
 वरिष्ठः ८,९७, १०; ९८५
 वरीयान् अतश्चित् सदसः ३,३६,६; १३२८

वरुण [देवता] ७,२८,४, २२११
 वरुता २,२०,२, १२०९ । ६,२५,७, १९४४
 वरुथम् ७,३२,७, २२४१
 वरेण्यः ३,३४,८, १३०८ । ८,६१,१५, ५६२ । १०,११३,२,
 २७४६ । अथ० १९,१५,३; २९१६
 वर्णः १,१०४,२, ८४८
 वर्षणीतिः ३,३४,३; १३०३
 वर्म त्वम् अलि ७,३१,६, २२२८
 वलरुजः ३,४५,२, १४०५
 वनाः ८,९३,१०, २४३५
 वशिन्-त्री १,१०१,४, ८२० । ८,१३,९; ३२९ ।
 १०,१०३,३, २६९४ । १५२,२, २८१५ । अथ० ४,२४,७, २८७३
 वसवान् १,१७४,१; १०६९ । ८,९९,८; २३८३ । १०,२२,
 १५, २४८०
 वलिष्ठः ७,३३,१-९; २२६२-७०
 वसु १,१०,४; ६१ । ३०,१०, ७०८ । ८४,२०; ९५६ ।
 १२९,११,११. १०१० १० । २,१३,१३, ११४९ । १४,१२;
 ११६१ । ३,४१,७, १३७९ । ११,६, १४३९ । ४,३२,१४;
 १५५८ । ६,२४,२. १९३९ । ४५,२३, २०८२ । ४६,६;
 २०९५ । ७,३१,३, ४, २२२५-२६ । ८,१,६, २९, ९२, ११५ ।
 २,१, ११६ । २१,८, ४१६ । २४,७,८; १७९६-१७९७ ।
 ३३,२, २११ । ४६,९; १८२५ । ५०,३, ४, ९; ४९७ ९८, ५०३ ।
 ५१,६; ५१० । ५२,६, ८; ५२०, ५२२; ६६, १२; ६२४ ।
 ७०,९; २३२९ । ७८,३ ६५२ । ९८,११; २३७४ ।
 १०,२२,१५; २४८० । ३८,२; २५४२ । १०५,१, २७१४ ।
 अथ० ७,५५,१, २९१२
 वसु दयमानः १,१०,६. ६३
 वसुदाः ८,९९,४; २३७९
 वसुनः पूर्यः पतिः १०,४८,१; २५७९
 वसुपतिः १,९,९, ५६ । ३,३०,१९; १२५६ । ८,५२,६,
 ५२० । ६१,१०, ५५७ । १०,११२,१०; २७४४
 वसुपतिः वसूनाम् १,१७०,५, १०५५ । ३,३६,९; १३३१ ।
 ४,१७,६; १४९३ । १०,४७,१; २८४२
 वसुभिः नियुत्वा ३,४९,४. १४२७
 वसुविद् ८,६१,५, ५५२
 वसूनां ईशानः ८,६८,६; २२९६
 वसूनां दाता ८,५१,५; ५०९
 वसूनां विश्वेषां हरज्यन् ८,४६,१६; १८३२
 वसूयुः १,५१,१४, ७५८ । ८,९९,८; २३८३ । १०,२७,१२;
 २५०२

वस्ता क्षपाम् ३,४९,४; १४२७
 वस्यः ७,३२,१९; २२५३
 वस्यान् ८,१,६; ९२
 वस्व. अर्णवः १,५१,१ ७४५
 वस्वः आकर ५,३४,४; १७३०
 वस्वः ईशः ८,१४,१; ३५४
 वस्वः ईशानः ८,८१,४; ६७३
 वस्व. सम्भरः ४,१७,११, १७९८
 वस्वः सन्नाट ४,२१,१०, १५५३
 वह्निः २,२१,२; १२१८ । [मरुतः] १,६,५, ३२४५
 वह्निः संवरणेषु ४,२१,६; १५४९
 वाकस्य वक्षणिः ८,६३,४; ५८१
 वाघत नान्यः खत् ८,७८,४; ६५४
 वाचं जनयन् यजध्वै ४,२१,५; १५४८
 वाचस्पति. वा० य० १७,२३; २९३१
 वाज. १०,२३,२, २४८२ । ४७५; २८४६
 वाजदा [इन्द्रवायू] १,१३५,५; ३२१६
 वाजदावा मघोनाम् ८,२,३४; १४९
 वाजपतिः साम० २२६; २९७९
 वाजयत् ८,९८,१२, २३७५
 वाजयन्ता (तौ) ६,६०,१; ३०५५
 वाजयुः ७,३१,३, २२२५
 वाजवान् ३,५२,६; १४५१ । ६०,६; ३३४२
 वाज सनिता ४,१७,८, १४९५
 वाजसातमा (मौ) [इन्द्राक्षी] ३,१२,४; ३०३३
 वाजानां पतिः १,११,१; ७० । २९,२, ६९३, ४५, १०, २०६९ । ८,२४,१८, १८०७ । ९२,३०, २४२६
 वाजिन्-जी १,४,९; १२ । १७६,५; १०८९ । ६,२४,२; १९२९ । ८,५२,४, ५१८ । २,३८; १५३, १४, ६; २५९ । १६,३, ३८४ । २४,२२; १८११ । ३२,१८; १९७ । १०, १०३, ५; २६९५ । ८,९३, ३४; ३३४४, २, ३२, ३; ३३५१ ।
 वाजिनीवसुः ३,४२,५; १३८६ । [इन्द्रवायू] १,२,५; ३२११
 वाजेषु अविता ८,४६,१३, १८२९
 वामनीतिः ६ ४७,७; २१०५
 वार्याणां पति. १०,२४,३; २४९०
 वावशान ३,५१,८; १४४१ । ६,३२,२; २०१२
 वावशानः सोमम् ३,३५,९; १३२०
 वावृधानः १,१३१,७, १०२७ । २,११,४, २०; ११०४, २० । १९,१; ११९९ । ४,२१,१; १५४४ । ३,५१,१; १४३४ । ६,१९,११; १८८१ । ३८,५, १९८२ । ८,६,४०; २८२ ।

दै० [इन्द्रः] ४१

७६,३, ६३०
 वावृधान उक्थैः २,११,२; ११०२
 वावृधानः ओजसा ३,४५,५; १४०८
 वावृधानः तन्वा ३,३४,१, १३०१ । १०,५४,२, २६०९
 वावृधान दिवेदिवे ८,५३,१; ५२६
 वावृधानः शवसा १०,१२०,२, २७६५
 वावृधान. सहोभि. १०,११६,६; २७६०
 वावृधानः हविषा [इन्द्राविष्णू] ६,६९,६, ३३११
 वावृधेन्य. ८,२४,१८, १८०७
 वावृध्वान् ८,९५,७, २३४२ । ९८,८, २३७१
 वासयन्तः गव्या वस्त्रा इव [मरुतः] ८,१,१७; १०३
 वास्तोष्पतिः ८,१७,१४; ४०७
 विश्व आरित २,२१,३; १२१९
 विग्रः १,४,४, ७
 विघनिना (मौ) [इन्द्राक्षी] ६,६०,५, ३०६०
 वासवः अथ० ६,८२,१, २८९९
 विचक्षणः १,१०१,७; ८२३ । ४३२,२२; १६६६
 विचर्षणि. २,२२,३, १२२५ । ४१,१०,१२; १२३५ १२३७ । ६,४५,१६; २०७५ । ४६,३, २०९२ । ८,१७,७; ४०० । ३३,३, २१२ । ९८,१०; २३७३
 विचेता ६,२४,२; १९२९ । ७,२७,२; २२०४ । ८,४६, १४; १८३०
 विजानन् ३,३९,७, १३६१
 वितन्तसाययः ६,१८,६; १८६१ । ४५,१३; २०७२
 वितर्जराणः ६,४७,१७, २११५
 वित्वक्षणः ५,३४,६; १७३२
 विद् १०,१३८ ३; २७९४
 विदथस्य पतिः १,५७,२, ८०६
 विदथमानः ३,३४,१, १३०१
 विद्वसु ३,३४,१, १३०१ । ५,३९,१, १७६० । ८,६६,१, ६१३
 विद्वानः ६,२१,२, १२२; १८९८, १९०६ । १०,१११,१, २७२५ । वा० य० ३३,७९, २९७० । ऋ० १,१६५,९, १०; ३२५८, ३२५९
 विद्वधे [इन्द्राक्षौ] ४,३२,२३; ३३४८
 विद्वान् १,१०३,३; ८४१ । २,३०,२; १२२८ । ३,३५,४, १३१५ । ३,३५,८; १३१९ । ४४,२; १४०० । ४७,२, १४१५ । ५२,७; १४५२ । ४,३०,१७, १६२२ । ५,३०,३; १६८४ । ६,४७,८; २१०६ । ७ २८,१; २२०८ । ८,६३,३, ५८० । १०, ३२, ६; २५३५ । १४८, ३; २८११ । ५,८६,४; ३०४३

विद्वान् अपाति विश्वा नर्याणि ७,२०,४; २१६४
 विद्वन् विश्वानि नर्याणि ४,१६,६; १४७२
 विद्वान् विश्वस्य १०,१६०,२, २८२५
 विद्वन् विश्वानि ६,४२,१. १९९८
 विद्वेषण ८,१२, ८८
 विधत्ते नर्ता ८,७०,२; २३२२
 विषश्चित् १,४,४; ७ । ८,३३,१०, ३३० । ९८,१; २३६४
 विषाण. ८,६,२२, २७१
 विप्रः १,५१,१, ७४५ । १३०,६; १०१६ । ४,१९ १०;
 ५५३१ । ५,३१,७; १६९९ । ६ ३५,५; २०३० । ८,२,३६;
 ६५१ । ६ २८, २७० । ९८,१, २३६४ । १०,५०,७;
 ६६०७ । साम० ४४६, २९८९
 विप्रतमः ३,३१,७, १२६६
 विप्रतम. कवीनाम् १०,११२,९, २७४३
 विप्रवीरः १० ४७,४,५; २८४५, २८४६
 विषाधः १०,१३३,४, २७८१
 विभक्ता भागं वाजन् ३,४९,४, १४२७
 विभक्ता सङ्घानाम् ७,२६,४; २२०१
 विभक्ता रायः ४,१७,११; १४९८
 विभज्जतुः ४,१७,१३; १५००
 विभावसु ८,९३,२५, २४५४
 विभीषणः ५,३४,६; १७३२
 विभुः (भू-चतु०) ८,९६,११; २३५५
 विभूतिः ६,१७,४; १८४४ । ८४९,६, ४९० । ५०,६,५००
 मिश्राजन् ज्योतिषा ८९८,३, २३६६
 विभक्तः ३,४९,१, १४२४
 विमृध १०,१५२,२, २८१५
 विरागिन्-पत्नी ३,३६,४; १३२६ । ४,१७,२०; १५०७ ।
 २०,२; १५३४ । ६,२२,६, १९१२ । ३२,१, २०११ ।
 ४०,२; १९८९ । ८७६ ५, ६३२ । १०,११३,६, २७५० ।
 साम० ६२५, २९९९
 विविजिः ८,५०,६, ५००
 विजस्पतिः १०,१५२,२, २८१५
 विशां राजा ८,९५,३; २३३८
 विशः राजा अथर्व० ६,९८,२; २९०३
 विष्पतिः ३,४०,३, १३६६
 विश्रुतः १,६२,१, ८७२
 विश्व अभिभू जात जन्वम् ८,८९,६, २३८९
 विश्वः ८,३,१६; १७१
 विश्वकर्मा ८,९८,२; २३६५ । वा० य० १७,२३; २९३१

विश्वगूर्तः १,६१,९, ८६४ । ८,१,२२,१०८ । ७०,३, २३२३
 विश्वचर्षणिः १,९,३; ५० । ५,३८,१; १७५५ । ६,४४ ४,
 २०३९ । ८,५३,६; ५३० । १०,५०,४; २६०४
 विश्वजन्या १,१६९,८; १०५०
 विश्वजित् २,२१,१; १२१७
 विश्वतस्पृष्टः ८,९८,४; २३६७
 विश्वतः ८,९९,५, २३८०
 विश्वतोधीः ८,३४,६; ४३०
 विश्वदृष्टः अथर्व० ५,२३,६; २८७९
 विश्वदेवः ८,९८,२, २३६५
 विश्वमनाः १०,५५,८; २६२१
 विश्वमिन्व ७,२८,१; २२०८
 विश्वरूपः ३,३८ ४, १३४८
 विश्ववारः १,३०,१०; ७०८ । ८,४६,९; १८२५
 विश्ववेदाः ६,४७,१२; २११० । १०,१३१,६; २७७६
 विश्वव्यचाः ३,४६,४; १४१२
 विश्वशम्भूः वा० य० १७,२३; २९३१
 विश्वस्य गोपतिः ८,९२,७; ५७२
 विश्वस्य विद्वान् १०,१६०,२; २८२५
 विश्वानरः १०,५०,१, २६०१
 विश्वामूः १०,५०,१; २६०१
 विश्वायुः १,१२९,४; १००३ । ३,३१,१८, १२७७ ।
 ६,३३,४. २०१९ । ३४,५; २०२५ । ८,२,४, ११९
 विश्वासाहः ३,४७,५; १४१८ । ६,१९,११; १८८१ ।
 ४४,५; २०३९ । ८,९२,१; २३९७
 विश्वास्तु समस्तु हव्य ८,९०,१; २३९१
 विश्वौजा १०,५५,८; २६२१
 विष्णुण असुन्वतः ५,३४,६, १७३२
 विष्णुः १,६१,७, ८६२ । ८,१२,२७; ३९४ । ७७,१०;
 ६४९ । १००,१२; ९९९ । १०,१४८,३; २८११
 विहन्ता वसुषथित तमसः १,१७३,५; १०६०
 विहव्यः पुरुत्रा २,१८,७, ११९९
 वीरः १,३०,५; ७०३ । ६१,५; ८६० । ८१,२, ९१७ ।
 २,१३,११; ११४७ । १४,१,११५० । ३,५१,४, १४३७ ।
 ४,२४,१; १५७७ । २५,६; १५९३ । ५,३०,१; १६८२ ।
 ६,२१,१, १८९७ । २१,६, १९०२ । ३२,१, २०११ ।
 ४४,१४; २०४९ । २४,२, १९२९ । ४५,८, १३, २६;
 २०६७, ७२, ८५ । ४७,१६, २११४ । ७ २०,२, २१५२ ।
 २९,२, २२१४ । ८,२, २१, २३, २५; १३६, १३८, १४० ।
 ३२,२४, २०३ । ३३,१६; २२५ । ४६,१४, १८३० ।

५०,६; ५०० । १०,१०३,७; २६९७ । १११,१; २७२५ ।
 ११३,४; २७४८ । ८,४०,९; ३१०२
 वीरकः ८,९१,२; १७८४
 वीरतमः नृणाम् ३,५२,८; १४५३
 वीरतरः ८,२४,१५; १८१४
 वीरयु ८,९२,१८; २४२४
 वीरवत्-वान् १०,४७,५; २८४६
 वीरेण्यः १०,१०४,१०; २७१२
 वीर्याणि करिष्यन् ८,६२,३; ५६८ ।
 वीर्यैः साकं वृद्धः २,२२,३; १२२५
 वीर्यितः २,२१,४; १२२०
 वीर्याणि विश्वानि यस्मिन् अभि संभृता[नि] २,१६,२; ११७३
 वृजनः १,१०१,११; ८२७
 वृत्तचयः २,२१,३; १२१९
 वृत्तस्वाद ३,४५,२; १४०५
 वृत्तज्ञः अथ ४,२४,१; २८६७
 वृत्तहन्ता ४,२१,१०; १५५३ । १७,८; १४९५ । ८,२;
 ३२,३६; १४७,१५१
 वृत्ततुरा [हम्प्रावरणौ] ६,६८,२; ३१६२
 वृत्तहन्-हा १,१६,८; ८५ । ८१,१; २१६ । ८४,३; ९३९ ।
 २,१२,७; १२१४ । ३,४०,८; १३७१ । ३०,५; १२४२ ।
 ३१,११,१४,१८,२१; १२७०, ७३, ७७, ८० । ४१,४;
 १३७६ । ४७,२; १४१५ । ५२,७; १४५२ । ४,३०,१,७;
 १६०९,१५ । ३२, १, १९, २१; १६४५, १६६३, ६५ ।
 ५,३८,४; १७५८ । ४०,४; १७६८ । ६,४५,५, २०६४ ।
 ४७,६; २०९४ । ७,३१,६; २२२८ । ३२,६; २२४० ।
 ८,१,१४, १०० । २,२६, १४१ । ४,११; २३९ । ६,४०;
 २८२ । १३,१५, ३३५ । १७,९; ४०२ । २४,८, १७९७ ।
 ३२,११; १९० । ३३,१,१४, २१०, २२३ । ३७,१-६;
 १७७६-१७८१ । ४५,४, २५, ४४६, ४६७ । ४६,१३ १८२९ ।
 ५४,५; ५३५ । ६१,१५, ५६२ । ६२,११; ५७६ । ६४,९;
 ५९७ । ६६,३ ११; ६१५, ६२३ । ७०,१; २३२१ ।
 ७७,३; ६४२ । ७८,७, ६५७ । ८२,१, ६७९ । ८९,३;
 २३८६ । ९०,१; २३९१ । ९२,२४; २४२० । ९३,२;
 ४,१५, १८, २०, ३३; २४३१, ३३, ४४, ४७, ४९, ६२ ।
 ९६,१२-२१; २३६१-६३ । ९७,४, ९७९ । १०,२३,२;
 २४८२ । ७४,६, २६३९ । १०३,१०; २७०० । १११,६;
 २७३० । १३३,१, २७७८ । १३८,५, २७९६ । १५२,२, ३;
 २८१५-१६ । १५३,३, २८२२ । अथ ६, ७५, २; २८७७ ।
 ८२,१; २८९९ । ६,९८,३; २९०४ । १९,१५,३;

२९१६ । वा० य० २०, ७५, २९५९ । २०, ९०; २९६३ ।
 २६,५, २९६५ । साम० ३२७, २९८३ । [हम्प्रावो]
 १, १०८, ३; ३०१० । ३, १२, ४; ३०३३ । ६, ६०, ३;
 ३०५८ । ७ ९३, १, ४; ३०७१, ३०७४ । ७, ९४, ११;
 ३०८९ । ८, ३८ २; ३०९२ । अथर्व० ७, १३०, २; ३१३०
 वृत्रहा भरेभरे १, १००, २; ९५८
 वृत्रहा वृत्रहत्वेन ८, २४, २; १७९१
 वृत्रहन्तमः ५, ३५, ६; १७४१ । ४०, १-३, १७६५ ३७ ।
 साम० ४४६; २९८९
 वृत्रा जिघ्रमानः ३, ३०, ४; १२४१
 वृत्राणि मन् ३, ३०, २२; १२५९ । ५०, ५; १४३३ ।
 द्वादशकृत् पुनरुक्त मन्त्रः १०, ८९, १८; २६७९ ।
 १०४, ११, २७१३
 वृत्राणां घनः ८, ९६, १८; २३६०
 वृथाषाद् १, ६३, ४, ८८८
 वृद्धः ३, ३२, ७, १२८८ । ४, १२, १, १५२२ । ६, २४, ७; १९३४
 वृद्धमहाः ६, २०, ३; १८८६ । ३७, ५; १९७७
 वृद्धायुः १, १०, १२, ६९
 वृधः ६, ३४, ५, २०२५ । ७, ३२, २५; २२५९
 वृधः यज्वनः ८, ३३, १८, १९७
 वृधः मनोः ८, ९८, ६; २३६९
 वृधः प्र अकृतुभ्यः अहभ्यः अन्तरिक्षात् १०, ८३, ११; २६७०
 वृधन्ता (नौ) अनुयून् [हम्प्रावो] ५, ८६, ५, ३०४४
 वृधः रायः ७, ३०, १; २२१८
 वृध सुन्वतः ५, ३४, ६; १७३२ । ८, ९८, ५, २३६८
 वृधानः १, ५६, ६, ८०२ । १०, ५५, ८, २६२१
 वृधन्-वा १, ७, ६, ८; ३३, ३१ । १६, १; ७८ । ५४, २;
 ७८७ । ५५, ४; ८०० । १००, १, १७, ९५७, ९७३ । १०१, १;
 ८१७ । १०३, ६; ८४४ । १०४, ७, ८५३ । १३१, ५, ६;
 १०२५-२६ । १३२, ६; १०४१ । १७५, १; १०७९ ।
 १७६, २, १०८६ । २, ११, ९, १०, ११०९-१० । १४, १;
 ११५० । १७, ८; ११८८ । ३, ३०, २; १२३९ । ४, १६, ३, २०,
 १४६९, ८६ । १७, १६, १५०३ । २१, ७, १५५० । २२, २, ६;
 १५५६, १५६० । २४, ८, १५८४ । ४, ३०, १०; ३३४६ ।
 ५, ३१, ५, १६९७ । ३३, २; १७१८ । ३५, ४, १७३९ ।
 ३६ ५, ५, ५, ५, १७४८-४८-४८-४८; ५ ४०, १, २, ३, ३, ३;
 १७६५-६७; ६, २२, ८; १९१४ । ३३, १; २०१६ ।
 ४४, २०, २१; २०५५-५६ । ७, १९, ६; २१४५ । २०, ५;
 २१५५ । २३, ६; २१८५ । ३१, ४; २२२६ । ८, १, १;
 ८७ । ४, ७, ८, २३५-३६ । ६, ४०, २८२ । १३, ३१-३३;

२५१-५३ । १५, १०, ३७८ । ३३, १०, ११, १२, १८;
३१९, २०, २१, २७ । ६१ ११; ५५८ । ६३, ९; ५८६ ।
६४, ८; ५९६ । ७०, ६; २३२६ । ९२, १५ २३; २४११,
२४१९ । ९३, ७, १९, २०, २४३६, २४४८, २४४९ ।
[इन्द्रावरुणौ] ६ ६८, ११; ३१७१ । ७, ८२, २; ३१७३ ।
[मरुतः] १, १६५, १; ३२५० । [इन्द्रासोमौ] अथर्वं
८, ४, १; ३२७८ । १, १६५, ११, ३२६० । १०, ४३, ६;
२५६२ । ४९, ९, २५९८ । ८९, ९; २६७० । १०, १२३, २, ९;
२६९३, ९२ । ११६, ४; २७५८ । १५३, २; २८२० ।
१५२, २, २८१५ । [इन्द्राग्नी] १, १०८, ३, ३०२० । ७-१२;
३०१४-१९ । अथ ७, ११०, २; ३१३२

वृष इति परावति अर्वावति श्रुतः ८, ३३, १०, २१९
वृषकर्मा १, ६३ ४, ८८८ । १३०, १०; १०२०
वृषक्रतुः ५, ३६, ५; १७४८ । ६, ४५, १६; २०७५
वृषजुतिः ५, ३५, ३, १७३८ । ८, ३३, १०; २१९
वृषणवस् [इन्द्रावृषणवती] ४, ५०, १०; ३३२३ । अथर्वं
२०, १३, १; ३३२९
वृषणवान् १, १७३, ५, १०६०
वृषन्तम १, १०, १०, १०, ६७, ६७ । १००, २; ९५८ ।
५, ३५, ३, १७३८ । ६, ५७ ४, ३३३३
वृषपर्वा ३, ३, २, १३२४
वृषप्रभर्मा ५, ३२, ४, १७०८
वृषमना १, ६३ ४, ८८८ । ४, २२, ६; १५६० ।
वृषरथः ५, ३६, ५; १७४८

वृषाकपिः १०, ८६, १-२३, २६४०-२६६२

वृषायमाण १, ३२ ३, ७१७

वृषिणः १, १०, २, ५९

वृष्यावान् ६, २२, १; १९०७

वृष्येभिः समोकाः १, १००, १; ९५७

वृषा दिव ६, ४४, २१, २०५६

वृषा वृषभिः १, १००, ४, ९६०

वृषा सिन्धूनाम् ६, ४४, २१; २०५६

वृषभः १, ९, ४, ५१ । ३३, १०; ७३९ । ५१, १५; ७५९ ।

५५, २ ३; ७८७-८८ । १०३ ६, ८४४ । १७७, ३; १०९३ ।

२, १२, १२; ११३३ । १६, ४, ५ ५, ६; ११७५ ११७६, ७६

७७ । २२, ४, १२२० । ३, ३०, ३ ९, २१; १२४०, ४६, ५८

३१, १८, १२७७ । ३५, ३; १३१४ । ३६, ५, १३२७ ।

३८, ५, ७; १३४९, ५१ । ४०, १, १३६४ । ४३ ६, १३९६ ।

४६, १, ५, १४०९, १३ । ४७, १, ५; १४१४, १४१८ । ४८, १, १

१४६९ । ५० १; १४२९ । ४, १६, २०; १४८१ । १७, ८; १४९५ ।

१८ १०; १५१८ । २४, ५ १५८१ । ३०, १९, २२; १६२४, २७ ।
५, ३०, ११; १६९२ । ३२, ६; १७१० । ४०, ४; १७६८ ।
६, १९, ११; १८८१ । २२, १, १९०७ । ३२, ४; २०१४ ।
४४, ११, २०-२१; २०४६, २०५५-५६ । ४७, २१; २११८ ।
७, २६, ५; २२०२ । ८, १, २; ८८ । २१, ४, ११; ४१२, ४१९ ।
४५, २२ ३८; ४६४, ४८० । ६१, २; ५४९ । ६४ ७, ५९५ ।
९३, १, ७, २०, २४३०, ३६, ४९ । ९६, २, ६; २३४६, २३५० ।
१०, ३८, ५; २५४५ । ४३, ३, २५५९ । ४४, ३, २५७० ।
११२, ७, २७४१ । १३१, ३, २७७५ । अथर्वं ४, २४, ३;
२८६९ । ६, ९८, ३; २९०४ । सामं ३२७; २९८३ । ऋ०
१, १६५, ७; ३२५६ । १, १७१, ५; ३२६७

वृषभः क्षितीनाम् ७, ९८ १; २२७९

वृषभः चर्षणीनाम् ६, १८, १; १८५६ । ८, ९६, ४, १८;
२३४८, २३६०

वृषभः जनानाम् १, १७७, १, १०९१

वृषभः पृथिव्याः ६, ४४, २१; २०५६

वृषभः मतीनाम् ६, १७, २, १८४२ । १०, १८०, ३; २८४१

वृषभः स्तियानाम् । ६, ४४, २१; २०५६

वृषभाणां ज्येष्ठ ८, ५३ १; ५२५

वृषभाज्ञः २, १६, ५; ११७६

वेद विश्वा जनिमा ८ ४६, १२, १८२८

वेदिष्ठः ८, २ २४; १३९

वेदीवस्-वान् गौरात् अवपानम् ७, ९८, १; २२७९

वेधाः २, २१, २, १२१८ । ६, २२, ११; १९१७ । १०, १४४, १;
२७९८

वेधाः मरुताम् १, १६९, १; १०४३

वेनः ८, ६३, १; ५७८

व्रतपा देवानाम् १०, ३२, ६; २५३५

शंसः ६, २४, २, १९२९

शंस्यः १०, ४७ २; २०४३

शस्यानां उक्थ्य [वरुणः] १, १७ ५ ३१३८

शक्तीवस्-वान् ५, ३१ ६; १६९८

शक्र १, १०, ५ ६; ६२-६३ । ५५ २, ७८७ । ६२, ४;

८७५ । १०४, ८; ८५४ । १७७, ४; १०९४ । ३, ३५, १०;

१३२१ । ३७, ११, १३४४ । ४, १६, ६; १४७२ । ५, ३४, ३;

१७२९ । ६, ३५, ५; २०३० । ४७, ११; २१०९ । ७, २०, ९;

२१५९ । ७ १०४, २०-२१, २२८८-८९ । ८, १, १९; १०५ ।

२, २३; १३८ । १२, १७, ३०४ । १३, १५; ३३५ । ३२, १२;

१९१ । ४५, १०; ४५२ । ५०, १; ४९५ । ५२, १; ५१५

द्वि, ३, द्वि५ । द्वि, १४; २३२६ । ७८, ५, द्वि५ । ९१, १, १७८३ । ९२, ११, २६; २४०७, २२ । ९३, १८; २२४७ । ९७, ४, १४; ९७९, ८९ । १०, ४३, ६; २५६२ । १०४, १०; २७१२ । १३४, ३; २७८७ । १६७, २; २८३० । अथर्व० २, ५, ४, २८६६ । ८, ४, २१, ३२९८ । साम० २०९; २९७७
 शचिष्ठः ४, २०, ९; १५४१
 शचीपतिः ४, ३०, १७, १६२२ । ३१, ७, १८३६ । द्वि, ४५, ९, २०६८ । ८, १४, २; ३५५ । १५, २३; ३८१ । ३७, १-६; १७७६ १७८१ । द्वि, ५; ५५२ । द्वि, ८; ५७३ । १०, २४, २ २४८९ । अथर्व० द्वि, ८२, ३; २९०१
 शचीभिः महान् महीभिः ८, १६, ७; ३८८ । २, ३२, १४७
 शचीवस्-वान् १, २९, २; द्वि, ३ । ५४, ३; ७७७ । ५५, २; ७८७ । द्वि, १२; ८८३ । ३, ५३, २; १४५४ । ४, २२, २, १५५६ । द्वि, २४, ४, १९३१ । ३१, ४, २००९ । ८, २, १५, २८, ३९; १३०, १४३, १५४ । द्वि, २; २२९२ । १०, ४४, ११; २६०० । १०४, ४; २७०६
 शतक्रतुः १, ४, ८-९; ११-१२ । ५, ८; २१ । १०, १; ५८ । १६, ९; ८६ । ३०, १, ६, १५; द्वि, ७, ७०४, १३ । ५१, २; ७४६ । ५५, ६; ७९१ । ८२, ५; ९२९ । २, १६, ८, ११७९ । २२, ४; १२२६ । ३, ३७, २, ३, ६ ८९; १३३५-३६, ३९, ४१ ४२ । ४२, ५; १३८६ । ५१, २; १४३५ । ४, ३०, १६; १६२ । ५, ३५, ५; १७४० । ३८, १, ५; ७५५, ५९ । द्वि, ४१, ५; १९७७ । ४५, २५; २०८४ । ७, ३१, ३; २२२५ । ८, १, ११; ६७ । ३२, ११; १९० । ३३, ११, १४, २२०, २३ । ३६, १-६; १७६९-७४ । ५२, ४, ६, ५१८, ५२० । ५३, २, ५२६ । ५४, ८; ५३८ । द्वि, ९, १०, १८; ५५६, ५७, ६५ । ७६, ७; ६३४ । ७७, १; ६४० । ८०, १; ६६१ । ८९, ३; २३८६ । ९१, ७; १७८९ । ९२, १, १२, १३, १६; २३९७, २४०८-९, १२ । ९३ २७, २८, २९, ३०; २४५६-५७, ५८, ६१ । ९८, १०, ११, १२ २३७३-७४-७५ । ९९, ८; २३८३ । १० ३३, ३; २५४० । ११२, ६; २७४० । १३४ ४, २७८८ । अथर्व० द्वि, ८२, १; २८९९ । वा०थ० ३, ४९; २९१९ । २०, ७५, २९५९ । २६, ४५, २९६४-६५
 शतनीथः १, १००, १२, ९६८
 शतमन्युः १० १०३, ७, २६९७
 शतमूर्तिः १, १०२, ६; ८३३ । १३०, ८; १०१८ । ७, २१, ८, २१६८ । ८, २, २२, २६, १३७, १४१ । ९९, ८, २३८३
 शतामघः ८, १, ५; ९१ । ३३, ५ २१४ । ३४, ७, ४३१ । ४६, ३; १८१९
 शतावान् द्वि ४७, ९; २१०७

शतिन्-ती १०, ४७, ५; २८४६
 शत्रुः १०, १२०, २ २७६५
 शत्रुहः अथर्व० द्वि, ९८, ३ २९०४
 शन्तमः ८, ३३, १५, २२४ । ५३, ५ ५२९
 शम्भविष्टः १, १७१, ३, ३२६५
 शम्भू [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, ७ ३१५२
 शम्भुवा (वौ) [इन्द्राक्षी] द्वि, ६०, ७, ३०६२ । १४, ३१६९
 शरः ८, ७०, १३, १४ २३३३, २३३४
 शरव्यः [ह्युः] वा०थ० १७, ४५; २९३४
 शरुमान् [सोमः] १०, ८९, ५ ३२७६
 शर्धनीतिः ३, ३४, ३; १३०३
 शवस्-सा द्वि, २९, ३; १९६४ । ७, ३०, १, २२१८ । ८, १, २१; १०७ । १०, ७३, ८, २६३०
 शवसः पतिः १, ११, २; ७१ । १३१, ४, १०२४ । ३, ४१, ५; १३७७ । ५, ३५ ५; १७४० । द्वि, ४४, ४; २०३९ । ८, ६, २१; २६३ । ४५, २०, ४६२ । ९०, २, ५; २३९२, ९५ । ९२, १४; २४१० । ९७, ६; ९८१ । [इन्द्रवायू] ४, ४७ ३; ३२२८
 शवसः सूनुः १ द्वि, ९; ८८० । ४, २४, १, १५७७
 शवसानः १, ६२, १, २, १३; ८७२, ७३, ८४ । द्वि, ३७, ३; १९७५ । ८, २, २२; १३७ । ४६, ६; १८२२ । द्वि, ८; २२९८ । ७, ९३, २, ३०७२
 शवसा चक्रानः ७, २७, १, २२०३
 शवसा योद्धा ८, ८८, ४; ८९७
 शवसा श्रुतः ८, २४, २; १७९१
 शवसावान् १, ६२, ११, ८८२
 शवसिन् ७, २८, २; २२०९
 शवसी [इन्द्रमाता] ८ ४५, ५, ४४७ । ७७, २; ६६१
 शविष्ट १, ८०, १, ९०० । ८४, १, १९; ९३७, ९५५ । ५, २९, १३, १५; १६७९, ८१ । ३५, ८, १७४३ । ३८, २, १७५६ । ८, ४०, २, ३१०२ । [इन्द्रावरुणौ] द्वि, ६८, २; ३१६२ । द्वि, २२, २७, १९०८, १३ । २६, ७; १९४३ । ३५, ३; २०२८ । ७, २१, ५; २१६५ । ८, ६, ३१; २७३ । १२, १, २८८ । १३, १२, ३३२ । ३३, १३; २२२ । ४६, ९ १९, १८२५, ३५ । द्वि, १; ५४८ । द्वि, ४; ५६९ । द्वि, १२, १४; द्वि, ४, ६८१ । २२९१ । ७०, ६, १२; २३२६, ३२ । ९०, ४, २३९४ । ९७, १४, ९८९ । १० ११, २७५५ । १, १६५, ७, ३२५६ । अथ० ७, ९७
 शश्वतां साधारणः ४, ३२, १३; १६५७ । ८
 शश्वतीनां पतिः ८, ९५, ३, २३३८
 शश्वमानः १०, ८९, ९; २६८८

शाकिन्-की १,५१,८; ७५२। ५५,२; ७८७। ३,५१,२;
 १४३५। ६,४५,२२, २०८१। ८,४६,१४, १८३०
 शाचिगुः ८,१७,१२, ४०५
 शाचिपूजन ८,१७,१२, ४०५
 शाशदानः १,३३,१३; ७४२
 शासः ३,४७,५; १४१८। ६,१९,११, -२८८१
 शासत दिवः अमुष्य ८,३४,१-१५; ४२५-४३९
 शिक्षानरः १,५४,२; ७७६। ४,२०,८; १५४०
 शिप्रवान् ६,१७,२, १८२२
 शिमिन्-मी १,२९,२; ६९३। ८१,४, ९१९। ८,३२,७;
 २१६। ६१,४; ५५१। ९२,४, २४४०
 शिमिणीवान् १०,१०५,५; २७१८
 शिमीवान् १,१००,१३; ९६९। [सोमः] १०,८९,५, ३२७६
 शिवः २,२०,३, १२१०। ६,४५,१७; २०७६। ८,६३,४;
 ५८१। ९३,३, २४३२
 शिवतमः ८,९६,१०; २३५४
 शिशगः (यम्-द्वि०) १०,४२,३; २५४८
 शिशानः १०,१०३,१, २६९२
 शिशान वज्रम् ८,७६,९; ६३६। १०,१५३,४; २८२२
 शीर्ष्णाशीर्ष्णोपवाच्यः १,१३२,२; १०२९
 शुचिः ८,१३,१९; ३३९। १०,४३,९; २५६५
 शुचिपा [इन्द्रवायू] ७,९१,४, ३२३७
 शुद्ध ८,९५,७, ८,९; २३४२ ४३-४४
 शुभ्युः १०,४३,१, २५५७
 शुनः ३, ३०, २२; १२५९। द्वादशकृत्वः पुनरुक्तः
 ३,५०,५; १४३३। १० ८९,१८; २६७९। १० ४,११;
 २७१३। १६०,५; २८२८
 शुभस्पती [इन्द्रावरुणौ] ८,५९,३; ३२०४। ५; ३२०६
 शुभ्रः २,११,४; ११०४
 शुभ्रमः १,१००,२; ९५८
 शुभ्रम ज्येष्ठ ते १०,१८०,१, २८३९
 शुभ्रिन्-ष्मी १,१७३,१२; १०६७। ४,२२,१, ४, १५५५,
 ५८। ५,४०,४; १७६८। ६,२५,१; १९३८। ७,३०,१;
 २२१८। ८,१३,३; ३२३। ९८,१२, २३७५। १०,४३,३;
 २५५९। [इन्द्रवायू] ४ ४७,३, ३२२८
 शुभ्रिन्तमः शुभ्रिभिः १,१३३,६, १०३९
 शूरः १,११,६; ७५। २९,४, ६९५। ३२,१२, ७२६।
 ६३,४, ८८८। ८१,८, ९२३। १०३,६; ८४४। १२९,
 ३,५, १००२,४। १३१,७; १०२७। १३२,५,६, १०३२,
 ३३। १३३,६,६; १०३९,३९। १७३,५; १०६०। १७६,

७, १०६२। १७४,९; १०७७। १७५,३, १०८१। १७८,
 ३; १०९८। २,११,२,३,५,११,१७,१८, ११०२,३,५,
 ११,१७,१८। १७,२; ११८२। १८,७, ११९६। १९,८;
 १२०६। ३० १०; १२३४। ३,३०,११, १२४८।
 ४७,२; १४१५। ५१,७,१२, १४३५,५२। ४,१६,२,७;
 १४६८, ७३। २१,१; १५५४। २२, ५, १५५९।
 ३२,२१, १६६५। ५,३५,२; १७३७। ३६,२, १७४५।
 ३८,५, १७५९। ६,१९,६,१३, १८७६, ८३। २०,१२,
 १८९५। २४,३; १९३०। २६,५; १९५१। ३३,३,४,
 २०१८-१९। ३५,५, २०३०। ४४,१७; २०५२।
 ४७,६,११; २१०४,९। ७,१८,११, २१२९। १९,१०,
 ११; २१४९-५०। २०,३; २१५३। २१,३; २१६३।
 २२,७; २१७७। २३,५; २१८४। २५,४,५; २१९५,
 ९६। २७,१; २२०३। ३०,१,४, २२१८,२१। ३२,
 ११,२२,२७, २२४५,५६,६१। ८,१,१४, १००। २,९,
 २५ ३६, १२४,४०,५१। २१,८; ४१६। २४,२,८;
 ७९१,९७। ३२,५; १८४। ३४,१४, ४३८। ४५,३,३४,
 ४४५,७६। ४६,२१, १८२७। ४२,३; ४८७। ५०,९;
 ५०३। ६१,५,१८, ५५२,६५। ६२,११; ५७६। ६३,
 ११; ५८८। ६६,५, ६१७। ७०,९, २३२९। ७८,१,४;
 ६५१,५४; ८१,३; ६७२। ९२,२८; २४२४। ९८८;
 २३७१। ९७,१५; ९९०। १०,२०,९,१०,११,१२,१५;
 २४७४,७५,७६,७७८०। ४२,२,४, २५४७,४९। ५०,२;
 २६०२। ५५,८; २६२१। ७३,४; २६२६। १०५,४,६,
 २७१७,१२। ११२,१; २७३५। १३१,१, २७७३।
 १४८,२,४,५, २८१० १२,१३। ४७ १, २८४२। अथर्व०
 ७ ३११; २९०५। २,५,१; २८६३। साम० १९६,
 २९७६। २०९, २९७७। ९५२, २९९७। ऋ० ४,४१,
 ७; ३१५२

शूरः [वरुणः] ७ ८४ ४, ३१९५। [विष्णुः] १,१५५,१; ३३०३
 शूरसाता [इन्द्राग्नी] ७,९३,५, ३०७५
 शश्वत्-वांसम् (द्वि०) ६,१९,२; १८७२। ७,२३,२; ३०७२
 शश्वानः ७,२० २; २१५२। १०,४७,४, २८४५
 शृगवृषः नपात् ८,१७ १३, ४०६
 शृण-न् (स्तुतिम्) ३,३०,२२; १२५९। ३१,२२, १२८१।
 १० १०४ ११; २७१३
 श्वथनः २,२१ ४, १२२०
 श्वश्रु ऊर्ध्वथा दोधुवत् १०,२३,९, २४८१
 श्वदधानः भोजः १,१०३,३; ८४१
 श्ववयन् २,१३,१२; ११४८

अवस्कामः ८, २, ३८; १५३
 अवस्यन् १, १७७, १ १०९१
 अवस्युः १, ५६, ६; ८०२ । अथ० ६, ९८ २, २९०३
 अवाच्या (ययौ) वाजेषु [इन्द्राग्नी] ५, ८६, २, ३०४१
 अवोजित् पृतनासु ८, ३२, १४; १९३
 आवयत्सखा ८, ४६, १२; १८२८
 अितः इमश्रुषु ८, ३३, ६; २१५
 अियः वसानः ३, ३८, ४; १३४८
 अियः विश्वाः यस्मिन् अघि ८, ९२, २०; २४१६
 श्रुतः १, ५४, ९, ७८३ । ५६, ८; ८०४ । २, २०, ६, १२१३ ।
 ३, ४६, १, १४०९ । ४, ३०, २, १६१० । ८, २, १३; १२८ ।
 १३, १०, ३३० । ५०, १, ४९५ । ६२, ९ ५७४ । ९६, १;
 २३५५ । १०, २२, १२, २४६६-६७ । ३८, ४, २५४४ ।
 साम० ४४५; २९८८
 श्रुतऋषिः १०, ४७, ३; २८४४
 श्रुतः गीर्भिः ८, २, २७, १४२
 श्रुतः पुरुत्रा ४, ३२, २१; १६६५
 श्रुतः शवसा ८, २४, २, १७९१
 श्रुता [त] मघः ८, ९३, १, २४३०
 श्रुत्कर्णः ७, ३२, ५; २२३९ । ८, ४५, १७, ४५९
 श्रुत्यः ८, ४६, १४, १८३०
 श्रुत्यं नाम विअत् ५, ३०, ४; १६८६
 श्रेष्ठा [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, २; ३१६२
 श्रोता ६, २३, ४; १९२१ । २४, २; १९२९
 श्लोकी ८, ९३, ८; २४३७
 श्वेनौ [इन्द्राग्नी] ८, ४०, ८; ३१०८
 षाड् १, ६३, ३; ८८७
 षोडशी-नक्षिन् वा०य० २६, १०; २९६६
 संरराणः ८, ३२, ८, १८७
 संवननः ८, १, २, ८८
 संविद्यान ओजसा शवोभिः १, १३०, ४; १०१४
 संसदः सप्त यस्मिन् रणन्ति ८, ९२, २०, २४१६
 संस्पृष्टजित् १०, १०३, ३; २६९४
 संस्कृतः रणाय ८, ३३, ९; २१८
 संस्त्रष्टा १०, १०३, ३; २६९४
 सक्तुः १०, १४८, ४, २८१२
 सक्षणिः ८ ७०, ८; २३२८
 सक्षणिः अभिमातीः ८, २४, २६, १८१५
 सखा १, ३०, १०, ११, १२; ७०८-९-१० । ५४, २; ७७६ ।

१२९ ४; १००३ । २, २०, ३; १२१० । ३, ३१, ८, १२६७ ।
 ३९, ५; १३५९ । ४३, ४; १३९४ । ५१, ६; १४३९ ।
 ४, १७, १८, १५०५ । ४, ३१, १, १६३० । ६, ३३, ४, २०१९ ।
 ४५, १, ७, १७, १९. २०६० ६६, ७६, ७८ । ७, १२, १०.
 २१४९ । ८, २, २७, ४०; १४२, १५५ । १३, ३; ३२३ ।
 ६१, ११, ५५८ । ९३, ३. २०३२ । १००, १२; ९९९ ।
 १०, ४२, २, ११; २५४७, ५६ । ४३, ११; २५६७ । ४४, ११;
 २५७८ । ११२ १०; २७४४ । ६, ६०, १४; ३०६९
 सखायः [मरुतः] १, १६५, ११, १३; ३२६०, ३२६२
 सखा मे ८, १००, २. ९९२
 सखा अवृक ४, १६, १८; १४८४
 सखा वृत्तुः १०, २७, ६, २४९६
 सखा सुनीनाम् ८, १७, १४; ४०७
 सखा सखिभि १, ८४, ४; ९६०
 सखा सुतानाम् साम० २२६, २९७९
 सखा सुन्वतः १, ४, १०; १३ । ८, ३२, १३; १९२
 सखा सोम्यानाम् ४, १७, १७; १५०४
 सखीयन् अंगिरोभिः ३, ३१ ७, १२६६
 सखीयताम् अविता ४, १७, १८; १५०५
 संक्रन्दन १०, १०३, १, २, २६९२-९३
 संगमनः वसुनाम् [अग्निः] वा० य० १२, ६६, २९२९
 सचेता १, ६१, १०, ८६५
 साजित्वाना (नौ) । इन्द्राग्नी ३, १२, ४; ३०३३
 संचकानः ५, ३०, ७; १६८८
 सञ्जगमानः [मरुद्गणः] १, ६, ७; ३२४६
 सत् (सन्) ८, ४५, १७ ४५९
 सत सत. अतिमानम् ३, ३१, ८; १२६७
 सतीनमन्युः १०, ११२ ८; २७४२
 सतीनसखा १, १००, १; ९५७
 सत्पतिः १, ११, १, ७० । ५४, ६, ७८० । १००, ६ ९६२ ।
 १७४, १; १०६९ । ३, ३४, ७; १३०७ । ४०, ४; १३६७ ।
 ५, ३२, ११; १७१५ । ६, २६, २, १९४४ । ४६, १, ३;
 २०९०, ९२ । ८, २, ३८, १५३ । १२, ८, १८, २९५, ३०५ ।
 १३, १२, ३३२ । २१, १०, ४१८ । ३६, १-६; १७६७-७४ ।
 ५३, ६; ५३० । ६१, १७; ५६४ । ६८, १, २९९१ । ६९ ४;
 २३०७ । ९३, ५; २४३४ । १०, ८, ९; २३६५ । ४३, ९;
 २५६५ । ५०, २, २६०२ । वा०य० ३३, २७; २९६८ । ऋ०
 ६, ६०, ६; ३०६१ । १, १६५, ३; ३२५२
 सत्यः १, २९, १; ६९२ । ६३, ३; ८८७ । १७४, १, १०६९ ।
 २, १२, १५, ११३६ । १५, १; ११६२ । २२, १-३, १२२३-२५ ।

४, २१, १०; १५५३ । ६, २२, १; १९०७ । ४५, १०,
 २०६९ । ८२, ३६; १५१ । १६, ८, ३८९ । ९०, २, ४,
 २३९२, ९४ । ९२, १८; २४१४ । ९८, ५, २३६८ । १०, ४७,
 ४, २८४५ । ८, ४०, १०, ३११०
 सत्यताता १०, १११, ४; २७२८
 सत्यधर्मा [अग्नि] वा० य० १२, ६६; २९२९
 सत्यमद्रा ८, २, ३७; १५२
 सत्ययोनिः ४, १९, २; १५२३
 सत्यराधस् धाः १, १०१, ८, ८२४ । ४, २४, २, १५७८ ।
 २९, १, १६०४ । ७, ३१, २; २२२४ । १०, २९, ७; २५२१ ।
 ४९, ११, २६००
 सत्यशुष्मः १, ५१, १५; ७५९ । ५८, १, ८११ । १०३, ६;
 ८४२ । ३, ३०, २१, १२५८ । १०, ४४, ३, २५७० । ११२,
 १०; २७४४
 सत्यसत्त्वन् ६, ३१, ५, २०१०
 सत्यस्य सुतुः ८, ६९, ४; २३०७
 सन्नाकरः १, १७८, ४, १०९९
 सन्नाजित् २, २१, १; १२१७ । ८, ९८, ४; २३६७ । साम०
 २३१; २९८०
 सन्नादावन्-वा १, ७, ६, ३३
 सन्नासाह-वाट् २, २१, २-३; १२१८-१९ । ३, ३४, ८; १३०८ ।
 ५१, ३; १४३६ । ७, २०, ३, २१५३ । ८, ९२, ७, २४०३
 सन्नाहन्-हा । ४, १७, ८; १४९५ । ६, ४६, ३, २०९९
 सत्त्वन्-त्वा १, १७३, ५; १०६० । ६, १८, २; १८५७ ।
 २२, १; १९०७ । २९, ६; १९६७ । ३७, ५, १९७७ । ४५,
 २२; २०८१ । ७, २०, ५; २१५५ । ८, १६, ८; ३८९ ।
 ४५, २१; ४६३ । ८, ४०, १०-११, ३११०-३१११
 सत्त्वनां केतुः ८, ९६, ४, २३४८
 सदस्पती [इन्द्राग्नी] १, २१, ५, ३००६
 सदावृधः ४, ३१, १; १६३० । ५, ३६, ३, १७४६ । ८, १३,
 १८; ३३८ । ६८, ५, २२९५ । ७०, ३; २३२३
 सदिनः २, १९, ६, १२०४
 सद्यो जज्ञानः हव्यः ८, ९६, २१; २३६३
 सद्यो जातः ८, ७७, ८; ६४७
 सद्यो ह जातः ३, ४८, १; १४१९
 सधमाद्यः ८, ३, १, १५६ । ५४, ५; ५३५ । ९७, ७; २८२
 सधवीरः ६, २६, ७, १९५३
 सधस्तुनी [इन्द्राग्नी] ८, ३८, ४; ३०९४
 सनजा १०, १११, ३; २७२७
 सनद्वाजः १०, ४७, ४; २८४५

सनश्रुतः ३, ५२, ४, १४४२ । ८, ९२, २, २३९८ । १०, २३, ३;
 २४८३
 सनात् २, १६, १; ११७२ । ८, २, ३१, १४६ । २१, १३; ४२१
 सनात् अमृक्तः ८, २, ३१; १४६
 सनात् पुरुवसुः ७, ३२, २४; २२५८
 सनिभिन्नस्य ८, १२, १२; २९९
 सनितृ-ता १, ३०, १६; ७१४ । १००, ९, १०, ९६५-६६ ।
 ८, २, ३६; १५२ । ४६, २०; १८३६ । ६१, १२; ५५९
 सनिता वाजम् ४, १७, ८; १४९५
 सनीलाः [मरुतः] १, १६५, १, ३२५०
 सन्धाता सन्धिम् ८, १, १२; ९८
 सपर्यन् १०, १०५, ४; २७१७
 ससरदिमः २, १२, १२; ११३३
 ससहा १०, ४२, ८, २५९७
 सप्रथः ७, ३१, ६; २२२८
 सवर्हुधः [धेनुरूपः इन्द्र] ८, १, १०; ९६
 सबलः ८, ९३, ९; २४३८
 समः ६, २७, ३; १९५७
 समत्-द् ७, २०, ३; २१५३
 समस्तु हव्यः विश्वास्तु ८, ९०, १, ३९१
 समदनस्य कर्ता १, १००, ६; ९६२
 समाराणः वा० य० ३३, २७, २९६८ । ऋ० १, १६५, ३; ३२५२
 समर्थः ५, ३३, १; १७१७
 समह (संबो) ८, ७०, १४; २३३४
 समानः १, १३१, २; १०३२ । ४, ३०, २२; १६२७ । ८, ९९, ८;
 २३८३ । ८, ४५, २८; ४७०
 समानवर्चसा [इन्द्रामरुतः] १, ६, ७; ३२४६
 समिधेषु प्रहावान् ४, २०, ८; १५४०
 समुद्रव्यचस्-चाः १, ११, १; ७०
 समुद्रिय १, ५६, २; ७९८
 सम्भरः वस्त्रः ४, १७, ११; १४९८
 सम्भृतक्रतुः १, ५२, ८; ७६७
 सम्भृताश्च ८, ३४, १२; ४३६
 संमिश्रः ८, ६१, १८, ५६५
 सन्नाट् ४, १२, २, १५२३ । ८, ४६, २०; १८३६ । १०, ११६, ७;
 २७६१ । वा० य० ८, ३७; ३२०९ [इन्द्रावरुणी] १, १७, १;
 ३१३४ । [वरुणः] ६, ६८, ९, ३१६९ । ७, ८२, २; ३१७३
 सन्नाट् चर्षणीनाम् ८, १६, १; ३८२
 सन्नाट् महः दिवः पृथिव्याश्च १, १००, १, ९५७ । १०,
 १३४, १, २७८५

सम्राट् वस्त्रः ४, २१, १०; १५५३
 सरण्यन् ३, ३१, १८; १२७७
 सरस्वतीवन्तौ [हन्त्राग्नी] ८, ३८, १०; ३१००
 सर्वसेनः ५, ३०, ३, १६८४। [हन्त्रावरुणौ] ६, ६८, २, ३१६२
 सवनं जुषाणः ३, ३२, ५; १२८६
 सवयसः (मरुत) १, १६५, १, ३२५०
 सविता २, ३०, १, १२२७। ३, ३३, ६; १२९९। ३८, ८; १३५२
 सश्वत् (ते-चतुर्थी) २, १६, ४; ११७५
 ससवान् ६, ४४, ७; १०४२
 ससवान् देवीः अप. स्त्र. च ३, ३४, ८, १३०८
 ससहान् पश्य 'सासहान्' ।
 सस्त्रि १०, ३८, ४; २५४४। [हन्त्राग्नी] ८, ३८, १; ३०९१
 सस्त्रिः १०, ९९, ४, २६८३
 सस्थाना त्व एक इत् यवयसि ८, ३७, ४; १७७९
 सहः १, ५७, २; ८०६
 सहः दधिषे ओजिष्ठम् ८, ४, १० २३८
 सहः दधिषे ज्येष्ठम् ८, ४, ४; २३२
 सहः महः तन्वी भरति २, १६, २; ११७३
 सहमान. २, २१, २; १२१८। ६, १८, १; १८५६ । १०,
 १०३, ५, २६९५
 सहमानः वृष्येभिः अन्यान् ३, ४६, २; १४१०
 सहसान् ४, १७, ३; १४२०
 सहस. सुतुः ६, १८, ११. १८९६ । २०, १; १८८४ । १०,
 ५०, ६; २६०६
 सहसावन् ७, १९, ७; २१४६
 सहस्कृतः ८, ९९, ८, २३८३
 सहस्कृत. सहस्र ऋषिभिः ८, ३, ४, १५९
 सहस्रचेताः १, १००, १२; ९६३
 सहस्रणीयः ३, ६०, ७; ३३४३
 सहस्रदाम्नां क्रतुः १, १७, ५; ३१३८
 सहस्रसुष्क. ६, ४६, ३, २०९२
 सहस्रमूर्तिः १, ५२, २; ७६१
 सहस्रवाजः १०, १०४, ७; २७०९
 सहस्राक्षा [हन्त्रवायू] १, २३, ३, ३२१४
 सहस्रिन्-स्त्री १०, ४७, ५, २८४६
 सहस्रोतिः ८, ३४, ७; ४३१
 सहस्रमा (मौ) [हन्त्राग्नी] ६, ६०, १; ३०५६
 सहावान् १, १७५, २, ३; १०८०-८१। ३, ४९, ३; १४२६।
 ६, १८, २, १८५७
 सहिष्ठः ६, १८, ४; १८५९

दै० [हन्त्रः] ४२

सहीयस्-यान् १, ६१, ७; ८६२
 सङ्गुरिः २, २१, ३, १२१२। ४, २२, ९; १५६३। ६, ६०, १, ३०५६
 सङ्गोजाः १०, १०३, ५, २६९५
 सङ्गोदाः १, १७४, १, १०; १०६९, ७८। ३, ३४, ८; १३०८।
 ४७, ५; १४१८। ६, १७, १३; १८५३। १९, ११, १८८१।
 १, १७१, ५; ३२६७
 सङ्गु ६, १८, १२, १८६७
 साक जातः ओजसा २, २२, ३; १२२५
 साकं जातः क्रतुना २, २२, ३; १२२५
 साकं वृधा (धौ) [हन्त्राग्नी] ७ ९३, २; ३०७२
 साकं वृद्धः वीर्यैः २, २२, ३, १२२५
 साधारणः शश्वताम् ४, ३२ १३; १६५७। ८, ६५, ७; ६०७
 साधुकर्मा वा० य० १७, २३; २९३१
 साधु कृण्वन् ८, ३२, १०, १८९
 सानसिः १, १७५ २, १०८०। ८, २१, २, ४१०। ७, ९३, २, ३०७२
 सासहानः १, १३१, ४; १०२४
 सासहिः १०, १३३, ४, २७८१। १, १७१ ६; ३२६८
 सामहिः घृतनासु १, १०२, ९; ८३६। ८, ६१, १२, ५५९।
 ७०, ४; २३२४
 सासहिः घृत्सु ८, ६१, ३; ५५०
 सासहिः पौश्येभिः १, १००, ३; ६५९। १०२, १; ८२८।
 ८, १२, ९; २९६
 सासहिः मृधः २, २२, ३; १२२५
 सासहिः बाजेषु ३, ३७, ६, १३३९
 सासहान् ८, ४६, १६; १८३२
 सासहान् नृषाहो अमित्रान् १, १००, ५; ९६१
 सासहान् युधा अमित्रान् ८, ६६, १०; ३९१
 साहान् २, १२, ६, १२१३
 सिम. १, १०२, ६; ८३३
 सिषासन् १, १३०, ३; १०१३। ५, ३१, १, १६९३
 सुकर्माणौ [अश्विनौ] वा० य० २०, ७५, २६५९
 सुकृत् ३, ३१ ७; १२६६
 सुकृतः ६, १९, १; १८७१
 सुकृत् १, ५, ६, १९। ५१, १३; ७५७। ५६ ६, ८०२।
 ३, ४९, १; १४२४। ६, ३०, २, ३; १९६९-७०। ८, १, १८;
 १०४। ३३, ५, १३; २१४, २२२
 सुकृत् ८, ५४ ६, ५३६। ९६, १९, २३६१। १०, ४९, ९;
 २५९८। १४४, ६; २८०३
 सुक्षत्रः ५, ३२, ५, १७०९। ३८, १; १७५५
 सुखरथः ५, ३०, १, १६८२

सुगम्यः १, १७३, ४, १०५९
 सुजातः १०, ९९, ७, २६८६
 सुतक्रि (ऋ-सबो) ६, ३१, ४; २००९
 सुतपाः ४, २५, ७, १५९४ । ६, २३, ६; १९२३ । २४, १;
 १९२८ । ८, २, ४, ११९ । [इन्द्रावरुणौ] ६, ६८, १०, ३१७०
 सुतपावान् ६, २४, ९, १९३६ । ८, २, ७, १२२
 सुतसोमम् इच्छन् ५, ३०, १; १६८२ । ७, ९८, १, २२७९
 सुतानाम् हाशेषे ८, ६४, ३; ५९१
 सुतेरणः १०, १०४, ७, २७०९
 सुत्रामा ६, ४७, १२, १३; २११०-११ । १०, १३१, ६, ७,
 २७७६-७७ । वा० य० १९, ८५; २९४३ । २०, ७१, ७२,
 ९०; २९५५, २९५६, २९६३
 सुदंसाः १, ६२, ७, ९, ८७८, ८० । ३, ३२, ८; १२८९
 सुदक्षः १, १०१, ९, ८२५ । १०, ४७, ४; २८४५
 सुदक्षिणः ७, ३२, ३; २२३७ । ८, ३३, ५, २१४
 सुदाः ८, ७८, ४; ६५४
 सुदानुः ६, ३८, १; १९७८ । ७, ३१, २, २२२४ । ८, ८८, २;
 ८९५ । [इन्द्रावरुणौ] ४, ४१, ८, ३१५३ । [मरुद्गणाः] १, २३, २,
 ३२४९
 सुदामन्-मा ६, २०, ७; १८९०
 सुदुधा [धेनुरूप इन्द्र] ८, १, १०; ९६ । [सरस्वती] वा० य०
 २०, ७५; २९५२
 सुदृक् ४, २३, ६, १५७१
 सुनीतिः ६, ४७, ५; २१०५
 सुनीथः १०, ४७, ३; २८४३
 सुन्वतः बृधः ५, ३४, ६, १७३२
 सुन्वतः सखा ८, ३२, १३; १९२
 सुपाणिः ३, ३३, ६; १२९९
 सुपारः १, ४, १०; १३ । ३, ५०, ३; १४३१ । ६, ४७, ७,
 २१०५ । १, १०९, ४, ३०२४ । ८, १३, २; ३२२ । ३२, १३, १९२
 सुपेशसौ [अश्विनौ] वा० य० २०, ७४, २९५८
 सुधाव्य २, १३, ९, ११४५
 सुप्रकेताः [मरुतः] १, १७, १, ६, ३२६८
 सुबाहुः ८, १७, ८, ४०१
 सुब्रह्मा १०, ४७, ३, २८४४
 सुमन्त्रः १, १६५, १०, ३२६०
 सुमतिं चकानः १०, १४८, ३; २८११
 सुमतिः भद्रा अस्य ३, ३०, ७, १२४४
 सुमनाः ३, ३५, ६, ८, १२१७ १२ । ४, २०, ४; १५३६
 सुमन्तुनामा ६, १८, ८; १८६३

सुसृलीकः १, १३९, ६; १०४१ । ६, ४७, १२; २११० ।
 १०, १३१, ६, २७७६
 सुयज्ञः २, २१, ४; १२२०
 सुराधाः ४, १७, ८; १४९५ । ८, १४, १२; ३६५ । ४९, १;
 ४८५ । ५०, १; ४९५
 सुरूपकृन्तुः १, ४, १; ४
 सुवज्रः १, १००, १८, ९७४ । ४, १७, ८; १४९५ । ६, १७,
 १३; १८५३ । ७, ९३, ४; ३०७४ । ७, ३०, १; २२१८
 सुवह्ना ६, २२, ७; १९१३
 सुविद्वान् ८, २४, २३; १८१२
 सुवीरः ६, १७, १३; १८५३ । ४५, ६; २०६५
 सुवृत्तिः १०, ७४, ५; २६३८ । १४०, ७; २७०९
 सुवेदाः ७, ३३, २५, २२५९
 सुशक्तिः १०, १०४, १०; २७१२
 सुशिपः १, ९, ३; ५० । १०१, १०; ८२६ । २, १२, ६;
 ११२७ । ३, ३०, ३; १२४० । ३२, ३; १२८४ । ५०, २;
 १४३० । ५, ३६, ५; १७४८ । ६, ४६, ५; २०९४ । ७, २४,
 ४; २३८९ । ८, २१, ८; ४१६ । ३२, ४; १८३ । ६६, २, ४,
 ४; ६१४, १६, १६ । ६९, १६; २३१८ । ९३, ३२; २४४१ ।
 ९९, २, २३७७
 सुशिवः [ब्रह्मणस्पतिः] ७, ९७, ३; ३३६०
 सुश्रवस्तमः १, १३१, ७; १०२७ । ३, ४५, ५; १४०८ । ८,
 १३, २; ३२२ । ४५, ८, ४५०
 सुश्रवस्यः १, १७८, ४; १०९९
 सुश्रुतः ३, ३६, १; १३२३
 सुषण्यः ८, ३३, ५; २१४
 सुषाः ८, ७८, ४; ६५४
 सुषुम्नः १०, १०४, ५; २७०७
 सुष्टुः १०, १०४, ५; २७०७
 सुष्टुतः १, १२९, ११; १०१० । १७७, ५; १०९५ । ४, २४,
 २; १५७८ । ८, ६, १२; २५४
 सुष्टुतिः ८, ९६, १२; २३५६
 सुष्टुमः ब्रह्मणात् अथर्व० २०, २, ३; २९१७
 सुसंहतः १, ८२, ३; ९२७ । [इन्द्रवायू] वा० य० ३३, ८६;
 ३२४३
 सुसन्निता ८, ४६, २०; १८३६
 सुहवः ३, ४९, ३, १४२६ । ४, १६, १६; १४८२ । ६, २१, ८;
 १९०४ । २९, ६; १९६७ । ४७, ११; २१०९ । [इन्द्राग्नी]
 ७, ९३, १; ३०७१ । [इन्द्रावरुणौ] ७, ८२, ४; ३१७५ । [इन्द्रवायू]
 वा० य० ३३, ८६; ३२४३ । अथर्व० २, २०, ६; ३२४४

सुहार्दः ८, २, ५; १२०
 सुतुः १, १०३, ४; ८४२
 सुतुः सत्यस्य ८, ६९, ४; २३०७
 सुतुतः ८, ४६ २०; १८३६
 सुतुतानां गिरां पतिः ३, ३१, १८; १२७७
 सुरः ८, २५; २६७
 सूरिः ६, २३, १०, १९२८ । ३७, ५; १९७७ । ८, ७०, १३; २३३३
 सूर्यः ४, ३१, १५; १६४४ । ८, ९३, १, ४; २४३०. ३३ । १०, ८९, २; २६६४
 सूर्यस्य जनिता ३, ४९, ४; १४२७ ।
 सृजानः अध्वनः १०, २२, ४, २३६९
 सृप्रकरस्मः ८ ३२ १०; १८९
 सेनानी ७, २०, ५; २१५५
 सेन्यः १, ८१, २; ९१७
 सेन्यः विश्वेषु जनेषु ७, ३०, २; २२१९
 सेहानः अभिद्रुहः पृतनाः ८, ३७, २; १७७७
 सेहानः उरुजयः ८, ३६, १-६; १७६९-१७७४
 सेहानः विश्वा पृतना. ८, ३६, १-६; १७६९-१७७४
 सोमः ८, ७८, ८; ६५८
 सोमकामः १, १०४, ९; ८५५
 सोमपतिः ३, ३२, १; १२८२ । ५, ४०, १; १७६५ । ८, २१, ३; ४११
 सोमपाः १, १०, ३; ६० । २९, १; ६९२ । ३०, ११-१२; ७०९-१० । २, १२, १३; ११३४ । ३, ३९, ७; १३६१ । ४१, ५; १३७७ । ४, ३२ १४; १६५८ । ६, ४५, १०; २०६९ । ८, २, ४; ११९ । १४, १५, ३६८ । १७, ३; ३९६ । ३२, ७; १८६ । ३३, १५; २२४ । ६६, ६; ६१८ । २२, ८, १८; २४०४. १४ । ९७, ६. ९८१ । ९८, ५; २३६८ । १०, १०३, ३; २६९४ । १५२, २; २८१५ । [इन्द्रावृहस्पती] ४, ४९, ३; ३३१९ ।
 सोमपातमः ६, ४२, २; १९९९ । ८, ६, ४०; २८२ । १२, १, २०; २८८, ३०७
 सोमम् जठरे भरति २, १६, २, ११७३
 सोमपावन-वा १, ५६, ७; ८०३ । ५, ४०, ४; १७६८ । ७, ३१, १; २२२३ । ३२, ८; २२४२ । ८, ७८, ७; ६५७
 सोमम् उशन् ४, २४, ६; १५८२
 सोमवृद्धः ३ ३९, ७; १३६१ । ६, १९, ५; १८७५
 सोमस्य पीत्वा १०, ११३, १; २७४५
 सोमानां पाता ८, ९३, ३३; २४६२

सोमिन् ८, ६२, १, ५६६
 सोम्यः ४, २५ २; १५८८, ९३, ८; २४३७, ५, ८; २३४३
 स्तवमानः ७, १९, ११, २१५० । ८, २४, ४; १७९३
 स्तवान् २, १९, ५; १२०३ । २०, ५; १२१२, २४, ८, १९३५
 स्तवान्. ३ ४०, ३; १३६६, ६, ४६, २; २०९१, ८, २४, ३; १७९२
 स्तुतः ८, १४, ४; ३५७ । १०, ५०, २; २६०२
 स्तुषेयः १०, १२०, ६, २७६९
 स्तोतृणाम् आविता १०, २४, ३; २४९०
 स्तोत्र हर्षन् १०, १०५, १; २७१४
 स्तोमवर्धनः ८, १४, ११; ३६४
 स्तोमवाहाः ६, २३, ४; १९२१
 स्तोमं जुजुषाणः ८, ६६, ८. ६२०
 स्तोम्यः ८, १६, ८; ३८९ । २४, १९; १८०८
 स्थिरः ३ ४६, १; १४०९ । ४, १८, १०; १५१८ । ६, १८, १२; १८६७ । ३२, १; २०११ । ४७, ८; २१०६ । १०, १०३, ५; २६९५ । १, १७१, ५; ३२६७
 स्थाता ६, ४१, ३; १९९५
 स्थाता रथस्य ३, ४५, २. १४०५
 स्थाता हरीणाम् ८, २४, १७, १८०६ । ३३, १२; २२१ । ४६, १, १८१७
 स्थिरः २ ४१, १०; १२३५ । ३, ३०, २; १२३९ । ८, ३३, ९; २१८ । ९२, २८. २४२४
 स्थिरः कर्मणि कर्मणि १, १०१, ४, ८२०
 स्थिरः पृतनासु ८ ३२, १४; १९३
 स्थिरस्तु साम० ३२७; २९८३
 स्पद् ८, ६१, १५, ५६२
 स्पर्धमाने मिथती [इन्द्राग्नी] ७, २३, ५; ३०७५
 स्पार्हः ८, २४, ८, १७२७
 स्पार्हाराधाः ४, १६, १६; १४८२
 स्पृधानः ३, ३१ ४; १२६३
 स्पृगन्धि ८ ३४, ६, ४३०
 स्पृष्टिः ३, ४५, ५; १४०८
 स्यन्ता १०, २२, ४, २४६९
 स्यतव. ६, २२, ६; १९१२
 स्वदावन् ८, ५०, ५; ४९९
 स्वधापतिः ६, ४४, १, २, ३; २०३६-३७-३८
 स्वधावान् १, ६३, ६; ८९० । १७३, ६; १०६१ । २, १२, ६; १२१३ । ३, ३५, ३; १३१४ । ४७, ८; १३८० । ४, २०, ४; १५३६ । ५, ३२, १०; १७१४ । ६, १७, ४; १८४४ ।

२१,३; १८९९ । ७,२०,१; २१५१ । ८,४९,५; ४८९ ।
१०,४२,९; २५५४

स्वपतिः १०,४४,१; २५६८

स्वपस्यमानः १,६२,९; ८८०

स्वमिष्टि १५१,२, ७४६

स्वमिष्टिसुहृः ६ २०,८, १८९१

स्वभूयोजा १,५२,१२; ७७१

स्वयं गातुः ४,१८,१०; १५१८

स्वयशस्तरः ३,४५,५; १४०८

स्वयुः ३,४५,५; १४०८

स्वराट् १,५१,१५, ७५९ । ६१,९; ८६४ । ३,४५,५; १४०८ ।

४६,१; १४०९ । ४९,२, १४२५ । ८,१२,४, ३०१ ।

६१,२; ५४९ । ६९,१७; २३१९ । ८१,४; ६७३ । ७,

८२,२; ३१७३

स्वरिः १,६१,२; ८६४

स्वरोचिः ३,३८,४, १३४८

स्वजित् २ २१,१; १२१७ । १०,१६७,२; २८३०

स्वर्हक् ७ ३२,२२, २२५६

स्वर्षतिः ८,९७,११; ९८६

स्वर्वात् ६,२२,३; १९०९ । ८,९७,१; ९८६

स्वर्विद् १,५२,१; ७६० । ३,५१,२, १४३५ । अथर्वं ४,

२४,३,४; २८६९-२८७०

स्वर्षा १,६१,३, ८५८ । १००,१३; ९८९

स्वरुजितं येन मरुत्वता ८,७६,४; ६३१

स्ववसः १०,४७,२; २८४३

स्वनात् ६,४७,१२,१३; २११०-११ । १०,१३१,६,७,

१२७६-७७

स्ववृत् १० ३८,५; २५४५

स्वश्वः ४,२९,२; १६०५ । ५,३३,३; १७१९

स्वश्वयुः ८,४५,७; ४४९

स्वस्तिदाः १०,११६,२; २७५६ । १५२,२; २८१५

स्वाधिः ८ ५३,५, ५२९

स्वायुधः ६,१७,१३, १८५३ । १०,४७,२; २८४३

स्वायसुः [अभिः] अथ ७,५०,३; २९०८

स्वोजाः ६,२२,६, १२१२ । ७,२०,३, २१५३ । १०,२९,८, २५२२

हन्ता दस्योः ८,९८,६, २३६९

हन्ता पापस्य रक्षसः १,१२९,११; १०१०

हन्ता वृत्रम् ४,१७,८, १४९५ । २१,१०; १५५३ । ६,

४४,१५, २०५० । ७,२०,२; २१५२ । ८,२२,३६; १४७,१५१

हरिः ३,४४,३; १४०१

हरितः ३ ४४,४, १४०२

हरिवान्-वः [मबो] १,३ ६; ३ । ८१४; ९१९ । १६७,

१, १०४२ । १७३,१३, १०६८ । १७४,६; १०७४ ।

१७५,१; १०७९ । ३,३०,२; १२३९ । ४७,४; १४१७ ।

५१,६; १४३९ । ५२,७, १४५२ । ४,१६,२१; १४८७ ।

१९,९; १५३० । २२,७; १५६१ । ५,३१,२; १६९४ ।

३६,२,४; १७४५,४७ । ६,१९,६; १८७६ । २२,३; १९०९ ।

४१,३; १९९५ । ४४,१०, २०४५ । ७,१९,७, २१४६ ।

२०,४; २१५४ । २५,४; २१९५ । २९,१; २२१३ । ३२,

१२, २२४६ । ८,२,१३; १२८ । २१,६; ४१४ । २४,३,

५; १७९२ । ९४ । ५३,८; ५३२ । ६१,३; ५५० । ९९,२;

२३७७ । १०,४९,११; २६०० । १०४,२,६; २७०४,८ ।

वा० य० ३३,२७; २९६८ । साम० २२६; २९७९ । ऋ० ८,

४०,९; ३१०९ । अथ० ७,९७,२, ३१२१ । ऋ० १,१६५,

३; ३२५२

हरिमियः ३,४१,८; १३८०

हरिष्ठाः ३,४९,२; १४२५ । ६,१७,२; १८४२

हरिभ्याम् ईयमानः ५,३०,१, १६८२

हरिभिः युजानः ८,५०,७, ५०१

हयोः ईयानः ४,१६,११, १४७७

हरीणां पतिः ८,२४,१४; १८०३

हरीणां स्थाता ८,२४,१७; १८०६ । ३३,१२; २२१ ।

४६,१, १८१७

हयत् ३,४४,२,२, १४००, १४००

हयत् १,५८,२, ८३२

हयत् स्तोत्रम् १०,१०५,१; २७१४

हयश्वः ३,३१,३; १२६२ । ३२,५; १२८६ । ३६,४,९;

१३२६,३१ । ४४,२,४; १४००,२ । ५२,७; १४५२ ।

७,१९,४, २१४३ । २१,१, २१६१ । २२,१, २, २१७२ । ७३ ।

२४,४, २१८९ । २५,५; २१९६ । ३१,१, १२, २२२३, ३४ ।

३२,१५; २२४९ । ८,२१,१०; ४१८ । ५३,२; ५२६ ।

६६,४, ६१६ । ९० ३, २३९३ । १०, १०४, ३, ५; २७०५, ७

हवनश्रुतः ८, १२, २३, ३१० [हन्त्रासी] ६, ५९, १०; ३०५५ ।

[हन्त्रावरुणौ] ७, ८३, ३; ३१८४

हवनश्रुतः वाजेषु १, १०, १०; ६७

हवमानः अनेहसम् ८, ५०, ४; ४९८

हविष्मती [मरुस्वती] वा० य० २०, ७४; २९५८

हव्यः १, ३३, २; ७३१ । १००, १; ९५७ । ८, १६, ८; ३८९ ।

९६, २०-२१; २३६२-६३ । अथ० ६, ९८, ३; २९०४

हव्यः आरणेषु ८, ७०, ८; २३२८

हव्यः एकः इन्द्र ६, २२, १; १९०७
हव्यः गाधेषु ८, ७०, ८, २३२८
हव्यः दध्नेभिः भूरिभिः च १०, ३८, ४; २५४४
हव्यः धीभिः ६, १८, ६; १८६१
हव्यः नृभिः विश्वधा ७ २२ ७, २१७७
हव्यः भगो न ३, ४९, ३; १४२६
हव्यः भरेभरे ७, ३२, २४; २२५८
हव्यः वाजेषु ८, ७०, ८, २३२८
हव्यः वृत्रहत्ये ४, २४, २; १५७८
हव्यः श्लोभिः भीरुभिः च १, १०१, ६; ८२२
हव्यः समस्तु विश्वासु ८, ९०, १; २३२१
हव्यवाहनः देवेभ्य १०, ११९ १३; २८६२
हिरण्ययः १, ७, २; २९ । ८, ६६, ३; ६१५
हिरण्ययः उत्सः ८, ६१, ६; ५५३
हिरण्ययुः ७, ३० ३; २२२५

हिरण्यवर्णः ५, ३८ २; १७५६
हिरण्यवर्तनी [अश्विनौ] वा० य० २०, ७४, २९५८
हिरण्ययीनां राजा ८, ६५, १०; ६१०
हिरिशिप्रः ६, २९, ६; १९६७
हिरीमशः १०, १०५ ७; २७२०
हिरीमान् १०, १०५, ७, २७२०
हुवानः अस्माभिः साखिभिः १०, ११२, ३; २७३७
हुवानः देवान् [अग्निः] ७, ३०, ३; २२२०
हूयते य धावतिः जिग्युभिः च १, १०१, ६; ८२२
हूयमानः १, १०४, ९; ८५५ । १०, २८, ३; २५२४ । ११६, १;
२७५५
हूयमानः सोतुभिः ४, २९, २; १६०५
होता ८ ३४, ८; ४३२ । ९९, ७; २३८२
होता असुरो न ७, ३०, ३; २२२०

(१) रथे-ष्ठाः । [इन्द्रस्य रथः ।]

अनपच्युतः ४, ३१, १४, १६४३
अनेहाः ८ ६९, १६, २३१८
अरुष ८, ६९ १६, २३१८
अश्वयुः ४, ३१, १४; १६४३
इष्टिभिः मतिभिः रथाः २, १८, १; ११९०
उरु ८, ९८, ९, २३७२
उरुयुगः ८, ९८, ९; २३७२
ऋभ्वसम् (द्वि०) १, ५६, १; ८०५
गवेषण ७, २३, ३, २१८२
गव्ययुः ४, ३१ १४; १६४३
गोविद् १, ८२, ४; ९२८
चतुर्थ्युगः २, १८, १; ११९०
चिकेतति यः हारियोजन पूर्ण पात्रम् १, ८२, ४; ९२८
चित्रतमः १, १०८, १; ३००८
जवीयान् मनसः १०, ११२, २; २७३६
जैत्रः १, १०२, ३; ८३०
त्रिकराः २, १८, १; १९९०
दिविस्पृक् ४, ४६, ४, ३२२३
द्युमान् ४, ३१, १४, १६४३
द्युक्षाः ८, ६९, १६; २३१८

द्रोणः ६, ४४, २; २०५५
धृष्णुया [=धृष्णुः ४, ३१, १४; १६४३
नवः २, १८, १, ११२०
नाभिः ६, ३९ ४; १९८६
परिश्वे न पत्रैः समुद्रैः २, १७ ३; ११७४
पृथुपाजस् ४, ४६, ५; ३२२४
प्रवता वृतीया] १, १७७, ३; १०९३
बृहन् ३, ५३, ५, ६; १४५७-१४५८
भीमः ६, ३१, ५; २०१०
मतिभिः रथाः २, १८, १; ११९०
मनसः जवीयान् १०, ११२, २; २७३६
मनुष्यः २, १८, १; ११२०
युक्तः दक्षिणः उत सव्य १, ८२, ५; ९२९
रथाः मतिभि इष्टिभिः २, १८, १; ११९०
वज्री ८, ३३, ४; २१३
वन्धुरः ६, ४७, ९; २१०७
वरिष्ठः ६, ४७, ९; २१०७
विश्ववारः ६, ३७, १; १९७३
वीरवाहः ७, ९०, ५; ३२३३
वृषा १, ८२, ४; ९२८ । १७७, ३; १०९३ । २, १६, ६; ११७७

८, ३३, ११; २२०
 वृषभः १, ५४, ३; ७८८
 सप्तारिषः २, १८, १; ११९०
 समुद्रैः न परिभवे २, १७, ३; ११७४
 संमिश्रः हर्योः ८, ३३, ४; २१३
 सन्निः २, १८, १; ११९०
 सहस्रपाद ८, ६९, १६; २३१८
 सुख. ३, ३५, ४; १३१५ । ४१, ९; १३८१
 सुखतमः १, १६, २; ७९
 सुचक्र. ६, ३७, ३; १९७५
 सुष्टा (स्था) मा १०, ४४, २; २५६९

स्थिरः ३, ३५, ४; १३१५
 स्वध्वरः ४, ४६, ४; ३२२३
 स्वर्विद् ६, ३९, ४; १९८६
 स्वर्षाः २, १८, १; ११९०
 स्वस्तिगा ८, ६९, १६; २३१८
 हरितः ३, ४४, १; १३९९
 हरियोगः १, ५६, १; ८०५
 हर्योः (संमिश्र) ८, ३३, ४; २१३
 हिरण्ययः १, ५६, १; ८०५ । ६, २९, २; १९६३ । ८, १, २४, २५;
 ११०, १११ । ८, ३३, ४; २१३ । ६९, १६; २३१८
 हिरण्यवन्धुरः ४, ४६, ४; ३२२३

(२) वज्र-बाहुः । [इन्द्रस्य वज्रम् ।]

अंकुशः अथर्वं ६, ८२, ३; २९०१
 अशनिम् तपिष्ठाम् ३, ३०, १६; १२५३
 अश्मा ४, २२, १; १५५५
 आयसः १, ८०, १२, ९११ । ८१, ४, ९१९ । ८, ९६, ३, २३४७
 आयुधम् ३, ५४, ४; १४०२
 आयुधानि ४, १६, १४; १४८०
 चक्रम् ८, ९६, ९; २३५३
 चतुराश्रिम् ४, २२, २; १५५६
 चरता युधेन ३, ३२, ६; १८०७
 तपिष्ठाम् (अशनिम्) ३, ३०, १६; १२५३
 तपुषिस् हेतिम् ३, ३०, १७; १२५४
 तिग्मम् १, १३०, ४; १०१४
 दुर्लु विश्वासां पुराम् ६, २०, ३; १८८६
 दर्शतः ८, ७०, २; ३२२
 क्षुमन्तम् ५, ३१, ४; १६९६
 निमिश्रः ८, ९६, ३; २३४७
 न्यूष्टम् वसुना ४, २०, ६; १५३८
 पर्वतेन ६, २२, ६; १९१२
 प्रत्नेन ६, २१, ७; १९०३
 मृदच्युतम् ८, ९६, ५; २३४९
 मनोजुवा ६, २२, ६; १९१२
 महः ८, ७०, २; ३२२
 महता वधेन ५, ३२, ८; १७१२

युज्येन ६, २१, ७; १९०३
 वज्रासः १, ८०, ८; २०७
 वधम् १, ५५, ५, ८०१ । १७४, ८; १०७६ । ५, ३४, २; १७२८
 वधेन ४, १८, ९; १५१७
 वधेन चरता ३, ३२, ६; १२८७
 वधेन महता ५, ३२, ८; १७१२
 वसुना (न्यूष्टम्) ४, २०, ६; १५३८
 वसुदानः अथर्वं ६, ८२, ३; २९०१
 वृत्रहनम् ६, २०, ९; १८९२
 वृषा १, १३१, ३; १०२३
 वृषन्धिम् ४, २२, २; १५५६
 ज्ञातपर्वणा ८, ८९, ३; २३८६
 शताश्रिम् ६, १७, १०; १८५०
 श्रथिता १, ५७, २; ८१२
 सुख्या १, ८०, ६; २०५ । ६, २१, ७; १९०३
 सचा भुवम् १, १३१, ३; १०२३
 सहस्रभृष्टिम् १, ८०, १२; ९११ । ५, ३४, २; १७२८ । ६,
 १७, १०, १८५०
 सायकम् १, ८४, ११; ९४७
 स्थविरम् ४, २०, ६; १५३८
 स्वपस्तमम् १, ६१, ६; ८६१
 स्वर्धम् १, ६१, ६; ८६१
 हतिम् ३, ४४, ४; १४०२
 हरितम् ३, ४४, ४; १४०२

हर्यतः १,५७,२; ८१२

अथर्व० ६,८२,३; २९०१

हिरण्ययः १,५७,२; ८१२ । ८,६८,३; २२०३ । हेतिम् (तपुषिम्) ३,३०,१७, १२५४

(३) वज्र-बाहुः । [इन्द्रस्य बाहु ।]

अनाष्टयौ साम० १८६९; ३०००

असह्यौ साम० १८६९; ३०००

उपाकौ १,८१,४; ९१९

चित्रौ अथर्व० १९,१३,१; २९१४

गोजिता १,१०२,६; ८३३

पारयिष्णू अथर्व० १९,१३,१; २९१४

युवानौ साम० १८६९, ३०००

वृषभौ अथर्व० १९,१३,१; २९१४

वृषाणौ अथर्व० १९,१३,१; २९१४

सुप्रतीकौ साम० १८६९; ३०००

स्थविरौ अथ० १९,१३,१; २९१४ । साम० १८६९; ३०००

सव्येन यमति ब्राधतश्चित् दक्षिणे संगृभीता कृतानि १, १००,९; ९६५

(४) हर्यश्वः । [इन्द्रस्य अश्वौ ।]

अजिराः ३,३५,२; १३१३

अव्याः १,१७७,२; १०९२

अध्वरश्चियः ८,४,१४, २४२

अन्तमाः १,१६५,५; ३२५४

अभिमातिषाहः ६,६९,४; ३३०९

अर्वन्तः ८,९२,११; २४०७ । १०,७४,१; २६३४ । १०५,२; २७१५

अर्वाञ्चः १,५५,७; ८०३ । ७,१८,१; २२०८

अशीतिः २,१८,६; ११९५

अश्रमासः ६,२१,१२; १९०६

अश्यासः ६,२२,२; १९६३ । ८,१,९; ९५

अष्टौ २,१८,४; ११९३

अस्मन्नाः १०,४४,३; २५७०

अस्मन्नाञ्चः ६,४४,१९; २०५४

आशवः २ १६,३; ११७४ । ३,३५,४; १३१५ । ४,२९,४; १६०७ । १०,४९,७; २५९६

आसस्त्राणासः ६,३७,३; १९७५

इन्द्रवाहा (द्विव०) ८,९८,९; २३७९

उमासः १०,४४,३; २५७०

उरवः ६,२१,१२; १९०६

ऋज्यन्तः ६,३७,२; १९७४

कज्रा [द्विवचनम्] १,१७४,५; १०७३

कतयुजः ६,३९,४; १९८६

एतग्वा [द्विव०] ८,७०,७; २३२७

एतशा [द्विव०] ८,७०,७; २३२७

क्राम्या [द्विव०] १,६,२; २५

केता [द्विव०] १,५५,७; ८०३

केतू सूर्यस्य २,११,६; ११०६

केशवन्ता [द्विव०] १०,१०५,५; २७१८

केशिनः १,८२,६; ९३० । ८,१,२४; ११०१०,१०५,२; २७१५

गभस्त्योः रश्मयः ६,२९,२; १९६३

गावौ [द्विव०] १०,२७,२०; २५१०

घृतस्नू [द्विव०] ३,४१,९; १३८१

चत्वारः २,१८,४; ११९३

चत्वारिंशत् २,१८,५; ११९४

जूज्वानासः ५,२९,९; १६७५

तपुष्पा [पुःपा] ३,३५,३; १३१४

तविषासः १०,४४,३; २५७०

तौलाभिः [तृ० स्त्री०] ६,४४,७; २०४२

त्रिंशत् २,१८,५; ११९४

दश २,१३,९; ११४५ । १८,४; ११९३

दशग्विनः ८,१,९; ९५

दुर्धुजः १०,४४,७; २५७४

शुक्षा [द्विव०] १,१००,१६; ९७२

द्वौ २,१८,४; ११९३
 धुनी (वातस्य) १०,२२,४, २४६९
 धृष्णू [द्विव०] १,६,२, २५
 धौतरीभिः [स्त्री० तृ०] ६,४४,७; २०४२
 नदौ १०,१०५,४; २७१७
 नवतिः २,१८,६; ११९५
 नियुतः ६,२२,११; १९१७ । ३६,३, २०३३ । ४५,२१;
 २०८० । ७,१८,१०; २१२८ । ९१,५,६, ३२३८-३२३९ ।
 ४,४७,४; ३२२९
 नृमणः वातस्य १,५१,१०, ७५४
 नृवाहसा [द्विव०] १,६,२; २५
 पञ्चाशत् २,१८,५, ११९४
 पर्णिना [द्विव०] ८,१,११, ९७
 पुनानासः ६,३७,२; १९७४
 पुरुस्पृहः ४,४७,४. ३२२९
 पृश्निगावः ७,१८,१०; २१२८
 पृश्निनिप्रेषितासः ७,१८,१०, २१२८
 प्रिया [द्विव०] ३,४३,१; १३९१ । १० ११२,४; २७३८
 प्रियमेघस्तुता [द्विव०] ८,६,४५, २८७ । ३२,३०; २०९
 प्रेतशाः १०,४९,७; २५९६
 बभ्रू [द्विव०] ४,३२,२२; १६६२
 बृहन्तः ३,४३,६, १३९६
 ब्रह्मणायुक्ता [द्विव०] १,८४,३, ९३२
 ब्रह्मयुजा १,१७७,२; १०९२ । ३,३५,४; १३१५ । ८,१,
 २४; ११० । २,२७, १४२
 मवच्युता [द्विव०] १,८१,३; ९१८
 मनोयुजः १,५१,१०, ७५४
 मन्द्रा १,१००,१६; ९७२ । ३,४५,१, १४०४
 मयूरोमाणः-मभिः [तृ०] ३,४५,१, १४०४
 मयूरशेष्या ८,१,२५; १११
 मरुतः सखायः ५,३१,१०; १७०२
 मूराः वृषभस्य ३,४३,६; १३९६
 युक्ता ब्रह्मणा [द्विव०] १,८४,३, ९३२
 युक्तासः ३,५३,४; १४५६ । ४,३२,१७, १६६१ । ६,
 २३,१; १९१८ । ६,३७,१; १९७३ । ७,२८,१; २२०८ ।
 १०,२७,२०; २५१० । ११२,४; २७३८
 युजानाः १,१७७,२; १०९२ । ३,४३,६; १३९६ । ६,
 २९,२; १९६३ । ४४,१२; २०५४
 रघू [द्विव०] १०,४९,२, २५९१

रघुद्रुवः ८,१,९; ९५
 रजी (न) (महान्तौ) १०,१०५,२; २७१५
 रथ्यासः ६,३७,३; १९७५
 रन्तयः ७,१८,१०, २१२८
 रथिमन्तः १०,७४,१; २६३४
 रश्मयः गभस्त्वोः ६,२९,२, १९६३
 रासभः ३,५३,५, १४५७
 रोहितः १,१००,१६; ९७२ । ५,३६,६, १७४९
 लुलामीः [स्त्री०] १,१००,१६ ९७२
 वंकू [द्विव०] १,५१,११; ७५५ । ८,१,११; ९७
 वंकूतरा [द्विव०] १,५१,११, ७५५
 वचोयुजा [द्विव०] ६,२०,९, १८९२ । ८ ९८,९, २३७२
 वहिष्ठाः ६,२१,१२; १९०६ । ४०,३; १९९० । ४७,९;
 २१०७
 वाजाः ३,५३,५-६; १४५७-५८ । ५,३६,६; १७४९ । ६,
 ४५,२१; २०८० । ८,२४,१८; १८०७
 वातस्य (समानवे गौ) १,१७४,५, १०७३
 वातस्य धुनी १०,२२,४, २४६९
 वातस्य नृमणः १,५१,१०; ७५४
 वातस्य पर्णिना ८,१,११; ९७
 वातस्य युक्ताः ५,३१,१०, १७०१
 वावाता ८,४,१४, २४२
 वाहः ३,५०,४; १४३२ । ५३,३, १४५५
 विशतिः २ १८,५; ११९४
 विप्रता (द्विव०) १,६३,२; ८८६ । १०,२३,१; २४८१ ।
 ४९,२, २५९१ । १०५,२,४; २७१५, २७१७
 विश्वा २,१८,७; ११९६
 विश्ववाराः ६,२२,११; १९१७ । ७,९१,६; ३२३९
 वीतपृष्ठाः ८,६,४२; २८४ । ३,३५,५; १३१६
 वृषणा (द्विव०) १,१७७,१,३, १०९१, १०९३ । २,१६,
 ६; ११७७ । ३,३५,३,५; १३१४, १६ । ४३,४; १३९४ ।
 ५,३६,५, १७४८ । ६,२९,२० १९६३ । ४४,१९,१९;
 २०५४, ५४ । ७ १९,६; २१४५ । ८,१,९; ९५ । ३३,११;
 २२० । ४,११, १४, २३९, २४२ । १०,४९,२, २५९१ ।
 ११२,२; २७३६
 वृषभासः १,१७७,२; १०९२
 वृषभस्य (मूराः) ३,४३,६; १३९६
 वृषरथासः १,१७७,२; १०९२ । ६,४४,१९; २०५४
 वृषरश्मयः ६ ४४,१९; २०५४
 व्यचस्वन्ता १०,१०५,५; २७१८

व्यतीनाम् ४,३२,१७; १६६१
 श्वात्मा ८,२,२७; १४२
 शतम्-शतानि २,१८,६; ११९५ । ४,२२,४; १६०७ । ७,
 ९१,६; ३२३९ । ८,१,२४; ११०
 शक्तिः ८,१,९; ९५
 शक्तिपृष्ठा (द्विव०) ८,१,२५; १११
 शोषा १०,१०५,२; २७१५
 शोणा १,६,१; २५ । ३,३५,३; १३१४ । ८,१,९; ९५,
 श्यावा १,१००,१६; ९७२
 षट् २,१८,४; ११९३
 षष्टिः २,१८,५; ११९४
 सखाया (द्विव०) ३,३५,४; १३१५ । ४,१,४; १३९१, ९४।
 ६,४०,१; १९८८
 सचमानो त्रिभिः शतैः ५,३७,६; १७४९
 सधमादः ३,३५,४; १३१५ । ४,३,६; १३९६ । ६,३७,१,
 १; १९७२, १९७३ । ६२,४; ३३०९ । १०,४४,३ २५७०
 सधमाद्या ८,३२,२९, २०८ । ९३,२४; २४५३
 सप्ततिः २,१८,५; ११९४
 सप्तयः सप्तौ ८,४,१४; २४२ । ३,३५,२; १३१३ । ८,
 ४६,७; १८२३
 सर्वरथा (द्विव०) १०,१६०,१; २८२४
 सहस्राः ५,२९,९; १६७५
 सहस्रम्-स्राणि ४,२९,४; १६०७ । ३२,१७; १६६१ ।
 ७,९१,६; ३२३९ । ८,१,२४; ११०

सहस्रिणः ८,१,९; ९५
 सुधुरा (द्विव०) ३,४३,४; २३९४
 सुमदंशुः (स्त्री०) १,१००,१६; ९७२
 सुयमा (द्विव०) १०,४४,२; २५६९
 सुयुजः ५,३१,१०; १७०१ । ६,४४,१९; २०५४ । १०,
 १०५,२; २७१५
 सुरथाः २,१८,५; ११९४
 सुविदग्धाः ७,९१,६; ३२३९
 सुसंमृष्टासः ३,४३,६; १३९६
 स्थूरयः ६,२९,२; १९६३
 स्यूमन्यू १,१७४,५; १०७३
 स्वङ्गा ३,४३,४; १३९४
 हरी-हरयः १,५,४; १७ । ६,२; २५ । ७,२; २९ । ५५,
 ७; ८०३ । १,१७४,४; १०७२ । १७७,१,३,४ १०९१,
 ९३-९४ । २,११,६; ११०६ । १६,६; ११७७ । १८,३,
 ४; ११९७-२३ । ३,३५,१; १३१२ । ८,१,२४,२५; ११०-
 १११ । २,२७; १४२ । ३३,२९,३०; २०८-९ । ३३,११;
 २२० । ४,११,१४; २३९, २४२ । ६,३६; २७८ । ६,४२,
 २८४ । ६,४५; २८७ । ९३,२४; २४५३ । २४,१७; १८०६
 हरिता (द्विव०) ६,४७,१९; २११७
 हरितौ (द्विव०) साम० ६२३; २९९४
 हर्यतौ (द्विव०) ८,६,३६; २७८
 हिरण्यकेश्या (द्विव०) ८,३२,२९; २०८ । ९३,२४; २४५३

(५) इन्द्राणी । [इन्द्रपत्नी ।]

इन्द्रपत्नी १०,८६,९; २६४८ । १०; २६४९
 इन्द्राणी १०,८६,११-१२; २६५०-२६५१
 ऋतस्य वेधाः १०,८६,१०; २६४९
 पृथुजाघनिः १०,८६,८; २६४७
 पृथुष्टुः १०,८६,८; २६४७
 प्रतिच्यवीयसि १०,८६,६; २६४५
 भावयुः १०,८६,१५; २६५४
 रेवती १०,८६,१३; २६५२
 वीरिणी १०,८६,९-१०; २६४८-२६४९
 वृषाकपायी १०,८६,१३; २६५२
 दै० [इन्द्रः] ४३

भारपत्नी १०,८६,८; २६४७
 संहोत्रं समनं गच्छति १०,८६,१०; २६४९
 सक्थि उद्यमीयसी १०,८६,६; २६४५
 सुधुत्रा १०,८६,१३; २६५२
 सुबाहुः १०,८६,८; २६४७
 सुभगा १०,८६,११; २६५०
 सुभसत्तरा १०,८६,६; २६४५
 सुयाश्रुतरा १०,८६,६; २६४५
 सुलामिका १०,८६,७; २६४६
 सुस्तुषा १०,८६,१३; २६५२
 स्वङ्गुरा १०,८६,८; २६४७

इन्द्र-देवतायाः विभिन्नरूपत्वम् ।

अभिरूपी १,६,१; २४
 अन्तरात्मा १०,२४,२४; २५१४
 अभयंकरः ८,६१,१३; ५६०
 आदित्यरूपी १,६,१; २५ । १,६,३; २६ । १०,२७,१३-
 १४; २५०३-२५०४
 कालामकः १०,५५,५; २६१८
 कुयवाख्य-असुर-नाशकः १,१०४,३-४; ८४९-८५०
 ज्येष्ठ १०,५०,४; २६०४
 ज्ञाता ६,४७,११; २१०९ । ७,१९,७; २१४६
 नक्षत्ररूपी १,६,१, २४
 पर्जन्यरूपी ८,६९,२; २३०५
 पुरोलाशाहः ३,५२,१-८, १४४६-१४५३
 पूषण्वान् १,८२,६; ९३०
 प्रजापतिरूपी १०,२७,१५; २५०५
 प्रदाता ८,१७,१०; ४०३ । ४,२१,९, १५५२
 भूरिदाः ४,३२,१९-२१; १६६३-१६६५
 मरुत्वान् ८,६३,१०; ५८७ । १,१०१,१-११; ८१७ ८२७
 १,१००,१-१९; ९५७-९७५ । १,१२९,१; १००० । २,
 ११,१-२१; ११०१-११२१ । ३,३२-१-१७, १२८२-१२९८ ।

३,३५,१-११; १३१२-१३२२ । ३,४७,१-५; १४१४-१४१८ ।
 ३,५०,१-५; १४२९-१४३३ । ३,५१,७-९; १४४०-१४४२ ।
 ४,२१,३; १५४६ । ५,२९,१-१५; १६६७-१६८१ । ५,
 ३०,१-११; १६८२-१६९२ । ५,३१,१-१३; १६९३-१७०४ ।
 ८,६,१-७; १७६२-१७७५ । ६,१९,१-१३; १८७१-१८८३ ।
 ६,२०,१-१२; १८९७-१९०६ । ६,४०,५; १९९२ । ७,
 ३२,१०; २२४४ । ८,६८,१-१३; २२९१-२३०३ । १०,
 ७३,१-११; २६२३-२६३३
 मुष्कवान् १०,३८,१-५, २५४१-२५४५
 यज्ञमार्गानभिज्ञः १,१७३,११; १०६६
 रक्षोहा १,१२९,११; १०१०३,३०,१५-१७, १२५२-१२५४
 वायुरूपी १,६,१; २४
 सरस्वतीवन्तौ [इन्द्राक्षी] ८,३८,१०, ३१००
 सुत्रामा ८,४७,१२,१३; २११०, २१११
 सुपर्णात्मकः १०,५५,६; २६१९
 सूर्यात्मा ८,६,२९,३०; २७१,२७२ । १,८३,५,९३५ ।
 ३,३९,७,१३६१ । ८,६९,२; २३०५ । १०,५५,३-२६१६ ।
 १०,१११,७; २७३१
 स्त्रीरूपी ८,३३,१९; २२८

इन्द्रदेवताया गुणबोधक-सामासिक-पदानां उत्तरपद-सूची ।

सहस्र - अक्षि [क्षा] १,२३,३, ३२१४
 अन् - अनुदः [अनानुदः] २,२१,४, १२२०
 अन् - अनुदिष्टः [अनानुदिष्ट] १०,१६०,४, २८२७
 वृषभ - अन्न. २,१६,५, ११७६
 गाथा - अन्यः ८,९२,२, २३९८
 अन् - अपच्युतः ८,९२,८, २४०४
 नयं - अपसः ८,९३,१, २४३०
 अयस् - अपाष्टिः [अयोपाष्टिः] १०,९९,८, २६८७
 बहुल - अभिमानः १०,७३,१, २६२३
 सु - अभिष्टिः १,५१,२, ७४६
 सु - अभिष्टिसुम्नः ६,२०,८, १८९१
 अ - कव-अरिः ३,४७,५, १४१८
 सु - अरिः १,६१,९, ८६४
 अन् - अर्वा ४,१७,२०; १५०७
 सु - अर्वा ६,२२,३; १९०९
 अन् - अर्शरातिः ८,९९,४; २३७९
 सु - अर्-सन् [स्वर्षा] १,६१,३; ८५८

अन् - अवद्यः १,१२९,१; १०००
 सु - अवसः १०,७,२; २८४३
 प्र - अविता ८,९६,२०; २३६२
 सु - प्र-अव्यः २,१३,९; ११४५
 सम्भृत - अश्वः ८,३४,१२; ४३६
 सु - अश्वः ४,२९,२; १६०५
 हरि - अश्वः ३,३१,३; १२६०
 सु - अश्वयुः ८,४५,७; ४४९
 तव - आगस् ४,१८,१०; १५१८
 पर - आदिदिः १,८१,२; ९१७
 तुरीय - आदिद्यः ८,५२,७, ५२१
 अन् - आष्ट्यः ४,१८,१०; १५१८
 अन् - आनतः ६,४५,९; २०६८
 अन् - आपिः ८,२१,१३; ४२१
 सु - आपिः ८,५३,५; ५२९
 अन् - आमृणः १,३३,२; ७३०
 अस्कृध - आयुः [अस्कृधोयु] ६,२२,३; १९०९

दीर्घ - आयुः ८, ७०, ७; २३२७
 वृद्ध - आयुः १, १०, १२, ६९
 तिग्म - आयुधः २, ३०, ३; १२२९
 सु - आयुधः ६, १७, १३, १८५३
 प्र - आशुषाद् ४, २५, ६; १५९३
 भन् - आभयी ८, २, १; ११६
 चक्रम् - आरुज् ५, ३४, ६; १७३२
 घृत - आसुती ६, ६९, ६; ३३११
 भूरि - आसुतिः ८, ९३, १८; २४४०
 अ -- प्रति-इतः १, ३३, २; ७३१
 वेद - इष्टः [वेदिष्ठः] ८, २, २४; १३९
 षाची - इष्टः [शविष्ठः] ४, २०, ९; १५४१
 शवस् - इष्टः [शविष्ठः] १, ८०, १; ९००
 शम्भू - इष्टः [शम्भविष्ठः] १, १७१, ३; ३२६५
 सहस् - इष्टः [सहिष्ठः] ६, १८, ४; १८५९
 प्रशस्थ - ईयस् [ज्यायस्-यान्] ३, ३८, ५; १३४९
 वृद्ध - ईयस् [ज्यायस्-यान्] " " "
 तवस् - ईयस् [तवीयस्-यान्] ६, २०, ३; १८८६
 वेद - ईयस् [वेदीयस्-यान्] ७, ९८, १; २२७९
 सहस् - ईयस् [सहीयस्-यान्] १, ६१, ७; ८६२
 वन - इष्टः [वनिष्ठः] ७, १८, १; १८१९
 वर - इष्टः [वरिष्ठः] ८, ९७, १०; ९८५
 वृषद् - उक्थः ८, ३२, १०; १८९
 वपा - उदरः ८, १७, ८; ४०१
 अक्षित - ऊतिः १, ५, ९; २२
 उर्वी - ऊतिः ६, २४, २; १९२९
 शतम् - ऊतिः १, १०२, ६; ८३३
 सहस्र - ऊतिः ८, ३४, ७; ४३१
 सहस्रम् - ऊतिः १, ५२, २; ७६१
 अन् - ऊनः ६, १७, ४; १८४४
 अन् - ऊर्मिः ८, २४, २२; १८११
 अन् - ऋतुपाः ३, ५३, ८; १४६०
 श्रुत - ऋषिः १०, ४७, ३; २८४४
 नि - ऋष्टः १०, ४२, २; २५४७
 पुरस् - एता ६, २१, १२; १९०६
 तत् - (बर्हिः) - ओक्स् ३, ३५, ७; १३१८
 नि - ओक्स् १, ९, १०; ५७
 अभिभूति - ओजस् ३, ३४, ६; १३०६
 अमित - ओजस् १, ११, ४; ७३
 असमाति - ओजस् ६, २९, ६; १९६७
 द्वै० [इन्द्रः] ४३ ❀

ऋषव - ओजस् १०, १०५, ६; २७१९
 धृष्ण - ओजस् ८, ७०, ३; २३२३
 बाहु - ओजस् १०, १११, ६; २७३०
 विश्व - ओजस् १०, ५५, ८; २६२१
 सु - ओजस् ६, २२, ६; १९१२
 स्वभूति - ओजस् १, ५२, १२; ७७१
 दूर् - ओषस् ४, २१, ६; १५४९
 रथ - ओळहाः १०, १४८, ३; २८११
 वृषा - कपिः १०, ८६, १; २६४०
 अभयम् - करः ८, १, २; ८८
 खजम् - करः १, १०२, ६; ८३३
 यतम् - करः ५, ३४, ४; १७३०
 सत्रा - करः १, १७८, ४; १०९९
 स्रम - करस्त ८, ३२, १०; १८९
 आश्रुत् - कर्णः १, १०, ९; ६६
 श्रुत् - कर्णः ७, ३२, ५; २२३९ । ८, ४५, १७; ४५९
 भूरि - कर्मन् [मां] ३, १०३, ५; ८४३
 विश्व - कर्मन् [मां] ८, ९८, २; २३६५
 वृष - कर्मन् [मां] १, ६३, ४; ८८८
 अकाम - कर्शनः १, ५४, २; ७७६
 अ - कल्पः १, १०२, ६; ८३३
 अ - कवारिः ३, ४७, ५; १४१८
 अ - कामकर्शनः १, ५४, २; ७७६
 ऋण - कातिः ८, ६१, १२; ५५९
 तत् - (=सोम) - कामः २, १४, १; ११५०
 अवस् - कामः ८, २, ३८; २५३
 सोम - कामः १, १०४, ९; ८५५
 युत् - कारः १०, १०३, २; २६९३
 आ - काव्यः ४, २९, ५; १६०८
 अ-समष्ट - काव्यः २, २१, ४; १२२०
 अप्रति - कुतः [अप्रतिङ्कुतः] १, ७, ६; ३३
 तुवि - कूर्मिः ३, ३०, ३; १२४०
 तुवि - कूर्मितमः ६, ३७, ४; १९७६
 अभिष्टि - कृत् ४, २०, १; १५३३
 अरम् - कृत् ८, ११, १; ९६
 आजि - कृत् ८, ४५, ७; ४४९
 ईशान - कृत् १, ६१, २१; ८६६
 खज - कृत् ६, १८, २; १८५७
 धर्म - कृत् ८, ९८, १; २३६४
 पथि - कृत् ६, २१, १२; १९०६

पुरु -- कृत् १,५४,३; ७७७
 भद्र -- कृत् ८,१४,११; ३६४
 रण -- कृत् १०,११२,१०; २७४४
 लोक -- कृत् १०,१३३,१; २७७८
 वरिवस् -- कृत् ८,१६,६; ३८७
 सु -- कृत् ३,३१,७; १२३६
 अ -- निस्-कृतः [निष्कृतः] ८,९९,८; २३८३
 अरम् -- कृतः १०,११९,१३; २८६२
 दामने -- कृतः ८,९३,८; २४३७
 सम् -- कृतः [संस्कृतः] ८,३३,९; २१८
 सहस् -- कृतः ८,९९,८; २३८३
 सु -- कृतः ६,१९,१; १८७१
 सुरुप -- कृतः १,४,१; ४
 अक्ष -- कृतः ८,६१,१०; ५५७
 प्र -- केतः १०,१०४,६; २७०८
 सुप्र -- केता १,१७१,६; ३२६८
 अमितः -- कृतः १,१०२,६; ८३३
 अवार्थ -- कृतः ८,९२,८; २४०४
 अविहर्यत -- कृतः १,६३,२; ८८६
 अरु -- कृतः १,८१,७; ९२२
 तुवि -- कृतः ८,६८,२; २२९२
 वृष -- कृतः ५,३६,५; १७४८
 शत -- कृतः १,४,८; ११
 स -- कृतः १०,१४८,४; २८१२
 सम्भृत -- कृतः १,५२,८; ७६८
 सु -- कृतः १,५,६; १९
 सम् -- क्रन्दनः १०,१०३,१; २६९२
 उरु -- क्रमः ८,७७,१०; ६४९
 सुत -- क्रि ६,३१,४; २००९
 धु -- क्षः ६,२४,१; १९२८
 स -- क्षणिः ८,७०,८; २३२८
 सु -- क्षत्रः ५,३२,५; १७०९
 क्रमु -- क्षाः १,६३,३; ८८७
 दिव -- क्षाः ३,३०,२१; १२५८
 अ -- क्षितोतिः १,५,९; २२
 अ -- क्षितवसुः ८,४९,६; ४९०
 पुरु -- क्षु ४,२९,५; १६०८
 अमित्र -- खादः १०,१५२,१; २८१४
 प्र -- खादः १,१७८,४; १०९८

वृत्र -- खादः ३,४५,२; १४०५
 अभि -- ख्याता ४,१७,१७; १५०४
 अरम् -- गमः ६,४२,१; १९९८
 स्वयम् -- गातुः ४,१८,१०; १५१८
 उरु -- गायः १०,२९,४; २५१८
 अधि -- गो [गु] १,६१,१; ८५६
 शाचि -- गो [गु] ८,१७,१२; ४०५
 भूरि -- गो [गु] ८,६२,१०; ५७५
 पुरु -- गूर्तः ६,३४,२; २०२२
 विश्व -- गूर्तः १,६१,९; ८६४
 अ -- गोष्टः ८,९८,४; २३६७
 तुवि -- ग्रामः ६,२२,११; १९११
 तुवि -- मिः २,२१,२; १२१८
 तुवि -- ग्रीवः ८,१७,८; ४०१
 घन -- घनः [घनाघनः] १०,१०३,१; २६९२
 अ -- घन ७,२०,८; २१५८
 अपूरुष -- घ्नः १,१३३,६; १०३९
 सम् -- चकानः ५,३०,७; १६८८
 वि -- चक्षणः १,१०१,७; ८२३
 वृत्तम् -- चयः २,२१,३; १२१९
 वि -- चर्षणिः २,२२,३; १२२५
 विश्व -- चर्षणिः १,९,३; ५०
 प्र -- चेताः ७,३१,१०; २२३२
 वि -- चेताः ६,२४,२; १९२९
 स -- चेताः १,६१,१०; ८६५
 सहस्र -- चेताः १,१०,१२; ९६३
 रध -- चोदः २,२१,४; १२२०
 क्रधि -- चोदनः ८,५१,३; ५०८
 कीरि -- चोदनः ६,४५,१९; २०७८
 रध -- चोदनः ६,४४,१०; २०४५
 दुस् -- च्यवनः १०,१०३,२; २६९३
 अच्युत -- च्युत् २,१२,९; ११३०
 मद -- च्युत् १,५१,२; ७४६
 अ -- च्युतः १०,१११,३; २७२७
 अनप -- च्युतः ८,९२,८; २४०४
 कवि -- च्छदा ३,१२,३; ३०३२
 सद्यः -- जज्ञानः ८,९६,२१; २३६३
 पाञ्च -- जन्यः ५,३२,११; १७१५
 विश्व -- जन्याः १,१६९,८; १०५०
 धनम् -- जयः ३,४२,६; १३८७

अ - जरः ३,३२,७; १२८८
 अप - जर्गुराणः ५,२९,४; १६७०
 ऋते - जाः ७,२०,६; २१५६
 पुरा - जाः ३,३१,१९; १२७८
 पूर्व - जाः ८,६४१; २८३
 सन - जाः १०,१११,३; २७२७
 सहस् - जाः १०,१०३,५; २६९५
 तुवि - जातः १,१३१,७; १०२७
 सद्यः - जातः ८,७७,८; ६४७
 सु - जातः १०,९९,७; २६८६
 प्र - जानन् ३,३५,४; १३१५
 वि - जानन् ३,३९,७; १३६१
 तुतु - जानः (तूतुजान) १,३,६; ३
 तुतु - जिः (तूतुजिः) ४,३२,२; १६४६
 अपरा - जित् [ता] ३,१२,४; ३०३३
 अप् [ब्] - जित् २,२१,१; १२१७
 अप्सु - जित् ८,१३,२; ३२२
 अश्व - जित् २,२१,१; १२१७
 उर्वरा - जित् २,२१,१; १२१७
 गो - जित् २,२१,१; १२१७
 धन - जित् २,२१,१; १२१७
 नृ - जित् २,२१,१; १२१७
 विश्व - जित् २,२१,१; १२१७
 अश्वस् - जित् ८,३२,१४; १९३
 संस्पृष्ट - जित् १०,१०३,३; २६९४
 सन्ना - जित् २,२१,१; १२१७
 स्वर - जित् २,२१,१; १२१७
 स - जित्वाणा ३,१२,४; ३०३३
 अ - जुः ८,१,२; ८८
 अ - जुयः २,१६,१; ११७२
 मनः - जुवा १,२३,३; ३२१४
 ब्रह्म - जूतः ३,३४,१; १३०१
 वृष - जूतिः ५,३५,३; १७३८
 अ - जूर्यत् ३,४६,१; १४०९
 परम - ज्या ८,९०,१; २३९९
 उरु - ज्रयाः ८,६,२७; २६९
 पृथु - ज्रयाः ३,४९,२; १४२५
 ह्रन्त्र - ज्येष्ठा १,२३,८; ३२४८
 अङ्गिरस् - तमः १,१३०,३; १०१३
 अङ्क - तमः १,१७४,१०; १०७८

हन - तमः ३,४९,२; १४२५
 कवि - तमः ६,१८,१४; १८६९
 गिर्वणस् - तमः ६,४५,२०; २०७९
 चित्र - तमः ६,३८,१; १९७८
 ज्येष्ठ - तमः २,१६,१; ११७२
 तवस् - तमा १,१०९,५; ३०२५
 तुविकूर्मि - तमः ६,३७,४; १९७६
 दस्म - तमः २,२०,६; १२१३
 देव - तमः ४,२२,३; १५५७
 शुमत् - तमः १,५४,३; ७७७
 पितृ - तमः ४,१७,१७; १५०४
 पुरु - तमः १,५,२; १५
 मघवत् - तम ८,५४,५; ५३५
 मदिन् - तमः ८,१३,२३; ३४३
 रथी - तम ६,४५,१५; २०७४
 वाजसा - तमा ३,१२,४; ३०३३
 विप्र - तमः १०,११२,९; २७४३
 वीर - तमः ३,५२,८; १४५३
 वृषन् - तमः १,१०,१०; ६७
 शम् - तमः ८,३३,१५; २२४
 शिव - तम ८,९६,१०; २३५४
 शुष्मिन् - तमः १,१३३,६; १०३९
 सहस् - तमौ ६,६०,१; ३०५६
 सुश्रवस् - तमः १,१३१,७; १०२७
 सोमपा - तमः ६,४२,२; १९९९
 वृत्रहन् - तम ५,३५,६; १७४१
 अभिभू - तरः ८,९७,१०; ९८५
 उत् - तरः ८,१४,१५; ३६८
 जुष्ट - तर ८,९६,११; २३५५
 तवस् - तरः १,३०,७; ७०५
 वीर - तरः ८,२४,१५; १८१४
 स्व-यशस् - तरः ३,४५,५; १४०८
 दुस् (ष) - तरां (रौ) ५,८६,२; ३०४१
 वि - तन्तसाद्यः ६,१८,६; १८६१
 सु - तपाः ४,२५,७; १५९४
 दुस् - तरितु २,२१,२; १२१८
 नि - तर्तुराणः ६,४७,१७; २११५
 स्व - तव ६,२२,६; १९१२
 विभु (भ) - तष्टः ३,४९,१; १४२४
 सत्य - ताता १०,१११,४; २७२८

अप् - तुरः ३, ५१, ३, १४३६
 आजि - तुर ८, ५३, ६, ५३०
 निस् - तुरः [निष्ठुरः] ८, ३२, २७, २०६
 अ - तूर्तः ८, ५, ७, २३८७
 पुरु - त्मा ८, २, ३८, १५३
 अम - त्रः ३, ३६, ४, १३२६
 तरु - त्रः १, १७४, १, १०६९
 यज - त्रः १, १२९, ७, १००६
 देव - त्रा ८, ३४, ८, ४३२
 पुरु - त्रा ८, ३३, ८, २१७
 सु - त्रामन् ६, ४७, १२, २११०
 वि - त्वक्षणः ५, ३४, ६, १७३२
 प्र - त्वक्षाणः १०, ४४, १, २५६८
 सु - दंसाः १, ६२, ७, ८७८
 सु - दक्षः १, १०१, ९, ८२५
 वज्र - दाक्षिणः १, १०१, १, ८१७
 सु - दक्षिणः ७, ३२, ३, २२३७
 गो - दत्रः ८, २१, १६, ४२४
 पुरु - दत्रः ६, १८, ९, १८६४
 पर - आ ददि. १, ८१, २, ९१७
 उप - दधानः ४, २९, ४, १६०७
 अ - दग्धः ८, ७८, ६, ६५६
 अ - दभा [भौ] ५, ८६, ५, ३०४४
 अ - दयः १०, १०३, ७, २६९७
 वि - दयमान. ३, ३४, १, १३०१
 पुरम् - दरः १, १०२, ७, ३४
 गो - दा ३, ३०, २१, १२५८
 धन - दाः १, ३३, २, ७३१
 भूरि - दाः ४, ३२, १९, १६९३
 वसु - दाः ८, ९३, ४, २३७७
 वाज - दा १, १३५, ५, ३२१६
 सहस् - दाः १, १७४, १, १०६९
 सु - दा ८, ७८, १०, ६५४
 स्वस्ति - दाः १०, ११६, २, २७५६
 भूरि - दात्रः ३, ३४, १, १३९१
 जीर - दातु ८, ६२, ३, ५६८
 सु - दातुः ६, ३८, १, १९७८
 नक्षत् - दामः ६, २२, २, १९०८
 अ - दाम्यः ७, १०४, २०, २२८८
 सु - दामन् ६, २०, ७, १८९०

वाज - दावन् ८, २, ३४, १४९
 सत्रा - दावन् १, १७, ६, ३३
 स्व - दावन् ८, ५०, ५, ४९९
 प्र - दिवः १, ५४, २, ७७६
 बृहत् - दिवः ४, २९, ५, १६०८
 स - दिवः २, १९, ६, १२०४
 प्र - दिशमानः ३, ३१, २१, १२८०
 स्मत् - दिष्टिः ३, ४५, ५, १४०८
 अ - वि - दीधयुः ४, ३१, ७, १६३६
 सवर् - दुघः ८, १, १०, ९६
 सु - दुवा ८, १, १०, ९६
 आ - दुरिः ४, ३०, २४, १६२९
 सु - दृक् ४, २३, ६, १५७१
 स्वर - दृक् ७, ३२, २२, २२५६
 विश्व - देवः ८, ९८, २, २३६५
 तुवि - देणः ८, ८१, २, ६७१
 तुवि - द्युम्नः १, ९, ६, ५३
 अ - द्रोघः ३, ३२, ९, १२९०
 अ - द्रोघवाक् ६, २२, २, १९०८
 एधमान - द्विट् ६, ४७, १६, २११४
 तरत् - द्वेष १, १००, ३, ९५९
 वि - द्वेषणः ८, १, २, ८८
 उग्र - धन्वा १०, १०३, ३, २६९४
 वि - धर्ता ८, ७०, २, २३२२
 वयस् - धाः ३, ३१, १८, १२७७
 सम् - धाता ८, १, १२, ९८
 कारु - धायाः ३, ३२, १०, १२९१
 उरु - धार ८, १, १०, ९६
 विश्वतस् - धीः ८, ३४, ६, ४३०
 अव - धून्वानः ६, ४७, १७, २११५
 चर्षणी - धृत् ३, ३७, ४, १३३७
 अ - धृष्टः ८, ६१, ३, ५५०
 अन् - आ - धृष्य ४, १८, १०, १५१८
 अ - ध्वर ८, ६३, ६, ५८३
 दुर - नशः (दूणाशः) ७, ३२, ७, २२४१
 अन् - आ - नतः ६, ४५, ९, २०६८
 शृगवृषो - नपात् ८, १७, १३, ४०६
 विश्व [श्वा] - नरः १०, ५०, १, २६०१
 शिक्षा - नरः १, ५४, २, ७७६
 पुरु - ना [णा] मन् ८, ९३, १७, २४४६

अ — निष्ठुष्टः १०, ११६, ६, २७६०
 अ — निमिषः १० १०३, १, २; १६९२-२३
 अ — निष्कृतः ८, ९९, ८; २३८३
 अ — निःस्तुत [निष्ठुत] ८, ३३, ९; २१८
 पुरु — निषिषधः १, १०, ५; ६२
 सेना — नी ७, २०, ५; २१५५
 वर्ष — नीतिः ३, ३४, ३; १३०३
 वाम — नीतिः ६, ४७, ७, २१०५
 शार्ध — नीतिः ३, ३४, ३; १३०३
 सु — नीतिः ६, ४७, ५; २१०५
 शत — नीथ १, १००, १२; ९६८
 सहस्र — नी [णी]थः ३, ६०, ७; ३३४३
 सु — नीथः १०, ४७, २; २८४३
 स — नीळाः १, १६५, १; ३२५०
 सुवि — नृम्णः ४, २२, ६; १५६०
 त्वेष — नृम्णः १०, १२०, १; २७६४
 पुरु — नृम्णः ८, ४५, २१, ४६३
 म — ने[णि]ता ३, ३०, १८; १२५५
 अ — नेद्यः ८, ३७, १-६; १७७६-१७८१
 म — ने[णि]नीः ६, २३, ३; १९२०
 अति — नेनीयमानः ६, ४७, १६; २११४
 अश्व — पतिः ८, २१, ३; ४११
 आजि — पतिः ८, ५४, ६; ५३६
 उर्वरा — पतिः ८, २१, ३; ४११
 गण — पतिः १०, ११२, ९; २७४३
 गवाम् — पतिः १, १०१, ४, ८२०
 गो — पतिः १, १०१, ४; ८२०
 दम् — पतिः ८, ६९, १६; २३१८
 धियः — पती १, २३, ३; ३२१४
 नृ — पतिः १, १०२, ८; ८३५
 बृहत् — पतिः [बृहस्पतिः] २, ३०, ४; १२३०
 मित्र — पतिः १, १७०, ५, १०५५
 रथि — पतिः ६, ३१, १; २००६
 रायस् — पतिः ८, ६१, १४, ५६१
 मद — पनी ६, ६९, ३; ३३०८
 वसु — पतिः १, २, ९; ५६
 वास्तोस् — पति ८, १७, १४; ४०७
 विशस् — पतिः १०, १५२, २; २८१५
 विश् — पतिः ३, ४०, ३, १३६६
 शची — पतिः ४, ३०, १७; १६२२
 शवसस् — पतिः १, ११, २; ७१

सत् — पतिः १, ११, १; ७०
 सोम — पतिः ३, ३२, १; १२८२
 स्वधा — पतिः ६, ४४, १; २०३६
 स्व — पतिः १०, ४४, १; २५६८
 स्वर — पतिः ८, ९८, ११; ९८६
 म — पन्थितमः १, १७३, ७; १०६२
 अ — पराजितः १, ११, ६; ७१
 अ — परीतः ५, २९, १४; १६८०
 वृष — पर्वा ३, ३६, २; १३२४
 अभिष्टि — पाः २, २०, २; १२०९
 अन् — ऋतुः पाः ३, ५३, ८; १४६०
 ऋत — पाः ७, २०, ६; २१५६
 ऋतु — पाः ३, ४७, ३; १४१६
 गो — पाः ३, ३१, १४; १२७३
 तनु [नृ] — पा ४, १६, २०; १४८६
 परस् — पाः ८, ६१, १५; ५६२
 व्रत — पाः १०, ३२, ६; २५३५
 शुचि — पा ७, ९१, ४; ३२३७
 सोम — पाः १, १०, ३; ६०
 सु — पाणिः ३, ३३, ६; १२९९
 सोम — पातमः ६, ४२, २; १९९९
 नृ — पाता १, १७४, १०; १०७८
 अति — पान् [नाम् द्वि०] ७, ३३, २; २२६३
 अ — पारः ४, १७, ८; १४२५
 सु — पारः १, ४, १०; १३
 सुत — पावन् ६, २४, ९; १९३६
 सोम — पावन् १, ५६, ७; ८०३
 रमत — पुरन्धिः ८, ३४, ६; ४३०
 शाचि — पूजनः ८, १७, १२; ४०५
 अ — पूरुषघ्नः १, १३३, ६, १०३९
 अ — पूर्यः ८, २१, १; ४०९
 निचान्त — पृणः [निचुम्पुणः] ८, ९३, २२; २४५१
 विश्वतस् — पृथुः ८, ९८, ४; २३६७
 वृष — प्रभर्मा ५, ३२, ४, १७०८
 अ — प्रतिः ५, ३२, ३; १७०७
 तुवि — प्रतिः १, ३०, ९; ७०८
 अ — प्रतिष्टृशवाः १, ८४, २; ९३८
 अ — प्रतिष्कृतः १, ७, ६; ३३
 पुरुष — प्रतीकः ३, ४८, ३; १४२१
 अ — प्रतीत १, ३३, २; ७३१
 सु — प्रकेताः १, १७१, ६; ३२६८

स - प्रथः ७, ३१, ६; २२२८
 अ - प्रभङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७
 तुपल - प्रभर्मा १०, ८९, ५; ३२७६
 चोद - प्रवृद्धः १, १७४, ६; १०७४
 पुरु - प्रशस्ताः ६, ३४, २; २०२२
 अ - प्रहन् ६, ४४, ४; २०३९
 अ - प्रहित ८, ९९, ७; २३८२
 अन्तरिक्ष - प्राः १, ५२, २; ७४६
 चर्वाणि - प्राः १, १७७, १; १०९१
 अ - प्राप्ति-सत्यः ८, ६१, ४; ५५१
 सु - प्राच्यः २, १३, ९; ११४५
 हरि - प्रियः ३, ४१, ८; १३८०
 अ - बधिरः ८, ४५, १७; ४५९
 पूर्ण - बन्धुरः १, ८२, ३; ९२७
 द्वि - बर्हीः ६, १९, १; १८७१
 स - बलः ८, ९३, ९; २४३८
 तुवि - बाध १, ३२, ६; ७२०
 वि - बाध १०, १३३, ४; २७८१
 उग्र - बाहुः ८, ६१, १०; ५५७
 वज्र - बाहुः १, ३२, १५; ७२९
 सु - बाहुः ८, १७, ८; ४०१
 अ - विभीवान् १, ६, ७; ३२४७
 चन्द्र - बुधः १, ५२, ३; ७६२
 पृथु - बुधः १०, ४७, ३; २८४४
 कृत - ब्रह्मा ६, २०, ३; १८८१
 सु - ब्रह्मा १०, ४७, ३; २८४४
 प्र - ब्रुवाणः १०, ५४, २; २६०९
 वि - भक्ता ३, ४९, ४; १४२७
 जन - भक्षः २, २१, ३; १२१९
 अभि - भङ्गः २, २१, २; १२१८
 प्र - भङ्गः ८, ४६, १९; १८३५
 अ-प्र - भङ्गी ८, ४५, ३५; ४७७
 प्र - भङ्गी ८, ६१, १८; ५६५
 वि - भञ्जतुः ४, १७, ३; १५००
 अ - भयङ्करः ८, १, २; ८८
 अन्तरा - भरः ८, ३२, १२; १९१
 सम - भरः ४, १७, ११; ४९८
 प्र - भर्ता १, १७८, ३; १०९८
 जात - भर्मा १, १०३, ३; ८४१
 वृष-प्र - भर्मा ५, ३२, ४; १७०८
 विज - भातुः १, ३, ४; १

बृहत् - भातुः ८, ८९, २; २३८५
 गोत्र - भित् ६, १७, २; १८४२
 पुर [पुर] - भित् ३, ३४, १; १३०१
 पुर [पुर] - भित्तमः ८, ५३, १८; ५२५
 अ - भीरुः ४, २९, २; १६०५
 अ - भीर्वः ८, ४६, ६; १८२२
 वि - भीषणः ५, ३४, ६; १७३२
 वि - भुः ८, ९६, ११; २३५५
 अद् - भुतः ८, १३, १९; ३३९
 अभि - भूः २, २१, २; १२१८
 पुरस् - भूः ३, ३१, ८; १२६७
 विश्व [श्वा] - भूः १०, ५०, १; २६०१
 शम् - भूः (वौ) ६, ६०, ७; ३०६२
 अभि - भूतरः ८, ९७, १०; २८५
 अभि - भूतिः ६, १९, ६; १८७६
 वि - भूतिः ६, १७, ४; १८४४
 अभि - भूत्योजाः ३, ३४, ६; १३०६
 स्व - भूत्योजाः १, ५२, १२; ७७१
 अभि - भूयसः ८, १७, १५; ४०८
 प्र - भूयसुः १, ५८, ४; ८१४
 वज्र - भृत् १, १००, १२; ९६८
 सम - भृतक्रतुः १, ५२, ८; ७६७
 सम् - भृताश्च ८, ३४, १२; ४३६
 पुर - भोजाः ८, ८८, २; ८९५
 वि - भ्राजत् ८, ९८, ३; २३६६
 अ - भ्रातृव्यः ८, २१, १३; ४२१
 सु - मखः १, १६५, ११; ३२६०
 तुवि [वी] - मघः १, २९, १; ६९२
 शत [ता] - मघः ८, १, ५; ९१
 श्रुत [ता] - मघः ८, ९३, १; २४३०
 प्र - मतिः ४, १६, १८; १४८४
 महे - मतिः ८, १३, ११; ३३१
 अ - मन्त्रिन् ६, २४, ९; १९३६
 प्र - मन्त्रिन् ६, ३१, ५; २०१०
 स - मद् ७, २०, ३; २१५३
 सत्य - मद् ८, २, ३७; १५२
 नृ - मनः [णः] १, ५१, ५; ७४९
 विश्व - मनाः १०, ५५, ८; २६२१
 वृष - मनाः १, ६३, ४; ८८८
 सु - मनाः ३, ३५, ६; १२१७

अनुत्त — मन्थुः ७, ३१, १२, २२३४
 आपान्त — मन्थुः १०, ८९, ५, ३२७६
 प्राचा — मन्थुः ८, ६१, ९, ५५६
 शत — मन्थुः १०, १०३, ७, २६९७
 सतीन — मन्थुः १०, ११२, ८, २७४२
 प्र — मरः १०, २७, २०, २५१०
 भ — मर्यः १, १२९, १०, १००९
 स — मर्यः ५, ३३, १, १७१७
 महा — महः ८, २४, १०, १७९९
 बृद्ध — महाः ६, २०, ३, १८८६
 स — महः ८, ७०, १४, २३३४
 अभि — मातिषाहं १०, ४७, ३, २८४४
 अभि — मातिहन्-हा ३, ५१, ३, १४३६
 परस् — मात्रः ८, ६८, ६, २२९६
 तुवि — मात्रः ८, ८१, २, ६७१
 अनु — माद्यः ६, ३४, २, २०२२
 सध — माद्यः ८, ३, १, १५६
 प्रति — मानम् १, १०२, ८, ८३५
 अनि — मानः ६, २२, ७, १९१३
 पुरु — माद्यः ३, ५१, ४, १४३७
 अ — मित्रक्रतुः १, १०२, ६, ८३३
 अ — मितौजाः १, ११, ४, ७३
 अ — मित्रलादः १०, १५२, १, २८१४
 अ — मित्रहन्-हा ६, ४५, १४, २०७३
 अ — मिनः १०, ११६, १४, २७५८
 प्र — मिनानः १०, २७, १९, २५०२
 विश्व — मिनव ७, २८, १, २२०८
 सस् — मिश्रः ८, ६१, १८, ५६५
 मन्थु — मीः १, १००, ६, ९६२
 सहस्र — मुष्कः ६, ४६, ३, २०९२
 अ — मृक्तः ८, २, ३१, १४६
 तुवि — मृक्षः ६, १८, २, १८५७
 प्र — मृणन् १०, १०३, ६, २६९६
 अ — मृतः ५, ३१, १३, १७०४
 अ — मृधः ८, ८०, २, ६६२
 वि — मृधः १, १५२, २, २८१५
 सु — मृकीकः १, १३९, ६, १०४१
 सु — यज्ञः २, २१, ४, १२२०
 प्र — यज्युः ६, २१, १०, १९०५
 उद् — यन्ता १, १७८, ३, १०९८

प्र — यन्ता ८, ९३, २१, २४५०
 प्र — य [या] वयन् ३, ४८, ३, १४२१
 स्व — यशस्तरः ३, ४५, ५, १४०८
 ऋण — या ४, २३, ७, १५७२
 अव — याता १, १२९, ११, १०१०
 अ — वामन् ८, ५२, ५, ५१९
 पूर्व — यावा ३, ३४, २, १३०२
 रथ — यावाना ८, ३८, २, ३०९२
 अ — यास्यः १, ६२, ७, ८७८
 अवस् — युः ४, १६, ११, १४७७
 अश्व — युः १, ५१, १४, ७५८
 अस्म — युः १, १३१, ७, १०२७
 ऋत — युः ८, ७०, १०, २३३४
 गिर्वणस् — युः १०, १११, १, २७२५
 गो [गव्] — युः १, ५१, १४, ७५८
 रथ — युः १, ५१, १४, ७५८
 वसु [स्] — युः १, ५१, १४, ७५८
 वाज — युः ७, ३१, ३, २२२५
 विश्व [श्वा] — युः १, १२९, ४, १००३
 वीर — युः ८, ९२, २८, २४२४
 श्रवस् — युः १, ५६, ६, ८०२
 स्व — युः ३, ४५, ५, १४०८
 सु अश्व — युः ८, ४५, ७, ४४९
 हिरण्य — युः ७, ३०, ३, २२२५
 अ — युजः ८, ६२, २, ५६७
 पुरस् — युधः १, १३२, ६, १०३३
 अ — युद्धसेनः १०, १३८, ५, २७९६
 अ — युध्यः १०, १०३, ७, २६९७
 सत्य — योनिः ४, १२, २, १५२३
 पुरस् — योधः ७, ३१, ६, २२२८
 सुते — रणः १०, १०४, ७, २७०९
 वृष — रथः ५, ३६, ५, १७४८
 सुल — रथः ५, ३०, १, १६८२
 अ — रधः ६, १८, ४, १८५९
 वि — रण्डिन् ३, ३६, ४, १३२६
 सस् — रराणः ८, ३२, ८, १८७
 सस — रदिमः २, १२, १२, ११३३
 एक — राज् — द् ८, ३७, ३, १७७८
 सस् — राज् — द् ४, १९, २, १५२३

स्व - राज - द् १,५१,१५; ७५९
 ज्येष्ठ - राजः ८,१६,३; ३८४
 अनर्श - रातिः ८,९९,४; २३७९
 पिशङ्ग - रातिः ५,३१,२; १६९४
 मंहिष्ठ - रातिः १,५२,३; ७६२
 पूष - रातयः १,२३,८; ३२४८
 सत्य - राधः १,१०१,८; ८२४
 तुवि - राधाः ४,२१,२; १५४५
 सु - राधा ४,१७,८; १४९५
 स्पार्ह - राधाः ४,१६,१६; १४८२
 बृहत् - रिः १,५८,१; ८११
 प्र - रिक्का १,१००,१५; ९७१
 अ - रिष्टः ५,३१,१; १६९३
 अ - रीळहः ४,१८,१०; १५१८
 पुरु - रुच् १०,१०४,४; २७०७
 तनू - रुचा (चौ) ७,९३,५; ३०७५
 वल - रुजः ३,४५,२; १४०५
 अ - रुतहनुः १०,१०५,२७; २७२०
 अ - रुषः १,६,१; २४
 विश्व - रूपः ३,३८,४; १३४८
 सु - रूपकृत्तुः १,४,१; ४
 बृहत् - रेणुः ६,१८,२; १८५७
 स्व - रोचिः ३,३८,४; १३४८
 अ - रेपसौ ५,५१,६; ३२३१
 अधि - वक्ता १,१००,१९; ९७५
 सु - वज्रः १,१००,१; ९७४
 अन् - अ - वद्यः १,१२९,१; १०००
 महा - वधः ५,३४,२; १७२८
 सम - वनन ८,१,२; ८८
 प्र - वया. २,१७,४; ११८४
 स - वयस. १,१६५,१; ३२५०
 नि - वर. ८,९३,१५; २४४४
 वस्म - वर्चाः १,१७३,४; १०५९
 समान - वर्चसा १,६,७; ३२४६
 हिरण्य - वर्णः ५,६८,२; १७५६
 चन्द्र - वर्णाः १,१६१,१२; ३२६१
 अप - वर्ता (गोनाम्) ४,२०,८; १५४०
 उक्थ - वर्धनः ८,१४,११; ३६४
 स्तोम - वर्धनः ८,१४,११; ३६४
 पुरु - वर्षाः १०,१२०,६; २७६९

उद् - व [वा] वृषाणः ४,२०,७; १५३९
 अक्षित - वसुः ८,४९,६; ४२०
 दिवा - वसुः ८,३४,१; ४२५
 पुरु [रु] - वसुः १,८१,८; ९२३
 रद [दा] - वसुः ७,३२,१८; १२५२
 वाजिनी - वसुः ३,४२,५; २३८६
 विदद् - वसुः ३,३४,१; १३०१
 विभा - वसुः ८,९३,२५; २४५४
 वृषन् - वसु ४,५०,१०; ३३२३
 सु - वहा ६,२२,७; १९१३
 अद्रोघ - वाक् ६,२२,२; १९०८
 सनात् [नत्] - वाजः १०,४७,४; २८४५
 सहस्र - वाजाः १०,१०४,७; २७०९
 अ - वातः ६,१८,१; १८५६
 भद्र - वातः १०,४७,५; २८४६
 अ-शस्त - वारः १०,९९,५; २६८४
 पुरु - वारः ४,२१,५; १५४८
 भूरि - वारः १०,२७,२; २८४३
 विश्व - वारः १,३०,१०; ७०८
 अ - वार्यक्रतुः ८,९२,८; २४०४
 हव्य - वाहन. १०,११९,१३; २८६२
 ब्रह्म - वाहस्-हाः १,१०१,९; ८२५
 यज्ञ - वाहस्-हाः ८,१२,२०; ३०७
 स्तोम - वाहस्-हाः ६,२३,४; १९२१
 ब्रह्म - वाहस्तमः ६,४५,१९; २०७८
 उक्थ - वाहस् ८,९६,११; २३५५
 गिर - वाहस् १,३०,५; ७०३
 बल - विज्ञायः १०,१०३,५; २६९५
 गो - विद् ८,५३,१; ५२५
 वरिवस् - विद् १०,३८,४; २५०४
 वसु - विद् ८,६१,५; ५५२
 स्वर - विद् १,५२,१; ७६०
 अ - विदीधयुः ४,३१,७; १६३६
 सु - विद्वान् ८,२४,२३; १८१२
 सम - विद्यानः १,१३०,४; १०१४
 अ - विहर्यक्रतुः १,६३,२; ८८६
 अभि - वीरः १०,१०३,५; २६९५
 एक - वीरः १०,१०३,१; २६९२
 पुरु - वीरः ६,२२,३; १९०९
 प्र - वीरः १०,१०३,५; २६९५

मन्दत् - वीरः ८, ६९, १; २३०४
 महा - वीरः १, ३२, ६; ७२०
 विप्र - वीरः १०, ४७, ४; २८४५
 सध - वीरः ६, २६, ७; १९५५
 सु - वीरः ६, १७, १३; १८५३
 सु - वृक्तिः १०, ७४, ५; २६३८
 अ - वृकः ४, १६, १८; १४८४
 अ - वृकतमः १, १७४, १०; १०७८
 स्व - वृज् १०, ३८, ५; २५४५
 अ - वृतः ८, ३२, १८; १९७
 महि - वृध् ७, ३१, १०; २२३२
 कवि - वृधः ८, ६३, ४; ५८१
 नृप्य - वृधः [इया] ८, ४५, २; ४७१
 सधा - वृधः ४, ३१, १; १६३०
 साकम् - वृधा (धौ) ७, ९३, २; ३०७२
 प्र - वृद्धः १, ३३, ३; ७३२
 मद - वृद्धः १, ५२, ३; ७६२
 यज्ञ - वृद्धः ६, २१, २; १८९८
 सोम - वृद्धः ३, ३९, ७; १३६१
 शृंग - वृषो नपात् ८, १७, १३; ४०६
 न - वेदाः ४, २३, ४; १५६९
 विश्व - वेदाः ६, ४७, १२; २११०
 सु - वेदाः ७, ३३, २५ २२५९
 प्र - वेपनी ५, ३४, ८; १७३४
 गायत्र - वेपाः ८, १, १०; ९६
 उरु - व्यचाः ३, ५०, १; १४२९
 विश्व - व्यचाः ३, ४६, ४; १४१२
 समुद्र - व्यचाः १, ११, १; ७०
 धृत - व्रतः ६, १९, ५; १८७५
 महा - व्रातः ३, ३०, ३; १२४०
 उरु - व्रांसः ४, १६, १८; १४८४
 तुवि - शर्मः ६, ४४, २; २०३७
 अजात - शत्रुः ५, ३४, १; १७२७
 अ - शत्रुः १, १०२, ८; ८३५
 प्र - शार्धः ८, ४, १; २२९
 बाहु - शार्धौ १०, १३०, ३; २६९४
 अप्रतिष्ठ - शवाः १, ८४, २; ९३८
 अ - शास्त्रवारः १०, ९९, ५; २६८४
 अ - शास्त्रिहा ८, ८९, २; २३८५
 सु - शक्तिः १०, १०४, १०; २७१२

पुरु - शाकः ३, ३५, ७; १५१८
 सु - शिप्रः १, ९, ३; ५०
 हिरि - शिप्रः ६, २९, ६; १९६७
 तुवि - शुष्मः २ २२, १; १२२३
 सत्य - शुष्मः १, ५१, १५; ७५९
 गाथ - श्रवाः ८, २ ३८; १५३
 गूर्त - श्रवा १, ६१, ५; ८६२
 बृहत् - श्रवाः १, ५४, ३; ७८८
 सु - श्रवस्तमः १, १३१, ७; १०२७
 सु - श्रवस्यः १, १७८, ४; १०९९
 वन्दन - श्रुत् १, ५६, ७; ८०३
 वि - श्रुतः १, ६२, १; ८७२
 मन - श्रुतः ३, ५२, ४; १४४९
 सु - श्रुतः ३, ३६, १; १३२३
 हवन - श्रुत ८ १२, २३; ३१०
 आ - श्रुत्कर्णः १, १०, ९; ६६
 प्र - सक्षिन् ८, ३२, २७; २७६
 कव [वा] - सखः ५, ३४, ३; १७२९
 मरुत् - सखा ८, ७६, २; ६२९
 श्रावयन् - सखा ८, ४६, १२; १८२८
 अप्रामि - सत्यः ८, ६१, ४; ५५१
 अभि - सत्त्वः १०, १०३, ५; २६९५
 सतीन - सत्त्वा १, १००, १; ९५७
 सत्य - सत्त्व ६, ३१, ५; २०१०
 गो - सन [गोषणः] ४ ३२, २२; १६६६
 सु - सनिता ८, ४६, २०. १८३६
 त्वेष - संदक् ६, २२, ९; १९१५
 सु - संदशः १, ८२, ३; २२७
 अ - समः ६, ३६, ४; २०३४
 अ - समाति ओजा. ६, २९, ६; १९६७
 चतुः - समुद्रः १०, ४७, २; २८४३
 सु - स-[ष]-व्यः ८, ३३, ५; २१४
 अभिमाति - सह [षाहं] १०, १०४ ७; २७०९
 ऋति - सहः [ऋतीवहः] ८, ४५, ३५; ४७७
 चर्षणी - सहः ६, ४६, ६; २०९५
 जनम् - सहः २, १, २३; १२१९
 नृ - सहः [नृषाहः] ८, १६, १; ३८२
 प्र - सहः [प्रसाहः] ८, १७, ४; १८४४
 प्रा - सहः १, १२९, ४; १००३
 विश्व - सहः [विश्वसाहः] ३, ४७, ५; १४१८
 तुरा - साह [तुराषाहः] ३, ४८, ४; १४२२

पुरा - साह् [पुराषाद्] १०,७४,६; २६३९
 पृतना - साह् [पृतनाषाद्] १,१७५,२; १०८०
 प्र-आशु - साह् [षाद्] ४,२५,६; २५९३
 वृथा - साह् [षाद्] १,६३,४; ८८८
 सत्रा - साह् [षाद्] २,२१,२,३; १२१८-१३
 अभि - सा [षा] ३,५१,२; १४३५
 धाम - साच ३,५१,२; १४३५
 अश्व - सातमः १,१७५,५ १०८३
 लोक - साता ६,१८,६; १८६१
 नृ - साता ७,२७,१; २२०३
 शूर - साता ७,२३,५ ३०७५
 ऊर्ध्व - सान १०,९९,७ २६८३
 ऋज - सान ४,२१,५; १५४८
 पृदाकु - सातु ८,१७,१५; ४०८
 मन्द - सान १,१०,११, ६८
 सु - सा [षा] ८,७८,४; ६५४
 इन्द्र - सारथि ४,४६,२, ३२२१
 पुरु - निस्-सि [षि] ध् १,१०,५; ६२
 अ - सोढ [अषाढः] २,२१,२; १२१८
 सु - सु [षु] म् १०,१०४,५; २७०७
 सु-अभिष्टि - सुम्नः ६,२०,८, १८९१
 अ - सुर १,५५,३, ७८८
 शवसः - सुतु १,६२,९; ८८०
 सहसः - सुतु ६,१८,११; १८९६
 सम् - सुष्टजित् १०,१०३,२; २६९४
 अयुक् - सेन १०,१३८,५, २७२६
 सर्व - सेन ५,३०,३; १६८४
 सु - स्तु [ष्टु] १०,१०४,५; २७०७
 भरि - स्तु [ष्टु] तः ८,१,२२; १०८
 पुरु - स्तु [ष्टु] तः १,११,४; ७३
 सु - स्तु [ष्टु] तः १,१२९,११, १०१०
 सध - स्तुती ८,३८,४, ३०९४
 सु - स्तु [ष्टु] तिः ८,९६,१२; २३५६
 अ - निस्-स्तु [ष्टु] तः ८,३३,२; २१८
 अ - स्तुतः १,४,४; ७
 पर्वते - स्था [ष्टा] ६,२२,२; १९०८
 रथे - स्था [ष्टा] १,१७३,४; १०५९
 वन्दने - स्था [ष्टा] १,१७३,९; १०६४
 वन्दुरे - स्था [ष्टा] ३,४३,१; १३९१
 हरि - स्था [ष्टा] ३,४९,१, १४२५
 पुरस् - स्थाता ८,४६,१३; १८२९

ऋभु - स्थि [ष्टि] रः ८,७७,८; ६४७
 अनु - स्पष्टः १०,१६०,४; २८२७
 धन - स्पृत् ३, ४६,२; १४०६
 दिवि - स्पृशा १,२३,२; ३२१३
 सम् - सष्टा १०,१०३,३, २६९४
 यत - सुचा [चौ] १,१०८,४; ३०११
 अहर्हि - स्व [व] निः [णि] १,५६,४; ८०८
 तुवि - स्व [व] निः [णि] २,१७,६, ११८६
 अ-प्र - हन् [हा] ६,४४,४; २०३९
 अरुश - हन् [हा] १०,११६,४; २७५८
 अशस्ति - हन् [हा] ८,८९,२, २३८५
 असुर - हन् [हा] ६,२२,४, १९१०
 अहि - हन् [हा] २,१९,३; १२०१
 दस्यु - हन् [हा] १,१००,१२, ९६८
 पुर - हन् [हा] ६,२२,३; २०१३
 वृत्र - हन् [हा] १,१६,८, ८५
 सत्रा - हन् [हा] ४,१७,८; १४९५
 सयत् - हन् [हा] १०,४९,८; २५९७
 अरुत - हन्तुः १०,१०५,७; २७२०
 अव - हन्ता ४,२५,६; १५९३
 वि - हन्ता १,१७३,५; १०६०
 वृत्र - हन्ता ४,२१,१०; १५५३
 वृत्र - हन्तमः ५,३५,६, १७४१
 अर - हरिस्त्रिनिः १,५६,४; ८०८
 सु - हवः ३,४९,३; १४२६
 वि - हव्यः २,१८,७, ११२६
 रात - हव्याद, ६९,६; ३३११
 इयु - हस्ता १०,१०३,२; २६९३
 वज्र - हस्ता १,१७३,१०; १०६५
 भद्र - हस्ता १,१०९,४, ३०२४
 महा - हस्ती ८,८१,१; ८७०
 सु - हार्दः ८,२,५; १२०
 प्र - हाकात् ४,२०,८, १५४०
 अ-प्र - हितः ८,९९,७; २३८२
 पुरस् - हितः १,५६,३; ७९९
 पुरु - हूतः १,३०,१०; ७०८
 अ - हृणानः १०,११६,७; २७११
 प्र - हेता ८,९७,७, २३८२
 अवयात - हेकाः १,१७१,६, ३२६८
 अ - हेकमानः ६,४१,१; १९९३
 अ - हयः ८,७०,१३; २३३३



दैवत-संहिता ।

[ऋग्वेदःसामाथर्वणा संहितानां सर्वान् मन्त्रान् देवतायुसारेण सगृह्य निमिता ।]

३ सोमदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ. ९ । १ । १—१०)

(१—१०) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

स्वादिष्टया मदिष्टया	पर्वस्व सोम धारया	। इन्द्राय पातवे सुतः	१
रक्षोहा विश्वचर्षणि	रामि योनिमयोहतम्	। द्रुणां सधस्थमासदत्	२
वरिवोधातमो भव	मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः	। पर्षि राधो मघोनाम्	३
अभ्यर्ष महानां	देवानां वीतिमन्धसा	। अभि वाजमुत श्रवः	४
त्वामच्छा चरामसि	तदिदर्थं दिवेदिवे	। इन्द्रो त्वे न आशसः	५ ५
पुनाति ते परिस्रुतं	सोमं सूर्यस्य दुहिता	। वारेण शश्वता तना	६
तमीमण्वीः समर्य आ	गृष्णन्ति योषणो दश	। स्वसारः पार्ये दिवि	७
तमीं हिन्वन्त्यग्रवो	धमन्ति वाकुरं दतिम्	। त्रिधातु वारणं मधु	८
अभीष्टममम्या उत	श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्	। सोममिन्द्राय पातवे	९
अस्येदिन्द्रो मदेष्वा	विश्वा वृत्राणि जिघ्रते	। शूरो मघा च मंहते	१० १०

॥ २ ॥ (ऋ. ९ । २ । १—१०)

(११—२०) मेधातिथिः काण्व ।

पर्वस्व देववीरति	पवित्रं सोम रंहा	। इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश	१
आ वच्यस्व महि प्सरो	वृषेन्दो वृषवत्तमः	। आ योनिं धर्णसिः सदः	२
अधुक्षत प्रियं मधु	धारा सुतस्य वेधसः	। अपो वसिष्ठ सुक्रतुः	३
महान्तं त्वा महीर	न्वापो अर्षन्ति सिन्धवः	। यद्रोभिर्वासयिष्यसे	४
समुद्रो अप्सु मामृजे	विष्टम्भो धरुणो दिवः	। सोमः पवित्रे अस्मयुः	५ १५
अर्चिकदुद् वृषा हरि	र्महान् मित्रो न दर्शतः	। सं सूर्येण रोचते	६
गिरस्त इन्दु ओजसा	मर्मृज्यन्ते अपस्युवः	। याभिर्मदाय शुम्भसे	७ १७

दै० [सोमः] १

तं त्वा मदाय घृष्य उ लोककृत्नुमीमहे । तव प्रशस्तयो महीः	८
अस्मभ्यमिन्दविन्द्र्युर्मध्वः पवस्व धारया । पुर्जन्यो वृष्टिमाँ इव	९
गोषा इन्दो नृषा अस्यश्चसा वाजसा उत । आत्मा यज्ञस्य पूर्यः	१० २०

॥ ३ ॥ (ऋ. ९।३। १—१०)

(११—३०) आजीगर्तिः शुनःशेषः, कुत्रिमो वैश्वामित्रो देवरातः ।

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति । अभि द्रोणान्यासदम्	१
एष देवो विपा कृतो ऽति हूरांसि धावति । पवमानो अदाभ्यः	२
एष देवो विपन्युभिः पवमान क्रतायुभिः । हरिर्वाजाय मृज्यते	३
एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्त्वभिः । पवमानः सिषासति	४
एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति । आविष्कृणोति वग्वनुम्	५ २५
एष विप्रैरभिष्टुतो ऽपो देवो वि गाहते । दधद् रत्नानि दाशुषं	६
एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया । पवमानः कनिकदत्	७
एष दिवं व्यासरत् तिरो रजांस्यस्पृतः । पवमानः स्वध्वरः	८
एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः । हरिः पवित्रे अर्षति	९
एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः । धारया पवते सुतः	१० ३०

॥ ४ ॥ (ऋ. ९।४। १—१०)

(३१—४०) हिरण्यस्तृण आङ्गिरसः ।

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः । अथा नो वस्यसस्कृधि	१
सना ज्योतिः सना स्वर्गविश्वा च सोम सौमगा । अथा नो वस्यसस्कृधि	२
सना दक्षमुत क्रतुमर्ष सोम मृधो जहि । अथा नो वस्यसस्कृधि	३
पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे । अथा नो वस्यसस्कृधि	४
त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः । अथा नो वस्यसस्कृधि	५ ३५
तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक् पश्येम सूर्यम् । अथा नो वस्यसस्कृधि	६
अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विवर्हसं रयिम् । अथा नो वस्यसस्कृधि	७
अभ्यर्षानपच्युतो रयिं समत्सु सासहिः । अथा नो वस्यसस्कृधि	८
त्वां यज्ञैरवीवृधन् पवमान विधर्मणि । अथा नो वस्यसस्कृधि	९
रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर । अथा नो वस्यसस्कृधि	१० ४०

॥ ५ ॥ (ऋ ९ । ६ । १-९)

(४१-१९३) असित काश्यपो देवलो वा ।

मन्द्रया सोम धारया	वृषा पवस्व देवयुः	। अव्यो वारैष्वस्मयुः	१
अभि त्वं मद्यं मद—मिन्द्रविन्द्र इति क्षर		। अभि वाजिनो अर्वतः	२
अभि त्वं पूर्य्य मदं सुवानो अर्ष पवित्र आ		। अभि वाजमुत श्रवः	३
अनु द्रप्सास इन्द्रव आपो न प्रवत्तासरन्		। पुनाना इन्द्रमाशत	४
यमर्त्यामिव वाजिनै मृजन्ति योषणो दश		। वने क्रीळन्तमर्त्यविम्	५ ४५
तं गोभिर्वृषणं रसं मदाय देवशीतये		। सुतं भराय सं सृज	६
देवो देवाय धारये—न्द्राय पवते सुतः		। पयो यदस्य पीपयत्	७
आत्मा यज्ञस्य रंक्षा सुष्वाणः पवते सुतः		। ग्रलं नि पाति काव्यम्	८
एवा पुनान इन्द्रयु—मदं मदिष्ठ वीतये		। गुहा चिद् दधिषे गिरः	९

॥ ६ ॥ (ऋ. ९ । ७ । १-९)

असृग्रमिन्द्रवः पथा धर्मकृतस्य सुश्रियः	। विदाना अस्य योजनम्	१ ५०
प्र धारा मध्वो अग्रियो महीरपो वि गाहते	। हविर्हविष्पु वन्द्यः	२
प्र युजो वाचो अग्रियो वृषाव चक्रद्व वने	। सन्नाभि मृत्यो अध्वरः	३
परि यत् काव्या कवि—र्म्णा वसानो अर्षति	। स्वर्वाजी सिपासति	४
पर्वमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति	। यदीमृषन्ति वेधसः	५
अव्यो वारं परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति	। रेभो वंनुष्यते मती	६ ५५
स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति	। रणा यो अस्य धर्मभिः	७
आ मित्रावरुणा भगं मध्वः पवन्त ऊर्मयः	। विदाना अस्य शक्माभिः	८
अस्मभ्यं रोदसी रयि मध्वो वाजस्य सातये	। श्रवो वसूनि सं जितम्	९

॥ ७ ॥ (ऋ ९ । ८ । १-९)

एते सोमा अभि प्रिय—मिन्द्रस्य काममक्षरन्	। वर्धन्तो अस्य वीर्यम्	१
पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना	। ते नो धान्तु सुवीर्यम्	२ ६०
इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय	। ऋतस्य योनिमासदम्	३
मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः	। अनु विप्रा अमादिषुः	४
देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्ठ्यः	। सं गोभिर्वासयामसि	५ ६३

पुनानः कलशेषा वस्त्राण्यरुषो हरिः	। परि गव्यान्व्यव्यत	६	
मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः	। इन्दो सखायमा विश	७	६५
वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि	। सहो नः सोम पुत्सु धाः	८	
नृचक्षंसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम्	। भस्मीमहि प्रजामिषम्	९	

॥ ८ ॥ (ऋ. ९।९।१-९)

परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नृपत्योर्हितः	। सुवानो याति कविकृतुः	१	
प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहे	। वीत्यर्ष चनिष्ठया	२	
स सुनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत्	। महान् मही कृतावृधा	३	७०
स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः	। या एकमक्षि वावृधुः	४	
ता अभि सन्तमस्तृतं महे युवानमा दधुः	। इन्दुमिन्द्र तव व्रते	५	
अभि वह्निरमर्त्यः सप्त पश्यति वारवहिः	। क्रिविर्देवीरतर्पयत्	६	
अवा कल्पेषु नः पुमस्तमांसि सोम योध्या	। तानि पुनान जङ्घनः	७	
नू नव्यमे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः	। प्रत्नवद् रोचया रुचः	८	७५
पवमान महि श्रवो गामश्च रासि वीरवत्	। सना मेधां सना स्वः	९	

॥ ९ ॥ (ऋ. ९।१०।१-९)

प्र स्वानासो रथा इवाऽर्वन्तो न श्रवस्यवः	। सोमासो राये अक्रमुः	१	
हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गर्भस्त्योः	। भरासः कारिणामिव	२	
राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते	। यज्ञो न सप्त धातुभिः	३	
परि सुवानास इन्द्रो मदाय बर्हणा गिरा	। सुता अर्पन्ति धारया	४	८०
आपानासो विवस्वतो जनन्त उषसो भगम्	। स्ररा अण्वं वि तन्वते	५	
अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः	। वृष्णो हरस आयवः	६	
समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः	। पदमेकस्य पिप्रतः	७	
नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुश्चित् सूर्ये सचा	। कवेरपत्यमा दुहे	८	
अभि प्रिया दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहाहितम्	। सूरः पश्यति चक्षसा	९	८५

॥ १० ॥ (ऋ. ९।११।१-९)

उपासै गायता नरः पवमानायेन्द्रवे	। अभि देवा इयक्षते	१	
अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः	। देवं देवाय देवयु	२	
स नः पवस्व शं गत्रे शं जनाय शमर्वते	। शं राजानोषधीभ्यः	३	८८

बभ्रवे नु स्वतवसे ऽरुणाय दिविस्पृशे	सोमाय गाथमर्चत	४	
हस्तच्युतेभिरर्द्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन	मधावा धावता मधुं	५	९०
नमसेदुर्प सीदत दुधेदुभि श्रीणीतन	इन्दुमिन्द्रे दधातन	६	
अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोमं शं गवे	देवेभ्यो अनुकामकृत्	७	
इन्द्राय सोमं पातवे मदाय परिं पिच्यसे	मनश्चिन्मनसस्पतिः	८	
पवमान सुवीर्यं रयिं सोमं रिरिहि नः	इन्द्राविन्द्रेण नो युजा	९	

॥ ११ ॥ (ऋ. ९ । १२ । १-९)

सोमा असुग्रमिन्दवः सुता क्रतस्य सार्दने	इन्द्राय मधुमत्तमाः	१	९५
अभि विप्रां अनूपत गावो वृत्सं न मातरः	इन्द्रं सोमस्य पीतये	२	
मदच्युत् क्षेति सार्दने सिन्धोरूमा विपश्चित्	सोमो गौरी अधि श्रितः	३	
दिवो नाभा विचक्षणो ऽव्यो वारं महीयते	सोमो यः सुक्रतुः कविः	४	
यः सोमः कलशेषाँ अन्तः पवित्र आहितः	तमिन्दुः परिं षस्वजे	५	
प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपिं	जिन्वन् कोशं मधुश्रुतम्	६	१००
नित्यस्तोत्रो वनस्पतिं धीनामन्तः संवर्द्धयः	हिन्वानो मानुषा युगा	७	
अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति	विप्रस्य धारया कविः	८	
आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम्	असे इन्दो स्वाभुवम्	९	

॥ १२ ॥ (ऋ. ९ । १३ । १-९)

सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः	वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम्	१	
पवमानमवस्यवो विप्रमाभि प्र गायत	सुष्वाणं देववीतये	२	१०५
पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः	गुणानां देववीतये	३	
उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः	द्युमदिन्दो सुवीर्यम्	४	
ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम्	सुवाना देवास इन्दवः	५	
अत्या हियाना न हेतुभि रसृग्रं वाजसातये	वि वारमव्यमाश्वः	६	
वाश्रा अर्षन्तीन्दवो ऽभि वृत्सं न धेनवः	दुधन्विरे गर्भस्त्योः	७	११०
जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिकदत्	विश्वा अप द्विषो जहि	८	
अपन्नन्तो अरावणः पवमानाः स्वर्दशः	योनोवृतस्य सीदत	९	

॥ १३ ॥ (ऋ. ९ । १४ । १-८)

परि प्रासिष्यदत् कविः सिन्धोरूमावधि श्रितः	कारं विभ्रत् पुरुस्पृहम्	१	
गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः	परिष्कृण्वन्ति धर्णासिम्	२	११४

आदस्य शुष्मिणो रसे	विश्वे देवा अमत्सत	। यदी गोभिर्वसायते	३	११५
निरिणानो वि धावति	जहच्छर्याणि तान्वा	। अत्रा सं जिघ्रते युजा	४	
नप्तीभिर्यो विवस्वतः	शुभ्रो न मामृजे युवा	। गाः कृण्वानो न निर्णिजम्	५	
अति श्रिती तिरश्चता	गव्या जिगात्यण्व्या	। वग्नुमियति यं विदे	६	
अभि क्षिपः समग्मत	मर्जयन्तीरिषस्पतिम्	। पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः	७	
परि दिव्यानि मर्मशूद्	विश्वानि सोम पार्थिवा	। वसूनि याह्यस्मयुः	८	१२०

॥ १४ ॥ (ऋ ९ । १५ । १-८)

एष धिया यात्यण्व्या	शूरो रथेभिराशुभिः	। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्	१	
एष पुरु धियायते	बृहते देवतातये	। यत्रामृतांस आमते	२	
एष हितो वि नीयते	ऽन्तः शुभ्रावता पथा	। यदी तुज्जन्ति भूर्णयः	३	
एष शृङ्गाणि दोधुव	च्छिशीते यूथ्योऽे वृषा	। नृम्णा दधान ओजसा	४	
एष रुक्मिभिरीयते	वाजी शुभ्रेभिर्शुभिः	। पतिः सिन्धूनां भवन्	५	१२५
एष वसूनि पिबुना	परुषा ययिवा अति	। अव शार्देष्टु गच्छन्ति	६	
एतं मृजन्ति मर्ज्य	सुप द्रोणेष्वायवः	। प्रचक्राणं महीरिषः	७	
एतमु त्यं दश क्षिपो	मृजन्ति सप्त धीतर्यः	। स्वायुधं मदिन्तमम्	८	

॥ १५ ॥ (ऋ ९ । १६ । १-८)

प्र ते स्रोतार ओण्योऽे	रसं मदाय वृष्वये	। सर्गो न तुक्येतेशः	१	
ऋत्वा दक्षस्य रथ्य	मपो वमानमन्धसा	। गोषामर्गेषु सश्विम	२	१३०
अनसमप्सु दुष्टरं	सोमं पवित्र आ सृज	। पुनीहीन्द्राय पातवे	३	
प्र पुनानस्य चेतसा	सोमः पवित्रे अर्षति	। ऋत्वा सधस्थमासदत्	४	
प्र त्वा नमोभिरिन्दव	इन्द्र सोमा असृक्षत	। महे भराय कारिणः	५	
पुनानो रूपे अव्यये	विश्वा अर्षन्नभि श्रियः	। शूरो न गोषु तिष्ठति	६	
दिवो न सानु पिप्युषी	धारा सुतस्य वेधसः	। वृथा पवित्रे अर्षति	७	१३५
त्वं सोम विपश्चितं	तना पुनान आयुषु	। अव्यो वारं वि धावमि	८	

॥ १६ ॥ (ऋ ९ । १७ । १-८)

प्र निम्नेनेव सिन्धवो	घनन्तो वृत्राणि भूर्णयः	। सोमा असृग्रमाश्वः	१	
अभि सुवानास इन्दवो	वृष्टयः पृथिवीमिव	। इन्द्रं सोमासो अक्षरन्	२	१३८

अत्यूर्मिर्मत्सरो मदुः	सोमः पवित्रे अर्पति	। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः	३
आ कलशेषु धावति	पवित्रे परि षिच्यते	। उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते	४ १४०
अति त्री सोम रोचना	रोहन् न भ्राजसे दिवम्	। इष्णन्त्सूर्यं न चोदयः	५
अभि विप्रां अनूपत	मूर्धन् यज्ञस्य कारवः	। दधानाश्चक्षसि प्रियम्	६
तमु त्वा वाजिनं नरो	धीभिर्विप्रां अवस्यवः	। मृजन्ति देवतातये	७
मधोर्धारामनु क्षर	तीव्रः सधस्थमासदः	। चारुर्ऋताय पीतये	८

॥ १७ ॥ (ऋ ९ । १८ । १-७)

परि सुवानो गिरिष्ठाः	पवित्रे सोमो अक्षाः	। मर्देषु सर्वधा असि	१ १४५
त्वं विप्रस्त्वं कवि—र्मधु	प्र जातमन्धसः	। मर्देषु सर्वधा असि	२
तव विश्वे सजोषसो	देवासः पीतिमाशत	। मर्देषु सर्वधा असि	३
आ यो विश्वानि वार्या	वस्त्रानि हस्तयोर्दधे	। मर्देषु सर्वधा असि	४
य इमे रोदसी मही	सं मातरैव दोहते	। मर्देषु सर्वधा असि	५
परि यो रोदसी उभे	सद्यो वाजैभिरर्षति	। मर्देषु सर्वधा असि	६ १५०
स शुष्मी कलशेष्व	पुनानो अचिक्रदत्	। मर्देषु सर्वधा असि	७

॥ १८ ॥ (ऋ ९ । १९ । १-७)

यत् सोम चित्रमुक्थ्यं	दिव्यं पार्थिवं वसु	। तन्नः पुनान आ भर	१
युवं हि स्थः स्वर्पती	इन्द्रश्च सोम गोपती	। ईशाना पिप्यत धियः	२
वृषा पुनान आयुषु	स्तनयन्नाधि बर्हिषि	। हरिः सन् योनिमासदत्	३
अवावशन्त धीतयो	वृषभस्याधि रेतसि	। सूनोर्वत्सस्य मातरः	४ १५५
कुविद् वृषण्यन्तीभ्यः	पुनानो गर्भमादधत्	। याः शुक्रं दुहते पर्यः	५
उप शिक्षापतस्थुषो	भियसमा धेहि शत्रुषु	। पवमान विदा रयिम्	६
नि शत्रोः सोम वृण्यं	नि शुष्मं नि वयस्तिर	। दूरे वा सतो अन्ति वा	७

॥ १९ ॥ (ऋ ९ । २० । १-७)

प्र कविर्देववीतये	ऽव्यो वारैभिरर्षति	। साह्वान् विश्वा अभि स्पृधः	१
स हि ध्मा जरितृभ्य आ	वाजं गोमन्तमिन्वति	। पवमानः सहस्रिणम्	२ १६०
परि विश्वानि चेतसा	मृशसे पवसे मती	। स नः सोम श्रवो विदः	३
अभ्यर्ष बृहद् यशो	मधर्वद्भ्यो ध्रुवं रयिम्	। इषं स्तोतृभ्य आ भर	४ १६२

त्वं राजैव सुव्रतो	गिरः सोमा विवेशिथ	। पुनानो वह्ने अद्भुत	५	
स वहिरप्सु दुष्टरो	मृज्यमानो गर्भस्त्योः	। सोमश्चमूषु सीदति	६	
क्रीळ्मखो न मह्युः	पवित्रं सोम गच्छसि	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	७	१६५

॥ २० ॥ (ऋ ९ । २१ । १-७)

एते धावन्तीन्दवः	सोमा इन्द्राय घृष्वयः	। मत्सरासः स्वविदः	१	
प्रवृण्वन्तो अभियुजः	सुष्वये वरिवोविदः	। स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः	२	
वृथा क्रीळन्त इन्दवः	सधस्थमभ्येकमिह	। सिन्धोरूमा व्यक्षरन्	३	
एते विश्वानि वार्या	पर्वमानास आशत	। हिता न मस्यो रथे	४	
आसिन् पिशङ्गमिन्दवो	दधाता वेनमादिशे	। यो अस्मभ्यमरावा	५	१७०
ऋधुर्न रथ्यं नद्यं	दधाता केतमादिशे	। शुक्राः पवध्वमर्णसा	६	
एत उ त्वे अवीवशन्	काष्ठां वाजिनो अकृत	। सतः प्रासाविषुर्मतिम्	७	

॥ २१ ॥ (ऋ ९ । २२ । १-७)

एत सोमास आशवो	रथा इव प्र वाजिनः	। सर्गाः सृष्टा अहेषत	१	
एते वाता इवोरवः	पर्जन्यस्येव वृष्टयः	। अग्नेरिव भ्रमा वृथा	२	
एते पूता विपश्चितः	सोमासो दध्याशिरः	। विषा व्यानशुर्धियः	३	१७५
एते मृष्टा अमर्त्याः	ससृवांसो न शश्रमुः	। इयक्षन्तः पथो रजः	४	
एते पृष्ठानि रोदसो	विप्रयन्तो व्यानशुः	। उतेदमुत्तमं रजः	५	
तन्तुं तन्वानमुत्तम	मनु प्रवत आशत	। उतेदमुत्तमाय्यम्	६	
त्वं सोम पुणिभ्य आ	वसु गव्यानि धारयः	। ततं तन्तुमचिक्रदः	७	

॥ २२ ॥ (ऋ. ९ । २३ । १-७)

सोमा असुग्रमाशवो	मधोर्मदस्य धारया	। अभि विश्वानि काव्या	१	१८०
अनु प्रत्तास आयवः	पदं नवीयो अक्रमुः	। रुचे जनन्त सूर्यम्	२	
आ पर्वमान नो भरा	ऽर्यो अदाशुषो गर्भम्	। कृधि प्रजावतीरिषः	३	
अभि सोमास आयवः	पर्वन्ते मद्यं मदम्	। अभि कोशं मधुश्रुतम्	४	
सोमो अर्षति धर्णासि	र्दधान इन्द्रियं रसम्	। सुवीरो अभिशस्तिपाः	५	
इन्द्राय सोम पवसे	देवेभ्यः सधमाद्यः	। इन्द्रो वाजं सिषाससि	६	१८५
अस्य पीत्वा मदाना	मिन्द्रो वृत्राण्यप्रति	। जघान जघनच्च नु	७	१८६

॥ २३ ॥ (ऋ. ९ । २४ । १-७)

प्र सोमासो अधन्विषुः पर्वमानास इन्द्रवः । श्रीणाना अप्सु मृज्जत	१
अभि गावो अधन्विषु—रापो न प्रवता यतीः । पुनाना इन्द्रमाशत	२
प्र पर्वमान धन्वसि सोमेन्द्राय पातवे । नृभिर्यतो वि नीयसे	३
त्वं सोम नृमादनुः पर्वस्व चर्षणीसहे । सस्त्रियो अनुमाद्यः	४ १९०
इन्दो यदाद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधायसि । अरमिन्द्रस्य धाम्ने	५
पर्वस्व वृत्रहन्तमो—कथेमिरनुमाद्यः । शुचिः पावको अद्भुतः	६
शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतस्य मध्वः । देवा रीरघशंसहा	७ १९३

॥ २४ ॥ (ऋ. ९ । २५ । १-६) (१९४—१९९) दृळ्हच्युत आगस्त्यः ।

पर्वस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे । मरुद्भ्यो वायवे मदः	१
पर्वमान धिया हितोऽभि योनिं कनिकदत् । धर्मेणा वायुमा विश	२ १९५
सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः । वृत्रहा देववीतमः	३
विश्वा रूपाण्याविशन् पुनानो याति हर्यतः । यत्रामृतास आसते	४
अरुषो जनयन् गिरः सोमः पवत आयुषक् । इन्द्रं गच्छन् कविकृतुः	५
आ पर्वस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे । अर्कस्य योनिमासदम्	६ १९९

॥ २५ ॥ (ऋ. ९ । २६ । १-६) (२००—२०५) इधमवाहो दाढेच्युतः ।

तममृक्षन्त वाजिन—मुपस्थे अदितेरधि । विप्रासो अण्व्या धिया	१ २००
तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम् । इन्दुं धर्तारमा दिवः	२
तं वेधां मेधयाह्यन् पर्वमानमधि द्यवि । धर्णासि भूरिधायसम्	३
तमह्यन् भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः । पतिं वाचो अदाभ्यम्	४
तं सानावधि जामयो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः । हर्यतं भूरिचक्षसम्	५
तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पर्वमान गिरावृधम् । इन्दुविन्द्राय मत्सरम्	६ २०५

॥ २६ ॥ (ऋ. ९ । २७ । १-६) (२०६—२११) नृमेध आङ्गिरसः ।

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते । पुनानो मन्त्रप स्त्रिधः	१
एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित् परि पिच्यते । पवित्रे दक्षसाधनः	२
एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः । सोमो वनेषु विश्ववित्	३
एष गव्युरचिक्रदत् पर्वमानो हिरण्ययुः । इन्दुः सत्राजिदस्तृतः	४ २०९

दै० [सोमः] २

एष सूर्येण हासते पर्वमानो अधि द्यवि	। पवित्रे मत्सरो मदः	५	२१०
एष शुष्मसिष्यददन्तरिक्षे वृषा हरिः	। पुनान इन्दुरिन्द्रमा	६	२११

॥ २७ ॥ (ऋ. ९ । २८ । १—६) (२१२—२१७) प्रियमेध आङ्गिरसः ।

एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः	। अव्यो वारं वि धावति	१	
एष पवित्रे अक्षरत् सोमो देवेभ्यः सुतः	। विश्वा धामान्याविशन्	२	
एष देवः शुभायते ऽधि योनावमर्त्यः	। वृत्रहा देववीतमः	३	
एष वृषा कर्निकदद् दुशभिर्जाभिर्भिर्यतः	। अभि द्रोणानि धावति	४	२१५
एष सूर्यमरोचयत् पर्वमानो विचर्षणिः	। विश्वा धामानि विश्ववित्	५	
एष शुष्मयदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति	। देवावीरघशंसहा	६	२१७

॥ २८ ॥ (ऋ. ९ । २९ । १—६) (२१८—२२३) नृमेध आङ्गिरसः ।

प्रास्य धारा अक्षरन् वृष्णः सुतस्यौजसा	। देवाँ अनु प्रभूषतः	१	
सप्ति मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा	। ज्योतिर्ज्ञानमुक्थ्यम्	२	
सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो	। वर्धो समुद्रमुक्थ्यम्	३	२२०
विश्वा वस्त्रनि संजयन् पर्वस्व सोम धारया	। इनु द्वेषांसि सध्यक्	४	
रक्षा सु नो अररुषः स्वनात् समस्य कस्य चित्	। निदो यत्र मुमुचमहे	५	
एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पर्वस्व धारया	। द्युमन्तं शुष्ममा भर	६	२२३

॥ २९ ॥ (ऋ. ९ । ३० । १—६) (२२४—२२९) विन्दुराङ्गिरसः ।

प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन्	। पुनानो वाचमिष्यति	१	
इन्दुर्हियानः सोतृभिर्मृज्यमानः कर्निकदत्	। इयति वसुमिन्द्रियम्	२	२२५
आ नः शुष्मं नृषाह्यं वीरवन्तं पुरुस्पृहम्	। पर्वस्व सोम धारया	३	
प्र सोमो अति धारया पर्वमानो असिष्यदत्	। अभि द्रोणान्यासदम्	४	
अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरिं हिन्वन्त्यद्विभिः	। इन्दविन्द्राय पीतये	५	
सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे	। चारुं शर्षाय मत्सरम्	६	२२९

॥ ३० ॥ (ऋ. ९ । ३१ । १—६) (२३०—२३५) गोतमो राह्वगणः ।

प्र सोमासः स्वाध्यः पर्वमानासो अक्रमुः	। रयिं कृण्वन्ति चेतनम्	१	२३०
दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो द्युमवर्धनः	। भवा वाजानां पतिः	२	
तुभ्यं वाता अभिप्रियस्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः	। सोम वर्धन्ति ते महः	३	२३२

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे	४
तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रो दुदुहे अक्षितम् । वर्षिष्ठे अधि सानवि	५
स्वायुधस्य ते सतो भुवनस्य पते वयम् । इन्दो सखित्वमुदमसि	६ २३५

॥ ३१ ॥ (क. ९ । ३१ । १-६) (२३६-२४१) इयावाभ्य आत्रेयः ।

प्र सोमांसो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनः । सुता विदथे अक्रमुः	१
आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वत्याद्रिभिः । इन्दुमिन्द्राय पीतये	२
आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् । अत्यो न गोमिरज्यते	३
उभे सोमावचाकशन् मृगो न तुक्तो अर्षसि । सीदन्नृतस्य योनिमा	४
अभि गावो अनृषत् योषा जारमिव प्रियम् । अगन्नाजिं यथा हितम्	५ २४०
अस्मे धैहि द्युमद् यशो मघवञ्च मर्हं च । सनि मेधामुत श्रवः	६ २४१

॥ ३२ ॥ (क. ९ । ३२ । १-६) (२४२-२५३) त्रित आप्त्यः ।

प्र सोमांसो विपश्चितो ऽपां न यन्त्यूर्मयः । वनानि महिषा इव	१
अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा क्रतस्य धारया । वाजं गोमन्तमक्षरन्	२
सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमा अर्षन्ति विष्णवे	३
तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः । हरिरेति कर्निकदत्	४ २४५
अभि ब्रह्मीरनृषत् यद्हीर्कृतस्य मातरः । मर्मज्यन्ते दिवः शिशुम्	५
रायः समुद्रांश्चतुरो ऽस्मभ्यं सोम विश्वतः । आ पवस्व सहस्रिणः	६

॥ ३३ ॥ (क. ९ । ३३ । १-६)

प्र सुवानो धारया तनेन्दुर्हिन्वानो अर्षति । रुजद् दृळ्हा व्योजसा	१
सुत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः । सोमो अर्षति विष्णवे	२
वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः । दुहन्ति शकमना पर्यः	३ २५०
भुवत् त्रितस्य मज्यो भुवदिन्द्राय मत्सरः । संप्रैरज्यते हरिः	४
अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः । चारुं प्रियतमं हविः	५
समेनमहुता इमा गिरो अर्षन्ति ससुतः । धेनूर्वाश्रो अवीवशत्	६ २५३

॥ ३४ ॥ (क. ९ । ३५ । १-६) (२५४-२६५) प्रभूवसुराङ्गिरसः ।

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम् । यया ज्योतिर्विदार्ति नः	१
इन्दो समुद्रमीह्वय पवस्व विश्वमेजय । रायो धर्ता न ओजसा	२ २५५

त्वया वीरेण वीरवो	ऽभि ष्याम पृतन्यतः	। क्षरा णो अभि वार्यम्	३
प्र वाजमिन्दुरिष्यति	सिषासन् वाजसा ऋषिः	। व्रता विद्वान आयुधा	४
तं गीभिर्वाचमीङ्ख्यं	पुनानं वासयामसि	। सोमं जनस्य गोपतिम्	५
विश्वो यस्य व्रते जनो	दाधार धर्मेणस्पतेः	। पुनानस्य प्रभूवसोः	६

॥ ३५ ॥ (ऋ. ९ । ३६ । १—६)

अमर्जि रथ्यो यथा	पवित्रे चम्बोः सुतः	। कार्ष्मन् वाजी न्यक्रमीत्	१	२६०
स वह्निः सोम जागृविः	पर्वस्व देववीरति	। अभि कोशं मधुश्चुतम्	२	
स नो ज्योतीषि पूर्य	पर्वमान वि रोचय	। क्रत्वे दक्षाय नो हिनु	३	
शुम्भमान क्रतायुभिर्	मृज्यमानो गभस्त्योः	। पर्वते वारं अव्यये	४	
स विश्वा दाशुष वसु	सोमो दिव्यानि पार्थिवा	। पर्वतामान्तरिक्ष्या	५	
आ दिवस्पृष्टमश्चयु	र्गव्ययुः सोम रोहसि	। वीरयुः शंसस्पते	६	२६५

॥ ३६ ॥ (ऋ. ९ । ३७ । १—६) (२६६—२७७) रङ्गगण आङ्गिरसः ।

स सुतः पीतये वृषा	सोमः पवित्रे अर्पति	। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः	१	
स पवित्रे विचक्षणो	हरिरर्पति धर्णासिः	। अभि योनिं कर्निकदत्	२	
स वाजी रोचना दिवः	पर्वमानो वि धावति	। रक्षोहा वारमव्ययम्	३	
स त्रितस्याधि सानवि	पर्वमानो अरोचयत्	। जामिभिः सूर्य सह	४	
स वृत्रहा वृषा सुता	वरिवोविददाभ्यः	। सोमो वाजमिवासरत्	५	२७०
स देवः कविनेषितोऽ	भि द्रोणानि धावति	। इन्दुरिन्द्राय मंहना	६	

॥ ३७ ॥ (ऋ. ९ । ३८ । १—६)

एष उ स्य वृषा रथो	ऽव्यो वारोभिरर्पति	। गच्छन् वाजं सहासिणम्	१	
एतं त्रितस्य योषणो	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्दुमिन्द्राय पीतये	२	
एतं त्यं हरितो दश	मर्मज्यन्ते अपस्युवः	। याभिर्मदाय शुम्भते	३	
एष स्य मानुषीष्वा	श्येनो न विश्व सीदति	। गच्छज्जारो न योषितम्	४	२७५
एष स्य मद्यो रसो	ऽव चष्टे दिवः शिशुः	। य इन्दुर्वारमाविशत्	५	
एष स्य पीतये सुतो	हरिरर्पति धर्णमिः	। क्रन्दन् योनिमभि प्रियम्	६	२७७

॥ ३८ ॥ (ऋ. ९ । ३९ । १—६) (२७८—२८९) बृहन्मतिराङ्गिरसः ।

आशुरर्ष बृहन्मते	परि प्रियेण धाम्ना	। यत्र देवा इति ब्रवन्	१	
परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं	जनाय यातयन्निषः	। वृष्टिं दिवः परि स्रव	२	२७९

सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा	विचक्षाणो विरोचयन्	३	२८०
अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ	सिन्धोरूमा व्यक्षरत्	४	
आविवांसन् परावतो अथौ अर्वावतः सुतः	इन्द्राय सिच्यते मधु	५	
समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्याद्रिभिः	योनावृतस्य सीदत	६	

॥ ३९ ॥ (ऋ. ९ । ४० । १-६)

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः	शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः	१	
आ योनिमरुणो रुहद् गमदिन्द्रं वृषा सुतः	ध्रुवे सदैसि सीदति	२	२८५
नू नो रयि महार्मिन्दो ऽसभ्यं सोम विश्वतः	आ पवस्व सहस्रिणम्	३	
विश्वा सोम पवमान द्युम्नानीन्दुवा भर	विदाः सहस्रिणीरिषः	४	
स नः पुनान आ भर रयि स्तोत्रे सुवीर्यम्	जरितुर्वर्धया गिरः	५	
पुनान इन्दुवा भर सोम द्विर्हसं रयिम्	वृषन्निन्दो न उक्थ्यम्	६	२८९

॥ ४० ॥ (ऋ. ९ । ४१ । १-६) (२९०-३०७) मेध्यातिथि काण्व ।

प्र ये गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रुधुः	घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम्	१	२९०
सुव्रितस्य मनामहे ऽति सेतुं दुरान्यम्	साह्यांसो दस्युमव्रतम्	२	
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः	चरन्ति विद्युतो दिवि	३	
आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्द्रो हिरण्यवत्	अश्वाद् वाजवत् सुतः	४	
स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण	उषाः स्रयो न रश्मिभिः	५	
परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः	सरा रसेव विष्टपम्	६	२९५

॥ ४१ ॥ (ऋ. ९ । ४२ । १-६)

जनयन् रोचना दिवो जनयन्नसु स्र्यम्	वसानो गा अपो हरिः	१	
एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि	धारया पवते सुतः	२	
वावृधानाय त्वये पवन्ते वाजसातये	सोमाः सहस्रपाजसः	३	
दुहानः प्रत्नामित् पर्यः पवित्रे परि पिच्यते	क्रन्दन् देवां अजीजनत्	४	
अभि विश्वानि वार्या ऽभि देवां क्रतावृधः	सोमः पुनानो अर्षति	५	३००
गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद् वाजवत् सुतः	पवस्व बृहतीरिषः	६	

॥ ४२ ॥ (ऋ. ९ । ४३ । १-६)

यो अत्यं इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः	तं गीर्भिर्वासयामसि	१	
तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा	इन्दुमिन्द्राय प्रीतये	२	३०३

पुनानो याति हयतः सोमो गोभिः परिष्कृतः । विप्रस्य मेघ्यातिथेः	३
पर्वमान विदा रयि—मसभ्यं सोम सुश्रियम् । इन्दो सहस्रवर्चसम्	४ ३०५
इन्दुरत्यो न वाजसृत् कर्निक्रन्ति पवित्र आ । यदक्षारति देवयुः	५
पर्वस्व वाजसातये विप्रस्य गृणतो वृधे । सोम रास्व सुवीर्यम्	६ ३०७

॥ ४३ ॥ (ऋ. ९।४४।१—६) (३०८—३२५) अयास्य आङ्गिरसः ।

प्र ण इन्दो महे तन ऊर्भि न विभ्रदर्षसि । अभि देवां अयास्यः	१
मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य धारया कविः	२
अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ । सोमो याति विचर्षणिः	३ ३१०
स नः पर्वस्व वाजयु—श्चक्राणश्चारुमध्वरम् । बर्हिष्मां आ विवासति	४
स नो भर्गाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः । सोमो देवेष्वायमत्	५
स नो अद्य वसुत्तये ऋतुविद् गातुवित्तमः । वाजं जेषि श्रवो बृहत्	६

॥ ४४ ॥ (ऋ. ९।४५।१—६)

स पर्वस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये । इन्दुविन्द्राय पीतये	१
स नो अर्षाभि दूत्यं त्वमिन्द्राय तोशसे । देवान्सखिभ्य आ वरम्	२ ३१५
उत त्वामरुणं वयं गोभिरङ्गमो मदाय कम् । वि नो राये दुरो वृधि	३
अत्यु पवित्रमक्रमीद् वाजी धुरं न यामनि । इन्दुर्देवेषु पत्यते	४
समी सखायो अस्वरन् वने क्रीळन्तमत्यविम् । इन्दुं नावा अन्वषत	५
तया पर्वस्व धारया यया पीतो विचक्षसे । इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम्	६

॥ ४५ ॥ (ऋ. ९।४६।१—६)

असृग्रन् देववीतये ऽत्यासः कृत्वा इव । क्षरन्तः पर्वतावृधः	१ ३२०
परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती । वायुं सोमा असृक्षत	२
एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः । इन्द्रं वर्धन्ति कर्माभिः	३
आ धावता सुहस्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना । गोभिः श्रीणीत मत्सरम्	४
स पर्वस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः । अस्मभ्यं सोम गातुवित्	५
एतं मृजन्ति मर्ज्यं पर्वमानं दश क्षिपः । इन्द्राय मत्सरं मदम्	६ ३२५

॥ ४६ ॥ (ऋ. ९।४७।१—५) (३२६—३४०) काविर्भार्गवः ।

अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदुभ्यवर्धत । मन्दान उद् वृषायते	१
कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा । ऋणा च धृष्णुश्चयते	२ ३२७

आत् सोमं इन्द्रियो रसो	वज्रः सहस्रसा भुवत्	। उक्थं यदस्य जायते	३
स्वयं कविर्विधुर्तरि	विप्राय रत्नमिच्छति	। यदी मर्मज्यते धियः	४
सिषासन् रयीणां	वाजेष्वर्वातामिव	। भरेषु जिग्युषामसि	५ ३३०

॥ ४७ ॥ (ऋ. ९ । ४८ । १-५)

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं	सधस्थेषु महो दिवः	। चारुं सुकृत्ययेमहे	१
संवृक्तधृष्णमुक्थ्यं	महामहित्रतं मदम्	। शतं पुरो रुरुक्षणिम्	२
अतस्त्वा रयिमभि	राजानं सुक्रतो दिवः	। सुपर्णो अव्यधिर्भरत्	३
विश्वस्मा इत् स्वर्दृशे	साधारणं रजस्तुरम्	। गोपामृतस्य विर्भरत्	४
अधा हिन्वान इन्द्रियं	ज्यायो महित्वमानशे	। अभिष्टिकृद् विचर्षणिः	५ ३३५

॥ ४८ ॥ (ऋ. ९ । ४९ । १-५)

पवस्व वृष्टिमा सु नो	ऽपामूर्भि दिवस्पारि	। अयक्ष्मा बृहतीरिषः	१
तया पवस्व धारया	यया गाव इहागमन्	। जन्यास उप नो गृहम्	२
घृतं पवस्व धारया	यज्ञेषु देववीतमः	। अस्मभ्यं वृष्टिमा पव	३
स न ऊर्जे व्यय्यं	पवित्रं धाव धारया	। देवांसः शृणवन् हि कम्	४
पवमानो असिष्यदद्	रक्षांस्यपजङ्घनत्	। प्रलवद् रोचयन् रुचः	५ ३४०

॥ ४९ ॥ (ऋ. ९ । ५० । १-५) (३४१-३५५) उच्यते आङ्गिरसः ।

उत् तै शुष्मास ईरते	सिन्धोरूर्ध्वैरिव स्वनः	। वाणस्य चोदया पविम्	१
प्रसवे त उदीरते	तिस्रो वाचो मखस्युवः	। यदव्य एषि सानवि	२
अव्यो वारे परि प्रियं	हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। पवमानं मधुश्चतम्	३
आ पवस्व मदिन्तम	पवित्रं धारया कवे	। अर्कस्य योनिमासदम्	४
स पवस्व मदिन्तम्	गोभिरञ्जानो अक्तुभिः	। इन्द्रविन्द्राय पीतये	५ ३४५

॥ ५० ॥ (ऋ. ९ । ५१ । १-५)

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	सोमं पवित्र आ सृज	। पुनीहीन्द्राय पातवे	१
दिवः पीयूषमुत्तमं	सोममिन्द्राय वज्रिणे	। सुनोता मधुमत्तमम्	२
तव त्य इन्द्रो अन्धसो	देवा मधोर्व्यश्नते	। पवमानस्य मरुतः	३
त्वं हि सोम वर्धयन्तसुतो	मदाय भूर्णये	। वृषन्तस्तोतारमूतये	४
अभ्यर्ष विचक्षण	पवित्रं धारया सुतः	। अभि वाजमुत श्रवः	५ ३५०

॥ ५१ ॥ (ऋ. ९ । ५२ । १—५)

परिं द्युक्षः सनद्रयि—भरद्वाजं नो अन्धसा	। सुवानो अर्ष पवित्र आ	१
तव प्रत्नेभिरध्वभि—रव्यो वारे परिं प्रियः	। सहस्रधारो यात तना	२
चरुर्न यस्तमीदृख्ये—न्दो न दानमीह्वय	। वधैर्वधस्तवीह्वय	३
नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्	। यो अस्मां आदिदशति	४
शतं न इन्द अतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम्	। पर्वस्व मंहयद्रयिः	५ ३१५

॥ ५२ ॥ (ऋ. ९ । ५३ । १—४) (३५६—३८७) अवन्सारः काश्यपः ।

उत् ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः	। नुदस्व याः परिसृधः	१
अया निजभिरोजसा रथसङ्गे धने हिते	। स्तवा अविभ्युपा हृदा	२
अस्य व्रतानि नाधृषे पर्वमानस्य दूढ्या	। रुज यस्त्वा पृतन्यति	३
तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम्	। इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्	४

॥ ५३ ॥ (ऋ. ९ । ५४ । १—४)

अस्य श्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुहे अहयः	। पर्यः सहस्रसामृषिम्	१ ३६०
अयं सूर्य इवोपट्—ग्यं सरांसि धावति	। सप्त प्रवत आ दिवम्	२
अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि	। सोमो देवो न सूर्यः	३
परिं णो देववीतये वाजं अर्षसि गोमतः	। पुनान इन्दविन्द्रयुः	४

॥ ५४ ॥ (ऋ. ९ । ५५ । १—४)

यवैयवं नो अन्धसा पुष्टं पुष्टं परिं स्रव	। सोम विश्वा च सौभगा	१
इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः	। नि बहिषिं प्रिये सदाः	२ ३६५
उत नो गोविदश्चवित् पर्वस्व सोमान्धसा	। मक्षूतमेभिरहभिः	३
यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्यं	। स पर्वस्व सहस्रजित्	४

॥ ५५ ॥ (ऋ. ९ । ५६ । १—४)

परि सोमं ऋतं बृह—दाशुः पवित्रे अर्पति	। विघ्नन् रक्षांसि देवयुः	१
यत् सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः	। इन्द्रस्य सख्यमाविशन्	२
अभि त्वा योषणो दशं जारं न कन्यानुपत	। मृज्यसे सोम सातये	३ ३७०
त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परिं स्रव	। नृन्स्तोतृन् पाषाहंसः	४ ३७१

॥ ५६ ॥ (ऋ. ९ । ५७ । १-४)

प्र ते धारा असुश्रुतो दिवो न यन्ति वृष्टयः । अच्छा वाजं सहस्रिणम्	१
अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति । हरिस्तुज्ज्ञान आयुधा	२
स मर्मज्ञान आयुभि—रिभो राजैव सुव्रतः । श्येनो न वंसुं पीदति	३
स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि । पुनान इन्दुवा भर	४ ३७५

॥ ५७ ॥ (ऋ. ९ । ५८ । १-४)

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः । तरत् स मन्दी धावति	१
उस्त्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः । तरत् स मन्दी धावति	२
ध्वस्योः पुरुषन्त्यो—रा सहस्राणि दबहे । तरत् स मन्दी धावति	३
आ ययोस्त्रिशतं तना सहस्राणि च दबहे । तरत् स मन्दी धावति	४

॥ ५८ ॥ (ऋ. ९ । ५९ । १-४)

पवस्व गोजिदंश्चजिद् विश्वजित् सोम रण्यजित् । प्रजावद् रत्नमा भर	१ ३८०
पवस्वाङ्गो अदाभ्यः पवस्वौषधीभ्यः । पवस्व धिषणाभ्यः	२
त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर । कविः सीदु नि बर्हिषि	३
पवमान स्वर्विदो जायमानोऽभवो महान् । इन्दो विश्वा अभीदसि	४

॥ ५९ ॥ (ऋ. ९ । ६० । १-४) गायत्री, ३ पुरजणिक् ।

प्र गायत्रेण गायत पवमानं विचर्षणिम् । इन्दुं सहस्रचक्षसम्	१
तं त्वा सहस्रचक्षस—मथो सहस्रभर्णसम् । अति वारमपाविषुः	२ ३८५
अति वारान् पवमानो असिष्यदत् कलशो अभि धावति । इन्द्रस्य हाद्यां विशन्	३
इन्द्रस्य सोम राधसे शं पवस्व विचर्षणे । प्रजावद् रेतु आ भर	४ ३८७

॥ ६० ॥ (ऋ. ९ । ६१ । १-३०) (३८८—४१७) अमहीयुराङ्गिरसः ।

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा । अवाहन् नवतीर्नव	१
पुरः सद्य इत्थाधिपे दिवोदासाय शम्बरम् । अध त्यं तुर्वशं यदुम्	२
परि णो अश्वमश्वविद् गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् । क्षरा सहस्रिणीरिषः	३ ३९०
पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दुतः । सखित्वमा वृणीमहे	४
ये ते पवित्रमूर्मयो ऽभिक्षरन्ति धारया । तेभिर्नः सोम मृळय	५
स नः पुनान आ भर रथि वीरवतीमिषम् । ईशानः सोम विश्वतः	६
एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् । समादित्येभिरख्यत	७ ३९४

समिन्द्रेणोत् वायुनां सुत एति पवित्र आ	। सं सूर्यस्य रश्मिभिः	८	३९५
स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान्	। चारुमित्रे वरुणे च	९	
उच्चा ते जातमन्धसो दिवि षड्रूपा ददे	। उग्रं शर्म महि श्रवः	१०	
एना विश्वान्यर्थ आ द्युम्नानि मानुषाणाम्	। सिषासन्तो वनामहे	११	
स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः	। वरिवोवित् परि स्रव	१२	
उपो पु जातमपुतुरं गोभिर्भुङ्गं परिष्कृतम्	। इन्दुं देवा अयासिषुः	१३	४००
तामिद् वर्धन्तु नो गिरौ वत्सं संशिश्वरीरिव	। य इन्द्रस्य हृदंसनिः	१४	
अर्षी णः सोमं शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्	। वर्धो समुद्रमुक्थ्यम्	१५	
पवमानो अजीजनद् दिवश्चित्रं न तन्यतुम्	। ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत्	१६	
पवमानस्य ते रसो मदो राजन्नदुच्छुनः	। वि वारमव्यमर्षति	१७	
पवमान रसस्तव दक्षो वि राजति द्युमान्	। ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे	१८	४०५
यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा	। देवावीरघशंसहा	१९	
जग्निर्वृत्रमभित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे	। गोषा उ अश्वसा आसि	२०	
संमिश्रो अरुपो भव स्रपस्थाभिर्न धेनुभिः	। सीदञ्छद्येनो न योनिमा	२१	
स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे	। वत्रिवासं महीरपः	२२	
सुवीरामो वयं धना जयेम सोम मीद्वः	। पुनानो वर्ध नो गिरः	२३	४१०
त्वोनासुस्तवावमा स्याम वन्वन्त आमुः	। सोमं व्रतेषु जागृहि	२४	
अपन्नं पवते मृधो ऽप सोमो अराव्णः	। गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्	२५	
महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः	। रास्वेन्दो वीरवद् यशः	२६	
न त्वा शतं चन हुतो राधो दित्सन्तमा मिनन्	। यत् पुनानो मखस्यसे	२७	
पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने	। विश्वा अप द्विषो जहि	२८	४१५
अस्य ते सख्ये वयं तवेन्दो द्युम्न उत्तमे	। सासह्याम पृतन्यतः	२९	
या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे	। रक्षां समस्य नो निदः	३०	४१७

॥ ६१ ॥ (ऋ ९ । ६२ । १-३०) (४१८-४७) जमदग्निर्भागवः ।

एते असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाश्रवः	। विश्वान्यभि सौभगा	१	
विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकार्य वाजिनः	। तनां कृण्वन्तो अर्वते	२	
कृण्वन्तो वरिवो गवे ऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम्	। इलांमस्मभ्यं संयतम्	३	४२०
असाव्यं शुर्मदाया ऽप्सु दक्षो गिरिष्ठाः	। श्येनो न योनिमासदत्	४	४२१

शुभ्रमन्धो देववात—मप्सु धूतो नृभिः सुतः	। स्वदान्ति गावः पयोभिः	५	
आदीमश्वं न हेतारो ऽशुशुभ्रमृताय	। मध्वो रसं सधमादे	६	
यास्ते धारा मधुश्रुतो ऽसृग्रमिन्द ऊतये	। ताभिः पवित्रमासदः	७	
सो अर्षेन्द्राय पीतये तिर्रो रोमाण्यव्यया	। सीदन् योनावनेष्वा	८	४२५
त्वमिन्दो परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः	। वरिवोविद् घृतं पयः	९	
अयं विचर्षणिर्हितः पर्वमानः स चेतति	। हिन्वान आप्यं बृहत्	१०	
एष वृषा वृषव्रतः पर्वमानो अशस्तिहा	। करद् वसनि दाशुषे	११	
आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम्	। पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम्	१२	
एष स्य परि पिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः	। उरुगायः कविकृतुः	१३	४३०
सहस्रोतिः शतामघो विमानो रजसः कविः	। इन्द्राय पवते मर्दः	१४	
गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते	। वियोना वसताविव	१५	
पर्वमानः सुतो नृभिः सोमो वाजमिवासरत्	। चमूषु शक्मनासदम्	१६	
तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे	। ऋषीणां सप्त धीतिभिः	१७	
तं सौतारो धनस्पृत—माशुं वाजाय यातवे	। हरिं हिनोत वाजिनम्	१८	४३५
आविशन् कुलशं सुतो विश्वा अर्षन्नाभि श्रियः	। शूरो न गोषु तिष्ठति	१९	
आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः	। देवा देवेभ्यो मधुं	२०	
आ नः सोमं पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम्	। देवेभ्यो देवश्रुत्तमम्	२१	
एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे	। मदिन्तमस्य धारया	२२	
अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि	। सनद्वाजः परि स्रव	२३	४४०
उत नो गोमतीरिपो विश्वा अर्ष परिष्ठुभः	। गृणानो जमदग्निना	२४	
पर्वस्व वाचो अग्रियः सोमं चित्राभिरूतिभिः	। अभि विश्वानि काव्या	२५	
त्वं समुद्रिया अपो ऽग्रियो वाच ईरयन्	। पर्वस्व विश्वमेजय	२६	
तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तथ्यिरे	। तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः	२७	
ग्र तं दिवो न वृष्ट्यो धारा यन्त्यसश्चतः	। अभि शुक्रासुपस्तिरम्	२८	४४५
इन्द्रायेन्दुं पुनीतनो—ग्रं दक्षाय साधनम्	। ईशानं वीतिराधसम्	२९	
पर्वमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमामदत्	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	३०	४४७

॥ ६२ ॥ (क्र. ९ । ६३ । १-३०) (४४८-४७७) निधुविः काश्यपः ।

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् । अस्मे श्रवांसि धारय	१
इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः । चुमूष्वा नि षीदसि	२
सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् । मधुमाँ अस्तु वायवे	३ ४५०
एते असृग्रमाश्रवो ऽति ह्वरांसि बभ्रवः । सोमां क्रतस्य धारया	४
इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् । अपघ्नन्तो अरावणः	५
सुता अनु स्वमा रजो ऽभ्यर्पन्ति बभ्रवः । इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः	६
अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः । हिन्वानो मानुषीरपः	७
अयुक्त सूर एतं पवमानो मनावधि । अन्तरिक्षेण यातवे	८ ४५५
उत त्या हरितो दश सूर्यो अयुक्त यातवे । इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन्	९
परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् । अव्यो वारेषु सिञ्चत	१०
पवमान विदा रयिं मस्मभ्यं सोम दुष्टरम् । यो दूणाशो वनुष्यता	११
अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् । अभि वार्जमुत श्रवः	१२
सोमो देवो न सूर्यो ऽग्निभिः पवते सुतः । दधानः कलशे रसम्	१३ ४६०
एते धामान्यार्या शुक्रा क्रतस्य धारया । वार्जं गोमन्तमक्षरन्	१४
सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमोसो दध्याशिरः । पवित्रमत्यक्षरन्	१५
अ सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ । मद्रो यो देववीतमः	१६
तमीं मृजन्त्यायवो हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्दुमिन्द्राय मत्सरम्	१७
आ पवस्व हिरण्यव दश्वावत् सोम धीरवत् । वार्जं गोमन्तमा भर	१८ ४६५
परि वाजे न वाजयु मव्यो वारेषु सिञ्चत । इन्द्राय मधुमत्तमम्	१९
कृविं मृजन्ति मर्ज्यं धीभिर्प्रा अवस्यवः । वृषा कनिक्रदर्पति	२०
वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया । मती विप्राः समस्वरन्	२१
पवस्व देवायुष गिन्द्रं गच्छतु ते मदः । वायुमा रोह धर्मेणा	२२
पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् । प्रियः समुद्रमा विश	२३ ४७०
अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित् सोम मत्सरः । नुदस्वादेवयुं जनम्	२४
पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः । अभि विश्वानि काव्या	२५
पवमानास आश्रवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः । घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः	२६
पवमाना दिवस्प र्यन्तरिक्षादसृक्षत । पृथिव्या अधि सानवि	२७ ४७४

पुनानः सोम धारये—न्दो विश्वा अप सिधः । जहि रक्षांसि सुक्रतो	२८	४७५
अपघ्नन्तसोम रक्षसो ऽभ्यर्ष कर्निकदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्	२९	
अस्मे वस्त्रानि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा । इन्दो विश्वानि वार्या	३०	४७७

॥ ६३ ॥ (क्र ९ । ६४ । १-३०) (४७८—५०७) कश्यपो मारीचः ।

वृषा सोम द्युमाँ अग्नि वृषा देव वृषव्रतः । वृषा धर्माणि दधिषे	१	
वृष्णास्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा मदः । सत्यं वृषन् वृषेदसि	२	
अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः । वि नो राये दुरो वृधि	३	४८०
असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया । शुक्रासो वीरयाश्वः	४	
शुम्भमाना क्रतायुभिर्मृज्यमाना गर्भस्त्योः । पर्वन्ते वारो अव्यये	५	
ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा । पर्वन्तामान्तरिक्ष्या	६	
पर्वमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा अमृक्षत । सूर्यस्येव न रश्मयः	७	
केतुं कृण्वन् दिवस्पति विश्वा रूपाभ्यर्षसि । समुद्रः सोम पिन्वसे	८	४८५
हिन्वानो वार्चमिष्यसि पर्वमान विधर्मणि । अक्रान् देवो न सूर्यः	९	
इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती । सृजदश्वं रथीरिव	१०	
ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देवावीः पर्यक्षरत् । सीदन्नृतस्य योनिमा	११	
स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः । इन्दुविन्द्राय पीतये	१२	
इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः । इन्दो रुचाभि गा इहि	१३	४९०
पुनानो वरिवस्कृध्यर्ज जनाय गिर्वणः । हरे सृजान आशिरम्	१४	
पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् । द्युतानो वाजिभिर्यतः	१५	
प्र हिन्वानास इन्दुवो ऽच्छा समुद्रमाश्वः । धिया जूता असृक्षत	१६	
मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः । अगमन्नृतस्य योनिमा	१७	
परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा वसून्योजसा । पाहि नः शर्म वीरवत्	१८	४९५
मिमांति वह्निरेतशः पदं युजान क्रकाभिः । प्र यत् समुद्र आहितः	१९	
आ यद् योनिं हिरण्यं माशुर्कृतस्य सीदति । जहात्यप्रचेतसः	२०	
अभि वेना अनूपते यक्षन्ति प्रचेतसः । मज्जन्त्यविचेतसः	२१	
इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः । क्रतस्य योनिमासदम्	२२	
तं त्वा विप्रा वज्रोविद्रः परिष्कृण्वन्ति वेधसः । सं त्वा मृजन्त्यायवः	२३	५००

रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे	। पर्वमानस्य मरुतः	२४
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वार्चमिष्यसि	। इन्दो सहस्रभर्णसम्	२५
उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युवम्	। पुनान इन्दुवा भर	२६
पुनान इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम्	। प्रियः समुद्रमा विश	२७
दर्विद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा	। सोमाः शुक्रा गवांशिरः	२८ ५०५
हिन्वानो हेतुभिर्यत आ वाजं वाज्यक्रीतम्	। सीदन्तो वनुषो यथा	२९
ऋधक् सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवः कविः	। पर्वस्व सूर्यो दृशे	३० ५०७

॥ ६४ ॥ (ऋ ९ । ६५ । १—३०) (५०८—५३७) भृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।

हिन्वन्ति सूर्यस्यः स्वसारो जामयस्पतिम्	। महामिन्दुं महीयुवः	१
पर्वमान रुचारुचा देवो देवेभ्यस्पतिं	। विश्वा वसून्वा विश	२
आ पर्वमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः	। इषे पर्वस्व संयतम्	३ ५१०
वृषा ह्यसिं भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे	। पर्वमान स्वाध्यः	४
आ पर्वस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध	। इहो ध्विन्दुवा गंहि	५
यदाङ्गिः परिषिच्यसे मृज्यामानो गर्भस्त्योः	। द्रुणां सधस्थमश्रुपे	६
प्र सोमाय व्यश्नवत् पर्वमानाय गायत	। महे सहस्रचक्षसे	७
यस्य वर्णं मधुश्रुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः	। इन्दुमिन्द्राय पीतये	८ ५१५
तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः	। सखित्वमा वृणीमहे	९
वृषा पर्वस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः	। विश्वा दधान ओजसा	१०
तं त्वा धर्तारमोण्योऽः पर्वमान स्वर्दृशम्	। हिन्वे वाजेषु वाजिनम्	११
अया चित्तो विपानया हरिः पर्वस्व धारया	। युजं वाजेषु चोदय	१२
आ न इन्दो महीमिषं पर्वस्व विश्वदर्शतः	। अस्मभ्यं सोम गातुवित्	१३ ५२०
आ कलशां अनृषते इन्दो धाराभिरोजमा	। एन्द्रस्य पीतये विश	१४
यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः	। स पर्वस्वाभिमातिहा	१५
राजा मेधाभिरीयते पर्वमानो मनावधि	। अन्तरिक्षेण यातवे	१६
आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वदव्यम्	। वहा भगत्तिमूतये	१७
आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर	। सुष्वाणो देववीतये	१८ ५२५
अर्षी सोम द्युमन्तमो ऽभि द्रोणानि रोर्बवत्	। सीदञ्छेनो न योनिमा	१९ ५२६

अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुतः	। सोमो अर्षति विष्णवे	२०	
इषं तोकाय नो दध—दुसभ्यं सोम विश्वतः	। आ पवस्व सहस्रिणाम्	२१	
ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे	। ये वादः शर्यणावति	२२	
य अर्जिकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम्	। ये वा जनेषु पञ्चसु	२३	५३०
ते नो वृष्टिं दिवस्पति पवन्तामा सुवीर्यम्	। सुवाना देवास इन्दवः	२४	
पवते हर्यतो हरि—गृणानो जमदग्निना	। हिन्वानो गोरधि त्वचि	२५	
प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः	। श्रीणाना अप्सु मृज्जत	२६	
तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतातये	। स पवस्वानया रुचा	२७	
आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे	। पान्तमा पुरुस्पृहम्	२८	५३५
आ मन्द्रमा वरेण्य—मा विप्रमा मनीषिणम्	। पान्तमा पुरुस्पृहम्	२९	
आ रयिमा सुचेतुन—मा सुक्रतो तनूष्वा	। पान्तमा पुरुस्पृहम्	३०	५३७

॥ ६५ ॥ (ऋ ९ । ६६ । १—३०)

(५३८-५६७) शतं वैखान ११ । १९-२१ अग्निः पवमानः । गायत्री, १८ अनुष्टुप् ।

पवस्व विश्वचर्पणे ऽभि विश्वानि काव्या	। सखा सखिभ्य ईड्यः	१	
ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी	। प्रतीची सोम तस्थतुः	२	
परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः	। पवमान ऋतुभिः कवे	३	५४०
पवस्व जनयन्निषो ऽभि विश्वानि वार्या	। सखा सखिभ्य ऊतये	४	
तवं शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते	। पवित्रं सोम धामभिः	५	
तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिन्नते	। तुभ्यं धावन्ति धेनवः	६	
प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः	। दधानो अक्षिति श्रवः	७	
समु त्वा धीभिरस्वरन् हिन्वतीः सप्त जामयः	। विप्रमाजा विवस्वतः	८	५४५
मृजन्ति त्वा समगुवो ऽव्ये जीरावधि ध्वणि	। रेभो यदुज्यसे वने	९	
पवमानस्य ते कवे वाजिन्तसर्गा अमृक्षत	। अर्वन्तो न श्रवस्ववः	१०	
अच्छा कोशं मधुश्रुत—मसृग्रं वारं अव्यये	। अवावशन्त धीतयः	११	
अच्छा समुद्रमिन्दुवो ऽस्तं गावो न धेनवः	। अगमन्तस्य योनिमा	१२	
प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः	। यद् गोभिर्वासयिष्यसे	१३	५५०
अस्य ते सख्ये वय—मियक्षन्तस्त्वोतयः	। इन्दो सखित्वमुशमसि	१४	
आ पवस्व गर्विष्ठये महे सोम नृचक्षसे	। एन्द्रस्य जठरे विश	१५	५५२

महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्दु ओजिष्ठः। युध्वा सञ्छञ्जिगेथ	१६
य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छुरेभ्यश्चिच्छुरतरः । भूरिदाभ्यश्चिन्महीयान्	१७
त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य माता तनूनाम् । वृणीमहे सरुयाय वृणीमहे युज्याय	५५५
अग्न आयूषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः । आरे बाधस्व दुच्छुनाम्	१९
अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः । तमीमहे महागयम्	२०
अग्ने पवस्व स्वपां अस्मे वर्चः सुवीर्यम् । दधद् रयिं मयि पोषम्	२१
पवमानो अति स्त्रियो ऽभ्यर्षति सुष्टुतिम् । सरो न विश्वदर्शतः	२२
स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान् प्रयसे हितः । इन्दुरत्यो विचक्षणः	२३ ५६०
पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् । कृष्णा तमांसि जङ्घनत्	२४
पवमानस्य जङ्घतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत । जीरा अजिरशोचिषः	२५
पवमानो रथीतमः शुभ्रोभिः शुभ्रशस्तमः । हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः	२६
पवमानो व्यश्ववद् रश्मिभिर्वाजसातमः । दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	२७
प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् । पुनान इन्दुरिन्द्रमा	२८ ५६५
एष सोमो अर्धि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः । इन्द्रं मदाय जोहुवत्	२९
यस्य ते द्युम्वत् पयः पवमानाभृतं दिवः । तेन नो मृळ जीवसे	३० ५६७

॥ ६६ ॥ (ऋ. ९।६७।१-३२)

(५६८—५९९) १-३ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, ४-६ कश्यपो मारीचः, ७-९ गोतमो राङ्गणः, १०-१२ अत्रिभौमः, १३-१५ विश्वामित्रो गायत्रि, १६—१८ जमदग्निर्गर्गवः, १९-२१ वसिष्ठो मैत्रावरुणिः, २२—३२ पवित्र आङ्गिरसो वा वसिष्ठो वा उभौ वा। पवमानः सोमः, १०—१२ पवमानः पूषा वा, २३—२७ पवमानोऽग्निः, २५ पवमानः सविता वा, २६ पवमानाग्निस्वितारः, २७ विश्वे देवा वा, ३१—३२ पावमान्यध्येता । गायत्री, १६—१८ नित्यद्विपदा गायत्री, ३० पुरउष्णिक्, २७, ३१, ३२, अनुष्टुप् ।

त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे । पवस्व मंहयद्रयिः	१
त्वं सुतो नृमादनो दधन्वान् मत्सरिन्तमः । इन्द्राय सूरिरन्धसा	२
त्वं सुष्वाणो अद्रिभिर्भ्यर्ष कर्निकदत् । द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम्	३ ५७०
इन्दुहिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया । हरिर्वाजमचिक्रदत्	४
इन्द्रो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांसि वि सौभगा । वि वाजान्तसोम गोमतः	५
आ न इन्द्रो शतृग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् । भरां सोम सहस्रिणम्	६
पवमानासु इन्द्रवस्तिरः पवित्रमाश्वः । इन्द्रं यामैभिराशत	७ ५७४

ककुहः सोम्यो रस इन्दुरिन्द्राय पूर्यः	। आयुः पवत आयवे	८	५७५
हिन्वान्ति सूर्यस्यः पवमानं मधुश्चतम्	। अभि गिरा समस्वरन्	९	
अविता नो अजाश्चः पूषा यामनियामनि	। आ भक्षत् कन्यासु नः	१०	
अयं सोमः कपर्दिने घृतं न पवते मधु	। आ भक्षत् कन्यासु नः	११	
अयं त आघृणे सुतो घृतं न पवते शुचिं	। आ भक्षत् कन्यासु नः	१२	
वाचो जन्तुः कवीनां पवस्व सोम धारया	। देवेषु रत्नधा असि	१३	५८०
आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते	। अभि द्रोणा कनिक्रदत्	१४	
परि प्र सोम ते रसो ऽसर्जि कलशे सुतः	। श्येनो न तक्तो अर्षति	१५	
पवस्व सोम मन्दय—भिन्द्राय मधुमत्तमः		१६	
असृग्रन् देववीतये वाजयन्तो रथा इव		१७	
ते सुतासो मदिन्तमाः शुक्रा वायुमसृक्षत		१८	५८१
ग्राष्णा तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रं सोम गच्छसि	। दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम्	१९	
एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमर्ति गाहते	। रक्षोहा वारमव्ययम्	२०	
यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह	। पवमानं वि तज्जहि	२१	
पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः	। यः पोता स पुनातु नः	२२	
यत् ते पवित्रमर्चिष्य—ग्रे विततमन्तरा	। ब्रह्म तेन पुनीहि नः	२३	५९०
यत् ते पवित्रमर्चिव—दग्ने तेन पुनीहि नः	। ब्रह्मसवैः पुनीहि नः	२४	
उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च	। मां पुनीहि विश्वतः	२५	
त्रिभिष्टं देव सवित—वर्षिष्ठैः सोम धामाभिः	। अग्ने दक्षैः पुनीहि नः	२६	
पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।			
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मां		२७	
प्र प्यायस्व प्र स्थन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः	। देवेभ्य उत्तमं हविः	२८	५९५
उप प्रियं पनिमत्तं युवानमाहुतीवृधम्	। अगन्म विभ्रतो नमः	२९	
अलाय्यस्य परशुर्ननाश त—मा पवस्व देव सोम	। आखुं चिदेव देव सोम	३०	
यः पावमानिर्ध्वे—त्यृषिभिः संभृतं रसम् ।			
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्चना		३१	५९८

पावमानीर्यो अध्ये—त्यृषिभिः संभृतं रसम् ।

तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्

३२ ५९९

॥ ६७ ॥ (ऋ ९ । ६८ । १—१०) (६००—६०९) वत्सप्रिर्भालन्दनः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

प्र देवमच्छा मधुमन्तु इन्दुवो ऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः ।

बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्त्रिया निर्णिजं धिरे

१ ६००

स रोरुवदभि पूर्वा अचिक्रद—दुपारुहः श्रथयन्त्स्वादते हरिः ।

तिरः पवित्रं परियन्तुरु जयो नि शर्याणि दधते देव आ वरम्

२

वि यो ममे यस्या संयुती मदः साकंवृधा पर्यसा पिन्वदक्षिता ।

मही अपारे रजसी विवेविद—दभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे

३

स मातरा विचरन् वाजयन्पः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् ।

अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः

४

मं दक्षेज मनसा जायते कवि—कृतस्य गर्भो निहितो यमा परः ।

यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतु—गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम्

५

मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः इयनो यदन्धो अभरत् परावतः ।

तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वा उशन्तमंशुं परियन्तमृगमयम्

६ ६०५

त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धातिभिर्हितम् ।

अव्यो वारिभिरुत देवहृतिभिर्नृभिर्यतो वाजमा दर्पि सातये

७

परिप्रयन्तं वयं सुपंसदं सोमं मनीषा अर्भ्यनृपत स्तुभः ।

यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव इयति वाचं रयिषाळमर्त्यः

८

अयं दिव इयति विश्वमा रजः सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।

अङ्गिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः पुनान इन्दुर्वरिषो विदत् प्रियम्

९

एवा नः सोम परिपिच्यमानो वयो दधच्चित्रतमं पवस्व ।

अद्रेपे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम्

१० ६०९

॥ ६८ ॥ (ऋ ९ । ६९ । १—१०) (६१०—६१९) हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । जगती, ९-१० त्रिष्टुप् ।

इषुर्न धन्वन् प्रति धीयते मति—वत्सो न मातुरुषं सज्यर्धानि ।

उरुधारेव दुहे अग्र आय—त्यस्य व्रतेष्वपि सोम इष्यते

१ ६१०

उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्रार्जनी चोदते अन्तरासनि ।

पवमानः संतनिः प्रज्ञतामिव मधुमान् द्रुप्तः परि वारमर्षति

२ ६११

अव्ये वधूयुः पवते परि त्वचि श्रुती नृपरीर्दितेऋतं यते ।	
हरिरक्रान् यजतः संयतो मदो नृम्णा शिशाना माह्वो न शोभते	३
उक्षा मिमाति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुपं यन्ति निष्कृतम् ।	
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत	४
अमृक्तेन रुशता वाससा हरिरमृत्यो निर्णिजानः परि व्यत ।	
दिवस्पृष्टं बर्हणा निर्णिजे कृतोपस्तरणं चम्बोर्नभस्मयम्	५
सूर्यस्येव रुमयो द्रावयित्वो मत्सुरासः प्रसुपः साकमीरते ।	
तन्तुं ततं परि सर्गोस आशवो नेन्द्रादृते पवते धाम किं चन	६ ६१५
सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशवो वृषच्युता मदासो गातुभाशत ।	
शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदे ऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः	७
आ नः पवस्व वसुमद्विरण्यवदश्वावद् गोमद् यवमत् सुवीर्यम् ।	
यूयं हि सोम पितरो मम स्थनं दिवो मूर्धानः प्रस्थिता वयस्कृतः	८
एते सोमाः पवमानास इन्द्रं रथा इव प्र ययुः सातिमच्छ ।	
सुताः पवित्रमतिं युन्त्यव्यं हित्वी वृत्रि हरितो वृष्टिमच्छ	९
इन्दुविन्द्राय बृहते पवस्व सुमृलीको अनवद्यो रिशादाः ।	
भरो चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः	१० ६१६

॥ ६९ ॥ (क्र ९ । ७० । १-१०) (६२०—६२९) रेणुर्वैश्वामित्रः । जगती, १० त्रिष्टुप् ।

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुहे सत्यामाशिरं पूर्ये व्योमनि ।	
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारुणि चक्रे यदृतैरवर्धत	१ ६२०
स भिक्षमाणा अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे	
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदा विदुः	२
ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवो ऽदाभ्यासो जनुषां उभे अनु ।	
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद् राजानं मनना अगृभ्णत	३
स मृज्यमानो दुशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा ।	
व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशौ	४
स मर्मृजान इन्द्रियाय धार्यस ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः ।	
वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मती रादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः	५ ६२४

स मातरा न ददृशान उस्त्रियो नानंददेति मरुतामिव स्वनः ।
 जानन्नृतं प्रथमं यत् स्वर्णरं प्रशस्तये कर्मवृणीत सुक्रतुः ६ ६१५
 रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः ।
 आ योनिं सोमः सुक्रतं नि षीदति गव्ययी त्वग् भवति निर्णिगव्ययी ७
 शुचिः पुनानस्तन्वमरेपस—मव्ये हरिर्न्यधाविष्ट सानवि ।
 जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्मभिः ८
 पर्वस्व सोम देववीतये वृषे—न्द्रस्य हार्दिं सोमधानमा विश
 पुरा नो बाधाद् दुरितातिं पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा विष्टच्छते ९
 हितो न सप्तिरभि वाजमर्षे—न्द्रस्येन्दो जठरमा पर्वस्व
 नावा न सिन्धुमतिं पषिं विद्रा—ञ्छरो न युध्यन्नव नो निदः स्पः १० ६१९

॥ ७० ॥ (क ९ । ७१ । १—९) (६३०—६३८) ऋषभो वैश्वामित्रः । जगती, ९ त्रिष्टुप् ।

आ दक्षिणा सृज्यते शुभ्याऽसदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः ।
 हरिरोपशं कृणुते नभस्पय उपस्तिरे चम्बोऽर्ब्रह्म निर्णिजे १ ६३०
 ग्र कृष्टिहेव शूष एति रोरुव—दसुर्यै वणं नि रिणीते अस्य तम् ।
 जहाति वत्रि पितुरेति निष्कृत—मुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना २
 अद्रिभिः सुतः पवते गभस्तयो—वृषायते नभसा वेपते मती ।
 स मोदते नसते सार्धते गिरा नैनिक्ते अप्सु यजते परीमणि ३
 परिं द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम् ।
 आ यास्मिन् गावः सुहुताद् ऊर्धनि मूर्धच्छीणन्त्यग्रियं वरीमभिः ४
 समी रथं न भुरिजोरहेषत दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ ।
 जिगादुप जयति गोरपीच्यं पदं यदस्य मतुथा अजीजनन् ५
 श्येनो न योनिं सदने धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति ।
 ए रिणन्ति वरिषिं प्रियं गिरा ऽश्वो न देवा अप्येति यज्ञियः ६ ६३५
 परा व्यक्तो अरुषो दिवः कवि—वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि ।
 सहस्रणीतिर्यतिः परायतीं रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति ७
 त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत् समृता सेधति सिधः ।
 अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनं सं सुष्टुती नसते सं गोअग्रया ८ ६३७

उक्षेवं यूथा परियन्त्रावी—दधि त्विषीरधितु सूर्यस्य ।

दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि कर्तुना पश्यते जाः ९ ६३८

॥ ७१ ॥ (क्र. ९ । ७२ । १-९) (६३९-६४७) हरिमन्त आङ्गिरसः । जगती ।

हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते ।

उद्वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कर्ति चित् परिप्रियः १

साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहुः ।

यदी मृजन्ति सुगमस्तयो नरः सनीलाभिर्दशभिः काम्यं मधु २ ६४०

अरममाणो अत्येति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवम् ।

अन्वस्मै जोषमभरद् विनंगुसः सं द्रयीभिः स्वसृभिः क्षेति जामिभिः ३

नृधृतो अद्रिपुतो बहिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुर्ऋत्वियः ।

पुरंधिवान् मनुषो यज्ञसार्धनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ४

नृबाहुभ्यां चोदितो धारया सुतो ऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते ।

आग्राः क्रतून्तसमंजैरध्वरे मतीर्वेन द्रुपच्चम्बोऽरासदुद्धरिः ५

अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कविं कवयोऽपसो मनीषिणः ।

समी गावो मतयो यन्ति संयतं क्रतस्य योना सदेने पुनर्धुवः ६

नाभां पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽऽपामूर्मां सिन्धुष्वन्तरिक्षितः ।

इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो हृदे पवते चारुं मत्सरः ७ ६४५

स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः स्तोत्रे शिक्षन्नाधून्वते च सुक्रतो ।

मा नो निर्भाग् वसुनः सादनस्पृशो रयिं पिशङ्गं बहुलं वसीमहि ८

आ तू न इन्दो शतदात्वश्यं सहस्रदातु पशुमद्विरण्यवत् ।

उप मास्व बृहती रेवतीरिषो ऽधि स्तोत्रस्य पवमान नो गहि ९ ६४७

॥ ७२ ॥ (क्र. ९ । ७३ । १-९) (६४८-६५६) पवित्र आङ्गिरसः ।

स्रक्वे द्रप्सस्य धर्मतः समस्वर—नृतस्य योना समरन्त नाभयः ।

त्रीन्तस मूर्धो असुरश्चक्र आरभे सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् १

सम्यक् सम्यञ्चो महिषा अहेपत् सिन्धोरुर्मावधि वेना अवीविपन् ।

मधोर्धाराभिर्जनयन्तो अर्कमित् प्रियामिन्द्रस्य तन्वमवीवृधन् २ ६४९

पवित्रवन्तः परि वार्चमासते पितृषां प्रत्नो अभि रक्षति व्रतम् ।	
महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वा रभम्	३ ६५०
सहस्रधारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असञ्चतः ।	
अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः	४
पितुर्मातुरध्या ये समस्वरञ्चुचा शोचन्तः संदहन्तो अव्रतान् ।	
इन्द्रद्विष्टामर्ष धमन्ति मायया त्वचमसिंक्रां भूमनो दिवस्परि	५
प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरञ्छूलोक्यन्त्रासो रभसस्य मन्तवः ।	
अपानक्षासो बधिरा अहासत क्रतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः	६
सहस्रधारे वितते पवित्र आ वार्चं पुनन्ति कवयो मनीषिणः ।	
रुद्रासं एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वञ्चः सुदृशो नृचक्षसः	७
क्रतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे ।	
विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्यवाजुष्टान् विध्यति कर्ते अव्रतान्	८ ६५५
क्रतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया ।	
धीराश्चित् तत् समिनक्षन्त आशताऽत्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः	९ ६५६

॥ ७३ ॥ (क्र ९ । ७४ । १—९) (६५७—६६५) कक्षीवान् दर्शनमसः । जगती, ८ त्रिष्टुप् ।

शिशुर्न जातोऽव चक्रदुद् वने स्वर्ग्युर्द वाज्यरुषः सिषांसति ।	
दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः	१
दिवो यः स्कम्भो धरुणः स्वातत आपूर्णो अशुः पर्येति विश्वतः	
मेमे मही रोदसी यक्षदावृता समीचीने दाधार समिषः कविः	२
महि प्सरः सुकृतं सोम्यं मधून्वी गव्यूतिरदितेऋतं यते ।	
ईशे यो वृष्टेरित उस्त्रियो वृषाऽपां नेता य इतर्कतिर्ऋग्मियः	३
आत्मन्वन्नभौ दुहते घृतं पयः क्रतस्य नाभिरमृतं वि जायते ।	
समीचीनाः सुदानवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति पेरवः	४ ६६०
अरावीदुंशुः सचमान ऊमिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।	
दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन लोकं च तनयं च धामहे	५
सहस्रधारेऽव ता असञ्चतस्तृतीयं मन्तु रजसि प्रजावतीः ।	
चतस्रो नाभो निर्दिता अयो दिवो हविर्भरन्त्यमृतं घृतञ्चतः	६ ६६१

श्वेतं रूपं कृणुते यत् सिपासति सोमो मीद्वो असुरा वेद भूमनः ।
 धिया शमी सचते सेमभि प्रवद् दिवस्कवन्धमव दर्षदुद्रिणम् ७
 अथ श्वेतं कलशं गोभिरक्तं कार्ध्मन्ना वाज्यक्रमीत् ससुवान् ।
 आ हिन्विरे मनसा देवयन्तः कक्षीर्वते शतहिमाय गोनाम् ८
 अद्भिः सोम पपृचानस्य ते रसो ऽव्यो वारं वि पवमान धावति ।
 स मूज्यमानः कविभिर्मदिन्तम् स्वदुस्वेन्द्राय पवमान पीतये ९ ६६५
 ॥ ७४ ॥ (ऋ. ९ । ७५ । १-५) (६६६-६९०) कविभार्गवः । जगती ।
 अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यद्दो अधि येषु वर्धते ।
 आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद् विचक्षणः १
 ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
 दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं नाम तृतीयमधि रोचने दिवः २
 अव द्युतानः कलशां अचिक्रदु नृभिर्येमानः कोश आ हिरण्यये ।
 अभीमृतस्य दोहना अनृषता ऽधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ३
 अद्भिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन् रोदसी मातरा शुचिः ।
 रोमाण्यव्या समया वि धावति मधोर्धारा पिन्वमाना दिवेदिवे ४
 परि सोम प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम् ।
 ये ते मदा आहनसो विहायस स्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मधम् ५ ६७०

॥ ७५ ॥ (ऋ. ९ । ७६ । १-५)

धर्ता दिवः पवते कृत्वो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः ।
 हरिः सृजानो अत्यो न सत्त्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा १
 शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वः सिपासन् रथिरो गविष्टिषु ।
 इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुहिन्वानो अज्यते मनीषिभिः २
 इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश ।
 प्र णः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया न वाजां उप मासि शश्वतः ३
 विश्वस्य राजा पवते स्वर्दश ऋतस्य धीतिर्मृषिपाळवीवशत् ।
 यः सूर्यस्यासिरेण मूज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः ४
 वृषेव यूथा परि कोशमर्षस्यपामपस्ये वृषभः कर्निकदत् ।
 स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम समिथे त्वोतयः ५ ६७५

॥ ७६ ॥ (ऋ. ९ । ७७ । १—५)

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रद—दिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः ।
 अभीमृतस्य सुदुर्घा घृतश्रुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः १
 स पूर्यः पवते यं दिवस्परि श्येनो मथायदिषितस्तिरो रजः ।
 स मध्व आ युवते वेविजान इत् कृशानोरस्तुर्मनसाह बिभ्युषा २
 ते नः पूर्वास उपरास इन्दवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते ।
 ईक्षेण्यासो अह्यो न चारवो ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः ३
 अयं नो विद्वान् वनवद् वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः ।
 इनस्य यः सदेने गर्भमादधे गवांमुज्जमभ्यर्षति व्रजम् ४
 चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महाँ अदब्धो वरुणो हुरुग्यते ।
 असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियो ऽत्यो न यूथे वृष्युः कर्निकदत् ५ ६८०

॥ ७७ ॥ (ऋ. ९ । ७८ । १—५)

प्र राजा वाचं जनयन्नासिष्यद—दुपो वसानो अभि गा इयक्षति ।
 गृभ्णाति रिप्रमर्विरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् १
 इन्द्राय सोम परि पिच्यसे नृभिर्नृचक्षा ऊर्मिः कविरज्यसे वने ।
 पूर्वोहि ते सुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमुषदः २
 समुद्रिया अप्सरसो मनीषिण मासीना अन्तराभि सोममक्षरन् ।
 ता ई हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणि याचन्ते सुम्नं पर्वमानमक्षितम् ३
 गोजिन्नः सोमो रथजिद्विरण्यजित् स्वर्जिद्विजित् पवते सहस्रजित् ।
 यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम् ४
 एतानि सोम पर्वमानो अस्मयुः सत्यानि कृष्वन् द्रविणान्यर्षसि ।
 जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वी गव्यूतिमभयं च नस्कृषि ५ ६८१

॥ ७८ ॥ (ऋ. ९ । ७९ । १—५)

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहद्विवेषु हरयः ।
 वि च नशन् न इषो अरातयो ऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धिर्यः १
 प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि ।
 तिरो मर्तस्य कस्य चित् परिहृति वयं धनानि विश्वधा भरेमहि २ ६८७

उत स्वस्या अरात्या अरिर्हि ष उतान्यस्या अरात्या वृको हि षः ।
 धन्वन् न तृष्णा समरीत तां अभि सोमं जहि पवमान दुराध्यः ३
 दिवि ते नाभा परमो य आदुदे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सानवि क्षिपः
 अद्रयस्त्वा बप्सति गोरधि त्वच्यप्सु त्वा हस्तैर्दुहुर्मनीषिणः ४
 एवा त इन्दो सुभ्रवं सुपेशंसं रसं तुज्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः ।
 निदंनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मो भवतु प्रियो मर्दः ५ ६९०

॥ ७९ ॥ (ऋ ९ । ८० । १-५) (६९१-७०५) वसुभारद्वाजः ।
 सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान् हवते दिवस्परि ।
 बृहस्पते रवथेना वि दिद्युते समुद्रासो न सर्वनानि विव्यचुः १
 यं त्वा वाजिन्नध्या अभ्यनूषताऽयोहतं योनिमा रोहसि द्युमान् ।
 मघोनामायुः प्रतिरन् महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मर्दः २
 एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम् ऊर्ज वसानः श्रवसे सुमङ्गलः ।
 प्रत्यङ् स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीलन् हरिरत्यः स्यन्दते वृषा ३
 तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः
 नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावभिः सुतो विश्वान् देवां आ पवस्वा सहस्रजित् ४
 तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तमद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः ।
 इन्द्रं सोम मादयन् दैव्यं जनं सिन्धोरिवोभिः पवमानो अर्षसि ५ ६९५

॥ ८० ॥ (ऋ. ९ । ८१ । १-५) जगती. ५ त्रिष्टुप् ।

प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशंसः ।
 दुधा यदीमुन्नीता यशसा गवां दानाय शरमुदमन्दिषुः सुताः १
 अच्छा हि सोमः कुलशा असिष्यदुदत्यो न वोळ्हा रघुवर्तनिर्वृषा ।
 अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्रां अश्रोत्यमुत इतश्च यत् २
 आ नः सोम पवमानः किरा वस्विन्दो भव मघना राधसो महः ।
 शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गर्यमारे अस्मत् परा सिचः ३
 आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः ।
 बृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती ४
 उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता ।
 भगो नृशंस उर्वरन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानं जुषन्त ५ ७००

॥ ८१ ॥ (ऋ. ९ । ८२ । १—५) जगती ।

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजैव दुस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।
 पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं ह्येनो न योनिं धृतवन्तमासदम् १
 कृविर्वैधस्या पर्येपि माहिन्मत्यो न मृष्टो अभि वाजर्मर्षसि ।
 अपसेधन् दुरिता सोम मृळय धृतं वसानः परि यासि निणिजम् २
 पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे ।
 स्वसार आपो अभि गा उतासरन् त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अध्वरे ३
 जायेव पत्यावधि शेव महसे पञ्चाया गर्भं शृणुहि ब्रवीमि ते ।
 अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसे ऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि ४
 यथा पूर्वैभ्यः शतसा अमृध्रः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो ।
 एवा पवस्व सुविताय नव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते ५ ७०५

॥ ८२ ॥ (ऋ. ९ । ८३ । १—५) (७०६—७१०) पदित्र आङ्गिरसः ।

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
 अतप्ततनुर्न तदामो अंश्रुते श्रुतास इद् वहन्तस्तत् समाशत १
 तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शौचं तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
 अवन्त्यस्य पतीतारमाशवो दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा २
 अरुरुचदुपसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभति भुवनानि वाजधुः ।
 मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ३
 गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः ।
 गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत ४
 हविर्हविष्मो महि सन्न दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम् ।
 राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयमि श्रवो बृहत् ५ ७१०

॥ ८३ ॥ (ऋ. ९ । ८४ । १—५) (७११—७१५) वाच्यः प्रजापतिः ।

पवस्व देवमादन्नो विचर्षणि—रप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।
 कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिम—दुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् १
 आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति ।
 कृष्णन्तसंचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः २ ७१५

- आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः ।
 आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन् दैव्यं जनम् ३
 एष स्य सोमः पवते सहस्रजि—द्विन्ग्रानो वाचमिषिरामुषुर्धम् ।
 इन्दुः समुद्रमुदियति वायुभि—रेन्द्रस्य हादि कलशेषु सीदति ४
 अभि त्यं गात्रः पर्यसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वर्विदम् ।
 धनंजयः पवते कृत्व्यो रमो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ५ ७१५
- ॥ ८४ ॥ (ऋ ९ । ८५ । १—१२) (७१६—७२७) वेनो भार्गवः । जगती. ११—१२ त्रिष्टुप् ।
 इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवा—ऽपामीवा भवतु रक्षसा सह ।
 मा ते रसस्य मत्सन द्रयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः १
 अस्मान्तसमर्थे पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः ।
 जहि शत्रूरभ्या भन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि २
 अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवसि ध्रासिरुत्तमः ।
 अभि स्वरन्ति बृहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निसते ३
 सहस्रणीथः शतधारो अर्द्धत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधु ।
 जयन् क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्नप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीद्वः ४
 कनिकदत् कलशे गोभिरज्यसे व्यध्वय्यं समया वारमर्षसि ।
 मर्मज्यमानो अत्यो न सानसि—रिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः ५ ७२०
 स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने ।
 स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुर्मा अदाभ्यः ६
 अत्यं सृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाच ईरते ।
 पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुति—मेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः ७
 पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यं—मुर्वी गव्यूति महि शर्म सप्रथः ।
 मार्किनो अस्य परिषृतिरीशते—न्दो जयेम त्वया धनं धनम् ८
 अधि घार्मस्थाद् वृषभो विचक्षणो ऽरुचद् वि दिवो रचिना कविः ।
 राजा पवित्रमत्येति रुरुवद् दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः ९
 दिवो नाके मधुजिह्वा असश्वतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।
 अप्सु द्रुप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरुर्मा मधुमन्तं पवित्र आ १० ७२५

नाकै सुपर्णमुपपत्तिवांसं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वाः ।

शिशुं रिहन्ति मृतयः पर्निमृतं हिरण्ययं शकुनं क्षामाणि स्थाम् ११

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाकै अस्थाद् विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य ।

भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत् प्रारुरुचद् रोदसी मातरा शुचिः १२ ७२७

॥ ८५ ॥ (ऋ. ९ । ८६ । १—४८)

(७२८—७७५) १—१० अकृष्टा मापाः, ११—२० सिकता निवावरी, २१—३० पृथिव्योऽजाः
३१—४० अकृष्टामाषादयस्त्रयः, ४१—४५ भौमोऽग्निः, ४६—४८ गृत्समदः शौनकः । जगती ।

प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजा इव त्मना ।

दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदन्तमासः परि कोशमासते १

प्र ते मदासो मदिरास आशवो ऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक् ।

धेनुर्न वत्सं पयसाभि वज्रिणमिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः २

अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित् कोशं दिवो अद्रिमातरम् ।

वृषा पवित्रे अधि सानो अवपये सोमः पुनान इन्द्रियाय धार्यसे ३ ७३०

प्र त आश्विनीः पवमान धीजवो दिव्या असृग्रन् पयसा धरीमणि ।

प्रान्तर्कषयः स्थाविरीरसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यपिषाण वेधसः ४

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वंसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः ।

व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ५

उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।

यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति ६

यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम् ।

सहस्रधारः परि कोशमर्षति वृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ७

राजा समुद्रं नद्योरे वि गाहते ऽपामूर्मि संचते सिन्धुषु श्रितः ।

अध्यस्थात् सानु पवमानो अव्ययं नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ८ ७३५

दिवो न सानु स्तनगन्धचक्रदद् द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः ।

इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत् सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ९

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभुवसुः ।

दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः १० ७३७

- अभिक्रन्दन् कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः ।
 हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मज्ञानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ११
- अग्रे सिन्धूनां पर्वमानो अर्ष—त्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति ।
 अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतुभिः पूयते वृषा १२
- अयं मतवाञ्छकुनो यथा हितो ऽव्ये ससार पर्वमान ऊर्मिणा ।
 तव क्त्वा रोदसी अन्तरा कवे शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते १३ ७४०
- द्रापि वसानो यजतो दिविस्पृश—मन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वर्पितः ।
 स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत् प्रत्नमस्य पितरमा विवासति १४
- सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे ।
 पदं यदस्य परमे व्योमन् यतो विश्वा अभि सं याति संयतः १५
- प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम् ।
 मर्ये इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाम्ना पथा १६
- प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्रमुः ।
 सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभो ऽभि धेनवः पर्यसेमशिश्रुयुः १७
- आ नः सोम संयन्तं पिप्युषीमिष—मिन्दो पर्वस्व पर्वमानो अस्त्रिधम् ।
 या नो दोहते त्रिरहन्नसंश्रुषी क्षुमद् वाजवन्मधुमत् सुवीर्यम् १८ ७४५
- वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अहः प्रतरीतोषसो दिवः ।
 क्राणा सिन्धूनां कलशां अवीवश—दिन्द्रस्य हार्द्याविशन् मनीषिभिः १९
- मनीषिभिः पवते पूर्यः कवि—नृभिर्यतः परि कोशां अचिक्रदत् ।
 त्रितस्य नाम जनयन् मधु क्षर—दिन्द्रस्य वायोः मख्याय कर्तवे २०
- अयं पुनान उषसो वि रौचय—द्वयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
 अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः २१
- पर्वस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्दो कलशे पवित्र आ ।
 सीदन्निन्द्रस्य जठरे कनिक्रद—नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि २२
- अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आ इन्दुविन्द्रस्य जठरेष्वविशन् ।
 त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप २३ ७५०

त्वां सोम पवमानं स्वाध्यो ऽनु विप्रासो अमदन्नवस्यवः ।	
त्वां सुपर्ण आभरद् दिवस्परी—न्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम्	२४
अव्ये पुनानं परि वार ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सुप्त धेनवः ।	
अपामुपस्थे अध्यायवः कवि—मृतस्य योना महिषा अहेषत	२५
इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्सुपथानि यज्यवे ।	
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कवि—रत्यो न क्रीलन् परि वारमर्षति	२६
असश्वतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदुन्युवः ।	
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं नृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः	२७
तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतस—स्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि ।	
अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामधा असि	२८ ७५५
त्वं समुद्रो असि विश्ववित् कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि ।	
त्वं द्यां च पृथिवीं चार्ति जग्निषु तव ज्योतीषि पवमान सूर्यः	२९
त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।	
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णात् तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे	३०
प्र रेभ एत्यति वारमव्ययं वृषा वनेष्वव चक्रदुद्धरिः	
सं धीतयो वावशाना अनूषत् शिशुं रिहन्ति मतयः पर्निमतम्	३१
स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत् तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे ।	
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम्	३२
राजा सिन्धूनां पवते पतिर्दिव ऋतस्य याति पृथिभिः कर्निकदत् ।	
सहस्रधारः परि विच्यते हरिः पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः	३३ ७६०
पवमान महर्णो वि धावसि सरो न चित्रो अव्ययानि पव्यया ।	
गर्भस्तिपृता नृभिरद्रिभिः सुतो महे वाजाय धन्याय धन्वसि	३४
इपमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि श्येनो न वंसु कलशेषु सीदसि ।	
इन्द्राय मद्रा मद्यो मदः सुतो दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः	३५
सप्त स्वसारो अभि मातरः शिशुं नवं जज्ञानं जेन्यं विपश्चितम् ।	
अपां गन्धर्व दिव्यं नृचक्षुसं सोमं विश्वस्य भुवनस्य राजसे	३६
ईशान इमा भुवनानि वीर्यसे युजान इन्दो हरितः सुपर्णः ।	
तास्ते क्षरन्तु मधुमद् घृतं पय—स्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः	३७ ७६४

त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पर्वमान वृषभ ता वि धावसि ।
 स नः पवस्व वसुमद्विरण्यवद् वयं स्याम भुवनेषु जीवसे ३८ ७६५
 गोवित् पवस्व वसुविद्विरण्यविद् रेतोधा इन्द्रो भुवनेष्वर्पितः ।
 त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित् तं त्वा विप्रा उर्प गिरेम आसते ३९
 उन्मध्व ऊर्मिर्वनना अतिष्ठिप—दुपो वसानो महिषो वि गाहते ।
 राजा पवित्ररथो वाजमारुहत् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहत् ४०
 स भन्दना उर्दियति प्रजावती—विंशायुर्विंशः सुभरा अहर्दिवि ।
 ब्रह्म प्रजावद् रयिमश्वपस्त्यं पीत इन्द्रविन्द्रमम्भ्यं याचतात् ४१
 सो अग्रे अह्नां हरिर्हर्यतो मदः प्र चेतसा चेतयते अनु द्युभिः ।
 द्वा जना यातयन्नन्तरीयते नरा च शंसं दैव्यं च धर्तरि ४२
 अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते ।
 सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमांसु गृभ्णते ४३ ७७०
 विपश्चिते पर्वमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति ।
 अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वच—मत्यो न क्रीळन्नसरद् वृषा हरिः ४४
 अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः ।
 हरिर्धृतस्तुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ४५
 असर्जि स्कम्भो दिव उद्यतो मदः परि त्रिधातुर्भुवनान्यर्षति ।
 अंशुं रिहन्ति मतयः पनिम्रतं गिरा यदि निणिजमृग्मिणो ययुः ४६
 प्र ते धारा अत्यण्वानि मेघ्यः पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः ।
 यद् गोभिरिन्द्रो चम्बोः समज्यस आ सुवानः सोम कलशेषु सीदसि ४७
 पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्यो ऽव्यो वारे परि धाव मधु प्रियम् ।
 जहि विश्वान् रक्षस इन्द्रो अत्रिणो बृहद् वदेम विदथे सुवीराः ४८ ७७५

॥ ८६ ॥ (क्र. ९ । ८७ । १-९) (७७६—७९९) उशना काव्यः । त्रिष्टुप् ।

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीदु नृभिः पुनानो अभि वार्जमर्ष ।
 अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तो ऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति १
 स्वायुधः पवते देव इन्दु—रशस्तिहा वृजनं रक्षमाणः ।
 पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः २ ७७७

ऋषिर्विप्रः पुरेता जनानां—मृधुर्धोर उशना काव्येन ।	
स चिद् विवेद निहितं यदासा—मपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम्	३
एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णे परि पवित्रे अक्षाः ।	
सहस्रसाः शतसा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिषा वाज्यस्थात्	४
एते सोमा अभि गुव्या सहस्रा महे वाजायामृताय श्रवांसि ।	
पवित्रेभिः पर्वमाना असृग्र—ज्ववस्यवो न पृतनाजो अत्याः	५ ७८०
परि हि ष्मा पुरुहूतो जनानां विश्वासरद् भोजना पूयमानः ।	
अथा भर इयेनभृत प्रयांसि रयिं तुज्जानो अभि वाजमर्ष	६
एष सुवानः परि सोमः पवित्रे सगो न सृष्टो अदधावदर्वी ।	
तिग्मे शिशानो महिषो न शृङ्गे गा गव्यन्नाभि शूरो न सत्त्वा	७
एषा ययौ परमादुन्तरद्रेः कूर्चित् सतीरुर्वे गा विवेद ।	
दिवो न विद्युत् स्तनयन्त्यभ्रैः सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा	८
उत स्म राशिं परि यासि गोना—मिन्द्रेण सोम सरथं पुनानः ।	
पूर्वोरिषो बृहतीर्जीरदानो शिक्षा शचीवस्तव ता उपष्टुत्	९

॥ ८७ ॥ (ऋ. ९ । ८८ । १—८)

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।	
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्द्रं मदाय युज्याय सोमम्	१ ७८५
स ई रथो न भूरिषाळयोजि महः पुरुणि सातये वसनि ।	
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त	२
वायुर्न यो नियुत्वा इष्ट्यामा नासत्येव हव आ शंभविष्ठः ।	
विश्ववारो द्रविणोदा इव तमन् पूषेवं धीजर्वनोऽसि सोम	३
इन्द्रो न यो महा कर्माणि चक्रि—हन्ता वृत्राणामसि सोम पूभित् ।	
पैदो न हि त्वमहिनाम्नां हन्ता विश्वस्यासि सोम दस्योः	४
अग्निर्न यो वन आ सृज्यमानो वृथा पाजांसि कृणुते नदीषु ।	
जनो न युष्वा महत् उपब्दि—रियतिं सोमः पर्वमान ऊर्मिम्	५
एते सोमा अति वाराण्यव्या दिव्या न कोशासो अभ्रवर्षाः ।	
वृथा समुद्रं सिन्धवो न नीचीः सुतासो अभि कुलशाँ असृग्रन्	६ ७९०

शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वा—ऽनभिश्स्ता दिव्या यथा विट् ।
 आपो न मक्षू सुप्रतिर्भवा नः सहस्राप्ताः पृतनापाणन यज्ञः ७
 राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्भीरं तव सोम धाम ।
 शुचिष्ठमसि प्रियो न मित्रो दुक्षार्यो अर्थमेवासि सोम ८

॥ ८८ ॥ (ऋ. ९ । ८९ । १—७)

प्रो स्य वह्निः पथ्याभिरस्यान् दिवो न वृष्टिः पवमानो अक्षाः ।
 सहस्रधारो असदुक्त्यस्मे मातुरुपस्थे वन आ च सोमः १
 राजा सिन्धूनामवसिष्ठ वासं क्रतस्य नावमारुहद् रजिष्ठाम् ।
 अप्सु द्रप्सो वावृषे श्येनजूतो दुह ई' पिता दुह ई' पितुर्जाम् २
 सिंहं नसन्त मध्वो अयासं हरिमरुषं दिवो अस्य पतिम् ।
 शूरो युत्सु ग्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परि पात्यक्षा ३ ७९५
 मधुपृष्ठं घोरमयासमश्वं रथे युञ्जन्त्युरुचक्र कृण्वम् ।
 स्वसार ई जामयो मर्जयन्ति सनाभयो वाजिनमूर्जयन्ति ४
 चतस्र ई घृतदुहः सचन्ते समाने अन्तर्धरुणे निषत्ताः ।
 ता ईमर्षन्ति नमसा पुनाना—स्ता ई' विश्वतः परि षन्ति पूर्वीः ५
 विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वा उत क्षितयो हस्ते अस्य ।
 असत् त उत्सो गृणते नियुत्वान् मध्वो अंशुः पवत इन्द्रियाय ६
 वन्वन्नवातो अभि देववीति—मिन्द्राय सोम वृत्रहा पवस्व ।
 शग्धि महः पुरुश्चन्द्रस्य रायः सुवीर्यस्य पतयः स्थाम ७ ७९९

॥ ८९ ॥ (ऋ. ९ । ९० । १—६) (८००—८०५ वासिष्ठो मैत्रावरुणिः ।

प्र हिंन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वार्जं सनिष्यन्नयासीत् ।
 इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः १ ८००
 अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधा—माङ्गुषाणामवावशन्त वाणीः ।
 वना वसानो वरुणो न सिन्धून् वि रत्नधा दयते वार्याणि २
 शूरग्रामः सर्ववीरः सहात्रा—जेता पवस्व सनिता धनानि ।
 तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्व—षाळहः साह्वान् पृतनास शत्रून् ३
 उरुगव्यूतिरभयानि कृण्व—न्तर्समीचीने आ पवस्वा पुरंधी ।
 अपः सिषासन्नुषसः स्वर्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ४ ८०३

मत्सि सोम वरुणं मत्सि मित्रं मत्सीन्द्रमिन्द्रो पवमानं विष्णुम् ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मत्सि महामिन्द्रमिन्द्रो मदाय
एवा राजेव क्रतुमो अमेन विश्वा घनिघ्नद् दुरिता पवस्व ।
इन्द्रो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

५

६ ८०५

॥ ९० ॥ (ऋ ९ । ९१ । १-६) (८०६—८१७) कश्यपो मारीच ।

असर्जि वक्त्रा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमो मनीषी ।
दश स्वसारो अधि सानो अव्ये ऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ
वीती जनस्य दिव्यस्य कुव्यै रधि सुवानो नहुष्येभिरिन्दुः ।

१

प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभिर्मर्त्यजानो ऽविभिर्गोभिरङ्घ्रिः

२

वृषा वृष्णे रोरुवदंशुरस्मै पवमानो रुशदीति पथो गोः ।

सहस्रमृका पथिभिर्वचोवि दध्वस्मभिः सरो अण्वं वि याति

३

रुजा हृब्हा चिद् रक्षसः सदांसि पुनान इन्द ऊर्णहि वि वाजान् ।

वृश्चोपरिष्ठात् तुजता वधेन ये अन्ति दूरादुपनायमेषाम्

४

स प्रतनवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः ।

ये दुष्पहासो वनुषा बृहन्तु स्तांस्ते अश्याम पुरुकृत पुरुक्षो

५ ८१०

एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि ।

शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतीषि सोम ज्योङ्मः सूर्यं दृश्ये रिरिहि

६

॥ ९१ ॥ (ऋ ९ । ९२ । १-६)

परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे रथो न सर्जि सनये हियानः ।

आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवां अजुषत् प्रयोभिः

१

अच्छा नृचक्षा असरत् पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ ।

सीदुन् होतव सदाने चमृषू पेमग्ममृषयः सप्त विप्राः

२

प्र सुमेधा गातुविद् विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम् ।

भुवद् विश्वेषु काव्येषु रन्ता ऽनु जनान् यतते पञ्च धीरः

३

तव त्वे सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः ।

दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यङ्हीः

४ ८१५

तन्नु सत्यं पवमानस्यास्तु यत्र विश्वे कारवः संनसन्त ।

ज्योतिर्यदहे अकृणोदु लोकं प्रावन्मनुं दस्यवे कर्भीकम्

५ ८१६

परि सधैव पशुमान्ति होता राजा न सत्यः समितीरियानः । सोमः पुनानः कलशौ अयासीत् सीदन् मृगो न महिषो वनेषु	६	८१७
॥ ९२ ॥ (ऋ. ९ । ९३ । १-५) (८१८-८२२) नोधा गौतमः । साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः । हरिः पर्यद्रवजाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अङ्गिः । मर्यो न योषामभि निष्कृतं य—न्त्सं गच्छते कलश उस्त्रियाभिः उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः । मूर्धानं गावः पर्यसा चमू—प्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न नितैः स नो देवेभिः पवमान रदे—न्दो रयिमश्विनं वावशानः । रथिरायतामुशती पुरंधि—रस्मश्च१गा दावने वसूनाम् न नो रयिमुप मास्व नृवन्तं पुनानो वाताप्यं विश्वश्चन्द्रम् । प्र वन्दितुरिन्दो तार्यायुः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात्	१ २ ३ ४ ५	८१९ ८२० ८२२

॥ ९३ ॥ (ऋ. ९ । ९४ । १-५) (८२३-८२७) कण्वो घोरः । अधि यदस्मिन् वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः । अपो वृणानः पवते कवीयन् व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म द्विता व्यूर्ध्वमृतस्य धाम स्वर्दिदे भुवनानि प्रथन्त । धियः पिन्वानाः स्वसरे न गावः क्रतायन्तीरभि वावश्च इन्दुम् परि यत् कविः काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा । देवेषु यशो मर्तीय भूषन् दक्षाय रायः पुरुभूषु नव्यः श्रिये जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति । श्रियं वसाना अमृतत्वमायन् भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ इषमर्जमभ्यर्षाश्च गा—मुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान् । विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान बार्धसे सोम शत्रून्	१ २ ३ ४ ५	८२५ ८२७
---	-----------------------	------------

॥ ९४ ॥ (ऋ. ९ । ९५ । १-५) (८२८-८३२) प्रस्कण्वः काण्वः । कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन् वनस्य जठरे पुनानः । नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः	१	८२८
---	---	-----

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्ये—यतिं वाचमरितेव नावम् ।	
देवो देवानां गुह्यानि नामा—ऽऽविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे	२
अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।	
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चा ऽऽ च विशन्त्युशतीरुशन्तम्	३ ८३०
तं मर्मजानं महिषं न साना—वंशं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।	
तं वावशानं मतयः सचन्ते त्रितो विभर्ति वरुणं समुद्रे	४
इष्यन् वाचमुपवक्तेव होतुः पुनान इन्द्रो वि ष्या मनीषाम्	
इन्द्रश्च यत् क्षयथः सौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम	५ ८३१
॥ ९५ ॥ (ऋ ९ । ९६ । १—२४) (८३३—८५६) दैवोदासिः प्रतर्दनः ।	
प्र सैनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नैति हर्षते अस्य सेना ।	
भद्रान् कृण्वन्निन्द्रहवान्तसखिभ्य आ सोमो वक्त्रा रभसानि दत्ते	१
समस्य हरिं हरयो मृजन्त्य—श्वहयैरनिशितं नमोभिः ।	
आ तिष्ठति रथभिन्द्रस्य सखा विद्रा एना सुमतिं यात्यच्छ	२
स नो देव देवताते पवस्व महे सोम पसरस इन्द्रपानः ।	
कृण्वन्नपो वर्षगन् द्यामुतेमा—मुरोरा नो वरिवस्या पुनानः	३ ८३५
अजीतयेऽहृतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते ।	
तदुशन्ति विश्व इमे सखाय—स्तदुहं वंश्मि पवमान सोम	४
सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।	
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः	५
ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीना—मृपिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ।	
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन्	६
प्रावीविषद्राच ऊर्मि न सिन्धु—गिरः सोमः पवमानो मनीषाः ।	
अन्तः पश्यन् वृजनेमावरा—ण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन्	७
स मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः सहस्ररेता अभि वाजमर्ष ।	
इन्द्रायेन्द्रो पवमानो मनी—ष्यंशोरूर्मिर्भीरय गा इष्यन्	८ ८४०
परि ग्रियः कलशे देववात इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय ।	
सहस्रधारः शतवाज इन्दु—र्वाजी न सभिः समना जिगाति	९ ८४१

स पूव्यो वसुविज्ञायमानो मृजानो अप्सु दुदुहानो अद्रौ ।	
अभिश्स्तिपा भुवनस्य राजा विदद् गातुं ब्रह्मणे पूयमानः	१०
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः	
बन्वन्नवातः परिधीरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः	११
यथापवथा मनवे वयोधा अमित्रहा वरिवोविद्धविष्मान् ।	
एवा पवस्व द्राविणं दधान इन्द्रे सं तिष्ठ जनयार्थुधानि	१२
पवस्व सोम मधुमां क्रतावा ऽपो वसानो अधि सानो अव्ये ।	
अव द्रोणानि घृतवान्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः	१३ ८४५
वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व सहस्रसा वाजयुर्देववीतौ ।	
सं सिन्धुभिः कलशे वावशानः समुस्त्रियाभिः प्रतिरन् न आयुः	१४
एष स्य सोमो मतिभिः पुनानो ऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः ।	
पयो न दुग्धमदितेरिषिर—मुर्विव गातुः सुयमो न वोळ्हा	१५
स्वायुधः सोतृभिः पूयमानो ऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम ।	
अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्या ऽभि वायुमभि गा देव सोम	१६
शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गुणेन ।	
कविर्गीभिः काव्येना कविः सन् त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन्	१७
ऋषिमना य ऋषिकृत् स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।	
तृतीयं धाम महिषः सिषासन् त्सोमो विराजमनु राजति द्रुप्	१८ ८५०
चमूषच्छयेनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रुप्स आयुधानि विभ्रत् ।	
अपामूर्मि सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति	१९
मयो न शुभ्रस्तन्वै मृजानो ऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ।	
वृषेव युथा परि कोशमर्षन् कर्निक्रदच्चम्बोऽरा विवेश	२०
पवस्वेन्दो पवमानो महोभिः कर्निक्रदत् परि वाराण्यर्ष ।	
क्रीळञ्चम्बोऽरा विंश पूयमान इन्द्रं ते रसो मदिरा ममत्तु	२१
प्रास्य धारा बृहतीरसृग्र—नक्तो गोभिः कलशां आ विवेश ।	
साम कृण्वन्त्सामन्यो विपश्चित् क्रन्दन्त्येभि सख्युर्न जामिम्	२२
अपन्नैषि पवमान शत्रून् प्रियां न जारो अभिगीत इन्दुः ।	
सीदन् वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कलशेषु सत्ता	२३ ८५५

आ ते रुचः पवमानस्य सोम योषेव यन्ति सुदुधाः सुधाराः ।

हरिरानीतः पुरुवारो अप्सवचिक्रदत् कलशं देवयूनाम्

२४ ८५६

॥ ९६ ॥ (ऋ ९ । ९७ । १—५८)

(८५७—९१४) १—३ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः, ४—६ वासिष्ठ इन्द्रप्रमतिः, ७—९ वासिष्ठो वृषगणः,

१०—१२ वासिष्ठो मन्युः, १३—१५ वासिष्ठ उपमन्युः, १६—१८ वासिष्ठो व्याघ्रपादः, १९—२१

वासिष्ठः शक्तिः, २२—२४ वासिष्ठः कर्णश्रुद्, २५—२७ वासिष्ठो मृळीकः, २८—३०

वासिष्ठो वसुक्तः, ३१—४४ पराशर शाक्यः, ४५—५८ कुन्स आङ्गिरसः ।

अस्य प्रेषा हेमनां पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।

सुतः पवित्रं पयैति रेभन् मितेव सर्वा पशुमान्ति होता

१

भद्रा वस्त्रा समन्याहु वसानो महान् कविर्निवर्चनानि शंसन् ।

आ वच्यस्व चम्बोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ

२

समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तेरो यशसां क्षैतो अस्मे ।

अभि स्वरं धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

३

प्र गायताभ्यर्चाम देवान् त्सोमं हिनोत महते धनाय ।

स्वादुः पवाते अति वारमव्यमा सीदाति कलशं देवयुर्नः

४

८६०

इन्दुर्देवानामुप सख्यमायन् त्सहस्रधारः पवते मदाय ।

नृभिः स्तवानो अनु धाम पूर्वमगन्निद्रं महते सौभगाय

५

स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रं मदो गच्छतु ते भराय ।

देवैर्यौहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः

६

प्र काव्यमुशनेव जुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।

महित्रतः शुचिवन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन्

७

प्र हंसासस्तृपलं मन्युमच्छा मादस्तं वृषगणा अयासुः ।

आङ्गूष्यं पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम्

८

स रहत उरुगायस्य जृतिं वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः ।

परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृजः

९

८६५

इन्दुर्वाजी पवते गोन्धोघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।

हन्ति रक्षो वार्धते पर्यरातीर्वरिवः कृण्वन् वृजनस्य राजा

१०

अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोमं पवते अद्रिदुग्धः ।

इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुवाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय

११

८६७

अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृश्नन् ।	
इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये	१२
वृषा शोणो अभिकर्निकदद् गा नदयन्नेति पृथिवीमुत द्याम् ।	
इन्द्रस्येव वयुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम्	१३
रसाय्यः पर्यसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम् ।	
पवमानः संतनिमेषि कृण्व निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः	१४ ८७०
एवा पवस्व मद्विरो मदायो दग्नाभस्य नमयन् वधस्त्रैः ।	
परि वर्ण भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः	१५
जुष्टी न इन्दो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन् ।	
धनं विष्वग् दुरितानि विघ्नन्नधि षणुना धन्व सानो अव्ये	१६
वृष्टि नो अर्ष दिव्यां जिगत्तु मिळावतीं शंगयीं जीरदानुम् ।	
स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन् बन्धूरिमां अवरौ इन्दो वायून्	१७
ग्रन्थि न वि ष्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम ।	
अत्यो न क्रदो हरिरा सृजानो मर्यो देव धन्व पस्त्यावान्	१८
जुष्टो मदाय देवतात इन्दो परि षणुना धन्व सानो अव्ये ।	
सहस्रधारः सुरभिरदब्धः परि स्रव वाजसातौ नृषह्ये	१९ ८७५
अरश्मानो येऽरथा अयुक्ता अत्यासो न संसृजानास आजौ ।	
एते शुक्रासो धन्वन्ति सोमा देवासस्तां उप याता पिबध्वे	२०
एवा न इन्दो अभि देववीतिं परि स्रव नभो अर्णश्चमूषु ।	
सोमो अस्मभ्यं काम्यं बृहन्तं रयिं ददातु वीरवन्तमुग्रम्	२१
तक्षद् यदी मनसो वेनतो वाग् ज्येष्ठस्य वा धर्मेणि क्षोरनीके ।	
आदीमायन् वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम्	२२
प्र दानुदो दिव्यो दानुपिन्व ऋतमताय पवते सुमेधाः ।	
धर्मा भुवद् वृज्यस्य राजा प्र रश्मिभिर्दशभिर्भारि भूमं	२३
पवित्रेभिः पवमानो नृचक्षा राजा देवानामुत मर्त्यानाम् ।	
द्विता भुवद् रयिपती रयीणा मृतं भरत सुभृतं चार्विन्दुः	२४ ८८०
अवीं इव श्रवसं सातिमच्छेन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष ।	
स नः सहस्रा बृहतीरिषो दा भवा सोम द्रविणोवित् पुनानः	२५ ८८१

देवान्यो नः परिषिच्यमानाः	क्षयं सुवीरं घन्वन्तु सोमाः ।	
आयज्यवः सुमतिं विश्वारा	होतारो न दिवियजो मन्द्रतमाः	२६
एवा देव देवताते पवस्व	महे सोम पसरसे देवपानः ।	
महश्चिद्धि प्मसि हिताः समये	कृधि सुष्ठाने रोदसी पुनानः	२७
अश्वो न क्रदो वृषभिर्युजानः	सिंहो न भीमो मनसो जवीधान् ।	
अर्वाचीनैः पृथिभिर्ये रजिष्ठा	आ पवस्व सौमनसं न इन्दो	२८
शतं धारा देवजाता असृग्रन्	त्सहस्रमेनाः कवयो मृजन्ति ।	
इन्दो सुनित्रं दिव आ पवस्व	पुरएतामि महतो धनस्य	२९ ८८५
दिवो न सर्गा अससृग्रमह्नां	राजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः ।	
पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यतान	आ पवस्व विशे अस्या अजीतिम्	३०
प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन्	वारान् यत् पूतो अत्येष्यव्यान् ।	
पवमान पवसे धाम गोनां	जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अकैः	३१
कर्निकदुदनु पन्थामृतस्य	शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम ।	
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान्	हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम्	३२
दिव्यः सुपणोऽव चक्षि सोम	पिन्वन् धाराः कर्मणा देववीतौ ।	
एन्दो विश कलशं सोमधानं	क्रन्दन्निहि सूर्यस्योप रश्मिम्	३३
तिस्रो वाच ईरयति प्र वहि	क्रतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।	
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः	सोमं यन्ति मतयो वावशानाः	३४ ८९०
सोमं गावो धेनवो वावशानाः	सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।	
सोमः सुतः पूयते अज्यमानः	सोमं अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते	३५
एवा नः सोम परिषिच्यमान	आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।	
इन्द्रमा विश बृहता रवेण	वर्धया वाचं जनया पुरंधिम्	३६
आ जागृविर्विप्रं क्रता मतीनां	सोमः पुनानो असदच्चमूषु ।	
सपन्ति यं मिथुनासो निकांमा	अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः	३७
स पुनान उप सरे न धातो	भे अग्रा रोदसी वि प आवः ।	
प्रिया चिद् यस्य प्रियसासं उती	स तू धनं कारिणे न प्र यंसत्	३८
स वर्धिता वर्धनः पूयमानः	सोमो मीदवां अभि नो ज्योतिषावीत् ।	
येना नः पूर्वे पितरः पदुजाः	स्वविदो अभि गा अद्रिमुष्णन्	३९ ८९५

अक्रान्तसमुद्रः प्रथमे विधर्म—ज्जनयन् प्रजा भुवनस्य राजा ।	
वृषा पवित्रे अधि सानो अन्ये बृहत् सोमो वावृधे सुवान इन्दुः	४०
महत् तत् सोमो महिषश्चकारा—ऽपां यद् गर्भोऽवृणीत देवान् ।	
अदधादिन्द्रे पवमान ओजो ऽजनयत् सूर्ये ज्योतिरिन्दुः	४१
मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः ।	
मात्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान् मात्सि द्यावापृथिवी देव सोम	४२
ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्ता ऽपामीवां बाधमानो मृधश्च ।	
अभिश्चीणन् पयः पर्यसाभि गोना—मिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः	४३
मध्वः स्रद्धं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च ।	
स्वदस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात्	४४ ९००
सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा सिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः ।	
आ योनिं वन्यमसदत् पुनानः समिन्दुर्गोभिंसरत् समद्भिः	४५
एष स्य ते पवत इन्द्र सोम—श्चमूषु धीर उशते तवस्वान् ।	
स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशृण्मः कामो न यो देवयतामसर्जि	४६
एष प्रत्नेन वयसा पुनान—स्तिरो वर्षीसि दुहितुर्दधानः ।	
वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन्	४७
न नस्त्वं रथिरो देव सोम परिं सव चम्बोः पूयमानः ।	
अप्सु स्वादिष्ठो मधुमां ऋतावां देवो न यः सविता सत्यमन्मा	४८
अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः ।	
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठा—मभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम्	४९ ९०५
अभि वस्त्रां सुवसनान्यर्षा—ऽभि धेनूः सुदुर्घाः पूयमानः ।	
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या ऽभ्यश्चान् रथिनो देव सोम	५०
अभी नो अर्ष दिव्या वस्त्र—न्याभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः	
अभि येन द्रविणमश्रवांमा—ऽभ्यार्षियं जमदग्निवन्नः	५१
अया पवा पवस्वैना वस्त्रनि मांश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।	
ब्रह्माश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित् तर्कये नरं दात्	५२
उत न एना पवया पवस्वा—ऽधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे ।	
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वस्त्रनि वृक्षं न पक्कं धूनवद् रणाय	५३ ९०९

महीमे अस्य वृषनाम शूषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे ।

अस्वापयन्निगुतः सेहयच्चाऽपामित्राँ अपाचितो अचेतः

५४ ९१०

सं त्री पवित्रा विततान्येष्यन्वेकं धावसि पूयमानः ।

असि भगो असि दात्रस्य दाता ऽसि मघवा मघवद्भ्य इन्दो

५५

एष विश्ववित् पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा ।

द्रुप्साँ इरयन् विदथेष्विन्दुर्वि वारमव्यं समयार्तिं याति

५६

इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः ।

हिन्वान्ति धीरा दुशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन

५७

त्वया व्यं पर्वमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत् ।

तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्ता मर्दितिः सिन्धुः पृथिवी उत्त द्यौः

५८ ९१४

॥ ९७ ॥ (ऋ ९ । ९८ । १-१२)

(९१५-९२६) अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिष्वा भारद्वाजश्च । अनुष्टुप्, ११ बृहती ।

अभि नो वाजसातमं रयिमर्ष पुरुस्पृहम् । इन्दो सहस्रभर्णमं तुविद्युमं विभ्वासहम् १ ९१५

परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्माव्यत । इन्दुराभि द्रुणा हितो हियानो धाराभिरक्षाः २

परि ष्य सुवानो अक्षा इन्दुरव्ये मदच्युतः । धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा नैति गव्ययुः ३

स हि त्वं देव शश्वते वसु मतीय दाशुषे । इन्दो सहस्रिणं रयिं शतात्मानं विवाससि ४

वयं ते अस्य वृत्रहन् वसो वस्वः पुरुस्पृहः । नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुभ्रस्योभिगो ५

द्विर्य पञ्च स्वयंशसं स्वसारो अद्रिसंहतम् । प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापर्यन्त्युमिणम् ६ ९२०

परि त्यं हर्यतं हरिं वभ्रुं पुनन्ति वारेण । यो देवान् विश्वाँ इत् परि मदेन सह गच्छति ७

अस्य वो ह्यवसा पान्तो दक्षसार्धनम् । यः सूरिषु श्रवो बृहद् दुधे स्वर्णं हर्यतः ८

स वां यज्ञेषु मानवी इन्दुर्जनिष्ठ रोदसी । देवो देवी गिरिष्ठा अस्त्रधन् तं तुविष्वाणि ९

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि पिच्यसे । नरे च दक्षिणावते देवाय सदनासदे १०

ते प्रत्नामो व्युष्टिषु सोमाः पवित्रे अक्षरन् । अपप्रोथन्तः सनुतर्हुरश्चितः प्रातस्ताँ अप्रचेतसः ११ ९२५

तं सखायः पुरोरुचं यूयं वयं च सूरयः । अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् १२ ९२६

॥ ९८ ॥ (ऋ ९ । ९९ । १-८) (९२७-९३४) रेभस्सू काश्यपौ । अनुष्टुप्, १ बृहती ।

आ हर्यताय धृष्णवे धनुस्तन्वन्ति पौंस्यम् । शुक्रां वयन्त्यसुराय निणिजं विषामग्रं महीयुवः १

अधं क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहते । यदीं विवस्वतो धियो हरिं हिन्वान्ति यातवे २

तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः । यं गाव आसभिर्दुधुः पुरा नूनं च सूरयः ३

तं गार्थया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत । उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ४ ९३०

तमुक्षमाणमव्यये वारं पुनन्ति धर्णसिम् । दूतं न पूर्वचित्तय आ शासते मनीषिणः ५
 स पुनानो मदिन्तमः सोमश्चमूषु सीदति । पशौ न रेत आदधत् पतिर्वचस्यते धियः ६
 स मृज्यते सुकर्मभिर्देवो देवेभ्यः सुतः । विदे यदासु संददिर्महीरपो वि गाहते ७
 सुत इन्दो पवित्र आ नृभिर्यतो वि नीयसे । इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूष्वानि षीदसि ८ ९३४

॥ ९९ ॥ (ऋ. ९ । १०० । १-९) (९३५-९४३) रेभस्त्रू काश्यपौ । अनुष्टुप् ।

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् । वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः १ ९३५
 पुनान इन्द्रवा भर सोमं द्विर्वहसं रयिम् । त्वं वस्त्रानि पुष्यसि विश्वानि दाशुषो गृहे २
 त्वं धियं मनोयुजं सृजा वृष्टिं न तन्यतुः । त्वं वस्त्रानि पार्थिवा दिव्या च सोम पुष्यसि ३
 परि ते जिग्युषो यथा धारा सुतस्य धावति । रंहमाणा व्यव्ययं वारं वाजीवं सानसिः ४
 क्रत्वे दक्षाय नः कवे पवस्व सोम धारया । इन्द्राय पातवे सुतो मित्राय वरुणाय च ५
 पवस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः । इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ६ ९४०
 त्वां रिहन्ति मातरो हरिं पवित्रे अद्रुहः । वत्सं जातं न धेनवः पवमान विधर्मणि ७
 पवमान महि श्रवश्चित्रेभिर्यासि रश्मिभिः । शर्धन् तमांसि जिघ्रसे विश्वानि दाशुषो गृहे ८
 त्वं द्यां च महिषत पृथिवीं चाति जग्निषे । प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना ९ ९४३

॥ १०० ॥ (ऋ. ९ । १०१ । १-१६)

(९४४-९५९) १-३ अन्धीगुः श्यावाश्विः, ४-६ ययातिर्नहुषः, ७-९ नहुषो मानवः, १०-१२

मनुः सांवरणः, १३-१६ वैश्वामित्रो वाच्यो वा प्रजापति । अनुष्टुप्, २-३ गायत्री ।

पुगेजिती वो अन्धसः सुतार्य मादयित्वे । अप श्वानं श्रथिष्टन सखायो दीर्घजिह्वचम् १
 यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः । इन्द्रश्चो न कृत्व्यः २ ९४५
 तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया । यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः ३
 सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः । पवित्रवन्तो अक्षरन् देवान् गच्छन्तु वो मदाः ४
 इन्द्रुरिन्द्राय पवत इति देवासो अश्रुवन् । वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान् ओजसा ५
 सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः । सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ६
 अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति । पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद् रोदसी उभे ७ ९५०
 समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः । सोमांसः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ८
 य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् । यः पञ्च चर्षणीरभि रयि येन वनामहै ९
 सोमाः पवन्त इन्दवो ऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः । मित्राः सुवाना अरेपसः स्वाध्व्यः स्वविदः १०
 सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिदाना गोरधि त्वचि । इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन् वसुविदः ११ ९५४

एते पूता विपश्चितः सोमांसो दध्याशिरः । सूर्यांसो न दर्शतासो जिगत्तवो ध्रुवा घृते १२ ९५५
 प्र सुन्वानस्योन्धमो मर्तो न वृत तद् वचः । अप श्वानमराधसं हता मुखं न भृगवः १३
 आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः । सरञ्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् १४
 स वरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी । हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् १५
 अव्यो वारोभिः पत्रते सोमो गव्ये अधि त्वचि । कनिकदुद वृषा हरि—रिन्द्रस्याभ्येति निष्कृतम् ९५९

॥ १०१ ॥ (क्र ९ । १०२ । १—८) (९६०—९६७) त्रित आप्त्यः उष्णिक् ।

क्राणा शिशुर्भहीनां हिन्वन्नृतस्य दीर्घितिम् । विश्वा परिं प्रिया भुवदध द्विता १ ९६०
 उप त्रितस्य पाण्योर्—रभक्त यद् गुहा पदम् । यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् २
 त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेरेया रयिम् । मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ३
 जज्ञानं सप्त मातरों वेधामशासत श्रिये । अयं ध्रुवो रयीणां चिकेत यत् ४
 अस्य व्रते सजोषसो विश्वे देवासो अद्रुहः । स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् ५
 यमी गर्भमृतावृधो दृशे चारुमजीजनन् । कविं मंहिष्ठमध्वरे पुरुस्पृहम् ६ ९६५
 समीचीने अभि त्मना यद्वाही क्रतस्य मातरा । तन्वाना यज्ञमानुषग् यदञ्जते ७
 कत्वां शुक्रेभिरक्षभि—र्क्रणोरप व्रजं दिवः । हिन्वन्नृतस्य दीर्घितिं प्राध्वरे ८ ९६७

॥ १०२ ॥ (क्र ९ । १०३ । १—६) (९६८—९७३) द्वित आप्त्यः ।

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उद्यतम् । भुतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते १
 परि वाराण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्पति । त्री पृथस्था पुनानः कृणुते हरिः २
 परि कोशं मधुश्रुत—मव्यये वारं अर्पति । अभि वाणीर्कपीणां सप्त नृपत ३ ९७०
 परि नेता मतीनां विश्वदेवो अदाभ्यः । सोमः पुनानश्चभ्वोर्विशद्वरिः ४
 परि दैवीरनु स्वधा इन्द्रेण याहि सरथम् । पुनानो वाघद् वाघाङ्गिरमर्त्यः ५
 परि सभिर्न वाज्यु—देवो देवेभ्यः सुतः । व्यानशिः पर्वमानो वि धावति ६ ९७३

॥ १०३ ॥ (क्र ९ । १०४ । १—६) (९७४—९८५) पर्वतनारदौ काण्वा, काश्यपौ शिखण्डिन्यावन्सरसौ वा ।

सखाय आ नि पीदत पुनानाय प्र गायत । शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये १
 समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् । देवाव्यं मदमभि द्विशवसम् २ ९७५
 पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये । यथा मित्राय वरुणाय शंतमः ३
 अस्मभ्यं त्वा वसुविद—मुभि वाणीरनृपत । गोभिष्टे वर्णमुभि वासयामसि ४
 स नो मदानां पत इन्द्रो देवप्सरा असि । सखेव सरथे गातुवित्तमो भव ५
 सनेमि कृध्यस्मदा रक्षसं कं चिद्विणिर्णम् । अपादेवं द्रयुमंहो युयोधि नः ६ ९७९

॥ १०४ ॥ (ऋ. ९. १०५. १-६)

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत । शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः १ ९८०
 सं वत्स इव मातृभि—रिन्दुर्हिन्वानो अज्यते । देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः २
 अयं दक्षाय सार्धनो ऽयं शर्धाय वीतये । अयं देवेभ्यो मधुमत्तमः सुतः ३
 गोमन्त्र इन्द्रो अश्ववत् सुतः सुदक्ष धन्व । शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ४
 स नो हरीणां पतु इन्द्रो देवप्सरस्तमः । सखेव सख्ये नयो रुचे भव ५
 सनेमि त्वमस्मदौ अदेवं कं चिद्विणिग्म । साह्या इन्द्रो परि बाधो अप द्वयुम् ६ ९८५

॥ १०५ ॥ (ऋ. ९. १०६. १-१४) (९८६-९९९) १-३, १०-१४ अग्निश्चाक्षुषः, ४-६ चक्षुर्मानव ७-९ मनुराप्सवः ।

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः । श्रुष्टी जातासु इन्द्रवः स्वविदः १
 अयं भराय सानसि—रिन्द्राय पवते सुतः । सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे २
 अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्रामं गृभ्णीत सानसिम् । वज्रं च वृषणं भरत् समप्सुजित् ३
 प्र धन्वा सोम जागृवि—रिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव । द्युमन्तं शुष्ममा भरा स्वविदम् ४
 इन्द्राय वृषणं मदुं पवस्व विश्वदर्शतः । सहस्रयामा पथिकृद् विचक्षणः ५ ९९०
 अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवेभ्यो मधुमत्तमः । सहस्रं याहि पथिभिः कर्निकदत् ६
 पवस्व देववीतय इन्द्रो धाराभिरोजसा । आ कलशं मधुमान्सोम नः सदः ७
 तव द्रप्सा उदग्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः । त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ८
 आ नः सुतास इन्द्रवः पुनाना धावता रयिम् । वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वविदः ९
 सोमः पुनान ऊर्मिणा ऽव्यो वारं वि धावति । अग्रे वाचः पवमानः कर्निकदत् १० ९९५
 धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्यविम् । अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ११
 असाजिं कलशां अभि मीळहे सप्तिर्न वाजयुः । पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् १२
 पवते हर्यतो हरि—रति हरांसि रंहा । अभ्यर्षन्तस्तोतृभ्यो वीरवद् यशः १३
 अया पवस्व देवयु—र्मधोर्धारा असृक्षत । रेभन् पवित्रं पर्येषि विश्वतः १४ ९९९

॥ १०६ ॥ (ऋ. ९. १०७. १-२६)

(१०००—१०२५) सप्तर्षयः (१ भरद्वाजो बार्हस्पत्यः, २ कश्यपो मारीचः, ३ गोतमो राहूगणः,
 ४ भौमोऽत्रि, ५ विश्वामित्रो गाथिनः, ६ जमदग्निर्भार्गवः, ७ मैत्रावरुणिर्वासिष्ठः) । प्रगाथः = (१, ४,
 ६, ८—१०, १२, १४, १७ बृहती, २, ५, ७, ११, १३, १५, १८ सतोबृहती) ; ३, १६ छिपदा
 विराट् ; १९—२६ प्रगाथः = (विषमा बृहती, समा सतोबृहती) ।

परीतो पिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।

द्रधन्वा यो नयो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः

१ १०००

नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवा—ऽदब्धः सुरभिर्तरः ।	
सुते चित् त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम्	२
परि सुवानश्चक्षसे देवमार्दनः ऋतुरिन्दुर्विचक्षणः	३
पुनानः सोम धारया ऽपो वसानो अर्षसि ।	
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदु—स्युत्सो देव हिरण्ययः	४
दुहान ऊर्ध्वदिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत् ।	
आपृच्छयं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धूतो विचक्षणः	५
पुनानः सोम जागृवि—रव्यो वारे परि प्रियः ।	
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः	६ १००५
सोमो मीढवान् पवते गातुविचम ऋषिर्विप्रो विचक्षणः ।	
त्वं कविरभवो देववीतम् आ सूर्य रोहयो दिवि	७
सोम उ पुत्राणः सोतृभि—रधि णुभिरवीनाम् ।	
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया	८
अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।	
समुद्रं न संवरणान्यगमन् मन्दी मदाय तोशते	९
आ सोम सुवानो अद्रिभि—स्तिरो वाराण्यव्यया ।	
जनो न पुरि चम्बोर्विशद्भरिः सदो वनेषु दाधिपे	१०
स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीळहे सप्तिर्न वाज्युः ।	
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रैर्भिर्ऋक्भिः	११ १०१०
प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।	
अंशोः पर्यसा मदुरो न जागृवि—रच्छा कोशं मधुश्रुतम्	१२
आ हर्यतो अर्जुने अत्के अव्यत प्रियः सुनुर्न मज्यैः ।	
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गर्भस्त्योः	१३
अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मर्दम् ।	
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वर्विदः	१४
तरत् समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् ।	
अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत्	१५
नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः	१६ १०१५

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः ।	
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः	१७
पुनानश्चमू जनयन् मतिं कविः सोमो देवेषु रण्यति ।	
अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः सीदन् वनेष्वव्यत	१८
तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे ।	
पुरुणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीरति ताँ इहि	१९
उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा सखायं बभ्र ऊर्धनि ।	
घृणा तपन्तमति सूर्य परः शकुना इव पप्तिम	२०
मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वासि ।	
रयि पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पर्वमानाभ्यर्षसि	२१ १०२०
मृजानो वारे पर्वमानो अव्यये वृषाव चक्रदो वने ।	
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि	२२
पर्वस्व वाजसातये ऽभि विश्वानि काव्या ।	
त्वं समुद्रं प्रथमो वि धारयो देवेभ्यः सोम मत्सुरः	२३
स तू पर्वस्व परि पार्थिवं रजो दिव्या च सोम धर्मभिः ।	
त्वां विप्रांसो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः	२४
पर्वमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।	
मरुत्वन्तो मत्सुरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च	२५
अपो वसानः परि कोशमर्षतीन्दुर्हियानः सोतृभिः ।	
जनयङ्गयोर्तिर्मन्दना अवीवशद् गाः कृण्वानो न निर्णिजम्	२६ १०२५

॥ १०७ ॥ (ऋ. ९ । १०८ । १—१६)

(१०२६—१०४१) १—२ गौरिवीति. शाक्यः. ३, १४—१६ शक्तिर्वासिष्ठ, ४—५ ऊरुराङ्गिरसः, ६—७

ऋजिभ्यां भारद्वाजः, ८—९ ऊर्ध्वसद्या आङ्गिरस, १०—११ कृतयशा आङ्गिरसः, १२—१३

ऋणंचयो राजर्षिः । काकुभ प्रगाथः = (विषमा ककुप्, समा सतोवृहती),

१३ यवमध्या गायत्री ।

पर्वस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः । महि द्युक्षतमो मदः	१
यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायते ऽस्य पीता स्वर्विदः ।	
स सुप्रकृतो अभ्यर्कमीदिषो ऽच्छा वाजं नैतशः	२
त्वं ह्यङ्ग दैव्या पर्वमान जनिमानि द्युमत्तमः । अमृतत्वार्य घोषयः	३ १०२८

येना नवग्वो दुध्यङ्घ्रपोर्णते	येन विप्रांस आपिरं ।	
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो	येन श्रवांस्यानशुः	४
एष स्य धारया सुतो ऽव्यो वारोभिः पवते मदिन्तमः ।	क्रीळन्नुर्मिरपामिव	५ १०३०
य उस्त्रिया अप्या अन्तरश्मनो	निर्गा अकृन्तदोजसा ।	
अभि व्रजं तलिषे गव्यमश्च्यै	वर्माव धृष्णवा रुज	६
आ सौता परि पिञ्चता—ऽश्वं न स्तोममसुरं रजस्तुरम् ।	वनक्रक्षमुदप्रुतम्	७
सहस्रधारं वृषभं पयोवृधै	प्रियं देवाय जन्मने ।	
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे	राजा देव ऋतं बृहत्	८
अभि द्युम्नं बृहद् यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुः ।	वि कोशं मध्यमं युव	९
आ वच्यस्व सुदक्ष चग्वोः सुतो	विशां वह्निर्न विशपतिः ।	
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमुपां	जिन्वा गविष्टये धियः	१० १०३५
एतमु त्पं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः ।	विश्वा वसूनि विश्रतम्	११
वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः	प्रतपञ्ज्योतिषा तमः ।	
स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे	त्रिधात्वस्य दंससा	१२
स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता	य इळानाम् । सोमो यः सुक्षितीनाम्	१३
यस्य न इन्द्रः पिवाद् यस्य मरुतो	यस्य वार्यमणा भगः ।	
आ येन मित्रावरुणा करामह	एन्द्रमवसे महे	१४
इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः	स्वायुधो मदिन्तमः । पवस्व मधुमत्तमः	१५ १०४०
इन्द्रस्य हार्दिं सोमधानमा विश	समुद्रमिव सिन्धवः ।	
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे	दिवो विष्टुम्भ उत्तमः	१६ १०४१
॥ १०८ ॥ (अ. ९ । १०९ । १—२२) (१०४२—१०६३) अग्नयो धिष्ण्या देश्वरयः । द्विपदा विराट् ।		
परि प्र धन्वेन्द्राय सोम	स्वादुमित्राय पूष्णे भगाय	१
इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयाः	ऋत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः	॥१॥ २
एवामृताय महे क्षयाय	स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः	३
पवस्व सोम महान्तसमुद्रः	पिता देवानां विश्वाभि धामं	॥२॥ ४ १०४५
शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम	दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै	५
दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः	सत्ये विधर्मन् वाजी पवस्व	॥३॥ ६
पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो	महामवीनामनु पूर्यः	७ १०४८

नृभिर्येमानो जज्ञानः पूतः क्षरद् विश्वानि मन्द्रः स्वर्वित्	॥४॥ ८
इन्दुः पुनानः प्रजामुराणः करद् विश्वानि द्रविणानि नः	९ १०५०
पवस्व सोम क्रत्वे दक्षायाऽश्वो न निक्तो वाजी धनाय	॥५॥ १०
तं ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे द्युम्नाय	११
शिथुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम्	॥६॥ १२
इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायाऽपामुपस्थे कविर्भगाय	१३
विभर्ति चार्विन्द्रस्य नाम येन विश्वानि वृत्रा जघान	॥७॥ १४ १०५५
पिबन्त्यस्य विश्वे देवासो गोभिः श्रूतस्य नृभिः सुतस्य	१५
प्र सुवानो अक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम्	॥८॥ १६
स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अङ्घ्रिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः	१७
प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः	॥९॥ १८
असर्जि वाजी तिरः पवित्रमिन्द्राय सोमः सहस्रधारः	१९ १०६०
अञ्जन्त्येनं मध्वो रसेनेन्द्राय वृष्ण इन्दुं मदाय	॥१०॥ २०
देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसे ऽपो वसानं हरिं मृजन्ति	२१
इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते श्रीणन्नगो रिणन्नपः	॥११॥ २२ १०६३

॥ १०९ ॥ (ऋ. ९ । ११० । १-१२)

(१०६४-१०७५) अथ रुक्मिणीवृष्णः, असदस्युः पौरुषकुत्स्यः १-३ पिपीलिकमध्या अनुष्टुप्,

४-९ ऊर्ध्ववृहती, १०-१२ विराट् ।

पर्युषु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।	
द्विषस्तरध्या ऋण्या न ईयसे	१
अनु हि त्वा सुतं सोम मदांसि महे समर्यराज्ये ।	
वाजा अभि पवमान प्र गाहसे	२ १०६५
अजीजनो हि पवमान सूर्य विधारे शक्मना पयः ।	
गोजीरया रहमाणः पुरंध्या	३
अजीजनो अमृत मर्त्येष्वं क्रतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः ।	
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत्	४
अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथो त्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम् ।	
शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः	५ १०६८

आर्दीं के चित् पश्यमानासु आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत ।

वारं न देवः संविता व्यूष्णते

६

त्वे सोम प्रमा वृक्तबर्हिषो महं वाजाय श्रवसे धियं दधुः ।

स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय

७ १०७०

दिवः पीयूषं पूर्य यदुक्थ्यं महो गाहाद् दिव आ निरधुक्षत ।

इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन्

८

अघ्र यद्विमे पवमानं रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना ।

यूथे न निष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे

९

सोमः पुनानो अव्यये वारे शिशुर्न क्रीळन् पवमानो अक्षाः ।

सहस्रधारः शतवाज इन्दुः

१०

एष पुनानो मधुमां क्रतावेन्द्रायेन्दुः पवते स्वादुरुर्मिः ।

वाजसनिर्वरिवोविद् वयोधाः

११

स पवस्व सहमानः पृतन्यून् त्सेधन् रक्षांस्यप दुर्गहाणि ।

स्वायुधः सांसह्वान्तसोम शत्रून्

१२ १०७५

॥ ११० ॥ (ऋ ९ । १११ । १-३) (१०७६-१०७८) अनानतः पारुच्छेपिः । अत्यष्टिः ।

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुग्वभिः सरो न स्वयुग्वभिः ।

धारां सुतस्य रोचते पुनानो अरूपो हरिः ।

विश्वा यद् रूपा परियात्यृकभिः सप्तास्येभिर्ऋकभिः

१

त्वं त्यत् पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि स्व आ दमं क्रतस्य धीतिभिर्दमे ।

परावतो न साम तद् यत्रा रणन्ति धीतर्यः ।

त्रिधातुभिररूपीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे

२

पूर्वामनु प्रदिशं याति चेकितत् सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः ।

अगमन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।

वज्रश्च यद् भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता

३ १०७८

॥ १११ ॥ (ऋ ९ । ११२ । १-४) (१०७९-१०८२) शिशुराक्षिरसः । पञ्क्तिः ।

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् ।

तक्षा रिष्टं रुतं भिषग् ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि सव

१ १०७९

- ज॒रतीभि॒रोष॑धीभिः प॒र्णेभिः शकु॑नानाम् ।
 का॒र्मा॒रो अ॒श्मभि॑र्द्युभि—हि॒र॒ण्य॒वन्त॑मिच्छ॒ती—न्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव २ १०८०
 का॒रु॒हं ततो॑ मि॒ष—गु॒पल॑प्राक्षिणीं न॒ना ।
 ना॒नाधि॑यो वसू॒यवो ऽनु॑ गा इ॒व त॑स्थिमे—न्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ३
 अ॒श्वो वो॒ळ्हा सु॒खं रथं॑ ह॒स॒नामु॑पमन्त्रिणः ।
 शे॒पो रोम॑ण्वन्तो भेदौ वा॒रिन्म॑ण्डूकं इच्छ॒ती—न्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ४ १०८१
 ॥ ११२ ॥ (ऋ ९ । ११३ । १—११) (१०८३-१०९७) कश्यपो मारीचः ।
 श॒र्य॒णाव॑न्ति सोम—मिन्द्रः पिब॑तु वृ॒त्रहा॑ ।
 ब॒लं द॒धाना॑ आ॒त्मनि॑ करि॒ष्यन् वी॒र्यं॑ म॒ह—दिन्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव १
 आ प॑वस्व दि॒शां प॒त आ॒र्जीका॑त् सोम मी॒द्वः ।
 ऋ॒त॒वाके॑न स॒त्येन॑ श्र॒द्धया॑ तप॑सा सु॒त इन्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव २
 प॒र्जन्य॑वृ॒द्धं म॒हिषं॑ तं सूर्य॑स्य दु॒हिता॑भरत् ।
 तं ग॑न्ध॒र्वाः प्र॒त्य॒गृभ्ण॑न् तं सोमे॒ रस॑मा॒दधु॑—रिन्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ३ १०८५
 ऋ॒तं व॑द॒न्नत॑द्यु॒म्न स॒त्यं व॑द॒न्त॑सत्यकर्मन् ।
 श्र॒द्धां व॑द॒न्त॑सोम राजन् धा॒त्रा सोम॑ परि॒ष्कृत॑ इन्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ४
 स॒त्यमु॑ग्रस्य बृ॒हतः॑ सं स्र॑वन्ति सं॒स्रवाः॑ ।
 सं य॑न्ति र॒सिनो॑ रसाः पु॒नानो॑ ब्र॒ह्मणा॑ ह॒र इन्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ५
 यत्र॑ ब्र॒ह्मा प॑वमान छ॒न्दस्या॑ं३ वाचं॑ व॒दन् ।
 ग्रा॒व्णा सोमे॑ म॒हीय॑ते सोमै॒नान॑न्दं ज॒नय॑—निन्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ६
 यत्र॑ ज्योति॒रज॑स्रं यस्मिन् लो॒के स्वा॑र्हितम् ।
 तस्मिन् मां धे॒हि प॑वमाना—ऽमृ॒ते लो॒के अ॑क्षित इन्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ७
 यत्र॑ राजा॑ वेवस्वतो यत्रा॒वरो॑धनं दि॒वः ।
 यत्रा॑मूर्य॒ह्वती॑राप—स्तत्र॑ माम॒मृतं॑ कृ॒धी—न्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ८ १०९०
 यत्रा॑नु॒कामं॑ च॒रणं त्रि॒नाके॑ त्रि॒दिवे॑ दि॒वः ।
 लो॒का यत्र॑ ज्योति॒ष्मन्त॑—स्तत्र॑ माम॒मृतं॑ कृ॒धी—न्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ९
 यत्र॑ कामा॑ नि॒कामा॑श्च यत्र॑ ब्र॒ध्नस्य॑ वि॒ष्टप॑म् ।
 स्व॒धा च॑ यत्र॑ तृ॒प्तिश्च॑ तत्र॑ माम॒मृतं॑ कृ॒धी—न्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव १०
 यत्रा॑न॒न्दाश्च॑ मो॒दाश्च॑ मु॒दः प्र॑मु॒द आ॑सते ।
 काम॑स्य॒ यत्रा॑प्ताः कामा॑—स्तत्र॑ माम॒मृतं॑ कृ॒धी—न्द्रा॑येन्द्रो परि॑ स्रव ११ • १०९३

॥ ११३ ॥ (ऋ ९ । ११४ । १-४)

य इन्द्रोः पर्वमानस्या—ऽनु धामान्यक्रमीत् ।

तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमार्विधन्मन इन्द्रायेन्द्रो परि स्रव १

ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्धर्धयन् गिरः ।

सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पति—रिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव २ १०९५

सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः ।

देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ३

यत् ते राजञ्छृतं हवि—स्तेन सोमाभि रक्ष नः ।

अरातीवा मा नस्तारी—न्मो च नः किं चनामम—दिन्द्रायेन्द्रो परि स्रव ४ १०९७

॥ ११४ ॥ (ऋ १ । ४३ । ७-९)

(१०९८—११००) कण्वो घांगः । गायत्री, ९ अनुष्टुप् ।

अस्मे सोम श्रियमधि नि धेहि शतस्य नृणाम् । महि श्रवस्तुविनृम्णम् ७

मा नः सोमपरिबाधो मारातयो जुहुरन्त । आ न इन्द्रो वाजै भज ८

यास्ते प्रजा अमृतस्य परस्मिन् धामन्नृतस्य ।

मूर्धा नाभा सोम वेन आभूषन्तीः सोम वेदः ९ ११००

॥ ११५ ॥ (ऋ. १ । ९१ । १-२३)

(११०१—११२३) गोतमो राहगणः । त्रिष्टुप्, ५—१६ गायत्री, १७ उष्णिक् ।

त्वं सोम प्र चिकितो मनीषा त्वं रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम् ।

तव प्रणीती पितरो न इन्द्रो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः १

त्वं सोम क्रतुभिः सुक्रतुर्भू—स्त्वं दक्षैः सुदक्षो विश्ववेदाः ।

त्वं वृषा वृषत्वेभिर्महित्वा द्युम्नेभिर्द्युमन्यभवो नृचक्षाः २

राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद् गभीरं तव सोम धाम ।

शुचिष्ट्रमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम ३

या ते धामानि दिवि या पृथिव्यां या पर्वतेष्वोषधीष्वप्सु ।

तेभिर्नो विश्वैः सुमना अहैळन् राजन्त्सोम प्रति हव्या गृभाय ४

त्वं सोमासि सत्पाति—स्त्वं राजोत वृत्रहा । त्वं भद्रो असि क्रतुः ५ ११०५

त्वं च सोम नो वशो जीवातुं न मरामहे । प्रियस्तोत्रो वनस्पतिः ६ ११०६

त्वं सोम महे भगं त्वं यून क्रतायते । दक्षं दधासि जीवसे	७
त्वं नः सोम विश्वतो रक्षा राजन्नघायतः । न रिष्येत् त्वावतः सखा	८
सोम यास्ते मयोभुव ऊतयः सन्ति द्राशुषे । तामिर्नोऽविता भव	९
इमं यज्ञमिदं वचो जुजुषाण उपागहि । सोम त्वं नो वृधे भव	१० १११०
सोम गीभिष्ठा वयं वर्धयामो वचोविदः । सुमृळीको न आ विश	११
गयस्फानो अमीवहा वसुवित् पुष्टिवर्धनः । सुमित्रः सोम नो भव	१२
सोम रारन्धि नो हृदि गात्रो न यवसेष्वा । मर्ये इव स्व ओक्ये	१३
यः सोम सुख्ये तव रारणद् देव मर्येः । तं दक्षः सचते कविः	१४
उरुष्या णो अभिशस्तेः सोम नि पाहंहसः । सखा सुशेव एधि नः	१५ १११५
आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् । भवा वाजस्य संगथे	१६
आ प्यायस्व मदिन्तम् सोम विश्वेभिरंशुभिः । भवा नः सुश्रवस्तमः सखा वृधे	१७
सं ते पयांसि सप्त यन्तु वाजाः सं वृष्णयान्यभिमातिषाहः ।	
आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानि धिष्व	१८
या ते धामानि हविषा यजन्ति ता ते विश्वा परिभूरस्तु यज्ञम् ।	
गयस्फानः प्रतरणः सुवीरो ऽवरिहा प्र चरा सोम दुर्यान्	१९
सोमो धेनुं सोमो अर्वन्तमाशुं सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति ।	
सादन्यं विदुष्यं सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै	२० ११२०
अषाब्धं युत्सु पृतनासु पत्रिं स्वर्षामप्सां वृजनस्य गोपाम् ।	
भरेषुजां सुक्षितिं सुश्रवसं जयन्तं त्वामनु मदेम सोम	२१
त्वमिमा ओषधीः सोम विश्वा—स्त्वमपो अजनयस्त्वं गाः ।	
त्वमा ततन्थोर्वन्तरिक्षं त्वं ज्योतिषा वि तमो ववर्थ	२२
देवेन नो मनसा देव सोम रायो भागं सहसावन्नभि युध्य ।	
मा त्वा तनदीशिषे वर्येभ्यो—भयेभ्यः प्र चिकित्सा गविष्ठौ	२३ ११२३

॥ ११६ ॥ (ऋ. ३ । ६२ । १३—१५)

(११२४—११२६) गाथिनो विश्वामित्रः । गायत्री ।

सोमो जिगाति गातुविद् देवानामेति निष्कृतम् । ऋतस्य योनिमासदम्	१३
सोमो असभ्यं द्विपदे चतुष्पदे च पशवे । अनमीवा इषस्करत्	१४ ११२५
अस्माकमायुर्वर्धय—अभिमातीः सहमानः । सोमः सुधस्थमासदत्	१५ ११२६

॥ ११७ ॥ (ऋ ६ । ४७ । १—५)

(११२७—११३१) गगो भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

स्वादुक्किलायं मधुमां उतायं तीव्रः किलायं रसवो उतायम् ।

उतो न्वस्य पपिवांसमिन्द्रं न कश्चन सहत आह्वेषु १

अयं स्वादुरिह मदिष्ठ आस यस्येन्द्रो वृत्रहन्त्ये ममाद ।

पुरूणि यश्च्यौता शम्बरस्य वि नवति नव च देह्यं हन् २

अयं मे पीत उदिद्यति वाचं मयं मनीषामुशतीमजीगः ।

अयं षळुर्वीरमिमीत धीरो न याम्यो भुवनं कच्चनारे ३

अयं स यो धरिमाणं पृथिव्या वर्ष्मणं दिवो अकृणोदयं सः ।

अयं पीयूषं तिसृषु प्रवत्सु सोमो दाधारोर्वृन्तरिक्षम् ४ ११३०

अयं विदच्चित्रदृशीकर्मणः शुक्रसंभनामुषसामनीके ।

अयं महान् महता स्कम्भने नोद् घामस्तभाद् वृषभो मरुत्वान् ५ ११३१

॥ ११८ ॥ (ऋ. ७ । १०४ । ९, १२—१३)

(११३२—११३४) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः ।

ये पाकशंसं विहरन्त एवैर्ये वा भद्रं दूषयन्ति स्वधार्भिः ।

अहये वा तान् प्रददातु सोम आ वा दधातु निर्ऋतेरुपस्थे ९

मुविज्ञानं चिकितुषे जनाय सचासच्च वर्चमी पस्पृधाते ।

तयोर्यत् सत्यं यतरद्वजीयस्तदित् सोमोऽवति हन्त्यासत् १२

न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति न क्षत्रियं मिथुया धार्यन्तम् ।

हन्ति रक्षो हन्त्यासद् वदन्त मुभाविन्द्रस्य प्रसितौ अयाते १३ ११३४

॥ ११९ ॥ (ऋ ८ । ४८ । १—१५)

(११३५—११४९) प्रगाथो घोरः काण्वः । त्रिष्टुप्, ५ अगती ।

स्वादोरभाक्षि वयसः सुमेधा स्वाध्यां वरिवोवित्तरस्य ।

विश्वे यं देवा उत मर्त्यासो मधुं ब्रुवन्तो अभि संचरन्ति १ ११३५

अन्तश्च प्रागा अदितिर्भवास्य वयाता हरसो दैव्यस्य ।

इन्द्रविन्द्रस्य सख्यं जुषाणः श्रौष्टीव धुरमनुं राय क्रध्याः २

अपाम सोमममृता अभूमा गन्म ज्योतिरविदाम देवान् ।

किं नूनमस्मान् कृणवदरानिः किमु धूर्तिरमत मर्त्यस्य ३ ११३७

- शं नो भव हृद आ पीत इन्दो पितेव सोम सूनवे सुशेवः ।
 सखेव सख्य उरुशंस धीरः प्र ण आयुर्जावसे सोम तारीः ४
 इमे मा पीता यशस उरुष्यवो रथं न गावः समनाह पर्वसु ।
 ते मा रक्षन्तु विस्रसश्चरित्रा दुत मा सामाद् यवयन्त्विन्दवः ५
 अग्निं न मा मथितं सं दिदीपः प्र चक्षय कृणुहि वस्यसो नः ।
 अथा हि ते मद आ सोम मन्ये रेवां इव प्र चरा पुष्टिमच्छ ६ ११४०
 इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः ।
 सोम राजन् प्र ण आयूषि तारी रहानीव सूर्यो वासराणि ७
 सोम राजन् मृळया नः स्वस्ति तव स्मसि व्रत्याडुस्तस्य विद्धि ।
 अलति दक्ष उत मन्युरिन्दो मा नो अयो अनुकामं परा दाः ८ ११४१
 त्वं हि नस्तन्वः सोम गोपा गात्रेगात्रे निषसत्था नृचक्षाः ।
 यत् ते वयं प्रमिनाम व्रतानि स नो मृळ सुषुखा देव वस्यः ९
 ऋदूदरेण सख्या सचेय यो मा न रिष्येद्धर्यश्च पीतः ।
 अयं यः सोमो न्यधाव्यस्मे तस्मा इन्द्रं प्रतिरमेम्यायुः १०
 अप त्या अस्थुरनिरा अमीवा निरत्रसन् तमिषीचीरभैषुः ।
 आ सोमो अस्मां अरुहद् विहाया अगन्म यत्र प्रतिरन्त आयुः ११ ११४५
 यो न इन्दुः पितरो हृत्सु पीतो उमेत्यो मर्त्या आविवेश ।
 तस्मै सोमाय हविषा विधेम मृळीके अस्य सुमतौ स्याम १२
 त्वं सोम पितृभिः संविदानो ऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ ।
 तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयं स्याम पतयो रयीणाम् १३
 त्रातारो देवा अधि वोचता नो मा नो निद्रा ईशत मोत जल्पिः ।
 वयं सोमस्य विश्वह प्रियासः सुवीरासो विदथमा वदेम १४
 त्वं नः सोम विश्वतो वयोधा स्त्वं स्वविदा विशा नृचक्षाः ।
 त्वं न इन्द ऊतिभिः सजोषाः पाहि पश्चातादुत वा पुरस्तात् १५ ११४९

॥ १२० ॥ (ऋ. ८ । ७९ । १-९)

(११५०-११५८) कृत्नुर्भागवः । गायत्री, ९ अनुष्टुप् ।

- अयं कृत्नुरगृभीतो विश्वजिदुद्भिदित् सोमः । ऋषिर्विप्रः काव्येन १ ११५०
 अभ्यूषोति यन्नम्रं भिषक्ति विश्वं यत् तुरम् । प्रेमन्धः खयान्निः श्रोणो भूत २ ११५१

त्वं सोम तनूकृद्भयो द्वेषोभ्योऽन्यकृतेभ्यः । उरु यन्तासि वरूथम् ३
 त्वं चित्ती तव दक्षैर्दिव आ पृथिव्या ऋजीषिन् । यावीरघस्य चिद् द्वेषः ४
 अर्थिनो यान्ति चेदर्थं गच्छानिद् दुदुषो रातिम् । ववृज्युस्तृष्यतः कामम् ५
 विदद् यत् पूर्य नष्टमृदीमृतायुमीरयत् । प्रेमायुस्तारीदतीर्णम् ६ ११५५
 सुशेवो नो मृळयाकु—रदृप्तकतुरवातः । भवा नः सोम शं हृदे ७
 मा नः सोम सं वीविजो मा वि वीभिषथा राजन् । मा नो हार्दि त्विषा वधीः ८
 अव यत् स्वे सधस्थे देवानां दुर्मतीरीक्षे ।
 राजन्नप द्विषः सेध मीद्वो अप स्निधः सेध ९ ११५८

॥ १२१ ॥ (ऋ. ८ । १०१ । १४)

(११५९) जमदग्निर्भागवः । त्रिष्टुप ।

प्रजा ह तिस्रो अत्यायमीयुर्न्यन्या अर्कमाभितो विविश्रे ।

बृहद्वं तस्थौ भुवनेष्वन्तः पर्वमानो हरित आ विवेश १ ११५९

॥ १२२ ॥ (ऋ. १० । २५ । १-११)

(११६०-११७०) ऐन्द्रो विगदः, प्राजापत्यो वा, वासुको वसुकृद्वा । आस्तारपङ्क्तिः ।

भद्रं नो अपि वातय मनो दक्षमुत क्रतुम् ।
 अधा ते सख्ये अन्धसो वि वो मदे रणन् गावो न यवसे विवक्षसे १ ११६०
 हृदिस्पृशस्त आसते विश्वेषु सोम धामसु ।
 अधा कामा इमे मम वि वो मदे वि तिष्ठन्ते वसयवो वीवक्षसे २
 उत व्रतानि सोम ते प्राहं मिनामि पाकया ।
 अधा पितेव सूनवे वि वो मदे मृळा नो अभि चिद् वृषाद् विवक्षसे ३
 समु प्र यन्ति धीतयः सर्गासोऽवृता इव ।
 क्रतुं नः सोम जीवसे वि वो मदे धारया चमसा इव विवक्षसे ४
 तव त्ये सोम शक्तिभिर्निर्कामासो व्यृण्विरे ।
 गृत्सस्य धीरास्तवसो वि वो मदे व्रजं गोमन्तमश्विनं विवक्षसे ५
 पशुं नः सोम रक्षसि पुरुत्रा विष्टितं जगत् ।
 समाकृणोषि जीवसे वि वो मदे विश्वा संपश्यन् भुवना विवक्षसे ६ ११६५
 त्वं नः सोम विश्वतो गोपा अदाभ्यो भव ।
 सेध राजन्नप स्त्रियो वि वो मदे मा नो दुःशंस ईशता विवक्षसे ७ ११६६

त्वं नः सोम मुकतुर्वयोधेयाय जागृहि ।
 क्षेत्रवित्तो मनुषो वि वो मदे द्रुहो नः पाह्यंसो विवक्षसे ८
 त्वं नो वृत्रहन्तमेन्द्रस्येन्दो शिवः सखा ।
 यत् सीं हवन्ते समिथे वि वो मदे युध्यमानास्तोकसातौ विवक्षसे ९
 अयं घ स तुरो मद इन्द्रस्य वर्धत प्रियः ।
 अयं कक्षीवतो महो वि वो मदे मतिं विप्रस्य वर्धयद् विवक्षसे १०
 अयं विप्राय दाशुषे वाजो इयति गोमतः ।
 अयं सप्तभ्य आ वरं वि वो मदे प्रान्धं श्रोणं च तारिषद् विवक्षसे ११ ११७०

॥ १२३ ॥ (ऋ. १०।८५।१-५)

११७१-११७५) सूर्या सा वत्री ऋषिका । अनुष्टुप् ।

सत्येनोत्तमिता भूमिः सूर्येणोत्तमिता द्यौः ।
 ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सोमो अविं श्रिः १
 सोमेनादित्या बलिनुः सोमेन पृथिवी मही ।
 अथो नक्षत्राणामेषा मुपस्थे सोम आहितः २
 सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिपन्त्योषधिम् ।
 सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन ३
 आच्छद् विधानैर्गुपितो बर्हितेः सोम रक्षितः ।
 ग्राष्णामिच्छुष्वन् तिष्ठमि न ते अश्नाति पार्थिवः ४
 यत् त्वा देव प्रपिबन्ति तत् आ प्यायसे पुनः ।
 वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः ५ ११७५

॥ १२४ ॥ (अथर्व० ३।५।१-८)

(११७६-११८६) अथर्व । अनुष्टुप्, १ पुरोऽनुष्टुप्त्रिष्टुप्, ४ त्रिष्टुप्, ८ विराडुरोबृहती ।

आयमंगन् पर्णमुणिर्वली बलेन प्रमृणन्त्सपत्नान् ।
 ओजो देवानां पय ओषधीनां वर्चसा मा जिन्वत्वप्रयावन् १
 मयि क्षत्रं पर्णमणे मयि धारयताद् रयिम् ।
 अहं राष्ट्रस्याभीवर्गे निजो भूयासमुत्तमः २
 यं निदधुर्नस्पतां गुह्यं देवाः प्रियं मणिम् ।
 तमम्भ्यै सहायुषा देवा ददतु भर्तवे ३ ११७८

॥ १३० ॥ (अथर्व० ६ । ८९ । १) (११९०) अथर्वी । अनुष्टुप् ।

इदं यत् प्रेण्यः शिरो दुत्तं सोमेन वृण्यम् ।

ततः परि प्रजातेन हार्दिं ते शोचयामसि

१ ११९०

॥ १३१ ॥ (११९१-११९३) (वा० यजु० ४ । १६ उत्तरार्ध, २४, २७)

रास्वेयत् सोमा भूयो भर देवो नः सविता वसोर्दाता वस्वदात् १६

एष ते गायत्रो भाग इति मे सोमाय ब्रूतादेव ते वैष्टुमो भाग इति मे सोमाय
ब्रूतादेव ते जागतो भाग इति मे सोमाय ब्रूतच्छन्दोनामनाथि साम्राज्यं गच्छेति
मे सोमाय ब्रूतादास्माकोऽसि शुक्रन्ते ग्रहो विचितस्त्वा विचिन्वन्तु २४

मित्रो न एहि सुमित्रध इन्द्रस्योरुमाविश दक्षिणमुशन्नुशन्तं स्योनः स्योनम् ।

स्वान् भ्राजाङ्घारे वम्भारे हस्त सुहस्त कशानवेते वः सोमकर्मणास्तान्

रक्षध्वं मा वो दभन्

२७ ११९१

॥ १३२ ॥ (११९४) (वा० यजु० ५ । ७)

अथशुरंथंशुष्टे देव सोमाप्यायतामिन्द्रायैकधनुर्विदे ।

आ तुभ्यमिन्द्रः प्यायतामा त्वमिन्द्राय प्यायस्व ।

आप्याययाम्मान्तस्खीन्तसून्या मेधया स्वस्ति ते देव सोम सुत्यामशीय ।

एष्टा रायः प्रेपे भगाय कृतमृतवादिभ्यो नमो धावापृथिवीभ्याम्

७ ११९३

॥ १३३ ॥ (११९५-१२००) (वा० यजु० ६ । २५-२६, २७-३३, ३५-३६)

हृदे त्वा मनसे त्वा दिवे त्वा सूर्याय त्वा ।

ऊर्ध्वमिममध्वरं दिवि देवेषु होत्रा यच्छ

२५ ११९५

सोमं राजन् विश्वास्त्वं प्रजा उपावरोह विश्वास्त्वां प्रजा उपावरोहन्तु ।

शृणोत्वग्निः समिधा हवै मे शृण्वन्त्वापो विपणाश्च देवीः ।

श्रोतां प्रावाणो विदुषो न यज्ञं शृणोतु देवः सविता हवै मे स्वाहा २६

इन्द्राय त्वा वसुमते रुद्रवत इन्द्राय त्वादित्यवत इन्द्राय त्वाभिसातिषे ।

इयेनाय त्वा सोमभृतेऽग्नये त्वा रायस्पृष्टे

३२

यत् ते सोम दिवि ज्योतिर्यत् पृथिव्यां यदुगान्तरिक्षे ।

तेनास्मै यजमानायोरु राये कृध्यधि दात्रे वाचः

३३

मा भर्मा संविकथा ऊर्ज धन्स्व धिषणे वीडवी सती वीडयेथामूर्ज दद्याथाम् ।

पाप्मा हतो न सोमः

३५ ११९९

प्रागपागुदंगधराक् सर्वतस्त्वा दिश आधावन्तु ।

अम्ब निष्पर समरीर्विदाम्

३६ १२००

॥ १३४ ॥ (१२०१) (वा० यजु० ७ । १४)

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम ।

सा प्रथमा संस्कृतिविश्ववारा म प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः

१४ १२०

॥ १३५ ॥ (१२०२—१२०८) (वा० य० ८ । १, ९, २५-२६, ४८—५०)

उपयामगृहीतोऽमिन्द्रादित्येभ्यस्त्वा ।

विष्णो उरुगाथैष ते सोऽस्तथ रक्षस्व मा त्वा दमन्

१

उपयामगृहीतोऽमिन्द्रादित्येभ्यस्त्वा ।

इन्द्रोऽरिन्द्रियावतः पत्नीवतो ग्रोऽर क्रध्यामम् ।

अहं परस्तादहमवस्ताद् यदन्तरिक्षं तदु मे पिताभूत् ।

अहथ सूर्यमुभयतो ददर्शा—ऽहं देवानां परमं गुहा यन्

९

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्नः सं त्वा विशन्त्वोपधीरुतापः ।

यज्ञस्य त्वा यज्ञपते मूक्तोक्तौ नमोवाके विधेम यत् स्वाहा

२५

देवीराप एष वो गर्भस्तथ सुप्रीतथ सुभृतं बिभृत ।

देव सोमैष ते लोकस्तस्मि—च्छं च वक्ष्व परि च वक्ष्व

२६ १२०५

व्रेशीनां त्वा पत्मन्नाधूनोमि कुकूननानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि भृन्दनानां त्वा

पत्मन्नाधूनोमि मदिन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि मधुन्तमानां त्वा पत्मन्नाधूनोमि

शुक्रं त्वा शुक्र आधूनो—म्यहो रूपे सूर्यस्य रुद्रिमपु

४८

कुकुभथ रूपं वृषभस्य गच्छते बृहच्छुक्रः शुक्रस्य पुरोगाः सोमः सोमस्य पुरोगाः ।

यत् ते सोमादाभ्यं नाम जागृवि तस्मै त्वा गृह्णामि तस्मै ते सोम सोमाय स्वाहा॥४९

उशिक त्वं देव सोमाग्नेः प्रियं पाथोऽपीहि वशी त्वं देव सोमेन्द्रस्य प्रियं पाथोऽपी-

ह्यस्मत्सखा त्वं देव सोम विश्वेषां देवानां प्रियं पाथोऽपीहि

५० १२०८

॥ १३६ ॥ (१२०९) (वा० य० १९ । ७२)

सोमो राजामृतथ सुत ऋजीषेणाजहान्मृत्युम् ।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिपानथ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पथोऽमृतं मधु॥७२ १२०९

॥ १३७ ॥ (१२१०) (वा० य० २० । १९)

समुद्रे ते हृदयमप्स्वन्तः सं त्वा विशन्त्वोषधीरुतापः ।

सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि

यं च वयं द्विष्मः

१९ १२१०

॥ १३८ ॥ (१२११-१२ ४) (साम० १३००-१२०३)

पावमानीः स्वस्त्ययनीः सुदुघा हि घृतश्चुतः ।

ऋषिभिः समृग रसो ब्राह्मणेष्वमृतं हितम् ॥ ३ ॥

१३००

पावमानीर्दधन्तु न इमं लोकमथा अमुम् ।

कामान्तसमर्धयन्तु नो देवीर्देवैः समाहृताः ॥ ४ ॥

१३०१

येन देवाः पार्श्वेणा—ऽऽत्मानं पुनते सदा ।

तेन सहस्रधारेण—पावमानीः पुनन्तु नः ॥ ५ ॥

१३०२

पावमानीः स्वस्त्ययनी—स्ताभिर्गच्छति नान्दनम् ।

पुण्याश्च भक्षान् भक्षय—त्यमृतत्वं च गच्छति ॥ ६ ॥

१३०३ १२१४

॥ १३९ ॥ (ऋ. १० । १२४ । ६) (१२१५) अग्नि-वरुण-सोमाः । त्रिष्टुप् ।

इदं स्वरिदमिदास वाम—मयं प्रकाश उर्वरन्तरिक्षम् ।

हनाव वृत्रं निगेहि सोम हविष्ट्वा सन्तं हविषा यजाम

६ १२१५

सोमसहचारी देवगणः ।

(१) सूर्यरोदसीमित्रवरुणरुद्रेन्द्राग्न्यर्यमभगसोमाः ।

॥ १४० ॥ (ऋ. १ । १३६ । ६) (१२१६) परुच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टिः ।

नमो दिवे वृहते रोदसीभ्यां मित्राय वोचं वरुणाय मीळहुषे समूळीकाय मीळहुषे ।

इन्द्रमग्निमुप स्तुहि धुक्षमर्यमणं भगम् ।

ज्योग् जीवन्तः प्रजया सचेमहि सोमस्योती सचेमहि

६ १२१६

(२) सोमापूषणौ, ६ (अन्त्योऽर्धर्चस्य) अदितिः ।

॥ १४१ ॥ (ऋ. २ । ४० । १-६)

(१२१७-१२२२) गृत्समद् (आङ्गिरसः शौनहोत्रः पश्चाद् भार्गवः शौनकः । शिष्टुप् ।

सोमापूषणा जनना रयीणां जनना दिवो जनना पृथिव्याः ।	
जातौ विश्वस्य भुवनस्य गोपौ देवा अकृण्वन्नमृतस्य नाभिम्	१
इमौ देवौ जायमानौ जुषन्ते—मौ तमांसि गूहनामजुष्टा ।	
आभ्यामिन्द्रः पक्रमामास्वन्तः सोमापूपभ्यां जनदुस्त्रियासु	२
सोमापूषणा रजसो विमानैः सप्तचक्रं रथमविश्वमिन्वम् ।	
विपूषृतं मनसा युज्यमानं तं जिन्वथो वृषणा पञ्चरश्मिम्	३
दिव्येभ्यः सदनं चक्र उच्चा पृथिव्यामन्यो अध्यन्तरिक्षे ।	
तावत्सभ्यं पुरुवारं पुरुक्षुं शयस्पोषं विष्यतां नाभिमस्मे	४ १२२०
विश्वान्यन्यो भुवना जजान विश्वमन्यो अभिचक्षाण एति ।	
सोमापूषणावर्चतं धियं मे युवाभ्यां विश्वाः पृतना जयेम	५
धियं पूषा जिन्वतु विश्वमिन्वो रयिं सोमो रयिपतिर्दधातु ।	
अवतु देव्यदितिरनुर्वा बृहद् वदेम विदथे सुवीराः	६ १२२२

(३) सोमारुद्रौ ।

॥ १४२ ॥ (ऋ. ३ । ७४ । १-४)

(१२२३-२६) भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । शिष्टुप् ।

सोमारुद्रा धारयैथाममुर्यं प्र वामिष्ठयोऽरमभुवन्तु ।	
दमेदमे सप्त रत्ना दधाना शं नो भूतं द्विपदे शं चतुष्पदे	१
सोमारुद्रा वि बृहत् विष्वची—ममीवा या नो गर्यमाविवेश ।	
आरे बाधेथां निर्कीति पराचै—रस्मे भद्रा सौश्रवसानि सन्तु	२
सोमारुद्रा युवमेतान्यस्मे विश्वा तनूषु भेषजानि धत्तम् ।	
अव स्यतं मुञ्चतं यन्नो अस्ति तनूषु बृद्धं कृतमेनो असत्	३ १२२५
तिग्मायुर्धा तिग्महेती सुशेवौ सोमारुद्राविह सु मृळतं नः ।	
प्र नो मुञ्चतं वरुणस्य पाशाद् गोपायतं नः सुमनस्यमाना	४ १२२६

(४) ब्राह्मण-पितृ-सोम-द्यावापृथिवी-पूषाणः ।

॥ १४३ ॥ (ऋ. ६ । ७५ । १०)

(१२२७) पायुर्भारद्वाजः । जगती ।

ब्राह्मणासुः पितरुः सोम्यासः शिवे नो द्यावापृथिवी अनेहसा ।

पूषा नः पातु दुरिताद्वतावृधो रक्षा मार्किर्नो अवशंस ईशत १० १२२७

(५) वर्म-सोम-वरुणाः ।

॥ १४४ ॥ (१२२८) (ऋ० ६ । ७५ । १८) पायुर्भारद्वाजः । त्रिष्टुप् ।

मर्माणि ते वर्मेणा छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम् ।

उरोर्वरीयो वरुणस्ते कृणोतु जयन्तं त्वानु देवा मदन्तु १८ १२२८

(६) अग्नीद्रमित्रावरुणाश्विभगपूषब्रह्मणस्पतिसोमरुद्राः ।

॥ १४५ ॥ (ऋ० ७ । ४१ । १)

(१२२९) मैत्रावरुणिर्वसिष्ठः । जगती ।

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।

प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हुवेम १ १२२९

(७) अङ्गिरःपित्रथर्वभृगुसोमाः ।

॥ १४६ ॥ (ऋ. १० । १४ । ६)

(१२३०) वैवस्वतो यम । त्रिष्टुप् ।

अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः ।

तेषां वयं सुमतौ यज्ञियानां मर्षि भद्रे सौमनसे स्याम ६ १२३०

(८) आपः सोमो वा ।

॥ १४७ ॥ (ऋ. १० । १७ । ११-१३)

१२३१-१२३३) देवश्च वा यामायनः । त्रिष्टुप् १३ अनुष्टुप् पुरस्ताद्बृहती वा ।

द्रुप्तश्चस्कन्द प्रथमाँ अनु द्यूनिमं च योनिमनु यश्च पूर्वः ।

समानं योनिमनु संचरन्तं द्रुप्तं जुहोम्यनु मम होत्राः ११ १२३१

यस्ते द्रुप्सः स्कन्दति यस्ते अंशुर्बाहुच्युतो धिषणाया उपस्थात् ।
 अध्वर्योर्वा परि वा यः पवित्रात् तं ते जुहोमि मनसा वर्षदकृतम् १२
 यस्ते द्रुप्सः स्कन्नो यस्ते अंशुर्वश्च यः परः सुचा ।
 अयं देवो बृहस्पतिः सं तं सिञ्चतु राधसे १३ १२३३

(९) अग्नीषोमौ ।

१४८ ॥ (ऋ० १० । १९ । १ उत्तरार्धः)
 (१२३४) मथितो यामायनः भृगुर्वाणिर्वा, भार्गवश्च्यवनो वा । अनुष्टुप् ।
 अग्नीषोमा पुनर्वसू अस्मे धारयतं रयिम् । १ १२३४
 ॥ १४९ ॥ (अथर्व २ । ३३ । ३)
 (१२३५) पतिवेदनः । त्रिष्टुप् ।
 इयमग्रे नारी पतिं विदेष्टु सोमो हि राजा सुभगां कृणोति ।
 सुगाना पुत्रान् महिषी भवति गत्वा पतिं सुभगा वि राजतु २ १२३५

(१०) निर्वृत्तिसोमौ ।

॥ १५० ॥ (ऋ० १० । ५९ । ४)
 (१२३६) वन्धुः श्रुतवन्धुर्विप्रवन्धुर्गौपायनाः । त्रिष्टुप् ।
 मो षु णः सोम मृत्यवे परा दाः पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्नम् ।
 द्युभिर्हितो जरिमा स नो अस्तु परातरं सु निर्वृत्तिर्जिहीताम् ३ १२३६

(११) पृथिवीद्वयन्तरिक्षसोमपूषपथ्यास्वस्तयः ।

॥ १५१ ॥ ऋ० १० । ५९ । ७)
 (१२३७) वन्धुः श्रुतवन्धुर्विप्रवन्धुर्गौपायनाः । त्रिष्टुप् ।
 पुनर्नो असुं पृथिवी ददातु पुनर्घोर्देवी पुनरन्तरिक्षम् ।
 पुनर्नः सोमस्तन्वं ददातु पुनः पूषा पथ्यांश्च वा स्वस्तिः ७ १२३७

(१२) सोमाकौ ।

॥ १५२ ॥ (ऋ० १० । ८५ । १८)
 (१२३८) सूर्या सावित्री ऋषिका । जगती ।
 पूर्वापरं चरतो माययैतौ शिशू क्रीळन्तौ परि यातो अध्वरम् ।
 विश्वान्यन्यो भुवनाभिचष्ट क्रतूरन्यो विदधजायते पुनः १८ १२३८

(१३) सोम-वरुण-बृहस्पति-अनुमति-मघवत्-धातु-विधातारः ।

॥ १५३ ॥ (ऋ १० । १६७ । ३)

(१२३९) विश्वामित्र-जमदग्नी । जगती ।

सोमस्य राज्ञो वरुणस्य धर्मेणि बृहस्पतेरनुमत्या उ शर्मेणि ।

तवाहमद्य मघवन्नुपस्तुतौ धातुर्विधातः कलशौ अभक्षयम् ३ १२३९

(१४) बृहस्पतिः, अग्नीषोमौ च ।

॥ १५४ ॥ (अथर्व० १ । ८ । १-२)

(१२४०-१२४१) चातनः । अनुष्टुप् ।

इदं हविर्यातुधानान् नदी फेनमिवा बहत् ।

य इदं स्त्री पुमानकं रिह स स्तुवतां जनः १ १२४०

अयं स्तुवान आगमं दिमं स्म प्रति हर्यत ।

बृहस्पते वशे लब्ध्वा ऽग्नीषोमा वि विध्यतम् २ १२४१

(१५) अग्निः, आपः, ओषधयः, सोमः ।

॥ १५५ ॥ (अथर्व० २ । १० । २)

(१२४२) भृग्वङ्गिराः । सप्तपदाष्टिः ।

शं ते अग्निः सहाङ्गिरस्तु शं सोमः सहौषधीभिः ।

एवाहं त्वां क्षेत्रियाभिर्कृत्या जामिशंसाद् द्रुहो मुञ्चामि वरुणस्य पाशात् ।

अनागसं ब्रह्मणा त्वा कृणोमि शिवे ते द्यावापृथिवी उभे स्ताम् ॥२॥ १२४२

(१६) सोमः, अर्यमा, धाता ।

॥ १५६ ॥ (अथर्व० २ । ३६ । २)

(१२४३) पतिवेदनः । अनुष्टुप् ।

सोमं जुष्टं ब्रह्म जुष्टं मर्यम्णा संभृतं भगम् ।

धातुर्देवस्य सत्येनं कृणोमि पतिवेदनम् २ १२४३

[सोमः] १०

(१७) वरुणः, सोमः, इन्द्रः ।

॥ १५७ ॥ (अथर्व० ३।३।३)

(१२४४-१२६०) अथर्वी । चतुष्पदा भुरिक्पङ्क्तिः ।

अञ्चस्त्वा राजा वरुणो ह्वयतु सोमस्त्वा ह्वयतु पर्वतेभ्यः ।

इन्द्रस्त्वा ह्वयतु विड्भ्य आभ्यः श्येनो भूत्वा विश आ पतेमाः ३ १२४४

(१८) सोमः, सविता, आदित्यः, अग्निः ।

॥ १५८ ॥

(१२४५) (अथर्व० ३।८।३) जिष्णुप् ।

हुवे सोमं सवितारं नमोभिर्विश्वानादित्याँ अहर्षुत्तरत्वे ।

अयमग्निर्दीदायद् दीर्घमेव संजातैरिन्द्रोऽप्रतिब्रुवद्भिः ३ १२४५

(१९) सोमः, स्वजः, अशनिः ।

॥ १५९ ॥

(१२४६) (अथर्व० ३।२७।४) पञ्चपदा ककुम्मतीगर्भाऽष्टिः ।

उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताशनिरिषवः ।

तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु ।

योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः ४ १२४६

(२०) आपः, सोमः ।

॥ १६० ॥ (१२४७) (अथर्व० ४।४।५) अनुष्टुप् ।

अपां रसः प्रथमजो ऽथो वनस्पतीनाम् ।

उत सोमस्य आताऽस्युतार्शमसि वृष्ण्यम् ५ १२४७

(२१) सोमः, वनस्पतिः ।

॥ १६१ ॥ (१२४८-१२४९) (अथर्व० ६।२।१-२) परोष्णिक् ।

इन्द्राय सोममृत्विजः सुनोता च धावत ।

स्तोतुर्यो वर्चः शृण्वद्भवं च मे १

आ यं विशन्तीन्द्वो वयो न वृक्षमन्धसः ।

विराग्निन् वि मृधो जहि रक्षस्विनीः २ १२४९

(२२) द्यावापृथिवी, ग्रावा, सोमः, सरस्वती, अग्निः ।

॥१६२॥ (१२५०) (अथर्व० ६।३।२) जगती ।

पातां नो द्यावापृथिवी अभिष्टये पातु ग्रावा पातु सोमो नो अंहसः ।
पातु नो देवी सुभगा सरस्वती पातु अग्निः शिवा ये अस्य पायवः २ १२५०

(२३) सोमः, अदितिः ।

॥१६३॥ (१२५१-१२५२) (अथर्व० ६।७।१-२) १ निचृत्, २ गायत्री ।

येन सोमादितिः पथा मित्रा वा यन्त्यद्रुहः ।
तेना नोऽवसा गहि १
येन सोम साहन्त्या सुरान् रन्धयासि नः ।
तेना नो अग्निं वोचत २ १२५२

(२४) द्यावापृथिवी, सोमः, सविता, अन्तरिक्षं, सप्तऋषयः ।

॥१६४॥ (१२५३) (अथर्व० ६।४०।१) जगती ।

अभयं द्यावापृथिवी इहास्तु नो ऽभयं सोमः सविता नः कृणोतु ।
अभयं नोऽस्तुर्वान्तरिक्षं सप्तऋषीणां च हविषाभयं नो अस्तु १ १२५३

(२५) अग्निः, इन्द्रः, सोमः ।

॥१६५॥ (१२५४) (अथर्व० ६।५८।३) । अनुष्टुप् ।

यशा इन्द्रो यशा अग्निर्यशाः सोमो अजायत ।
यशा विश्वस्य भूतस्याऽहमसि यशस्तमः ३ १२५४

(२६) सविता, सोमः, वरुणः ।

॥१६६॥ (१२५५) (अथर्व० ६।६८।३) अनिजगतीगर्भा त्रिष्टुप् ।

येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्
तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्य गोमानश्चवानयमस्तु ग्राजान् ३ १२५५

(२७) सांमनस्यम्, वरुणसोमोऽग्निवृहस्पतिवसवः ।

॥१६७॥ (१२५६—१२५७) (अथर्व० ६ । ७३ । १—२) १ भुरिक् २ त्रिष्टुप् ।

एह यातु वरुणः सोमो अग्नि—वृहस्पतिर्वसुभिरेह यातु ।

अस्य श्रियंमुपसंयातु सर्वं उग्रस्य चेतुः संमनसः सजाताः १

यो वः शुष्मो हृदयेष्वन्तरा—ऽऽकूतिर्या वो मनसि प्रविष्टा ।

तान्त्सीवयामि हविषा घृतेन मयि सजाता रमतिर्वो अस्तु २ १२५७

(२८) इन्द्रः, सोमः, सविता च ।

॥१६८॥ (१२५८—१२६०) (अथर्व० ६ । ९९ । १—३) अनुष्टुप्, ३ भुरिवृहती ।

अभि त्वेन्द्र वरिमतः पुरा त्वांहृणादुवे ।

ह्वयाम्युग्रं चेतारं पुरुणामानमेकजम् १

यो अद्य सेन्यो बधो जिघांसन्न उदीरते ।

इन्द्रस्य तत्र बाहू संमन्तं परि दद्वः २

परि दद्व इन्द्रस्य बाहू संमन्तं त्रातुस्त्रायतां नः ।

देव सवितः सोम राजन् त्मुमनमं मा कृणु स्वस्तये ३ १२६०

(२९) द्यौः, पृथिवी, शुक्रः, सोमः, अग्निः, वायुः, सविता ।

॥१६९॥ (१२६१) (अथर्व० ६ । ५३ । १) बृहच्छुक्रः । जगती ।

द्यौश्च म इदं पृथिवी च प्रचेतसौ शुक्रो बृहन् दक्षिणया पिपर्तु ।

अनु स्वधा चिकित्तां सोमो अग्नि—वायुर्नः पातु सविता भगश्च १ १२६१

सोमदेवता-पुनरुक्त-मन्त्रभागाः ।



ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलम् ।

[१] ९।१।१ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ।

(२२१) ९।२९।४ (वृमेध आदिरसः । पवमानः सोमः)
पवस्व... ।

(२२६) ९।३०।३ (बिन्दुरादिरसः । पवमानः सोमः)
पवस्व... ।

(५८०) ९।६७।१३ (विश्वामित्रो गाधिनः । पवमानः सोमः)
पवस्व... ।

(९३९) ९।१००।५ (रैमस्य काश्यपो । पवमानः सोमः)
इन्द्राय... ।

[३] ९।१।३ = (अभिः १२६३) ८।१०३।७
पर्षि राधो मघोनाम् ।

[४] ९।१।४ (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
अभ्यर्ष... ।

अभि वाजसुत श्रवः ।

(४३) ९।६।३ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अभि अर्ष ।

अभि ।

(३५०) ९।५६।५ (उच्चय आदिरसः । पवमानः सोमः)
अभ्यर्ष... ।

अभि... ।

(४५६) ०।६३।१२ (नि रविः काश्यपोः । पवमानः सोमः)
अभ्यर्ष... । अभि... ।

[१०] ९।१।१० (मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
अस्येदिन्द्रो मदेव्या ।

(९८८) ०।१०३।३ (अभिश्वाश्रुपः । पवमानः सोमः)

[११] ९।२।१ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
पवस्व देववीरति ।

(२६६) ९।३६।२ (पञ्चमरादिरसः । पवमानः सोमः)

[१.] ९।२।१ = (इन्द्रः १०८५) १।१७६।१

(अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । इन्द्रः)

इन्द्रमिन्द्रो वृषा विश ।

[१३] ९।२।३ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

धारा सुतस्य वेधसः ।

(१३५) ९।१६।७ (असितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

[१४] ९।२।४ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

आपो अर्षन्ति सिन्धवः ।

यद्भोभिर्वासयिष्यसि ।

(५५०) ९।६६।१३ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)

[१६] ९।२।६ अचिक्रदद् वृषा हरिः ।

(९५९) ९।१०१।१६ कनिक्रदद् वृषा हरिः ।

[१.] ९।२।६ सं सूर्येण रोचते ।

८।९।१८ (शशकर्णः काण्वः । अश्विनौ)

[१७] ९।२।७ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।

याभिर्मदाय शुम्भसे ।

(२७४) ९।३८।३ (रङ्गण आदिरसः । पवमानः सोमः)

मर्मृ ।

शुम्भते ।

[१९] ९।२।९ = (इन्द्रः २४३) ८।६।१

पर्जन्यो वृष्टिर्माँ इव ।

[२०] ९।२।१० अस्यश्वसा वाजसा उत ।

६।५३।१० (भरद्वाजो वार्हस्पत्यः । प्रपा)

धियमश्वसां वाजसामुत ।

[१.] ९।२।१० आत्मा यज्ञस्य पूढर्यः ।

(अभिः ५२०) ३।११।३ केतुयज्ञस्य पूढर्यः ।

[२१] ९।३।१ (जुनः जेप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो

वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

अभि द्रोणान्यासदम् ।

(२२७) ९।३०।४ (बिन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[२६] ९।३।६ = (अभिः ७५१) ४।१५।३

दधद्रत्नानि दाशुषे ।

[२७] ९।३।७ (शुनः अप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

पवमानः कनिष्कदन् ।

(१११) ९।१३।८ (अभितः कश्यपो देवलो वा ।
पवमानः सोमः)

[२८] ९।३।८ व्यामरत्तिरो रजांस्यस्पृतः ।

(इन्द्रः ६८७) ८।८२।९ पदामरत्तिरो रजांस्यस्पृतम् ।

[२९] ९।३।९ (शुनः अप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।

(२९७) ९।४२।२ (मेधातिथि काण्व ।
पवमानः सोमः)

एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि ।

(९३३) ९।९९।७ (रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः)

देवो देवेभ्यः सुतः ।

(९७३) ९।१०३।६ (द्वित आत्त्य । पवमानः सोमः)

देवो देवेभ्यः सुतः ।

[३०] ९।३।१० (शुनः अप आजीगर्तिः, स देवरातः कृत्रिमो
वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)

धारया पवते सुतः ।

(२९७) ९।४२।२ (मेधातिथि काण्व । पवमानः सोमः)

[३१] ९।४।१ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

सना...पवमान महि श्रवः ।

(७६) ९।९।९ (अभितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

पवमानः ।

सना ।

(९४२) ९।१००।८ (रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः)

पवमानः ।

[३१-४०] ९।४।१-१० अथा नो वस्यसस्त्रुधि ।

[३२] ९।४।२ सना ज्येतिः सना स्वः ।

(७६) ९।९।९ सना मेतं सना स्वः ।

[३३] ९।४।२ = (इन्द्रः ६५८) ८।७८।८

विभ्या च सोम सौभगा ।

[३३] ९।४।३ सना दक्षमुत क्रतुम् ।

(११६०) १०।२५।१ मनो दक्षमुत क्रतुम् ।

[३४] ९।४।४ = (९) ९।१।९ सोममिन्द्राय पातवे ।

[३५-३६] ९।४।५-६ तव क्रत्वा तवानिभिः ।

[३७] ९।४।७ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

सोम द्विवर्हसं रयिम् ।

(२८९) ९।४०।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

(९३६) ९।१००।२ (रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः)

[३९] ९।४।९ (हिरण्यस्तूप आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

पवमान विधर्मणि ।

(४८६) ९।६४।९ (काश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)

(९४१) ९।१००।७ (रेभसून् काश्यपो । पवमानः सोमः)

(अभिः १९८३) ९।५।३ रयिर्वि राजति द्युमान् ।

(४०५) ९।६१।१८ वधो वि राजति द्युमान् ।

(अभि १९८४) ९।५।४ = (अभिः १९३४) १।१८८।४

(अभिः १९८८) ९।५।८ = (अभिः १९७०) ५।५।७

[४२-४३] ९।६।२-३ अभि त्वं मयं (रेवर्थ) मदम् ।

[४३] ९।६।३ = (४) ९।१।४ अभि वाजमुत श्रवः ।

[४४] ९।६।३ (आमतः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सुवानो अर्प पवित्र आ ।

(३५१) ९।५२।१ (उक्थ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

[४४] ९।६।४ (अभितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

आपो न प्रवतामरन् ।

पुनाना इन्द्रमाशन ।

(१८८) ९।२४।२ (अभितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

आपो न प्रवता वयं ।

पुनाना ।

[४५] ९।६।५ (अभितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

वने क्रीळन्तमत्यविम ।

(३१८) ९।४५।५ (अङ्गिरस आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

अस्वरन् वने ।

(९९६) ९।१०६।११ (अभिनशाश्रयः । पवमानः सोमः)

वने... ।

अस्वरन् ।

[४७] ९।६।७ (अभितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

इन्द्राय पवते सुतः ।

(४३१)९।१०११४ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 .. मद् ।
 (९८७)९।१०६।२ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
 (१०१६)९।१०७।१७ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
 ...मद् ।
 [५१]९।७।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 महीरपो वि गाहते ।
 (९३३)९।९९।७ (रमसूनुः काश्यपो । पवमानः सोमः)
 [५२]९।७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 वृषाव चक्रदद् वने ।
 (१०२१)९।१०७।२२ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
 ...चक्रदो वने ।
 [५३]९।७।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 नृम्णा वसानो अर्षति ।
 रवर्वाजा सिपासति ।
 (४४०)९।१०२।२३ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 नृम्णा पुनानो अर्षसि ।
 (३५७)९।७४।१ (कर्षावान्द्वैर्धत्तमसः । पवमानः सोमः)
 स्वर्ग्यडाज्यरुषः सिपासति ।
 [५५]९।७।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 अव्यो वारे परि प्रियो ।
 (३४३)९।५०।३ (उच्चथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 . प्रियम् ।
 (३५२)९।५२।२ (उच्चथ आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (१००५)९।१०७।६ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
 [६१]९।८।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो ।
 (३८७)९।६०।४ (अवन्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 राधसे . पवरव ।
 [.,.]९।८।३=(११२४)३।६२।१३ कृतस्य योनिमासदस् ।
 [३७]९।८।९ = ७.९६।६ (त्रसिष्टो मेन्त्रावरुणि । सरस्वान)
 [७६]९।९।९ = (३१)९।४।१ भक्षीमहि प्रजामिषम् ।
 [.,.]९।९।९ = (३२)९।४।२
 [७७]९।१०।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 अर्वन्तो न श्रवस्यवः ।
 (५४७)९।६३।१० (शनं वैस्तनमा । पवमानः सोमः)
 [७८]९।१०।२ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 दधन्विरे गभस्त्यो ।

(११०)९।१३।७ (असितः काश्यपो देवलो वा ।
 पवमानः सोमः)
 [९३]९।११।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 इन्द्राय सोम पातवे ...परि पिच्यसे ।
 (९२४)९।९८।१० (अम्बरीषो वार्षागिरः, ऋजिश्वा
 भारद्वाजश्च । पवमानः सोमः)
 (१०४०)९।१०८।१५ (शक्तिर्वारिष्ठः । पवमानः सोमः)
 [.,.]९।११।८ मनश्चिन्मनसस्पतिः ।
 (२१२)९।२८।१ विश्वविन्मनसस्पतिः
 ९५]९।१२।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 इन्द्राय मधुमत्तमाः ।
 (४६६)९।६३।१९ (निःश्विः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 ...मधुमत्तमम् ।
 (५८३)९।६७।१६ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 ...मधुमत्तमः ।
 [९६]९।१२।२ = (इन्द्र.२०८४)६।४५।२५
 = (इन्द्र.१३७७)३।४१।५
 गावो वत्सं न मातर ।
 (इन्द्र.२०८७)६।४५।२८ वत्सं गावो न धेनव ।
 [.,.]९।१२।२ = (इन्द्र.८०)१।१६।३ = (इन्द्र.१३८५)३।४२।४
 = (इन्द्र.४०८)८।१७।१५ = (इन्द्र.२४०१)८।९२।५
 = (इन्द्र.९८६)८।९७।११
 इन्द्रं सोमस्य पीतये ।
 [१००]९।१२।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 प्र वाचमिन्दुरिष्यति ।
 (२५७)९।३५।४ (प्रभूवसुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 प्र वाजमिन्दुरिष्यति ।
 [.,.]९।१२।६ (इन्द्र.४३७)८।३४।१३
 समुद्रस्याधि विष्टपि (०५) ।
 [१०१]९।१२।७ = (११०६)१।९।६
 निल (प्रिय०) स्तोत्रो वनस्पति ।
 [१०२]९।१२।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 सोमो हिन्वानो अर्षति ।
 विप्रस्य धारया कविः ।
 (३०९)९।४४।२ (अयारय आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सोमो हिन्वे परावति । विप्रस्य ।
 [१०४]९।१३।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
 सोमः पुनानो अर्षति ।

(२१७)९।२८।६ (प्रियमेध आदिरस ।

पवमानः सोमः)

(३००)९।४२।५ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

(९५०)९।१०१।७ (नेहुषो मानव । पवमानः सोमः)

[१०५]९।१३।२ सुष्वाणं देववीतये ।

(५२५)९।६५।१८ सुष्वाणो देववीतये ।

[१०६]९।१३।३ (असितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।

(२९८)९।४२।३ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवन्ते वाजसातये ।

सोमा ... ।

(३०७)९।४३।६ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवस्व वाजसातये ।

(९४०)९।१००।६ (रेभसुतः काश्यपा । पवमानः सोमः)

पवस्व वाजसातये ।

(१०२२)९।१०७।२३ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

पवस्व वाजसातये ।

[१०७]९।१३।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

पवस्व बृहतीरिषि । .. सुर्वार्यम् ।

(३०१)९।४२।६ (मेध्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

पवस्व. . ।

[११०]९।१३।७ = (इन्द्रः २०८४) ६।४५।२५

= (इन्द्रः १३७७) ३।४१।५

अभि (इन्द्र) वत्से न धेनवः । (मातरः) ।

[,]९।१३।७ = (७८) ९।१०।२ दधन्विरे गमस्यो ।

[१११]९।१३।८ = (२७) ९।३।७

पवमानः (०८) कनिकदत् ।

[,]९।१३।८ (असितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

विश्वा अप द्विषो जहि ।

(३८९)९।६१।२८ (अमहायुरादिरसः । पवमानः सोमः)

[११२]९।१३।९ (असितः काश्यपो देवलो वा ।

पवमानः सोमः)

अपघ्नन्तो अरावणः ।

योनावृतस्य सीदत ।

(४५२)९।६३।५ (निधुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)

अपघ्नन्तो अरावणः ।

(२८३)९।३९।६ (बृहन्मतिरादिरसः । पवमानः सोमः)

• योनावृतस्य सीदत ।

[११५]९।१४।३ = (इन्द्रः २३१४) ८।६९।११

विश्वे देवा अमत्सत ।

[११७]९।१४।५ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

गाः कृष्वानो न निर्णिजम् ।

(७५३)९।८६।२६ (पृथियोऽजाः । पवमानः सोमः)

गाः कृष्वानो निर्णिजं न ।

(१०२५)९।१०७।२६ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

गाः कृष्वानो न निर्णिजम् ।

[१२१]९।१५।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ।

(४६२)९।६१।२५ (अमहायुरादिरसः । पवमानः सोमः)

[१२३]९।१५।३ एष हितो वि नीयते ।

(२०८)९।२७।३ एष नृर्भाव नीयते ।

[१२७]९।१५।७ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

एतं मृजन्ति मर्त्यम् ।

(३२५)९।४६।६ (अयास्य आदिरसः । पवमानः सोमः)

[१२८]९।१५।८ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

एतमु न्यं दश क्षिपो मृजन्ति ।

(३९४)९।६१।७ (अमहायुरादिरसः । पवमानः सोमः)

[१३१]९।१६।३ = १।२८।९ (युनः शेष आर्जयन्ति प्रजापतिः

होतृधन्मः नर्म गोमो वा)

सोमं पवित्र आ सृज ।

[,]९।१६।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमं पवित्र आ सृज ।

पुनीहीन्द्राय पातव ।

(३४६)९।५१।१ (उच्यः आदिरसः । पवमानः सोमः)

सोमं... ।

पुनीही ।

[१३२]९।१६।४ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमः पवित्रे अर्पति ।

(१३९)९।१७।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)

सोमः... । विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।

- (२६६) ९।३७।१ (रहृगण आदिरसः । पवमानः सोमः)
सोमः— ।
विघ्न— ।
[१३४] ९।१६।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
विश्वा अर्षन्नाभि श्रियः ।
शूरो न गोषु तिष्ठति ।
(४३६) ९।६२।१९ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
[१३५] ९।१६।७ = (१३) ९।२।३ धारा सुतस्य वेधसः ।
[१३६] ९।१६।८ (अगितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
त्वं सोम विपश्चितं . पुनान ।
अव्यो वारं वि धावसि ।
(५०२) ९।६४।२५ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः सोमः)
त्वं सोम विपश्चितं पुनानो ।
(२१२) ९।२८।१ (प्रियमेध आदिरसः । पवमानः सोमः)
अव्यो वारं वि धावति ।
(९९५) ९।१०६।१० (अमिश्राक्षुपः । पवमानः सोमः)
पुनान.. .अव्यो वारं वि धावति ।
(६६५) ९।७४।९ (कधीवान्दर्धतमसः । पवमानः सोमः)
अव्यो वारं वि पवमान धावति ।
[१३७] ९।१७।१ (अमिनः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सोमा असृप्रमाशवः ।
(१८०) ९।२३।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
[१३९] ९।१७।३ = (१३२) ९।१६।४ सोमः पवित्र अर्षति ।
["] ९।१७।३ (अगितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
सोमः पवित्रे अर्षति ।
विघ्नन् रक्षांसि देवयुः ।
(२६६) ९।३७।१ (रहृगण आदिरसः । पवमानः सोमः)
(३६८) ९।५६।१ (अवत्सार्गः काश्यपः । पवमानः सोमः)
आगुः पवित्रे अर्षति ।
विघ्नन्— ।
[१४०] ९।१७।४ (अमिनः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
आ कलशेषु धावति पवित्रे परि विच्यते ।
(५८१) ९।६७।१४ (विश्वामित्रो गाथिनः । पवमानः सोमः)
— धावति ।
(२९९) ९।४२।४ (मे यातिधिः काण्वः । पवमानः सोमः)
पवित्रे परि विच्यते ।
[१४३] ९।१७।७ (अमिनः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।
मृजान्ति . ।
दे० [सोम] ११

- (४६७) ९।६३।२० (निर्वृवि काश्यपः । पवमानः सोमः)
मृजान्ति....धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।
[१४४] ९।१७।८ = १।१३७।२ (परुच्छपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)
चारुक्ताय पीतये ।
[१४५-५१] ९।१८।१-७ मर्षेषु सर्वधा असि ।
[१४६] ९।१८।५ = (इन्द्र १४६४) ३।५३।१२
(विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
य इमे रोदसी मही (उमे) ।
[१५२] ९।१९।१ तन्नः पुनान आ भर ।
(अग्निः २०) १।१२।११ स नः स्तवान आ भर ।
[१५३] ९।१९।२ = ५।७१।२ (बाहुवृक्त आत्रेय । मित्रावरुणौ)
ईशाना पिप्यतं धियः ।
[१५५] ९।१९।४ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अवावशन्न धीतयो ।
(५४८) ९।६६।११ (गतं वैखानसा । पवमानः सोमः)
[१५७] ९।१९।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
पवमान विदा रथिम् ।
(३०५) ९।४३।४ (मे यातिधिः काण्वः । पवमानः सोमः)
(४५८) ९।६३।११ (निर्वृविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
[१५९] ९।२०।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अव्यो वारं विधरषति ।
(२७२) ९।३८।१ (रहृगण आदिरसः । पवमानः सोमः)
[१६४] ९।२०।६ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
मृज्यमानो गभस्व्यो ।
सोमश्चमूषु सीदति ।
(२६३) ९।३६।४ (प्रभृवसुरादिरसः । पवमानः सोमः)
मृज्यमानो— ।
(४८२) ९।६४।५ (कश्यपो मार्गचः । पवमानः सोमः)
मृज्यमाना गभस्व्योः ।
(५१३) ९।६५।६ (मृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
पवमानः सोमः)
(९३२) ९।९९।६ (रेभसूनू काश्यपो । पवमानः सोमः)
सोमश्चमूषु सीदति ।
[१६५] ९।२०।७ (अमिनः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
पवित्रं सोम गच्छसि ।
दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् ।
(५८६) ९।६७।१९ (वमिष्ठो मित्रावरुणौ । पवमानः सोमः)
(४४७) ९।६२।३० (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
सोमः पवित्रम् ।
दधत्— ।

- (५६४) ९।६६।२७ (शतं वैखानसा । पवमानः सोमः)
दधत् ।
- [१६६] ९।२१।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
मत्परासः स्वविदुः ।
- (१०१३) ९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
[१७५] ९।२२।३ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
एते पूना विप्रश्चित्तः सोमासो दध्याशिरः ।
- (९५५) ९।१०१।१२ (मनु सावरण । पवमानः सोमः)
['] ९।२२।३ = (इन्द्र १८) १।५।५ = (इन्द्र २२३८ ७ ३२।४
= १।१३७।२ (परच्छेपो वैवोदासिः । मित्रावरुणौ)
= ५।५१।७ (रतरत्यात्रेयः । विश्वे देवाः)
सोमासो दध्याशिरः ।
- [१८०] ९।२३।१ = (१३७.९ १७।१ सोमा असृग्रनाशवः ।
['] ९।२३।१ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अभि विश्वानि काश्याः ।
- (४४२) ९।६२।२५ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
(७२) ९।६३।२५ (निःखवि काश्यपः । पवमानः सोमः)
(५३८) ९।६६।१ (शतं वैखानसा । पवमानः सोमः)
[१८३] ९।२३।४ (अमितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
अभि सोमास आयवः पवन्ते मघ मद्रम् ।
अभि कोश मधुश्चुनम् ।
- (१०१३) ९।१०७।१४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
अभि सोमासः ।
- (२६१) ९।३६।२ (प्रभूवगुराक्षिरमः । पवमानः सोमः)
अभि कोशं मधुश्चुनम् ।
- [१८४] ९।२३।५ सोमो अर्षति धर्षयिः ।
(२६७ ९।३७।२ = (२७७) ९।३८।६ हरिरर्षति ... ।
- [१८५] ९।२३।६ = (इन्द्र २३४४) ८।९५ ९
दन्तो (शुद्धो) वाजं सिपासति ।
- [१८६] ९।२३।७ = (इन्द्र २४०२) ८।९२।६
अस्य पीत्वा मदावा ।
- [१८७] ९।२४।१ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
प्र ... पवमानास इन्द्रवः ।
श्रीणाना अप्सु सृजत ।
- (५७४) ९।६७।७ गौतमो राहूगणः । पवमानः सोमः)
पवमानासः इन्द्रवः ।
- (९५१) ९।१०१।८ (नहुषो मानवः । पवमानः सोमः)
पवमानास इन्द्रवः ।
- (५३३) ९।६५।२६ (सृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भागवो वा ।
पवमानः सोमः)

- प्र... ।
श्रीणाना अप्सु सृजत ।
- [१८८] ९।२४।२ = (इन्द्र २७६) ८।६।३४ = (इन्द्र ३१८) ८।१३।८
आपो न प्रवता यतीः ।
- ['] ९।२४।२ = (४४) ९।६।४ पुनाना इन्द्रमाशत ।
- [१८९] ९।२४।३ (असितः काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः)
नृभिर्यतो वि नीयसे ।
- (९३४) ९।९९।८ (रभमनू काश्यपो । पवमानः सोमः)
- [१९१] ९।२४।५ = (इन्द्र २४२१) ८।९२।२५ अरमिन्द्रस्य धासो
[१९२] ९।२४।६ = (अग्नि १९२०) १।१४२।३
शुचिः पावको अद्भुतः ।
- [१९३] ९।२४।७ = (१९२) ९।२४।६ शुचिः पावक उच्यते ।
- ['] ९।२४।७ अमित काश्यपो देवलो वा । पवमानः सोमः ।
देवावीरवर्षासहा ।
- (२१७) ९।२८।६ (प्रियमेध आक्षिरमः । पवमानः सोमः)
(४०६) ९।६१।१९ (अमहीयुराक्षिरमः । पवमानः सोमः)
[१९५] ९।२५।२ (द्रवहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
अभि योनिं कनिष्कदत् ।
- (२६७) ९।३७ २ (रहूगण आक्षिरमः । पवमानः सोमः)
[१९६] ९।२५।३ (द्रवहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
शोभते. ... योनावधि ।
वृत्रहा देववीतमः ।
- (२१४) ९।२८।३ (प्रियमेध आक्षिरमः । पवमानः सोमः)
शुभायतेऽधि योनौ ।
वृत्रहा देववीतमः ।
- [१९७] ९।२५।४ = ७।५५।१ (वामिष्टो मंत्रावरुणः । वाम्नोऽपनिः)
विद्या रूपाण्याविशन् ।
- ['] ९।२५।४ (द्रवहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
पुनानो याति हव्यतः ।
- (३०४) ९।४३।३ (मेऽगार्निधिः काण्वः । पवमानः सोमः)
पुनानो याति हव्यतः ।
- [१९९] ९।२५।६ (द्रवहच्युत आगस्त्यः । पवमानः सोमः)
= (३४४ ९।५०।४ (उच्यते आक्षिरमः । पवमानः सोमः)
आ पवस्व मदिन्तम पवित्र धारया कवे ।
अर्कस्य योनिमासदम् ।
- [२०४] ९।२६।५ (उमवाहो दार्ढ्युतः । पवमानः सोमः)
हरिं हिन्वन्त्यग्निभिः ।
- (२२८) ९।३०।५ (विन्दुराक्षिरमः । पवमानः सोमः)
(२३७) ९।३२।२ (श्यावाश्व आत्रेयः । पवमानः सोमः)

- (२७३) ९।३८।२ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (२८३) ९।३९।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (३४३) ९।५०।३ (उच्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (५१५) ९।६५।८ (सृगुर्वारुणिर्जमदभिर्भार्गवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 [२०५] ९।२६।६ (इध्मवाहो दार्ढन्युतः । पवमानः सोमः)
 तं. ... हिन्वन्ति ।
 . इन्दुविन्द्राय मत्सरम् ।
 (३५९) ९।५३।४ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 तं हिन्वन्ति. . . ।
 इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ।
 (४६४) ९।६३।१७ (निष्खिः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ।
 [२०८] ९।२७।३ = (१२३) ९।१५।३ एष नृभिः (हितो) विं नीयते ।
 [२११] ९।२७।६ (त्रेमेव आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनान इन्दुमिन्द्रमा ।
 (५६५) ९।६६।२८ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 [२१२] ९।२८।१ = (१३६) ९।१६।८ अव्यो वार वि धावमि ।
 [२१३] ९।२८।२ = (२९९) ९।३९।३ सोमो (देवो) देवेभ्यः सुतः ।
 [२१४] ९।२८।३ = (१९६) ९।२५।३ वृत्रहा देववीतमः ।
 [२१५] ९।२८।४ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 अभि द्रोणानि धावति ।
 (२७१) ९।३७।६ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 [२१६] ९।२८।५ (प्रियमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पवमानो विचर्षणिः ।
 (३८४) ९।६०।१ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 पवमानं विचर्षणिम् ।
 [२१७] ९।२८।६ = (१०४) ९।१३।१ सोमः पुनानो अर्षति ।
 ["] ९।२८।६ = (१९३) ९।२४।७ देवावीरघनसहा ।
 [२२०] ९।२९।३ (त्रेमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनानाय प्रभूवसो ।
 वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ।
 (२५९) ९।३५।६ (प्रभवगुगिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनानाय प्रभूवसोः ।
 (४०७) ९।६१।१५ (अमहीयुगिरसः । पवमानः सोमः)
 वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ।
 [२२१] ९।२९।४ = (१) ९।११।१ पवस्व सोम धारया ।
 [२२३] ९।२९।६ (त्रेमेध आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 धुमन्तं शुष्ममा भर ।
 (९८९) ९।१०६।४ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)

- धुमन्तं शुष्ममा भरा स्खर्विदम् ।
 [२२४] ९।३०।१ (विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनानो वाचमिष्यति ।
 (५०२) ९।६४।१५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 पुनानो वाचमिष्यसि ।
 [२२५] ९।३०।२ (विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 इन्दुर्हियान सोतृभिः ।
 (१०२५) ९।१०७।२६ (सप्तर्षयः पवमानः सोमः)
 [२२६] ९।३०।३ = (१) ९।११।१ पवस्व सोम धारया ।
 [२२७] ९।३०।४ (विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पवमानो अमिष्यदत् ।
 (३४०) ९।४९।५ (ऋविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।३०।४ = (२१) ९।३।१ अभि द्रोणान्यासदम् ।
 [२२८] ९।३०।५ = (२०५) ९।२६।५
 ["] (विन्दुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 इन्दुविन्द्राय पीतये ।
 (३१४) ९।४५।१ (अयास्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 (३४५) ९।५०।५ (उच्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 (४८९) ९।६४।१२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [२२९] ९।३०।६ (विन्दुरागिरसः । पवमानः सोमः)
 सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
 (३४७) ९।५१।२ (उच्य आगिरसः । पवमानः सोमः)
 सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
 सुनोता मधुमत्तमम् ।
 (इन्द्रः २२४२) ७।३२।८ सुनोता सोमपात्रे ।
 सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
 [२३२] ९।३१।३ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः)
 तुभ्य ... तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
 (४४४) ९।६२।२७ (जमदग्निर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
 तुभ्येसा . ।
 तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
 [२३३] ९।३१।४ = (१११६) १।९१।१६
 [२३५] ९।३१।६ (गोतमो राहृगणः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रो मखित्वमुश्ममि ।
 (५५१) ९।६६।४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 [२३७] ९।३२।२ = (२०४) ९।२६।५
 ["] ९।३२।२ (श्यावाग्र आत्रेयः । पवमानः सोमः)
 (२७३) ९।३८।२ (रहृगण आगिरसः । पवमानः सोमः)
 एतं (९।३२।२ आर्वा) त्रितस्य योषणो हरि
 हिन्वन्त्यद्रिभिः ।

इन्दुमिन्द्राय लीतये ।

(३०३) ९।४३।२ (मेधातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)

इन्दु— ।

(५१५) ९।६५।८ (भृगुवर्मिणिर्जमदग्निर्मर्गिवो वा ।
पवमानः सोमः)

हरिं हिन्वन्यद्विभिः ।

इन्दुमिन्द्राय . ।

[२३०] ९।३२।४ = (अग्निः १०७६) ६।१६।३५
सीदन्मृतस्य योनिमा ।

[२४०] ९।३२।५ अभि गावो अनुषत ।

(२४६) ९।३३।५ अभि प्रक्षीःनूषत ।

[२४१] ९।३३।६ = (इन्द्रः २०९८) ६।४६।९
मधवद्व्यश्च मधं च ।

[२४३] ९।३३।२ (त्रित आण्वः । पवमानः सोमः)

शुक्रा क्रतस्य धारया ।

वाजं गोमन्तमक्षरन् ।

(४६१) ९।६३।१४ (निःकृतिः काश्यपः । पवमानः सोमः)

[२४४] ९।३३।३ = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७
(स्वस्त्यात्रेणः । इन्द्रवायुः)

सुता इन्द्राय वायवे ।

["] ९।३३।३ = ८।४१।१ (नागाकः काण्वः । वरुणः)
वरुणाय मरुद्व्यः ।

[२४६] ९।३३।५ = (२४०) ९।३२।५

["] ९।३३।५ = (अग्निः १९२४) १।१४।७

= (अग्निः १९६९) ५।५।६

= १०।५९।८ (ननुः श्रुतवन्धुः । वावाधृषिर्वा)

[२४७] ९।३३।६ (त्रित आण्वः । पवमानः सोमः)

रात्र . . अस्मभ्यं सोम विश्वतः ।

आ पवस्व सहस्रिणः ।

(२८३) ९।४०।३ (बृहन्मन्त्रिगिरिः । पवमानः सोमः)

रथिं ... अस्मभ्यं ... ।

आ पवस्व सहस्रिणम् ।

(४२९) ९।६२।१२ (जमदग्निर्मर्गिवः । पवमानः सोमः)

आ पवस्व सहस्रिणं रथिम् ।

(४४८) ९।६३।१ (निःकृतिः काश्यपः । पवमानः सोमः)

आ पवस्व सहस्रिणं रथिम् ।

(५२८) ९।६५।२१ (भृगुवर्मिणिर्जमदग्निर्मर्गिवो वा ।

पवमानः सोमः)

अस्मभ्य सोम विश्वतः ।

आ पवस्व सहस्रिणम् ।

[२४८] ९।३४।१ (त्रित आण्वः । पवमानः सोमः)

इन्दुर्हिन्वानो अर्पति ।

(५७१) ९।६७।४ (कश्यपो मारीनः । पवमानः सोमः)

[२४९] ९।३४।२ = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७

(स्वस्त्यात्रेणः । इन्द्रवायुः)

["] ९।३४।२ = ८।४१।१ (नागाकः काण्वः । वरुणः)

[२५०] ९।३४।३ गुन्वन्ति सोममद्विभिः ।

(इन्द्रः १०३) ८।१।१७ गोना द्वि सोममद्विभिः ।

[२५५] ९।३५।२ इन्दो समुदमीक्ष्य ।

(३५३) ९।५२।४ इन्दो न दानमीक्ष्य ।

["] ९।३५।२ (प्रभृवगुर्गिरिः । पवमानः सोमः)

समुदमीक्ष्य पवस्व विश्वमेजय ।

(४४३) ९।६२।२६ (जमदग्निर्मर्गिवः । पवमानः सोमः)

समुद्रिया... ईरयन् ।

पवस्व विश्वमेजय ।

[२५६] = ९।३५।३ (अग्निः ४०२) २।८।६ अभि ध्याम घृतन्यतः ।

[२५७] ९।३५।४ = (१००) ९।१२।६

प्र वाज (५५) मिन्दुरिष्यति ।

[२५८] ९।३५।६ = (२२०) ९।२०।३

[२६१] ९।३६।२ = (११) ९।२।१ पवस्व देवधीरति ।

["] ९।३६।२ = (१८३) ९।२३।४ अभि कोशं मधुश्नुतम् ।

[२६३] ९।३६।४ (प्रभृवगुर्गिरिः । पवमानः सोमः)

सुम्भमान क्रतायुभिर्मुज्यमानो गभस्त्वोः ।

पवते वारे अव्यये ।

(४८२) ९।६४।५ (कश्यपो मारीनः । पवमानः सोमः)

सुम्भमानो क्रतायुभिर्मुज्यमाना गभस्त्वोः ।

पवन्ते वारे अव्यये ।

["] ९।३६।४ = (१६४) ९।२०।६ मुज्यमानो गभस्त्वोः

[२६४] ९।३६।५ (प्रभृवगुर्गिरिः । पवमानः सोमः)

या विश्वा दाशुषे वसु गोमा दिव्यानि पार्थिवा ।

पवन्तामान्तसिद्धया ।

(४८३) ९।६४।६ (कश्यपो मारीनः । पवमानः सोमः)

या विश्वा दाशुषे वसु गोमा दिव्यानि पार्थिवा ।

पवन्तामान्तसिद्धया ।

[२६६] ९।३७।१ = (१३२) ९।१६।४ = (१३२) ९।१७।३

सोमः पवित्रे अर्पति ।

[२६७] ९।३७।२ (वृहगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)

हरिरर्षेति धर्षसिः ।
 अभि योनिं कनिकदन् ।
 (२७७) ९।३८।६ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 हरि— ।
 कन्दन् योनिमभि ।
 [२६७] ९।३७।२ = (२६५) ९।२५।२
 [२६८] ९।३७।३ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पवमानो वि धावति ।
 (९७३) ९।१०३।६ (द्वित आत्सः । पवमानः सोमः)
 व्यानाशिः पवमानो— ।
 [२७०] ९।३७।५ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सोमो वाजमिवासरत् ।
 (४३३) ९।६२।१६ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 [२७१] ९।३७।६ = (२१५) ९।२८।४ अभि द्रोणानि धावति ।
 [२७२] ९।३८।१ = (१५९) ९।२०।१ अग्न्यो वारेभिरर्षति ।
 ['] ९।३८।१ गच्छन् वाजं सहस्रिणम् ।
 (३७२) ९।५७।१ अच्छा वाजं सहस्रिणम् ।
 [२७३] ९।३८।२ = (२३७) ९।३२।२
 ['] ९।३८।२ = (२०४) ९।२६।५
 [२७४] ९।३८।३ = (१७) ९।१७
 [२७५] ९।३८।४ (रहृगण आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 श्वेनो न विधु सीदति ।
 (३७४) ९।५७।३ (अवन्गार काश्यपः । पवमानः सोमः)
 श्वेनो न वंसु पीदति ।
 (७६२) ९।८६।३५
 (अकृष्टामाषाद्यम्बः । पवमानः सोमः)
 श्वेनो न वंसु कलशेषु सीदति ।
 [२८०] ९।३९।३ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सुत एति पवित्र आ ।
 (३१०) ९।४४।३ (अथार्य आङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 (३९५) ९।६१।८ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 [२८३] ९।३९।६ = (२०४) ९।२६।५
 ['] ९।३९।६ = (११२) ९।१३।२
 [२८६] ९।४०।३ = (२४७) ९।३३।६
 [२८७] ९।४०।४ विदाः सहस्रिणीरिषः ।
 (३९०) ९।६१।३ क्षग सहस्रिणीरिषः ।
 [२८८] ९।४०।५ = (अभिः २०) १।१२।११
 स नः पुमान् (रतवान्) आ भर ।
 [२८९] ९।४०।६ (बृहन्मतिराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 पुनान इन्द्रवा भर सोम द्विर्हसं रयिम् ।

(३७५) ९।५७।४ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 पुनान इन्द्रवा भर ।
 (५०३) ९।६४।२६ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 पुनान इन्द्रवा भर ।
 (९३६) ९।१००।२ (रेभस्तन् काश्यपौ । पवमानः सोमः)
 ['] ९।४०।६ = (३७) ९।४।७
 सोम द्विर्हसं रयिम् ।
 [२९१] ९।४१।२ साह्यसो दस्युमव्रतम् ।
 (इन्द्रः १०८१) १।१७।३ सहावान् दस्युमव्रतम् ।
 [२९३] ९।४१।४ (मेथ्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
 पवस्व महीमिषं गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् ।
 अश्वावद्वाजवत् सुतः ।
 (३९०) ९।६१।३ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 गोमदिन्द्रो हिरण्यवत् । सहस्रिणीरिषः ।
 (३०१) ९।४२।६ (मेथ्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
 गोमजः सोमः । अश्वावद्वाजवत् सुतः ।
 पवस्व बृहतीरिषः ।
 [२९७] ९।४२।२ = (२९-३०) ९।३।९-१०
 [२९८] ९।४२।३ = (१०६) ९।१३।३
 पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।
 [२९९] ९।४२।४ = (१४०) ९।१७।४
 पवित्रे परि विच्यते ।
 [३००] ९।४२।५ (मेथ्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
 अभि विश्वानि वार्या ।
 (५४१) ९।६६।४ (यतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 पवस्य ... अभि विश्वानि वार्या ।
 ['] ९।४२।५ = (१०४) ९।१३।१
 [३०१] ९।४२।६ = (२९३) ९।४१।४ अश्वावद् वाजवत् सुतः ।
 ['] ९।४२।६ = (१०७) ९।१३।४ पवस्व बृहतीरिषः ।
 [३०३] ९।४२।२ = (२३७) ९।३२।२
 ['] ९।४२।३ = (३०४) ९।२५।४
 [३०५] ९।४२।४ = (१५७) ९।१९।६
 ['] ९।४२।४ (मेथ्यातिथिः काण्वः । पवमानः सोमः)
 पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम् ।
 (४५८) ९।६३।११ (निर्वृतिः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 ... सोम दुष्टम् ।
 ['] ९।४२।४ इन्द्रो सहस्रवर्चसम् ।
 (५०२) ९।६४।२५ = (९१५) ९।९८।१ इन्द्रो सहस्रवर्णसम् ।
 [३०७] ९।४२।६ = (१०६) ९।१३।३
 ['] ९।४२।६ = (अभि ८५८) ५।१३।५

(इन्द्रः २३७५) ८१८८१२ = (अग्निः १२८१) ८१२३१२
 [३०८] ९१४४१ प्र ण इन्द्रो महे तने ।
 (५५०) ९१६६१३ महे रणे ।
 [३०९] ९१४४२ = (१०२) ९११२८ विप्रस्य धारया कविः ।
 [३१०] ९१४४३ = (२८०) ९१३९३
 [३१२] ९१४४५ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 स नो भगाय वायवे ।
 (३९६) ९१६१९ (अमहीयुरादिगणः । पवमानः सोमः)
 [३१४] ९१४५१ = (२२८) ९१३०५
 [३१५] ९१४५२ = (इन्द्र ७) ११४४
 देवान् (यन्ते) सखिभ्य आ वरम् ।
 [३१६] ९१४५३ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 वि नो राये दुरो वृधि ।
 (४८०) ९१६४३ (कश्यपो मारीच । पवमानः सोमः)
 [३१७] ९१४५४ (अग्निः १४७१) ८१०२१९
 [३१८] ९१४५५ = (४५) ९६५
 [३१९] ९१४५६ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 तथा पवस्व धारया यया ।
 (३३७) ९१४९२ (कविर्भर्गव । पवमानः सोमः)
 [३२०] ९१४६१ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 असृग्मन् देववीतये ।
 (५८४) ९१६७१७ (जमदग्निर्भर्गवः । पवमानः सोमः)
 [३२२] ९१४६३ = (इन्द्रः ८३) ११६६१० ते सोमास इन्द्रवः ।
 [३२४] ९१४६५ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 पवस्व. मरुः ।
 अस्मभ्य सोम गातुवित् ।
 (५२०) ९१६५१३ (सृगुर्वाणिजैमदग्निर्भर्गवो वा
 पवमानः सोमः)
 महीम् पवस्व ।
 अस्मभ्य ।
 [३२५] ९१४६६ = (१२७) ९१५१७ एतं मृजन्ति मज्यम् ।
 [३३७] ९१४९२ = (३१२) ९१४५६
 [३४०] ९१४९५ = (२२७) ९१३०४
 [३४३] ९१५०३ = (५५) ९१७६
 ["] ९१५०३ = (२०४) ९१७६५
 ["] ९१५०३ (उच्यते आदिगणः । पवमानः सोमः)
 हिन्वन्ति ।
 पवमानं मधुश्चुतम् ।
 (५७६) ९१६७९ (गोतमो राहुगणः । पवमानः सोमः)

[३४४] ९१५०४ = (१२९) ९१७५६
 [३४५] ९१५०५ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 स पवस्व मदिन्तम् ।
 (९३०) ९१९९६ (अमनः आदिगणः । पवमानः सोमः)
 स पुनानो मदिन्तम् ।
 ["] ९१५०५ = (२२८) ९१३०५
 [३४६] ९१५१३ = (१३६) ९१६६३ = ११८८९
 (अनः आदिगणः । पवमानः सोमः)
 [३४७] ९१५१२ = (२२९) ९१३०६
 = (२२९) २२४२७ ३२८
 [३४८] ९१५१३ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 पवमानस्य मरुतः ।
 (५०१) ९१६४४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [३५०] ९१५१५ = (४) ९११४
 [३५१] ९१५१६ = (४३) ९१६३
 [३५२] ९१५१७ = (५५) ९१७६
 [३५३] ९१५१८ = (५५) ९१७६
 [३५४] ९१५१९ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 एतेषां पुण्ड्रज जनानाम् ।
 यो जस्यो आदिदेशति ।
 (५०४) ९१६४७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 एषां पुण्ड्रज जनानाम् ।
 (५०४) ९१६४७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 यो जस्यो आदिदेशति ।
 [३५५] ९१५२० (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 पवस्व महयद्विः ।
 (५६८) ९१६७१ (जमदग्निर्भर्गवः । पवमानः सोमः)
 [३५९] ९१५२४ = (४३४) ९१६७७
 हरिं नदीषु वाजिनम् । इन्द्रमिन्द्राय ममरम् ।
 ["] ९१५२४ = (२०५) ९१७६६
 [३६०] ९१५२५ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)
 सोमो देवो न सूर्यः ।
 (४६०) ९१६४३ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 [३६४] ९१५२६ = (३२) ९११४ = (२२९) २२४२७ ३२८
 [३६८] ९१५२६ = (१३०) ९१६३०
 ["] ९१५२६ = (१३९) ९१७३३
 [३७१] ९१५२४ = (९८९) ९१७०६४
 = (इन्द्रः १७८५) ८१९६३
 [३७७] ९१५७१ (अयाम्य आदिगणः । पवमानः सोमः)

प्र ते धारा अमश्नतो दिवो न यान्ति बृष्टयः ।
 (५६५) ९।६२।२८ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 प्र ते दिवो न बृष्टयो धारा यन्त्यमश्नतः ।
 [३७४] ९।५७।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 स ममृजान आयुभिः ।
 (५६०) ९।६६।२३ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।५७।३ = (२७५) ९।३८।४
 [३७५] ९।५७।४ = (२८९) ९।४०।६
 [३७६ ७९] ९।५८।१, १-४ तरत् स मन्दी धावति ।
 [३८४] ९।६०।१ = (२१६) ९।२८।५
 [३८५] ९।६०।२ अथो सहस्रभर्णसम् ।
 (५०३) ९।६४।२६ उतो सहस्रभर्णसम् ।
 [३८६] ९।६०।३ (अवत्सारः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 कलशो ... । इन्द्रस्य हार्द्याविशन् ।
 (७४६) ९।८६।१९ (सिकता निवारा । पवमानः सोमः)
 कलशो इन्द्रस्य हार्द्याविशन् मनीषिभिः ।
 [३८८] ९।६१।१ = (इन्द्रः ९४९) १।८४।१३
 [३९०] ९।६१।३ = (२८७) ९।४०।४ = (२९३) ९।४१।४
 [३९१] ९।६१।४ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सखित्वमा ऋणीमहे ।
 (५१६) ९।६५।९ (ऋग्वीरुणिर्जमदग्निर्भागवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 (इन्द्रः २७८३) १०।१३३।६ (मुदाः पैजवनः । इन्द्रः)
 सखित्वमा रभामहे ।
 [३९३] ९।६१।६ = (२८८) ९।४०।५
 = (अग्नि २०) १।१२।११ = (इन्द्रः १७९२) ८।२४।३
 [३९४] ९।६१।७ = (१२८) ९।१५।८
 [३९५] ९।६१।८ = (२८०) ९।३९।३
 [३९६] ९।६१।९ = (३१२) ९।४४।५
 [३९८] ९।६१।११ एता विश्वान्यर्थ आ ।
 (अग्निः १७१६) १०।१९९।१ अग्ने विश्वान्यर्थ आ ।
 ["] ९।६१।११ = (इन्द्रः २३४१) ८।२५।६
 [३९९] ९।६१।१२ = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)
 [४०१] ९।६१।१४ = (इन्द्रः ३३८) ८।१३।१८
 = (इन्द्रः २४१७) ८।९२।२१ = ८।६९।११ उत्तगर्धः
 (पयमेध आग्निः । विश्वे देवाः)
 [४०२] ९।६१।१५ = (इन्द्रः ५३७) ८।५४ (बाल०६) । ७
 = (मरु ४८) ८।७३ (पुनर्वसः काण्वः । मरुतः)
 ["] ९।६१।१५ = (२२०) ९।२९।३
 [४०५] ९।६१।१८ = (अग्निः १९८३)

(असितः काश्यपो देवलो वा । आप्रीसूक्तं [इळः])
 [४०६] ९।६१।१९ = (इन्द्रः १८२४) ८।४६।८
 = (इन्द्रः २४१३) ८।९२।१७
 ["] ९।६१।१९ = (१९३) ९।२४।७
 [४०८] ९।६१।२१ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 सीदञ्छयेनो न योनिमा ।
 (५२६) ९।६५।१९ (ऋग्वीरुणिर्जमदग्निर्भागवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 [४०९] ९।६१।२२ = (इन्द्र १३३८) ३।३७।५
 (विश्वामित्रो गाथिनः । इन्द्रः)
 [४१२] ९।६१।२५ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 अपन्नन् पवते मृधो ।
 (४७१) ९।६३।२४ (निःरुविः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 अपन्नन् पवसे मृध ।
 ["] ९।६१।२५ = (१२१) ९।१५।१
 [४१५] ९।६१।२८ = (१११) ९।१३।८
 [४१६] ९।६१।२९ (अमहीयुराङ्गिरसः । पवमानः सोमः)
 अस्य ते सख्ये वय ।
 (५५१) ९।६६।१४ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।६१।२९ = (इन्द्रः ४१) १।८।४
 = (इन्द्रः ३१०७) ८।४०।७ (नाभाकः काण्वः । इन्द्राग्नी)
 [४१८] ९।६२।१ = (५७४) ९।६७।७
 = (इन्द्रः ३२१७) १।१३।५६
 [४२०] ९।६२।३ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
 (५५९) ९।६६।२२ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 पवमानो अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
 (७२२) ९।८५।७ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
 पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।
 [४२१] ९।६२।४ (जमदग्निर्भागवः । पवमानः सोमः)
 असाव्यंशुः... ।
 इयेनो न योनिमासदत् ।
 (७०१) ९।८२।१ (वसुभारिद्वाजः । पवमानः सोमः)
 असावि सोमो... ।
 इयेनो न योनिं वृतवन्तमासदम् ।
 [४२५] ९।६२।८ तिरो रोमाण्यव्यया ।
 (५७१) ९।६७।४ = (१००९) ९।१०७।१०
 तिरो वाराण्यव्यया ।
 [४२६] ९।६२।९ = (इन्द्रः १७८५) ८।९१।३ = (९८९) ९।१०६।४
 [४२९] ९।६२।१२ = (२४७) ९।३३।६

[४२९] २।६२।१२ = (२५१) ८।६।९ = (४५९) ९।६३।१२
 [४३०] ९।६२।१३ = (३७४) ९।५७।३
 [४३१] ९।६२।१४ = (इन्द्रः ४३१) ८।३४।७
 ["] ९।६२।१४ = (४७) ९।६।७
 [४३३] ९।६२।१६ = (२७०) ९।३७।५
 [४३५] ९।६२।१८ हरि हिनोत वाजिनम् ।

(अग्निः १८६३) १०।१८८।१ (इयं आग्नेयः जातवेदा अग्निः)
 अथ हिनोत वाजिनम् ।

[४३६] ९।६२।१९ = (१३४) ९।१६।६
 [४४०] ९।६२।२३ = (५३) ९।७।४
 [४४१] ९।६२।२४ = ५।७९।८ (सत्यश्रवा आग्नेयः । उपाः)
 [४४२] ९।६२।२५ = (१८०) ९।२३।१
 [४४३] ९।६२।२६ = (२५५) ९।३५।२
 [४४४] ९।६२।२७ = (२३२) ९।३१।३
 तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।

[४४५] ९।६२।२८ = (३७२) ९।५७।१
 [४४७] ९।६२।३० = (१६५) ९।२०।७
 [४४८] ९।६३।१ = (७७७) ९।३३।६
 [४४९] ९।६३।२ (निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)

इन्द्राय मत्सरिन्तमः । चमूष्वा नि षीदसि ।
 (९३४) ९।२९।८ (रेमसून् काश्यपः । पवमानः सोमः)
 इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूष्वा नि षीदसि ।

[४५१] ९।६३।४ = (१३७) ९।१७।१
 ["] ९।६३।४ = (२४३) ९।३३।२
 [४५२] ९।६३।५ = (११२) ९।१३।९
 [४५४] ९।६३।७ = (इन्द्रः २३६५) ८।९८।२
 [४५५] ९।६३।८ (निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 पवमानो मनावधि । अन्तर्गच्छेण यातवे ।

(५२३) ९।६५।१६ (सुगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
 पवमानः सोमः)

[४५७] ९।६३।१० = (२०५) ९।२६।६
 [४५८] ९।६३।११ = (१५७) ९।१९।६
 ["] ९।६३।११ = (३०५) ९।४३।४
 [४५९] ९।६३।१२ = (इन्द्रः २५१) ८।६।९ = (४२९) ९।६२।१२
 ["] ९।६३।१२ = (४) ९।१।४
 [४६०] ९।६३।१३ = (३६२) ९।५४।३
 [४६१] ९।६३।१४ = (२३७) ९।३२।२
 [४६२] ९।६३।१५ = (इन्द्रः १८) १।५।५ = (१७५) ९।२२।३
 = (४६२) ९।६३।१५ = (२५५) ९।१०।१।२२
 = १।१३७।२ (परुच्छेपो देवोदारिः । मित्रावरुणौ)

= ५।५१।७ (स्वरन्यात्रेयः । विश्वे देवाः)

= (इन्द्रः २२३८) ७।३२।४

[४६३] ९।६३।१६ (निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 राये अर्षे पवित्र आ । मदो यो देववीतमः ।
 (४८९) ९।६४।१२ (काश्यपो मारानः । पवमानः सोमः)
 न नो अर्ष — ।

[४६४] ९।६३।१७ निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)
 तमी मृजन्त्यायवः ।

(१०१६) ९।१०७।१७ (मत्सर्पयः । पवमानः सोमः)

["] ९।६३।१७ = (३५९) ९।५३।४ = (२०५) ९।२६।६

[४६६] ९।६३।१९ = (९५) ९।१२।१

[४६७] ९।६३।२० = (१२७) ९।१५।७

["] ९।६३।२० = (१४३) ९।१७।७

[४७०] ९।६३।२३ (निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)

प्रियः समुद्रमा विश ।

(५०४) ९।६४।२७ (काश्यपो मारानः । पवमानः सोमः)

[४७१] ९।६३।२४ = (४१२) ९।६१।२५

[४७२] ९।६३।२५ (निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पवमाना अस्वक्षत ।

(१०२४) ९।१०७।२५ (मत्सर्पयः । पवमानः सोमः)

["] ९।६३।२५ = (१८०) ९।२३।१

[४७५] ९।६३।२८ (निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)

पुनानः सोम धारय ।

(१००३) ९।१०७।४ (मत्सर्पयः । पवमानः सोमः)

["] ९।६३।२८ = (आग्निः १०७०) ६।१६।२९

(भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । आग्निः)

[४७६] ९।६३।२९ (निःस्त्रिः काश्यपः । पवमानः सोमः)

अभ्यर्षे कनिक्रदत् ।

धुमन्तं धुममुत्तमम् ।

(५७०) ९।६७।३ (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । पवमानः सोमः)

[४७७] ९।६३।३० = (२६४) ९।३६।५

[४७९] ९।६४।२ = (इन्द्रः २१९) ८।३३।१०

[४८०] ९।६४।३ = (३१६) ९।४५।३

[४८२] ९।६४।५ = (२६३) ९।३६।४

["] ९।६४।५ = (१६४) ९।२०।६

[४८३] ९।६४।६ = (२६४) ९।३६।५

[४८६] ९।६४।९ = (३९) ९।४।९

["] ९।६४।९ = (३६२) ९।५४।३

[४८८] ९।६४।११ = (आग्निः १०७६) ६।१६।३५

= (२३९) ९।३२।४

[४८९] ९।६४।१२ = (४६३) ९।६३।१६
 ["] ९।६४।१२ = (२२८) ९।३०।५
 [४९४] ९।६४।१७ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 तृथा समुद्रमिन्दवः ।
 अगमन्तुतस्य योनिमा ।
 (५४९) ९।६६।१२ (शतं वैखानसाः । पवमानः सोमः)
 अच्छा समुद्र . ।
 अगमन्तु ।
 [४९९] ९।६४।२२ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रायेन्द्रो ... पवस्व मधुमत्तम . ।
 (१०२६) ९।१०८।१ (गौरिवीति गान्तयः । पवमानः सोमः)
 पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम ।
 (१०४०) ९।१०८।१५ (गौरिवीतिः शान्तयः । पवमानः सोमः)
 इन्द्राय सोम . ।
 पवस्व मधुमत्तमः ।
 ["] ९।६४।२२ = (११२४) ३।६२।१३
 (विश्वामित्रो गथिनः । सोमः)
 [५०१] ९।६४।२४ = (३४८) ९।५१।३
 [५०२] ९।६४।२५ = (१३६) ९।१६।८ = (२२४) ९।३०।१
 ["] ९।६४।२५ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रो सहस्रभर्णसम् ।
 (९१५) ९।९८।१ (अम्बरगयो वार्षागिरः, ऋजिन्वा
 भारद्वाजश्च । पवमानः सोमः)
 [५०३] ९।६४।२६ उतो सहस्रभर्णसम् ।
 ["] ९।६४।२६ = (२८९) ९।४०।६
 [५०४] ९।६४।२७ = (३५४) ९।५१।४ = (४७०) ९।६३।२३
 [५०५] ९।६४।२८ = १।१३७।१
 (परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणौ)
 सोमाः शुक्रा गवाशिरः ।
 [५०६] ९।६४।२९ = (अग्निः ३१) १।२६।४
 (युन जेप आर्जगतिः । अग्निः)
 [५०८] ९।६४।३१ (शृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
 हिन्वन्ति सूर्यमुख्य . ।
 (५७६) ९।६७।९ (गोतमो गृह्णः । पवमानः सोमः)
 [५०९] ९।६५।२ = (२९७) ९।४२।२
 [५१३] ९।६५।६ = (१६४) ९।२०।६
 [५१४] ९।६५।७ (शृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः सोमः)
 पवमानाय गायत ।
 (७७१) ९।८६।४४ (अग्निर्भोमः । पवमानः सोमः)
 विपश्चिते पवमानाय गायत ।
 दे० [सोमः] १२

[५१५] ९।६५।८ = (२०४) ९।२६।५ = (२३७) ९।३२।२
 [५१६] ९।६५।९ = (३९१) ९।६१।४
 = (इन्द्रः ३५९) ८।१४।६
 [५२०] ९।६५।१३ = (इन्द्रः २६५) ८।६।२३ (वत्सः काण्वः ।
 इन्द्रः)
 ["] ९।६५।१३ (शृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः
 सोमः ।
 पवस्व विश्वदर्शतः ।
 (९९०) ९।१०६।५ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।६५।१३ = (३२४) ९।४६।५
 [५२१] ९।६५।१४ (शृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा ।
 पवमानः सोमः)
 आ कलशा इन्द्रो धाराभिरोजसा ।
 (९९२) ९।१०६।७ (मनुराप्सवः । पवमानः सोमः)
 इन्द्रो धाराभिरोजसा ।
 आ कलशं ।
 [५२२] ९।६५।१५ = १।१३७।२ (परुच्छेपो देवोदासिः ।
 मित्रावरुणौ)
 [५२३] ९।६५।१६ = (४५५) ९।६३।८
 [५२४] ९।६५।१७ = (अग्निः २४६६) १।९३।२
 (गोतमो गृह्णः । अर्वाधोर्मा)
 [५२५] ९।६५।१८ = (१०५) ९।१३।२
 [५२६] ९।६५।१९ = (४०८) ९।६१।२१
 [५२७] ९।६५।२० = (इन्द्रः ३२३२) ५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेयः ।
 इन्द्रवायू)
 ["] ९।६५।२० = ८।४१।१ (नाभाकः काण्वः । वरुणः)
 [५२८] ९।६५।२१ = (२४७) ९।३३।६
 [५२९] ९।६५।२२ = (इन्द्रः २४३५) ८।९३।६
 [५३१] ९।६५।२४ = (अग्निः ४३७) २।६।५
 ["] ९।६५।२४ = (१०८) ९।१३।५
 [५३२] ९।६५।२५ (शृगुर्वारुणिर्जमदग्निर्भार्गवो वा । पवमानः
 सोमः)
 पवते हर्यतो हरिः ।
 (९९८) ९।१०६।१३ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
 ["] ९।६५।२५ = ३।६१।१८ (विश्वामित्रो गथिनः, जमदग्निर्वा ।
 मित्रावरुणौ)
 गृणाना जमदग्निना ।
 [५३३] ९।६५।२६ = (१८७) ९।२४।१
 [५३५-३७] ९।६५।२८ ३० पान्तमा पुरुषहम् ।
 [५३८] ९।६६।१ = (१८०) ९।२३।१

[५३८] ९।६६।१ = (अभिः २२७) १।७५।४ (गोतमो राहृगण ।
अभिः)

[५४१] ९।६६।४ = (३००) ९।४२।५

[५४४] ९।६६।७ = १।४०।४ (कण्वो घोरः । ब्रह्मणरपतिः)

[५४७] ९।६६।१० = (७७) ९।१०।१

दधानो (यत्ते) भक्षितिः श्रवः ।

[५४८] ९।६६।११ (अन वैश्वानमाः । पवमान सोमः)

अच्छा कोश मधुश्रुतम् ।

(१०११) ९।१०७।१२ (सप्तर्षयः । पवमान सोमः)

[५४८] ९।६६।११ = (१५५) ९।१९।४

[५४९] ९।६६।१२ = (४७४) ९।६४।७

[५५०] ९।६६।१३ = (३०८) ९।४४।१

प्र ण इन्द्रो महे ण (तनः) ।

[५५१] ९।६६।१३ = (१४) ९।२।४ (पपो अर्षन्ति सिन्धवः ।

[५५१] ९।६६।१४ = (४१६) ९।६१।२९

अस्य ते मरुते वयम् ।

[५५२] ९।६६।१४ = (२३५) ९।३।६ इन्द्रां सखिस्वमुद्रमसि ।

[५५५] ९।६६।१८ = (इन्द्रः ३१५२) ४।४१।७

[५५९] ९।६६।२२ = (४२०) ९।६२।३

[५६०] ९।६६।२३ = (३७४) ९।५।३ स मर्त्यज्ञान आयुभिः ।

[५६१] ९।६६।२४ (अन वैश्वानमाः । पवमानः सोमः)

कृष्णा तमांसि जह्नुनत् ।

(२२ २६४) १०।८९।२ (येनेत्यामित्रः । इन्द्रः)

—तमांसि विध्या जवान ।

[५६४] ९।६६।२७ = (१६५) ९।२०।७

[५६५] ९।६६।२८ = (२११) ९।२७।६

[५६८] ९।६६।३१ = (३५५) ९।५०।५

[५७०] ९।६६।३३ = (४७६) ९।६३।७

[५७१] ९।६६।३४ = (२४८) ९।३४।१

[५७२] ९।६६।३५ (अथर्षा मारुतः । पवमानः सोमः)

विरो वाराण्यव्यया ।

रतिः ।

१००९। ९।१०७।१० (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[५७४] ९।६६।३७ = (१८७) ९।२४।१

[५७५] ९।६६।३८ = (इन्द्रः ३२६७) १।१३।६ = ४१८।९।६२।१

[५७६] ९।६६।३९ = (५०८) ९।६५।१

[५७७] ९।६६।४० = (३४३) ९।१०।३

[५७८] ९।६६।४१ = (११) ९।१।१

[५८०] ९।६६।४३ = (१४०) ९।१७।४

[५८३] ९।६६।४६ = (९५) ९।१२।१

[५८४] ९।६६।४७ = (३२०) ९।४६।१

[५८५] ९।६६।४८ = (इन्द्रः १७०) ८।३।१५
(मेत्यातिथिः काण्वः । इन्द्रः)

[५८६] ९।६६।४९ = (१६५) ९।२०।७

[५८७] ९।६६।५० = (१११७) १।९१।१७

[५८८] ९।६६।५१ (पवित्र आग्निरसो वा वसिष्ठो वा उभौ वा ।
पवमानः सोमः)

अगन्म विभ्रतो नमः ।

१०।६०।१ (बंधुः श्रुतबन्धुविप्रबन्धुगोपायना । अगमाति)

[५८९] ९।६६।५२ यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम् ।

(५९९) ९।६६।५२ पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः— ।

[६०६] ९।६६।७० = (इन्द्रः १७६२) ५।३२।३

[६०७] ९।६६।८० (वत्सपिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)

सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः ।

(७४४) ९।६६।१७ (मिकता निवावर्गः । पवमानः सोमः)

[६०८] ९।६६।९० (वत्सपिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)

सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।

(७३६) ९।६६।९० (अकृष्टा मापाः । पवमानः सोमः)

[६०९] ९।६६।१०० (वत्सपिर्भालन्दनः । पवमानः सोमः)

एवा नः सोम परिपिच्यमानो ।

अद्वेपे चावापृथिवी हुवेम देवा भक्त रयिमस्मे सुवीरम् ।

(८९२) ९।९७।३६ (पराशरः शाक्यः । पवमानः सोमः)

एवा— ।

(आभिः १६००) १०।४५।१२ (वत्सपिर्भालन्दनः । आभिः)

अद्वेपे— ।

[६१७] ९।६६।१८० (हिरण्यरूप आग्निरसः । पवमानः सोमः)

आ नः पवस्व वसुमद्विरण्यवद् ।

(७६५) ९।६६।३८ (अकृष्टा मापाययययः । पवमानः सोमः)

स नः— ।

[५७२] ९।६६।३५ = (इन्द्रः २४३२) ८।९३।३

(मुक्त आभिः । इन्द्रः)

[६१९] ९।६६।१०० = (आभिः ५७) १।३१।८

(हिरण्यरूप आग्निरसः । आभिः)

[६२०] ९।७०।३ = (आभिः ३८८) २।२।४

(गुणमदः, गोतकः । आभिः)

[६२३] ९।७०।४ स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः ।

(९३३) ९।९७।७ स मृज्यते सुकर्मभिः ।

[६२४] ९।७०।५ स मर्त्यज्ञान इन्द्रियाय धायसे ।

(७३०) ९।६६।३ सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ।

[६२७] ९।७०।८ = (१०४१) ९।१०८।१६
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे ।
[६२८] ९।७०।९ (रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
इन्द्रस्य हारिं सोमधानमा विश ।
(१०४१) ९।१०८।१६ (शक्तिर्वामित्रः । पवमानः सोमः)
[६२९] ९।७०।१० (रेणुर्वैश्वामित्रः । पवमानः सोमः)
हितो न सतिगमि वाजमर्ष ।
(७३०) ९।८६।३ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष ।
[६३७] ९।७१।८ = (अग्निः १८७५) १।२५।८
(कुन्म आदिरमः । अग्निः औषमोऽग्निर्वा)
[६३८] ९।७१।९ (हरिमन्त आदिरमः । पवमानः सोमः)
शुचिर्दिवा पवते सोम इन्द्र ते ।
(७४०) ९।८६।१३ (भिकता निवावरी । पवमानः सोमः)
[६४४] ९।७२।६ = (मरुतः ११३) १।६४।६
(नोवा गौतम । मरुत)
[६४५] ९।७२।७ (हरिमन्त आदिरमः । पवमानः सोमः)
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूर्मो सिन्धुषु ।
सोमो हरे पवते चारु मत्सरः ।
(७३५) ९।८६।८ (अकृष्टा माषाः । पवमानः सोमः)
अपामूर्मि सिन्धुषु ।
नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः ।
(७४८) ९।८६।२१ (पूर्वाश्रयोऽजा । पवमानः सोमः)
सोमो हरे ।
[६४६] ९।७२।८ (हरिमन्त आदिरमः । पवमानः सोमः)
स त् पवस्व परि पार्थिवं रजः । रथिं पिशङ्गं बहुलं वसीमहि ।
(१०२३) ९।१०७।२४ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
स त् ।
(१०२०) ९।१०७।२१ रथिं पिशङ्गं बहुलं पुरुम्भृत् ।
[६५१] ९।७३।४ (पवित्र आदिरमः । पवमानः सोमः)
दिवो नास्ते मधुजिह्वा असञ्चतः ।
(७२५) ९।८५।१० (येनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
[६५७] ९।७४।१ = (५३) ९।७४
[६६१] ९।७४।५ = १।९२।१३ (गौतमो गङ्गायणः । उपा)
[६६५] ९।७४।९ = (१३६) ९।२६।८
['] ९।७४।९ (कक्षावान दैर्घ्यतमः । पवमानः सोमः)
स्वहस्वेन्द्राय पवमान गौतये ।
(९००) ९।९७।४४ (पगजः शाल्यः । पवमानः सोमः)
.... पवमान इन्दो ।
[६६७] ९।७५।२ = (२२३ ३३०५) १।१५५।३

(दीर्घतमा औचथ्यः । इन्द्राविष्णू)
[६६९] ९।७५।४ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
प्ररोचयन् रोदसी मातरा शुचि ।
(७२७) ९।८५।१२ (येनो भार्गवः । पवमानः सोमः)
प्राहृचद् रोदसी मातरा शुचि ।
[६७१] ९।७६।१ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
धर्ता दिवः पवते कृत्यो रसः । . अत्यो न ।
(६८०) ९।७७।५ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
चाक्रिर्दिवः — । ... अत्यो न ।
[६७५] ९।७६।५ (कविर्भार्गवः पवमानः सोमः)
वृषेव यूथा परि कौशमर्षसि ... कनिक्रद् ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरन्तिमो ।
(८५२) ९।९६।२० (प्रनर्दनो दैवोदासिः । पवमानः सोमः)
— — परि कौशमर्षन् कनिक्रद् ।
(८८८) ९।९७।३२ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
कनिक्रद् ।
— — मत्सरवान् ।
[६७६] ९।७७।१ (कविर्भार्गवः । पवमानः सोमः)
वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनव ।
१०।७५।४ (सिन्धुक्षित्रैर्यमैश्वर्यः । नद्यः)
[६८१] ९।७८।१ प्र राजा वाच जनयन्नसिष्यदत् ।
(७६०) ९।८६।३३ = (९९७) ९।१०६।१२
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ।
(९।८६।३३ उपावमुः)
['] ९।७८।१ शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् ।
(७३४) ९।८६।७ सोमो देवानामुप ।
[६८५] ९।७८।५ = ७।७७।४ (वमिष्टो मैत्रावरुणि । उपा)
[६८६] ९।७९।१ अर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः ।
(इन्द्रः २७८०) १०।१३३।३ अर्यो नशन्त नो धियः ।
[६९५] ९।८०।५ (वमुर्भार्गवाजः । पवमानः सोमः)
इन्द्र सोम मादयन् दैव्यं जन ।
(७१३) ९।८४।३ (प्रजापतिर्वाच्यः । पवमानः सोमः)
इन्द्रं सोमो मादयन् ।
[७०१] ९।८२।१ = (४२१) ९।६२।४
[७१०] ९।८३।५ (पवित्र आदिरमः । पवमानः सोमः)
नभो वसानः ।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहन् ।
(७६७) ९।८६।४० (अकृष्टा माषादयन्त्रयः । पवमानः सोमः)
.. अपो वसानो ।
वाजमारुहन् सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहन् ।

[७११] ९।८४।१ = (८८३ ३२३२) ५।५१।७ (स्वस्त्यात्रेयः ।
 इन्द्रवायु)
 = (२४४) ९।३३।३ = (२४९) ९।३४।२
 (त्रित आत्स्य । पवमानः सोम)
 [७१२] ९।८४।२ = (८८८ ८०८) १।५६।४ (मव्य आग्निरस ।
 इन्द्र.)

[७१३] ९।८४।३ = (६९५) ९।८०।५
 [७१५] ९।८४।५ = (६७१) ९।७६।१
 [७२०] ९।८५।५ व्यावययं समया वारमर्षमि ।
 (९१२) ९।९७।५ वि वारमव्यं समयाति याति ।
 [७२२] ९।८५।७ = (४२०) ९।६२।३
 [७२४] ९।८५।९ = (अग्नि १७९९) ६।७।७ (भरद्वाजो
 बार्हस्पत्य । वैश्वानरोऽग्निः)

[' '] ९।८५।९ गत्ता पवित्रमत्येति शेरुवत् ।
 (७३४) ९।८६।७ वृषा पवित्रमत्येति .. ।
 [७२५] ९।८५।१० = (६५१) ९।७३।४
 [' '] ९।८५।१० वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठम् ।
 (८३१) ९।९५।४ अशुं दुहन्त्युक्षणं .. ।
 [७२६] ९।८५।११ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोम)
 शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतं ।
 (७५८) ९।८६।३ (अक्रुष्टामापादयन्त्ययः । पवमानः सोम)

[७२७] ९।८५।१२ (वेनो भार्गवः । पवमानः सोम.)
 ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अरुधाद् ।
 भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यथौत ।
 १०।१२३।७ (वेनो भार्गवः । वेनः)
 ऊर्ध्वो ।
 १०।१२३।८ (वेनो भार्गवः । वेनः)
 भानुः शुक्रेण शोचिषा चकानः ।

[' '] ९।८५।१२ = (६६९) ९।७५।४
 [७३०] ९।८६।३ = (३२९) ९।७०।१०
 [' '] ९।८६।३ (अक्रुष्टा मापा । पवमानः सोम)
 वृषा पवित्रे अधि सानो अव्यये ।
 (८९६) ९।९७।४० (पराजः आत्स्य । पवमानः सोम)
 . सानो अव्ये ।

[७३०] ९।८६।३ = (६२४) ९।७०।५
 [७३४] ९।८६।७ = (३८१) ९।७८।१
 [' '] ९।८६।७ = (७२४) ९।८५।९
 [७३५] ९।८६।८ = (६४५) ९।७२।७
 [७३६] ९।८६।९ = (अग्निः १६६) १।५८।२

[' '] ९।८६।९ = (६०८) ९।६८।९
 [७४०] ९।८६।१३ = (६४२) ९।७२।४
 [७४४] ९।८६।१७ = (६०७) ९।६८।८
 [७४६] ९।८६।१९ = (३८६) ९।६०।३
 [७४८] ९।८६।२१ = (६४५) ९।७२।७
 [७५३] ९।८६।२६ = (११७) ९।१४।५
 [७५६] ९।८६।२९ (पृथिव्योऽजाः । पवमानः सोमः)
 त्वं छां च पृथिवीं चाति जग्निवे ।
 (९४३) ९।१००।९ (रेगमल कादयर्षो । पवमानः सोम)
 [७५७] ९।८६।३० = (८२१) ८।३।६
 [७५८] ९।८६।३१ = (७२६) ९।८५।११
 [७६०] ९।८६।३३ (अक्रुष्टामापादयन्त्ययः । पवमानः सोमः)
 पुनानो वाचं जनयन्नुपावसु ।
 (९९७) ९।१०६।१२ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)
 —जनयन्मिष्यदग ।

[७६२] ९।८६।३५ = (२७५) ९।३८।४
 [' '] ९।८६।३५ (अक्रुष्टामापादयन्त्ययः । पवमानः सोमः)
 दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ।
 (१०३३) ९।१०८।१६ (शक्तिर्वामिष्ठः । पवमानः सोमः)
 दिवो विष्टम्भ उत्तमः ।

[७६५] ९।८६।३८ = (६१७) ९।६९।८
 [७६७] ९।८६।४० = (७१०) ९।८३।५
 [७७१] ९।८६।४४ = (५१४) ९।६५।७
 [७७३] ९।८६।४६ = (७२६) ९।८५।११
 [७८४] ९।८७।९ = (अग्निः ९५०) ६।१।१२
 (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः)

[७८५] ९।८८।१ = (इन्द्रः २०१३) ७।२९।१
 (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । इन्द्रः)

[७९२] ९।८८।८ = (११०३) १।९१।३
 [७९९] ९।८९।७ = ४।५१।१० (वामदेवो गीतमः । उषा ।
 [८०२] ९।९०।३ = (इन्द्र १८७८) ६।१९।८
 (भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । इन्द्रः)

[८०४] ९।९०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणः । पवमानः सोमः)
 मसि ..वरुणं मसि मित्रं मसि ।
 मसि शर्धो मारुतं मसि देवान् मसि ।
 (८९८) ९।९७।४२ (पराजः आत्स्य । पवमानः सोमः)
 मसि मसि मित्रावरुणा ।
 मसि शर्धो मारुतं मसि देवान् मसि ।
 [८०६] ९।९१।१ दश स्वमारो अधि सानो अव्यये ।
 (८१५) ९।९२।४ दश स्वमारो अधि सानो अव्यये ।

[८१५] १।१२।४ = ८।५७ (वाल०९) २ (मेभ्यः काण्वः । अश्विनौ)

["] १।१२।४ = (८०६) १।१२।१

[८१७] १।१२।६ परि सद्यैव पशुमान्ति होता ।

(८५७) १।१७।१ मिनेव सद्य पशुमान्ति होता ।

[८२९] १।१५।२ = २।४२।१ (शुक्लमदः शौनकः । अकुन्तः)

[८३१] १।१५।४ = (७२५) १।८५।१०

[८३२] १।१५।५ = ४।५१।१० (वामदेवो गौतम । उपा.)

[८३५] १।१६।३ (प्रतर्दनो देवोदाभिः । पवमानः सोमः)

स नो देव देवताते पवस्व महे सोम पसरस उन्द्रपानः ।

पुनानः ।

(८८३) १।१७।२७ (मृळीको वामिष्टः । पवमानः सोमः)

एवा देव देवताते पवस्व महे सोम पसरसे देवपानः ।

... पुनानः ।

[८३७] १।१६।५ = (८८२) ८।३६।४

(व्याधश्च आत्रेयः । इन्द्रः)

[८३८, ८४९] १।१६।६, १७ सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ।

[८४१] १।१६।९ (प्रतर्दनो देवोदाभिः । पवमानः सोमः)

सहस्रधारः शतवाज इन्द्रः ।

(१०७३) १।११०।१० (व्यरुणस्त्रैवृणः, त्रसदस्युः पौरु-

कुतरयः । पवमानः सोमः)

[८४८] १।१६।१६ = (इन्द्रः ८६०) १।६१।५

[८४९] १।१६।१७ (प्रतर्दनो देवोदाभिः । पवमानः सोमः)

शिशु जज्ञानं हर्षितं मृजन्ति ।

(१०७५) १।१०९।१२ (अग्रयो शिष्या गेध्वरा. ।

पवमानः सोमः)

— जज्ञानं हरि मृजन्ति ।

[८५२] १।१६।२० = (६७५) १।७६।५

[८५५] १।१६।२३ = (६०८) १।६८।९

[८५७] १।१७।१ = (८१७) १।१२।६

[८६१] १।१७।५ = ४।३३।२ (वामदेवो गौतमः । ऋभवः)

["] १।०७।५ सहस्रधारः पवते मदाय ।

(९४९) १।१०१।६ सहस्रधारः पवते ।

[८६७] १।१७।११ = (११३३) ८।४८।२

[८७०, ८७५] १।१७।१६, १९

आ । १९ परि । णुमा धन्व सानो अव्ये ।

[८८०] १।१७।२४ = (अग्निः १२२) १।६०।४

(नोधा गौतमः । अग्निः)

[८८३, १।१७।२७ (८३५) १।१६।३

[८८६] १।१७।३० = (अग्निः १६२) १।६८।९

(पराशरः शाक्यः । अग्निः)

[८८८] १।१७।३२ = (६७५) १।७६।५

[८९२] १।१७।३६ = (६०९) १।६८।१०

[८९५] १।१७।३९ = (इन्द्रः ८७३) १।६२।२

(नोधा गौतमः । इन्द्रः)

[८९६] १।१७।४० = (७३०) १।८६।३

[८९८, ९०५] १।१७।४२, ४९ मत्सि (१।१७।४९ अभि)

मित्रावरुणा पूयमानः ।

[८९८] १।१७।४२ = (८०४) १।१०।५

[९००] १।१७।४४ = (६६५) १।७४।९

[९०२] १।१७।४६ = १।१९०।२

(अगरल्यो मैत्रावरुणिः । बृहरपतिः)

[९०४] १।१७।४८ = (अग्निः २०६) १।७३।२

(पराशरः शाक्यः । अग्निः)

[९०५] १।१७।४९ = (इन्द्रः २१८५) ७।२३।६

(वसिष्ठो मैत्रावरुणि । इन्द्रः)

[९१२] १।१७।५६ = (इन्द्रः १४१०) ३।४६।२ -

(विश्वामित्रो गाधिनि । इन्द्रः)

["] १।१७।५६ = (७२०) १।८५।५

[९१५] १।१८।१ = (५०२) १।६४।२५

[९१८] १।१८।४ = (इन्द्रः ९४३) १।८४।७

(गौतमो राह्वणः । इन्द्रः)

[९२०] १।१८।६ = १।१८।६ (मेघानिधिः काण्वः । सदसस्पतिः)

[९२४] १।१८।१० = (९३) १।११।८

[९३२] १।१९।६ = (३४५) १।५०।५

["] १।१९।६ = (१६४) १।२०।६

[९३३] १।१९।७ = (६२३) १।७०।४

["] १।१९।७ = (२९) १।३।९

["] १।१९।७ = (५१) १।७।२

[९३४] १।१९।८ = (१८९) १।२४।६

["] १।१९।८ = (४४९) १।६३।२

[९३५] १।१००।१ = १।१८।६ (मेघानिधिः काण्वः । सदसस्पतिः)

[९३६] १।१००।२ = (२८९) १।४०।६

["] १।१००।२ = (३७) १।४।७

[" ९४२] १।१००।२, ८ विश्वानि दाशुषो गृहे ।

[९४५] १।१००।५ = (१) १।१।१

["] १।१००।५ (रेभसू काश्यपौ । पवमानः सोमः)

मित्राय वरुणाय च ।

१०।८५।१७ (सूर्य सावित्री ऋषिका । देवा)

[९४०] १।१००।६ = (१०६) १।१३।३

["] १।१००।६ = (९९१) १।१०६।६ देवेभ्यो मधुमन्तमः ।

[९४१] ९।१००।७ = (इन्द्रः २०८७) ६।४५।२८

(शंयुर्वाहस्पत्यः । इन्द्रः)

["] ९।१००।७ = (३९) ९।४।९

[९४२] ९।१००।८ = (३१) ९।४।१

["] ९।१००।८ = (अग्निः १३३२) ८।४३।२३

[९४३] ९।१००।९ = (७५६) ९।८६।२०

[९४४] ९।१०१।६ = (८६१) ९।९७।५

[९५०] ९।१०१।७ = ८।३१।११ (मनुर्वैवस्वत । दम्पत्याधिषः)

["] ९।१०१।७ = (१०४) ९।१३।१

[९५१] ९।१०१।८ = (१८७) ९।२४।१

[९५२] ९।१०१।९ = (इन्द्रः ३०४१) ५।८६।२

(अत्रिसोमः । इन्द्राग्नी)

[९५३] ९।१०१।१० (मनुः सावरणः । पवमानः सोमः)

अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।

(९९१) ९।१०६।६ (चक्षुर्मानवः । पवमानः सोमः)

अस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।

[९५५] ९।१०१।१२ = (१७५) ९।२२।३

["] ९।१०१।१२ = (इन्द्रः १८) १।५।५

[९५८] ९।१०१।१५ = ७।८६।१ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । वरुणः)

[९५९] ९।१०१।१६ (प्रजापतिर्वैश्वामित्रो बाल्यो वा ।

पवमानः सोमः)

अन्यो वारेभिः पवते ।

(१०३०) ९।१०८।५ (ऊरुगजिरमः । पवमानः सोमः)

["] ९।१०१।१६ = (१६) ९।२।६

[९६४] ९।१०२।५ = (अग्निः २४४०) १।१९।३

(मेधातिथिः काण्वः । अभिनर्मरुतश्च)

[९६६] ९।१०२।७ = (अग्निः १९२४) १।१४२।७

(दीर्घतमा औत्तथ्यः । आग्नीम्तं [उपमानता])

[९६९] ९।१०३।२ = (५७१) ९।६७।४

["] ९।१०३।२ (द्विन आगत्यः । पवमानः सोमः)

वागण्ययया गोभिरञ्जानो अर्पति ।

(१०२१) ९।१०७।२२ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

वारे ... अयये ।

गोभिरञ्जानो अर्पसि ।

[९७०] ९।१०३।३ = (१८३) ९।२३।४

[९७३] ९।१०३।६ = (२९) ९।३।९

["] ९।१०३।६ = (२६८) ९।३७।३

[९७४] ९।१०४।१ = १।२२।८ (मेधातिथिः काण्वः । सविता)

[९७५] ९।१०४।२ (पर्वतनारदो काण्वो, शिखण्डिन्यामरसौ

वात्ययो वा । पवमानः सोमः)

समी वसं न मातृभिः ।

देवाव्यं मदम् ।

(९८१) ९।१०५।२ (पर्वतनारदो काण्वो । पवमानः सोमः)

मं वसं न मातृभिः ।

देवावीर्मदो ।

[९७६] ९।१०४।३ = १।१३६।४

(परुच्छेपो देवोदासिः । मित्रावरुणा)

[९७९] ९।१०४।६ रक्षमं कं विदग्निमम् ।

(९८५) ९।१०५।६ अदेव कं ।

[९८१] ९।१०५।७ = (९७५) ९।१०५।२

[९८७] ९।१०६।२ = (४७) ९।६।७

[९८८] ९।१०६।३ = (७७) ९।१०।१

[९८९] ९।१०६।४ = (इन्द्रः १७८५) ८।९।३

(अपाला आग्नेयी । इन्द्रः)

["] ९।१०६।४ = (२२३) ९।२९।६

[९९०] ९।१०६।५ = (५२०) ९।६५।१३

[९९१] ९।१०६।६ = (९५३) ९।२०१।१०

["] ९।१०६।६ = (९४०) ९।१००।६

[९९२] ९।१०६।७ = (५२१) ९।६५।१४

[९९५] ९।१०६।१० = (१३६) ९।१६।८

["] ९।१०६।१० = (२७) ९।३।७

[९९६] ९।१०६।११ = (४५) ९।६।५

[९९७] ९।१०६।१२ (अग्निश्चाक्षुषः । पवमानः सोमः)

मीळहे ससिर्न वाजयुः ।

(१०१०) ९।१०७।११ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)

[९९७] ९।१०६।१२ = (७६०) ९।८६।३३

[९९८] ९।१०६।१३ = (५३२) ९।६५।२५

[१०००] ९।१०७।१ = ४।४५।५ (वामदेवो गातमः । अश्विनौ)

[१००३] ९।१०७।४ = (४७५) ९।६३।२८

["] ९।१०७।४ = (इन्द्रः ५५३) ८।६१।६

(भर्गः प्रागाधः । इन्द्रः)

[१००५] ९।१०७।६ = (५५) ९।७।६

[१००६] ९।१०७।७ = (इन्द्रः ३०) १।७।३

(मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । इन्द्रः)

[१००९] ९।१०७।१० = (५७१) ९।६७।४

[१०१०] ९।१०७।११ = (९७७) ९।१०६।१२

[१०११] ९।१०७।१२ = (५४८) ९।६६।११

[१०१३] ९।१०७।१४ = (१८३) ९।२३।४

["] ९।१०७।१४ = (इन्द्रः ४३७) ८।३४।१३

(नीपानिधिः काण्वः । इन्द्रः)

[१०१३] ९।१०७।१४ = (१६६) ९।११।१
 [१०१४] ९।१०७।१५ (सप्तर्षयः । पवमानः सोमः)
 राजा देव कृतं बृहत् ।
 (१०३३) ९।१०८।८ (ऊर्ध्वमन्त्रा आह्निरसः । पवमानः सोमः)
 [१०१६] ९।१०७।१७ = (४७) ९।६।७
 ["] ९।१०७।१७ = (४६४) ९।६३।१७
 [१०२०] ९।१०७।२१ = (६४६) ९।७२।८
 [१०२१] ९।१०७।२२ = (५२) ९।७।३
 ["] ९।१०७।२२ = (९६९) ९।१०३।२
 [१०२२] ९।१०७।२३ = (१०६) ९।१३।३
 [१०२३] ९।१०७।२४ = (६४६) ९।७२।८
 [१०२४] ९।१०७।२५ = (४७२) ९।६३।२५
 [१०२५] ९।१०७।२६ = (२२५) ९।३०।२
 ["] ९।१०७।२६ = (११७) ९।१४।५
 [१०२६] ९।१०८।१ = (४९९) ९।६४।२२
 [१०३०] ९।१०८।५ = (९५९) ९।१०१।१६
 [१०३१] ९।१०८।६ = ८।७३।१८
 (गोपवन आत्रेयः गतवध्निर्वा । अश्विनौ)
 [१०३३] ९।१०८।८ = (१०१४) ९।१०७।१५
 [१०४०] ९।१०८।१५ = (९३) ९।११।८
 ["] ९।१०८।१५ = (४९९) ९।६४।२२

[१०४१] ९।१०८।१६ = (६२८) ९।७०।९
 ["] ९।१०८।१६ = (इन्द्रः २७७) ८।६।३५
 (वत्सः काण्वः । इन्द्रः)
 ["] ९।१०८।१६ = (६२७) ९।७०।८
 ["] ९।१०८।१६ = (७६२) ९।८६।३५
 [१०५३] ९।१०९।१२ = (८४९) ९।९६।१७
 [१०६३] ९।१०९।२२ = (इन्द्रः १८१) ८।३२।२
 (मेधातिथिः काण्वः । इन्द्रः)
 [१०७२] ९।११०।९ = (इन्द्रः ११८४) २।१७।४
 (गृत्समदः शौनकः । इन्द्रः)
 [१०७३] ९।११०।१० = (८४१) ९।९६।९
 [१०७८] ९।१११।३ = ८।१५।१३
 [१०७९-८२] ९।११२।१-४ = (१०८३-९३) ९।११३।१-११ =
 (१०९४-९८) ९।११४।१-४ इन्द्रायेन्द्रो परि खव ।
 [१०९०-९३] ९।११३।८-११ तत्र माममृतं कधि ।
 [१०९७] ९।११४।४ (कश्यपो मारीचः । पवमानः सोमः)
 मो च नः किं चनाममद् ।
 १०।५९।८-९ (बन्धु श्रुतबन्धुः । यावापृथिवी)
 मो पु ते किं चनाममत् ।
 (इन्द्रः ३३५५) १०।५९।१० (बन्धु श्रुतबन्धुर्विप्रबन्धु-
 गौपायनाः । इन्द्रयावापृथिव्यः ।

दैवत-संहितान्तर्गत सोमदेवता-मंत्राणां उपमासूची ।

(अस्यां सूच्यां मंत्रक्रमाद् १०९७ पर्यन्तं ऋग्वेदस्य नवमं मण्डलं वर्तते । तस्य निर्देशः कृतो नास्ति ।)

अग्निः न वने ८८,५, ७८९ आसृज्यमानः पाजांसि ।
अग्निं न मथितम् ८,४८,६, ११४० सं दिवीपः ।
अग्नेः इव २२,२; १७४ अमाः वृथा ।
अत्कं न निक्तम् ६९,४; ६१३ परि सोमः अन्वत ।
अत्याः हियाणाः न १३,६, १०९ असृग्रं वाजसातये ।
अत्यः न ३२,३; २३८ गोभिः अज्यते ।
अत्यः इव ४३,१; ३०२ मृज्यते ।
अत्यः न वाजसृत् ४३,५; ३०६ इन्द्रः कनिक्रन्ति ।
अत्यः न सस्वभिः ७६,१; ६७१ वृथा पाजांसि कृणुते ।
अत्यः न यूथे ७७,५; ६८० वृषयुः कनिक्रदत् ।
अत्यः न ८१,२; ६९७ वोळ्हा वृषा ।
अत्यः न ८२,२, ७०२ मृष्टः ।
अत्यः न ८५,५ ७२० सानसिः ।
अत्यः न हियाणः ८६,३; ७३० अभि वाजम् अर्ष ।
अत्यः न ८६,२६; ७५३ क्रीळन् परिवारं अर्षति ।
अत्यः न ८६,४४; ७७१ क्रीळन् हरिः असरत् ।
अत्यः न ९३,१, ८१८ वाजी द्रोणं ननक्षे ।
अत्यः न वाजी ९६,१५; ८४७ अरातीः तरतीत् ।
अत्यः न ९६,२०; ८५२ सृत्वा ।
अत्यः न ९७,१८; ८७४ क्रदः ।
अत्यः न ९७,४५, ९०१ हित्वा ।
अत्यासः न ससृजानासः ९७,२०; ८७६ शुक्रासः धन्वन्ति ।
अत्यम् इव वाजिनम् ६,५, ४५ मृजन्ति योषणः दश ।
अन्धसः यथा ते जातम् ५५,२ ३६५ नि बर्हिषि सद् ।
अपसः यथा रथम् १०७,१३; १०१२ तम् ईम नदीषु ।
अपां न ऊर्मयः ३३,१, २४२ सोमासः प्रयन्ति ।
अपाम् इव ऊर्मय ९५,३, ८३० तर्तराणाः मनीषा ।
अभ्रा इव विद्युत् ७६,३, ६७३ रोदसी प्र पिन्व ।
अरिता इव नावम् ९५,२, ८२९ पथ्यां वाचम् ह्यति ।
अरुपः न ७२,१, ६३९ युज्यते ।
अर्यमा इव ८८,८, ७२२ दक्षाद्यः ।
अर्यमा इव १,९१,३; ११०३ दक्षाद्यः ।
अर्वान् इव ९७,२५; ८८१ श्रवसे सातिम् अच्छा ।
अर्वन्तः न १०,१; ७७ श्रवस्यवः ।

अर्वन्तः न श्रवस्यवः ६६,१०, ५४७ सर्गाः असृक्षत ।
अर्वताम् इव वाजेषु ४७,५; ३३० भरेषु जिग्युषाम् असि ।
अवताम् इव सर्गासः १०,२५,४, ११६३ समु प्रयन्ति ।
अश्वः न ६४,३; ४८० चक्रदः वृषा ।
अश्वः न ७१,६; ६३५ यज्ञियः देवान् अप्पेति ।
अश्वः न ९७,२८; ८८४ क्रदः ।
अश्वः न १०१,२, ९४५ कृत्यः ।
अश्वः न १०९,१०; १०५१ निक्तः सोमः ।
अश्वं न हेतारः ६२,६, ४२३ अमृताय ईम् आशुशुभम् ।
अश्वं न ८७,१; ७७६ वाजिनं मर्जयन्तः ।
अश्वं न १०८,७; १०३२ अप्तुरम् रजस्तुरम् ।
अश्वया इव १०७,८; १००७ हरिता याति धारया ।
अहानि इव सूर्यः वासराणि ८,४८,७; ११४१ नः आयुषि ।
अहिः न ८६,४४, ७७१ जर्णाम् अति सर्पति त्वचम् ।
अद्याः न ईक्षेण्यासः ७७,३; ६७८ चारवः ।
आजिम् यथा ३२,६; २४० एवं हितम् अगन् ।
आपः न प्रवताः ६,४; ४४ इन्द्रवः अन्वसरन् ।
आपः न प्रवताः २४,२, १८८ अभि गावः अधन्विषुः ।
आपः न ८८,७, ७९१ सुमतिः भव ।
इन्द्रः न ८८,४, ७८८ महा कर्माणि चक्रिः ।
इन्द्रस्य इव आजौ ९७,१३; ८६९ वस्तुः आ शृण्वे ।
इषुः न धन्वन् ६९,१; ६१० मतिः प्रति धीयते ।
उक्षा इव यूथा ७१,९; ६३८ परियन् अरावीन् ।
उत्सं न कंचित् जनपानम् ११०,५; १०६८ अभि अभि हि ।
उपवक्ता इव होतुः ९५,५; ८३२ वाचम् ह्वयन् ।
उरु इव ९६,१५; ८४७ गातुः ।
उशना इव काव्यम् ९७,७, ८६३ देवः देवानां जनिमा ।
उषसः न सूर्यः ८४,२, ७१२ इन्द्रः सिषक्ति ।
उषाः सूर्यः न रश्मिभिः ४१,५, २९४ मही रोदसी भावृण ।
ऊर्मिः इव अपाम् १०८,५; १०३० क्रीळन् पवते ।
ऊर्मिं न सिन्धुः ९६,७; ८३९ सोमः गिरः आवीविपत् ।
ऊर्मैः इव सिन्धोः ५०,१; ३४२ ते स्वनः उदीरते ।
ऊर्मुः न रश्मं नवम् २१,६, १७१ दधाता केतम् आदिशे ।

क्रवयः न गृध्राः ९७, ५७, ९१३ अदृग्धाः पदे रेभन्ति ।
 कामः न ९७, ४६; ९०२ य. देवयतां असर्जि ।
 कारिणे न ९७, ३८, ८९४ धनं प्र यंसत् ।
 कारिणाम् हव भरासः १०, २, ७८ गभस्योः दधन्विरे ।
 कृत्वा हव अत्यासः ४६, १; ३२० देववीतये असृग्रन् ।
 कृष्टिहा हव ७१, २, ६३१ शूषः रोहवत् प्र एति ।
 गावः न ४१, १; २९० भूर्णयः ।
 गावः यन्ति गोपतिम् ९७, ३४, ८९० पृच्छमानाः सोमं ।
 गावः अस्तं न धेनव ६६, १२; ५४९ इन्दवः समुद्रम् ।
 गावः न धेनवः ६८, १; ६०० इन्दवः प्र असिष्यदन्त ।
 गावः न यवसेषु १, ९१, १३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।
 गावः न यवसे १०, २५, १; ११६० ते सख्ये वयं रणन् ।
 गावः वत्सं न मातरः १२, २; ९६ इन्द्रं विप्राः अभ्यनूषत ।
 गाः हव ११२, ३; १०८१ नानाधियः अनुतस्थिम् ।
 ग्रन्थिम् न ९७, १८, ८७४ ग्रथितं माम् वि ष्य ।
 घना हव ९७, १६, ८७२ विष्वक् दुरितानि विघ्नन् ।
 घृतं न पवते मधु ६७, ११; ५७८ अयं सोमः कपर्दिने ।
 घृतं न पवते शुचि ६७, १२; ५७९ अयं ते आवृणो सुतः ।
 चमसाम् हव १०, २५, ४; ११६३ त्वम् विवक्षसे ।
 चरुः न ५२, ३; ३५२ तम् ईक्ष्म्य ।
 चित्रम् न दिवः ६१, १६; ४०३ ज्योतिः बृहत् ।
 जनः न पुरि १०७, १०; १००९ हरिः चम्बोः सदः विशत् ।
 जन न युष्वा ८८, ५; ७८९ महतः उपब्धिः ।
 जमदग्निवत् ९७, ५१; ९०७ नः आर्षेयं द्रविणं अभ्यश्रवाम ।
 जाया हव पत्यौ ८२, ४, ७०४ अधिशेव मंहसे ।
 जारः न योषितम् ३८, ४; २७५ मानुषीषु आ सीदति ।
 जारः न योषणाम् १०१, १४, ९५७ सरत् योनिम् आसदत् ।
 जारम् हव योषा प्रियम् ३२, ५; २४० प्रियं त्वा गावः ।
 जारम् न कन्या ५६, ३, ३७० दश योषणः त्वा अभ्यनूषत ।
 दिवः न विष्णुर् ८७, ८, ७८३ सोमस्य धारा पवते ।
 दिवः न वृष्टिः ८९, १; ७९३ पवमान अक्षाः ।
 दिवः न वृष्टयः ५७, १; ३७२ ते धाराः प्रयन्ति ।
 दिवः न वृष्टयः ६२, २८, ४४५ असश्रुतः ते धाराः प्रयन्ति ।
 दिवः न मर्गाः ९७, ३०; ८८६ अससृग्रम् अह्नाम् ।
 दिवः न मानु १६, ७; १३५ धारा पवित्रे वृथा अर्षति ।
 दिवः न सानु ८६, ९, ७३६ स्तनयन् अचिक्रदत् ।
 दिव्याः न कौशासः ८८, ६; ७९० सोमासः अभ्रवर्षाः ।
 दिव्या विट् यथा ८८, ७; ७९१ अनभिशास्ता तथा ।
 दूतम् न ९९, ५; ९३१ पूर्वचित्तयः तम् आशासते ।

देवः न सूर्यः ५४, ३; ३६२ सोमः सुवनोपरि तिष्ठति ।
 देवः न सूर्यः ६४, ९, ४८६ अक्रान् ।
 देवः न ६३, १३; ४६० सूर्यः ।
 देवः न ९७, ४८, ९०४ सविता सत्यमन्मा ।
 द्रविणोदाः हव ८८, ३; ७८७ रमन् विश्ववारः ।
 धन्वन् न तृष्णा ७९, ३; ६८८ समरीत तान् अभि ।
 धारा हव उरु दुहे ६९, १, ६१० मतिः अस्य अग्रे आयती ।
 धुरं वाजी न यामनि ४५, ४; ३१७ पवित्रं अत्यक्रीत् ।
 धेनुः न वत्सम् ८६, २; ७२९ पयसाभि वज्रिणम् इन्दवः ।
 नदी फेनम् हव अथ १, ८, १; १२४० हविः यातुधनान् ।
 नावा न सिन्धुम् ७०, १०; ६२९ वि अति पर्षि विद्वान् ।
 नासत्या हव ८८, ३; ७८७ हवे आ शंभविष्ठ ।
 निम्नेन हव सिन्धवः १७, १; १३७ व्रतः वृत्राणि भूर्णयः ।
 पयं न ९६, १५; ८४७ दुग्धम् ।
 पयसा हव धेनवः ७७, १; ६७६ वाश्राः अभि अर्षन्ति ।
 परावतः न साम १११, २; १०७७ धीतय यत्र आरणन्ति ।
 पर्जन्यः वृष्टिमान् हव २, ९; १९ मध्वा धारया पवस्व ।
 पर्जन्यस्य हव २२, २, १७४ वृष्टयः ।
 पर्णवीः हव ४३, १; २१ एषः दीयति ।
 पशौ न रेतः ९९, ६; ८३२ सोमः चमूषु सीदति ।
 पिता हव सूनवे १०, २५, ३; ११६२ न मृळ ।
 पिता हव सूनवे ८, ४८, ४; ११३८ सुशेवः नः शं भव ।
 पितुः न पुत्रः ९७, ३०; ८८६ क्रतुभि यतानः त्वम् ।
 पित्र्यस्य हव रायः ८, ४८, ७; ११४१ सुतस्य ते भक्षीमहि ।
 पृषा हव ८८, ३, ७८७ धीजवनः ।
 पृतनाषाट् न ८८, ७, ७९१ त्वं यज्ञः ।
 पैद्व न ८८, ४, ७८८ त्वं अहि हन्ता ।
 प्रज्ञताम् हव संतनिः ६९, २; ६११ पवमानः परिवारम् अर्षति ।
 प्रियः न मित्रः ८८, ८; ७९२ शुचिः त्वम् असि ।
 प्रियः न मित्रः १, ९१, ३; ११०३ शुचिः ।
 प्रियाम् न जारः ९६, २३; ८५५ शत्रून् अपघ्नन् एषि ।
 भुजे न पुत्रः ओण्यो १०१, १४; ९५७ जामिः अत्के अव्यत ।
 भृतिम् न १०३, १; ९६८ उद्यतं वचः आभर ।
 मखः न २०, ७; १६५ क्रीळुः मंहयुः ।
 मखम् न भृगवः १०१, १३; ९५६ अराधसं श्वानम् अपहत ।
 मनवे यथा आपवथाः वयोधाः ९६, १२, ८४४ एवा पवस्व ।
 मसृताम् हव स्वनः ७०, ६; ६२५ नानदत् एति ।
 मर्यं हव स्व ओक्थे १, ९१, १३; १११३ नः हृदि रारन्धि ।
 मर्यः न योषाम् ९३, २; ८१९ अभि निष्कृतं यन् ।

मर्थः न शुभ्र. ९६, २०; ८५२ तन्वं मृजानः ।
 महिषः न ६९, ३; ६१२ नृग्नः शिशानः शोभते ।
 महिषः न शृङ्गे ८७, ७, ७८२ तिरमे शिशानः अदधावत् ।
 महिषाः इव वनानि ३३, १, २४२ सोमासः प्र यन्ति ।
 मर्त्यजानं महिष न ९५, ४; ८३१ सानौ अशुं दुहन्ति ।
 मही इव द्यौः । अथ ०६, ६, ३, ११८६ वधत्माना तस्य बल ।
 मही न धारा ८६, ४४, ७७१ अति अन्ध अर्षति ।
 मातरा इव १८, ५; १४९ मही रोदसी स दोहते ।
 मातरा न ददृशान ७०, ६, ६२५ उल्लियः नानदत् एति ।
 मातृभि न शिशुः ९३, २, ८१९ वावशानः ।
 मिता इन् सद्वा ९७, १; ८५७ सुतः पवित्र पर्येति रेभन् ।
 मित्रः न २, ६, १६ दशीत ।
 मृग न ३२, ४, २३९ तक्तः ।
 मृग. न महिषः ९२, ६ ८१७ वनेषु सीदन् अयासीत् ।
 मृश न सप्त धातृभि. १०, ३, ७९ सोमासः गोभिः अज्जते ।
 मूये न निःष्ठा वृषभः ११०, ९; १०७२ विश्वा भुवना वितिष्ठसे
 योपा इव पिण्यावती ४६, २, ३२१ वायुम् असृशत ।
 योपा इव सुहुवा ९६, २४; ८५६ सुधाराः आ यन्ति ।
 रघुजा इव ८६, १, ७०८ त्मना मदा अर्षन्ति ।
 रथः न ८८, २, ७८६ भूरिषाट् ।
 रथः न ९०, १; ८०० वाजं सनिप्यन् अयासीत् ।
 रथः न ९२, १; ८१२ सार्जि सनये हियानः ।
 रथाः इव १०, १; ७७ प्रस्वानासः अक्रमुः ।
 रथाः इव १०, २, ७८ हिन्वानासः दधन्विरे ।
 रथाः इव प्रवाजिन २२, १; १७३ सर्गाः सृष्टाः अहेयत ।
 रथाः इव वाजयन्तः ६७, १७; ५८४ असृग्रन् देववीतये ।
 रथाः इव सातिस् अच्छ ६९, २, ६१८ सोमाः इन्द्रं प्र ययुः ।
 रथम् न ७१, ५, ६३४ भुरिजोः सम् ई अहेपत ।
 रथं न गावः समनाह ८, ४८, ५, ११३९ सोमाः मां पर्वसु ।
 रथे न वर्म ९८, २, ९१६ सुवानः अव्ययम् अव्यत ।
 रथीः इव अश्व ६४, १०; ४८७ इन्द्रुः पविष्ट सृजत् ।
 रथ्यः यथा ३६, १; २६० सुतः पवित्रे असर्जि ।
 रथ्ये आजौ यथा ९१, १; ८०६ धिया सचेताः असर्जि ।
 रथ्यासः यथा ८६, १, ७२९ एवा ते प्रमदायः पृथक् आशवः ।
 रथा इव िष्टपम् ४१, ६, २९५ सोम विश्वतः परिसर ।
 राजा इव विशः ७, ५; ५४ पवमानः स्पृधः अधि सीदति ।
 राजा इव २०, ५; १६३ सुवनः ।
 राजा इव इभः ५७, ३; ३७४ सुवनः ।
 राजा इव ८२, १; ७०१ दस्स ।
 राजा इव ९०, ६; ८०४ क्रतुमान् ।

राजा न ९७, ३०; ८८६ मित्रम् ।
 राजा न ९२, ६; ८१७ समिती. हियानः ।
 राजान न प्रशस्तिभि. १०, ३, ७९ सोमासः गोभिः अज्जते ।
 रेभ न ७१, ७; ६३६ पूर्वाः उपसः विराजति ।
 वत्स न मातुः ऊधनि ६९, १; ६१० मतिः उपसर्जि ।
 वत्सः इव मातृभि. १०५, २; ९८१ इन्द्रु हिन्वानः समज्यते ।
 वत्सम् न धेनवः १३, ७, ११० वाश्वा. अभि अर्षन्ति ।
 वत्सं जातं न धेनवः १००, ७, ९४१ मातरः स्वां रिहन्ति ।
 वत्सं न मातृभि. १०४, २, ९७५ गय साधनं संसृजत ।
 वत्स संशिश्वरीः इव ६१, १४; ४०१ तम् इत् गिरः ।
 वत्सं न पूर्वे आयुनि १००, १; ९३५ जात रिहन्ति मातरः ।
 वनुषः यशा सीदन्तः ६४, २९; ५०६ वाजी अक्रमीत् ।
 वयो न वृक्षम् अथ ० ६, २, २, १२४९ आ यं विशन्तीन्द्रवः ।
 वरः न योषणाम् १०१, १४; ९५७ सरत् योनिम् आसदम् ।
 वरुणः न मिन्धून् ९०, २, १२ वना वसाना ।
 वर्मी इव १०८, ६; १०३१ धृष्णो आ रुज ।
 वसुभिः नानिक्तैः ९३, ३; ८२० गावः पयसा अभि ।
 वाजम् इव ३७, ५; २७० सोमः असरत् ।
 वाजम् इव ६२, १६; ४३३ सोमः असरत् ।
 वाज न एतशः अच्छा १०८, २; १०२८ सः ह्यः ।
 वाजे न वाजयुम् ६३, १९; ४६६ अय्यः वारेषु सिञ्चन ।
 वाजी न सप्तिः ९६, ९; ८४१ समना जिगति ।
 वाजी इव सानसिः १००, ४; ९३८ वारं रंहमाणा ।
 वाजिनि इव शुभः ९४, १; ८२३ अस्मिन् धियः स्पर्धन्ते ।
 वात न ९७, ५२; ९०८ जूतः ।
 वाताः इव २२, २; १७४ उरव ।
 वायुः न नियुत्वान् ८८, ३; ७८७ इष्टयामा स्वम् ।
 विः योना वसतौ इव ६२, १५; ४३२ इन्द्रुः इह धीयते ।
 विदुष न यज्ञम् यज्ञ ० ६, २६; ११९६ श्रगोति देवः ।
 विष्पतिः न १०८, १०. १०३५ वह्नि ।
 वृक्षम् न पक्कम् ९७, ५३; ९०९ धूनवत् वसूनि ।
 वृषा इव यूथा ७६, ५; ६७५ परि कोशम् अर्षसि ।
 वृषा इव यूथा ९६, २०; ८५२ परि कोशम् अर्षन् ।
 वृषा अभि कनिकदत् गाः ९७, १३; ८६२ शोण. नदयन् ।
 वृष्टयः पृथिवीम् इव १७, २; १३८ इन्द्रं सोमायः अक्षरन् ।
 वृष्टि न तन्धतुः १००, ३; ९३७ मनोयुजं धियम् आ सृज ।
 वृष्टेः इव ४१, ३; २९२ स्वनः शृण्वे ।
 वेः न द्रुवद् ७२, ५, ६४३ चम्बोः आसदत् हरिः ।
 वेधाः न योनिम् १०१, १५; ९५८ हरिः पवित्रे अव्यतः ।
 व्रजम् न पशुवर्धनाय ९४, १; ८२३ कनीयन् मन्म पवते ।

शकुनः न पत्वा वनेषु ९६, २३; ८५५ सोम कलशेषु सत्ता ।
 शकुनाः इव १०७, २०, १०१९ सूर्यम् अति पतितम् ।
 शर्धः न मास्तम् ८८, ७; ७९१ त्वं पवस्व ।
 शर्यहा इव शुरुधः ७०, ५, ६२४ दुर्मतीः आदेदिशानः ।
 शर्याभिः न भरमाणः ११०, ५, १०६८ अभ्याभि हि श्रवसा ।
 शिशुः न क्रीळन् ११०, १०; १०७३ पवमानः अक्षाः ।
 शिशुः न जात ७४, १, ६५७ अवचक्रदत् वने ।
 शिशु जज्ञानम् (न) ९६, १७, ८४९ हर्यतं मृजन्ति ।
 शिशुम् न १०४, १; ९७४ यज्ञैः परि भूषत श्रिये ।
 शिशुम् न १०५, १; ९८० यज्ञैः स्वदयन्त गृतिभिः ।
 शुभ्र न १४, ५; ११७ मसृजे युवा ।
 शूरः न ७६, २; ६७२ आयुधा धत्ते ।
 शूरः न सत्वा गाः गव्यन् अभि ८७, ७; ७८२ अदधावत् ।
 शूरः न १६, ६ १३४ । ६२, १९; ४३६ गोषु तिष्ठति ।
 शूर यस्त्रिंशत्सत्त्वभिः ३, ४; २४ सिषासति ।
 शूरः न युध्यन् ७०, १०, ६२९ अव न निदः स्यः ।
 शूरः न रथः ९४, ३; २५ कविः काव्या भरते ।
 श्येनः न ३८, ४; २७५ विक्षु सीदति ।
 श्येनः न ५७, ३; ३७४ वंसु सीदति ।
 श्येनः न ६१, २१; ४०८ योनिम् आसीद ।
 श्येनः न ६२, ४, ४२१ योनिम् आसदत् ।
 श्येनः न ६५, १९; ५२६ योनिम् आसीदन् ।
 श्येनः न योनिम् ७१, ६, ६३५ सदनम् एषति ।
 श्येनः न ८२, १, ७०१ योनिं श्रुतवन्त आमदम् ।
 श्येनः न वंसु ८६, ३५; ७६२ कलशेषु सीदति ।
 श्येनः न तक्तः ६७, १५; ५८२ ते रसः अर्पति ।
 श्येनः वर्म वि गाहते ६७, १४, ५८१ कलशेषु आ धावति ।
 श्वस्यन् न पृनताज ८७, ५; ७८० पवित्रेभिः पवमानाः ।
 श्रौष्टी इव धुरम् ८, ४८, २ ११३६ राये अनु क्रध्याः ।
 सुखा इव सख्ये १०४, ५, ९७८ न गातुवित्तमः भव ।
 सत्वा इव सख्ये १०५, ५, ९८४ नयः रुचे भव ।
 सत्वा इव सख्ये ८, ४८, ४, ११३८ न शं भव ।
 सत्वा सख्युः न ८६, १६, ७४३ प्र मिनाति सगिरम् ।
 सख्युः न जामिम् ९६, २२; ८५४ क्रन्दन् एति ।
 सद्य इव ९२, ६, ८१७ पशुमान्ति होता ।
 सप्तः इव ९६, १६, ८४८ श्रवस्य ।
 सप्तिः न १०३, ६, ९७३ वाजयुः ।

सप्ति न वाजयु १०६, १२, ९९७ असर्जि कलशान् अभि ।
 सप्ति न वाजयुः मीळहे १०७, ११, १०१० तिरः जण्वानि ।
 समुद्रासः न ८०, १, ६९१ सवनानि वि विव्यचुः ।
 समुद्रम् न १०७, ९, १००८ संवरणानि भग्नम् ।
 समुद्रम् इव सिन्धवः १०८, १६, १०४१ धानम् आविश ।
 सिन्धवः न नीची ८८, ६, ७९१ सुतासः कलशान् अभि ।
 सर्गः न तक्ति १६, १; १२९ एतशः ।
 सर्गः न सृष्ट ८७, ७; ७८२ अर्वा अदधावत् ।
 सिंह न ९७, २८; ८८४ भीम ।
 सिन्धुः न निम्नम् ९७, ४५; ९०१ अभि वाजि अक्षाः ।
 सिन्धुः न १०७, १२, १०११ पिप्ये अर्णसा ।
 सिन्धोः इव जर्मि ८०, ५, ६९५ पवमानः अर्षमि ।
 सिन्धोः इव प्रवणे ६९, ७, ६१६ वृष्युता मदास ।
 सुयम न ९६, १५, ८४७ वोळहा ।
 सूनु न १०७, १३, १०१२ प्रियः सोमः मज्यं ।
 सूपस्याभि न धेनुभि ६१, २१; ४०८ गमिच्छुः अरुणः ।
 सूरः न ६६, २२; ५५९ विश्वदर्शतः ।
 सूरः न ८६, २४, ७११ चित्रः ।
 सूर न स्वयुग्भि १११, १, १०७६ हरिण्या रुवा पुनानः ।
 सूर न उप ९७, ३८; ८९४ उभे रोदसी वि अप्राः ।
 सूर्यः इव ५४, २, ३६१ उपटक् ।
 सूर्यः इव ५४, २; ३६१ सरांसि धावति ।
 सूर्यासः न १०१, १२; ९५५ दर्शतासः ।
 सूर्यस्य इव न रश्मय ६४, ७, ४८४ प्र ते सर्गाः असृक्षत ।
 सूर्यस्य इव रश्मय ६९, ६, ६१५ द्रावयितवः ।
 सूर्ये न विशः ९४, १, ८२३ अस्मिन् धियः स्वर्धन्ते ।
 स्तारः तव यथा ५५, २, ३६५ तथा प्रिये वर्हिपि नि सदः ।
 स्तुका इव ९७, १७, ८७३ व्रीता ।
 स्वशः न ७३, ४; ६५१ नि मिषन्ति भूर्णय ।
 स्वर न ९८, ८; ९२२ हर्यतः ।
 स्वसरे न गावः ९४, २, ८२४ धियः पिन्वाना अभि वारध्रे ।
 हंसः यथा ३२, ३, २३८ गणम् आवीविशत् ।
 हितः न सप्ति ७०, १०, ६२९ वाजम् अभि अर्ष ।
 हिताः न सप्तयः रथे २१, ४; १६९ पवमानासः वार्या आशता ।
 हिन्वानास न सप्तय ६५, २६, ५३३ श्रीणाना अप्सु मृजन्त ।
 होता इव ९७, ४७; ९०३ याति समनेषु रेभन् ।
 होता इव सदने ९२, २; ८१३ चमूषु सीदन् ।
 होतारः न ९७, २६; ८८२ दिवियज मन्द्रनमाः ।

दैवत-संहितान्तर्गत-

सोममंत्राणां वर्णानुक्रमसूची ।

अ०शु०शुष्टे देव	११९४	अत्यो न हियानो अभि	७३०	अपो वसानः परि	१०२५
अंशुं दुहन्ति स्तनयन्	६४४	अदब्ध इन्दो पवसे	७१८	अप्ता इन्द्राय वायवे	५२७
अक्रान्तसमुद्रः प्रथमे	८२६	अग्निः सोम पृचानस्य	६६५	अप्सु त्वा मधुमत्तमं	२२८
अग्न आयुषि पवस	५५६	अद्रयस्त्वा राजा वरुणो	१२४४	अभयं द्यावापृथिवी	१२५३
अग्निं न मा मथितं	११४०	अद्रिभिः सुतः पवते	६३२	अभिकन्दन् कलशं	७३८
अग्निर्ऋषिः पवमानः	५५७	अद्रिभिः सुतः पवसे	७५०	अभि क्षिपः समामत	११९
अग्निर्न यो वन आ	७८९	अद्रिभिः सुतो मतिभिः	६६९	अभि गभ्यानि वीतये	४४०
अग्नीषोमा पुनर्वसू	१२३४	अध क्षपा परिष्कृतो	९२८	अभि गावो अधन्विषु	१८८
अग्ने पवस्व स्वपा	५५८	अध धारया मध्वा	८६७	अभि गावो अनूषत	२४०
अग्नेगो राजाप्यस्त०	७७२	अध यदिमे पवमान	१०७२	अभि ते मधुना पयो	८७
अग्ने सिन्धूनां पवमानो	७३२	अध श्वेतं कलशं	६६४	अभि त्वं गावः पयसा	७१५
अग्निरसो नः पितरो	१२३०	अधा हिन्वान इन्द्रियं	३३५	अभि त्वं पूर्य मर्दं	४३
अचिक्रद् वृषा हरि०	१६	अधि द्यामस्थाद् वृषभो	७२४	अभि त्वं मघं मदम्	४२
अचोदसो न धन्व०	६८६	अधि यदस्मिन्	८२३	अभि त्रिपृष्ठं वृषणं	८०१
अच्छा कोशं मधुश्चुतं	५४८	अधुक्षत प्रियं मधु	१३	अभि त्वा योषणो दश	३७०
अच्छा नृचक्षा असरत्	८१३	अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं	३४६	अभि त्वेन्द्र वरिमतः	१२५८
अच्छा समुद्रमिन्दवो	५४९	अनसमप्सु दुष्टरं	१३१	अभि शुम्भं बृहद् यज्ञ	१०३४
अच्छा हि सोमः कलशं	६९७	अनु द्रप्सास इन्द्रव	४४	अभि द्रोणानि वञ्चवः	२४३
अच्छिन्नस्य ते देव	१२०१	अनु प्रत्नास आयवः	१८१	अभि नो वाजसातमं	९१५
अजीजनो अमृत	१०६७	अनु हि त्वा सुतं	१०६५	अभि प्रिया दिवस्तरुदं(०दा) ८५, १०२	
अजीजनो हि पवमान	१०६६	अनूपे गोमान् गोभिरक्षाः	१००८	अभि प्रियाणि काभ्या	३७३
अजीतयेऽहृतये	८३६	अन्तश्च प्रागा अदितिः	११३६	अभि प्रियाणि पवते	६६६, ८६८
अजते व्यजते	७७०	अपघ्नन्तो अरावणः	११२	अभि ब्रह्मीरनूषत	२४६
अजन्त्येनं मध्वो	१०६१	अपघ्नन्नेषि पवमान	८५५	अभि वह्निरमर्त्यः	७३
अतस्त्वा रयिमभि	३३३	अपघ्नन्तोम रक्षसो	४७६	अभि वस्त्रा सुवसना	९०६
अति त्री सोम रोचना	१४१	अपघ्नन् पवते मृधो	४१२	अभि वायुं वीत्यर्षा	९०५
अति वारान् पवमानो	३८६	अपघ्नन् पवसे मृधः	४७१	अभि विप्रा अनूषत	९६, १४२
अति श्रितो तिरश्चता	११८	अप त्या अस्थुरानिरा	११४५	अभि विश्वानि वार्या	३००
अत्यं मृजन्ति कलशे	७२२	अप द्वारा मतीनां	८२	अभि वेना अनूषत	४९८
अत्या हियाना न	१०९	अपाम सोमममृता	११३७	अभि सुवानास इन्द्रवो	१३८
अत्यु पवित्रमक्रीद्	३१७	अपामिवेदुर्मय	८३०	अभि सोमास आयवः १८३, १०१३	
अत्युर्मिर्मसरो मदः	१३९	अपां रसः प्रथमजो	१२४७	अभी नवगते अद्रुहः	९३५

अभी नो अर्ष दिव्या	९०७	अया पवस्व धारया	४५४	असृग्रमिन्द्रवः पथा	५०
अभी ३ममङ्गया उत	९	अया पवा पवस्वैनौ	९०८	अस्मभ्यं गातुवित्तमो	९९१
अभीमृतस्य विष्टपं	२५२	अया रुचा हरिण्या	१०७६	अस्मभ्यं त्वा वसु०	९७७
अभ्यभि हि श्रवसा	१०६८	अया वीती परि स्तव	३८८	अस्मभ्यमिन्द्रविन्द्र	१९
अभ्यर्ष बृहद् यशो	१६२	अया सोमः सुकृत्तया	३२६	अस्मभ्यं रोदसी रयिं	५८
अभ्यर्ष महानां देवानां	४	अयुक्त सूर एतशं	४५५	अस्माकमायुर्वर्धय	११२६
अभ्यर्ष विचक्षण	३५०	अरममाणो अत्येति	६४१	अस्मान्समये पवमान	७१७
अभ्यर्ष सहस्त्रिणं	४५९	अरइमानो येऽरथा	८७६	अस्मे धेहि धुमद्	२४१
अभ्यर्ष स्वायुध सोम	३७	अरावीदंशुः सचमान	६६१	अस्मे वसूनि धारय	४७७
अभ्यर्षानपच्युतो	३८	अरुषो जनयन् गिरः	१९८	अस्मे सोम श्रियमधि	१०९८
अभ्यूर्णोति यज्ञं	११५१	अरुरुचदुषसः	७०८	अस्य ते सख्ये वयं	४१६, ५५१
अभिप्रहा विचर्षणिः	९२	अर्थिनो यन्ति चेदर्थं	११५४	अस्य पीत्वा मदाना०	१८६
अमृक्तेन रुशता	६१४	अर्वा इव श्रवसे	८८१	अस्य प्रतामनु द्युतं	३६०
अयं कक्षीवतो महो	११६९	अर्षा णः सोम शं गने	४०२	अस्य प्रेषा हेमना	८५७
अयं कृन्तुरगृभीतो	११५०	अर्षा सोम धुमत्तमो	५२६	अस्य व्रतानि नाष्टवे	३५८
अयं त आष्टगे सुतो	५७९	अलाटयस्य परशुः	५९७	अस्य व्रते सजोषसो	९६४
अयं दक्षाय साधनो	९८२	अव द्युतानः कलशौ	६६८	अस्य वो ह्यवसा पान्तो	९२२
अयं दिव ह्यर्ति	६०८	अव यत् स्वे सधस्ते	११५८	अस्येदिन्द्रो मदेष्वा	१०, ९८८
अयं देवेषु जागृविः	३१०	अवा कल्पेपु नः	७४	आ कलशा अनुषत	५२१
अयं नो विद्वान्	६७९	अवावशन्त धीतयो	१५५	आ कलशेषु धावति	१४०, ५८१
अयं पुनान उषसो	७४८	अविता नो अजाश्वः	५७७	आच्छद् विधानैर्गुपितो	११७४
अयं पूषा रयिर्भग	९५०	अव्ये पुनानं परि	७५२	आ जागृविर्विप्र	८९३
अयं भराय सानसि	९८७	अव्ये वधूयुः पवते	६१२	आ जामिरस्के अव्यत	९५७
अयं मतवाञ्छकुनो	७४०	अव्यो वारे परि प्रियो(०यं)५५, ३४३	३४३	आ त इन्द्रो मदाय	४३७
अयं मे पीत उदियर्ति	११२९	अव्यो वारेभिः पवते	९५९	आ तू न इन्द्रो शत	६४७
अयं विचर्षणिर्हितः	४२७	अश्वो न क्रदो वृषभिः	८८४	आ ते दक्षं मयोभुवं	५३५
अयं विदक्षिप्रदशी०	११३१	अश्वो न चक्रदो वृषा	४८०	आ ते रुचः पवमानस्य	८५६
अयं विप्राय दाशुपे	११७०	अश्वो वोळ्हा सुखं रथं	१०८२	आत्मन्वज्जभो दुह्यते	६६०
अयं विश्वानि निष्ठति	३६२	अषाळं युत्सु पृतनासु	११२१	आत्मा यज्ञस्य रक्षा	४८
अयं स यो दिवस्पति	२८१	असर्जि कलशौ अभि	९९७	आत् सोम इन्द्रियो	३२८
अयं स यो वरिमाणं	११३०	असर्जि रथ्यो यथा	२६०	आ दक्षिणा सृज्यते	६३०
अयं सूर्य इवोप	३६१	असर्जि वक्त्रा रथ्ये	८०६	आदस्य शुष्मिणो रसे	११५
अयं सोम इन्द्र तुभ्यं	७८५	असर्जि वाजी तिरः	१०६०	आ दिवस्पृष्ठमश्वयुः	२६५
अयं सोमः कपर्विने	५७८	असर्जि स्कम्भो दिव	७७३	आदीं केचित् पश्य	१०६९
अयं स्तुवान आगम	१२४१	असश्चतः शतधारा	७५४	आदीं त्रितस्य योषणो	२३७
अयं स्वादुरिह मदिष्ठ	११२८	असावि सोमो अरुषो	७०१	आदीमश्व न हेतारो	४२३
अया चित्तो विपानया	५१९	असाव्यंशुमदायाप्सु	४२१	आदीं हंसो यथा गणं	२३८
अया निजमिरोजसा	३५७	असृक्षत प्र वाजिनो	४८१	आ धावता सुहस्य	३२३
अवा पवस्व देवयु	९९९	असृग्रन् देववीतये	३२०, ५८४	आ न इन्द्रो मर्हामिधं	५२०

आ न इन्द्रो शतग्विनं	५२४, ५७३	आ सोता परि विञ्चता	१०३२	इन्द्रायेन्दुं पुनीतन	४४६
आ न पवस्व धारया	२५४	आ सोम सुवानो अद्रिभिः	१००९	इन्द्रायेन्दो मरुत्वते	४९९
आ नः पवस्व वसु	६१७	आस्मिन् पिशाङ्गमिन्दवो	१७०	इन्द्रो न यो महा	७८८
आ न पूषा पवमानः	६९९	आ हर्यताय धृष्णवे	९२७	इमं यज्ञमिवं वचो	१११०
आ नः शुष्मं नृषाञ्च	२२६	आ हर्यतो अर्जुने	१०१२	इमे मा पीता यशस	११३९
आ नः सुतास इन्द्रवः	९९४	इदं यत् प्रेष्यः शिरो	११९०	इमौ देवौ जायमानौ	१२१८
आ नः सोम पवमानः	६९८	इदं स्वरिदमिदास	१२१५	इयमग्ने नारी पतिं	१२३५
आ नः सोम सहो जुवो	५२५	इदं हविर्यातुधानान्	१२४०	इषं तोकाय नो दधद०	५२८
आ नः सोम संयन्त	७४५	इन्द्रविन्द्राय बृहते	६१९	इषमूर्जमभ्यर्षाभं	८२७
आ नः सोमं पवित्र आ	४३८	इन्दु रिहन्ति महिषा	९१३	इषमूर्जं च पिन्वम	४४९
आ पवमान धारय	१०३	इन्दुः पविष्ट चारु	१०५४	इषमूर्जं पवमाना	७६२
आ पवमान नो	१८२	इन्दुः पविष्ट चेतनः	४८७	इषिरेण ते मनसा	११४१
आ पवमान सुष्टुतिं	५१०	इन्दुः पुनानः प्रजा	१०५०	इष्टुर्न धन्वन् प्रति	६१०
आ पवस्व गविष्टये	५५२	इन्दुः पुनानो अति	७५३	इषे पवस्व धारया	४९०
आ पवस्व दिशां	१०८४	इन्दुः पुनानो अति	७५३	इष्यन् वाचमुपवक्तेव	८३२
आ पवस्व मदिन्तम	१९९, ३४४	इन्दुरत्यो न वाजसूत्	३०६	ईशान इमा भुवनानि	७६४
आ पवस्व महीमिषं	२९३	इन्दुरिन्द्राय तोशते	१०६३	उक्षा मिमाति प्रति	६१३
आ पवस्व सहस्रिण	४२९, ४४८	इन्दुरिन्द्राय पवत	९४८	उक्ष्व यूथा परिय०	६३८
आ पवस्व सुवीर्यं	५१२	इन्दुर्देवानामुपसख्यं	८६१	उक्षा ते जातमन्धसो	३९७
आ पवस्व हिरण्यवद्	४६५	इन्दुर्वाजी पवते	८६६	उत स्या हरितो दश	४५६
आपानासो विवस्वतो	८१	इन्दुर्हिन्वानो अर्पति	५७१	उत त्वामरुणं वयं	३१६
आप्यायस्व मदिन्तम	१११७	इन्दुर्हियानः सोतृभि	२२५	उत न एना पवया	९०९
आ प्यायस्व समेतु ते	२३३, १११६	इन्द्रो यथा तव स्तवो	३६५	उत नो गोमतीरिषो	४४१
आ मन्द्रमा वरेण्यमा	५३६	इन्द्रो यदद्रिभिः सुतः	१९१	उत नो गोविदश्चवित्	३६६
आ मारुक्षत् पर्णमणिः	११८०	इन्द्रो व्यव्यमर्षसि	५७२	उत नो वाजसातये	१०७
आ मित्रावरुणा भग	५७	इन्द्रो समुद्रमीङ्गयः	२५५	उत प्र पिप्य ऊध०	८२०
आ यं विशन्तीन्द्रवो	१२४९	इन्द्र वर्धन्तो अप्तुरः	४५२	उत व्रतानि सोम ते	११६२
आ यद् योनि हिरण्य०	४९७	इन्द्रमच्छ सुता इमे	९८६	उत स्म राशिं परि	७८४
आयमगन् पर्णमणि	११७६	इन्द्रस्ते सोम सुतस्य	१०४३	उत स्वस्या अराग्या	६८८
आ ययोश्चिश्नत तना	३७९	इन्द्रस्य सोम पवमानं	६७३	उताह नक्तमुत	१०१९
आ यस्तस्यो भुवना०	७१२	इन्द्रस्य सोम राधसे	६१, ३८७	उतो सहस्रभर्णस	५०३
आ यो गोभिः सृजयत	७१३	इन्द्रस्य हार्दि सोम	१०४१	उत् ते शुष्मास ईरते	३४१
आ योनिमरुणो रुद्र	२८५	इन्द्राय त्वा वसुमते	११९७	उत् ते शुष्मासो अस्थू	३५६
आ यो विश्वानि वार्या	१४८	इन्द्राय पवते मदः	१०१६	उदीची दिक् सोमो	१२४६
आ रयिमा सुचेतुनभा	५३७	इन्द्राय वृषणं मद	९९०	उन्मध्व ऊर्मिर्वनना	७६७
आ वच्यस्व महि	१२	इन्द्राय सोम पवसे	१८५	उप त्रितस्य पाद्यो	९६१
आ वच्यस्व सुदक्ष	१०३५	इन्द्राय सोम परि	६८२	उप प्रियं पनिप्नतं	५९६
आविवास्तु परावतो	२८२	इन्द्राय सोम पातवे	९३, ९२४, १०४०	उपयामगृहीतोऽसि	१२०९, १२०३
आविशन् कलशं सुतो	४३६	इन्द्राय सोममृग्विजः	१२४८		
आशुर्षं बृहन्मते	२७८	इन्द्राय सोम सुधुनः	७१६		

उप शिक्षापतस्थुषो	१५७	एते मृष्टा भमर्त्या	१७६	एष पुरु धियायते	१२२
उपास्यै गायता नरः	८६	एते वाता हवोरव	१७४	एष प्र कोशे मधुर्मा	६७६
उपो मति पृच्यते	६११	एते विश्वानि वार्या	१६९	एष प्रत्नेन जन्मना	२९
उपो षु जातमप्तुरं	४००	एते सोमा अति	७९०	एष प्रत्नेन मन्मना	२९७
उभयतः पवमानस्य	७३३	एते सोमा अभि गव्या	७८०	एष प्रत्नेन वयसा	२०३
उभाभ्यां देव सवित	५९२	एते सोमा अभि प्रिय	५९	एष रुक्मिभिरीयते	१२५
उभे द्यावापृथिवी	७००	एते सोमा असृक्षत	४३९	एष वसूनि पिबन्ना	१२६
उभे सोमावचाकशन्	२३९	एते सोमा पवमानास	६१८	एष वाजी हितो नृभिः	२१२
उरुगव्युतिरभयानि	८०३	एते सोमास आशवो	१७३	एष विप्रैरभिष्टुतो	२६
उरुव्या णो अभिशस्तेः	१११५	एते सोमास इन्द्रवः	३२२	एष विश्ववित् पवते	९१२
उशिक्ष् त्वं देव सोमाग्नेः	१२०८	एता विश्वान्यर्थ आ	३९८	एष विश्वानि वार्या	२४
उस्त्रा वेद वसूनां	३७७	एन्दो पार्थिव रथिं	२२३	एष वृषा कनिक्रदद्	२१५
ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि	७२७	एन्द्रस्य कुक्षा पवते	६९३	एष वृषा वृषव्रत	४२८
ऊर्मिर्धस्ते पवित्र आ	४८८	एवा त इन्दो सुभ्रं	६२०	एष शुष्म्यदाभ्य. सोम	२१७
ऊजुः पवस्व वृजिनस्य	८९९	एवा देव देवताते	८८३	एष शुष्म्यसिष्यदद्	२११
ऊतं वदन्तृत्तुस्र	१०८६	एवा न इन्दो अभि	८७७	एष शृङ्गाणि दोधुव०	१२४
ऊतस्य गोपा न दभाय	६५५	एवा नः सोम परि	६०९, ८९२	एष सुवानः परि	७८२
ऊतस्य जिह्वा पवते	६६७	एवा पवस्व मदिरो	८७१	एष सूर्यमरोचयत्	२१६
ऊतस्य तन्नुर्विततः	६५६	एवा पुनान इन्द्रयुः	४९	एष सूर्येण हासते	२१०
ऊदूदरेण सख्या	११४४	एवा पुनानो अप.	८११	एष सोमो अधि त्वचि	५६६
ऊधक् सोम स्वस्तये	५०७	एवामृताय महे	१०४४	एष स्य ते पवत	९०२
ऊधुर्न रथं नवं	१७१	एवा राजेव क्रतुर्मा	८०५	एष स्य ते मधुर्मा	७७९
ऊधिमना य ऊधिकृत्	८५०	एष उ स्य पुरुवतो	३०	एष स्य धारया सुतो	१०३०
ऊधिविषः पुरण्ता	७७८	एष उ स्य वृषा रथो	२७२	एष स्य परि विच्यते	४३०
ऊधे मन्त्रकृतां स्तोमै	१०९५	एष इन्द्राय वायवे	२०७	एष स्य पीतये सुतो	२७७
एत उ रथे अवीवशन्	१७२	एष कविरभिष्टुत	२०६	एष स्य मद्यो रसो	२७६
एतं स्य हरितो दश	२७४	एष गव्युरचिक्रदत्	२०९	एष स्य मानुषीषवा	२७५
एतं त्रितस्य योषणो	२७३	एष तुष्टो अभिष्टुतः	५८७	एष स्य सोमः पवते	७१४
एतमु त्वं दश क्षिपो	१२८, ३९४	एष ते गायत्रो भाग	११९२	एष स्य सोमो मतिभि	८४७
एतमु त्वं मदच्युतं	१०३६	एष दिवं वि धावति	२७	एष हितो वि नीयते	१२३
एतं मृजन्ति मर्त्य	१२७, ३२५	एष दिव व्यासरत्	२८	एषा ययौ परमा	७८३
एतानि सोम पवमानो	६८५	एष देव शुभायते	२१४	एह यातु वरुण	१२५६
एते असृप्रमाशवो	४५१	एष देवो भमर्त्य	२१	ककुभः रूपं वृषभस्य	१२०७
एते असृप्रमिन्द्वान्तिरः	४१८	एष देवो रथर्यति	२५	ककुहः सोम्यो रस०	५७५
एते धामान्यार्या शुक्रा	४६१	एष देवो विपन्युभिः	२३	कनिक्रदत् कलशे	७२०
एते धावन्तीन्द्रव.	१६६	एष देवो विपा क्रतो	२२	कनिक्रदत्तु पन्था०	८८८
एते पुना विपश्चितः	१७५, २५५	एष धिया यात्यणव्या	१२१	कनिक्रन्ति हरिरा	८२८
एते पृष्ठानि रोदसो०	१७७	एष नृभिर्वि नीयते	२०८	कविं मृजन्ति मर्त्य	४६७
		एष पवित्रे अक्षरत्	२१३	कविर्वेधस्या पर्येषि	७०२
		एष पुनानो मधुर्मा	१०७४		

कारुहं ततो	१०८१	तं सखाय पुरोरुचं	९२६	तव त्य इन्दो अन्धसो	३४८
कुविद् वृषण्यन्तभिः	१५६	तं सानावधि जामयो	२०४	तव त्ये सोम पवमान	८१५
कृण्वन्तो वरिवो गवे	४२०	तं सोतारो धनस्पृत	४३५	तव त्ये सोम शक्तिभिः	११६४
कृतानीदस्य कर्वा	३२७	तं हिन्वन्ति मदच्युतं	३५९	तव वृप्सा उदप्रुत	९९३
केतुं कृण्वन् दिवस्परि	४८५	तक्षद् यदी मनसो	८७८	तव प्रत्नेभिरध्वभिः	३५२
क्रत्वा दक्षस्य रथ्यमपो	१३०	तं गाथया पुराण्या	९३०	तव विश्वे सजोषसो	१४७
क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभिः	९६७	त गावो अभ्यनूषत	२०१	तव शुक्रासो अर्चयो	५४२
क्रत्वे दक्षाय नः कवे	९३९	तं गीर्भिर्वाचमीङ्गयं	२५८	तवाहं सोम रारण	१०१८
क्राणा शिशुर्महीनां	९६०	तं गोभिर्वृषणं रस	४६	तवेमाः प्रजा दिव्यस्य	७५५
क्रीलुर्मखो न मंहयुः	१६५	तन्तुं तन्वानमुत्तममनु	१७८	तवेमे सप्त सिन्धवः	५४३
गन्धर्व इत्था पदमस्य	७०९	तं ते सोतारो रसं	१०५२	ता अभि सन्तमस्तृतं	७२
गयस्कानो अमीवहा	१११२	त त्रिष्टे त्रिवन्धुरे	४३४	तस्य ते वाजिनो वयं	५१६
गिरस्त इन्द ओजसा	१७	तं त्वा देवेभ्यो मधु०	६९४	ताभ्यां विश्वस्य राजसि	५३९
गिरा जात इह स्तुत	४३२	तं त्वा धर्तारमोष्योः	५१८	तिग्मायुधौ तिग्महेती	१२२६
गिरा यदी सबन्धव	११४	तं त्वा नृणानि बिभ्रतं	३३१	तिस्त्रो देवीर्महि नः	११८७
गोजिज्ञः सोमो रथ०	६८४	तं त्वा मदाय वृष्वय	१८	तिस्त्रो वाच ईरयति	८९०
गोमन्न इन्दो अश्ववत्	९८३	तं त्वा विप्रा वचोविद्	५००	तिस्त्रो वाच उदीरते	२४५
गोमन्त्रः सोम वीरवद्	३०१	तं त्वा सहस्रचक्षस	३८५	तुभ्यं वाता अभिप्रियः	२३२
गोवित् पवस्व वसु०	७६६	तं त्वा सुतेष्वाभुवो	५३४	तुभ्यं गावो घृतं पयो	२३४
गोषा इन्दो नृषा असि	२०	तं त्वा हस्तिनो मधु०	६९५	तुभ्येमा भुवना कवे	४४४
ग्रन्थि न वि प्य ग्रथितं	८७४	तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः	२०५	ते अस्य सन्तु केतवो	६२२
ग्राह्या तुञ्जो अभिष्टुतः	५८६	तं दुरोषमभी नरः	९४६	ते नः पूर्वास उपरास	६७८
घृतं पवस्व धारया	३३८	तन्तु सत्यं पवमान	८१६	ते नः सहस्रिणं रथि	१०८
चक्रिर्दिवः पवते	६८०	तं नो विश्वा अवस्युवो	३०३	ते नो वृष्टि दिवस्परि	५३१
चतस्र ई घृतदुहः	७९७	तपोष्पावित्रं विततं	७०७	ते प्रत्नास व्युष्टिषु	९२५
चमूषच्छयेनः शकुनो	८५१	तममृक्षन्त वाजिनं	२००	ते विश्वा दाशुपे वसु	४८३
चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो	३५३	तमस्य मर्जयामसि	९२९	ते सुतासो मदिन्तमाः	५८५
जृम्भिर्वृत्रममित्रियं	४०७	तमह्यन् सुरिजोर्धिया	२०३	त्रातारो देवा अधि	११४८
जज्ञानं सप्त मातरो	९६३	तमिद् वर्धन्तु नो गिरी	४०१	त्रिभिष्ट्वं देव सवितः	५९३
जनयन् रोचना दिवो	२९६	तमीं हिन्वन्त्यभुवो	८	त्रिरस्मै सप्त धेनवो	६२०
जरतीभिरोषधीभिः	१०८०	तमीमण्वीः समर्य	७	त्रीणि त्रितस्य धारया	९६२
जायेव पर्यावधि	७०४	तमी मृजन्त्यायवो	४६४	त्वं राजेव सुप्रतो	१६३
जुष्ट इन्द्राय सत्सरः	१११	तमुक्षमाणमव्यये	९३१	त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु	१४६
जुष्टो मदाय देवतात	८७५	तमु त्वा वाजिनं नरो	१४३	त्वं समुद्रिया अपो	४४३
जुष्टवी न इन्दो सुपथा	८७२	त मर्मजानं महिषं	८३१	त्वं समुद्रो असि	७५६
ज्योतिर्यज्ञस्य पवते	७३७	तया पवस्व धारया	३१९, ३३७	त्वं सुतो नृमादनो	५६९
तं वः सखायो मदाय	९८०	तत् स मन्दी धावति	३७६	त्वं सुप्वाणो अग्निभिः	५७०
तं वेधां मेधयाह्यन्	२०२	तत् समुद्रं पवमान	१०१४	त्वं सूर्ये न आ भज	३५
		तव क्रत्वा तवोतिभिः	३६	त्वं सोम ऋतुभिः	११०२

स्वं सोम तनूकृज्यो	११५२	द्विद्युतस्या रुचा	५०५	नाभा पृथिव्या धरुणो	६४५
स्वं सोम नृमादनः	१९०	दिवः पीयूषं पूर्य	१०७१	नित्यस्तोत्रो वनस्पति	१०१
स्वं सोम पणिभ्य आ	१७२	दिवः पीयूषमुत्तमं	३४७	निरिणानो वि धावति	११६
स्वं सोम पवमानो	३८२	दिवस्पृथिव्या अधि	२३१	नि शत्रोः सोम वृष्ण्य	१५८
स्वं सोम पितृभिः	११४७	दिवि ते नाभा परमो	६८९	नि शुष्ममिन्द्रवेषां	३५४
स्वं सोम प्र चिकितो	११०१	दिवो धर्तासि शुक्रः	१०४७	नून पुनानोऽविभिः	१००१
स्वं सोम महे भगं	११०७	दिवो न सर्गा अससृग्र०	८८६	नू नव्यसे नवीयसे	७५
स्वं सोम विपश्चिनं	१३६, ५०२	दिवो न सानु पिप्युषी	१३५	नू नस्त्वं रथिरो देव	९०४
स्वं सोम सूर एषः	५५५	दिवो न सानु स्तनय०	७३६	नू नो रयिमुप	८२२
स्वं सोमासि धारयुः	५६८	दिवो नाके मधुजिह्वा	७२५	नू नो रयि महामिन्द्रो	२८६
स्वं सोमासि सस्पतिः	११०५	दिवो नाभा त्रिचक्षणो	९८	नृचक्षसं त्वा वयं	६७
स्वं हि नस्तन्वः सोम	११४३	दिवो यः स्कम्भो धरुणः	६५८	नृधूतो अद्रिषुतो	६४२
स्वं हि सोम वर्धयन्	३४९	दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि	८८९	नृबाहुभ्यां चोदितो	६४३
स्वं ह्यङ्ग देव्या	१०२८	दिव्यङ्ग्यः सदनं चक्र	१२२०	नृभिर्द्यमानो जज्ञानः	१०४९
स्वं च सोम नो वशो	११०६	दुहान ऊधर्दिव्यं	१००४	नृभिर्द्यमानो हर्यते	१०१५
स्वं चित्ती तव दक्षैः	११५३	दुहानः प्रत्नमित् पय.	२९९	परा व्यक्तो अरूपो	६३६
स्वं त्यत् पणीनां	१०७७	देवाव्यो नः परिषिष्य	८८२	परि कोशं मधुश्चुत	९७०
स्वं द्यां च महीजन	९४३	देवीराप एष वो	१२०५	परि णः शर्मयन्त्या	२९५
स्वं धियं मनोयुजं	९३७	देवेन नो मनसा देव	११२३	परि णेता मतीनां	९७१
स्वं नः सोम विश्वतो	११०८, ११४९,	देवेभ्यस्त्वा मदाय कं	६३	परि णो अश्वमश्वयिद्	३९०
	११६६	देवेभ्यस्त्वा वृथा	१०६२	परि णो देववीतये	३६३
स्वं नः सोम सुक्रतुः	११६७	देवो देवाय धारया	४७	परि णो याह्यसमयुः	४९५
स्वं नृचक्षा असि	७६५	द्यौश्च म इदं पृथिवी	१२६१	परि ते जिग्युषो यथा	९३८
स्व नो वृत्रहन्तमे	११६८	द्रुपाश्चस्कन्द प्रथमो	१२३१	परि त्य हर्यतं हरिं	९२१
स्वमिन्द्रो परि स्त्रव	४२६	द्रापिं वसानो यजतो	७४१	परि दक्ष इन्द्रस्य	१२६०
स्वमिन्द्राय विष्णवे	३७१	द्विता व्युष्वैन्नमृतस्य	८२४	परि दिव्यानि मर्त्यशद्	१२०
स्वमिमा ओषधीः सोम	११२२	द्विर्यं पञ्च स्वयशस	९२०	परि देवीरनु स्वधा	९७२
स्वं पवित्रे रजसो	७५७	धर्ता दिवः पवते	६७१	परि युक्षं सहसः	६३३
स्वया वयं पवमानेन	९१४	धियं पूषा जिन्वतु	१२२२	परि युक्षं सनद्रयिः	३५१
स्वया वीरिण वीरवो	२५६	धीभिर्द्विन्वन्ति वाजिनं	९९६	परि धामानि यानि ते	५४०
स्वया हि नः पितरः	८४३	ध्वस्त्रयोः पुरुषन्योरा	३७८	परि प्र धन्वेन्द्राय	१०४२
स्वां यज्ञैरवीवृधन्	३९	न त्वा वात चन हुतो	४१४	परिप्रयन्तं वयं	६०७
स्वां रिहन्ति मातरो	९४१	नपतीभिर्यो विवस्वतः	११७	परि प्र सोम ते रमो	५८२
स्वां सोम पयमानं	७५१	नमसेदुप सीदत	९१	परि प्रासिष्यदत् कवि.	११३
स्वामच्छा चरामसि	५	नमो दिवे बृहते	१२१६	परि प्रियः कलशो	८४१
स्वां सृजन्ति दश योपणः	६०६	न वा उ सोमो वृजिनं	११३४	परि प्रिया दिव कवि.	८६
स्वे सोम प्रथमा	१०७०	नाके सुपर्णमुप०	७२६	परि यत् कविः काव्या	८२५
स्वेयं रूपं कृणुते	६३७	नानानं वा उ नो धियो	१०७९	परि यत् काव्या कविः	५३
स्वोतासस्तवावसा	४११	नाभा नाभि न आ ददे	८४		

परि यो रोदसी उभे	१५०	पवमानस्य ते कवे	५४७	पवस्वेन्दो पवमानो	८५३
परि वाजे न वाजयु	४६६	पवमानस्य ते रसो	४०४	पवस्वेन्दो वृषा सुतः	४१५
परि माराण्यव्यया	९६९	पवमानस्य ते वय	३९१	पवित्र ते विततं	७०६
परि विश्वानि चेतसा	१६१	पवमानस्य विश्ववित्	४८४	पवित्रवन्तः परि	६५०
परिष्कृताय इन्द्रो	३२१	पवमान स्वर्विदो	३८३	पवित्रेभिः पवमानो	८८०
परिष्कृषन्ननिष्कृतं	२७९	पवमाना असृक्षत	४७२, १०२४	पवीतारः पुनीतन	३४
परि वा सुवानो अक्षा	९१७	पवमाना दिवस्परि	४७४	पञ्च नः सोम रक्षसि	११६५
परि व्य सुवानो अव्यय	९१६	पवमानास आशवः	४७३	पाता नो द्यावापृथिवी	१२५०
परि रुध्रेण पशु	८१७	पवमानास इन्द्रव	५७४	पावमानी स्वस्त्ययनीः १२११, १२१४	
परि ससिर्न वाजयुः	९७३	पवमानो अजीजनद्	४०३	पावमानीर्दधन्तु न	१२१२
परि सुवानश्चक्षसे	१००२	पवमानो अति स्विधो	५५९	पावमानीर्यो अध्ये	५९९
परि सुवानास इन्द्रो	८०	पवमानो अभि स्पृधो	५४	पितुर्मातुरभ्या ये	६५२
परि सुवानो गिरिष्ठा.	१४५	पवमानो अभ्यर्षा	७२३	पिबन्त्यस्य विश्वे	१०५६
परि सुवानो हरि	८१२	पवमानो असिष्यदद्	३४०	पुनन्तु मां देवजनाः	५९४
परि सोम क्रतं	३६८	पवमानो रथीतम	५६३	पुनर्नो असुं पृथिवी	१२३७
परि सोम प्र धन्या	६७०	पवमानो व्यश्ववद्	५६४	पुनाता दक्षसाधनं	९७६
परि हि ष्मा पुरुहूतो	७८१	पवस्व गोजिदश्वजिद्	३८०	पुनाति ते परिक्षुतं	६
परीतो वायवे सुतं	४५७	पवस्व जनयज्ञिषो	५४१	पुनान इन्द्रवा भर	२८९, ९३६
परीतो पिब्रता सुतं	१०००	पवस्व दक्षसाधनो	१९४	पुनान इन्द्रवेपां	५०४
पर्जन्यः पिता महिषस्य	७०३	पवस्व देवमादनो	७११	पुनानः कलशेषा	६४
पर्जन्यवृद्धं महिषं	१०८५	पवस्व देववीतय	९९२	पुनानः सोम जागृविः	१००५
पर्णोऽसि तनूपानः	११८३	पवस्व देववीरति	११	पुनानः सोम धारया	४७५, १००३
पर्यु पु प्र धन्व	१०६४	पवस्व देवायुषन्	४६९	पुनानश्चमू जनयन्	१०१७
पयते हर्यजो हरि	५२२, ९९८	पवस्व मधुमत्तम	१०२६	पुनानानश्चमूपदो	६०
पवन्तो वाजसातये	१०६	पवस्व वाचो अग्निष	४४२	पुनानो अक्रमीदभि	२८४
पवमान क्रतु कवि	४४७	पवस्व वाजसातमः	९४०	पुनानो देववीतय	४९२
पवसान क्रतं वृहच्छ्रुक	५६१	पवस्व वाजसातये	३०७, १०२२	पुनानो याति हर्यत	३०४
पवमानः सुतो नृभि	४३३	पवस्व विश्वचर्पणे	५३८	पुनानो रूपे अव्यये	१३४
पवमानः सो अद्य न	५८९	पवस्व वृत्रहन्तमो	१९२	पुनानो वरिवस्त्रुधि	४९१
पवमान विद्या हितो	१९५	पवस्व वृष्टिमा सु नो	३३६	पुरः मद्य इत्याधिये	३८९
पवमान गि तोगसे	४७०	पवस्व सोम क्रवे	१०५१	पुरोजिती वो अन्धमः	९४४
पवमानजवस्यवो	१०५	पवस्व सोम क्रतुविज्ञ	७७५	पूर्वापरं चरतो	१२३८
पवमान महि श्रव	७६, ९४२	पवस्व सोम दिव्येषु	७४९	पूर्वामनु प्रदिशं यानि	१०७८
पवमान रक्षगो वि	७६१	पवस्व सोम देववीतये	६२८	प्र कविर्देववीतये	१५९
पवसान रगन्मय	४०५	पवस्व सोम छुञ्जी	१०४८	प्र काव्यमुशनेव	८६३
पवमान रुद्रावृदा	५०९	पवस्व सोम मधुमां	८४५	प्र कृष्टिहेव श्रप	६३१
पवमान विद्या रयिम्	३०५, ४५८	पवस्व सोम मन्दयन्	५८३	प्र गायताभ्यर्चाम	८६०
पवमान सुवीर्य	९४	पवस्व सोम महान्तसमुद्रः	१०४५	प्र गायत्रेण गायत	३८४
पवसानस्य जडह्नो	५६२	पवस्वाङ्गयो अदाभ्यः	३८१	प्रज्ञा ह तिस्त्रो अस्या	११५९

प्र ण इन्द्रो महे तन	३०८	प्र सेनानीः शूरो अग्रे	८३३	मन्द्रया सोम धारया	४१
प्र ण इन्द्रो महे रण	५५०	प्र सोम देववीतये	१०११	मन्द्रस्य रूपं विविदुः	६०५
प्र णो धन्वन्तिवन्दवो	६८७	प्र सोम मधुमत्तमो	४६३	मयि क्षत्रं पर्णम्णे	११७७
प्र त आशवः पवमान	७२८	प्र सोम याहि धारया	५४४	मर्माणि ते वर्मणा	१२२८
प्र त आश्विनी. पवमान	७३१	प्र सोम याहीन्द्रस्य	१०५९	मर्म्जानास आयवो	४९४
प्र तु द्रव परि कोश	७७६	प्र सोमस्य पवमानस्य	६९६	मर्थो न शुभ्रस्तनवं	८५३
प्र ते दिवो न वृष्टयो	४४५	प्र सोमाय व्यश्ववत्	५१४	महत् तत् सोमो महिष	८९७
प्र ते धारा अत्यण्वानि	७७४	प्र सोमासः स्वाध्य	२३०	महो अलि सोम ज्येष्ठ	५५३
प्र ते धारा असश्चतो	३७२	प्र सोमासो अधन्विषुः	१८७	महान्तं त्वा मही	१४
प्र ते धारा मधुमती	८८७	प्र सोमासो मदच्युतः	२३६	महि पसर सुकृतं	६५९
प्र ते मदासो मदिरास	७२९	प्र सोमासो विपश्चितो	२४२	महीमे अस्य वृषनाम	९१०
प्र ते सोतार ओण्यो	१२९	प्र सोमो अति धारया	२२७	महो नो राय आ भर	४१३
प्र त्नान्मानादध्या ये	६५३	प्र स्वानासो रथा इव	७७	मा न सोमपरिग्राधोः	१०९९
प्र त्वा नमोभिरिन्द्रवः	१३३	प्र हंसासस्तृपल	८६४	मा नः सोम सं वीविजो	११५७
प्र दानुदो दिव्यो	८७९	प्र हिन्वानास इन्द्रवो	४९३	मा भेर्मा संविष्या	११९९
प्र देवमच्छा मधुमन्त	६००	प्र हिन्वानो जनिता	८००	मित्रो न एहि सुमित्रध	११९३
प्र धन्वा सोम जागृविः	९८९	प्रागपागुदगधराक्	१२००	मिमाति वह्निरेशः	४९६
प्र धारा अस्य शुष्मिणो	२२४	प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं	१२२९	मृजन्ति त्वा दश क्षिपो	६२
प्र धारा मध्वो अग्रियो	५१	प्रावीन्निपद्वाच ऊर्भि	८३९	मृजन्ति त्वा सममुवो	५४६
प्र निम्नेनेव सिन्धवो	१३७	प्रास्य धारा अक्षरन्	२१८	मृजानो वारे पवमानो	१०२१
प्र पवमान धन्वासि	१८९	प्रास्य धारा बृहती	८५४	मृज्यमान सुहस्य	१०२०
प्र पुनानस्य चैतसा	१३२	प्रो अयासीदिन्द्रिरिन्द्रस्य	७४३	मो पु णः सोम मृथवे	१२३६
प्र पुनानाय वेधसे	९६८	प्रो स्य वह्निः पथ्या०	७९३	य आर्जिकेषु कृत्वसु	५३०
प्र प्यादस्व प्र स्यन्दस्व	५९५	क्षत्रवे नु स्वतवसे	८९	य इन्द्रो पवमान	१०९४
प्रप्र क्षयाय पन्थसे	६९	विभर्ति चार्विन्द्रस्य	१०५५	य इमे रोदसी मही	१४९
प्र युजो वाचो अग्रियो	५२	ब्रह्मा देवानां पदवीः	८३८	य उग्रेश्वश्चिदोजीया	५५४
प्र ये गावो न भूर्णय	२९०	ब्राह्मणासः पितरः	१२२७	य उत्तरतो जुहति	११८८
प्र राजा वाच जनय०	६८१	भद्रं नो अपि वातय	११६०	य उस्त्रिया अप्ता	१०३१
प्र रेभ एत्यति	७५८	भद्रा वस्त्रा समन्या	८५८	य ओजिष्ठस्तमा भर	९५२
प्र वाचमिन्द्रुरिप्यति	१००	मुवत् त्रितस्य मज्यो	२५१	यः पावमानीरधेति	५९८
प्र वाजमिन्द्रुरिप्यति	२५७	मघोन आ पवस्व नो	६५	यः सोमः कलशेषा	९९
प्र वृण्वन्तो अभियुजः	१६७	मती जुष्टो धिया हित.	३०९	यः सोम सख्ये तव	१११४
प्र वो धियो मन्द्रयुवो	७४४	मस्मि वायुमिष्टये	८९८	यज्ञस्य केतुः पवतं	७३४
प्र शुक्रासो वयोजुवो	५३३	मस्मि सोम वरुण	८०४	यत् ते पवित्रमर्धिवज्रे	५९१
प्रसवे त उदीरवे	३४२	मदच्युत् क्षेति सादने	९७	यत् ते पवित्रमर्धिवज्रे	५९०
प्र सुन्वानस्यान्धसो	९५६	मधुपृष्ठ घोरमया	७९६	यत् ते राजमृत्तं	१०९७
प्र सुमेधा गानुविद्	८१४	मघोर्धारामनु क्षर	१४४	यत् ते सोम दिशि	११९८
प्र सुवान इन्द्रक्षाः	५६५	मध्यः सुदं पवस्व	९००	यत् त्वा देव प्रपिबन्ति	११७५
प्र सुवानो अक्षाः	१०५७	मनीषिणिः पवते	७४७	यत्र कामा निकामाश्च	१०९२
प्र सुवानो धारया	२४८				

यत्र उधोतिरजस्रं	१०८९	ये राजानो राजकृतः	११८२	विश्वान्यन्यो भुवना	१२२१
यत्र ब्रह्मा पवमान	१०८८	ये सोमासः परावति	५२९	विश्वा रूपाण्याविशन्	१९७
यत्र राजा वैवस्वतो	१०९०	यो अत्य इव मृज्यते	३०२	विश्वा वसूनि संजयन्	२२१
यत्रानन्दाश्च मोदाश्च	१०९३	यो अद्य सेन्यो वधो	१२५९	विश्वा सोम पवमान	२८७
यत्रानुकामं चरणं	१०९१	यो जिनाति न जीयते	३६७	विश्वो यस्य व्रते जनो	२५९
यत् सोम चित्रमुक्थं	१५२	यो धारया पावकया	९४५	विष्टम्भो दिवो धरुणः	७९८
यत् सोमो दाजमर्पति	३६२	यो न इन्दु पितरो	११४६	वीती जनस्य दिव्यस्य	८०७
यथापवथा मनवे	८४४	यो नः सोम सुशसिनो	११८५	वृथा क्रीळन्त इन्द्रवः	१६८
यथा पूर्वैभ्यः शतसा	७०५	यो नः सोमाभिदासति	११८६	वृषण धीभिरप्सुरं	४६८
यदग्निः परिषिच्यसे	५१३	यो व. शुष्मो हृदयेषु	१२५७	वृषाणं वृषभिर्यत	२५०
यदन्ति यच्च दूरके	५८८	रक्षा सु नो अरुषः	२२२	वृषा पवस्व धारया	५१७
य त्वा वाजिघ्न्या	६९२	रक्षोहा विश्वचर्षणि.	२	वृषा पुनान आयुपु	१५४
यं निदधुर्वनरपत्नौ	११७८	रथि नश्चित्रमश्विनम्	४०	वृषा मतीनां पवते	७४६
यमत्यभिव वाजिनं	६५	रस ते मित्रो अर्यमा	५०१	वृषा वि जज्ञे जनय०	१०३७
यमी गर्भमृतावृधो	९६५	रसायः पयसा	८७०	वृषा वृष्णे रोहव०	८०८
यवंयवं नो अन्धसा	३६४	राजानो न प्रशस्तिभिः	७९	वृषा शोणो अभि	८६९
यशा इन्द्रो यशा अग्निः	१२५४	राजा मेधाभिरियते	५२३	वृषा सोम शुमो अभि	४७८
यस्ते द्रक्षः स्फुटति	१२३२	राजा समुद्र नद्यो	७३५	वृषा ह्यसि भानुना	५११
यस्त द्रष्टव्यः स्फुटो	१२३३	राजा सिन्धूनामवसिष्ट	७९४	वृषेव यूथा परि	६७५
यस्ते भद्रो वरेण्य	४०६	राजा सिन्धूनां पवते	७६०	वृष्टि दिवः परि स्रव	६६
यस्य ते धुमवत्	५६७	राज्ञो नु ते वरुणस्य	७९२, ११०३	वृष्टि दिवः शतधारः	८४६
यस्य ते पीत्वा वृषभो	१०२७	रायः समुद्राश्चतुरो	२४७	वृष्टि नो अर्प दिव्या	८७३
यस्य ते मद्य रस	५२२	रास्वेयत् सोमा भूयो	११९१	वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो	४७९
यस्य न इन्द्रः पिबाद्	१०३९	रजा दृढहा चिद्	८०९	मेधीनां त्वा परमज्ञा०	१२०६
यस्य वर्णं मधुश्नुतं	५१५	रुवति भीमो वृषभ	६२६	ज्ञातं धारा देवजाता	८८५
या ते धामानि दिवि	११०४	तृन्वज्जवातो अभि	७९०	ज्ञातं न इन्द्र ऊतिभिः	३५५
या ते धामानि हविषा	१११९	वयं ते अस्य पृत्रहन्	९१९	ज्ञां ते अग्नि सहाजिः	१२४२
या ते भीमान्यायुधा	४१७	चरिवोधातमो भव	३	ज्ञां नो भव हृद् आ	११३८
चास्ते धारा मधुश्नुतो	४२४	वाचो जन्तुः कवीनां	५८०	शर्यणावति सोम	१०८३
चास्ते प्रजा अमृतस्य	११००	वायुर्न यो नियुक्तो	७८७	शिशुं जज्ञानं हरि	१०५३
युव हि स्व स्वर्पती	१५३	वावृधानाय तूर्वथे	२०८	शिशुं जज्ञानं हर्यते	८४९
यं ते पवित्रमूर्धयो	३९२	वाश्रा अर्पन्तान्दवो	११०	शिशुर्न जातोऽव चक्रद्	६५७
ये धीदानो रथकाराः	११८१	विज्ञतो दुरिता पुरु	४१९	शुक्रः पवस्व देवेभ्यः	१०४६
येन देवाः पविर्नगा	१२१३	विदद् यत् पूष्यं नष्ट०	११५५	शुचिः पावक रुच्यते	१९३
येन सोम साहन्त्या	१२५२	विपश्चिते पवमानाय	७७१	शुचिः पुनानस्तनं	६२७
येन सोमाविति पथा	१२५१	वि यो ममे यस्या	६०२	शुभ्रमन्धो देववातं	४२२
येना नवग्रो दधप्रद	१०२९	विश्वस्मा इत् स्वर्दशे	३३४	शुभ्रमान क्रतायुभिः	२६३
येनावपत् सविता	१२५५	विश्वस्य राजा पवते	६७४	शुभ्रमाना क्रतायुभिः	४८९
ये पाकशमं विहरन्त	११३२	विश्वा धामानि विश्वचक्ष	७३२	शुष्मी शार्धो न मारुतं	७९१

शूरग्राम. सर्ववीरः	८०२	स पवस्व धनंजय	३२४	समेनमहुता इमा	२५३
शूरो न धत्त आयुधा	६७२	स पवस्व मदाय कं	३१४	सम्यक् सम्यञ्चो महिषा	६४९
शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः	२९२	स पवस्व मदिन्तम	३४५	सं मातृभिर्न शिशु	८१९
श्येनो न योनि सदनं	६३५	स पवस्व य आविथ	४०९	समिष्ठा अरुषो भव	४०८
श्रिये जातः श्रिय आ	८२६	स पवस्व विचर्षण	२९४	स रहत उरुगायस्य	८६५
श्वेतं रूपं कृणुते	६६३	स पवस्व सहमान	१०७५	स रोहवदाशि पूर्वा	६०१
स ईरथो न भुरि	७८६	स पवित्रे विचक्षणो	२६७	स वर्धिता वर्धनः	८३५
सं वस्व इव मातृभिः	९८१	स पुनान उप सुरे	८९४	स वह्निस्सु दुष्टरो	१६४
संवृक्तधृष्टमुक्थं	३३२	स पुनानो मदिन्तम.	९३२	स वह्निः सोम जागृवि	२६१
सखाय आ नि धीदत्त	९७४	स पूर्व्यः पवते य	६७७	स वां यज्ञेषु मानवी	९२३
स तू पवस्व परि	६४६, १०२३	स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो	८४२	स वाजी रोचना दिव-	२६८
सत्यमुग्रस्य बृहत	१०८७	सस दिशो नानासूर्याः	१०९६	स वाज्यक्षा सहस्रेता	१०५८
सत्येनोत्तमिता भूमिः	११७१	सस स्वसारो अभि	७६३	स वायुमिन्द्रमश्विना	५६
स त्रितस्याधि सानवि	२६९	ससि मृजन्ति बंधसो	२१९	स विश्वा दाशुषे वसु	२६४
स देवः कविनेषितो	२७१	स प्रनवन्नव्यसे	८१०	स वीरो दक्षसाधनो	९५८
स न इन्द्राय यज्यवे	३९९	स भन्दना उदियति	७६८	स वृत्रहा वृषा सुतो	२७०
स न ऊर्जे व्ययव्ययं	३३९	स भिक्षमाणो अमृतस्य	६२१	स शुष्मी कलशेष्वा	१५१
स नः पवस्व वाजयुः	३११	स मत्सरः पृःसु	८४०	स सप्त धीतिभिर्हितो	७१
स नः पवस्व शं गवे	८८	स ममृजान आयुभिः	३७४, ५६०	स सुतः पीतये वृषा	२६६
स नः पुनान आ भर	२८८, ३९३	स ममृजान इन्द्रियाय	६२४	स सुन्वे यो वसूनां	१०३८
सना च सोम जेषि	३१	समस्य हरि हरयो	८३४	स सुनुर्मातरा शुचि	७०
सना ज्योतिः सना	३२	स मातरा न ददृशान	६२५	स सूर्यस्य रदिमभिः	७५९
सना दक्षमुत क्रतुं	३३	स मातरा विचरन्	६०३	सहस्रणीथः शतधारो	७१९
सनेमि कृष्यस्सदा	९७९	स मामृजे तिरो	१०१०	सहस्रधार पवते	९४९
सनेमि स्वमस्सदा	९८५	समिन्द्रेणोत वायुना	३९५	सहस्रधार वृषभ	१०३३
स नो अद्य वसुत्तये	३१३	समीचीना अनूषत	२८३	सहस्रधारेऽव ता	६६२
स नो अर्थ पवित्र आ	४८९	समीचीनास आसते	८३	सहस्रधारेऽव ते	६५१
स नो अर्षाभि दृत्यं	३१५	समीचीने अभि त्मना	९६६	सहस्रधारे वितते	६५४
स नो ज्योतीषि पूर्व्य	२६२	समी रथ न भुरिजो	६३४	सहस्रोति शतामघो	४३१
स नो देव देवताते	८३५	समी वस्व न मातृभिः	९७५	स हि त्व देव शश्वते	९१८
स नो देवेभिः पवमान	८२१	समी सखायो अस्वरन्	३१८	स हि ण्मा जरितृभ्यः	१६०
स नो भगाय वायवे	३१२, ३९६	समु त्वा धीभिरस्वरन्	५४५	साक वदन्ति बहवो	६४०
स नो मदानां पत	९७८	समुद्रिया अपसरसो	६८३	साकमुक्षो मर्जयन्त	८१८
स नो विश्वा दिवो	३७५	समुद्रे ते हृदयमस्वन्तः	१२०४, १२१०	सिन्धोरिव प्रवणे	६१६
स नो हरीणां पत	९८४	समुद्रो अप्सु मामृजे	१५	सिषासतू रयीणां	३३०
सं से पयांसि समु	१११८	समु प्र यन्ति धीतयः	११६३	सिंह नसन्त मध्वो	७९५
सं श्री पवित्रा वितता	९११	समु प्रिया अनूषत	९५१	सुत इन्द्रो पवित्र आ	९३४
सं दक्षेण मनसा	६०४	समु प्रियो मृज्यते	८५९	सुत (ता) इन्द्राय वायवे	२४४, २४९
सं देवः शोभते पुषा	१९६	स मृज्यते सुकर्मभि	९३३	सुत इन्द्राय विष्णवे	४५०
		स मृज्यमानो दक्षभिः	६२३	सुत एति पवित्र आ	२८०

सुता अनु स्वमा रजो	४५३	सोम यास्ते मयोभुव	११०९	सोमो वीरुधामधिपतिः	११८४
सुता इन्द्राय वेज्जिगे	४६२	सोम राजन् मृळया	११४२	स्तोत्रे राये हरिरर्षा	८६२
सुतासो मधुमत्तमाः	९४७	सोम राजन् विश्वास्वं	११९६	स्रक्वे द्रप्सस्य धमतः	६४८
सुनोता मधुमत्तमं	२२९	सोम रारन्धि नो हृदि	१११३	स्वयं कविर्विधर्तरि	३२९
सुविज्ञानं चिकितुषे	११३३	सोमस्य धारा पवते	६९१	स्वादिष्टया मदिष्टया	१
सुवितस्य मनामहे	२९१	सोमस्य पर्णः सह	११७९	स्यादुः पवस्व दिव्याय	७२१
सुवीरासो वय धना	४१०	सोमस्य राज्ञो वरुणस्य	१२३९	स्वादुष्किलायं मधुमौ	११२७
सुशेवो नो मृळयाकु	११५६	सोमा असृग्रमाश्रवो	१८०	स्वादोरभाक्षि वयसः	११३५
सुषहा सोम तानि ते	२२०	सोमा असृग्रमिन्दव	९५	स्वायुधः पवते देव	७७७
सुष्वाणासो व्यद्रिभिः	९५४	सोमा. पवन्त इन्द्रवो	९५३	स्वायुध सोतृभिः	८४८
सूर्यस्येव रश्मयो	६१५	सोमापूषणा जनना	१२१७	स्यायुधस्य ते सतो	२३५
सो अग्रे अह्ना हरिः	७६९	सोमापूषणा रजसो	१२१९	हरि सृजानः पथा	८२९
सो अर्षेन्द्राय पीतये	४२५	सोमारुद्रा धारयेथा०	१२२३	हरि मृजन्त्यरूपो न	६३९
सो अस्य विशे महि	७४२	सोमारुद्रा युवमेतानि	१२२५	हविर्हविष्मो महि सद्य	७१०
सोम उ षुवाणः	१००७	सोमारुद्रा वि बृहत	१२२४	हस्तच्युतेभिरद्रिभिः	९०
सोमः पवते जनिता	८३७	सोमेनादित्या बलिनः	११७२	हितो न सप्तिरभि	६६९
सोमः पुनान ऊर्मिणा	९९५	सोमो अर्पति धर्णसि	१८४	हिन्वान्ति सूरमुत्तयः	५०८, ५७६
सोमः पुनानो अर्षति	१०४	सोमो अस्मभ्यं द्विपदे	११२५	हिन्वानासो रथा इव	७८
सोमः पुनानो अव्यये	१०७३	सोमो जिगाति गातुविद	११२४	हिन्वानो वाचमिष्यसि	४८६
सोमः सुतो धारयात्यो	९०१	सोमो देवो न सूर्यो	४६०	हिन्वानो हेतुभिर्यत	५०६
सोम गीर्भिष्ट्वा वषं	११११	सोमो धेनुं सोमो	११२०	हुवे सोमं सवितारं	१२४५
सोमं गावो धेनवो	८९१	सोमो मीद्वान् पवते	१००६	हृदिस्पृशस्त आसते	११६१
सोमजुष्टं ब्रह्मजुष्टं	१२४३	सोमो युनक्तु बहुधा	११८९	हृदे त्वौ मनसे त्वा	११९५
सोमं मन्यते पविवान्	११७३	सोमो राजासृजन् सुत	१२०९		

दैवत-संहितान्तर्गत-सोमदेवताया गुणबोधक-पदानां सूची।

[सोमदेवतायाः 'सोमः' इति 'सोमासः' इति च एकानेकवचनत्वेन निर्देशकारणाद्वृणयोधकपदानामपि तथाविधत्वमेव ।]
(अस्यां सूच्यां १०९७ पर्यन्तं मन्त्राः ऋग्वेदस्य नवममण्डलस्थाः विद्यन्ते । तेषां मण्डलक्रमाङ्क '९' इत्यत्र न निर्दिष्टः ।)

अंशुः ६२,४; ४२१ । ६८,४,६; ६०३,६०५ । ७२,६;
६४४ । ७४,२,५; ६५८,६६१ । ८६,४६; ७७३ ।
९१,३; ८०८ । ९२,१; ८१२ । ९५,४, ८३१ ।
वा० य० ५,७, ११९४
अक्त गोभिः ९६,२२, ८५४
अक्तुभिः गोभि अञ्जानः ५०,५, ३४५
अक्रान् ६९,३; ६१२
अक्षितः २६,२; २०१ । ७८,३; ६८३ । ७२,६; ६४४
अगृभीतः ८,६९,१; ११५०
अग्नेः जनिता ९६,५; ८३७
अग्रियः ७,३; ५२
अग्रियः गोषु ८६,१२; ७३९
अग्नेगः ८६,४५; ७७२
अघशंसः २४,७; १९३ । २८,६, २१७ । ६१,१९; ४०६
अंगिरस्तमः १०७,६; १००५
अचोदसः ७९,१; ६८६
अजाश्वः [पूषा] ६७,१०; ५७७
अजिरशोचिः ६६,२५; ५६२
अज्यमानः ९७,३५; ८९१
अञ्जान. गोभि. १०३,२; ९६९
अञ्जानः गोभि अक्तुभि. ५०,५; ३४५
अत्य -स्यामः -स्याः १३,६; १०९। ४६,१, ३२०। ६६,२३; ५६०
अत्यवि १०६,११; ९९६
अत्युभिः - १७,३; १३९
अद्रक्चः ७७,५; ६८० । ८५,३; ७१८ । ९७,१९; ८७५ ।
१०७,२; १००१
अद्वाभ्यः ३,२; २२ । २६,४; २०३ । ७५,२, ६६७ ।
८५,६; ७२१ । १०३,४; ९७१ । १०,२५,७, ११६६
अद्वाभ्यासः अस्य केतवः ७०,३; ६२२
अदितिः ८,४८,२; ११३६
अदस्तकतुः ८,७९,७, ११५६

अद्भिः मृजानः १०९,१७; १०५८
अद्भुत २०,५, १६३ । ८५,४; ७१९
अद्भिदुग्धः ९७,११; ८६७
अद्भिः ५३,१, ३५६
अद्भिषुतः ७२,४, ६४२
अद्भिसंहतः ९८,६; ९२०
अद्रौ दुदुहान ९६,१०, ८४२
अधिपतिः अथ० ३,२७,४; १२४६
अधिपतिः वीरुधाम् अथ० ५,२४,७; ११८४
अध्रिगुः ९८,५, ९१९
अध्वर्युभिः गुहाहितः १०,९; ८५
अनपच्युतः ४,८; ३८
अनसः १६,३, १३१
अनभिश्वास्ता ८८,७; ७९१
अनवद्यः ६९,१०, ६१९
अनिन्द्यः ८२,४; ७०४
अनिशितः तमोभि ९६,२; ८३४
अनुकामकृत, देवेभ्यः ११,७; ९२
अनुमाद्य. २४,४,६; १९०,१९२ । १०७,११; १०१०
अनुमाद्यः नृभिः ७६,१, ६७१
अन्तः पश्यन् ९६,७; ८३९
अन्तरिक्षप्राः ८६,१४, ७४१
अन्ध ५१,३, ३४८ । ६२,५; ४२२ । १०१,१३; ९५६
अपघ्नन् मृध. ६३,२४; ४७१
अपघ्नन् रक्षस ६३,२९, ४७६
अपघ्नन् शत्रून् ९६,२३; ८५५
अपघ्नन्तः ९८,११; ९२५
अपसेधन् दुरिता ८२,२, ७०२
अपां गन्धर्व. ८६,३६, ७६३
अप कृण्वन् ९६,३; ८३५

अपः वसानः १६,२, १३० । ७८,१; ६८१ । ८६,४०;
 ७६७ । ९६,१३; ८४५ । १०७,४,१८,२६; १००३,
 १०१७,१०२५ । १०९,२१, १०६२
 अप वृणान् ९४,१; ८२३
 अपः श्रीणन् १०९,२३, १०६४
 अपः भिषासन् ९०,४; ८०३
 अप्सुरः ६१,१३; ४०० । ६३,५,२१; ४५२, ४६८ ।
 १०८,७, १०३२
 अप्रयावन् अथ० ३,५,१; ११७६
 आप्ता १,९१,२१; ११२१
 अप्सु द्रप्स ८९,२, ७९४
 अप्सु मृजान् ९६,१०, ८४२
 अजित् ७८,४; ६८४
 अभयानि कृण्वन् ९०,४; ८०३
 अभिकन्दन् ८६,११, ७३८
 अभिगीतः ९६,२३, ८५५
 अभियुजः २१,२; १६७
 अभिमातिषाहः १,९१,१८; १११८
 अभिमातिहा ६५,१५, ५२२
 अभिमातीः सहमानः ३,६३,१५; ११२६
 अभिशस्तिपाः २३,५; १८४ । ९६,१०; ८४२
 अभिश्रीणन् पयः पयसा ९७,४३, ८९९
 अभिष्टिक्त ४८,५, ३३५
 अभिष्टुतः २७,१, २०६ । ६७,१९-२०, ५८६-५८७
 अभिष्टुतः तिष्ठे ३,६, २६
 अभ्युन्दतः पवित्रम् ६१,४, ३९१
 अभ्रवर्षाः ८८,६; ७९०
 अमर्त्यः-त्याः ३,१; २१ । ९,६; ७३ । २२,४, १७५ ।
 २८,३,६, २१४,२१७ । ६८,८, ६०७ । ६९,५,
 ६१४ । ८४,२ ७१२ । १०३,५; ९७२ । १०८,१२;
 १०३७ । ८,४८,१२, ११४६
 अमित्रहा ११,७; ९२ । ८६,१२, ८४४
 अमीयहा १,९१,१२, १११२
 अमृतः - म् ९१,२८; ८०७ । ११०,४; १०६७ । १,४३,९;
 ११०० । ८,४८,३; ११३७ । वा० य० १९,७२; १२०९
 अमृत्यवः अस्य केतवः ७०,३; ६२२
 अयासः ४१,१; २९० । ८९,४; ७९६
 अयासः मध्वः ८९,३; ७९५
 अरममाण ७२,३; ६४१
 अरावणः अपह्नन्तः १३,९; ११२ । ६३,५, ४५२

अरिः ७९,३; ६८८
 अरुणः ११,४ ८९ । ४०,२; २८५ । ४५,३, ३१६ ।
 ७८,४; ६८४
 अरुषः ८,६, ६४ । २५,५; १९८ । ७१,७; ७३६ । ७४,१;
 ६५७ । ८२,१, ७०१ । ८९,३; ७९५ । १११ १; १०७६
 अरेपसः १०१,१०, ८५३
 अर्पितः सुवनेषु ८६,१४; ७४१ । ८६,४५; ७७२
 अर्थः २३,३; १८२
 अर्वा ८७,७; ७८२
 अवयाता हरस्य दैव्यस्य ८,४८,२, ११३६
 अवातः ९६,८,११, ८४०, ८४३ । ८,७९ ७; ११५६
 अवीरहा १,९१,१९; १११९
 अव्यः ६,१; ४१ । ९,५, ६३ । १२,४; ९८ । २८,१;
 २१२ । ३८,१; २७२ । ५०,२-३, ३४२-३४३ ।
 ५२,२; ३५२ । ६८,७; ६०६
 अशास्तिहा ६२,११; ४२८ । ८७,२; ७७७
 अश्वजित् ५९,१; ३८०
 अश्वयुः ३६,६, २६५
 अश्वविद् ५५,३; ३६६ । ६१,३; ३९०
 अश्वसा २,१०, २० । ६१,२०; ४०७
 अपाळहः युत्सु १,९१,२१; ११२१
 अपाळहः समत्सु ९०,३; ८०२
 असमष्टकाव्यः ७६,४; ६७४
 असश्चतः ७३,४; ६५१
 असुरः ७३,१, ६४८ । ७४,७, ६६३
 अस्तृत ९,५; ७२ । २७,४; २०२
 अस्तृतः ३,८, २८
 अस्मभ्य गातुवित्तमः १०६,६; ९९१
 अस्मयुः २,५, १५ । ६,१; ४१ । ६४,१८; ४९५
 अस्मत्सत्ता वा० य० ८,५०; १२०८
 आद्यणि [पृषा] ६७,१२; ५७९
 अङ्गूषाण् ९०,२, ८०१
 आङ्गूष्यः ९७,८, ८६४
 आरमा इन्द्रस्य ८५,३; ७१८
 आरमा यज्ञस्य ६,८; ४८
 आदधानः हस्तयोः विश्वासु ९०,१; ८००
 आनेता इळानाम् १०८,१३; १०३८
 आनेता रायाम् १०८,१३, १०३८
 आनेता वसूनाम् १०८,१३; १०३८
 आनेता सुक्षितीनाम् १०८,१३; १०३८

आपानासः विवस्वतः १०, ५; ८१
 आपूर्णः ७४, २; ६५८
 आप्यः ११०, ६; १०६९
 आप्यायमानः १, ९१, १८, १११८
 आयुः-यवः २३, २, ४, १८१, १८३ । ६४, १७, ४२४ ।
 १०७, १४, १०१३
 आयुधा तुज्जानः ५७, २; ३७३
 आयुधानि बिभ्रत ९६, १९, ८५१
 आयुधा संशिक्षानः ९०, १; ८००
 आयुधा ते तिम्रानि ६१, ३०; ४१७
 आयुषक् २५, ५, १९८
 आविवासन् परावतः ३९, ५; २८२
 आविवासन् अर्वावतः ३९, ५, २८२
 आविशन् विश्वा रूपाणि २५, ४; १९७
 आवृतः गोभिः ८६, २७, ७५४
 आशिरं सृजानः ६४, १४, ४९१
 आशुः शवः १३, ६८, १०९ । १७, १, १३७ । २२, १,
 १७३ । २३, १; १८० । ३९, १; २७८ । ५६, १, ३६८ ।
 ६२, १, १८; ४१८, ४३५ । ६३, ४; ४५१ । ६४, ४, १६,
 ४८१, ४९३ । ६९, ६, ७; ६१५, ६१६ । ८६, १, २;
 ७२८, ७२९
 आश्विनी. धीश्रुवः ते ८६, ४; ७३१
 आहितः कलशेषु १२, ५; ९९
 आहितः पवित्रे अन्तः १२, ५, ९९
 आहुतीबुध् ६७, २९, ५९६
 इन्द्रः १, ५; ५ । २, १, २, ७, ९, १०; ११-१२, १७, १९, २० ।
 ४, १०; ४० । ६, २; ४२ । ८, ७, ६५ । ९, ५; ७२ ।
 ११, १, ६, ९, ८६, ९१, ९४ । १२, ५, ९; ९९, १०३ ।
 १३, ४, १०७ । २३, ६; १८५ । २४, ५; १९१ ।
 २६, २, ६; २०१, २०५ । २७, ४, ६. २०९, २११ । २९, ६;
 २२३ । ३०, २, ५; २२५, २२८ । ३१, २, ६; २३१, २३५ ।
 ३२, २; २३७ । ३३, १; २४८ । ३५, २, ४; २५५, २५७ ।
 ३७, ६; २७१ । ३८, २, ५; २७३, २७६ । ४०, ३-४;
 २८६-२८७ । ४१, ४; २९३ । ४३, २, ४, ५; ३०३, ३०५,
 ३०६ । ४४, १; ३०८ । ४५, १, ४-६, ३१४, ३१७-३१९ ।
 ५०, ५; ३४५ । ५१, ३, ३४८ । ५२, ३-५; ३५३-३५५ ।
 ५३, ४; ३५९ । ५४, ४; ३६३ । ५५, २; ३६५ ।
 ५६, ४; ३७१ । ५७, ४; ३७५ । ५९, ४, ३८३ । ६०, १;
 ३८४ । ६१, १, १३, २६, २८, २९; ३८८, ४००, ४१३, ४१५,
 ४१६ । ६२, २०, २९; ४३७, ४४६ । ६३, ९, १७, २८, ३०;
 ६० [सोमः] १५

४५६, ४६४, ४७५, ४७७ । ६४, ३, १०, १२, १३, २२, २५.
 २७, ४८०, ४८७, ४८९, ४९०, ४९९, ५०२-५०४ । ६५, १,
 ५, ८, १३, १४, १७; ५०८, ५१२, ५१५, ५२०, ५२१, ५२४ ।
 ६६, १३, १४, १६, २३, २८; ५५०-५१, ५५३, ५६०, ५६५ ।
 ६७, ४-६, ८; ५७१-५७३, ५७५ । ६८, ९, ६०८ । ७०,
 १०; ६२९ । ७२, ४, ९; ६४२, ६४७ । ७६, २; ६७२ ।
 ७७, ४; ६७९ । ७९, ५, ६९० । ८१, ३; ६९८ । ८२, ५;
 ७०५ । ८४, २, ४; ७१२, ७१४ । ८५, ३, ४, ८; ७१८,
 ७१९, ७२३ । ८६, १६, १८, २२-२४, २६, २८, ३७, ३९,
 ४१, ४७, ४८; ७४३, ७४५, ७४९, ७५०, ७५१, ७५३,
 ७५५, ७६४, ७६६, ७६८, ७७४, ७७५ । ८७, २; ७७७ ।
 ८८, १, ७८५ । ९०, ५, ६; ८०४, ८०५ । ९१, २, ४,
 ८०७, ८०९ । ९३, ३, ५, ८२०, ८२२ । ९४, २; ८२४ । ९५, ५;
 ८३२ । ९६, ८, २, २१, २३; ८४०-४१, ८५३, ८५५ ।
 ९७, ५, १०-१२, १६, १७, ८६१, ८६६-८६८, ८७२, ८७३ ।
 ९७, १९, २१, २२, २४, २८, २९, ३३, ४०, ४४, ५२, ५५-
 ५७; ८७५, ८७७, ८७८, ८८०, ८८४, ८८५, ८८९, ८९६,
 ९००, ९०८, ९११-९१३ । ९८, १-४, ९; ९१५ ९१८,
 ९२३ । ९९, ८, ९३४ । १००, २; ९३६ । १०१, ५;
 ९४८ । १०४, ५; ९७८ । १०५, २, ४-६, ९८१, ९८३-
 ९८५ । १०६, ४, ६; ९८९, ९९१ । १०७, ३; १००२ ।
 १०९, ९, १२, २०, २२; १०५०, १०५३, १०६१, १०६३ ।
 ११०, १०, ११; १०७३ ७४१, ११२, १-४, १०७९-१०८२ ।
 ११३, १-११; १०८३-१०९३ । ११४, १-४; १०९४-१०९७ ।
 ११७, ८, १०९९ । ११९, १; ११०१ । ८, ४८, २, ४, ८,
 १२, १३, १५; ११३६, ११३८, ११४२, ११४६ ४७, ११४९ ।
 १०, २५, ९, ११६८ । वा० य० ८, ९, १२०३
 इन्द्रवः ६, ४; ४४ । ७, १; ५० । १०, ४, ७० । १२, १,
 ९५ । १३, ५, ७, १०८, ११० । १६, ५; १३३ । २१,
 १, ३, ५; १६६, १६८, १७० । २४, १; १८७ । ४६, २, ३,
 ३२१, ३२२ । ६२, १, ४१८ । ६३, ६, २५, २६; ४५३,
 ४७२-७३ । ६४, १६, १७, ९९३-९९४ । ६५, २४, ५३१ ।
 ६६, १२; ५४९ । ६७, ७; ५७४ । ६८, १; ६०० ।
 ७७, ३; ६७८ । ७९, १, २, ६८६ ८७ । ८५, १, ७;
 ७१६, ७२२ । ८६, १, २, ७२८-२९ । १०१, २, ८, १०;
 ९४५, ९५१, ९५३ । १०६, १, ९; ९८६, ९८४ । १०७, २६,
 १०२५ । ८, ४८, ५; ११३९ । अथर्व० ६, २, २. १२४९
 इन्द्रः ६, २; ४२
 इन्द्रः इति सुवन् ६३, ९. ४५६
 इन्द्रं वर्धन्तः ६३, ५; ४५२

इन्द्रेण दत्त अथ० ३,५,४, ११७९
 इन्द्रस्य प्रियः ९८,६; ९२० । १०२,१; ९३५
 इन्द्रस्य जनिता ९६,५; ८३७
 इन्द्रस्य सखा ९६,२; ८३४ । १०१,६; ९४९ । १०,२५,९; ११६८
 इन्द्रस्य सख्यं लुषाण ९७,११, ८६७ । ८,४८,२, ११३६
 इन्द्रस्य हृदसनिः ६१,१४; ४०१
 इन्द्रपातमः ९९,३; ९२९
 इन्द्रपातः ९६,३,१३; ८३५,८४५
 इन्द्रपीत ८,९, ६७
 इन्द्रयुः २,९, १९ । ६,९, ४९ । ५४,४; ३६३
 इन्द्रियः रसः ४७,३, ३२८ । ८६,१०; ७३७ । १०७,२५,
 १०२४
 इन्द्रियावान् वा० य० ८,९; १२०३
 इभ ५७,३, ३७४
 इयक्षन्तः पथ रजः २२,४, १७६
 इयानः समिती. ९२,६, ८१७
 इय जनयन् ३,१०, ३०
 इय. मही. प्रचक्राणः १५,७; १२७
 इयण्यन् गा ९६,८, ८४०
 इययन् देवानां सुम्नम् ८४,३; ७१३
 इयस्पतिः १४,७; ११९ । १०८,९; १०३४
 इपित कविना ३७,६, २७१
 इष्टयामा ८८,३; ७८७
 इष्टयन् वाचम् ९५,५; ८३२
 इळाना आनेता १०८,१३; १०३८
 ईड्यः ६६,१; ५३१
 ईरयन् अग्निः वाचः ६२,२६; ४४३
 ईरयन् द्रष्टान् ९७,५६, ९१२
 ईरयन् समुद्रिया अपः ६२,२६; ४४३
 ईशान-ना १९,२; १५३ । ६१,६; ३९३ । ६२,२९;
 ४४६ । ८६,३७; ७६४
 ईशानः विश्वस्य १०१,५; ९४८
 इक्थयः २९,२, २१९ । ४८,२; ३३२ । ८६,४८; ७६४ ।
 १०८,१६; १०४१
 उक्षणम् (द्वि०) ८५,१०, ७२५ । ८७,४३; ७७० । ९५,४;
 ८३१
 उअमाणः २९,५, ९३
 उक्षितः अपां ऊर्मो ७२,७, ७४५
 उग्रः ६२,२९; ४४६ । १०९,६३; १०६४ । ११३,५;
 १०८७

उत्तमः ५१,२; ३४७ । १०८,१६; १०४१
 उत्तमः धातिः ८५,३; ७१८
 उत्तमं हविः १०७,१, १०००
 उत्सः १०७,४, १००३
 उत्सः वस्वः ९७,४४; ९००
 उद्भिद् ८,७९,१; ११५०
 उदयुतः १०८,७; १०३२
 उज्जीता दध्ना ८१,१; ६२६
 उपदक् ५४,२, ३६१
 उपपत्तिवान् नाके ८५,११, ७२६
 उपम. ८६,३५, ७६२
 उपरासः ७७,३, ६७८
 उपष्टुत् ८७,९, ७८४
 उपारुहः ६८,२; ६०१
 उपावसुः ८४,३, ७१३
 उराणः १०९,९; १०५०
 उरवः २२,२; १७४
 उरुगच्छतिः ९०,४; ८०३
 उरुगाय. ६२,१३; ४३० । ९७,९; ८६५
 उरु वरुथम् ८,७९,३, ११५२
 उरुशंस ८,४८,४, ११३८
 उरुस्युः-स्यवः ८,४८,५; ११३९
 उशन् ६८,६; ६०५ । ९५,३; ८३०
 उशिक्ष् वा० य० ८,५०; १२०८
 उषसः प्रतरीता ८६,१९; ७४६
 उषसः भगं जनन्त. १०,५; ८१
 ऊर्जं वसान ७८,३; ६८३
 ऊर्मिः ७८,२; ६८२ । ८६,४०; ७६७ । ११०,११, १०७४
 ऊर्मि ते देवावीः ६४,११; ४८८
 ऊर्मय अस्य मध्वः ७,८, ५७
 ऊर्मय. मधुमन्तः ८६,२, ७२९
 ऊर्मिणा सचमानः ७४,५, ६६१
 ऊर्मो ९८,६; ९२०
 ऊर्गमियः ६८,६, ६०५
 ऊर्जीषी ८,७९,४; ११५३
 ऊर्जुः २७,४३; ८९९
 ऊर्ज ९७,९; ८६५
 ऊतः ६२,३०; ४४७ । ६६,२४, ५६१ । ७७,१, ६७६ ।
 १०७,१५, १०१४ । १०८,१०; १०३३
 ऊतः परस्मिन् धाम १,४३,९; ११००

ऋतजातः १०८,८, १०३३
 ऋतद्युजः ११३,४, १०८६
 ऋतुं वदन् ११३,४; १०८६
 ऋतस्य गर्भः ६८,५; ६०४
 ऋतस्य गोपाः ४८,४; ३३४ । ७३,८; ६५५
 ऋतस्य जिह्वा ७५,२, ६६७
 ऋतस्य तन्तुः ७३,९; ६५६
 ऋतस्य विष्टपः ३४,५, २५२
 ऋतावा ९६,१३; ८४५ । ९७,४८; ९०४ । ११०,११. १०७४
 ऋतावृधः ४२,५, ३०० । ६,७५,१०; १२२७
 ऋत्विजः ७२,४; ६४२
 ऋषिः ३५,४; २५७ । १०७,७; १००६ । ८,७९,१; ११५०
 ऋषिः [अभिः] ६६,२०; ५५७
 ऋषिः विप्राणाम् ९६,६, ८३८
 ऋषिकृत् ९६,१८, ८५०
 ऋषिमनाः ९६,१८; ८५०
 ऋषिषाद् ७६,४; ६७४
 ऋषिभिः संभृतः सामं १३००, १२११
 ऋष्वः ८९,४; ७९६
 एतस्यः ६४,१९; ४९६
 ओषधयः ८६,४५; ७७२
 भोजः देवानाम् अथ० ३,५,१; ११७६
 भोजिष्ठः ६६,१६; ५५३ । ६७,१, ५६८ । १०१,९; ९५२
 भोजीयान् उग्रभ्यः चित् ६६,१७; ५५४
 ओषधीनां पयः अथ० ३,५,१, ११७६
 ककुहः ६७,८. ५७५
 कनिष्कत् ६३,२०; ४६७
 कनिष्कदत् ३,७; २७ । १३,८; १११ । २५,२; १९५ ।
 २८,४; २१५ । ३०,२; २२५ । ३३,४; २४५ । ३६,२;
 २६७ । ६३,२९; ४७६ । ८५,५; ७२० । ९६,२०,२१.
 ८५२,८५३ । ९७,३२; ८८८ । १०६,१०; ९९५
 कलशम् आविष्टान् ६२,१९; ४३६
 कविः ७,४; ५३ । ९,१, ६८ । १२,४,८; ९८,१०२ ।
 १४,१; ११३ । १८,२; १४६ । २०,१; १५९ । २५,३;
 १९६ । ५०,४; ३४४ । ५९,३; ३८२ । २५,६; १९९ ।
 २७,१; २०६ । ४४,२; ३०९ । ४७,४; ३२९ ।
 ६२,१४,२७,३०; ४३१,४४४,४४७ । ६३,२; ४६७ ।
 ६४,२४; ५०१ । ६६,३,१०; ५४०,५४७ । ६८,५;
 ६०४ । ७१,७; ६३६ । ७२,६; ६४४ । ७४,२;
 ६५८ । ७८,२; ६८२ । ८२,२; ७०२ । ८४,५; ७१५ ।

८५,९; ७२४ । ८६,२०,२५,२९; ७४७,७५२,७५६ ।
 ९२,२; ८१३ । ९६,१७, ८४९ । ९७,२, ८५८ ।
 १००,५; ९३९ । १०२,६; ९६५ । १०७,७,१८;
 १००६,१०१७ । १०९,१३; १०५४ । १,९१,१४;
 १११४ ।
 कविः दिवः ६४,३०; ५०७
 कविना हृषितः ३७,६, २७१
 कविभि सुष्टुतः १०८,१२, १०३७
 कवीनां पदवी ९६,६,१८, ९३८,९५०
 कवीनां वाचः जन्तुः ६७,१३; ५८०
 कविकृतुः ९,१; ६८ । २५,५; १९८ । ६२,१३ ४३०
 कवीयन् ९४,१; ८२३
 काम्यः ९८,६; ९२० । १०२,१; ९३५
 कारं पुरुस्पृहं विभ्रत् १४,१,११३
 कारिणः १६,५, १३३
 कार्मन् श्वेतं कलशम् ७४,८, ६६४
 काव्येषु रन्ता विश्वेषु ९२,३, ८१४
 कृण्वन् अपः ९६,३, ८३५
 कृण्वन् अभयानि ९०,४; ८०३
 कृण्वन् केतुं दिवस्पति ६४,८, ४८५
 कृण्वन् भद्रान् ९६,१; ८३३
 कृण्वन् वरिवांसि ९७,१६, ८७२
 कृण्वन् विश्वानि सुपथानि यज्यवे ८६,२६; ७५३
 कृण्वन् सचूतं विचूतं ८४,२, ७१२
 कृण्वन् सत्यानि द्रविणानि ७८,५, ६८५
 कृण्वन् साम ९६,२२, ८५४
 कृण्वन्तः वरिव. गवे ६२,३, ४२०
 कृण्वन्तः विश्वं आर्यम् ६३,५; ४५२
 कृण्वानः गाः ८६,२६; ७५३ । १०७,२६; १०२५
 कृत्तुः ८,७९,१; ११५०
 कृत्वा ७६,१, ६७१ । ७७,५ ६८० । ८४,५; ७१५
 कृष्णां त्वचं अपमन्तः ४१,१; २९०
 केतु यज्ञस्य ८६,७, ७३४
 कोशः ६६,११; ५४८
 क्रतुः ८६,४३; ७७० । १,९१,५, ११०५ । १०७,३;
 १००२
 क्रतुमान् ९०,६, ८०५
 क्रतुवित् ४४,६, ३१३ । ६३,२४, ४७१ । ८६,४८, ७७५
 क्रतुवित्तमः १०८,१; १०२६
 क्रतुभिः सुक्रतुः १,९१,२; ११०२

क्रदः ९७, २८; ८८४
 क्रन्दन् ४२, ४; २९९ । ९६, २२; ८५४ । ९७, ३३; ८८९
 क्राणा १०२, १; ९६०
 क्राणा सिन्धूनाम् ८६, १९; ७४६
 क्रिवि ९, ६, ७३
 क्रीळन्-न्तः २१, ३; १६८ । ४५, ५; ३१८ । ८६, २६, ७५३
 ९६, २१, ८५३ । ९७, ९; ८६५ । १०८, ५; १०३० ।
 ११०, १०; १०७३ । १०, ८५, १८; १२३८
 क्रीळन् वने ६, ५, ४५ । १०६, ११ ९९६
 क्रीळुः २०, ७, १६५
 क्षरन्तः ४६, १, ३२०
 क्षिप्रधन्वा ९०, ३, ८०२
 क्षेत्रवित्तरः १०, २५, ८, ११६७
 क्षैतः ९७, ३, ८५९
 गच्छन् इन्द्रम् २५, ५; १९८
 गच्छन् वाजं सहस्रिणम् ३८, १, २७२
 गन्धर्वः ८५, १२; ७२७
 गन्धर्वः अपाम् ८६, ३६; ७६३
 गभस्तिपूतः ८६, ३४, ७६१
 गयसाधनः १०४, २, ९७५
 गयस्फानः १, ९१, १२, १९; १११२, १११९
 गर्भ १०२, ६; ९६५
 गर्भः पञ्चाद्याः ८२, ४; ७०४
 गवां पतिः ७२, ४; ६४२
 गवां शिरः ६४, २८, ५०५
 गव्ययु ३६, ६; २६५
 गव्यु २७, ४; २०९ । ९७, १५; ८७१
 गाः इषण्यन् ९६, ८; ८४०
 गाः कृण्वान् १०७, २६, १०२५
 गावः ८, ४८, ५; ११३९
 गातुवित् ४६, ५; ३२४ । ६, ५, १३; ५२० । ९२, ३,
 ८१४ । ३, ६२, १३; ११२४
 गातुवित्तमः ४४, ६, ३१३ । १०१, १०, ८५३ । १०४, ५;
 ९७८ । १०७, ७; १००६
 गातुवित्तमः अस्मभ्यम् १०६, ६, ९९१
 गातुं विदत् ९६, १० ८४२
 गिरा जातः ६२, १५, ४३२
 गिरावृध् २६, ६; २०५
 गिरिष्ठाः १८, १, १४५ । ६२, ४, ४२१ । ८५, १०, ७२५ ।
 ९५, ४, ८३१ । ९८, ९; २२३

गिर्वणाः ६४, १४; ४२१
 गीर्भि परिष्कृतः ४३, ३; ३०४
 गुपितः विधानैः १०, ८५, ४; ११७४
 गुहाहितः अध्वर्युभिः १०, ९; ८५
 गुह्य [पर्णमणिः] अथ० ३, ५, ३, ११७८
 गृणानः-ना ६२, २२; ४३९ । ९७, ४९; ९०५
 गृणानः जमदग्निना ६२, २४, ४४१ । ६५, २५; ५३२
 गृणाना देववीतये १३, ३ १०६
 गृत्सः १०, २५, ५; ११६४
 गृध्राणां इयेनः ९६, ६; ८३८
 गोभिः अक्तः ९६, २२; ८५४
 गोभिः अज्ञानः १०३, २, ९६९
 गोभिः श्रीणान् १०९, १७, १०५८
 गोभिः श्रीतः १०९, ११५; १०५६
 गोजित् ५९, १; ३८० । ७८, ४; ६८४ ।
 गोजीरयाः ११०, ३; १०६६
 गोपतिः १९, २, १५३ । ९७, ३४; ८९०
 गोपतिः जनस्य ३५, ५, २५८
 गोपाः २, १०; २० । १६, २, १३०
 गोपाः ऋतस्य ४८, ४, ३३४ । ७३, ८, ६५५
 गोपाः तन्वः ८, ४८, ९; ११४३
 गोपाः विश्वतः १०, २५, ७; ११६६
 गोपाः विश्वस्य भुवनस्य २, ४०, १; १२१७
 गोपाः वृजनस्य १, ९१, २१; ११२१
 गोमान् १०७, ९; १००८
 गोवित् ५५, ३; ३६६ । ८६, ३९; ७६६
 गोविन्दुः ९६, १९; ८५१
 गोषाः १६, २, १३० । ६१, २०; ४०७
 गोषु अग्निः ८६, १२; ७३९
 ग्राह्या तुङ्गः ६७, १९; ५८६
 घनिष्ठत् विश्वा दुरिता ९०, ६, ८०५
 घृतं वसानः ८२, २; ७०२
 घृतञ्चुत्-तः ७७, १; ६७६ । साम० १३००; १२११
 घृतस्तुः ८६, ४५; ७७२
 घृत्वयः २१, १; १६६
 घोरः ८९, ४; ७९६
 घ्नन् चिधः अप २७, १; २०६
 घ्नन्तः विश्वा द्विषः अप ६३, २६, ४७३

चक्रद वने १०७, २२; १०२१
चक्राणः चारुं अध्वरम् ४४, ९; ३११
चक्रिः ७७, ५; ६८०
चक्षाणः विश्वा काव्या ५७, २; ३७३
चनोहितः ७५, १; ६६६
चनोहितः मतिभिः ७५, ४; ६६९
चन्द्रः ६६, २६; ५६३
जम्बूद ८, २; ६०। ९६, १९; ८५१
चमूः पुनानः १०७, १८; १०१७
चमू सुताः ४६, ३; ३२२
चम्बोः सुतः १०८, १०; १०३५
चारुः-रवः १७, ८; १४४। ३०, ६; २२९। ४८, १; ३३१
६१, ९; ३९६। ७७, ३; ६७८। ८६, २१; ७४८।
१०२, ६; ९६५। १०९, १२; १०५४
चिकित मनीषा प्र १, ९१, १; ११०१
चिताना गोः अधि त्वचि १०१, ११; ९५४
चित्तः विपानथा अया ६५, १२; ५१९
चेतनः ६४, १०; ४८७
चोदितः नृबाहुभ्याम् ७२, ५; ६४३
जङ्घनत् कृष्णा तमांसि ६६, २४; ५६१
जङ्घनतः (त्वष्टी) ६६, २५; ५६२
जज्ञानः ३, १०; ३०। २९, २; २१९। ८६, ३६; ७६३।
९६, १७; ८४९। १०२, ८, १२; १०४९, १०५३
जनना दिवः [सोमपूषणौ] २, ४०, १; १२१७
जनना पृथिव्याः " २, ४०, १; १२१७
जनना रयीणाम् " २, ४०, १; १२१७
जनयन् १०८, १२; १०३७
जनयन् ह्यः ३, १०, ३०। ६६, ४; ५४१
जनयन् ज्योतिः १०७, २६; १०२५
जनयन् मतिम् १०७, १८; १०१७
जनयन् रोचना दिवः ४२, १; २९६
जनयन् वाचम् ७८, १; ६८१। १०६, १२; ९९७
जनयन् सूर्यम् अप्सु ४२, १; २९६
जनिता अग्नेः ९६, ५; ८३७
जनिता इन्द्रस्य ९६, ५; ८३७
जनिता दिवः ९६, ५; ८३७
जनिता देवानाम् ८६, १०; ७३७। ८७, २; ७७७
जनिता पृथिव्याः ९६, ५; ८३७
जनिता मतीनाम् ९६, ५; ८३७
जनिता रोदस्योः ९०, १; ८००

जनिता विष्णोः ९६, ५; ८३७
जनिता सूर्यस्य ९६, ५; ८३७
जन्तु कवीनां वाचः ६७, १३; ५८०
जयन् १, ९१, २१; ११२१
जयन् अपः ८५, ४; ७१९
जयन् क्षेत्रम् ८५, ४; ७१९
जवीयान् मनसः ९७, २८; ८८४
जागृविः ३६, २; २६१। ४४, ३; ३१०। ७१, १; ६३०
जातः ९, ३; ७०
जातः गिरा ६२, १५; ४३२
जातः श्रिये ९४, ४; ८२६
जातासः श्रुष्टी १०६, १; ९८६
जानन् ९६, ७; ८३९
जानन् ऋते प्रथमम् ७०, ६; ६२५
जायमानः ९६, १० ८४२
जायमान इन्द्रम् अभि ११०, ८; १०७१
जिगत्स्वः १०१, १२; ९५५
जिग्युषः (षष्ठी) १०२, ४; ९३८
जिह्वा ऋतस्य ७५, २; ६६७
जीरदानुः ८७, ९; ७८४
जुषाणः इन्द्रस्य सख्यम् ९७, ११; ८६७। ८, ४८, २; ११३६
जुष्टः ९७, २२; ८७८
जुष्टः इन्द्राय १३, ८; १११। ७०, ८; ६२७
जुष्टः मती ४४, २; ३०९
जुष्टः मदाय ९७, १९; ८७५
जुष्टः मित्राय १०८, १६; १०४१
जुष्टः वरुणाय ७०, ८; ६२७। १०८, १६; १०४१
जुष्टः वायवे ७०, ८; ६२७। १०८, १६; १०४१
जूतः ९७, ५२; ९०८
जूताः धिया ६४, १६; ४९३
जेता ९०, ३; ८०२
जेन्यः ८६, ३६; ७६३
ज्येष्ठः उग्राणाम् ६६, १६; ५५३
ज्योतिः २९, २; २१९। ६६, २४; ५६१
ज्योतिः जनयन् १०७, २६; १०२५
ज्योतिः यज्ञस्य ८६, १०; ७३७
ज्योतीरथः ८६, ४५; ७७२
ज्रयः ऊरु ६८, २; ६०१
तनूगानः अथ० ३, ५, ८, ११८३
तन्तु ऋतस्य ७३, ९; ६५६

तन्वं मृजानः ९६,२०; ८५२
 तन्वः गोपाः ८,४८,९; ११४३
 तमः ज्योतिषा प्रतपन् १०८,१२; १०३७
 तरत् ५८,१-४; ३७६-३७९
 तवस् (सः-षष्ठी) १०,२५,५ ११६४
 तवस्त्वान् ९७,४६; ९०२
 तविष्यमाणः ७६,३; ६७३
 तिग्मदन्तिः ६,७४,४; १२२६
 तिग्मशृङ्गा ९७,९; ८६५
 तिग्मायुधः ९०,३; ८०२ । ६,७४,४, १२२६
 तिरः दधानः दुहितुः वर्षासि ९७,४७; ९०३
 तीव्र १७,८; १४४ । ६,४७,१; ११२७
 तुञ्जानः आयुधा ५७,२; ३७३
 तुञ्जानः रयिम् ८७,६; ७८१
 तुञ्जः ६७,२०; ५८७
 तुञ्जः प्राग्णा ६७,१९; ५८६
 तुरः १०,२५,१०, ११६९
 तृतीयं धाम सिषासन् ९६,१८; ८५०
 त्रिधातुः ८६,४६; ७७३ । १०८,१२; १०३७
 त्रिष्टुब्धः ७१,७; ६३६ । ९०,२, ८०१
 त्रिवरूथं शर्म वसानः ९७,४७; ९०३
 त्विषिं दधान ३९,३; २८०
 त्वेषाः ४१,१, २९०
 दक्षः ६१,१८, ४०५ । ६२,४, ४२१ । ६५,२८; ५३५ ।
 ८५,२; ७१७ । १,९१,१४, १११४
 दक्षः देवानाम् ७६,१; ६७१
 दक्षसाधनः २५,१; १९४ । २७,२; २०७ । १०१,१३
 ९५६ । १०४,३; ९७६
 दक्षाय साधनः ६२,२९, ४४६ । १०५,३, ९८२
 दक्षाय ८८,८; ७९२ । १,९१,३; ११०३
 दत्तः इन्द्रेण अथ ३,५,४; ११७९
 दधत् दाशुषे रत्नानि ३,६, २६
 दधत् वयः ६८,१०; ६०९
 दधत् स्तोत्रे सुवीर्यम् २०,७; १६५ । ६२,३०, ४४७ ।
 ६६,२७; ५६४ । ६७,१२; ५८६
 दधानः इन्द्रियं रसम् २३,५; १८४
 दधानः भोजसा विद्या ६५,१०; ५१४
 दधानः कलशे रसम् ६३,१३; ४६०
 दधानः आक्षिति श्रवः ६६,७; ५४४
 दधानः त्विषिम् ३९,३; २८०

दधानः द्राविणम् ९६,१२, ८१४
 दधान नाम ९२,२, ८१३
 दधानः रत्ना दमेदमे ६,७४,१; १२२३
 दध्ना उज्जीता. ८१,१; ६९६
 दध्याशिरः २३,३; १७५ । ६३,१५; ४६२ । १०१,१२; ९५५
 दमेदमे सप्त रत्ना दधानः ६,७४,१; १२२३
 दशतः-तासः २,६, १६ । १०१,१२; ९५५
 दस्यः ८२,१; ७०१
 दस्योः हन्ता ८८,४; ७८८
 दाता दात्रस्य ९७,५५; ९११
 दात्रस्य दाता ९७,५५; ९११
 दानुदः ९७,२३; ८७९
 दानुपिन्वः ९७,२३, ८७९
 दाशुषे वसूनि कर्त ६२,११; ४२८
 दिवसन् राध. ६१,२७; ४१४
 दिवः आभृतं पयः ६६,३०; ५६७
 दिवः कविः ६४,३०; ५०७
 दिवः जननः २,४०,१; १२१७
 दिवः जनिता ९६,५; ८३७
 दिवः धरुणः २,५, १५
 दिवः धर्ता ७६,१; ६७१ । १०९,६; १०४७
 दिवः पतिः ८६,११,३३; ७३८,७६०
 दिवः पदम् (दिवस्पदम्) १०,९; ८५
 दिवः प्रतरीता ८६,१९; ७४६
 दिवः सूर्या-धौनः २७,३, २०८ । ६९,८; ६१७
 दिवः रोचनः ३७,३; २६८
 दिवः विष्टम्भः ८६,३५; ७६२ । ८७,२; ७७७ । ८९,६;
 ७९८ । १०८,१६; १०४१
 दिवः शिशुः ३३,५; २४६ । ३८,५, २७६
 दिवः स्कम्भः ७४,२; ६५८ । ८६,४६; ७७३
 दिवा हरि ९७,९; ८६५
 दिवियजः ९७,२६, ८८२
 दिवि अधि श्रितः १०,८५,१; ११७१
 दिविस्पृक् ११,४; ८९
 दिवे शम् १०९,५, १०४६
 दिव्य -भ्याः ७१,९, ६३८ । ८६,१; ७२८ । ३६; ७६३ ।
 ९७,२३,३३, ८७९,८८९ । १०७,५; १००४ । १०९,
 ३; १०४४
 दिशां पतिः ११३,२, १०८४
 दुदुहानः अर्वा ९६,१०; ८४२

दुदुहान. त्रिः सप्त आशिरम् ८६, २१; ७४८
दुराध्यः ७९, ३; ६८८
दुरिता अपसेधन् ८२, २, ७०२
दुरिता वनिघ्नत् विश्वा ९०, ६; ८०५
दुरिता पुरु विघ्नन्तः ६२, २, ४१९
दुरितानि विघ्नन् ९७, १६; ८७२
दुरोषः १०१, ३; ९४६
दुर्मर्षः ९७, ८, ८६४
दुष्टरः अप्सु २०, ६; १६४
दुस्तरः १६, ३, १३१
दुहानः प्रत्नं हत् पयः ४२, ४, २९९
देवः-वासः ३, १, ६, ९; २१, २६, २९। ६, ७; ४७। १३, ५,
१०८। ३७, ६; २७१। ४२, २; २९७। ६३, २२;
४६९। ६४, १; ४७८। ६५, २, २४, ५०९, ५३१।
६७, ३०; ५९७। ६८, २, ६०१। ७१, ६, ६३५।
८७, २; ७७७। ९५, २; ८२९। ९६, ३, १६; ८३५, ८४८।
९७, १, ७, ११, १२, १८, २७, ४२, ४८, ५०, ८५७, ८६३,
८६७-६८, ८७४, ८८३, ८९८, ९०४, ९०६। ९८, ४, ९;
९१८, ९२३। ९९, ७; ९३३। १०३, ६, ९७३। १०७, १५,
१०१४। १०८, ९; १०३४। १, ९१, १४, २३; १११४,
११२३। ८, ४८, ९; ११४३। १०, ८५, ५; ११७५।
वा०य० ५, ७; ११९४। ७, १४; १२०१। ८, २६, ५०,
१२०५, १२०८
देवः [सविता] ६७, २५, २६, ५९२, ५९३
देवतातः ९७, १९; ८७५
देवताभिः ९७, २७, ८८३
देवपानः ९७, २७; ८८३
देवप्सराः १०४, ५, ९७८
देवप्सरस्तमः १०५, ५, ९८४
देवमादनः ८४, १; ७११। १०७, ३; १००२
देवयुः ६, १; ४१। ११, २, ८७। १७, ३; १३९। ३७,
१; २६६। ४३, ५; ३०६। ५६, १; ३६८। ९७, ४;
८६०। १०६, १४; ९९९। १०८, ९, १०३४
देववातः ६२, ५; ४२२। ९६, ९; ८४१।
देववीः ३६, २; २६१
देववीतमः २५, ३; १९६। २८, ३; २१४। ४९, ३, ३३८।
६३, १६; ४६३। ६४, १२; ४८९। १०७, ७; १००६।
देवश्रुतमम् ६२, २१. ४३८
देवान् पृथक् स्वेन रसेन ९७, १२; ८६८
देवानाम् भोजः अथ० ३, ५, १, ११७६

देवानां जनिता ८६, १०; ७३७। ८७, २; ७७७
देवानां दक्षः ७६, १; ६७१
देवानां पिता ८६, १०, ७३७। ८७, २; ७७७। १०९, ४;
१०४५
देवानां ब्रह्मा ९६, ६, ८३८
देववीः २, १; ११। २४, ७, १९३। २८, ६; २१७। ६१,
१९; ४०६
देवी [पावमानीः] साम० १३०१, १२१२
देवेभ्यः मधुमत्तमः १०६, ६, ९९१
देवैः समाहृताः साम० १३०१, १२१२
द्युक्षः ५२, १; ३५१
द्युक्षतमः १०८, १; १०२६
द्युतानः ६४, १५; ४९२। ७५, ३; ६६८
द्युमान् ६१, १८, ४०५। ६४, १; ४७८। ६५, ४; ५११।
८०, २, ६९२
द्युमत्तमः ६५, १९; ५२६। १०८, ३; १०२८
द्युमवत् पयः यस्य ६६, ३०; ५६७।
द्युमवत्तमः २, २; १२
द्युमवर्धनः ३१, २; २३१
द्युम्नी १०९, ७; १०४८
द्युम्नी द्युम्नेभिः १, ९१, २; ११०२
द्रप्सः-प्सासः ६, ४; ४४। ६९, २; ६११। ७३, १;
६४८। ७८, ४; ६८४। ८५, १०; ७२९। ९६, १९,
८५१। १०, १७, ११-१३; १२३१-३३
द्रप्सः अप्सु ८९, २; ७९४
द्रप्सान् ईरयन् ९७, ५६, ९१२
द्रविणं दधानः ९६, १२; ८४४
द्रविणानि सत्यानि कृण्वन् ७८, ५; ६८५
द्रविणस्वन्तः ८५, १; ७१६।
द्रविणोवित् ९७, २५, ८८१
द्रापिं वसान ८६, १४; ७४१
द्रावयित्स्वः ६९, ६; ६१५
द्रयाविनः ८५, १; ७१६
द्विशवस् १०४, २; ९७५
धनजयः ४६, ५; ३२४। ८४, ५; ७१५
धनस्पृत् ६२, १८, ४३५
धनस्य धुर एता ९७, २९; ८८५
धनानि सनिता ९०, ३; ८०२
धमन् ७३, १; ६४८
धरुण ७४, २, ६५८

धरुणः दिवः २,५; १५ । ७२,७; ६४५ । ८६,८; ७३५
 धरुणः पृथिव्याः ८७,२; ७७७ । ८९,६; ७९८
 धर्णसिः २,२; १२ । १४,२; ११४ । २३,५; १८४ ।
 २६,३; २०२ । ३७,३; २६८ । ३८,६; २७७ ।
 ९९,५; ९३१
 धर्ता २६,२, २०१ । ६५,११; ५१८
 धर्ता दिवः ७६,१, ६७१ । १०९,६; १०४७
 धर्मणः पतिः ३५,६; २५९
 धर्माणि वसानः ऋतुथा ९७,१२; ८६८
 धात्रा परिष्कृतः ११३,४; १०८६
 धामधाः प्रथम ८६,२८, ७५५
 धाम तव बृहत् गभीरम् १,९१,३, ११०३
 धाराः अस्य ३०,१; २२४
 धारा असञ्चतः ५७,१; ३७२ । ६२,२८; ४४५
 धाराः मदिष्टा १,१, १
 धाराः मध्व ७,२; ५१
 धाराः मधुश्रुत ६२,७, ४२४
 धाराः मन्द्राः ६,१, ४१
 धाराः शतम् ५६,२; ३६९
 धाराः शर्मयन्त्यः ४१,६; २९५
 धाराः स्वादिष्टा १,१, १
 धाराः शतम् अपस्तुवः ५६,२; ३६९
 धाराः पिन्वन् ९७,३४; ८८०
 धाराभिः हियान ९८,२, ९१६
 धारयुः ६७,१; ५६८
 धासिः उत्तमः ८५,३, ७१८
 धियः पतिः ७५,२, ६६७ । ९९,६; ९३२
 धिया मनोता ९१,१, ८०६
 धियावसुः ९३,५; ८२२
 धियाहिनः ४४,२; ३०९
 धीजवः ८६,१, ७२८
 धीजवनः ८८,३; ७८७
 धीजुवः ८६,४; ७३१
 धीनां अन्तः सवर्द्ध १२,७; १०१
 धीरः ९२,३; ८१४ । ९३,१, ८१८ । ९७,३०,४६;
 ८८६,९०२ । ६,४७,३; ११२९ । ८,४८,४; ११३८
 धूतः अप्सु ६२,५, ४२२
 धूतः नृभिः १०७,५, १००४
 धृणुः ४७,२; ३२७ । ९९,१; ९२६ । १०८,६; १०३१
 ध्रुवः ८६,६; ७३३ । १०१,१२, ९५५ । १०२,४; ९६३

नक्तं ऋजः ९७,९; ८६५
 नप्त्योः हितः ९,१; ६८
 नभः वसानः ८३,५; ७१०
 नर्यः १०५,५; ९८४ । १०७,१; १०००
 नवः ८६,३६, ७६३
 नाम दधानः ९२,२; ८१३
 निक्तः १०९,१०; १०५१
 नित्यस्तोत्रः १२,७, १०१
 निधापतिः ८३,४; ७०९
 निरिणानः १४,४, ११६
 निर्णिक् ८६,४६, ७७३
 निर्णिजानः ६९,५, ६१४
 नृचक्षाः ८,९; ६७ । ४५,१, ३२५ । ७८,२; ६८२ ।
 ८०,१, ६७१ । ८६,२३,३६,३८; ७५०,७६३,७६५ ।
 ९२,२; ८१३ । ९७,२४; ८८० । १,९१,२; ११०२ ।
 ८,४८,९,१५; ११४३,११४९
 नृधूतः ७२,४; ६४२
 नृभिः धूतः १०७,५; १००४
 नृभिः यतः १०८,१५; १०४०
 नृभिः येमानः ७५,३, ६६८ । १०७,१६; १०१५ । १०९,
 ८,१८; १०४९,१०५९
 नृमादनः २४,४; १२० । ६७,२; ५६९
 नृम्णा दधानः भोजसा १५,४, १२४
 नृम्णानि बिभ्रत् ४८,१; ३३१
 नृषा २,१०, २०
 पञ्जायाः गर्भः ८२,४, ७०४
 पतिः ६५,१; ५०८ । ९७,२२; ८७८
 पतिः गवाम् ७२,४, ६४२ ।
 पतिः जनीनाम् ८६,३२, ७५९
 पतिः दिवः ८६,११,३३; ७३८,७६०
 पतिः दिशाम् ११३,२; १०८४
 पतिः धियः ७५,२; ६६७ । ९९,६, ९३२
 पतिः भुवनस्य ३१,६; ३३५
 पतिः मदानाम् १०४,५; ९७८
 पति रयीणाम् १०१,६; ९४९
 पतिः वाचः २६,४; २०३
 पति विश्वस्य भुवनस्य ८६,५; ७३२
 पतिः वीरुषाम् ११४,२, १०९५
 पतिः सिन्धूनाम् १५,५; १२५
 पतिः हरीणाम् १०५,५; ९८४

पत्नीवान् वा० य० ८,९; १२०३
 पत्न्यन् कुकूनानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् भन्दनानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् मदन्तमानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् मधुन्तमानाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पत्न्यन् मेशीनाम् वा० य० ८,४८; १२०६
 पथिकृत् १०६,५; ९९०
 पदवीः कवीनाम् ९६,६,१८, ८३८, ८५०
 पनिमत् ६७,२९; ५९६। ८५,११; ७२६। ८६,३१,
 ४६; ७५८,७७३।
 पट्टचान् अङ्गिः ७४,९, ६६५
 पप्रिः पृतनासु १,९१,२१; ११२१
 पयः अस्थ ५४,१; ३६०
 पयः ऋषिम् ५४,१, ३६०
 पयः सुतम् ५४,१; ३६०
 पयः सुन्नवत् ६६,३०; ५६७
 पयः दिवः आभृतम् ६६,३०; ५६७
 पयः प्रलम् ५४,१; ३६०
 पयः शुक्रम् ५४,१; ३६०
 पयः सहस्रसाम् ५४,१; ३६०
 पयः ओषधीनाम् [पर्णमणिः] अथ० ३,५,१; ११७६
 पयः पयसा आभिर्ग्रीणन् ९७,४३; ८९२
 पयसा पिन्वमानः ९७,१४; ८७०
 पयोवृध् ८४,५; ७१५
 पयोवृधः १०८,८; १०३३
 परस्मिन् धामन् ऋतः १,४३,९; ११००
 परायतिः ७१,७; ६३६
 परिप्रयन् ६८,८; ६०७
 परिप्रयन् ६८,६; ६०५। ७१,९; ६३८
 परिषिष्यमानः ६८,१०; ६०९। ९७,१४,३६; ८७०,८९२
 परिष्कृष्यन् अनिष्कृतम् ३९,२; २७२
 परिष्कृतः अथ क्षपा ९९,२; ९२८
 परिष्कृतः गीर्भिः ४३,३; ३०४
 परिष्कृता गोभिः ६१,१३; ४००
 परिष्कृतः धाम्ना ११३,४; १०८६
 परिष्कृतः मसिभिः १०५,२; ९८१
 परिष्कृतः विश्वाभिः मसिभिः ८६,२४; ७५१
 परिष्कृतासः ४६,२; ३२१
 पर्जन्यः पिता ८२,३; ७०३
 पर्जन्यवृधः ११३,३; १०८५

दै० [सोमः] १६

पर्ण [देवता] अथ० ३,५,४,६-८; ११७२,११८१-
 ११८३
 पर्णमणि [देवता] अथ० ३,५,१,२,५; ११७६,११७७,
 ११८०
 पर्णी ८२,३; ७०३
 पर्वतावृधः ४६,१; ३२०
 पवमानः ३,२,३,५,७,८, २२,२३,२५,२७,२८। ४,१;
 ३१। ७,५, ५४। ९,९; ७६। ११,१,९, ८६,९४।
 १३,२,८, १०५,१११। १२,६, १५७। २०,२; १६०।
 २३,३; १८२। २५,२, १२५। २६,३,६, २१३,
 २१६। २७,४,५; २२०,२२१। २८,५, २१६।
 ३०,४, २२७। ३५,१, २५४। ३६,३; २६२।
 ३७,३,४; २६८,२६९। ४०,४, २८७। ४१,३;
 २९२। ४३,४; ३०५। ४६,६; ३२५। ४९,५,
 ३४०। ५०,३, ३४३। ५१,३; ३४८। ६०,१,३;
 ३८४,३८६। ६१,४,१६-१८,२६, ३९१,४०३-४०५,
 ४१३। ६२,१०,११,१६,३०, ४२७,४२८,४३३,४४७।
 ६३,८,२३; ४५५,४७०। ६४,६,९,२४; ४८४,४८६,
 ५०१। ६५,२-४,७,११,१६, ५०९-५११,५१४,५१८,
 ५२३। ६६,२,३,१०,२२,२४-२७,३०, ५३९,५४०,
 ५४७,५५९,५६१-५६४,५६७। ६७,९,२१,२२; ५७६,
 ५८८,५८९। ६९,२; ६११। ७२,९, ६४७। ७४,९;
 ६६५। ७६,३; ६७३। ७८,३,५; ६८३,६८५।
 ७९,३, ६८८। ८०,५; ६२५। ८१,१,३-५; ६९६,
 ६९८-७००। ८५,८; ७२३। ८६,१,४,६,१२,१३,
 १८,२४,२८-३०,३४,३५,३८,४४; ७२८,७३१,७३३,
 ७३९,७४०,७४५, ७५१, ७५५-७५७, ७६१, ७६२, ७६५,
 ७७१। ८८,५; ७८९। ८९,१; ७९३। ९०,५;
 ८०४। ९१,३; ८०८। ९२,४,५, ८१५, ८१६।
 ९३,४; ८२१। ९४,५; ८२७। ९६,४,७,८,११,
 २१, २३, २४, ८३६, ८३९, ८४०, ८४३, ८५३, ८५५,
 ८५६। ९७,८,१४,२४,३१,४१,४४,५८; ८६४, ८७०,
 ८८०, ८८७, ८९७, ९००, ९१४। १००, ७, ८, ९, ९४१,
 ९४२, ९४३। १०१,९; ९५२। १०३,६, ९७३।
 १०६,१०; ९९५। १०७,११,१५,२१,२२; १०१०,
 १०१४, १०२०, १०२१। १०८,३, १०२८। ११०,२;
 ३,९,१०; १०६५, १०६६, १०७२, १०७३। ११३, ७;
 १०८९। ११४,१; १०९४। ८, १०१, १०४; ११५२।
 पवमाना-नासः १३,९, ११२। २१,४; १६२। २४,१,
 १८७। ३१,१; २३०। ५९,४; ३८३। ६३,२५-
 २७; ४७२-४७४। ६७,७; ५७४। ६९,९; ६१८।

८५,७; ७२२ । ८७,५; ७८० । १०१,८; ९५१ ।
 १०७,२५; १०२४ ।
 पवित्रः ३९,३,४; २८०,२८१
 पवित्रम् अभि उन्दन् ६१,४; ३९१
 पवित्र. तपोः ८३,२; ७०७
 पवित्र रथः ८३,५, ७१० । ८६,४०; ७६७
 पवित्रवन्तः ७३,३; ६५० । १०१,४, ९४७
 पवित्रे विततः ७३,९, ६५६
 पश्यन् अन्तः ९६,७; ८३९
 पस्यावान् ९७,१८; ८७४
 पाञ्चजन्यः [अग्निः] ६६,२०; ५५७
 पात् (पान्तम् द्वि०) ६५,२८-३०; ५३५-५३७
 पावक २४,६,७; १९२,१९३ । ९७,७; ८६३
 पावमानीः साम० १३००-१३०३; १२११-१२१४
 पाशिनः ७३,४, ६५१
 पिता ७३,३; ६५० । ८७,२, ७७७
 पिता देवानाम् ८६,१०, ७३७ । ८७,२; ७७७ । १०९,४;
 १०४५
 पिता मतीनाम् ७६,४, ६७४
 पिन्वन् धारा. ९७,३४; ८९०
 पिन्वमानः पयसा ९७,१४, ८७०
 पीयूषः १०९,३,६; १०४४, १०४७
 पीयूषम् दिवः उत्तमम् ५१,२, ३४७
 पुनान.-ना.-नामः ६,९; ४९ । ८,२,३,६; ६०,६१,
 ६४ । ९,७, ७४ । १६,६,८; १३४,१३६ । १८,७,
 १५१ । १९,१,३, १५२,१५४ । २०,५; १६३ ।
 २४,२, १८८ । २५,४; १९७ । २७,१,६, २०६,
 २११ । २८,६; २१७ । ३०,१, २२४ । ३५,५,६,
 २५८,२५९ । ४०,१,५,६; २८४,२८८,२८९ । ४२,५;
 ३०० । ४३,३; ३०४ । ५४,३,४; ३६२,३६३ ।
 ५७,४, ३७५ । ६१,६,२३,२७; ३९३,४१०,४१४ ।
 ६२,२३; ४४० । ६३,२८; ४७५ । ६४,१४,१५,२५,
 २६,२७, ४९१,४९२,५०२,५०३,५०४ । ६६,२८;
 ५६५ । ६८,९; ५९७ । ८६,३,२१, २५, ३३, ४७,
 ७३०,७४८,७५२,७५३,७६०,७७४ । ८७,१,९; ७७६,
 ७८४ । ९१,४,६; ८०२,८११ । ९२,३,६; ८१४,
 ८१७ । ९३,५, ८२२ । ९५,१, ८२८ । ९६,३,२३;
 ८३५,८५५ । ९७,६,१२,१८,२५,२७,३७,३८,४५;
 ८६२, ८६८, ८७४, ८८१, ८८३, ८९३, ८९४, ९०१ ।
 ९७,४७; ९०३ । ९९,४,६; ९३०,९३२ । १००,२;

९३६ । १०३,१,४,५; ९६८,९७१,९७२ । १०५,१;
 ९८० । १०६,९; ९९४ । १०७,२,४,६; १००१,
 १००३,१००५ । १०९,९; १०५० । ११०,१०,११;
 १०७३,१०७४ । १११,१; १०७६
 पुनानः चमूः १०७,१८; १०१७
 पुनानः तन्वं अरेषसम् ७०,८; ६२७
 पुनानः देववीतये ६४,१५, ५०२
 पुनानः नृभि ७५,५; ६७०
 पुनानः ब्रह्मणा ११३,५; १०८७
 पुनानः मतिभिः ९६,१५; ८४७
 पुनानः वारम् ८२,१; ७०१
 पुर एता महतः धनस्य ९७,२९, ८८५
 पुरन्धिवान् ७२,४; ६४२
 पुरुकृत् ९१,५; ८१०
 पुरुक्षुः ९१,५, ८१०
 पुरुत्राः १०,२५,६; ११६५
 पुरुमेधः ९७,५२; २०८
 पुरुवातः ९३,२; ८१९ । ९६,२४; ८५६
 पुरुवतः ३,१०; ३०
 पुरुष्टतः ७२,१; ६३९ । ७७,४, ६७२
 पुरुष्टृहः ६५,२८-३०; ५३५-५३७ । १०२,६; ९६५
 पुरुहूतः ५२,४; ३५४ । ८७,६; ७८१
 पुरोरुक् ९८,१२, ९२६
 पुरोजिती १०१,१; ९४४
 पुरोहितः [अग्निः] ६६,२०; ५५७
 पुष्टिवर्धनः १,९१,१२; १११२
 पृत.-ताः २३,३, १७५ । ६७,३१; ५२८ । ९७,३१;
 ८८७ । १०१,१२; ९५५ । १०९,८; १०४९
 पूयमानः ८७,६; ७८१ । ९२,१; ८१२ । ९६,१०,२१;
 ८४२,८५३ । ९७,१,२,३६,३९,४२,४८-५१, ८५७,
 ८५८,८९२,८९५,८९८,९०४-९०७ । १०६,९; ९९४
 पूयमानः धन्वा ९७,३, ८५९
 पूयमानः सोमभिः ९६,१६; ८४८
 पूर्मित् ८८,४; ७८८
 पूर्वासः ७७,३; ६७८
 पूर्य ३६,३; २६२ । ६७,८; ५७५ । ७७,२; ६७७ ।
 ८६,२०; ७४७ । ९६,१०; ८४२ । १०९,७; १०४८
 प्रञ्चन् देवान् स्वेन रसेन ९७,१२, ८६८
 प्रतनासु पभिः १,९१,२१, ११२१
 प्रसु वन्वन् ९६,८; ८४०

पृथिव्यै शम् १०९, ५; १०४६
 पृथिव्या जननः २, ४०, १; १२१७
 पृथिव्याः जनिता ९६, ५; ८३७
 पृथिव्याः धरुणः ८७, २; ७७७ । ८९, ६; ७९८
 पृथिव्याः नाभा ७२, ७; ६४५
 पेरवः ७४, ४; ६६०
 पोता ६७, २२; ५८९
 प्रच्युतः ८०, ४; ६९४
 प्रजायै शम् १०९, ५; १००६
 प्रतपन् ज्योतिषातमः १०८, १२; १०३७
 प्रतरणः १, ९१, १९; १११९
 प्रतरीता अह्नः ८६, १९; ७४६
 प्रतरीता उषसः ८६, १९; ७४६
 प्रतरीता दिवः ८६, १९, ७४६
 प्रतनः-स्नास २३, २; १८१ । ७३, ३; ६५० । ९८, ११;
 '९२५
 प्रतनवत् ९१, ५; ८१०
 प्रथमः १०७, २३; १०२२
 प्रथमः धामधा ८६, २८; ७५५
 प्रथमः मनीषी ९१, १; ८०६
 प्रथमः युत्सु ८९, ३; ७९५
 प्रभुः ८३, ४; ७०६ । ८६, ५; ७३२
 प्रभूवसुः २९, ३; २२० । ३५, ४; २५९
 प्रभूवत् २९, १; २१८
 प्रथसे हितः ६६, २३; ५६०
 प्रयस्मान् ६६, २३; ५६०
 प्रवृण्वन्तः २१, २; १६७
 प्रसुपः ६९, ६; ६१५
 प्रस्थिता ६९, ८; ६१७
 प्रियः ७, ६; ५५ । १०, ९; ८५ । २५, ३; १९६ ।
 ५०, ३; ३४३ । ६३, २३; ४७० । ६४, १०, २७;
 ४८७, ५०४ । ६७, २९; ५९६ । ७९, ५; ६९० । ८५, २;
 ७१७ । ९६, ९; ८४१ । ९७, ३; ८५९ । १०२, २;
 ८६१ । १०७, ५, ६, १३; १००४, १००५, १०१२ ।
 १०८, ८; १०३३ । १०, २५, १०; १०६९ । अथ०
 ३, ५, ३-४; ११७८, ११७९
 प्रियः हृन्मस्य ९८, ६; ९२० । १०२, १; ९३५
 प्रियस्तोभः १, ९१, ६; ११०६
 पसरः ७४, ३; ६५९

बभ्रुः ११, ४; ८९ । ३१, ५; २३५ । ३३, २; २४३ ।
 ६३, ४, ६; ४५१, ४५३ । ९८, ७; ९२१ । १०७, १९-
 ३०; १०१८-१०१९ ।
 बर्हिषि प्रिय ७२, ४; ६४२ । १०७, १५; १०१४ ।
 १०८, ८; १०३३ । ११३, ५; १०८७
 बर्हिष्मान् ४४, ४; ३११
 बली [पर्णमणिः] अथ० ३, ५, १; ११७६
 बाधमान मृधः ९७, ४३; ८९९
 बार्हतै रक्षितः १०, ८५, ४; ११७४
 बिभ्रत् आयुधानि ९६, १९, ८५१
 बिभ्रत् नृम्णानि ४८, १; ३३१
 बिभ्रत् विश्वा वसुनि १०८, ११, १०३६
 बृहत् ६६, २४; ५६१ । ७५, १; ६६६
 बृहन्मतिः ३९, १; २७८
 बृहस्पतिस्तुतः वा०य० ८, ९, १२०३
 ब्रह्मणस्पतिः ८२, १; ७०६
 ब्रह्मणा पुनानः ११३, ५; १०८७
 ब्रह्मा देवानाम् ९६, ६; ८३८
 ब्राह्मणेषु हितम् साम० १३००; १२११
 भृगः ९७, ५५; ९११
 भङ्गः ६१, १३; ४००
 भद्र १, ९१, ५, ११०५
 भद्रान् कृण्वन् ९६, १ ८३३
 भरमाणः रुशन्तं वर्णम् ९७, १५; ८७१
 भराय सानसि १०६, २, ९८७
 भरेषु राजा १, ९१, २१; ११२१
 मानुः ८५, १२; ७२७
 भीमः ७०, ७; ६२६ । ९७, २८, ८८४
 भुवना विश्वा संपश्यन् १०, २५, ६; ११६५
 भुवनस्य पतिः ३१, ६; २३५
 भुवनस्य राजा ९६, १०; ८४२ । ९७, ४०, ८९६
 भुवनस्य विश्वस्य गोपा २, ४०, १, १२१७
 भुवनस्य विश्वस्य राजा ९७, ५६, ९१२
 भुवनेषु अर्पितः ८६, ४५; ७७२
 भूरिचक्षाः २६, ५, २०४
 भूरिधायाः २६, ३; २०२
 भूरिषाद् (साह्) ८८, २, ७८६
 भूर्णयः १७, १, १३७ । ४१, १; २९०
 भूषन् देवेषु यशः मर्ताय ९४, ३; ८२५
 भ्रमाः २२, २; १७४

मंहना ३७,६; २७१
 मंहयद्रविः ५२,५; ३५५ । ६७,१, ५६८
 मंहयुः २०,७; १६५
 मंहयीयान् भूरिदाभ्यः चित् ६६,१७, ५५४
 मंहिष्ठः १,३, ३ । १०२,६; ९६५
 मघवा ८०,३; ६९८
 मघवा मघवद्भ्यः ९७,५५; ९११
 मघवा वीरेभिः अश्वैः ९६,११; ८४३
 मणि [पर्णमणि] अथ ३,५,३,८; ११७८,११८३
 मतवान् ८६,१३; ७४०
 मर्ति जनयन् १०७,१८; १०१७
 मत्तिभिः परिष्कृतः १०५,२, ९८१
 मात्तिभिः पुनानः ९६,१५; ८४७
 मतीनां जनिता ९६,५, ८३७
 मतीनां परि (ने) णेता १०३,४; ९७१
 मतीनां पिता ७६,४, ६७४
 मती जुष्टः ४४,२; ३०९
 मत्सर-रासः १३,८; १११ । १७,३; १३९ । २१,१;
 १६६ । २६,६, २०५ । २७,५; २१० । ३०,६, २२९ ।
 ३४,४; २५१ । ४६,४,६; ३२३,३२५ । ५३,४, ३५९ ।
 ६३,१०,१७,२४; ४५७,४६४,४७१ । ६५,१०; ५१७ ।
 ६६,७, ५४४ । ६९,६; ६१५ । ७२,७, ६४५ । ८६,१०,
 २१, ७३७, ७४८ । ९६,८,१३; ८४०,८४५ । ९७,११;
 ८६७ । १०७,१४,२३,२५, १०१३,१०२२,१०२४
 मत्सरवान् ९७,३२; ८८८
 मत्सरिन्तम ६३,२; ४४९ । ६७,२; ५६९ । ७६,५;
 ६७५ । ९९,८; ९३४
 मद्-दा-दाम १७,३; १३९ । २३,७; १८६ । २५,१;
 १९४ । २७,५, २१० । ४६,६, ३२५ । ६१,१७,
 १९, ४०४,४०६ । ६२,१४; ४३१ । ६३,१६; ४६३ ।
 ६८,३; ६०२ । ६९,७; ६१६ । ७८,४; ६८४ ।
 ७९,५; ६९० । ८०,२, ६९२ । ८५,२; ७१७ ।
 ८६,१-२,३५, ७२८-७२९,७६२ । ९७,२; ८५८ ।
 ९९,३; ९२९ । १०१,४, ९४७ । १०४,२; ९७५ ।
 १०५,२, ९८१ । १०७,१७; १०१६ । १०८,१; १०२६ ।
 १०,२५,१०, ११६९
 मद्ध्युत् १२,३, ९७ । ३२,१; २३६ । ५३,४; ३५९ ।
 ७९,२; ६८७ । १०८,११; १०३६
 मदानां पतिः १०४,५; ९७८
 मदिन्तम १५,८; १२८ । २५,६; १९९ । ५०,४,५;

३४४,३४५ । ६७,१८; ५८५ । ७४,९; ६६५ । ८०,३;
 ६९३ । ८५,३; ७१८ । ८६,१,१०; ७२८,७३७ ।
 ९६,१३; ८४५ । ९९,६; ९३२ । १०८,५,१५; १०३०,
 १०४० । १,९१,१७; १११७
 मदिर-रासः ८५,७; ७२२ । ८६,२; ७२९ । ९७,१५;
 ८७१ । १०७,१२; १०११ ।
 मदिष्ठः ६,९; ४९ । ६,४७,२; ११२८
 मदाः ते आहनसः विहायसः ७५,५; ६७०
 मदाय जुष्टः ९७,१९; ८७५
 मदेष्टु सर्वधाः १८,१-७; १४५-१५१
 मद्यः ३८,५, २७६ । ८६,३५, ७६२
 मद्वा ८६,३५; ७६२
 मधु ११,५, ९० । १८,२; १४६ । ३९,१; २८२ ।
 ५१,३; ३४८ । ६९,२, ६०० । ७०,८; ६२७ । ७१,४;
 ६३३ । ७२,२; ६४० । ७४,३; ६५९ । ८,४८,१; ११३५
 मधुजिह्वाः ७३,४; ६५१
 मधुपृष्ठः ८९,४; ७९६
 मधुमान्-मन्तः ६१,९; ३९६ । ६३,३; ४५० । ६८,१,
 ८; ६००,६०७ । ६९,२; ६११ । ८०,५; ६९५ ।
 ८५,१०; ७२५ । ७७,१; ६७६ । ८५,६; ७२१ ।
 ८६,१; ७२८ । ८७,४; ७७९ । ९६,१३; ८४५ ।
 ९७,४८, ९०४ । १०६,७; ९९२ । ११०,११; १०७४ ।
 ६,४७,१; ११२७
 मधुमत्तम-माः १२,१; ९५ । ३०,५-६; २२८-२२९ ।
 ५१,२; ३४७ । ६२,२१; ४३८ । ६३,१६,१९;
 ४६३,४६६ । ६४,२२; ४९९ । ६७,१६; ५८३ ।
 ८०,४; ६९४ । १००,६; ९४० । १०१,४; ९४७ ।
 १०५,३; ९८२ । १०८,१,१५; १०२६,१०४०
 मध्व. अंशुः ८९,६; ७९८
 मध्वः अयासः ८९,३; ७९५
 मध्वः रसः ६२,६; ४२३
 मध्वः सूदः ९७,४४; ९००
 मधुश्चुत् ५०,३; ३४३ । ६५,८; ५१५ । ६६,११; ५४८ ।
 ६७,९; ५७६
 मनः चित् ११,८; ९३
 मनसः जवीयान् ९७,२८; ८८४
 मनसस्पतिः ११,८; ९३ । २८,१; २१२
 मनीषी विष्णः ६५,२९; ५३६ । ७८,३; ६८३ । ९६,८;
 ८४० । ९७,५६; ९१२ । १०७,१४; १०१३
 मनीषी प्रथमः ९१,१; ८०६

मनुषः ७२,४; ६४२
 मनोता धिया २१,१; ८०६
 मन्दमानः ६५,५; ५१२
 मन्दयन् ६७,१६; ५८३
 मन्वानः ४७,१; ३२६
 मन्वी-न्दिनः ५८,१,४; ३७६,३७७ । १०१,४; ९४७ ।
 १०७,९; १००८
 मन्त्रः ६५,२९; ५३६ । ६७,१; ५६८ । ६८,६; ६०५ ।
 १०९,८; १०४९
 मन्त्रतमाः ९७,२६; ८०२
 मयोधूः ६५,२८; ५३५ । ७८,४, ६८४
 मरुत्तणः ६६,२६; ५६३
 मरुत्वान्-वन्तः १०७,२५; १०२४ । ६,४७,५; ११३१
 मर्त्यः १५,७; १२७ । ३४,४; २५१ । ६३,२०, ४६७ ।
 १०७,१३; १०१२
 मर्त्यानां राजा ९७,२४, ८००
 मर्त्यजानः-नास ६४,१७, ४९४ । ७०,५; ६२४ । ९१,२;
 ८०७ । ९५,४; ८३१
 मर्त्यजानः भविभिः ८६,११, ७३८
 मर्त्यजानः आयुभिः ५७,३; ३७४ । ६६,१३, ५६०
 मर्त्यजानः सिन्धुभिः ८६,११; ७३८
 मर्त्यजमानः ८५,५; ७२०
 मर्त्यजमानः आयुभिः ६२,१३; ४३०
 मर्त्यः ९७,१८; ८७४
 महः ७२,७; ६४५
 महाम् (द्वि०) ६५,१; ५०८
 महान् २,४,६; १४,१६ । ९,३, ७० । ६६,१६; ५५३ ।
 ७७,५, ६८० । १०९,४; १०४५ । ६,४७,५; ११३७
 महान् जायमानः ५९,४, ३८३
 महागयः [अग्निः] ६६,२०; ५५७
 महामहिमतम् ४८,२; ३३२
 महि ७४,३; ६५९ । १०८,१; १०२६
 महिमतः ९७,७; ८६९ । १०२,९; २४३
 महिषः ८२,३; ७०३ । ८६,४०; ७६७ । ९६,१८,१९;
 ८५०,८५१ । ९७,४१; ८९७ । १०३,५; १००४ ।
 ११३,३; १०८५
 महिषः मृगाणाम् ९६,६; ८३८
 महीनां शिष्टः १०२,१; ९६०
 महे (च०) ६५,७; ५१४
 मादयन् देवजनम् ८०,५; ६२५ । ८४,३; ७१३

मादयितुः १०१,१; ९४४
 भिक्षमाणः ७०,२; ६२१
 मित्रः-त्राः ७७,५; ६८० । १०२,१०; ९५३ । १,९१,३;
 ११०३
 मित्राय जुष्टः १०८,१६; १०४१
 मीद्वान् ६१,२३, ४१० । ७४,७, ६६३ । ८५,४; ७१९ ।
 १०७,७, १००६ । ८,७९,९; ११५८
 मूर्धा १,४३,९; ११००
 मृगाणां महिष ९६,६; ८३८
 मृजानः भञ्जि १०९,१७; १०५८
 मृजानः अप्सु ९६,१०, ८४२
 मृजानः तन्वम् ९६,२०; ८५२
 मृज्यमानः ३०,२; २२५ । १०७,२१; १०२०
 मृज्यमान कविभिः ७४,९; ६६५
 मृज्यमानः गभस्त्वोः २०,६; १६४ । ३६,४; २६३ ।
 ६४,५, ४८२ । ६५,६; ५१३
 मृज्यमानः मनीषिभिः ६४,१३; ४९०
 मृज्यमानः सुकर्मभिः दशभिः ७०,४; ६२३
 मृधः बाधमान ९७,४३; ८९९
 मृष्टाः २२,४; १७६
 मृत्वाकुः ८,७९,७, ११५६
 मेधिरः ६८,४; ५९२
 मेघ्यः १०७,११; १०१०
 यज्ञः १०१,३; ९४६
 यज्ञपतिः वा०य० ८,२५; १२०४
 यज्ञसाधनः ७२,४; ६४२
 यज्ञस्य आत्मा ६,८; ४८
 यज्ञस्य केतुः ८६,७; ७३४
 यज्ञस्य ज्योतिः ८६,१०; ७३७
 यज्ञस्य पूर्व्यः आत्मा २,१०; २०
 यज्ञियः ७१,६; ६३५ । ७७,५; ६८०
 यतः ६४,२९; ५०६
 यतः नृभिः १०८,१५; १०४०
 यतः वाजिभिः ६४,१५; ४९२
 यतः वृषभिः ३४,३; २५०
 यतिः ७१,७, ६३६
 यशाः अथ० ६,५८,३; १२५४
 यशसः ८,४८,५; ११३९
 यशस्तरः ९७,३; ८५९
 यातयन् हवः जनाय ३९,२; २७९

युजानः पदं ऋक्भिः ६४, १९; ४९६
 युजानः वृषभिः ९७, २८; ८८४
 युजानः हरितः ८६, ३७; ७६४
 युस्तु भषाळहः १, ९१, २१; ११२१
 युस्तु प्रथमः ८९, ३; ७९५
 युवा ९, ५, ७२। ६७, २९, ५९६
 येमानः नृभिः ७५, ३; ६६८। १०७, १६; १०१५।
 १०९, ८, १८; १०४९, १०५९
 र्हमाणः ११०, ३; १०६६
 रक्षमाणः वृजनम् ८७, २, ७७७
 रक्षांसि अपजङ्घनत् ४९, ५; ३४०
 रक्षांसि सेधन् ११०, १२; १०७५
 रक्षित बार्हतेः १०, ८५४; ११७४
 रक्षोहा १, २; २। ३७, ३; २६८। ६७, २०; ५८७
 रघुयामा ३९, ४, २८१
 रघुवर्तनिः ८१, २, ६९७
 रजस्तुरः ४८, ४; ३३४। १०८, ७; १०३२
 रण्यः ९६, ९, ८४१।
 रण्यजित् ५९, १; ३८०
 रत्ना दधानः दमेदमे सप्त ६, ७४, १; १२२३
 रत्नानि दाशुषे दधत् ३, ६; २६
 रथः ३८, १; २७२
 रथजित् ७८, ४; ६८४
 रथिरः ९७, ४६, ४८; ९०२, ९०४
 रथिरः गविष्टिषु ७६, २, ६७२
 रथीतमः ६६, २६; ५६३
 रथ्यः १६, २; १३०
 रन्ता विश्वेषु काव्येषु ९१, ३; ८१४
 रथिपतिः २, ४०, ६; १२२२
 रथिपतिः रथीणाम् ९७, २४; ८८०
 रथिषाट् ६८, ८; ६०७
 रथि तुज्जानः ८७, ६; ७८१
 रथीणां जननः २, ४०, १; १२१७
 रथीणां पतिः १०१, ६; ९४९
 रथीणां रथिपतिः ९७, २४; ८८०
 रथीणां सिंघासतुः ४७, ५; ३३०
 रसः ६, ६; ४६। ३८, ५; २७६। ६२, ६, ४२३। ७६, १;
 ६७१। ७७, ५, ६८०। ७९, ५; ६९०। ८४, ५; ७१५
 रसः इन्द्रियः ४७, ३; ३२८। ८६, १०; ७३७
 रसः सोम्यः ६७, ८; ५७५
 रसः संभृतः ऋषिभिः ६७, ३१, ३२; ५९८, ५९९

रसवान् ६, ४७, १. ११२७
 रसः यस्य मघः तीव्रः ६५, १५; ५२२
 रसाय्यः ९७, १४, ८७०
 रसी ११३, ५; १०८७
 राजा १०, ३; ८८। ४८, ३; ३३३। ६१, १७; ४०४।
 ६५, १६; ५२३। ७८, १; ६८१। ८३, ५; ७१०।
 ८५, ३, ९, ७१८, ७२४। ८६, ८, ४०, ४५; ७३५, ७६७,
 ७७२। १०७, १५, १६; १०१४, १०१५। १०८, ८,
 १०३३। ११३, ४; १०८६। ११४, २, ४, १०९५, १०९७।
 ८, ७९, ८, ९; ११५७, ११५८। १०, २५, ७; ११६६।
 १, ९१, ३-५; ११०३-११०५। ६, ७५, १८; १२२८।
 १०, १६७, ३; १२३९। अथर्व० ५, ३, ७; ११८७।
 ६, ६८, ३, १२५५। ६, ९९, ३, १२६०। वा० य०
 २, २६; ११९६
 राजा देवानाम् ९७, २४; ८८०
 राजा भुवनस्य ९६, १; ८४२। ९७, ४०; ८९६
 राजा मर्त्यानाम् ९७, २४; ८८०
 राजा विश्वस्य ७६, ४; ६७४
 राजा विश्वस्य भुवनस्य ९७, ५६; ९१२
 राजा वृजनस्य ९७, १०; ८६६
 राजा वृजन्यस्य ९७, २३; ८७९
 राजा सिन्धूनाम् ९६, ३३; ७६०। ८९, २; ७९४
 रायाम् आनेता १०८, १३; १०३८
 रिशादाः ६९, १०; ६१९
 रीत्यापः १०६, ९; ९९४
 रुजत् वि द्दहा ३४, १; २४८
 रुक्षणिः शतं पुरः ४८, २; ३३२
 रेतोषाः ८६, ३९; ७६६
 रेभः ७, ६; ५५। ६६, ९; ५४६। ८६, ३१; ७५८
 रेभन् ९६, ६, १७; ८३८, ८४९। ९७, १, ७, ४७; ८५७,
 ८६३, ९०३। १०६, १४, ९९९
 रोचना दिवः ३७, ३; २६८
 रोचमानः १११, २; १०७७
 रोचयन् रुचा प्रत्यवत् ४९, ५; ३४०
 रोदस्योः जनिता ९०, १; ८००
 लोककृत् ८६, २१; ७४८
 लोककृत् २, ८; १८
 वृक्षा ७५, २; ६६७
 वचोविद् ९१, ३; ८०८
 वज्रः इन्द्रस्य ७२, ७; ६४५। ७७, १; ६७६

वज्रः सहस्रसा भुवत् ४७,३, ३२८
वत्सः १९,४, १५५
वदन् ऋतम् ११३,४, १०८६
वदन् अद्वयम् ११३,४, १०८६
वदन् सत्यम् ११३,४, १०८६
वधस्तुः ५२,३, ३५३
वधूयुः ६९,३, ६१२
वनकक्षः १०८,७, १०३२
वनवत् ७७,४, ६७९
वनस्पतिः १,९१,६, ११०६
वना वसानः ९०,२, ८०१
वनानां स्वधितिः ९६,६, ३८
वने क्रीळन् ६,५, ४५ । १०६,११, ९९६
वने चक्रदः १०७,२२, १०२१
वन्धन् पृथु ९६,८, ८४०
वपुष्टरः वपुषः ७७,१, ६७६
वयः ८,४८,१, ११३५
वयस्कृतः २१,२, १६७ । ६९,८, ६१७
वयोयुवः ६५,२६, ५३३
वयोधाः ८१,३, ६९८ । ९०,२, ८०१ । ९६,१२, ८४४ ।
११०,११, १०७४ । ८,४८,१५, ११४९
वयः ६८,८, ६०७
वरः ९७,२२, ८७८
वराहः ९७,७, ८६३
वरिवांसि कृण्वन् ९७,१६, ८७२
वरिवोचातमः १,३, ३
वरिवोविद्-दः २१,२, १६७ । ३७,५, २७० । ६१,१२, ३९९ । ६२,९,४२६ । २६,१२, ८४४ । ११०,११, १०७४
वरिवोवित्तरः ८,४८,१, ११३५
वरुणः ७३,३, ६५० । ७७,५, ६८० । ९५,४, ८३१ ।
१,९१,३, ११०३
वरुणेन शिष्टः अथ० ३,५,४, ११७९
वरुणाय जुष्टः १०८,१६, १०४१
वरुण्य उरु ८,७९,३, ११५२
वरुण्यः ६१,१९, ४०६
वर्णम् ६५,८, ५१५
वर्धनः ९७,३९, ८९५
वर्धन्तः इन्द्रम् ६३,५, ४५२
वर्धयन् ५१,४, ३४९
वर्धिता ९७,३९, ८९५

वर्षासि दुहितुः तिरोदधानः ९७,४७, ९०३
वर्षयन् ग्राम् उत इमाम् ९६,३, ८३५
वशी वा०य० ८,५०, १२०८
वसानः अपः १६,२, १३० । ७८,१, ६८१ । ८६,४०;
७६७ । ९६,१३, ८४५ । १०७,४, १८,२६, १००३,
१०१७,१०२५ । १०९,२१, १०६२
वसानः ऊर्जम् ८०,३, ६९३
वसानः गाः अपः ४१,१, २९६
वसानः घृतम् ८२,२, ७०२
वसानः द्रापिम् ८६,१४, ७४१
वसानः नभः ८३,५, ७१०
वसानः नृग्या ७,४, ५३
वसानः भद्रा वस्त्रा २७,२, ८५८
वसानः वना ९०,२, ८०१
वसानः शर्म त्रिवरुथम् अप्सु ९७,४७, ९०३
वसुः ९८,५, ९१९
वसुविद् ८६,३९, ७६६ । ९६,१०, ८४२ । १०१,११;
२५४ । १०४,४, ९७७ । १,९१,१२, १११२
वसु आदधानः ९०,१, ८००
वसूनि विश्वा बिभ्रत् १०८,११, १०३६
वसूनाम् आनेता १०८,१३, १०३८
वस्त्रा वसानः ९७,२, ८५८
वस्त्रः उत्सः ९७,४४, ९००
वह्निः २०,५,६, १६३, १६४ । ३६,२, २६१ । ६४,१९;
४९६ । ६५,२८, ५३५
वह्निः विशाम् १०८,१०, १०३५
वाचः पतिः २६,४, २०३
वाचस्पतिः १०१,५, ९४८
वाचम् हव्यन् ९५,५, ८३२
वाचं जनयन् ७८,१, ६८१ । १०६,१२, ९९७
वाचं हिन्वानः ९७,३२, ८८८
वाजगन्ध्यः ९८,१२, ९२६
वाजपत्यः ९८,१२, ९२६
वाजयन् अपः ६८,४, ६०३
वाजयुः ४४,४, ३११ । ६३,१९, ४६६ । १०३,६, ९७३ ।
१०६,१२, ९९७ । १०७,११, १०१०
वाजयुः देववीतौ ९६,१४, ८४६
वाजसनिः ११०,११, १०७४
वाजसाः २,१०, ८२०
वाजसातमः ६६,२७, ५६४ । १०२,६, ९४०

वाजानां पतिः ३१,२; ३३१

वाजी-जिन १४,७; ११९ । १५,५, १२५ । १७,७;
१४३ । २१,७; १७२ । २२,१; १७३ । २६,१, २०० ।
२८,१; २१२ । ३६,१, २६० । ३७,३; २६८ ।
४५,४, ३१७ । ५३,४; ३५९ । ६२,२, १८; ४१९,
४३५ । ६३,१७, ४६४ । ६४,२९; ५०६ । ६५,११,
५१८ । ६६,१०; ५४७ । ७४,१; ६५७ । ८०,२;
६९२ । ८६,११; ७३८ । ८७,१, ७७६ । ८९,४;
७९६ । ९७,१०; ८६६ । १०६,११; ९९६ । १०७,५;
१००४ । १०९,६, १०, १७, १९; १०४७, १०५१, १०५८,
१०६०

वायवे छुष्टः १०८,२६; १०४१

वावशानः ९३,२,४; ८१९, ८२१ । ९५,४; ८३१ ।
९६,१४; ८४६

वावृधानः ८५,१०; ७२५

विघ्नन् दुरितानि ९७,१४; ८७२

विघ्नन्तः पुरु दुरिता ६२,२; ४१९

विघ्नन् रक्षांसि १७,३; १३९ । ३७,१; २६६

विचक्षणः १२,४; ९८ । ३७,२, २६७ । ५१,५; ३५० ।
६६,२३, ५६० । ७०,७, ६२६ । ७५,१; ६६६ ।
८५,९; ७२४ । ८६,११, १९, २३, ३५; ७३८, ७४६,
७५०, ७६२ । ९६,२; ८३४ । ९७,२; ८५८ । १०६,५;
९९० । १०७,३, ५, ७, १६, २४, १००२, १००४, १००६,
१०१५, १०२३

विचक्षणः ३९,३; २८०

विचरन् मातरा ६८,४; ६०३

विचर्षणिः ११,७, ९२ । २८,५; २१६ । ४०,१; २८४ ।
४१,५, २९४ । ४४,३; ३१० । ४८,५; ३३५ । ६०,१,
४; ३९५, ३९८ । ६२,१०; ४२७ । ६७,२२, ५८९ ।
८४,१; ७११

विततः दिवस्पदे ८३,२; ७०७

विततः पवित्रे ७३,९; ६५६

विदत् गातुम् ९६,१०; ८४२

विदानः व्रता आयुधा ३५,४; २५७

विदानाः अस्य (ऋतस्य) योजनम् ७,१; ५०

विद्वान् ७०,१०; ६२९ । ७३,८; ६५५ । ७७,४; ६७९

विद्वान् देवानां उभयस्य जन्मनः ९१,२; ६९७

विधानैः गुपितः १०,८५,४; ११७४

विपश्चिद्वतः १२,३; ९७ । २३,३; १७५ । ३३,१; २४२ ।

८६,३६,४४; ७६३, ७७१ । ९६,२२, ८५४ । १०१,१२,
९५५

विप्रः १३,२; १०५ । १८,२; १४६ । ४०,१; २८४ ।
६५,२९; ५३६ । ६६,८, ५४५ । ८४,५; ७१५ ।
९७,३७; ८९३ । १०७,६, ७; १००५, १००६ ।
८, ७९, १; ११५०

विप्रवरिः ४४,५; ३१२

विप्राणाम् ऋषिः ९६,६; ८३८

विभूवसु ७२,७; ६४५ । ८६,१०; ७३७

विभृत्वा ९६,१९. ८५१

विमानः बह्वाम् ८६,४५; ७७२

विमानः रजसः ६२,१४; ४३१

विरोचयन् ३९,३; २८०

विवस्वतः आपानसः १०,५; ८१

विवेविदत् इन्द्रस्य सख्यम् ८६,९; ७३६

विशां वह्निः १०८,१०; १०३५

विश्वचक्षाः ८६,५; ७३२

विश्वचर्षणिः १,२; २ । ६६,१; ५३८

विश्वजित् ५९,१; ३८० । ८, ७९, १; ११५०

विश्वतो गोपाः १०,२५, ७; ११६६

विश्वदर्शतः ६५,१३; ५२० । १०६,५; ९९०

विश्वदेवः ९२,३; ८१४ । १०३,४; ९७१

विश्ववारः ८८,३; ७८७ । ९१,५; ८१०

विश्ववित् २७,३; २०८ । २८,१, ५; २१२, २१६ ।
६४, ७; ४८४ । ८६, २९, ३९; ७५६, ७६६ । ९७, ५६;
९१२

विश्ववेदाः १, ९१, २; ११०२

विश्वस्य साधारणः ४८,४; ३३४

विश्वस्य ईशानः १०१,५; ९४८

विश्वस्य भुवनस्य गोपाः २, ४०, १; १२१७

विश्वस्य भुवनस्य राजा ९७, ५६; ९१२

विश्वायुः ८६, ४१; ७६८

विष्टपः ऋतस्य ३४, ५, २५२

विष्टम्भ २, ५; १५

विष्टम्भः दिवः ८६, ३५; ७६२ । ८७, २, ७७७ । ८९, ६;
७९८ । १०८, १६; १०४१

विष्णोः जनिता ९६, ५; ८३७

विहायाः ८, ४८, ११; ११४५

वीतिराधाः ६२, २९; ४४६

वीतये साधनः १०५, ३; ९८२

वीरः ३५, ३; २५६ । १०१, १५, ९५८ । ११०, ७; १०७०
 वीरः [पर्णमणिः] अथ० ३, ५, ८; ११८३
 वीरयुः ३६, ६; २६५
 वीरुधाम् अधिपतिः अथ० ५, २४, ७, ११८४
 वीरुधां पतिः ११४, २, १०९५
 वीर्यं वर्धन्तः (हन्द्रस्य) ८, १; ५९
 वृकः ७९, ३; ६८८
 वृजनं रक्षमाणः ८७, २; ७७७
 वृजनस्य गोपाः १, ९१, २१, ११२१
 वृजनस्य राजा ९७, १०; ८६६
 वृजनस्य राजा ९७, २३, ८७९
 वृजिनस्य हन्ता ९७, ४३, ८९९
 वृत्रहा २५, ३; १९६ । २८, ३; २१४ । ३७, ५, २७० ।
 ८९, ७, ७९९ । ९८, ५; ९१९ । १, ९१, ५; ११०५
 वृत्रहन्तमः १, ३; ३ । २४, ६; १९२ । १०, २५, ९; ११६८
 वृत्राणां हन्ता ८८, ४; ७८८
 वृत्राणि घ्नन्तः १७, १, १३७
 वृषन्-षा २, १, २, ६; ११, १२, १६ । ६, १, ६; ४१, ४६ ।
 ७, ३; ५२ । १०, ६; ८२ । १९, ३; १५४ । २५, ३;
 १९९ । २७, ३, ६; २०८, २११ । २८, ४, २१५ ।
 २९, १; २१८ । ३४, ३; २५० । ३७, १, ५; २६६, २७० ।
 ३८, १; २७२ । ४०, २, ६; २८५, २८९ । ५१, ४; ३४९ ।
 ६१, २८; ४१५ । ६२, ११; ४२८ । ६३, २०, २१,
 ४६७, ४६८ । ६४, १, २, ३; ४७८, ४७९, ४८० । ६५, ४,
 १०; ५११, ५१७ । ७०, ९; ६२८ । ८०, २, ३; ६९२,
 ६९३ । ८१, २; ६९७ । ८२, १; ७०१ । ८६, ३, ७, ११,
 १२, १९, ३१, ४४; ७३०, ७३४, ७३८, ७३९, ७४६, ७५८,
 ७७१ । ८७, २४; ७७९ । ९०, २; ८०१ । ९१, ३, ८०८ ।
 ९३, २; ८१९ । ९६, ७; ८३९ । ९७, १३, ४०, ८६९,
 ८९६ । १०१, १६; ९५६ । १०७, २२; १०२१ ।
 १०८, १२; १०३७ । १, ९१, २, ११०२ । २, ४०, ३,
 १२१९
 वृषा वृषत्वैभिः महित्वा १, ९१, २; ११०२
 वृषभिः यतः ३४, ३; २५०
 वृषभिः युजानः ९७, २८; ८८४
 वृषयुताः ६९, ७; ६१६
 वृषयुः ७७, ५; ६८०
 वृषयतः ६२, ११; ४२८ । ६४, १; ४७८
 वृषभः १९, ४; १५५ । ७०, ७, ६२६ । ७२, ७; ६४५ ।
 ७६, ५; ६७५ । ८०, ५; ६९५ । ८५, ९; ७२४ । ८६, ३८;
 द्वे० [सौमः] १७

७६५ । १०८, ८, ११; १०३३, १०३६ । ११०, ९, १०७२ ।
 ६, ४७, ५; ११३१
 वृष्टयः २२, २, १७४
 वृष्टिघावः १०६, ९, ९९४
 वृष्टिमान् २, ९, १९
 वेधाः २, ३; १३ । १६, ७, १३५ । २६, ३, २०२ ।
 १०२, ४; ९६३ । १०३, १, ९६८
 वेविजानः ७७, २; ६९७
 व्यक्तः ७१, ७, ६३६
 व्यश्नत् रश्मिभिः ६६, २७; ५६४
 झांसन् निवचनानि ९७, २, ८५८
 शकुनः ८५, ११; ७२६ । ९६, १९, ८५१
 शचीवस्-वान् ८७, ९; ७८४
 शतधारः ८५, ४; ७१९ । ८६, ११, ७३८ । ९६, १४, ८४६
 शतवाज ९६, ९; ८४१ । ११०, १०; १०७३
 शतामघः ६२, १४; ४३१
 शत्रून् अपघ्नन् ९६, २३; ८५५
 शं दिवे पृथिव्यै प्रजायै १०९, ५; १०४६
 शम्भविष्टः ८८, ३; ७८७
 शर्घाय साधनः १०५, ३, ९८२
 शर्घाणि तान्वा जहत् १४, ४, ११६
 शवसस्पतिः ३६, ६, २६५
 शिवः सखा १०, २५, ९; ११६८
 शिशानः शृङ्गे ७०, ७; ६२६
 शिशुः १, ९, २ । ८५, ११, ७२६ । ८६, ३१, ३६; ७५८,
 ७६३ । ९६, १७, ८४९ । १०९, १२; १०५३ ।
 १०, ८५, १; १२३८
 शिशुः दिव ३३, ५; २४६ । ३८, ५; २७६
 शिशुः महीनाम् १०२, १; ९६०
 शिष्टः वरुणेन अथ० ३, ५, ४, ११७९
 शुक्रः-क्का-क्कासः २१, ६; १७१ । ३३, २, २४३ । ४६, ४, ३२३ ।
 ६३, १४, २५, ४६१, ४७२ । ६४, ४, २८, ४८१, ५०५ ।
 ६५, २६; ५३३ । ६६, ५, २४; ५४२, ५६१ । ६७, १८,
 ५८५ । ९७, २०, ३२; ८७६, ८८८ । १०९, ३; १०४४ ।
 ५, ६; १०४६-४७ । वा०य० ८, ४८, ४९; १२०६-७
 शुचिः ९, ३; ७० । २४, ६, ७; १९२, १९३ । ७०, ८;
 ६२७ । ७२, ४, ६४२ । ७५, ४, ६६९ । ८६, १३;
 ७४० । ८८, ८, ७९२ । १, ९१, ३, ११०३
 शुचिबन्धुः ९७, ७; ८६३
 शुद्धः ७८, १, ६८१

शुभ्रः १४,५; ११७ । ६२,५, ४२२ । ६३,२६; ४७३ ।
 ९६,२०; ८५२ । १०७,२४, १०२३
 शुभ्रशस्तमः शुभ्रभिः ६६,२६, ५६३
 शुभ्रमानः कृतायुभिः ३६,४, २६३ । ६४,५, ४७२
 शुभ्रमः ७९,५, ६९०
 शुष्णी १४,३. ११५ । १८,७; १५१ । २७,६, २११ ।
 २८,६, २१७ । ३०,१; २२४ । ४१,३; २९२ । ७१,१;
 ६३० । ८८,७, ७९१
 शूर १५,१, १२१ । ८९,३, ७९५ । ९६,१, ८३३
 शूरग्राम ९०,३; ८०२
 शूरतर शूरभ्य ६६,१७, ५६५
 शूषः ७१,२, ६३१
 शृगाणि दोषुवत् १५४ १२४
 शोचन्तः ऋचा ७३,५, ६५२
 शोणः ९७,१३; ८६९
 श्येनः ९६,१९; ८५१
 श्येन गृध्राणाम् ९६,६; ८३८
 श्येनज्यूतः ८९,२, ७९४
 श्येनशृतः ८७,६, ७८१
 श्रद्धां पदम् ११३,४. १०८६
 श्रवस्यव १०,१; ७७
 श्रित गौरी भधि १२,३, ९७
 श्रित सिन्धोः ऊर्मा भधि १४,१; ११३
 श्रितः सिन्धुषु ८६,८, ७३५
 श्रितः निश्वा. अभि अर्धम् १६,६; १३४ । ६२,१९; ४३६
 श्रिये जातः ९४,४; ९२६
 श्रीणन् अपः १०९,२२; १०६३
 श्रीणान. गोभिः १०९,१७, १०५८
 श्रीणानाः अप्सु २४,१; १८७ । ६५,२६, ५३३
 श्रुष्टी जातासः १०६,१; ९८६
 श्लोक्यन्त्रास ७३,६, ६५३
 श्रूयत् ८६,४७, ७७४
 शयतः ६९,३, ६१२
 सवमानः २६,४; २०३
 सविदाम. पितृभिः ८,४८,१३; ११४७
 सवृक्षगणः ४८,२, ३३२
 सतिशान ९०,१; ८००
 सक्षणि हर्म्यस्थ ७८,३; ६८३
 सन्वा १,९१,१५,१७, १११५,१११७.
 सन्वा शिवः १०,२५,९; ११६८

सखा इन्द्रस्य ९६,२, ८३४ । १०१,६; ९४९ । १०,२५,
 ९, ११६८ ।
 सखा सखिभ्यः ६६,१,४. ५३८,५४१
 सख्यं जुषाणः इन्द्रस्य ९७,११, ८६७ । ८,४८,२; ११३६
 सचमानः अपाम् ऊर्मिम् ९६,१९. ८५१
 सचमाणः ऊर्मिणा ७४,५; ६६१
 संजगमान. स्वस्त्ये ६४,३; ५०७
 सजयन् विश्वा वसूनि २९,४; २२१
 सत्ता ८६,६, ७३३
 सत्पति १,९१,५, ११०५
 सत्यः ९२,६; ८१७
 सत्य वदन् ११३,४, १०८६
 सत्यानि कृण्वन् ७८,५ ६८५
 सत्यकर्मा ११३,४, १०८६
 सत्यमन्मा ९७,४८. ९०४
 सत्यशुभ्र ९७,४६; ९०२
 सत्राजित् २७,४; २०९
 सत्वा ८७,७; ७८२
 सदावान् ९०,३; ८०२
 सदावृध. ४४,५, ३१२
 सदासर ११०,४; १०६७
 सधमाद्यः २३,६; १८५
 सधस्था त्री १०३,२; ९६९
 सन् ८६,५,६; ७३२,७३३
 सनद्रयिः ५२,१. ३५१
 सनिता धनानि ९०,३, ८०२
 सन्तति ६९,२; ६११
 सन्ददि. ९९,७; ९३३
 सन्दहतः अमृतान् ७३,५, ६५२
 सन्तिः २९,२; २१९
 सयर्दुव. धीनाम् अन्तः १२,७; १०१
 समसु अपाकः ९०,३; ८०२
 समनाः ९६,९. ८४१
 समाहृताः देवैः साम १३०१; १२१२
 समितीः श्वान. ९२,६; ८१७
 समुद्रः २,५; १५ । ६४,८; ४८५ । ८६,२९; ७५६ ।
 ९७,४०. ८९६ । १०१,६. ९४७ । १०९,४; १०४५
 समुद्रियः १०७,१६, १०१५
 समुद्रे आहितः ६४,१९, ४९६
 संपश्यन् विश्वा भुवना १०,२५,६; ११६५

सम्भृतः ऋषिभि ६७, २९; ५९८ । साम० १३००,
१२११
सम्भनसः अथ० ६, ७३, १; १२५६
संमिश्र ६१, २१; ४०८
सयोनिः [पर्णमणिः] अथर्व० ३, ५, ८, ११८३
सर्गाः सृष्टाः २२, १; १७३
सर्वधाः मदेणु १८, १-७; १४५-१५१
सर्ववीरः ९०, ३, ८०२
सविता ९७, ४८; ९०४
ससृवांसः २२, ४; १७६
सन्निः २४, ४, १९०
सहः ७१, ४; ६३३
सहमानः अभिमातीः ३, ६२, १५, ११२६
सहमानः पृतन्यून ११०, १२; १०७५
सहसावन् १, ९१, २३, ११२३
सहस्र-अ (स्त्रा) ऋताः ८८, ७, ७९१
सहस्र-ऊ (स्त्रो) तिः ६२, १४; ४३१ । ६५, ७, ५१४
सहस्रचक्षाः ६०, १, २; ३८४, ३८५
सहस्रजित् ५५, ४; ३६७ । ७८, ४; ६८४ । ८०, ४; ६९४ ।
८४, ४; ७१४
सहस्रधारः १३, १; १०४ । ८०, ४, ६९४ । ८६, ७,
३३; ७३४, ७६० । ८९, १; ७९३ । ९६, ९; ८४१ ।
९७, ५, १९; ८६१, ८७५ । १०१, ६, ९१९ । १०७, १७;
१०१६ । १०८, ८, १११ । १०३३, १०३६ । १०९, १६,
१९; १०५७, १०६० । ११०, १०, १०७३ । साम०
१३०२, १२१३
सहस्रनी-णीतिः ७१, ७; ६३६
सहस्रनी-णीथः ८५, ४; ७१९ । ९६, १८, ८५०
सहस्रपाजस १३, ३; १०६ । ४२, ३, २९८
सहस्रभर्गम् ६०, २; ३८५
सहस्रभृष्टिः ८३, ५; ७१० । ८६, ४०; ७६७
सहस्रयामा १०६, ५, ९९०
सहस्ररेतः ९६, ८; ८४० । १०९, १७ १०५८
साधनः दक्षाय ६२, २९; ४४६
साधनः दक्षाय नार्थाय वीतये १०५, ३; ९८०
साधारणः विश्वस्यै ४८, ४; ३३४
सानसि. भराय १०६, २; ९८७
साम कृण्वन् ९६, २०; ८५४
सामहिः समस्तु ४, ८; ३८
सासङ्गान् वाचन् ११०, १२, १०७५

साङ्गान् २०, १; १५९ । ९०, ३; ८०२ । १०५, ६; ९८५
सिंहः ८९, ३, ७९५
सिक्त ९७, १५; ८७१
सिन्धुमाता ६१, ७, ३९४
सिन्धुषु अन्तः उक्षितः ७२, ७; ६४५
सिन्धुषु श्रित ८६, ८; ७३५
सिन्धूनां क्राणा ८६, १९; ७४६
सिन्धूनां राजा ८६, ३३, ७६० । ८९, २; ७९४
सिषासन् अपः ९०, ४; ८०३
सिषासन् तृतीयं धाम ९६, ३८; ८५०
सिषासितुः रथीणाम् ४७, ५; ३३०
सदिन् कृतस्य योनिम् आ ६४, ११; ४८८
सीदन् योना वनेषु आ ६२, ८; ४२५
सीदन् वनस्य जठरे ९५, १; ८२८
सुकतुः २, ३, १३ । १२, ४, ९८ । ४८, ३, ३३३ । ६३, २८;
४७५ । ६५, ३, ५३७ । ७०, ६; ६२५ । ७२, ८; ७४६ ।
७३, ८, ६५५ । ७४, ३; ६५९ । १०२, ३; ९६२ ।
१०, २५, ८, ११६७
सुकतुः क्रतुभि १, ९१, २; ११०२
सुक्षिति. १, ९१, २१; ११२१
सुक्षितीनाम् आनेता १०८, १३, १०३८
सुत-सुताः २, ३; १३ । १०, ४; ८० । १६, ७, १३५ ।
२४, ७, १९३ । २७, ३; २०८ । २९, १, २१८ । ३२, १;
२३६ । ३३, ३, २४४ । ३७, १; २६६ । ३८, ६; २७७ ।
३९, ३, ५; २८०, २८२ । ४०, २; २८५ । ४१, ४; २९३ ।
४२, २; २९७ । ४४, ३; ३१० । ५१, ४, १, ३४९, ३५० ।
६१, ८, २८; ३९५, ४१५ । ६२, १९, ४३६ । ६३, ३;
६, १०, १५, ४५०, ४५३, ४५७, ४६२ । ६६, ७; ५४४ ।
६७, २, १२, १८, ५६९, ५७९, ५८५ । ६८, ७; ६०६ ।
६९, ९; ६१८ । ८१, १; ६९६ । ९७, १, ३५; ८५७,
८९१ । १००, ४, ५, ६, ९३८, ९३९, ९४० । १०१, १, ४;
९४४, ९४७ । १०६, ९ ९९४
सुत. अद्रिभिः २४, ५, २८१ । ५१, २; ३४६ । ६३, १३;
४६० । ६८, ९, ६०८ । ७१, ३, ६३२ । ७५, ४; ६६२ ।
८६, २३; ७५० । १०९, १८; १०५९
सुतः हस्तच्युतेभि अद्रिभिः ११, ५; ९०
सुतः अद्रिभिः नृभिः ८६, ३४; ७६१
सुतः ऋजीषेण वा०य० १९, ७२; १२०९
सुतः ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा ११३, २, १०८४
सुत. ग्रावभिः ८०, ४; ६९४

सुतः धारया ३,१०; ३० । ७२,५; ६४३
 सुतः नृभिः ६२,५,१६; ४२२,४३३ । ८६,३४; ७६१
 सुतः दन्दाय पातवे १,१; १ । १६,३; १३१
 सुत देवेभ्यः ३,९, २९ । २८,२; २१३ । ९९,७; ९३३ ।
 १०३,६; ९७३
 सुतः मरुत्वते १०७,१७, १०१६
 सुतः भराय ६,६; ४६
 सुत चम्बोः ३६,१; २६०
 सुताः यज्ञस्य सादने १२,१, ९५
 सुदक्षः ८७,२, ७७७ । १०५,४, ९८३ । १०८,१०;
 १०३५ । १,९१,२; ११०२
 सुदुवाः सामं १३००, १२११
 सुदृशीकः ८६,४५; ७७२
 सुधारः १०९,७; १०४८
 सुन्वानः १०१,१३, ९९६
 सुपर्णः ७१,९; ६३८ । ८५,११; ७२६ । ८६,१; ७२०
 सुपर्ण्यः ८६,३७; ७६४ । ९७,३३; ८८०
 सुपेक्षाः ७९,५, ६९० । ८१,१; ६९६
 सुभ्रः ७९,५; ६९०
 सुमगलः ८०,३; ६९३
 सुमतिः ८८,७; ७९१
 सुमनाः १९१,४, ११०४
 सुमनस्वमानः ६,७४,४, १२२६
 सुमित्रः १,९१,१२, १११२
 सुसृलीकः ६९,१० ६१९ । १,९१,११; ११११
 सुमेधाः ९१,३० ८१४ । ९३,३, ८२० । ९७,२३, ८७९
 सुरभिः ९७,१९; ८७५
 सुरभिन्तरः १०७,२; १००१
 सुवानः नास ६,३, ४३ । ९,१; ६८ । १०,४; ८० ।
 १३,५; १०८ । १७,२; १३८ । १८,१; १४५ । ३४,१,
 २४८ । ६६,२८; ५६५ । ८७,७, ७८२ । ९२,१;
 ८१२ । ९७,४०; ८९६ । ९८,२,३; ९१६,९१७ ।
 १०१,१०; ९५३ ।
 सुवान् आ ८६,४७, ७७४
 सुवान् प्र १०९,१६; १०५७
 सुवान् अङ्गिभिः १०७,१० १००९
 सुवान् चक्षसे १०७,३, १००२
 सुवानः नहुषेभिः ९१,२; ८०७
 सुवानः सोतृभिः १०७,८, १००७
 सुवितस्य दुराव्यः सेतुः ४१,२, २९१

सुवीरः २३,५; १८४ । ८६,३९; ७६६ । १,९१,१९;
 १११९
 सुवीर्यं दधत् स्तोत्रे २०,७, १६५
 सुवृष ६८,६; ६०५
 सुव्रत २०,५ १६३ । ५७,३, ३७४
 सुशेवः १,९१,१५, १११५ । ८,४८,४; १६३८ । ८,७९,७;
 ११५६ । ६,७४,४; १२२६
 सुश्रवाः १,९१,२१, ११२१
 सुश्रवस्तमः १,९१,१७, १११७
 सुसं-यमद ६८,८; ६०७
 सुसं-यत्वा ८,४८,९; ११४३
 सुष्टु स्तुतः कविभिः १०८,१२; १०३७
 सुषाणः ६,८; ४८ । १३,२, १०५
 सुषाणः णामः-अङ्गिभिः ६७,३; ५७० । १०१,११, ९५४
 सुषाणः देववीतये ६५,१८, ५२५
 सुहस्यः १०७,२१; १०२०
 सुहः-मध्वः ९७,४४, ९००
 सुतः ९,३; ७० । १९,४; १५५
 सुरा-राः १०,५; ८१, ६३, ८, ९, ४५५, ४५६ । ६५,१;
 ५०८ । ६६,१८, ५५५ । २१,३, ७०८
 सूरिः ६७,२; ५६९
 सूर्यः तव ज्योतीषि ८६,२९; ७५६
 सूर्यस्य जनिता ९६,५; ८३७
 सृजान ९५,१,२; ८२८-८२९
 सृजानः कलशे ८६,२२; ७४९
 सृवा ९६,२०; ८५२
 सृष्टाः भर्गाः २२,१; १७३
 सेतुः दुराव्यः सुवितस्य ४१,२, २९१
 सेतवः ७३,४; ७५१
 सेधन् रक्षांसि ११०,१; १०७५
 सेनानीः ९६,१, ८३३
 सोतृभिः पूषमानः ९६,१६, ८४८
 सोतृभिः सुवानः १०७,८, १००७
 सोमः } अयं निर्देगः प्रायः प्रतिपत्क दश्यते ।
 सोमा-मायः }
 सोम्यायः ६,७५,१०; १२२७ । १०,१४,६, १२३०
 सोम्यं मधु ७४,३; ६५९
 सोम्यः रसः ६७,८; ५७५
 रुक्मः दिवः ८६,४६; ७७३
 सनयन् १९,३, १५४ । ७०,६, ६४४ । ८६,९; ७३६

स्त्रवानः नृभिः ९७, ५; ८६१
 स्तुतः ६२, १५; ४३२
 स्थाः क्षामणि ८५, ११; ७२६
 स्त्रः सिषासन् ७६, २; ६७२
 स्वतवस् ११, ४; ८९
 स्वदितः मातरिश्चना ६७, ३१, ५९८
 स्वधितिः वनानाम् ९६, ६; ८३८
 स्वध्वरः ३, ८; २८। ८६, ७; ७३४
 स्ववशाः ९८, ६; ९२०
 स्वर्गाः ९०, ४; ८०३
 स्वर्चक्षाः ९७, ४६; ९०२
 स्वर्चन्त ८४, ५; ७१५
 स्वर्जज्ञानः ८६, १४, ७४१
 स्वर्जित् २६, २; २०७। ७८, ४, ६८४
 स्वदृशः १३, ९; ११२। ६५, ११, ५१८
 स्वर्पतिः १९, २; १५३
 स्वर्षिद् ८, ९; ६७। २१, १, १६६। ५९, ४; ३८३।
 ८४, ५; ७१५। ८६, ३; ७३०। ९४, २; ८३४।
 १०१, १०, २५३। १०६, १, २; ९८६, ९९४। १०७, १४,
 १०१३। १०८, २; १०२७। १०९, ८; १०४९। ८, ४८,
 १५; ११४९
 स्वर्षाः ९६, २८; ८५०। १, ९१, २१; ११२१
 स्वस्तये संजगमानः ६४, ३०; ५०७
 स्वस्त्ययनीः साम० १३००, १२११। १३०३, १२१४
 स्वादिष्टः ६२, ९, ४२६। ७८, ४; ६८४। ९७, ४८; ९०४
 स्वाङ्गः ५६, ४; ३७१। ८५, ६; ७२१। ९७, ४; ८६०।
 १०२, १; १०४२। ११०, ११, १०७४। ६, ४७, १, २,
 ११२७, ११२८। ८, ४८, १, ११३५
 स्वाभ्यः ३१, १; २३०। ६५, ४; ५११। १०१, १०; ९५३
 स्वानासः १०, १; ७७
 स्वायुधः ४, ७; ३७। १५, ८; १२८। ३१, ६; २३५।
 ६५, ५; ५१२। ८६, १२; ७३९। ८७, २, ७७७।
 ९६, १६; ८४८। १०८, १५; १०४०। ११०, १२; १०७५
 स्वावतः ७४, २, ६५८
 ह्यन्ता भदिनाज्ञाम् ८८, ४; ७८८
 ह्यन्ता विश्वस्य दस्योः ८८, ४; ७८८
 ह्यन्ता वृजिनस्य ९७, १३; ८९९
 ह्यन्ता वृत्राणाम् ८८, ४; ७८८
 ह्याः १०७, २५; १०२४
 हरसः (पक्षी) १०, ६; ८२

हरस्य दैन्यस्य अवयाता ८, ४८, २; ११३६
 हरिः २, ६, १६। ३, ३, ९; २३, २९। ७, ६; ५५।
 ८, ६, ६४। १९, ३; १५४। २५, १; १९४। २६, ५;
 २०४। २७, ६; २११। ३०, ५; २२८। ३२, २; २३७।
 ३३, ४; २४५। ३४, ४; २५१। ३६, २; २६७। ३८,
 २, ६, २७३, २७७। ३९, ६; २८३। ४१, १; २९६।
 ५०, ३; ३४३। ५३, ४; ३५९। ५७, २; ३७३।
 ६२, १८; ४३५। ६३, १७, ४६४। ६४, १४; ४९१।
 ६५, ८, १२, २५; ५१५, ५१२, ५३२। ६६, २५, २६;
 ५६२, ५६३। ६७, ४, ५७१। ६८, २, ६०१। ६९, ३, ५,
 ६१२, ६१४। ७०, ८, ६२७। ७१, १; ६३०। ७२, १, ५;
 ६३९, ६४३। ७६, १, ६७१। ७९, १; ६८६। ८०, ३;
 ६९३। ८२, १; ७०१। ८६, ६, ११, २५, २७, ३१, ३३,
 ४२, ४४, ४५, ७३३, ७३८, ७५२, ७५४, ७५८, ७६०, ७६९,
 ७७१, ७७२। ८२, ३, ७९५। ९२, १, ८१२। ९३, १;
 ८१८। ९५, १, २, ८२८, ८२९। ९६, २, २४; ८३४,
 ८५६। ९७, ६, १८; ८६२, ८७४। ९८, ७, ९२१।
 ९९, २, ९२८। १००, ७, ९४१। १०१, १५, १६;
 ९५८, ९५९। १०३, २, ४, ९६९, ९७१। १०६, १, १३;
 ९८६, ९९८। १०७, १०, १००९। १०९, १२, २१;
 १०५३, १०६२। १११, १; १०७६। ११३, ५; १०८७
 हरिः दिवा ९७, ९; ८६५
 हरीणां पतिः १०५, ५; ९८४
 हरितः युजानः ८६, ३७; ७६४
 हर्म्यस्य सक्षतिः ७८, ३; ६८३
 हर्यतः २५, ४; १९७। २६, ५; २०४। ४३, १, ३, ३०२,
 ३०४। ६५, २५, ५३२। ९६, १७; ८४९। ९८, ७, ८;
 ९२१, ९२२। ९९, १, ९२७। १०६, १३; ९९८।
 १०७, १३, १६, १०१२, १०१५
 हर्यत मद ८६, ४२; ७६९
 हविः १०, १२४, ६, १२१५
 हविः उत्तमम् १०७, १, १०००
 हविः चारु म्रियतमम् ३४, ५, २४८
 हविः हविषु वन्ध. ७, २, ५१
 हविष्मान् ८३, ५; ७१०। ९६, १२; ८४४
 हितः ६२, १०, ४२७
 हितः ऋषिभिः मतिभिः धीतिभिः ६८, ७, ६०६
 हितः गुहा अध्वर्युभिः १०, ९; ८५
 हितः धिया २५, २; १९५। ४४, २; ३०९
 हितः धीतिभिः सप्त ९, ४; ७२

सुतः धारया ३,१०; ३० । ७२,५; ६४३
 सुतः नृभिः ६२,५, १६; ४२२, ४३३ । ८६, ३४, ७६१
 सुतः दन्दाय पातये १,१; १ । १६, ३; १३१
 सुत वेवेभ्यः ३,९; २९ । २८, २, २१३ । ९९, ७; ९३३ ।
 १०३, ६, ९७३
 सुतः मरुत्वते १०७, १७, १०१६
 सुतः भराय ६, ६, ४६
 सुत चम्बो ३६, १; २६०
 सुताः यज्ञस्य सादने १२, १, ९५
 सुदक्षः ८७, २, ७७७ । १०५, ४, ९८३ । १०८, १०;
 १०३५ । १, ९१, २; ११०२
 सुदुग्धाः नाम० १३००, १२११
 सुदृशीकः ८६, ४५; ७७२
 सुधारः १०९, ७; १०४८
 सुन्वानः १०१, १३, ९९६
 सुपर्णः ७१, ९; ६३८ । ८५, ११; ७२६ । ८६, १; ७२०
 सुपर्णः ८६, ३७; ७६४ । ९७, ३३, ८८०
 सुपेशाः ७९, ५, ६९० । ८१, १; ६९६
 सुभ्यः ७९, ५; ६९०
 सुमगलः ८०, ३; ६९३
 सुमतिः ८८, ७, ७९१
 सुमनाः १, ९१, ४, ११०४
 सुमनस्यमानः ६, ७४, ४, १२२६
 सुमिषः १, ९१, १२, १११२
 सुमृलीकः ६९, १०, ६१९ । १, ९१, ११; ११११
 सुमेधाः ९१, ३, ८१४ । ९३, ३, ८२० । ९७, २३; ८७९
 सुरभिः ९७, १२, ८७५
 सुरशिनार १०७, २, १००१
 सुवानः नाम ६, ३, ४३ । ९, १; ६८ । १०, ४; ८० ।
 १३, ५, १०८ । १७, २; १३८ । १८, १; १४५ । ३४, १;
 २४८ । ६६, २८; ५६५ । ८७, ७; ७८२ । ९२, १;
 ८१२ । ९७, ४०; ८९६ । ९८, २, ३, ९१६, ९१७ ।
 १०१, १०; ९५३ ।
 सुवानः आ ८६, ४७, ७७४
 सुवान प्र १०९, १६, १०५७
 सुवान अद्रिभिः १०७, १० १००९
 सुवान चक्षसे १०७, ३; १००२
 सुवानः ननुप्येभिः ९१, २, ८०७
 सुवानः सोतृभिः १०७, ८, १००७
 सुवितस्य दुग्ध, सेतुः ४१, २, २९१

सुवीरः २३, ५; १८४ । ८६, ३९; ७६६ । १, ९१, १९;
 १११९
 सुवीर्यं दधत् स्तोत्रे २०, ७, १६५
 सुवृष् ६८, ६; ६०५
 सुव्रतः २०, ५, १६३ । ५७, ३; २७४
 सुशेवः १, ९१, १५, १११५ । ८, ४८, ४; ११३८ । ८, ७९, ७;
 ११५६ । ६, ७४, ४; १२२३
 सुश्रवाः १, ९१, २१, ११२१
 सुश्रवस्त्वमः १, ९१, १७, १११७
 सुसं-पंसद् ६८, ८; ६०७
 सुस-यत्वा ८, ४८, ९; ११४३
 सुष्टु स्तु-त. कविभिः १०८, १२, १०३७
 सुग्वाणः ६, ८; ४८ । १३, २; १०५
 सुग्वाणः नासः-अद्रिभिः ६७, ३, ५७० । १०१, ११, ९५४
 सुग्वाणः देववीतये ६५, १८, ५२५
 सुहस्यः १०७, २१; १०२०
 सुदः-मध्वः ९७, ४४; ९००
 सुतः ९, ३; ७० । १९, ४; १५५
 सुरः-राः १०, ५, ८१ । ६३, ८, ९; ४५५, ४५६ । ६५, १;
 ५०८ । ६६, १८, ५५५ । ९६, ३, ७०८
 सुरिः ६७, २; ५६९
 सूर्यः तव ज्योतीषि ८६, २९; ७५६
 सूर्यस्य जनिता ९६, ५; ८३७
 सृजानः ९५, १-२, ८२८-८२९
 सृजानः कलशे ८३, २२; ७४९
 सृष्ट्वा ९६, २०; ८५२
 सृष्टा मर्गाः २२, १; १७३
 सेतुः दुग्धः सुवितस्य ४१, २, २९१
 सेतवः ७३, ४; ७५१
 सेधन् रक्षाभिः ११०, १; १०७५
 सेनानीः ९३, १; ८३३
 सोतृभिः पूयमानः ९३, १६; ८४८
 सोतृभिः सुवानः १०७, ८; १००७
 सोमः
 सोमा-मासः ॥ अयं निर्देशः प्रायः प्रतिपूर्णा इत्यर्थः ।
 सोम्यायः ६, ७५, १०; १००७ । १०, १४, ६ १०३०
 सोम्यं मधु ७४, ३; ६५९
 सोम्यः रस ६७, ८; ५७५
 स्कम्भः दिवः ८६, ४३; ७७३
 स्तनयन् १९, ३, १५४ । ७२, ३, ३४४ । ८६, ९; ७३६

स्तवानः नृभिः ९७,५, ८६१
 स्तुतः ६२,१५; ४३२
 स्थाः क्षामणि ८५,११; ७२६
 स्त्रः सिषासन् ७६,२, ६७२
 स्वतयस् ११,४, ८९
 स्वदितः मातरिश्वना ६७,३१, ५९८
 स्वधितिः वनानाम् ९६,६; ८३८
 स्वध्वरः ३,८; २८। ८६,७; ७३४
 स्वध्वशः ९८,६; ९२०
 स्वर्गाः ९०,४, ८०३
 स्वर्चक्षाः ९७,४६; ९०२
 स्वर्चस्तः ८४,५, ७१५
 स्वर्जज्ञानः ८६,१४; ७४१
 स्वर्जित् २६,२; २०७। ७८,४, ६८४
 स्वर्हशः १३,९; ११२। ६५,११, ५१८
 स्वर्षति. १९,२; १५३
 स्वर्षित् ८,९; ६७। २१,१; १६६। ५९,४; ३८३।
 ८४,५; ७१५। ८६,३; ७३०। ९४,२, ८३४।
 १०१,१०; ९५३। १०६,१९ ९८६,९९४। १०७,१४;
 १०१३। १०८,२; १०२७। १०९,८; १०४९। ८,४८,
 १५; ११४९
 स्वर्षाः ९६,२८, ८५०। १,९१,२१, ११२१
 स्वस्त्ये संजयमानः ६४,३०; ५०७
 स्वस्त्ययनी. साम० १३००, १२११। १३०३, १२१४
 स्वादिष्टः ६२,९; ४२६। ७८,४; ६८४। ९,७,४८, ९०४
 स्वाद्गुः ५६,४; ३७१। ८५,६; ७२१। ९७,४; ८६०।
 १०२,१; १०४२। ११०,११. १०७४। ६,४७,१,२;
 ११२७, ११२८। ८,४८,१; ११३५
 स्वाप्यः ३१,१; २३०। ६५,४; ५११। १०१,१०; ९५३
 स्वानामः १०,१; ७७
 स्वायुधः ४,७; ३७। १५,८; १२८। ३१,६; २३५।
 ६५,५, ५६२। ८६,१२; ७३९। ८७,२; ७७७।
 ९६,१६. ८४८। १०८,१५; १०४०। ११०,१२; १०७५
 स्वायतः ७४,२. ६५८
 ज्ञन्ता अहिनाम्नाम् ८८,४; ७८८
 ज्ञन्ता विश्वस्य दस्योः ८८,४; ७८८
 ज्ञन्ता वृजिनस्य ९७,१३; ८९९
 ज्ञन्ता वृक्षाणाम् ८८,४; ७८८
 हयाः १०७,२५; १०२४
 हरमः । पक्षी। १०,६; ८२

हरस्य दैन्यस्य अवयाता ८,४८,२; ११३६
 हरिः २,६, १६। ३,३,९; २३,२९। ७,६; ५५।
 ८,६, ६४। १९,३; १५४। २५,१; १९४। २६,५;
 २०४। २७,६; २११। ३०,५, २२८। ३२,२; २३७।
 ३३,४, २४५। ३४,४; २५१। ३६,२, २६७। ३८,
 २,६, २७३, २७७। ३९,६; २८३। ४१,१; २९६।
 ५०,३, ३४३। ५३,४, ३५९। ५७,२; ३७३।
 ६२,१८; ४३५। ६३,१७, ४६४। ६४,१४; ४९१।
 ६५,८, १२, २५, ५१५, ५१९, ५३२। ६६,२५, २६;
 ५६२, ५६३। ६७,४, ५७१। ६८,२; ६०१। ६९,३, ५;
 ६१२, ६१४। ७०,८, ६२७। ७१,१; ६३०। ७२,१, ५;
 ६३९, ६४३। ७६,१, ६७१। ७९,१; ६८६। ८०,३;
 ६९३। ८२,१; ७०१। ८६,६, ११, २५, २७, ३१, ३३,
 ४२, ४४, ४५, ७३३, ७३८, ७५२, ७५४, ७५८, ७६०, ७६९,
 ७७१, ७७२। ८२,३, ७७५। ९२,१, ८१२। ९३,१;
 ८१८। ९५,१, २, ८२८, ८२९। ९६,२, २४; ८३४,
 ८५६। ९७,६, १८; ८६२, ८७४। ९८,७, ९२१।
 ९९,२, ९२८। १००,७, ९४१। १०१,१५, १६;
 ९५८, ९५९। १०३, २, ४, ९६९, ९७१। १०६,१, १३;
 ९८६, ९९८। १०७,१०, १००९। १०९,१२, २१;
 १०५३, १०६२। १११,१; १०७६। ११३,५; १०८७
 हरिः दिवा ९७,९; ८६५
 हरीणां पतिः १०५,५; ९८४
 हरितः युजानः ८६,३७; ७६४
 हर्म्यस्य सक्षतिः ७८,३; ६८३
 हर्यत. २५,४; १९७। २६,५; २०४। ४३,१, ३, ३०२,
 ३०४। ६५, २५, ५३२। ९६,१७; ८४९। ९८,७, ८;
 ९२१, ९२२। ९२,१; ९२७। १०६,१३; ९९८।
 १०७,१३, १६, १०१२, १०१५
 हर्यत. मद. ८६,४२, ७६९
 हविः १०,१२४, ६; १२१५
 हविः उत्तमम् १०७,१; १०००
 हविः चारु म्रियतमम् ३४,५; २४८
 हविः हविषु वन्ध. ७,२, ५१
 हविष्मान् ८३,५; ७१०। ९६,१२; ८४४
 हितः ६२,१०; ४२७
 हित. ऋषिभिः मतिभिः धीतिभिः ६८,७, ६०६
 हित. गुहा अध्वर्युभिः १०,९; ८५
 हित धिया २५,२; १९५। ४४,२; ३०९
 हितः धीतिभिः सप्त ९,४; ७२

हितः नृभि २८,१; २१२
 हितः नपयोः ९,१; ६८
 हितः प्रयसे ६६,२३; ५६०
 हितः ब्राह्मणेषु साम० १३००; १२११
 हिन्वन् ऋतस्य दीधितिम् १०२,१,८; ९६०,९६७
 हिन्वानः-नास. १०,२; ७८। ३४,१; २४८। ६४,९;
 ४८६। १०५,२; ९८१
 हिन्वानः प्र ६४,१६; ४९३। ९०,१; ८००। १०७,
 १५. १०१४
 हिन्वानः अधः हन्दिष्यम् ४८,५; ३३५
 हिन्वानः आप्यं बृहत् ६२,१०; ४२७
 हिन्वानः गोः अधि त्वाचि ६५,२५; ५३२

हिन्वानः मानुषीः अपः ६३,७. ४५४
 हिन्वानः वाचम् ९७,३२; ८८८
 हिन्वानः वाचम् हविराम् ८४,४; ७०३
 हिन्वानः हेतुभिः ६४,२९; ५०६
 हियानः सनये ९,२,१; ८१२
 हियानः सोतुभिः ३०,२, २२५
 हिरण्यजित् ७८,४; ६८४
 हिरण्ययः ८५,११; ७२६। १०७,४. १००३
 हिरण्ययुः २७,४; २०९
 हिरण्यविद् ८६,३९; ७६६
 हृदं सनिः हन्दिष्य ६१,१४; ४०१
 होता ९२,६; ८१७

— = ७५७ —

सोम-देवता-संहितान्तर्गत- निपातदेवतानां वर्णानुक्रममूर्ची ।

(नवममण्डलस्य-सूक्तानि)

अदितिः ८१,५। ९७,५८
 अदिते गर्भः ७४,५
 अन्तरिक्षम् ८१,५
 अर्यमा ६४,२४। ८१,५। १०८,१४
 अश्विनौ ७,७। ८,२। ८१,४। [९७,४९ नर धीजयने
 रथेष्टाम् । एक वचनम् अश्विनौ ॥]
 आदित्याः ६१,७। ११४,३ [सप्त]।
 इन्द्रः १; १,९,१०। २; १,९। ४; ४। ६; ४,७,९।
 ७, ७। ८, १,३,९। ९, ५। ११; ६, ८, ९। १२;
 १, २। १३, १, ८। १५, १। १६; ३, ५। १७; २।
 १९; २। २१; १। २३; ६, ७। २४, २, ३, ५। २५;
 ५। २६, ६। २७; २, ६। ३०; ५, ६। ३२; २।
 ३३; ३। ३४, २, ४। ३७, ६। ३८, २। ३९; ५।
 ४०; २। ४३. २। ४५; १, २। ४६; ३, ६। ५०; ५।
 ५१, १, २। ५३. ४। ५६; २, ४। ६०, ३, ४। ६१;
 ८, १२, १४, २२, २५। ६२; ८, १४, १५, २२। ६३;
 २, ३, ५, ६, ९, १०, १५, १७, १९, २२। ६४; १२, १५, २२।
 ६५; ८, १०, [मरुत्वाम्] १४, २०। ६६; ७, १५, २८,

२९। ६७, २, ७, ८, १६। ६९; ६, ९, १०। ७०, ९, १०।
 ७२; २, ४, ५। ७३; २। ७४, ३, ९ [वृथा अपा मेता]।
 ७५, ५। ७६, २, ३, ५। ७७, १। ७८, २। ८०;
 २, ३, ५। ८१, १। ८४, १, ३, ४। ८५, १, ५, ६, ७।
 ८६; २, ९, १३, १६, १९, २२, २३, ३०, ३५, ४१। ८७;
 ४, ८, ९। ८८, १। ८९; ७। ९०; १, ५। ९५; ५।
 ९६, ३, ८, ९, १२, २१। ९७; ५, ६, १०, १६, १४, २५,
 ३२, ३६, ४१, ४३, ४४, ४६, ४९। ९८, ६, १०। ९९;
 ३, ८। १००, १, ५, ६। १०१, ४, ५, ६, ८। १०३, ५।
 १०६, १, ५, ८। १०७; १७। १०८; १, २ [वृथामः]
 १४, १५, १६। १०९; १, २, १४, १८, २०, २२। ११०;
 ८, ११। १११, ३। ११२, १, ४। ११३; १, ११।
 ११४; १-४

उशना ८७,३

उषसः १०,५

ऊनावृषा ९,३ [यावावृषिष्यी]

ऋषिजः सप्त ११४,३

गन्धर्वः ८३,४ [सूर्यः] ८५, १२ [सूर्य]।

स्वष्टा ८१, ४;
 दिव्य जन्म ८५, ६. [देवाः]
 विशः (सात) ११४, ३
 देवाः १; ४। ३, ९। ८, ५। ११; ७। २३; ६। २५;
 १, ३। २८, १। २९; १। ३९, १। ४२; ४, ५।
 ४४, १, ३, ५। ४५, २, ४। ४९, ४। ५१; ३। ६१;
 १३। ६२, २०, २१। ६५; २, ३। ६८; १०। ६९;
 १०। ७८; ४। ८५; ६ [दिव्य जन्म]। ८६; ३०।
 ९०, ५। ९४, ५। ९७, १, ४-७, १२, २०, ४१, ४२।
 ९८, १० [सदानासद् देवः]। १००, ६। १०१; ४।
 १०३; ६। १०५, ३। १०६, ८, ६। १०७; १८, २२,
 २३। १०९, ४, ५, १२, २१
 धावापृथिव्यौ ९; ३ [ऋतावृधा]। ६८, १०। ६९, १०।
 ८१, ५। ९७, ४२
 धौः ९७; ५८। १०९; ५
 ना दक्षिणावान् ९८; १०
 पितरः ९३; ११
 पूषा ६१, ९। ८१; ४। १०९; १
 पृथिवी ९७; ५८। १०९; ५
 पृथ्विमातरः ३४; ५ [मरुतः]।
 प्रजा १०९; ५
 नृहस्पतिः ६१; ४। ८५; ६
 ब्रह्मणस्पतिः ८३; १
 भगः ७; ८। १०, ५। ४४; ६। ६१, ९। ८१; ५।
 १०८; १४। १०९; १।
 मरुतः २५; १। ३३; ३। ३४; २, ५ [पृथ्विमातरः]।
 ५१; ३। ६१; १२। ६४; २४। ६५; २०। ६६; २६
 [मरुतः]। ७३; ७ [रुद्रासः]। ८१, ४। ९०; ५। ९७, ४
 [मारुतं शर्धं]।
 महान् इन्द्रः ९०; ५। ['मत्सीन्द्रम्' द्वि० पादः; 'मत्सि
 महामिन्द्रम्' चतुर्थेः पादः]
 मित्रः ६१; ९। ६४; २४। ७०, ८। ८१; ४। ८५;
 ६। ९०; ५। ९७; ५८। १००; ५। १०४, ३।

१०७, १५। १०९; १
 मित्रावरुणौ ७; ८। ९७; ४२, ४९
 रुद्रासः ७३; ७। [मरुतः]
 रोदसी १८; ५, ६। ७४, २। ९७; २७
 वरुण ३३; ३। ३४, २। ६१; ९, १२। ६४; २४।
 ६५; २०। ७०; ८। ८१; ४। ८४, १। ८५; ६।
 ९०; ५। ९७; ५८। १००, ५। १०४; ३। १०७;
 १५
 वाक् ७३, ७
 वायुः ७; ७। ८, २। १३; १। २५, १, २। २७, २।
 ३३, ३। ३४; २। ४४, ५। ४६; २। ६१; ८, ९।
 ६३; ३, १०, २२। ६५, २०। ६७; १८। ७०; ८।
 ८१; ४। ८४, १। ८५; ६। ९७; २५। ४२; ४९
 विः ४८, ४ [सुपर्णः]
 विधाता ८१; ५;
 विश्वे देवाः १४, ३। १८, ३। ८०, ४। ८१, ५। ९२, ४।
 ९८, ७। ९९, ४, ७। १०२, ५। १०९, २, १५
 विष्णुः ३३; ३। ३४, २। ५६, ४। ६३; ३। ६५; २०।
 ९०, ५। १००; ६
 वैश्वानरः ६१, १६
 अद्वा १, ६ [सूर्यस्य दुहिता]।
 सरस्वती ६७, ३२। ८१, ४
 सविता ८१, ४। ११०, ६
 मिन्धुः ९७, ५८
 सुपर्णः [वि] ४८, ३ ४
 सूरः १०, ९
 सूर्यः २, ६। ४, ५, ६। १७, ५। २७, ५। २८, ५। ६४, ३०।
 ९७, ४१। ११४, ३ [नानासूर्या]।
 सूर्यस्य दुहिता १, ६ [अद्वा]
 सूर्यस्य रश्मयः ६१, ८
 सूर्यामा ८३, ३, ४ [गन्धर्वः, पृथ्विः अग्निः, उक्षा]
 ८५, १२ [गन्धर्वः]

ऋग्वेदीय-सर्वानुक्रमण्यनुक्त-देवता-तद्विशेष-सूची ।

अभिरक्षोहा [बृ० दे०] ७३, ७ सहस्रधारे वितते पवित्र० ।
 अश्विनौ ९७, ४९ ('नर धीजवनः रथेष्ठा = अश्विनौ)
 अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि० ।
 अभी नरं धीजवनं रथेष्ठाभेभीन्द्रं नृपणं वज्रग्राहुम् ॥
 इन्द्रः १०, ५ आपानासो . भगम् । सूरः वि तन्वते ॥
 इन्द्रः ४०, २ गमदिन्द्रं वृषा सुतः ।
 इन्द्रः ६१, २२ य आविश इन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
 इन्द्रः ६६, २८ पुनान इन्दुरिन्द्रमा ।
 इन्द्रः ६९, ६ नेन्द्राहते पवते धाम किं चन ।
 इन्द्रः ६९, ९ एते सोमाः पवमानास इन्द्रम् ।
 इन्द्रः ७२, २ इन्द्रस्य सोमं जठरे यदाहुहुः ।
 इन्द्रः ७६, २ इन्द्रस्य शुष्ममीरयन् ।
 इन्द्रः ७६, ३ इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणां ।
 इन्द्रः ७६, ५ स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमः ।
 इन्द्रः ८४, ४ इन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ।
 इन्द्रः ८५, २ पिवेन्द्र सोममव नो मृधो जहि ।
 इन्द्रः ८५, ३ आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुतमः ।
 इन्द्रः ८७, ८ सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा ।
 इन्द्रः ९७, १० इन्द्रे सोमः सह इन्वन् मदाय ।
 इन्द्रः ९७, ११ इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणः ।
 इन्द्रः ९७, १२ अभि प्रियाणि पवते पुनानो० ।
 इन्द्रः ९७, ४३ इन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः ।
 इन्द्रः ९७, ४१ अदधादिन्द्रे पवमान ओजः ।
 इन्द्रः १००, १ अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
 इन्द्रः १०१, ६ सखेन्द्रस्य दिवे दिवे ।
 इन्द्रः १०९, २२ इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते ।
 इन्द्रधाम ६९, ६ नेन्द्राहते पवते धाम किंचन ।
 दक्षिणावान् ना ९८, १० नरे च दक्षिणावते ।
 दिव्यं जन्म [देताः] ८५, ६ स्वाहुः पवस्व दिव्याय जन्मने ।
 देवाः ११, ७ देवेभ्यः अनुकामकृत् ।

देवाः २५, २ पवमान धिया... कनिकदत् । धर्मणा... विशा ॥
 देवाः २५, ३ सं देवैः शोभते वृषा ।
 देवाः २५, ६ आ पवस्व करो । अर्कस्य... योनिमामदम् ॥
 देवाः २८, २ सोमो देवेभ्यः सुतः ।
 देवाः ३९, १ यत्र देवा इति ब्रुवन् ।
 देवाः ४५, ४ इन्दुर्देवेषु पत्यते ।
 देवाः ४९, ४ देवासः शृगवन् हि कम् ।
 देवाः ६५, २ देवो देवेभ्यस्परि ।
 देवाः ८६, ३० देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।
 देवाः ९७, ४१ अपां यद्रभोऽवृणीत देवान् ।
 देवाः १०९, २१ देवेभ्यस्त्रा वृथा पाजसे ।
 देवासः ७८, ४ यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदम् ।
 प्रजा १०९, ५ दिवे पृथिव्यै शं च प्रजाये ।
 मरुतः ५१, ३ पवमानस्य मरुतः ।
 मित्रः ६१, ९ चारुमित्रे वरुणे न ।
 वायुः १३, १ वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ।
 वायुः २५, २ धर्मणा वायुमा विश ।
 वायुः ४८, २ वायुं सोमा अमृशत ।
 वायुः ६३, ३ मधुर्मा अस्तु वायये ।
 वायुः ६३, १० परीतो वायवे सुतम् ।
 वायुः ६३, २२ वायुमा रोह धर्मणा ।
 वायुः ६७, १८ शुक्रा वायुमश्वक्षत ।
 वायुः ८४, १ अत्मा इन्द्राय वरुणाय वायये ।
 विष्णुः ६३, ३ सुत इन्द्राय विष्णवे ।
 विश्वे देवाः ९२, ४ तव त्वे सोम पवमान निष्ये विश्वे देवाः ।
 सवनासव देवः ९८, १० देवाय सवनामदे ।
 सरस्वती ६७, ३२ तस्मै सरस्वती दुह ।
 सविता ११०, ६ वारं न देवः सविता व्यूर्णने ।
 सूर्यः ९७, ४१ अजनयत् सूर्यं ज्योतिरिन्दुः ।
 सूर्यः ६४, ३० पवस्व सूर्यो ह्यशे ।



दैवत-संहिता ।

[ऋग्यजुःसामाथर्वणां संहितानां सर्वान् मन्त्रान् दैवतानुसारेण संगृह्य निर्मिता ।]

४ मरुदेवता ।

॥ १ ॥ (ऋ० १।६। ४, ६, ८, ९)

(१-४) मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः । गायत्री ।

आदहं स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेरिरे	।	दधाना नाम यज्ञिर्यम्	४	
वृवयन्तो यथा मतिमच्छा विद्वंसु गिरः	।	महामनूषत श्रुतम्	६	
अनघ्नैरभिद्युभिर्मखः सहस्वदर्चति	।	गणैरिन्द्रस्य काम्यैः	८	
अतः परिजमन्ना गहि विवो वा रोचनादधि ।		समस्मिन्नस्तते गिरः	९	४

॥ २ ॥ (ऋ० १।५। २)

(५) मेधातिथिः काण्वः । गायत्री ।

मरुतः पिबन्त ऋतुना पोत्राद् यज्ञं पुनीतन	।	युयं हि सा सुदानवः	२	५
--	---	--------------------	---	---

॥ ३ ॥ (ऋ० १।३। १-१५)

(६-४५) कण्वो घौरः । गायत्री ।

क्रीलं वः शर्धो मरुतमनर्वाणं रथेशुभम्	।	कण्वा अभि प्र गायत	१	
ये पृषतीभिर्ऋष्टिभिः साकं वाशीभिर्ऋष्टिभिः	।	अजायन्त स्वभानवः	२	
इहेव शृण्व एषां कशा हस्तेषु यद् वदान्	।	नि यामश्चित्रमृतते	३	
प्र वः शर्धीय घृष्वये त्वेषद्युम्नाय शुष्मिणे	।	वृवन्तं ब्रह्म गायत	४	
प्र शंसा गोण्वधन्यं क्रीलं यच्छर्धो मरुतम्	।	जम्भे रसस्य वावृधे	५	१०
को वो वर्षिष्ठ आ नरो विवश्च गमश्च धूतयः	।	यत् सीमन्तं न धूनुथ	६	
नि वो यामाय मानुषो बुध उग्राय मन्यवे	।	जिहीत पर्वतो गिरिः	७	
येयामज्मेषु पृथिवी जुजुवा इव विष्पतिः	।	भिया यामेषु रेजते	८	१३

स्थिरं हि जानमेषां वयो मातुर्निरते	। यत् सीमनु द्विता शवः	१	
उदु त्ये सूनवो गिरः काष्ठा अज्मेध्वत्त	। वाश्वा अभिजु यातवे	१०	१५
त्यं चिद् वा वीर्यं पृथुं मिहो नपातममृधम्	। प्र च्यावयन्ति यामभिः	११	
मरुतो यद्ग वो बलं जनां अचुच्यवीतन	। गिरीरचुच्यवीतन	१२	
यद्ग यान्ति मरुतः सं ह ब्रुवतेऽध्वन्ना	। शृणोति कश्चिदंषाम	१३	
प्र यातु शीर्भमाशुभिः सन्ति कण्वेषु वो दुवः	। तत्रो पु मादयाध्व	१४	
अस्ति हि ष्मा मदाय वः स्मसिं ष्मा वयमेणाम् । विश्वं चिदायुर्जीवसे		१५	२०

॥ ३ ॥ (क्र० १।३८।१-१५) ॥

कन्द्र नूनं कधप्रियः पिता पुत्रं न हस्तयोः	। वृधध्वं वृक्तबर्हिषः	१	
कं नूनं कद वो अर्थं गन्तां विवो न पृथिव्याः	। कं वो गावो न रणयन्ति	२	
कं वः सुम्ना नव्यामि मरुतः कं सुविता	। क्वां विश्वानि सौभगा	३	
यद् युयं पृथिमातरा मतीसः स्यातन	। स्तोता वो अमृतः स्यात	४	
मा वो मृगो न गवसे जग्ता भूदजोप्यः	। पृथा यमस्य गादुप	५	२५
मो पु णः परापरा निरुतिर्दुर्हणा वधीत्	। पृदीष्ट तृणया सह	६	
मत्यं तेषा अमवन्तो धन्वश्चिदा रुद्रियासः	। मिहं कृण्वन्त्यवाताम	७	
वाश्रेव विद्युन्मिमाति वत्सं न माता सिपक्ति	। यदंषां वृष्टिरसजिं	८	
दिवा चित्तमः कृण्वन्ति पर्जन्येनोदवाहेन	। यत् पृथिवीं व्युन्दन्ति	९	
अधं स्वनान्मरुतां विश्वमा सद्ग पार्थिवम्	। अरेजन्त प्र मानुषाः	१०	३०
मरुता वीळूपाणिभिश्चित्रा रोधस्वतीरनु	। यातमस्त्रिद्रयामभिः	११	
स्थिरा वः सन्तु नमयो रथा अश्वास एषाम्	। सुसंस्कृता अभीशवः	१२	
अच्छा वद्वा तना गिरा जरायु ब्रह्मणस्पतिम्	। अग्निं मित्रं न दर्शतम्	१३	
मिमीहि श्लोकं मास्ये पर्जन्य इव ततनः	। गायं गायत्रमवश्यम्	१४	
वन्दस्व मरुतं गुणं त्वेयं पतस्युमर्किणम्	। अस्मै वृद्धा असन्निह	१५	३५

॥ ४ ॥ (क्र० १।३९।१-१५) ॥

(प्रगाथः= विपमा वृहती. (स्मसा) स्मना वृहती) ।

प्र यद्विथा पंगवतः शोचिर्न मानमस्यथ ।			
कस्य क्रत्वा मरुतः कस्य वर्षमा कं याथ कं ह धृतयः		१	
स्थिरा वः सन्त्वायुधा पंगुदे वीळू उत प्रतिष्कभे ।			
युष्माकमस्तु तविषी पर्नीयसी मा मर्त्यस्य मायिनः		२	३७

परां ह यत् स्थिरं हथ नरो वर्तयथा गुरु ।	
वि याथन वनिनः पृथिव्या व्याशाः पर्वतानाम्	३
नहि वः शत्रुर्विविदे अधि अवि न भूम्यां रिशादसः ।	
युष्माकमस्तु तर्विषी तनां युजा रुद्रासो नू चिन्दाधृषे	४
प्र वेपयन्ति पर्वतान् वि विञ्चन्ति वनस्पतीन् ।	
प्रो आरत मरुतो दुर्मदा इव देवासः सर्वया विशा	५ ४०
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं प्रष्टिर्वहति रोहितः ।	
आ वां यामाय पृथिवी चिदश्रो—दवीभयन्त मानुषाः	६
आ वो मक्षू तनाय कं रुद्रा अवां वृणीमहे ।	
गन्तां नूनं नोऽवसा यथा पुरे—त्या कण्वाय विभ्युषं	७
युष्मेर्षितो मरुतो मर्त्येषित आ यो नो अब्ब ईषते ।	
चि तं युयोत् शर्वसा व्योजसा वि युष्माकाभिरूतिभिः	८
असामि हि प्रयज्यवः कण्वं दृढ प्रचेतसः ।	
असामिभिर्मरुत आ न ऊतिभि—गन्तां वृष्टिं न विद्युतः	९
असाम्योजो विभृथा मुदानवो ऽसामि धूतयः शर्वः ।	
ऋषिद्विषे मरुतः परिमन्यव इपुं न सृजत द्विषम्	१० ४१

॥ ६ ॥ (ऋ० ८।७।१-२६) M/
(४६-८९) पुनर्वन्मः काण्वः । गायत्री ।

प्र यद् वस्त्रिण्डुभूमिपं मरुतो विप्रो अक्षरत् । वि पर्वतेषु राजथ	१
यदुक्क तर्विषीयवां यामं शुभ्रा अचिध्वम् । नि पर्वता अहासत	२
उदीरयन्त वायुभि—वांश्रासः पृश्निमातरः । धुक्षन्त पिप्युषीमिषम्	३
वपन्ति मरुतो मिहं प्र वेपयन्ति पर्वतान् । यद् यामं यान्ति वायुभिः	४
नि यद् यामाय वो गिरि—नि सिन्धवो विधर्मणे । महे शुष्माय येमिरे	५ ५०
युष्मां उ नक्तमूतये युष्मान् दिवा हवामहे । युष्मान् प्रयत्यध्वरे	६
उदु त्पे अरुणस्संव—श्चित्रा यामंभिरीरते । वाश्रा अधि ण्णुनां दिवः	७
सृजन्ति रश्मिमोजसा पन्थां सूर्याय यातवे । ते भानुभिर्वि तस्थिरे	८
इमां मे मरुतो गिरि—मिमं स्तोमसृभुक्षणः । इमं मे वनता हवम्	९
त्रीणि सरांसि पृश्नयो दुदुह्वे वज्रिणे मधु । उत्सं कर्वन्धमुद्रिणम्	१० ५५
मरुतो यद्ध वो दिवः सुम्नायन्तो हवामहे । आ तू न उप गन्तन	११ ५६

यूयं हि षा सुदानवो रुद्रा क्रभुक्ष्णो दमे	। उत प्रचेतसो मदे	१२	
आ नो रायि मदुच्युतं पुरुक्षुं विश्वधायसम्	। इयता मरुतो विवः	१३	
अधीव यद् गिरीणां यामं शुभ्रा अचिध्वम्	। सुवानैर्मन्दध्व इन्दुभिः	१४	
एतावतश्चिदेषां सुम्नं भिक्षेत मर्त्यः	। अदाभ्यस्य मन्माभिः	१५	३०
ये द्रुप्सा इव रोदसी धमन्त्यनु वृष्टिभिः	। उत्सं दुहन्तो आक्षितम्	१६	
उदु स्वांनेभिरीरत उद् रथैरुदु वायुभिः	। उत स्तोमैः पृश्निमातरः	१७	
येनाव तुर्वशं यदु येन कण्वं धनस्पृतम्	। राये सु तस्य धीमहि	१८	
इमा उ वः सुदानवो धृतं न पिप्युषीर्षिः	। वर्धान् काण्वस्य मन्माभिः	१९	
क्व नूनं सुदानवो मदथा वृक्तवर्हिषः	। ब्रह्मा को वः सपर्यति	२०	६५
नहि ण्म यद्ध वः पुरा स्तोमैर्भिवृक्तवर्हिषः	। शर्धा ऋतस्य जिन्वथ	२१	
समु त्पे महतीरपः सं क्षोणी समु सूर्यम्	। सं वज्रं पर्वशो दधुः	२२	
वि वृत्रं पर्वशोर्ययुर्वि पर्वता अराजिनः	। चक्राणा वृष्णि पौंस्यम्	२३	
अनु त्रितस्य युध्यतः शुष्ममावन्नत क्रतुम्	। अन्विन्द्रं वृत्रतूर्यं	२४	
विद्युद्धस्ता अभिद्यवः शिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः	। शुभ्रा व्यञ्जत श्रिये	२५	७०
उशाना यत् परावत उक्ष्णो रन्ध्रमयातन	। द्यौर्न चक्रदद् भिया	२६	
आ नो मखस्यं द्वावने ऽर्ध्वहिरण्यपाणिभिः	। देवांसु उप गन्तन	२७	
यदेषां पूर्पती रथे प्रष्टिर्वहति रोहितः	। यान्ति शुभ्रा रिणन्नपः	२८	
सूपोमे शर्यणावत्यार्जके प्रस्थावति	। ययुर्निचक्रया नरः	२९	
कदा गच्छाथ मरुत इत्था विप्रं हवमानम्	। माड्डीकेभिर्नार्धमानम्	३०	७५
कद्ध नूनं कंधप्रियो यदिन्द्रमजहातन	। को वः सखित्व ओहते	३१	
सहो पु णो वज्रहस्तैः कण्वासो अग्निं मरुद्भिः	। स्तुपे हिरण्यवाशीभिः	३२	
ओ पु वृष्णः प्रयज्युना नवसे सुविताय	। ववृत्यां चित्रवाजान्	३३	
गिर्यश्चिन्नि जिहते पर्शानासो मन्यमानाः	। पर्वताश्चिन्नि यमिरे	३४	
आक्षण्यावानो वहन्त्यन्तरिक्षेण पततः	। धातारः स्तुवते वयः	३५	८०
अग्निर्हि जानि पूर्व इच्छन्वो न सूरौ अर्चिषा	। ते भानुभिर्वि तस्थिरे	३६	८१

॥ ७ ॥ (क० ८।२०।१-२६)

(८२-१०७) सोमभिः काण्वः । प्रगाथः=(विप्रमा क्रकृप, समा मनोयुहनी) : १४ सतो विराट् ।

आ गन्ता मा रिषण्यत प्रस्थावानो मापं स्थाता समन्यवः । स्थिरा चिह्नमयिष्णावः १ ८१

वीळुपविभिर्मरुत ऋभुक्षण आ रुद्रासः सुदीतिभिः ।		
इषा नो अद्या गता पुरुस्पृहो यज्ञमा सोमरीयवः	२	
विद्या हि रुद्रियाणां शुष्ममुग्रं मरुतां शिमीवताम् । विष्णोरिषस्य मीळहुषाम्	३	
वि द्वीपानि पापतन् तिष्ठद् द्रुच्छुनो भे युजन्त रोदसी ।		
प्र धन्वान्यैरत शुभ्रखादयो यदेजथ स्वभानवः	४	८५
अच्युता चिद् वो अजमन्ना नानदति पर्वतासो वनस्पतिः । भूमिर्यामेषु रेजते	५	
अमाय वो मरुतो यातवे द्यौर्जिहीत उत्तरा बृहत् ।		
यत्रा नरो देदिशते तनूष्वा त्वक्षांसि बाह्वोजसः	६	
स्वधामनु भियं नरो महि त्वेषा अमवन्तो वृषप्सवः । वहन्ते अहुतप्सवः	७	
गोभिर्वाणो अज्यते सोमरीणां रथे कोशे हिरण्यये ।		
गोबन्धवः सुजातास इषे भुजे महान्तो नः स्पर्से नु	८	
प्रति वो वृषदन्त्रयो वृष्णे शर्धाय मारुताय भरध्वम् । हव्या वृषप्रयावणे	९	९०
वृषणश्वेन मरुतो वृषप्सुना रथेन वृषनाभिना ।		
आ श्येनासो न पक्षिणो वृथा नरो हव्या नो वीतये गत	१०	
समानमश्वेषां वि भ्राजन्ते रुक्मासो अधि बाहुषु । दविद्युतत्यूष्टयः	११	
त उग्रासो वृषण उग्रबाहवो नकिण्टनूषु येतिरे ।		
स्थिरा धन्वान्यायुधा रथेषु वो ऽनीकेष्वधि श्रियः	१२	
येषामर्णो न सप्रथो नाम त्वेषं शश्वतामेकमिद् भुजे । वयो न पित्र्यं सहः	१३	
तान् वन्दस्व मरुतस्तां उप स्तुहि तेषां हि धुनीनाम् ।		
अराणां न चरमस्तदेषां दाना मद्वा तदेषाम्	१४	९५
सुभगः स व ऊतिष्वास पूर्वासु मरुतो व्युष्टिषु । यो वा नूनमुतासति	१५	
यस्य वा यूयं प्रति वाजिनो नर आ हव्या वीतये गथ		
अभि ष द्युमैरुत वाजसातिभिः सुम्ना वो धूतयो नशत्	१६	
यथा रुद्रस्य सूनवो विवो वशन्त्यसुरस्य वेधसः । युवानस्तथेदसत्	१७	
ये चार्हन्ति मरुतः सुदानवः स्मन्मीळहुषश्चरन्ति ये ।		
अतश्चिदा न उप वस्यसा हृदा युवान आ ववृध्वम्	१८	
यून ऊ पु नविष्ठया वृष्णाः पावकां अभि सोमरे गिरा । गाय गा इव चक्रेषत्	१९	१००
साहा ये सन्ति मुष्टिहेव हव्यो विश्वासु पुत्सु होतृषु ।		
वृष्णश्चन्द्राक्ष सुश्रवस्नमान् गिरा वन्दस्व मरुतो अहं	२०	१०१

गावश्चिद् वा समन्यवः सजात्येन मरुतः सर्वन्धवः । रिहते ककुभो मिथः	२१	
मर्तश्चिद् वो नृतवो रुक्मवक्षस उष भ्रातृत्वमार्यति ।		
आर्धं नो गात मरुतः सदा हि व आपित्वमास्ति निर्धुवि	२२	
मरुतो मारुतस्य न आ भेषजस्य वहता सुदानवः । यूयं संखायः सप्तयः	२३	
याभिः सिन्धुमवथ याभिस्तूर्वथ याभिर्दशस्यथा किर्विम ।		
मयो नो भूतोतिभिर्मयोभुवः शिवाभिरसचद्विषः	२४	१०४
यत् सिन्धौ यदासिक्न्यां यत् समुद्रेषु मरुतः सुबर्हिषः । यत् पर्वतेषु भेषजम्	२५	
विश्वं पश्यन्तो विभृथा तनूष्वा तेना नो अर्धं वोचत ।		
क्षमा रपो मरुत आतुरस्य न इष्कर्ता विहृतं पुनः	२६	१०७

॥ ८ ॥ (क्र० १:१४:१-१५)
(१०८-१२२) नोधा गौतमः । जगती. १५ त्रिष्टुप् ।

वृष्णे शर्धाय सुमखाय वेधसे नोधः सुवृक्तिं प्र भरा मरुद्भ्यः ।		
अपो न धीरो मनसा सुहस्त्यो गिरः समन्त्रे विदथेष्वाभुवः	१	
ते जज्ञिरे विव ऋष्यास उक्ष्णो रुद्रस्य मर्या असुरा अरेपमः		
पावकासः शुचयः सूर्या इव सत्वानो न द्रप्सिनो घोरवर्षसः	२	
युवानो रुद्रा अजरा अभोग्धना ववक्षुरग्धिगावः पर्वता इव ।		
दृळ्हा चिद् विश्वा भुवनानि पार्थिवा प्र च्यावयन्ति दिव्यानि मज्मना	३	११०
चित्रैरस्त्रिभिर्वपुषे व्यञ्जते वक्षःसु रुक्मो अर्धं येतिरे शुभे ।		
अंसेष्वेषां नि मिमृक्षुर्ऋण्यः साकं जज्ञिरे स्वधया विवो नरः	४	
इज्ञानकृतो धुनयो रिशादसो वातान् विद्युतस्तविषीभिरकत ।		
दुहन्त्यूर्ध्विष्यानि धृतयो भूमिं पिन्वन्ति पर्यसा परिज्रयः	५	
पिन्वन्त्यपो मरुतः सुदानवः पर्यो घृतवद् विदथेष्वाभुवः ।		
अत्यं न मिहे वि नयन्ति वाजिन—मुत्सं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितम्	६	
महिषासां मायिनश्चित्रभानवो गिर्यो न स्वतवसा रघुपदः ।		
मृगा इव हस्तिनः खादथा वना यदारुणीषु तविपीर्युग्ध्वम्	७	
सिंहा इव नानदति प्रचेतसः पिशा इव सुपिशां विश्ववेदसः ।		
क्षपो जिन्वन्तः पृषतीभिर्ऋष्टिभिः समित सवाधः शवसाहिमन्यवः	८	११५
रोदसी आ वेदता गणश्रियो नृपाचः शूराः शवसाहिमन्यवः ।		
आ बन्धुरेष्टमतिर्न दर्शता विद्युन्न तस्थौ मरुता रथेषु वः	९	११६

विश्ववेदसो रयिभिः समोक्तसः समिश्रसास्तविषीभिर्विरुग्निः ।	
अस्तार इषुं दधिरे गर्भस्त्यो—रनन्तशुष्मा वृषखादयो नरः	१०
हिरण्ययेभिः पविभिः पयोवृध उज्जिघ्नन्त आपथ्योऽं न पर्वतान् ।	
मखा अयासः स्वसृतो ध्रुवच्युतो दुधकृतो मरुतो भ्राजदृष्टयः	११
घृषुं पावकं वनिनं विचर्षणिं रुद्रस्य सूनुं हवसा गृणीमसि ।	
रजस्तुरं तवसं मारुतं गण—मृजीषिणं वृषणं सश्रत श्रिये	१२
प्र नू स मर्तः शर्वसा जना अति तस्थौ व ऊती मरुतो यमावत ।	
अर्वाद्भिर्वाजं भरते धना नृभि—रापृच्छयं क्रतुमा क्षेति पुष्यति	१३ १२०
चकृत्यं मरुतः पुत्सु दुष्टरं द्युमन्तं शुष्मं मघवत्सु धत्तन ।	
धनस्पृतमुक्थ्यं विश्वचर्षणिं तोकं पुष्यम तनयं शतं हिमाः	१४
नू ण्ठिरं मरुतो वीरवन्त—मृतीषाहं रयिमस्मासु धत्त न	
सहस्रिणं शतिनं शूशुवांसं प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात	१५ १२२

॥५॥ (क्र० ११८५१-१२) जल

(१२३-१५६) गोममो राहृगणः । जगतीः ५.१२ त्रिष्टुप ।

प्र ये शुम्भन्ते जनयो न सप्तयो यामन् रुद्रस्य सूनवः सुदंससः ।	
रोदसी हि मरुतश्चक्रिरे वृधे मदन्ति वीरा विदथेषु वृष्वयः	१
त उक्षिस्तासो महिमानमाशत विवि रुद्रासो अधि चक्रिरे सदः ।	
अचन्तो अर्कं जनयन्त इन्द्रिय—मधि श्रियो दधिरे पृश्निमातरः	२
गोमातरो यच्छुभयन्ते अस्त्रिभि—स्तनूषु शुभ्रा दधिरे विरुक्मतः	
बाधन्ते विश्वमभिमातिनमप वर्त्मन्येषामनु रीयते घृतम	३ १२५
वि ये भ्राजन्ते सुमस्तास ऋद्भिभिः प्रच्यावयन्तो अच्युता चिदोजसा	
मनोजुवो यन्मरुतो रथेष्वा वृषवातासः पृषतीरयुग्ध्वम	४
प्र यद् रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं वाजे अर्द्रि मरुतो रंहयन्तः ।	
उतारुषस्य वि प्यन्ति धारा—श्रमेवोदभिव्युन्दन्ति भूमं	५
आ वो बहन्तु सप्तयो रघुपत्यदो रघुपत्वाः प्र जिगात बाहुभिः ।	
सीवृता बर्हिरुरु वः सदस्कुतं मादयध्वं मरुतो मध्वो अन्धसः	६
तंसवर्धन्त स्वतवसो महित्वना नाकं तस्थुरु चक्रिरे सदः ।	
विष्णुर्यद्वावद् वृषणं मदच्युतं वयो न सीवृन्नधि बर्हिषि प्रिये	७ १२९

शूरा इवेद् युयुधयो न जग्मयः श्रवस्यवो न पृतनासु येतिरे ।		
भयन्ते विश्वा भुवना मरुद्भ्यो राजान इव त्वेषसँदृशो नरः	८	१३०
त्वष्टा यद् वज्रं सुकृतं हिरण्यं सहस्रभृष्टिं स्वपा अवर्तयत् ।		
धत्त इन्द्रो नर्यपांसि कर्तवे ऽहन् वृत्रं निरपामाँजदर्णवम्	९	
ऊर्ध्वं नुनुद्रेऽवतं त ओजसा दादृहाणं चिद् बिभितुर्वि पर्वतम् ।		
धमन्तो वाणं मरुतः सुदानवो मदे सोमस्य रण्यानि चक्रिरे	१०	
जिह्वं नुनुद्रेऽवतं तया विशासिञ्चन्नुत्सं गोतमाय तूष्णजे ।		
आ गच्छन्तीमवसा चित्रभानवः कामं विप्रस्य तर्पयन्त धामभिः	११	
या वः शर्म शशमानाय सन्ति त्रिधातूनि दाशुषे यच्छताधि ।		
अस्मभ्यं तानि मरुतो वि यन्त रयिं नो धत्त वृषणः सुवीरम्	१२	

॥ १० ॥ (क्र० १।८८।१-१०) गायत्री ।

मरुतो यस्य हि क्षयं पाथा दिवो विमहसः । स सुगोपातमो जनः	१	१३०
यज्ञैर्वी यज्ञवाहसो विप्रस्य वा मतीनाम् । मरुतः शृणुता हवम	२	
उत वा यस्य वाजिनो ऽनु विप्रमर्क्षत । स गन्ता गोमति व्रजे	३	
अस्य वीरस्य बर्हिषि सुतः सोमो दिविष्टिषु । उक्थं मदश्च शस्यते	४	
अस्य श्रोषन्त्वा भुवो विश्वा यश्चर्षणीरभि । सूरं चित समुषीरिषः	५	
पूर्वीभिर्हि दंदाशिम शरद्भिर्मरुतो वयम् । अवोभिश्चर्षणीनाम्	६	१३०
सुभगः स प्रयज्यवो मरुतो अस्तु मर्त्यः । यस्य प्रयामि पर्पथ	७	
शशमानस्य वा नरः स्वेदस्य सत्यशवसः । विदा कामस्य वेनतः	८	
यूयं तत् सत्यशवस आविष्कृतं महित्वना । विध्यता विद्युता रक्षः	९	
गूहता गुह्यं तमो वि यात विश्वमत्रिणम् । ज्योतिष्कर्ता यद्रुमसि	१०	

॥ ११ ॥ (क्र० १।८८।१-८) जगती ।

प्रत्वक्षसः प्रतवसो विरिञ्चिनो ऽनानता अविथुरा क्रजीषिणः ।		
जुष्टमासो नृतमासो अस्त्रिभिर्व्यानजे के चिदुसा इव स्तृभिः	१	१४०
उपह्वरेषु यदचिध्वं ययिं वयं इव मरुतः केन चित पथा ।		
श्रोतन्ति कोशा उप वो रथेष्वा घृतमुक्षता मधुवर्णमर्चत	२	
प्रेषामज्मेषु विथुरेवं रेजते भूमिर्यामेषु यद्धं युञ्जते शुभे ।		
ते क्रीळ्यो धुनयो आजहृष्टयः स्वयं महित्वं पनयन्त धृतयः	३	१४०

स हि स्वसृत् पृषदश्चो युवां गणोऽ ॥ १३० ॥
 असीं सत्यं क्रणयावानेद्यो ॥ १३१ ॥
 पितुः प्रत्नस्य जन्मना वदामसि ॥ १३२ ॥
 यद्वीमिन्द्रं शम्युक्ताण आशता ॥ १३३ ॥
 भ्रियसे कं भानुभिः सं मिमिक्षिरे ॥ १३४ ॥
 ते रुश्मिभिस्त ऋक्भिः सुखादयः ॥ १३५ ॥
 ते वाशीमन्त इष्मिणो अभीरवो ॥ १३६ ॥

॥ १३२ ॥ (ऋ० १।८।१-६)
 (त्रिष्टुप्; १,६ प्रस्तारपङ्क्तिः, ५ विराड्रूपा) ।

आ विद्युन्मद्भिर्मरुतः स्वर्के ॥ १३७ ॥
 आ वर्षिष्ठया न इषा वयो न पसता सुमायाः ॥ १३८ ॥
 तेऽरुणेभिर्वरमा पिशङ्गैः ॥ १३९ ॥
 रुक्मो न चित्रः स्वर्धृतीवान् ॥ १४० ॥
 भ्रिये कं वो अधि तनूषु वाशीर्मेधा वना न कृणवन्त ऊर्ध्वा ॥ १४१ ॥
 युष्मभ्यं कं मरुतः सुजाता ॥ १४२ ॥
 अहानि गृध्राः पर्या व आगु ॥ १४३ ॥
 ब्रह्म कृण्वन्तो गोतमासो अर्के ॥ १४४ ॥
 एतत् त्यन्न योजनमचेति ॥ १४५ ॥
 पश्यन् हिरण्यचक्रानयोदंष्ट्रान् ॥ १४६ ॥
 एषा स्या वो मरुतोऽनुभर्त्री ॥ १४७ ॥
 अस्तोभयद् वृथासा ॥ १४८ ॥

॥ १३३ ॥ (ऋ० १।१३९।८)
 (१।५७) परुच्छेपो देवोदासिः । अत्यष्टिः ।

मो यु वो अस्मद्वभि तानि पौंस्या ॥ १४९ ॥
 यद् वंश्चित्रं युगेयुगे नव्यं घोषादमर्त्यम् ॥ १५० ॥
 अस्मासु तन्मरुतो यच्च दुष्टरं ॥ १५१ ॥

॥ १४४ ॥ (ऋ० १।१६६।१-१५)
 (१।५८-१५७) अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । जगती; १४-१५ त्रिष्टुप् ।

तन्न वोचाम रभसाय जन्मने ॥ १५२ ॥
 ऐधेव यामन् मरुतस्तुविष्वणो ॥ १५३ ॥

नित्यं न सूनं मधु विभ्रत उप क्रीलन्ति क्रीला विदथेपु घृष्वयः ।	
नक्षान्ति रुद्रा अवसा नमस्विनं न मर्धन्ति स्वतवसो हविष्कृतम्	२
यस्मा ऊमासो अमृता अरासत गयस्पोषं च हविषा ददाशुषे ।	
उक्षन्त्यस्मै मरुतो हिता इव पुरु रजांसि पर्यसा मयोभुवः	३ १६०
आ ये रजांसि तविषीभिरव्यत प्र व एवासः स्वयतासो अध्रजन् ।	
भयन्ते विश्वा भुवनानि हर्म्या चित्रो वो यामः प्रयतास्वृष्टिषु	४
यत् त्वेषयामा नदयन्त पर्वतान् विवो वा पृष्ठं नर्या अचुच्यवुः ।	
विश्वो वो अज्मन् भयते वनस्पती रथीयन्तीव प्र जिहीत आपधिः	५
यूयं न उग्रा मरुतः सुचेतुना ऽरिष्टग्रामाः सुमतिं पिपर्तन् ।	
यत्रा वो दिद्युद् रदति किर्विदती रिणाति पृश्वः सुधितेव बृहणा	६
प्र रुक्मभदेष्णा अनवभ्रराधसो ऽलातृणासो विदथेपु सुष्टुताः ।	
अचन्त्यर्कं मदिरस्य पीतये विदुर्वीरस्य प्रथमानि पौस्या	७
ज्ञतभुजिभिस्तमभिहुतेरघात् पूर्भी रक्षता मरुता यमावन्त ।	
जन् यमुग्रास्तवसो विरिञ्चिनः पाथना शमात् तनयस्य पृष्टिषु	८ १६१
विश्वानि भद्रा मरुतो रथेषु वो मिथस्पृध्यैव तविषाण्याहिता ।	
अंसेष्वा वः प्रपथेषु खादयो ऽक्षो वश्चका समया वि वावृन्त	९
भूरीणि भद्रा नर्येषु ग्राह्यु वक्षःसु रुक्मा रभसासो अन्नयः ।	
अंसेष्वेताः पविषु क्षुरा अधि वयो न पक्षान् व्यनु श्रियो धिर	१०
महान्तो महा विश्वोऽ विभूतयो दूरेदृशो ये दिव्या इव स्तुभिः ।	
मन्द्राः मुजिह्वाः स्वरितार आसभिः संभिश्चा इन्द्रं मरुतः परिष्टुभः	११
तद वः सुजाता मरुतो महित्वनं दीर्घं वो वात्रमदितेरिव व्रतम् ।	
इन्द्रश्चन त्यजसा वि ह्वणाति तज्जनाय यस्म सुकृतं अराध्वम्	१२
तद वो जामित्वं मरुतः परं युगे पुरु यच्छंसममृतास आवन्त ।	
अया धिया मनवे श्रुष्टिमाव्या साकं नरो दुंसनेरा चिकिचिर	१३ १७१
येन दीर्घं मरुतः शृश्वाम युष्माकेन परीणसा तुरासः ।	
आ यन् ततनन वृजने जनास एभिर्यज्ञेभिस्तदुभीष्टिमश्याम्	१४
एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दुर्यस्य मान्यस्य कारोः ।	
एषा यासीद तन्वे वयां विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम्	१५ १७२

॥ १५ ॥ (ऋ० १।१६।७।२-११) त्रिष्टुप्; (१० पुरस्ताज्ज्योतिः) ।

आ नोऽवोभिमरुतो यान्त्वच्छा ज्येष्ठैर्भिर्वा बृहद्वैः सुमायाः ।

अध यदैषां नियुतः परमाः समुद्रस्य चिद् धनयन्त पारे २

मिम्यक्ष येषु सुधिता घृताची हिरण्यनिर्णिगुपरा न ऋष्टिः ।

गुहा चरन्ती मनुषो न योषा सभावती विदुष्येव सं वाक् ३

परा शुभ्रा अयासो यव्या साधारण्येव मरुतो मिमिक्षुः ।

न रोदुसी अप नुदन्त घोरा जुषन्त वृधं सख्याय देवाः ४ १७५

जोषद् यदीमसुर्या सचध्वै विषितस्तुका रोदुसी नृमणाः ।

आ सूर्येव विधुतो रथं गात्र त्वेषप्रतीका नभसो नेत्या ५

आस्थापयन्त युवतिं युवानः शुभे निर्मिश्लां विदथेषु पञ्चाम् ।

अर्को यद् वो मरुतो हविष्मान् गायद् गाथं सुतसोमो दुवस्यन् ६

प्र तं विवक्मि वक्म्यो य एषां मरुतां महिमा सत्यो अस्ति ।

सचा यदीं वृषमणा अहंयुः स्थिरा चिज्जनीर्वहते सुभागाः ७

पान्ति मित्रावरुणावद्या चरन्त ईमर्यमो अप्रशस्तान् ।

उत चरवन्ते अच्युता ध्रुवाणि वावृध ईं मरुतो दातिवारः ८

नही नु वो मरुतो अन्त्यस्मे आरात्ताच्चिच्छवसो अन्तमापुः ।

ते धृष्णुना शवसा शूश्रुवांसो ऽर्णो न द्वेषो धृषता परि प्लुः ९ १८०

वयमद्येन्द्रस्य प्रेष्ठा वयं श्वो वोचेमहि समर्ये ।

वयं पुरा महि च नो अनु द्यून् तन्न क्रभुक्षा नरामनु प्यात् १०

एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्दुर्यस्य मान्यस्य कारोः ।

एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेधं वृजनं जीरदानुम् ११

॥ १६ ॥ (ऋ० १।१६।८।१-१०) जगतीः ८-१० त्रिष्टुप् ।

यज्ञायज्ञा वः समना तनुर्वणि धियं धियं वो देवया उ दधिध्वे ।

आ वोऽर्वाचः सुविताय रोदस्यो महे ववृत्यामवसे सुवृक्तिभिः १

ववासो न ये स्वजाः स्वतवस इषं स्वरभिजायन्त धूतयः ।

सहस्रियासो अपां नोर्मय आसा गावो वन्द्यासो नोक्षणः २

सोमासो न ये सुतास्तृतांशवो हृत्सु पीतासो दुवसो नासते ।

एषामंसेषु रम्भिणीव रारभे हस्तेषु स्वादिश्व कृतिश्च सं दधे ३ १८५

अव स्वयुक्ता दिव आ वृथा ययु रमर्त्याः कशया चोदत त्मना ।

अरेणवस्तुविजाता अचुच्यवु हृद्वानि चिन्मरुतो भ्राजहृष्टयः ४ १८६

को वोऽन्तर्मरुत ऋषिविद्युतो रजति त्मना हन्वेव जिह्वा ।

धन्वच्युत इषां न यामनि पुरुषैषां अहन्योः नेतशः

५

क्रं म्विदुस्य रजसो महस्परं कावरं मरुतो यस्मिन्नायय ।

यच्चयावयथ विथुरेव संहितं व्यद्विणा पतथ त्वेषमर्णवम्

६

सातिर्न वोऽमवती स्वर्वती त्वेषा विपांका मरुतः पिपिष्वती ।

भद्रा वो रतिः पूणतो न दक्षिणा पृथुजयी असुर्येव जज्ञती

७

प्रति शोभन्ति सिन्धवः पविभ्यो यदुभ्रियां वार्चमुदीरयन्ति ।

अव स्मयन्त विद्युतः पृथिव्यां यदी घृतं मरुतः पुष्णवन्ति

८

१००

असूत पृश्निर्महते रणांय त्वेषमयासां मरुतामनीकम् ।

ते संप्रसरासोऽजनयन्ताभ्वमादित् स्वधार्मिषिगं पर्यपश्यन्

९

एष वः स्तोमो मरुत इयं गीर्मान्द्वार्यस्य मान्यस्य कारोः ।

एषा यासीष्ट तन्वे वयां विद्यामेषं वृजनं जीरदानुम्

१०

॥ १७ ॥ (क्र० १।१७।१-२) त्रिष्टुप् ।

प्रति व एना नमसाहमेमि सूक्तेन भिक्षं सुमतिं तुराणाम् ।

रराणतां मरुतो वेद्याभिर्नि हेळो धत्त वि मुचध्वमश्वान्

१

एष वः स्तोमो मरुतो नमस्वान् हृदा तण्डो मनसा धायि देवाः ।

उपेमा यात मनसा जुषाणा यूयं हि ष्ठा नमस इदं वृधासः

२

॥ १८ ॥ (१।१८।१-३) गायत्री ।

चित्रो वोऽस्तु यामश्चित्र ऊती सुदानवः । मरुतो अहिभानवः

१

१९०

अरे सा वः सुदानवो मरुत ऋञ्जती शरुः । अरे अश्मा यमन्यथ

२

तृणस्कन्दस्य नु विशः परि वृङ्क सुदानवः । ऊर्ध्वान् नः कर्त जीवसे

३

॥ १९ ॥ (क्र० २।१९।१)

(१०।१-२१३) गृत्समदः (अहिगृत्सः शोतहोत्रः पश्चाद् भार्गवः) शोतकः । जगती ।

तं वः शर्धं मारुतं मुमन्युर्गिरोपं ब्रुवे नमसा देव्यं जनम् ।

यथा रयिं सर्ववीरं नशामहा अपत्यसाञ्च श्रुत्यं द्विवेदिवे

११

॥ २० ॥ (क्र० २।२०।१-१५) जगती । १५ त्रिष्टुप् ।

धारावरा मरुतो धृष्णवो जसो मृगा न भीमास्तविषीभिर्चिनः ।

अग्रयो न शुशुचाना क्रजीषिणो भूमिं धर्मन्तो अप गा अवृण्वत

१

१९१

द्यावो न स्तुभिश्चितयन्त खादिनो व्यभिध्या न द्युतयन्त वृष्टयः ।		
रुद्रो यद् वो मरुतो रुक्मवक्षसो वृषार्जनि पृश्न्याः शुक्र ऊर्ध्वनि	२	२००
उक्षन्ते अश्वान् अर्ध्या इवाजिषु नदस्य कर्णैस्तुरयन्त आशुभिः ।		
हिरण्यशिप्रा मरुतो दर्विध्वतः पूक्षं याथ पृषतीभिः समन्यवः	३	
पृक्षे ता विश्वा भुवना ववक्षिरे मित्राय वा सधुमा जीरदानवः ।		
पृषदश्वासो अनवभ्रराधस ऋजिप्यासो न वयुनेषु धूर्षदः	४	
इन्धन्वभिर्धेनुभी रृशदूधभि रध्वस्मभिः पथिभिर्भ्राजदृष्टयः ।		
आ हंसासो न स्वसराणि गन्तन मधोर्मदाय मरुतः समन्यवः	५	
आ नो ब्रह्माणि मरुतः समन्यवो नरां न शंसः सर्वनानि गन्तन ।		
अश्वामिव पिप्यत धेनुमूर्धनि कर्ता धियं जरित्रे वाजपेशसम्	६	
तं नो दात मरुतो वाजिनं रथ आपानं ब्रह्म चितयद् द्विवेदिवे ।		
इषं स्तोतृभ्यो वृजनेषु कारवे सनि मेधामरिष्टं दुष्टं सहः	७	२०५
यद् युञ्जते मरुतो रुक्मवक्षसो ऽश्वान् रथेषु भग आ सुदानवः ।		
धेनुर्न शिश्वे स्वसरेषु पिन्वते जनाय रातहविषे महीमिषम्	८	
यो नो मरुतो वृकताति मर्त्यो रिपुर्वधे वंसवो रक्षता रिषः ।		
वर्तयन्त तपुषा चक्रियाभि तमव रुद्रा अशसो हन्तना वधः	९	
चित्रं तद् वो मरुतो याम चेकिते पृश्न्या यदूधरप्यापयो दुहुः ।		
यद् वा निदे नवमानस्य रुद्रिया स्त्रितं जराय जुरतामदाभ्याः	१०	
तान् वो महो मरुत एवयात्रो विष्णोरिषस्य प्रभूथे हवामहे ।		
हिरण्यवर्णान् ककुहान् यतसुचो ब्रह्मण्यन्तः शंस्यं राध ईमहे	११	
ते दशगवाः प्रथमा यज्ञमूहिरे ते नो हिन्वन्तूषसो व्युष्टिषु ।		
उषा न रामीररुणैरपोर्णुते महो ज्योतिषा शुचता गोअर्णसा	१२	२१०
ते क्षोणीभिररुणेभिर्नास्त्रिभि रुद्रा ऋतस्य सदनेषु वावृधुः ।		
निमेघमाना अत्येन पाजसा सुश्चन्द्रं वर्णं दधिरे सुपेशसम्	१३	
तां इयानो महि वरूथमूतय उप धेदेना नमसा गृणीमसि ।		
त्रितो न यान् पश्च होतृनाभिष्टय आववर्तदवराश्चक्रियावसे	१४	
यया रधं पारयथात्यहो यया निदो मुश्चथ वन्दितारम् ।		
अर्वाची सा मरुतो या व ऊतिरो षु वाश्रेव सुमतिर्जिगातु	१५	२१३

॥ २१ ॥ (क्र० ३।२६।४-६)

(२१४-२१६) गाथिनो विश्वामित्रः । जगती ।

प्र यन्तु वाजास्तविषीभिरग्रयः शुभे संमिश्राः पृषतीरयुक्षत ।

बृहदुक्षो मरुतो विश्ववेदसः प्र वेपयन्ति पर्वता अदाभ्याः ४

अग्निश्रियो मरुतो विश्वकृष्टय आ त्वेषमुग्रमव ईमहे वयम् ।

ते स्वानिनो रुद्रिया वर्षनिर्णिजः सिंहा न हेषकृतवः सुदानवः ५ २१५

व्रातवातं गुणगणं सुशस्तिभि रग्नेर्भामं मरुतामोज ईमहे ।

पृषदश्वासो अनवभ्रराधसो गन्तारो यज्ञं विदथेषु धीराः ६ २१६

॥ २२ ॥ (क्र० १।२१६-१७)

(२१७-३१७) श्यावाश्व आत्रेयः । अनुष्टुपः ६, १६, १७ पङ्क्तिः ।

प्र श्यावाश्व धृष्णया ऽर्चा मरुद्धिर्कक्राभिः ।

ये अत्रोघमनुष्वधं श्रवो मदन्ति यज्ञियाः १

ते हि स्थिरस्य शर्वसः सखायः सन्ति धृष्णया ।

ते यामन्त्रा धृषद्विन स्तमना पान्ति शर्वतः २

ते स्पन्द्रासो नोक्षणो ऽति प्कन्दन्ति शर्वरीः ।

मरुतामधा महो द्विवि क्षमा च मन्महे ३

मरुत्सु वो दधीमहि स्तोमं यज्ञं च धृष्णया ।

विश्वे ये मानुषा युगा पान्ति मर्त्यं रिपः ४ २१७

अर्हन्तो ये सुदानवो नरा असांमिशवसः ।

प्र यज्ञं यज्ञियेभ्यो द्विवो अर्चा मरुद्धयः ५

आ रुक्मैरा युधा नरं क्रुत्वा क्रुष्टीरसृक्षत ।

अन्वेना अहं विद्युतो मरुतो जज्झतीरिव भानुर्गतं तमना द्विवः ६

ये वावृधन्त पार्थिवा य उरावन्तरिक्ष आ ।

वृजने वा नदीनां सधस्थे वा महो द्विवः ७

शर्धो मारुतमुच्छंस सत्यशवसमृभ्वंसम् ।

उत स्म ते शुभे नरः प्र स्पन्द्रा युजत तमना ८

उत स्म ते परुष्ण्या मूर्णा वसत शुन्ध्यवः ।

उत पश्या रथाना मर्दिं भिन्दुन्त्योजसा ९ २१८

आर्षथयो विर्षथयो ऽन्तस्पथा अनुपथाः ।

एतेभिर्मह्यं नामभि र्यज्ञं विष्टार ओहते १० २१९

अधा नरो न्योहते ऽधा नियुत ओहते ।	
अधा पारावता इति चित्रा रूपाणि दृश्यी	११
छन्दुःस्तुभः कुम्भन्यव उत्समा कीरिणो नृतुः ।	
ते मे के चित्र तायव ऊमा आसन् दृशि त्विषे	१२
य ऋष्या ऋषिर्विद्युतः कवयः सन्ति वेधसः ।	
तमृषे मारुतं गणं नमस्या रमया गिरा	१३
अच्छ ऋषे मारुतं गणं दाना मित्रं न योषणा ।	
दिवो वा धृष्णव ओजसा स्तुता धीभिरिषण्यत	१४ २३०
नू मन्वान एषां देवाँ अच्छा न वक्षणा ।	
दाना संचेत सूरिभि र्यामश्रुतेभिरञ्जिभिः	१५
प्र ये मे बन्ध्वेषे गां वोचन्त सूरयः पृश्नि वोचन्त मातरम् ।	
अधा पितरमिष्मिणं रुद्रं वोचन्त शिकसः	१६
सप्त मे सप्त शाकिन एकमेका शता ददुः ।	
यमुनायामधि श्रुतमुद् राधो गव्यं मृजे नि राधो अश्व्यं मृजे	१७

॥ २३ ॥ (क्र० ५१५३१-१६) M

(१,५,१०-११,१५ककुपः २ बृहती. ३ अनुष्टुपः, ४ पुण्ड्रिणिकः ६,७,९,१३,१४,१६ सतो बृहती; ८,१२ गायत्री)।

को वंदु जानेमयां को वा पुरा सुन्नेष्वांस मरुताम् ।	
यद् युयुजे किलास्यः	१
ऐतान् रथेषु तस्थुषः कः शुश्राव कथा ययुः ।	
कस्मै ससुः सुदासे अन्वापय इळाभिर्वृष्टयः सह	२ २३५
ते मे आहुर्य आययु रूप द्युभिर्विभिर्मदे ।	
नरो मया अरेपस इमान् परयन्ति पटुहि	३
ये अन्निषु ये वाशीषु स्वभानवः स्रक्षु रुक्मेषु खादिषु ।	
श्राया रथेषु धन्वसु	४
युष्माकं स्मा रथाँ अनु मुदे दध मरुतो जीरदानवः ।	
वृष्टी द्यावो यतीरिव	५
आ यं नरः सुदानवो ददाशुषे दिवः कोशमचुच्यवुः ।	
वि पर्जन्यं सृजन्ति रोदसी अनु धन्वना यन्ति वृष्टयः	६ २३९

ततुवानाः सिन्धवः क्षोदसा रजः प्र संसुधेनवो यथा । स्यन्ना अश्वा इवाध्वनो विमोचने वि यद् वर्तन्त एन्यः आ यात मरुतो विव आन्तरिक्षादुमादुत । माव स्थात परावतः मा वो रसानितभा कुभा कुमुर्मा वः सिन्धुर्नि रीरमत । मा वः परि ण्ठात सरयुः पुरीषिण्यस्मे इत् सुम्नस्तु वः तं वः शर्ध रथानां त्वेषं गुणं मारुतं नव्यसीनाम् । अनु प्र यन्ति वृष्टयः शर्धशर्ध व एषां वातंवातं गुणंगुणं सुशस्तिभिः । अनु क्रामेम धीतिभिः कस्मा अद्य सुजाताय रातहव्याय प्र ययुः । एना यामेन मरुतः येन तोकाय तनयाय धान्यं बीजं वहध्वे अक्षितम् । अस्मभ्यं तद् धत्तनु यद् व ईमहे राधो विश्वायु सीर्भगम् अतीयाम निदस्तिरः स्वस्तिभिर्हित्वावद्यमरातीः । वृष्टी शं योराप उस्मि भेषजं स्याम मरुतः सह सुवेवः समहासति सुवीरो नरो मरुतः स मर्त्यः । यं त्रायध्वे स्याम ते स्तुहि भोजान्स्तुवतो अस्य यामनि रणन् गावां न यवसे । यतः पूर्वा इव सखीरनु ह्वय गिरा गृणीहि कामिनः	७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६	२४० २४१
--	---	------------

॥ २४ ॥ (क० १११४१-१२) जगती, १४ त्रिष्टुप ।

प्र शर्धाय मारुताय स्वभानव इमां वार्चमर्नजा पर्वतच्युते । धर्मस्तुभे विव आ पृष्टयज्वनं द्युम्नश्रवसे महि नृम्णमर्चत प्र वो मरुतस्तविषा उदून्यवो वयोवृधो अश्वयुज परिज्रयः । सं विद्युता दधति वाशति त्रितः स्वरन्त्यापोऽवना परिज्रयः विद्युन्महसो नरो अश्मदिद्यवो वातंविषा मरुतः पर्वतच्युतः । अब्बुया चिन्मुहुरा हादुनीवृतः स्तनयदमा रभसा उदोजसः व्यक्तून् रुद्रा व्यहानि चिक्रसो व्यन्तरिक्षं वि रजांसि धूतयः । वि यदज्जा अजथ नाव ई यथा वि दुर्गाणि मरुतो नाह रिण्यथ	१ २ ३ ४	२४० २४१
---	------------------	------------

आभूषण्यं वो मरुतो महित्वनं दिहृक्षेण्यं सूर्यस्येव चक्षेणम् ।
 उतो अस्माँ अमृतत्वे दधातु शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ४
 उदीरयथा मरुतः समुद्रतो यूयं वृष्टिं वर्षयथा पुरीषिणः ।
 न वो दसा उप दस्यन्ति धेनवः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ५
 यदश्वान् ध्रुवु पृषतीरयुग्ध्वं हिरण्ययान् प्रत्यक्का अमुग्ध्वम् ।
 विश्वा इत स्पृधो मरुतो व्यस्यथ शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ६ २७०
 न पर्वता न नद्यो वरन्त वो यत्राचिध्वं मरुतो गच्छथेदु तत ।
 उत द्यावापृथिवी याथना परि शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ७
 यत् पूर्य मरुतो यच्च नूतनं यदुद्यते वसन्तो यच्च ग्रस्यते ।
 विश्वस्य तस्य भवथा नवेदसः शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ८
 सत्रत नो मरुतो मा दधिष्टनाऽस्मभ्यं शर्म बहुलं वि र्यन्तन ।
 अर्धि स्तोत्रस्य सरयस्य गातन शुभं यातामनु रथा अवृत्सत ९
 ययमस्मान् नयत वस्यो अच्छा निरहतिभ्यो मरुतो गृणानाः ।
 जुषध्वं नो हव्यदाति यजत्रा वयं स्याम पतयो रयीणाम् १०

॥ २८ ॥ (ऋ० १०.१०१-९) वृहतीः ३. ७ मनो वृहती ।

अग्ने शर्धन्तमा गणं पिष्टं रुक्मोभिर्गन्धिभिः ।
 विशो अद्य मरुतामव ह्वये दिवश्चित रोचनादधि १ २७१
 यथा चिन्मन्यसे हृदा तदिन्मे जग्मुराशसः ।
 ये ते नेदिष्टं हव्यनान्यागमन् तान वर्ध भीमसंहशः २
 मीळहुष्मतीव पृथिवी पराहता मदन्येत्युस्मदा ।
 रुक्षो न वो मरुतः शिमीवो अमो दुधो गौरिव भीमयुः ३
 नि ये रिणन्त्योर्जसा वृथा गावो न दुर्धुरः ।
 अश्मानं चित् स्वर्यं पर्वतं गिरिं प्र च्यावयन्ति यामभिः ४
 उत तिष्ठ नूनमेपां स्तोमैः समुक्षितानाम् ।
 मरुतां पुरुतममपूर्य गवां सर्गमिव ह्वये ५
 युङ्गध्वं ह्यरुपी रथे युङ्गध्वं रथेषु गेहितः ।
 युङ्गध्वं हरी अजिरा धुरि वोळ्हवे वहिष्ठा धुरि वोळ्हवे ६ २८०
 उत स्य वाज्यरुपस्तुविष्वणिं रिह स्म धायि दर्शतः ।
 मा वो यामेषु मरुतश्चिरं करत प्र तं रथेषु चोदत ७ २८१

रथं नु मारुतं वयं श्रवस्युमा हुवामहे ।

आ यस्मिन् तस्थौ सुरणानि विभ्रती सचा मरुत्सु रोदुसी

तं वः शर्धं रथेशुभं त्वेषं पनस्युमा हुवे ।

यस्मिन्सुजाता सुभगा महीयते सचा मरुत्सु मीळहुषी

॥ २७ ॥ (ऋ० ५।५।७।१-८) जगती, ७-८ त्रिष्टुप् ।

आ रुद्रास इन्द्रवन्तः सजोषसो हिरण्यरथाः सुविताय गन्तव ।

इयं वो अस्मत् प्रति हयते मतिस्तृणजे न दिव उत्सा उदुन्यवे

वाशीमन्त ऋष्टिमन्तो मनीषिणः सुधन्वान इधुमन्तो निषङ्गिणः ।

स्वश्वाः स्थ सुरथाः पृश्निमातरः स्वायुधा मरुतो याथना शुभम्

धुनुथ द्यां पर्वतान् काशुषे वसु नि वो वना जिहते यामनो भिया ।

कोपयथ पृथिवीं पृश्निमातरः शुभे यदुग्राः पृषतीरयुग्ध्वम्

वार्तत्विषो मरुतो वर्षनिर्णिजो यमा इव सुसदृशः सुपेशसः ।

पिशङ्गश्वा अरुणाश्वा अरेपसः प्रत्वक्षसो महिना द्यौरिवोरवः

पुरुद्वप्सा अग्निमन्तः सुदानवस्त्वेपसदृशो अनवभ्रराधसः ।

सुजातासो जनुषा रुक्मवक्षसो दिवो अर्का अमृतं नाम भेजिरे

ऋष्टयो धो मरुतो असंयोरधि सह ओजो बाह्वोर्बो बलं हितम् ।

नृम्णा शीर्षस्वायुधा रथेषु वो विश्वा वः श्रीरधि तनूषु पिपिशे

गोमदश्वावद रथवत् सुवीरं चन्द्रवद राधो मरुतो ददा नः ।

प्रशस्तिं नः कृणुत रुद्रियासो भक्षीय वोऽवसो देव्यस्य

हये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमघासो अमृता क्रतज्ञाः ।

सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्विरयो बृहदुक्षमाणाः

॥ २८ ॥ (ऋ० ५।५।८।१-८) त्रिष्टुप् ।

तमु नूनं तविपीमन्तमेषां स्तुपे गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।

य आश्वश्वा अमवद वहन्त उतेशिरे अमृतस्य स्वराजः

त्वेपं गणं तवसं खादिहस्तं धुनिवतं मायिनं दातिवारम् ।

मयोभुवो ये अमिता महित्वा वन्दस्व विप्र तुविराधसो नृन्

आ वो यन्तूदवाहासो अद्य वृष्टिं ये विश्वे मरुतो जुनन्ति ।

अयं यो अग्निर्मरुतः समिद्ध एतं जुषध्वं कवयो युवानः

युयं राजानमिथं जनाय विश्वतष्टं जनयथा यजत्राः ।

युष्मदेति मुष्टिहा बाहुजूतो युष्मत् सदश्वो मरुतः सुवीरः

अरा इवेदचरमा अहेव प्रप्र जायन्ते अकवा महोभिः ।
 पृथ्वेः पुत्रा उपमासो रभिष्ठाः स्वया मत्या मरुतः सं मिमिक्षुः ५
 यत् प्रायासिष्ट पृथ्वीभिरश्वैर्वीळुपविभिर्मरुतो रथेभिः ।
 क्षोदन्त आपो रिणते वना न्यवोन्नियो वृषभः क्रन्दतु द्यौः ६
 प्रथिष्ट यामन् पृथिवी चिदेयां भर्तेव गर्भं स्वमिच्छवो धुः ।
 वातान् ह्यश्वान् धुर्यायुयुजे वर्षं स्वेदं चक्रिरे रुद्रियासः ७
 ह्ये नरो मरुतो मृळता नस्तुवीमयासो अमृतो भर्तज्ञाः ।
 सत्यश्रुतः कवयो युवानो बृहद्विरयो बृहद्वक्षमाणाः ८

॥ १९ ॥ (ऋ० ५।५९।१-८) जगती. ८ त्रिष्टुप् ।

प्र वः स्पलकन्तसुविताय वावने ऽर्चा विवे प्र पृथिव्या क्रतं भरे ।
 उक्षन्ते अश्वान् तरुणन्त आ रजो ऽनु स्वं भानुं श्रथयन्ते अर्णवैः १ ३००
 अमादिषां भियसा भूमिरेजति नौन पूर्णा क्षरति व्यथिर्यती ।
 दूरेदृशो ये चितयन्त एमभि रन्तमहे विदथे येतिरे नरः २
 गवामिव श्रियसे शृङ्गमुत्तमं सूर्यो न चक्षू रजसो विसर्जने ।
 अत्या इव सुभवाश्चारवः स्थन मर्या इव श्रियसे चेतथा नरः ३
 को वो महान्ति महतामुदश्रवत् कस्काव्या मरुतः को ह पौर्या ।
 यूयं ह भूमिं किरणं न रेजथ प्र यद् भरध्वे सुविताय वावने ४
 अश्वा इवेदरूपासः सर्वन्धवः शूरा इव प्रयुधः प्रोत युयुधुः ।
 मर्या इव सुवृधो वावृधुर्नरः सूर्यस्य चक्षुः प्र मिनन्ति वृष्टिभिः ५
 ते अज्येष्टा अकनिष्ठास उद्भिदो ऽमध्यमासो महसा वि वावृधुः ।
 सुजातासो जनुषा पृथिमातरो द्विवो मर्या आ नो अच्छा जिगातन ६ ३०५
 वयो न ये श्रेणीः पन्तुरोजसा ऽन्तान् द्विवो बृहतः सानुनस्पति ।
 अश्वास एषामुभये यथा विदुः प्र पर्वतस्य नभन्नृचुच्यवुः ७
 मिमातु द्यौरदितिर्वितये नः सं दानुचित्रा उपसो यतन्ताम ।
 आचुच्यवुर्दिव्य कोशमित कवे रुद्रस्य मरुतो गृणानाः ८

॥ २० ॥ (ऋ० ५।६१।१-४.६१-६६) गायत्री. ३ निचत्

के ष्ठा नरः श्रेष्ठतमा य एकएक आयय । परमम्याः परावतः १
 क्वो वोऽश्वाः क्वाऽभीशवः कथं शोक कथा यय । पृष्ठे सदा नसोर्यमः २
 जघने चोद एषां वि सक्थानि नरो यमुः । पुत्रकृथे न जनयः ३ ३१०

परा वीरास एतन् मर्यासो भद्रजानयः	। अश्रितपो यथासथ	४
य ई वहन्त आशुभिः पिबन्तो मविरं मधु	। अत्र श्रवांसि दधिरे	११
येषां श्रियाधि रोदसी विभ्राजन्ते स्थेष्वा	। द्विवि रुक्म इवोपरि	१२
युवा स मारुतो गुणस्त्वेषरथो अनेद्यः	। शुभ्रयावाप्रतिष्कृतः	१३
को वेद नूनमेषां यत्रा मदन्ति धृतयः	। ऋतजाता अरेपसः	१४ ३१५
यूयं मर्तं विपन्यवः प्रणेतारं इत्था धिया	। श्रोतारो यामहूतिषु	१५
ते नो वसूनि काम्या पुरुश्चन्द्रा रिशादसः	। आ यज्ञियासो ववृत्तन	१६ ३१७

✓ ॥ ३१ ॥ (ऋ० ५।८७।१-९) ✓

(३१८-३२६) एवयामरुदात्रेयः । अतिजगती ।

प्र वो महे मतयो यन्तु विष्णवे मरुत्वन्ते गिरिजा एवयामरुत् ।	
प्र शर्धाय प्रयज्यवे सुखादये तवसे भन्ददिष्टये धुनिव्रताय शर्वसे	१
प्र ये जाता महिना ये च नु स्वयं प्र विघ्नना ब्रुवत एवयामरुत् ।	
क्रत्वा तद् वो मरुतो नाधृषे शर्वो दाना महा तदेषा मधृष्टासो नाद्रयः	२
प्र ये विषो बृहतः शृण्विरे गिरा सुशुक्रानः सुभवं एवयामरुत् ।	
न गेषामिरी सधस्थ ईष्ट आ अग्रयो न स्वर्विद्युतः प्र स्पन्द्रासो धुनीनाम्	३ ३२०
स चक्रमे महतो निरुरुक्रमः समानस्मात् सदस एवयामरुत् ।	
यदायुक्त त्मना स्वादधि ण्णुभिर्विष्पधसो विमहसो जिगाति शेवृधो नृभिः	४
स्वनो न वोऽमवान् रेजयद् वृषा त्वेषो ययिस्तविष एवयामरुत् ।	
येना सहन्त ऋक्षत स्वरोचिषः स्थारश्मानो हिरण्ययाः स्वायुधास इष्मिणः	५
अपारो वो महिमा वृन्दशवसस्त्वेषं शर्वोऽवत्वेवयामरुत् ।	
स्थातारो हि प्रसितौ संहशि स्थन ते न उरुण्यता निदः शुशुक्रासो नाग्रयः	६
ते रुद्रासः सुमखा अग्रयो यथा तुविद्युन्ना अवन्त्वेवयामरुत् ।	
वीर्यं पृथु पप्रथे सद्य पार्थिवं येषामज्मेष्वा महः शर्धास्यद्भुतैतसाम्	७
अद्वेषो नो मरुतो गातुमेतन् श्रोता हवं जरितुरेवयामरुत् ।	
विष्णोर्महः समन्यवो युयोतन् स्मद् इथ्योर्ध्वं न वंसना ऽप द्वेषांसि सनुतः	८ ३२५
गन्ता नो यज्ञं यज्ञियाः सुशमि श्रोता हवमरुक्ष एवयामरुत् ।	
ज्येष्ठासो न पर्वतासो व्योमनि यूयं तस्य प्रचेतसः स्यात बुधर्तवो निदः	९ ३२६

॥ ३२ ॥ (ऋ० ६।४८।११-१५, २०-२१)

(३२७-३३३) शंयुर्बार्हस्पत्यः (तृणपाणि) : [१३-१५ लिङ्गोक्ता वा] । ११ ककुप, १२ सतो बृहती, १३ पुरउष्णिक्, १४ बृहती, १५ अतिजगती, २० बृहती, २१ महाबृहती यवमध्या ।

आ संखायः सबर्द्धां धेनुर्मजध्वमुप नव्यसा वचः । सूजध्वमनपस्फुराम् ११
 या शर्धाय मारुताय स्वभानवे श्रवोऽमृत्यु धुक्षत ।
 या मृळीके मरुतां तुराणां या सुमैरेवयावरी १२
 भरद्वाजायाव धुक्षत द्विता । धेनुं च विश्वदोहसमिषं च विश्वभोजसम् १३
 तं व इन्द्रं न सुक्रतुं वरुणमिव मायिनम् ।
 अर्यमणं न मन्द्रं सूप्रभोजसं विष्णुं न स्तुप आदिशे १४ ३३०
 त्वेषं शर्धो न मारुतं तुविष्वण्यनर्वाणं पूषणं सं यथा शता ।
 सं सहस्रा कारिषच्चर्षणिभ्य आं आविर्गूळ्हा वसू करत् सुवेदां नो वसू करत १५
 वामी वामस्य धूतयः प्रणीतिरस्तु सूनृता ।
 देवस्य वा मरुतो मर्त्यस्य वेजानस्य प्रयज्यवः २०
 सद्यश्चिद् यस्य चर्कुतिः परि द्यां देवो नैति सूर्यः ।
 त्वेषं शवो दधिरे नाम यजियं मरुतां वृत्रहं शवो ज्येष्ठं वृत्रहं शवः २१ ३३३

॥ ३३ ॥ (ऋ० ६।४८।१-११)
 (३३४-३४४) बार्हस्पत्या भग्नराजः । विष्टप ।

वपुर्नु तच्चिकितुषे चिदस्तु समानं नाम धेनु पत्यमानम् ।
 मर्तृष्वन्यद् दोहसे पीपाय सकृच्चक्रुं दुदुहे पृश्निरुधः १
 ये अग्रयो न शोशुचन्निधाना द्विर्यत् त्रिमरुतां वावृधन्त ।
 अरेणवो हिरण्ययास एषां साकं नृम्णैः पौम्येभिश्च भूवन् २ ३३५
 रुद्रस्य ये मीळ्हुपः सन्ति पुत्रा यांश्चो नु दाधृविर्भरध्वे ।
 विदे हि माता महो मही वा सेत पृश्निः सुभ्वे गर्भमाधात् ३
 न य ईर्षन्ते जनुषोऽया न्वः—ऽन्तः सन्तोऽवद्यानि पुनानाः ।
 निर्यद् दुहे शुचयोऽनु जोषमनु श्रिया तन्वमक्षमाणाः ४
 मक्ष न येषु दोहसे चिदुया आ नाम धृणु मारुतं दधानाः ।
 न ये स्तौना अयासो मृहा नू चित सुदानुरव यासदग्रान् ५
 त इदुयाः शर्वसा धृणुपेणा उभे युजन्त रोदसी सुमेके ।
 अर्ध स्मैषु रोदसी स्वशोचिर्गमवत्सु तस्थौ न गेकः ६ ३३९

अनेनो वो मरुतो यामो अस्त्व—नश्वाश्चिद् यमजत्यरथीः ।
 अनवसो अनभीशू रजस्तू—र्वि रोदसी पथ्या याति सार्धन्
 नास्य वर्ता न तरुता न्वस्ति मरुतो यमवथ वाजसातौ ।
 तोके वा गोषु तनये यमप्सु स व्रजं दत्ता पार्ये अध द्योः
 प्र चित्रमर्कं गृणते तुराय मारुताय स्वतवसे भरध्वम् ।
 ये सहांसि सहसा सहन्ते रेजते अग्ने पृथिवी मखेभ्यः
 त्विषीमन्तो अध्वरस्येव विद्युत् तृषुच्यवसो जुहोऽ नाग्नेः ।

७ ३४०

८

९

१०

अर्चत्रयो धुनयो न वीरा भ्राजजन्मानो मरुतो अधृष्टाः
 तं बुधन्तं मारुतं भ्राजदृष्टिं रुद्रस्य सूनुं हवसा विवासे ।
 दिवः शर्धाय शुचयो मनीषा गिरयो नार्प उग्रा अस्पृधन्

११

३४४

॥ ३४ ॥ (क्र० ७।५६।१-२५) M

(३४५-३९४) मैत्रावरुणर्वसिष्ठः । त्रिष्टुप्, १-११ द्विपदा विराट् ।

क ई व्यक्ता नरः सनीळा रुद्रस्य मर्या अधा स्वश्वाः
 नकिर्होषां जनंषि वेदु ते अङ्ग विद्रे मिथो जनित्रम्
 आभि स्वपूभिर्मिथो वपन्त वातस्वनसः श्येना अस्पृधन्
 एतानि धीरो निण्या चिकेत पृश्निर्यदूधो मही जभारं
 सा विद्र सुवीरा मरुद्भिरस्तु सनात् सहन्ती पुष्यन्ती नृम्णम्
 यामं येष्ठाः शुभा शोभिष्ठाः श्रिया संमिश्रा ओजोभिरुग्राः
 उग्रं व ओजः स्थिरा शवांस्य—र्धा मरुद्भिर्गणस्तुर्विष्मान्
 शुभ्रो वः शुष्मः कुध्मी मनांसि धुनिर्मुनिरिव शर्धस्य धूष्णोः
 सनेभ्यस्मद् युयोतं विद्युं मा वो दुर्मतिरिह प्रणङ्गः
 प्रिया वो नाम हुवे तुराणा—मा यत् तृपन्मरुतो वावशानाः
 स्वायुधासं इप्मिणः सुनिष्का उत स्वयं तन्वः शुम्भमानाः
 शुची वो हव्या मरुतः शुचीनां शुचिं हिनोम्यध्वरं शुचिभ्यः ।
 ऋतेन सत्यमृतसाप आय—ञ्छुचिजन्मानः शुचयः पावकाः
 अंसेष्वा मरुतः खादयो वो वक्षःसु रुक्मा उपशिथ्रियाणाः ।
 वि विद्युतो न वृष्टिभीं रुचाना अनु स्वधामायुधैर्यच्छमानाः
 प्र बुध्न्या व ईरते महांसि प्र नामानि प्रयज्यवस्तिरध्वम् ।
 स हस्त्रियं दम्यं भागमेतं गृहमेधीयं मरुतो जुषध्वम्

१

३४५

२

३

४

५

६

७

८

९

१०

११

३५५

१२

१३

१४

३५८

यदि स्तुतस्य मरुतो अधीथ—तथा विप्रस्य वाजिनो हवीमन् ।
 मक्ष्ण रायः सुवीर्यस्य दात नू चिद् यमन्य आदभदरावा १५
 अत्यासो न ये मरुतः स्वश्रोत्रो यक्षदृशो न शुभयन्त मयीः ।
 ते हर्म्येष्ठाः शिशवो न शुभ्रा वत्सासो न प्रक्रीळिनः पयोधाः १६ ३६०
 वृशस्यन्तो नो मरुतो मूळन्तु वरिवस्यन्तो रोदसी सुमेक ।
 आरे गोहा नूहा वधो वो अस्तु सुन्नेभिरस्मे वसवो नमध्वम् १७
 आ वो होता जोहवीति सत्तः सत्राचीं रातिं मरुतो गृणानः ।
 य ईवतो वृषणो अस्ति गोपाः सो अर्द्धयावी हवते व उक्थेः १८
 इमे तुरं मरुतो रामयन्ती—मे सहः सहस आ नमन्ति ।
 इमे शंसं वनुष्यतो नि पान्ति गुरु द्वेषो अररुषे दधन्ति १९
 इमे रधं चिन्मरुतो जुनन्ति मृमिं चिद् यथा वसवो जुषन्त ।
 अप बाधध्वं वृषणस्तमांसि धत्त विश्वं तनयं तोकमस्मे २०
 मा वो द्वात्रान्मरुतो निरराम मा पश्चाद् दध्म रथ्यो विभागे ।
 आ नः स्पर्हो भजतना वसव्येडं यदीं सुजातं वृषणो वो अस्ति २१ ३६५
 सं यद्धनन्त मनुभिर्जनांसुः शूरा युह्वीष्वोर्षधीषु विश्व ।
 अर्ध स्मा नो मरुतो रुद्रियास—स्त्रातारो भूत पृतनास्वर्यः २२
 भूरिं चक्र मरुतः पित्र्याण्यु—कथानि या वः शस्यन्ते पुरा चित् ।
 मरुद्भिरुग्रः पृतनासु साब्धहा मरुद्भिरित् सनिता वाजमवी २३
 अस्मे वीरो मरुतः शुण्यस्तु जनानां यो असुरो विधृता ।
 अपो येन सुक्षितये तरेमा—ऽध स्वमोको अभि वः स्याम २४
 तन्न इन्द्रो वरुणो मित्रो अग्नि—राप ओषधीर्वनिनो जुषन्त ।
 शर्मन्त्स्याम मरुतामुपस्थं यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः २५

॥ ३५ ॥ (ऋ० ७।१।७।६-७) जिह्नुष ।

मध्वो वो नाम मारुतं यजत्राः प्र यज्ञेषु शर्वसा मदन्ति ।
 ये रेजयन्ति रोदसी चिदुर्वी पिन्वन्त्युत्सं यदयांसुरुग्राः १ ३७०
 निचेतारो हि मरुतो गृणन्तं प्रणेतारा यजमानस्य मन्म ।
 अस्माकमद्य विदथेषु बर्हि—रा वीतये सदत पिप्रियाणाः २
 नैतावकुन्ये मरुतो यथेमे भ्राजन्ते रुक्मरायुधैस्तनूभिः ।
 आ रोदसी विश्वापिशाः पिशानाः संमानमश्वयज्ञते शुभे कम ३ ३७१

अधूक् सा वो मरुतां विद्युदस्तु यद् व आगः पुरुषता कराम ।
 मा वस्तस्यामपि भूमा यजत्रा अस्मे वो अस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ४
 कृते चिदत्र मरुतो रणन्ताऽनवद्यासः शुचयः पावकाः ।
 प्र णोऽवत सुमतिर्भिर्यजत्राः प्र वार्जेभिस्तिरत पुष्यसे नः ५
 उत स्तुतासो मरुतो व्यन्तु विश्वेभिर्नामभिर्नरो हवीषि ।
 ददात नो अमृतस्य प्रजयै जिगृत रायः सूनृतां मघानि ६
 आ स्तुतासो मरुतो विश्वं ऊती अच्छा सूरिन्सर्वताता जिगात ।
 ये नस्मना शतिनो वर्धयन्ति यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ७

॥ ३६ ॥ (ऋ० ७।५।८।१-६)

प्र साकमुक्षे अर्चता गणाय यो दैव्यस्य धाम्नस्तुविष्मान् ।
 उत क्षौदन्ति रोदसी महित्वा नक्षन्ते नाकं निक्षेतेखंशात् १
 जनूश्चिद् वो मरुतस्त्वेप्येण भीमास्तुविमन्यवोऽयासः ।
 प्र ये महोभिरोजसोत सन्ति विश्वो वो यामन् भयते स्वर्दक् २
 बृहद् वयो मघवज्यो दधात जुजोषन्निन्मरुतः सुष्टुतिं नः ।
 गतो नाध्वा वि तिराति जन्तुं प्र णः स्पाहार्भिस्तिभिस्तिरेत ३
 युष्मोतो विप्रो मरुतः शतस्वी युष्मोतो अर्वा सहुरिः सहस्री ।
 युष्मोतः सम्राज्युत हन्ति वृत्रं प्र तद् वो अस्तु धूतयो कुष्णाम ४
 तां आ रुद्रस्य मीळहुषो विवासे कुविन्नंसन्ते मरुतः पुनर्नः ।
 यन् सस्वतां जिहीळिरे यदुवि रव तदेन ईमहे तुराणाम् ५
 प्र सा वाचि सुष्टुतिर्मघोना मिदं सूक्तं मरुतो जुषन्त ।
 आराच्चिद द्वेयो वृषणो युयोत यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ६

॥ ३७ ॥ (अ।१९।१-११)

(प्रगाथः= (विपमा बृहती, समा सतोबृहती), ७-८ त्रिष्टुप्. ९-११ गायत्री ।)

यं त्रायध्व इवमिदं देवासो यं च नयथ ।
 तस्मा अग्ने वरुण मित्रार्यमन् मरुतः शमं यच्छत १
 युष्माकं देवा अवसाहनि प्रिय ईजानस्तरति द्विषः ।
 प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति २
 नहि वंश्चरमं चन वसिष्ठः परिमंसति ।
 अस्माकमद्य मरुतः सुते सचा विश्वे पिबत कामिनः ३

नहि व ऊतिः पृतनासु मर्धति यस्मा अराध्वं नरः ।		
अभि व आवर्त सुमतिर्नवीयसी तूर्यं यात पिपीषवः	४	
ओ पु घृष्ट्विराधसो यातनान्धांसि पीतये ।		
इमा वो हव्या मरुतो रे हि कं मो प्वन्यत्र गन्तन	५	
आ च नो बर्हिः सदाविता च नः स्पार्हाणि दातवे वसु ।		
अश्रैधन्तो मरुतः सोम्ये मधो स्वाहेह मादयाध्वे	६	
सस्वश्चिद्वि तन्वः शुभमाना आ हंसासो नीलपृष्ठा अपसन ।		
यिष्वं शर्धो अभितो मा नि पेदु नरो न रण्वाः सर्वे न मर्दन्तः	७	
यो नो मरुतो अभि दुर्हणायुस्तिरश्चित्तानि वसवो जिघांसति ।		
ब्रह्मः पाशान् प्रति स मुचीष्ट तपिष्ठेन हन्मना हन्तना तम्	८	३९०
मान्तपना इदं हविर्मरुतस्तज्जुष्टन । युष्माकोती रिशादसः	९	
गृह्मधास आ गत मरुतो माप भूतन । युष्माकोती सुदानवः	१०	
अहं वः स्वतवसः कवयः सूर्यत्वचः । यजं मरुत आ वृणं	११	
॥ ३८ ॥ (क्र० अ० १०४१-१८) जगती ।		
वि निष्ठध्वं मरुतां विक्ष्विच्छत गृभायन् रक्षसः सं पिनष्टन ।		
वयो ये भूत्वी पतयन्ति नक्तभिर्न वा रिपो दधिरे केव अध्वरे	१८	३९४
॥ ३९ ॥ (क्र० अ० १०४१-१९)		
(३९५-४०८) विन्दुः पृतदक्षो वा आङ्गिरसः । गायत्री ।		
गोधयति मरुतां श्रवस्युर्माता मघोनाम् । युक्ता बह्वी रथानाम	१	३९५
यस्या देवा उपस्थं वता विश्वे धारयन्ते । सूर्यामासा हशं कम	२	
तन मु नो विश्वे अर्य आ सदा गृणन्ति कारवः । मरुतः सोमपीतयं	३	
अस्ति सोमो अयं सुतः पिबन्त्यस्य मरुतः । उत स्वराजो अश्विना	४	
पिबन्ति मित्रो अर्यमा तना पुतस्य वरुणः । त्रिपुष्टस्य जावतः	५	
उता न्वस्य जापमा इन्द्रः सुतस्य गोमतः । प्रातर्होतेव मत्सति	६	४००
कदन्विषन्त सूर्यस्तिर आप इव सिधः । अर्पन्ति पृतदक्षसः	७	
कद्वो अद्य महानां देवानामवो वृणं । तमना च दुम्भवर्चसाम	८	
आ ये विश्वा पार्थिवानि प्रथन् रोचना क्रिवः । मरुतः सोमपीतयं	९	
त्यान् नु पृतदक्षसां क्रिवो वो मरुता हुवं । अस्य सोमस्य पीतयं	१०	
त्यान् नु ये वि रोदसी तस्तभुर्मरुतां हुवं । अस्य सोमस्य पीतयं	११	४०५
त्यं नु मारुतं गुणं गिरिष्ठां वृषणं हुवे । अस्य सोमस्य पीतयं	१२	४०६

॥ ४० ॥ (ऋ० १०।७।१-८)

(४०७-४१२) स्यूमरश्मिर्भागीवः । त्रिष्टुप्, ५ जगती ।

अभ्रपुषो न वाचा पुषा वसु हविष्मन्तो न यज्ञा विजानुषः
 सुमारुतं न ब्रह्माणमर्हसे गणमस्तोष्येषां न शोभसे १
 श्रिये मर्यासो अस्त्रीरंकृण्वत सुमारुतं न पूर्वीरति क्षपः ।
 विवस्पुत्रास एता न येतिर आदित्यासस्ते अक्रा न वावृधुः २
 प्र ये विवः पूथिव्या न बर्हणा तमना रिरित्रे अभ्राज्ञ सूर्यः ।
 पाजस्वन्तो न वीराः पनस्यवो रिशार्दसो न मर्या अभिद्यवः ३
 युष्माकं बुध्रे अपां न यामनि विथुर्यति न मही श्रथर्यति ।
 विश्वसुर्यज्ञो अर्वाग्यं सु वः प्रयस्वन्तो न सत्राच आ गत ४ ४१०
 यूयं धूर्पु प्रयुजो न रश्मिभिर्ज्योतिष्मन्तो न भासा व्युष्टिषु ।
 श्येनासो न स्वयंशसो रिशार्दसः प्रवासो न प्रसितासः परिप्रुषः ५
 प्र यद् वहध्वे मरुतः पराकाद् यूयं महः संवरणस्य वस्वः ।
 विद्वानासो वसवो राध्यस्याऽऽराच्चिद् द्वेषः सनुतर्युयोत ६
 य उहचि यज्ञे अध्वरेष्ठा मरुद्भ्यो न मानुषो ददाशत ।
 रेवत स वयो दधते सुवीरं स देवानामपि गोपीथे अस्तु ७
 ते हि यज्ञेषु यज्ञियास ऊमा आदित्येन नाम्ना शंभविष्ठाः ।
 ते नोऽवन्तु रथतूर्मनीपां महश्च यामन्नध्वरे चक्रानाः

॥ ४१ ॥ (ऋ० १०।७।१-८) त्रिष्टुप्, २, ५-७ जगती ।

विप्रासां न मन्मभिः स्वाध्यो देवाव्यो न यज्ञैः स्वप्रसः ।
 राजानो न चित्राः सुमंद्शः क्षितीनां न मर्या अरेपसः १ ४१५
 अग्निर्न ये भ्राजसा रुक्मवक्षसो वातासो न स्वयुजः सद्यऊतयः ।
 प्रजातारो न ज्येष्ठाः सुनीतयः सुशर्माणो न सोमा कृतं यते २
 वातासो न ये धुनयो जिगत्तवोऽग्नीनां न जिह्वा विरोकिणः ।
 वर्मण्वन्तो न योधाः शिमीवन्तः पितृणां न शंसाः सुरातयः ३
 रथानां न येराः सनाभयो जिगीवांसो न शूरा अभिद्यवः ।
 वरयवो न मर्या धृतपुषोऽभिस्वतारो अर्कं न सुष्टुभः ४
 अश्वांसो न ये ज्येष्ठास आशवो दिधिषवो न रथयः सुदानवः ।
 आपो न निर्भरुदभिर्जिगत्तवो विश्वरूपा अङ्गिरसो न सामभिः ५ ४१९

ग्रावाणो न सूरयः सिन्धुमातर आदर्विरासो अद्रयो न विश्वहा ।

शिशूला न क्रीळयः सुमातरो महाग्रामो न यामन्नुत त्विषा

६ ४२०

उषसां न केतवोऽध्वरश्रियः शुभंयवो नास्त्रिभिर्व्यश्वितन् ।

सिन्धवो न ययियो भ्राजहृष्टयः परावतो न योजनानि ममिरे

७

सुभागात्रो देवाः कृणुता सुरता नस्मान्स्तोतृन् मरुतो वावृधानाः ।

अर्धि स्तोत्रस्य सूर्यस्य गात मनाद्धि वो रत्नधेयानि सन्ति

८ ४२०

॥ ४२ ॥ (य० ३।४४)

प्रधासिनो हवामहे मरुतश्च रिशादसः । कुरम्भेण सजोषसः

४४ ४२३

॥ ४३ ॥ (य० ७।३६)

उपयामगृहीतोऽसीन्द्राय त्वा मरुत्वत एष ते योनिरिन्द्राय त्वा मरुत्वते ।

उपयामगृहीतोऽमि मरुतां त्वौजसे

३६ ४२४

॥ ४४ ॥ (४२५-४२७) (य० १७।८४-८६)

इदक्षास एतादक्षास ऊ षु णः सदक्षासः प्रतिसदक्षास एतन ।

मितासश्च सम्मितासो नो अद्य सभंसो मरुतां यजे अम्मिन

८४ ४२५

स्वतवाँश्च प्रधासी च सान्तपनश्च गृहमेधी च । क्रीटी च शाकी चोऽजेपी

८५

इन्द्रं देवीर्विशो मरुतोऽनुवर्मानोऽभवन् यथेन्द्रं देवीर्विशो मरुतोऽनुवर्मानोऽभवन् ।

एवमिमं यजमानं देवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्मानो भवन्तु

८६ ४२७

॥ ४५ ॥ (य० २५।२०)

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः ।

अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह

९० ४२८

॥ ४६ ॥ (साम० ३।१६) इयावाश्व आत्रेयः । अनुष्टुप ।

यदी वहन्त्याशवो भ्राजमाना स्थेष्वा । पिबन्तो मदिरे मधु तत्र श्रवांसि कृण्वते ५ ४२९

॥ ४७ ॥ अथर्व० १.२३।३-४

(४२०-४२३) ब्रह्मा । ३ गायत्री । ४ एकावसाना यादन्तिष्टुन

ययं नः प्रवतो नपा न्मरुतः सूर्यत्वचसः । शर्म यच्छाश्व सप्रथाः

३ ४३०

सपुदत मृडत मृडया नस्तनूभ्यो मयस्तांकेभ्यस्क्रुधि

४

॥ ४८ ॥ अथर्व० ५।२६।५ छिपदायी उणिक् ।

छन्दामि यजे मरुतः स्वाहा मातव पुत्रं पिपृतेह युक्ताः

५ ४३१

॥ ४० ॥ (अथर्व० १३।१।३) जगती ।

यूयमुग्रा मरुतः पृश्निमातर इन्द्रेण युजा प्र मृणीत शत्रून् ।

आ वो रोहितः शृणवत् सुदानव—स्त्रिषतासौ मरुतः स्वादुसंमुदः

३ ४३३

॥ ५० ॥ (अथर्व० ३।१।२)

(४३४-४३६) अथर्वी । विराड्गर्भा भुरिक् ।

यूयमुग्रा मरुत ईदृशे स्थाभि प्रेत मृणत् सहध्वम् ।

अमीमृणन् वंसवो नाथिता इमे अग्निर्होषां दूतः प्रत्येतुं विद्वान्

२

॥ ५१ ॥ (अथर्व० ३।२।६) त्रिष्टुप् ।

असौ या सेना मरुतः परेषा—मस्मानैत्यभ्योजसा स्पर्धमाना ।

तां विध्यत् तमसापर्वतेन यथैषामन्यो अन्यं न जानात्

६ ४३५

॥ ५२ ॥ (अथर्व० ५।२४।६) चतुष्पदातिशकरी ।

मरुतः पर्वतानामधिपतयस्ते मावन्तु । अस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् कर्मण्यस्यां पुरोधायामस्यां

प्रतिष्ठायामस्यां चित्यामस्यामाकृत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहृत्यां स्वाहा

६ ४३६

॥ ५३ ॥ (अथर्व० ४।१३।४) (४३७-४३९) शंतातिः । अनुष्टुप् ।

त्रायन्तामिमं देवा—स्त्रायन्तां मरुतां गुणाः । त्रायन्तां विश्वा भूतानि यथायमरपा असत् ४

॥ ५४ ॥ (अथर्व० ६।२२।२-३) २ चतुष्पदा भुरिजगती, ३ त्रिष्टुप् ।

पर्यस्वतीः कृणुथाप ओषधीः शिवा यदेजथा मरुतो रुक्मवक्षसः ।

ऊर्जं च तत्र सुमतिं च पिन्वत् यत्रा नरो मरुतः सिञ्चथा मधु

२

उकुपुतो मरुतस्तौ इयते वृष्टिर्या विश्वा निवर्तस्पृणार्ति ।

एजाति ग्लहां कन्येवितुन्ने—रं तुन्दाना पर्येव जाया

३ ४३९

॥ ५५ ॥ (अथर्व० ४।२७।१-७) (४४०-४४६) १-७ मृगारः । त्रिष्टुप् ।

मरुतां मन्वे अधि मे ब्रुवन्तु प्रेमं वाजं वाजसाते अवन्तु ।

आशूनिव सुयमानह ऊतये ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

१ ४४०

उत्समाक्षितं व्यचन्ति ये सवा य आसिञ्चन्ति रसमोषधीषु ।

पुरो दधे मरुतः पृश्निमातृ—स्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

२

पयो धेनुनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ ।

शग्मा भवन्तु मरुतां नः स्योना—स्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

३

अपः समुद्राद दिवमुद्ब्रहन्ति विवस्पृथिवीमभि ये सृजन्ति ।

ये अद्भिरीशाना मरुतश्चरन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

४

ये कीलालेन तर्पयन्ति ये घृतेन ये वा वयो मेदसा संसृजन्ति ।

ये अद्भिरीशाना मरुतां वर्षयन्ति ते नो मुञ्चन्त्वंहसः

५ ४४४

यदीदृदिं मरुतो मारुतेन यदि देवा दैव्येनेदृगारं ।

यूयमीशिध्वे वसवस्तस्य निष्कृते स्ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

६

तिग्ममनीकं विदितं सहस्वन्मारुतं शर्धः पृतनासूयम् ।

स्तौमि मरुतो नाथितो जोहवीमि ते नो मुञ्चन्त्वंहंसः

७

४४३

॥ ५६ ॥ (अथर्व ७।७७ [८२] १३ (४४७) अङ्गिरः । जगती ।

संवत्सरीणां मरुतः स्वर्का उरुक्षयाः सर्गणा मानुपासः ।

ते अस्मत् पाशान् प्र मुञ्चन्त्वेनसः सांतपना मत्सरा मादयिष्णवः

३

४४७

मरुत्सहचारी देवगणः ।

(१) मरुद्रुद्रविष्णवः ।

॥ ५७ ॥ (ऋ० ५।३।३) (४४८) वसुश्चत आत्रेयः । त्रिष्टुप ।

तव श्रिये मरुतो मर्जयन्त रुद्र यत् ते जनिम् चारुं चित्रम् ।

पदं यद् विष्णोरुपमं निधायि तेन पामि गुह्यं नाम गोनाम्

३

४४८

(२) मरुतोऽभामरुतो वा ।

॥ ५८ ॥ (ऋ० ५।६।१-८)

(४४९-४५८) इयावादेव आत्रेयः । त्रिष्टुप . ७ ८ जगती ।

ईळे अग्निं स्वर्वसं नमोभिर्गृह प्रसक्तो वि चयत कृतं नः ।

रथैस्त्रि प्र भरे वाजयद्भिः प्रदक्षिणिन्मरुतां स्तोमसृध्याम्

१

आ ये तस्थुः पृषतीषु श्रुतासु सुखेषु रुद्रा मरुतां रथेषु ।

वनां चिदुद्या जिहते नि वो भिया पृथिवी चिद् रेजते पर्वतश्चित

२

४५०

पर्वतश्चिन्महिं वृद्धो विभाय द्विवश्चित सानुं रेजत स्वने वः ।

यत् क्रीळथ मरुत कण्टिमन्त आप इव मध्यश्चो धवध्वे

३

वरा इवेद् रेवतासो हिरण्यैरभि स्वधाभिस्तुन्वः पिपिशे ।

श्रिये श्रेयांसस्तवसां रथेषु मत्रा महौंसि चक्रिं तनूषु

४

अज्येष्ठासां अकनिष्ठास एते सं भ्रातरं वावृधुः सौभगाय ।

युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुद्या पृथिः सुदिना मरुद्भ्यः

५

यदुत्तमे मरुतो मध्यमे वा यद् वावमे सुभगासो द्विवि ष्ठ ।

अतो नो रुद्रा उत वा न्वस्याऽग्रं वित्ताद्भविषो यद् यजाम

६

अग्निश्च यन्मरुतो विश्वंवदसो द्विवो वहध्व उत्तगदधि णुभिः ।

ते मन्दसाना धुनयां गिशादसो वामं धत्त यजमानाय मुन्वते

७

४५५

अग्नें मरुद्भिः शुभयद्भिर्ऋकभिः । सामं पिब मन्दसानो गणश्रिभिः ।
पावकेभिर्विश्वमिन्वेभिरायुभिर्वैश्वानर प्रदिवा केतुना सजूः

८ ५५६

(३) सोमः मरुतः ।

॥ ५९ ॥ (अथर्व० १२०।१) अथर्वा । त्रिष्टुप् ।

अदारसृद् भवतु देव सोमा—ऽस्मिन् युजे मरुतो मूढता नः ।

मा नो विददभिमा मो अशस्ति—मा नो विदद वृजिना द्वेष्ट्या या

१ ४५७

(४) मरुत्पर्जन्यौ ।

॥ ६० ॥ (अथर्व० ४।१५।४) विरादपुरस्ताद्बृहती ।

गुणास्त्वोप गायन्तु मारुताः पर्जन्य घोषिणः पृथक् ।

सर्गा वर्षस्य वर्षतो वर्षन्तु पृथिवीमनु

४ ४५८

(५) मरुत आपः ।

॥ ६१ ॥ (४५९-४६४) (अथर्व ४।१५।५-२०)

(५. विराड् जगती, ७ अनुष्टुप्, ६, ८ त्रिष्टुप्, ९ पथ्या पंक्तिः, १० भुरिक्।)

उदीरयते मरुतः समुद्रत—स्त्वेषो अर्को नम उत्पातयाथ ।

महर्ऋषभस्य नदतो नभस्वतो वाश्वा आपः पृथिवीं तर्पयन्तु

५

अभि क्रन्द स्तनघादयोदधिं भूर्मि पर्जन्य पर्यसा समङ्घि ।

त्वया सुष्टं बहुलमेतु वर्ष—माशरैषी कृशगुरेत्वस्तम्

६ ४६०

सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघा वर्षन्तु पृथिवीमनु

७

आशामाशां वि द्योततां वाता वान्तु दिशोदिशः ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः सं यन्तु पृथिवीमनु

८

आपो विश्वदुभ्रं वर्ष सं वोऽवन्तु सुदानव उत्सा अजगरा उत ।

मरुद्भिः प्रच्युता मेघाः प्रावन्तु पृथिवीमनु

९

अपामग्निस्तनूभिः संविद्वानो य ओषधीनामधिपा बभूव ।

स नो वर्ष वन्तुतां जातवेदाः प्राणं प्रजाभ्यो अमृतं दिवस्परि

१० ४६४

- [१२०] १।६४।१३ (नोधा गौतमः । मरुतः)
मरुतो.... ।
अर्वाङ्गर्वाजं भरते धना नृभिः ।
२।२६।३ (गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः)
स दज्जनेन स विशा स जन्मना स पुत्रैर्वाजं भरते धना नृभिः ।
(इन्द्रः २८०७) १०।१४७।४ (सुवेदाः शैरीषिः । इन्द्रः)
स इन् ... ।
मधु म वाजं भरते धना नृभिः ।
[१२४] १।८५।२ त उक्षितामो महिमानमाशत ।
(इन्द्रः ३२०३) ८।५९ (वाल० ११)।२
(मुपर्णः काण्वः । इन्द्रावरुणौ)
इन्द्रावरुणा महिमानमाशत ।
[१२७] १।८५।५ प्र यद रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।
(४१) १।३९।६ (कण्वो घौरः । मरुतः)
उपो रथेषु पृषतीरयुग्ध्वं ।
[१३०] १।८५।८ (गौतमो राहूगणः । मरुतः)
भयन्ते विश्वा भुवन मरुद्वयो ।
(१६१) १।१६६।४ (अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
... भुवनानि हर्म्या ।
[१३१] १।८५।९ अहन् वृत्र निरपामौज्ज्वर्णवम् ।
(इन्द्रः ८०९) १।५६।५ (राव्य आत्रिरसः । इन्द्रः)
[१३७] १।८६।३ स गन्ता गोमति ब्रजे ।
(इन्द्रः २२४४) ७।३२।१० गमस्त गोमति ब्रजे ।
(इन्द्रः १८२५) ८।४६।९ (वशोऽज्यः । इन्द्रः)

- (इन्द्रः ५०९) ८।५१ (वाल० ३) । ५ गमेम गोमति ब्रजे
[१३८] १।८६।४ (गौतमो राहूगणः । मरुतः)
सुतः सोमो दिविष्टिषु ।
उक्थं मदश्च शस्यते ।
(इन्द्रः ६३६) ८।७६।९ (कुरुसुतिः काण्वः । इन्द्रः)
सुत सोमं दिविष्टिषु ।
[इन्द्रः ३३१७] ४।४९।१ [वामदेवो गौतमः । इन्द्रावृहस्पती]
उक्थं मदश्च शस्यते ।
[१३९] १।८६।५ [गौतमो राहूगणः । मरुतः]
विश्वा यश्चर्षणीरभि ।
[अग्निः ६२६] ४।७।४ [वामदेवो गौतमः । अग्निः]
[अग्निः ९०३] ५।२३।१ [बुध्नो विश्वचर्षणिरात्रेयः । अग्निः]
[१४८] १।८७।४ [गौतमो राहूगणः । मरुतः]
असि सत्य ऋणयावानेयो ।
२।२३।११ [गृत्समदः शौनकः । ब्रह्मणस्पतिः]
... ऋणया ब्रह्मणस्पत ।
[१९१] १।१६८।९ [अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुतः]
आदिन् स्वधामिषिरां पर्यपश्यन् ।
१०।१५७।५ [भुवन आप्त्यः साधनो वा भौवनः । विश्व देवाः]
[१९२] १।१६८।१० = [इन्द्रः ३२६४] १।१६५।१५
= [१७२] १।१६६।१५ = [१८२] १।१६७।११
[अगस्त्यो मैत्रावरुणिः । मरुत्वानिन्द्रः]
एष वः स्तोमो... कारोः ।
एषा थासीष्ट... जीरदानुम् ॥

ऋग्वेदस्य द्वितीयं मण्डलम् ।

- [१९८] २।३०।११ तं वः शर्चं मरुतं ।
(२४३) ५।५३।१० तं वः शर्चं रथाना ।
[२०९] २।३४।४ (गृत्समदः शौनकः । मरुतः)

- पृषदश्वासो अनवभ्रराधसः ।
(२१६) ३।२६।६ (गाथिनो विश्वामित्रः । मरुतः)

ऋग्वेदस्य तृतीयं मण्डलम् ।

[२१६] ३।२६।६ = (२०२) २।३४।४

ऋग्वेदस्य पञ्चमं मण्डलम् ।

- [२३०] ५।५१।४ [व्यावाश्च आत्रेयः । मरुतः]
वो.....स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।
[अग्निः १०६३] ६।१६।२२ [भरद्वाजो बार्हस्पत्यः । अग्निः]
वः ... स्तोमं यज्ञं च धृष्णुया ।
६० [मरुतः] ५

- [२४३] ५।५३।१० त्वेष गणं मारुतं नव्यसीनाम् ।
[२९२] ५।५८।१ स्तुषे गणं ... ।
[२४९] ५।५३।१६ [व्यावाश्च आत्रेयः । मरुतः]
रणन् गावो न यवसे ।

१०।२५।१ [विमद ऐन्द्रः प्राजापत्यो वा वसुकृष्ठा वासुकः । सोम]	प्र स्यावयन्ति यामभिः ।
रणन् गावो न यवसे विवक्षसे ।	[२८०] ५।५६।६ युष्मन् ह्यरुषी रथे ।
[२६०] ५।५४।११ श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]	१।१४।१२ [सिगातिभिः काण्वः । विभे देवा]
विद्युनो गभस्त्वोः शिप्राः शीर्षसु वितता हिरण्ययीः ।	युष्वा ह्यरुषी रथे ।
[७०] ८।७।२५ [पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः]	["] ५।५६।६ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
त्रिष्टदस्ताशिप्राः शीर्षन् हिरण्ययीः ।	रथे . ।
[२६५ ७३] ५।५५।१-९ शुभ यातामनु रथा अवृत्तत ।	अजिरा धुरि वोळ्ढवे वहिष्ठा धुरि वोळ्ढवे ।
[२६७] ५।५५ ३ विर्राणि सूर्यस्येव रश्मयः ।	१।१३४।३ [परच्छेयो देवोर्गभिः । वायुः]
(अग्निः १६५४) १०।९१।४ (अरुणो नैतहव्यः । अग्निः)	[२९०] ५।५७।७ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
अरेपना सूर्यस्येव रश्मयः ।	भक्षीय वो ऽवसो देवस्य ।
[२७३] ५।५५।९ (श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः)	[इन्द्रः १५५३] ४।२१।१० [वामदेवो गौतमः । इन्द्रः]
अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तत ।	भक्षीय ते ऽवसो देवस्य ।
अधि स्तोत्रस्य मरुतस्य गातन ।	[२९१] ५।५७।८=[२९९] ५।५८।८ [श्यावाश्व आत्रेयः । मरुतः]
६।५१।५ (ऋजिष्वा भार्गवाजः । विश्वे देवाः)	हये नरो मरुतो मृकता नस्तुवीमघामो भूमता ऋतजाः ।
अस्मभ्यं शर्म बहुलं वि यन्तत ।	मरुतश्रुतः कवयो युगानो वृद्धिरयो वृद्धश्रुतमाणाः ।
(४२२) १०।७८।८ (रयूमर्गमर्गभिः । मरुतः)	[२९२] ५।५८।१=[२४३] ५।५३।१०
अधि स्तोत्रस्य मरुतस्य गात ।	[३१९] ५।८७।२ (एतयाममर्गभिः । मरुतः)
[२७४] ५।५५।१०=४।५०।६ [वामदेवो गौतमः । आरपतिः]	दाना मङ्गा तदेयाम् ।
वयं स्याम पतयो रथीणाम् ।	(९५) ८।२०।१४ (सोमभिः काण्वः । मरुतः)
[२७५] ५।५६।१=१।४९।१ [परच्छेयः काण्वः । उषा]	[३२२] ५।८७।५ (एतयाममर्गभिः । मरुतः)
दिवश्चिद रोचनादधि ।	स्वायुधाम हृदिमणः ।
[२७८] ५।५६।४-[१६] १।३७।११	(३५५) ७।५६।११ (वामदेवो गौतमः । मरुतः)
	स्वायुधाम हृदिमणः सुविता ।

ऋग्वेदस्य षष्ठं मण्डलम् ।

[३३४] ६।६६।१ (वामदेवो गौतमः । मरुतः)	१०।३५।१४ (वामदेवो गौतमः । मरुतः)
शुक वृद्धे सुभिरूथ ।	प्रेतागोमथ वाज्रमार्ता ।
(अग्निः ३७५) ४।३।१० (वामदेवो गौतमः । अग्निः)	१०।६३।१४ (वामदेवो गौतमः । मरुतः)
[३४१] ६।६६।८ नारय वर्ता न तरुता न्वभि ।	["] ६।६६।८ लोके वा मोयु तनये वामदेवः ।
१।४०।८ (कण्वो यौगः । व्रथाणरपतिः)	(इन्द्रः १९४१) ६।२५।४ (नारदो वाज्रमार्तः । इन्द्रः)
नारय वर्ता न तरुता महाधने ।	... याम् ।
["] ६।६६।८ मरुतो यमवथ वाज्रमार्ता ।	[३४४] ६।६६।१८=६।१९) ६।३४।१२

ऋग्वेदस्य सप्तमं मण्डलम् ।

[३५५] ७।५६।११-१३२) ५।८७।५	१०।६६।९ (वामदेवो गौतमः । मरुतः)
[३६७] ७।५६।२३ इत् सनिता वाज्रमर्वा ।	आप ओषधीर्वनितानि वाज्रमर्वा ।
(इन्द्रः २०६७) ६।३३।२ (युनवीत्रो भार्गवाजः । इन्द्रः)	अ३६।२५ (वामदेवो गौतमः । मरुतः)
[३६९] ७।५६।२५=७।३४।२५ यूयं पात स्वस्तिभिः सदानः ।	[३७३] ७।५७।४ (वामदेवो गौतमः । मरुतः)
["] ७।५६।२५ आप ओषधीर्वनितो युपन्त ।	यद्वा आपः पुरुषता कराम ।
	अरमे वो अस्तु सुमतिश्चिदा ।

१०।१५।६ (शङ्खो यामायनः । पितरः)
यद्ग... ।
७।७०।५ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । अश्विनौ)
अरमे वामस्तु सुमतिश्चनिष्ठा ।
[३७६] ७।५७।७ आ गृन्तामो मरुतो विश्व ऊती ।
५।४३।१० (अश्विर्भौमः । विश्वे देवाः)
विश्वे गन्त मरुतो विश्व ऊती ।
[३७९] ७।५८।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
प्र णः रपाहोभिस्तुतिभिस्तिरेत ।

(इन्द्रः ३१९४) ७।८४।३ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । इन्द्रावरुणौ)
... रेतम् ।
[३८०] ७।५८।६ आराक्षिद् द्वेषो वृषणो युयोत ।
(इन्द्रः २१११) ६।४७।१३ (गर्गो भारद्वाजः । इन्द्र)
आराक्षिद् द्वेषः सनुत युयोतु ।
[३८४] ७।५९।२ युष्माक देवा अवसाहनि ।
१।११०।७ (कुत्स आंगिरसः । ऋभव)
["] ७।५९।२ (वसिष्ठो मैत्रावरुणिः । मरुतः)
प्र स क्षयं तिरते वि महीरिषो यो वो वराय दाशति ।
८।२७।१६ (मनुर्वैवस्वत । विश्वे देवाः)

ऋग्वेदस्याष्टमं मण्डलम् ।

[४६] ८।७।१ प्र यद् वक्षिषुभमिषं ।
(इन्द्रः २३०४) ८।६९।१ (प्रियमेध आंगिरसः । इन्द्र)
प्र यद् वक्षिषुभमिषं ।
[४७] ८।७।२ यद्ग तविषीयवो ।
(इन्द्रः २६८) ८।६।२६ (वन्मः काण्वः । इन्द्रः)
यद्ग तविषीयस ।
[४७।५९] ८।७।२, १४ यामं शुभ्रा अविध्वम् ।
[४८] ८।७।३ (पुनर्वन्मः काण्वः । मरुतः)
• पुनन्ति पिप्युषीमिषम् ।
(इन्द्रः ३४५) ८।१३।२५ (नारदः काण्वः । इन्द्रः)
पुनन्ति पिप्युषीमिषमना न न ।
(इन्द्रः ५३७) ८।५४ (वाल्मीकिः काण्वः । इन्द्रः)
पुनन्ति पिप्युषीमिषम् ।
९।६१।१५ (अमर्त्यायुरांगिरसः । पवमानः सोमः)
पुनन्ति पिप्युषीमिषम् ।
[४९] ८।७।४ = (४०) १।३९।५
प्र वेपयन्ति पर्वताम् ।
[५३, ८६] ८।७।८, ३६ ते भानुभिर्वि तस्थिरे ।
[५५] ८।७।१० (पुनर्वन्मः काण्वः । मरुतः)
• दुदुहं वज्रिमे मधु ।
(इन्द्रः २३०९) ८।६९।६ (प्रियमेध आंगिरसः । इन्द्रः)
[५६] ८।७।११ = (१७) १।३७।१२
मरुतो यद्ग वो दिवः [वल्] ।
[५७] ८।७।१२ = (५) १।१५।२
यूयं हि ह्य सुदानवो [व] ।
[५८] ८।७।१३ पुरुषं विश्वधायसम् ।
८।५।१५ (ब्रह्मानिधिः काण्वः । अश्विनौ)

[६०] ८।७।१५ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
एषां सुभ्र मिक्षेत मर्त्यः ।
८।१८।१ (इरिम्बिठिः काण्वः । आदित्याः)
[६५] ८।७।२० (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
ब्रह्मा को वः सपर्यति ।
(इन्द्रः ५९५) ८।६४।७ (प्रगाथः काण्वः । इन्द्रः)
ब्रह्मा कस्त सपर्यति ।
[६७] ८।७।२२ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
सम् .. सं क्षोणी समु सूर्यम् । सम् ... ।
(इन्द्रः ५३४) ८।५२ (वाल्मीकिः काण्वः । इन्द्रः)
सम् .. सं क्षोणी समु सूर्यम् ।
सम् . सम् ।
[६८] ८।७।२३ = (इन्द्रः २५५) ८।६।१३
वि वृत्रं पर्वशो ययुः (रुजन्) ।
[७०] ८।७।२५ = (२६०) ५।५४।११
[७१] ८।७।२६ = (इन्द्रः १०१९) १।१३०।९
उक्षणा यद्ग परावतः ।
[७३] ८।७।२८ = (४१) १।३९।६
[७६] ८।७।३१ = (२१) १।३८।१
[८०] ८।७।३५ (पुनर्वत्सः काण्वः । मरुतः)
वह्न्यन्तरिक्षेण पतत ।
१।२५।७ (शुनः श्रेण आजीगर्तिः । वरुणः)
पदमन्तरिक्षेण पतताम् ।
[८६] ८।२०।५ = (१३) १।३७।८
सूमि (भिया) यामेषु रेजते ।

[८९] ८।२०।८ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)

रथे कोशे हिरण्यये ।

८।२१।९ (सोमरिः काण्वः । अश्विनौ)

रथे कोशे हिरण्यये वृषणस ।

[९५] ८।२०।१४ = (३१९) ५।८७।२

[१०७] ८।२०।२६ (सोमरिः काण्वः । मरुतः)

तेना नो अधि वोचत ।

८।३७।६ (मन्त्रः साम्मदः गान्धो मैत्रावरुणः बहवो वा

मन्त्र्या जालनदाः । आदित्याः)

['] ८।२०।२६ इष्कर्ता विहृतं पुनः ।

(मन्त्रः ७८) ८।३।६७ (मैत्रावरुणः-मैत्रावरुणः काण्वः ।

मन्त्रः)

[३९७] ८।२४।३ तस्य सु नो विश्वे अर्थ आ सदा शृणुन्ति कारवः ।

६।४५।३३ (अश्विनौ-काण्वः । अश्विनौ)

['] ८।२४।३ मरुतः सोमपीतये ।

१।२३।१० (मैत्रावरुणः काण्वः । विश्वे देवाः)

[३९८] ८।२४।४ आग्नि सोमो अर्थ सुतः ।

(मन्त्रः १७६६) ५।४०।२ अथा सोमो अर्थ सुतः ।

[४०२] ८।२४।८ = १।३८।१०

[४०३] ८।२४।९ = १।२३।१० (मैत्रावरुणः काण्वः । विश्वे देवाः)

[४०४-६] ८।२४।१०-१२ अग्नय सोमस्य पीतये ।

= १।२०।१ (मैत्रावरुणः काण्वः । अश्विनौ)

(मन्त्रः ३९६३) १।२३।२ (मैत्रावरुणः काण्वः । मन्त्र्याः)

(मन्त्रः ३९२९) ४।४९।५ य मदेना सोमसः मन्त्रावरुण्यती

(मन्त्रः ३०५५) ६।५९।६० (मैत्रावरुणः मरुतः । मन्त्र्याः)

(मन्त्रः ६३३) ८।७६।६ (मैत्रावरुणः काण्वः । मन्त्रः)

५।७१।३ (मैत्रावरुणः अश्विनौ । मैत्रावरुणौ)

ऋग्वेदस्य दशमं मण्डलम् ।

[४६७] १०।७७।६ = (मन्त्रः २१११) ६।४७।६३

(मरुतो नारदाः । मन्त्रः)

[४६४] १०।७७।८ ते हि यज्ञेषु यजिष्याम ऊमाः ।

७।३९।४ (मरुतो नारदाः । विश्वे देवाः)

[४६२] १०।७८।८ = (२७३) ५।५।९

स्वस्तः-तः १,६४,११, १११ । ८७,४; १४८
 स्वादुसंस्तुदः अथ० १३,१,३; ४३३
 स्वानिनः ३,२६,५; २१५
 स्वायुधाः-धासः ५,५७,२; २८५ । ८७,५; ३२२
 हृम्योष्ठाः ७,५६,१६; ३६०
 हलिनः १,६४,७; ११४

हिरण्यचक्राः १,८८,५; १५५
 हिरण्ययाः ५,८७,५; ३२२
 हिरण्यरथाः ५,५७,१; २८४
 हिरण्यवर्णाः २,३४,११; २०९
 हिरण्यवाशी ८,७,३२; ७७
 हिरण्यशिप्राः २,३४,३; २०१
 हादुनी-नि-वृत्तः ५,५४,३; २५२

